B. S





The Twelfth Report on the Search

OF

Hindi Manuscripts

FOR THE YEARS

1923, 1924 and 1925

BY

The Late Rai Bahadur Dr. HIRALAL, B.A., D.Litt., M.R.A.S.

VOLUME II

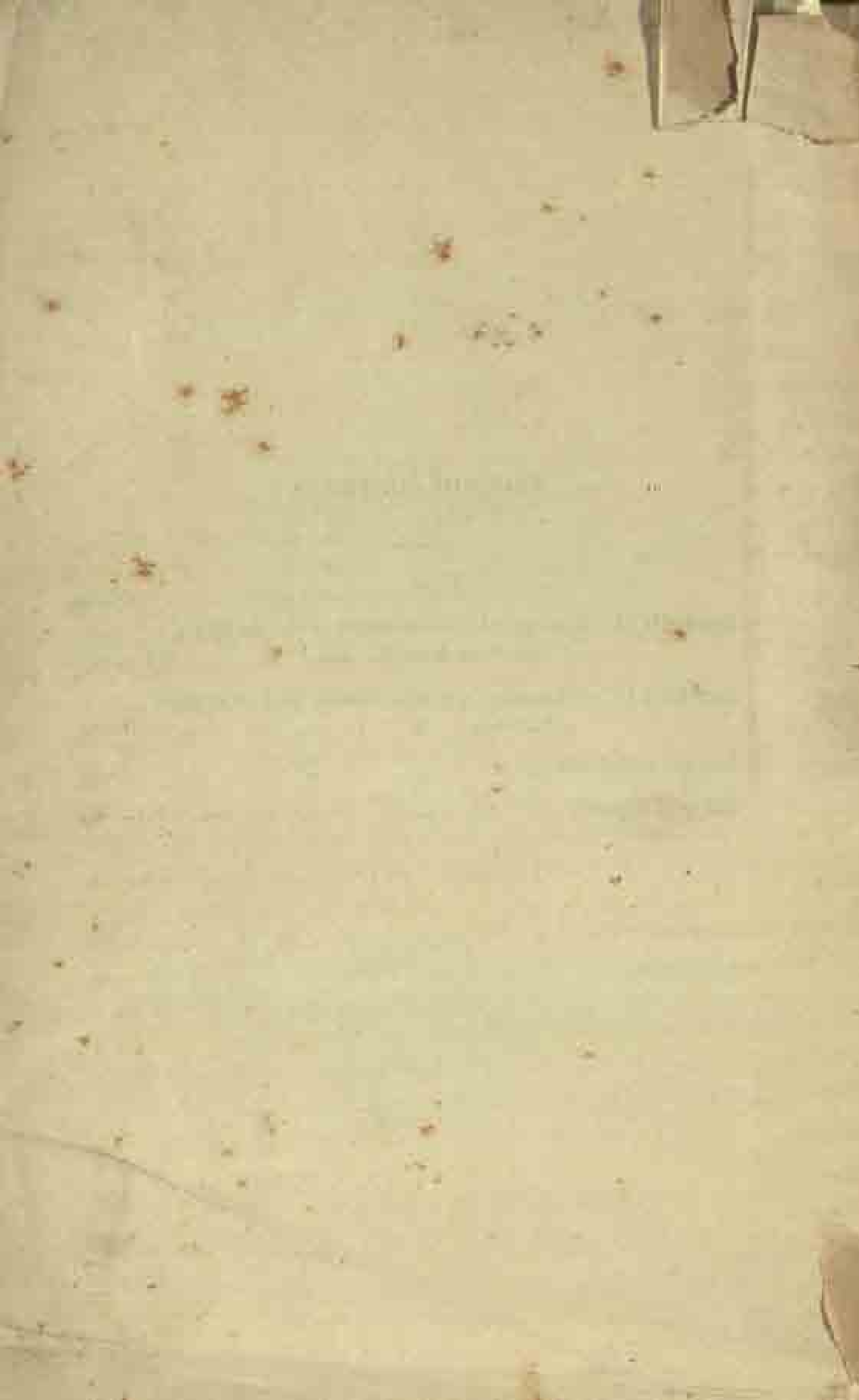
Prepared under the auspices of and published by the Nagari Pracharini Sabha, Benares, under the patronage of the Government of the United Provinces





ALLAHABAD:
Superintendent, Printing and Stationery, United Provinces, India
1944

TABLE OF CONTENTS



2(a) Śivapurāṇa Pūrvārdha by Mahānanda Vājpeyī
nau (Rāe Bareli). Substance—Foreign blue paper.
—720. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—28.
—18,900 Anushṭup Ślokas. Appearance Old. Char-
Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1927 or A. D.
Place of deposit—ṭhākura Naunihāla Siṁha,
Kāṇṭhā, District Unao (U. P.).

ning.—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ श्रीगौरी शंकरायनमः ॥ श्री गुरु
भ्योनमः ॥ अथ शिवपुराण भाषा लिख्यते ॥ यस्मायाशंखिल कर्म
भ्मादि यद्विश्वतस्संबंधे तत् तोर्थं विस्खलयन स्तेनैच्युता यांखिलं।
ादि पुरुषो वत्सत्यतो दृश्यते । मिथ्या भूतमयी दमश्च अमर्दद-
॥ वामांगे यस्य गौरी विलसति रवि विध्वाग्नि नेत्रं ललाटे ।
ृयं शिरसि शुरुकरी जन्हुकन्याऽप्यहंसी ॥ यत्कण्ठे द्वैद शुभ्रं
देहं महेशं ॥ कर्पूरानंद दंतं स्वजन सुखकरं पश्यती प्राण
न पूरयितुं चकल्प कुरुहं मे शत्रु नाशं करोति । विद्या वर्द्धन एव
यं सुरैः ॥ नाना भूषण भूषितं सुखकरं शर्वां विभु सर्वदं ।
न शरणं शर्मोन्य था नो गति ॥ ३ वंदे चिधि हरी ब्रह्मा
यत्कृपा ता निजां तस्यं पश्यन्ति पुरषा शिशवं ॥ ४

शव तुति करि सब मुनि देवा । कोन्हेहु बहुविधि प्रभु की
जिनकी तुति सुनि । दीन्हें तिन कहं वर वर हित गुनि ॥
सेवा ॥ मे प्रस... । लहि बरगे निज घर तेहि सेई ॥ काशी बनहु भये
शिव निज पुर गे सब सुर तेईलहि परम सकामा ॥ तहं थित रह शिव लिंगहु
निज धामा । सेइ शिवहि ... होई ॥ कंदुकेश सोइ लिंग बखाना । जेहि सेवत
सोई । तेहि सेवत इत उत सुख ... कहा हम गाई । सब विधि सब को पर सुख
मति पद निर्बाना ॥ इमि शिव चरि...वै । सो इत उत परमानंद पावे ॥ शुद्ध खंड
दाई ॥ जो यहि चरितहि सुनहि सुना... सब सुख करना ॥ यहि पढ़ि चिनसहि
यह हम मुनि बरना । शिव जस गुंफित...गाथा ॥ लहहिं सकल सुखइत उत भूरे ।
सब पापा । ब्यापहि कबहुं न चिविधहु दुष्ट सतावहिं ताही । लाहि मुक्ति अम
अविछन्न पर्हहि सुसंपति पूरी ॥ कबहुं न...बिलासे महानारद संवादे पंचम खंडे
...ताहीं ॥ इति श्री शिवपुराणे ...नाम षट् पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥
...ला सुर वध शिव चरित्र ॥ लिखितो पं० गंगा प्रसाद शुक्ल ॥ संवत
...चम खंड समाप्त
...ो ॥

Subject.—प्रथम खंड शिव महिमा नोमषार में सौनका
कलि में कल्याण मार्ग पूछना, सूत का कलि दशा वर्णन, शंभु का
विधि नारद संवाद शिवसमाधि, मदन आगन उल्लेख और नारद का
खंडन, शीलव्रत राजा की कन्या के विवाह में असफलता तथा शि
विष्णु को श्राप देना। शिव का निर्गुण सगुण रूप व महिमा, शिव
विराट रूप कथन, शक्ति वर्णन, शिव-शक्ति विचार व सृष्टि रचना, ब्रह
से उत्पत्ति, विष्णु को शिवा के वाम अंग से उत्पत्ति तथा
नाम करण व कार्य वर्णन, विष्णु और ब्रह्मा संवाद, तेज समूह का
विष्णु और ब्रह्मा का नीचे ऊपर क्रमशः उसका अंत लेने को
का हंस रूप से तथा विष्णु का बाराह रूप से खोज करना, १०००
उसका अन्त न मिला तब दोनों का लौटना और आकाशवाण
करने को कहना, पुनः शब्द से अ, उ, म, की उत्पत्ति, उन्हीं
तथा भिन्न भिन्न सृष्टि का पैदा करना। शिव स्वरूप वर्णन
व विष्णु से सृष्टि उत्पादन करने को कहना, लिंग पूजन का
सृष्टि संचालन को कहना, ब्रह्मा का ऋषियों को पैदा क
रचना, शिव का ब्रह्मा के यहां अवतार लेना, शिव स्तुति
नाम: (मन्यु, मनुमहिन, महान शिव, ऋतुध्वज, उग्र, रेत, भव
व्रत) रुद्राणी के ११ नाम (धी, वृत्ति, उशना, उमा, नि
इरावति, भवानी, सुधा, सुदीक्षा) और भद्र सेनानी
वर्णन। राक्षस, त्रिजग आदि योनियों का उत्पादन, आ   व मग्न
का निरूपण, मानसिक व दैहिक सृष्टि वर्णन, स्त्री उत्पादनार्थ ब्रह्मा का तप
करना, अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शन देना, स्तुति वर्णन, स्त्रीरूप होने का वरदान
देना, मैथुनी सृष्टि का होना, मनु का तप करना, शिव का वरदान देना, मनु के
दो पुत्र व ३ कन्या होना, प्रियव्रत व उत्तानपाद पुत्र हुए जिनसे ऋषभ और ध्रुव भक्त
हुए, कन्याओं व उनकी सन्तानों का वर्णन, लोकों का वर्णन, विष्णु रमा का
वर्णन, विष्णु का शिव स्तुति करना, स्वामि कार्तिक व उनके लोक का वर्णन,
शक्ति लोक का वर्णन, शिवा स्तुति वर्णन, दंपति धर्म वर्णन, शिव का कैलाश
पर आना, द्रुपदपुरी व कम्पिला का वर्णन, यज्ञदत्त का वर्णन, यज्ञदत्त के पुत्र
गुणनिधि की उत्पत्ति, गुणनिधि का कुसंग में बिगड़ना, विवाह होना, धन लु
देना, शिव मंदिर में जाना, लौटते हुए भय से भागना व मारा जाना,
का यमदूतों से छुड़ा कर लेजाना, दीपदान   फल, वैश्रवन भक्त
अलकापति का तप कर वरदान पाना, तथा   कैलास वा
   गणपति
सब देवों का कैलास आना व शिव से

श्रम बूंद भूमि पर गिरना, बूंद से बालक का होना, भूमि का स्त्री रूप से पालन करना, भौमनाम होना, पृथ्वी का अतावी नाम पड़ना, भौम का तप करना, शिव का वर देना व मंगल ग्रह होना, हिम गिरि के तप से मयना के गर्भ में पार्वती का आना, देवताओं का स्तुति करना, पार्वती का जन्म होना, गिरि की शोभा अनुपम होना, पार्वती की बाललीला, विद्याध्ययन व प्रौढ़ावस्था में सौंदर्य, मैना व हिमगिरि का विवाह चिंतन करना, देवताओं का आगमन व विवाह की इच्छा करना, विष्णु का भी आगमन, पार्वती के स्वयंवर में आना, मंचों पर यथा स्थान बैठना, पर्वत, समुद्र, नदी आदि का भी नर रूप में उपस्थित होना, सखी का सब देवों व राजाओं के समीप जयमाल लेकर गिरिजा को लेजाना और सब का वर्णन करना, विष्णु के भी समीप जाना, अन्त में शिव के गले में माला पहिनाना, शिव का बाल रूप होना, सब देवों का क्रोध करना व थंभन होना, हरि, ब्रह्मा, शक्रादि का स्तुति करना, बरात की तय्यारी, अगवानी आदि, शिव-शिवा विवाह वर्णन, पुरोहित का पार्वती के लिये वर खोजना, सब लोकों में जाना, अंत में शिव के पास आना व विवाह स्थिर करना, विष्णु व पार्वती के कथन से पुरोहित का शिव के पास जाना और तिलक करना, नाई का अप्रसन्न होना, हिमांचल द्विज संवाद व संतोष वर्णन, शिवा-शिव विवाह की तय्यारी, लग्न भेजने आदि का वर्णन, बरात की तय्यारी, वृद्ध रूप सिद्धादि भूत प्रेत का आना, सब का दुःखित होना, पार्वती का विजया सखी को समझाना, हिमगिरि का विषाद वर्णन, पार्वती का शिव के पास विनय पत्रिका भेजना, शिव की महिमा वर्णन, शक्ति परिचय, भोजन समय शुक्र-शनि शक्ति वर्णन, हिमाचल असमंजस वर्णन, पुरोहित का गिरिजा कथन वर्णन, माता का संतोष होना, शिवा-शिव लीला व सती वर्णन, अवधूत रूप का कारण कथन, सब का शिव का प्रताप जानना व स्तुति करना, शिव की बरात का वर्णन, इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा सब का समाज वर्णन, अगवानी, जेवनार आदि क्रियाओं का वर्णन, गिरि मयना का कन्यादान देना, विवाह मंगल होना और कैलास गमन, ऋषियों से हिमगिरि का कन्या के लक्षण ज्ञात करना, गिरिजा के शुभ लक्षणों व महेश से विवाह का उल्लेख करना, मैना-हिमगिरि को बाल [illegible]था से आनन्द प्राप्त होना, गिरिजा का तप के लिये स्वप्न देखना। गिरीश का [illegible]की सेवा में जाना, शिव का विवाह निषेध, अन्त में गौरी को स्वीकार करना, गौरी का तप करना, शिव का अखंड समाधि में होना, इन्द्र का कामदेव को शिव की समाधि जगाने को भेजना और उसका भस्म होना, दिति से ४९ पवनों की उत्पत्ति, इन्द्र का ४९ खंड करना, हिरण्याक्ष व हिरण्यकश्यप कथा, दिति का फिर तप करना व कश्यप से वीर पुत्र होने का वर मांगना, वज्राङ्ग

की उत्पत्ति व इन्द्र को ताड़न देना, उसका तप कर राक्षस भाव त्याग का वर मांगना, वज्रांग की स्त्री का इन्द्र वैर शोधन की आकांक्षा करना, तप कर वर पाना, तारक का जन्म होना व तप करना, शिव का अजेय रहने का वर देना, तारक का असुर दल संघटित करना, कुंभ, कुंवम, महिष, कुंजर, कालनेमि, निमिमेष, कथन, आदि १० वीरों को एकत्र करना, तारक, नमुचि आदि का देवताओं से युद्ध करना व जीतना, विष्णु का देवताओं को समझाना व तारक की सेवा करने को कहना, तारक का तीनों लोक का राज्य करना, दुखी हो कर देवों का ब्रह्मलोक में जाना, असुरों का देवों पर अत्याचार वर्णन, ब्रह्मा का उपाय बतलाना कि शिव पुत्र इसे मारेगा, इन्द्र का कामदेव को शिव के समीप भेजना, काम प्रताप वर्णन, शिव को बाण मारना व नेत्र खोल कर क्रोध युक्त देखने से काम का भस्म होना, रति का विलाप वर्णन, देवों का शिव स्तुति करना। रति को अतनु पति देना और पार्वती से शिव विवाह वर्णन व नारद का तप करने को कहना, पार्वती का तप के लिये माता पिता से आज्ञा लेना व समाधान करना, शिवा का उग्र तप प्राणायाम आदि करना, भूतों का बाधा पहुंचाना, गिरि वंश का भाग्य वर्णन, वन में सब का स्वाभाविक वैर त्याग वर्णन, देवताओं का शिव समीप जाना व प्रार्थना करना, शिवा से विवाह करने को कहना। विष्णु का शिव प्रशंसा वर्णन कि समय समय पर उन्होंने गौतम इन्द्र आदि के दुःखों को दूर किया और राक्षसों का वध किया, देवों को विदा करना और सप्त ऋषियों को बुलाना और पार्वती की परीक्षा लेने भेजना, सप्त ऋषि पार्वती संवाद, शिवा का दृढ़ व्रत रहना, शिव का द्विज रूप में शिवा की परीक्षा लेना, विष्णु की प्रशंसा कर विवाह करने को कहना, पार्वती का दृढ़ व्रत रहना, शिव का साक्षात् रूप होना और शिवा को वर देना, देवताओं का शिवा की स्तुति करना व गृह को आना। शिव का हिमगिरि के द्वार पर जाकर शिवा की भिक्षा मांगना, उनके क्रुद्ध होने पर अपने रूप में विष्णु, ब्रह्मा, गणपति, शिव आदि रूप दिखलाना, देवों का बृहस्पति को हिमगिरि के समीप शिव निन्दार्थ भेजना व गुरु का समझाना, शिव का वैष्णव रूप में हिम शैल पर जाना, शिव निंदा व विष्णु प्रशंसा वर्णन, हिमगिरि को संभ्रम करना, शिव का सप्त ऋषियों को बुलाना, उनका स्तुति करना, शिव का तारक के वध का वर्णन करना, कुंभज [illegible] व अरुंधती का मैना से संवाद व शिव गुण वर्णन, ऋषियों का हिमगिरि को समझाना, सब देव, ऋषि, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि को निमंत्रण देना व सब का आगमन, शिव गणों का तय्यारी करना, विष्टंभ, कंदुक, पिप्पल आदि का ससैन्य भारी तय्यारी करना। पिंगलाक्षादि का वर्णन, बरात की तय्यारी, हिमगिरि का

निमंत्रण, नगर सजावट, गौरि पूजनादि वर्णन, बरात, अगवानी, हिमगिरि को राजमद होना, तब शिव का ब्रह्मा विष्णु से भिन्न भिन्न मंडल बना कर चलने को कहना, मंडल के विषय में मयना का नारद से ज्ञात करना और उनका प्रत्येक मंडल का वर्णन करना, सब देवों का भिन्न भिन्न वर्णन, शिव सेना देख कर मयना को मोह होना, व दुखित होना, ब्रह्मा का समझाना, हिमगिरि का भी समझाना, सब का शिव स्तुति करना, पार्वती का भी शिव वन्दना करना, विष्णु का मयना को समझाना, सब बरात में शिव की स्तुति गान व प्रभाव देख पड़ना, बरात का द्वार पर आना, मयना का आरती करना व शिव महिमा वर्णन, जनवासे का वर्णन, अनेक प्रकार की जेवनार का वर्णन, शुभासन व चरण प्रक्षालन, विष्णु आदि समेत वर्णन, चढ़ावा वर्णन व विवाह आगमन, मंडप शोभा वर्णन, शाखोच्चार वर्णन, गिरि का शिव से गोत्र ज्ञात करना, संभ्रम होना, शिव की नाद से उत्पत्ति का वर्णन, कन्यादान होना, ध्रुवदर्शन, परिछन, मंगल, विनती आदि वर्णन, सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, सची, लोपामुद्रा, अरुन्धती, अहल्या, तुलसी, रोहिणी, शतरूपा का शिव से हास्य करना, शिव का समझाना, रति का विनय करना, काम को प्रगट करना, शिव-शिवा वर्णन, शिव का जनवासे में आना, हिमगिरि का शिव से अपनी त्रुटियों के लिये निवेदन करना, देवताओं का हिमगिरि की प्रशंसा करना, कलेवा वर्णन, गाली वर्णन, चौथे दिन सर्वाहुति करना, संस्रव प्राशन करना, गिरिजा के सिर अभिषेक करना, लहकौरि करवाना, कंकन उतारना, पांचवें दिन बिदा मांगना और सानंद बिदा करना, व प्रेम से विह्वल हो जाना, बर्तानी होना, गिरिजा को बिदा करना, मयना का विह्वल चित्त गिरिजा को बिदा करना व उपदेश देना, नारि धर्म वर्णन, पतिव्रत भेद वर्णन, गिरिजा का प्रेम सहित बिदा होना, शिव का कैलास जाना, व देवताओं का गृह प्रवेश कराना, आनन्द मनाना, शिव से बिदा हो कर शिव स्तुति कर के निज घर को जाना।

चतुर्थ खंड।

शिव के पास विष्णु आदि का जाना, शिव का सुरत में निरत रहना, देवों का स्तुति करना, शुचि का शिव वीर्य को कपोत रूप में ग्रहण करना, पार्वती का देवों को बांझ रहने से शाप देना, अग्नि को भी श्राप देना, देवों को गर्भ रहना व घबड़ाना, शिव स्तुति करना व रेतस को उलटवा देना, अग्नि से भी निकलवा देना, ऋषि पत्नी अग्नि तपने को गयीं, अरुंधती ने मना किया पर कृत्तिका के अंग से स्पर्श हो गया, उसने हिमगिरि में छोड़ा, फिर अमरनदी में डाला गया, देव नदी ने किनारे पर सरपत में डाल दिया, गिरिजा के कुचों में दूध का आ जाना, विश्वामित्र का बालक के समीप जाना, बालक का ऋषि से कर्म करने

को कहना, विश्वामित्र का ब्रह्मपुत्र न होने से निषेध करना, पुनः पुत्र मानना, कुमार को अग्नि का शाप देना, कुमार का पर्वत में मारना और उसका फट जाना व बहुत से दैत्यों का मरना, शैल के कथन पर इन्द्र का बालक को मारने के लिये उद्यत होना, एक दिव्य पुरुष का रक्षा करना, इन्द्र के वज्र मारने पर भी बालक को चोट न आना, इन्द्र का शिवा की स्तुति करना, कृत्तिका का उस पुत्र को लेने की इच्छा करना, बालक ने स्वयं षट्मुख कहा और वाद मिटाया, कुमार का इन्द्र के यहां जाना, इन्द्र का ज्ञात करना, तेज देख कर सभा का भयभीत होना, देवों का कार्तिक को गिरीश पर ले जाना, शिव-शिवा प्यार वर्णन, देवों की स्तुति, विष्णु का शिव से आज्ञा दिलाना, कुमार को तारक मारने के लिये, ब्रह्मा का स्वामिकार्तिक का निवास बनवाना, देवों का माला इत्यादि देना, नारद का अश्वमेध करना, वरुण का कार्तिक को बकरा भेंट करना, नारद का यज्ञ के लिये पकड़ना, अज का खुल जाना और सातों द्वीपों को जीतना, नारद का कार्तिक की शरण आना, और उनका अज को पकड़ कर ला देना, पुत्रार्थ झगड़ने पर कार्तिक का माताओं को समाधान करना, विधि-हरि हर को सांत्वना देना, तारक का देवों पर चढ़ाई करना, नारद का समझाना, नारद का इन्द्र को समझाना, दोनों ओर युद्ध की तय्यारी होना, युद्ध वर्णन, मुचुकुंद तारक युद्ध वर्णन, वीरभद्र युद्ध वर्णन, असुरों का हारना, तारक वीरभद्र युद्ध वर्णन, कार्तिक का युद्ध के लिये सन्नद्ध होना, कार्तिक तारक युद्ध वर्णन, तारक का मारा जाना, देवताओं का कार्तिक की स्तुति करना, बाण दैत्य का क्रौंच पर्वत में उपद्रव करना और युद्ध क्षेत्र से भाग जाना स्वामिकार्तिक द्वारा बाण का ससैन्य वध वर्णन। क्रौंच का स्तुति करना। त्रिलिंग की स्थापना करना, युद्ध से भाग कर प्रलंब का १० करोड़ साथियों सहित शेष लोक में विध्वंस करना, शेष पुत्र कुमुद का स्वामिकार्तिक की शरण आना, सांग द्वारा उसका वध करना, सब का स्तुति गान करना, कार्तिक का विमान पर चढ़ कर कैलास जाना और ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि का वाहनों पर चढ़ कर साथ साथ चलना, शिव शिवा का कुमार को प्यार करना और देवों का स्तुति करना, गिरिपति का दानादि देना और सब देवों का विदा होना, स्कंद उत्पत्ति का पुनः वर्णन, शिवा को क्रोधित देख सान्त्वना देना, पार्वती का पुत्र की याचना करना, शिव का गणपति पूजन बतलाना, गणपति महिमा वर्णन, गणेश को मोटा देख चन्द्र का उपहास करना, गणेश का शाप देना, मोक्षार्थ चतुर्थी व्रत वर्णन, चौथ चन्द्रमा दोष निवारणार्थ द्वितीया दर्शन वर्णन, पार्वती का व्रत करना, शिव का प्रसन्न हो विहार स्थल निर्माण करना, गणपति का द्विज रूप में आना, पुत्र वर देना और स्वयं बाल रूप में शिवा के पलंग

पर आना, शिव-शिवा का उत्सव मनाना, विष्णु आदि देवी देवताओं का आशिर्वाद देना, शनि का आगमन, कर्म महिमा वर्णन, निज स्त्री (चित्ररथ की कन्या) की कथा व श्राप वर्णन, शनिदृष्टि से गणेश का शिर छिन्न हो जाना, सब देवों आदि का विलाप करना, शिव के कहने से विष्णु का उत्तर ओर जाकर गज शिशु का शिर लाना, शिव का प्रणव मंत्र से बच्चे को जिलाना सब का आशीष देना, शिवा का शनि को श्राप देना, रवि कश्यप का शिवा पर क्रोध करना, हरि का समझाना, गणेश नाम रख कर सब देवों का बालक को भेंट देना, पृथ्वी का चूहा देना, गणेश स्तोत्र वर्णन, कल्प भेद से गणेश की दूसरी कथा का वर्णन, शिवा के स्नान करते समय नंदी का द्वारपाल होना, शिव का जाना, शिवा को लज्जित होना, फिर मैल का पुतला बना जीवदान दे द्वारपाल करना, शिव का आगमन, द्वारपाल का रोकना, शिव गण और गणेश युद्ध वर्णन, शिवगणों का भागना, शिव का ब्राह्मण को समझाने भेजना और गणेश का न मानना व युद्ध में देवों को हराना, विष्णु-गणेश युद्ध व विष्णु का हारना, शिव का त्रिशूल से शिर काटना, सब देवों का स्तुति करना, शिवा का काल शक्तियों द्वारा देवों का नाश कराना व देवों का शिवा से प्रार्थना करना, शिव का गज शिर लाकर जिलाना और शिवा को शान्त करना, शिव का आशीष देना, गणेश का शिव को प्रणाम करना, सब देवों का शिव की स्तुति करना, कुमार गणपति में श्रेष्टता वर्णन, पृथ्वी के प्रदक्षिणार्थ दोनों को भेजना, पूर्व आने वाले का ब्याह व सम्मान करने को कहना, गणपति का चिन्ता करना और माता पिता की पूजा कर प्रदक्षिणा देना, माता पिता पूजन महिमा वर्णन, शिव जी ने गणेश का विवाह किया और श्रेष्ट माना, गणेश के दो पुत्र क्षेम व लाभ का होना, गणेश पूजन महिमा व पूर्णिमा दर्शन महिमा वर्णन।

पंचम खंड।

शिवादि स्तुति, तड़ितमाली, तारकाक्ष, कमलाक्ष राक्षसों का तप वर्णन, ब्रह्मा का वर देना, नगर रचना, विमानादि से पूरित होना और तीनों का अलग अलग राज करना, उनका आनन्द व वैभव वर्णन, देवताओं का क्लेश पाना और त्रिपुर नाश की प्रार्थना करना, ब्रह्मा विष्णु और शिव के पास जाना, सब का शिव पूजन करना, सब गणों का त्रिपुर में जाना और शिवार्चन देख लौट आना, विष्णु का एक गण उत्पादन करना और उसे शिक्षा दे कर्मवाद परक सिद्धान्त समझा त्रिपुर में प्रचारार्थ भेजना और नास्तिकता फैलाना, नारद का शिष्य होना जिसे देख त्रिपुरासुर भी मोहित हो गया व प्रतिज्ञा कर शिष्य बन गया, वंचक मत त्याग एक मत होने को कहना, जीव दया का प्रचार करना, चार दासों को

मुल्य बताना। रोगी को ग्रौषधि, भयभीत को ग्रभय, भूखे को ग्रन्न ग्रौर विद्यार्थी को विद्या देना, शिवार्चन छुड़ाना, वेद मार्ग पर चलाना, देवार्चन ग्रादि का छूटना, जैन मत का प्रचार होना, ब्रह्मा विष्णु संवाद वर्णन, जैन मत उत्पत्ति व त्रिपुर मोह वर्णन, शिव का पुत्र को देख ग्रानंद मानना, शिव का कुंभोदर को भेजना। देवताग्रों का भयभीत होना, विष्णु का समझाना ग्रौर शिव ग्राराधना करने को कहना, शिवार्चन होना, ग्रौर त्रिपुर नाशन की विनय करना, शिव का ग्रमृत कुप पीने के लिये हरि को वत्स रूप ग्रौर ब्रह्मा को गौ बना कर भेजना ग्रौर ग्रमृत कूप पीना। शिव गण, नंदी, गणेश, कुमार का प्रगट होना ग्रौर शिव शासन बतलाना तथा देवों से उत्तम रथ तैयार करने को कहना, विश्वकर्मा का रथ व शस्त्रादि तय्यार करना, विष्णु का शिव से रथ पर चढ़ने की प्रार्थना करना, शिव का गणेश से प्यार करना व पूजना, प्रस्थान व विष्णु ब्रह्मादि का साथ चलना, शिव का नाद करना, त्रिपुर का एक साथ होना, देवों का प्रसन्न होना व शिव से त्रिपुर विनाश की प्रार्थना करना, शिव का बाण छोड़ना ग्रौर त्रिपुर का विनाश होना, ब्रह्मा-विष्णु ग्रादि देवों का स्तुति करना, शिव का शान्त होना, ग्ररिहन्त का शिष्यों सहित ग्राना ग्रौर शिव को प्रणाम कर छल के पाप मोचन की प्रार्थना करना, शिव का कलि में प्रभाव दिखाने को कहना, मय का प्रार्थना करना ग्रौर शिव का तलातल में रहने को कहना, कश्यप की स्त्री दनु से दानवों की उत्पत्ति, मयदानव का तप वर्णन, शिव का प्रसन्न होना, मय की स्तुति, शिव का वर देना, सुर-ग्रसुर को समान भाव से मानना, ग्रपनी भक्ति रखने को कहना, विश्वकर्मा की उपाधि देना, जालंधर कथा वर्णन, शिव का भीम रूप धारण करना, हरि का शिव से ज्ञात करना, इन्द्र का भी ज्ञात करना, ब्रह्मा का ज्ञात करना, उत्तर न देने पर इन्द्र का क्रोध करना, वज्र मारना, शिव कंठ नीला होना ग्रौर वज्र का जल कर भस्म होना, रुद्र का ग्रग्नि रूप होना, इन्द्रादि का भयभीत होना, बृहस्पति का प्रार्थना कर क्रोध शांत कराना, शिव-तेज को दूर फेंक देना जिससे जालंधर की उत्पत्ति होना, बालक के रुदन से सब का भयभीत होना, सिंधु का ब्रह्मा को पुत्र देना। जालंधर का तप करना ग्रौर कालनेमि की कन्या वृन्दा से विवाह करना। उसका प्रताप वर्णन, जालंधर के यहां राहु का ग्राना, शुक्र से छिन्न शिर कथा ज्ञात करना, शुक्र का समुद्र मंथन कथा वर्णन, शिव का विष को पान करना, उत्तम रत्न हरि ने लिये, सुरा राक्षसों को दी, छल से ग्रमृत देवों को पिलाया, राहु देवों के बीच में जा बैठा, ग्रमृत पी लिया, परन्तु विष्णु ने शिर छिन्न कर दिया, जालंधर का इन्द्र के पास रत्न लेने को दूत भेजना ग्रौर इन्द्र का पुरा राक्षस व पहाड़ों के पंख तोड़ने ग्रादि की कथा कहना, विष्णु द्वारा शंखासुर का

वध, दूत का जालंधर प्रताप वर्णन, इन्द्र का न मानना, जालंधर का सुरपुर पर चढ़ाई करना, मरे देवों को वृहस्पति का दिव्यौषधि द्वारा जिलाना, मृत राक्षसों को शुक्र का जिलाना, देवताओं का हारना व जालंधर विजय वर्णन, देवों का विष्णु को शरण जाना, स्तुति वर्णन, विष्णु का युद्ध के लिये प्रस्तुत होना, लक्ष्मी का भाई का पक्ष ले मना करना, विष्णु-जालंधर युद्ध वर्णन, गरुड़ का घायल होना, विष्णु का युद्ध से प्रसन्न हो जालंधर को वर देना, उस के निज घर में विष्णु लक्ष्मी निवास होने की इच्छा करना, देवों से सब रत्नों का लेना, प्रजा का प्रीति से पालन करना, देवों का शिव स्तुति करना, शिव का आकाश वाणी द्वारा अभय वर देना, नारद जालंधर संवाद, शिवा को लेने के लिये शिव के पास राहु को भेजना, शिव का क्रोध करना व एक गण का उत्पन्न होना, दूत का भयभीत हो भागना, शिव का छुड़ाना, जालंधर का शिव पर चढ़ाई करना, वृंदा का समझाना, देवों का शिव से चढ़ाई का वर्णन करना, शिव का निज अंश होने से त्रिशूल से न मारने को कहना, देवों का निज तेज देना व शिव का शस्त्र बनाना, जालंधर का शैल समीप जाना, शिव का भी ससैन्य उतरना, शिव जालंधर युद्ध वर्णन, शुक्र का मृत राक्षसों को जीवित करना, देवों का शिवा से वर्णन करना, रुद्र का कृत्या उत्पन्न करना, शुक्र को छुपा कर ले जाना, असुरों का संहार होना, शुंभ, निशुंभ, कालनेमि आदि का युद्ध करना, नंदी, कुमार व गणेश का प्रबल युद्ध करना, असुर दल का विकल होना, वीरभद्र का असुर सेना नाश करना। शुंभादि का घायल होना। जालंधर शिव युद्ध वर्णन, नंदी का असुरों को मारना, जालंधर का शुंभादि को संग्रह करना, शिव का जालंधर के रथ ध्वजादि खंडित करना, उसका माया करना शिव का मोहित होना, जालंधर का शिव रूप में गिरिजा के पास जाना व जड़ होना, शिवा का अन्तर्धान होना, शिवा का हरि को उसके पुर में भेजना, शिव का मोह दूर होना, वृन्दा का पति मृत्यु का स्वप्न देखना, हरि का जाना, वृन्दा का वन में जाना व दो राक्षसों का देखना, भयभीत होना, तपसी के कंठ से लिपट जाना, मुनि का क्रोध करना, राक्षसों को भगाना, दो बन्दरों का आना, वृन्दा के सामने जालंधर का वध कर डालना, वृन्दा का रुदन करना, तपसी का जीवित करना, वृन्दा व जालंधर संयोग होना, एक बार विष्णु रूप रखना और वृन्दा का तप भंग होना और शाप देना, विष्णु का समझाना, शिव महिमा वर्णन करना, राक्षसों का माया करना, गिरिजा को शुंभ निशुंभ का मारना व तंग करना, शिव का शाप देना कि गिरिजा के हाथ से तुम्हारा वध होगा, जालंधर शिव युद्ध वर्णन, नंदी का भागना, शिव का चक्र से जालंधर का वध करना, देवों का स्तुति करना, सौमिनि, विमर्षण, चन्द्रसेन, आदि के उद्धार

का वर्णन, वृन्दा को देख विष्णु को मोह होना, देवों का स्तुति करना, त्रिगुण रूप को देख कर विष्णु का मोहित होना, विष्णु का शिव आराधना करना व तप में लीन होना, प्रसन्न हो कर शिव का विष्णु को चक्र सुदर्शन देना व उसकी महिमा का वर्णन, कश्यप की स्त्री दनु से विप्रचित्त का होना, उससे वृषपर्वा की उत्पत्ति, उसका तप करना व प्रबल पुत्र मांगना, शंखचूड़ की उत्पत्ति, उसका तप करना व ब्रह्मा का वर देना, तुलसी का तप करना, शंखचूड़ संवाद व विवाह, देव-दानव युद्ध, देवताओं का पराजय, चन्द्रचूड़ का राज्य करना, चन्द्रचूड़ के पूर्व जन्म की कथा, राधा के श्राप से सुदामा का राक्षस होना, गोलोक वर्णन, सुदामा का राधिका को रोकने के कारण श्राप देना, विवाह वर्णन, वैकुंठ वर्णन व महेश महिमा कथन, कैलाश में देवों का जाना, शिव से शंखचूड़ को मारने की प्रार्थना करना, शिव का प्रसन्न हो वचन देना, शिव का पुष्पदन्त को शंखचूड़ के पास समझाने को भेजना, काल की महिमा का वर्णन, पुष्पदन्त का लौटना, रुद्र का युद्ध की तैयारी व ससैन्य प्रस्थान, वीरभद्र, नंदी, भृंगी आदि का चलना। भूत प्रेत सेना का विस्तृत विवरण, शंखचूड़ का युद्धार्थ गमन व दूत का शिव समीप भेजना, दूत शिव संवाद, शिव का समझाना, दूत का असुरों के संहारकारी पूर्व वर्णन कहना, देव दानव युद्ध, वृषपर्वा इन्द्र, गोश्रुति गणेश, कालंबिक जलेश, कालकेय कुबेर, विप्रचित्त दिनेश, राहु सूर्य, काश्य कुज, शुक्र बृहस्पति, मय विश्वकर्मा, वर्चस यमु, दीप्तिमान अश्वनीकुमार युद्ध, वीरभद्र, नंदी, गणेश आदि का युद्ध में प्रवृत्त होना, शंखचूड़ से युद्ध होना, देवों को निर्बल जान तेज देकर कुमार को भेजना व सौ अक्षौहिणी सेना का नष्ट करना, शंखचूड़ कुमार युद्ध वर्णन, चन्द्रचूड़ वीरभद्र युद्ध, शिव का संतोष प्रकट करना, पुनः युद्ध होना, काली का गर्जन करना, शंखचूड़-कुमार युद्ध वर्णन, गरुड़ास्त्रादि चालन, शंखचूड़ का चक्र मारना, काली का रक्षा करना, काली-शंखचूड़ का युद्ध, आकाशवाणी का होना व काली से युद्ध निषेध, शिव द्वारा मृत्यु वर्णन, शिव शंखचूड़ युद्ध वर्णन, शूल का मारना, चन्द्रचूड़ का हृदय फटना व उससे एक पुरुष का निकलना व उसका सिर काटना, काली का असुर सैन्य भक्षण करना, जोगिनी का रण में फैलना व असुर सेना नष्ट होना, देवों का प्रसन्नता प्रकट करना, शंखचूड़ का माया करना, माहेश्वरास्त्र से शिव का नष्ट करना, आकाशवाणी होना कि कृष्ण कवच व सती स्त्री के कारण इसका नाश नहीं होता, शिव का हरि को बुलाना और उन्हें कवच मांगने को ब्राह्मण रूप में भेजना व उनसे मांग लाना, शंखचूड़ रूप से उसकी स्त्री का सतभंग करना, शिव का त्रिशूल से शंखचूड़ का वध करना, देवों का स्तुति करना व उसका सुदामा रूप में

गोलोक को जाना, विष्णु का तुलसी छलन कथा वर्णन, विष्णु का शाप से शालिग्राम रूप में होना, तुलसी का पतिव्रत भंग करना, विष्णु का समाधान करना, अंधक कथा, दिति का तप कर कश्यप से वर लेना, अंधक की उत्पत्ति, देवों का भयभीत होना व तप कर देवों को हराना, रत्नादि लेना, कश्यप का दैत्यों को समझाना व अंधक का शिव भक्ति व उग्र तप करना, देवों का शिव स्तुति करना व वर देने को अंधक को कहना, उसका शिव बिन अवध्य वर मांगना, अंधक का देवों को विजय करना व रत्न अप्सरादि लेना, देवों का विष्णु से निवेदन करना, विष्णु का चक्र चलाना, शिव का रक्षा करना, विष्णु का शिव स्तुति करना, शिव का समझाना, विष्णु का अंधक से वर मांगने को कहना, उसका शंकर भक्ति रहित होना और सब लोकों पर राज्य करना, देव-मुनि का दुःख पर विचार करना और मुनियों को शिव के पास भेजना, शिव स्तुति वर्णन, शिव का मंदार माला दे अंधक के यहां नारद को भेजना, नारद से माला की महिमा सुन कर युद्धार्थ अंधक का गमन, शैल का बाग की रक्षा करना, गणेश अंधक युद्ध, शुक्र का पकड़ ले जाना, देव दानव युद्ध, दैत्यों का प्रमथ को भयभीत करना, शिव का रथ पर चढ़ कर युद्धार्थ गमन, दैत्यों के यहां शुक्र को भेजना। असुर शिव युद्ध व त्रिशूल से अंधक को मारना, अंधक को ज्ञान होना, स्तुति करना व गणों में सम्मिलित करना, बाणासुर की उत्पत्ति का वर्णन, शिव भक्ति व तप से वरदान पाना व विजय करना, शिव विहार वर्णन, अप्सराओं का शिव गण व उषा का शिवा रूप में आना, शिव का जानना और स्वप्न में पति मिलने को कहना। बाण का युद्धार्थ शिव से कहना व शिव का कृष्ण से होने का वर्णन कर ध्वजा चिन्ह देना, उषा का स्वप्न देखना, चित्ररेखा का अनिरुद्ध को लाना व उषा-अनिरुद्ध विहार वर्णन, द्वारपाल का बाण से कहना, अनिरुद्ध से राक्षसों का युद्ध व बहुतों को मारना, बाण का पकड़ना व मारने को उद्यत होना, अनिरुद्ध का भर्त्सना करना, आकाशवाणी होना, नारद का कृष्ण को सूचना देना, कृष्ण का ससैन्य बाण पर चढ़ाई करना, शिव का बाण की सहायता करना, शिवकृष्ण युद्ध वर्णन, हरि-बाण युद्ध वर्णन, कृष्ण का शिव स्मरण कर बाणासुर की ४ भुजा छोड़ शेष काट डालना, कृष्ण का शिव स्तुति करना, शिव का कृष्ण और बाण से संधि कराना, शिव का बाण को गणपति की पदवी देना, बाण का स्तुति करना, महिषासुर वध होने पर उसके पुत्र गजासुर का दुःखित होना व घोर तप करना, देवों का भयभीत हो ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का गजासुर को वर देना, गजासुर का देव ब्राह्मणों को दुःख देना, देवों का शिव से प्रार्थना करना, शिव का युद्धार्थ सन्नद्ध होना व गजासुर वध वर्णन, गजासुर का

शिव स्तुति करना व इष्टगंधि वर पाना, मोक्ष होना, दुंदुभि निह्रादि का देव मुनियों पर अत्याचार करना, काशी में द्विजों को सताना, शिव का उसे वध करना।

Note.—शिवपुराण का महानंद वाजपेयी ने भाषाबद्ध छन्दों में अनुवाद किया है। इसके दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। इस पूर्वार्द्ध भाग में ५ खंड और २१९ अध्याय हैं। इसकी भूमिका ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने अपने हाथ से लिखी है और उसमें उनका हस्ताक्षर भी है। भूमिका में रचयिता का नाम महानंद वाजपेयी लिखा है जो लखनऊ निवासी थे। सं० १९२६ से १०५ वर्ष पूर्व उनका देहान्त हुआ जैसा कि ठाकुर साहब ने उल्लेख किया है। ठाकुर साहब ने संशोधन करने का भी उल्लेख किया है जो शायद अन्य किसी प्रति में किया होगा। इसमें कोई चिन्ह संशोधन का नहीं है। ग्रंथ शिवपुराण बड़ा और काव्य रचना अच्छी है। काव्य रचना में भी महानंद का नाम आया है तथा कहीं कहीं खंड की समाप्ति पर भी दिया है। सेंगर जी को यह ग्रंथ सं० १९२६ में मिला था और प्रतिलिपि सं० १९२७ में करवायी थी। कांथा का भी वर्णन किया था। उनके पितादि का भी परिचय है। उन्होंने स्वयं वर्णन किया हैः—

श्री वाजपेयि गुन गण निधान। विख्यात महानंद सब जहान॥
तिन्ह भाषा कीन्ही शिवस्मृति। दोहा चौपाई छंद वृत्ति॥

रोला छंद—वास भो कैलाश में नहि ग्रन्थ कीन्ह प्रकाश। विस्तार छत्तिस सहस भाषा ग्रंथ है अतिरास॥ यदपि चौबिस सहस हैं शिव कौ पुराण अनूप। तदपि भाषा ह्वै गयो छत्तीस सहस स्वरूप॥ उन्नीस सौ छब्बीस सम्वत में लह्यो हम ग्रंथ। हित सर्व जनकौ ठानि के करि दीन सलिल सुपंथ॥ अर्थात् उर्दू प्रथम उल्था छापि दीन्हौं याहि। जो चहै लेवै ग्रंथ कौ तिन काहि दुर्लभ नाहि॥ पुनः भाषा ग्रंथ में लखि छिद्र क्षुद्र अनेक। सुद्ध कीन्हौं तिन्हहि जिय में धारि भूरि विवेक॥ खंड ग्यारह संहिता है सत यामें धाम। कथा जाकी जान्हवी सम देत मुक्ति ललाम॥ लखनऊ ते कोस दस दक्षिन बसै एक ग्राम। महावीर विराजहीं जहं बहत कांथा नाम॥ देश भृंगीशाल्ला जहं उर्वीपति साज। धर्मधर क्षत्री विराजें विद्या से द्विजराज॥ करत रक्षा जनन की जहं शूलपाणि महेश। मम पिता हैं तहं भूमिपति रनजीत सिंह नरेश॥ धर्मकर्त्ता शत्रुहर्त्ता शास्त्रवेत्ता दानि। प्रजाभर्त्ता दयाधर्त्ता विजय जश की खानि॥ रिपु भए वनचारी सुखारी मित्र जाके सर्व। संग्राम में जिन शत्रु कौ सब दूरि डार्यो गर्व॥ मार्तण्ड द्वितीय हो है प्रगट तेज अखंड। अनल से प्रज्वलित है भुजदंड चंड प्रचंड॥ यदपि सेवक मुख्य मन बहु रहत निस दिन पास। तदपि शिव पर पुष्प

शेलुष दूरि पर्वत वास ॥ श्रवन वेद पुरान को उमरन गौरी कन्त । रज त्यागि सत्वहि धरत निस दिन मनहुं योगी संत ॥ भक्ति भूसुर वृंद को गोविंद पद रति चोज । गाय गाय सुनावहीं जस गाय वंदौ रोज ॥

कवित्त—मनलव दिलो ते लखनऊ ते खैरखाही लंदन ते खुलत विसाति विना सकसे । भारभुज दंडन संभारे भुव मंडल को जाको धाक धाई धराधीश धकाधक से ॥ हांक सुने हालत हरीफ नाकदम होत कहै विश्वनाथ धरि गिरै खाके मकसे । कहांलों सराहौ तेरे उरको उमाहो भूप रनजीत सिंह तेरे पातसाही नकसे ॥ १ ॥ देवन अदेव भूत भैरवादि बचि जात बचि जात जक्ष कूष्माण्ड को कटक ते । बचि जात हलहू त्रिशूलहू से बचि जात बचि जात सरप शूल सल को सपट ते ॥ बचि जात बाधि व्याधि घात हू से बचि जात बचि जात बर व्याल व्याघ्र को दपट ते ॥ बचि जात यमसों जमाति जोरि जमन को बचत न धरि रनजीत की झपट ते ॥ २ ॥

भुजङ्ग प्रयात:—प्रजा जासु फूलो फलो सुख भरी सो । मनो पाय रितु राज कानन हरी सो ॥ विराजै जहां शास्त्री शुक्ल बैनी । गुरू देव मम स्वर्ग को है नसैनी ॥ समयजोग हैं है न रोगादि भीता । सुधा से लहै मिश्र श्रीराम सीता ॥ बड़े ज्योतिषी राज मंत्री बलो हैं । मनो भाष्यकर गर्ग से संगलो हैं ॥ महाराज श्रीमान से मान पायो । रह्यो मान वाके न को मान लायो ॥ त्रिपाठी मणिकलाल मोहन विराजै । जको देखि जेहि ज्योतिषी की समाजै ॥ गणित जासु को ब्रह्म लिपि लों सही है । मनो देह मानुष्य धारै गही है ॥ ज्वलित ज्वाल अनु शेष दूजो विराजै । पुराणज्ञ श्री ईश्वरी शुक्ल भ्राजै ॥ पढे सर्व इतिहास ग्रह आयुर्वेद । लहे युक्ति सों काव्य कोशादि भेद ॥ दिलो मित्र सब के सभो सो कला मैं । मिथानाथ भोला गहे युग्म वामैं ॥ पढै संस्कृत आरबी फारसी हैं । सबै इल्म अंगरेज को पारसी है । रह्यो शेष जासों न विद्याश अंगा । यशस्वी हैं अभिधान विख्यात गंगा ॥

रोला—सर्व मन रंजन विभंजन दुःख सज्जन मित्र ।
दुष्ट दल गंजन गुणालय सर्व गुन को चित्र ॥
गर्वहर हरभक्त श्री गुरु वक्स मेरे भ्रात ।
मूर्तिमान त्रिदेव लों है धरे मानुज गात ॥
ज्येष्ट श्रेष्ट दयाल मम भ्राता सहोदर तात ।
महीपति है नाम मानो मही रवि दरशात ॥
नाम मम शिव सिंह है शिवचरण रज को खोज ।
भद्रायु लों सुख लहत निसुदिन पाय दिल को मौज ॥

(पत्रा ३२) थार कपिला तेहि पायाना । जेहि लाँघ होत बहुत सुखनाना ॥
कपिलाश्रम जहं यघ गण हारो । लपतहि मुनिवर सब सुखकारी ।
तहं एक विप्र भयो मखकर्ता । सोम याजि कुल मख कुल भर्ता ॥
दीक्षित सो परि पूरण कामा । यज्ञदत्त शुभ तेहि कर नामा ॥
मन्त्र विद्या महं परम प्रवीना । राजमान्य बहु धन नहि दीना ॥

छंद—कछु काल बीते सु मुनि तिन के भयहु सुत शुभ कान्हो ।
सब कीन जातक कर्म द्विज वर यज्ञदत्त स्वचालहो ॥
षट नाम धरेहु विचारि शुभ निधि थार चूड़ाकर्म हो ॥
उपनयन कोन्हेउ निगम संमत दीन दान सुधर्म हो ॥

No. 252(b). Śivapurāṇa (Uttarārdha) by Mahānanda Vājapeyī of Dālamaū (Rāe Bareli). Substance—Foreign blue paper. Leaves—688. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—32. Extent—17,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1928 or A. D. 1871. Place of deposit—Ṭhākura Nannihāla Simha Sengaro, Kānṭhā, District Unāo.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गौरीशंकरायनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलाभ्यां नमः ॥

वंदे देवमुमापतिं गुणगतिं विष्णुवादि देवस्तुतं । मायाधीश मनोज्ञमाङ्-तिकरं मायापरं शंकरं । दीनोद्धार विहार कारमनिशं माया विदां मानदं । ब्रह्मज्ञान विशारदं पशुपतिं भक्तप्रियं सत्क्रियम् ॥ १ ॥ वंदे महानंद चिदां महेशीं दुर्गामु दुर्गाति हरां भवानीम् । दीनोद्धराताक् निमार्ति संदां भक्तप्रियां स्कंद-प्रसुं सुरूपाम ॥ २ वंदे स्कंदं च हेरंबं विष्णु ब्रह्मागमेव च । अन्यान् शिवजनान् वंदे स्वकृतेः पूर्ति हेतवे ॥ ३ ॥

दोहा—विनवहु गिरिजा शंभु पद पम्मुख गणपति पाद ।
हरि विधि प्रमुख सुर मुनि सकल वंदहु नशहि विवाद ॥ ४

सुतउवाच—मुनि अंधकासुर नाश मंदर शैलगत शिव चरित हो । मुनिनाथ नारद धात सो तब ठानि दर शंका कहो ॥ हे तात विधि सुनि अंधकासुर नाश मम शंका भयो । सोइ पूछहुं सविवेक भाषहु हरहु शंका जो जयो ॥

दोहा—कबहि गयो शिव मंदराचलहि त्यागि कैलाश ।
सोइ कहहु शिव चरित हो मोहि सुनवे को पाश ॥

End.—आइ गये तब सुभग विमाना। लेन सहित तौं दैनिक माना॥ तब भे दंपति दिव्य सुदेहा। चढ़ि विमान लसे सुसनेहा॥ दिव्य भोग संयुक्त बनाई। शिव मंदिर गे गण गति पाई॥ शिवगण तेहि कर नायक भयऊ। रहेहु मुदित नित दुख नसि गयऊ॥ सोइ शारदा सखि गिरिजा की। भै प्रनदिवहु शुभाकृति जाकी॥ यह हम कहेउ पुण्य आख्याना। पढ़त सुनत कहे सुखद बखाना॥ हिय मुक्तिद उत मुक्ति दया है। सब विधि नाशत है दुख्या है॥ यहि ते बाढ़त बहु आयुर्बल। रोग न रहत लसत तन अ वचल॥ सुर संपति धन धान्य विवर्द्धन। यह आख्यान सुमंगल साधन॥ प्रिय गत की सौभाग्य बढ़ावन। संतति प्रद बहु चेत सुहावन॥ उमा महेश्वर संज्ञक यह व्रत। यहि ठाने सुख उपजत अविरत॥ यह मुनिवर व्रतराज करावत। यहि कीन्हे जन सब सुख पावत। यह व्रत करहि शिवा शिव प्यारा। यहि कीन्हे सब नसत विकारा॥ यहि व्रत की महिमा सर्वोपरि। होति शिवा शिव रति यहि व्रत करि॥

इति श्री वाजपेयि, वंशोद्भव श्री ठाकुर प्रसादात्मज श्री ब्रह्मानंद विरचिते भाषा श्री शिवपुराणे शिव विधि दशम खंडे ब्रह्मानन्द संवादे उमा महेश्वर व्रत माहात्म्य वर्णनोनाम चतुर्दिंशोऽध्याय॥ २४॥ सम्वतम शुभं भूयात॥ चैत्र शुक्ल १४ लिख्यते॥ ललित किशोर वाजपेयिना॥ राम राम शिव शिव राम इति

Subject.—पद्मखंड—शिव का काशी जाना और सब देवों का भी पहुंचना व शिव दर्शनादि व मणिकर्णिका स्नान करना। शिव—विश्वेश संवाद वर्णन, शिव का काशी निवास व शासन वर्णन। गिरिजा का अन्नपूर्णा रूप में निवास। भैरव महिमा व विधि का पंचम शिर काटने का वृत्तान्त वर्णन व कपाल मोचन तीर्थ वर्णन। आनंद वन का वर्णन व हरिकेश को तप करते देखना। उसे दंडपाणि बनाना और वरदेना। विघ्न से गुह व अगस्त्य का काशी से चले जाना, वैश्य धनंजय का दंडपाणि का शासन मानना। रत्नभद्र पुत्र हरिकेश का चरित्र वर्णन जो यक्ष मुनि और धनी था। वैभव वर्णन, शिव भक्ति कथन।

दुर्ग असुर का वर्णन, शिवा के मारने से दुर्गानाम होना। दिवोदास कथा वर्णन, स्वायंभुव वंश में रिपुंजय का होना। काशी में तप करना, अकाल से धर्मराप होना। ब्रह्मा का रिपुंजय से राज्य करने को कहना व वचन लेना कि देव व नाग क्षिति पर न आवें।

मंदर गिरि का तप वर्णन, शिव का जाना और निज मूर्ति पर लिंग स्थापन करना, शिव का मंदराचल में निवास करना। अन्य देवों का भी जाना, रिपुंजय का काशी में राज्य करना। देवों का विघ्न करना और अग्नि को कार्य

करने से निषेध करना। राजा का संतोष देना और दिवोदास का शान्ति पूर्वक राज्य करना। दिवोदास प्रभाव वर्णन। देवों का ब्रह्मा के पास पास उनका विष्णु के और विष्णु का सब के साथ शंकर के पास जाना।

शिव का योगिनी गण को काशी में विघ्नार्थ भेजना व उनका असफल होना। सूर्य को विघ्नार्थ भेजना, काशी का प्रभाव वर्णन। १२ सूर्यों का चरित्र वर्णन और उनकी महिमा। काशी निवास वर्णन, कोई विघ्न न मिलना। शिव का ब्रह्मा को भेजना और राजा को यज्ञ करने को कहना। ब्रह्मेश्वर लिंग स्थापन कराना व ठहरना। शिव का दुःखित होना शंकुकर्ण महाकाल गणों को भेजना। उनका भी न टिकना। अन्य बहुत से गणों का भेजना व काशी का बसना। गणेश को भेजना और माया करना। विप्र रूप से सब को संतुष्ट करना। रानी लीलावती का विप्र को बुलाना और भविष्य ज्ञात करना, राजा को भयद कारण ज्ञात करना। गणेश का कारण बता कुछ दिन पीछे एक द्विज मिलने को कहना व राजा को छलना। गणेश का विलमना, विष्णु को भेजना, विष्णु के स्नान स्थान का पादोदक तीर्थ होना, आदि केशव, क्षीराब्धि, छत्रिका विच, शंखतीर्थ, अरि तीर्थ, गदा पद्मतीर्थ, रमा, गरुड़, नारद, प्रह्लाद तीर्थ वर्णन। गणेश का विज्ञानोपदेश देना। राजा को निर्वेद होना और विप्र-राजा संवाद वर्णन। रणञ्जय का राजत्याग का निश्चय और पुत्र स्त्री आदि को बुलाना और विमान पर बैठ कर शिवपुर को जाना।

ज्येष्ठ पुत्र को राज देना। गणेश और विष्णु का कृतकार्य होना, गरुड़ को शिवजी के पास संदेशार्थ भेजना, शिव का काशी को प्रस्थान। हरि आदि का सादर लेना व स्तुति वर्णन। सब देवों से अंशरूप में टिकने को काशी में कहना। शिव जी का दिव्य रथ पर काशी में प्रवेश वर्णन। जैगीषव्य योगी का समाधि वर्णन, गण भेज कर पास बुलाना। गुहा का वर्णन व शिव का वरदान देना।

काशी से सुमेरु पर शिव के जाने पर ब्राह्मणों का मन्यस्त व्रत लेना और काशी के सम्पूर्ण तीर्थों में भ्रमण करना, शिवजी के लौट आने पर ब्राह्मणों का स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना, वर देना और बहुत संतोष प्रकट करना। विश्वकर्मा का विश्वेश्वर भवन निर्माण वर्णन, उसका ऐश्वर्य कथन, मयना का हिमालय से पार्वती से मिलने को इच्छा प्रगट करना। हिमालय का अपार सम्पत्ति व सामिग्री लेकर जाना, काशी की सम्पत्ति देख कर चकित होना। हिम का विंध्य समीप ठहरना, वरुणातट प्रासाद निर्माण, शिव-शिवा गमन। हिम का शिव स्थापन करना और लौट जाना, शिव-शिवा का वर देना, अनादि लिंग तीर्थ वर्णन जिसका शैलेश्वर रत्नेश्वर हुआ। त्रिलोचनादि तीर्थ वर्णन, शिव का

अभिषेक वर्णन, देव स्तुति कथन। शिव का विष्णु आदि को भक्ति वर देना, महानन्द विप्र की कथा, चाण्डाल दान लेना, तिरस्कार होना, ठगों का घेरना, छल से ठगों को मारना, उनका कुक्कुट होना और शिव भक्ति में रत हो मुक्त होना और कुक्कुट मंडप तीर्थ होना, घंटा रव होना, नंदी, शिव, गणप का जाना, शृंगार मंडप में विश्वनाथ लिंग स्थापन करना वेदादि का स्तुति करना।

खंड सप्तम।

शिव वंदना, ब्रह्मा का १०० अवतार कथा वर्णन। निराकार स्वरूप वर्णन। रुद्र, ब्रह्मा के पुत्र, चार शिष्यों के साथ शिव की उत्पत्ति, वामदेव अघोर स्वरूप, ईशान, वसु, सूर्य, चन्द्र, अर्द्धनारीश्वर, योगरचयिता, श्वेत तारदमन, होत्र कंकण, जैगीष, ऋषभ, भृंगी, अत्रि, वालि, गौतम, वेदशिर, धेनुकर्ण, दारुक, लांगुलि, त्रिशूली, नंदी और भैरव रूप होना। वीरभद्र, शरभ, हर, महाकाल के दशरूप व दश देवी पति होना। एकादश रुद्ररूप, गृहपति, वृषेश्वर, पिप्पला, अवधूत, हनुमान, शंभु, वैश्य, द्विजेश, भिल्ल उद्धारार्थ शंकररूप, हंस हो (नल-दमयंती का मिलाया) सत्यार्थ के पुत्र को जिलाना। पार्वती परीक्षार्थ (जटिलरूप) साधु, अश्वत्थामा, किरात, गोरक्ष, शंकराचार्य, मिहिरमित आदि रूप वर्णन।

सौमिनि रूप से शबरी का उद्धार करना, भद्रायुध का अभिमान तोड़ना, भस्मासुर व कालनेमि वध कर्ता। शिव के अन्य कार्यों का उल्लेख, महिमा वर्णन। भूत प्रेतादि का प्रभाव। कैलाश वर्णन। लोहित शिशु व सुनंदादि ४ शिष्यों का वर्णन, रक्तपरक, वामदेव व विरजादि ४ पुत्र उत्पन्न करना। तत्पुरुष रूप होना, अघोर रूप धारण करना, पंचम ईशान रूप का वर्णन। इन सब रूपों ने सृष्टि उत्पादानार्थ ब्रह्मा को सहायता दी। अष्टावतारवर्णन शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपाल, ईशान और महादेव का वर्णन। स्थान-क्रमशः—पृथ्वी, जल, अनल, पवन, नभ, क्षेत्रज्ञ, सूर्य, शशि, कार्य-उत्पादन, नारीश्वरावतार वर्णन, मैथुनी सृष्टि कारण, ब्रह्मा का स्तुति करना। शंकर, विजगीष, श्वेतादि, विशोकादि, लोकाक्षि आदि २८ अवतारों का वर्णन, व्यास आदि का ज्ञान देने व योग सिखाने तथा सावित्री मंत्र देने के लिये दिवोदास व विजगीष तप वर्णन व शिव का काशी छोड़ सुमेरुगिरि पर जाना, देवों को विदा करना, योगिनी आदि को भेजने का वर्णन, दिवोदास का शिवपुर गमन।

दधिवाहन रूप से व्यास को पुराण रचनार्थ ज्ञान देना। कपिल व आसुर रूप से ज्ञान विस्तार करना। ऋषभावतार से ४ शिष्यों के साथ व्यास को ज्ञान देना। ऋषभ चरित्र वर्णन, भद्रायुध नृप का उद्धार करना आदि। भृंग का अवतार ले भृगु को सहायता देना। भृंग के ४ पुत्रों का वर्णन। तप रूप से व्यास को कलियुग का मार्ग बतलाना। १९वें द्वापर में भरद्वाज को पत्नि रूप से रचनार्थ सहायता

देना। वाल्मि व गौतम रूप से श्रुति रचना में व्यास के सहायक होना। वेद शिर से व्यास को बोध देना, हिमगिरि मैना को समझाना। गोकर्ण रूप से धनंजय को सहायता देना। गुहावासी अवतार से व्यास को सहायता देना।

अठारहवें द्वापर से २७वें तक १० अवतार वर्णन। शिखंडी, जटामाली, अट्टहास दारुक, लांगली महाकाय, शूली, दंडी मुंडीश्वर, सहिष्णु, सोमशर्मावतार वर्णन, प्रत्येक के चार चार पुत्र होकर भिन्न भिन्न द्वापर में भिन्न भिन्न व्यास को सहायता देना। २८वें द्वापर में शिव अवतार में व्यास को सहायता देना। कृष्णावतार से द्वापर में राक्षसों का वध करना, फिर कृष्ण द्वैपायन व्यास का शिवाराधना करना, शंकर का अवतार ले मृत देह को जीवित करना व श्रुतिमार्ग व योग प्रतिपादन करना। नंदिकेश्वर जन्म वर्णन—शिलाद का तप करना, इन्द्र से अयोनिज अमर पुत्र मांगना, फिर तप करना और शिव का नंदी नाम से जन्म लेना। नदी आदि प्रवाहित होना। नंदी का तप करना और शिव गण होना। स्कंद का मुनियों से भैरव कथा कहना, देवों का ब्रह्मा से सब से बड़ा देव (ब्रह्म) का ज्ञात करना, विष्णु ब्रह्मा का विवाद होना और निज को परमेश मानना, ऋगादि वेदों से ज्ञात करना और उनका भिन्न भिन्न रूप में शिव को परमेश वर्णन करना। शिव का मोह दूर करना। देव समाज में ज्योति रूप प्रकट होना व रुद्र की उत्पत्ति और शिव से आदेश मांगना। काल भैरव नाम देना और दुष्ट पद्मज को शिक्षा देना तथा काशी का कोतवाल बनाना। ब्रह्मा को शिव की निन्दा करना और काल भैरव का पंचम शिर काटना, भैरव का ब्रह्म दोष निवारणार्थ कापालिक व्रत करना, शिव का वर देना, हत्या (भयंकर कन्या) की उत्पत्ति और काशी जाने पर भैरव से हत्या को दूर होने को कहना। भैरव का सब लोकों व तीर्थों में जाना। भैरव-विष्णु संवाद और काशी का वर्णन व काशी आना और हत्या छूटना।

वीरभद्रावतार वर्णन—दक्ष यज्ञ में सती के भस्म होने पर गणों का यज्ञ बिगाड़ना, भृगु का रक्षा करना, गणों का मारा जाना, शिव का १ बाल से वीरभद्र को उत्पन्न करना, उसका सैकड़ों गणों के साथ यज्ञ विध्वंस करना, विष्णु आदि से युद्ध होना, विष्णु-वीरभद्र युद्ध वर्णन, विष्णु का चक्र चलाना, वीरभद्र का स्तम्भन करना। ब्रह्मा का विष्णु को समझाना। भृगु की दाढ़ी उखाड़ना, धर्म, प्रजापति, कश्यप आदि को लात मारना, यज्ञ का मृगरूप में भागना, वीरभद्र का शिर काटना, दक्ष का शिर भी कुंड में होम देना। यज्ञ विध्वंस वर्णन।

देवों का स्तुति करना। शिव का प्रसन्न होना वीरभद्र को आशीष देना, यज्ञ पूर्ण होना। प्रहलाद की भक्ति और हिरण्यकश्यप का विरोध वर्णन, विष्णु का नृसिंह अवतार लेना। हिरण्यकश्यप को वध करना। नृसिंह का क्रोध

करना, देवों का भयभीत हो शिव को स्मरण करना। शिव का वीरभद्र को बुलाना और नृसिंह को शांति करने को भेजना। नृसिंह वीरभद्र संवाद। शिव का शरभ अवतार ले नृसिंह तेज हरण। नृसिंह का शिव जी की स्तुति करना और शिव का प्रसन्न होना।

यक्षावतार वर्णन—समुद्र मंथन पर देवों को अभिमान होना यक्ष रूप से शिव का देवों के बीच में जाना और तृण तोड़ने को कहना, न टूटने पर आकाश वाणी होना और देवों का शिव प्रभाव विदित होने पर स्तुति करना।

शिव के दशावतार का वर्णन—काल, तार, भुवनेश, षोडश, भैरव, छिन्नमस्तक, धूमावती, बगलामुख, मातंग, कमलरूप धारण करना और शिवा के भी साथ साथ इन्हीं नाम से दस रूप होना।

रुद्र के ११ अवतार का वर्णन—देवों पर विपत्ति पड़ने पर कश्यप का तप करना और शंभु का उनके यहाँ ११ रुद्र रूप में अवतार लेना। देवों का स्तुति करना जिनके नाम—कपाली, पिंगल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शंभु, भव, रुद्र ये ११ रुद्र हुए। असुरों को मार कर देवों को सुख देना।

दुर्वासावतार—अत्रि का तप करने जाना, त्रिदेव का आना और पुत्र नाम का वर देना, दत्तात्रेय का अवतार होना, दुर्वासा शिव के अवतार हुए। बहुतों की परीक्षा करना और सुमार्ग पर लाना। अम्बरीष की परीक्षा वर्णन। राम व पाञ्चाली की परीक्षा वर्णन। राम की परीक्षा काल से बातचीत करते समय लक्ष्मण के द्वारपाल होने पर किसी के भीतर जाने का निषेध वर्णन और दुर्वासा के पहुँचने पर शाप देने का भय दे लक्ष्मण को भेजना और उनका देहत्याग वर्णन। कृष्ण को पायस शरीर में लगवा कर रुक्मिणी सहित दुर्वासा के पास पहुँचने को कहना, दुर्वासा का प्रसन्न हो वर देना। मुनि का स्नान करना व कौपीन नष्ट होने से जल में रहना, पांचाली का स्नान करने आना और अंचल फाड़ कर फेंक देना जिसे पहन कर दुर्वासा का निकलना और वर देना। दुर्वासा का क्रुद्ध हो स्नान करना, तीन गंधर्व कन्याओं का वहाँ आना और हँसना तथा दुर्वासा का शाप देना कि चाण्डाल कन्या बनो, स्तुति करने पर मलमास में पूजन से उद्धार होने का कथन।

गृहपति वर्णन—नर्मदा तट पर नर्मपुर नगर में विश्वानर मुनि शिव भक्त था। उसकी स्त्री शुचि का पति से शिव समान पुत्र माँगना। विश्वानर का काशी तपार्थ जाना और घोर तप करना। वीरेश्वर के मार्ग में शिव लिंग में शिशु रूप में प्रकट होना और विप्र से प्रेम वचन कहना और प्रसन्न हो वर देना, विश्वानर का

स्तुति करना, शिव का शुचिष्मती के गर्भ से जन्म लेना, देवों का स्तुति करना व बालक का पालन तथा विद्याभ्यास करना। नारद का दिखाना तो १ वर्ष के भीतर गाज पड़ने को कहना। गृहपति का माता-पिता को संतोष दे मृत्युंजय जाप करना। इन्द्र का वर देने जाना, उस का मना करना और इन्द्र का मारने को उद्यत होना, शिव का रक्षा करना, वर देना, दिक्पाल को दूसरा गृहपति वर्णन।

वृषभावतार—१४ रत्नों का वर्णन। देवासुर संग्राम वर्णन, हरि का नारि को देख मोहना और उनके बहुत से पुत्र उत्पन्न करना, उनका उपद्रव करना और लोगों को सताना, वृषभ रूप में शिव का कुतल में जाना और हरि पुत्रों का युद्ध को सन्नद्ध होना, श्रृंगों से उनको मारना, विष्णु से युद्ध होना और विष्णु का हारना तथा स्तुति करना।

पिप्पलाद अवतार वर्णन—दधीचि का हरि को जीतना, सुर सहित हरि को शाप देना। सुवर्चा का देवों को शाप देना। उसने पिप्पलाद का जन्म। वृत्रासुर से देवों के हारने पर दधीचि के पास जाने को कहना, वज्र के लिये अस्थि लाने को उस वज्र से वृत्र का मारा जाना। सुवर्चा के सती होने से आकाश वाणी द्वारा रोका जाना और शिव का पिप्पलाद रूप में उसके गर्भ से अवतार लेना। देवों का स्तुति करना, तीर्थ जाते पिप्पलाद को पद्मा का मिलना, उसके पिता से कह कर विवाह करना। पद्मा के पास धर्म का परीक्षार्थ आना। पिप्पलाद की निंदा करना, पद्मा का शाप देना, धर्म का निज रूप में स्तुति करना, चार चरणों का युगों में विभाग वर्णन। पिप्पलाद का १० पुत्र उत्पन्न करना। शनि पीड़ा से दुखित होना व तब से शांति हो जाना।

महेशावतार वर्णन—शिव विहार, भैरव का गिरिजा को कुभाव से देखना, शिवा का श्राप देना, शिवा को भी भैरव का श्राप देना। इन्द्र का सगण शिव के समीप जाना। अवधूत रूप में शिव का इन्द्र से वातचीत करना। इन्द्र का वज्र मारना व उसका जलना। देवों का भयभीत हो स्तुति करना, वृहस्पति का आशीष दे वर देना। जीव नाम होना।

हनुमत अवतार वर्णन—राम को सहायता करना, सीता खोज, लंकादहन, सेतुबंध, सजीवन लाना, अहिरावण वध। सनकादि का विष्णुलोक आना, जय विजय के रोकने पर राक्षस होने का शाप देना। जय विजय के तीन जन्मों का वर्णन। राम चरित्र वर्णन। अगस्त्य—राम संवाद, शिव महिमा वर्णन व माया का उल्लेख। शिव भक्ति से राम का कृतार्थ होना। राम का तप करना, शिव का परीक्षा लेना व शिव राघव संवाद व प्रसन्न हो वर देना, सब देवों का आना। प्रभंजन-अंजना संवाद, हनुमान जन्म, बाल चरित्र

वर्णन। बाल रवि भक्षण, इन्द्र का वज्र मारना, रुद्र कोप होना व देवों का शांत करना, हनुमत को वर देना। बाल समय में ध्रुव आदि को जाना, आकाश में उछलना, ऋषियों का उपद्रव देख बल भूलने का शाप देना व राम के मिलने पर शाप मोचन होना, विद्या पठन व वालि सुग्रीव से मिलना व राम को सहायता देना।

वैश्यनाथावतार—महानंदा वेश्या का वर्णन, शिव भक्त होना, वैश्यनाथ महादेव का अवतार होना। महानंदा वैश्यनाथ संवाद वर्णन, रत्न कंकण के लेने की इच्छा करने पर वैश्य नाथ का देना और शिव लिंग देना। कुक्कुट का अग्नि में भस्म होना जिस पर वेश्या का अपार प्रेम था, वैश्यनाथ-वेश्या विहार वर्णन व अन्तर्धान होना। वेश्या को शिव पुर देना।

द्विजनाथावतार वर्णन—सुप्रताप राजा का वर्णन, ऋषभ प्रसाद पाना, उसको चन्द्रांगद राजा से कीर्तिमाली कन्या की उत्पत्ति, भद्रायुष से विवाह होना। शिव-शिवा का द्विज रूप में उसके पास जाना और बाघ से रक्षा करने को कहना, राजा का बाण चलाना पर कुछ असर न होना। द्विज की स्त्री को खा जाना। द्विज का राजा पर क्रोध करना, राजा का दुखित होना। ब्राह्मण से जो चाहे मांगने को कहना, उसका स्त्री मांगना, राजा का देना, शिव का प्रगट होना। भद्रायुष को वर देना। पार्षद बनाना।

यतिनाथ अवतार वर्णन—आहुक-आहुकी भिल्ल भिल्लनि वर्णन। भिल्ल के आने पर शिव का यति रूप में भिल्लनि के पास जाना। वहां ठहरना। घर छोटा होने पर भिल्ल का बाहर रहना और हिंसक जंतु द्वारा मारा जाना। भिल्लनि का सती होने के लिये चिता रचना, उसका शीतल होना, शिव का प्रगट होना, और वर देना व निज हंस रूप से नल दमयन्ती का संयोग कराने की प्रतिज्ञा करना जोकि भिल्ल के अवतार थे।

कृष्ण दर्शन अवतार वर्णन—नभग का गुरुकुल पढ़ना और भाइयों का दाय भाग न देना। ज्ञात करने पर पिता के देने का उल्लेख करना। पिता मनु के पास नभग का जाना, पिता का शिव आराधना करने को कहना। आंगिरस के यज्ञ में जाना व दो सूक्त कर्म कथन करना, यज्ञ का पूर्ण होना और बहुत धन देना और शिव का कृष्ण दर्शन नाम से उसके पास परीक्षार्थ आना। शिव का उस द्रव्य को अपना बतलाना। दोनों का विवाद होना और उसके पिता मनु को पंच बनाना। मनु का शिव का माल बतलाना और उनको विनती करने को कहना। नभग का प्रार्थना करना और शिव का उसे राजा बनाना व धन देना।

भिक्षुनाथ अवतार वर्णन—एक विदर्भ देश में सत्यरथ राजा का होना। शाल्व राजाओं का उसे रोकना। युद्ध होना व हारना, उसकी गर्भवती स्त्री का

भाग जाना। एक ताल पर पहुंचना। रानी के पुत्र होना व ताल में जल पीने जाना व ग्राह का भक्षण करना, शिव का भिक्षु रूप में पहुंचना। द्विज स्त्री का आना व पुत्र लेना। शिव का उसको पालने का आदेश करना। स्त्री का पुत्र के विषय में बात करना, शिव का कथन करना। शिव व्रत भंग करने से सत्यरथ का राज जाने का वर्णन। उसका पोषण वर्णन व स्वर्ण घट का पाना। नाम शुचि व्रत रहना। शिव भक्त होना। राज पाना।

निर्झरेश्वर अवतार वर्णन। व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र उपमन्यु का शिव भक्त होना। उपमन्यु को दूध का लोभ होना व मां से मांगना। जननी का कर्महीन होने का वर्णन, उपमन्यु को ज्ञान होना, उग्र तप करना। ब्रह्मा विष्णु कथन से शिव का वरदान देना। इन्द्र का शिव निंदा करना, और समझाना, व क्रोध कर भस्म डालना। सुरेश्वर रूप से शिव का वर देना व प्रसन्न होना।

जटिलाख्य अवतार वर्णन—गिरिजा का तप करना, पितु आज्ञा से शिव विवाहार्थ और शिव का विप्र रूप से गिरिजा के पास जटाधारी हो कर जाना व शिव निंदा करना, शिवा का असन्तुष्ट होना व दर्शन देना।

नर्तक नट अवतार वर्णन—हिमाचल के समीप नर्तकी बन कर जाना और विवाह में सुनाच जान प्रसन्न होना व द्विजेश में उसे भड़काना, तब सप्त ऋषि को समझाने को भेजना। द्रोणाचार्य के तप से प्रसन्न हो कर शिव का वर देना, अश्वत्थामा अवतार लेकर पुत्र होना, बाल सच लन में दक्षता प्राप्त, पांडव पुत्र वध व अर्जुन का पकड़ना। अर्जुन का तप करके पाशुपतास्त्र पाना। परीक्षित को गर्भ में नाश करने को अश्वत्थामा का बाण भेजना, कृष्ण का रक्षा करना। द्रौणी को शरण में भेजना।

किरातावतार—अर्जुन का बाण लेने के लिये तप करने जाना। पांडव कौरव द्रोह वर्णन। लाक्षा गृह, जुप, सभा आदि का वर्णन। पांडव वनवास वर्णन। शिव का अर्जुन से किरात रूप में शूकर के शिकार करने पर युद्ध करना व अन्त में प्रसन्न हो कर पाशुपति अस्त्र देना।

१२ ज्योतिर्लिंग अवतार वर्णन—सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, परमेश, केदार, भीमशंकर विश्वेश्वर, त्र्यंबक, वैद्यनाथ, रामेश्वर, नागेश, घुश्मेश्वर अवतारों का वर्णन।

गुजरात में दक्ष को शाप देने से मोचनार्थ सोमनाथ को स्थापन करना, चन्द्र कुंडनाथ का वर्णन, मल्लिकार्जुन—श्रीगिरि में, महाकाल—उज्जैन में दूषण राक्षस मारने के लिये। परमेश—विन्ध्याचल में प्रणवस्थल ओंकारेश्वर में प्रणव व परमेश्वर वर्णन। केदार—हिमालय के केदारनाथ में नर नारायण रूप धारण

करना। भीम शंकर—भीम को मारने के कारण लिंग स्थापन होना, वहाँ महानंद का स्थान था। (कम्पिला में) विश्वेश्वर—काशी में। त्र्यंबक—गौतम के यहाँ अवतार रूप गौतमी तट पर लिंग रूप में स्थापन। वैद्यनाथ—बिहार में। नागेश—दारुक वन में स्थापन। रामेश्वर—सेतुबंध पर राम ने स्थापना की। देव गिरि में घुस्मेश्वर शिव का लिंग है। सुधर्मा द्विज घुस्मा स्त्री का पुत्र शिव भक्त था, उसे सौतेली मा ने मारा जिसे जिलाने से व उसके लिंग स्थापन से घुस्मेश्वर नाथ नाम हुआ।

अष्टम खंड।

१२ लिंगों का वर्णन—आसाम में भीम शंकर (डाकिनी थल में) महीसागर पर सोमेश्वर, रुद्र महोच में, शुचि मति कुम्भेश, कर्दमेश ताज में, भूतेश, भीमेश्वर, लोकनाथ, त्रिनयन, बैजनाथ, व्याघ्रेश, भूतेश्वर ये १२ उपलिंग हैं। अन्य पूर्व के शिवों के नाम वर्णन। चारों युगों के शिव स्थापन का वर्णन। चित्रकूट स्थान वर्णन। मत्त गयेन्द्र शिव वर्णन। चित्रकूट चारों दिशाओं में शिव स्थापन, चित्रकूट में अत्रीश, कालिंजर में नीलकंठ, संकर्षण गिरि में कोटीश्वर, तुंगारण्य में पशुपति का स्थापन हुआ। अत्रि के तप से सब तीर्थों का आना व जल लाना। शिव का वर देना व शिव स्थापन होना। अत्रीश्वर महेश महिमा वर्णन। नर्मदा किनारे के सब शैल शिव हैं, वहाँ के शिवों का वर्णन। नंदिकेश्वर महादेव का वर्णन।

नीमसार में राम का लिंग स्थापन। हनुमान का रेवा तट पर शिव स्थापन करना और ब्रह्महत्या से छूटना। ब्रह्मा विष्णु को मोह होना व अपने को सर्वोपरि मानना, शिव को तुच्छ समझना। ब्रह्मा-विष्णु के आगे ज्वाला प्रगट होना, लिंग रूप से अनादि ज्योति का फैलना। सब का शिव लिंग की पूजा करना, किसी को उसका आदि अंत न मिलना। दोनों का अनेक देवी आदिका दिखाना और गर्व दूर होना। पृष्ठ २९०—३१९ तक।

द्रुपदपुरी में द्विजेश व कालेश्वर शिव स्थापन, पश्चिम ओर के शिव लिंगों का वर्णन व महाबलेश्वर शिव वर्णन, मथुरा में गोपेश्वर का कथन, द्वारकेश्वर स्थापन और गोकरण में महाबलेश्वर स्थापन होना। इक्ष्वाकु बंशी नृप को एक राक्षस द्वारा छलना और राक्षसी कर्म करना व द्विज बध से बंशनाश होना, महाबल शिव के पूजन से हत्या का दूर होना।

महाबल शिव महिमा वर्णन—उत्तर में ललिता देवी का ललितेश्वर महादेव का स्थापित करना रावण का शिर चढ़ाना व बरदान पाना। २ शिव लिंग पाना, मार्ग में मूत्र वेग होना, ग्वाला को मूर्ति देना, दो घड़ी लेने की प्रतिज्ञा कर पृथ्वी पर रखने से अतल लोक को जाना और फिर रावण से न उठना। चन्द्रमाल शिव महिमा वर्णन—पृ० ३२०—३२४।

उत्तर दिशा में पंच प्रयाग दक्षेश्वर लिंग नीलेश्वर, भद्रेश्वर, शंकर, होमेश्वर, चन्द्रेश्वर, अघोरेश्वर, लक्ष्मणनाथ तीर्थ में लक्ष्मण का क्षय नष्ट होने का वर्णन। शिव का लिंग रूप कारण वर्णन। सती शोक विछोह में मदनोत्कंठा वर्णन। गिरिजा के बीजों के पड़ने से तीर्थ बनना। हिरण्याक्ष पुत्र अंधक वध ने बड़ा तप किया था। फिर वर पा देवों को कष्ट दिया तब मारा गया व गण बनाया गया। यहाँ चक्रकेश्वर शिव लिंग स्थापित हुआ। दधीचि के पुत्रों का शिवव्रत भंग करने से शिव का शाप देना, दधीचि का तप करना और शाप छुड़ाना। वटुक होने का वर देना और विजयी बनाना। प्रजापति यज्ञ में भद्रक राजा की ध्वजा का गिरना, बटु का उसके भोज में उपस्थित होना और उनकी महिमा का बखान करना।

ज्योतिर्लिंग की कथा—दक्ष के पुत्रों को नारद का वैराग्य दिलाना। तब शाप देना और ६० कन्या उत्पादन करना, २७ कन्याओं से चन्द्र का विवाह होना। एक से प्यार करने और शेष को न चाहने से दक्ष को क्षयी होने का श्राप देना। चन्द्र विनय पर ब्रह्मा का प्रभासक्षेत्र (गुजरात) में ज्योतिर्लिंग की आराधना करना व सोमेश्वर कथा कहना।

मल्लिकार्जुन कथा—षट्मुख का परिक्रमा कर लौटना। पर गणेश को प्रमुख बनाने से रुष्ट होना व मल्लिकार्जुन में जाना। सब देवों का उन्हें मनाना। शिवशिवा का जाना। सब देवों का शिवलिंग को स्थापित करना।

महाकाल—उज्जैन में एक ब्राह्मण के ४ पुत्र शिव भक्त थे, एक दूषण नामक राक्षस का दुख देना व तप करना। उसे वर देना। अंत में उसे नष्ट करना।

महाकाल स्थापन वर्णन। चन्द्रसेन की शिव भक्ति वर्णन व लिंग स्थापन करना, गोपी सुत की इच्छा पूर्ण करने का वर्णन। नर्मदा महिमा वर्णन, विंध्य का मद वर्णन व शिव का दूर करना, अमरेश्वर शिव स्थापन, शिव शोभा वर्णन। केदारनाथ में नरनारायण का तप करना, शिव स्थापन। बद्रीवन वर्णन, कृष्ण का तप वर्णन तथा वर लेना। पृ० ३३५—३७३ तक।

भीम शंकर लिंग वर्णन—सह्यपर्वत पर भीम का निवास जो विराध राक्षस का पुत्र था जिसे राम ने मारा था, उसकी माता का रावण की कथा वर्णन करना जिसे पुष्कसी ने उससे कहा था। भीम का बदला लेने को तप करना, शिव स्थापन करना, ब्रह्मा का वरदान देना, भीम का देवों व विष्णु से युद्ध करना और विष्णु का हार कर लौटना, भीम को देवों का कष्ट देना भीम का शिव की भक्ति करना और शिव से युद्ध करके भस्म होना। उस भस्म से औषधियों की उत्पत्ति, देव स्तुति वर्णन, भीम शंकर का स्थापन, विश्वेश्वर लिंग वर्णन, शिव

ब्रह्मा विवाद वर्णन और ज्योतिर्लिंग रूप में उत्पत्ति, काशी में शिव स्थापन, शिव शिर हिलने से कर्णों गिरने पर मणिकर्णिका तीर्थ होना, प्रलय में सब डूबना व काशी को त्रिशूल पर रक्षा करना, शिव का मुख्य स्थान काशी मानना, पतिव्रता का शिव दर्शन से अद्भुत फल प्राप्ति वर्णन। पृ० ३७४—४०० तक।

शिव कृपण संवाद वर्णन; शिव भक्ति वर्णन व विश्वेश्वर महिमा कथन व काशी के अनेक शिव लिंगों का वर्णन, ब्रह्मदत्त को फल प्राप्त होना। त्र्यंबकेश्वर माहात्म्य वर्णन; गौतम का तप कथन व वरुण की आराधना करना, जल अक्षय-भंडार मांगना, निज स्थान के लिये और वर पाना।

शिव महिमा लिंग स्थापन—गौतम को मद होना व शिव का दूर करना गणेश का उपदेश देना; शिव गंगा आविर्भाव वर्णन। त्र्यंबकेश्वर माहात्म्य वर्णन। पृ० ४०१—४२१ तक।

वैद्यनाथ माहात्म्य वर्णन—रावण का तप करना, दो शिवलिंग स्थापनार्थ लेना, मद होने पर लिंगों का ग्वाल के हाथ से पाताल जाना और रावण से न उठना व मद-चूर्ण करना; फिर शिव स्तुति करने पर उठ जाना, रावण का अत्याचार वर्णन, देवों का दुख व निवेदन, राम का जन्म वर्णन, विवाह आदि व शिव कृपा से रावण वध वर्णन पृ० ४२२—४३२ तक।

नागेश लिंग वर्णन—दारुका राक्षसी का तप वर्णन; भवानी का वर देना, उसका देवों को कष्ट देना; उर्व मुनि का शाप देना। वैश्यपति की प्रार्थना पर शिव का उद्यत होना। वीरसेन का वर्णन; रामेश्वर वर्णन, स्थापन, माहात्म्य आदि कथन।

घुस्मेश्वर स्थापन, माहात्म्य वर्णन। घुस्मा का तप भक्ति व पुत्र वध वर्णन, शिव का उसकी रक्षा करने का वर्णन। पृ० ४३३—४४७ तक।

नवम खंड

शिव ब्रह्मांड रूप वर्णन व सप्त विवरण वर्णन। सुतलादि तीन लोक वर्णन, बलि पूर्व जन्म वर्णन, इन्द्राणी का क्रोध कथन व चिन्तामणि आदि का ऋषियों का पाना। तलातलादि पाताल तक वर्णन, उन लोकों में शिव प्रताप वर्णन। लोकों का विस्तार आदि वर्णन; नरक गति वर्णन। सप्त द्वीप वर्णन। भूगोल व जंबूद्वीप वर्णन। ब्रह्मराक्षस सद्गति वर्णन। चिता भस्म धारण फल, शबर, क्षत्रिय सद्गति वर्णन। भस्म माहात्म्य व भद्रायुष चरित्र वर्णन। दशार्ण देश के वज्रबाहु राजा की अनेक रानी थीं, बड़ी रानी के पुत्र होना व बहुत दुखित हो रोना, राजा का रानी व पुत्र को निकाल देना; पुत्र की मृत्यु, ऋषभ

का उसकी रक्षा करना, भद्रायुष का जीवित होना, शिव आराधना व तप करना। पृ० ४४८—४९३ तक।

रुद्राक्ष महिमा वर्णन। त्रिपुंड व भस्म प्रताप कथन। श्रवण कीर्तन और मनन महिमा वर्णन, शिव का अन्य देवों से उत्तम होने का वर्णन। हरि-विधि विवाद वर्णन शिव अनुग्रह विवाद निवारण वर्णन पृ० ४९४—५२४ तक।

दशम खंड।

शिव नाम महिमा वर्णन, सैामिनि व इन्द्रद्युम्न की कथा का वर्णन जिसने शिव नाम जप कर भुक्ति—मुक्ति पायी। प्रसीचित्त सार्थक नाम उज्जैन के ब्राह्मण की अधोगति का शिव नाम से दूर होना। पंचाक्षर 'नमः शिवाय' की महिमा वर्णन, भस्म के तीन भेद, भस्म धारण महिमा वर्णन व विधि तथा रुद्राक्ष विभूति कथन, भस्म लगाने से ब्रह्मराक्षस की सद्गति होने का वर्णन। भूलोक वर्णन व शिव आराधना कथन। पृ० ५२५—५५८ तक।

भुवर्लोक में भूत प्रेत निवास व शिव आराधना वर्णन। विद्याधर आदि का कथन, रविलोक वर्णन। चन्द्र का शिव आराधना वर्णन, अत्रि आदि का कथन, नक्षत्रों का वर्णन। पंच ग्रह, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और मंगल ग्रह वर्णन। सप्त ऋषि का ऋषिलोक में आराधना वर्णन। भुवर्लोक का वर्णन। महर्लोक व सत्यलोक का वर्णन। चतुर्दश मन्वंतर चरित्र वर्णन व शिव आराधन वर्णन। मनुवंश वर्णन, सूर्य के २ पुत्र व कन्या होना, सावर्णि का तप वर्णन। अश्विनीकुमार उत्पत्ति वर्णन। मनुवंश के मित्रावसु का वर्णन, सोमवंश कथन, सगरवंश वर्णन, गंगा उत्पत्ति, भगीरथ आदि का तप आदि वर्णन, रघुवंश वर्णन। पितृलोक वर्णन. उनका माहात्म्य वर्णन, विभ्राज वर्णन। शिव भक्ति व स्तुति तथा महिमा वर्णन पृ० ५५९—६१० तक।

एकादश खंड।

शिवरात्रि व्रत माहात्म्य वर्णन तथा शिवरात्रि व्रत विधि और उद्यापन का वर्णन। मृग-व्याध संवाद और मृग का शिव आराधना वर्णन, व्याध को ज्ञान होना व शिवरात्रि व्रत माहात्म्य कथन। शिवरात्रि व्रत से चाण्डालिनी की सद्गति का वर्णन। मित्र सहराजा और मदयंती रानी की कथा का वर्णन और शिवरात्रि व्रत का प्रभाव दिखलाना तथा सद्गति का वर्णन। शिवरात्रि व्रत से विमर्ष की सद्गति का वर्णन। पृ० ६११—६२८ तक।

प्रदोष माहात्म्य वर्णन, चन्द्रसेन व श्रीकर का व्रत करने से उद्धार। चन्द्रसेन-श्रीकर प्रभाव वर्णन। प्रदोष व्रत से, सत्यरथ के पुत्र धर्मगुप्त का जन्म। धर्मगुप्त के व्रत से सुख वर्णन। प्रतिमास के प्रदोष की विधि का वर्णन।

एकादशी माहात्म वर्णन। अष्टमी शिवव्रत माहात्म वर्णन। भैरवाष्टमी व प्रणव वाक्य प्रभाव वर्णन तथा विधि कथन। सोमवार व्रत वर्णन व विधान कथन। सीमंतिनी विवाह—वैधव्य वर्णन।

चंद्रांगद की कथा, तक्षक कथा। इन्द्रसेन व उसके पुत्र चन्द्रांगद का वर्णन। उसकी विद्या का प्रभाव। शारदा व्रत व उमा महेश्वर माहात्म्य। उमा माहेश्वर व्रत। स्तुति और प्रभाव कथन। पृ० ६२९—६८८ तक।

No. 253. Rahasalīlā by Mahīpati. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—9×4 inches. Lines per page—16. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1810 or A.D. 1753. Date of Manuscript—Saṁvat 1910 or A.D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Balabhadra Siṁha, Vansa kā Purawā, P. O. Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रहस्य मंडल लिष्यते ॥ श्री कृष्ण रहस्य लीला लिष्यते ॥ गणनायक गौरी सुवन विघन हरन भगवान ह्वै प्रसन्न पूरवहु सकल तुम्ह सरवज्ञ सुजान ॥ बानी ठकुरायनी जननि जन पर होहु दयाल। चरित कहो जदुनाथ के दीजै बुद्धि विसाल ॥ ललिता मातु प्रसन्न ह्वै दीजिय सब सुष मोहि। मन कम वचन विनोत ह्वै महीपति जांचत तोहि ॥ सिया सहित सिव ध्याइये चरन कमल सिर नाइ। अभिमत फल सुभ तुरत ही संकर देत बधाइ ॥ मारुत सुत रघुवीर प्रिय तुम सम धन्य न कोइ। ह्वै प्रसन्न वर दीजिये ज्यहि ते सब सिद्धि होइ ॥ तुम कृपाल संकट हरन करन सकल सुषखानि। महिपत सेवक तोर है महाराज वरदानि ॥ रामदुलारे राम प्रिय राम दूत सुषकंद। महिपत सुमिरत तोहि अब दीजिय परमानंद। निर्गुण ब्रह्म सगुण भयो जदुबंसिन कुल आइ। सो प्रभु चरित विचित्र किय निज मति बरनैा ताहि ॥

End—तें तो सषी निरलज भई मन मोहन को चकई सी फिराई। तोहि कहा उनको अब मोठि मैं केतो कहा बहुरो फिरि आई। मोहि अबै करि जानि परो कछु दीन्ह स्याम तुमको पहनाई ॥ सिंह के वोच जे स्यार परे तिनह अपनी पति जानि गंवाई ॥ सुन्दर स्याम के है रटना अब राधे जो राधे जो कंठ लगाई। तोहि बिना कछु नीक न लागै ज्यों बहु भोजन लोन बिनाई। हैं जो बेहाल परे नन्दलाल मिलैा तिनको चलिके सुषदाई। कैसो कठोर भई कब ते अब ऐसो कहा व्रषमान दोहाई ॥ मानिनि मान तजी उठि के सुनि दूति की बाति भजो सोहाई। मंजन के

तन पोष कसो पैमरि भूषन धारि पचाई। कंचन थार संवारि कै आरति ले ओ चलो पति को रिझवाई॥ माधो मिले मुसकाइ मनोहर हेत सो राधे को कंठ लगाई। करि कीड़ा गोपाल राधे सो पूछत भये कोन्हेउ बहुत बेहाल कहिय सो सुष दानिय॥ कैान सो बात कहो हम सुन्दरि आ पर मान कियो तुम पतो। देषि बैठि रहे तुम्हरो अब सेरि सो राधिका आवै अनंद बढ़ै तो॥ देषि बिलंब सषो पठई बेर तोन्हक दोन्ह घुमाइ तिन्है तो। बात हिय की सबै कहिय मन मे जो चाउ भरो होइ जेतो॥ सुनै राधिका के बचन कृष्ण रहे अरुगाइ। षेल हांसी मैं हारि कै धारै बात चलाइ॥ मास मासे शुक्लपक्षे तिथो ६ रविवासरे शुभ संवत १८१० रहस लोला समाप्त महीपति जन पोथी लिषा॥

Subject—इस रहस्य मंडली मे श्री कृष्ण राधिका प्रति हास्य बिलास का वर्णन है अर्थात् दानलोला, मानलोला आदि।

No. 254—Avatāragītā by Mādhavadāsa. Substance—Old foreign paper. Leaves—41. Size—$7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—42. Extent—1,155 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1898 or A.D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ayōdhyā Prasāda Miśra, Kaṭaila Chilavaliā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ अवतार गीता लिष्यते॥ सालग-राम चरित्र छंद॥ हे लंबोदर विनायकं सिद्धि दायकं। सुख प्रदयाकं दंतदंतो बदन बरनेत वेद बंदारिक सदा सुष कंद गिरिजानंद मम मति मंद तुम करुणा घनो मोहि देहु बुद्धि बिसाल बरनु राम कल कीरति घनो बंदौं मुकुंद पदारबिंद मुनिंद मन मधुकर करे॥ मंदाकिनी मकरंद चललाम संतत शिरधरे॥ जे चरन पंकज परस पावन उपल ते प्रमदा करी। जलजात संत सुजान कर भव सिंधु बिनु श्रम महतरी॥ गुण पेन मर्दन मैन शंकर शूलपाणि त्रिशूल हा॥ जगदंबिका पति जक्त पति योगोश पति निर्जर महा॥ शशि भाल व्याल कपाल माल विभूत अंग सुहावनी॥ मोहि देहु मत प्रयदात बरनौं राम कीरति पावनी॥ करि दाह मत गुरु वचन पावक दोष दुख दारिद हिय। अज्ञान तिमिर नशाइ चरण सरोज रज अंजन दिय॥

End—छंद—करिहीं अनेक प्रकार चरित उदार सुनि सुनि जन तरे। तुम बशहु अब मम धाम तन तजि सकल सुख निधि पग परे॥ मन होइ सालिक राम शरिता गंडको महं जाइकैं। तुम जगत तुलसो विटप होइ पुनि बसहु मम शिर आइकै॥ ते संत पूजहि मोहि तोहि समेत अघ अवगुन मरे॥ ते जाइहैं बैकुंठ

मानहु कोटि जय तप मख करै ॥ यदि सुनित वृंदा अव रिपु पावक भई तुलसी पाइकै। प्रभु भये सालिगराम सब जग तरैं पद परिक्षा नायकै ॥ दो०—योह इतिहास कहै सुनै छल तजि माधोदास। बिन प्रयास भव निधि तरैं करै विष्णु पुरवास ॥ ५६ इति श्री अवतार गीता प्रथम खंडे माधोदास विरचितं सालिगराम चरित्रे शिव जलंधर संग्राम वर्णनो नाम षष्टमोऽध्याय श्री कृष्णाराधाय नमः ॥

Subject—मंगला चरण व कवि परिचय पृ० १ से ६ तक—

ब्रह्म व जीव का वर्णन अद्वैत वाद के रूप में-पृ० ६ से १२

जीव गति व भगवद्भजन से मोक्ष उपाय व नरकादि का वर्णन पृ० १३—१६

भगवान के चैावीस अवतारों का वर्णन पृ० १६ से २२ तक

शालिगराम चरित्र व केशव भंग वर्णन, वृंदा की कथा पृ० २२ से २५ तक

देव व दानव युद्ध वर्णन व शक का जलंधर से हारना, रुद्र व जलंधर का युद्ध वर्णन—पृ० २६ से ३७ तक

विष्णु का देवताओं की रक्षा करना व वृंदा को वरदान देना। वृंदा का श्राप देना—पृ० ३७ से ४० तक इति

No. 255. Kavitta by Mādhava Prasāda of Teḍā (Unāo). Substance—Foolscap paper. Leaves—2. Size—7 × 4¾ inches. Lines per page—32. Extent—32 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Vāṇibhūshaṇaji, Rāe Bareli.

Beginning—माधवप्रसाद के कवित्त ॥ गनेश ॥

नाम लेत जाको काम पूरन सकल होत गोत जुरैं सिद्धिन के टरत न टारे ते।
सिंधु की तरंगन सी बुद्धि की तरंगै उठैं सुख को समूह बढ़ै सदन सिहारे ते ॥
माधव कहत महामंगल में राखैं सदा पारवती नंदन की बानि यहै बारे ते।
दहत कलेस लेस रहत न दारिद को मदन कदन सुत बदन निहारे ते ॥ १
प्रथम मनावै जाको चार वेद गावैं ताको तीनि लोक ताको है पताको जस वेष को।
कल्पतरु कामधेनु कामना बिहारिन को बालक उमा को सुखदायक महेश को ॥
चारु चंद भाल सोहै चन्दन विशाल माधो सरवस दायक सहायक सुरेस को।
बर बरदाता विद्या बुद्धि को विधाता शोभा सिद्धि को सदन सद बदन गनेश को ॥२
सिद्धि निद्धि दानी चारि वेदन बखानी तुही शंभु ठकुरानी गहे कठिन कृपानी है।
जाहे निराधार ताके तैं ही है अधार एक मही में उदार तोसी दूसरी न जानी है ॥
काली कमला तू माधो बानी विमला है सोस तारापति तारा तैं ही सारदा सयानी है।
दादि सुनि लीजै मोसों नैन करि दीजै सुनि पावक पसीजे तुही आदि महरानी है ॥ ३

End—ग्रजब ग्रनोखे ग्रनियारे वड़े बांके नए नीके नोकदार कर कहर करेरे हैं। पै न बादशाह के सिपाही सूर बीर दोऊ सामना परे ते किए घायल घनेरे हैं ॥ माधो मकबूल खूबसूरत सकलदार देखि नदनन्द ब्रजचंद भए चेरे हैं। कलमा कतल कर पढ़ जाहिल जहूर भए माहिल मजेदार माह नैन तेरे हैं ॥ ७ रसके उकोवे ए नुकोले नैन तेरे बीर तीखे बिन ग्रंजन हैं गंजन सरोज के। मोन मनमोचन सकोचन को सोम मानो सहज सिकारी मारी खंजन की फौज के। माधो मनमोहन के मोहन को मोहनी ए कुटुंब कुरंग पै लेवैया मनोरोज के। चाज से भरे हैं दोऊ मोज के करनवारे नायब हैं नेह के मुसाहिब मनोज के ॥ ८

Subject—गणेश वर्णन के २ छंद
शक्ति के २ छंद
बसंत के २ ,,
माह नैन के २ ,,

Note—माधवप्रसाद—जाति के ब्राह्मण सुवंस के वंशज, टेढ़ा जिला उन्नाव के निवासी थे। मनसाराम, संगमलाल, शंभुनाथ ग्रोर माधवप्रसाद सुवंश शुक्ल के वंशज थे। सुवंश ग्रोर शंभुनाथ का कविता-काल ज्ञात हो चुका है परन्तु मनसाराम, संगमलाल ग्रोर माधव प्रसाद का कविता-काल मालूम नहीं हुग्रा। माधवप्रसाद के केवल ८ छंद प्राप्त हुए।

No. 256. Devīcharita Saroja by Mādhava Siṁha Kachhavāhā, Rājā of Ameṭhī. Substance—Foreign paper. Leaves—64. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—1,920 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1918 or A.D. 1861. Date of Manuscript—Saṁvat 1934 or A.D. 1877. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ ग्रथ देवी चरित्र सरोज लिष्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ मूल कवित्त ॥ कंजन ज्यों बिरचे सुवास के वरन ग्रै विचित्र चित्त राये गनेस भाव भारे की ॥ रसना रसिक छितपाल हिये भूषन ग्रनूपरूप वस्तु मापे प्रकृति बिचारे की। सकति सुसंग ग्रंग लछना हमेस धुनि इच्छित सुमन रीति पूरे प्रीति वारे की। चाहें ठीक ठाठन ठिकाने वारो ठोर ताहि ग्राठो भुजा चाहें छाहें चार भुजावारे की ॥ कवि मंगला चरन करे है। सो मंगला चरन तीनि रीति को एक नमस्कारात्मक। (२) ग्राशीर्वादात्मक तीसरो वस्तु निर्देसात्मक ॥ सो वस्तु निर्देस्मक कवि मंगलाचरन करै है ॥ श्री गणेश जू को

कै कंज जोहै सुगंधत दवतदास के हृदय में वरन जो है अक्षर सो विरचे हैं॥ अर्थालंकारनुप्रास औा परमार्थयुक्त औा विचित्र जे मन हैं ते चित में राचे हैं॥ अर्थ मगनादिक अठ भांति भाल को रास विभावादिक राचे हैं

End—छप्पै॥ भूप जाय निज गेह नेह युत वीर बुलाये। सबकर कर सनमान देश पुन सुवस बसाये॥ शत्रु अत्र घर जीति मोत अति पोवन कीने॥ जो जेहि लायक देश अेष तिनके तस चीने॥ पाले पवित्र बहु पुत्र पुन अंतकाल सुरपुर गयो यह चरित देववारो विमल अघ सलोकन लोकन क्यो॥ कवित॥ वसु लिखि वप्र ग्रह रद गनेश साल जेठ सुदी दशमी छितिज वार जान कर॥ पूरब पुरान युक्ति जुक्ति के समेत रच्यों देवी को चरित्र पूरभर भक्ति मांगवर॥ कछ कुल अमल अमेठी राजथान आय काशी में प्रकाश कीनो चीनो महादेव घर॥ माधो सिंह महीपाल बाल अंबिका को सुष माल मान चाल भूर भजन प्रभाव वर॥ सोरठा॥ बिगरो यामें होय जो कविताई सो सुकवि दोष न एको जाय अपनो जानि सुधारियो। इति श्री कच्छ कुल कमल कलश माधो सिंह महीप विरचिते देवी चरित सरोजे देवी महात्मे मेधरिषि सुरथ नरेश समाधि वैश्य संवाद अभय वरदान अवति सोपाय राजा वणिक अहे गमननो नामः प्रसंग संपूर्ण शुभ संवत॥ १८३४ शाके १७९९

Subject—इस पुस्तक में प्रथम देवी की महिमा पुनः श्रृंगार नख सिख वर्णन कर माहात्म कथा, सुरथ वैश्य संवाद विस्तार सहित वर्णन की गई है।

No. 257. Ekādaśī Vrata Kathā by Mādhava Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—8 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—87 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Delapidated. Character—Kāithi and Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1907 or A.D. 1850. Place of deposit—Paṇḍita Sudarśana Pāṭhaka, Purā Gaṅgādhara, Village Ṭikariā, Post Office Gorigañj (Sultānpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुवेनमोनमः श्री हनुमते नमस्ते॥ रामसोरठा राम। देहै मोहि वरदान गौरी सुत भव भय हरन। माधो मति अज्ञान एकादशी बरनन करै॥ दोहा॥ पुनि बंदो त्रिपुरारि पद ससि सेषर बिकराल। पंचानन दस बाहु जुत मोपर होहु कृपाल॥

प्रश्न करो भगवान सों धर्मपुत्र हरषाइ॥ एकादसी चरित कहो मोहि समुझाई॥

End—सुनहि जे नर अरु नारि जान अजान निदान अति ब्रत फल दायक चारि माधव तिन कह देत है माधो दास सुजान अग्निहोत्र कुलमो

मधो संस्कृत मत सो ज्ञान माया प्रकटो हरी कथा ॥ इति श्रीमद अग्निहोत्री माधवराम विरचितायां एकादसो व्रत कथा समाप्तं सुभमस्तु ॥ दोहा ॥ सुकुल पक्ष वैसाष को षष्टी तिथि गुरुवार एकादसो उत्तम कथा पूरन भै सुखसार संवत १९०७ साके १७७२ सन १२५७ की साल मा

Subject—एकादशो व्रत की कथा।

No. 258. Madhō Rāma kī Kuṇḍalī by Madhō Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—90. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—28. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1880 Saṁvat or A.D. 1823. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāmajī Srivāstava, Rae Bareli.

Beginning—श्री गनेसायनमः श्री सरस्वुतेनमः श्री परमगुरुभ्नेनमः अथा लिख्यते माधो राम कुंडली।

सोरठा—करौ गजानन ध्यान जा महिमा जग जगमगो। होत बुध्य बल ग्यान संपत सहिति सरीर सुष १।

दोहा—जाके सुमिरे होत है निर्गुन तै गुनमान
ऐसे सुष गजवदन को करौ नित्य ही ध्यान २
है गनेस दायक अधिक देव गुठमति मोर
दया करौ चित लायकै हेरो मेरी वोर ३
धन गिरजा सिवनंद तुम जिहि पूजत सुरसंत
होत कामना सिध्य है वेद पुरान अनंत ४
माधो गनपत ध्याइ कै ल्यावो मन चित सुध्य
वे सब कारज करन है देन हार बल बुध्य ५
हैा अबूझ बूझो नहीं तुम लग मेरी दोर
गन नाइक वर देन कैा कलमै हो सिर मैार ६

End—सांगीत—भज रघुनंदंन सहित जनक तन अलप निरंजन है भव भंजन जन हित कारन देह धरी जिन अधम उधारन पतितन पावन नाथ अनाथ न स्वामी त्रभुवन संकर के मन वसत निसो दिन लंका दाहन असुर सघारन हरन भार महि सुरन उवारन कीन्ह महारन रावन सो तिन त्रिय गैातम तारन विपत विदारन काली नाथन कंस निकंदन संतन के प्रिय तेन भजो किन दीनन चंद गरीब निवाजनि निरधन के धन रूप बिनासन ते सुमरे सन जात पाप छिन माधो सन सुष जपत गजानन कहत वेद गुन सेस सहस फन सुफल न जीवन हर के

भजन बिन। प्रभावती भजले मन राम नाम रघुपत रघुराई। दीन के दयाल ग्रैसे मनका मत पाई। रैदास सदन सोरी कुल कौन कुछ बडाई। सुमरे ते राम नाम कीरत जग छाई वानासुर रावन कंस कीन्ही बरजाई अंतकाल तिनहु साजोज्य मुक्त पाई। जन लघुता मन भाई प्रहलाद अपनाई तिहि भक्ति बढ़ल हारे बल ठाढ़े जदुराई। जिन साचो लगन माधौ हर पदन सो लगाई तिन पाई प्रभुताई हर नाम सो बडाई। १ राम राम राम

Subject—१—२ गणेश स्तुति ग्रैार चित्र
देवी " " " पार्वती जी को स्तुति गंगा स्तुति, इंद्र स्तुति ग्रैार चित्र, चंद्र स्तुति ग्रैार चित्र, जमुना स्तुति ग्रैार चित्र, तुलसी जी की स्तुति ग्रैार चित्र; महादेव की वंदना ग्रैार चित्र, महावीर-स्तुति ग्रैार चित्र, गुरु वंदना। सीताराम की स्तुति ग्रैार निर्माण संवत, सूर्य देव स्तुति ग्रैार चित्र, धर्मराज स्तुति ग्रैार चित्र, चित्र प्रयाग राज्य का ग्रैार स्तुति, चित्रगुप्त की स्तुति ग्रैार चित्र, ब्रह्मा जी का चित्र, नर्मदा स्तुति ग्रैार चित्र, अयोध्या की स्तुति ग्रैार चित्र, मथुरा जी की स्तुति ग्रैार चित्र, द्वारका जी की स्तुति, काशी जी की वंदना; जगन्नाथ की वंदना; शेष जी की वंदना, चित्रकूट की वंदना, काल्पी की वंदना ग्रैार कवि का अपना निवास स्थान का परिचय, विष्णु की वंदना; राम लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ वर्णन, मत्स्य अवतार का चित्र, कच्छप अवतार का वर्णन, शूकर अवतार का वर्णन, हिरण्यकश्यप ग्रैार प्रहलाद का वर्णन, बलि बावन का वर्णन, परसुराम का वर्णन ग्रैार चित्र, रावण ग्रैार राम का वर्णन, जैन अवतार का वर्णन, श्री कृष्ण अवतार का वर्णन, निष्कलंक अवतार का वर्णन, तीर्थों की महिमा वर्णन, राम कृष्ण के अवतारों की महिमा, मथुरा जी की वंदना, अंत में राम में भक्ति रखने के लिए आग्रह ग्रैार राम भजन की महिमा का वर्णन।

Note—निर्माण संवत ग्रैार निर्माण कारण।

No. 259—Hari Rādhā Vilāsa by Māna. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—7 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1822 Saṃvat or 1765 A.D. Place of deposit—Ṭhākura Yadunātha Bābū Siṃhaji, Hariharapura, Post Office Chirwaliā, District Bahraich.

Beginning—नमो लसति पुरी पति चारु। दिन दिन सुख के सदन को ग्रनत मनो दुवारु॥ ५ ता हरि हरपुर नगर को कुसल सिंह भो भूप। जा सुत

संपति सो सुचित कोनो राज मनूप ॥ श्री कुसलेस नरेस के प्रगट भये सुत चारि। चारये मैयन की अगति जग जाहिर तरवारि ॥ छंद हरिगोत-कुसलेस के सुत चारि देह धरे मनो फल चारि ईं। सबु जोतबे कीं जगतु नर रूपो किधों तरवारि है। वे राम लछिन पुनि भरत सत्रुघन चारों मैातरे। कै चरन चारये धरम के नर बरन के मिस उदगरे ॥८

End—हरि राधा के भेद को के। कवि पावै पार। सकल जगत के तरन को भयो याइ मवतार ॥ रूपसिंह महिपाल के जय कारन कवि मान। सो कीनो ग्रन्थ वह लखि जानि है सुजान। इति श्री हरिराधा विलास ग्रंथ संपूरनं भवतु मितो सावन सुदो सतमो ७ गुरैा संवत् १८२२ ॥

Subject—राजवंश वर्णन—२-५ पृष्ठ

सभा का राधिका वर्णन कृष्ण से व्रज में गोपियों का वर्णन ६-१२

गोसाइन का वर्णन, राधिका का भेष बदल कर जाना कृष्ण मिलन ग्रैार लैाट कर सब के साथ जाना तथा संयोग होना, १३-१८

रहस लीला करना, मथुरा गमन व्रज में ऊधो को भेजना ऊधो व गोपी संवाद व उनका लैाटना १९-२९

व्रजवासियों का कुरुक्षेत्र जाना ग्रैार कृष्ण का सपरिषद् वहां याकर उनसे मिलना सत्यभामा राधा संवाद ग्रैार सबका लैाटना—३०—४२ इति।

Note—मान कवि हरिहरपुर (बहराइच) नरेश रूपसिंह रैकुवार क्षत्री के ग्राश्रित थे यह जाति के ब्राह्मण थे ग्रैार बैसवारे के रहने वाले थे सं० १८२२ में वर्त्तमान थे, मिश्रबंधु विनोद में इनका लिखा एक कृष्ण कल्लोल नामक ग्रन्थ बताया गया है। जिसका दूसरा नाम कृष्ण खन्ड भाषा है।

No. 260. Vartamāna Chaubīsī Pāṭha by Manraṅgalāla of Kanauja. Substance—Country-made paper. Leaves—201. Size—9½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—2,311 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of composition—Saṃvat 1887 or A.D. 1830. Date of Manuscript—Saṃvat 1959 or A.D. 1902. Place of deposit—Śrī Jaina Maṇḍira (Baḍā), Bārābaṅkī (Oudh).

Beginning—ग्रें नमः सिद्धेभ्यः। ग्रथ वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजा लिख्यते ॥ दोहा ॥ पलख लखत सब जगत के, रखवारे रिषि नाथ। नाभि नंदन पद पदम छवि, तिन्हें नवाऊं माथ ॥ १ ॥ सिद्धारथ कुल गगन के, पूरन निर्मल

चंद । ज्ञसला प्राची दिगन ने, सूरज तिमिर निकंद ॥ २ अकलंकित अंकित धरम भरम भजावन हार । परम शेष बाईस जिन, नमहुं करम भव कार ॥ ३ ॥ तुमसे तुमही जगत में, उपमा काको देउं । ज्ञान कला दीजै तनिक, पद पूजन करि लेउं ॥ ४ वर्तमान प चौवीस सो करुणालय जिन देव । तिनको पूजन करत हो रहत न भव की ठेव । ५ तुम जैन पाल तुम जैन ईस । तुम जैन पती बिसुवाहि पीस । तुम जयन पूज्य तुम जयन अंग । तुम जैनात्मा जीतो अनंग । ६ तुम अक्ष जीत तुम जीत काम । तुम जीत लोभ आनंद धाम । तुम रागजित तुमजीत द्वेष । जित शत्रुनाथ निर ग्रंथ भेष ॥ ७ ॥

End—इंद्र थके गणधर थके अरु भुजंगेस थकंत । जस बरनत जिन बरतनो नर किम पार लहंत ॥ १८ ॥ सो मैं मंद धिया कछू पिंगल को अधिकार । ना जानों जिन भक्ति बस कीन्हों यह निरधार ॥ १९ ॥ भूल कहीं अक्षर अमिल अर्थ अनर्थ जो कोय । ताहि सुधारो चतुर जन तुम उपगारी होय । २० ॥ नाक बिना बुधिना चतुर ना व्याकरण पढ़ंत । अलप मती मुझ जानिके क्षमो सकल मतिमंत ॥ २१ ॥

× × × ×

विषम थल सम होय शत्रु मित्रता विचारे । सुत अरथी सुत लहै निरधनी भरै भँडारै ॥ २२ ॥ रोगी होय अरोग्य सोग को भूमि विदारै । नीच कुली कुल लहै कुरुपी रुप सम्हारै ॥ २३ ॥ मन वच काय जो यह पाठ पढ़ै सुणावै सुनै नित । मनरंग लाल ता पुरुष को देखि इन्द्र होवै चकित ॥ २४ ॥

× × × ×

इति श्री वर्तमान चतुर्विंशति जिन पूजन संपूर्णम् । लिखतं रामदयाल श्रावग पल्लीवार कन्नौज मितो मगसर सुदी ५ सम्वत् १९५९ ॥ लिखयित लाल लखपत राय के पुत्र कनहीलाल जैनी अगरवाल बारहबंकी नवाबगंज ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—समुच्चय पूजा तथा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ पूज्य का विधान तथा मंत्रादि वर्णन ।

(२) पृ० ११ से पृ० १८ तक—अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर की पूजा ।

(३) पृ० १९ से पृष्ठ ६४ तक—संभवनाथ अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ, पद्म-प्रभु पूजा तथा चन्द्रप्रभु पूजा वर्णन ।

(४) पृ० ६५ से १०० तक—पुष्पदंत पूजा, शीतलनाथ पूजा, श्रेयांसनाथ पूजा, वासु पूज्य पूजा ।

(५) पृ० १०१ से पृ० १५० तक—विमलनाथ पूजा, अनंतनाथ पूजा, धर्मनाथ पूजा, कुंथनाथ पूजा, अरहनाथ पूजा, तथा मल्लिनाथ पूजा ।

(६) पृ० १५१ से पृ० १९२ तक—मुनि सुव्रतनाथ पूजा, नमिनाथ पूजा, नेमिनाथ पूजा, तथा पार्श्वनाथ पूजा।

(७) पृ० १९३ से पृ० २०१ तक—महावीर स्वामी, अंतिम तीर्थंकर की पूजा का वर्णन।

ग्रंथकार का परिचय—अंतरवेद माहशुभ देश। सुबस बसै अति आनंद भेस। तामें कनवज नगर विख्यात। तामें बसें लोग बहु ज्ञात॥ १॥

सो जानों सुभ थान हमार। तहाँ श्रावगी पल्लीवार। बसै इक्ष्वाक वंशतिन तना। कासिव गोत्र महा सोहना। २॥ गिरागक्ष धारी सब लोग। बलात्कार गण की संजोग। मूलसंघ धारी गुणवास। दिन अंबर धारी के दास॥ ३॥

× × × ×

तेहि ठाँव बसत हुलासो राय। अगरैया गोत्री सुखदाय। अह्न गोत्र जानौं यह ठोय। कासिव गोत्र ठेठ को होय। नंदन जुगल भये तिन तने। अग्रज लाल कनौजो भने। अनुज नाम गोविंद परसाद। निशदिन करत रहत अहलाद। तीन कनौजीलाल के नाम देवकी नारि। दया मई मूरति मनौ विधना करो विचार। ता कुक्षा में उपजे तीन। पुत्र सदा जिन पद लवलीन। प्रथम पुत्र मनरंग कहाय। दूसर नाम केसरी पाय। आनंद घन तीसर कह कहे। निशदिन जैन परायन रहे। इन बहुत मों मनरंगलाल। ज्येष्ठ पढ़े भाषा की चाल।

पाठ के बनाने का हेतु—

अब सुनहु पाठ को बनवन हेतु। तेहि नगर मांहि आनंद समेत। एक बसत सेठ खुशाल चंद। गोपालदास तिनके सुतव॥ × × × ×

तिन हम सों कही बात बुझाय। कीजे कछू जाकर पाप जाय। सुनकर तिनकी बानी रसाल। चित धारि बहुत आनंद जाल। जिन वर्तमान चैाबोस सार। तिन पायन की पूजा विचार। कीन्हो में नाना छन्दन ल्याय। आनंद सहित गुण गाय गाय।

निर्माण काल:—

संवत विक्रम राय को एक सहस सत आठ। और सतासी अधिक में पूरन भो यह पाठ॥ मगसिर महिना चंद्रपख तिथि दसमी गुरुवार। पढ़ो पढ़ावै अविकल जो पावें भवपार॥ इति।

Note—ग्रंथकर्त्ता कन्नौज निवासी मनरंग लाल कश्यप गोत्रीय, अगरैया वैश्य लाला कन्नौजी लाल का पुत्र था।

No. 261. Bahulā Vyāghra Samvāda by Māna (Simha) of Pawāra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—16. Extent—288 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1835 or A.D. 1778. Place of deposit—Paṇḍita Rām avatāra, Village Nogahān, Post Office Shahmau (Rae Bareli).

Beginning—पृष्ठ १३ से प्रारम्भ।

बहु विधि गोपिन्ह सषिन्ह सिषावा, बहुला हदै बोध नहिं पावा। गोपी सषी भेटि तब गाइ। बार बार उन बक्ष लगाइ। चलो धेनु तब व्याघ्र समीपा देषत सब पुर दुषित महीपा। गोपन्ह गहे बक्ष रुप पाइ। गिर गिरि परत बिकल अकदाइ। बहुला हुंकरि हुंकरि तब हेरै। सहत सोक अति सत्य न फेरै। छंद॥ छिति बदन अगिनि प्रकास मारुत सुरन्ह नावत माथ है। मम पुत्र रछहु सकल दिग्पति जानि निपटि अनाथ है॥ कैस बैठ चिंता करहु भक्षहु व्याघ्र ते बहुलै कहा। यह देषि अद्भुत अतुल मृगपति परम चकित होइ रहा॥ दोहा॥ सत्य कीन्ह तुम्ह सपत देह प्रान मय त्यागि। धन्य धन्य धरमात्मा व्याघ्र बदत अनुरागि। यह अपुर्व कैातुक तुम्ह कीन्हा। भयउ कृतारथ मैं तोहि चीन्हा। धन्य भूमि सो राज्य भवानी। सत्यवादिनी अह कल्यानी।

End—भीषम यह इतिहास सुनावा। भूप युधिष्ठिर सुनि सुष पावा। बारहि बार पितामह बंदे। मिटे नाथ मम पातक मंदे। पावन परम कहेहु व्रत यह। जासु कहे बिनु सुष संदेह। मान सिंह कबि द्विज अभिलाषा। देषि संसकृत कीन्हे भाषा॥ दोहा॥ कान्ह बंस कबि सिंह है नगर पवारे बास। छत्री छिति-पति भूप कुल आदिनाथ के दास। इति श्री भविष्योत्तर पुराने बहुला व्याघ्र संवादे इतिहास कथने सिंह बिरचित भाषानुबंध सुभमस्तु॥ संवत॥ १८३५ भाद्रे मासे सिते पक्षे दुतिया रवि बासरे॥ लिषिते रुप बिप्रेन कास्यपे ग्राम बासिनः पर्गना कठवारस्य अष्ट ग्रामस्य माजरा। दक्षिणे सोभिते दुर्गं उत्तरे तु जला-श्रितः॥ १॥ राम राम राम राम राम राम राम राम राम।

Subject—गोपियों के सषियों का समझाना, धेनु का व्याघ्र के पास जाना और सबों का दुषित होना। बहुला का सत्य पर दृढ़ रहना और बिनती कर व्याघ्र से क्षमा मांगना। व्याघ्र का अपना मुनि श्राप बर्णन, धेनु क्षीर महिमा व्याघ्र का गंधर्व रुप होना और परिक्रमा करके अपने लोक में चले जाना। बहुला का अपने घर जाना। भीष्म का बहुला गुण बर्णन, युधिष्ठिर का भीष्म से सत्य धर्म पूछना, गणेश चैाथ पूजन विधि, कबि की गणेश स्तुति, बहुला स्तुति।

गो सिंह सम्वाद पढ़ने से संतान वृद्धि निरोग्यता ग्रोर धन धान्य को वृद्धि का होना । क्षेत्र में पढ़ने से ध्यान सिद्धि, गोष्टो में पढ़ने से गो ग्रोर दुग्ध को वृद्धि, गृह में पढ़ने से बालक को वृद्धि, युधिष्ठिर का भीष्म को वंदना करना ग्रोर कवि परिचय ।

No. 262. Śṛiṅgāra Latikā by Māna Siṁha (Dvija Deva) of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—102. Size—6×4 inches. Lines per page—28. Extent—3,570 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rajā Lālatā Baksha Siṁhaji Tālukedāra, Nilagāon, Post Office Nilagāon, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः वसंत ग्रागम वर्णन ॥ ग्राजु सुष सोवत सलोनो सजो सेज पै ग्रशोक निसि बाकी रही पीछले पहर को । भड़कन लागो पैान दछिन मलक चारु चांदनो चहूंघा फिरि ग्राई निसि करको । द्विज देवको सों मोहिने कहूं न जानि परो पलट गई धैा कवै सुषमा नगर को ॥ ग्रोर मैन गति जति रैनि को सु ग्रोरै भई रति मति ग्रोरै भई नरको ॥ ग्रवतरण प्रथम जाग्रति ग्ररु स्वप्न को संधि मैं जो भयो हाल है ताहि कहि वसंत के प्रथम ग्रागम मैं कछु कछु ललित भये पैान ग्ररु चांदनी तथा कछु कछु बाढ़े मनो विकार को कहै है ॥ टोका ग्राजु सुष ॥ पद १ ॥ ग्राजु सलोनो कहै ग्राछो साजो जो सेज है तापै सोवत पोछले पहर को एक घरो निसि बाकी रहि गई तो ॥ पद २ ॥ ताहो समय दछिन को जो पैान है सो मलछ ह्वै भड़कन लागो कहै डोलिवे लागो तुरंत हो वसंत को ग्रागम है ताते मलछ कह्यो तैसेई निसि कर कहै । चंद को चांदनो षिलि गई सोवन समैं कछु नाहि जानि परत हतो ॥ पै न जानि परो कि कब कैान सी घरो का समैं मैं नगर को सुषमा कहां परम सोभा लटि गई । रैनि को जाति कहै डोर कछु ग्रोरै ह्वै गयो ग्ररु मैन को कहैं काम को गति ह्व कछु ग्रोरै ह्वै गई ॥

End—चित चाहि ग्रबूभ कहै कितने छवि छोनो गयंदन की टटको । कवि केते कहैं निज वुद्धि उदै यहि सोषी मरालन को मटको । द्विज देव जी ग्रैसे कुतर्कन मैं सब को मति योंही फिरै भटको । वह मंद चलै किन भोरो भटू मग लाषन को ग्रंषियां ग्रटको ॥ (टोका) ग्रब चलिवो वरनै है ॥ टोका ॥ चित चाहि ॥ १ पद वाकी मंद गति देषि कितने ग्रबूभ कहै हैं । कि यहि गयंदनि को कहै है हाथिन को छवि छोनि लीन्हो है ॥ २ पद ग्ररु केते कवि ग्रापनी वुद्धि के उदै सों कहै हैं कि यह मरालन का कहै हैं हंसन को सीषो है ग्रर्थ मरालन की गति यहि सोषी है ॥ ३ पद ॥ ऐसेई कुतरकन में सिगरे कविन

की मति थोंही भटको फिरे हैं ॥ जो कहो इनको गति नाहि सोचो तो अति ललित मंदताई याकी गति मों कहां सो आई। तापै कहे है वह मट्ट मंद कैसे नाहि चले वाके पगन मैं तो लाचन की आंखें अटको हैं। आपिन के भार सों वाके पग मंद उठैं चहैं। यासो व्यंजित भयो कि ऐसो जग मैं कैान है जो राधा जू के चरन को ध्यान मैं नाहि ह्वैयो करै है ॥

Subject—इस पुस्तक मैं कवि द्विजदेव की कविता शृंगार रस टीका की गई है इसमें वसंत आदि ऋतुओं का वर्णन है शृंगार रस वर्णन है।

No. 263—Śālihotra, by Māna Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—$10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—10. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṁvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Kaṇṭha (Unao).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा शालिहोत्र संग्रह लिख्यते ॥ चैा० ॥ हरें बहेरा आवरो आनै। जेठी मधु फिर बैद बखानै। दुइ दुइ पैसा भर सब लीजै कूटि पीटि कपरौ सब कीजै ॥ वासों पानी दीजै सानि । सात रोज लों कही बखानि ॥ दोहा ॥ इतनो इतनो दीजिये सात रोज लों प्रात। तुरतै लोहू मूतिबो मिटै कही मुनि बात ॥ अन्य चौपाई ॥ हरद इंद्रैारिन पीपर लीजै। दुइ दुइ पैसा भर इक कीजै। कूटि पीटि पानी मैं सानै। देहि भोर उठि बैद बखानै ॥

End—ब्रह्म विष्णु शिव आदि दै जितने इश्य शरीर। नासहि को धावत सबै ज्यों बड़वानल नीर ॥ जित ह्वै जैहै वासना तित ह्वैहै मन लीन। जग कहो कैसे करै जीव बापुरो दीन। मुक्ति पुरी दरबार के चार चतुर प्रतिहार। साधन को सत्संग अरु सम संतोष विचार। जब तब काहुहु तुम रच्यैा कज्जल कलित अपार तामह पैठि जु नीसरै अकलंकित सो साथ ॥ भूलि गयो रूप निज विधि तन सैां गयो। लोभ मद काम वस मोह जब हो भयो ॥

Subject—लोहू मूतने की दवा, कांवरि की दवा, सूतिका इलाज, जय चिकित्सा, सकरोट, मसाने की दवा, बेली, रसबेलि और सुख बद्धी की दवा। पृ० १—६ तक

निरोध की दवा, पेट फूलने की दवा, कुरकुरी, चांदनी, यमनी व मृगी, विद्रधि, बदषम भरे की दवा, अने की दवा, गिरे की दवा, पृ० ७—१२

तेज करने की दवा, जोगी खेल गोगिरे की दवा, बरसात की दवा, मसा की, फूलो की दवा, बतासा चूर्ण अन्त मैं फुटकर कविता पृ० १३—१८

No. 264—Śikhara Māhātmya by Māna Sudhāsāgara. Substance—Country-made paper. Leaves—285. Size—11¼ × 7½ inches. Lines per page—13. Extent—3,705 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1914 Saṁvat or 1857 A.D. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Oudh).

Beginning—ग्रों नमः सिद्धं ॥ श्री वीतराग जी सदा सहाय। ग्रथ शिषर महातम ग्रंथ लिख्यते मनसा सागर कृत ॥ छप्पै छन्द ॥

श्री संसेवित चरण कमल जुग सब सुष लायक। श्री शिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनायक ॥ ग्रनमित सुत्र उद्योत कर्म वैरो घन घायक। ज्ञान भाग प्रकास जासु पद सब सुष दायक ॥ ऐसे महंत ग्ररि हंत जिन सेवहु निसदिन भाव सौं। पावैा प्रमान ग्रविचल सदन वीतराग गुण चाव सौं ॥ १ ॥ दोहरा–ग्रर्हंत प्रभु को सुमिर कें, सिद्ध चरण चित लाय। ग्रष्ट कर्म मल त्यागि कें, ग्रष्ट महा गुण पाय ॥ २ ॥ सवैया—ज्ञानावर्नी कर्म के गये ते सब ज्ञान होत दर्सना वरणि गये घट द्रव्य पेषिये। वेदनी के नासै निराबाध गुण होत सार मोहनी के नासे सुद्ध चारित्र विसेषिये ॥ ग्रायु कर्म नासे ग्रावागाहन सुथिर होय नामक कर्म नाशै तें ग्रामूरतीक देषिये। गोतकर्म नासे तें ग्रगुर लघु गुन होत ग्रंतराय नासैते ग्रनंत विर्ज लेषिये ॥ ३ ॥ दोहरा—पंचाचार क्रिया धरै गुण पट तीस प्रमान। सो ग्राचारज नमन तै, पावै पद निरवान ॥ ४ ॥

End—सवैया—एक जिन राज शिव थान मन वच काय भाव से तो वंदै तेई सिव पद लहे है। सिषिर सुमेर सीस जिन सिव पद लह्यो ग्रौर हु ग्रसंख्य मुनि सुष्वभाय गहे हैं। ऐसो क्षेत्र नरक तिर्यंचगति कौन नासै जाइ तेई जीव जे ग्रचल पद जहे हैं। तातें इह जानि भव्य चित में विचारि ग्रब सिषिर कौं वंद्य निज भव सुधार लीजे हैं। दोहरा। सिषिर महागिरि वंदियै जब लौं घट में प्रान। नर भव को इहलाह है जानि सुधी मण ग्रानि। सिषिर महातम चरित वर पूरन भयो रसाल। हिरदै हरष वहु धारि कें लिष्यो सु मुन्नूलाल ॥ एक सहस्र नव सतक में चौदह ग्रधिक प्रमान। ज्येष्ठ शुक्ल तेरसि सुदिन शुक्रवार शुभ जान। ग्रपने पढ़ने ग्रर्थ कों सिषिर महातम ग्रंथ। पढ़त सुनत ग्रानंद बढ़ै सुष पावै ग्रति संथ। श्लोकन गिनती ग्रनै में लिषियो यह जान। दोय सहस ग्रह एक शत वत्तिस ग्रधिक प्रमान ॥ इति श्री काष्ठासंघे लोह चार्य विरचिते सिषिर महातम ग्रंथ मन सुद्ध सागरेना भाषा ग्रसेन संध्यायः ॥ शिषिर महातम ग्रंथ समाप्त ॥ लिषितं मुन्नूलाल श्रावक सोहनलाल पौत्र सुदयालचंद तस्य पुत्र, मुन्नूलाल

आपने पढ़न अर्थं लिखितं ॥ गजाधर लाल वेनादरे वाले इन्द्रजीत के बेटे तिनकी पोथी पर देखि के लिखा । मनसा—सागर कृत ॥ श्री वीतराग जी सदा सहाय ॥

Subject—प्रथम पीठिकाधिकार: मंगलाचरण, जिनादि वन्दनाएं, आग्रह के षट्दोषों का वर्णन, सेवन क्रिया, सभा वर्णन, समोसरन वर्णन । तीर्थ माहात्म्य, कूटनाम, कुलकर नाम, स्वप्ननाम, स्वप्नफल, लौकांतिक स्तुति, प्रथम तीर्थंकर का सर्व सिद्धकूट ऊपर मोक्ष गमन । सिद्धकूट द्वितीय तीर्थंकर का मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट दत्त धवलोपरि संभव जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट आनंद नामोपरि अभिनंदन जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूटो विचलोपरि सुमतिनाथ मोक्ष वर्णन । सिद्धकूट मदनो पर पद्म प्रभु के मोक्ष प्राप्त वर्णन । सिद्धकूट प्रभासो परि सुपार्श्वनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट ललित कूटोपरि चंद्रप्रभ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट सुप्रभास पर पुष्पदंत जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट विद्युतनामो पर शीतल जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट संकुलो नामोपरि श्रेयांस नाथ जिनके मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट मंदारगिरी परि वसुपूज्य जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट कुल भंजनोपरि विमलनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धिकूट स्वयंभू पर अनंतनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट दत्तवर धर्मनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट प्रभासोपरि शांतिनाथ मोक्ष गमन वर्णन । सिद्धकूट ध्यान धरोपरि कुंथनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । नाटक नामकूट पर अरहनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । संबलकूट पर मल्लिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । मुनि सुव्रत चरित्र वर्णन । प्रभवकूट पर नेमिनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । प्रकाश कूट पर नेमनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । प्रभवकूट पर पार्श्वनाथ जिन मोक्ष गमन वर्णन । श्रीमहावीर स्वामी चरित्र वर्णन । शिखिर महागिरि की वन्दना का आदेश ।

No. 265—Śriṅgāra Karitta? by Maṇḍana. Substance—Foolscap paper. Leaves—8. Size—$8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—32. Extent—192 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Kamalākāntā, Jimāso, District Rae Bareli.

Beginning—मानि सबै मनुहारि वधू मुसक्याइ हंसै अंगिया न उतारै । मंडन डोरि के छोरन हीं रिस के मिस ह्वै अंगुरी गहि डारै । लाल करैं अपनो मन भायो छुटी बनकैं अब हाथनि झारैं । कोकिल सी कुहकै बहकै ससकै सतराइ झुकै झिझकारै ॥ बातनि हीं कछु आजु सहेलिनु स्याम को रूप अमोलिक आंक्यो । पेंतें में मंडन बागो बनाइ कहू ते अटा चढ़ि आपुन झांको । उलहे सब अंग दुरावति प्यारी रहै न हियो हटक्यो चरु हांक्यो । उभै के हाथ उतै अंगिराति जंभाति इतै मुख चाहति ढाक्यो ॥

End.—एरी मेरी कौल की कली सी विकसति जब घुबरी बनाइ के दूं डोरी सों कसति है। उघरत लसत विराजि रहै यांहो छवि मंडन जराय को फुंदो सो वहसति है। सोरो ठौर जानि मेरे जान कामदेव जू को प्यारो पतो निसि जानि जाहो में वसति है। ऐसो कछु मोडी तेरी ठोडो है दहारि सी जु कबहुक पैठि दोठि नोठि निकसति है॥ जौन अंग देख्यो सो तो गढ़ि सो धरो है माई पैज पुरवनहार मंडन की साथ को॥ परम धरम दोसै ऊपर को धर नोचें धर सो रच्यो है मनमथ के सराथ को॥ मंडन सुकवि तेई उपमा विचारि कहैं जिनको भरोसो मति अगम अगाध को। छाती में उंचाई गरुआई ले ले आई सब छाटि छाटि कियो तेरो लांक टांक आधको। करो हो को सूंडि सा कहत पन देपे कवि एक कहै कदलि के रूपए है ओरे के। एक कहै हाथ को हथेरो को उतारि जैसो मेरे जान जानिए सुजान पन थोरे के॥ मंडन कहत है कै सरोके उमड़ि गए भोरे हैं × × × मनमथ गोरे के। हौं पै कहों मेरी प्यारो तेरी जांघ देख करि सोन पंभा हैं दोऊ रति के हिंडोरे के।

Subject.—गर्विता, लज्जावती, प्रेम गर्विता, प्रेम खंडिता और रूप गर्विता का उदाहरण। माननी मुग्धा, विरहिनी, मानिनी, और पतिव्रता का उदाहरण। पतिव्रता का मान वर्णन, सौभाग्यवती का वर्णन, शील वर्णन, मुख रूप वर्णन। आंख और भौंह की शोभा वर्णन, अभिमान वर्णन, जोग वर्णन। मोह वर्णन, दानवीर वर्णन, कीर्ति वर्णन, दयावीर वर्णन। करुणा रस वर्णन, वीर रस वर्णन, वीभत्सरस वर्णन, रौद्ररस वर्णन। हास्य रस वर्णन, भयानक रस वर्णन, शांति रस वर्णन। कुच वर्णन, अज्ञात यौवना का वर्णन, लंक वर्णन, जंघा वर्णन।

No. 266. Baitāla Pachisī, by Maṇikaṇṭha of Āzampur. Substance—Country-made paper. Leaves—59. Size—9 × 6½ inches. Lines per page—20. Extent—1,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1782 or A.D. 1725. Date of Manuscript—Samvat 1894 or A.D. 1837. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ पोथी वैतालपचीसी लिख्यते॥ गौरी गिरि गनपति गिरिस गुरु पद पंकज रेनु। विनय सीस धरि होत सब कारज सिद्धि सुखेन॥ चौपैया छंद॥ है आजमपुर विदित ग्राम। सुख संपति आनन्द धाम॥ भूमि तिलक सम अति उदार। वेद विदित बाढ़े प्रचार। जहाँ चारि वर्ने निज धर्म धारि। रथ नेमि चलत जो पथ विचारि। जप जोग जग्य नित

करत दान। नित ही सुनत घर घर पुरान ॥ दोहा ॥ अगरवार के गोत सुभ तेहि पुर बसे अनेक। गर्गबंश घर एक है विदित धर्म को टेक ॥ २ धर्म धुरंधर सील जुत भए भवानी साहु। मुदित जगहि लखि हित सदा धरि उर उपजत दाह ॥ ३ ॥ तिनके सुत तहं तोन मे लहुरे निरतन लाल। रूप काम सम काम तरु दाता दीन दयाल ॥ ४

End.—दे।०—साति सील के रुधिर को पिवत त्रिपित बैताल। उन दोन्हों बसु सिद्ध तब पाइ हरष भुआल। इति श्री गर्गबंस अवतंस नोरतनलाल कृतो वेताल पचोसी ग्रंथे पंचविसोध्याय ॥ २५ संमत १८९४ समै पैाषमासे कृष्णपक्षे त्रये दसो गुरुवासरे समाप्तम ॥

दे।०—पुर बहाबनों अतिरुचिर उदवंतसींघ जहं भूप। तहां बसत सेवक अतिथि सुख जुत परम अनूप। यह दसखत लोई लिख्यो सुमिरि राम सुख मुल। उत्तर दिसि गोमति निकट सर्ई दक्षिने कूल ॥ श्रीराम इति

Subject.—कविवंश वर्णन

राजा का जोगो से मिलन राजमय और वेश्याओं का भेजना, योग भंग होना, राजा से बातचीत, विक्रम का तेलिया को मारना, योगी का कर्म

तेली को लाश का कथा कहना, पद्मावती को कथा वर्णन

मंदरावती को कथा

वोरबल को कथा

सुरसुंदरी कन्या को कथा

श्रीदत्त और जैश्री को कथा

हरिदास को कथा, रजक को कथा, त्रिभुवन सुंदरी को कथा, वोरमदेव को कथा, सोमदत्त को कथा, सुकुमारियों को कथा, वल्लभदेव को कथा, लावण्यवती को कथा, सुछोमिनी को कथा, शशिप्रभा को कथा, जोमूत वाहन को कथा, उन्मादिनी को कथा, विप्रगुनाकर को कथा, धनवती का कथा, रूपसेन राजा और विप्रकन्या को कथा, रूपमंजरी को कथा, ब्राह्मण के चार पुत्रों और विप्रनारायण को कथा, हरिदत्त को कथा, चंद्रावती को कथा।

No. 267. Chhanda Chhappani, by Mani Rāma Misra. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—8 × 5 inches. Lines per page—17. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1829 or A.D. 1872. Place of deposit—Rāmadeoji Brahma Bhaṭṭa, Village Nunara, Mauzā Lamhā, District Sultānpore (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छन्द छप्पनी लिख्यते मिश्र मनोराम कृत । छन्द मालती सवैया । के परनाम फनीसुर कों गन आठ सरूप लगो लहि गाऊं ।

मगन तीनि गुरु (ऽऽऽ) लघुनग्गन (।।।) भग्गन आदि ग० ऽ।। पे लघु ०ऽऽ० लाऊ ॥

जग्गन बीच गु० ।ऽ।० रग्गन छोकहि ०ऽ।ऽ० सग्गन गो० ।।ऽ० लघु तग्गन ०ऽऽ।० पाऊं ।

चारि भले मनिराम भये मन ४ औ रस तो ४ नहिनो कवताउ ॥ १ ॥

अथ मगनादि कय वाम देवता फल कथनं । छन्द गंगोदक ग्रवों कयलो ॥ यथा ॥ तीनि गो मे धरा श्री मनौराम ला आदि ये अंबुदे वृद्धि का मानिये । बीच लारो सुनैा वह्नि है मोच को अंत जोसा बयारी भ्रमं जानिये ॥ अंत छौं तो सु आकास सुने फले मध्यगा जोरवो रोग को दानिये ॥ आदि गो भो शशी कीर्ति को देहला तीनि वेनाग आनंद को धानिये ।

End.—दस आठ सै उनतीस फागुन मास तेरस चंद को । कहि छन्द को यह छप्पनो कवि थप्पनो आनन्द को ॥ इति श्री अंबाराना मिश्र कात्यायनी इच्छाराम तनय मनोरामवर्न कला विरचिता छन्द छप्पनो समाप्त शुभ मस्तु ॥ लिखितं दुबे शालिग्राम ।

Subject.—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक-गण भेद, गण फलाफल तथा देवता, गुरु लघु लक्षण, गुरु लघु संज्ञा छंदोभंग, दग्धाक्षर

(२) पृ० ६ से पृ० २४ तक—वर्णवृत्त वर्णन ।

(३) पृ० २४ से पृ० ३० तक—मात्रावृत वर्णन ।

No. 268. Śālihotra, by Mani Rāma Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—495 Anushṭup Ślokas. Appearance old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1935 or A.D. 1878. Place of deposit—Mannū Miśra, Village Nilagāon, Post Office Nilāgaon, District Sītāpur (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शालहोत्र लिख्यते ॥ दो० । जै जै जै अम नयन रवि करी कमल के बंधु । करो कह केसरी करुना मुरति सिंधु ॥ १ ॥ विनती मैं कर जोरि के करौं धरौं सिर नाइ । बसौ सदा मम हृदय मह वानो

होहु सहाइ। २ विघन विदारन विपति के संपति के सुष दाय। मनोराम विनती करै चरन कमल सिर नाइ। पढ़त हृदय मह ज्ञान घन सुनत होत चित मोद। मनोराम कछु करत है भाषा वाजि विनोद। प्रथादौ तुरंग नाम उपलछन माह॥ सवैया॥ जेहि अस्व के बोच ललाट कै ऊपर भंवरी बरावरि जानि चहावहु। ताकह मेढ़नि सिंगी कहैं घर पावहु तौ अव राज नसावहु। कीरति हानि करै कुल ध्वंस नहीं कबहू जुरि अंग धसावहु। पूछै कोऊ कबहू कवि ते मनोराम तहीं ततकाल बतावहु॥ जा वाजी के होत है परे चरन मैं दोइ। अपने स्वामी को करै नास प्रान को सोइ।

End.—अथ तुरंगानांगति बरनन। दोहा॥ आदू जंगला जानिए टांघन औरौ गूढ़। आदू तुरंगी जानिए जंगला ताजो ऊढ़। पाचतो टांघन कहो गूढ़ जराई होइ। देसो दुगला जानिए संकर बरनो सोइ। चौ०। पचर संकर बरनो जानु। तैसा गौरी पद्हा मानि। दो०। प्रथम चाल सहगाम जो तेज गाम है सुक। गाम गाम है तीसरो मद्वाल्ह अति मुक। पाँचवा पंचई जानिये ए गा छठई होइ। रव को सतई कहत हैं जानत है सब कोइ॥ जवन देस के नाम ये चालु कही ये सात। सालिहोत्र ने सर्पभ्रि कै और कहत हौ पात। प्रथम मयूरी नाकुश, दूजो तैतिरि तीनि। चौथो कहत कुरंग को पंचई कहत है चौनि। उष्ट्रो मेषे छाग को छठहो सतहो होइ। और मंडूको कहत गति षद्दि को जानौ सोइ। गति येती बरनन करी सालहोत्र मति पाइ। अति आदर कवि जन करैं मनोराम गुन गाय। सालिहोत्रानुमते शुक्र मनोराम कृते एकादश विनोद ११ समाप्तम् शुभमस्तु श्री संवत १९३५ शाके॥ शाके १८०० आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम् शनि वासरे लिषितम् भोलानाथ पंडित॥

Subject.—घोड़ों के भेद, उनके लक्षण और रोगों की औषधियां।

No. 269. Saguna Pariksha, by Mani Rāma of Kāṇṭha. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1814 or A.D. 1757. Date of Manuscript—Samvat 1814 or A.D 1757. Place of deposit—Paṇḍita Yaśodānandana Tiwārī, Kāṇṭha, District Unāo.

Beginning.—की चोरु भरी पर्इ॥ की मरा सुत पैं। पथव भागो पनो वपरो चलै जा पुरव वतो॥ सनीचर के घरें बुधवार पावै॥ सुभ होइ॥ तौ भलो षबर ले आवै कोई॥ कौतन्हे के बेट होई॥ जीव लाभु है॥ रांगु टोपरा औ

चिगरै तैानन्हे के बेट मरै ॥ को गत घरी सुनीपे। को नन्हे को फोरी पादो पावे। वांगरै तो कैाउनो जारिक जुना कारैा ॥ × × ×

End.—पंछो मोदास बोलई। देवान दास बोलई। १ घकाल बरष हाई। १ लमकुर न लहाई। २—लछमी घागम बतवहा। २ बरष हनाफ होइ। ३ मीस्फन भोजन लया ३ स्कल सुष होइ। ४—चीत उपजावै। घस्त्री मालप होइ। ने इस्त्रो कोने बोलई। यगरें वो कोने बोले। १—मोत्रा दरसन होइ १ मनुषी यागाफ देखे। २ सुष संतोष होइ २ चोर घागिनि मइ ३ पहुनो घावई ३ राज पूर रद होइ। ४ घरथल मवारक हइ। ४ घर घगोना मइ। × ×

Subject.—ज्योतिष पर ग्रहों के संयोग से फल तथा शकुन परोक्षा।

No. 270. Saundarya Lahari, by Maniyāra Simha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9¼ × 5 inches. Lines per page—9. Extent—466. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1843 or A.D. 1786. Place of Deposit—Ṭhakura Naunihala Simha Seṅgara, Village Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ घथ मंगलार्थें गणपतिम् प्रार्थयेत्। जोत्यो जो त्रिपुर को रूपहर हरा हरा गर्व रूवंदान वदराज को। छलो बलि बलो हलो घनुज कमल कलो प्रभव प्रभाव भो विभव भव साज को ॥ सिद्द मनियार महि मंडन घसेस सेस सीस धरो कह्यो सिद्धि सिद्ध मुक्ति काज को। पायो देवता नर घमीष्ट बरदान मुद मंगल विधान ध्यान गणाधिराज को ॥ १

मंगलार्थं भवानी शंकरैा वंदे—शिवे शिवज्योति को उद्दोति को करनि होति तेरी कृपा दृष्टि सृष्टि रचना रचाय जाय। तो विनु सो सुमत्र: सुमतें रहित यातें घोर कहा होत तातें बातें न कहाय जाय। मनियार तोहि जपि प्रभो पालना प्रलय करत त्रिदेव भेव तेरो न जनाय जाय। पुन्य कोन नति मति मेरे मंद घति पंच के सकै प्रनति कैसे गुन गति गाय जाय ॥ २

घथ श्री भवानीचरन रेनुका वर्णयति—तेरे पद पंकज पराग राजे राजेश्वरी वेद वंदनीय विरुदावली बढ़ी रहै। जाकी किनुकाइ पाइ धाता ने घरंत्रि कियो जामें लाेक लोकनि की रचना कढ़ी रहै ॥ मनियार ताहि विष्णु सेवे रूर्य पोषत सों होस है कै सदा सीस सहस मढ़ो रहै। सोई सुरासुर के सिरोमनि सदाशिव कै भसम के रूप है सरीरनि बढ़ो रहै ॥ ३

End.—घथ श्री भवानी संबोधनामे वर्णयति—निधे निधि सदने जै निल्य स्मित वदने निरवधि गुन जै नीत निर्मल निधाने हैं। निःप्रपंचे निजानंद निर्भरे

निरामये जै निरज नयनिनि तिनि राधात ग्याने हैं ॥ मनियार निर्गत वचन निगमय निगमा गमामि मिवंदते निखिल सिद्धि दाने हैं । नित्ये निरात के निराकारे निर्विकल्प जैति निश्चल निशंके निष्कलंके निष्पमाने हैं । १०१

अथ श्री भवानी विनती कृत्वा स्तुति अर्पयति—जैसे वारि दीप दीप दीप को प्रकास कर भासकर मंडल को भारती ठनत है । बरसे घमंद धमी बुंद चहुं चंद ताहि मंजुलि जलनि अर्थ रचना गनत हैं ॥ सिंह मनियार अंबरासि ते निकासि वारि वाहि बरषत निज भावना भनत हैं । तैसे जग जननी तिहारी वचनन ह, तें वचन रचन को बड़ाई बरनत है ॥ १०२ ॥

अथ पुस्तकं पूर्णयति—रुद्रनैन सहित समुद्र वसु चन्द्रजुत संवत सुहात सुद्ध सर्व सुख खानी को ।

जेठ तिथि पूरन संपूरन दिनेस दिन महिमा भवानी सर्व सिद्धि फलदानी को ॥ सामसिंह सुत मनियार सिंह नाम कासी नगर निवासी विश्वनाथ राजधानी को । कामना कलपतरु फरो भरो वैभव ते ग्रंथ अवतरो श्री भवानी राज रानी को ॥१०३॥

इति श्री मनियार सिंह विरचितायां सौंदर्य लहरी टीकायां कवित्त निबंधे भाषायां संपूर्णम् ॥ शुभ मस्तु ॥ शिव भवानी दोहरा—सुंदरता लहरी भरो सकल सुखन की खानि । पढ़त सुनत तरिहैं सदा श्री विद्या वरदानि ॥ १

श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥ इति ॥

Subject.—

गणपति वन्दना, भवानी शंकरौ वंदना, भवानी चरण रेणु वर्णन, चतुर्वर्ग फल साधनार्थ भवानी वर्णन, सब देवताओं के फलार्थ चरण वंदना, मोहार्थ भवानी वंदना, कृपादृष्टि वर्णन, ध्यान वर्णन—छंद १ से ७ तक ।

मंदिर भवानी का वर्णन, अव्यक्त ध्यान रूपक वर्णन, कुंडली निरूपण ध्यान, चक्रोद्धार तंत्रराज वर्णन, सौंदर्य वर्णन, कृपाकटाक्ष वर्णन, मातृका न्यास कला भेद वर्णन, सरस्वती रूप वर्णन, ललिता स्वरूप ध्यान, कविता प्रदानार्थ ध्यान वर्णन, छंद ८ से १७ तक ।

निर्वाण, गणिका वशीकरण ध्यान, अर्धनारीश्वर, सर्पादि विष निवारणार्थ ध्यान, परमोदारता वर्णन, योग गम्य ध्यान, और प्रभाव वर्णन छंद १८—२४ तक भवानी चरण पीठ पूजा वर्णन, महा प्रलय समय में एकांतस्थली वर्णन, कर्म भक्ति भावे पूजा विधान, चरण कमल में भ्रमर रूप मन का निवेदन, भवानी अखंड सौभाग्य वर्णन, वैभव वर्णन, तंत्रराज प्रभाव कथन, मंत्र धारण कथन, भवानी शंकर एक रूप वर्णन छंद २५—३४ तक ।

जगदात्मा रूप वर्णन, आयां चक्रे भवानी शंकर वर्णन, विशुद्ध चक्रे देह में वर्णन, अनाहत चक्र में सब देह के भीतर दोनों का ध्यान, स्वाधिष्यान चक्र में वर्णन, मनिपुर चक्र देह में वर्णन, मूलाधारे चक्र देह में वर्णन, षट चक्र भवानी शिव नख ध्यान वर्णन। छंद ३५—४२ तक।

केश पाश वर्णन, मांग, अलकों का अग्र भाग, ललाट, भौंहें, नेत्र, और तीनों नेत्रों का वर्णन छंद ४३ से ५१ तक।

द्वैनेत्र वर्णन, फिर नेत्रों का विस्तृत वर्णन, भवानी की कृपा दृष्टि वर्णन; दृष्टि वर्णन, कर्ण भूषण वर्णन, दोनों कानों का वर्णन, नासिका और ओष्ठों का वर्णन छं० ५२—६२ तक।

दाँत वर्णन, महाप्रसाद वर्णन; वाणी चिबुक, ग्रीवा, कंठरेखा बाहु चतुष्टय, कराग्रभाग और स्तन मंडल का वर्णन, क्षीर धारा का वर्णन, त्रिवली वर्णन, रोमावलि, नाभि मंडल, कटि प्रदेश, नितंब, युगल उरु, जंघ व दोनों चरणाविंद का वर्णन, छंद ६३ से ८५ तक।

नमस्कारार्थ चरणाविंद वर्णन, पद पीठ वर्णन, चरण नख वर्णन, चरणोदक कथन, भवानी को गति वर्णन, समस्त नखशिख ध्यान वर्णन, पर्यंक वर्णन, पान पात्र वर्णन, ध्यान वर्णन, प्रभाव वर्णन, पतिव्रत वर्णन छंद ८६ से ९८ तक।

सर्वोपर तुरीय रूप वर्णन, भजन फल वर्णन, नाम संबोधन फल, स्तुति वर्णन, पुस्तक संपूर्ण रचयिता का स्थान, संवत, वंश परिचय वर्णन शिव भवानी का दोहा वर्णन छंद ९९—१०४ तक इति।

No. 271. Dharma Parīkshā, by Manōhara Dāsa Khaṇḍelawāla of Dharmapura. Substance—Country-made paper. Leaves—220. Size—$13\frac{1}{4} \times 6\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—11. Extent—3,327 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1705 or A.D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Oudh).

Beginning.—ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ धर्म-परीक्षा भाषा मनोहरदास कृत लिख्यते ॥ सोरठा ॥ प्रणमो अरिहंत देव। गुरनि ग्रंथ दया धरम। भव दधि तारण एव ॥ अवर सकल मिथ्यात भणि ॥ १। अरिहंत देव स्वरूप, जो नर जानि हमरा धरै ॥ सो नर मुक्ति अनूप ॥ वैर वेगि पंडित कहै ॥ २। गुरनि ग्रंथ महंत। जो नरपद पंकज नमै। सो नर करम दहंत ॥ मन वच काम संसै नहीं ॥३॥ जीव दया धर्म सार। और धर्म दुर्गति धरण। यह विन करनो छार। विविधि विषय पर सो करै ॥ ४

दोहरा ॥ देव गुर सुधर्म वन्दिकै जिन उपदेश कहंत । पढ़त सुनत उपजै सुबुधि । अनुक्रम मुक्ति लहंत ॥ ५ ॥ होनहार कारन मिल्यो । हीरामनि उपदेश । कारन विना न भव्य जन काज न है लवलेश ॥ ६ ॥ पंच सकल प्रेरक भये जानहु मन वच काय । सत्य पुरुष भाजा भई श्री जिनराज सहाय । × ×

End.—ज्ञानिवंत वही कुलवंत वही सीलवंत वही वृतधारी हो वही के वचन सुसति है । वही धनधारी वही तपसी विवेक कारी वही भवतारी वही जगत को पति है ॥ वही ब्रह्मचारी वही कीरति को अधिकारी वही सत वही शुद्धमती है । वाको बराबरि न कोऊ है जगत माहि ताको उर निरमल सुभग समकित है । ५८ ॥ सकल सभा धर्म सुन्यो विचार । मन में सुख पायो अधिकार ॥ पवन वेगि सुधि करके हिया । श्रावक के वृत मन वच लिया ॥ ५९ ॥ भयो हर्ष अति अंगन माहि । कहै मनोहर मन वच काय ॥ पवन वेगि जिन मारग भयो । छांड्यो मिथ्या समकित लयो ॥ ६० ॥ भकहि लागै शुभ वचन अभव्या नहीं सुहाइ । मूगन सींभै कोउ ह सो मन काल जलाय ॥ ६१ ॥ रार सोमहू कहत हीं सो तुम कीजै याद । अंत फुरैगो माहिलो ऊपर सब बादि ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ वरषट उगन हजार । बांभन छांड़ि मिथ्यात्व को । भये सरावग सार मन वच काया शुद्ध करि ॥ ६२ × ×

इति श्री धर्मपरीक्षा भाषा मनोहर दास खंडेलवाल कृतं सम्पूर्ण ॥ छंद संख्या ३३०० मिती श्रावन वदी ७ संवत १८७० पोथी लिखो जवाहिर सोभाचंद के बेटे ॥

Subject.—पृ० १ से पृ० १२ तक—मंगलाचरण तथा वन्दनादि ग्रंथ निर्माण काल—सत्रह सै पंचात्तरै, पोष दसै गुरुवार । शुभ वेला ग्रह शुभ लगन कियो महूरतसार ।

कवि वंशादि परिचय :—

कविता मनोहर खंडेलवाल सोनी जाति मूल संघी मूल जाको सांगानेर वास है । करम के उदैते धामपुर वसन भयो सबसों मिलाप पुनि सज्जन को दास है । व्याकरण छंद अलंकार कछू जाने नांहि भाषा में निपुन तुच्छ बुद्धि को प्रकाश है । बाई दाहनी न कछू समझै संतोष लिये जिनको दोहो ईजा एक जिनजी को आस है । सज्जन तथा दुर्जन के लक्षण । मुनीश्वर धर्म वर्णन । वैजयंती नगरी की शुभ शोभा का वर्णन । विद्याधर के वैभवादि के वर्णन के साथ उसके पुत्रोपत्ति । प्रियापुरी नगरी के राजा पवनवेग के वृति कारि का होना, पवनवेग का वन में जाना और वहां पर मनोवेग से मुलाकात होना । दोनों मित्रों में पवनवेग का मिथ्याती होना और मनोवेग का उसको सुमार्ग में लाने का उद्योग । पवनवेग का कारण वश अपने घर जाना और विलम्ब हो जाना । मनोवेग का अढ़ाई द्वीप में जिन पूजा करना ।

(२) पृ० २३ से पृ० २६ तक—कथा में जीव संबंधी वादानुवाद सुखदुख-विवेचन। जैन धर्म संबंधी अनेक सिद्धांतों का वर्णन। सम्यक् दृष्टि तथा मिथ्याती का भेद निरूपण, प्रीति का वर्णन, अनेक प्रकार के धर्मोपदेश सुनकर मनोवेग का अपने मित्र के संबंध में भव्याभव्य का विचार कराना, मुनि द्वारा उसको परितोष देना और बताना कि यदि तू पुष्पपुर (पटने) में आकर उसे धर्मोपदेश करेगा तो उसे सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा। मनोवेग का अपने घर जाना।

(३) पृ० २७ से पृ० ३६ तक—दोनों मित्रों का सम्मेलन तथा पटना पहुंचना, पटने की शोभा और वशिष्ठ वालमीकि के अनुयायियों की सभा, मनोवेग का अपने बहुमूल्य मणियों के मुकुट पर तृण और कंटक रख कर वाद सभा में पहुंच जाना और वहां रक्खे हुए ढोल को बड़े ज़ोर के साथ बजा देना और सिंहासनारूढ़ हो कर निश्चिन्त बैठना। ब्राह्मणों का आश्चर्य विप्रों का सिंहासन पर बैठने का निषेध और मनोवेग का उत्तर पड़ना।

(४) पृ० ३७ से पृ० ५२ तक—ब्राह्मणों से वाद करते हुए मनोवेग 'षोडष मुट्ठी न्याय की व्याख्या करना, उसकी न्याय संबंधी कुछ उक्तियां। मनुष्य और तिर्यंच का भेद। मूर्ख निन्दन, दस प्रकार के मूर्खों की व्याख्या के लिये दश कथाएं। रक्त पुरुष की कथा, मायाविनी स्त्री का चरित्र चित्रण और कामी पुरुष की दशा का दिग्दर्शन।

(५) पृ० ५३ से पृ० ५७ तक—दुष्ट पुरुष की कथा दुष्ट चित्त मनुष्यों की पराई सम्पति न देख सकने वाली कुबुद्धि और हित वचन को छोड़ कर विपरीतता को ग्रहण करने वाले दुष्टों की दशा।

(६) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—मूढ़ पुरुष की कथा।

(७) पृ० ६५ से पृ० ६६ तक—क्षुद्र ग्राही मूढ़ की कथा।

(८) पृ० ६७ से पृ० ८० तक—पित्त दूषित मूढ़ पुरुष की कथा, आम्र मूढ़ की कथा, क्षीर मूढ़ की कथा।

(९) पृ० ८१ से पृ० १०२ तक—अगुरु मूढ़ की कथा, चन्दन त्यागी मूढ़ की कथा, चार मूर्खों की कथा। चारों मूर्खों की अन्तर्गत कथाएं।

(१०) पृ० १०३ से पृ० ११० तक—ब्राह्मणों का मनोवेग की बातों की अवहेलना करना, पुनः उसका पुंडरीक की कथा सुना कर एक दोष से सब गुण नष्ट होने का कथन करना, राम कृष्णादि अवतारों में दोषोद्भावना, ब्राह्मणों का हार मान लेना और निर्दोष देव के खोजने का अभिवचन देना। इस प्रकार पवनवेग का लौकिक सामान्य देव को विचार पूर्वक सुना कर संशय दूर करने के लिये छः कालों का यथा क्रम वर्णन सुनाना। वलि की सच्ची कथा

सुनाना। हिन्दू पुराणों का पूर्व विरोध से भरे हुए बताना, अन्य स्थान में व्याघ्र का रूप धारण कर के और अपने मित्र को मार्जार का स्वरूप देकर ब्राह्मणों से विवाद करना, और वस्तु का सत्यार्थ स्वरूप कथन करने का विचार प्रगट करना।

(११) पृ० १११ से पृ० १२७ तक—ब्राह्मणों को मंडप कौशिक नाम के तपस्वी की कथा, उस तपस्वी का एक विधवा स्त्री से विवाह करके उससे एक अनन्य रूपा पुत्री उत्पन्न कर सपत्नीक तीर्थ पर्यटन को जाना और त्रिदेव, इंद्रादि अन्य देवता तथा मनुष्यादि में किसी का भी विश्वास न करके यमदेव को सौंप कर चला जाना, यम का उस कन्या में अनुरक्त होना, पुनः अग्नि का भी उस पर मोहित होना, यम का छाया को अपने उदर में धारण करना और एक दिन संयोग वश यम के स्नान जाते समय पवन के साथ सम्भोग कर के छाया का उसे उदरस्थ कर लेना, ब्रह्मादि द्वारा अग्नि की खोज, पवन का उद्योग।

(१२) पृ० १२८ से पृ० १३६ तक—पुराणों में से दो दोषों की कल्पना कर ब्राह्मणों की उन पर अश्रद्धा कराना, जिन धर्मानुसार रुद्रादि वर्णन मनोवेग का नग्न मुनि का रूप धारण करके तीसरी वादशाला में जाना, ब्राह्मणों का विवाद के लिये उपस्थित होना मनोवेग की प्रस्तावना।

(१३) पृ० १३७ से पृ० १५० तक—अर्जुन के गांडीव धनुष द्वारा पाताल छेद कर दश कोटि सेना सहित फणींद्र को निकाल लेना, कुम्भज का समुद्र शोषण, राम का सीता को खोजना इत्यादि को असंभव और तुच्छ बता कर वैष्णव धर्म का खंडन किया जाना, समस्त पुराणों का पूर्वापर विरोधों से भरा हुआ बतलाना।

(१४) पृ० १५१ से पृ० १५६ तक—मनोवेग का ऋषि वेष धारण कर अन्य वादशालाओं में जाना। पनस आलिंगन से पनस फल की उत्पत्ति और उसी से एक सौ पांडवों का उत्पन्न होना, सुभद्रा की चक्राव्यूह संबंधी कथा। 'यम' नामा मुनि की लंगोटी का तालाब में धोना और उसके मल की बुन्द पीने पर मेंढकी के गर्भ स्थिति की कथा, उस बालिका का भी पिता की लंगोटी के वीर्य गर्भ रहना, इन बातों से पुराणों में अनर्गल बातें दिखाना, व्यासोत्पत्ति रघुराजा की कन्या के गर्भ स्थापन की कथा।

(१५) पृ० १५७ से पृ० १८० तक—वैदिक ब्राह्मणों को निरुत्तर कर, जैन मतानुसार कर्ण राजा की उत्पत्ति की सच्ची कथा सुनाना, पांचवे द्वार से पटना में प्रवेश कर मनोवेग का अन्य वाद-शाला में पहुंचना, रामायण संबंधी कुछ आक्षेप, राक्षस और वानर वंशों की मीमांसा छठवें द्वार से प्रवेश कर अन्य वाद-

शाला में 'दधिमुख' वर्णन तथा रावण द्वारा अंगद के किये गये दो टुकड़ों का हनुमान द्वारा जोड़ा जाना, इत्यादि कथाओं को असंभव सिद्ध करना।

(१६) पृ० १८१ से १८८ तक—वेदों के अपौरुषेय होने में संदेह, यज्ञ का निषेध, दीक्षादि अन्य कार्यों का निषेध, श्राद्ध इत्यादि पर आक्षेप।

(१७) पृ० १८९ से पृ० २०२ तक—अन्यमतों की दुष्टता श्रवण कर उनके प्रचार का कारण पवनवेग द्वारा पूछा जाना (छहों कालों के इतिहास का सूक्ष्म वर्णन)।

(१८) पृ० २०३ से पृ० २०५ तक—दोनों मित्रों का जिनमति नामा मुनि के पास बैठना, और मुनि का स्वयं उसका परिचय दे देना, तथा उसके मिथ्यात्व दूर हो जाने का कथन करना।

(१९) पृ० २०७ से पृ० २१० तक—मुनि द्वारा श्रावकाचार में पांच अणु व्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षा व्रत इस प्रकार बारह व्रतों के ग्रहण का वर्णन।

(२०) पृ० २११ से पृ० २१७ तक—द्वादश व्रतों के अतिरिक्त और भी कई प्रकार के नियम श्रावकों को भक्ति पूर्वक पालने का आदेश तथा वर्णन, ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, सम्यक्त की विशदता का वर्णन पवनवेग के जैनव्रत धारण से मनोवेग का प्रसन्न होना।

(२१) पृ० २१८ से पृ० २२० तक—ब्राह्मणों का श्रावक होजाना, मूलग्रंथकार का परिचयः—

मुनि अभिमत गति जान सहंस इत पूरव कही। यामें बुद्धि प्रमान भाषा कीनी जोरिके। काल—विक्रम राजा कूं भये सत अधिक सुहजार। वरष तवै यह संसकृत भई कथा सुभ सार।

ग्रंथकार के निवास स्थान तथा वहां के निवासियों के विषय में कुछ कथनः—देस दादुरो परवत तलो। तहां आमपुर सोभा भलो। × × × तहां सरावग नीके सुखो। करम उदै काई है दुखो॥ × × × तिन मधि बचे दरबि आसु जेठो साह। लेहि धन लाह॥

दुर्जन कोई धरिन घरे। करमन तें सोई विधिकरै।

घनो बात को करैं बड़ाइ। नगर सेठि है मन वच काइ।

दोहा—जेठ मल्ल सुत विधीचंद दाता दीन दयाल।
सज्जन भगता गुण अधिक दुर्जन छाती साल॥

× × × ×

बनारसो जेठ मति सागर प्रथी प्रसिद्ध कोटिन को धनो ताको पाप उदै आयो थो। सदन सो निकसि अजोध्या को गमन कियो अजोध्या के सेठि बहु उद्यम करायो थो ॥ अपनी बराबरि करि नाना भांति सेती दैकरि वहांई निज थानक बनायो थो। ऐसे हम अस्व साह सबै निज बाह दै कें कहै मनोहर हम पुन्य जोग पायो थो ॥

दो०—सो तैा पहुंचे सुभगतो बाजे सुभग बजाय। विधोचंद सुख भोगवै धर्म ध्यान चित लाइ ॥

हीरामनि उपदेश ते भयो शास्त्र शुभ सार। दुष्ट लोग कोऊ मति हसो हिरदै धरिजु विकार ॥ रावत सालि वाहण आगरे को बुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पोयो है। जगदत्त मिश्र गैाड हिसार को वासो सुभ विद्यावल जग मैं सार जस लोयो है। बेगराज पंडित ब्राह्मण मांहि जोतिष का पाठो सरस्वती वर दियो है। इतने सहायक भए दोहो जिन राज जु की तब ते विचार करि भाषा बुद्धि कियो है।

Note.—यह 'धर्म परोक्षा' नामक ग्रंथ सोनो जाति के खंडेलवाल वैश्य 'मनोहर दास जी की रचना है। यह मूल निवासो सांगानेर के थे ग्रैार पोछे धामपुर में आकर रहने लगे ग्रैार वहीं उन्होंने इस ग्रंथ को रचना की। यह मुख्य ग्रंथ संस्कृत में है ग्रैार उसके रचयिता हैं मुनि 'अमित गति' इसकी रचना उन्होंने (विक्रम राजा हू के भए सत अधिक सुहजार) १००७ वि० में की। कहा जाता है कि इस अनुवाद के अतिरिक्त इस ग्रंथ के तीन अनुवाद ग्रैार भो हुए हैं—एक गद्यानुवाद जयपुर के चैाधरो पन्नालाल जो ने किया है, एक मराठो में श्रीकृष्ण नन्दराय जोशो ने किया है। ग्रैार तीसरा गद्यानुवाद पन्नालाल जो वाकलीवाल ने प्रचलित गद्य में किया है—इन महाशय ने भूमिका में प्रस्तुत ग्रंथ के संबंध में अपनी सम्मति दी है कि इसमें मनोहर दास जो ने अनुवाद करने में पूर्ण स्वतंत्रता से काम्य लिया है ग्रैार कहीं कहीं अपनो ग्रैार से भी घटा बढ़ा दिया है। ग्रंथ के अन्त में अनुवादक ने अपने मित्रों तथा सहायकों को भी एक सूचो उपस्थित को है। जो यथा स्थान उद्धृत कर दो गई हैं। कविता साधारण श्रेणो की है। पन्नालाल जो वाकलीवाल ने मूल संस्कृत ग्रंथ का निर्माण काल—१०७० वि० बताया है—जो हो, इस ग्रंथ के अन्तिम पृष्ठ पर दिये हुए पद्यांश से तो १००७ हो प्रगट होता है। सम्वत् १८७० वि० में शोभालालात्मज 'जवाहर' नाम के किसो व्यक्ति ने इसे लिखा है। इति

No. 272(*a*) Jñāna Mañjarī, by Manōhara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—13 × 7½

inches. Lines per page—17. Extent—413 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition —Samvat 1716 or A.D. 1659 Place of deposit—Ṭhakura Naunihala Siṁha Seṅgara, Kāṇṭha, Unāo.

Beginning.—श्री परमगुरुभ्योनमः अथ ज्ञान मंजरी लिख्यते। दोहा। आत्म के अज्ञान ते सबै उपजे जाग। ज्ञान भये ते लीन सब नमस्कार तेहि मान ॥ १ ॥ कवित्त ॥ प्रथम मुकत कहि दूसरे मुमुछ सोई। तीसरो विषई चैाथो पामर विचारो है। चार पुरुष संसार माझ कहे निरधार बंधन मुकत दार मुकत तो न्यारो है। बंधन ते छुट्यो चाहै मुकत को जो उमा है। सोई तो मुमुछो चाहे मोक्ष निरधारो है ॥ भोग विषै सुष चाहे सोई तो विषई कह्यो है पामर सो पेट भरि मेहरा पियारो है ॥ २ ॥ प्रश्न दोहा ॥ वेद कामना कैान परि हम सैा कहि सो भाष। यथा अर्थ है वेद को गोप कछू जिन राष ॥ ३ ॥ उत्तर ॥ वेद सबै त्रैकांड है कर्म उपासना ज्ञान। मुकत परि कैाउ कांड नहिं सोहे ब्रह्म-मान ॥ ४ ॥ विषई परि नहि कामना। भोग को साधन नाहिं। नासवंत सब भोग है। झूठे सुषता माहि। तात्पर्य सब वेद को एक मोक्ष परि जानु। भोग है लोक परलोक के तापरि नाहि बषान।

End.—गमाझ यो जो जिय ॥ ९५ ॥ संवत सत्रह से अहो वर्ष सोरहे माहि। बैसाष मासे शुक्ल पक्ष तिथि पूनो है ताहि ॥ ९६ ॥ सोरठा ॥ भाषा ग्रंथ कहि यह सबै वैषरी वाक है। परापश्यंति जेह मध्यमा पीछे पाइय। ९७ ॥ कवित्त ॥ अपैारुषी बानी वेद। अद्वैत है ब्रह्म जामे। द्वैत तामे भेद नाही। एक रूप सब है॥ ताके है स्वरूप परापश्यंति है मध्यमा सो। वैषरी अनन्त रूप चारि वेद जब है ॥ तामे है सो काम तीन कर्म उपासना सोई ॥ ज्ञान कांडनी जो ज्ञान औरस को तब है। रिषि बानी लिये ज्ञान तेई तो अद्दे प्रमान ज्ञान लिये नर बानी भेद कह्यो कब है ॥ ९८॥ दोहा ॥ त्वं पद देव त्रिज करिय ॥ नर किंनर सब जान तत पद ईश्वर देव सब। त्वंतत्त्वत् त्वंमसमान ॥ ९ ॥ मनोहरदास निरंजनी ॥ सो स्वामी सो दास स्वामी दास भयो एक सो महाकाश घटा काश ॥ १४०० ॥ इति श्री ज्ञानमंजरी नाम भाषा ग्रंथ कथनं। पूर्ण समाप्तम ॥ शुभं ॥

Subject.—वेदांत विषयक कर्म, उपासना, ज्ञान तीनो का वर्णन पृ० १

उत्तम मुमुक्षु, मध्यम मुमुक्षु मंद मुमुक्षु का वर्णन-पृ० २

ज्ञानी की श्रेष्ठता का वर्णन पृ० २—३

आत्मा की नित्यता, विविध वासनाओं का त्याग और उसको अनित्यता का वर्णन प्रकृति वाक्य और वेदांत वाक्य का वर्णन अहंब्रह्म, तत्वमसि वाक्य का वर्णन पृ० ४—५

प्रकृति वाक्य का वर्णन, जीव, ब्रह्म के एकत्व से मोक्ष का वर्णन, वैराग्य, विवेक षट संपत्ति और मोक्ष की इच्छा की साधना का वर्णन पृ० ५—६

अभ्यास का महत्व और उसका वर्णन, अभ्यास का दृष्टांत, अरावता का दृष्टांत, अर्थवाद उतपत्ति, सिद्धान्त, संप्रज्ञात समाधि, असंप्रज्ञात समाधि, समाधि के षट भेद पृ० ६—१७

विकल्प अविकल्प भेद, हृदय के तीन प्रकार, बाहर के तीन प्रकार पृ० १७-१९

समाधि का फल, वृत्ति का वर्णन, तीन प्रकार की वृत्तियां। अजहत जहत और जहत अजहत लक्षण का वर्णन। पृ० १९—२३

No. 272(*b*) Jñāna Vachana Chūrṇikā, by Manōhara Dāsa Niranjani. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—488 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha Seṅgara, Kāṇṭhā, Unāo.

Beginning.—अथ ज्ञान वचन चूर्णिका लिष्यते ॥ दोहा ॥ रवि गुर दोय सम तुल्य पूज्य है तम अज्ञान करैं दूरि। जग उर में प्रकास करि बंदन को निज-मूरि ॥ १ ॥ जीवेश्वर चैतन्य में कहिय हैं द्वैनाम ॥ सर्वग्यता अल्पग्यपुनि संसारी सुष धाम ॥ २ ॥ कर्म सहित पुनि रहित है सहित कर्म कह्यो जीव। संसारी ताते भयो रहित भयो सोई सीव ॥ ३ ॥ जीवेश्वर द्वै जगत में प्रगट कहै सब कोय। बाह्य दृष्टि विवेक बिन अंतर दृष्टि न होय ॥ ४ ॥ वचनका। एक चैतन्य में अज्ञानी वास्तव मानै। जीव ईश्वर द्वै ज्ञानी उपाधि भेद ते मानै। जीव ईश्वर एक चैतन्य में द्वै ॥ दोहा ॥ उपाधि भेदते लघु दीर्घ। लघु दीर्घ मुष भास। दृष्टांत, चक्षु प्रतिबिंब दरपन महि मुष चैतन्य एक प्रकास ॥ ५ ॥ माया दर्पन सम भई। अविद्या चक्षुसाम जोय। चैतन्य मुष सम एक ज्यो भेद भास नहि होय ॥ ६ ॥ जीवेश्वर द्वैभास है माया अविद्या भेद भेद भास के बाधते। चैतन्य एक कहै वेद ॥ ७ ॥ एक मेवाद्वितीयं ब्रह्मेति श्रुतेः एक अनंत अपार है पूर्ण सुधा समुद्र ब्रह्म कह्यो : इ आत्मा रह्यो न जननो उद्र।

End.—कर्म नाहीं ॥ वध्य ज्ञान की अधिकरण अंतःकर्ण है। स्वरूप ज्ञान अधिष्ठान सर्व को है। ता स्वरूप ज्ञान को कोउ अधिष्ठान नाहीं। ताही ते विद्या अविद्या की प्रकाशी है। सो जीवन मुक्ति की स्वरूप है ॥ ताते स्वरूप में ज्ञान अज्ञान दोउ नाही इति ॥ यह विद्या ज्ञान की अध्यकर्ण एक अविद्या अज्ञान की अध्यकर्ण है सु ऐक अंतःकर्ण मांही मिल्यो है चैतन्यता कैं जीव कहिये सु

अंतःकरण अज्ञान को कार्य है। सोई अज्ञान स्वरूप अज्ञानी कहिये ॥ सु आको स्वरूप को अज्ञान है ताही को विद्या ज्ञानवान चाहो जै। इति ॥ स्वरूप है सो विद्या अविद्या को विरोधी नाहीं ॥ सुवह्म कहिये। अरु अज्ञान तें अतोपहत क हुये अज्ञान ते उपहत जीव कहिये ॥ सो जीव अज्ञानी। सो ज्ञात्र अनी पहतता जानि वे को ज्ञानी।

Subject.—गुरु की वंदना, ईश्वर और जीव का भेद, ईश्वर और जीव की एकता, अनिर्वचनीयता, शक्ति के विशेषण और उसके दृष्टांत, उत्पत्ति (माया का तीनों शक्तियों के साथ मिलने से), जीव का त्रिगुणात्मक होना, काय प्रवेश से स्थायित्व, संक्लेश से संहार, ईश्वर कारण उपाधि जगत के करने का पृ० १—३

क्रियमाण कर्म का रूप, नित्य, नैमित्तिक और काम्य कर्म, प्रायश्चित्त कर्म निषिद्ध कर्म, उपासना, संचित प्रारब्ध और क्रियमाण तीन कर्म निष्काम कर्म वर्णन। पृ० ३—४

अष्टांग योग आसन, अष्टांग योग से ज्ञान और मुक्ति; पुन्य अपुन्य मिश्रित तीन कर्म जरायुज में चार प्रकार की प्रकृति अंडज उद्भिज में ईश्वरत्व पृ० ४—६

विद्या ज्ञान की उत्पत्ति, ईश्वरता की सिद्धि, कारण अविद्या, कार्य उपाधि, विद्या अविद्या का वर्णन—पृ० ६—९

ज्ञान की उत्पत्ति, कार्य और कारण की वाच्यता और विशेषण, उत्पत्ति काल कार्य प्रवेश पृ० ९—१२

सत और असत, विवर्तवादी, आरंभवाद, परिणामवाद, संघातवाद, पंचख्यात, आत्मख्यात असाधारणभूत अपंची कृत कार्य, स्मष्टिवाद, विश्व, शिव तैजस प्रज्ञात पृ० १२—१६

कार्य कारण उपाधि, ज्ञानी की जीवन मुक्ति चिदाभास, जीवाभास, देहकृते अभ्यास की निर्विवर्सि दृष्टांत आदि पृ० १७—२०

No. 272(*c*) Vedānta Bhāshā, by Manohara Dāsa Nirañjanī. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—538 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1777 or A. D. 1720. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha Seṅgara Kāṇṭhā, District Unāo.

Beginning.—सच्चिदानंदायनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥ कर्त्ता ग्रंथ करिवे में निविघ्न सुष चाहिहै ॥ दोहा ॥ मंगल दे मोहि देव गनेस। मंगल दे मोहि सरस्वती ॥

मंगल दे मोहि देव महेस ॥ मंगल दे मोहि पारवती ॥ ग्रंथ को प्रयोजन श्रर विषय कहिय है। चैापाई। श्रात्मज्ञान ते श्रोग न कोई। यह भाषत है मुनि सब सोई। लाभ श्रर्थ कवि करे बखांण। श्रात्म को ईश्वर करि जांण ॥ २ ॥ प्रश्नद्वारा ग्रंथ को श्रधिकारी दिषाइय है। प्रश्न शिष्य मनहि संसैयों श्राय। श्रात्म ईश्वर भिन्न सुभाय। श्रात्म श्रज्ञ ईश्वर सर्वज्ञ। कैसे एक है श्रज्ञ श्ररु तज्ञ। नियंता जग कर्त्ता है ईश। जीव श्रकर्त्ता सदा श्रनीश। क्यों श्रात्म परमात्म एक सो हमको कहि देव विवेक ॥ ४ ॥ वचन का यह तात्पर्य्य विषय त्रिपे जीवेश्वर को भेद श्रर्थ ग्रहण करिके श्रासंका करी सिष्यने। ताको लक्ष्यार्थ करिके समाधान करिवे को उत्तर देते हैं गुरु उत्तर ॥ चैापाई ॥ समाधान करै गुरु देव। चैतन्य एक श्रषंड श्रभेव। महावाक्य तहां करै बषाण। श्रात्म को परमात्म जाण। वाक्य श्रर्थ श्रनुभव तहां होइ। जा श्रनुभव में नाहीं दोइ।

End.—मनोहर दास निरंजनी करो सुभाषा सार। थोरो सो विस्तार नहि श्रर्थ सबै विस्तार ॥ ८५ सगुन करो कवीस्वरो कविन कछु नहि सोय। जाको बुद्धि विसाल है सब्झे ज्ञानी होय ॥ ८६ ॥ साधन कहिय है। कवित्त ॥ वार वार बूझै मन श्रर्थ सूझै सबै याकै। मुमुक्षु होइ सोई पावै गुर गमते। निंदा स्तुति तजै मानरु बड़ाई छोरि कपट लंपट मागें चित्ति पवै समते ॥ विवेक वैराग्य दोय सम दम श्रैार सोय उपरति तितिक्षा सुसरधा में रमते। समाधान मोक्ष में न श्रैार कछु समाधान ध्यान धरै रैन दिन राषै मन तमते ॥ दोहा ॥ संवत सत्तरासै महि सोरह वरष वीतोल। ज्यूष सत्रहैमहि करी षट मास श्राहि बितोल ॥ ८७ ॥ श्रासोज वद है चतुरदसी कृष्णपक्ष शनिवार। भाषा पूरन सब भई मान एक इतकार ॥ ८८ ॥ २८८ ॥ इति श्री वेदांत महावाक्य भाषानाम ग्रंथ कथिते मनोहर दास निरंजनी। संपूरन समाप्तम। श्रीरास्तु शुभम् श्रीपरमगुरुभ्येनमः।

Subject.—वंदना. ग्रंथ का प्रयोजन श्रैार विषय ग्रंथ का श्रधिकारी, शिष्य का प्रश्न श्रैार गुरु कृत उत्तर वर्णन किया गया है।

वेदान्त विषय बहुत स्पष्ट रूप से छंदो वद्ध कर के समझायो है ग्रंथ क्लिष्ट जान पड़ता है। बीच बीच में वेदांत के सूत्र दे कर उसका वाच्यार्थ स्पष्ट किया गया है।

No. 273. Kavitta by Manasā Rāma of Ṭeḍā, District Unao. Substance—Foolscap paper. Leaves—6. Size—7 × 4¾ inches. Lines per page—32. Extent—96 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bāmabhūshaṇaji Śukla, Rae Bareli.

Beginning.—अथ मनसा राम के कवित्त ॥
आछे मोर पच्छन के मुकुट धरे है सीस काछे कछनो का किए नोको भेष नट को।
चंद सा वदन चारु चन्दन की दीन्हे खौरि तैसा उर गुंजन को हार चारु चटको।
"मनसा" सुनत मंजु बांसुरी सबद मेरो दैारो मन जातरी रहै न नेक हटको।
हेरत हिये को हरि लेत हरि मोतिन सों वीर कहु को है वो अहीर पीतपट को ॥ १
नीरद नवीन स्याम तन अभिराम तापै बीजुरी सी छाजै छवि अंबर जरद की।
सहज श्रृंगार करे गुंजन को हार तैसो सुखमा अपार बढ़ी चारु गो गरद की।
इंदु मुख मनसा गुविंद अरविंद नैन कीन्हो गति मंद मंद गति सों दुरद की।
मंद मंद हंसि कै अनंद हो सों नन्द नन्द हद रद कीन्हो चन्द चंद्रिका सरद की ॥ २

End.—साजि गज वहल महहल जुटत जब जीतबे परदल चढ़त अवधेस है।
छलकत छोर निधि थलकत जल थल हलकत स्वरग सकात अलकेस है ॥
संडन उछोर भारे घन से पुकारे कारे होत दिग्दंतिन के मनसा कलेस है।
मसकत मही मूल कसकत कोलकुल धसकत धराधर ससकत शेष है ॥ २१
वैरिन की नागरी नेवेली अलवेली भागी कंचन की वेली सी सहेली कोऊ संग ना।
महाराज राम जू के डर ते डरानो बिल्लानो जिन्हें धावत में पावत तुरंग ना।
परे बिछुआन कतरे जे पग छाल बड़े मनसा बिलोकि तिन्हें को को भयो दंग ना।
मानो कंज खंडन की पाखुरी अखंडन मैं खंडन समेत बैठी हंसन की अंगना ॥ २२

Subject.—कृष्ण भगवान के ३ कवित्त, कुब्जा के २, देवीजी के ३, चंद्रिका के २, राधिका के नैन के २, हरतालिका व्रतावली पर २, नायिका वर्णन के २, श्रृंगार रस के ३, होली का १ और वीर रस के २.

No. 274. Nānā Artha Nava Saṅgrahāvalī by Mātādīna Śukla. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size—8×6 inches. Lines per page—24. Extent—1,400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1899 or A. D. 1842. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1847. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tālukedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswān, District Sitāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्रहावली कवित्त लिख्यते ॥ शान्त रसः ॥ बालवादी करै वादि रुदा पितु मातु तऊ भरै गोदन माहीं। कूर कसूर करै पसुभूरि तजै। तऊ पालक पालिबो नाहीं। हे रघुनाथ तिहारे ही हाथ अनाथ हैां दीन कहीं केहि पाहीं ॥ मैं जड़िता बांध तोहि तज्यों तजि मोहि बराबरि होहु

बृथाहों ॥ १ ॥ पाहन ते तैा कठोर नहीं शबरो गुह ते कहु कौन कुजातो । बानर गीध निशाचर तें जग मों नहिं मान कोऊ जड़ जातो । देषि अहेतु दया इनपै तजि लोचन बैठि रहीं दिन राती । दीन अनाथ तजौ रघुनाथ तो सो सम को बिसवास को घातो ॥ छन भंगुर अंग अभंग सरे तिय संग अनंग के रंग भरे । करि जंग तुरंग मतंग हरे रन जीति परे धन धाम धरे ॥ फिरि अंत असंत निहंग मरे हित के न कछू उपकार सरे । नहिं जानकी नाद का नेह करे जग मो जनम्यों जन नाहक रे ॥

End.—अथ मात्रोदिष्टः ॥ वृष्ट रूपकलानत्र पूर्वं युग्मांकमुल्लिखेत । लघूनाम परिप्राप्तो गुरुणांचाप्य पर्ययः ॥ गुरूणामुपरिन्यस्तैरंकैर्न्यैनान्वि-चक्षणः कुर्य्यादन्त्याक्षरान्ताङ्कन शेषे संख्यां विनिर्दिशेत् ॥ अथ मात्रामेरुः ऊर्ध्वादधेस्तल छेद्यं कोष्ट युग्मद्वयस्तः प्रियुग्मस्त्र चतुर्युग्म यावत्स्वेष्ट क्रमाद्धेः ॥ कोष्ठेषु विषमे माद्य वेकैमाहितः शिरोऽङ्कं तच्छिरोऽङ्काभ्यां मध्ये सर्वम्पूरयेत एकः सर्वं लघुर्भेदस्त्वेकधादि गगा परे इति मात्रोदिष्ट विधिः ॥ ग्रह ९ ग्रहे ९ भ ८ भू १ युक्ते वर्षं पौष सिते तरे पक्षे कुहु तिथौ सूर्ये निर्म्मिता वृत्त दीपिका ममादौ मंगल श्लोके एकैकाक्षर कान्तरात वाचयोयं कमाश्राम जातिर्द्दशोपि भाषया । इति मातृदत्त कृतावृत्त दीपिका शुभमस्त्वयं संपूर्णम् मिती द्वेजा आषाढ़ बदि ७ चंद संवत १९३१ मुर्नीधर नागर ब्राह्मणं शुभं भूयात ।

Subject.—पृष्ठ १ से ३७ तक भिन्न भिन्न प्रकार के कवित्त और सवैयों का संग्रह । ३८ से ७० तक रामायण माला में राम कथा का संक्षिप्त वर्णन । पृ० ७१ से ७६ तक रामाष्टक । पृष्ठ ७७ से ९० तक ज्ञान के दोहे । पृष्ठ ९० से १०६ तक नायिका भेद वर्णन । पृष्ठ १०७ से १३० तक तिथि पक्ष का वर्णन । पृष्ठ १३१ से १३० तक पिंगल संस्कृत ।

No. 275. Angrezjanga by Mathureśa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—8 × 5 inches. Lines per page—38. Extent—285 Anuhṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1915 or A. D. 1858. Date of Manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Bhaiyā Hanumāna Simha, Village Vardahā, Post Office Khairi Ghāṭ, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ संग्राम महाराज बलभद्र सिंह जी बहादुर का लिख्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गौरी शंभु पद, बंदत हों सिर नाइ । श्री बलभद्र महीप की बरनौ विजय बनाइ ॥ श्रीपाल महाराज को सुत भो श्री

बलभद्र। युद्ध विषै ऐसो भयो माना गेरह्यैा रुद्र। बहरायच्च यैा बापसो बैसबारे के राज। आये सजि सजि सैन सब बादसाह के काज॥ श्री हरिदत्त नरेश को बैांडी बेगम बास। हुकुम आप आय सबै बादसाह के पास॥ लरत लरत अंगरेज सों हद्दे हजूरी फौज। छूटि गयो गढ़ लखनैा मिटो मान की मैाज। सो अब ऐसी कीजिये दोबे थान कराय। हुकुम हमारो मानि के सोई करो उपाय।

End.—सालि अरु बालि रैकवार मे प्रसिद्ध बड़े रैका ते आय करो उत्तर की ओर है। हरि हरिदेव तरवार की प्रकास कीन्हो कीन्हो जमादारी सबै जोरि इकठैार है। रैकवार बंश में सो भूप तैा अनेक भए मारो मारो युद्ध करैा सब सो मरोर है कहैं मथुरेस इन सब सों अधिक भयो राजा बलभद्र सिंह कीन्हों जस जोर है। दोहा। साहब के अस बचन सुनि सुनि बलभद्र रिसान। भाजि गये सब झनटि वो हम करि है मैदान॥ हमरे कुल में ना भई कबहु ऐसी बात। पांव न टारैं पेत सों करि हैं बड़ो अघात। छत्रिन को यह धर्म है धरैन पाछू पांव। अत्र धरैं हम समर में जगत धरावै नांव॥ इति श्री महाराजा बलभद्र सिंह चहलारी के अंग्रेज जंग नाम बर्णन समाप्तः। लिषा विष्णुदत्त पाठक संवत १९४२ कातिक मासे शुक्ल पक्षे रविवासरे॥

Subject.—इस ग्रंथ में गदर के समय महाराजा बलभद्रसिंह तथा अन्य राजाओं का ब्रिटिश गवर्नमेंट से युद्ध करना और लखनऊ के नवाब की सहायता करना जिसमें राजा चरदा, बैांडी हरदत्त सिंह चहलारी व अकैाना रेहुवा रैकवार राजाओं आदि की वीरता का वर्णन है। निर्माण काल का दोहा—संवत से उनईस है वर्ष पन्द्रह परमान। जूझि गयो श्रीपाल सुत अंग्रेजों मैदान॥

No. 276 (*a*). Lalita-lalāma by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—9×7 inches. Lines per page—17. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A. D. 1813. Place of deposit—Paṇḍita Sukhanandanaji Vājapeyi Kutub Nagara, Sītāpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ ललित ललाम लिख्यते॥

दोहा—सुखद साधु जन कैां सदा गज मुख दानि उदार। सेवनीय सब जगत को जग माया सुकुमार॥१ कवि मतिराम गनेश कैां सुमिरत सुख सरसात। धैान पैान लागैं विघन तृन तृन उड़िजात॥२ मद रस मत्त मलिंद गन गान मुदित गननाथ। सुमिरत कवि मतिराम के ऋद्धि सिद्धि निधि हाथ॥३॥सवैया॥ सिंदि बधू कच मंडल के मतिराम मनो मुकुता गन सोहै। पारबती के पयोधर

के पद जोति जगी प्रति उज्जल योहै ॥ ईस के सीस बसी सुर सिंधु पसो द्युत पावन पाय विमोहै। साधुन को सुवसौ करतार करो नृप के कर सो कर सोहै ॥ ५ ॥

End.—रुचिर प्रलय भूषण इते रचि आनंद मतिराम। ताको वाणी जगत में विलसै प्रति अभिराम ॥ ३९२ छप्पय—जब लग कच्छप सेस सहस मुख धरनि भार धर। जब लगि आठों दिसनि दिग्ग सोभित दिग्गज वर। जब लगि कवि मतिराम सकल सागर महिमंडल। [अनिल अनल जब लगि जोति मंडल आखं-डल।] नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भुवाल मनि। जग चिरंजीव तव लगि सुखद कहत सकल संसार धनि॥ ३९३। दोहा कंठ करै सो सभनि में सोभै प्रति अभिराम। सकल सार संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३९४। इति श्री मतिराम विरचिते ललित ललाम अलंकार समाप्तः ॥

दोहा—संवत नय मुनि वसु शशी इनको करो विचार। जेठ सुदी चौदस भला सूरज सुत को वार। १८७० ज्येष्ठ सुदी १४ ॥

यो देखौ सोई लिख्यौ यथा योग्य व्यवहार। अक्षर चुको होय तो सो तुम लेहु सम्हार ॥ टीकाराम के पढ़िवे कों ॥ इति ॥

Subject.—अलंकारों का सोदाहरण वर्णन।

No. 276 (*b*). Lalita-lalāma by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1934 or A. D. 1877. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Bihāri Miśra, Editor, Madhuri, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥

दोहा ॥ सुखद साधु जन को सदा गज मुख दानि उदार। वंदनीय सब जगत को जग माया सुकुमार ॥ १। कवि मतिराम गनेस को सुमिरत सुख दर-सात। श्रोन पौन लागे विघन तूल तूल दुरिजात ॥ २ मदरन मत्त मलिंद गन नाम मुदित गननाथ। सुमिरत कवि मतिराम के रिद्धि सिद्धि निधि हाथ ॥ ३

End.—छप्पय—जब लगि कच्छप कोल राखि सिर धरनि भार धरि। जब लगि आठो दिस्सनि रहो सोभित दिग्गज वर ॥ जब लगि कवि मतिराम सकल सागर महि मंडल। अनल अनिल जब लागि जोति मंडल आखंडल ॥ नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तव लगि रहै यों कहत सकल

संसार धनि ॥ ३९८ दोहा—कंठ करै सो सभानि में सोहै श्रुति अभिराम। सकल नियम संसार हित कविता ललित ललाम ॥ ३९९ इति श्री कवि मतिराम त्रिपाठी कृत ललित ललाम ग्रंथ अलंकार समाप्त सुभं भूयात् ॥ भाद्र कृष्ण प्रतिपदायां भृगौ संवत १९३४ लिखितमिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ इति

No. 276 (c). Lalita-lalāma by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—$9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Incomeplete Appearance—Old. Character-Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Village Mai, Post Office Beteśwara, District Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ अलंकार ग्रंथ ललित ललाम लिख्यते ॥

दोहा ॥ तामें प्रतिबिंबित मनो संपति जुत सुर लोक। घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप के ओाक ॥ चन्द्र मुखिन के भैांह जुग कुटिल कठोर उरोज। बानिनि सों मनकों जहां मारत एक मनोज ॥ २ जहां चित्त चोरी करैं मधुर वदन मुसिक्यानि। रूप ठगत हैं दगनि कोंबार न दूजो जानि ॥ ३ ता नगरी कैा प्रभु बड़ो हाड़ा सुरजन राउ। रच्यैा एक सब गुननि कैां वर बिरंचि समुदाय ॥

End.—जब लगि कच्छप कोल सहस मुख धरनि भार धर। जब लगि आठैां दिसनि दिपि सोहत दिग्गजवर। जब लगि कवि मतिराम सगिर सागर महि मंडल। अनिल अनल जब लग्गि जोति मंडल आखंडल। नृप सत्रुसाल नंदन नवल भावसिंह भूपाल मनि। जग चिरंजीव तब लगि सुखित कहत सकल संसार धनि ॥ ३६३। कंठ करै सो सबनि में सोभै अति अभिराम। सकल भयो संसार हित कविता ललित ललाम। ३६४ इति मति कृत ललित ललाम अलंकार ग्रंथ समाप्तः शुभं भूयात् ॥

No. 276 (d). Matirāma Satasaī by Matirāma of Banapura (Cawnpore). Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—$9\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—18. Extent—719 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhagīratha Prasāda Dīkshita, Mai, Bateśwara, Āgrā.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मतिराम कृत सतसैया लिख्यते ॥ मो मन तम तोमहि हरै राधा कैा मुखचंद। बढ़ै जाहि लषि सिंधु लैां नंद नंदन आनंद ॥ १ ॥

मंजु गुंज के हार उर मुकुट मोर पर पुंज ।
कुंज बिहारी बिहारिये मेरेई मन कुंज ॥ २ ॥
रतिनायक सायक सुमन सब जग जीतन वार ।
कुवलय दल सुकुमार तन मन कुमार जय मार ॥ ३ ॥
राधा मोहनलाल को जाहि न भावत नेह ।
परियो मुठी हजार दस ताको आँखिन खेह ॥ ४ ॥

End.—भोगनाथ नरनाथ की रीझ्यो बीझ अनूप ।
होत भिखारी भूप हैं भूप भिखारी रूप ॥ ७०१ ॥
मुरलीधर गिरिधरन प्रभु पीताम्बर घनश्याम ।
बकी बिदारन कंस अरि चीरहरन अभिराम ॥ ७०२ ॥
पीत भंगुलिया पहिरते लाल लकुटिया हाथ ।
धूलि भरे खेलत रहे ब्रजवासिन्ह ब्रजनाथ ॥ ७०३ ॥
तिरछी चितवनि श्याम की लसति राधिका ओर ।
भोगनाथ कौं दीजिये यह मन सुख बरजोर ॥ ७०४
मेरे मति में राम हैं कवि मेरे मतिराम ।
चित मेरो आराम में चित मेरे आराम ॥ ७०५ ॥
इति मतिराम कृत सतसैया समाप्तः ॥

Subject.—विविध विषय के ७०५ दोहे का संग्रह ।

No. 276 (*e*). Barawā Nāyikā-bheda by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—10 × 4 inches. Lines per page—6. Extent—204 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1904 or A. D. 1847. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Bihārī Miśra, 318 Mirjān Lane, Lucknow.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नायका भेद बरवा छंद दोहा लिख्यते ॥ कवित कहा दोहा कहा तुले न छप्पै छंद । विरचौ यहो विचारि कै यह बरवा रसकंद ॥ १ ॥ बेधक अनियारो बड़ो समुझे चतुर सुजान । सुनत जात चित चाव पै यह बरवै के बान ॥ २ ॥ मंगलाचरण बरवा बंदौ देवि सरदवा पद कर जोरि । बरनत काव्य बरैया लगै न खोरि ॥ ३ ॥ स्वकीया लक्षन दोहा—लाजवती निसुदिन पगी निज पति के अनुराग । कहत स्वकीया सील में ताकौ पति बड़ भाग ॥ ४ ॥ उदाहरन बरवा—रहत नैन के कोरवा चितवनि छाय । चलत न पगु पैजनिया मगु ठहराय ॥ ५ ॥

End.—शिक्षा करन—थके बैठि गौंड़वरिया मोड़हुँ पाइ।
रपथत न पैाय गरमिया बिजन डोलाइ ॥ १६३ ॥
उपालंभ—चुप ह्वै रहेसि संदेसवा सुनि मुसुकाय।
पिय निज हाथ बिरवना दीन्ह पठाय ॥ १६४ ॥
परिहास - बिहंसत भौंह चढ़ाय धनुष मनोज।
लावत उर अपठनवा पैठि उरोज ॥ १६५ ॥

दोहा—लक्षन दोहा जानिए उदाहरन बरवान।
दुनों के संग्रह भए रस सिंगार त्रिय मान ॥ १६६ ॥
यह नवीन संग्रह सुनी जो देखै चित देइ।
बिबिधि नायका नायकनि जानि भलो बिधि लेइ ॥ १६७ ॥
इति श्री नायकादि भेद संपूर्णम् सम्वत् १९०४ जे० शुभम् ॥

Subject.—मंगलाचरण, स्वकीया, मुग्धा, अज्ञात यैावना, ज्ञात यैावना, नवोढ़ा, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रौढ़ा, परकीया, ऊढ़ा, क्रिया विदग्धा, वचन विदग्धा, लक्षिता, अनुशयना वर्णन पृ० १—९ तक।

गुप्ता, मुदिता, कुलटा, सामान्या, अन्य संभोग दुःखिता, प्रेम गर्विता, रूप गर्विता, प्रोषित पतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता वर्णन पृ० १०—१९ तक।

वासक सज्जा, स्वाधीन पतिका, अभिसारिका, प्रवत्स्यत्पतिका, आगत पतिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा, नायका समेद, अनुकूल, दक्षिण, धृष्ट, शठ, उपपति, वैसिक, प्रोषित नायक, वचन चतुर, क्रिया चतुर, दर्शन, मंडन, शिक्षा, उपालंभादि वर्णन पृ० २०—३४ तक।

276 (*f*). Rasaraja by Mātirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—938 Anuṣṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Saṃvat 1780 or A. D. 1723. Place of deposit—Paṇḍita Śasi Śekhar Śukla Kañjahī, Village Śivalālarāma, Paṇḍita-kā-purwā (Itauñjā Pachhima), Post Office Gaurīgañja, District Sultānpur.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसराज ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ होतु नायका नायकहि आलंबित शृंगार ॥ ताते बरनो नायका नायक मति अनुसार ॥ १ ॥ अथ नायका लक्षनं ॥ दोहा ॥ उपजतु जाहि बिलोकि कै चित्त बीच रस भाउ ॥ ताहि बषानत नायिका जे प्रवीन कबिराउ ॥ २ ॥ उदाहरनं ॥ सवैया ॥

कुंदन को रंग फोको लगै झलकै ऐसो अंगन चारु गोराई ॥ आंखिन को पल-सानि चितौनि में मंजु विलासन को सरसाई ॥ को बिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसक्यानि मिठाई ॥ ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नैननि त्यों त्यों खरी निकसै सो निकाई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रंध्र जाल मग ह्वै कढ्यो तिय तन दीपति पुंज। झिझिया कैसो घट भयो दिनहो मैं वन कुंज ॥ ४ ॥ तरुन अरुन पडोन के किरिनि समूह उदोत ॥ बेनी मंडल मुकुत के पुंज गुंज रुचि होत ॥

End.—जड़ता लक्षनं ॥ उतकंठा ते होत है अचल चित्त अरु अंग। तासों जड़ता कहत है कवि कोविद रसरंग ॥ ४०५ ॥ उदाहरनं ॥ सवैया सुवासु रहै रंगरागते उदास भूलि गई सुरत सकल पान पान को। कवि मतिराम एक घनमिष नैन बुझै कहति न बात बोर सुनति न चान को ॥ थोरो सो हंसनि सोह गोरो ऐसो डारि करि भोगो करो गोरो तै किशोरी वृषभान को। तबते निहारो वह भई ॥ पषान कैसो जबते निहारो रुचि मोर के पषान को ॥ ४०६ ॥ दोहा ॥ घनमिष लोचन बाल यह याती नंद कुमार ॥ मोचु गई जरि बाच हो विरह अनल को झार ॥ ४०७ ॥ समुझि समझि स॰ रीझि हैं, सज्जन सुकवि समाज ॥ रसकनि के रस को कियो भयो सकल रसराज ॥ ४०८ ॥ इति श्री मतिराम कृत रसराज समाप्त शुभ मस्तु ॥

Subject.—नायिका भेद बर्णन।

No. 276 (*g*). Rasarāja by Matirāma. Substance—New paper. Leaves—50. Size—9 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1896 or A. D. 1839 Place of deposit—Paṇḍitā Raghunātha Prasāda Chaube, Etāwah.

Beginning.—ध्यावे सुरासुर सिद्ध समाज महेशहि आदि महामुनि ज्ञानो। योग मैं यंत्र मैं मंत्र मैं तंत्र मैं गावै सदा कृति शेष बखानो ॥ संकट भाजत आनन को द्युति सुंदर दंड उदंड सो जानो। ध्याय सदा पदपंकज को मतिराम तबै रसराज बखानो ॥ १५ दोहा ॥ श्री गुरुचरण मनाइ के गनपति को उर ध्याइ। रसिक हेत रसराज किय सुकावन को सुखदाइ ॥ २ कवितार्थ जानीं नहीं कछुक भयो भ्रमबोध। भूल्यो मन ते जो कछुक सुकवि पढ़ेगे शोध ॥ ३ ॥ बरणि नायका नायकनि रच्यो ग्रंथ मतिराम। लीला राधा रवन को सुंदर यश अभिराम, ॥ ४

End.—दोहा ॥ देखि परै नहि दूबरी सुनियें श्याम सुजान । जानि परै परियंक में अंग आंच मतिमान ॥ २१ जड़ता लक्षण ॥ दोहा ॥ उत्कंठादिक ते जो है चचल चित्त अरु अंग । तासा जड़ता कहत हैं जे प्रवीण रसरंग ॥ २२ उदाहरण—कवित्त—सूधैन सुवास रहै रंग रागते उदास भूल गई सुरति सकल खान पान की । कवि मतिराम इकटक अनमिष नैन बुझे न कहत बात यह समझे न यान को ॥ थोरो सी हंसनि घोट गोरो ऐसो डारि ठग बैरो करी गोरो तें किशोरो वृषभान को ॥ तब ते विहारो यह है भई बखान कैसो अब ते निहारो रुचि मोर के पखान को ॥ २३ ॥ दोहा ॥ अनमिष लोचन बाल के याते नंदकुमार । सोच गई अरि बोच ही विरहानल की झार ॥ २४ ॥ समुझ समुझ सब रीझिहैं सज्जन सुकवि समाज । रसिकन के रस को कियो नयो ग्रंथ रसराज ॥ २५ ॥ इति श्री रसराज ग्रंथ समाप्तः ॥ सम्वत् १८९६

No. 276 (*h*). Rasarāja by Matirāma of Banapura. Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size–8 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—756 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Paṇḍitā Krishnā Bihārī Miśra, Sitāpur, Gandhaulī, Sidhaulī

No. 276 (*i*). Rasarāja by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—15 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Lālā Bhāgawata Prasāda, Village Sadhuwāpur, Post Office Sisaiya, District Bahrāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ राधा कृष्णायनमः ॥ अथ रसराज लिख्यते ॥ श्लोक ॥ श्री कृष्ण मुरलीधरं गिरिधर पुष्पीधरं सुंदरं ॥ विधु दशा सुवण पीत वशानं वृन्दावने क्रीडनं ॥ कालिन्दी तट गायन मुनिवर गोपी मनोरंजनं ॥ श्री राधा वल्लभं ललितं वन्दे सदा सुन्दरम् ॥

No. 276 (*j*). Rasarāja by Matirāma. Substance—Country-made paper. Leaves—51. Size—7 × 6½ inches. Lines per page—26. Extent—1,989 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—

Ṭhākura Basanta Siṁha, Village Udawā, Post Office Shāhmau, District Rae Bareli.

Beginning.—पृष्ट २ से प्रारम्भ ।
पति प्रीति सोहाई । तेरे सुसील सुभाय भट्ट कुल नागिन को कुल कानि सिषाई । तेहो मनो पति देवता के गुन गौरि सवे गुन गौरि पढाई ॥ १२ ॥ दोहा ॥ जानत सौति अनीति है जानत मयो सुनीति । गुरजन जानत लाज है प्रीतम जानत प्रीति ॥ १३ ॥ त्रिविधि नकिया वरनिये प्रथमहि मुग्धानाम । मध्या पुनि प्रौढ़ा गनौ बरनत कवि मतिराम ॥ १४ ॥ मुग्धा लक्षन वर्णन ॥ २ ॥ अभिनव यौवन आगमन जाके तन में होइ । तासो मुग्धा कहत हैं कवि कोविद सब कोइ ॥ १५ ॥ जथा ॥ नेक मंद मधुर कपोल मुसकान लागे नेक मंद गमन गंइदनि को चाल भो । रंच ऊंचो अंचल ऊरोजन के अंकुरनि बंक दोठि नैन जुग नेसुक बिसाल भो ॥ मतिराम सुकवि रसोले कछु बैन भये बदन सिंगार रस बेलिय × × बाल भो ॥ बाला तन जोबन रसाल उलहत हाल सौतिन के साल भो निहाल नंदलाल भो ॥

No. 277. Antariyā kī Kathā by Meḍailāla Awasthi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—7 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—153 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1905, or A. D. 1848 Place of deposit—Paṇḍita Tribhuwanadatta, Village Fakharpur, Post Office Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अंतरिया कथा लिख्यते ॥ सोरठा ॥ गणपति कृपा निधान, बुद्धि रासि शुभ गुण सदन ॥ देहु मोहि वरदान कथा अंतरिया की कहौं ॥ १ ॥ उमा शंभु संवाद, परम रुचिर मंगल भवन, जेहि सुनि मिटे विषाद, दोष अंतरिया ना रहे ॥ २ ॥ दोहा ॥ संभु भवानी सरस्वती, उर गौरि माइ प्रसाद, दोष निवारन जगत हित कहब सकल संवाद ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ परम रम्य गिरवर कैलासा ॥ सदा जहां सिव उमा नेवासा । सिद्धि परसिद्ध तप हित मुनि देवा । करैं जोग जप तप हित सेवा ॥ षटमुख आदि संभु बन जेते ॥ हरिपद सेवत प्रेम समेते ॥ विपिन बाग मानस प्रति सोहैं । बरनै छवि अस कवि जग को है ॥

End.—इति श्री मेड़ई लाल अवस्थी विरचितायां उमा महेस संवादे भैरों निमित प्रसादे कथा अंतरा समासम शुभमामस्तु सवत मास कृष्न पछे तिथौ

चौदसियो सनिवसरे श्री संमतु १९०५ लेषाक दोनदयाल कयेस्थ वसि सहिपुर ग्रंमे नाई आतांटे तस्यांपात्मज बषतावर लाल लिषाते जो प्रति देषा सो लिषा मम दोषो नाहि शुभ मस्तु राधा कृष्ण को जै रामचन्द्र सावामो को जै ॥ राम राम राम राम राम राम राम।

Subject.—अंतरिया यानो अतरा (इकतरा) रोग को कथा का वर्णन। इसमें महादेव पारवतो का संवाद है। एक व्यापारो बनिज को गया था उसको स्त्री घर पर थो। उस व्यापारो का भेष बना कर एक प्रेत उसके घर में आकर रहने लगा। जब वह व्यापारो घर आया, तो अपने रूप का मनुष्य देख कर दुखो हुआ, स्त्री भो घबड़ाई, अंत में राजा के यहां न्याय के लिये गये। राजा भो न्याय न कर सका। तब न्याय के लिये गड़रिया बुलाया, उसने कहा कि चमड़े के छेद होकर जो मसक में घुस जावे वही स्वामो है। प्रेत तुरंत हो घुस गया और गड़रिया ने उसे बंद कर दिया। मुख्य स्वामो अपनो स्त्री को लेकर घर चला गया।

No. 278. Megha-prakāśa Jyotish by Megha Muni of Phaguwārā (Punjab). Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8½×6½ inches Lines per page—40. Extent—870 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of Manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—Bābā Bhāgawatadāsa, Village and Post Office Jarwal, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मेघमाला लिष्यते ॥ दोहा ॥ परम पुरुष घट घट रम्यो ज्योति रूप भगवान। सकल रिद्धि सुख देत प्रभु नमत मेघ धरि ध्यान ॥ वाहन जाको हंसमित और सिह सिव तोय। सिवा भवानी सारदा सकल एक नहिं दोय ॥ चरनन मो युग तासु के आगम वानो दाह। तिस प्रसाद इस ग्रंथ को रचौं सकल सुख थाह ॥ चौ० ॥ गुरु समान जग मैं नहिं कोई। मूरख पंडित करता सोई ॥ जिमि दीपक मंदिर तिमि नासे। गुरु ज्ञान अज्ञान विनासे ॥ पटपट छंद ॥ सकल वस्तु को भेद ज्ञान अज्ञान बतावत। नरक स्वर्ग को बात और शिव पद दिखरावत ॥ ब्रह्मा विष्णु महेस ताहि गति कोइ न जानत। सो लहि है परसाद जु गुरु के वचन पिछानत ॥ तीन लोक ब्रह्मा रच्यो मृत्यु स्वर्ग पाताल रवि सो गुरु को कृपा दिसै वदत मेघ त्रिय काल कवि ॥ दोहा ॥ ज्योतिष ग्रंथ अपार मग जानत इक जगदीश। मानव सुर जानत नहीं। ताते मोमति कोश ॥

End.—सोयल छंद ॥ मुनि शशि वसु को आन महो संवत इहु भाषति कातिक शुदि गुरुवार मान पंचम तिथि भाषत ॥ उत्तराषाढ़ नक्षत्र दिवस मैं एकवि की जति। सो घटि अक्षर होइ ताहि कवि सुधि करि लीजति ॥ लीलावती छंद ॥ ए देश जलंदर शोभै सुन्दर नाम द्वावा ठौर कहियो। शुभदान पुन्य की ठौर यहां है मानौ सुर पुर थान रह्यो पंडित नर। सो मैं कवि ते भारी गीत वजित्र रंग सियो गृह गृह मंगलचार जु होवहि तामेंपुर इक इहु वसियो। सकल रिद्ध कर सोम है फगुवारा शुभ थाय । तहां मेघ कविता करी भाखी विधि मन थान। चूहड़मल ये चैाधरी फगुवारे को राइ । चतुर सैन्य करि साम है जिमि उड़गन शशि थाइ। सब कविता सो बेनती कहत मेघ कर जोर। करौ सुद्धि इस ग्रंथ का अधिक कह्यो जिहि ठौर। बालक हठ ज्यौ बात को पंडित करत विचार। कहीं अशुद्धिहि होइ कछु लीजौ कविन सुधार ॥ गीता छंद ॥ कर सरव छंद मिलाइ इकठा कहो संख्या यासकी। द्वात्रिंस अक्षर कै हिसाबै आठ से उनचास की। इन्द्र छन्द षट सत अठ उनीसे कही कवि इहु भास को सज्ञानु संख्या दोऊ जातै मेघ माल विलास की ॥ दो॰ ॥ कविजन कविता को सदा छिन छिन होइ अनंद। बसो ग्रंथ जग चिर लगै जौ लौ रवि थिति चंद ॥ इति श्री मेघ प्रकाश मुनि मेघराज विरचिते सगुन नाम चतुर्थोध्याय ॥ ४ ॥ लिखितं मिश्र गुलजारी पटियाले मध्ये पोथी ज्वाला गिरि योग्यः सं॰ १८९५ आश्विन शुक्ल तृतीया भृगुवासरे समाप्तम् ॥

Subject.—परमात्मा की महिमा गुरु की महिमा, ग्रंथ रचने का कारण कातिक मास, दिवाली, अगहन, पूस मास, माघ मास का फल, माव, पूरन मास का फल, माघ बदी नौमी का फल, फालगुन मास का फल, होली विचार चैत्र मास का फल, चैत बदी पड़वा का फल, वैसाख मास का फल, जेठ मास का फल, जेठ बदी पड़वा का फल, आषाढ़ मास फल, आषाढ़ मास मैं कल्ली रोहनी का विचार, आषाढ़ पूर्णिमा का फल आषाढ़ सुदी पूनम की ध्वजा की पवन का विचार, सावन, भादों मास का फल, ग्रह नक्षत्र वर्षा लक्षण, चार थंभ सत्रय का विचार, रोहणी चक्र, ग्रह राशि फल, मूसल जोग, अंगारा जोग, मृत्यु जोग, ग्रह उदै फल, शुक्र उदय फल, शुक्र चन्द्र फल, पुस मास संक्रांति का फल, कर्क संक्रांति का फल, मीन संक्रांति का फल, संक्रांति सोती बैठी ठाढ़ी का फल, संक्रांति वर्षा का फल, मास क्षय का फल, तेरह दिन के पाख का फल, पक्ष क्षय का फल, तिथि क्षय का फल, तिथि अधिक का फल, अधिक मास का फल, एक मास मैं पंचवार का फल, रवि शशि कुंडल पारवा का फल, दुकाल लक्षण, चन्द्रमा उदय का फल, चन्द्र चढ़े के रंग का फल, मंडलों का फल वायव्य मंडल का फल, वारुणी मंडल का फल, महेन्द्र मंडल

का फल, चारो मंडल के फल, संक्रांति समय मंडल मध्य राशि का फल, समय के राजा का फल, मंत्री का फल, ग्रहण विचार, भू कंपन लक्षण, ग्रह चक्र अस्तोदय फल, ग्रहराशि विचार, गोल योग, वर्षा कुयोग, पक्षकांड, अर्थ संक्रांति कांड, बृहस्पति कांड, शनि विचार, नक्षत्र शनि कूर्म चक्र विचार पारसी मतांत मुहर्रम के गुरें का विचार, वर्ष दिन बरते किसका फल (इंगलिश में)। रविवारे गुरेर का फल, सोमवार, मंगलवार, बुध, गुरुवासरे, शुक्रवारे, शनिवारे गुरेर का फल, राशि स्वामी फल ग्रह स्थिति, उत्पात फल सगुन अध्याय, वर्षा लक्षण, इन्द्र धनुष का फल, छींक सगुन, अंग स्फुरण सगुन, रासभ वाक फल, जंबु वाक फल, दक्षिण फल, शिवा वाक दिन प्रथम जाम फल, किरलो सगुन का वर्णन, सातवार का फल, अंग फल, कविराज मेघ मुनि के ग्राम आदि का वर्णन।

No. 219(*a*). Vyādhinasa Vaidyaka by Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—1,140 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written Prose and verse. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A. D. 1849. Place of deposit—Kumāra Bachchā Sāheb Rais, Gudhuāpur, Post Office Chilwāriyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning.—श्रीमते रामानुजायनमः अथ वैद्यक व्याधि नास नाम ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री गुरु परमानंद प्रभु चरण कमल मन लाइ। मेहरवान दास प्रेरक परम परमातमहि मनाय। रक्षा मय सो जग रच्यो त्रिगुन भयो विस्तार कम काल माया विवस करि राष्यो संसार ॥ सतगुरु वैद मिले बिनु कोइ न होत अरोग व्याधि असाधि बचै कबहु हानि लाभ भय सोग ॥ त्रिगुण त्रिदोष लख्यो जगत भिषक मिले गुरु जाहि। नाम रसायन पायो निरुजम यो निर्वाहि ॥ मंत्र जंत्र गुन गान प्रभु प्रगट्यो जीवन हेत ताहि विधि औषद जो पावत होत सचेत ॥ दैहिक दैविक भौतिको लगो ताप त्रय जीव। मेहरवान दास भगवान बिन सुमिरन बिपति अतीव। संचित प्रारब्धक करम किया मान ये तीन। दुष सुष भोगवत जीव यह देह संग लवलीन ॥ आदि व्याधि लागी जगत जब जाको जाहेत। मेहरवान दास संसै मिटै मिले गुरु कारिन्त। आदि व्यथा है मानसी व्याधि सरीर संजोग। सुमिरन ते मन दुष नसै औषधि ते तन रोग ॥

End.—अथ दसमूल नाम कथन। उभय गुषक, पाड़री अरनी सरवन नाम बिथवन बेलि कुम्हेर सैनावलो मूल दस ठाम। पंचठान नाम ॥ सांभरि पारो

विडकहैा सेघा सोचर सोई, लवन पांच ये सांच हैं पर दोये कै होइ ॥ अथ करुरा देषै कै विधि। बड़े सवेरे घरो भरि रात्रि जब बाकी रहै तब रोगी को एक बासन में मुतावै सो मूत जब घाम होइ तब घाम में धरै तब तेल में सींक बोरि के एक बूंद छोड़ै। जो तेल ऊपर रहै तो रोगी साध्य जानैा जो बूंद डूब जाय तो रोगी मरै। अनुहो कार मूत्र बड़ै तैा मूत्र दोष जानिये छनकार होय तैा दीर्घ जीवी। मूत छूटि कै कई बूंद होई तैा बूंद गिनके मरे के दिन बताइ देइ। पीत वर्ण पित रोग सित वर्ण कफ रोग। कृष्ण वरण वात रोग, निला रंग त्रिदोष गंध आवै रोगी मरै निर्मल नीर सम मूतै रोग विमुक्त जानैा ॥ साध्य असाध विचार। एक चैाढ़े वासन में जल भरै घाम में धरै रोगी को सूर्ज दिषावै सूर्ज संपूर्ण देषै तो रोगी साध्य सूर्ज न देष परै तैा रोगी मरै सूर्ज के बीच छेद बतावै रोगी अठयें दिन मरै संपूर्ण सूर्य प्रकास देषै तैा दान देइ वैद को खुस करै रोगी अच्छा होय।

इति श्री व्याधि नास नाम ग्रंथ मेहरवान दास कृत संग्रह समाप्तं ॥ लिषतं रघुवर सघा मिर्जापुर निवासी संवत १९०६ श्री राम जी की जै ॥

Subject.—नाड़ी परीक्षा; तैाल प्रमाण, धातु शोधन मारण उपधातु शोधन आदि, ज्वर चिकित्सा काथ आदि का वर्णन, रसों का भली प्रकार वर्णन चूर्ण गोली तैल आदि, घृतादि औषधियों का संग्रह करना उनकी पहिचान, आदि का वर्णन

No. 279 (b). Vyādhināśa by Paṇḍita Meharwānadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—121. Size—$8\frac{3}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—1,320 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1851 or A.D. 1794. Date of manuscript—1248 Hijri or A.D. 1870. Place of deposit—Rājyapustakālaya, Bhingārāja, District Baharaich.

Note.—विशेष No. 279 (a) में लिखा गया है।

No. 280. Kavitta Saṅgraha by Mōhana kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—$9\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—22. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning.—अथ कवित्त मोहन के लिख्यते ॥

उससि उमापति है वो सबै पवासु दहै वेरिन कीवासु दहै पतीवे। माननित सौहनि तनैनो कै के मोहनि झुकति आंखमोहनि हों कैसे कै उबारि वै॥ नैननि लगनि हिरदै को हो लगनि तन विरह अगिनि सिलगत आति जरोवै। इये निरमोही तै शेष सब तोहि पिये तेरे हिय माहीं पै परखैया हो मरोवै॥

End.—जियरोई आनत है नियरो रहत तन छिन छिन हियरो दरस दुख दाहिये। पेम लपटाय वेन नैननि हो समझै अलि नैनानि सुनै जो वार कोटि अवगाहिये। तुम कह्यो हिरदे सु हम कहो परगट लोइन न नेह के निहारि नेकु ता हिय॥ इकटक चाहत हैं याते न प्रगट होहि चाहको चाहनो सुख चाहे हू न चाहिय॥ इति।

Subject.—१७ शृंगार के कवित्तों का संग्रह।

No. 281. Kapota—līlā by Mōhanadāsa. Subatance—Country-made paper. Leaves—10. Size—$8\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—51 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1833 or A.D. 1776. Place of deposit—Paṇḍita Śitala Prasāda, Village Fatehpur, District Bārābanki (Oudh).

Beginning.—श्री मतेरामानुजाय नमः॥ उद्धारावती एकांत निवासा। हरि को पूछे उद्धव दासा। ज्ञान विचार विवेक सुनावो। मेरे मन को तिमिर नसावो। कौन पुरुष कैसो तेरी माया। कहौ कृपा करि त्रिभुवन राया। कैसो विधि प्राणी सुख पावै। काल व्याल भय दूरि बसावै॥ २॥ श्री भगवान कहैं निज ज्ञाना। तत्त्व उपदेश सुनौ टैकाना। सकल चराचर मो मैं लेखा। मोते भिन्न कछु नहिं देखा॥

End.—सब परिहरि हरिसों रुचि कोनो। ताते मैं इनकी बुधि लीनो। ज्यों सब नरपति त्यागेउ राजा। करि हरि भजन समारै काजा। अब मैं ज्ञान कह्यो नाना विधि। निज मन को सौपों अपनी अपनी निधि। श्री भगवान जू बोले वाणी। उद्धव को अंतरगत जानो। जो इह लीला सुनै अरु गावै। ज्ञान विराग भक्ति उपजावै। शेष महेश पार नहिं पावै। मोहनदास यथा मति गावै। इति श्री दत्तात्रेय कपोतलीला मोहनदास कृत संपूर्ण॥

Subject.—उद्धव का ईश्वर से प्रश्न, पुरुष कौन है, माया क्या है, और मनुष्य सुख कैसे पा सकता है। ईश्वर का उत्तर, संपूर्ण संसार मुझ में है, जो अनन्य भाव से मेरी सेवा करे वह संसार से तर जावे। यदु का एक मुनि को देख कर शंका उपस्थित करना कि आप को संसार से विरक्ति कैसे हो गई, मुनि का अपने चौबीस

गुरु करने का कथन ग्रैार उनको गुरु बनाने का कारण। उनको अपने गुरुओं के नाम इस प्रकार बताना (१) अवनि, (२) मारुत, (३) जल, (४) अग्नि, (५) आकाश, (६) शशि, (७) रवि, (८) कपोत, (कपोत कपोती का प्रेम व्यवहार, दोनों का घर बनाना, सुत उत्पन्न होना, उसकी बोली से प्रसन्न होना, बालक को भोजन के लिये कुछ लेने को जाने पर बालक का जाल में फंसना कपोतिनी का भी स्वयं फंस जाना, कपोत का भी फंस जाना) (९) अजगर, (१०) सागर, (११) भृंग, (१२) कुरंग, (१३) मतंग, (१४) पतंग, (१५) मीन, (१६) मधु मक्खी, (१७) पिंगलानारी, (१८) कुररी पक्षी, (१९) कुमारी की चूड़ी, (२०) बालक, (२१) भृंगी, (२२) सर, (२३) भुजंगम ग्रैार (२४) सब सस्कारों को देख कर चरण कमल से पृथक् न होना। उपसंहार में अपनी ईश्वर भक्ति का यही कारण बताना।

No. 282(*a*). Ganesa Chauthi kī Kathā by Motilāla. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—7¼ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—390 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Ordinary. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Baksa, Village Utārā, Post office Musāfirkhānā, District Sultānpur.

Beginning.—पृष्ठ २—कृपा सिंधु उर अंतर जामी × × × × छल कीन्हो जिरजोधन राजा ॥ जीति लीहउ मोहि राजि समाजा। अनुज समेत दुखनी सब लाग ॥ कानन फिरहु दुहु दुख पाय ॥ तेहि ते प्रभु विनवउ कर जोरो ॥ केहि विधि पाइ राज्य बहोरो ॥ कृष्ण कहा सुनि वचन नरेसा ॥ दुख हित लागि कही उपदेसा ॥ पूजहु गणपति कह चितु लाइ ॥ जेहि पूजे संकट संकट मिटि जाइ ॥

End.—गज वदन चरित्रं योक्षण दंतं मुनि रंजन वरनत संतं। गणपति वरदायक सब सुषलायक सुर मुनिभायक भानु जुतं। सबही सुपकारी जग उपकारी। सिद्धि सुधारी शिव नंदा। जे व्रत मन लावहि हरिपद पावहि सुनत महामन सुषकंदा। गणपति उर दोजै सब सुष कीजै सुनहु धर्म सुत भूपा। तन मन सुष सातसे वरदाता गणपति को जे ध्यावहि सो नर परहि भव कूपा। दो०। गणपति को व्रत जे करहि ध्यान धरहि चित लाइ। ताके सर्व मनोरथ पुरवहि श्री जदुराइ। ५२ इति श्री वेदव्यास वानी मोतीलाल भाषा कृते गणेश चौथिनी कथा समाप्तं शुभ मस्तु संवतु १८६२ सन १२१३ कार शुक्ल पक्ष १५ लिषितं पत्रोहा लिया जो देषा सो लिषा।

Subject.—(१) पृ० १ से २ तक—धर्मराज का कृष्ण से वन से घर शीघ्र पहुंचने के निमित्त साधन पूछना

(२) पृष्ठ ३ से ४ तक—गणेश महिमा। पृ० ५ से १३ तक—उमा के घर नारद आगमन, उमा से नारद का कथन कि शिव मुंडमाल क्यों धारण किये हैं। जब उमा न बता सकी तो शिव से पूछने के लिये कथन। शिव के आने पर उमा का उनसे उक्त शंका करना। शिव का बताना कि यह तुम्हारे उन मुंडों की माला है जब तुम्हारा शरीरपात होता है। शिवा का कथन कि आपके अनेक जन्म क्यों नहीं, शिव कथन कि बीजमंत्र जानने के कारण। शिवा का भी बीजमंत्र पूछना सब जीवों का भगाना, १२ वर्ष तक बीज मंत्र कथन, अंडे से तोते का श्रवण, पार्वती का सो जाना शिव जी का ज्ञान कर शुक के पीछे धाना। उसका व्यासाश्रम में जाना, शुकाचार्य्य का जन्म।

(३) पृ० १४ से २६ तक—शिव का उमा को निकाल देना, षडनन के पास पहुंचना तपस्या के लिये माता से प्रार्थना, गणेशोत्पत्ति।

(४) शिव गणेश युद्ध, गणेश शिरच्छेदन, उमा की प्रार्थना पर हाथी का सिर लगाना गणेश का बुद्धिमान सिद्ध होना।

(५) पृ० २७ से ४४ तक—गणेश पूजन करने वालों का इतिहास।

(६) पृ० ४५ से ५० तक गणपति पूजन विधि।

No. 282(*b*). Ganeśa Kathā by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—18 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—450 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Ṭhākura Chhatra Siṁha, Kaṭailā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ गणेश कथा लिख्यते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दोहा—बंदि चरण रचि दिज हरि हर गिरि मनुलाइ। सैल सुता सुत की कथा कहौं सुनौ मनुलाइ ॥ रामकृष्ण भ्रातन सहित सिय रुकुमिनि तिय धाम। बुद्धि बढावे सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥ कथा कहौं गणनाथ की पार उतार बलबीर। बुद्धि हीन निज जानि कै सुमिरौं तनै समीर। राख्यो बाच। एक समै बूझत भये हरिहि युधिष्ठिर राइ आनि महा संकट परे केहि उपाय ते जाइ। चौपाई ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम शेष विधि पायो

न भेवा ऐसे प्रभु तुम दीनदयाला। सदा करहु दासन प्रतिपाला॥ विपति हमारो विलोकहु स्वामी। कृपासिंधु तुम अंतरजामी छल कीन्हे जिरजोधन राजा। जीति लियो महि राज समाजा॥

End.—घृत सो होम करै चित लाई। ताके बुद्धि होय अधिकाई॥ मास असाढ़ चैाथ अंधियारो। कंवल फूल कर लेइ विचारी। अष्टिक सहित होम चित लावै सो नर मन बांछित फल पावै। सावन कृष्ण चैाथि अब आवै। कुसुम सिहोरे केर मंगावै। सब लिहु सहित नैवृत सो मोदो। देव दैत्य ताके बसि होहीं। दोहा। इहि विधि बारह मास करि कह्यो भूप समुझाई। विधि सो पूजहु गणपती सब संकट मिटि जाइ। चैापाई—यह सुनि धर्म तनय सिर नाये। हरि पद को रज नयन लगाये। यहि विधि कह्यो कृष्ण वृत रीति। तेहि विधि राजै कीन्हो प्रीति॥ गणपति की महिमा अपारा। मारि सत्रु कीन्हे बैपारा। सुख सो राज महीपत कीन्हा। गणपति की दाया लिपि लीन्हा। जो गणपति का वृत चित लावै। रिद्धि सिद्धि अणमादिक पावै। नारी पुरुष करै व्रत जोई। सर्व सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै पद गावै। ताके काल निकट नहि आवै। गणनायक की कथा यह संस्कृत मध्य भुपाल। जथा बुद्धि भाषा रचो पंडित मोतीलाल। इति श्री मोतीलाल पंडित विरचितायां गणेश कथा समाप्तम् संवत १९१० कातिक बदी ११ गणेश कथा लिख्यते देवीदीन गुजबली सुभ गुरुवासे।

Subject.—गणेश की कथा

No. 282(*c*). Gaṇeśa Purāṇa Bhāshā by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—8 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—318 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1893 Samvat or 1836 A.D. Place of deposit—Ṭhākura Mahesa Siṁha, Village Kohali Bichaī Singh kā Puravā, Post Office Kesargañja, District Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ पोथी गणेश पुराण प्रारंभः॥ दोहा॥ एक रदन गज बदन को पगु बंदो कर जोरी। कृपा करहु सिव संकर बुद्धि बढ़ै जेहि मोरि॥ व्यास आदि कवि पुंगवा नारद आदी मुनीसा। दिनकर ब्रह्मा सेस गुरु सब कहं नावो सीसा॥ चैा०। राजा जुधीष्ठिर उवाच। सुनो स्वामी तुम मदन गोपाला। सदा करो संतन प्रतिपाला। विपति हमारो विलोकहु स्वामी। कृपासिंधु उर अंतरजामी छल कीन्हो जुरजोधन राजा। जीती लीन्हों मोर राज समाजा॥ बन निकारि दीन्ह दुखदाई। कानन फिरौं दुसह दुख पाई। तेहि तो

प्रभु विनवौं कर जोरी। केहि विधि पावौं राज बहोरी। कृष्ण कहा सुनु वचन नरेसा। तुम हित लागि कहौं उपदेसा। पूजौ गनपति मन चित लाई। जेहि पूजे सब दुख मिटि जाई। विघन हरन है जाकर नामा। तेहि पूजै पइहौ विश्रामा

End.—मास प्रसाद चौथि जब पावै। कमल फूल कर ढेर मंगावै। श्रुगति समेत होम जो करई। सो प्रानी पुनि देह न धरई। सावन चौथी भूप जब पावै। कुसुर सेहरवा केर मगावै। ब्राह्मण वालो होम घृत करई। दानौ देव ताके बस होई। दोहा॰ यहि विधि बारमास की कहौ भूप समझाइ। विधि सो पूजै गनपती सकल कष्ट मिटि जाय। चौ॰ ॥ सुनि कै धर्म तनय सिर नावा। धन्य गोपाल यह कथा सुनावा। जो विधि कृष्ण कहा व्रत जैसो। तेहि विधि सो नृप कीन्ह प्रतीतो। गनपति भई जो कथा अपारा मारे जो सत्रु लगो नहि बारा॥ नृप समेत राज तब कीन्हा। गनपति की दाया लखि लीन्हा। गनपति केरी बात चित धाई। जो मनसा करु सो फल पाई। सिद्धि रिद्धि संपति धन अपारा। धरनि धाम सुत संपतिदारा। नारी पुरुष करै व्रत कोई। सकल सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै औ गावै। अंतकाल सुर पुर पहुंचावै। गनपत की कथा यह संस्कृत मध्य विसाल जथा बुधि भाषा रचेउ मइ प्रति मोतीलाल। इति गणेश पुराण सम्पूर्णम। लिपतं प्रताप सिंह ठाकुर संवत १८९३॥

Subject.—पृष्ठ १ से १९ तक वंदना, पार्वती शंभु संवाद। एक समय धर्मराज का राज्य जाता रहा। उन्होंने श्री कृष्ण भगवान से अपना राज्य प्राप्त करने का उपाय पूछा, तो भगवान ने बताया कि गणेश जी की मन कर्म वचन से पूजा करो। उदाहरण रूप से कहा है कि एक बार शिव जी अपने दोनों पुत्रों को लेकर श्री विष्णु की सभा को गए वहां इंद्रादि ३३ कोटि देवता बैठे थे, भगवान ने दोनों पुत्रों को बुला कर दो मोदक दिखाये और कहा कि जो पृथ्वी की परिक्रमा पहिले कर आवेगा वह लड्डू पावेगा, एक पुत्र रथ पर बैठ गया और गणपति जी ने भगवान की परिक्रमा कर मोदक मांगे अतः उन्ही को मोदक मिले। इसी १२ मास की पूजा पृथक् पृथक् वर्णित है। अंत में पूजा का फल कवि का नाम और लिखने वाले का संवत आदि है।

No. 282(*d*). Gaṇeśa Māhātmya Vrata by Motīlāla. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size 8 × 4 inches. Lines per page—16. Extant—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Ṭhākura Madhorāma, Village Nautala, Post Office Sissiyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः दोहा ॥ सुमिरन करि गणेस को गुरु चरनन सिर नाइ । सोकल चौथि को महिमा कहौं सुनहु चित लाइ । दोहा राम कृष्ण भ्रातन सहित सिय रुक्मिनि प्रिय धाम । बुधि बढ़ावहु सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥ कथा कहौं गननाथ को पार उतारो थोर । बुधि हीन निज जानि के सुमिरौं तनय समीर । युधिष्ठरौ वाच । एक समय पूछत भये हरिहि युधिष्ठिर राइ । याह महा संकट परा जाइ सो कहिय उपाइ । सुनहु कृष्ण देवन के देवा । निगम सेष विधि पावै न भेवा ॥ ऐसे प्रभु तुम दीन दयाला । सदा करौ संतन प्रतिपाला ॥ विपति हमारि मिटाकहु स्वामी । कृपा सिंधु उर अंतर जानी । छल कीन्हों दुरजोधन राजा । जीति लियो मोहि राज समाजा ॥ अनुज समेत जुवति संग लाए । कानन फिरौ दुसह दुख पाये ॥ तेहिते प्रभु विनवौं कर जोरो । केहि विधि पाइये राज वहोरो ॥ श्री कृष्णोवाच । कृष्ण कहा सुनहु वचन नरेसा । तव हित लागि कहौं उपदेसा । पूजहु गनपति कहं चित लाई । जेहि पूजे सब दुख मिटि जाई ॥

End.—यहि विधि बारह मास के पूजन व्याहि समुदाइ । विधि से पूजै गनपतो सकल व्याधि मिटि जाइ । यह सुनि धर्म तनै सिर नावा । धन्य कृष्ण यह कथा सुनावा । यहि विधि कृष्ण कहा सो कीतो । तेहि विधि राजा कीन्ह प्रति प्रीती । गनपति की भइ कृपा अपारा । मारि सत्रु कीन्हेउ पैकारा । सुख सो राज महो पर कीन्हा । गनपति को महिमा लिषि दीन्हा । जो गनपति को व्रत चित लावै । मन वांछित नर सो फल पावै । रिधि सिधि धन धेनु अपारा । धरनि धाम सुत संपति दारा । जो यह कथा सुनै अरु गावै । अंतकाल सुरपुर सुख पावै ॥ दोहा ॥ गन नायक को कथा यह संस्कृत मध्य विसाल । जथा बुद्धि भाषा रचित जड़ मति मोतीलाल । इति श्री गणेस पूर्ण श्री कृष्ण युधिष्ठिर संवाद गणेस महात्म व्रत कथा समाप्त ॥ शुभ मस्तु । संवत १९०२ सन १२५४ फसली कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे तिथि पंचमी वार सनिवार दसखत भागीरथ मुकाम चोपाड़िया पोथी रघुवर नाथ कै श्री राम श्री जानुकी सहाई गणेस जी सहाइ । श्री राम श्री राम ॥

No. 283(a). Prarthana by Motirama of Kaṭaila. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—9¼ × 5¼ inches. Lines per page—16. Extent—25 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Gajadhara Mahārāja, Village Nakaṭi, Post Office Chulwāriā, District Baharāich (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः

सवैया। गणिका गज गीध अजामिल और सधन रैदास धना कुवरी। द्रुपदी अरु दुल्ल कपोत मृगी गजराज को वार न देर करी॥ जन मोतीराम कहै हरि सों हरि हो कहं तै सब की सुधरी। तब तो तुम देर करी न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥ १ प्रहलाद को वार पिता सुत सों लखि वैर तुरंत भये नृहरी। व्रज वासिन केरि पुकार सुनी नष धारि गोवर्धन दुख हरी॥ अघ वत्स बकासुर चोंच धरी नृप कंस को मृत्यु न देर करी। तब तो तुम देर करी न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥ अर्जुन के प्रभु सारथी भए दुर्योधन सैन्य संघार करी॥ मथुरा मगधाधिप गांठि लिए क्षण एक में सैन्य संघार करी॥ द्विज दीन सुदामा की विपति हरी वलि सनुक वाहुक वृंद करी। तब तो तुम देर करी न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥

End.—सिव चापक खंड करी क्षण में मिथिलाधिप की तनया यों वरी। भृगुराज को मान हरी नृहरी सब भूपन को सिर नम्र करी। कपि बालि को प्राण हरो छल सो खरदूषण को शत खंड करी। तब तो तुम देर करी न हरी अब काहे को देर करो हो हरी॥ वलि भूप की भूमि हरी सगरी प्रभु वामन रूप तुरंत धरी। नष सो उकराइक भेद करो सब लोक कृतर्पित करी सुरसरी। महि छोरि कै इन्द्रहि दीन हरी उठि भोरहिं दर्शन को झगरी तब तो तुम देर""""॥ ध्रुव संकर नाथ को नास भयो वसुरंध्र कवित्त के जन्म भये से सब शत्रुन नाश करै पढ़वै हरिगो कृत संत सहाय पड़े से बंधुआ सब छूटि गये घर को जन मोतीराम की टेर किपते॥ आठो सिद्धि नवौ निधि पावत पाठ कवित्त के पाठ किपते। इति श्री भट्टाचार्य मोतीराम नन्द रामात्मज चैन राम पुत्र मोतीराम कृत प्रार्थना संकट मोचन सम्पूर्णम्॥

Subject.—विष्णु की स्तुति।

No. 283(*b*). Rāmashṭaka by Paṇḍita Mōtirāma Mikra. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—5¼ × 4 inches. Lines per page—12. Extent—25 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1894 or A. D. 1837. Date of Manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1868. Place of deposit—Paṇḍita Gokarṇa Nātha, Village Kudai, Post Office Fakarpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः हेराम राघव रमेश्वरदीन बन्धो। लक्ष्मीपते दशरथात्मज सत्य संघ। श्री लक्ष्मणादि भरतादिक सेविताङ्घ्रे। सीता-पते मपि निधे कृपा कटाक्षम॥ १॥ हे गाधि सुत मख रक्षण ताड़कारि मारीच मर्दन

सुबाहु विनासि वाहो । पाषाण तारण विदारण राक्षसांना सीतापते मपि निवेदि कृपा कटाक्षम ॥ अनंट कंद जन कारन जानकोस प्रोचंगड शंभु धनुः मर्दन भूपतोस । श्री जमदग्न्य मद भंजन हृष्ट जाते सीतापते र्मपि कृपा कटाक्षम ।

End.—श्राग्ड़ पुष्पक सुपुष्प वृष्टे त्रलोक । मंगल सुभंग नाय कीर्ते । संप्राप्त कोंसल सुकोसल राज्य तोते । सीतापते मपि निधे कृपा कटाक्षम् श्री नन्द नंन्दन पद पद्म पुण्डरीकं निर्बन्ध रन्द मधु तुंदिनमात्रसेन रामाष्टक विरचितं वरमादरेण श्री योक्तिकेन कविना कवि नायकेन । इति श्री महाचार्य नन्दरामात्मज चंदन राम पुत्र मोतोराम विरचिता रामाष्टकं सम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥

No. 284(c). Padmāvata by Malika Muhammad Jāyasī of Jāyas, District Rae Bareli. Substance—Country-made paper. Leaves—318. Size—12½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—4,770 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1858 or A.D. 1801. Place of deposit—Mahanta Guru Prasāda, Hargaon, Post Office Parvatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning.—कीन्हेसि पुरुष एक निरमला । नाम मुहम्मद पूरन कला ॥ प्रथम जोति विधि तेहि के साजो । उनहीं प्रथम सृष्टि उपराजो । दीपक लेसि जगत कहं दीना । भानिरमल जगमारग चीन्हा । जो न सुहोत पुरुष उजियारा । सूभि न परत पंथ अंधियारा । श्रैार फिर अमल सुमारग लिपा । मय धरमी जिन पारसा सिषा । जिन नहि लीन्ह जनम वर नांऊं । तिनकहं दीन्ह नरक महं ठांऊं । मति वसीठ दीन दोइ कीन्हा । दोउ जग तरत नाम यहि लीन्हा ॥ दोहा ॥ गुन श्रैागुन विधि पूछि हैं हुइ है लेषा जोष । भागे ऊ विनवातिहि पावा गति मोष ॥ चोपाई ॥ चारिमति जो महमद ठांऊं । चारिहु के जग निरमल नाऊं । अवावक सादीक सयाने । पहिले दीन पंथ के माने । दूजे उमर खिताब सुहाये । भा जग अदल दीन जो आये । श्रै उसमान मय पंडित गुनो । लिषा पुरान जो आपन सुनो । चैाथे अली सेर वरियारू । कांपे धरती सरग पतारू । चारों एक मते इकवाता । एक श्रै एक संघाता । वचन एक एकन सुना जो सांचा । भा परिमान दुश्रो जग बांचा ॥ दो० ॥ जो पुरान विधि पठवा साई पढ़त ग्रंथ । श्रैार जो आवत भूले, सो सुनि पावत पंथ । सेरन साह दिलो सुलतानू । चारिहु 'ड तपै जस भानू । अस वहछाज छात्र अरु पाटू । सब राजन भुंइधरा लिलाटू । जती सूर श्रै षांड़े सूरा । श्रैार वलिदीन मति सब विधि पुरा । सुर अवर जो नैापड़ भाए । सातव दीप वोनइ वनए । जहं लगि राजघर्ग बल लीन्हा । इस कंदर जुल

करन जु कीन्हा। हाथ सुलेमां केरि अंगुठी। जग को चीन्ह दीन्ह तेहि मूठी। भुंइ पहार जहि सृष्टि संवारी। अस वर साह पुहिम पतिआरी। देहि असीस महम्मद जुग जुग भूजहुराज। पातसाह तुम जग के जग तुम्हार मुहवाज। बरनहु सूर पुहुम पतिराजा। भूमिन सहै भार जो साजा। × × सय्यद असरफ पीर पियारा। जिन मोहि दीन्ह पंथ उजियारा × × × एक नयन कवि मुहमद गुनी। सो कवि मोहै जो कवि सुनी। × × चारि मीत कवि महमद पाये। जोरि मिताई सिर पहुंचाई। मलिक इसफ बड़ पंडित ग्यानी। पहिले भेद बात उन जानी। पुनि सिलार कादो मझिमाहां। खडग दान ऊभ नित बाहा। मियां सलोने सिंह समानि। वीर खेत रन खरग जुझारे। सेष बड़े बड़ सिद्ध महाना। करियदेश सिद्ध बड़ माना। जाइस नगर धर्म अस्थानू। तब बासह कवि कीन्ह बखानू। कै..................

End.—एक पुरुष को एकहि थानू। एक चांद एकहि पुनि भानू। जो सब कर पर पुरुष अहई। एक ते एक रूप जा पुनि ताहीं। घट घट दीपक लेहु ग्याना। नाहीं तेल जरु अभिमाना। पांचहु मिलि के नाचहु ताहां। थाइ पुरान पूर्वतम जाहां। जन्म मरन परहि जेहि थाता। वहि के रंग रहसि जो राता। नाहित जन्म जन्म पछिताहु। रहटिघरी अस फिरि फिरि आहु। वास पाइ यह वाजनि भूलहु। करि करि कवधि देहिं अन फूलहु॥ दोहा॥ सुष संवाद जनि भूलहु हुइ है अन्त के कार। नाहीं तो पछिताइ हैं वहि पांचों करि छार। इति श्री पद्मावत कथा मलिक मुहम्मद कृत सापूरन शुभ मस्तु—जो इदं पुस्तकं पृष्टवाइष्यं लिपि मया जदि शुद्धं अशुद्धा वा मम दोषो न दीयते सम्वत १८५८ चैत्रमासे कृष्णपक्षे पंचमायाम् गुरु वासरे पद्मावत ग्रंथ सम्पुर्ण शुभमस्तु।

Subject.—(१) पृ० १ से २४ तक—जन्म खंड। (२) पृष्ठ २५—२८ तक सरोवर खंड। (३) पृ० २९ से ३२ सुवा खंड। (४) पृ० ३३ से ४८ तक श्रृंगार खण्ड। (५) पृ० ४९ से ६० तक जोगी खंड। (६) पृ० ६१ से ६४ तक पयान खंड। (७) पृ० ६५ से ६६ तक गजपति खंड। (८) पृ० ६६ से ८६ तक बसंत खंड। (९) पृ० ८७ से ९६ तक सेना खंड।। (१०) पृ० ९६ से १०२ तक बसीठ खंड। (११) पृ० १०३ से १३० तक बिवाह खंड। (१२) चौराहर खंड पृ० १३० से १३६ तक। (१३) पृ० १३७—१५६ तक बारह मास पदुम। बारह मासा—१५६ से १६० तक—(१५) पृ० १६१ १७८ तक—जोगिनी चक्र खंड। १६० से २०८ राघौ चेतन खंड। (१७) पृ० २०८ से ३१८ तक सम्पूर्ण युद्धादि बर्णन सहित पृ० ३१८ तक

No. 284(*b*). Padamāvatī Kathā by Muhammad. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size—11½ × 7

inches. Lines per page—40. Extent—5,600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—1275 Fasali or 1858 A. D. Place of deposit—Kunja Bihāri, Bihatā, Rae Bareli.

Beginning.—श्री गणेशायनमः अथ पोथी पदुमावती लिष्यते।

चौपाई ॥ सवरों आदि एक करतारू—जेइ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू कीन्हेसि पृथवी जाति प्रगासू—कीन्हेसि नव पर्वत कैलासू कीन्हेसि अगिनि पवन जल षेहा—कीन्हेसि वहु तरंग था रेहा कीन्हेसि धरनी सरग पतारू—कीन्हेसि वरन वरन औतारू कीन्हेसि स्याम सेत नव खंडा—कीन्ह भुवन चौदह नव षंडा कीन्हेसि दिन दिनकर ससि राती—कीन्हेसि नषत तराइन पांती कीन्हेसि धूप सीत अर छाहा—कीन्हेसि मेघ बीज जेहि मांहां कीन्ह सबै अस जाहिकर दुसरेह छाजै काइ पहिले टइउ नांउले कथा करौ परगाह ॥

End.—एक पुरुष के एकै थानु—एक चांद एकै पुनि भानु जो सब कर पर पुरष आहौ—एकतै करु पूजा पुनि ताही ब्रहमह दीपक लेसहु ग्याना—नाहीं तेल जाउ अभिमाना पांचहु मिलि कै नाचहुं ताहीं—आइ पुरान पुरष तम जाहीं जनम मरन परै जेहि याता—वहि के रंग रहसि जो राता नाहि तो जन्म जन्म पछिताहू—रह रह घरी अस फिरि फिरि जाहू वास पाइ इहु वाजनि भुलहु—कारि कारि कवच देहि जनि फूलहु सुष संवाद जनि भुलहु वो इहि पंत वेकार—नाहीं तो पछिताउ है। यहि पांचो करु छार। इति श्री कथा पदुमावती सपुर्णम् सुभ मिती भादों वदी १३ सन १२७५ साल।

No. 285. Bhāwara-gita by Mukunda. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—9. Extent—190 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1906 or A. D. 1849. Date of Manuscript—Samvat 1906 or A.D. 1849. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaprapanna Mālaviya Vaidya, Sultānpur (Oudh).

Beginning.—ऊधौ कौ उपदेश सुनहु ब्रजनागरी। रूप सील लावन्य सबै गुन आगरी ॥ प्रेम सुधा रस रूपनी, उपजावत सुष पुंज। सुंदर स्याम विला(सि)नी नव वृंदावन कुंज ॥ सुनौ ब्रज नागरी ॥ १ ॥ कहौ स्याम संदेस एक मैं तुम प लायौ। कहन समै संकेत कहूं औसरहि (न) पायौ ॥ सोचत हौ मन मैं रह्यौ कब पाऊं एक ठांउं। दै संदेस नंदलाल कौ बहुरि मधुपुरी जाउं ॥ सुनौ ब्रज

नागरो ॥ २ ॥ सुनत स्याम को नाम ग्राम गृह की सुधि भूलो। भरि आनन्द रस हृदै प्रेम बेलो द्रुग फूलो ॥ पुलकि रोम सब अङ्ग भये भरि आये जल नैन। कंठ छुटे गदगद गिरा बोले जात न बैन ॥ ३ ॥ बिवस्था प्रेम की ॥

End.—सुनत सखा के बैन नैन भरि आये दोऊ। बिवस प्रेम आवेस रही नाहिन सुधि कोऊ ॥ रोम रोम प्रति गोपिका ह्वै गई सांमरे गात। कल्प तरोवर सांमरो ब्रज बनिता भई पात ॥ उलहि सब अंग अंग ते ॥ ७३ ॥ ह्वै सचेत कहि भले सखा पठयो सुधि लावन औगुन हमरे आनि तहांते लगे दिखावन ॥ मो मैं उन मैं अंतराय एकौ छिन भर नहिं। ज्यों देखो मो मांझि वे त्यों मैं उनही मांहि ॥ तरंग वारि ज्यों ॥ ७४ ॥ गोपी आय दिखाय एक करि कै वनमालो। ऊधो को मर्म निवारि व्यामोह को आलो ॥ अपनौ रूप दिखाय कै लोनौ बहुरि दुराय। जन मुकुंद पावन भयो सो यह लीला गाय ॥ प्रेम रस पुंजनी ॥ ७५ ॥ इति श्री भवर गीत संपूर्णम् ॥ संवत १९०६ ॥ मिति कार वदि ॥ ६ ॥

Subject.—(१) पृ० १–८ तक—उद्धव तथा व्रज बनिताओं के प्रश्नोत्तर-उद्धव का जोग तथा निराकार वर्णन, सखियों का प्रेम ॥

(२) पृ० ९—१२ तक—गोपिकाओं का ध्यानावस्थित होकर उन्माद की सी दशा दिखाना और कृष्ण को उपालम्भ देना।

(३) पृ० १३—१६ तक—एक भ्रमर आगमन, उससे गोपियों का उलाहना देना और डाट डपट करना।

(४) पृ० १७—२० तक—गोपियों का एक दम मिल कर रुदन करना, ऊधव का प्रेम में निमग्न होना तथा आकर कृष्ण को समझाना। कृष्ण के प्रेम पूरित नेत्रों से अश्रु निकलना। ऊधव को गोपियों का तथा अपना एक रूप दिखा कर कृष्ण का भ्रम निवारण करना। ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 286. Raghunātha Śataka by Paṇḍita Munnālāla. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—9 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—580 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiyāwanā Lāla, Village Daulatapura, Post Office Bilaharā, (Bārā Bankī).

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ श्री आनन्द कंद रघुनन्दनाय नमः ॥ दोहा ॥ विधि हरि हर जाको सदा जपत रहत हैं नाम। बसहु निरंतर मोहि मैं सिया सहित सो राम ॥ १ ॥ सिया रमन के चरन हैं करन सकल मुद मूल।

कंज वरन असरन सरन सुषमा भरे अतूल ॥ २ ॥ ए मेरे मन मधुप तू तौ तिहि से कर प्रेम । सो कर हित सब लोक में जो चाहत निज छेम ॥ ३ ॥ सरनागत वत्सल नहीं ऐसो नायक थैार । तातें रघुनायकहि भजु सुखदायक सिर मैार ॥४॥ समाधान कवि कृत ललित लछिमन शतक निहारि। ताहि सोधि मुद्रित कियो परम विचित्र विचारि ॥ ५ ॥ भई लालसा चित्त में ऐसेई अभिराम। करहु शतक रघुनाथ को रसकनि कैां सुखधाम ॥ ६ जिन्हें सुनत रघुनाथ में उपजे पावन प्रीति । सत कवित्त ऐसे धरों तामें सुगम सुरीति ॥ ७ ॥ तब कवित्त सत कविन के ले द्विज मुन्नालाल । करत शतक रघुनाथ को सुखदायक सब काल ॥ ८ ॥

End.—अथ सवैया—सुद्द काजहि में पगिवो अतिही यह तौन भले जनको मगु है । सुत दारिन में भरिबो अति नेह भुजंगम पै धरिबो पग है ॥ हनुमान कहै भव सागर के तरिबे को या मेरी कहौ डगहै । अपनो करु राम सिया वर को अपनो न कोऊ सपनो जग है ॥ ५ ॥ सत संगति को करिके मन ते दुर बुद्धि के भाव भगावने हैं । गुरु जे उपदेश कियो तिनको कहुं बैठि इकंत जगावने हैं ॥ हनुमान जिते कहैं बैन तिते कुल छन्दन के महि गावने हैं । विषयादिक सों रति मे न चहौ रघुवीर में प्रेम लगावने हैं ॥ ६ ॥ या जग जीवन को है यहै फल जो छल छांड़ि भजै रघुराई । सोधिकैं संतत संतन हू पदमाकर बात यहै ठहराई ॥ कै रहे होनो प्रयास विना अनहोनो न कै सकै कोटि उपाई ॥ जो विधि भाल में लीक लिखी सु बढ़ाई बढ़े न घटै हू घटाई ॥ ७ ॥

बैस बिसासिन जाति वही उमही छिन ही छिन गंग की धार सो ।
त्यों पदमाकर पेखनियां अजहूं न भजे दसरत्थ कुमार सो ॥
वार पके थके अंग सबै मढ़ि मोच गरेही परी इरि हार सो ।
देखै दशा किन आपनी तू अब हाथ के कंकन कों कहा आरसो ॥ ८ ॥

× × × ×
× × × ×

इति श्री हरनाथात्मज पंडित मन्नालाल कृत रघुनाथ शतक संग्रह समाप्त पोष कृष्ण दशम्या १० शनैा संवत् १९३१ ।

Subject.—(१) पृ० १–१६ तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण हेतु तथा उद्देश, रामजन्म, राम बाल क्रीड़ा, मृगया वर्णन, धनुष यज्ञ, जनकपुर की स्त्रियों के मुख से राम की सुंदरताई तथा उनके सभी भाइयों की शरीर सुषमा का वर्णन—राजकुमारों के वस्त्राभूषण तथा अंगरागादि का वर्णन । धनुष भंग के समय राम की छवि का वर्णन ।

(२) पृ० १७—३४ तक—रावण से धनुष न टूट सकने का कथन, धनुष भंग होने का वर्णन। राम द्वारा की गई कुछ यश-वार्ताओं का वर्णन। राम की विविध कवियों द्वारा गाई हुई विरुदावली॥

No. 287. Jñānachandrōdaya (Dōhā Vishṇupada) by Śrī Murlidhara Jaduvaṁśī of Barasānā. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—6½ × 3½ inches. Lines per page—5. Extent—66 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1812 Samvat or 1755 A.D. Place of deposit—Paṇḍita Lakshaman Prasādajī, Village Bhiyā Mau, Post Office Haidargarah, District Barabankī.

Beginning.—श्री लाड़लो जी सहाय। अथ बरसाने के विष्णु पद और दोहा लिख्यंते। क्षीर समुद बैकुंठ में वेद कहत निज धाम। सो मैं देख्या आइ के बरसाने विश्राम॥ १॥ राग सारठो-विष्णु पद। परवत पर राजत श्री ठकुरानी। नंद नंदन ललितादिक बनिता दरसन रहत लुभानो॥ निदत सरदचंद मुख शोभा रतिहु रहत लजानो। नेक कोर को कृपा कोजिये मुरलो करत बखानो॥ २॥

End.—अथ ठाकुर ठकुरानो को सेज पर उठि बैठिबा वर्णन॥ राग विभास॥ विष्णु पद॥ भाजु दोउ शोभित हैं अलसाने॥ कमल नैन पर मुकुलित देखियतु भ्रमर रहत भ्रमसाने॥ काक पक्ष विगलित पलकावलि करि नहिं सकत पयाने॥ मुरलोधर मुखशोभा ऊपर मैया विभास हरखाने॥ २०॥ अथ प्रात वर्णन। विष्णु पद॥ प्रात समय राधा हरि राजत॥ घूंघट में मन मथ मनु बैठ्यो बान कटाक्षन साजत॥ चंचल चारु नैन ता भीतर युगल मीन लांछ लाजत॥ मुरलोराम विभास अलाप्यो मंद मंद धुनि बाजत २२॥ अथ विष्णु पद औ दोहा वर्णन॥ दोहा॥ प्रेम द्विविंशति २२ भानु पठि चित्त में होत प्रकाश। रोझि समुझि नर कहत हो अघ तम होत विनाश॥ २३॥ इति श्री ग्राम बरसाने वासो यदुवंशावतंश श्री मुरलोधर विरचितायां ज्ञान चन्द्रोदय दोहा विष्णु पद समाप्तं शुभ मस्तु॥ पक्षि चन्द्र वसु चन्द्र १८१२ पुनि संवत्सर परिमान॥ एकादशी कुजवार को कोन्हों प्रेम बखान॥ २४॥

Subject.—(१) पृ० १—बरसाने की प्रशंसा और लाड़िली जो की वन्दना। (२) पृ० २ से पृ० ३ तक—कुंवरि लड़ैतो के बरसाने का वर्णन। (३) पृ० ४—संकेत से कदम खंडो और पाहर खंडो में होकर गह्वर में जाना—सखो का मनोरथ वर्णन। (४) पृ० ५—अथ लाल को ललिता में सखी

भाव का लीला हाव वर्णन। (५) पृ० ६—७ तक—पूर्वाराग से लेकर विमास तक ठाकुर और ठकुरानी अकेले गहवर वन को गये तहां सखियों के जाने का वर्णन। (६) पृ० ७—९ तक—गहवर से राधा हरि के मंदिर के चाने का वर्णन। (७) पृ० ९—१० तक—बरसाने की आरती का वर्णन। (८) पृ० ११—१२ तक—भगवान के मंदिर में सुशोभित होने का वर्णन। (९) पृ० १३—१४ तक—लाड़िली की प्रीति का वर्णन। (१०) पृ० १४—१५ तक—लाल, लाड़िली का शयन वर्णन। (११) पृ० १६—१७ तक—सखी ठाकुर के उठाने का वर्णन। (१२) पृ० १७—१८ तक—प्रभात वर्णन। (१३) पृ० १९—२० तक—दोहा विष्णु पद।

No. 288(*a*). Nakha-sikha by Muralidhara Miśra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Badarinātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नष शिष लिख्यते ॥ कोटि कोटि दामिन की दुति देषि वारि पति संवराई वारियत कोटि घन घोर को। जटित जराइ टीकौ सोहतु लिलाट नीकौ तैसे चारु चन्द्रिका विराजे माथे मोर को ॥ तिहू लोक भामा अंग अंगनि जगमगाति मुरलीधर तैंसिये चितौनि चित चोर को ॥ कुंज के सदन सुख सरस वरसावत हैं वलि वलि जैये ऐसे जुगल किसोर को ॥ १ ॥

तीन लोक ठाकुर सदा दूलह नंद कुमार।
दुलहिन रानी राधिका नष शिष बोध अपार ॥ २ ॥
व्याप रहौ सब जगत में जिनकौ जुगल स्वरूप।
वृन्दावन क्रीड़ा करत सदा सनातन रूप ॥ ३ ॥

End.—धन्य भाग ब्रज के जहां लीयौ दुहिनि अवतार।
जगत कृतारथ कौं कियौ जिनिके प्रेम प्रकार ॥ ६० ॥
यह नष सिष पोथी रची मुरलीधर सुख कारि।
भूल्यौ होहि जहां कछू लीजौ सुकवि सुधारि ॥ ६१ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नष शिष संपूर्णम् ॥ संवत् १९०२ कार्तिक कृष्ण १२ सोमवार शुभम् भवतु लिषतं गोविंद राम पठनार्थम् ॥ शुभं ॥

Subject.—छं० १—७ तक सुंदरता वर्णन—छंद ८—१३ अंगुली भू वर्णन। पड़ो, पिंडुरी, जंघा, नितंब, कटि वर्णन ॥ छं० १४—२७ तक पीठ, उदर,

उरोज, कंचुकी, कर, कुच, मेंहदीयुत कर भुज, ग्रीव, चिबुक, ढोड़ी तिल, कपोल वर्णन। छं० २८—४१ तक—कपोल, अधर, दशन, रसना, मुसक्यान, मुख, नासिका, नथ, नेत्र, बरुनी वर्णन, छं०—४२—५२ भृकुटी, भाल, श्रवण, केश, मांग, बंदन, पाटी, बेनी, सर्वांग, भूषण, छं० ५३—६१ तक। शृंगार रस चेष्टा, सहज शृंगार, स्वरूप, ऐश्वर्य—

No. 288(*b*). Piṅgala Piyūsha by Muralidharā Miśrā of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—26. Extent—1,040 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1813 or A.D. 1756. Date of Manuscript—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥

रघुवर पद पंकज सुमिरि गनपति के गुन गाइ।
कह्यो चहत पिंगल कछू सेसौ को मत पाइ ॥ १ ॥

मत्त बरन के छंद कौं सोहत सिंधु अपार।
धन्नि सेस जिन पैरि कै पायौ याको पार ॥ २ ॥

बड़े बड़े सत्कविन के सुनि सुनि विविध विचार।
मुरलीधर छंदनि रचत अपनी मति अनुसार ॥ ३ ॥

विविध भांति के छंद ते गुरु लघुही ते होत।
यातें लक्षन दुहुनि के पहिले करत उदोत ॥ ४ ॥

वक्र रेखतें गुरु लखौ सूधो ते लघु जानि।
इनिके कहतु स्वरूप अब पिंगल कौ मतु मानि ॥ ५ ॥

End.—बिधि ससि बसु ससि में लयौ संवत पौष सुमास।
शुक्लपक्ष नवमी गुरौ कीनौं ग्रंथ प्रकाश ॥ ८५ ॥

बहुत करी मैं चाकरी अब सेवतु रघुनाथ।
बेई सुख सब लेत हैं पालत सब के साथ ॥ ८६

यह पियूष पिंगल रच्यौ कृपा पाइ रघुनाथ।
लीजो सुकवि सुधारि कैं कहतु जोरि कैं हाथ ॥ ८७

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचितं पिंगल पियूष ग्रंथ समाप्तं ॥ संवत १९०३ ॥ कार्तिक कृष्ण नवमी ९ शुक्र वासरे लिषो गोविंद राम शुभमस्तु ॥

Subject.—पृ० १-८ तक छंद की प्रशंसा, मात्रा, गण वर्णन, प्रस्तार विधि, गणमैत्री, मेरु, मर्कटी, पताका आदि वर्णन—पृ० ९—१७ गाह्न, गाहा, गाहा भेद, विगाहा, गाहिनी, साहिनी, दोहा, रोला, सभेद, छंद, चौपैया, उल्लाला,-पृ० १८—३४ छप्पय भेद, गंगनाग आदि, मद, मधुभार आदि पृ० ३५—७८ तक, वर्णवृत्त, चूलामनि, चित्रपदा, मानवक, दीपक माला आदि तक-वंश वर्णन, संवत् आदि पृ० ७९—८० तक ।

No. 288(*c*). Rasa Saṅgraha by Muralīdhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—$8\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—1,120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A.D. 1762. Date of Manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Ṭhakura Jadunātha Baksha Siṁhajī, Hariharapura, District Baharāich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रस संग्रह लिष्यते ॥ सवैया ॥ संकर के सब लाइक हौ सुष दायक हौ सुमिरौ गुन तेरे। कीजै कृपा करिकै इतनो बुधिवानो में होहि विलास घनेरे। विघ्न विनासन हौ तुमहीं मुरलीधर काजकरौ बहुतेरे। चाहत हौं रस ग्रंथ रच्यो गणनायक होहु सहायक मेरे ॥ १ ॥

दोहा ॥ पहिले मैं सब रसनि के राखे कवित बनाइ।
तिनकौ अब संग्रह करतु गनपति सीस नवाइ ॥
रस कहियतु है ब्रह्म को व्यापि रह्यो सब ठौर।
नौ प्रकार सो जानियो कहत सुकवि सिर मौर ॥
प्रथम नाम सिंगार है दूजो हास गनाइ।
तीजो करुना कहत हैं चौथो रुद्र सुभाइ ॥
पुनि है वीर सु पाँचयो, षट बीभत्स बषान।
भय को सतयों समुझिये अठयों अद्भुत मान ॥ ५ ॥

End.—नौह रस के कवित को समुझि हिय समुदाय।
रस संग्रह या ग्रंथ कौ धरो नाम कविराय ॥ ३३ ॥
जो कोऊ या ग्रंथ कौं पढ़ें सुनै चितलाइ।
ताके मन में रस झलक झलकत है कछु आइ ॥ ३४ ॥
गुण वसु ससि अंकनि लषौ संवत फागुन मास।
असित पक्ष दसमी रवो कोनो ग्रंथ प्रकास ॥ ३५ ॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते रस संग्रह ग्रंथे सतो सा सर्गं संपूर्णम चैत्र मासेकृष्ण पक्षे तिथौ एकादश्यां सोम वासरे संवत् १८९२ ॥ लिपि त्रिउराम्बन सुक्र शुभं भूयात ॥

Subject.—पृ० १—६ तक गणेशवन्दना, ग्रंथ निर्माण, रस वर्णन, शृंगार वर्णन, हैली, लीला वर्णन।

पृ० ७—८ तक विवाह समय वर्णन। तीज त्योहारो, दिवारी, वसंत, होरी, चांदनी आशिर्वादादि, संयोग शृंगार

पृ० ९—२२ तक वियोग शृंगार, पूर्वानुराग, उपालंभ मान, रसाभास, धीरा, धीराधीरा, सखीकर्म कथन, हास्य, दूतीकर्म, करुण विरह, उत्कंठिता, कलहंतरिता, वासकसज्ञा, दशा, अभिलाष, स्मृति, गुण, उद्वेग, प्रलाप उन्माद, व्याधि, जड़ता वार्ता संदेस, वात्सल्य।

पृ० २३—२४ तक हास रस कथन, स्वनिष्ट लक्षणादि परनिष्ट।

पृ० २५—२६ तक करुणा रस कथन, स्वनिष्ट पर निष्ट कथन।

पृ० २७—२९ तक रौद्र रस।

पृ० ३०—३२ तक वीर रस वर्णन, युद्धवीर, दानवीर, कीर्ति वर्णन, अस दशरथ दान, दयावीर

पृ० ३३—३४ तक भीभत्स रस वर्णन।

पृ० ३५—३६ तक भयानक रस वर्णन पृ० ३७–३८, तक अद्भुतरस वर्णन।

पृ० ३९—५६ तक शांतरस, स्तुति वर्णन, जमुना, मथुरा, शिव, गंगा, अयोध्या भवानी, सूर्य, काशी, सरयू, रचना वर्णन।

No. 288(*d*). Rasa Saṅgraha by Muralidhara Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—13 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1820 or 1763 A.D. Date of Manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādur Siṁha Bhingārāja, Bahrāich (Oudh).

Note.—शेष सब No. 288 (*c*) के अनुसार है।

No. 289(*a*). Ashṭayāma by Nābhā Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—175. Size— ½ × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—941 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—

Samvat 1890 or A.D. 1833. Place of deposit—Lālā Rāmādhina Vaidya, Bārābanki.

Beginning.—श्री जानकी वल्लभायनमः॥ सोरठा॥ राम कृपा के रूप बंदो श्री गुरुपद॥ जिनके सुजस अनूप दशधा सम्पति धनद जिमि॥१॥ दोहा॥ सिय पिय के आन्हिक चरित कहत सुकवि सकुचात। तहं मममति अति चपल लषि छिन छिन अधिक लजात॥२॥ नित्य श्री नृप मंडली अवधि अखंड विहार॥ ज्येहि सेवत चहुंओर नित प्रभुके सब अवतार॥३॥ जानकि वल्लभ लाल के जीवनधन यहि धाम॥ द्वादस रस लीला अमित गुन समूह विश्राम॥४॥ कहे प्रगट धाम्वर्य अति कहुं संयोग वियोग॥ जुगल संधि माधुर्य रति नित्य दिव्य सुख भोग॥५॥ सज्जन उर प्रेरित गिरा रघुबर आज्ञा दीन॥ सोवल मन अवलम्ब लहि वचन शीश धरि लीन॥६॥

End.—(बरवा) सषि सुषमा सुष सागर सुंदर सोइ। राम कुंवर अनुहरिया लषेउ न कोइ॥१॥ मंद मंद मुष विहसनि मधुर सुबोल॥ राम कुंवर चितवनियां लीन्हेउ माेल॥२॥ बिनु देषें दोउ अषियां अति अकुलांहि। तलफत मोर जियरवा निकसत नांहि॥३॥ हा रघुनंदन चंदन सीतल अंग॥ विकल बाल विरहिनियां बिन पिय संग॥४॥ सषिमन मोहन सोहन जोहन जोग॥ छोहन जियत जियरवा भामिन भोग॥५॥ ललित अंग सुष धामहि नामहि देहु॥ पीतमलाल पियरवा यह जनु लेहु॥६॥ × × ×
× × × × × ×
सषि हम राम कुंवर कहं तन मन दीन॥ सुर नर मुनि सब देषत हंसि हंसि लीन॥१२॥ संवत् १८९०॥ मिति अषाढ़ शुक्ल द्वितीयायां॥ बुध वासरे समाप्त॥ दोहा॥ श्री मग्न प्यार सागर सुमति नाभा अलि रसलीन। अष्टजाम सियराम गुन जलधि कीन मन मीन॥

Subject.—(१) पृ० १—१९ तक—गुरु वन्दना प्रस्तावना. कवि का नाम निर्देश—सोरठा॥ नाभा श्री गुरुदास सहचर अग्र कृपाल के। विहरत सकल विलास, जगत विदित सिय सहचरी॥ सीता जी की वन्दना, अवध की शोभा का वर्णन, उसके वैभव का वर्णन, चार दरवाजों का वर्णन, साकेत की सीमा, द्वादश वन वर्णन, बनो की शोभा, नगर के तीन ओर सरयू का वरनन, परिखा तथा कोट की शोभा, सिंह पैारादि शोभा, सिंह पैार के हाथी घोड़े इत्यादि का वर्णन, यान वर्णन, कोट के भीतर के पांच चैाकों का वर्णन, रानियों के महलों की शोभा, राज पुत्रों तथा उनकी स्त्रियों के निवास भवनों का वर्णन।

(२) पृ० २०—४० तक—रानियों के समाज में तिरहुत से आये हुए पत्र का सानन्द पाठ। चार दंड रजनी अवशेष रहने पर बन्दीगणादि का आगमन। राम

को सखियों का गाना कर जगाना, राम के पलंगादि की शोभा, जल पात्रों का वर्णन, सखियों का गजरा तथा गंधादि पदार्थ लाना, स्नानागार इत्यादि की शोभा—एक अन्तरंग का जा कर राम को जगाना, जगने पर रति चिन्हों को मिटा कर प्रगट होना। नित्य कृत्य से निश्चिन्त हो स्नान करना, हास्य विलास पश्चात् महलों से चल देना।

(३) पृ० ४९—५६ तक—आर्तों को दान देना। सखियों का आरती उतारना, सखाओं का मिलन, नगर वासिनियों का अटारियों पर चढ़ कर राम की शोभा देखना। सब भ्रातादि के साथ राम का बैठना, उधर श्री सीता जी के यहां सम्पूर्ण सखियों का आगमन, परस्पर का प्रेम व्यवहार। प्रातःकाल की आरती। सखियों का अपनी इच्छानुसार राम के अंगों को देख कर संतुष्ट रहना, स्नान को गमन।

(४) पृ० ५७—६६ तक—प्रत्येक राजकुमार का अपने अपने स्नान के स्थानों में जा कर स्नान करना, सखियों की केलि, स्नान पश्चात् मुनियों का आशिर्वाद देना, दान इत्यादि, महलों को आना।

(५) पृ० ६७—७० तक—महलों में आकर सखियों द्वारा शृंगार। सबेरे के भोजन का वर्णन। सखियों का गान। एक याम गत लख कर अंतःपुर के द्वार पर कुछ क्षण व्यतीत करना।

(६) पृ० ७०—९१ तक—भोजन—नाना प्रकार के पूरी पकवान तथा अचारादि का वर्णन, दम्पति का भोजनों के साथ साथ हास विलास, चन्द्रकला का तिरहुत के पत्र का वर्णन करना, सखियों का भोजन, पानों की बीड़ी परस्पर खिलाना। राम का शयन करने के लिये जाना। नाना भांति के वाद्यादि सहित गान, सोना, सखियों की परस्पर की केलि, राम का उठना।

(७) पृ० ९२—१३३ तक—राम सभा गमन। पिता का माता, मंत्रियों इत्यादि के साथ व्यवहार के विषय में पूछना, खेलने की आज्ञा पा कर जाना, शिकार का वर्णन, अवध की वीथिकाओं में राम के शुभागमन पर स्वागत, बाग में जाकर फलादि पदार्थ भोजन, लक्ष्मणादि का घोड़ों को फेरना, घूमते घामते सिंह द्वार पर आगमन, वहां से सभों को विदा करना, सब माताओं से मिलना, पतंग बड़ाना, संध्या समक्ष सबको विदा कर संध्या वंदन करना।

(८) पृ० १३४—१५१ तक—सीता के यहां गुरु नारियों का आगमन, सीता का उनकी सुश्रूषा करना, सीता का सासुओं के पास जाना, लौटते समय बीच में पड़ने वाले स्थानों की तथा बाग की शोभा का वर्णन, ऋतुओं का वर्णन।

रस मंजरी द्वारा दम्पति का शृंगार। अर्द्धरात्रि पश्चात केलि वर्णन। द्वादश हाव वर्णन। नृत्यशाला का वर्णन।

(९) पृ० १५६—१७० तक—हिंडोले का वर्णन। सोने के लिये पलंग का सजाया जाना। अंग आभरणादि का संभाला जाना। परदा डाल देना। सखियों का गान। गुरु का परिचय।

(१) श्री अग्रदेव गुरु कृपातें बाढ़ो नवरस बेलि। चढ़ो लहै तौ लाल छवि फूलो नवल सुकेलि॥

कोल कुंज की शोभा—

(२) श्री अग्रदेव करुना करो सिय पद नेह बढ़ाय × × × ×

ग्रंथ समाप्ति।

(१०) पृ० १७१—१७२ तक—अग्रसुमति का वंश।

(११) पृ० १७३—१७५ तक—उपसंहार।

Note—गुरु वंश वर्णन।

श्री रामनंद रघुनाथ ज्यों किये। सेतु बिस्तार। तेहि चढ़ि नर भव सिंधु तरि पहुंचहि हरि दरबार। तासु शिष्य षष्टांग विद नाम अनंतानंद। ज्ञान भक्ति वैराग्य निधि गुरुकुल कैरव चंद।

चौ०—श्री कृष्णदास अवतार सुहावन। तेहि के अग्र सुमति जन पावन॥ तेहि के विमल बिनोदी जानो॥ तेहिते ध्यान दास सनमानो॥ चरनदास मंगल गुनखानो॥ सिय पद बाल कृष्ण रति मानो॥ श्रीसुधरामदास तेहि केरे॥ रसिक राम सेवक प्रभु केरे॥ केसव कुंज सिया वर दासा॥ श्री जानकी शरण सिय पासा॥ सहजराम सियराम हजूरी। जुगल चरन रति मति अति पूरी॥ अग्र सुमति के। बंस उदारा॥ भले भाव रति जुगल विहारा॥ जानकि वल्लभ टेकनाल को॥ जै जै जै सिय विदित बालको॥

No. 289(*b*). Bhaktamāla by Nārāyaṇadāsa (Nabhādāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—14 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—1,620 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Sarjūprasāda, Village Mahru, Post Office Matera, District Bahrāich (Oudh).

Beginning.—अथ मूल भक्तमाल नारायण दास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुरनाम वपु एक । इनके पद वंदन करत नासै विघ्न अनेक ॥ मंगल आदि विचारि कै वस्तुन और अनूप । हरिजन को जस गावते हरिजन मंगल रूप ॥ सब संतन निरनै कियो मति श्रुति पुरान इतिहास । भजिवे को दोऊ सुघर है कै हरि हरि के दास ॥ श्री गुरु अग्रदेव आज्ञा दई भक्तन को जस गाव । भवसागर के तरन को नाहिन आन उपाव ॥ छप्पै ॥ जय जय मीन वराह कमठ नरहरि बलि बावन परसराम रघुवीर कृष्ण कीरति जगपावन ॥ बुध कल्कि व्यास पृथु हरि हंस मन्वंतर । जग्य रिषभ हयग्रीव ध्रुव वरदैन धनंवतर ॥ बद्री पति दत कपिलदेव सनकादि करुना करौ । चौबीस रूप लीला रुचिर श्री अग्रदास यह उरधरौ ॥ चरन चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहाइका अंकुस अंवर कुलिस कमल जव ध्वजा धेनु पद । संष चक्र स्वास्तिक जंबुफल कलस सुधाहृद ॥ अर्धचन्द्र षटकोन मीनबिंदु उर्धरेषा ॥ अष्टकोन त्रयकोन इन्द्र धनुष पुरुष विसेषा ॥ सीता पति पद नित बसत एतै मंगल दायका । चरन्ह चिन्ह रघुवीर के संतन सदा सहायका ।

End.—फल अस्तुति साषी ॥ पादप पेड़हि सींचते पावै अंग अंग पोष । पूरुब जान्यो वरनते सब मानियो संतोष ॥ भक्त जिते भूलोक में कथे कौन पै जाय । समुद्रपान श्रद्धा करै कहा तिरिया पेट समाय ॥ श्री मूरति सब वैष्णव लघु दीरघ गुनन अगाधु ॥ आगे पाछे बरनतै जिन मानौ अपराध ॥ फलकी सोभा लाभतरु सोभा फल होय गुरु सिष्य की कीरति में अचरज नाही कोय ॥ चारजुगन में भक्त जे तिनकी पद की धूरि सर्वसु सिर धरि राषिहौं मेरो जीवन मूरि ॥ जग कीरति मंगल उदै तीनो ताप नसाय । हरि जन को गुन बरनते हरि हृदय अटल बसाय ॥ हरिजन को गुन बरनते जो करै असूया आय यहां उहार बाढ़ै विथा अरु परलोक नसाय ॥ भक्तदास संग्रह करै कथन श्रवन अनुमोद सो प्रभु को प्यारो पुत्र ज्यों बैठे हरि की गोद ॥ अच्युत कुल जस एक वेर है जाको मति अनुरागो । उनकी भक्ति भजन सुकृति को निश्चय होय विभागो ॥ भक्त दास जिन जिन कथी तिनकी जूठनि पाय । मो मति सारू अक्षर द्वै कीनो सिलो बनाय ॥ काहू को बल जोग जग्य कुल करनी की आस भक्त नाम माला अगर उर बस्यो नरायनदास ॥ इति श्री भक्तमाल मूल श्री नरायनदास कृत समाप्त इति श्री मूल भक्तमाल नारायनदास कृत लिख्यते अयोध्याप्रसाद महुअ ग्राम संवत १९१६ अमावस्या वैसाष मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे ।

Subject—नाभादास कृत मूल भक्तमाल का छंदानुवाद

No. 289(*c*). Rāmacharitra by Nārāyaṇadāsa (Nābhadāsa). Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—15 × 4

inches. Lines per page—20. Extent—472 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Saṃvat 1914 or A.D. 1587. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Siṁha, Village Gujaulī, Post Office Baunī, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—बहु अति कोमल बिछे गलीचा सुमनन की रचना बिच बीचा ॥ कहुं कंचन की चौकी धरी । श्री सरजु जल भारी भरी ॥ रतन जड़ित बहुधरे कटोरा । बहु मेवा जुत स्वाद न थोरा ॥ पान दान बीरन ते भारे । अगनित भाँति सुरभि पद धरे ॥ पुनि ताही पाछे परदा डारे । तहं नूतन लोप ईठि सवारे ॥ प्रेम चवर नव सु मंजरी पुनिताह तौरस सहचरी ॥ तीन पीछे ब्यालन बहुराजे । निज निज सौ लिये सब भ्राजे ॥ कोई ताम्बूल लिये कोई भारी । कोई सुमनन सिंगार सवांरी रंग रंग के अगरा लीन्हे पीतम मग चितवत चित दीन्हे ॥ चंतहपुर की धुनि सुनि पाई । निज निज थल तिन सेज बनाई ॥ कोइ एक समै परभाती लिये सुगंध अनेकन भाँती ॥

End.—चौपाई ॥ जाय पलंग बैठे रंग भीने । सैन करन की ठिश हय कीन्हे ॥ पैड़ीलाल इथापद लालत । रस मंजरी चवर सिर डारत ॥ रस मंजरी चरन तब लागी । सोय अस सिर धरि अनुरागी ॥

॥ दोहा ॥ जब लगो दमपति सैन करि परदा दीन्ह झुकाय । निज निज यह पलो सकल भीने सब्ब सुनाइ ॥ यहि बिधि प्रभु अनेक चरित केन्ही जथा मति गाइ । चक छमा कीजो रुजन सुनिये प्रीति लगाइ ॥ इति श्री राम चरित्र नारायणदास कृत सुभ समाप्त कातिक मासे कृष्ण पक्षे तिथि अमावस बिच धारा संमत १९१४ ग्राम गुजवलि लिषिते दीनदीन मुसदी समस्त ॥

Subject.—श्री रामचन्द्र और सीता जी का प्रेम व्यवहार ।

No. 290. Iśkachamana by Nāgara (Sāmanta Siṁha). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—6 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—55 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagarī. Date of Manuscript—Saṃvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha Kānthā, Unao.

Beginning.—श्री इष्ट देवजी ॥ दोहा ।

इश्क उसी की झलक है ज्यौं सूरज की धूप ॥
जहां इश्क तहं आप है कादर नादर रूप ॥ १ ॥

कहं किया नहिं इश्क का इस्तामाल सँवार।
सो साहब सो इश्क यह क्या करि सकै गँवार ॥ २ ॥
सरमिंदा होई इश्क सों सो देवे सब कोइ।
निंदा सह दंनि सहै सोइ सुनिंदा होइ ॥ ३ ॥
दुनियादार फकीर क्याऊे सब जितनी बात।
बिगर इश्क मस्ती घरे सब की खिस्ती बात ॥ ४ ॥
सादे जे प्याले सबै जद्यपि अन्न अपार।
इश्क अमल मस्ती लिये सो हस्ती असवार ॥ ५ ॥
सब मजहब सब अमल अरु सबै ऐश के स्वाद।
औार इश्क के असर बिनु ए सबही बरबाद ॥ ६ ॥

End.—खलक न मानै एक भी अबस किये बकवाद।
खूब कमावे इश्क को तब कछु पावे स्वाद ॥ ३९ ॥
मज़ा अजब है हुसन का चखै चशम ज़ुबान।
इश्क चमन रक्खे सोई आबादान सुजान ॥ ४० ॥
चश्मों के चश्मा झरै झरना आवे फिराक।
इश्क चमन तब सब्ज रहै दिल ज़मीन हो पाक ॥ ४१ ॥
इश्क चमन आबाद करु इश्क चमन का मांव।
नागर घर महबूब के इश्क चमन मैं आव ॥ ४२ ॥
जिगर चश्म जारी जहां नित लोहू की कीच।
नागर आशिक लुट रहे इश्क चमन के बीच ॥ ४३ ॥
चले तेग नागर हरफ इश्क तेज की धार।
औार कटै नहि धार सों कटै करै रिझवार ॥ ४४ ॥

इति श्री इश्क चमनना दोहरा संपूर्णम ॥ लिषितं गवेशो शंकरेण स्व पठनार्थम् मुकाम खिरपाई मिति दुति चैत्र सुदि २ सोमे संवत् १८४२ माह ॥ इति ॥

Subject.—इश्क सम्बन्धी पद्य।

No. 291. Nāgarīdāsajī kī bānī by Nāgarīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8 × 7 inches. Lines per page—44. Extent—924 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābu Śyāma Kumāra Nigama, Rae Bareli.

Beginning.—श्री राधा रसिक बिहारी जी ॥ अथ श्री नागरीदास जी की बानी लिख्यते ॥ दोहा ॥ चरण कमल रज केयहों मन वच काम यह आस।

अपनो सर्वस जानि बलि जाइ नागरीदास ॥ १ ॥ है कर[वो] कोपीन कामरी कुंजनि कूल विलासि। तब मिलहि मोत मन मुदित विहारो विहारिनि दासि पयासि ॥ २ ॥ अति निरपेक्ष संगु संग्रह अनन्य आन गति नाहि। श्री विहारीदासि उपासि सुष संग बैठि महल मन मांहि ॥ ३ ॥ नित्य विहारि सार सब को अति दुर्लभ अगम अपार। अनन्य धर्म संधि समझे विनु माया कठिन किवार ॥ ४ ॥ यह उपदेश उपाइ श्री विहारीदासि कृपा तें जानै। नित्य सिद्ध विनु नागरीदास कहा कोऊ पहिचानै ॥ ५ ॥ गुन धनहीन सुदीन प्रेम उर राषत गुन गंभीरा। श्री नागरीदास यों वस्तु छिपावत ज्यों गूदर में हीरा ॥ ६ ॥ हीरा को ललचात लिवासी परचौं पंजी न मर्मा। श्री नागरीदास विहारै चाहत विनु अनन्य धन धर्मां ॥ ७ ॥

End—सवैया ॥ बजावत बीन प्रवीन पिया। मानो नृतत है दस चंद नष दुति ह्वै कर काम प्रकास किया। चक चौंधि रहे हरि हेरि मनो तान तरंग के रंग जिया ॥ दासि श्री नागरी के गहि पाय रिझाय रसिक सु अंक लिया ॥ अति कोक कला गुन गांन सुजान बजावत बीन प्रवीन पिया ॥ ५ ॥

प्रानन के प्रान मेरे नैंननि के तारे हो। सहज सनेह निजु धन धरि उर अंतर अपने प्रान राषि रषवारे हो। पलक पलक जिन अंतर अपने सुनहु सुजान मुष जोवत निहारे हो। अतिही व्याकुल कित काहे कों कुंवर तुम तन मन मेरे अति प्रीतम पियारे हो ॥ दासि श्री नागरी हित तुहो प्रिया मानि चित प्रानन के प्रान मेरे नैंननि के तारे हो ॥ इति श्री नागरीदास जी को सवैया ॥ संपूरण ॥ इति श्री नागरीदास जी की बानी संपूरण।

Subject—पृ० १ राधाकृष्ण स्तुति। पृ० २ गुरुवंदना और स्तुति ॥ पृ० ३ नागरीदास जी की साषी। पृ० ४ विहारिनिदास के प्रति नागरीदास की भक्ति वर्णन। पृ० ५-१० सिद्धान्त के कवित्त वर्णन। पृ० ११-१५ राधाकृष्ण रहस्य वर्णन पृ० १६—२०—राधाकृष्ण का विश्राम वर्णन। पृ० २१—२४—राधाकृष्ण शोभा और भक्ति के पद वर्णन।

No. 292(*a*) Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—70. Size—$9\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—10. Extent—437 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Dewaki Nandana, Village Rawariyā, Post Office Aligañja Bāzār, Sultānpur.

Beginning—श्री सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः । श्री वीतरागाय नमः ॥ श्रीरस्तु ॥ अथ वैद्य मनोत्सव लिख्यते दोहा ॥ शिव सुतपद प्रणमैं सदा । रिधि सिधि नित देइ । कुमति विनासन सुमति करि मंगल सर्व करेइ ॥१॥ अलप अमूरति अलप गति । किन हिन पायो पार । जोर जुगल कर कवि कहै, देहि देव मति सार ॥२॥ औार ग्रंथ सब मथिकै । रचीआ भाषा आनि दिषायो प्रगटि कर औाषध रोग निदान ॥ ३ ॥ मममति अल्प जु कहत हैं, कवि मति परम अगाध, सुगम चिकित्सा थित रचित षिमो सवै अपराध ॥ ४ वैद्य मनोत्सव नाम धरि । देषि ग्रंथ सु प्रकाश । केसराज हन नैनसुष । भाषा कियो विलास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षन कहैां, देषि ग्रंथि मति सोइ । पुनि आनैा अनुभाव ही जैसी मममति होइ ॥६॥

End—केशराज सुत नैनसुष कियो अमृत को कंद । सुभ नगरी सरिहंद में अकबर शाह नरिंद ॥ अंकवेद रस मेदिनी सुकल पक्ष मधुमास-तिथि द्वितीया भृगुवार सुनि पुहुपचन्द्र प्रमुकास ॥ माघा अंग सुवेध पुनि कह्यो अल्प मति सोय । कवि जन सवै सुधारियो हीन जहां कहं होय ॥ वैद्य महोत्सव ग्रंथ मह कह्यो सकल निज आनि । दुषकन्द पुनि सुष करन आनंदि परम निदान ॥ अथ सोरठ ॥ कीयो प्रगटि दधि मंथि, औाषध रोग निदान पुनि, सकल सुधा कर ग्रंथिः कर्यो समापित आदि अंत ॥ इति श्री नयनसुष विरचिते वैद्य मनोत्सवे ग्रंथि विद्या विनोदे समाप्तम् सम्वत् १८२५ माघ कृष्णाष्टम्याम् लेषक पाठक जो जयतु ॥

Subject—पृ० १—७ तक—वैद्य मनोत्सवनाम धरि देषि ग्रंथ सुप्रकास । केसराज तन नयनसुख भाषा कियो विलोस ॥ प्रथम उद्देश्य, नाड़ी परीक्षा, वात, पित्त, कफ निदान साध्याऽसाध्य लक्षण, काल चक्र । पृ० ८—२४ तक द्वितीय उद्देश्य—ज्वर, सन्निपात, अतिसार, संग्रहणी रोग प्रतिकार । पृ० २५—३१ तृतीय उद्देश—रस, भगंदर, गुल्म, आमवात कृमिरोग प्रतिकार । पृ० ३१—३५ चतुर्थ उद्देश्य—कासादिस्वास, कास मंदाग्नि विसुचिका रोग प्रतिकार पृ० ३५-४४ पंचमोद्देश-कुष्ठ प्रमेहमूत्र, कृच्छमूत्र, वेराधन, मसूरी कुष्ठ पामाव चर्मकालूत योवन्हारु वा सस्त्रघात प्रतिकार पृ० ४४-५६ षष्टमोध्याय-सिर रोगादि प्रतीकार पृ० ५७—७० सप्तमोध्याय—वगल गंधादि प्रतिकार

No. 292(*b*). Vaidya Manotsava by Nainasukha of Sarhind. Substance—Country-made paper. Leaves—94. Lines per page—8. Extent—658 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1649 or A. D. 1592. Date of manuscript—Samvat 1827 or A. D. 1770. Place of deposit—Paṇḍita Kūvarapālaji, Village Taramai, Post Office Śikohābād, District Mainpurī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्योनमः वैद्यमनोत्सव लिख्यते ॥ शिव सुत पद प्रणवौं सदा । रिद्धि सिद्धि नित देह ॥ कुमति विनाशन सुमति कर मंगल मुदित करेह ॥ १ ॥ अलप अमूरति अलप मति नाहिन पावै पार । जोरि युगल कर कवि कहे देहु देहु मति सार ॥ २ ॥ वैद्यक ग्रंथ सब मथन के रच्यौ सुभाषा आन । अर्थ दिखायो प्रगट कर औषध रोग निदान ॥ ३ ॥ मम मति अलप सु कहत हैं कवि मति परम अगाध । सुगम चिकित्सा चतुर चित छिमैं सबै अपराध ॥ ४ ॥ वैद्य मनोत्सव नाम धरि देखि ग्रंथ सुप्रकाश । केशवराय सुत नैनसुख श्रावक धर्म निवास ॥ ५ ॥ प्रथम नसा लक्षन कहौं देखि ग्रंथ मति सोइ । पुनि आनौं अनभाव हो जैसो मम मत होय ॥ ६ ॥

End—बगल गंध को उपाय ॥ मोथा बेल हरोत को बीज अंवलो पाइ । लेप करै नर नीर सों बगल गंध सुपराय ॥ ४६ ॥ मुख दुर्गंधता कहु गुटका ॥ वेल काथ पैलाइची जावित्री तजु लेय । गजकेसरि अरु जायफल ये औषधि सम देय ॥ ४७ ॥ गोली करहु अधीर सों सैन समै मुख धार । आनन को दुर्गंधता नास होइ ततकार ॥ ४८ ॥ दुर्गंधता कहु लेप ॥ गजकेसर पञ्चो जड़ पाइ ॥ सिरस पत्र अरु लोद मिलाइ । जलसो मर्दन कोजै गात । अति दुर्गंधता छिन मंहि जात ॥ ४९ ॥ सिर की दुर्गन्धता कौ लेप ॥ चन्दन मोथ अमावतो छड़ो रासु कचूर । जल सो पावहु सोस महं होइ दुर्गंधता दूर ॥ ५० ॥ परमत ग्रंथ समुद्र सम मम मत खोज अपार । औषधि रत्न सुते मूढ़ो किये प्रगट संसार ॥ ५१ ॥ वैद्य मनुत्सव ग्रंथ महं कह्यो सकल निजु ग्यान । दुख कंदन पुन सुष करन आनंद परम निधान ॥ ५१ ॥ × × × ×
मात्रा अंक सु छंद पुनि कह्यो अल्प मत सोइ । गुन जन सबै संवारियहु होन जहां कछु होइ ॥ ५५ ॥ सोरठा ॥ कियै प्रगट दश मंथ औषधि रोग निदान पुनि । सकल सुधा सम ग्रंथ कह्यो सुष आद अंत ॥ इति श्री केशवदास पुत्रेन नैनसुख विरचिते वैद्य मनोत्सव स्त्री पुरुष रोग सम्पूरणम् । लिखा कालिका दयाल ने सोमवार के दिन कातिक बदी ५ संवत १८२७ वि० ॥

Subject—(१) पृ० १—१२ तक—प्रथम अध्याय ।

मंगलाचरण, गणेशादि वंदना, प्रस्तावना, ग्रंथकार के धर्मादि विषय का अति सूक्ष्म परिचयः—

वैद्यमनोत्सव नामधरि, देखि ग्रंथ सुप्रकास ।
केशवराय सुत नैनसुख, श्रावक धर्म निवास ॥

नाड़ी परोक्षा, दूतादि शुभाशुभ लक्षण, शकुन, मुख परोक्षा, वात, पित्त और कफ का निदान, इन्हीं तीनों के लक्षण, इन तीनों का उपचार, काल ज्ञान साध्यासाध्य लक्षण, काल ज्ञान तथा काल चक्र ।

(२) पृ० १३—३२ तक—द्वितीयोध्याय।

पित्तज्वर लक्षण, कफज्वर लक्षण, वायु ज्वर लक्षण, काल ज्ञान तथा मलज्वर लक्षण, अजीर्णज्वर लक्षण, पेदज्वर लक्षण काल ज्ञानत लघु सुदर्शन चूर्ण, दृष्टज्वर लक्षण, काल ज्ञानात कालज्वर लक्षण, ज्वर पर पक्वनाम दशा, ज्वर विमुक्त के लक्षण षोडषांग चूर्ण, रस मंजरी मतात महाज्वरांकुश। शीतज्वर का ज्वरांकुश, अंजनज्वर, पित्तज्वर का प्रतीकार, पित्तदाहज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात कफज्वर का चूर्ण, वायज्वर का चूर्ण, वृंद संग्रहात मल्लज्वर का क्वाथ, काल ज्ञानात रसज्वर का चूर्ण, काल ज्ञानात पेदज्वर का लक्षण, काल ज्ञानात दृष्टज्वर का चूर्ण, वायु पित्त कफ का चूर्ण, शीतज्वर का चूर्ण, विषमज्वर का चूर्ण, वृंद संग्रात त्रिदोष स्वांस कास का क्वाथ, चतुर्थज्वर की धूनी, अवलेह, सारंग धरात ज्वर की औषधि, लघु लाक्षादि तैल, आनंद भैरव रस, सन्नपात का चिन्तामणि रस, कनक सुन्दरी रस, अष्टदशांग क्वाथ, सन्नपात का नास, उसी का अंजन, त्रिकंटकादि क्वाथ, उसकी औषधि, अतिसार लीलावती, वृद्धगंगाधर चूर्ण, लघुगंगाधर चूर्ण, अतिसार का लेप नागरादि क्वाथ, रक्त अतिसार का क्वाथ, अतिसार का गुटका, दर्मातिसार का चूर्ण, संग्रहणी रोग चिकित्सा, धानपंचक क्वाथ, संग्रहणी वायु-शूल का चूर्ण, अरुचिशूल संग्रहणी क्वाथ।

(३) पृ० ३२-४२ तक—तृतीय अध्याय।

अर्शरोग चिकित्सा रंग धरात सूरणि वटिका, बवासीर का चूर्ण, खूनी बवासीर की औषधि, रक्त बवासीर की औषधि, बवासीर का चूर्ण, अन्य भगंदर रोग प्रतिकार, भगंदर का लेप, भगंदर की औषधि, गुल्मरोग प्रतीकार, काष्टोदर की औषधि, उदर के सर्व रोगों की औषधि, आमवाद का चूर्ण, सर्व शोथ का क्वाथ, कृमिरोग प्रतिकार, कृमि का चूर्ण, शूल रोग प्रतीकार, शूल का हिंगाष्टक चूर्ण, शूल के लिये पंचसम चूर्ण, तुंबरादि चूर्ण, अन्य चूर्ण शूल पर, पांडु रोग, कमलवाय का उपचार, इसी रोग का अवलेह, कमलवायु की पोटली, इसी रोग का अंजन तथा औषधि, क्षय रोग का प्रतीकार, क्षय रोग का चूर्ण।

(४) पृ० ४३—४८ तक—चौथा अध्याय।

हिचकी रोग प्रतीकार, हिचकी का मनोरमा धूनी, क्षय रोग प्रतीकार, क्षय रोग का अवलेह, स्वांस रोग प्रतीकार, स्वांस का चूर्ण, कास रोग प्रतीकार गोली पंचमी, गोली बंद खांसी की, वटी बंद की, बड़ी कफ बंद की, मंदाग्निरोग प्रतीकार, मंदाग्नि का चूर्ण, क्षुधाकरण गुटका, मंदाग्नि की, गजकेसर चूर्ण विशूचिका रोग प्रतीकार, सूची बड़ी उपाय।

(५) पृ० ४८—६१ तक—पंचमोध्याय।

कुरंगवाय प्रतीकार, अंडरोग चूर्ण, औषधि, अंड वृय को हित उपदेशात् उपाय, लेप, प्रमेह प्रतीकार, प्रमेह का चूर्ण, तथा औषधि, मूत्रकृच्छ प्रतीकार, पलादि काथ, मूत्रकृछ्र का चुर्ण, मूत्रशोधन प्रतीकार, मूत्ररोध का काथ, चूर्ण पथरी रोग प्रतीकार, पथरी का काथ, मृगी रोग प्रतीकार, पुष्परादि काथ, मृगी का नास, ब्राह्मी घृत, कुष्ट रोग प्रतीकार कुष्ट का चूर्ण, लघु मंजिष्टादि काथ, श्वेत कुष्ट लेप, श्वेत दाग का अन्य लेप, औषधि वृन्द संग्रह से, कंडू का चूर्ण, लेप पांव का लेप पाम दादु, लेप शंमादि कंडू का, लेप लूत का थिभ रोग प्रतीकार, लेप, नहरू प्रतीकार, शस्त्रघात का दारू।

(६) पृ० ६२—८० तक—षष्टमोध्याय।

वायु का चूर्ण, गुटका, त्रिपुर भैरों रस, वायु पीड़ा का, लघु विषगर्भ तैल अकड़ वायु का प्रयत्न, त्रियोदशांग गूगल, पित्त का प्रतिकार, दाघ विथा प्रतिकार, छर्दि रोग प्रतीकार चूर्ण, लेप, कफ रोग प्रतीकार, कफ का चुर्ण, गंडमाल रोग प्रतिकार, गंडमाला की औषधि, कचनार गूगल, मुखरोग प्रतीकार, दंत पीड़ा रक्त प्रवाह की औषधि, कीट पीड़ा दंत रक्त को औषधि, मुख पाक औषधि, मुखको लो की औषधि, झाँई को औषधि, लेप, नासिका रोग प्रतिकार, पीनस रोग की गुटका, पीनस का नास, नेत्र रोग प्रतीकार, नेत्र पीड़ा का रगड़ा, नेत्र पीड़ा का अंजन, रात्रि अंध का, अंजन रतौंध का अंजन, पड़वाल को औषधि, सवल वायु का अंजन, सवलवाय का रगड़ा, खोरा वायु का अंजन, औषधि कर्ण रोग की, कर्ण शूल पूर्व दुख पीड़ा को औषधि, सिर रोग प्रतिकार वात सिर्वर्त का लेप, कफ सिर्वर्त का लेप, पित्त सिर्वर्त का लेप, लेप त्रिदोष सिरवर्त की आधा सीसी का लेप नास, और जंत्र, उनका नास, केश बढ़ने को औषधि, सिर काकस को औषधि, इन्द्रलुप्त का उपाय, केशकल्प लिख्यते।

(७) पृ० ८१—९४ तक—सप्तमोध्याय।

स्त्री रोग प्रतिकार औषधि, पुहुप होने की औषधि, योनि शुद्ध होने की औषधि, गर्भ होने की औषधि, पुनश्च गर्भ धारिणी औषधि, कष्टी स्त्री का उपाय, पुनश्च गर्भ जाता हो उसको औषधि, भगसंकोचन प्रतिकार, भग संकोचन औषधियाँ, इसकी गोली, योनि दुर्गंध विनाश, कुच कठिन करने की औषधि, औषधि थड़ होने की, पुनश्च, बाल रोग चिकित्सा, बालक का अवलेह, बालक अतीसार का काथ, बालक की गुदा पके की औषधि, पुरुष चिकित्सा, लिंग स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, वृंद स्थूल का लेप, डंडे का लेप, स्तंभन विधि, पुनश्च, मदन प्रकाश चूर्ण, काम

विलास गुटका, धातु वृद्धि का गुटका, दुर्गन्धता हरन औषध, दुर्गंधिता हरन ओषधि, बगलगंध का उपाय, मुख दुर्गंध की ओषधि, लेप, सिर की दुर्गंध का लेप ॥

ग्रंथकार का सूक्ष्म परिचय—केशवराज सुत नैनसुख कह्यो ग्रन्थ सुभिकंद। शुभनगरो सिह चंद मँह, अकबर साह नरिंद ॥ ग्रंथ निर्माण कालः— अंकवेद रस मेदनी (१६४९) शुक्लपक्ष शुचिमास। तिथि द्वितीया भृगुवार पुनि पुष चंद सुप्रगास।

No. 292(c). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—10 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Ṭhakura Basanta Simha, Village Urab, Post Office Śāhamau, District Rāe Barelī.

Beginning—(पृष्ट ३ से प्रारम्भ)—भोर षक साटु पाइ कफ मिटे ॥ इच्छामेदी रस ॥ पारोटंक २॥ सुहागा टंक २॥ गंधक टंक २॥ मिरचे टंक २॥ जैपाल टंक १० आक के रस षरले ताते पानो सो देइ ॥ अजमोदादि चूर्न ॥

End—अथ संन्निपात नाम जानिवो। संधिकः सांतिकश्चैवाः रुग्दार चित्त विभ्रमे ॥ सीतांगः तंद्रका प्रोका कंठ कुबिजश्च कर्निका ॥ विप्याता भग्न नेत्रश्च रक्तस्टीवी प्रलापकः। जिभकश्चेतु मिन्यासो सन्यपातः त्रयोदसः ॥ १३ ॥ टीका ॥ पोर अफर दाह सून पेट कफ मलु षसे जगै बहुत पसोना आवै ओभ सुषै तथ्या सुषै जोभ पै काटे होइ, गरोह के ॥ जथा प्रति तथा लिष्यते मम दोषो न दोयते ॥ वैशाष मासे शुक्ले पछे तिथौ दुतियायां चंद्रवासरे पोथो लिषितं पाडे मंसाराम् मग्र उसहित ॥ परगने वदाउ ॥ पठनार्थं सुषलाल सिंघ वैद्य माले सुरतान नगर डोह संवतु १८४६ सनि फसलो ११९६ हरर शुन। ग्रोष्मे तुल्य गुडाश सैंधव-जुतां मेघावनिर्धं वरे। शर्करया शरद्विमल मा सुत्र्यं तुषारागमे। पिपल्या शिशिरे वसंत समये क्षौद्रेण संजोज्यनां राजन प्राप्य हरोत को मिदं गदानश्यं तितेस्भवः

ग्रीष्म	वर्षा	सरद	हेमंत	सिसरे	वसंत समये
दाप	सेधैनोन	पाडकेसं	सोठि	पोपरि	सहत सो

Note—पं० केशवदास के पुत्र नैनसुख कृत वैद्यमनोत्सव नामक पुस्तक अपूर्ण है पृ० १, २, ८, ९, १०, ११, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २७, २८, २९, ३१—३६ ३९—४३, ४८ नहीं है। देखने में पुस्तक पुरानी जान पड़ती है।

No. 292(*d*). Vaidya Manotsava by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—10½ × 8 inches. Lines per page—46. Extent—275 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Ṭhakura Jagadmbikā Prasad Siṁha, Gudawāpur, Post Office Chilwaliyā, District Baharāich.

Beginning—श्री रामायनमः॥ बंदौं लम्बोदर चरन करहु सिद्धि सब काज। केसोराज सुत नैनसुख भाषा करो समाज॥ १॥ वैद्यक रत्न सुते मद्दे प्रगटि किये संसार। वैद्यमनोत्सव जगत में औषधि है निजसार॥ २॥

अथ ज्वराधिकारः—मोथा, सोंठि चिरायता पीत पापरा जानि। केरवार मिलाय पिप्पली ये सब पीसहु आनि॥ ३॥ यह चुरन प्रशस्त करि जलसों पीजै प्रात॥ अनल पित कफ दोषत्रय होइ सर्वज्वर घात॥ ४॥

End—अथ तौल संज्ञा॥ जवा चारि रत्तो है विमल चारि गुंज को बढ़ि। आठ गुंज मासा कहो सुनौ तौल को गहि॥ मासे चारि टंक तू जानि। षट मासे तू गद्द बखानि। कर्ष एक मासे दस होइ। कर्ष चारि पल जानहु सोइ॥ १६१॥

इति श्री वैद्यमनोत्सवेन उन समुद्देसः सम्पूर्ण त्रैम्यतेम षंड कातिक मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदस्यां गुरुवासरे संवत १९१४ साके १७७९ पोस्तक प्रति भय उमाराव सिंह नकल प्रति द्वितीया लोपते भेरोंप्रसाद ग्रामें गुदुवापुर शुभमस्तु॥ राम॥ राम॥

No. 292(*e*). Vaidya Śāstra by Nainasukha. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size—11 × 5⅛ inches. Lines per page—32. Extent—1,188 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1894 or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Rais, Payāgapur, Post Office Payāgpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैद्यशास्त्र लिख्यते॥ दोहा॥ त्रियासंग अरु बोजना सोरे सलिल स्नान। भोजन मधु रस गंविता करत कोप तहं

हानि ॥ तप्त उदक अरु दर्व्य पुनि मर्दन तेल शरीर। सुरापानि सेके दहन इन्हते जाइ सरीर ॥ अथ साध्य लक्षन ॥ सोरठा ॥ होइ त्रिषा जस हीन कर पद नासी तपत हो। सुदृढ़ सरना परवीन। सुभ लक्षन ताके कहीं ॥ इन्हों अंगु नागि ॥ ३० नचो ६० निधि ९ नारिय १२० नमोक १५०, स्वासा उर्धादि दुवाद मिलाइ कै गावत। आदि अकास समीर सिषी अपकुंमनि भिन्न व भिन्न बतावत ॥ मेदनि ते पुनि नीचहि धावत भांति हो मेघे तिनि ठामनि मैं लव छावत ॥ हो कमले कदले नन धापदु ९०० मैनन रासि ७१,२०० दिनौ निसि पावत ॥ ६४ ॥

End—जो बाज का जोको लागो होइ ताका औषधि जो कैसेहुन मोच होइ ॥ पियरो गाइ का दुध औ साथा पानी भेरै कै देइ तै अच्छा होइ। और जो जानवर दुलतो काढत होइ ताका औषधि पियरो गाइ का दुध पानी मिलाइ के तांवा बोरि देइ देके चलता होइ चाहो कि अब साथा तांवा पचवैं तवहो चले न दुलती काढे ॥ जो जानवर कुरोच का बांघो तै गाइ क मसका ताजा पानो से धोइ के जेहि माठा न लाग रहे तेहि से तावा बोरि कै देइ तौ पर अच्छे आवहि और सिताब पर भारै कै जुगति वरैं का छाता गाइ के घोड मैं बेटि के छाता निकासि डारै वही घांड मैं तावा बोरि कै देइ तौ पर सिताब भारै ॥ इति श्री नयनसुखेन बिरचिते वैद शास्त्र सम्पूर्णम्। मार्ग सुदी १ संवत १८९४ ॥

Subject—पृ० १—६६ तक औषधियों और रोगों के लक्षण तथा भस्म आदि बनाने की रीति और रोग परीक्षा आदि का वर्णन है।

No. 293(*a*). Japaji by Guru Nanakaji Mahārāja of Tilamadi Nanakānā (Punjab). Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—6¼ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1820 or A. D. 1763. Place of deposit—Śrī Mahanta Nānak Prakāśa, Baḍī Saṅgati, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सति गुरु प्रसाद सति नाम कर्ता पुरुषु निरभौ निरवैर अकाल मूरति अजूनी सै भंगुर परसाद जप। आदि सचु जुगादि सचु। है भी सचु नानक होसो भी सचु ॥ १ सोचै सोचिन होवई जेसा चीलच वार। चुपै चुपन होवई जे लाम रहालि वतार। भुखिया भुख न उतरी जेबनापुरी भाभार। सहस सियाण पालख होहि ता एक न चलै नालि ॥ किव सचियारा होइ पे किव कूडे तुटै पालि। हुकमि रजाई चलना नानक लिखिया नालि। २

End—अमर तवेला सचुनाउं जपु जपो करि असनाख। हितु करि जपु को जे पढ़े सो दरजे पावै मान॥ जनम मरण भव कटिए जो जपु संग लावै धियान। जियो तियों करि जपु को पढ़े औसर जीत निदान। जो मनसा मन में धरै सो पूरण करै भगवान। अहिनिसि जपु जप तारि है दास नानक दीजै नाम दान। गुरु नानक निरंकारी। जिन सगली कला धारी। डंडौत अनेक वार सर्व कला समर्थ॥ डोलंते राखौ प्रभु नानक देकर हस्थ॥ इति जप संपूरणं शुभम्॥

Subject—पृ० १—६ तक ईश्वर सत्य है उसी की आज्ञा मानना चाहिये वह निर्गुणादि गुण वाला है, उसका जप पाप नाशक है, वह दुख को दूर करता है।

पृ० ७—११ तक ईश्वर के विशेषण, जप का फल और ज्ञान की मुख्यता।

पृ० १२—१७ तक परमात्मा अनन्त है और चेतन्यमय है इन्द्रादि उसी की प्रशंसा करते हैं और वह सब का रचयिता है।

पृ० १२—१७ तक जप की महिमा

No. 293 (*b*). Jñāna Swarodaya by Nānaka Dāsa (Ranajita) of Tilamadi. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—12 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—324 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1908 or A.D. 1851. Place of deposit—Ṭhakurā Balbhadra Siṁhaji, Raisa of Vansapurawā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः परसोतम परमात्मा पूरण बिस्वा बीस। आदि पुरुष अविचल तुही ताहि नवावौं सीस॥ क्षर ॐ सो कहत हैं अक्षर सोहं जानि। निह अक्षर स्वांसा भई तू ताको मन आनि॥ राति दिन सुरति लगावो। आपा आपु बिसारो अद सीस नवावो॥ नानिक मथि के कहत है अगम निगम को सोस। पढ़ो वचन विज्ञान को मानो बिस्वा बीस॥ ॐ सो काया भई सोहं सोहं मन होइ। निह अक्षर स्वासा भई कहि नानक मलि जोइ॥ पेंचि मनु चलइ रावो। अक्षर एक दुविद्ध अनन भावो॥ डार पात फल फूल मुल सो सबै निहारो। अब दरसै एकाएक भेष पा सबै बिसारो॥ स्वासा ते सोहंम भयो सोहं ते उंकार। ॐ सो रा रा भयो साधू करो विचार॥

End—भंवर गुफा त्रिकुटी नहीं ना अक्षर को जाप। नानिक दास समाज ते ब्रह्म अर्पडित आप॥ भेद स्वरोदय बहुत है सुक्षम दियो बताय। ताको समुझि

विचारि कै रहौ सुरति लौ लाय। घरनि टरै गिरवर टरै टरै ससी अरु भानु। वचन स्वरोदय ना टरै कहि नानक परमान॥ गुरु दाता अरु राम को साधु दया सो जानि। नानिक दास रंजोत है कहौ सरोदय ज्ञान॥ तिलावडी मेरा जन्म है नाम नानिका कहायो। कालू को सुत जानि जाति बेदी पहिचानो। बाल अवस्था माहि बहुरि मैं भूलो लायो। कृपा करी जगदीस नाम नानिका धरायो। जोग जुगति हरि भगति करि ब्रह्म ज्ञान को ढीठ। लहो.........राम मनोरथ सत्य है हृदय भक्ती जो होई। इति श्री शुभ संवत १९०८ पोथी लिखा महीपतसिंह कंजामऊ निवासी साजु तौर कातिक मासे कृष्ण पक्षे अष्टमयाम सुक्रवासरे शुभ संवत १९०८ साके १७७२ राम। पोस्तक लिषत आनंदित अति मायो संसार सकल केस दुरि बहायो॥ श्रीराम लछिमन सुषधाम॥

Subject—स्वरोदय का वर्णन।

No. 293(*c*). Sukhamani by Guru Nānakaji of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—6 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1860 or A.D. 1803. Place of deposit—Paṇḍita Lallu Prasāda Dikshita, Village Mai, Post Office Baṭeswara, District Āgrā.

Beginning—.........मन कामैं भुलाई॥ अमृत नाम हिर्दै माहि शमाई॥ प्रभु लो वशी साधु को रशन। नानक सनकाद दशनु दशन॥ प्रभु कौं शिमिरहि शी धनवंते। प्रभु कौं शिमिरहि से पतिवंते॥ प्रभु के शिमरहि शी सन परवान। प्रभु कौं शिमरहि शी पुरुषु प्रधान। प्रभु का शिमरहि सेवे मुह तासे। प्रभु कै शिमरहि शी शब के रासे। प्रभु का शिमरहि शी शुखवासी। प्रभु कै शिमरहि शी शदा अविनाशी॥ प्रभु शिमरन ते लागे लिन आप दयाला। नानक जनकी मनहिर वाला। प्रभु का शिमरहि शी पंर उपकारी। प्रभु का शिमरहि तिन सदा बलिहारी।

End—धुर करम पायातु धूलिन के शीना महरि के लागे कहै नानक शुभहु आतित धर अनहद वाजे। आनंद शुनी वड़ भगिय शकल मनोरथ पूरे। पारब्रह्म प्रभु पाया उतरे शकल व शूरे। दुख रोग शंताप उतरिया शुनि शापो वानी॥ शंत शाजन भये शर से पूरे गुरते जानी। कहद पुनीत शुनिदे पांवत्र शत शुर रैहा भरिपूरे। विनिवंत नानक गुरु चरन लागे वाजे अनहद तूरे॥ आनंद सुने वड़ मागिया शकल मनोरथ पूरे॥ शंवत १८६० माशोत्तमे भाद्र वदी १४ भौमवासरे

लिपि ग्रंथ शुखमनो शोदल संपूरन ॥ मनशाराम मिश्र राम जो सहाय वाबे नानक बकाशि लेने ॥

Subject—ईश्वर का स्वरूप, निराकार उपासना तथा भक्ति का वर्णन।

No. 293(*d*). Sukhamani by Nānaka Guru. Substance—Foolscap paper. Leaves—18. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—28. Extent—189 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Gokula Prasāda, Rātapura, District Rāe Bareli.

Beginning—पृष्ठ २ से आरंभ

नीन आवे ॥ कांषो येकै दरसु तुम्हारे। नानक उन संग मोहि उधारो ॥ १ सुषमनो सुष अमृत प्रभु नाम। भगत जना के मन बिस्राम ॥ रहाव प्रभु कै सुमिरन गरभ ना वसै ॥ प्रभु कै सुमिरन दुष जन नसै ॥ प्रभु कै सुमिरन कालु पर हरै ॥ प्रभु कै सुमिरन दुसमन टरै ॥ प्रभु सुमिरन कछु बिघन न लागै। प्रभु के सुमिरन अन दिनु जागै ॥ प्रभु कै सुमिरन भव ना व्यापै। प्रभु कै सुमिरन दुष ना संतापै ॥ प्रभु कै सुमिरन साधु के संग। सरबनि धान नानक हरि रंग ॥

End—अष्टपदी।

जेहि प्रसाद छत्तिस अमृत षाय। तिस ठाकुर को राषु मन माहि ॥ जेहि प्रसाद सुगंध तन लावै। तिसके सुमिरन परम गति पावै। जेहि प्रसाद बसहि सुष मंदिर। तिसै ध्याइये सदा मन अंदर। जेहि प्रसाद ग्रह संग सुष बसना ॥ आठ पहर सुमिरौ तिस रसना ॥ जेहि प्रसाद रंग रस भोग ॥ नानक सदा ध्याइये ध्यावन जोग ॥ जेहि प्रसाद पाट परंबर पहावै ॥ तिसै त्यागि कित अौर लो भावे। जेहि प्रसाद सुष सेज सोइ जे ॥ मन आठ पहर ताका जस गवजे ॥ जेहि प्रसाद तुम्है सुष को मानै ॥ मुष ताको जस रसना बषानै ॥ जेहि प्रसाद तेरो रहित धर्म ॥ मन सदा ध्याइये केवल पार ब्रह्म ॥ प्रभु जो जपत दरगहि मान पावै ॥ नानक पति सेती घर जावै ॥ २ जेहि प्रसाद अरोग्य कंचन देही ॥ लिव लावो तिसु राम सनेही ॥ जेहि प्रसाद तेरा योला रहत ॥ मन मुष पावो हरि....

No. 293(*e*). Sākhi Jñāna Kāṇḍa by Guru Nanakaji of Tilamadī (Panjāb). Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—20. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Gurumukhi. Place of deposit—Paṇḍita Dhīraja Rāmaji Pujārī, Baḍī Sangati, Baharāich.

Beginning—साखो ज्ञान काण्ड महला १ ॥

तब संगत श्रीगुरु बावे नानक जी पास बोनती कोनो। गरीब निवाज सच्चे पादशाह भगता के घरावने ग्रैार संसार के घरावने का जो अन्तर है सा कृपा करके समझाइये जो ॥ ग्रैार संसार के घरावने ग्रैार भगता के घरावने कर जो परमेसुर आधीन होता है सा कारण क्या ग्रैार संसार का आराधना मानता है कि नहीं जो ॥ ग्रैार देव देवो के स्थान को पूजा जो करते हैं तिनको कौन गति है ॥

जो। ज्यों है त्यों समझाइये जो। तब गुरु बावे नानक बोल्या सुनो संगति अष्ट सिद्धि जो है सा कामना को देने हारो है। सो श्री ठाकुर जी देवतियां के हवाले कीतो है। श्री महादेव देवो ने ग्रादि लेके सो कामना के निमित्त संसारी जियाइन को पूजा करते हैं।

End—सिर विच रखणो लिख कर मरनो की गति कही न जाय। जे थेईदा ताप होई ता सो दरदो पैांडो घड़ो लिख कर गल विच पाड़नो जो किसी नो मतोसार होइ तां मुंडा संतोष जो पैांड़ो लिख कर पिवाउनो ॥

जो किसी दिवान पास जावे ता यह पैांडो लिख कर जनम सतगुरु सत पुरुष यहां पैांडो सिर विच रक्खे। जो स्त्री पड़ो होवे ता यह लिख कर देवो। काहे रे मन चितवहु उद्यम जा हर हर जिउ पड़िया यहां पैांड़ो लिख कर लक नाल बंधनो ॥ तुरत छूट जाय ऐसे गुण मुझ में हैं दूसरे ग्रंग। एक तो जप जो है गुरु का तिसकैां अर्थ नित प्रति ध्यान करिकै प्रीति करिकै नेम के साथ ॥ ग्रैार दूसरे तप करै तो क्या तप करै कामना का त्याग करिके तप करै ॥ कामना का त्याग करै ग्रैार इन्द्रियों को जोतै ॥ तीसरे हो में इंद्रियां जो हैं दस तिनके प्रकृत है बुद्धि तिस को जोतै अज्ञानता तिसको ज्ञान के खड्ग कर प्रहारता रहे ग्रैार ब्रह्मज्ञान के विषे हो मे ग्राहुति। ज्ञान काण्ड सम्पूर्ण भया।

Subject—पृ० १ ईश्वर व देव देवो को पूजा में भेद, पृ० २ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग, पृ० ३ धर्मराज व जीव की वार्ता, पृ० ४ नारद व धर्म संवाद, पृ० ५ से ७ तक लंगड़े व ग्रंधे के मिलन की कथा, पृ० ८ पैांडो का विचार तथा फल।

No. 293(*f*). Satanāma by Nānaka of the Panjāb. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance.—Old. Character—Nāgarī Kaithī. Place of deposit—Bābu Amīra Chand Ḍākar, Manager, V. D. Gupta and Company, Chowk Bāzār, Baharāich.

Beginning—दोहा। सब सांचा पु नामक वरवो चरन पर सीस। नानक तुम गुर देव जो पूरन विस्वावीस ॥ बाचारज जीवन जनम मरवो साचो जान। नानक मैासर जात है हर सो नाहि पहचान। जान सरे बाजगपगा ज संग दान प्रान। राम तजो जग सो रचो नानक नहचै हान। झूठा नाता जगत का झूठ है घरावास। यह जग झूठा देख कै नानक भये उदास॥ जब लग चावल धान में हुव लग उपजे बाय॥ जग छिलके कंड तज करा मुकत रुप हुई नाय।

End—कारा जीत कवल कली बीच भवरा लो मइ। गरजं घना बोरा घमंड घट वरघो जब प्रानीत देखा श्रो हाइ। केतीक सुध जड़गे तहां साव सरा सिर धति रहे ध्यान लगाइ॥ भूषन भवन विचित्र सोहावन भारी पीतांबर वेनु बजाइ। को कौन क वह सुनता जग मोहात, हार जडात बहु भारो लइ। संत समाज देखो जवते सुरालोक चले प्रभु को गुन गाई। केतोक कुचव बसे जग में भगवंत वाना के पंत नासाइ॥

Subject—संसार की अनन्यता, सत्य की महिमा, नाम महिमा, सांसारिक ईश्वर की महत्ता आदि पर फुटकर दोहे।

No. 293(*g*). Santa Sumirinī (Nāl) by Nānaka Guru. Substance—Foolscap paper. Leaves—16. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—15. Extent—150 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Jugalakiśora, Devanandapura, District Rāe Bareli.

Beginning—सत्यनाम नाम करता पुरुष निरभव निरवैर अकाल मूरति माजुनी सै भंगु गुर प्रसाद जप ॥ १ ॥ भाद सच्चु जुगाद सच्चु है भी ॥ सचु नानक होसी भी। सच्चु सोचै सोच न होवई जेसोची लखवार। चुप्पै चुप्प न होवई जो लाय रहा लिवतार॥

भुख्यां भुख्य न उतरो जे बना पुरियां भार। सहस सयाण पूत लख्य होहीं एक न चल्ले नाल॥ क्यो सचियारा होव यई क्यों कूड़े तुट्टेपाल। हुकुम रजाई चह्लणा नानक लिखियां नाल॥ १ हुकुमी होवन माकार हुकुम न कहिमा जाई। हुकुमी होय न जीयां हुकुन मिलै वड़ि माई॥ हुकुमी उत्तिम नीच हुकुमी लिखि दुःख सुख पाई॥ एक ना हुकुम मिलै बकसीस एक हुकुमी सदा भवाइदे॥ हुकुमै अंदर सब को वाहेर हुकुम न कोय। नानक हुकुमै जो बुझे ताहै मै कहै न कोय॥ २ ॥

End—जतु पहारा धीरज सुनियार। अहेरण मंत वेद हथियार। भोपड्डा मगिनी तप ताप। भांडा भाव अमृतु ततु धाल। घणी वे सब सांची टकसाल। जिनका न दर करम तिवकार॥ नानक दरो न दर निहाल॥ ३८ श्लोक॥

पवस गुरु पाणो पिता माता धरतो महंत। घोशु राति दुइदाई दाया खेले सरबस सकल जगतु। चंगिया पिया बुड़ियां पियां वाचे धरमह दुर। करमो बापु बापुणो केनेड़े के दुर। जिम्रो नामधि बाइयां गये मशकति घाल॥ नानक ते मुष उजले केतो छुट्टो नाल॥ ३९॥

Subject—सत्यनाम को स्तुति, सत्य को महिमा, प्रभु का हुक्म ही सर्वोपरि है। उसके गुण अकथनोय हैं। गुणवान के प्रति नानक की श्रद्धा, गुरु महिमा, गुरु से ही सर्व पदार्थ तथा ईश्वर का अनुभव प्राप्त करना, दोष पाप नाशक वाणी का सुनना ही उचित है, भक्तों को वाणी से सब पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं, निरंजन नाम महिमा, पंच का महत्व, निराकार महिमा, अनेक मतमतांतर और अनेक ग्रंथों द्वारा अनेक भांति को भक्ति मार्ग का वर्णन, प्रभु कुदरत जानने में सबों की असमर्थता, प्राणीमात्र की अलग मति है और प्रभु के जानने के सब अलग अलग उपाय रचते हैं परन्तु सच्चे प्रेम से कोई भी उस पर बलिहारी नहीं जाता, कर्म की प्रधानता, जीव का विचार, प्रभु का बड़प्पन, प्रभु ही सब बादशाहों का बादशाह है जो प्रभु के बड़प्पन को जानता है वही बड़ा है, प्रभु का अनेक प्रकार से गुण गान होना संसार का रचना, मन को वशीभूत करने से जय प्राप्ति ईश और प्रकृति की सत्यता, ऊंच और नीच का अभेद वर्णन, पंचतत्व से सृष्टि की रचना, देवी देवताओं का खंडन और केवल सच्चिदानन्द ही की सत्यता का वर्णन, प्रभु के अनेक रूप और करुणा का वर्णन केवल पंचतत्व का ही संसार में सब खेल है। जिसने प्रभु से ध्यान लगाया उसी का होना सफल है।

No. 294(a). Anekārtha Bhāshā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—10×5 inches. Lines per page—13. Extent—420 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1812 or A.D. 1755. Place of deposit—Paṇḍita Deokinandanaji, Village Khaniā, Post Office Aligañja Bazār (Sultānpur.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः। दोहा। सु प्रभु जोति माया जगत कारन करन अभेव। विघ्न हरन प्रभु सुभ करन नमो नमो गुरुदेव॥ १॥ एकै वस्तु अनेक है जग जगमगात जगधाम। जों कंचन ते किंकिनो कंकन कुंडल काम॥ २॥ उचरि सकत संसकृति नहि प्रकृत समरत्थ॥ तिन लगि नंद सुमति जथा भाषने कत्थ॥ ३॥ सुर्भीनाम॥ सुरभी चंदन सुरभी सुग सुरभी बहुरि बसंत॥ सुरभि

चरावत बन मुनौ जो जग करता कन्त ॥ ५ ॥ मधुनाम। मधु वसंत मधु चैत नभ मधु मदिरा मकरंद। मधु जल मधु पय मधु सुदा मधुसूदन ॥ गोविंद ॥ ६ ॥ कलिनाम। कल कलेस कलि सूरिवा कलि निचंग संग्राम ॥ कलि कलियुग तहं और नहि केवल केस्व नाम ॥ ७ ॥ घनंजैनाम। अगिनि घनंजै कवि कहत पवन घनंजै आहि। अर्जुन बहुरि घनंजः कृष्ण सारथी आहि ॥ ८ ॥

End—कालंदी नाम। जम अनुजा रवि जा जमी कीन्ह स्यामला आय ॥ यह जमुना सम समद फिरि आवत तुय परलाप ॥ २४७ ॥ तरंग नाम। मग तरंग कल्लोल पुनि विची उर्मि सुभाइ। लहरि हथ्थ पसार जनु जमुना पकरति पाइ ॥ २४८ ॥ उपकंठ नाम फुल पुलिन उपकंठ पुनि निकट रीय परवास तीरतो चलिजाइ वलि अब आये पिय पास ॥ २४९ ॥ वेतनाम। वेतर प्रवीद लरयो अ पथ पुष्क वानीर ॥ वंजुल मंजुल कुंज तर वैठे है वलवीर ॥ २५० ॥ कोकिला नाम। परभृत कलरव रक्त इंगपिक धुनित हरस पुंज ॥ जानो पिय आरत निरखि तोहि हेरति वलि कुंज। २५१। इंद्रीनाम। गो भको कप्पर करन गुन इंद्रव जो रसु पाइ। जो राधा माधव मिले परम प्रेम रसुपाइ ॥ २५२ ॥ माला नाम। माला श्रक श्रव गुनवती इह जु नाम की दाम। जु नर कंठ करि है सुन रहे हैं छवि का धाम ॥ २५३ ॥ जुगुल नाम जम लग जुगुल जुगद्विद द्वै उभय मिथुन विवि वीय। जुग्लकिसोर वसहु सदा नंददास के हीय ॥ २५४ ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला समाप्त ॥ का० शु० ११ भृ० केसरी दुवे हित आपने लिषेत ॥ १ संवत १८१२ ॥

Subject—पृष्ठ १ से २८ तक—भिन्न शब्दों के अनेकार्थ, विष्णुनाम, सुमों, मधु, कलि, घनंजे, मन, अर्जुन, पत्र, पत्री, वरही, धाम, हस्ती, सदन, सुवर्ण, रूपा, शुक, कांति, मयूर, किरण सिद्धि, निधि, मुक्ति, राजा, इन्द्र, देवता, सेवक, दासी, अन्तःकर्ण, अंजन, हीरा, मंगल, शुक्र, माता, नमस्कार, पैकारि, सेज, उनीसा, कुसुम, केश, लिलाट, नेत्र, वंशी, श्रवण, रदन, बृहस्पति, मुख, कर, ग्रीव, किंकिनी, नूपुर, अमर, शुक, दर्पण, वीणा, तांबूल, समय, जल, चरण, हरिद्रा, राधा, वचन छेम, नाम, युवती, क्रोध सुंदर, अर्जुन, युधिष्ठिर, गंगा, दीर्घ, शरीर, कमल, चन्द्रमा, काम, भ्रमर, दामिनी, सैन्य, मित्र, लता, प्रीतम, पुत्र, मनुष्य, योगेश्वर, वेद, शेष, धर्म कुवेर, वरुण, दुर्गा, गणेश, धूर्त, कुरंग, पाप, पाषाण, नैाका, रुधिर, राक्षस, महादेव, सूर्य्य, मिथ्या, निकट, चंदन, मोन सागर, वानर, बलभद्र, पृथ्वी, वास, अग्नि, मुग्ध, अभिज्ञ, अपराध, प्रेम, पर्वत, सर्प, वन, राक्षस, संध्या, विष, पपीहा, रात्रि, आकाश, संग्राम, नख, पल्लव, मकरी, मार्ग पत्र, पवन, दिशा, पिता, विवाह, मदिरा, स्वभाव, अंधकार, वृक्ष,

पत्र, पवन, ध्वनि, अतिरूप, सहु, अल्प, दुख, अर्धरात्रि, वज्र, लज्जा, चरण आन, अटारी, मकर, चांदनी, बोधिनी, बसंत, विहंग, पीपल, पाटल, पंच, माधुक, दाड़िम, केदली, श्रीफल, तमाल, कदम, किंसुकी, बहेरा, नारि सुपारी, कवाक, मिरिच, पीपरि, हर्रे, सोंठि, पयारी, दाख, केसरि, राजवल्लि, चंबेली, पाडरिया, जूही, गंजा, लवंग, केतुकी, इलायची, सरोवर, नागलता, माधवी, कालिंदी, तरंग, उपकंठ, बेत, कोकिला, इन्द्री, माला और जुगुल शब्दों के अनेकार्थ हैं।

No. 294(*b*). Anekārtha Mañjari by Nanda Dāsa of Mathurā. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—$7\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines per page—14. Extent—378 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Ṭhākura Yadu Nātha Baksha Siṁhaji, Rais, Hariharapura.

Beginning—श्रीगणेशायनमः। अथ अनेकार्थ लिख्यते ॥

दोहा ॥ जो प्रभु मंगल जकमय कारण करन अमेव। विघ्न हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव। १ एके वस्तु अनेक हैं जगमगात जग धाम। जिमि कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल नाम ॥ २ उचरि सकत न संस्कृत और नहि समुझि समर्थ। तिन हित नंद सुमति जथा भाषा अनेका अर्थ ॥ ३ ॥

End—इति श्री नंददास विरचिते नाम माला समाप्त सुभमस्तु कार मासे सुक्र पक्षे तिथो १४ संमत १८९८ सन १२४९ हस्ताक्षरे सेष महबूब जो प्रति देषी तैसी लिषी।

No. 294(*c*). Anekārtha by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—9×5 inches. Lines per page—40. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Satyanārāyaṇa, Kaṭhagar, Rāe Barelī.

Beginning—श्री राधा कृष्णायनमः

जो प्रभु मंगल जगत मय कारण करण अमेय। विघन हरन सब सुख करन नमो नमो तेहि देव ॥ १ ॥ एके वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम। ज्यों कंचन तें किंकिनी कंकन कुंडल नाम ॥ २ उचर सकत नहि संस्कृत प्राकृत बिन समरथ। तिन हित नंद सुमत यथा कह्यो अनेका अर्थ ॥ ३ शब्द एक नाना अरथ मीतिन की सो दाम जो नर करि है कंठ सो ह्वै हैं रस को धाम ॥ ४।

End—गुरु शब्द—गुरु गरिष्ट गुरु विरहस्पति गुरु जो बहुत गुन जाहि। सुखदाता माता पिता प सगरे गुरु आहि ॥ ४४ नंदन शब्द नंदन चंदन को कहत नंदन कहिये तात। नंदन वन पुनि इंद्र को नंद नंदन विख्यात। ४५ केतुकी शब्द ॥ केतुकी नम केतुकी कुसुम केतुकी सूर्य चंद। केतुकी कहत मनोज को केतुको वहुरों छंद। ४६ अनिमिष शब्द-अनिमिष कहिये देवता अनिमिष मो कहंत। अनिमिष काल कराल यह जाको कछू न अंत ॥ ४७ कृष्णा शब्द-कृष्णा कालिंदो नदी कृष्णा पीपरि होय। कृष्णा बहुरों द्रौपदो हरि राखे पट गोय ॥ ४८ स्नेह शब्द-तेल स्नेह स्नेह घृत बहुरों प्रेम स्नेह। सो निज चरनन गिरधरन नंददास को देह ॥ ४९ जो यह अर्थ अनेका पढ़य सुनय नर कोय। ताहि अनेका अर्थ है पुनि परमारथ होय ॥ ५० इति श्री अनेका अर्थ संपूरन।

No. 294(*d*). Anekārtha Nāmamālā by Nanda Dāsa of Vṛindāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—50 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Yadu Nātha Baksha Siṁha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरुचरणाभ्यांनमः

एक रदन गज बदन सु दीजे बुद्धि उदार। गजातैपा रस ग्रंथ को बनत न लगी बार ॥ १ जो प्रभु मंगल जक्त मय कारन करन अभेव। विघ्न हरन सब सुभ करन नमो नमो तेहि देव। २ एकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम। जिमि कंचन तें किंकिनी कंकन कुंडल नाम। ३ कह्यो जात नहिं संस्कृत औ समुहन सम हत्थ। तिन्ह हित नंद सुमति जथा भाषानेकाऽत्थ ॥ ४

End—पतंग नाम। तरनि पतंग पतंग पग पावक बहुरि पतंग। सबज रंग पतंग है हरि येकै नव रंग। २६। पलनाम। पल आमिष को कहत कवि पद् उन्जास पल होइ। पल जो पल कह रिषि च परै गोविन्द जुग सत सोइ। २७ दल नाम। दल कहियो नृप............

No. 294(*e*). Mānamañjarī by Nanda Dāsa of Mathurā (Muttra.) Substance—Country-made paper. Leaves—39. Size—8½ × 5 inches. Lines per page—9. Extent—515 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—San 1237 Hijarī or A. D. 1859. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ । मानमंजरी नाम संज्ञा जुक्त नन्ददास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ जो प्रभु जोति मय जगत कारन करन अभेव । अशुभ हरन सम शुभ करन नमो नमो सो देव ॥ १ यैकै वस्तु अनेक है जग मगात जग धाम । जिमि कंचन ते किंकिनी कंकन कुंडल नाम ॥ २ तं नमामिहं परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन । जग करता तारन जगत गोकुल जाको ऐन ॥ ३

End—माला नाम—माला श्रक श्रज गुनवती माल्य नाम की दाम । जो नर करिहैं कंठ यह ह्वै है गुन के धाम ॥ ४०१ जुगननाम । दुंदुभि जुग्म विवि द्वंद द्वै मिथुन उभै जम बोय । जुगलकिसोर सदा बसहिं नंददास केहोय । ४०२

इति श्री मानमंजरी पुस्तके नाम संज्ञा जुक्ते श्रीकृष्ण जु राधा जु मान बर्नन कवि नंददास विरचिते प्रेम पुस्तके समाप्तं शुभं मस्तु मि० भादों सुदि १४ सन् १२३७ दसखत प्राग कुरमी के पाठार्थ अपने वास्ते ।

Subject—प्रार्थना १—६ छन्द तक, कृष्ण नाम ७—९, मान नाम १०, सखी ११, बुद्धि १२, सरस्वती १३, शीघ्र १४—१५, धाम १६-१७, सुवर्न १८-२०, रूप—२१, उज्वल २२, शोभा—२३, दीप्ति—२४, किरण २५, मयूर २६—२७, सिंह २८—२९, अश्व ३०, हस्ती ३१—३२, सिद्धि ३३—३४, निधि ३५-३६, बुक्ति ३७—३८, मनोरथ ३९, राजा ४०, इंद्र ४१—४६, देवता ४७—५०, अमृत ५१, सेवक ५२, दासी ५३, अंतःकरण ५४, अंजन ५५, हीरा ५६, मुक्ता ५७, मंगल ५८, बृहस्पति, ५९-६०, शुक्र ६१, लक्ष्मी ६२—६३, माता ६४, नमस्कार ६५, सोटी ६६, बेनी ७१, पुत्री ६७, शय्या ६८, बलिस्ति ६९, पुष्प ७०, केस ७१, मस्तक ७२—७३, नेत्र ७४, श्रवन ७६, अधर ७७, सिर ७८, दशन ७९, टोढो ८०, बदन ८१, ग्रीवा ८२, श्यामता ८३, कर ८४, उरोज ८५, किंकिनी ८६, नाभि ८७, पंक्ति ८८, नूपुर ८९, वस्त्र ९०, शुक ९१, दर्पण ९२, बीना ९३, नाद ९४, ताम्बूल ९५, उर ९६, उदर ९७, समय ९८, जल ९९—१०२, चरन १०३, हरिद्रा १०४, कुटिल १०५—६, भृकुटी १०७, क्षेम १०८, नम्र १०९, युवती ११०—११, क्रोध ११२, राधा ११३—११५, ब्रह्मा ११६—११९, सुंदरता १२२, अर्जुन १२५, युधिष्ठिर १२६, गंगा १२९, दीरघ १३२, कमल १३७, कौंई १३८, कंधा १३९, चंद्र १४३, कंदर्प १४६, भ्रमर १४८, मेघ १५०, दामिनी १५२, सेना १५४, प्रिया १५५, लता १५६, गौतम १५७, पुत्र १५८, मनुष्य १५९, मनोहर १६०, जामी १६१, बेद १६२, शेष १६३, धर्मराज १६४—६६, कुबेर १६९, बरुण १७०, दुर्गा १७३, गणेश १७६, धूर्त १७८, कुरंग १८२, पाषाण १८३, नाव १८४, रुधिर १८५, राक्षस १८८, धूरि १८९, महादेव १९५, सूर्य २०१, मिथ्या २०३ निन्दा २०५, चंदन २०७, मौन २११, सागर २१४, बादर २१६, बलिभद्र २१९, उदासीन २२०, पृथ्वी २२५,

धनुष २२६, तरकस २२७, तीर २३०, अग्नि २३५, अग्नि कणा २३७, मूर्व २३८ चित्र २३९, अपराध २४०, प्रेम २४१, परवत २४४, भुजंग २४९, घोड़ा २५०, बाटिका २५२, वन २५३, असुर २५५, संध्या २५६, विष २५८, द्रव्य २५९ गणिका २६१, पतिव्रता २६२, चातक २६३, रजनी २६६, आकाश २६९, नीच २७०, युद्ध २७४, नम्र २७५, सूक्ष्म २७६, मकरी २७७, मारग २८०, कृपा २८१, बज्र २८३, दिया २८५, नदी २८८, पिता २८९, विवाह २९०, मदिरा, २९३, स्वभाव २९५, अंधकार २९६, वस्त्र २९९, पल्लव ३००, पत्र ३०२, पवन ३०५, ध्वनि ३०७, आज्ञा ३०८, पति ३०९, समूह ३१०—३१६, अल्प ३१७, दुःख ३१९, रात्रि ३२०, बज्र ३२२, लज्जा ३२३, पनही ३२४, लघुभ्राता ३२५, महल ३२६, चांदनी ३२७, वीथी ३२८, उपवन ३२९, बसंत ३३०, बाग ३३४, पीपर—३३५, आरक्त ३३६, पाडर ३३८, आम्र, ३४०, महुआ ३४१, चंपक ३४२, दाड़िम ३४३, कदली ३४४, बेल ३४५, तमाल ३४६, कदंब ३४७, किंशुक ३४९, बहेड़ा ३५०, नारियल ३५१, सुपारी ३५२, केवाछ ३५५, मरिच ३५६, पीपर ३५९, हर्रै ३६१, सोंठ ३६२, मूंगा ३६३, चकरंद ३६४, दाख ३६७, केशर ३६९, जुही ३७८, चमेली ३७३, सजीवनि ३७५, मालती ३७७, दुपहरिया ३७९, गुंजा ३८१, केतकी ३८२, लवंग ३८३, माधवी ३८४, इलायची ३८५, पान ३८६, सरवर ३८८, बरगद ३९०, जमुना ३९१, तरंग ३९२, उपकंद ३९४, कस्तूरी ३९५, कपूर ३९६, बेंत ३९७, कोपल ३९८, इन्द्री ४००, माला ४०१ युगल ४०२ इति,

No. 294(*f*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—385 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda, Village and Post Office Gauriganja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ नाम माला लिख्यते ॥ दोहा ॥ तं नमामि पद परम गुर कृष्ण कमल दल नयन ॥ जग कारण करुणा रवन गोकुल जाके अयन ॥ नाम रूप गुन भेद कह सो प्रगटत सब ठौर ॥ ताबिन तत्व जो आन कछु कहै सो अति बड़ बौर ॥ समुझि सकत नहिं संसकृत जानो चाहत नाम ॥ तिन लग नंद सुमति जथा रचत नाम की दाम ॥ ३ ॥ गुंथन नाना नाम को अमरकोस के भाइ ॥ मानवती के मान पर मिलै अर्थ सब आइ ॥ ४ ॥ छाती नाम । वत्स वक्ष उर पीय के निरखि आपना भाइ ॥ ताते बढ़ो गुमान अति अवर तीय के माइ ॥ ५ ॥

End—माला नाम। माला श्रज स्रग गुनवती यह जु नाम की दाम ॥ जे नर कारिहैं कंठ जग हुइ हैं कवि को धाम ॥ २५१ ॥ इति श्री नाम माला नंददास कृत समाप्तम् । संवत १८५३ श्रावण शुक्लपक्षे तु भौमि नंदन संज्ञ के गंगा विष्णु मिश्रेन लिखित्वा। बांचि सुधी रहो मित्र तुम पुस्तक लिखो बनाइ ॥ यह अफसोस हमरो फलै श्री गोपाल सहाय ॥ १ ॥ श्रीमते रामानुजायनमः

Subject—अनेक नाम—छाती, मान, सखी, प्रज्ञा, वागीश, शीघ्र, धाम, कंचन, रूप, उज्ज्वल, शोभा, किरण, मयूर, सिंह, अश्व, हस्ती' अष्टसिद्धि, सिद्धि मोक्ष, राजा, इन्द्र, देवता, अमृत, मूल्य, अंतर्धान, अंजन, दासी, हीरा, मंगल, शुक्र, माता, वृहस्पति, मुक्ता, लक्ष्मी, नमस्कार, निःश्रेणी, सुता, शय्या, कुसुम, उसीसी, मुख, अलक, मस्तक, वक्र, लोचन, कर्ण, कर, वंशी, अधर, दशन, श्यामता, ग्रीव, उरोज, रोमराजी, क्षुद्रघंटिका, तर्कस, नूपुर, वसन, आन, दर्पण, वीणा, शुक, नीर, भय, हरिद्रा, क्रोध, समय, कुशल, नाम, स्त्री, ब्रह्मा, दीर्घ, अर्जुन, गंगा, शरीर, कमल, चन्द्रमा, मनोज, मेघ, विद्युलता, सेना, धनुष, मधुव्रत, प्रिया, वल्ली, प्रीतम, पुत्र, नर, वेद, ईश्वर, योगेश्वर, धर्मराज, कुबेर, वरुण, शेष, विघ्नेश, जन्म, वंचक, मृग, पाप, पाषाण, नौका, रुधिर, राक्षस, धूरि, महादेव, सूर्य, अनृत, निकर, चंदन, मीन, सागर, मर्कट, संकरवर्ण, पृथ्वी, रस, अग्नि, अज्ञ, अपराध, पर्वत, भुजंग, पीड़ा, वन, गुरु, संध्या, विष, मनोहर, सुन्दर, धन, गणिका, पतिव्रता, पार्वती, कृपा, चोर, वर्ष, खड्ग, रजनी, आकाश, नख, संग्राम, सूक्ष्म, मकरी, मार्ग, दिशा, नंदी, वृक्ष, पथ, पवन, दुःख, लज्जा, वज्र, पिता, मदिरा, स्वभाव, समूह, अति, आज्ञा, घोरे, पदत्राणि, उष्ण, घाम, मकर, चांदनी, वीथी, अंधकार, बाग, वसंत, विहंगम, अरुण, पाडर, आम्र, चंपक, मधुप, दाड़िम, कदली, वेला, माल, कदंब, किंशुक, बहेरा, सुपारी, नारियल, केंवाछ, मरिच, पीपरि, हर्रे, सोंठि, विद्रुम, दाख, केसरि, स्वर्ण जुथिका, मालती, सजीवनी, कुंद, बंद्रक, गुंजाफल, केतकी, लवंग, माधवी, नागलता, वट, सरोवर, कालिन्दी, तरंग, तीर, वेत, कोकिला, शब्द, इन्द्री, जुगल, एसनाम और मालानाम।

No. 294(*g*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—661 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1863 or A. D. 1806. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Prasāda, Village Dhemani, Post Office Sisaiyā, District Bahāraich.

Beginning.—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाम माला लिष्यते । प्रनमामि परमं गुरं कृष्ण कमल दल नयन । जग कारन करुना अव गोकुल जाको अयन । नामरूप गुन भेदि कै प्रगट जो सब ही ठौर । ता बिन तत्त्व जो आन कछु रचै सो अति बड़ बौर । उच्चरति सकित न संस्कृत जानो चाहत नाम तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम के दाम ॥ ग्रंथन नाना नाम को अमरकोष के भाइ । मानवती के भाइ पर मिळे अर्थ सब पाइ । वस्त्र वक्ष उर पोय तन निरषति अपनी झांइ । ताके वाढ़े मान यह आनति जाके भाइ ॥ स्यामदर्प अंकार मद गर्व समै अभिमान ॥ मान राधिका कुंवरि को सब को करु कल्यान ॥ वैशासंधो चो सषी हितू सहचरी आहि । अली कुंवर नंदलाल की चलो मनावन ताहि ॥ हस्ती नाम । हस्तो दंतो द्विरद द्रुप पद्मी वारन व्याल । कुंवर इमि कुंभो करति, वैरमजात उडाल ॥ सिधुर नेकै नाम हरि गज समाज मातंग । अति गयंद झूमत रहत राजन नाना रंग ।

End—इलायची के नाम । चन्द्रकन्यका निःकुटी त्रकुद्ध पुलकोन वेलि । इत येलो पग परति वलि यह रंचक मुष मेलि ॥ माधवी के नाम । वासंती पुंड्रक सोइ अति मुक्ता फल नाउं । इत मधवी कहि पां परति तनिक चितै बलि जाऊं ॥ नागवेलि के नाम । तांबुल अहिवल्लरी द्विज पानो की वेलि । सरस भई तुव दरस ते बलि रंचक मुष मेलि ॥ सरोवर के नाम । ह्रद पुष्कर कासार सर सरसो ताल तड़ाग । यह देषो वलि मान सर फूल्यो तुव अनुराग ॥ वट के नाम । जटी कपर्दी रक्तफल वह पदन्न अन्य ग्रोध । यह वंसोवट देषि वलि सब सषि नर वधि रांध । जुगुल नाम । जमल जुग्म जम द्वंद द्वै उभय मिथिन विवि वोय । जुगुलकिसोर सदा बसो नंददास के होय ॥ माला नाम ॥ माला श्रकु श्रज गुनवती यह छु नाम की दाम । जो नर कंठ करिहै सुघर होइ है छवि को धाम । कल्पवृक्ष के नाम । हरि चंदन मंदार पुनि पारिजात संतान । कल्पवृक्ष कहि देवतरु पुंसिपंच इत जानि ॥ इति श्री नंददास कृत नाम माला सम्पूर्णम् संवत १८६३ माघे ।

No. 294(*h*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—20. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1918 or A. D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Sidhinatha Vājapeyi-Keli, Rāe Barelī.

Beginning—नाममाला । श्री गणेशायनमः । जयति जयति श्री वृषभान नंदनी नंद को लाड़िली श्री वृंदावन कुंज विहारी ।

तत्रमामि पर परम गुरु कृष्ण कमल दल नयन। जग कारण करुणा करन गोकुल जिनको चैन ॥ नाम रूप गुण भेद करि सो प्रगटत सब ठौर। ताबिन तत्त्व जो आन कछु कहै सो अति मति बौर ॥ समुझि सकत नहिं संस्कृत जानो चाहत नाम। तिन हित नंद सुमति यथा रचत नाम की दाम ॥ अंथत नाना नाम को अमरकोश के भाय। मानवती के मान पर मिले अर्थ सब आय ॥ छाती के नाम। वत्स वच्छ उर पोय के निरखि आपनो छाय। तावे उपज्यो मान हिय आन तिया के भाय ॥ मान के नाम। अहंकार मद दर्प पुनि गर्वस्मय अभिमान। मान राधिका कुंवरि को सब को कर कल्यान।

No. 294(*i*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa Substance—Country-made paper. Leaves—53. Size—5 × 4 inches. Lines per page—17. Extent—424 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1928 or A. D. 1870. Place of deposit—Ṭhakura Dalajīta Siṁha, Village Zālimapurawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

No. 294(*j*). Nāma Mālā by Nanda Dāsa of Gokula. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—35. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, Bhinagā Rāj, Bahrāich.

No. 295. Kokaśāstra by Nandakeswara Paṇḍita of Paṭnā. Substance—New paper. Leaves—198. Size—9½ × 7½ inches. Lines per page—17. Extent—1,262 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Date of Composition—Saṁvat 1675 or A. D. 1618. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Prapanna Mālaviya Vaidya, Sultānpur (Oudh.)

Beginning—श्री सीताराम जी सहाय नम्हा। श्री गनेस जीव सहाय नम्हा। श्री पोथी कोकसासत्र। बन्दैा गनपती बाघोनो बोनासा। जेहो सुमीरत मतो मतो प्रगासा ॥ सम दिन बंदैा सरोसतो माता। बरनैा शंकर सोधो बुधो दाता ॥ बंदैा हरो ब्रह्मा के पाया। जन आपिता जाकर माया।

छन श्रोतु पतालहि देवा। दस दीगपाल करहो जे सेवा ॥ बंदौ पांइ सु ज मन तारा। बंदौ गनपती जोती चपारा ॥ दोहा (खंडित) सभ पंडीत के बेदी के वहु वोधो × × × × । काम सास्त्र कछु भाखेवैः × × × × ॥ बंदौ कोसल पच्छ रवोवारा। तेही दिन वोची कथा चनुसारा ॥ वोधी तोरोदसी हम होत पावा ॥ हस्त नछत्र हमही मन लावा ॥ सोधी जोग कर उपमा होइ। ऐहो वोची कथा सोधो पै होइ ॥ साह सलेम जगत सुलताना। तेही पाछे पटना गोज थाना ॥ दोहा ॥ सोरह सै पचहत्तरः हम जे गोना दह दोसः। सन दफतर म हम देखा एक हजार बतोसः ॥ चैापाई ॥ नंदकेसवर पंडीत ऐक भेउ। पढोले गरंथ के उन कहेउ ॥ गुनीक पुत्र कवी पतो माना ॥ काम कलारस सभ उन जाना ॥ उन्ह के मते ग्रंथ हम देखा। कीछु छंनछेप बोचारो बोसेखा ॥ कामकला कछु वरनो सोइ। सुनत रसाल रसिक बस होइ ॥ रसोक कवो नवो नरनाहा। कामकला रती रस बीगाहा ॥ दोहा ॥ बहुत ग्रंथ बोचारो तेः होएे बहुत दोन खेवः। बाल बैाघ के कारनेः कोउ कथा छनछेपः ॥ चोपाई ॥ कामते बुधै कहो बोचारो। लछन पुरुष जातो मैाचारो ॥ सहसा श्रोगा वोरखम तुरंग पावही नामक रसोक सुरंगा। पहिले कहौं ससा का लछन। कामकला प्रम बीछन ॥ रतोरस रसोक तरुनो मन हरई। गावत पठत बोसु बस करई ॥ सत्य वचन दाता गुनवंता। सुख सव रूप प्रपीक धनवंता ॥ दोहा ॥ षष्ट श्रंगुरो सरोस सुइ अंह सकल प्रधानः। बरेना ऐक पदुमिनी केः जाने रसिक सुजान ॥

End—इलाज प्रमेव वो सुजाक का ॥

श्राम का टोकोरा, वो तालमखाना वो तज वो मेदा वो माजूफला वो कुवार-कागुनी (माल) वो वरमडंडो मो सम बराबर ले सबुल छटाक दाल-चोनो पइसा भर, मुसलो सोयाह पावः सतावर श्राधपाव चीजको श्राचका श्रकर करावे सामरः वो चैाल चुरुया पैसा भरः इन समो को जुदा जुदा पोसे साथ तीनो सेस कर तरो मिलावे बोच वखत सुबाह के एक तरह थो भर गाइका दवा साथ खाइः वो पानो ताजा साथ खायः वो जब तक के खाय तव तक नजदोक श्रोरत के न जाएः वो तुरसो वो खटा वादो से परहेज करे जलदो से श्राराम होय। दुसरा दवा। रस कपूर श्राठ मासाः करन फल सताइस रद् जायफल इगारह इस तरह सब दवाइ।

Subject—(१) पद्यात्म देवादि वन्दना, ग्रन्थ निर्माण काल श्रोर लेखक तथा उसके श्रभिभावक का नाम निर्देश पृ० १—२। (२) पुरुष तथा स्त्री जाति के लक्षण, वसोकरन मंत्र सहित पृ० ३—२० तक। (३) काम निवास स्थान तिथियों के हिसाब से, मर्दन, चुंबन, नखक्षत तथा श्रालिंगन विधि २१ पृ० ३४

पृ० तक-(४) आसन तथा गंध पदार्थादि वर्णन, मुख शोभा तथा कामोद्दीपक अन्य इच्छित कार्यों के साधन, पुष्टाङ्क, विधि, स्तम्भनादि विधि। पृ० ३५—५५ तक—(५) तावीज, उवटन, तिलक अंजन, मोहनी, गहन का, वसकरना, गर्भ पलटन, गर्भ रहना, पुत्र होने इत्यादि का साधारण वर्णन, पृ० ५६—६५ तक। (६) मोहक अंत्र, समुद्र फल गुण पृ० ६६—७२ तक। (७) बांझ की हिकायत, सात प्रकार की बांझों के लक्षण, बांझपन विनाश के उपाय। तावीज, दमें के इलाज, अन्य इलाज, सिर पीड़ा का तावीज, खांसी का इलाज, दाद का इलाज, पृ० ७३—८५ तक। (८) सगुनैाती पृ० ८६—९० तक। (९) पुष्टादि की औषधियां, तांबा, रांगादि मारने की विधि और नाना प्रकार के मन्त्र हैं पुस्तक के अन्त तक अर्थात् ९१ पृ० से लेकर १९८ तक कितनोंहो प्रकार की औषधियों का वर्णन।

No. 296. Bāraha Māsā Rādhā Krishṇa by Nandalāla. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Ṭhākura Jairama Simha, Mirzāpura, Post Office Mahamūdābād, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ राधा कृष्ण का बारहमासा लिष्यते॥ पति सुभ्रुष मुषदंत येकें कपिल बहु गुन नायकं॥ जग करन सब दुष हरन सुष करनं दायकं॥ बिघन हरन बिग्यान दायक सुर सहायक बिकट अति लंबोदरं। करिवर वदन सुष सदन बहु गुन भाल ससिवर सुन्दरं॥ धूमे ध्वज त्रिसून करि रिपु सयने सकल नसायकं। भुज चारि अद्भुत रूप सोहे बिबुध पति सब लायकं॥ यह विनय मेरी सुनु बिनायक देहु बुधिवर दायकं। नंदलाल तुमरी सरन आयो सुमति सहायकं॥ दोहा॥ द्वादस नाम गनेस के सुनें महा सुष होइ। सुफल करें मन कामना जो सुमिरे नर कोइ॥ सुमिरि भवानी संकरहि श्री गुरु चरन मनाइ। बारहमासा कहत हौं मोको होउ सहाइ॥ सारंग पानि सनेह बस सदा रहे अनुकूल॥ बिन कारन जो जगत में ताहि न कबहूं भूल॥ जदुपति औ गोपी बिरह सो सब कहैां बषानि॥ मिलि है सब कहं आनि प्रभु। बात लेहु पहिचानि॥

End—छंद॥ समुझाइ सब मृदु बात कहि पितु मातु की बिनती करी। भये पुरक लोचन नीर बरषे॥ मनहु सावन की झरी॥ सुनु मातु मैं नांहि उरिन

तुम सों जलम कोटिन हीं धरों। अब आउ तुम ब्रज लोग लैके कर जोरि तब पायन परीं ॥ तब कहति जसुमति सुनौ जदुपति एक वर मोहि दीजिये ॥ यह मधु मूरति बसै उर महं नाम निसु दिन लीजिये ॥ तब आय पितु के चरन परसे जोरि कर पुनि पुनि कह्यो। प्रतिपालि हमहि प्रवीन कीनो सुजस तुम्हरो होइ रहो ॥ तुमरो अनुग्रह राय पायो भयो मैं त्रिभुवन धनो। करति दाया रहो मोपर कहो यह जदुकुल मनो ॥ पितु विदा तुम मम हीन आयो वेगि आयुसु दीजिये। गहि चरन हरि के नंद वोले तात यह सुनि लीजिये ॥ अन जानि मैं नहि चरन परसे भूलि तव माया रह्यो। चरित अगम अपार तुमरो पार कवने लह्यो ॥ जाहु घरहि कृपाल मेरे सुरति जनि बिसराइयो। करि सुरति कबहूं आइ ब्रज मंद फेरि दरस दिषाइयो ॥ दोहा ॥ बार बार मिलि भेंटि कै विदा भये गोपाल। प्रभु पहुंचे द्वारावती गोकुल आये ग्वाल ॥ इति श्री बारहमासा राधाकृष्ण संवाद नंद जू को संवाद सम्पूरन समाप्तः ॥ इति श्री कातिक मासे शुक्ल पछे तिथैा षष्ठम्यांम चन्द्रवासरे संवत १९२१ दसषत मोहनलाल गोवनी के।

Subject—श्रीकृष्ण ग्रैार राधिका का प्रेम, श्रीकृष्ण का गोपियों को छोड़ मथुरा जाना, वहां से द्वारका जाना, गोपियों का विवाह फिर तीर्थ स्नान हेत श्रीकृष्ण का द्वारका से ग्राना, इधर ब्रजवनिता समेत नंद यशोदा जी का भी जाना, वहां श्रीकृष्ण से राधिका का गोपियों को साथ ले कर मिलना ग्रैार नंद यशोदा का श्रीकृष्ण जी से मिलना ग्रादि।

No. 297(*a*). Hitōpadeśa Bhāshā by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—10¼ × 5½ inches. Lines per page—19. Extent—1,275 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedpur (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ ग्रथ सुहृदभेद कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ दिव्य दयाल कवि कोविदनि मति प्रसाद सुखदानि। द्विरद माथ गननाथ के चरन सरन जिय ग्रानि ॥ १ ॥ चो० ॥ राजपुत्र बोल्यौ इमि फेरो। मित्र लाभ भाख्यौ द्विज टेरो। सुहृद भेद को कहौ कहानो। जाते राजनीति पहिचानो ॥ दोहा ॥ वृषभराज मृगराज कौ कहं बंध्यो ग्रति प्यार। दगाबाज दंभो लुबुध सुच तोरयो एक स्यार ॥ २ ॥ चो० ॥ राजपुत्र बोले यह कैसी विष्णु समै भाषो है जैसी ॥ है दक्षिन दिसि जग ग्रभिरामा। नगरी एक सुवरना नामा ॥

End—विष्णु शर्मोवाच ॥ जे देवन्ह के पाछे थाका । ते सारस को दोन्हे लोका ॥ विद्याधरी अप्सरा साथा । चवर डोलावत अपने हाथा ॥ जे कृतज्ञ भरता के भक्ता । सदा रहै प्रभु सो अनुरक्ता ॥ सूर समर को नीके मांडै । स्वामि हेत जीवित को छाड़ै ॥ ते नर होत स्वर्ग के गामी । सुजस सकल पावै जग नामो ॥ मारि जाइ शत्रुन सो सुरा । मुष पर नेकु रहै पै नुरा ॥ कातर बोलन आपन भाषेसा । अमरावति को रस चाखै ॥ और सकल सुख तुम कह होई । विग्रह करै न पावै कोई ॥ नीति मंत्र रिपु मारे जाहो । वन वन फिरै मूल फल खाहीं ॥

इति श्री हितोपदेश विग्रहो नाम तृतीय कथा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सम्वत १८७७ ॥

इति ।

Subject—सुहृद भेद, पृ० १–२४ तक । विग्रह, पृ० २५–५८ तक ।

No. 297(*b*). Hitōpadeśa (Rājanīti) by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—232. Size—6 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—2,704 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1924 or A.D. 1867. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Simha, Tālukedāra, Village Dikauliyā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हितूपदेश लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि साधु के काज मे सो हद करौ कृपालु गंग फेन को लोक सो सिर ससि कला विसाल ॥ १ ॥ सुनी सहित उपदेस देत बचन रचनानि बेदन को बानो लई राजनीति पहिचानि ॥ अजर अमर के हेत ते विद्या धनहि बढ़ाव । मोचु मनो चोटी गहे देत विलंब न लाव ॥ विद्याधन सब धनन ते संत कहत सरदार । मोल बढ़ो ना घटत घर किये न पैइये मार ॥ विद्या देत बिनीत करि बिनै बड़ाई देत । बड़े भये धन पाइये दान भोग धन हेत ॥ शास्त्र सस्त्र विद्याहु विघ धन और धर्म न जाइ । विरधाई पहिले हंसो दूजो सदा सोहाइ ॥ दारुन नृपति समुद्र सम विद्या नदी समान ॥ छै पहुंचावै नोचहू लाभ भाग परमान ॥ विद्यानदी नदीस नृप नोचहु मिलवै हाल । दारुन नृपति दया करै होइ जो भाग कृपाल ॥ प्रथमहि याको नाम जो धरै न घट मे आनि । बाल कथा छल कहत हौं राजनीति पहिचानि ॥

End—दोनों भये आपने राजा । सुष सो करत आपनो काजा ॥ विष्णुशर्म बालन सो कहो । आयसु करौ सुनौ जो चहो ॥ राजपुत्र बोले जिय जानो । विष्णुशर्म को आदर मानो ॥ द्विज बर जो राजन को चहो । सोई कथा आप

यह कहो ॥ दुजो भयो जन्म अवतारा । सुनिये राज अंग व्योहारा ॥ गयो बहोरि फेरि अब भयो । सुष समूह पायो दुष गयो ॥ विश्नुशर्म तब दई असीसा । संचि करो शुभ घरी महोसा ॥ विपति दुरि साधन को जाई । दानन को रति सदा सोहाई ॥ नोति नई नारो लो जगै । चुंबन करै मित्र सुष लगै ॥ मंत्री मंत्र सदा मन धरै । महाराज सुष आपुहि करै ॥ दोहा ॥ जौलों गिरि गौरोस को बड़त जात नित नेत । जौ लौं लछिम मुरारिधर प्रगट करत बो मेत ॥ जौ लौं सुर गुर संग करि फिरि सूरज बो चंद । तौ लो नारायन कथा सुनै सो मनहि अनंद ॥ हित छल बहु यामें अहै भूपन को बरनोति अरु उपाव बल बुद्धि को त्रिय चरित्र रस रीति ॥ मंत्र भेद सुदेस के जोर व फोर व संधि अरु अनेक गुन भेद हैं वांहि कथा सो बंचि ॥ इति श्री हितुपदेश नारायन कृत समतम् ॥ श्री संवत १९२४ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथैा ४ ससि दिन लिष्यते बहदेव पंडित पैदापुर ग्राम निवासते ॥

No. 297(c). Hitōpadesa Bhāshā by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—41. Size—13 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1927 or A.D. 1870. Place of deposit—Ṭhākura Dalajīta Siṁha, Village Jālimasiṁha kā purwā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रीमते रामनुजायनमः अथ राजनीति हितोपदेश भाषा लिष्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि काज साधु में सो हरु करै कृपाल । गंगा केतु कि लोक सिसिर ससि काल विलास ॥ सुनिहुत उपदेस यह देत वचन रचनानि ईवन्ह को बानो । लहे राजनोति पहिचानि । अजर अमर की भांति सो विद्याधनहि बढ़ाव । मीचु मनो भोठी गहे देत न वार लगाउ ॥

End—राजकुमार कथा सुनि बोले । एकहि वार सहस मुष षोले ॥ आनंद बड़ो हमारे भयो । उनको साथ छूटि नहि गयो । कुशल भांति अपने घर आयो हमरे मन आनंद बढ़ायो ॥ विश्वशर्मा उवाच ॥ राजकुमार एक सुनिये बाता । जो हों तुम्है असोसत गाता ॥ पावे साधु मीत सब ले कोय । लक्ष्मीवंत देस निज होय ॥ भूपति सब भूमिहि प्रतिपाले । धर्मेहि धरै न डोले हाले । अर्द्धचन्द्र चूड़ामणि जाके । सो कल्याण करै प्रभु ताके । इति श्री हितोपदेस प्रथम कथा मित्र लाभ समाप्तं । सुभ मस्तु । समै नाम माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथैा नैामी रविवारे संवत १९२७ दसषत दलजीत सिंह के ।

No. 297(*d*). Hitōpadeśa by Nārāyaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—960 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahipati Siṁha, Bhairampur, Rāe Barelī.

Beginning—पृष्ट २ से ।

दारुन नृपति समुद्र सो विद्यानदी समान। लै पहुँचावै नीचहुं लाभ भाग परमान ॥ विद्यानदी नदीस नृप नीचहु मिलवै हाल दारुन दानि दया करै होइ जो भाग कपाल ॥ प्रथमहि याको नाम जो भरो नये घट हारि। बाल कथ कुल कहत हो राजनीति सब झारि ॥ मित्र लाभ फिरि सुहद को भेद यो विग्रह संधि पंचतत्व सों ग्रंथ पढ़ि चारि कथा मैं बंधि ॥

End—रोग सोक संताप यह घरो पहर को संग। तातन कारन कैान नर करै पाप परसंग ॥ चल जल मैं ससि बिंब ज्यैां त्यैां मन तन मैं प्रान समुझि इहै मन आपने कैान करै कल्यान ॥

तातै मेरे मन यह आई। तोसों बात कहैां मन भाई ॥
सत्य ये कहै भेदहजार। सत्यहि को दीजै फिरि भार ॥
जो लो गैारि गिरीस को बड़त जात नित नेह।
जो लो लछि मुरारि उर लागि तड़ित जो मेह ॥
जो लो सुर घर कनक गिरि फिर सूरज घरु चंद।
तो लो नारायन कथा सुनै सुजान अनंद ॥
इति हितोपदेश भाषा नारायण कवि कृत समाप्त: ॥

No. 298. Gopīsāgara by Nārāyaṇadāsa. Substance—New paper. Leaves—38. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—48. Extent—1,140 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra, Kaṭail, Post Office Chilwaliyā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सरस्वती मातु जी सहाई ॥ अथ गोपी सागर कथाः लिख्यते ॥दोहा॥ विघ्न विनासन भव हरन बुद्धि होत परगास। सुमिरन करो गणेश को होइ शत्रु को नाश ॥ चैापाई—श्रीगुरु श्रीगुरु श्रीगुरु देहु। जिनके मरम न जाने केहु ॥ जब उद्धव गोकुल कहं आये। गोपिन कह यह कथा सुनाये ॥

कुशल सिंह मूरख अज्ञानी । सो चरित्र भाषा रचसानी ॥ गुरु प्रसाद कहो कछु जानी । नाहीं तो पशु हो अज्ञानी ॥ दुसरे साधु संगति बुद्धि पाई । सो कहा नीति राघव गुसाईं ॥ दोहा ॥ गोपिन आगे उद्धव कथा जो कीन्ह बखान । गुरु दाया ते भायेउं हम पशु वा अज्ञान ॥

End—श्रवण संदेसा सुना हरि चित दाया प्रभु कीन्ह । नारायन दास प्रभु चरण कमल तन मन प्रीति दीन्ह ॥ चैा—गोपी सागर संपूर्ण भयऊ । कहत सुनत पातक सब गयऊ ॥ संत असंत सुनहि प्रापति होई । मोक्ष मुक्ति तेहि प्रापति होई ॥ गुरु की दया भवोपि स्वासा । तब एक कथा कीन परगासा ॥ दुसरे साधु संगति बुधि पाई विष गो उतरि सुरति चित आई ॥ नहि तो मैं पशु वा अज्ञानी । कत पाउं वरश अमृत बानी ॥ अधम करम कछु धरम न आही । भु को भार भंज जैहां व्रज मांही ॥ दोहा ॥ गुरु दयाल भव कहा हम अधम जिव जाति । अधम कथा हरि सुरस की नीति की है ए ख्याति ॥ २२५

इति श्री पोथी गोपी सागर कथा सम्पूर्ण समाप्त । जो देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते ॥ मिती पूष छोंद मास शुक्ल पक्ष तिथि ६ षष्ट संवत १८९८ वि० लिखा देवीदीन छावनी कर्नाल रजमटि ९ बाहर शोम्वार॥ राम राम ॥

Subject—स्तुति, कृष्ण का उद्धव को वृज में भेजना, उनका यशोदा ग्रैार गोपियों से मिलन, (पृ० १—३)। व्यास अगस्त ग्रैार नारद सम्वाद, उद्धव का गोपी को समझाना मारकण्डेय की कथा कहना, गंगा किनारे ऋषियों का एकत्र होना ग्रैार अगस्त्य द्वारा मारकण्डेय का प्रलय में कृष्ण का सहायक होना, शृंगी ऋषि के यज्ञ का वर्णन, ध्रुव के विष्णु स्वरूप का वर्णन, गोपियों का विरह वर्णन ग्रैार उद्धव को धिक्कारना, कृष्ण का बाल चरित्र, उद्धव के द्वारा कवि का कविता की प्रशंसा करना—(पृ० ४—१० तक)। उद्धव का प्रह्लाद चरित्र वर्णन, एकादशी कथा वर्णन, प्रह्लाद का इन्द्र होना ग्रैार इन्द्र की परीक्षा लेना (पृ०—११—२२ तक)। द्विज की कथा, तुलसी माला का प्रभाव, विष्णु दर्शन ग्रैार उनका गरुड़ पर सवार होकर लोकों में भ्रमण करना, लक्ष्मी का मोह ग्रैार विष्णु का निवारण, नरक वर्णन, नाम महिमा, गोवत्स कथा, शिव से कृष्ण भक्ति की अधिक महत्ता (पृ० २३—३१ तक)। केवट की कथा, शिव महिमा, शिव का शक्ति से विवाद, गोपियों का उद्धव से विरह वर्णन, (पृ० ३२—३६ तक)। उद्धव का विदा होना ग्रैार मथुरा गमन, कृष्ण का प्रेम वर्णन (पृ० ३६—३८)।

No. 299. Anurāga Rasa by Nārāyaṇa Swāmī. Substance —Country-made paper. Leaves—8. Size—12 × 5 inches.

Lines per page—48. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Rāma Śaṅkara Vājpeyi, Village Bahori kā Vājpeyi kā Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ अनुराग रस लिष्यते श्री नारायण स्वामी कृत लिष्यते ॥ श्री वृन्दावन चन्द्र मध्ये ॥ अथ गुरु वंदना ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज वंदौं वारंवार । नारायण भवसिंधु हित जे नौका सुष सार ॥ कृपा करौ मो दीन पै हरौ तिमिरि अज्ञान । नारायण अनुराग रस निज मति करं बषान ॥ अथ श्री राधा गोपाल वंदना ॥ श्री राधा गोपाल पग कर प्रणाम उर धार ॥ बरनों कछु अनुराग रस यथा बुद्धि अनुसार ॥ दयासिंधु अति सुष सदन सदा रहौ अनुकूल । नाथ न आनौ हृदय में मो पामर की भूल । श्री वृन्दावन वंदना ॥ धनि वृन्दावन धनधाम है धनि वृन्दावन नाम । धनि वृन्दावन रसिक जन धनि श्री राधा श्याम ॥ जे वृन्दाबन वास करि शाक पात नित षात । तिन के भागन को निरषि ब्रह्मादिक ललचात ॥ हम न भये ब्रज में प्रगट यही रही मन आस । नित प्रति निरषति जुगुल छवि करि वृन्दावन वास ॥ चेतावनी पुनि गुण दोष लक्षण ॥ बहुत गई थोरी रही नारायण अब चेत । काल चिरैया चुग रही निश दिन आयुष खेत ॥ नारायण सुष भोग में तूं लंपट दिन रैन । अंत समय आयो निकट देषि षोलि के नैन ॥ धन योवन यों जायगो जा विधि उड़त कपूर । नारायण गोपाल भजि क्यों चाटै जग धूरि ॥

End—नारायण जाको हियो विंध्यो श्याम दृग बान । जग के भावै जीवतो है यह मृतक समान ॥ सुष संपति, धन धाम को ताहि न मन में आस । नारायण जाके हिये निश दिन प्रेम प्रकाश ॥ नारायण जाके हिये प्रीति लगी घनश्याम ॥ जाति पांति कुल सों गये रहे न काहू काम ॥ नारायण तब जानिय लगन लगी यहि काल जित जित में दृष्टो परै दीषै मोहनलाल ॥ नारायण ब्रजचंद के रूप पयोनिधि मांहि डूबत बहुतै एक जन उछरत रहौ नाहिं । परा भक्ति अरु ज्ञान में तनक नहीं कछु भेद । नारायण सुष प्रेम है कहैं संत अरु वेद ॥ परा भक्ति जाको कहैं जित तित श्याम देषात ॥ नारायन सो ज्ञान है पूरण ब्रह्म लषात ॥ नंदलाल दशरथ कुंवर उभय एक सरकार । नारायण जे दो कहैं ते नर बिना विचार ॥ जो घायल हरि दृगन के परे प्रेम के खेत । नारायण सुनि श्याम गुण एक संग रो देत ॥ नारायण सब एक है रंग रूप तिल रेष उनके दृग गंभीर हैं इनके चपल विशेष ॥ नारायण या बात सों अधिक और नहिं बात । रसिकन

को सतसंग नित युगल ध्यान दिन रात ॥ गुण मंदिर सुन्दर युगल मंगल मोद निधान। नारायण निज चरण रति यह दीजै वरदान ॥ इति श्री अनुराग रस नारायण स्वामी कृत सम्पूर्णम् ॥ संवत १९३६ लिखा कालिका प्रसाद ॥

Subject—गुरु वंदना, श्री राधागोपाल वंदना, श्री वृंदावन वंदना, चेतावनी, गुण दोष लक्षण, संत लक्षण, कृपा निधान की शोभा, प्रेम लक्षण का वर्णन।

No. 300(*a*). Sudāma Charitra by Narottamadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री इष्टदेव तासु प्रसन्नास्तु ॥ सोरठा—गणपति कृपा निधान विद्या बुद्धि विवेक जुत देहु मोहि वरदान प्रेम सहित हरि गुण कहौं ॥ १ ॥ हरि चरित्र बहु भाइ सेस महेस न कहि सकैं ॥ प्रीति सहित चित लाइ सुनो सुदामा की कथा ॥ २ ॥ दोहा ॥ विप्र सुदामा बसत है सदा आपने ग्राम। भिक्षा करि भोजन करै हिय जपै हरि नाम ॥ ३ ॥ ताकी घरनी पतिव्रता गहै वेद की रीति। सुबुधि सुसील सुलज्ज अति पति सेवा सों प्रीति ॥ ४ ॥

End—कवित्त—कहूं सुपनेहू सुवरन के महल हुते पैारि मनि मंडित कलस कब धरते। नगन जडित कहां सिंहासन बैठिवे कैां कब ये मवास खरे मोपै चैार हरते ॥ देखि राजा सामां निज बामा सों सुदामा कह्यौ कब ये भंडार रतनन भार भरते। जो पै पतिव्रत तूं न देती उपदेश कहूं एती कृपा द्वारिकेस मों पै कब करते ॥ ७५ ॥ दोहा—विप्र सुदामा की कथा कहै सुनै चितु लाइ। ताकों श्री जदुराइ जू सब दिन रहै सहाइ ॥ ७६ ॥ इति श्री नरोत्तम कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् लिखितं गनेशो शंकर ने स्वयं पठनार्थ श्री राधानगर खिपाइ मध्ये स्व प्रत्यं ॥

इति।

Subject—गणेश वंदना। सुदामा की दशा का वर्णन, सुदामा और उनकी स्त्री का संवाद, स्त्री का सुदामा से द्वारिका जाने का कहना, सुदामा का भिक्षा में संतोष मानने का कहना, (छं० १—९ तक)।

दीनता को हीनता वर्णन, भिक्षा मांगना निर्दोष कथन, वर्ण धर्म कथन, स्त्री का निज दुर्दशा वर्णन, शीतादि के कारण कष्ट वर्णन, सुदामा का फिर निषेध करना, स्त्री का कृष्ण की उदारता वर्णन, प्रह्लाद द्रौपदी आदि का उदाहरण देना। (छं० १०—१८)।

सुदामा का द्वारिका जाना स्वीकार करना, स्त्री का कृष्ण बंधुत्व की सुधि दिलाना, सुदामा का कृष्ण को भेट देने के लिये कुछ मांगना, स्त्री का भेंट के लिये तंदुल मांग लाना और सुदामा का प्रस्थान करना, सोते में गोमती तीर पर पहुंचना, द्वारावती में पहुंचना, पूछने पर एक व्यक्ति का कृष्ण पौरि पर पहुंचाना, नगर देख अचंभित होना (छं० १९—३१)।

द्वारपाल का सुदामा की दशा का वर्णन, कृष्ण का सुन कर जाना, प्रेम भाव से मिलना, आदर करना, चरण धोना, स्नानादि कराना, भेंट मांगना, कृष्ण जी का चावल भेंट का भोग लगाना, रुक्मिणी की तीसरी मुठी पर रोकना, सुदामा का भोजन करना—(छं० ३२—५३ तक)।

सात दिन निवास करना, कृष्ण का संपति देना और सुदामा से न कहना। महल आदि बन जाना, सुदामा का मन में कृष्ण प्रेम, आदर से कृष्ण का विदा करना, सुदामा का नगर में आना और झोंपड़ी न जान कर दुखित होना, स्त्री का ले जाना, कृष्ण महिमा वर्णन, सुदामा का प्रसन्न होना, कृष्ण सुदामा की मित्रता, कृष्ण महिमा कथन। (छं० ५४—७६ तक)।

No. 300(*b*). Sudāmācharitra by Narottamadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—312 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Saryū Prasādaji, Village Maharu, Post Office Materā, District Baharāich (Oudh).

Note—Other details as in no. 300(*a*).

No. 301(*a*). Jñānasarovara by Bābā Nawaladāsa of Dhanesā. Substance—Country-made paper. Leaves—326. Size—8 × $4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—9. Extent—2,916 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1818 or A. D. 1761.

Place of deposit—Lālā Mahavira Prasāda, Village and Post Office Gauriganja, District Sultānpur.

Beginning—सम्वत् अठारह सै पठारह, माघ पुरनमासिया। संक्रांति सुन्दर जानि कै रवि माखि कथा प्रकासिया॥ निरमल सरोवर ज्ञान को असनान श्रोता जो करै, तरि जाइ पाप प्रगाह से, सुष मूल सागर मैं परै। ज्ञान सरोवर ज्ञान में ज्ञानी करत विचार॥ हिल मिल बांचत सुनत नर उतरत भवजल पार॥ पश्चिम दिस है अवध से नवल रहे रटिनाम। कोसन ओजन पांच पर ग्राम घनेसा नाम॥ सो०—यथ कछु दोष न मोर। मै बाजन बाजेस तुम। गावों प्रभु गुन तोर। प्रभु मोहि कछुक बानो मयो॥

End—दोहा—यह सब चरित पुरान के ज्ञान खानि अघहानि। दास नवल श्रोता तरै सुनै जो निश्चय मानि॥ तरै करै फिरि नहिं भरै श्रोता वक्ता होइ। दास नवल सोइ पाइहै प्रैार न पावहि कोइ॥ २५८॥ सोरठा॥ धन्य जन्म तिन्ह केर। श्रोता वक्ता जक्त के। तिन्हें न भवजल फेर। जे जस ज्ञान प्रमान करि॥ इति श्री ऊधव माधव संवादे ज्ञान सरोवर भाषा कृते समाप्तम्॥

Subject—(१) प्रथम अध्याय पृ० १८—ज्ञानकांड ऊधव माधव संवाद। (२) दूसरा अ० पृ० २०—संत स्वभावादि। (३) तीसरा अ० पृ० ५२—(१) एक भक्त हंस की कथा और (२) योग भोग समता। (४) चतुर्थ अ० पृ० ६८—(१) दुर्वासा द्वारा द्रुपद सुता परीक्षा। (२) बालयती की कथा। (५) पंचम अध्याय पृ० ८८-ईश्वर के नामों में रामनाम की श्रेष्ठता। (६) षष्ठम अध्याय-पृ० ११०-चन्द्रोदय राजा की कथा, कन्यादान की श्रेष्टता, पातिव्रत्य माहातम्य, कबूतर की कथा, भावी की प्रबलता, (७) सप्तम अध्याय, पृ० १३०-ब्राह्मण माहात्म्य तथा नाम की महिमा। (८) अष्टम अध्याय-पृ० १५६ कुन्तल नृप की कथा, कर्मानुसार जीवोत्पत्ति तथा यमपुरी वर्णन। (९) नवम अध्याय—पृ० १७४—रामचन्द्रजी का बाल चरित्र।

(१०) दशम अध्याय—२००, काकभुशुंड की कथा। रामचन्द्र जी का बाल चरित्र। (११) एकादश अध्याय—पृ० २३०-(१) विभीषण हनुमान संवाद, मानादि वृथा कथन केवल रामनाम ही प्रधान, (२) अर्जुन, पवनसुत संवाद, कृष्ण राम की एकता।(१२) द्वादश अध्याय—पृ० २५४-भक्त मृग की रक्षा ईश्वर द्वारा मन्दोदरी उत्पत्ति। (१३) त्रयोदश अध्याय—२७६ हरिश्चन्द्र की कथा। (१४) चतुर्दश अध्याय—पृ० २९६ हरिश्चन्द्र की कथा (१५) पंचदश अध्याय—३२६—एकादशी उत्पत्ति।

No. 301(*b*). Ratna Jñāna by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—128. Size—15×6 inches. Lines per page—12. Extent—2,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1838 or A. D. 1781. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Mahanta Guruprasādaji, Hargāon, Post Office Parbatapura, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। सुमिरहुं प्रथम गणेश गोसाईं। जो त्रिभुवन हित करत सहाईं॥ रिधि सिधि बुधि बकसत नहिं बारा। अमित अपतन पार उतारा॥ अति बड़ि लंबोदर प्रभुताई॥ जासु उदर सब जगत समाई॥ जिन कर अगम अनंत प्रभावा॥ सुर मुनिवर कोउ मरम न पावा॥ जय जग वदन सदन बुधि ग्याना। जेहू कर शिव अति करत बखाना॥ तुम त्रिभुवन पति गनपति नामा॥ सुमिरत तुमहिं सकल सिद्धि कामा॥ मैं मति रहित नाम नहिं जाना। होइ प्रसन्न पिउ पुरुष पुराना॥ दोहा॥ कुमति हरन सिद्धि बुधि करन, सरन सम्हारनहार। दास नवल मतिमंद कहै कीजै भवजल पार॥ सोरठा॥ सत गुरु सांचे राम, सतदिन कर भ्रमतम हरन। हृदय करिय विश्राम, जग जीवन जग तारनै॥...।
संवत अठारह सै अड़तीसा। कहियत नाइ भक्त पदसीसा॥ माघ मास सुभ पूरन मासी। कथा समुझि हरि चरित प्रकासी॥

End—हिन्दु तुरकन भयौ लराई। सो हमसन कछु बरनि न जाई॥ प्रथमहिं करि मयदान अपारा। जूझे तुरुक भये क्षय कारा॥ पुनि फिरि धरि गढ़ कीन लड़ाई। द्वादश दिवस कविहि कहि गाई॥ तब तुरकनि चंद्र उर मारा। कीन्ह कविन सोइ जस विस्तारा॥ हिन्दु कट्यो मिट्यो हिन्दुवानो॥ कुचरय कीन देस तुरकानो॥ दोहा॥ लोन अमल कर देश महं तुरुक रहा सब छाइ॥ जूझे राना देश के को सब सकत गनाइ॥ २४३॥ इति श्री माधो रत्न ज्ञान नवलदास कृत समाप्त सुभ मस्तु, जाहशं पुस्तकं दृष्टा ता दृशं लिपितं मया यदि शुद्धं अशुद्धं वा मम्दोषो न दीयते॥ सम्वत १८५२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां गुरुवासरे रत्नज्ञान समाप्तम् सुभम् भूयाद श्री जानुकी वल्ल भाजति॥

Subject—प्रह्लाद, माधवानल इत्यादि भक्तों के उदाहरणों के साथ ज्ञानोपदेश।

No. 301(c). Sukhasāgara Kathā by Bābā Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—200. Size—7×6 inches. Lines per page—12. Extent—1,800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1817 or A. D. 1760. Date of manuscript—Samvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Lālā Mahāvīra Prasāda Paṭwārī, Village Sarāi Khīmā, Post Office Rāmanagara, District Sultānpur.

Beginning—श्री गनेसाइनमः ॥ दे।० गुर गनपति सिव सक्ति सुर बंदैां रमा रमेस ॥ दास नवल हरि चरित रत करहु कृपा उपदेस ॥ सुख सागर सत जल विमल कलिमल दमन प्रमान, दास नवल अस्नान करु होइ सदा कल्यान ॥ बार बार बलि बलि गुरु चरना। दास नवल के संकट हरना ॥ मे सनाथ 'दूलन' खेमा। चेला अमित नाम के छेमा ॥ दे।० संवत् अठारह से सत्रह यह मैं कहो बषानि। जेठ मास × × × बंदैा चार मुक्ति श्रुति चारो। पुनिबंदैां गिरिराज कुमारी। धर्मराज पद गहैां तुम्हारे। जे सब न्याव विचारन हारे ॥ बंदैां सुरन समेत सुरेसू। बंदैां जल थल कमठ अा सेसू ॥ बंदैां पवन सहित हनुमाना ॥ धर्म भक्ति निसुदिन जिन्ह जाना ॥ × × ×

End—अति हरि चरित अगूढ़, को समरथ पारहि लयौ। दासनवल मति मूढ़, नरतन प्रेम प्रतीत बिन ॥ कहत जुगल करि जोर, श्रोता वक्ता मित्र मम। दद लीजिये जोरि, मोहि भरोसा अहै बड़ ॥ मोहिन लायहु पोरि, बाजन बाजत नाथ कर ॥ सो बाजन मति मोर, जानै वहै बजावनो ॥ पाप हरनि पावन करनि श्रोता लेहु नहाइ ॥ सुषसागर भाषा किते मैं यकदसमोध्यायः ॥ इति श्री नवल दास कृत सुकसागर कथा संपूरन समाप्त सखै नाम जेठ मासे कृष्ण पक्षे गुरु बासरे संबंत १८९० सन १२९० फ० × × × ×

Subject—(१) प्रथम अध्याय। पृ० १—४ तक—ग्रंथ निर्माण कारण तथा समय (२) पृ० ४—७ तक—बंदनाएं—(३) द्वितीय अध्याय। पृ० ८—२१ तक—उमा की शिव से मैालि माला विषक शंका, शिव का समाधान करना, नाम का प्रभाव, शुक जन्मादि—(४) तृतीय अध्याय—पृ० २२—२३ तक—शुक व्यास आश्रम गमन। (५) तृतीय चतुर्थ और पंचम अध्याय पृ० ३४—६३ तक—शुक का जन्म, दर्शन इत्यादि वन गमन, शुक व्यास संवाद, शुक भजन—अ० ४, ५, ६ (६) सप्तम अध्याय—पृ० ६४—७३ तक—व्यास विलाप, राम दर्शन, विनय। (७) अष्टम अ०। पृ० ७४—८२ तक—शुक को

ईश्वर का उपदेश (८) नवम से त्रयोदश अध्याय पृ० ८३—१२१ तक—इन्द्र भय, शुक तपस्या भंग उपाय, रंभा का उद्योग भंग, नारदादि का काम मोहित होने का वर्णन। व्यास से शुकदेव गुरु उपदेश लेना तक। (९) चतुर्दश अध्याय। पृ० १२२—१३० तक—शुक का पिता से नाम उपदेश इच्छा, पिता का जनकपुर भेजना, उनका जाना, जनक का अपमान करके बारंबार उनको निकलवा देना तथा उनका फिर आजाना और दीन वचन कथन करना, सेवकों को इस अपमान का कारण समझा कर जनक का एक कटोरे में शुक को जल देकर यह कथन करना कि यदि एक बुंद भी जल गिरे तो दर्शन न पावोगे। (१०) पृ० १३१—२०० तक—नाम माहात्म्य वर्णन। कृष्णार्जुन संवाद वर्णन, चन्द्रहास इत्यादि वर्णन, माता के पास शुक का आना, पिता का विवाह हेत उपदेश, उनका भक्ति वर मांग कर विदा होना।

No. 301 (*d*). Śrimad Bhāgavata Purāṇa by Nawaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—646. Size—14 × 5½ inches. Lines per page—11. Extent—8,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1831 or A. D. 1774. Place of deposit—Mahanta Guruprasāda, Hargāon, Post Office Parbatapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ सोरठा॥ सत गुरु सांचे राम तुम सुकति सत दरस प्रभु। हृदय करिय विश्राम जग जीवन जगतारनो॥ बरनैा सतगुरु रूप, दिन कर तम दुष दावनो। स्याम कमल जिमि रुप ताकर दाम सुहावनो, सोतहु ते जो सेत, ताहि माहि अति सेत छवि, धुलि पुरान कहि देत, अगम अगोचर गगन रह॥ बारिज बारिहि मांहि भासानाक पतंग कै। सतगुर गुर पदहि दै विशेष अमल उदै पंचक भवन॥५॥ बोस मैं कारह नाक तहं सतगुरु, सत मन तिलक। यह सत सुमिरन पाक, सो जग जोवन जक्त प्रभु॥ दोहा॥ जग जीवन जगमगत हैं गगन महल महं वास, तेसत गुरु जग विदित प्रभु। दास नवल कह वास॥ हेरि भुवन दस चारि तो रीझे सुर सिधि मुनि, कहत विचारि विचारि। जे गनपति गुन ग्यान घर॥८॥ भक्ति ज्ञान गुन दान शीलवंत सिन्धुर बदन। जै जै नव निधि आनि, करुणा सागर बुधि सदन॥९॥

End—प्रभु अस कहि निज वपु धल धाया। दरस हरत जग त्रिविधि कुतापा॥ छंद॥ धल थापि निज वपु निज बचन हरि हरषि बैकुंठहि गये। सुखदेव बरणत समुझि सब सुनि सुजन सब कारज भये। तरि गये परीक्षित राइ भाद

समेत, जिन श्रवनहिं सुना। कृति सुनहिं जगत प्रतीति कर जनु अमर मन अमृत सुना। तिहुं लोक घट घट बसत प्रभु परबोध दरसन सगुना। पति सहज पावन अघ नसावन करत हित को उन रमन ॥ दरसन अतिहित बोध करत जो नर मन लाइ। दास नवल परतीत कह, सकल दूरि दुष जाइ। सोरठा ॥ चरित समुद अगाह, दस नवल कछु पार नहिं, धन्य धन्य नरनाह जिन हित मुनि कछु प्रगट कलि ॥ इति श्री हरि चरित्रे दशम स्कंधे महापुराणे श्री भागवते परायण कांडे हरि वैकुंठ गमन वर्णनो नाम उन्नीसवां अध्याय समाप्तम् संवत् १८३१ ॥

Subject—(१) पृ० १-२३० तक-आदि कांड (जन्म कांड)। (१—३०)-स्तुति वर्णन प्रथम अध्या० द्वि० अ० तृतीय। श्रीपति गर्भ वासन। चतुर्थ अध्याय—पृ० ४० कंस वृथा प्रबोध। पंचम अध्याय पृ० ५२ तक गुणावंत व्याख्यान छठां पृ० ६०—गोरस कोड़ा। सातवां पृ० ७०—श्याम सत्य स्वरूप वर्णन। आठवां अध्याय-८० यमलार्जुन वृक्ष उद्धार। नवां अ०—९० बाल कीड़ा। दसवां अ० १०४। ग्यारहवां अ० ।११४। बारहवां अ०। १२४। तेरहवां अ० १४० ब्रह्मास्तुति। चौदहवां अ० १५० काली सोच विमोचन। पन्द्रहवां अ० १६४ गोपी विरह। सोलहवां अ० १६४-नन्दागमन, ग्वाल हर्ष। सत्रहवां अ० १८४ गंधर्व शोच विमोचन। अठारहवां अ० १९४, जमुना प्रवेश। उन्नीसवां अ०, २०२। बीसवां अ० २१४ व ६ मुनि प्रबोध। इक्कीसवां अ०, २२२ कंस विध्वंस। बाईसवां अ०, २३० भक्त चरित्र वर्णन। (२) मध्य कांड २३१ से ३१७ तक। प० अ० २४३—कृष्ण स्तुति गुरु दक्षिणा हेत। द्वि० अ० २५१ गोकुल तृ० अ० २६३—अक्रूर हस्तिनापुर गमन। च० अ० २७३—जरासिंधु समर। गमन। पं० अ० २८३—गोमत सिखर समर। षष्ट अ० २९१ रुक्मिणी श्रृंगार छवि वर्णन। सप्तम अ० २९९ रुक्मिणी गिरजा महल गमन। अष्टम अ० ३०७ रुक्मिणी विवाह नवम अ० ३१७ सतगुरु विधि संवाद।

(३) पारायण कांड—३१८—६४६ तक

प० अ० ३२८। द्वि० अ० ३३८ रति प्रबोध। ३५० तृ० अ० मनमथ आगमन। चतुर्थ अ० ३५८ जामवंत समर। पंचम अ० ३६८। षष्ट अ० ३८० जामवंत उद्धार। सप्तम अ० ३९० सतधन्वा समर। अष्टम अ० ३९८ यमुना कृष्ण विवाह। नवम अ० ४१०। दशम अ० ४२२ कृष्ण द्वारावती आगमन नर्कासुर निपातन। एकादश अ० ४३४ मदनट वज्र प्रसन्न करना। ४४८ द्वादश रुक्म बंधन त्रयो० अ० ४६४ बलि विनय। चतुर्दश अ० ४७८ बाणासुर बरदान। पंचदश अ० ४९२ अनरुद्ध समर। षष्टदश अ० ५०० नारद आगमन। सप्तदश अ० ५०८ बाणासुर समर। अष्टदश अ० ५१८ उषा अनिरुद्ध विवाह।

उन्नीसवाँ अ० ५३०—राजा नृग उद्धार । नंद यशोदा प्रबोध ··········। बीसवाँ अध्याय ५४० शांबु विवाह । इक्कीसवाँ अ० ५५० पांडव निमंत्रण, प्रभु आगमन । बाईसवाँ अध्याय ५६० शिशुपाल वध । तेईसवाँ अध्याय ५७४ पांडव राजसूय यज्ञ, नारद व्यास सतसंग वर्नन । चौबीसवाँ अ० ५८६ । पचीसवाँ अ० ६०४ द्रौपदी स्वयंबर छब्बीसवाँ अ० ६१८ सुदामा चरित्र । सत्ताईसवाँ अ०, ६२६ षट बालक उद्धार । अट्ठाईसवाँ अ० ६३६ दसबालक आगमन, विप्र प्रबोध । उन्तीसवाँ अ० ६४६ हरिवैकुंठ गमन ।

No. 302. Basanta Rājajyotisha by Paṇḍita Nemadhara. Substance—Country-made paper. Leaves -75. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—36. Extent—1.350 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1801 or A. D. 1744. Date of manuscript—Samvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Rais, Payāgapura, Post Office Payāgapura, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सुमिरौ आदि गणेश को पुनि प्रनवौ सिरनाइ । जाको कोर कटाक्ष से अद्भुत दुति ह्वै आइ ॥ दोहा ॥ एक रदन दारिद् हरन इन्दु विराजत सीस । चारि पदारथ देत हैं निति अमा वकसीस ॥ लम्बोदर असरण सरण दुषभंजन सुषसार । मदन कदन सुत गज वदन गणनायक सुभकार ॥ सोरठा ॥ मंगल रूप अपार सुषदायक घायक विघन । दाया दृष्टि निहार । करौ किपा मोतन अमित ॥ छंद ॥ एक रदन छवि छाजे इन्दु भाल पै विराजे माल पुहुप उर साजे सदा काटत कलेस हैं ॥ दीनन को रच्छपाल सोमित कंज कार सवाल दयावंत कपा आल गुन बुधि को धनेस है ॥ लंबोदर कला निधान सुष सागर ज्ञान दान गैारो जी को जीव प्रान नित गावत अहेश है ।

End—पूजा विधान स्वपन ॥ दोहा ॥ असुभ दरसै सुपन को भय प्रगटै वहुतासु ताको पूजा विधि कहौ करै अमंगल नास ॥ पूजा विधि अब कहत हौं जाहि कटैं सब पाप गायत्री के सहस दस प्रथम करावै जाप प्रथम करावै जाप सहस आहुति पुनि कोजै कै विप्रन को वोलि करै लक्ष मंत्र मृत्युंजै । घृत सुरभी को आन अक्षत चंदन पुनि पूजा ॥ छंद गीत ॥ पुनि गऊदान विधान ते यहा भोज इच्छा कोजिये तब दक्षिणा एक एक मोहर कै पुरट सास्ता दीजिये । जेहि शक्ति ना कछु होइ वृतमान दान बताइये । यह ग्रंथ न पारस बीच पंडित नेमधर इम गाइये । नेमधर पंडित विचार ग्रंथ बनाइ जानियो भाषा करि बुध नेम सुन पंडित

सुष मानिये। कहो सुमति अनुसार कवि कोविद मोपर करि किपा सुदास विचार जेहि भाषा ग्रादर लई। शुभ पोथी जगमह विदित सम्वत ताको जान ग्रष्टादस प्रतम तापर एक बषान। मधु मासे तिथि पुर्नमा भा पूरन इतिहास ससि दिन सुभ थ्यान सो परमेसुरी निवास। मंगल उपजे मोदप्रद सुष को करै प्रकास रघुपति नाम प्रताप ते दिन प्रति होत हुलास ॥ लिषा संवत १९०७ वैसाष मासे शुक्र पक्षे ग्रमावस्यां शुक्र वासरे मुन्नू शुकुल रामानुज दास के दास।

Subject—पृ० १—७१ तक—विचार ग्रधिक मास, विचार दर्शन षंजन, विचार नातक, मनुष्य धेनु ग्रादि पशु, विचार छींक, विचार छिपकली, गिर-गिट, विचार बानी काक, विचार हाक ग्रोर रोदन सियार, विचार मातम पुरसी, विचार दर्शन नीलकंठ, विचार दर्शन चन्द्रमा चोथि, विचार कूप हम्माम के बनाने का। विचार ग्रमापी पीपर ग्रादि वृक्ष; विचार नहर व हैाज व तड़ाग बनाने का। विचार पर्यंक विधान विचार शयन करण, विचार उसीसे को; विचार स्वास; विचार शयन करण; वर्षा ऋतु ग्रोर बंधन पिरोजा, विचार श्रवण को विचार सूर्यग्रहण ग्रोर चन्द्रग्रहण, विचार तुलादान, छायादान, भूषन ग्रादि का धारण, स्त्रियों का क्षोर सर्प दर्शन, नक्षत्र तारादि, ग्रंग फरकन, ग्रह दानादि, शुक्र ग्रस्त; दीप बुझावन, पुरुष स्त्री कुम्हड़ा काटन, ग्रायु मनुष्य; वृक्ष रोपन पुरुष स्त्री, गुन दोष तिथि गुन दोष नक्षत्र, भद्रा गुन दोष, चन्द्रमा घातिक, चन्द्रमा यात्रा समय, चन्द्रमा बांट तिथि व नक्षत्र योग, स्वासा समय, वास रवि ग्रादि नक्षत्र, दिन रोग्री स्नान; यात्रा विचार, विचार नक्षत्र, तिथि; वार, तारा बाहन, रवि ग्रादि; परिघंड चक्र सूर्य, चन्द्र उत्तरायन, दक्षिणायन, शुक्रास्त, यात्रा चारो बरन, तारीष मनहूस, विचार योग यात्रा, पूजा विधान यात्रा, मास दिशा सूल गुन वाहन समय यात्रा ग्रागम वस्तु विचार नकल मकान, विचार पत्रा, विचार सगुन, विचार जल वृष्टि यात्रा समय, विचार स्वर यात्रा समय, विचार गृह प्रवेश, विचार द्वादश रास विचार नैा रोज विचार गुर्रा मोहर्रम, विचार सूर्य चन्द्रमा मंडल, विचार स्वप्न ग्रादि के विचार का वर्णन है। ग्रंत में तिथि ग्रादि रचयिता लेषक के लिखे हैं।

No. 303. Śakuntalā Nāṭaka by Newāja of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—$8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—896 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1963 or A. D. 1906. Place of deposit—Bābū Padmabaksha, Siṁha, Tālukedāra, Lavedpur (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शकुन्तला नाटक लिख्यते ॥ कवित्त ॥ राखत न सूरज ससी की परवाहि नित..........फुह्लित रहत येक वानी के। भानहू किये ते देत ज्ञान मकरंद वास..........कहैया जिनकी कहानी के ॥ कैसे और पानी के सरोज सरि करै सोचे..........जै शिव सीस सुरसरि पानी के। सिद्धि को सुगंध पाइ मेरे मन मधुकर..........करन पद पंकज भवानी के ॥ १ ॥ दोहा—नवल फिदाई खान को नंद मुसलेखान। फकब सेर कों है फतै भयो व आजम खान ॥ २ ॥ बखत विलंद महाबलो आजम खान अमीर। ज्ञाता ज्ञाता धरमों माचौ सुन्दर धीर ॥ ३ ॥ देखि खुम साहेब सकल जस जगते उठि आइ। हिम्मत आजम खान के हिय में रहो समाइ ॥ ४ ॥

End—कवित्त—ऐसे नेवाज कवीश्वर पाइ सकुन्तला नाटक की करी भासा। सो बिगरी बहु कालकों पाइ जहां तहां याके भये पद नासा ॥ सोधि के सुद्ध करि येहि को दुरगा प्रसाद सो बुद्धि बिलासा। याहि जो लै पढ़ि है सुनि है तिनके घर होइ है आनंद वासा ॥ १ ॥ दोहा। याके पढ़िवे ते कवौं होत न सज्जन वियोग। बिछुरेहू बहु काल को पावे बेगि संजोग ॥ २ ॥

इति श्री सुधा तरंगि न्यास सकुन्तला नाटक कथा प्रसंगे चतुर्थ स्तरंग ॥ ४ ॥ दोहा ॥ आदो जैपुर देस के अब काशी में धाम। है दुर्गा प्रसाद पुनि यहि साधक कौ नाम ॥ समाप्त ॥ शुभम् ॥ माघ शुक्ल १ प्रारंभे फागुन कृष्ण १३ रवि वासरे संपूर्णम् ॥ संवत १९६३ शके १८२८ सन् १३१४ फसली ॥ ६ रविदत्त सिंह ॥

Subject—भवानी स्तुति, आजमखां वर्णन, शकुन्तला बनाने का विधान वर्णन—पृ० १—२ तक। विश्वामित्र का तप करना, मेनका अप्सरा का आना, शकुन्तला की उत्पति, कण्व का पालन करना, अनुसूया, प्रियम्वदा और शकुन्तला की क्रीड़ा, राजा दुष्यन्त का शिकार खेलने के लिए आना और मिलन वर्णन। पृ० २—१५ तक। तीनो सखियों का हास्य रस वर्णन, पुनः दुष्यन्त व शकुन्तला मिलन वर्णन। पृ० १६—२५ तक। शकुन्तला को दुर्वासा का श्राप, कण्व का शकुन्तला को उपदेश और दुष्यन्त के यहां भेजना, अंगुठी का खोजना, दुष्यन्त का शकुन्तला को ग्रहण करने से इन्कार करना। पृ २६—४२ तक। दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आना और विरह व्यथित होना। इन्द्र की सहायता के लिये जाना, लैाटते समय पुत्र भरत और शकुन्तला से भेंट और साथ लाना। संशोधनकर्त्ता का निवेदन वर्णन। पृ० ४३—५६ तक इति।

No. 304(a). Śalihotra by Nidhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—12½ × 5½ inches.

Lines per page—12. Extent—480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1800 or A. D. 1743. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Seṅgara, Kāntha, Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विघन हरन सब सुख करन लंबोदर बर दानि। करहु कृपा दीजे सुमति कहौं जोरि युग पानि ॥ १ ॥ संवत दस वसु सै जहां उत्तर जानौ मान। सालहोत्र भाषा रचौ नूतन सुकवि निधान ॥ शुक्लपक्ष तिथि पंचमी सहित सुभग बुधवार। माधव मास पुनीत अति भयो ग्रंथ अवतार ॥ ३ ॥ अथ राज्य वर्णन ॥ दोहा। सैयद है समरत्थ महि मंडन बुद्धि निधान। अकबर अली सभा अली विद्या विदित विधान ॥ ४ ॥ एक दिना सब कविन सों दीन्हों यह फुरमाय। सालिहोत्र जो संस्कृत भाषा देहु सुनाय ॥ षटपदी—सरद जहां जग जानि सुजस भुव बीच समथ्यौ। अली मुर्तिजा मान दान करि थल रथ थप्यौ। फिरि सैयद महमूद खोंचि तरवार करी करी। मुकति अरनि दै पत्र को नेस नवाब धरि। पुर्हमसु सैद साबा सघन बाउल्ला षां सुमन हुव। देत सकल मन कामना अलि अरवर फल प्रगट हुव ॥

End—तें छप्पय—तेज वात अति प्रबल होइ शुभ सील सुलक्षन। अति-चंचल गतिचारु साह सम सुमति विचक्षन ॥ कहैं चढै रहिजाइ होक दिन चारि अंग। आनन तिलक विसाल भूषन सोभा संग ॥ अति सोतल मान सुभ अंग सरस ऐसे नृप बाजो चढ़त। भैजीति सकल अल दलन कैं तिनको जस दिन दिन बढ़त ॥ २१ ॥ अधर एक श्रवन एक तीन श्रवन तासु के। हीन दंत अधिक दंत तीन अंड तासु के ॥ एक अंड युग्म जोभि दंड पोठि पेषिये। ताहि भूल के न लेहु बाजि जो विशेषिये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यौ सकल सिर मैार। ताते जाने बाजिके गुन औगुन सब ठैार ॥ २३ ॥ मैं प्रबंध कीन्हौं कछु पाण्डव मत अनुसार। मोमति अति लघु जानि कै लोजै सुकवि विचार ॥ २५ ॥ इति श्री सुकवि निधान कृतौ भाषा सालिहोत्र चतुर्दशोध्याय ॥ १४ संवत् १९०० ॥

Subject—प्रार्थना, राजवर्णन, अश्व को श्रेष्टता वर्णन। पृ० १—२ तक। अश्व के हींसने आदि के लक्षन तथा शुभ चिह्न—पृ० २—४। भैांरी का चिह्न वर्णन। पृ० ५—६। अश्व स्वरूप वर्णन, रसादि वर्णन, असाध्य रोग लक्षण, धातु परीक्षा। पृ० ७—१०। रुधिर का जांच वर्णन और आहारादि वर्णन पृ० ११—१३। नास्तु विधि और पिंडाधिकार वर्णन और दवाई। पृ० १४—१७ घृत विधान, क्वाथ विधान, उदर कृमि, गैाड़ी बाठनी, आदि की दवा पृ० १८—२१।

No. 304(*b*). **Śalihotra** by **Nidhāna Dikshita**. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—12. Extent—583 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Siṁha, Raisa, Payagpur, Post Office Payāgpur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ सालिहोत्र लिख्यते। दोहा। पांडव पति कुल कमल रवि धरम तात धरमश। सत्य सिंधु धीरज धुरी जैत जुधिष्टर रुश ॥ १ ॥ भीमसेन अर्जुन अनुज रुह सहदेव सुजान नकुल सकुल भूषन सकल तुरंग तंत्र गुरज्ञान ॥ २ ॥ ग्रंथ देषि सब मुनिन के कीन्हो नकुल विचार। सालिहोत्र संछेप से। रच्यो चारु लहिसार ॥ ३ ॥ अथ नराच छंद ॥ सपच्छ चारि हय सबै तुरंग चारु अंग से। अकास पंथ में फिरै से। किन्नरादि संग से। ॥ सत्रो सजोग वाहने विचारि के तहो कहैा मुनीस सालिहोत्र से। सबै भलो मतै। लहैा ॥ ४ ॥ दोहा ॥ मुनि तोको दुरलभ नहीं स्वरग उरग नरलोक। रथ वाहन कीन्हे तुरो। चले वेगि दिन लेक ॥ नेक न डोलै चलत ह्वै दसन टोद की साल जाहि देषि छोभित सदा परावत दिकपाल ॥ ६ ॥ लहि सासन सुरराज के। वाजी किय विपक्ष। मुनि तिन्ह के। वरनन कियो दोष अदोष अलक्ष ॥ ७ ॥

End—छंद होरा ॥ अधर एक श्रवन एक तीनि श्रवन जासुके हीन दंत अधिक दंत तीनि अंड तासुके। एक अंड छुम्म ज्ञोभ दंड पाठि पेषिये। ताहि भूलि के न लेहु वाजि जो विसेषिये। दोहा ॥ सालिहोत्र जो नकुल वर रच्यौ सकल सिर मौर। ताते जाने वाजिके गुन औगुन सब ठौर ॥ वाका मनो विचारि के कीन्हो सबै प्रमान। सालिहोत्र पूरन रच्यो दीक्षित सुकवि निधान ॥ मैं प्रबंध कीन्हो कछु पंडव मत अनुसारि। से। मति अति लघु जानवी लीजो सुकवि विचारि ॥ इति श्री नकुल मत भाषा सालिहोत्र नाम चतुर्थ दसोध्यायः इति श्री सालिहोत्र सम्पूर्णम् शुभ मस्तु अश्विनि मासे कृष्णपक्षे एकादस्यां तिथा शुक्रवासरे संवत १९१६ शाके १७८१ सन १२६७ श्रीराम श्रीराम ॥

No. 305. **Bhāgvata Daśama skandha** by **Nihāladāsa** of Mirzāpur. Substance—Country-made paper. Leaves—241. Size—13 × 9½ inches. Lines per page—15. Extent—9,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Gurumukhi. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Mahanta Rādhākṛishṇa, Baḍi Saṅgat, Bahrāich.

Beginning—रामजी ॥ रामजी सहाइ ॥ ॐ सति गुरु प्रसाद ॥ रामजी सहाइ ॥ रामजी ॥ अथ श्री भागवत दशमस्कंध लिख्यते ॥ दोहरा ॥ दो मत घट मे परसपर बोलत एक समान । एक गावत गुन श्याम के एक वरजे सुरज्ञान ॥ सुनहु सखी मत अस कहै चुपकरि जाहुन बोल । निपट दीन तू दूबरी वह प्रभु बड़े अतोल ॥ कौन कोट मतहीन तूं छिन छिन भूलनहार सेस न पावैं पार को जाके बदन हजार ॥ चारवेद ब्रह्मा रटे थक्यो न पायो अन्त । और विवेकी थक परे अति अपार भगवंत ॥ सागर ते चीटी कहै केहि विधि उतरूं पार । अति असंख लहरें उठ भूले प्रबल बयारि ॥ तूं चीटी हरि जस अमिट किनूं न पायो पार । जप निस दिन हरनाम को यहि विधि हिरदै धार ॥ दूजो मत बोलो तब सुनो सखी एक बात । रहौ न हरिजस कहूंगी हृदै न प्रेम समात ॥

End—दान देउ जग साजन हार । तुम सो तन बड़े पियार । जन की संगति ते छुटि काय । कृपा करो हे केशोराय । निपट चरन की देहु निवास । नित पग पूजै तुम्हरो दास ॥ पूजै सदा बनाय बनाय । गावै पड़ें न नेक अघाय ॥ दृष्टि अगोचर होउ न श्याम । पूरन करो हमारो काम । अन्तरजामी जो कर करतार । मानहुं सेवक करो पुकार । ऐसी कृपा कृपानिधि करो । सबै घात तन मन ते हरो ॥ अंतर बाहिर तुमहीं बसौ । अंत समय तुम हमसों रसौ ॥ जै जै जै करुणा भंडार । जन निहाल पग पर बलिहार ॥ १९१ ॥ इति श्री भागवते दशमस्कंधे महापुराणे नवे अध्याय सम्पूर्णम् समाप्तम सम्वत १९०० दसम लिखी साहब दास ने ॥

Subject—भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद ।

No. 306. Śāntarasa Vedānta by Nipaṭa Nirañjana. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14 × 7 inches. Lines per page—11. Extent—350 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakūra Naunihāla Siṁha, Kānthā, Unāo.

Beginning—अथ निपट निरंजन को ग्रंथ लिख्यते शान्तरस वेदान्त ॥ श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वतैनमः सवैया ॥ जे उपजे ते विचारे परज्ञान है परज्ञा निरधार समानो । पै प्रज्ञान भयो पज्ञानो महा प्रज्ञान सु प्रज्ञान जानो ॥ ज्ञान निपट्ट निरंजन ज्ञानो न ज्ञान घने परज्ञान को बानो ॥ सो सरवज्ञ न सरवज्ञ सनो विज्ञान मोल्है तो विल्है विज्ञानो ॥ १ ॥ मनहरन छंद ॥ मनन नमन मनोरथ को न उतपन मन गत नाहीं उन मन मनसा दुरी ॥ वाचा को न लेस वाच्यारथ

को न परवेस वचन को बोध पै न वाचकता है पुरो। निपट निरंजन सुमौन है मौनो कोऊ महामुनि नाहिन मुनि सरता का पुरो ॥

बुधि को ननेम सुधि लेवै को विधाता जैसे चातुरी कौवा वानो थंमन अफीम सो। जोग काजें रुद्र यो वियोग काजें रामचन्द्र भोग को कन्हैया सब रोगन को नीम सो ॥ निपट निरंजन ए विजया विज्ञान दाने बलिमान लेवे को पतोम सो ध्यान लागिवे को ध्रुव जानिवे को गोरख ज्यों सोइवे को कुंभकरन भोजन को भीम सो २४ ॥ तुमने पढ़ोछै देव तो ताखानो नहिं बूड़िये तोशू तुम्हे तरसो। अपराध अवश्य धरै अमने अपराध विना अभया फरसो ॥ मलिनाइदि थोतो निपट निरंजन ठाकुरताई यांतो ठरशों। प्रथमैं कि—

Subject—ज्ञान की विशेषता, संसार की असारता, आत्मनिर्भरता वर्णन—पृ० १—४ तक। मनुष्य जन्म की महत्ता, ईश्वर की निरंजनता, मन की चंचलता, देह धर्म, भोग की निस्सारता वर्णन पृ० ५—१४। आत्मा और परमात्मा की एकता ईश्वर की सर्व व्यापकता, संसार की माया। संस्कृत ग्रंथों की कठिनता, ज्ञान की महत्ता वर्णन—१४-२४। संसार से छूटने का उपाय और विजय की प्रशंसा, पृ० २५—२७ तक।

No. 307(*a*). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—66. Size—9 × 5 inches. Lines per page—40. Extent—1,980 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Rājā Ramanāthabaksha Siṁha Pustakālaya, Parseni Rāja, Post Office Parseni, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ जगतविनोद लिख्यते दोहा ॥ सिद्धि सदन सुन्दर वदन नंद नदन मुद मूल ॥ रसिक सिरोमणि सांवरे सदा रहौ अनुकूल ॥ जय जय सक्ति सिला मई जय जय गढ़ आमेर। जय जय पुर सुर पुर सहस जो जाहिर चहुंफेर ॥ जय जग जाहिर जगतपति जगत सिंह नरनाह। श्री प्रताप नंदनवलो। रविवंसो कछवाह ॥ जगत सिंह नरनाह को समुझि सबन को ईस। कवि पदमाकर देत है कवित बनाइ असोस ॥ कवित्त ॥ छत्रिन के छत्र धारिन के छत्रपति छाजत छटान छिति छेम के छवैया हो ॥ कहै पदमाकर प्रभा के प्रभाकर दया के दरियाव हिन्दू हद के रखैया हो ॥ जागत जगत सिंह साहिवो सवाई सो श्री प्रताप नृप नंद कुलचंद रघुरैया हो ॥ आछे रहौ राज राज राजन के महाराज कच्छ कुल कलस हमारे तो कन्हैया हो ॥

End—अथ सांत रस के दोहा ॥ सुरस सांत निरवेद है जाको थाई भाव । सत संगत गुरु तपोवन मृतक समान विभाव ॥ प्रथम रोमांचादिक तहां भाषत कवि अनुभाव । धृति मति इत्यादिक कहे सुभ संचारी भाव ॥ सुद्ध सुकुल रंग देवता नारायन है जान । ताको कहत उदाहरन सुनहु सुमति दै कान ॥ दंडक सवैया ॥ बैठो सदा सत संगहि में विष मानि विषै रस कोनो सदाहीं त्यौं पदुमाकर झूठ जितो जग जानि सुज्ञानहि के अवगाहीं । नाक की नोक में दीठि दिये नित चाहै न चोज कहूं चित चाहीं संतत संत सिरोमनि है धन है धन वे जन वे परवाहो ॥ दोहा ॥ नभ वितान रवि ससि दिया फल भष सलिल प्रवाह ॥ अवनि सेज पंखा पवन अब न कछु परवाह ॥ अवहित तै विरकत रहत कछु न दोस के त्रास । विहित करत मुनि हित समुझि सिमु हित जे हरिदास ॥ जगत सिंह नृप हुकुम ते पदुमाकर लहि मोद रसिकन के वस करन को कीन्हों जगत विनोद ॥ इति श्री कूर्म वंसावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजा राजइन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंह आज्ञा मथुरा स्थान मोहनलाल भट्टात्मज कवि पदमाकर विरचिते जगत विनोद नामक काव्य सम्पूर्णम् सुभमस्तु लेपक गंगासिंह वैस परगने वैसवारे के थोड़िया खेड़ा ग्राम संवत १९२१ तिथौ पठयाम रविवासरे फागुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

Subject—रस निरूपण तथा नायक नायिका भेद उदाहरण सहित ।

No. 307(*b*). Jagat Vinoda by Padamākāra. Substance—Country-made paper. Leaves—78. Size—$7\frac{1}{2} \times 6$ inches. Lines per page—28. Extent—1,065 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Bābū Nārāyaṇadayāla, Rāe Barelī.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*c*). Jagat Vinōda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size -9×6 inches. Lines per page—24. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Bahrāich.

Note—Details as in no. 307(*a*).

No. 307(*d*). Jagat Vinoda by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—$10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches.

Lines per page—19. Extent—1,326 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāma Nātha Lāla (Sumana), Kāśī.

Note—Details as in no. 307(a).

No. 307(c). Padamābharaṇa by Padamākara. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—10×6 inches. Lines per page 44. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Ṭhākura Rāma Siṁha, Village Rāma Kola, Post Office Sītāpur, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पद्माभरण लिष्यते ॥ राधा राधावर सुमिरि देषि कवितन को पंथ । कवि पदमाकर करत हैं पद्माभरण सुग्रंथ ॥ शब्दहु ते कहुं अर्थते कहुं दुहुं ते उर आनि । अभिप्राइ जिहि भांति जहं अलंकार सा मानि ॥ अलंकार इक थलहि मैं समुझि परे ज्ञ अनेक । अभिप्राय कवि को जहां वहाँ मुष्यगन एक ॥ जा विधि एकै महल में वहु मंदिर इक मान जो नृप के मन मैं रुचे गनियत वहै प्रधान ॥ वरनन कोजतु जाहि को सु उपमेय चितु लाइ । जाको समता दोजिए सो उपमान गनाइ ॥ सम अर्थहि जे पद कहत ते सब वाचक देषि । इक सैाचर्य अवर्ग मैं धर्म धर्म सो लेषि ॥ अथ उपमालंकार ॥ उपमेयहु उपमान को इक सम धरमु ज्ञु होइ । उपमा वाचक पद मिलै उपमा कहिये सोइ ॥ उपमा अरुवाचक धरम उपमेयहु जो कोइ । ये चारिहु पद सिद्धि जहं पूरन उपमा सोइ ॥ सुभग सुधाधर तुल्य मुष मधुर सुधा से वयन । कुच कठोर श्रीफल सदस अरुण कमल से नयन ॥

End—अर्थालंकार को संसृष्ट ॥ वाके नामहि को सुनत होत सैात मुष मंद ॥ चक चकोर कोजै सुषो लषि राधा मुष चंद ॥ त्रिविधि संकर ॥ अलि ये उडुगन अगिन कन पंक धूम अवधार मानो आवत दहन ससि ले निज संग दवार ॥ विहारी ॥ लष वढ़ई वल करि थके करे न कुवत कुठार । आल वाल उर झालरी परी प्रेम तरु डार ॥ संदेहुत संकर भाषा भरखे ॥ यों भूलत कोऊ कछू राधो हिये समान । भजो मधुप तजि पदु मनहि जान होत गत भान ॥ विहारी यथा ॥ कहो हमारो चित धरौ तजो लाल सब वात नैनन को सुपदेत यह इंदु विंव सरसात सम प्रधान संकर भाषाभरखे ॥ विमल प्रभा निज ससि तजी मनैा वाथ्नो पाय यह कारो निसि पंक मिस राधो पंक लगाई ॥ पुनः

यथा बिहारी ॥ उर लीन्हे अति चटपटो सुनि मुरली धुनि धाइ। हैं हुलसी निकसी सुता गयो हुलसी लाइ ॥ इति सम्पृष्टि संकर। राधा माधव कृपा लहि लखि सुकविन के ग्रंथ कवि पद्माकर ने कियो पद्माभरण सुग्रंथ ॥ इति श्री कवि पद्माकर विरचितायां पद्माभरण संपूर्णम् माद्र मासे शुक्ल पक्षे तिथो षष्टम्यांम सोमवासरे श्री संवत १९३५ श्री ठाकुर हेमंचल सिंह लिखी दरबारी लाल कायस्थ चुनहट वाले ॥

Subject—काव्य अलंकार।

No. 308. Upākhyāna Vīveka by Pahalawānadāsa of Bhīkhīpur. Substance—New paper. Leaves—25. Size— × inches. Lines per page—12. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Munshī Bindeshwarī Prasāda, clerk, Registration Department, Bārābankī.

Beginning—का तजि भजन श्रोर सोइ जाना। द्विज मोंगै कूकुर सन्माना ॥ भीति पूजि यह दुनियां मरी। छूंछ कुआ पत कैारन मरी ॥ राम छांड़ि कहु केहि की सुधरी। चले कितक दिन जनकी चुपरी ॥ जो आवा सो वोअई चला। भजन विना सुरति कहत न भला ॥ नरतन पाइ ज्ञान नहि पाई। पाथर पड़ा जो मूड़ मुड़ाई ॥ पांच पचीस रात दिन खटका। सरग ते गिरा खजूरन अटका। चेत चेतका गाफ़िल भरे। मैं मैं कहत देश सब मरे ॥ यस जन जानि झूठ कछु अहा। सत्य बचन सतगुरु कर कहा ॥ जन्म पदारथ बादे खोई। बहता पानी हाथ न धोई ॥

दोहा—सत संगत में बैठ जा। होइ जैहै मन सोझ।
सात पांच की लाकड़ी। एक जनें का बोझ ॥

End—आदि अंत रामहिं ते खेर। बसि दरियाव मगर ते बेर ॥

दोहा—अबहू झूठा लीन्हो कर। आगे अब है गाढ़ ॥
बुढ़ि है कैान परोजन। चोर मुसेले ठाढ़ ॥

सत गुरु सिंदरा कर बांधा जो अब सत मान। पहलवान दास जाने है सत गुरु परम सुजान ॥ नाम अनन्त अनन्त गुन, कीन्हों सोमति अनुहार। श्रोता बक्ता सजन जन, चोरों लूटन हार ॥ गुरु पसाद गुरु कीरत गुन, गुरु सुमिरन गुरु ध्यान। पहलवान दास गुरु बन्दना करै। सदा रहे कल्यान ॥

× × × × × ×

Subject—(१) पृ० १—२५ तक—नाम माहात्म्य, भजन करने का आदेश, भजन न करने वालों को निन्दा, भजन न करने से मनुष्य को हानि। भजन संबंधी अन्य उपदेश।

No. 309. Śripāla-charitra by Paramalla of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—350. Size—11 × 3½ inches. Lines per page—11. Extent—3,146 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1651 or A. D. 1594. Date of manuscript—Samvat 1926 or A. D. 1869. Place of deposit—Śri Jaina Mandira (Baḍā), Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्रों नमः सिद्धेभ्यो ॥ श्रों श्री जिनायनमः ॥ श्रों श्री गणाधिपतेनमः ॥ अथ श्रीपाल चरित्र भाषा लिख्यते ॥ चैापाई ॥ प्रथमहि लोजे श्रोंमकार ॥ जो भव दुःख विनासन हार ॥ सिद्धि चक विधि केवल ऋद्धि ॥ गुन अनंत जाके फल सिद्धि ॥ १ ॥ प्रणवें परम सिद्धि गुरु सोइ ॥ भव्य संग जो मंगल होइ ॥ सिद्धि पुरी जाको सुभ थान ॥ सिद्धि पुरी आनन्द निधान ॥ २ ॥ प्रगट ज्योति त्रिभुवन में आहि ॥ अलप देव कोई लखै न ताहि ॥ अंजन रहित निरंजन मान। हीन बुद्धि को सकै बखानि ॥ ३ ॥ जय जिनंद आदि सुरदेव। सुन नर कत पद पंकज सेव ॥ जे अजिते सुरगुनहि निधान ॥ मान रहित मिथ्या तम भान ॥४॥ जय जिन संभव हरन विकार ॥ सुमिरत अभय दान दातार ॥ जय अभिनंदन आदन वोर ॥ गुण गरिष्ट भव भंजन भोर ॥ ५ ॥

End—श्लोक—उग्रं गोप गिरं च दुर्गम गढ़े रक्षा वरेर्भूपितं ॥ जं धीरं कृत मध्यरं मद गलं पाषान ऐरावतं ॥ तन्मद्धे श्रीमान सिंघपि पतं भूलोक संवछितं ॥ तं द्राज्यं सुरनाथ तुल्य गदितं तत्केन सं वसर्यते ॥ ३३ ॥ विद्वन्मंडल पूजितो च विसदो नामेन चन्द्र नयं। तत्पुत्रो गुरु राम दास विपलो भोकापि भोग्यं सदा ॥ तत्सुनो कुल दीपकस्तु प्रगटे नाम्नास कर्त्ता भिया ॥ तत्पुत्रो परि मल्ल धर्म सदनो ग्रंथं इदं क्रीयते ॥ ३४ ॥ चैापाई ॥ गोवर गुरु गिरि उत्तम थान ॥ सूर वीरता राजा मान। तासुत है चंदन चैाधरो ॥ कीरति सब जग में विस्तारो ॥ ३५ ॥ जाति वरैया गुन गंभीर ॥ अति प्रताप कुल रंजन धोर ॥ ता सुत राम दास परवान ता सुत कुल मंडल गंभोर ॥ बसै आगरे परमल धोर ॥ ताको बुद्धि न उन पान ॥ तिन कीनो चैापाई बखान ॥ ३७ ॥ होइ अशुद्ध जहां पद होन ॥ ताहि संमारो कवि मति लोन ॥ बारंबार जो करजोरी ॥ बुधजन मोहि देहु मति खोरी ॥ ३८ ॥

इति श्रीपाल चरित्र समाप्तम् श्री संवत् १९२५ सावन शुक्ल १४ वार रवि दिने लिखितं ॥ लाला जी के पुत्र हीरालाल के प्रति से उतारी बनपतिराइ श्रावक गोपालचंद के पुत्र पैंतपुर के अपने पठन के हेत संवत् विक्रमादित्ये १९२६ बैसाख मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ॥

Subject—पृ० १—६ तक—पंच परमेष्टी की स्तुति (अरहंत सिद्ध, आचार्य्य, उपाध्याय और सर्व साधु की स्तुति) (२) पृ० ६—२६ तक—ग्रंथारंभ, सरस्वती बन्दना, उसके गुणानुवाद के साथ। अति सूक्ष्म (ग्रंथ विवर्णित विषय संबंधी) सूची, ग्रंथ निर्माणकाल:—संवत् सोलह से उनचास मास असाढ़ो प्रासो मास। वर्षा ऋितु को कही वड़ाइ। दिवस अढ़ाई पहुंचो आइ॥ पक्ष उजारों आठैं जानि। शुक्रवार आगे परवानि॥ कवि परमल्ल शुद्ध कर चित्त। आरंभ्यो श्रीपाल चरित्त॥ राजा का वंश वर्णन:—

बबर वादसाह है भयो॥ तासुत साह हिमायुं भयो॥ तासुत अकबर शाह प्रवीन॥ सो तपु तप्यो मनहुं सो भीन॥ × × × ×
ताके राज कथा यह करी॥ कवि परमल्ल कथा विस्तरी॥ भरत क्षेत्र का वर्णन, राजा अरिमर्दन तथा रानी कुंदप्रभा का वर्णन। श्रीपाल के जन्म का वर्णन। रानी को स्वप्न दिखलाई पड़ना, राजा का फल स्वरूप यशस्वी पुत्र होने का कथन, गर्भ की दशा का वर्णन। बालकोत्पत्ति आनन्द प्रकाश ब्राह्मणादि वेद पठन पाठन वर्णन, दान वर्णन। आठ वर्ष की अवस्था में उसे गुरु के पास भेजे जाने का वर्णन। अनेक विद्या पढ़ जाने का कथन। जल में तैरना सीखना। इस बालक का नाम निमित्ती द्वारा श्रीपाल रखा गया, उसी को राजतिलक प्राप्त होना। राजा का देहान्त। पुत्र का माता को समझाना, श्रीपाल का अपने पराक्रम से चक्रवर्ती होना।

(३) पृ० २७—३७ तक—पूर्व संस्कार के कारण राजा को कुष्ट होना, उसके सहवासियों को भी यही दुर्दशा होना, दुर्गंध का सब ओर फैलना, नगर वासियों का दुःख, श्रीपाल का बीरदमन को राज्य देकर उद्यान को चला जाना, सात सौ साथियों का जो कुष्टी थे, साथ जाना—प्रथम सन्धि समाप्त हुई।

(४) पृ० ३८—५९ तक—मालव देशान्तर्गत उज्जैन नगरी के राजा पहुपाल को पुत्री मैना सुन्दरी का वर्णन—राजा की दो पुत्रियों का वर्णन, छोटी मैना सुन्दरी का गुणज्ञ होना, बड़ी सुर सुन्दरी का शिवगुरु (कुगुरु) के साथ विद्याध्ययन को जाना, छोटी का जैन चैत्यालय जाना, जैन मुनि से उनका अठारहों विद्या पढ़ जाना, कैाशाम्बीपुर के राजा के साथ उसकी बड़ी बेटी का

विवाह होना, छोटो बेटो से राजा का विवाह संबंध में वार्तालाप, मैना सुन्दरो का लज्जित होना, पिता के साथ कर्म के संबंध में विवाद होना, राजा का क्रोधित होना, पुत्री को निकाल देना, पुरजन—जिन्होने उसे देखा—के मुख से उसका शृंगार वर्णन, कन्या का अपनी माता के पास पहुंचना, जैन धर्मानुसार सम्पूर्ण नित्य कृत्य करना। द्वितोय संधि। समाप्त

(५) पृ० ६०—९१ तक—राजा का शिकार को जंगल में जाना, कुष्टी श्रीपाल से उसको भेंट, उसको मित्र मान मिलना, मंत्रियों को घृणा, उससे राजा का पूछना कि मांगो क्या मांगते हो? उसका पुत्री मांगना, राजा का प्रथम क्रोधित होना परन्तु फिर रजामन्द हो जाना, मंत्रियों का विरोध, राजा का कर्म परीक्षा करना और लड़की से पुनः पूछना, उसका कर्म पर दृढ़ विश्वास दिखाना, राजा का उसी कुष्टी के साथ विवाह करना, विधिवत विवाह होना, लोगों का दिल्लगी करना; राजा का हठ पर मनही मन लज्जित होना, धन धान्य देकर विदा करना, श्रीपाल का पत्नी से पृथक रहने का कथन, उसका निषेध और पति के सौंदर्य का वर्णन करना, जन्म पर्यन्त सेवा करने का वचन देना, कर्म पर दोषारोपण और उसकी प्रबलता का कथन, दोनो का दिव्य वस्त्र धारण कर जिनराज को पूजा करके पति के कुष्ट दूर होने को प्रार्थना, अरहंत को पूजा विधिवत करने पर उसका कुष्ट दूर होना, भूप का मकरध्वज के समान रूप हो जाना—तृतीय संधि समाप्त हुई।

(६) पृ० ९२—१२६ तक—श्रीपाल को माता का विकल चित्त होकर जिनेन्द्र से पुत्र संबंधी—विनीत भाव से उन्हें पूज कर प्रश्न करना, जिनेन्द्र का हाल कथन करना, माता का जाकर अपने पुत्र के महल को देख कर किसी से पूछना उससे संपूर्ण समाचार श्रवण कर वहां पहुंचना, पुत्र और माता के तथा सास और बहू के मिलन का अनुपम कथन; पुत्री से उसके माता पिता के मिलने का वर्णन, उससे पूर्व भली भांति निश्चित करके उनको और भी सेवा करना, धन धान्य देना, जिस प्रकार वह अच्छा हुआ उसका सम्पूर्ण समाचार जानना, एक दिन श्रीपाल का वहां से कहीं जाने का विचार करना, उसकी स्त्री की आपत्ति; माता का प्रलाप; अंत में दोनो का संतोष, उसका समय निर्दिष्ट कर के उसी समय आ जाने का वचन, मार्ग के संबंध में सजग रहने का माता द्वारा उपदेश; श्रीपाल का गमन, विद्याधर से उसका मिलाप; विद्याधर से मंत्र न सिद्ध होता था, उसका उपाय श्रीपाल द्वारा बताया जाना, इस उपकार के प्रत्युपकार स्वरूप विद्याधर का श्रीपाल को जलतारिणी और शत्रु निवारिणी दो विद्यायें देना। चतुर्थ संधि समाप्त।

(७) पृ० १२७—१५६ तक—श्रीपाल का चलकर एक निर्जन स्थान में पहुंचना। कौशाम्बी के धवल सेठ का जहाज लाद कर चलना और एक स्थान पर अटक जाना, सेठ का शहर में आकर विद्वान से उसका कारण पूछना, उसका कथन कि एक बलि लेगा तब चलेगा, राजा से सेठ का बलि मांगना, राजा द्वारा बलि की खोज को सिपाहियों का जाना, श्रीपाल का पकड़ा जाना, सेठ तथा श्रीपाल का वार्तालाप, श्रीपाल के छूते हो जहाज का चल देना और सेठ का उनका बड़ा सम्मान कर अपने द्रव्य का दशवां अंश देकर पुत्रवत उनको मानना और साथ ले चलना। धवल सेठ को मार्ग में चोरों का मिलना और उनका सेठ जी को पकड़ लेना, श्रीपाल का चोरों को बांधना और अपने धर्म पिता से दंड विधान पूछना, उनका दया करके उन्हें छुड़ा देना चोरों द्वारा श्रीपाल को सात जहाज रत्नों का देना और उसका उपकार मानना। पंचमसंधि समाप्त हुई।

(८) पृ० १५७ से २५५ तक—हंसद्वीप का वर्णन। (वहां के राजा) कनककेतु की स्त्री कंचन माता के दो पुत्र चित्र विचित्र तथा रैन मंजूषा नाम तीसरी पुत्री का वर्णन। इस पुत्री के संबंध में राजा का मुनि से प्रश्न कि मेरी पुत्री का विवाह किससे होगा, ज्ञान द्वीप मुनि का कथन कि जो सहस्र कुटन चैत्यालय के फाटक को हाथ से खोल देगा उसी के साथ होगा। कालान्तर में श्रीपाल का वहां पहुंच कर उस कृत्य को कर राजकन्या का पाना, रैन मंजूषा को लेकर श्रीपाल का अपने सेठ के साथ चल देना, सेठ का रैन मंजूषा पर मोहित होकर श्रीपाल को समुद्र में गिरा देना और रैन मंजूषा को तरह तरह के प्रलोभन देकर वशीभूत करने का प्रयत्न करना। रैन मंजूषा के प्रस्ताव अस्वीकार करने पर बलात्कार की चेष्टा, रैन मंजूषा का ईश्वर से प्रार्थना करना, चार देवियों का प्रगट होकर सेठ को दंड देना, अन्य महाजनों की प्रार्थना पर रैन मंजूषा का धवल सेठ को छुड़ा देना, श्रीपाल का तैरते हुए कुंकुम द्वीप में पहुंचना, वहां के राजा की पुत्री गुणमाला के साथ—जिसके संबंध में मुनि ने बताया था कि जो पुरुष समुद्र तैर कर आवेगा उसी के साथ तेरी पुत्री का विवाह होगा—विवाह होना। सेठ का भी उसी नगर में पहुंचना राजा को भेंट देने को जाना, वहां पर श्रीपाल को देखकर चिन्तित होना, श्रीपाल का कुछ न कहना। धवल सेठ का भांड़ों द्वारा तमाशा करा के उसे भांड़ों का लड़का सिद्ध कर के मरवाने की आज्ञा दिलवाना गुणमाता का अपने पति से वास्तविक समाचार जानने की प्रार्थना, उसका उसके जहाज पर भेज कर इस संबंध में रैनमंजूषा से वार्तालाप करने को कहना, रैनमंजूषा के पास जहाज पर पहुंच कर गुणमाता का शुद्ध समाचार जानने के लिये अपने

पिता के पास ले आना, राजा का शुद्ध समाचार जान कर उसको छोड़ना, सेठ को राजा का बुलाना और फांसी की आज्ञा देना। श्रीपाल का दया कर उसको छुड़ा देना, तिस पर भी उसका हृदय फट कर मर जाना और श्रीपाल का सेठानी को समझाना, सेठानी का कहना कि उस पापात्मा के देहावसान होना ठीक ही हुआ। इस पर सेठानी को उसके घर पहुंचा देना।

(९) पृ० २५६—८९ तक—मुनिराज की भविष्यवाणी के अनुसार श्रीपाल का विवाह कुंडलपुर के राजा मकरकेतु की पुत्री चित्ररेखा के साथ होना। तत्पश्चात् कंचनपुर के राजा वज्रसेन की (९००) पुत्रियों से उनका विवाह होना। कुंकुमपट के राजा यशसेन की सोरह सौ पुत्रियों के साथ उनका विवाह होना—इनमें प्रधान आठ को दी हुई ग्रंथ में प्रस्तुत आठ प्रश्नों के पूर्ण करने पर विवाह सम्बन्ध होना—अन्य बहुत सी स्त्रियों से विवाह करके कुंकुमद्वीप में लौट कर आना। अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों को सब स्थानों से लेकर अपनी प्रथम स्त्री मैना सुंदरी से किये हुए वचन को पूर्ण करने के लिये उज्जैनी को लौटना, स्त्रियों को इस लिये मार्ग में छोड़ कर कि उनकी अवधि का अंतिम दिन है यदि वे न पहुंचेंगे तो उनकी पूर्व स्त्री तपस्वना हो जायगी अकेले ही घर पर रात्रि के अन्तिम पहर में पहुंचना और अपनी स्त्री का माता से दीक्षा करा आज्ञा मांगते हुए पाना। इनके प्रबोध पर और पहुंचने की प्रसन्नता पर उसका रुक जाना और प्रातः सब स्त्रियों को बुला लेना और मैना सुंदरी को सब से प्रथम पटरानी पद देना। भोग विलास करना।

(१०) मैना सुंदरी का अपने पति से कथन कि आप मेरे पिता को कंधे पर कुल्हाड़ी तथा कंबल ओढ़ कर अत्यंत दीन दशा से बुलाइये जिससे वह कर्म के फल को समझे और अपने आग्रह को छोड़े। इस पर उसके पति का विरोध, पत्नी का पुनः धर्म की दृष्टि से ऐसा करने का अनुरोध, इस बात को अबकी बार मान कर राजा के पास उसी प्रकार आने की आज्ञा दूत के द्वारा भिजवाना और उसका भयभीत होकर उसी दशा में आना। दम्पति का उसके पैरों पर गिर कर कर्म का प्रभाव कथन करना। राजा का लज्जित होना, आशिर्वाद देकर और कर्म के प्रभाव को समझ कर राजा का अपने नगर को लौटना। जैन धर्म को स्वीकार करना, श्रीपाल का सुख भोग करना—सप्तम प्रभाव समाप्त

(११) पृ० २९०—३११ श्रीपाल का आदर पूर्वक मैना सुन्दरी के पिता द्वारा अपनी राजधानी में बुला ले जाना, प्रजा की ओर से उसका हार्दिक स्वागत, कुछ दिवस पश्चात् उसका राजा से अपनी जन्म भूमि तथा पैतृक राज्य के उपयोग की अभिलाषा प्रकट करना, राजा का कथन कि आपको यदि राज्य

को ही इच्छा है तो मेरे राज्य को लीजिये और मुझे अपनी सेवा की आज्ञा दीजिये। जामात्र का श्वसुर को धन्यवाद देकर उचित कारण बताते हुए अपने प्रस्ताव की स्वीकृति के लिये पुनः आग्रह करना। प्रस्ताव का स्वीकृत होना, श्रीपाल का गमन, उसकी सेना की बड़ाई, कई राजाओं को वशीभूत करने के पश्चात् उसका चम्पावती में पहुंच नगर को घेर लेना, नगर निवासियों की चिन्ता, दूत का भेजा जाना और उसका राजा वीर दमन को समझाना, उसका न मानना, दूत द्वारा श्रीपाल के वैभव का कथन, उसको श्रवण कर वीरपाल का क्रोध, युद्धारंभ, दोनों ओर के योद्धाओं का विध्वंस, मंत्रियों की सम्मति से युगल नृपतियों का मल्ल युद्ध, श्रीपाल की विजय, वीर दमन का उसे राज्य सौंप कर स्वयं जैन धर्म की दीक्षा लेकर वन को चला जाना। नवम् प्रभाव समाप्त।

(१२) पृ० ३१२—३५० तक—श्रीपाल की राज्य व्यवस्था का वर्णन। उसकी स्त्री मैना सुन्दरी से एक पुत्र—जिसका नाम धन्यपाल रक्खा गया। इसके बारह सहस्र एक सौ आठ पुत्रों के होने का कथन। राजा का बहुत दिनों तक राज्य का आनन्द उठाना, प्रजा को सब भांति से सुखी रखते हुए राज काज निर्वाह करना, राजा द्वारा विद्याधर तथा वनदेव का सत्कार किया जाना, एक मुनीश्वर का आना, राजा द्वारा उसका सत्कार किया जाना, और उसका जप तपादि की प्रशंसा के साथ ही साथ कर्म की प्रधानता का कथन करना, राजा का आदर पूर्वक अपने पूर्व कर्मों के संबंध में यथा—मैं कुष्टी क्यों हुआ? पानी में क्यों डूबा, इत्यादि—कुछ प्रश्न करना, मुनि का उसके पूर्व जन्म का संपूर्ण समाचार और उसमें किये गये कर्मों के अनुसार दुःख सुख होने का वर्णन सकारण समझा दिया। राजा का दीक्षित होकर वन को जाना, पुत्र को राज्य देना, उसका अपने को असमर्थ बतलाने पर कुछ उपदेश देकर आज्ञा मानने के लिये बाध्य करना, उसका राज्य स्वीकार कर लेना, राजा का वन गमन, रानियों इत्यादि का भी दीक्षित होना।

(१३) मुनिराज से भेंट होना, राजा का उनसे उपदेश सुनने की अभिलाषा प्रकट करना, उनका उपदेश देना, उपवास, दान, इत्यादि की प्रशंसा करना, राजा का तप करना, श्रीपाल का केवल ज्ञान या मुक्ति को जाना। कवि का कुछ वर्णन। ग्रंथ समाप्तिः।

No. 310(*a*). Dadhilīlā by Parmānanda Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—22. Extent—55 Anushṭup Ślokās. Appear-

ance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śiva Nārāyaṇa Lāla, District Rāe Bareli.

Beginning—ॐ ॥ श्री गणेशाय नमोनमः ॥ अथ दधिलीला लीषते ॥

व्रीषमान सुता सुकुमारी । दधी वेचन चली व्रज नारी ॥
जह जुह कदम की छाही । बेठे प्रभु तेही मगु माही ॥
सषी गेडुरी षेलत धाई । तब कोस्न जो मुरली बजाई ॥
दधी बेचन चली व्रजवाला । जहा बोच मोले नंद के लाला ॥
दे दे री गुजरी दधी दाना । गही अंचल रोके हो ना ॥

End—चौपाई ॥ जब देन लगी हसी दाना । तब प्रती इतरानेउ कान्हा ॥
प्रभु मवन साधि के बैठेये । जोगी मुनी जंगम जैसे ॥

केतीक जुगती अनेक मनावे । प्रभु नेक न चीत डोलावे
तब राधे नीकट चली धाई । सुनी लीजै बीनव गोसाई ॥
हम दासी भइनी तुम्हारी । तुम चरन सरन बनवारी ॥
धनी जीवन जनम हमारो । जब पावा दरस तुम्हारो ॥
यको बैठी बआरो डोलावे । यक बीरी षेली षोयावे ॥
जो चाहोये सो बढ लीजै । प्रभु कीपा आपनी कीजै ॥
हरी देषो गुजरी रती मानी । हंसी बोले सारंग पानी ॥

छंद ॥ हंसी बोले सारंग पानी सुंदरी मानो रती रसा भी रही ।
करी केली कुंज कलोल कान्हा सहस रंग रस भरी रही ॥
कर्त कीड़ा मदन मोहन कवन लोचन राजही ।
दास परमानंद सोभा सुनत कलामल भाजही ॥ इती श्री

दधीलीला संपुरणं ॥ समाप्तम् ॥ श्री क्रीष्णु सहाई लीला ।

Subject—श्री कृष्णजी की दधिलीला ।

No. 310(*b*). Dānalīlā by Dāsa Parmānanda. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—6 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—110 Anushṭup Ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1899 or A. D. 1842. Place of deposit—Paṇḍita Śatrughnaji, Village Sikandarpur, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ दानलोला लिष्यते ॥ दोहा ॥ एक समै राधे जो बैठी सषिन साथ । बेड़ा प्रेम उमगोहियो सुमिरि नाम ब्रजनाथ चलो सषी तहं जाइये जहं बैठे ब्रजराज गोरस बेचन प्रेम रस एक पंथ द्वो काज ॥ चो० करि मंजन ग्रैार अंगारा । पहिरे मुकन को हारा ॥ छवि बेंदो भाल विराजे दसन दुति दामिनि लाजे ॥ मटुकी दधि से भरवाई । सषियां संग लीन लेवाई ॥

No. 311. Ushācharitra by Paraśu Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—5 × 4 inches. Lines per page—10. Extent—962 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old (letters spoiled by rain). Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1825 or A. D. 1768. Place of deposit—Paṇḍita Bhavānī Baksha, Village Ulara, Post Office Musāphirakhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—राम स्वस्ति श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिषतं उषा चरित्र ॥ चैापाही ॥ कअ कवल लोचन सुषकारी ॥ अवधि भूप ईसर ग्रैातारी ॥ जाको नाम सुनत अघ जाहीं ॥ सो प्रभु वस सदा घट माहि ॥ घट घट वसै लषै नाहि कोई । जल थल वसै सदा गोसाई ॥ जाको आदि अंत नहिं जानो ॥ पंडित पढ़त गुन गन वषानी ॥ प्रेम प्रीति निज सुष के दाता ॥ चहुंजुग येके कार विधाता ॥ द्वोहरा ॥ त्रभुवन पति नागर नवल ॥ जुगल कोसोर कोसोर । तिहि को जुगत अपार है । कवि वरनुक वठो ॥

End—परसराम कि विनती जो श्रवण श्रुन लेह ॥ प्रभु दयाल कृपा करै प्रभु इतने फलेह ॥ इति श्री उषाचिरीत्र समापितं ॥ संपुरणं ॥ मिति मार्गसीर वदि ६ बुधवार लिषतं नंदन दास संवत् १८२५ ॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २ तक—वन्दन व कृष्ण महिमा । (२) पृष्ठ ३ से १४ तक-कृष्ण रुक्मिणी विवाह । अनरुद्ध जन्म, स्वप्न में १२ वर्ष को कन्या का देखना । नख शिख । वाणासुर की पुत्री उषा का ग्रैार अनरुद्ध का वियोगावस्था में मनस्ताप, (३) पृ० १५ से ४० तक—चित्ररेखा का उषा को समझाना, अनेकों चित्र बनाना, अनरुद्ध को उषा का पहिचानना, सखी का कुंवर को लाने के लिये आज्ञा मांगना द्वारिका में अनेकों प्रयत्नों द्वारा भी प्रवेश न पाना, नारद मिलन, नारद का गोधूलि समय में प्रवेश करने के लिये कहना नगर में जाना दरवाजे पर सखी का मिलना चित्ररेखा को माया जिससे उसे कोई न देखे, कुंवर को विरह दशा, कुंवर से वार्तालाप, उनको साथ लाना, उषा से मिलाना. प्रेमी तथा प्रेयसी का प्रेम वार्तालाप । (४) पृ० ४१ से ६० तक—कृष्ण के यहां अनरुद्ध के

गायब हो जाने के कारण चित्रा बाणासुर की रानी का सब हाल जान कर अपने पति को बताना, उषा का गृह घेरा जाना, अनरुद्ध का युद्ध करना, उन का नाग फांस फांसा जाना। (५) पृ० ८१ से पृ० ११४ तक—अनरुद्ध का राजा से अभिमान युक्त बातें कहना रानी का उसे कन्या देने के निमित्त राजा से प्रार्थना करना, नारद आगमन, अनरुद्ध का उनसे कृष्ण के लिये, संदेश भेजना दूती का राजा के निकट संदेश ले आना, दूत का कुंवर से मिलना, दूत का लैाट कर कृष्ण से सब वृत्तांत कहना, कृष्ण का क्रोध करना, दोनों दलों का युद्ध, हरहरि मिलाप, बाणासुर का कृष्णराम को निमंत्रित करना, बाणासुर की पुत्री का विदा करना, द्वारिकापुरी आना, बधाई।

No. 312(*a*). Rāma Kalevā by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—6 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—660 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda, Village Naipālapur, Post Office Sītāpur, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ श्री रामकलेवा रहस्य लिख्यते॥ रागिनी काफी। सुनिये रहस सिया सुख पानि। प्रातकाल रवि उदित भए सति नैावा जनक पठायो। चारो कुंवर राइ दसरथ के तुरत वोलि लै आयो॥ आतुर नैावा गा जनवासे नृप दसरथ के ठाईं। चारिउ कुंवर महां कैासलवर चले कलेवा आई॥ सुनि नृप सखा अनुज सुत रामहिं आतुर लियो उर लाई। जाउ सकल मिलि पान कलेवा पठ्ये जनक बोलाई। पितु अनुसासन पाइ कृपा-निधि चलिभे चारिउ भाई। सम वै राजकुमार छबीले ते सब चले लिवाई॥ कोउ स्यंदन कोउ गज कोउ तुरंग आय रुचिर सुभगाला। अनुजन सहित लसत रघुनंदन कोटि मदन मद घाला॥ स्यंदनादि सह बाजत अद्भुति परम विचित्रित कीन्हे। जगमगात सब जरित जरायन दिनकर परत न चीन्हे। गो मुखादि दुंदुभी बजावत कलित पांडव सुरनाई॥ आवत जानि राम की सखियन गली सुगंध सिंचाईं। येकै चढ़ी अटारिन देवै येकै सुभग दुवारा। येकै जुवति झरोखन झाकैं दरसन आस अपारा॥

End—को बहु श्रुति सरवज्ञ कहै को सतानंद ते पायो कोऊ कहै परम कैातुकी नारद तिन यह भेद बतायो॥ नपित कथा सुनि भूप कैातुकी आतुर तिन्है बोलायो॥ चित्त चिन्ह ततकाल मिटै नहि यद्यपि धोइ छुटायो॥ रचना देखि नृप

हंसे सभा सब मुनि सब सकल बराती ॥ मच्यो हास्य अानंद कुलाहल समुझि परै नहि बाता। यहि प्रकार आनंद दुहु दिसि परम विलास सोहावा ॥ सज्जन समुझि लेहु अपने मन जथा स्वमति मैं गावा ॥ जस मम हृदय प्रेरणा करि यह जस मम मतिह लषायो। परवत दास संत पद रज सिर राषि चरित यह गायो। दोहा। जे सुनिहैं करि प्रीति यह जे कहिहै करि भाउ। तिनका राम विलास यह करिहै तुरत पसाउ॥ सीताराम रहस्य यह भक्त रसिक सुष मूल। ध्यान यह मन करिहै जेई तिन दंपति अनुकूल॥ भक्ति हास्य श्रृंगार रस त्रय रस मिश्रित स्वाद। जे पढ़हैं अनिहैं तेई सिय रघुवीर प्रसाद। कहैं सुनै जे व्याह यह सावधान करि भाउ। सोति होई सर्वो अशुभ दिन दिन मंगल चाउ। इति श्री रामचंद्र कलेवा रहस्य परम विलास परवत दास कृते सम्पूर्णम्। संवत १९१६ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ दशमयाम चंद्रवासरे लेष्य कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर के लिषतं शिव शिव

Subject—राम व्याह में राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न इत्यादि का कलेवा करने के लिए जनक महल में जाना और वहां लक्ष्मीनिधि और सिद्धि सरहज से हास्य विलास के प्रश्नोत्तर।

No. 312(*b*). Rāma Kalevā by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—12 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—432 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagarī. Date of manuscript—Samvat 1939 or A. D. 1882. Place of deposit—Ṭhākura Śrīprakāśa Siṁhaji, Raisa, Hariharpur, Post Office Chilawariā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः॥ रागिन काफी। परवतदास कृत॥ प्रातकाल रबि उदित भए सत नेवा जनक पठावो। चारों कुंवर राय दसरथ के तुरत बोलि लै आवो। आतुर नेवा गा जनवासे नृप दसरथ के ठाईं। चारिउ कुंवर महा कोसल वर चले कलेवा षाईं। सुनि नृप सषा अनुज सुत रामहि लियो उर आतुर लाई। जाव सकल मिलि षान कलेवा पठयो जनक बोलाई॥

End—तेहि विधि कहेउ भरत रिपुसूदन भाइ भक्ति बिसेषो। सो सुनि सषीं रहीं पुतरी सी लषनादिक मुष देषा। जो जो कहब करहु स्वै आरत तब जुड़ावगी छाती। नतु लहंगा पहिराइ छोड़िहैं हम अबला मद माती। सषा सकल कर जोरि सषिन ते कहि अधीन मृदु बानी। राम सिया के दास पुत्र करि छाड़हु प्रान सयानी। इति श्री परवतदास कृत राम कलेवा समाप्तं लिषा सो रंगनाथ संवत १९३९

No. 312(c). Shaṭ Rahasya by Parvatadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—580 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1912 or A. D. 1855. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Nārāyaṇa Vājapeyī, Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः। अथ षट रहस्य लिष्यते ॥ प्रथम ज्योति रहस्य॥ लाल इन देवो के लागी पाये। कर जोरो पद जोरि लाड़िले विनय कर सिर नाये ये हमरी कुल पूजि भवानो तुम्हे उचित यहं आये। परमानंद होय दोनैा दिसि इनके पूज्य पुजाये॥ नहि रीझै जप तप संयम ना कछु गाये बजाये। केवल विनै मात्र कर जोरत द्रवती सरल सुभाये। सर्वा विघ्न प्रसान्त मोद प्रद कहलि हवनि सत भाये। वेगि पांय पर दीन भाव धरि करि हैं कोप विलावाये। प्रभु हंसि कह कैसो है देवो बैठी बदन दुराये। कोप प्रसन्न जानि कस परि है विना स्वरूप लषाये। ई हमरो यह गोचर माया द्रवहि न पंग दिषाये। दूर रहो अनि छुवेहु धोपेहु हो तुम विना नहाये। बरवस राम गह्यो घुंघट पट हमरी पदय धोराये। इन देविन के भाग्य सराहो द्रोपद लेत चढ़ाये। हमको काह ठगैा मृगनैनी तुम्हे ठगन हम आये। जन पर्वत मुसकाय कहत भई लालन पढ़े पढ़ाये॥

End—विहाग—हे दशरथ को पुतहू ह्यां कछु नेग हमारा॥ मैं तुम्हरे पुरपन के बंदिन विदित सकल संसारा॥ जबते वशिष्ट पुरोहित भे तब ते मैं लीन्ह भटाई। केवल तुम्हरे हेत लाड़िलो मैं यह वृत्त उठाई। यह इक्ष्वाक वंश मम मेरा अन्य भीष नहि षाऊं। तेहि पर अवसि अवध गादो तजि औार कहु नहिं जाऊं॥ पिता तुम्हार बहुत कछु दीन्हो राउ बहुत कछु पावा। तुम सिद्ध रहो संपदा पाई अव यह कानन आवा॥ अैार औार के औार नेग है हम एकै यहु पावैं। फिरि कबहुं न जाहि काहू के घर बैठे गुन गावैं। व्याहि प्रथम आवै जब दुलहिन हमैं नेग दे दासुन। तब भोगै सज्यादिक सैायिन पुंछि लेय निज आसुन। सुनि परिहास अनर्गल अक्षर घुंघट विच मुसकानो। मनहु चार विधु झंपे घहन घन उपर प्रभा थहरानो॥ तब तोम्यु रानो हंसि बोली अस्य कहे यह भाटिनि॥ जो मागै सो देव प्रीति जुत यह हमारि कुल पाटिनि। अब मैं आइ सुकीउ ठकुरैन्यु जो हमका इन चीन्हा॥ सुन्दर बदन सुकोमल नैनन मोहि चितै हंसि दीन्हा॥ अब चहिहो तब मांगि लेहैां मैं मोर कहुं नहि जाई। जस जस इनको वृद्धि होयगी तस बर बढ़ो सवाई॥ सदा अचल अहिवात रहै अरु होई पुर धुर धारी। प्राण ते अधिक पतिन का प्यारी होइ असीस हमारी। जन परवत जो परम उपासक रसमाधुर्यहि

जाना रहसि ध्यान ते अनित पाय सुष होइ परम गल ताना इति श्री चतुर भगनी रहस्य समाप्त षट रहस्य संपूर्ण सुम मस्तु ।

Subject—श्री राम जी का देवियों के पैर लगने के लिये सखियों का कहना, बत्तो मिलाना, लहकौरि खिलाना, कलेवा करना, ज्योनार, सखियों और राम का संवाद, हास्य विलास, राम गूढ़ वचन, भरत शत्रुहन लक्ष्मण का सखियों से संवाद, उर्मिला, मांडवी आदि चारों बहिनों का संवाद, सारिका संवाद, जनक राम संवाद, चतुर भगिनी व भाटिनि संवाद आदि ।

No. 312(*d*). Shaṭ Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhakūra Jagapala Siṁha, Village Birapur, Parganā Akonā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312(*c*).

No. 312(*f*). Shaṭ Chatura Bhaginī Rahasya by Parvata Dāsa. Substance—Country-made paper. Size—15 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—750 Anushṭup Ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Lalatā Prasāda, Village Pāṇḍita Puravā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in no. 312 (*c*).

No. 313. Śālihotra by Pāṭhaka Dāsa Dwija of Rukama Nagara. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—12 × 5 inches. Lines for page—12. Extent—360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1831 or A.D. 1774. Date of manuscript—Samvat 1879 or A.D. 1822. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha, Seṅgara, Kānthā, Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सालिहोत्र लिष्यते ॥ दोहा ॥ गनपति गिरिजा ईस कौं प्रथमहि बन्दौं पाइ । भाषौं लक्षन तुरग के मोहि पर होउ सहाय ॥ सुमिरि राम के जलज पद विधि बंदौं कर जोरि । दोरब पक्ष तुम्हार

प्रभु बुद्धि अल्प मति मोरि। अस्वारिषि के सुवन इक सालिहोत्र तेहि नाम। तिनके चरन कमल जुग लाला करै प्रनाम। ऋषि कीन्हीं आरंभ मख होम धूम रह्यो छाइ। लाग्यो लोचन रिषय के सलिल बुंद परे आय। वाम नेत्र ते अस्वनी दाहिने भयो तुरंग। भख्यो रिषि सो सुवन है को कहै प्रसंग।

End—अथ चासनो॥ सुरभी दूध सेर दस लीजै। टांक दोइ"""म तेहि दीजै। खीर करै गुर संधै बात। अस्वा बहुत पुष्ट होइ आत। ४ अथ सालहोत्र समाप्तं संपूरनं शुभ मस्तु। मिति पौष सुदि शनिवार १ पुस्तक लिखो सुखनंद सुकुल समाप्तं संवत १८७९॥ राम रचयिता—लाला पाठकदास द्विज हकुमनगर में वास। भाषा कीन्हो अश्व हित सब कवि जन के दास। चन्द्रराम वसु चन्द्र लिपि संवतसर परिमान। शुक्रमास वदि तीज को कान्हे ग्रन्थ बखान। पूरव"" ति देखि के भाषा कीन्ही येह। चूक होइ सो पूजिये जानि दास पै नेह। इति।

Subject—अश्व उत्पत्ति वर्णन, दांत लक्षण, शुभाशुभ विचार, पृ० १—५ अंग लक्षण रंग व भौंरी लक्षण, अशुभ सफेदी, अंजनी लक्षण, गोप, केस, घाटी, अमूसली, कलमुखी, थनी, स्याम तालू लक्षण, पृ० ६—१०

असनशूल, बदशूल, मूत्र बदशूल गद व प्रशूल, लक्षण व उपाय, अन्यशूल वर्णन, पृ० ११—१६

ज्वर, वायु, नश्तर, लक्षण व उपाय, कनारा व प्रमेह, उपाय, पृ० १७—२८

मूत्र रोग उपाय, जौभिरावयभिरा उपाय, गर्मी, पित्त, सुम्भकपाली, घोड़े के लिये रस वर्णन, जनुवार, छीवर, पोछि लगे को उपाय, घारोसी, फूली, मेढुकी, सर्परि तरवा तुकहारी, सिसुचा सनी वर्णन पृ०—२३—३० तक

No. 314(*a*). Jñānayōga Tattvasāra by Patita Dāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—72. Size—5 × 3 inches. Lines per page—18. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Śrī Krishṇajī, Village Sakhuāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा। पतितदास कृत बहु विधि लिख्यों विचारि विचारि। बूझि संवारै ग्रंथ को सो है गुरू हमार। ज्ञान जोग उत्पति सब पालन पद सत सार। इन्द्र देव श्वान गुण चारों पद के उबार। ग्यानी कोविद सब मिलि मथि लियो सारासार। भक्ति ध्यान पद त्याग बहु कर

कर्म गेरि मार। सो० मन मद अच्छ अपार ठोकर बहुत बचाइयो। मानो कहौ हमार। सत्य शब्द गहि लोजियो॥ दे०ा सत गुरु मों पर कृपा करि दियो योग तत्त्वसार। पतितदास अस जानि कै जग मैं कियो पसार॥ चो० दास पतित पति मन बुधि हीना। प्रभु रघुवर मोहि आयसु दीन्हा। शुभ सुन्दर संयम मंग-वाई। तन मन धन हरि शरण लगाई। जाकर गुणानवाद अवगाहा। चारो जुग कोइ पाव न थाहा। पहिले सुमिरों श्री गुरु ईशा। जो मोहि विद्या दियोपदेशा। संकर सुवन भवानी के नंदन। गणपति देवनाथ जग बन्दन।

End—लिख वह मैं लिय हारो कागद कलम सिरान। ऐंचि पैचि कथनी करी नामै पर ठहराना॥ चो०॥ पति वह कहौं कहां लैां गाई। याही मैं मैं अर्थ सुनाई। शहर लखनऊ बस्ती भारी। जन्म भूमि ता जाम्य हमारी। नाम चकैाली ग्राम हमारा। भयो जन्म अब हेत गंवरा। रमत रमत रघुलपुर आई। तहां मिल्यो गुरु देव गोसाई। दास पतित सम रस जिमावा। गुरु दयाल निज दास बनावा। दीन्ह जोग सब तत्व लखाई। भर्म त्यागि निज रूप देखाई। गोंडा मैं गिरधर पुर गाऊं। नीत धर्म कोई जानत नहि भाऊ। रामदत्त पांड़ेन मैं भयऊ। कुल के धर्म नेति चलि गयऊ। हेतु ताहि तहं वास हमारा। करहु जोग तब तजि व्योवहारा। ताके वंश भयो अविवेकी। तजि शुभ पंथ कुमारग टेकी। देखि अनीति तजेऊ वह देसा। अवध मैं आय कीन्ह परवेसा। दे०—पतित का मन महिमा मिले भागे पवन समान। मन इन्द्री वस कीजियो हरि सों करि पहिचान। अंक ऊपर बिन्दी बढ़े बढ़त बढ़ि जाय। तरै अंक बिगरै नहि जीव पोज मिटि जाय। एकै प्राणायाम मैं कटै कोटि अपराध। जप नाद श्री नाम सम रहै नहीं भव बाध। सो०—कटै कोटि अपराध, यहि विधि सुमिरन जो करै। दास पतित निज साच छूटि जाय भव दाप सब॥ चतुराई मैं भूलिकै नाम न सुमिरन कीन्ह। दास पतित गति को कहै। जन्म अकारथ लीन। तवसार यह जोग है आतम सार विचार। पढ़ै सुनै जो नेम सो होवे सकल उधार॥ इति श्री ध्यान जोग तत्वसार साधन। श्री स्वामी पतितनंद कृत सम्पूरन। शुभमस्तु। लिखा शिवा-नंद संवत १९२१ विजय दशमी।

Subject—श्री गणपति की स्तुति, गुरु की महिमा, प्राणायाम द्वारा ईश्वराराधन आदि अन्त में ग्रन्थकर्त्ता की जन्मभूमि आदि का वृत्तांत।

No. 314(*b*). Mahavira Kawacha by Patita Dāsa. Substance - Country-made paper. Leaves—5. Size—8 × 5 inches. Lines per page—16, Extent—85 Anushṭup Ślokas, Appear-

ance--New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Paṇḍita Rāmāvatāra, Village Paṇḍita Purawā, Post Office Risiā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। श्रीमहावीरायेनमः। ॐ हनुमन्ताय नमः। चौ०। जय महावीर धीर बलवंता। जासु चरन सेवैं सब संता। बली बीर तुम हैा हनुमाना। तुव गुन गावै चतुर सुजाना। सदा तुम्हारो जै हनुमंता। जापर कृपा करैं भगवंता। बिन तुव किपा पार नहि होवै। तुम्हरो आस सबै कोई जोवै। राम पियारे सिया दुलारे। दास पतित का काहे बिसारे। संकर सको केसरी नंदन। दास भानि काटैा भव बंधन। तुम बिन अवर कोइ नहि स्वामी। तू उदार उर अंतरजामी। अंजनि कुमार पवनसुत नायक। राम के दूत लषन के धायक॥ सुनहु न नाथ पर्डे कस मोरो। दास पति माथैं कर जोरो। संकट हर मंगल के दाता। जो सुमिरे तुव नाम बिधाता। हैां मैं कुटिल अधम अभिमानो। भाव भक्ति नेकहु नहि जानो। तुम प्रभु जानहु सब घट केरो। काहे न सुनैा नाथ अब मोरो। अब कहावैां तुम्हरो दासा। तजि के काम जगत को आसा। दो०। हम पतित तुम समरथ नाथ कहैं कर जोरि। आई सरन मत त्यागहु देहु मोंहि जनि षोरि।

End—जब रघुनन्दन आज्ञा कोन्हा। है मुद्रिका सीय का दीन्हा। दधि नाघत भयऊ रूप प्रकासा। राक्षस मारि दैपत करि नासा। सों पैाैरुष कहं गयऊ तुम्हारा। सुनैा न स्वामी बहुत पुकारा। अब मोरि लाज राषि प्रभु लोजे। जनके काज हरषि हिय कीजै। एक बार नित पाठ पुकारै। बैरी दुसमन ये सब हारै। दुइ बार जो नित लावै सेवा। रोग छुड़ावै हनुमत देवा। बहु विधि रक्षा करै कृपाला। छूटि जाय दुष सब जंजाला। त्रितावार करै नित पूजा। जप तप ध्यान धैार नहि दूजा। सांझ सबेरे धैाम ध्यान। हित से सुमिरे निर्भै हनुमान। धैार जहां है सपेरे भाई। दिन प्रति प्रीति करै मन लाई। सो महिमा सकैां न गाई। जेहि देषे जमदूत हेराई। ताको पाठ करो नित भाई। करि बिसवास पाठ करै कोई। चारि बरन में जो कोई होई। कांपै जम के दूत सब, जम को कहा बसाय। दास पतित गोहराय कहैं जेहि महावीर सहाय। कवि बिसवास पुकारै पाठ नेम नित कोई। रोग दोष सब नासै धनमिनविन सुष होई। इति श्री महावीर कवच मंत्र अस्तुति दास पतित बरनन जो पढ़ै सुनै श्रै पढ़ावै। संका निकट ताहि नहि आवै। दः रामअैातार कुरसहा वाले ने लिषा जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष नहीं श्री संवत १९४८ क्वार मासे कृष्ण पक्षे तिथैा ६ षष्ट॥ दः रामअैातार समासम् राम राम राम राम राम।

Subject—हनुमान जी की महिमा ।

No. 314(*c*). Nakshatra Rāshi Charaṇa Kuṇḍali phalāphala Jyotisha by Patita Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—10 × 6 inches. Lines per page—60. Extent—1,620 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1882. Place of deposit—Ṭhakūra Digavijai Simha, Taluqedāra, Village Dikaulia, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पोथी नक्षत्र राशि चरण कुंडली फलाफल ज्योतिष लिष्यते ॥ दे।० ॥ इन गंधर्व शारदा सरस्वती सब देव मनाय। नवैा नाथ सिद्धि चैारासी रिषि मुनि से भिक्षा पाइ । श्री गुरु व्यास जी सुषदेव वालमीक सिर नाइ । भृगु आदि कालिदास तप गुण मो पर होहु सहाइ । सोरठा ॥ हैा गुण बुद्धि ग्यान से हीन, करैा कृपा पावों वर यह । अक्षर अर्थ बनै प्रवीन ग्रंथ लिष्यो जोवन सुष हित ॥ चो० ॥ दास पतित अज्ञान गंवारा । भक्ति भाव न भजन विचारा । गुण ज्ञानी से अरजिय मोरी । छेड बनाय भूल सब जोरी । अब नक्षत्र फल कहि थोरा गाई । देउ गुण बरखे ग्रंथ सरसाई । चूवे चोला अश्वनी अथ पुनिः अश्वनी नैा देवता अक्षर आकारो वैस्य जाती हेमता अश्व स्यामा याही में भयउ पचास । घड़ी के उर्ध विष नाड़ी आयो तब जात्रा करै माष छै आई । सर्व थोर जाय सुष सुभ पाई ।

End—अमूल सर्व अमृत बरसाई । चिंता सोच के सब रोग बहाई । दिन सत बीसही में गाई । लक्ष्मी हू वश्य सिधि कराई । मूसले कार्य देर दरसावै । अवसि तो हानि ही कार करावै । देव ससी सबी सें इष्ट भेंटी । रोदनं चिंता मर्म सोच लपेटी । ध्वगद योगे सर्व बहुत दुष दाई । जलदिहि हानि दुष व्याधि रोपाई । मतंग श्री चंत ही मिलाई । विसदे दिन काज सिधि प्रगटाई । राक्षेस सो पोड़ा उपजावै । दिन सत्ताईस अफलावै । चार जोग में फल थोरो लाई विद्या बानी लाभ सिधि गनाई ॥ स्थिर जोगे सब सिद्धि ही देई । दिन साठि अश्व लाभं कार्य्यंही । पशु लाभे भलो बतावत । वृद्धि अति भले हेर देषावत । दिन अरसठ में बहु अदुराई । आनंद जोग सब के फल ये गाई । दे।० । दास पतित मति याही अक्षिम सोई गाई । चूक हमारी माफ कै सवैया या छेव बनाई । इति श्री नक्षत्र राशि चरण कुंडली फला ज्योतिष ग्रंथ संपुर्ण समाप्तं सुभमस्तु लिषतं गैारीशंकर भट्ट पैदापुर निवासी संवत १९४० ॥ इति श्री ग्रंथ समाप्तं ॥

Subject—ज्योतिष ।

No. 314(*d*). Śarira-bhoga-sāra Gītā by Patita Dāsa of Ayōdhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6×5 inches. Lines per page—24. Extent—120 Anushṭup Ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript-Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lāla Gaṅgā Dīna Bihārī Lāla, Village Ghulāmali Purā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सरीर भोगसार गीता पतितदास कृत लिष्यते ॥ दो० ॥ सत संगी की विनय गुरु भेषी देस समाज । जोग भोग सुष दुष के त्याग मान सिरताज ॥ सोरठा ॥ दास पतित कहि बैन धन्य धन्य गुरु ग्यान के गहे सकल सुष चैन सूक्ष्म कहो करि गुप्त बहु । दास पतित का लेष यह साधन करत विचार । यहि मति जो गहि अमल करि तेहि राषै करतार ॥ बिना प्रेम साधन किए होत नहीं बैराग । चाह मान मद बिन तजे । किमि पावै अनुराग ॥ भक्ति बिना अनुराग नहि ॥ बिन अनुराग न त्याग ॥ त्याग बिना निर्द्वन्द नहि तो कहि का बैराग । पूर्व कमाई मई जो घर त्यागे कस मान ॥ दास पतित सतगुर कृपा तजि केर गुमान ॥ कोश द्रव्य परिवार बहु लागी जहर समान ॥ गुरु बानी रट लग रहो तन मन मैार न ध्यान ॥ सतसंग बिद्या ज्ञान कछु परमहंस धरि रीति । पान पान अस्नान तजि अवधि मिलन की प्रीति ।

End—समै समै को जुन को जो त्याग संग बनि आव । कीजे नहि सन्देह कछु दास पतित मत पाय ॥सोरठा॥ भीन में है अस्थूल, अस्थूल में भीन दिषावहो ॥ बड़ो अहै यह भूल सुझै तै प्रभु की कृपा ॥ चैा० ॥ गिरधरपुर का अस अहवाला । कहो बिचार विवेक सवाला ॥ जहां विवेक राव अवतारी । तहं वह जोगो जोग संभारी ॥ राउ अधर्मी देस बिचारी ॥ तंह वा सुष संगी गुष भारी ॥ जंह नृप देस अधर्मी दोऊ ॥ ग्यानी तहां न सपने कोऊ ॥ मूरष संग उपजे दुष नाना ॥ ग्यानी संग सुष सर्वस जाना ॥ तुलसीदास दीन परमाना । अैार अनेकों ग्रंथ बषाना ॥ जोग विरोध भेद बहु होई ॥ बनै न एक कहेउ सब कोई ॥ भेद सोई तहं वा दिषराना ॥ लषि न परै कोउ अपन बिराना ॥ बरन विवेक रहित भे देसा । नरनारी भए क्रूर कुबेसा ॥ उच्च कर्म गहि चोर चमारा । उतम सब विधि गहे विकारा ॥ (यहां से आगे पृष्ट कोरे हैं इस कारण अपूर्ण है) ।

Subject—ज्ञान बैराग्य ।

No. 315(*a*). Haridāsajī ke Padan kī Ṭīkā by Pītāmbaradāsa of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8×7 inches. Lines per page—40. Extent—540 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Śyāmakumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री बिहारी जी ॥ अथ श्रीमत् पीतांबर दास जी टीका श्रीमत् श्रीस्वामी हरिदास जी के पदन की लिष्यते ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय रसिक पद मन हिय करहु निवास। दुर्गम पद सुलभ करो श्री स्वामी हरिदास ॥ १ ॥ चौपाई—श्रीहरि दासी करि आराधि। श्री विपुल विहारिनि दासी साधि ॥ श्री सरस नरहरी के पद बंद। श्री रसिक कृपा सुं लहि रस कंद ॥ २ ॥ दोहा ॥ निमित श्री हरिदास करि कठिन रसिक रस देस। संसै पंडन को करै हियरै बिना प्रवेस ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ श्री गुरु के पद अतिसै गूढ़। समुझत नाहि नमी मतिमूढ़ अहो ॥ कहूं को अतिसै प्रौढ़ संत रसिक सब ध्याना रूढ़ ॥ ४ ॥ अति अकुलाति समझना परैं समझ बिनाना कार्य सरैं ॥ सुनत कहत रस हियरी डरैं इह संसै को निर्नय करैं ॥ ५ ॥ दोहा ॥ नमो नमो जय हंस सनक नारद बंदु। श्री निंबादित्य प्रकास भाव रसिका आनंदु ॥

End—झूलत डोल निकुंजवर दुतिय ओर नवबाल रापे रहत न हसति अति पिया प्रान प्रतिपाल ॥ १०७ ॥ पद ॥ श्रीकुंज विहारी झूलत डोल ॥ दुतिय ओर श्री रसिक स्वामिनी दोऊ मिलि करत कलोल ॥ मंद मंद झूलहु बाल त्यौं त्यौं हास्य करत अति प्रिय इति बोल ॥ श्री हरिदास कहत री प्यारी राषि लेहु पांत गहत कपोल ॥ ७ ॥ ६ ॥ राग नट ॥ दोहा ॥ रूप सघन बन डोलतें निकसे प्रिय सुकुवार। तन मन घन ज्यौं दामिनी सकल सुषन को सार ॥१०८॥ पद डोल सघन बनतें छुय आये। तन में तन मन में मन बिलसत घन दामिनि उपमा छबिछाये ॥ पीतम नित बरिषा रति चाहत मोरि चातकी पिक रट लाये ॥ श्री हरि दासि निरषि कित उपमा कुंज बिहारी अपने पाये ॥ १०८ ॥ इति श्री अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास जुके पदन के अर्थ संछेप मात्र लिषितं पीतंबर दासस्य बिरचितं। श्री बिहारिनि बिहारी जू जयति ॥

Subject—पृ० १—श्री हरिदास जी तथा अन्य गुरुजन बंदना, सेज वर्णन, रूप वर्णन, आंखों का सुख वर्णन। पृ० २—श्री कृष्ण के बदन की शोभा वर्णन, नूपुर ध्वनि वर्णन। पृ० ३—श्री कृष्ण के कौतुक वर्णन, श्री कृष्ण का मान वर्णन, श्री कृष्ण का गान वर्णन। पृ० ४—सखियों की विनय श्री कृष्ण प्रति, श्री राधा का मान वर्णन। पृ० ५—राधा का यौवन वर्णन

राजा का वशीकरन वर्नन, युगल छवि वर्नन। पृ० ६—युगल क्रीड़ा वर्नन, मुख शोभा वर्नन, नैन बाग वर्नन, युगल प्रेम वर्नन। पृ० ७—श्रीकृष्ण का बश वर्नन, श्री राधा की कृपा का वर्नन। पृ० ८—राधा का कंठ स्वर वर्नन, युगल प्रताप वर्नन, युगल हिंडोरा झूलन वर्नन। पृ० ९—राधा की चुनरी का वर्नन, चूड़ी का वर्नन। पृ० १०—श्री कृष्ण की मुरली की ध्वनि वर्नन, श्री कृष्ण चरन शोभा वर्नन। पृ० ११—राधा का कस्तूरी लेपन वर्नन, श्री कृष्ण का राधा से मान न करने का वचन लेना, १२—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्नन। नैन कटाक्ष वर्नन। पृ० १३—राधा की चतुरता वर्नन, युगल गान वर्नन। पृ० १४—श्री कृष्ण का राधा की मनाना। पृ० १५—श्री कृष्ण का राधा की वेनी गुंथना वर्नन। राधा कृष्ण का शतरंज खेलना वर्नन। पृ० १६—प्रातः काल उठने पर छवि वर्नन, युगल रति वर्नन, पावस का वर्नन। पृ० १७—रास वर्नन, वसंत वर्नन, सहचरि का युगल स्वरूप देखना वर्नन। पृ० १८—राधा की शोभा की श्री कृष्ण का देखना वर्नन, हिंडोरा झूलना वर्नन, वन भ्रमण और पावस का वर्नन। समाप्ति।

No. 315(*b*). Pitāmbara dāsa kī Bānī by Pitāmbara dāsa of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—64 Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—1,672 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Place of deposit—Bābu Śyāmakumāra Nigama, Rae Bareli.

Beginning—श्री बिहारी जी॥ अथ गुरु परंपराय नामावली लिख्यते॥ दोहा॥ श्री गुरु वर पर परम पद विधि हरि सिव सनकादि। सेवत सहचरि भाव नित नित्य विहार अनादि॥ १ दिव्य धाम बृंदा विपिन दिव्य गौर तन स्याम। दिव्य केलि कीड़त सदा दिव्य उपासिक वाम॥ २ स्वयं प्रकास बृंदावन धाम सनत कुमार आनि निहकाम। महल टहलनी धर्म दृढ़ायो। सो नारद बड़ भागन पायौ॥ ३ आचारज नारद वपु धारौ। पंचरात्र करि मत विस्तारौ॥ तानै गुरु पद राधा स्याम दिव्य स्यतन वन अभिराम॥ ४ सोमत श्री निंबादित्य गह्यौ श्री निवासनें सोई लह्यौ विश्वाचारज जो मत धारौ पुरुषोत्तम विलास विस्तारौ स्वरूपाचारज बड़े सुज्ञाता श्री माधव करि मत विख्याता आचारज बलभद्र प्रचंड पद्माचारज पावन पंड॥ ६ स्यामाचारज सब के स्वामी आचारज गोपाल सुधामी प्रगट कृपाल कृपा आचारज देवाचारज मत के धारज॥ ७ तिनके श्री ब्रजभूषन स्वामी श्री ब्रजजीवन तिनके अप नामी श्री जनार्दन बैरागी भूव श्री जनार्दन वंशीधर वंशीधर रूप॥ ८ श्री हरिवल्लभ भूधरदेव श्री मुकुंद

के गुरु हरि सेव श्री ललितमान तिनके पट राजें कन्हरदेव बहु संत समाज ॥ ९ वामदेव भए तिनकी गादी सुरति मान जोते बहु वादी पितांबर गहे तिहि ठौर चितामनि संतन सिर मौर ॥ १० जुगलकिशोर जुगल रस भोनो दामोदर हरि अपनों कीनीं कमल नयन तिनके मति धीर गोवर्द्धन तउ भये गंभीर ॥ ११

End—श्री पीतांबरदास भास इक रसिक उपासी ।
अविलोकत रस सार विहार सु सुष को रासी ॥
महामूढ़ते अंध जीव तम जहां प्रकास्यौं ।
दयो प्रेमरस हृदे रसिक जन अद्भुत भास्यौं ।
श्री हरिदास कुल विपुल विहारिनि मुष कमल ।
श्री रसिक सिरोमनि कृपा अति भान उदै रस कौ अमल ॥ ३

सवैया—प्रेम के मोद को मूरति सूरति आनंद मैं नित्य आनंददैना । श्री हरिदास के वंश उजागर आगर रूप महा मृदु बैना ॥ लाडिलो लाल लड़ावत भावत गावत रंग सुरंग को सैना ॥ पोय कहै प्रिये पाऊ पितांबर पिया कहै पिय है निज्जु नैना ॥ ४ इति श्री स्वामी पितांबर दास जूको प्रसंसा संपूर्णम् ।

Subject—पृ० १—गुरु परंपरा नामावली । पृ० २—गुरु मंगल वंदना । पृ० ३—१५—सिद्धान्त के पद । पृ० १६—२० परम उज्वल श्रृंगार रस के पद । पृ० २१—२५ हिंडोला वर्णन । पृ० २६—वसंत वर्णन । पृ० २७—३० व्रज होली वर्णन । पृ० ३१—३४—मांझ वर्णन । पृ० ३५—३९—सिद्धान्त की साषी (राधा वल्लभी सम्प्रदाय) पृ० ४०—श्रृंगार रस की साषी (रा० व०) पृ० ४१—स्वामी हरिदास जी की बधाई । पृ० ४२—विट्ठल जी का समुदाय वर्णन । पृ० ४२—४४ विट्ठल विपुल जी की बधाई ॥ पृ० ४५—बिहारीदास जी की बधाई । पृ० ४६—सरसदास जी की बधाई ॥ पृ० ४७—४८—नारहरिदास जी की बधाई । पृ० ४९—रसिकदास जी की बधाई । पृ० ५०—श्री रसिक विहारिनि नव मंदिर मैं विराजे उस समय की बधाई । पृ० ५१—५४ स्वामी नरसिंह देव जी की प्रसंसा । पृ० ५५—५७—श्री कृष्ण की भक्तजनों द्वारा स्तुति । पृ० ५८—६३—स्वामी रसिक दास जी की वंदना । पृ० ६४—पीताम्बर दास जी की प्रसंसा वर्णन ।

No. 315(c). Samaya Prabandha by Pitāmbardāsa of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—475 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of

manuscript—Samvat 1801 or A. D. 1744. Place of deposit—Bābu Śyāmkumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री विहारिनि विहारी जु जयति ॥ चौपाई ॥ नमो नमो महा मंगल धाम। वृन्दा विपिन सुषद विश्राम जैति प्रिया पति उत्तम ठाम (श्री) रसिक सिरोमनि तन अभिराम ॥ १ नमो जयति जमुना निज्ञु संगी नमो सहचरी प्रान सुरंगी महा मंगल जै श्री हरिदासि। (श्री) वोठ्ठल विपुल विहारनि पासि ॥ २ पुनि प्रनाम श्री सरस सहेली। (श्री) नरहरि दसि प्रेम को वेलो ॥ धाम स्वामिनी मुरति भनो। (श्री) रसिक विहारनि प्रगट वषानौ ॥ ३ ॥ वारंवार वंदन करं धरं रसिक होय ध्यान। अगम अगोचर अलष हे प्रगटे रसिक सुजान ॥ ४ अति दुरलभ्य दूरि ते दूरि। ते प्रगटे प्रभु निकटि हजुरि ॥ (श्री) रसिक सिरोमनि विनहि लषावे। निज्ञु संगोते दरसन पावे ॥ ५ ॥ सोरठा ॥ (श्री) कुल अति विस्तार ध्यान करत वहु दिन चहै। तौ हू मिलत न पार नांउ लेत जैते निकट ॥ ६ ॥ निकट वृत्ति एते रहे इन कौ मेरे ध्यान गरीबदास गोविंद जै वल्लभ श्री भगवान ॥ ७ ॥

End—सहचरि के भागनि सुषो रुप ले चलत सुभाय। दंपति संपति सुष सरस छिन छिन प्रति दुलराय ॥ ९६ यहे ग्रंथ हिय ग्रंथ नसावे श्री गुरु कों सुष निरखे पावे लंपट सठ के हिये न आवे सत संगति मिलि निर्मे गावे ॥ ९७ श्री हरिदासि विपुल सिरनावे विहारिनि दासी दिन दुलरावे। सरस नरहरी सुष दरसावे श्री रसिक कृपा पीतांवर पावे ॥ ९८ समय प्रबंध ग्रंथ को नाव। कर विचार तासु वलि जाव है अविरुद्ध सुद्ध यह लहे चरन रसिक पीतांवर गहे ॥ २९९ विषै रहित रस रसिक उपासी तिनको मति या मत मय भासी नीरस श्रवन सुनत नहिं भावे रसिकन के हिय रस उपजावे ॥ ३०० रसिक कृपा पद जुग कमल मूरति जुगल किशोर पीतांवर के प्रान सुष रसिक राय सिर मौर ॥ ३०१ ॥ इति श्री समय प्रबंध संपुर्ण ॥ दोहा ॥ विपन नित्य नवकुंज में सहचरि के सुषदेन। (श्री) जुगल विहारी कीड हो रसिक प्रियाहि समेत नवनिकुंज एकांत सुष कथा श्रवन मनमोद जो जो उपजत भाव रस रसिका नंद विनोद ॥ २ प्रथम वास्य (श्री) हरिदासि के पीछे विपुल विहार श्री गुर नागरि सरस जु (श्री) नरहरि रसिक अधार ॥ ३ धाम स्वामिनी सहचरी लयो निरंतर स्वाद विनु जानें मत कोजियो गुढ़ ग्रंथ विवाद ॥ ४ संमत सहचरि मिलि कियो अष्टादस सत एक। दुतीया मंगल लाड़िलो मंजियें सुघर विवेक ॥ ५ श्री वृन्दावन कुंज में (श्री) रसिक विहारी पासि। पीतांवर की प्रीति सों लिषत सो व्रज दासि ॥ ६ ॥ इति श्री ॥

Subject—पृ० १—वृन्दावन, श्री कृष्ण, यमुना और हरिदास जी तथा अन्य गुरुओं की स्तुति वंदना। गोविंद दास की वंदना और अन्य भक्तों की वंदना। पृ० २—गुरु महिमा वर्णन। सत्यता की महिमा। पृ० ३—विषय भोग की निंदा। पृ० ४—वैराग्य के लक्षण। सतसंग महिमा। पृ० ५—भक्ति की महिमा। पृ० ६—श्री कृष्ण का पावस में हिंडोला झूलना। पृ० ७—१०—गुरु उपदेश से ज्ञान की प्राप्ति और उसके अनुसार प्रेम से श्री कृष्ण की प्राप्ति वर्णन। संध्या समय आरती का वर्णन। पृ० ११—दीपमालिका की शोभा का वर्णन। राधाकृष्ण का प्रेम वर्णन। पृ० १२—प्रात समय शिष्य को गुरु वंदना का उपदेश। स्नान शृंगार करने का उपदेश। गान करके श्री कृष्ण को रिझाने का उपदेश। भोजन कराने का उपदेश। पौढ़ाने का उपदेश। पृ० १३—पतिव्रता स्त्री की भाँति श्री कृष्ण की पति समान सेवा करने का वर्णन। १४—शरद ऋतु में श्री कृष्ण का रास वर्णन। १५—राधा का नख शिख वर्णन। १६—राधाकृष्ण की केलि का वर्णन। प्रातःकाल की मंगल आरती। पृ० १७—१९—वसंत ऋतु में वृन्दावन शोभा और श्री कृष्ण राधा तथा अन्य सहेलियों के साथ रहस्य वर्णन। २०—ग्रंथ की प्रशंसा उसका नाम और समाप्ति। निर्माण संवत और प्रतिलिपि कर्ता का नाम वर्णन।

No. 316(*a*). Bhramaragita by Prāgana kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—13. Extent—521 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Paṇḍita Śivadānī Lāla Miśra, Village Muhammadpur Khālā, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भँवरगीत लिष्यते ॥ सिष निजु गाइ के गहियो पालागन दोऊ भैया को मैया सो कहियो ॥ हम हैं तिह्मारे पग के पाछे सुरति काति रहियो ॥ जोग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति रीति लहियो ॥ कहियो न कछु कटुक उनसो तुम कहैं सो सब सहियो ॥ सीतल वचन सोचियौ रसहो दहो न फिरि दहियो ॥ देषि दसा उनको हम को तुम दोष दियौ चाहियो ॥ प्रागनि वृजवासिन के हिय को प्रेम सिंधु थहियो ॥ १ ॥ राग आसावरी ॥ आयसु दोन्हे सषा सुजानहि स्यंदन चढे सिधारे वृज को सुधि रावरे आनहि कैसे है जसुदा जननी जिन पालि किये परको मोहि अक्रूर वैतोत होहि ओ पर पूतन आयोन ॥ महियो पाइ नंदवावा के

कहियो यहै संदेसो जो नम किथैा महाकृत हम को गनन सकल गुन सो समाधान कीजो गो पन को दोजो निर्मल ज्ञान ॥ कहियो जोग जुगति सों पागन त्रकुटी संजम ध्यान ॥ २ ॥

End—ऊधैां तोसों कहै निरंतर निज भक्तन मों रहतु हैां वेदातीत कोऊ नहि जानत यहै हमारै प्रभु है हैां निरलोप निरंजन निर्गुन कारन ते वपु धारैां ॥ कर्म रहित अपनी इच्छा ते प्रगटतु हैां जुगचारों ॥ देह अदेह तकत है मेरी ज्ञानि दृष्टि करि कोइ ॥ त्यागे देह बहुरि नहि पावै जन्म जगत में सोइ ॥ यह मत है देवनि को दुर्लभ गुप्त हिये मों राषि ॥ प्रानन्नि तोसों बहुरि कहैां गो देउ पक्षादस साषि ॥ ५३ ॥

इति श्री प्रागन कृत भ्रमर गीत समाप्त सुभ मस्तु संवत १८८६ ॥ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां सुक्र वासरे ॥ राम राम राम राम राम राम

Subject—(१) पृ० १—५ तक—उद्धव का कृष्ण जी का संदेशा लेकर व्रज को जाना, अपनी माता यशोदा तथा नंद को अभिवादन कथन पर्यंत गोपियों की खबर मंगाना, ऊधैा का निहारना, वृज में पहुंचना, गोवन का दैाड़ कर आना, जसोदा द्वारा उद्धव का सत्कार और श्याम की सुधि पूछना, नन्द बाबा का भी आना, नंद का भी दोनों पुत्रों की प्रसन्नता का समाचार पूछना और उपालम्भ सुनाना (२) पृ० ६-१० तक—उद्धव का कृष्ण द्वारा माता पिता को भेजा हुआ संदेश यदवत् सुना देना, उन दोनों का कोरे शब्दां से ही समाधान न होना और रात भर इसी चर्चा में बिता देना । प्रातःकाल होते ही माता का उद्धव से कथन कि ज़रा वृषभान के घर चल कर गोपियों का समाधान तो कर आइये । उद्धव का गमन, गोपियों का मार्ग में ही मिल जाना, गोपियों द्वारा इनका नामादि पूछा जाना, उद्धव का नामादि बताना, गोपियों का प्रसन्न और प्रेम गद्गद् होकर अवधि तक जीवन रखने की बात कहना, उद्धव का असमंजस, (३) पृ० ११—४८ तक—गोपियों की उक्तियों को सुन कर मन में उद्धव का कथन कि "हरि को चुनाती है, यहीं आकर इन से जीतें" । गोपियों का कथन कि "हमारे व्रज का तो मार्ग ही पृथक है—हमें तो कृष्ण के दो गुण, (१) उनकी सांवली त्रिभंगी मूरत और (२) उनकी चारु मुरलिका पसंद है और वही मूर्ति हमारे नेत्रों में बसी हुई है । कृष्ण कृत अनेक चरित्र सुना कर गोपियों का प्रेम में मुग्ध हो जाना, उद्धव का गोपियों द्वारा योग का खंडन सुनना और प्रेम का पाठ पढ़ कर मथुरा को लैाटना । मार्ग में चिन्तित होना कि आज्ञा तीन दिन की थी और लैाटना छ मास में है । (४) पृ० ४९—५४ तक—कृष्ण के पास उद्धव का पहुचना, कृष्ण का उद्धव आगमन सुन कर किसी आदमी द्वारा

बुला भेजना, उसके पहुंचने के प्रथम हो दूसरे को भेजना उद्धव का आगमन, कृष्ण का माता पिता तथा गोपियों का समाचार पूछना, उद्धव का सब समाचार सुनाना, गोपियों का संवाद सुनाते सुनाते उनका मूर्छित होकर गिरना, कृष्ण का उनको सचेत करना और प्रेमवारि बरसाना, उद्धव को स्तुत व्रज में जाने के लिये करना, कृष्ण का व्रजवासियों का और अपना साम्य प्रदर्शित करना, कृष्ण द्वारा उद्धव को समझाया जाना, अपने में हो गोपियों को बता कर उन्हें वेदों की ऋचायें प्रमाणित करना। ग्रंथ समाप्ति।

No. 316(*b*). Bhramaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—6½ × 4½ inches. Lines per page—18. Extent—270 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Raj Pustakalaya, Bhinagā (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ लिख्यते भ्रमरगीत राग बिलावल ॥ आयसु दीन्हो सखा सुजान नहि। स्यंदन चढ़ी सिधारे व्रज कें सिद्धि राखरे प्रानहि ॥ कैसे हैं जसुदा जननी स्निग्ध पालि कियो परबीन। मोहि आकुल रूव हानि हाइगो पर पूतन्ह आधीन ॥ गहियो पांव नन्द बाबा के कहियो यहे संदेसो। जो तुम कियो महा कृत हम सों गनि न सकत गुन लेसो ॥ समाधान कीजिहु गोपिन्ह कर दीजिहु निर्मल ज्ञान। कहियो जोग जोगति सो प्रागनि त्रिकुटी संजम ध्यान ॥ १ ॥ सिख निजु गाढ़े करि गहियो। पालागन दोऊ भैया को मैया सों कहियो ॥ हम हैं तिहरे पय कै पोषे सुरति करति रहियो ॥ योग संदेस सुनाइ त्रियन को प्रीति नीति लहियो ॥

End—ऊधो सो हों रहत निरंतर निज भगतन में रहतु हैं। बेद अतीत ताको सुत को यहे हमारो मतु है ॥ हों निर्लेप निरंजन निरगुन कारन ता वपु-धारी ॥ कर्म रहित में अपनी इच्छा प्रगटतु हौं तुम चारी ॥ देह धरेहु तको मति कोऊ ज्ञान दृष्टि को कोऊ ॥ छांडे देह बहुरि नहि पै हैं अनमत जग में सोऊ ॥ यह मत है देवन कौं दुर्लभ गुप्त हिय में राखो। प्रागनि तो सें फेरि मिलेंगो दये एकादश साखो ॥

इति श्री प्रागनि कृत भ्रमरगीत समाप्तः ॥

बरवै कातिक शुक्ल एकादसि मंगलवार। बारह से अरु छप्पन सन तब आर ॥ सुभ मस्तु लिख्यते अर्जुन सिंह हाड़ा पठनार्थं पाड़े नैपाल राम के ॥ इति।

No. 316(*c*). Bhramara gita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—45. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—14. Extent—350 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1269 Fasli or 1852 A. D. Place of deposit—Śrī Ṭhākura Guruprasāda Siṁhajī Bisen, Guṭhawā, District Bāhrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कृष्णे ना च गते नितान्त मधुना मृद् भक्षिता स्वेक्षया । सत्यं कृष्ण क एव माह मुशली मिथ्याँव पश्याननम् ॥ व्या-ददीति विदारिते च वदने दृष्टा समस्तं जगत् ॥ माता तत्र जगाम विस्मय पदं पायोत्सवः केशवः ॥ १ ॥

No. 316(*d*). Bhāwaragita by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1893 or A. D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Prasāda Siṁha, Village Kaṭailā, Post Office Fakharpur, District Bahrāich (Oudh).

No. 316(*e*). Bhramaragīta by Prāgana. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—9½ × 5½ inches. Lines per page—32. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 18.2. Place of deposit—Paṇḍita Kedāra Nātha, Uttarapārā, Rāe Barelī.

Beginning—प्रथम के पृष्ट नहीं हैं।

राषत हो कुसुमन पर कुलिसन विहित विचारत नाहिं ॥
यक तो हम पर विरह व्यापि भो प्राननि प्रगम पसूझ ।
सो मूदत हो जोग जंत्र दै वाउ तुम्हारो बूझ ॥ १८ ॥
मधुकर यह विपरीत कहत हो ।
हो तुम चतुर चतुर मथुरा पुर चतुर समाज रहत हो ।
दीपक वरै वारि कै नाये बुझै पनल घृत धार ।
तब कबहू ब्रज की जुवतिन सों परै जोग ब्रत पार ॥

जागो जोग त्यागि रस भुगवे भोगो मम्मम लगावे।
तब हमहू जोगिनी वेष धरि अलष निरंजन ध्यावे॥
नियहै नहि निरगुन नारिन सों सुनौ ऊधौ मत सोका।
देषो सुनी कहू यह प्रानिन चलत नीर बिन नौका॥ १९॥

No. 317. Rāmāyaṇa Nāṭaka by Prāṇachanda Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—2,880 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Bahraich (Oudh).

Beginning—

लंका देषि पवन सुत आवहु। जियत जानकी आनि सुनावहु॥
तेहि पाछे हम रचहि उपाई। औ करिहै सुग्रीव सहाई॥
लंका दानौ अति बल बोरा। क्रोध निवारि कियेहु चित धोरा॥
आपनि रछ्या कियेहु संभारी। बाद बेवाद करेहु जनि भारी॥

दोहा—सीता सों अस भाषेहु मन जनि होहु अधीर।
आउ राम सयन रचि कै लछिमन रनधीर॥ १३३॥

पै अस कहेउ पन हम लीन्हा। रावन बध्या प्रतिज्ञा कीन्हा॥
यह मिति प्रान रहै घट माहो। नत तुव मिलन कहां हम काहीं॥
तुम बिनु अस हों भयो वियोगी। परम तत्व जस चितवै जोगी॥
सोभा तजि गै आठौ अंगा। मनि गवाई जस फिरै भुअंगा॥
अंधरे लकुटी मनहु बिसारी। औ टूटत फिरि हाथ पसारी॥
धनिक महत कै सब जग जाना। धनहि गये तृन तुल्य समाना॥

End—हांक्यो रथ आगे कहा धनुक हाथ लै बान।
सनमुख रहे न बांदर देखिय काल समान॥ ३३०

आइ भयो कपि दल सब पेलो। जैसे मंद्र सिधु कर केलो॥
तब सुग्रीव दीन रन हांका। क्रोधवंत ह्वै रावन ताका॥
रावन कीन्ह सो दिढ़ कै ठाना। कपि के हृदय लाग संधाना॥
अंगद हृदै लाग जब बाना। भेदेहु बीस बान हनुमाना॥
आठ बान मारेसि जमवन्ता। औ मारेसि नलनील तुरंता॥
तब रघुपति कहं मारै ताका। आगे दीन्ह भभीछन हांका॥
देखि भिभीछन दैत रिसाना। काल समान लीन्ह कर बाना॥
छाड़यौ बान दहत परचंडा। लछमन काटि कीन्ह सतखंडा॥

निफलबान भो दइत रिसाना । ब्रह्मक दत्त लीन्ह कर बाना ॥
तीक्षन बान बाउ परचंडा । सो रघुनाथ कीन्ह सतखंडा ॥

दोहा ॥ जूझ भयेउ दुनहु दलन बरनत बरनि न जाय ।
प्रलैकाल जल बुंद्दरै घन गरजै घहराइ ॥ ३३१ ॥

बर्षहि बुंदबान चहुँघोरा । चमकि पर्न जनु बोजक जोग ॥

Subject—हनुमान जी का सीता जी के खोजने के लिए समुद्रतट पर जाना ग्रैार समुद्र का दोनों सिरों पर पहाड़ तयार कर देना, लंका निरोक्षण, सीता रावण संवाद । दोहा । १३२—१५३ तक । सीता हनुमान संवाद, ग्रैार उनका ग्रशोक वाटिका उजाड़ कर, लंकादहन कर लैाट ग्राना । दो० १५३-१७३ तक । हनुमान राम संवाद, विभीषण रावण संवाद, विभीषण का राम की शरण जाना, सेतुबंध वर्णन । दो० १७४—१९७ तक । सुकसारन का सेतु निरीक्षण, अंगद रावण संवाद, दो०—१९२—२९२ मंत्री ग्रैार रावण संवाद, मंदोदरी ग्रैार रावण संवाद, वानरों की चढ़ाई, रावण का गुप्तचरों को राम की सेना की दशा देखने को भेजना, दोनो सेनाग्रो का युद्धारम्भ ग्रैार मेघनाद का राम की सेना को नागफांस में बांधना । दो० २९३—३१४ तक । इन्द्रादि का घबड़ा कर रावण की शरण जाना । गरुड़ का ग्राना ग्रैार नागफांस का काटना, प्रहस्त ग्रैार नीलयुद्ध ग्रैार प्रहस्त का मारा जाना । दो०—३१५—३२५ तक । मंदोदरी रावण संवाद, महोदर ग्रकंपन ग्रैार कुंभकर्ण का युद्ध करना, लक्ष्मण को शक्ति लगना, राम का विलाप ग्रैार हनुमान का ग्रैाषधि लाना, फिर युद्ध होना ग्रैार रावण का घायल होना, दो०—३३६—३५१ तक । कुंभकर्ण ग्रैार राम युद्ध वर्णन । दो ३५२—४०० तक, हनुमान द्वारा त्रिशिरा, ग्रकंपनादि वध, लक्ष्मण द्वारा ग्रतिकाय वध, मेघनाद का सब को मूर्छित करना, मेघनाद वध दो० ४०१—४२३ तक । ग्रहिरावण वध । दो०—४२४—४५१ ॥ तक दोनो सेनाग्रों का युद्ध । दो० ४५२—४५८ दोहे तक ।

ग्रपूर्ण ।

No. 318. Añjira Rāsa by Prāṇanātha. Substance-Country-made paper. Leaves—452. Size—11 × 9½ inches. Lines per page—27. Extent—24,080 Anushṭup Ślokas. Appearance—Clean. Written partly in verse and mostly in prose. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1751 or A. D. 1694. Place of deposit—Amiruddaulah Public Library, Kaisarbāgh, Lucknow.

Beginning—नित नाम श्री कृष्ण जी ॥ अनाद अक्षरातीत ॥ सो तो अब जाहिर भये सब विधि वतन सहीत ॥ १ श्री देवचन्द जी सत छे ॥ सदा सब सुखना दातार ॥ बीन तड़ी ए कवन मा भुज अगतानो: अविधार ॥ २ ॥ वाणी वाला जीतणी अलगो जे संसार । निराकार नेपारथी ॥ ते पारने वलो पार ॥ अंग उतकंठा उपनो मारे करवो एह विचार ॥ ए वाणी मथी माहे थी तेवोछे सरव सार ॥३॥ इनसार माहे कै मत सुख ॥ तेह निरने कर्ह निरधार ॥ ए सुख देउ साथ ने ॥ तोह अंगना नार ॥ ज्यारे ये सुख अंगमा आवसे ॥ त्यारे छुटो जाए विकार ॥ आयो आनन्द अखंड घर तणे । श्री अक्षरातीत भरतार ॥ ५ ॥ श्री श्री रास श्री किताब पंजीर को लिखी है ॥ जो बानी प्रबोध पुरा हवसा में उतरी है सो सुरु ॥

Middle—हरद्वार ठाये रे उठाये तपसी तीरथ ॥ गै बध कै थै विघन ॥ ऐसा जुलम हुआ जग में जाहिर ॥ जग में जाहिर ॥ तो भी कमर न बांधी किन ॥ सुर ने केहे लापरे सेवा करें असुर को ॥ ज्यों दाह बाय उड़ावे देह ॥ हिन्दु ना मेरे सिन्यातिन को होए बड़ी ॥ एसा कुलोप कोवा के हेर ॥ १४ ॥ प्रभु प्रत मारे गज पाउ बांध के ॥ घसीट के खंडित कराए ॥ करम बांदीं ताको करके तापर मलक चलाए ॥ १५ ॥ असुरें लगायो रे हिन्दु पर जेजिया ॥ वाको मिले खान पान जो गरीब न दे सके जोजिया ॥ ताए मार करे मुसलमान ॥ साखों आवरदा कही कलयुग की ॥ चार लाख बतीस हजार ॥ काटे दिन पावें लिखा बांचे साखों ॥ सो पाइए अरथ के बिचार ॥ १७ ॥ सोळेसै लगेरे साका साल बाहन का ॥ संवत सत्र से पेतीस बेठाने साकोर बिजोयाभिनंद का ॥ यु कहे साख पैार जोतीस ॥ १८ ॥ (पन्ना १४२)

कलजुगे चेत थंत के सब कोए ॥ लोक बतावे अजहर थंत ॥ अरथ अंदर का कोई ना पावे ॥ बारे अरथ बाहिर के ले डुबत ॥ ए बात सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने ॥ आगे आये खड़ा ले तरवार ॥ सेवाने लईरे मारो सिर खेंच के ॥ साईएकोया सिन्धापती सिरदार ॥

End—ए गत साहिबे छत्रसाल सों कही ॥ घर ईमाम विलंदो कता को दई ॥ ९-॥२३। ५२५ ॥ नोमो आगे अरफा ईद कही । ले दसमी आस सब लीला भई ॥ मजले सब आपार हीमच ॥ सो कहे कुरान विवेक कै विधि ॥ ए आपारही बीच बड़ी विस्तार ॥ प्रगटे विलंद सब सिरदार ॥ सब न्यामतें सिफतें दई सितार ॥ उतरो यां आए तें उस्तैवार ॥ छिप्यां था बुजुरुक वखत ॥ जाहिर हुआ रोज दिखाए क्यामत ॥

आपारही सुख ले चले सिरदार ॥ पीछे बारें में जलेब बदकार ॥ जिन पाई राह रोज क्यामत सो उठे फजर के नूर वखत फजर पीछे तब आया दिन तब

तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥ तब तो दरवाजे मंद के गया । पीछे तो नफा काड़ को ना भया ॥ सब जले जलवा यजाजील जो प उठाया यसराफील ॥ एक मर्गे उड़ा सके दोय ॥ दूसरे तेरे में काइम कोय ॥ यूं क्यामत हुई आहिर दिन ॥ महमदे करा उयत रोसन है ॥

६ । २४ ॥ ५३१

Subject—इस ग्रन्थ में निम्नलिखित पुस्तकें सम्मिलित हैं :—

१—श्री रासलीला किताब पेजीरं	पन्ना	१ से २४	तक	छन्द	२१२
२—श्री प्रकास (हिन्दुस्तानो अंबूर)	,,	२४ से ५७	,,	,,	११८४
३—पट ऋतु	,,	५७ से ६१	,,	,,	१७७
४—बारामासो	,,	६१ से ६४	,,	,,	५३
५—श्री कलस (तैारेत)	,,	६४ से ८१	,,	,,	७६२
६—श्री सनंधें	,,	८२ से १२३	,,	,,	१६०३
७—श्री कीर्तन (पुरानी बानी)	,,	१२४ से १८०	,,	,,	२०६८
८—किताब खुलासा को	,,	१८१ से २०७	,,	,,	१०१९
९—श्री खिलवत (गैब की सूरत)	,,	२०८ से २३६	,,	,,	१०७४
१०—श्री परिक्रमा बड़ो (अर्स को)	,,	२३६ से २९९	,,	,,	२४८०
११—छोटो सागर	,,	३०० से ३२९	,,	,,	११२८
१२—बड़ा सिंगार	,,	३२९ से ३८७	,,	,,	२२१०
१३—सियो वानो	,,	३८७ से ४०१	,,	,,	५२४
१४—मारफत सागर	,,	४०२ से ४२७	,,	,,	१०२४
१५—छोटा क़यामत नामा	,,	४२७ से ४३४	,,	,,	२१७
१६—बड़ा क़यामत नामा	,,	४३४ से ४४७	,,	,,	५३१

विशेष विवरण के लिये इस रिपोर्ट के पृ० ४ से ९ तक देखो ।

No 319 (*a*). Vaidyadarpaṇa by Prāṇanātha. Substance—Country-made paper. Leaves—315. Size—13½ × 5¼ inches. Lines per page—20. Extent—7,875 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1941. Place of deposit—Paṇḍita Śivarāma Śāstrī, Kharagapur Kusha, District Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः नमस्कृत्य गणेशानं महेशानं महेश्वरीं ॥ वैद्य दर्पन मापस्ये वैद्यानां हित काम्यया । पिआनुभूता ये योगा ये च सद्वैद्य संमताः ॥ तएवात्र निगंद्यंते न सरै वैद्य दर्पणे ॥ स्वर्गाद्या धातवो येस्युः तथा

तदुप धातवः रसाश्चो परसाश्चैव आवंतो जगतीतले॥ रत्नानि चोपरत्नानि वधान्युप विया निच॥ शोधनं मारणं तेषां वक्ष्याम्यादौ समासतः॥ तैलपाक विधिश्चैव तथा तीस प्रमानकं॥ युक्तायुक्त विवेकानि खंडे प्रथम ए यहि॥ तदुत्तरं ज्व रादीनां कथयामि चिकित्सितं॥ तत्र धातूनां संख्या माह॥ स्वर्ण रौप्यं च ताम्रं च रंगं बसह मेव च॥ शिशं लौहं च सप्तेते धातवः कथिता बुधैः॥ अथ सप्त धातूनां शोधणं॥ तैले तक्रे च गोमूत्रे कांजि के च कुलथ्थके॥ त्रिधा त्रिधा विशुद्धिः स्यात्स्वर्णादीनां समासतः॥ केचि हदंति रंभाया मूलवारिणि सप्तधा। शुद्धं तिधातवाः सर्वे तत्त तत्त विवेचनात॥ टीका॥ यक तोले सुवर्ण के पत्र कंटकावेधो पाठ पत्र करै॥ यही भांति रुपे के॥ यही भांति तावें के॥ श्रौर लोहे के टुकरे कै लेइ॥ सो आगि मां धौकि धौकि बुझावो वार तीनि प्रथम तिल के तेल मा फेरि माठा मा फिरि गोमूत्र मा फेरि कांजी मा॥ फेरि कुल्थी के काढ़ा याके चित केला के पानी मा बुझावै सात वार तौ सातो धातुइ शुद्ध होइ॥

End—न कुर्य्यात्पंच कर्म्माणि रक्त श्रावात दाहनम॥ पाचनं स्निहनं स्वेदं वमन शोधनं कमात॥ इति श्री पाराशाथ कृते वैद्यदर्पनो नाम ग्रन्थ समाप्तः शुभ मस्तु॥ सम्वत १८९८ ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितिय यक्रु भृगवासरे॥ जस प्रति देष तसि लिष मम दोपो न दियते॥

Subject—पृ० १—सप्त धातु संख्या, सप्त धातु शोधन, सप्तधातु मारण। पृ० २—सप्तधातु पृथक पृथक मारण, स्वर्णगुण, रैाप्य मारण। पृ० ३—ताम्र मारण। वंग मारण, रांगे को निरुत्थ भस्म किया। पृ० ५—जस्ता मारण, सोसा मारण, पृ० ६—लोहा मारण। पृ० ७—स्वयमाग्निसार को किया। पृ० ८—लोह कीट शोधन मारण। पृ० ९—मंडूर करण। सप्त उपधातु नाम शोधन, पृ० १०—कांस पीतल मारण, स्वर्ण माक्षिक, रौप्य माक्षिक शोधन, स्वर्णमाक्षिक मारण, पृ० ११—तुतिया शोधन। पृ० १२—सेंदुर शोधन, शिलाजीत शोधन, खपरिया शोधन। पृ० १३—पारद शोधन, ईंगुर से पारा निकालने की क्रिया, पृ० १४—षड्गुण गंधक जारन विधि, पारा की पोठी बनाने की क्रिया, पारद मारण, पृ० १५—रसकपूर को क्रिया, पृ० १६—परसानाम शोधन मारण, गंधक उत्पत्ति शोधन। पृ० १७—गंधक अर्क पातन, हिंगुल शोधन, मारण, पृ० १८—हरताल शोधन मारण। पृ० १९—हरताल का सत्त पातन विधि। पृ० २०—२३ तक—मैनशिल शोधन मारण। अभ्रक शोधन मारण, पृ० २४—अभ्रक से पारा निकालने को क्रिया, चन्द्रोदय को किया, अभ्रक सत्त पातन विधि। पृ० २५—कैसुषा का सत्त निकालने की विधि। पृ० २६—सब सत्त निकालने की विधि, सत्त मारण, वराटी शोधन, रत्नोपरत्न शोधन। पृ० २७—वज्र शोधन, मारण, मूंगा

मोती मारण, वैक्रांत शोधन, विषोप विष शोधन मारण, सुमिल शोधन। पृ० २८—धतूरा शोधन, कुचिला शोधन, अफीम शोधन, उपविष शोधन, जमालगोटा शोधन, नख शोधन। होंग कपूर शोधन, घृत शोधन, पृ० २९—पुराना घृत माह। पुराना गुड़ माह, तैल शोधन, तैल द्रव्य पाक विधि, तैल मास निर्णय। पृ० ३०—तैलवाकेत्राटी मूत्र निर्णय, देशव्यवस्था माह। पृ० ३१—परिमाषा तोल प्रमाण युक्तायुक्त विचार। पृ०—३२—भैषज्य काल माह, जोमनो मख, गजपुट प्रमाण, मध्य पुट, लघु पुट माह, पृ० ३३—यंत्र प्रकार वर्णन। मर्झिकम वर्णन। भावनाक्रम वर्णन, सक्त बनाने को क्रिया, कांजी कलहंस कांजी वर्णन। पृ० ३४—सत्वन क्रिया, पृ० ३५—पंचामृत वर्णन, त्रिक्षार वर्णन, क्षाराकं वर्णन, पंचलवण त्रिलवण वर्णन, त्रिगात चातुर्थ्यांत वर्णन, पंचपल्लव, पंचवल्कल, पंचकषाय वर्णन, दशमूल, पंच प्रसू वर्णन। मूल पंचाल पंचक वर्णन, पृ० ३५—हीनवीर्य्य को औषधि, हीनवीर्य सेंदूर रस, नाग सेंदूर महा सेंदूर। पृ० ३६—स्वर्ण सेंदूर चन्द्रोदय, मकरध्वज रस, पृ० ३७—महाचन्द्रोदय, पृ० ३८—वागेश्वरी गुटिका, पृ० ३९—मृत वज्रस्य गुण। पृ० ४०—वज्रेश्वरी रस, पृ० ४०—वज्रयार रस पृ० ४१ हीनवीर्य कामदेव वटी। पृ० ४२—कामदेव रस। पृ० ४३—पूर्ण चन्द्रोदय रस, पृ० ४४—अनंग सुंदरी वटी, मदन मंजरी वटी, पृ० ४५—कामदेव चूर्ण। पृ० ४६ ४७ ४८ हीन वीर्य्यपाक। प्रथम खंड समाप्त।

पृ० ४९—नाड़ी, मूत्र परीक्षा, पृ० ५०—साध्यासाध्य लक्षण। पृ० ५१—५९ सर्व ज्वर सामान्य चिकित्सा। पृ० ६०—७४ तक। विशेष ज्वर चिकित्सा, वात, पित्त, कफ व्याधि चिकित्सा, पृ० ७५—८४ तक। त्रिदोष सन्यपात चिकित्सा। पृ० ८५—८९ तक, विषमज्वर चिकित्सा। पृ० ९०—९६ तक, जीर्णज्वर चिकित्सा। पृ० ९७ आगंतुक रोग चिकित्सा। पृ० ९८ भूतज्वर चिकित्सा। पृ० ९९—१०९ तक, अतीसार चिकित्सा, पृ० ११०—११३ तक, संग्रहणी रोग चिकित्सा। पृ० ११४—१२० तक, अर्शरोग चिकित्सा। पृ० १२१—१२३ तक, मंदाग्निरोग। चिकित्सा, पृ० १२४—१२५ तक, भस्मक रोग चिकित्सा। अजीर्ण रोग चिकित्सा। पृ० १२६—१२८ तक, विशूचिका रोग चिकित्सा। पृ० १२९ कृमिरोग चिकित्सा। पृ० १३० पांडुरोग चिकित्सा। पृ० १३१ कमलारोग चि०। पृ० १३२—१३५ तक, शोथ रोग चिकित्सा। पृ० १३६ मेदरोग चिकित्सा। पृ० १३७—१४० तक, कृशाङ्ग पुष्टि करण। पृ० १४१—१३५ तक, रक्तपित्त रोग चिकित्सा। पृ० १४६—१५१ तक, राजरोग चिकित्सा, पृ० १५२—१५३ तक। राजरोग भेद वर्णन। कासरोग चिकित्सा, पृ० १५४ श्वासरोग चिकित्सा, पृ० १५५ हिचकी रोग चिकित्सा। पृ० १५६—१५७ तक। स्वरभंग चिकित्सा, पृ० १५८ अरुचि रोग चिकित्सा।

पृ० १५९ क्षयीरोग चिकित्सा। पृ० १६०—१६१ तक, तृषा रोग चिकित्सा, पृ० १६२ मूर्छा रोग चिकित्सा। पृ० १६३ भ्रमरोग चिकित्सा, तन्द्रारोग चिकित्सा, निद्रादाह रोग चिकित्सा। पृ० १६४—१६७ तक, उन्माद रोग चिकित्सा। पृ० १६८ मृगीरोग चिकित्सा। पृ० १६९—१८० तक, वात व्याधिरोग चिकित्सा। पृ० १८१—१८५ तक। कंपरोग, चिकित्सा। पृ० १८६ आमवात चिकित्सा। पृ० १८७—१८८ तक। कफरोग चिकित्सा। पृ० १८९ पित्तरोग चिकित्सा। पृ० १९० अम्लपित्त रोग चिकित्सा। पृ० १९१ रक्तपित्त रोग चिकित्सा, पृ० १९२—१९५ तक। शूलरोग चिकित्सा। पृ० १९६ उदावर्त रोग चिकित्सा। पृ० १९७ गुल्मरोग चिकित्सा। पृ० १९८ उदररोग चिकित्सा। पृ० १९९ कूष्मांड तार। पृ० २०० प्लीह रोग चिकित्सा, पृ० २०१ जलोदर चिकित्सा। पृ० २०२ कोष्टबद्धरोग चिकित्सा। पृ० २०३ नागार्जुन हरीत। पृ० २०४ हृदरोग चिकित्सा। पृ० २०५-२१२ तक। मूत्र कृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी और प्रमेह चि०। पृ० २१३ कुरंड रोग चिकित्सा। पृ० २१४ अंत्र वृद्धि रोग चिकित्सा। पृ० २१५—२१६ तक, गंडमाला रोग, चिकित्सा। पृ० २१७ ग्रंथि रोग चिकित्सा। पृ० २१८ अर्बुद रोग चि०, पृ० २१९—श्लीपद रोग चि०। पृ० २२० विद्रधि रोग चिकित्सा। पृ० २२१ सर्वव्रण पारदादि मूल। पृ० २२२ सर्व फोड़ों की औषधि, शिर के फोड़ों, गर्मी वल्मीक रोग चिकित्सा, पृ० २२३—२२४ तक। भगंदर रोग चि०, पृ० २२५ शिश्न व्रण चि०। पृ० २२६ भग्न व्रण चिकित्सा, पृ० २२७ अग्नि से जलने की चिकित्सा। पृ० २२८—२३२ तक। बलात गर्मी की चिकित्सा। पृ० २३३—२३४ शुक रोग चि०। पृ० २३५ लिंगार्श प्रभृति नाम शुक दोष वर्णन। पृ० २३६ शीत पित्त रोग चि०, पृ० २३७ उदर्द रोग चिकित्सा, विपादिका, विचर्चिका रोग चिकित्सा। पृ० २३८ वैर कुष्ट रोग चिकित्सा। पृ० २३९ बहिरों की दवा। पृ० २४० कुष्ट लक्षण चर्म रोग चिकित्सा। पृ० २४१ कपाल कुष्ट चिकित्सा। पृ० २४२ सर्व कुष्ट लक्षण चिकित्सा। पृ० २४३—२५३ तक मांसगत कुष्ट चिकित्सा। पृ० २५४-२५५ तक। चित्र रोग चिकित्सा। पृ० २५६ विसर्प रोग चिकित्सा। पृ० २२७ विस्फोट रोग चिकित्सा। पृ० २५७ विस्फोट रोग चि०। पृ० २५८ मसूरिका रोग चिकित्सा, मुख रोग, गल रोग चि०। पृ० २५९ दंत पीड़ा चिकित्सा। मुखपाक रोग चि०। पृ० २६० गले को दाह रोग चि०। पृ० २६१ उपजिह्वा चिकित्सा, झांई रोग चिकित्सा। पृ० २६२ नासा रोग चिकित्सा। पृ० २६३ प्रतिश्याय रोग चिकित्सा। पृ० २६४—२६७ नासा, नेत्र रोग चिकित्सा। पृ० २६८ तिमिर रोग चिकित्सा, सनपात रोग चिकित्सा, पृ० २६९—२७० तक। नेत्र परिवार रोग चि०। कर्ण रोग चिकित्सा। पृ० २७१ ओवा रोग

चिकित्सा। पृ० २७२, कर्ण कीट चिकित्सा। पृ० २७३—२७५ तक। शिररोग चिकित्सा। पृ० २७६ गंडारोग चि०, घर्णाविका रोग चि०। पृ० २७७—इन्द्रि लुप्त रोग चि०। पलित रोग चि०। पृ० २७८-२८२ तक, प्रसूत रोग चि०, लक्षण। पृ० २८३ प्रदररोग चि०, पृ० २८४ सोमरोग चि०, पृ० २८५ स्तनपाक रोग चि०। पृ० २८६ स्तन हढ़ी करन औषधि। पृ० २८७ योनिकामद चि०। पुष्प रोग चि०। पृ० २८८ गर्भपात चि०, गर्भस्थिति चि०। पृ० २८९ शुष्क गर्भ चि०,। गर्भ निरोध, दग्ध, नष्ट चि०। पृ० २९० जन्म वंध्या, काक वंध्या, मृत वत्सा को चिकित्सा। पृ० २९१ रोमनाशन कै औषधियाँ। पृ० २९२—२९६ तक, वाल रोग चिकित्सा। पृ० २९७—३०० तक। पूतना विधान वर्णन, पृ० ३०१ विष चिकित्सा, पृ० ३०२ उपविष चिकित्सा, सर्व विष पर औषधि। पृ० ३०३—३०६ तक। मद्यविकार चिकित्सा, सर्व विष चिकित्सा। पृ० ३०७ कनखजुर विष चिकित्सा। पृ० ३०८ मसा, मक्षिका, स्वान, शृगाल, व्याघ्र काटे को चिकित्सा। पृ० ३०९—३११ वाजी करण औषधियां। पृ० ३१२—स्थूल करण चिकित्सा। पृ० ३१३—स्त्री द्रावन विधि। पृ० ३१३—३१५ तक। वमन, विरेचन, धावविधि समाप्त।

No. 319(*b*). Vaidyadarpaṇa by Prāṇanātha Bhaṭṭa Substance—Country-made paper. Leaves—168. Size—8¼ × 6¼ inches. Lines per page—28. Extent—2,940 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Ishvari Nātha Vaidya, Uttarpārā, Rāe Barelī.

Note—शेष विवरण नं० ३१९ (ए) के अनुसार।

No. 320. Kalakī Avatāra by Prāṇanātha Trivedī. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—10 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—1,280 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1760 (1762 ?) or A.D. 1703 (1765 ?). Place of deposit—Paṇḍita Bhagavatī Prasādajī, Village Thailiyā, Post Office Khairighāṭ, District Bahraich (Oudh).

Beginning.—श्री गणेशायनमः॥ अथ कलकी अवतार कथायां॥ दोहा॥ एक रदन करिवर वदन सिद्धि सदन सिवलाल। विघन विनासन विरद सिर मूषासन गुन माल॥ वारक वारन वदन कोइ सुभत ज्ञान त्रिकाल। जैसे

दोपक देहरी भीतर बजिर सुकाल ॥ छंद जल हरन ॥ भवानि विंध्रवासनी उदंड पाप नासिनी सुबुद्धि सिद्धि को भरै ॥ करै महोप रंकते प्रमान मेरु पंकते हरै कि नास संकते कटाछते वह ठरै ॥ जपै निसंक नाम को बड़े विनोदधाम को पुजै समस्त काम को भगाध सिंधु हू तरै ॥ महागुमान गंजिनी विसाल सोक भंजिनी नमामि प्रान रंजिनी कृपाल पाहि किंकरै ॥ छंद ॥ भवानि तेज तारिनी भनंत रूप कारनी महा विमोह दारिनी धरे कृपान पानि मैं ॥ प्रचंड रूप चंडका भदेव वृन्द षंडिका त्रिकाल भेद मंडिका सुसिद्धि रिद्धि थान में करालरूप कालिका भनेक रोग दालिका विसाल मोद मालिका दयाल मोक्ष दानि मैं ॥ भमंत राति हंस सो विजै विभूति घंस सो सरोज जा प्रसंस सो नमामि प्रान जानि मैं ॥

End—बजत जोर महा भट मारे । परत मुंड करि रुंड निनारे ॥
हरि सनमुष बाजत करि रोषू । कटत जात थल पावत मोषू ॥

दोहा—कटत कटक फाड़त मद हरि सनमुष मिटि जात ।
जथा न भावत भवनि लौ तारे गिरत विभात ॥

दोहा—रवि विरंच थल लोह सम पावक मिलि भसिवान ।
जाय बतावत वात लषि जल सरूप भगवान ॥
सालि समर महा वलवाना । निज प्रभु सासन चलत सुजाना ॥
भाइ गयो संमर भनि वोरा । धरये वीर विसिष धन घोरा ॥
गहि वाल निकर धल बाजे । संभरेस के हरि सम गाजे ॥
केवल सालिम थान उबारो । भपर सीस काटे मलि झारी ॥
भट काटि साहि दिन मानि के भगवान सेष निमेष में कहि
बहुरि सालिम षान तट हरि चरित भलष भलेषि मैं ॥
सालो मन तजु बिन काज तनु तोहि राषि हौं केसव कहो
धन कुल विनासन ता सहित तू सो निकट सबेरो लहो ॥ भपूर्ण ॥

Subject—कलकी भवतार को कथा । देवी को प्रार्थना । म्लेच्छ भौर कलकी भगवान का युद्ध ।

No. 321(*a*). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa. Substance Country-made paper. Leaves—86. Size—11½ × 5½ inches. Lines per page—7. Extent 600—Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1916 or A.D. 1857. Place of deposit—Paṇḍita Rāmadeo Brahma Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauza Lāmhā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कौमुदी १ ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ व्यंग्यार्थ कौमुदी लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गिरा मनाइ कै सुमिरि गुरुन के पांइ ॥ कवित रीति कछु करतु हौं व्यंग अर्थ चितलाइ ॥ १ ॥ वाचक लक्षक व्यंज को सक तीन विधि मान ॥ वाच लक्ष अरु व्यंग तहं अर्थ त्रिविधि पहिचान ॥ इनके लक्षन लक्षि बहु रस ग्रंथन ठहराइ ॥ ताते ह्यां बरने नहीं बढ़े ग्रंथ समुदाइ ॥ जहं शब्द ही महं अर्थ की होइ जो अधिक प्रवृत्ति ॥ चमत्कार अतिशय जहां जानि व्यंजना वृत्ति ॥ व्यंग्य जीव है कवित में शब्द अर्थ गनि अंग ॥ सोई उत्तम काव्य है बरनै व्यंग्य प्रसंग ॥ करि कवितन सो वीनती सुकवि प्रताप सहेत ॥ की व्यंगार्थ कौमुदी व्यंग्य जानिवे हेत ॥ सूचनिका ॥ कही व्यंगते नाइ कर पुनि लक्षना विचारि । ता पीछे वरनन करौं अलंकार निरधार ॥ व्यंजना लक्षण ॥ यथा :— वाचक के सन्मुख रहै अंतर धारै अर्थ ॥ चमत्कार निकरै जहां कही सो व्यंग समर्थ ॥ तिय कटाक्ष लौ व्यंजना कहत सकल कविराइ ॥ जहां शब्द ते अर्थ बहु अधिक अधिक दरसाइ ॥

End—अथ धृष्ट नायक-यथा-रितुराज के आगम लोग सबै सोगने गहवे बड़ भागन में ॥ इनके मत लैकै मलंद सदा चित चाइ कै गुंजत आंगन में ॥ जिनके शुचि सुन्दर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन मे ॥ कत कोकिल कीर किये विधि ने अपि बोलैं वृथा वन बागन में । व्यंग्य-नाइका की उक्ति कोकिल वन में बोलत है अह वृथा झूठे वचन बोलत है, ए भंवर समान है तितही आंगन में आइ के घरे रहत हैं सो यह विधि नायक की धृष्टता जाहिर करी ताते धृष्ट नायक । नायक की निन्दा तिय कहै तहां धृष्ट नायक कवि कहै । कोकिल उपमान के वर्णन ते गौणी साध्यावसान अलंकार । कोकिल की निन्दा से नायक की निन्दा निकसी ताते व्याज निन्दा अथवा कोकिल को वर्णन प्रस्तुत ताते नायक की निन्दा प्रस्तुत प्रशंसा अलंकार ॥ दोहा ॥ सखि दूती दरसन दशा हाव भाव बहु थोर । याते नहि वरनन करै, बरनै कवि सब ठौर ॥ व्यंग्य अर्थ अतिशय कठिन को कहि पावै पार । मम्मट मत कछु समुझि चित कीन्हीं मति अनुसार यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़ै गुनै चितलाइ । ताको मत साहित्य को कछुक पंथ दरसाइ ॥ इति ॥

Subject—वंदना, वाचकादि का लक्षण, नायिका भेद, शक्ति लक्षणादि वर्णन, अलंकार । नायिकादि भेदों के साथ ही साथ व्यंग्यादि का वर्णन ।

No. 321(*b*). Vyaṅgārtha Kaumudi by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—12 × 8 inches. Lines per page—70. Extent—814 Anushṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nāgari. Date of

manuscript—Samvat 1935 or A. D. 1878. Place of deposit—Ṭhākura Tribhuvana Siṁha, Village Saidapur, Post Office Nīlagām, Tahsīl Sidhauli, District Sītāpur.

End.—इति व्यंग्यार्थ कौमुदी प्रताप कृत सम्पूर्णम् ॥ अश्विन मासे कृष्णपक्षे तिथौ परिवायां गुरुवासरे श्री संवत १९३५ यह पुस्तक श्री ठाकुर हेमचल सिंह साहेब हेत लिषी दरबारीलाल कायस्थ निवासी चित्रकूट ॥

No. 321(c). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Place of deposit—Ṭhakura Lāyaka Siṁha, Village Bhagawānpur, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

End—प्रसंसा ॥ अथ दोहा ॥ सखि दूती दरसन दसा हाव भाव बहु घोर याते नहि बरनन करे बरनै कवि सब ठौर ॥ व्यंग अर्थ अतिसै कठिन को कहि पावै पार ॥ मम्मट मत कछु समुझि चित कीन्हो मति अनुसार ॥ यह व्यंग्यार्थ कौमुदी पढ़े सुनै चितलाय । ताको मत साहित्य को कछुक अर्थ दरसाय ॥ संवत ससि वसु वसु मुदे गनि असाढ़ को मास किय व्यंग्यार्थ कौमुदी सुकवि प्रताप प्रकास ॥ विगरो देत सुधारि जे ते गनि सुकवि सुजान । बनौ बिगारत जे सुधनि ते कवि अधम समान ॥ इति श्री व्यंग्यार्थ कौमुदी समाप्तं ॥ श्री संवत १९५४ मार्ग शुक्ल प्रतिपदायां गुरुवासरे लिषितं मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण चैना मारो वासस्थाने श्री राधा कृष्णमनमः श्री राधावल्लभो जयति राम रामायनमः ॥

No. 321(d). Vyaṅgārtha Kaumudī by Pratāpa Kavi. Substance—New paper. Leaves—16. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—28. Extent—168 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Siṁhaji, Lavedapur, District Baharāich.

Beginning—अनखानो रहै आठौ जाम बरन सनातन बराई आनि धरतो । रचि रचि वचन श्लोक बहु भांतिन के करि करि अनख पिया को मन भरतो ॥ कहै परताप कैसे वसिए निकासिबे को भौन सुख लहिए तऊ न नेक टरतो ॥ निज निज मंदिर मे सांझ ते सवेरे पीय मोरे केलि मंदिर में दीपक न

धरतो ॥ ३१ ॥ अपरंच ॥ सरस सुगंधनि सों अंगनि सिचावै करपूर मय वातिनि सों दीप उजिवारतो। रचि रचि वानिक बनाय रोस रोसन की हौंसन परोसिन के जानि जिय जारतो ॥ कहै परताप अति चतुर चवाइनी प चरचि चवाइनी के चोजनि विचारतो। रेज करि सौतिनि मजेज सों निकेत मांझ परपति हेज सेज सांझ ते संवारतो ॥ ३२ ॥

End—अथ धृष्ट नायक यथा ॥ ऋतुराज से आगम हाेय सबै सो गनै गहर बद भागन में। इनको अतलैकें अलिद सदा नित आइ कैं गुंजत बागन में ॥ जिनके सुचि सुंदर बोल सुनै मन होहि नहीं अनुरागन में। कत कोयल कूक किय विधि ने सबो बोलै वृथा वन बागन में ॥ ७८ ॥

दोहा ॥
सखि दूती दरसन दसा हाव भाव बहु और।
याते ना वर्नन कियो बरने कवि सब ठौर ॥ ७९ ॥
विज्ञ अर्थ अतिसै कठिन को क·············।

No. 322(*a*). Amṛita Sāgara by Mahārājā Sawāī Pratāpa Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—248. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—8,928 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Himmata Siṁha, Mohallā Baḍā Kuwā, Rāe Bareli.

Beginning—पृ० ६० से प्रारम्भ।

शस्त्र प्रहार से उपजो जो तृषा ताका जतन बकरा का रुधिर पीने से शस्त्र प्रहार की तृषा जाय १६× अथवा बकरे के शोरबे मे सहत मिलाय खाय तो शस्त्र प्रहार की तृषा जाय १७ अथवा खीर में मिश्री मिलाय के खाय तो यह तृषा जाय १८ की।

End—अथ इन छ्यों ऋतु मे वायु पित्त कफ का संचय प्रकोप और शीत लिखते ग्रीष्म ऋतु में वायु का संचय वर्षा ऋतु में वाय का कोप × × ऋतु में वाय की शांति १ वर्षा ऋतु में पित्त की शांति × × × बसंत ऋतु में कफ का कोप·······लप में वाय पित्त कफ के प········में होय है और ये विना सम·······थवा वायु के कोप करने का···········र यह विना समय हल की।

Subject—पृ० ६०—६२ तक तृषा, मूर्छा, मोह भ्रम तन्द्रा की उत्पत्ति लक्षण जतन। पृ० ६३—७२ तक मदात्यय, उन्माद और मृगी उ० ल० ज०। पृ० ७३—८६ तक वात व्याधि का सर्व रोग शिरोग्रह, अल्प केशी, जंभाई अनुग्रह,

जिह्वास्तंभ, ढ़ीले वाढ़े, गूंगापन, जीभ का रस ज्ञान, त्वचा शून्य, छर्दि रोग, वातुक रोग, उर्द्ध वात रोग, अध्यमान रोग, प्रत्याध्यमान रोग, वातष्ठोला, प्रति तुनी रोग, खोड़ा पांगुला रोग, खल्ली रोग, अंतरा याम रोग, पक्षाघात रोग, निद्रा नाशक रोग। पृ० ८७—९१ तक—ऊरुस्तंभ आम वात पित्त कफ व्याधि रोगों के भेद उत्पत्ति लक्षण जतन। पृ० ९२—९८ तक वात रक्त शूल परिणाम अपद्रव जरन पित्त की उत्पत्ति लक्षण यत्न निरूपण। पृ० ९९—१०८ तक—हृद्रोग की उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० १०९-१२२ मूत्र कृच्छ मूत्राघात, अस्मरी शर्करा, प्रमेह के भेद ल० उ० यत्न। पृ० १२३—१२७ तक मेद रोग, कार्श्य रोग, क्षीण रोग के भेद उ० ल० यत्न। पृष्ट १२८—१३४ शोथ रोग, अंमवृद्धि, अन्त्र-वृद्धि, गलगंड, कंठमाला अपचि ग्रंथि अर्बुद रोग के भेद उत्पत्ति ल० यत्न। पृ० १३५—१४८ तक—श्लीपद, विद्रधि, व्रण, शोथ, शरीर व्रण, वाय पित्त कफादिकों का आगंतुक व्रण शस्त्रादिकों का अग्निदग्ध व्रण ग्रंथि भग्न नाड़ी व्रण के भेद उ० ल० यत्न। पृ० १४९—१६१ तक भगंदर, उपदंश, लिंगर्श का रोग, कोढ़ के भेद उत्पत्ति ल० य०। पृ० १६२—१७२ शीत पित्त उदर्श कोढ़ उत्कोढ़, अमल पित्त, विसर्पंथा, वाला वोदरी भारो रोगों के भेद उ० ल० यत्न। पृ० १७३—२१०—क्षुद्ररोग मस्तक रोग, नेत्र रोग कान, नाक मुख ओंठ, मसूढ़े, दांत जीभ तालू गला कंठ इन सब के रोग और भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० २११—२१५—स्थावर जंगम विष मात्र के भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृष्ट २१६—२२४ तक प्रदर रोग भेद उत्पत्ति लक्षण यत्न। पृ० २२५—२३२ तक वालकों के रोग भेद उ० ल० य० पृ० २३३—२३५ नपुंसकपने के दूर करने के ल० य०। पृ० २३६—२३९—पुष्टाई के यत्न पृ० २४०—२४८ तक सब आसवों की विधि शिलाजीत शोधन विधि स्नेह विधि स्वेद विधि वस्ति कर्म हुक्के को आदि धूमपान की विधि, रुधिर छुड़ाने की विधि। छः ऋतु वर्णन।

No. 322(*b*). Bharathari Śataka by Sawāi Pratāpa Simha of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—116. Size—9×5 inches. Lines per page—9. Extent—650 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Badarīnātha Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भरथरी सत नीति मंजरी लिख्यते छप्पय ॥ जाको मेरे चाह वह है मोसों विरक्त मन। पुरुष और सों प्रीति पुरुष वह चहत और धन ॥ मेरे कृत पर रीझि रही कोई इक और हो। यह विचित्र

गति देखि चित ज्यों तजत न ठौरहो ॥ सब भांति राज पत्नी सुधिक् जार पुरुष कों परम धिक् । धिक् काम याहि धिक् मांहि धिक् सब ब्रजनिधि कौ सरन एक ॥ १ ॥ दोहा ॥ सुख करि मूढ़ रिझाइये प्रति सुख पंडित लोग । अर्ध दग्ध जड़ जोय कहं विधिहु न रिझवन जोग ॥ २ ॥ छप्पय-निकसत वाह तेल जतन करि काढ़त कोऊ । मृग तृष्णा को नीर पिये प्यासौ है सोऊ ॥ लहत ससा कौ शृंग ग्राह मुख ते मणि काढ़त । होत जलधि के पार लहरि वाकी तब बाढ़त ॥ रिस भरे सर्प कौ पुहुप ज्यौं अपने सिर पर धरि सकत । हठ भरे महा सठ नरन कौं कोऊ वस नहिं कर सकत ॥ ३ ॥

End—छिन में बालक होत होत छिनही मे जोवन । छिनही में धन होत होत छिनही में निरधन ॥ होत छिनक में वृद्ध देह जर्जरता पावत । नट ज्यों पलटत अंग स्वांग नित नये बनावत ॥ यह जीव नाच नाना नचत निचलो रहत न एक छन । करिकें कनात संसार को कौतुक निरखत रहत जम ॥ ९९ ॥ बहु भोगन कौ संग तहां इन रोगन कौ डर । धनहू को डर भूप अग्नि अरु त्योंही तस्कर ॥ सेवा में भय स्वामि समर में सत्रुन कौ भय, कुलह में भय नारि देह कौं काल करत क्षय ॥ अभिमान डरत अपमान सों गुन डरपत सुनि खल सब्द । रूप गिरत परत भय सों भरे अभय एक वैराग्य पद ॥ १०० । दोहा ॥ करो भर्तरोसतक पर भाषा मलो प्रताप । नोति मांहि रस रोष में वीतराग प्रभु आप ॥ १ ॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री सवायी प्रताप सिंघ जी देव विरचितायां भर्थरी सत संपूर्णम् शुभं ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषं न दीयते ॥ लिखितं ब्राह्मन हरिदेव ॥ लिषायतं फौजदार जी साहब श्री/ ब्रजवल्लभ जी मिति भाद्रपद वदी १३ संवत १९०८ ॥ श्री राम जी ।

Subject—नीति पृ० १—२१ तक, शृंगार पृ० २१-३७ तक, वैराग्य पृ० ३७—५८ तक ।

No. 323(a). Bhaktarasa-bodhinī (Bhaktamāla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—164. Size—8 × 6 inches. Lines per page—28. Extent—4,602 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1867 or A. D. 1810. Place of deposit—Ṭhākura Lachhiman Siṁha, Village Saidapur, Post Office Bhaṇḍihā Prānt, Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु गोविन्दो जयति ॥ श्री भक्तमाल लिख्यते भक्त रस बोधिनी टीका ॥ स्वयंगत टीका करता को मंगलाचरन

तथा ग्रन्था निरूपन ॥ कवित्त ॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन मनहरनजू के चरन को ध्यान मैं नाम मुष गाइये ॥ ताही समै नाभाजू के प्राज्ञा दई लै धारो टोका विस्तार भक्तमाल वो सुनाइये । कीजिये कविता छंद बंद प्रति प्यारो लगै जगै जगी महो कही वानीयवर प्राइये । प्रानैा निज मति पपै सुन्यैा भागवत सुक द्रुमनि प्रवेस कीयो पैसैई कहाइये ॥ टीका को स्वरूप वर्णन ॥ स्वकवितांई सुघटाई लगी निपट सुहाई प्रैार सचाई पुनरुक्त मिटाई है । प्रक्षर मधुरताई प्रनुप्रास जमकाई प्रति छवि छाई मोद झरी लगो है ॥ काव्य की बड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभा जु कहाई ताते पौढ़ कै सुनाई है ॥ हदै सरसाई जो पै सुनिये सदाई यह भक्ति रसबोधनो सुनाय हिम गाई है ।

End—रामानंद के प्रनंत नंद सदा प्रगटे पूरनचंद ॥ ताके कृष्णदास पधिकारी सब कोउ जानै दूधा धारी ॥ ताको प्रग्र प्रागरी प्रेमु लै नाभा यौं सुमिरन को नेमु ॥ प्रग्र के सीष विनोद दिपाई । ताते दास प्रनंतहो गाइ ॥ ताही प्रसाद परचै भाषा । सुनैा संतजन सांचो साषा ॥ पै परचै कहै जो कोई । तासु सर्व सुष पावै सोई ॥ बकता श्रोता पावे सुष । नासे काम कर्म का दुष ॥ भगत की रीति लै सोजो भाई । जीवन मुगत सदा सुषदाई ॥ इतनी कथा कहै पोपा को ॥ जानै बुध संपति दोपा की तीरथ कोटि करै प्रस्नाना जहां तहां विधि सो देवै दाना ॥ जोग जग्य जप तप धर्म जेते । हरि की कथा नहि पूजै तेते । पर्व नामते भयो पारा साधु संत कहत विस्तारा ॥ यह मुक्ति की राह बताई । हरि की कथा सबहि सुषदाई । सुर नर मुनि ब्रह्मादिक गावें पारब्रह्म को पंत न पावें ॥ पोपा के गुन गाय सुनावे । सो वैकुंठ लोक निज पावे ॥ जो साधु जन गावें कोई निहचै सब सुष पावें सोई ॥ नरनारी गावें जो कोई । भक्त मुक्त संसो नहि होई ॥ पोपा के गुन गावहीं सुनहि जो संत सुजाग । पर्थ धर्म काम मोक्षापद ताहि देइ भगवाना ॥ इति भक्तमाल समाप्तं संपूर्णम् संवत १८६७ भाद्रावासुदो २ भृगुवासरे ॥

Subject—भक्तों की महिमा, पैार उनके नाम तथा नगर सहित वर्णन ।

No. 323(*b*). Bhaktarasa-bodhinī (Bhaktamāla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—113. Size—14 × 8 inches. Lines per page—26. Extent—3,673 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1918 or A.D. 1861. Place of deposit—Paṇḍita Sarju Prasāda, Village Maharū, Post Office Metarā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—टीका करता को मंगलाचरन। अथ निरूपणम् कवित्त॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जु के चरनन को ध्यान मेरे नाम रूप गाइये। ताही समै नाभा जु ने अज्ञा दई तेहि धरि टीका विस्तार भक्तिमाल को सुनाइये॥ कीजिये कवित बंद छन्द अति प्यारो लगै जगै जग माहि वानी वीर गाइये॥ जानो निज मति ऐसे सुन्यो भागवत सुक भ्रुमोन प्रवेस कियो ऐसेही कहाइये॥ १॥ टीका को नाम स्वरूप वर्णन॥ रचि कविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई औ सचाई पुनरुक्त लै मिटाई है। अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छवि छाई मोह झरिसि लगाई है॥ काव्य की बड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभाजू कहाई ताते प्रौढ़ के सुनाइये॥ हृदय सरसाई जो पै सुनिये सहाय यह भक्तरस बोधनी सुनाम टीका गाइ है॥ भक्ति स्वरूप॥ श्रद्धाइ फुलेल औ उबटनो श्रवण कथा मैल अभिमान अंगनि छुटाइये। मन वसुनीर अन्हवाइ अंग छाइ ध्यान वनि वसन पन सौंधौ लै लगाइये॥ आभरन नाम हरि साधु सेवा करनफूल मानसो सुनथ संग अंजन वनाइये॥ भक्ति महारानी को सिंगार चाह वीरो चारु रहैं जो निहारि लई लाल प्यारी गाइये॥

End—कीनी भक्तिमाल सुर साल नाभा स्वामी जु ने जिये जीव जात जग जन मान पोहनी। भक्ति रस बोधनी सु टीका मति सोधनी है वाचत कहत अर्थ लागै अति सोहनी॥ जो पै प्रेमलक्ष वाको चाह अवगाह पालि मिटै उरदाह नेक नैनन हू जोहनी॥ टीका औरु मूलनाम भूलिजात सुनै जब रसिक अनन्य मुष होत विस्वा मोहनी। नाभाजू को अभिलाष पूरन लै कियौ मैंतो ताकी साषि प्रथम सुनाई नीके गाइ कै भक्ति विस्वास जाके ताही सो प्रकास कीजै भीजै रंग हियो लीजै संतनि लड़ाइ कै॥ नारायन दास सुषरासि भक्तिमाल लैके प्रियादास दास उर वसौ रहौ छाय कै। संवत प्रसिद्धि दस सात सत उन्हें तरा फाल्गुण मास वदि सप्तमी विताय कै अगिनि जरावो लैकै जल मैं बुड़ावो भावे भूलिये चढ़ावो घोरि गरल पिवयवो॥ विछू कटवावो कोटि सापल पठावो हाथी आगे डरवावो इति भीति उपजायवो। सिंह पै षवावो चाहौ भूमि गड़वावो तीषी आंगनि विधयावो मोहि दुष नहि पायवो। ब्रजजन प्रान कान्ह वात यह कठिन कारो भक्ति सो विमुष ताको मुषन देषायवो॥ इति श्री प्रिया दास जु कृत भक्ति माल टीका भक्ति रसबोधनी समाप्त सुभ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे तिथो अमास्या सोम वासो संवत १९१८ लोला भवन लिष्यते जानकी सरन अयोध्या मद्दे रामकोट॥

No. 323(c). Bhaktarasa-bodhinī (Bhakta māla kī Ṭīkā) by Priyādāsa. Substance—New paper. Leaves—137. Size—$11\frac{1}{2}$ × 6 inches. Extent—3,425 Anushṭup Ślokas. Appearance—

New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Vidyārathi Jogendra, Christian College, Lucknow.

Note—आदि अंत No. 323 *(b)* के अनुसार

No. 323(*d*). Bhaktarasa-bodhini by Priyadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size 12 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—3,265 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1769 or A. D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1877 or A. D. 1820. Place of deposit—Ṭhakura Viśvanātha Siṁha, Tāluqedār, Village Agaresar, Post Office Tirsaṇḍi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः अथ भक्तिमाल टीका सहित लिषने। कवित्त छप्य छंदः ॥ टीका को मंगलाचरन। अथ आसि निरूपन। महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मन हरन जू को चरन का ध्यान मेरे नाम मुष गाइये। ताहि समै नाभाजू ने आज्ञा दई लई धारि टीका विसतारि भक्तिमाल की सुनाइये। कीजिये कवित्त बंद छंद अति प्यारो लगै जगै जगमाहि कहि वानि विरमाइये। जानो निज मति आपै मन्यौ भगवत सक्त दुमनि प्रवेस कियो ग्रंथहि कहाइये ॥ १ ॥ टीका को नाम रूप वर्नन। रचि कविताई सुषदाई लगै निपट सुहाई औ साचाइ पुनरुक्त ले मोटाई है। अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमा काई अति छवि छाई मोद झरी सी लगाई है। काव्य की बड़ाई निज मुषन भलाई होत नाभाजू कहाई ताते प्रौढ कै सुनाई है। रहै सरसाई जो पै सुनिये सदाइ यह भक्ति रस बोधनी सुनाम टीका गाई है। २ ॥

End—फल स्तुति साषी। पादप पेड़हि सोंचिये पावै अंग अंग पोष। पू वजा ज्यो वरन ते सब मानियो संतोष ॥ २०३ ॥ भक्त जितं भूलोक मै कथे कौन पै जाय। समुद्र पान श्रद्धा करै कहा चिरैया पेट समाय ॥ २०४ ॥ श्री मूरत सब वैष्णव लघु दीरघ गुननि अगाध। आगे पीछे वरनंते जिनि मानो अपराध ॥ २०५ ॥
× × × काहुं के बल जोग जज्ञ कुल करनी की आस ॥ भक्त ॥ नाम माला अगर उर वसौ नरायन दास ॥ २१४ ॥ इति श्री भक्तमाल श्री नारायन दास जी कृत मूल समाप्तः ॥ नाभाजू को अभिलाप पूरन लै कियो मै तो ताकी साषी प्रथम सुनाई नीकै गाइकै। भक्ति विस्वास जाकै ताही सौ प्रकास कीजै

भीजे रंग हियो लीजे संतनि लड़ाइ के ॥ संवत प्रसिदस सात सत उन्हत्तरि फाल्गुन मास। वदि सतमी बिताइकै नारायनदास सुषरासि भक्ति माल लैके प्रियादास दास उर बसौ रहौ छाय के ॥ ६२७×इति भक्तिमाल भक्ति रसबोधनी टीक संपूर्ण शुभ मस्तु ॥ श्रारस्तु। लिषतं रामसुप ब्राह्मण संवत ॥ १८७७ ॥ अस्वन सुदि ॥ २ ॥ रविवासरे।

No. 324. Ānanda Sāgara by Pūraṇapratāpajī of Jamālapura, Parganā Hisāra (Punjab). Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8×5 inches. Lines per page—11. Extent—231 Anushṭūp Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1824 or A. D. 1767. Place of deposit—Paṇḍita Śambhū Dayala, Teacher, Vazidapur, District Bārā Bankī.

Beginning—गुरु महिमा वर्णन लिख्यते ॥ दोहरा ॥ अघमोचन अरु तिमि हरन दाता भेव अभेव। परनम कर वांदे सकल जै जै श्री सुखदेव ॥ १ ॥ चौपाई ॥ नमो नमो सत गुरु अविनाशी। चरन दास पूरन परगासी। भगवत धर्म पुनीत अपारा ताहि सुनत नासै भ्रम भारा। कलऊ सतजुग कर दरसायो। भक्ति अपार बीज फैलायो। महिमा अगम अपार तुम्हारी। गुन गावत मम रसना हारी ॥ निरालंब निरलिप्त निरारे। नाम रूप किरपा ते न्यारे। तुम किरपा निरभे पद पायो। मोह तिमिर ज्ञान प्रगटायो। निरविकार अब मत दरसायो। दिव्य दृष्टि दे भर्म मिटायो। काग हंस मत दोऊ ठाई। जीव ब्रह्म को गांसि मिटाई ॥ २ ॥ दोहरा ॥ स्वात पलट मोती भयो वह भये विषम कलाप। चरन दास सतगुरु मिले हुवो पूरन परताप। ३ ॥ छन्द। निराकार आकार एक पर ब्रह्म कहायो। वाको लीला दुह जास को भेद बतायो। उहां रूप को तेज सुतो यह ब्रह्म कहायो। वही भयो आकार सकल ब्रह्मंड रचायो। आदि पुरुष वांते भयो प्रकृति रूप उपजाय। पूरन पताप चरनदास ने दोनों ये समुझाय ॥ ४ ॥

End—दोहा—या जग में नहि काम जो मोह दरसत है नाहि। सकल चाह मम रूप है मैं सब चाहन माहि ॥ ७५ ॥ तें विवेक मंत्री सुने ताको मानो मैं। अब हमरे मंत्री सुनो मे होवें सब छै ॥ ७६ ॥ चौपाई—पहले मंत्री हमरा नारी। जाके तीछन नैन कटारी ॥ ताने घायल करे सब जोधा। कहा सूरमा औ कह बोदा। और एक बात तोहि समझाऊं। ताकूं जग में खोलि दिखाऊं। विमल स्वरूप नारि हो कोई। छबि उत्तम अति वाकी होई। काहू के मन वह जो भावै ॥ तन मन से वह आगि लगावै। वाकी अगिन नाशा बिन बुझै। जब वह मिलै तभी

दुख नजै। जीव जंतु तो हेत बताऊं। नारो तिनके संग दरसाऊं। सो बंधुवा मेरे तुम जानो। पूरन प्रताप सांच पहिचानो॥ ७७॥ दोहरा—अब मंत्री सुन मोह के, क्रोध लोभ मन मान। दंभ झूठ अरु गर्व हरि, मत्सर अति बलवान। ७८ चैापाई—तब हम सब इकठे हो चढ़ें। निहचै आन न हमसू लड़ें।

Subject—(१) पृ० १ से ४ तक—गुरु महिमा।

(२) पृ० ५ से ७ तक—विनती तथा ग्रंथ प्रतिज्ञा और ग्रंथ चतुष्टय संबंधी कुछ बात चीत।

(३) पृ० ८ से ८ तक—कवि वंश परिचय :—

रामचन्द्र जू के भये पुत्र सु बालमुकंद।
पूरन प्रताप तिनको भयो कृपा करी नंदनंद॥
चरनदास गुरुदेव धर्‌यो कर ताके ऊपर।
है जमालपुर नाम ठाम निज उत्तम भूपर॥
सो हिसार को परगनो मत्री दानो आनचितु।
रच्यो ग्रंथ अति प्रीति सें मथुरा मांहि बसंत रितु॥

ग्रंथ निर्माण कालः—

ठारह से संवत कहे, बीस चारि और जान।
आनंद सागर नाम जिहि अट तरंग पहिचान॥

(४) पृ० ९ से पृ० २८ तक—प्रथम तरंग, राजाकोसि, ब्रह्म के आगे नट नटी काम और विवेक का स्वांग खेलना, निर्गुण स्वरूप, अवतार वर्णन, भक्त सहायक रूप, आकाशवाणी वर्णन, विवेकादि वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

No. 325(*a*). Jaimini Aśwamedha by Purusottama Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—18 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—483 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1890 or A. D. 1833. Place of deposit—Ṭhakura Dalajīta Simha, Village Zālimasimha kā Purawā Post Office Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः पुरुषोत्तम जन चात्रिक राम कथा जलपान अवरहि काहि न लेषत तव श्री भगवान॥ चलेउ तुरंगम वाजन बाजा। पहुंचा जहां हंसध्वज राजा। पुरि चंडिका निर्मल देसा। चारिउ वरण मनोहर भेषा। तात जननि जस बाला पाला॥ तैसे नृपति देस प्रतिपाला। होम जग्य नित दान पुराणा। राम छांड़ि नहि आनहि ध्याना। घर घर राज मंदिर अस लेषा। नारि

सकल पद्मिनी विसेषा। रोगी दुखी न देषिय लोगा। मनहि न देई इन्द्रासन भोगा। तहां तुरंगम पहुंचा जाई। दूतन नृप सन बात जनाई। अस हय देस कबहुं नहि आवा। चन्द्र विमल तन अधिक सुहावा। कंचन पाठ लिखित कछु माला। अति सुन्दर गज मोतिन माला। नृप तिन कंठ लै। आये तुरंगा। वाचिन पत्र पंथ हैं संगा। राजहि कहा कहां तुम पावा। देषब हरि जिय करब बधावा।

End—सैापि पंथ कहं आप सिधाये। जहां युधिष्ठिर तहं हरि आवा। राजा कर संतोष करावा। समाचार प्रभु सबहिं सुनावा। हंसाध्वज औा अर्जुन बीरा। आये सबै नगर रणधीरा। राजहि सब सन कहा बुझाई। जो रोवे तेहि राम दुहाई। सब मिलि करहु पंथ कै सेवा। कर गहि सैापि गये हरि देवा। कुंअर युद्ध सबहो मन भावा। सुन्ध सुधन्वा हरिपद पावा। राजा वचन सुनत रनिवासा। गया शोक जिव भया हुलासा। सब बीरन के चरण पखारा। होइ लाग अमृत जेवनारा। भाव भक्ति सब हो का कीना। हरि आज्ञा सिर ऊपर लीना। धन गज पुर कंह दीन्ह पठाई। दिन पांच लगि भै पहुनाई। कहैा वाहि को जीति पारा जेहि के कृष्ण सदा रखवारा। तस वियोग नृपत बिसारा अर्जुन मनहि आनंद। कहत दास पुरुषोत्तम सुनत कटै दुखफंद। इति श्री महाभारते अश्वमेध को पर्वणी चंडिकापुरी विजयनो नाम एक विंशतमोऽध्याय।

Subject—घोड़ा का चंडिकापुरी में पहुंचना वहां के राजा हंसाध्वज का अश्व को पकड़वाना फिर अर्जुन और सुधन्वा आदि का युद्ध होना पश्चात श्री कृष्ण का अपनी लीला से मेल मिलाप करा देना राजा का सब सेना समेत अर्जुन आदि को पहुनाई करना और भेंट आदि देना इत्यादि केवल एक अध्याय।

No. 325(*b*). Sudhanwā Kathā by Purushottma. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—7 × 5¼ inches. Lines per page—13. Extent—442 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1887 or A.D. 1830. Place of deposit—Thākura Jadunātha Baksha Simha, Hariharpur, Village Chilandiā, Tahsil Kesargañja, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सुधन्वा कथा लिख्यते ॥ दोहा। गननायक के चरन चरन सिद्धि वंदैां बारहि वार। कर जोरे विनती करैां...... अनुसार। चैा० ॥ चला तुरंगम वाजन बाजा।

नोट—शेष No. 325 (*a*) के अनुसार।

Subject—प्रार्थना, सुधन्वा की पीड़ा, सुधन्वा पांडव युद्ध सुधन्वा वध सुरथ युद्ध, शिव विष्णु युद्ध, सुरथ वध, हंसध्वज का कृष्ण से मिलन, सब का जीवित होना।

No. 325(c). Sudhanwā Kathā by Purushottama. Substance—Country-made paper. Leaves—37. Size—7½ × 6 inches. Lines per page—16. Extent—444 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1259 Fasli or A. D. 1842. Place of deposit—Nāgeśwara, Vaishya, Mathura Bāzār, Post Office Khāsa, District Bahrāich.

No. 326(a). Dūshaṇa Bhūshaṇa by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—7½ inches. Lines per page—20. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Siṁha of Bhinagā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दूषण भूषण लिख्यते।

दोहा। अलंकार सब काव्य के कहे शास्त्र परिमान। अब दूषन गुन लछन सब कहियतु है सुखदान। १। ज्यों मनुष्य के देह में हैं मुर्खादिक दोष। त्यों श्रुति कटु कहँ आदि है करत काव्य में पोष ॥ २ अथ दूषन वर्णन—दोहा—दूषन सहित कवित्त सों होत सुरस की हानि। तातें बर्नन कीजियतु इन्है लेहु पहिचानि। ३ दोष लक्षण-शब्द अर्थ मिलि चित्त को सुख टारत हैं सोइ। श्रुति कटु आदि कवित्त में दूषन कहियतु सोइ ॥ ४ दूषन नाम। श्रुति कटु अरु संस्कार हत अप्रयुक्त असमर्थ। निहितार्थ अनुचित अरथ अनौ और निरर्थ। ५ विविध भेद अस नाम के सुकविन दिये बताय। ब्रीड़ा एक जुगुप्सा एक अमंगल पाय। ६

End—कारज लक्षण ॥ प्रस्तुत के व्यापार तें कारज को फल पाय। तासों कारज कहत हैं सकल सुमति के राय। १२। उदाहरण—घन घटा गज तापै बिज्ज के छटा निसान गरज नगारे मारे बाजत अबैन हैं। देषि रघुनाथ को दुहाई न खबर तोहि जुगनून आगे आवगी अमारी पैन है। कोकिला कलापी झिल्ली दादुर पपीहा सोर इन्हें मति बूझे और सुभट के बैन हैं। तेरो मान कोट ताके तोरै कौन खोट घेरि हल्ला किया चाहत मोहल्ला लेत मैन है ॥ १३ ॥ इति लक्षण श्रीकवि रघुनाथ बंदी जन कासी वासी विरचिते जगत मोहने अल्पाक्षरादि लक्षण वर्णने लघुमंत्र: ॥

Subject—दूषण वर्णन, दोष लक्षण, दूषण नाम, पद दूषण, वाक्य दोष, अर्थ दोष, श्रुति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहितार्थ, अनुचित, निरर्थ, अश्लील, अमंगल, ग्लान, अवाचक १—३ पृष्ठ

संदेह, निकाय, क्लिष्ट, ग्रामीण, अविमृष्ट, विरुद्ध मति ४—५ पृष्ठ

न्यून पद, अधिक पद, कथित पद पतत्प्रकर्ष, प्रसिद्ध हत, अभवन पुनरात्त लक्षण, क्रमभंग, स्थान स्थेयपद, ५—७ पृष्ठ

अपुष्ट, कष्ट, व्याहत, पुनरुक्त, दुक्रम, ग्रामीण, निरहेत, अयुक्त, संप्रदाय विरुद्ध, शास्त्र विरुद्ध, अष्टा बिक्रित, सहचर भिन्न, चाह युत ८—९ पृष्ठ

अविशेष, नेम अनेम, त्यक्त पुनः स्वीकृत, विधि अनुवाद, अर्थदोष, अश्लील निवारण, पुनरुक्त निवारण, १०—११

गुण वर्णन, मधुर, ओज, प्रसाद, संगति, अभिमान, हेत, प्रतिपेद, मिथ्याध्य वासित सिद्धि युक्ति, कारज १२—१५ पृष्ठ

No. 326(*b*). Jagata Mohana by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—204. Size—10½ × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—3,213 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1911 or A.D. 1854. Place of deposit—Chhedī Lāla Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargaḍh, District Bārā Banki (Oudh).

Beginning—बरन वृत्त के छन्द को इनते रचना होत। नागराज को पाइ मत कहे सुमति के पेत। ११॥ म य र स त ज भ न आदि दे इनको क्रम लखि लेउ। छिति जल अगिनो वाइ नभ रवि ससि पुनि इन देउ॥ १२॥ मगन नगन सो मित्र हैं यगन भगन है भृत्त। रगन सगन अरिध तगन जगन उदासी कृत्त॥ १३॥ मगन तीन गुरु तीन लघु नगन यगन लघु आदि। भगन आदि गुरु कहत हैं पिंगल मत निरवादि॥ १४॥ रगन मध्य लघु मध्य गुरु जगन कहत बुधिवंत। सगन अन्त गुरु कहत हैं कहत तगन लघु अंत॥ १५ प्रस्तार विधि॥ पहिले गुरु के निम्न लघु फिरि विधि ऊपर पाँति। उबरै ऊपर दीजिये गुरु लघु रचि इहि भाँति॥ १६॥ पर पूरब दोउ इष्ट है मित्र भित सुख दान। उदासीन ते भृत्य सुभ सेस मते परमान। १७॥ उदासीन अरि ये दोऊ असुभ अन्थ को देत। आदि मानुषो न्कवित के गन धरो करि हेत॥ १८॥

End—दोहा॥ दोइ नगन फिरि रगन ऊेतिक बाढ़त जाइ। दंडक को यह भेद है त्यों त्यों नाम बताइ॥ ५१८॥ सात रगन को चंडविष्टि अर्ण पाठ को

जानि । वर्ण वाम्य नव रगन को दस को व्याल बखानि ॥ ५१९ ॥ ग्यारह को जीमूत कहि द्वादस लिला कर भाखि । तेरह को उद्दाम कहि चौदह को सख भाखि ॥ ५२० ॥ पन्द्रह को आराम कहि सोरह को संग्राम । विदित नाम फनपति कहे सत्रह को सुराम ॥ ५२१ ॥ बैकुंठ अठारह रगन को कहत सबै मति धाम । रगन उनइस को कहत सात कंठ यह नाम ॥ ५२३ ॥ बीस रगन को सार कहि एकइस को विस्तार ॥ बाइस को विस्तार है तेइस को संहार ॥ ५२४ ॥ चौबिस को नीहार कहि पचीस मंदार । छब्बिस को केदार है सत्ताइस साधार ॥ ५२५ ॥ सत्कार अट्ठइस रगन को बानतिस को संसकार ॥ सेस कहे गरुड़ लहे छंदन के विस्तार ॥ ५२६ ॥ तीस रगन माकुंद है इकतिस को गोविन्द । बत्तिस को संदोह यह मानस्यो नांउ फनिंद ॥ ५२७ ॥ दोइ नगन गन तीन से तेतिस रगन बखान । सेस कहे खगपति लहे दंडक को परमान । ५२८ × × ×

शुद्ध छंद के बरन को जो करता कवि होत । सुख सम्पति दिन दिन करत कवि के छन्द उदोत । ५३७ इति—श्री कवि रघुनाथ बंदीजन काशी विरचित जगत मोहन ने छंद शास्त्रे मात्रा वृत्त, वर्णवृत्त, मालावृत्त, दंडक, षष्टमोऽध्याय चतुर्थ लघु ग्रंथः ४ ॥ शुभमस्तु

अष्टों के सारह वर्ण संख्या भेद विचार— ब्रह्मरूपा, गजतुरग, वाननी, भाव-गती, सुचित्र, चपला, पंचचामर, ललिता, जपानंद, चित्रकला, सरमाला, मंगल मंगना, कोमल, लतिका, वर विलसित, मदनलतिका, चकिता, गरुड़ मारुत, गंगाधर, लक्ष्मी पति, अचल धृति, सर्व लघु उदाहरण, अति अष्टो, पृथ्वी, वंसपत्र, मनहारिणी, मंदाक्रांता, करिहरि, कांता, त्रिलंबा भाराक्रांता, हारिणी, पद्मा, मालाधर, वसुधरा, धृति (१८ वर्ण), लघु धृति, नंदन, मुक्तामाला, वाचाल, कुसुमित लता, हरिणप्लुलता लक्षण, अश्वगति, हंस, देवमुनि शार्दूल, चपल, मणिमाला, पंकज, चक्र, शिवचक्र, सिंहघोर, हरिनिपम, शार्दूललिलित, मनहार, ललित पदा, कमलपदा, कमलधरा, श्रीकेश, मंजरा, केलीचंद्र, हरनी प्रिया, रसकोश, रस रास, अतिधृति (१९ वर्ण), मेघस्फुरित, छाया, चमर विमल पुष्पदास, विद, मकरंदिका, मणिमंजरी, समुद्र, तरल लोला, भूपति मालती वासुदेव, शशिकला, शंभू शशिधर सुरसा, तुला, कृति (२० वर्ण) वंदना, गुंजित, चित्रवृत, लोकराय, शोभा, सुलक्षण, मत्तइभक्रीड़ित ब्रह्मवार, कोमलता, उज्वलमुद्र, पुट, गतागत, चित्रमाल मुनिशेखर

Subject—(१) पृ० १ पृ० ५ तक—गणागण भेद वर्ण, द्विगण विचार, प्रस्तारविधि शुभाशुभवर्ण देवता आदि का वर्णन है ।

(२) पृ० ६ से पृ० १६ तक—आर्या प्रकरण । छन्दों के लक्षण:—विपुला, जघन पथ्य, चपलागाह, आर्या गाह, विगाहा, उगाहा, परजाय, गीती, उपगीती,

आर्य्या गीती, आर्य्या गीतो गीतो, आर्य्याउद गीतोगीती, गाहिनी, सिंघिन, पेवा, गाथा, विगाथा, पवगाथा, उपगाथा, मालगाथा, वैताली, उपछंदसिका, अपातालिका, दखिनोतिका, दाक्षिनोतिकापरोति, दाक्षिनोतिका तृतीय भेद उदीच वृत्ति, द्वितीय तथा तृतीय उदीची भेद, प्राचवृत्ति, द्वितीय प्राच्य, वृत्ति, तृतीय प्राच्य वृत्ति, प्रवर्तक, द्वितीय, तृतीय, प्रवर्त्तक, वैतालिक, औप छन्दसिक, अपतालिक, अपरातिका, परांतिक, द्वितीय परांतिक, तृतीय परांतिक प्रवृतक परांतिप, द्वितीय परांतिक, तृतीय प्रवर्तक परांतिका, इति वैताली समाप्त ।

(३) पृ० १७ से ५३ तक—पथ वक्र लक्षण, पथ्या वक्र, विपरीतादि वक्र, चपला वक्र जुग्म विपुला, सैतवी विपुला, भा विपुला, सोता विपुला, मा विपुला, चरनाकुलक, उपचित्रा चित्रा, चिश्लोक, वन वासिनी, मात्रा समक लक्षण, हायूत, दुमंद समाज, प्रथम अनंत, उत्तरदल माला, अंता लक्षण, अनंग क्रोड़ा, रुचिरा, दूवरा समाज, चरना, अभिजात, ह्रस्ववर्ण, चुलिआला, सोरठा, पंचा, नंदा, वरहंसा, अषाढ़, श्रवणसुधा, सुधा, चैबोला, गमक, रसवाम, कांता, मधुहार, दीपक, अहीर, उकला, दसहाकिल, हंसमुख, करी, जैकरी, पर्म्मालिगा, अरिल्ल, सतोस, मतोल, रतोल, गंधान, करिल्ल लघुदीपक, पवगम, मदन दीपक, महादीपक, निसानोल, हीर छंद, रोला, काव्य, गगनंग, रामगीती, हरगीती, अनुगीती, मन्दगीती, दोवै, उल्लाला, मरहट्टा, चौपैया, लघुपद्मावती, सवैया, घत्ता, घत्तानंद, द्वितीय घत्तानंद, त्रिभंगी, पदुमावती, दंडक, अनहरना, द्रुमिला, लीलावती, वरवीर, वीरवान, पंचवदन, भूलना, मैनहरन, मदनहरन, छप्पय, कुंडलिया, रड्डाभेद, नंदारड्डालक्षण, राडसैन, चारुसैन, भद्रा, तालंकिन, मोहनी, द्वितीय मोहनी, राजकुंडनी, घनाक्षरी, द्वितीय यति, चतुर्थ यति चरना घनाक्षरी ॥ इति मात्रा स्थान

(४) पृ० ५४ से पृ० ६ तक—नाम एवं गुर सर्व लघु पर्यंत गाथा, दोहा, छप्पै, मंत्र ।

(५) पृ० ५७ से ८२ तक—वर्णवृत्त, श्रीछंद लक्षण, मुष्पा सार छंद, मध्या भेद, ताली सोनारी, समा मनोम्या, मृगी प्रिया, प्रवक सेना, मृगेन्द्र, हृदमंदिर, दिग कमल, वर्मपरजापधारी, गिरा क्रीड़ा, ऋद्धि, सुमती, सुगती, सुमुही, मधु, वल्ली, पद्म, केदली, जति, प्रतिष्ठा, समोहा, पंक्ति, हारी, सती, त्रिपता, नंदा समती, गायत्री, सुमती, विजोहा, शशिवदन, मेथानक, मुकुला, तनमध्या, सुमती, उष्णिक, प्रथम गंधर्वा, हारिता परिपाप, सगुन विलास, सुजस प्रकाश, करहंच, मदलेखा, सतीकुमारलतिका, हंसमाला, भ्रमर माल, कलिका, चित्रा, श्रुति, उष्णिक, अनुष्टुप, विद्युन्माला, मलिका, वितान, कमल, मानव क्रीड़ा, चित्रपदा, हंस रुत, नाराचिका, केतुमाला, क्षमा, मालती सुंदरी, रूपमाला, मुग्धविलास,

पाइता, पमल कमल, भुजंग शशि मृता, भद्रकाय, वृहती, उत्सुक, पच्युना सुग्ला, महती, मुवसा

सुलक्षण, पंक्ति, योगो, मयुरशालिनो, संयोगो, रुक्मावती, मुकादीपक-माला, वक्ता, उपस्थिता, मनरंगा, बंधुकाय, पमृतगती, समुपस्थित, मौक्तिको, पद्मिनो, सुसुमो, सुविरती, मालती, पमृतगती, सुमुखो, चपला, त्रोटक, मोटक, ग्राही, पच्युरतसखा, दोधक, सुमती, मौक्तिकमाला, उपस्थिता, सैनिक, भद्रिका, वृता,

(६) पृ॰ १८३ से पृ॰ ८६ तक—स्वागता, भ्रमर विलासिता, सुधी, माया, शालिनो, वंधुपासुमुखी, भंगमाला, सदा उपस्थिता वरमति, उपचित्रा, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा। इति प्रस्तार विधि।

उपजाति चतुर्दशनाम तथा उदाहरण—कीर्ति, वानी, माला, शाला, हंसी, माया, जाया, वाला, भद्रा, भद्रा प्रेमारामा, ऋद्धि, बुद्धि, जगती भेद—विद्याधर, चंद्रवर्त, सुवंशा, इंद्रवंसिका, कांती जलधरमाला, मौक्तिक दाम, तोटक, मोदक, कमलविलासिनो, द्रुतविलंबित, कुसुमविचित्रा, भुजंगप्रयात, स्राविणी, रानीवली, प्रियंवदा, मणिमाला, ललिता, चेटिका, प्रमिता, पुंडरीक, महेन्द्रवंशा, वंशद्विका, पतिश्रुति, श्रुति, जलधार माला, नवमालिनी, मालती, गौरी, ललित, सुचित, द्रुतपदस्थिता, प्रहर्षिणी, रुचिरा, माया, मंजुभाषिणी, मंजुलक्षण, चंद्रलेखा, रुचिमोदक, रुचिलक्षण, नलिन लक्षण, निकुंड, नेमा, मनकनिका, विद्युल्लता, कैामुदी, तारक, कंद, पंकावलि, मृगेन्द्र, चंडाल, कलहंस, मानमल, देवोपद, सर्कारो, गौरीधर, वनलता, पनंदा, सुरवर्त्तक, पलाला, रम्या, लक्ष्मी, पसंवाधा, वाधा, पपराजिता, पहर्नकलिका, वसंततिलका, इंद्रवदना, लोला, पलोला, कल्लोला, मध्यक्षमा, कुमारी, पमदा, उपचित्रा, वासती, सामंत, नंदी, लक्ष्मी, भद्र, उचित, सुचित, चक्रपद, राजरमणी, मंजरी, चंद्रमाली, वसंत सुदर्शन, मणि कटक, दरदुर, कचिठका, सारंगिक, मंडुका, तुन चामर लक्षण पंचानन, चित्तराज, निशुपाल, भ्रमरालसी, चन्द्रप्रभा, परविंदक, मणिभूषण, ऋषभ, पमलिनी, मालिनी, चन्द्रलेखा, प्रभद्रकेश, पलाल, शुकमाला, सुदर्शन,

प्रतिकृति (२१ वर्ण) स्रग्धरा, मुनिवरा, चित्रलतिका, कौशल, वन मंजरी, ललित तुरग पद सव, ललितविक्रम, गति छंद, महेश्वरी, नरिंद, पाकृति, भद्रा, कला, मदिरा, महा स्रग्धरा, वनहंस, मदनसा-हंसी, केकनी, पदीपा, पमी प्रकाशमहाफल, विकृति (२३ वर्ण) वाजी वाहन, हंसगति, तारंगमालिका, कालिका, सचोसुधा, कामकला, शारदा, सुंदरी, वागीश्वरी, कामिना, मत्तकरी, पत्नि, सवगामी, दीपक संस्कृति ॥ २४॥

(७) पृ० १८७ से पृ० १९० तक—सुतन्वी, दुमिला, किरोटो, हंसपदा, मदनश्रावक, वैकुंठ धाम, लवंगलता, कुमार घनाघन, भुजंगो, यति कांत, (२५) चंद्रि कोचपदा, चंद्रि, विशदपद, सुरेश्वर, अरविंदमुखो, कला कुशला, पला लक्षण, भारव्य लक्ष्मो पति, देव देवा, उत्कृति, (२६) भुजंग, विजृंभित, बाह, ऊर्म्मिलिनो, बनलतिका, मकरंद, मौक्तिक, किशोर, रत्नकांचो।

(८) पृ० १९१ से अंत तक—विकसितकुसुमा, कर, ललिता, त्रिभंगो, सिरोरत्न सालूर, मनि निकर, मुदित, भावविलास, ललितवित, कणिका, इन्द्रमन, लहरिका, विहारो, मनिवर ललित, चित्रमय, लोलावतो, मालवृति सम्पूर्ण, अथ दंडक, अानो उदाहरण, अर्ण वध्या, दंडक विभेद लक्षण शुद्ध छन्द वर्णन को बड़ाई। ग्रन्थ समाप्ति।

No 326(c). Jagata Vimohana by Raghunātha Bandījana of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—11 × 5¾ inches. Lines per page—10. Extent—280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinagā, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः प्रभु को आसिरवाद दै हरष भरी यह प्रीति। प्रभु आगे लाग्यो कहन राजनीति की रीति ॥ १

कौन देश है को समै को वैरी को मित्त।
यह विचार सब दिन करै होत भोर हो नित्त। २
सहसा काम न कछु करै करै तो करै विचार।
सो सगरे आसर परे जोति सकै न हार ॥ ३
साम दाम अरु भेद जुध है ये चारि उपाय।
अति अडोल कै चित्त मे राखै सब दिन छाइ। ४
प्रति पाले कुल को धरम पाले द्विज अरु दोन।
कृपा सहित तिनसों मिले आवै जे परवोन। ५
बिथा सुनै जन दोन की आपु श्रवन मन लाय।
वाको करै सहाय सुभ करिकै चारि उपाय ॥ ६

End—त्यागिवो त्यागवे जोग परे अरु संग्रह जोग तजो नहि जाई। प्रोति प्रतोति को भांति बढो कछु रोति सनातन की चलि आई। पाहन पूरित देखि मराल चले तजि मानस होर राई। सो प्रगट्यो मुकता किन आपने हंस सुगे चलि दूरि ते आई। १। मानस सेइवे जोग सदा तुम सेव हंसन को समुदाई। जो हम दूरि बसे विधि के बस सो कछु भेद कयो नहि जाई। पाहन कंठ फंसे

कबहूं वह सोचि सदा अब लैं डरपाई। सो प्रकटैा मुकता किन आपने हंस चुनैं चुनि दूरते आई। २। चैन नहीं पल एक तजै नित मानस होत मराल कैा प्यारो। पीनस जोग वियोग तें आनता होत सदा जिय माह विचारो। दानि सिरोमन दै मुकता इन आश्रित की विपदा हटि टारो। सेइबो हंसनि को जो चहैा तुम पाहन आपने दूरि निवारो। राम राम राम—इति

Subject—पृष्ठ १ से १३ तक राजनीति वर्णन, पृ० १४ से २४ न्याय वर्णन, पृ० २५ से २८ महाराज मानसिंह और द्विजदेव के कवित्त।

No. 926(*d*). Kāvya Kalādhara by Raghunātha Bandijana of Kāśi. Substance—Country-made paper. Leaves—131. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—2,600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Prasāda Siṁha, Bhinagā Rāja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सीतारामाभ्यांनमः॥ कवित्त॥ अरथ धरम काम मोक्ष कहै रघुनाथ चारिदा पदारथ सहज ही में लहिए। रिधि सिधि बुधि को विरधि होत दिन दिन विद्या और बल बेवसाय जेता चहिये। संतति बढ़ति जग कीरति पढ़त मुख पानिप चढ़त चारु मोह महा गहिये। तरन के सुत को विसाति है न कछु जहां गुर के चरन को सरन जाइ गहिये॥ १ दोहा। प्रथम मंगलाचरन में गुरु को कीन्हो ध्यान। अब कीजत श्री कृष्ण को करता सब कल्यान। २ कवित्त अन्हाइ के आइ खरो भयो तीर ज्यैं फैठो समीर सुगंधन मे व्वै। गाइ न जात निकाई सरुप को पूरो प्रकास मही नभ को छ्वै। और कहां लैं कहैं रघुनाथ विलोक विलोकनि वामन को वै। इन्द्र सैा आज गोविन्द बन्यो रो रह्यो सिगरो अंग आंखि मई ह्वै। ३ काछ कछे पट पीत को सुन्दर सोस धरे पगिया रंग राती। हार गरे बिच गुंजन कैा जुलफें छुटी छोर सो छै हरी छाती। खेलत ग्वालन सों रघुनाथ ज्यैां डोलै गलीन में रो उतपाती। त्यैां रंग सांवरो होतो न ईठ तो काहू की दीठि कहूं लग जाती। ४

End—चकित हाव के लक्षण—आगे पिय के भीत तें जहं मन भ्रम ह्वै जाय। चकित हाव तासों कहत सकल कविन के राय। उदाहरण— हेत दोहनी तोय कर गहत गहो हरि आइ। चैांकि छांड़ि कर सों दई चक टक रही लगाइ। केलि हाव के लक्षण-जहं तिय खेलै पीय संग केलि हाव सो जानु। कहे हाव भरतादि इमि कवि कुल बुद्धि निधानु। उदाहरण—घनस्यामै घनस्याम है राधा दामिनि रूप। बढ़े हिंडोले झूलत पावस किए अनूप। बोधक हाव लक्षण-

गुप्त भेद करि आव जहं करै क्रिया मन मांह। बोधक तासों कहत हैं सकल कविन के माह। उदाहरण—लै श्री फल कल धौत कर तियहि देखायो स्याम। भानु चित्र मसिबुंद दै रही मौन ह्वै बाम। इति श्री कवि रघुनाथ बंदी जन कासी बासी विरचिते काव्य कलाधरे हाव वर्नन षोड़सो मयूष अथ काव्य कलाधर समाप्त शुभ मस्तु दस्तखत श्री भैया कालीप्रसाद सिंह

Subject—१—५ पृष्ठ वन्दना, राजवंश वर्णन, काशी वर्णन,

पृ० ६—३० रस वर्णन, दूनो वर्णन, आलम्बन, उद्दीपन, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, मुग्धा, मध्या प्रौढ़ादि वर्णन,

पृ० ३१—५२ नायका भेद, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा भेद, क्रिया विदग्धा, वचन विदग्धा, ज्ञात यौवना, सुरत आदि वर्णन,

पृ० ५३—६६ गर्विता वर्णन, खंडिता, अन्य संभोग दुखिता, मानस भेद वर्णन, स्वकीया धीरा, अधीरा, वर्णन,

पृ० ६७—७३ परकीया, धीरा अधीरा, मुग्धा मध्या प्रौढ़ा वर्णन, सामान्या वर्णन उपेक्षा अन्य संभोग दुखिता वर्णन

पृ० ७४—९४ मुग्धा स्वाधीन पतिका, सामान्या, अभिलाष, प्रोषित पतिका, चिन्ता, प्रलापादि व्याधि, उद्वेग, उन्माद, जड़ता, आगत पतिका,

पृ० ९५—१०० अनुकूल, दक्षिण, शठ धृष्ट वैसिक, धीर, ललित, धीरोदात्त,

पृ० १०१—१३१ रोसव, क्रियावचन, लक्षिता, विदग्ध नायिका भेद वर्णन, भाव, अनुभाव, सभेद, हाव वर्णन सभेद।

No. 326(e). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśi. Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—8 × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—960 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1796 or A. D. 1739. Place of deposit—Babu Padma Baksha Simha, Tāluqedār, Lavedapur, District Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः। विसेश्वरो बीजते॥ गनपतेनमः॥

दोहा—सुफल होत मन कामना मिटत विघन के दुंद। गुन सरसत बरसत हरष सुमिरत लाल मुकुंद॥ १॥ कवित्त-अरथ धरम काम मोक्ष कहै कवि रघुनाथ चारित पदारथ स.ज हो भें लहिए। रिधि सिद्धि बुद्धि को विरिधि होत दिन दिन विद्या और बल वेवसाव जेतो चहिए। संतति बढ़त जग कीरति पढ़त

मुख पानिप चढ़त चह मोह मद्दा गहिए। तरन के सुन को बसाति है न कछू गुरु के चरन को सरन जह' रहिए। २ दोहा—प्रथम मंगलाचरन में गुरु को कोन्हों ध्यान। अब कोजत श्री कृष्ण को करना मय कल्यान। ३ कवित्त-न्हाइ के अंग खरे भयो तोर सो फेले समीर सुगंधनि में व्वै। गाइ न आनो निकाई सरूप को पूरो प्रकास महा नभ का छ्वै। पैार कहां लैां करौं रघुनाथ बिलोकि बिलोकनि बाननि को छ्वै। इंदु मो बात गोविन्द चन्यो रो रहगी सिगरी संग पांखि मई है। ४

End—प्रहर्षन लच्छन—उत्कंठा जो अर्थ है बिना जतन जो सिद्धि। सुकवि प्रहर्षन कहत हैं अलंकार मे रिद्धि। १७१। उदाहरन—वासर बास के तोरथ को रघुनाथ सुनो परवो लखि भारो। गांउ के लोगन संग सबौ सिगरो परिवार लै सासु सिधारो। आपु अकेलो रहो दुलही कहिए अब भाग को यात कहारो। जोव को भावतो देवर जो घर में रह्यो जो घर को रखवारो। २४६ द्वितीय प्रहर्षन लच्छन—जहं मन वांछित अर्थ सो अधिक परापति होइ। द्वितीय प्रहर्षन कहत है बुद्धिमान सब कोइ। १७२ उदाहरन—पाज अन्हात में देखो कहं मन में महरेटो को रूप बसायो। प्रेम पगे पति आजु रह्यो घर चातुर एक बसीठ पठायो। हे रघुनाथ कहा कहिए मनमोहन हू मनमोहन पायो। बातं लगायो सखा लखिको उतसो मिलिवे को संदेसोई आयो।

त्रितीय प्रहर्षन॥ जतन करत जहं सिद्धि को लाभ होइ साच्छात्। कहत प्रहर्षन तीसरो भेद सुमति अवदात। १७३

Subject—पृ० १ से ७ तक—प्रार्थना, श्रृंगार वर्णन, विषय अलंकार वर्णन, राजा व कवि का वर्णन,

पृ० ८ से १६ तक—उपमा, अनन्वय, उपमानोपमेय, प्रतोप, रूपक, परिनामालंकार वर्णन,

पृ० १७ से ३३ तक—उल्लेख, स्मरण, भ्रान्ति, सन्देह, अपन्हुति, उत्प्रेच्छा, अपन्हुति, अतिशयोक्ति वर्णन,

पृ० ३४ से ४२ तक—तुल्य योगिता, दीपक, प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, पदार्थावृत्ति, निदर्शना, व्यतिरेक, सहोक्ति वर्णन,

पृ० ४३ से ५३ विनोक्ति, समासोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, श्लेष, अप्रस्तुतप्रशंसा, प्रस्तुतांकुर, पर्यायोक्ति, व्याजोक्ति, आक्षेप वर्णन,

पृ० ५४ से ६५ तक—विरोधाभास, विभावना, विशेषोक्ति, असंभव, असंगत, विषम, सम, विचित्र, अधिक वर्णन,

पृ० ६६ से ८१ तक—सूक्ष्म, अन्योन्य, विशेषोक्ति, व्याघात, कारमाला, एकावली, मालादीपक, सार क्रमिक, पर्याय, परवृत, परिसंख्या, विकल्प, समुच्चय, कारकदीपक, समाधि, प्रत्यनीक, काव्यार्थापत्ति, काव्यलिंग, अर्थान्तर न्यास, विकस्वर, प्रौढ़ोक्ति, संभावना, मिथ्याध्यवसित, ललित और प्रहर्षण का वर्णन।

No. 326(*f*). Rasika Mohana by Raghunātha of Kāśī. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A.D. 1746. Date of manuscript—Samvat 1834 or A.D. 1777. Place of deposit—Ṭhakūra Digvijaya Siṁha, Tālukedār, Village Dikaulia, Post Office Pisawq, District Sitāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ रसिक मोहन ग्रंथ लिष्यते॥ दोहा॥ विघन हरन दुरमति टरन करन सकल कल्यान। शिव शुभ श्री गननाथ को सब सुषदायक ध्यान। श्री गुरुदेव मुकुंद की लहि कै कृपा सहाइ। करिबे को पाई सकति ग्रंथनि को समुदाइ। ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्ध। ताके कुल को दमि सिर प्रगट भयो तप सिद्धि। वेद कंठ चारो करे अट्ठारहौ पुरान उपनिषधौ षट शास्त्र सब औ सब कला निधान। बरनि कहाँ लगि कीजिये करामाति समुदाइ। धोती लिये अकास मैं जाकी सुखन जाय। कुल मैं कोट मिश्र के उपजे मंसाराम। जापै राषत निज कृपा आपु राम सुष-धाम। कवित। आजु महि मंडल मैं कहै कवि रघुनाथ जेते राजपूत राज पदवी धरत हैं। आपनी सभा मैं आपु आपने मुसाहेब सों बैठे आठो जाम ऐसो भाँति उचरत हैं॥ वपत विलंद ऐसा कौन पहमी पै भूप गौतम गुमानो के जो समता करत हैं। चाहैं जोई राम सों करै मंसाराम आजु चाहैं मंसाराम सों रामजू करत हैं।

End—हेतु अलंकार लछन। हेतु सहित जहं बरनिये हेतुवान गहि रीति। हेतु अलंकृत सुकवि सब तहां कहैं गहि प्रीति। उदाहरण। महत महातिम की पंचकोशो जात्रा कहै रघुनाथ मुनि मुनि बचन महासी के। हरष पागे अनुरागे बड़भागे लोग नगर बसैया सबै जोग भोग निर्भय विलासी के। गुंदसे तागुन मैं फिरत आस पास भये मालाकार युवा वृद्ध बालाबाल काशी के॥ अपरं॥ परम असंक लंकपति मेरो विनै सुनौ पुर पारावार कोप हारिन भय भयो। आवत बसंत ज्यों ज्यों बन उपवन सब रघुनाथ हरौं भयो फुलि कै करो भयो। करिबे जो है सो अब कीजै मंत्रि मंत्रिन सो नगर बसैयन के आस को दुरो भयो। लोकिन विपति के हरैया राम ताके आगे उबराइये छन अभोछन परो भयो। इति

श्री रघुनाथ बंदीजन काशी वासी विरचिते काव्य रसिक मोहने उपमादिक अलंकार बरननं संपूरनम। किलो रसिक मोहन सुमन ग्रंथ सुकवि रघुनाथ। चित्र चित्र काशी नृपति के कहे विशद गुन गाथ। अलंकार लछन सहित लछ सहित सुविचार। करि कवित्त रसिकन लिये दये सुकल निरधारि। इति॥

No. 327(a). Mānasadīpikā by Raghunāthadāsa Vaishṇava. Substance—Country-made paper. Leaves—118. Size—16 × 12 inches. Lines per page—44. Extent—6,490 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Śhankara Vājapeyī, Village Bahorikā Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ मानसदीपिका संकावली लिख्यते॥ तत्रादौ मंगलाचरणम्। दोहा। परशुधरनि संपति भरन अघ दर दरन गनेश। विघन हरन मंगलकरन राषहु शरन हमेश॥ एक रदन करिवर बदन सिद्धि सदन मुद दानि। मदन कदन नंदन जपहु जगवंदन जिय जानि। सिंदुर सह सिंधुर बदन रदन विशद द्युति भांति। ईश्वर कवि कवि को निरखि रवि पवि छवि दवि जाति॥ अथ संक्षेप सो राजवंश वर्णन॥ हरिपद छंद॥ परम तपस्वी तेजस्वी वर किट्टू मिश्र उजागर। हुते वेद वद वंदनीय शुभ कृत्य सुयश के सागर॥ गौतम गोत्र सुपात्र पीयपद पंकज में सिर धरिकै। दये ग्रामवसु विंशति जिनको नृपवनार छल करिकै॥ क्यों छल कियो कौन थल कैसे कौन लह्यो फल भारो। बहुरि मिश्र जू को प्रभाव अरु वंशावली सुधारो॥ यह सब कथा कहां लगि कथिये सुनहु सुजन सुषदानो॥ काशिराज चंद्रिका ग्रंथ में सह विस्तार बषानो॥

End—नाम प्रताप सदोदित जागा। जाके उर कलि को तम भागा। बाढ़त देव चरन अनुरागा। जाको जस श्रुति गावा बहुत जन्म इत्यादि लिखि पाये। जीव के जन्म नाही होत। या चारि अवस्था में जन्मरूप भेद पाया जाता है॥ जैसे बाल वृद्ध इत्यादि॥ कोई केवल लड़िका देषे होइ फेरि दूसरी अवस्था में जो देषे सो नहि पहिचानैगा और जन्म संस्कार का नाम है और चारो जुग का जो भेद कहते है सो प्रमान तो समान जानब। याही ते धर्मन मे विरोध भासै है जैसे सामान और विसेस सो सब मतन मे सामान्य विसिष्ट पाये जात है और विसिष्ट मे अनेक विरुद्ध देषा परे है जैसे मांस भक्ष मे विध के दक्षिन वासीन को आज्ञा उत्तर वासी पतित होत है हनन धातु तो जीव मे चरितार्थ नाही होत

जैसे घट मठ आकास का नाम पावत है याही ते जीव व्यापक जान्यो जात है और जन्म सूक्ष्म स्थूल सरीर करके बहुत भासत हैं जैसे चौरासी लक्ष योनि जन्म परमित कियो सो संसार और काल को धर्मनि को मुख्य जानिवो साम पायो। दो०। मान जुक मानस सुपद संका रहित उदार बोध रहित निज मोहवस संका करत अपार ॥ मानस मान अनेक जुत मानो मन मम नाहि मम साहस संकावली क्षमव साधु मोहि माहि ॥ इति सप्त कांड संकावली संक्षेप शुभ मस्तु ॥ लिखत नन्दकिशोर ॥

Subject—तुलसीकृत रामायण सातों कांडो पर संक्षेप से शंका का समाधान और अंत में कठिन शब्दों का कोष।

No. 327(*b*). Mānasadipikā by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—115. Size—13½ × 7⅓ inches. Lines per page—32. Extent—4,600 Anushṭup Ślokas. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1914 or A.D. 1857. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Siṁha Raisa, Rahuā, Post Office Bauṇḍi, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—No. 327 (*a*) के अनुसार।

End—गुहने विचार कियो कि वैर भाव ते जातु हैं याते ज्ञाति लोगन को बोलाइ कै कहत भयो भरत ते संग्राम करि चांदनी की नाई जस तें चौदहों भुवन सपेद करि हों ॥ वहां सगुनियन कह्यो है कि रारि न ह्वै हैं भरतजू रामचंद को मनावने जातु हैं तब गुह भरतादि ते मिलि परमानंद पायो। अरु कौशिल्यादि मातु असीस देय सत लाख वर्ष जीवे को भाव कि किरति जुग जुग रहो ॥ अरु निषादहि लागु निषाद के कांधे पर हाथ धरे भरत जू गंगा तट पहुंचे स्नान मध सी कृत विस्तार वरषें छंद श्री काशी पितु को आज्ञा पाइ धो। गजराज कथनिसम मेल मिलाइ चौपाई सरल अरथ आखर को थोरो। सहित प्रभाव सांत रस बोरो दुर देस दरसावन वारो अैन कसम बिधु विमल तमारो ॥ इति श्री जानकी पति पदारविंद मकरंद मिलिंदाय मान मानस रघुनाथदास कृत मानस दीपिका वा विश्राम अंग सप्तम प्रकाशः ॥ ७ ॥

No. 328(*a*). Harināma Sumirani by Raghūnathadāsa Rāma Sanehi of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—12 × 5 inches. Lines per page—40. Extent—780 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—

Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma-Śaṅkara Vajapeyi. Village Bahorikā, Vājapeyī kā Purawā, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री महाराज महंत रघुनाथदास रामसनेही कृत हरिनाम सुमिरनी ग्रंथ लिष्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम को वंदना करौं प्रथम सिर नाय जासु कृपाते सिद्धि सब भये सुषद समुदाय ॥ श्री गुरु देवादास के चरण कमल धरि माथ । श्री हरिनाम सुमिरनी बरनत जन रघुनाथ ॥ कुंडलिया ॥ प्रथम जो हरि भक्त न करो वैष्णौ पंथ प्रकाश । सोई पकरो रघुनाथ के श्री गुरु देवादास ॥ श्री गुरु देवादास वास रह्यो अतिथ गंज में विप्र वपुष मद त्यागि भये अच्युत चरज में । रंज परे नर बहुत होत त्यागो पुर सूत में । फिरकत सोई सुष परइ तजे जो विभोके पंथ में प्रथमहि रामप्रसाद के रहे सिष्य में सिष्य । रामसनेही संत मिलि राम नाम दियो लिष्य । राम नाम दियो लिष्य नाम परभाउ दिढ़ायो रहत बढ्यो विस्वास वस्तु सब ताते पायो । ताते तिन्है रघुनाथ गिन्यो सतगुर संश्रित मैं । दत्तात्रै की रीति रहनि निज तजो न प्रथमै ॥

End—दोहा—सिफत करै कोई षांड़ को धरै न मुष अभिराम । लहै स्वाद रघुनाथ किमि तिमि सुमिरन बिन राम ॥ संकेतन परिहास युत प्रस्तोमन हेलन्त जपै नाम रघुनाथ सोउ दलै पाप अमितघ्न ॥ सोई ग्यानी ध्यानी सोई दाता सूर सुजान । अति पवित्र रघुनाथ सोइ जो सुमिरै भगवान ॥ सठ असिष्य विष पाठ को तिन्है न कहिये येह । राम उपासिक सो कहो जो सुनि उर धरि लेह ॥ श्री हरिनाम सुमीरनी मधि कछु हरिका ध्यान । बरनत जन रघुनाथ निज उक्ति सहित अनुमान ॥ दीर्घ कुंडला छंद ॥ सीस स्याम गिरि श्रृंग सम मुकुट सरिस द्रुम दिव्य । मेचक कच उतरे मनहुं अहि के छौना सिव्य ॥ अहि के छौन सिव्य चन्द्रमुष अमृत हेता । सिषि सम कुंडलोल रवि रहे मग सकुचि सचेता ॥ सहित प्रीति रघुनाथ देत मनि मनहुं मकोरा अरुण फूल जुत कियो किधौं उर प्रभु वोरा ॥ प्रभु के लोचन चपल मनहुं जुग षंज न लरहीं । बीच घ्रान सुक सफन बैठ जनु धर हरि करहीं ॥ विद्याधर कर लोम रह्यो तकि तेहि दिसि धोरा । किधौ मुक्त सनि भौम भनत कछु उडुपति तीरा ॥ कमल कोश मुष मध्य रसन जुत दसन सोहावे । जनु वज्रन जुत तड़ित परत तलपि जब मुसक्यावे ॥

Subject—राम नाम की महिमा और राम जी के रूप का उपमा सहित वर्णन ।

No. 328(*b*). Doha Kavittaādi by Raghunāthadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—54.

Size—$7\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—14. Extent—380 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1949 or A.D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Ṭhākura Jadunātha Siṁha, Raīsa of Rehuā, Post Office Baunḍī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री रामौ जयतिः अथ श्री रघुनाथ दास जी कृत दोहा कवित्त आदि लिख्यते ॥ डों तन मन ते रघुनाथ जन जानि लेहि रे नीच मीच रही मड़राय शिर राम रखहि हिय बीच ॥ १ ॥ अस सहजै बनि जात जस छंद प्रबंध कवित । तस न रहत रघुनाथ कश रामचरन वश चित्त ॥ २ ॥ मन हमार रस पक अस रहत रोज पर रोज । पद सरोज रघुनाथ जन जप तप और न प्रोज ॥ ३ ॥ जप तप संजम नेम व्रत जोग जाग वैराग । फल सब कर रघुनाथ मत रामचरन अनुराग ॥ ४ ॥ जन रघुनाथ हमार मन रहि रहि अति अकुलाय । पाय हाय ऐसेहु जनम राम भजन विन जाय ॥ ५ ॥ राम नाम रसना रसनि फसति अपन करि लेति छन छन जन रघुनाथ मन मढ़त राम सन हेत ॥ ६ ॥

End—कलिकाल कराल में आठौ जाम रहे पलते मन वो दहि रे । सिया राम कथा न जहां व तहां है सब शास्त्रन में बकवादहि रे । रघुनाथ निरंतर काहे न लेत हो राम के नाम को स्वादहि रे ॥ कोसन जात पयादोइ पांव विना पद् त्राण लिए सिर मोटें । रामकृपा गजबाजि अनेक खड़े अब द्वार पगारन छोटें । द्वारहु होत न देत खड़े सबते अब पाय के पायन छोटें ॥ जन रघुनाथ गरीबन संग करो त्यों करो दशरत्थ के ढोटें ॥ सीय राम कथा को कहा करें रटें अपरें अपरें कछु और न भावै जो जौनु कहै सो तौनु कहै तौनु उठाय धरै सब ताकै सोवत जागत के अपनेम पढ़हि रघुनाथ महहिं अभिलाषै ॥ अवलोकत आठो जाम रहैं करुना कर राम कृपाल को आवें ॥ इति श्री श्री महाराज रघुनाथदास जो कृत दोहा कवित्त सम्पूर्ण लिखा संवत १९४९ जानकी शरण ग्राम मुजावलि ॥ इति ॥

Subject—राम भक्ति सम्बन्धी दोहे और कवित्त

No. 329. Karichikitsā by Raghunātha Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1883 or A. D. 1828. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Paṇḍita Janārdana, Village Bhiṭaurā, Post Office Biswā, District Sītāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ करी को चिकित्सा लिष्यते ॥ दो० ॥ गणपति गुर गंगा गिरा गोविंद के पद ध्याय। कहौं चिकित्सा करी की औगुन चाउ चढ़ाइ ॥ गुन वसु वसु ससि भाद्र सित चतुर्दसी रविवार। करी चिकित्सा ग्रंथ को भयो तवहि औतार ॥ प्रथम जाति औ भेद कहि लच्छन रूप विचार। रुज निदान औषद सवै कहौ नकुल अनुसार ॥ चौ० ॥ प्रथम जाति बंगाला जानौ। पेदा बारह तहां वषानौ। आदू गाछ आदि में कहिये। औ सोलोत दूसरा लहिये ॥ चित फाल्गुन तीसरो जानो पश्चक चौथ कुक्षसर मानौ ॥ मोरंग छठो सातवां डाका। चीता नाम आठवां भाषा ॥ नव वारेका भाटा जानि। औतिपाल दसशवां मनि मानि। कंदह लागं रहो पाला। है वर हो माहो बंगाला ॥ दोहा ॥ मलेवार घनासिरो पैगु औ सोलान। कोह मेदिया जानिये दुगला कंद वषानि ॥ कहेउ नील नाम बहुरि औ गजपाल सो गाथ। छै गज होय प्रधान मत वरनत है रघुनाथ। द्वादश वंगाला विषै औघट दक्षिन जानि। कहो अठारह जाति ये ग्रंथन को मत मान ॥

End—हथिनी को भूष को दवा हरिगोता छंद ॥ कुटकी पपरदूनि हींग होरा जुनु सतो को लहौ ॥ औ बाइ पुंगा फूल मिर्चे सांवरी इन्द्रजव कहौ ॥ छांकि थोरासार गंधक पाव पाव यतो गनो असगंध नगौरो गुर मुलो मा पाव ये हूं द्वै मनो ॥ दोहा ॥ येक सेर जल धोरि गुड़ डारि कराह चढ़ाइ। तामें आटा उर्द को आधु सेर चुरवाय। फिरि सव औषद पोस कै डारि कराह उतारु। गोलो मासे सात को करि वरतन में धारु ॥ हथिनी को यह निन्हा निन्ने मुषहि षवाव। भूष बढ़ै औ बलवढ़े रहै चढ़ाये चाव। हरि गोता छंद ॥ बत्तोस पहिले दूसरे छाछठि तिजे चौवन गिनौ। चौंतोस चौथे मे कहे यकतालिसै पंचये भनौ ॥ वनचास छठयें सातयें चौवन अठे पत्तालिसा वंतालिसा नवये प्रकासा छंद हों सुष जानिसा ॥ दोहा ॥ रिषि ससि विधि भुष छंद है नवप्रकास गुन गाथ करी चिकित्सा ग्रंथ में हरषि किये रघुनाथ ॥ इति श्री रघुनाथ सिंह कृते करी चिकित्सा ग्रंथे हाथी के दंत का रोग बच्चा के औ भूष करन पुष्टि करन ग्रंथ समाप्तः संवत १९२० लिषतं गनेस पंडित कृष्ण पक्षे तिथौ नवम्यां शनिवासरे समाप्तं ॥

Subject—हाथियों के रोग और उनकी औषधियां।

No. 330(*a*). Rukmiṇi Pariṇaya by Mahārāja Raghurāja Siṁha of Rewah. Substance—Country-made paper. Leaves—314. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—60. Extent—3,533 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—

Nagari. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Simha of Amethi, Post Office Rāmanagar, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रुक्मिणी बल्लभो विजयतेतराम् ॥ सोरठा ॥ जय केसव कमनोय चेदिय मागध मद मथन ॥ जय रुक्मिनी सु पीय जदुकुल कुमुद मयंक जय ॥ १ ॥ पंगु चढ़ै गिरि श्रंग, जासु कृपा मूकहु बदहि। श्री मुख पंकज भृंग, सो माधव रक्षक रहैं ॥ २ ॥ बसहि रमा उर जासु बागीसा मुख मैं रहैं ॥ ध्यावत पूजहि जासु जदुपति होंहि प्रसन्न सो ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ विघन हरन सुष करन दुष छरन ताप धरि। बन्दौं श्री गननाथ जोरि जुग हाथ माथ धरि। बन्दौं सरसुति सुमति देन कुलि कुमति विनासनि ॥ जगत जननि जन कृपा करनि परब्रह्म प्रकासनि ॥ पै बन्दौं बारम्बार मैं पद पंकज सुषदेव के ॥ जेहि मुष निर्गत हरि चरित सब दुष काट्यो नर देव के ॥ ४ ॥ दुषित जगत के जननि लषि प्रगट्यो करन उधार ॥ श्री मुकुंद हरि गुर चरन बन्दौं वारहिंवार ॥ ५ ॥ जासु कृपा पालहु मोह सम पायो परम विवेक ॥ हरि गुरु पितु विश्वनाथ पद बन्दौं बार अनेक ॥ ६ ॥ जो जग प्रगट पुरान बहु रच्यैा करन जन पूत। व्यासरूप हरि को सदा बन्दन करौं अकूत ॥ ७ ॥ मम गति नहि ग्रंथन रचन पै कछु मति अनुसार ॥ बरन्यो रुकमिन परिनयो लहि गुरु कृपा अपार ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ हरन हेत भुविभार प्रगट्यो हरि वसुदेव गृह ॥ कोन्है। चरित अपार गाइ गाइ जिहि जन तरत ॥ ९ ॥ × × × × ×

End—व्यास हिय आल बाल बाेये बीज नारद जो कृष्ण तत्त्व रूप पोय बाढ़्यो यों सुहायो है ॥ अगम निगम शुद्ध संहिता पुरान पत्र द्वादश प्रशाखन ते फैलि छिति छबि छायो है ॥ भाषै रघुराज ज्ञान जाेग आदि फूले फूल प्रेम फल पाके पुनि पक्षिव लुभायो है ॥ कामना पुजायन को हरि के मिलावन को जीवन को कल्पतरु भागवत भायो है ॥ २ ॥ चारिहु वेद पुरानन को मत संहिता औ षट शास्त्रन भासै ॥ ज्ञान औ भक्ति विरागहु जोग जिते शुभ साधन को श्रुत मासै ॥ भाषत है रघुराज इतै सिगरे डर आवत है अनआसै ॥ श्री मद भागवतै सुनतै भगवान करैं हियरे हटि वासै ॥ मूढ़ विहाल परे जगजाल डस्यैा कलिकाल भुजङ्ग कराले ॥ व्यापि विषै विषगो प्रतिरोम थके गुनि पाकरि ग्रोषधि जाले ॥ भाषत है रघुराज सुनो न चले कछु अंर्त्रान मंत्र न माले ॥ गारुड़ी भागवतै सुनतै उतरै विष बोसबिसे ततकाले ॥ सोरठा ॥ मैं निजमत अनुसार रुक्मिन परिनय को करयो सज्जन करि सुविचार समुझि सुधिर इइ है सदा ॥ दोहा ॥ अति संक्षेपत भागवत को मैं कियो उचार ॥ कहहि सुनै समुभ्कइ जु कोउ तेहि नहि

यह संसार ॥ सोरठा ॥ उनईस सै पर सात भादों सित गुरु सप्तमी ॥ रच्यो ग्रंथ अवदात, रुक्मिन परिनय नाम जिहि ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री युवराज बाबू साहब रघुराज सिंहजू देव कृत रुक्मिणी परिणय संक्षेप भागवत वर्णनो नाम एक विंशोध्याय ॥ समाप्त ॥ मिती कुआर सुदी ६ संवत १९१० ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम अध्याय। जरासिंध से युद्ध करने के पश्चात् कृष्ण का मथुरा निवास। (२) पृ० १९—३२ तक—द्वितीय अध्याय—कालयवन वध, और द्वारिका प्रवेश। (३) पृ० ३३—४८ तक—तृतीय अध्याय—द्वारावती वर्णन। (४) पृ० ४९—६१ तक—चतुर्थ अध्याय—बलभद्र प्रणय। (५) पृ० ५२—७१ तक—पंचम अध्याय। रुक्मिणी विवाह मंत्रणा। नारद गमन। (६) पृ० ७१—८३ तक—षष्ठमध्याय—कृष्ण गुणरूप चरित्र वर्णन। (७) पृ० ८४—९४ तक सप्तमोध्याय—रुक्मिणी द्वारा कृष्ण के पास विप्र का संदेशा देकर भेजना तथा उसके द्वारा अपनी स्थिति समझाना। (८) पृ० ९५—१०४ तक—अष्टमोध्याय—रुक्मिणी नखशिख—(९) पृ० १०५—११९ तक—नवमोध्याय—कृष्ण का कुंडनपुर आगमन। (१०) पृ० १२०—१३८ तक—दशमोध्याय—कुंडनपुर बलदेवागमन—(११) पृ० १३९—१५७ तक—एकादश अध्याय—रुक्मिणी हरण। (१२) पृ० १५८—१७० तक—द्वादश अध्याय—संकुल युद्ध वर्णन। (१३) पृ० १७१—१९२ तक—त्रयोदश अध्याय—द्वंदयुद्ध वर्णन। (१४) पृ० १९२—२०७ तक—चतुर्दश अ०—बलभद्र विजय वर्णन। (१५) पृ० २०८—२३१ तक—पंचदश अ०—कृष्ण विजय वर्णन। (१६) पृ० २३२—२४७ तक—षोड्स अ०—द्वारका गमन, रुक्मिणी विवाह वर्णन—(१७) पृ० २४८—२५८ तक—सप्तदश अ०—प्रथम रास वर्णन—(१८) पृ० २५९—२६९ तक—अष्टादश० महारास वर्णन। (१९) पृ० २७०—२९० तक—एकोनविंशत अ० षट्ऋतु वर्णन। (२०) पृ० २९१—३०० तक—बीसवां अ०—रुक्मिणी परिहास। (२१) पृ० ३०१—३१४ तक—इक्कीसवां अध्याय—संक्षेप भागवत वर्णन।

No. 330(*b*). Raghurāja Simha kī Padāvali by Rājā Raghurāja Simha. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—12×6 inches. Lines per page—12. Extent—825 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Simha, State Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ लिख्यते हजूर कृत पदावली ॥ होरी ॥ मोहन जोहन जोग मयोरी खेलत होरी ॥ बरिसाने वारी पकरि लई

वाकी बीच सांकरो खोरो ॥ चलो नहि कछु बरजोरो ॥ कौनि प.त पट मारी साजो दामिनि रचो मुकुट सिर छोरो ॥ पेंचि बुलाक नाक नथ दोनो मारन रची सिर सेंदुर बोरो ॥ भयो नृप सुंदरि रोरो ॥ कैंचि काछनी विरचि कंचुकी पहिरायो घाघरो बड़ोरो ॥ सुंदर कंठ गुलूबंद गयो करि के मुकत मालको चोरो ॥ दुहूं दिसि दै दै हथोरो ॥ श्री वृषभान दुलारी के हिग ल्याय करो घस विनय निहोरो । ठकुराइन यह दीनहि नवल देहु दया कर निज कर छोरो ॥ करो नहि अब बरजोरो ॥ ४ ॥ वेद पुरान विज्ञान विरति तप मेरो मन सिगरो विसरोरो ॥ श्री रघुराज सकल जग की छवि वारहु वाहि बहोरि बहोरो ॥ सांवरो नंदको छोरो ॥ ५ ॥

End—अवलोकी सखि भूपति भवनम् ॥ चारु कुमार जनित सुख शालित सघन नगर नर गमनम् ॥ लसित पताक कनक तोरन पट शीतल सुरभि सुपवनम् । श्री रघुराज दान कृत मोदन महिसुर कारित हवनम् ॥ १२३ ॥

छैलन आइ छुअन नहि पैहै लीजे गोरिन जोरो ॥ श्री रघुराज धाज बलदाऊ आये पेलन होरो ॥ अब फागुन बोल्यो जात आली कैसे करों । मूढ़ मत्थके के मोहि रोकत क्यों करिके निकरों ॥ श्री रघुराज कहीं करुये तो मैं तोरि पैयां परों ॥ ल्याइ गुलाल लाल करतें लुकि मैं उर मांहि धरों ॥

Subject—विविध गीतों में राधाकृष्ण सम्बन्धी होली आदि लीलाओं का वर्णन ।

No. 331. Manasambodha by Raghuvaṁśavallabhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—$6\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—22. Extent—1,881 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1912 or A.D. 1855. Date of manuscript—Samvat 1912 or A.D. 1855. Place of deposit—Lālā Lakshmī Nārāyaṇa Mārwārī, Rāe Barelī.

Beginning—श्री सीतारामो जयति अथ श्री मन संबोध लिख्यते दोहा ॥ बंदों श्री गुरुपद परम सीयराम हिय ध्याइ प्रेम भक्ति अनन्य व्रत परमानंद अधिकाइ ॥ १ ॥

श्री गुरुदेव वशिष्ट जु तुम सब विधि समरथ्थ ।
पुरवहु रुचि लघुबाल लखि सिय बहुयरि सिर हथ्थ । २ ॥
बंदो श्री मद्भरत पद नाम सत्य करु आप ।
राम भक्ति दै पाल मोहि हरहु जगत संताप ॥ ३ ॥

नाम लेत श्ररि होत हैं बहुत प्रताप श्रपंड।
बंदो श्री रिपुदमन पद दलु मम सत्रु प्रचंड। ४

End—जो पदार्थ मनचाह जेहि करै रेष सोइ ध्यान।
लहै सकल फल वांछि जो साधन क्रम ले मान। ३६
रेषरंग उतपत्ति सब साधन परम जथार्थ।
स्वारथ मनदायक सुषद प्रेमभक्ति परमार्थ ३७॥
सीयराम पद ध्यान यह कह कछु मनहित सोध।
संत मतो सद मत निरषि जो ध्यावै लहवोध ३८॥
मन रंजन गंजन भ्रमहि भंजन जगत विकार।
सुहृद नेमवर प्रेमदा जीवन प्रान श्रधार ३९
द्रग ससि षंड सु ब्रह्म भो फागुन सित रविवार।
दशमो तिथि प्रथमो पहर रच्यौ ध्यान पद सार ४०।

इति श्री मन संबोध चरन चिन्ह रंग उत्पत्ति बरननो दशमो विलासः

Subject—पृ० १—११ तक। गुरु पद बंदना श्रोर सीताराम की स्तुति। वशिष्ट सहित चारो भाइयों का प्रताप वर्णन। पवनसुत की स्तुति महिमा, शंभु शिवा पद वंदना, मन को शिक्षा, मनुष्य तन की महत्ता श्रोर राम भक्ति की मन को शिक्षा। प्रथम विलास में ११६ दोहों में मन बोधार्थ, मनो देश, (सीताराम की भक्ति से प्रेम वर्णन) पृ० ११—१२ तक द्वितीय विलास में ११६ दोहों में राम नाम श्रर्थ वर्णन। पृ० २२—३९ तक तृतीय विलास में १७७ दोहों में राम लक्ष्मण का नख सिख रूप श्रृंगार वर्णन श्रोर ग्रंथकर्ता की विनय। पृ० ३९—५६ चतुर्थ विलास में १९१ दोहों में लीला गुण संक्षेप से वर्णन। पृ० ५७—७० तक— पंचम विलास में १४१ दोहों में परम धाम की प्राप्ति श्रोर श्रखंड स्थिता का वर्णन, गुण लक्षण नाम, प्रपन्नत्व गुण। पृ० ७१ से ८१ तक प्रेपति निष्ठकत्व गुण निर्भरत्व गुण, उपाय सून्यत्व, परतंत्रत्वगुण, पपाकृतत्व गुण, एकांतकत्व, निर्त्यरंगित्व गुण, परमेकांतकत्व संबंधज्ञातत्व, शेषत्व गुण शेषब्रह्म परत्व गुण, मुमुक्षुत्व गुण, परकाष्टा गुण, उपायादि स्वरूप बोधत्व, पात्मारामत्व, कृपालत्व, श्रकृत द्रोहत्व गुण, तितिक्षत्व गुण, सत्य सारत्व गुण, ममत्व गुण, सर्वो श्राकारत्व, निर्दंभत्व गुण, श्रकामत्व गुण, श्रमानित्व, श्रकिंचनत्व, श्रनोहत्व, श्रमित भोकत्व, पश्चिरत्व, मत्सरनत्व, श्रप्रमतत्व, गंभीरत्व, धीरजत्व, कृपात्व गुण, करुना गुण, मित्रत्व गुण, श्रमानित्व मृदुदनत्वता, षष्ठ विलास में ११८ दोहों में संतगुण महिमा वर्णन। पृ० ८२-९२ तक श्राठवें विलास में ११५ दोहों में ब्रह्म श्रोर जीव सजाति वर्णन। पृ० ९३—१०२ तक—नवम विलास में १५१ दोहों में पजी

पृ० १०३—११४ तक चरण रेखा वर्णन, स्वस्तिक, पर्द्ध चंद्रि, अष्टकोण, महालक्ष्मी रेख, छत्र रेख, मुसलरेख, हलांत्रि, सर्परेख, बानांत्रि, नभरेख, कमल चंत्रि, स्यंदनांत्रि, वज्रुरेख, जवरेख, कल्पवृक्ष, अंकुस रेख, ध्वजरेख, मुकुट रेख, चक्ररेख, दंडरेख, नररेख, चमररेख, सिंहासन रेख, जयमाल रेख, मीनांत्रि, अर्धो रेख, गोपद्रेख, सुधाकुंड रेख, त्रिवली रेख, पूर्णचन्द्र रेख, अर्धचन्द्र, सक्तिरेख, बिंदुरेखा, जंबुफल, पताका, संखरेखा, षट्कोण, गदारेख, जीवात्मा रेख, वीनरेख, वेनुअंत्रि, धनुषरेख, तूनरेख, सरजूरेख, हंसरेख, चन्द्रकांत्रि, दसमें विलास में १४० दोहों में चरण चिन्ह वर्णन।

No. 332. Śighrabodha by Raghuvaradāsa of Ayōdhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—12 × 6 inches. Lines per page—26. Extent—1,092 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1911 or A. D. 1854. Date of manuscript—Samvat 1937 or A. D. 1880. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Pratāpa Simha, Kablā, Post Office Jailā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ जेहि को भासा जगत सब भासि सहेउ रस एक। तिन्हके पद वन्दन करौं नासत विघन अनेक ॥ १ ॥ रोहणो सोनो उत्तरा रेवती मूल विचारि। स्वाती मृगसिरा मघा अरु अनुराधा उरधारि ॥ २ ॥ हस्त सहित ये नषत सब ग्यारह मंगल मूल। सभे विवाहे के कहे जाति सबै अनुकूल ॥ ३ ॥ इति विवाह ॥ माघ मास में धनवती फागुन सुभगा होइ। वैसाषे अरु जेठ में पति को क्षय है सोइ ॥ ४ ॥ कहि असाढ़ कुल वृद्धि सो अन्य मास नहि लीन। मार्गशीर्ष इच्छा सहित कोइ आचार्य मत कीन। इति विवाह मास ॥ अमावस रिक्ता तिथी वेलावार विचारि ॥ जन्मभंग गंडांत पुनि क्रूरवार निरधारि ॥ ६ ॥ जतन सहित परित्याग करि कहिगे पंडित लोग। नव सब कारज के मिले सुन्दर यह संजोग ॥ ७ ॥ नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा तिथि यह जानि। तीनि वृत्त यहि क्रमहि से प्रतिपद ते पहिचानि ॥ ८ ॥

End—वर्ष चढ़ाई शनि कह अढ़ै अढ़ै राहु अेा केतु। ग्रह भुक्ति ये कहि गये पंडित जानन हेत ॥ सूर्य चंद्र नक्षत्र करि जो संख्या गनि ठीक पीठ देयक श्रा कहत हस्त चारि मृत्यु नीक ॥ बाहु आठ सुख प्रद कहे गर्भ पाच सुप नाश। भुज दो भोग विचित्र कहि चरण दोय हैं त्रास ॥ चून्हौ चक्र विचित्र यह वरन्यो रघुवर दास निज बुधवल करतव्य नहि गर्व उक्ति प्रकाश। ज्योतिष वक्ता विदुष जन तिन सो कहो बहोरि चूक चपलता मेटि कै देव दोष नहि मोर ॥ नीच जात

यह नोच मति कलयुग विनसत संग। नहि विद्या अभ्यास कछु जेहि ते होइ उमंग ॥ क्वार मास तिथि द्वादशी शुक्र पक्ष सुख कंद १९११ संवत्सर कहै जन रघुवर आनंद ॥

इति श्री रघुबरदास विरचिते शीघ्रबोध भाषायां रघुवर मनोरमाख्यं चतुर्थ प्रकरन समाप्त शुभम् ॥ राम राम राम राम राम श्री हनुमान जी की जय ॥ श्री श्री श्री श्री श्री ।

Subject—ज्योतिष ग्रह आदि के शुभ अशुभ लक्षण।

No. 333(*a*). Dharamarāja Gītā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—170 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1903 or A.D. 1846. Place of deposit—Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpur, Post Office District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामचन्द्रायनमः ॥ अथ धरमराज गीता लिख्यते ॥ सोरठा ॥ गुरुपद पंकज धूरि बंदन जो चितधरि करै। लहै सुमंगल भूरि रघुवर दास विचारि कह ॥ चौ० ॥ वन्दौ गुरु गनेस गडुरासन। वन्दौ सारद कुबुधि विनासन। वन्दौ देवजक्ष अरु अहिपति हरहु कुमति अति देहु सुमति सति ॥ बंदौ सिवसंग उमा विलासिनि। जेहि सुमिरे मति होति सुबासिनि ॥ बंदौ कागभुसुंडि उदासी। रहत सदा उत्तर दिसिवासी ॥ वालमीक नारद अट जानो। सुक सनकादि व्यास विधि छानो। बंदौ संत चरन अघमोचन। जेहि रज परसत होत सुलोचन ॥ मात पिता कर बंदन करहू। तव प्रसाद भवसागर तरहू ॥ जहं लगि अपर होहि जग जानो। सब कहं बंदत वचन प्रमानौ ॥ दोहा ॥ बंदौ ससि उडगन विमल भानु सहित कर जोर तव प्रताप महिमा सुजस हरै तिमिर मति मोरि ॥

End—लोह सम पुनि सिरन काटत गहत अति अधिकाइ। दीर्घ चोच पंछी यक आइ नेत्र लिहिसि कढ़ि आइ। कहत अब तुम सुनहु मूरष कीन्ह तुम्हरे आइ ॥ साधु कह जो आंखि काढ़े सोई नेत्र कढ़ि जाइ रखवा एक महानकं दै तेहि पर लै गये घिराय। रौरव तब कहत बातें सुनो हो जमराइ। ये पापी बड़ पाप कीन्हों मोमे नाहि समाय। करिके सुद्ध डाल याको कहत हौं सिरनाइ। अग्नि कुंड महं सोधि ताको तप्ततेल नहवाइ। रौरव में डाल दीन्हेसि कोइ न भयो सहाइ। सीस निकसत गीध ठोकहि जन उपल मारहि धाइ। अति कठिन क्रम

कराल ग्रामे तब आंजर क्रिोदनि गनाइ ॥ ठाल मारति संतजन कोउ सुनत मुख नाहि जोव घाहो महा पापो कहेन पतिआइ । दोहा ॥ या विधि जमपुर की कथा कहेउ मुनेउ कविराइ राम भजहि ते वचहि गे मंगल गुरु मोहि बनाउ ॥ जोजन रघुवर नाम को जपै सदा हिय लाइ रघुवर ते मंगल कहेउ ते जमते बचिजाइ ॥ इति श्री धरमराज गीता रघुवर दास समातम संवत् १९०३ ॥

Subject—पापियों को दंड श्रोर धर्मात्माश्रों को श्रानंद प्राप्त होने का वर्णन। उदाहरण दिया है कि एक पापी की स्त्री पतिव्रता थी पति की श्राज्ञा पालन अपना धर्म समझती थी, उसका पापी पति पाप कर्म करता श्रोर वह उसकी श्राज्ञा मान कर उसमें सम्मलित होती रही जब पापी को यमराज लेने श्राये ते पतिव्रता स्त्री के सन्मुख उस पापी को न ले जा सके। पतिव्रत धर्म को मुख्य बताया है।

No. 333(*b*). Guruparampara by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—7 × 4 inches. Lines per page—24. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1907 or A. D. 1850. Date of manuscript—Samvat 1928 or A.D. 1871. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pāhī Sūrjapur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—ॐ श्रीरामायनमः ॥ ॐ सन्य सुन्य के महासुन्य महासुन्य के मूल प्रकृति। मूल प्रकृति के बीज श्रोंकार। बीज श्रोंकार के महातत्व। महातत्व के श्रादिमूल। श्रादिमूल के। नारायण। नारायण के महालक्ष्मी। महालक्ष्मी के इच्छा स्वरुप। इच्छा स्वरुप के भुसु जुग सयनं। भुसु जुग सयनं के। उदास मुनि। उदास मुनि के ज्ञात मुनि। ज्ञात मुनि के लोक मुनि। लोक मुनि के प्रगट मुनि। प्रगट मुनि के गंभीर मुनि। गंभीर मुनि के इग मुनि। इग मुनि के श्रचल मुनि। श्रचल मुनि के प्रकास मुनि। प्रकास मुनि के नारद मुनि। नारद मुनि के कष्ट मुनि। कष्ट मुनि के जामुन मुनि। जामुनि मुनि के हरिनाथ। हरिनाथ मुनि के पुंडरीकक्ष पुंडरीकक्ष के कृपाल मुनि कृपाल मुनि के गोपाल मुनि। गोपाल मुनि के रत मुनि। रत मुनि के धीर्ज मुनि। धीर्ज मुनि के संतोष मुनि। संतोष मुनि के दया मुनि। दया मुनि के तुलसी मुनि ॥

End—श्राचार्य। स्राव श्राचार्यों के गमासुर। गमासुर के द्वारा नंद। द्वारा नंद के सुतानंद। सुतानंद के श्रद्युतानंद। श्रद्युतानंद के सचिदानंद।

सच्चिदानंद के पूरनानंद । पूरनानन्द के दयानन्द । दयानन्द के श्रयानन्द । श्रयानन्द के हरियानन्द । हरियानन्द के द्रियानन्द । द्रियानन्द जी के राघवानंद । राघवानंद जी के रामानन्द । रामानंद के अनन्तानंद । अनन्तानन्द के कृष्णदास कोहारी । कृष्णदास कोहारी के टीला जी महाराज टीला जी महाराज के षंगद परमानन्द दास जी । षंगद परमानन्द दास जी के गंगाधर रामदास जी भागीरत दास जी भागीरत दास जी के पेमदास । पेमदास जी रामदास जी राम दास के छबीलदास छबीलदास के गोवर्धन दास । गोवर्धन दास जी के जानकी दास जानकी दास के सजराम दास । सजराम दास जी के बाबा जी मंगलदास । बाबा जी मंगलदास के बाबा जी रघुबरदास । बाबा जी रघुबरदास जी के बाबा रघुबर दास मिर्जापुर निवासी लिखा विट्ठल दास संवत १९२८ में । प्रकाश किया रघुबरदास हरि मंदिरे मिर्जापुर संवत १९०७ ॥

Subject—रामानुज संप्रदाय के गुरुओं का वर्णन ।

No. 333(*c*). Krishṇacharitāmṛita Gītā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—15 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—406 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Samvat 1907 or A. D. 1850. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Pahī Sūrjapur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः छंद गजल षटपदी ॥ बचा माने या न माने कृष्ण नाम है सच्चा ॥ बेद और पुरान शास्त्र ग्रंथ में जच्चा । कुंडल किरीट मुकमाल सुमन सारे । चटक मटक चालु देषि मेरा मन मोहै ॥ कुबरी के यार बन छोड़ि दीनो गोपिका ॥ रघुबर हरि नाम रटो राति दिवस ज्यों पिका ॥ १ ॥ बचा बेद की यह बात कृष्ण रूप है सच्चा । पूतना लगाइ गोद कहो मेरा बच्चा । कपट भक्ति कीन्हो हरि दीन्हो फल पैसा । जाचि मरे जोगी मुक्ति पावे नहीं तैसा ॥ राधिका के बड़ी प्रीति छोड़ि दीन्ही कुल में । कुबरी है नीच जाति बसी कृष्ण दिल में ॥ २ ॥ बचा देषिये विचारि कृष्ण नाम है पलीता । करीं दल भस्म मय पर्जुन ने जीता ॥ कृष्ण कृष्ण रटति भई गोपिका । पुनीता कृष्ण चरण प्रीति नहीं काह पठत गीता । भनक भनक भागे दधि षाय बीरनियां रघुबर के हिय लुके संतन सुष दनियां ॥ ३ ॥

End—हरे कृष्ण कहो कृष्ण जेते वृन्दावन वासी । ऊधो प्रनाम कीन्ह सब के सुषद रासी । हाथ जोरि बिदा मांगि मधुवन मैं जैहैं । महाराज कृष्ण जो ते जथा हाल कहिहैं ॥ मेरे कछु कहिबे में भेद नहीं जानिये । कृष्णचन्द्र मालिक है हिए आपु मनिये ॥ नैनन में नीर भरे नन्द बिदो कीन्हों । रघुवर सषा परम मधुर जसुदा लै लीन्हो ॥ ३३ ॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊधो मधुवन में । पहुंचे देखे कृष्णचन्द्र सषा हिए में । अति सकुचे बूझो कुसलता पिता मातु मेरी कैसी । गोपी सब प्रेम रूप कहो कुसल जैसी ॥ ऊधो षट मास तुम्हे विन्दावन बीती । मेरे हिय सोच होइ पावे अधिक भीती ॥ मधुकर के नैन में नीर ढरकि आवा । रघुवर सषा जोग ध्यान भोग मैहो पाया ॥ ३४ ॥ हरे कृष्ण कहो कृष्ण ऊधो रोइ रोइ बोले । गोपी सब दास आस मिलि हो न डोले ॥ हाइ लाल हाइ लाल प्यारे कहि लोटे । देखे षट मास निख लगी मोहि चोटे ॥ आप को बताय वान ज्ञान बहुत भाषा । वे समुझे न कोई बात स्याम रूप चाषा ॥ भक्ति को स्वरूप सबै प्रेम धार डूबो । रघुवर सषा ऊधो सराहत है षूबो ॥ ३६ ॥ इति श्री कृष्ण चरिता-मृत गीता रघुवर सषा विरंचित समाप्तः ।

Subject—जन्म से लेकर अंत तक कृष्ण का चरित्र ।

No. 333(*d*). Śrikṛishṇacharitāmṛita Kuṇḍī by Raghuvara Sakhā of Mirzāpur (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—14 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—802 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1905 or A.D. 1848. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ राम जै धुनि ॥ जै जै गुरु देव तिहारो सरना ॥ दीन्हो संष चक्र गरे तुलसी की माला प्रभु ऊर्ध्व पुंड श्री तिलक मस्तक पै धरना । जम को त्रास छूटि गई सुनत श्रवन द्वै सुमंत्र हिए मैं बसाइ दीन हरि चरना ॥ वेदहु पुरान शास्त्र सब को बात सुनी मैंने राम रूप गुरु मेरा शिष्य तरना ॥ पाहि पाहि रघुवर सषा सरन स्वामी तेरे हजिये दयाल नेक नजरि फेरना ॥ धरा गुरु वानी धरै नहिं धीर वसुमति गई सरन विधिना के पाहि पाहि हरिए मेरी पीर कालनेमि करि अंस कंस षल प्रबल पातकी अधम सरीर ॥ चारि वदन लै सकल देव संग छीर समुद्र तरगान गंभीर । सद्य रूप में कहा महाप्रभु गोकुल जन्म होइ बनी अभीर । जमुना तट वृन्दावन वासी बहुतक सुरन तुम धरो सरीर । रघुवर सषा गोलोक निवासी देवकी गर्भ बसे बलवीर ॥

End—कहन लागे ऊधौ गरभरि आयो। जोग संदेस गायरे भेजे राधे सुनित रिसायो। हाहाकार कीन हति उर सखियन रुदन मचायो अंसि पट मान कहो मैं बहु बिधि उलटि सो ज्ञान लखायो॥ लै उपदेस राधिका जो को मैं हति फिरि चलि आयो सुमिरन भजन बसो उर मूरति एक टक पलक न लायो। स्वासन भवे उठे हरि हरि सुनि लालन किन विलमायो। मातु पिता अति दुखित तुम्हारे नैन मलीन बतायो। रघुबर सखा अखित सव ब्रज जन आवन आस जिआयो॥ १८०। सुनतै हाल विकल भै लाल॥ हा राधा राधा प्रिय लाड़िल कंपित गात गिरे ततकाल। मुरछित होत अचेत छिने एक मगन भए हिमवन बेहाल। धरि धीरज कह हमैं राधिका तन दुइ प्रान एक कर ख्याल। तुम जनि भिन्नग जानियो ऊधो मो राधे हिय बसे बेसाल। जो राधे को सखी सकल मिलि रास थलो जिन रचो इसाल। ते सब लीन होइगो मोमैं ऊधो कछु कवितन ते काल। नन्द जसोधा कीन्ह तपस्या सो पूरण कीनो वनिपाल। रघुबर सखा अनंदित गाथा प्रेम लक्षण कर यह ताल॥ कृष्ण चरितामृत कुंडो रघुबर सखा विरंचति प्रेमधार सागर संपूर्ण संवत १९०५ लिषी रंगनाथ।

No. 333(*e*). Vaidyaka Chittahulāsa by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—124. Size—14 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—1,860 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1905 or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhakura Biṭṭhaladāsa Mahanta, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैदक चित्त हुलास लिष्यते॥ दोहा॥ नमस्कार गुर देव जी तुव पद मुझे भरोस। जापद हिय मैं ध्याय के लषो ग्यान को कोस॥ १॥ सरस्वती पद व्यास के भयऊ अनेक सुजान। वाको मातु विचित्र करु सद ग्रंथन परमान॥ रघुबर दास विचारि कहै यह वैद्यक ग्रंथ हुलास। जाके पढ़वैया अधिक जगमें करै विलास। देषि देषि बहु ग्रंथ श्लोक अनेक सुजास। सो भाषा या हुलास है सुनि मानै विश्वास॥ पित्त कहैं अरु कफ कहैा बहुरि कहैं जुवात। तोनैा के लक्षण सुनैा सद ग्रंथन विख्यात॥ पित्तज्वर के लक्षण॥ दोहा॥ कटुक वदन कृत प्यास अति भ्रम मुर्छा प्रलाप। पित्त कोप ते जानिय आवत नर को ताप॥ अथ अश्लेष्मा ज्वर के लक्षण॥ मुष मोटा निद्रा नहीं कास स्वांस अति होय। तृपति कहु नहि अरुचि अति कफज्वर लक्षण सोय॥

End—महा कल्पादि चूर्ण। इंगुर सोधा १।, सिलाजीत सुद्द १।, पारा मारा १।, सोना मारो १।, सीसा मारा १।, रांगा मारा १।, तांबेश्वर पुराना १।, लोहा मारा १।, चन्द्र गुलावो १।, मरो चांदो १।, तीनि छार, जवाषार, साजोषार, सोहागा भुना सुद्ध, जुगछार, इमली को मुरच, रायो लट जीरा, को रायो छार षार चार चार तोला, लैघौ सेंच रसा परोठांका ये पट्टु पाचों चार चार तोले लेइ मट्टो के पात्र मे करि दिया धरि के कपरौटो करै गजपुट भस्म करै। सोठि मिरच पीपरि चार चार तोला सब चूर्ण इक दिल कर षरल में घोटै कपड़ छान करै जमीरो नीबू का रस गारो कपड़ छान लेइ जाना भरि मृगांक १ भाग ना ता चारि चारि अंस अंस अधिक गुन करै। मट्टो को कराही में चूर्ण घोरै चूल्हे पर धर आंच देइ। मंद मंद करछुली काठ को चलावै जब रस सूखै तब निकारि कै षरल करै मिट्टी के पात में नीबू रस घोटै मंद आंच दे सुखै इसी तरह २१ वार सुखवै ता पोछे चना को अंस माघ फागुन को लेवै चूर्ण कराही में घोरि मंद आंच देवै इसी प्रकार सात भावना देइ चूरन जरने न पावै तब सिद्धि होइ। दुइ रत्तो चूरन दुइ रत्ती लोन भोजन किए पर षाइ भोजन पचै। इति समाप्त शुभ मस्तु ॥

Subject—वैद्यक। हर प्रकार के रोग, उन के लक्षण श्री औषधियों का वर्णन तथा धातुओं के भस्म बनाने की रीति।

No. 333(*f*). Vaidyaka Sadā by Raghuvaradāsa of Mirzāpur, (Bahrāich.) Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—15×6 inches. Lines per page—12. Extent—84 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Mahanta Biṭṭhaladāsa, Village Mirzāpur, Post Office Bahrāich, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री रामायनमः ॥ अथ वैद्यक सदा लिष्यते। (एक) वैद्यराज श्री चित्रकूट के काशी के पढ़ने वाले द्राविड़ देश तोतादर नगरी (श्रीगुरु) महाराज के धर्मसाले। साधु संत जहं बहुत विराजे पान पान आनंद करै राजा राव बहुत से चेले धन दै दै भंडार भरै ॥ (जे) विष्णु कांची में जन्म हुआ श्री रामानुज सब कोउ कहै ॥ साधु भक्त को जर उनहिन ते वेद सास्त्र सब सत्य लहै ॥ तिनके वंस उजागर जन्मे नाम व्यंकटाचार्य अहै तिनके चेले चेले हैं रघुवर दास कहैं सा कहैं कथा पुरान बहुत से जानै ज्ञानाज्ञान विचार करैं परमहंस को विति गहे हैं दरसन ते दुख दूर करैं ॥ जो दुषिया दुष अपन बखानै

तिनको तस उपदेस करै। धरमसील को बात बयानै दुप हरैं सुष भूरि भरै॥ वेद बड़े ज्ञानी बड़ कविता टोना जादू दूरि करै। रोगी दोषी भूत संतोषी संमुष बैठत जाय जरै।

End—लाक्षादि तेल॥ पञ्जुरी फुरिया दूरि बहावै॥ सिर को दरद तुरत मिटि जावै॥ गरमी पाई धुनि मिटि जावै। गिरत गर्भ नारी थम जावै। सकल बात को दुष यह मेटै। विसफोटक ज्वर तुरत भपेटै॥ बालक को उदवेग मिटावै बह लाक्षादि तेल बतावै॥ मस्तक पोर मिटावै भैया॥ होय अनंद रामगुन गैया॥ रघुबरदास का सच्चा खेल यह षड़बिन्दु नाम है तेल॥ सोढ़ मिटाय बादी जावै तन दुति आवै नारि सुहावै॥ गरमी मेटै तेलहि भेटै॥ रघुबर दास कहै सुनु भैया सुगंधराज यह तेल बनैया॥ मग संकोचन होयरे भाई लिंग बढ़ावन दवा बताई॥ स्त्री के कुच ढीले होय थे ताको पुष्ट करेंगे गोय॥ रागी होय राग मल गावै गंधर्वी धुनि तान उठावै विद्या पढ़ै अधिक अधिकाई। बालक मूरष रहै न पाई सरस्वती घर तेल बनावो बालक मूरष वेद पढ़ावो॥ स्त्री कहै वेद की बातै सरस्वती चूरन के षातै रघुबर दास साधु सो भैया धनमौतिक जो बात बतैया॥ संग करै सेवा मन लावै मनकी मनसा पूर करावै साधु गुरु यह वैद्यक विद्या है गुनदायक लायक सद्या॥ इति श्री रघुबरदास विरंचिते वैद्यक सद्या सम्पूर्ण॥ संवत १९०१॥

Subject—कुछ औषधियों का वर्णन यथा लाक्षादि तेल, शंख द्रव चूर्ण, मिरचादि तेल, सुगंधराज तेल, सरस्वती घर तेल जो विद्या वर्धक है इत्यादि। एक एक औषधि कई रोगों में काम आ सकती है।

No. 334. Śrī Rāma Ākheṭa Kavitta by Raghuvaraśaraṇa. Substance—New paper. Leaves—5. Size—5 × 3½ inches. Lines per page—24. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaraṅgī Siṁha, Station Rupa Mau, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री मत्सीताराम चरणे शरणं प्रपद्ये॥ कवित्त॥ केशरि सो भोनो अंग अंगरी ललित सोहो झुलत दुसाले छोर मुक्ता सुगाथ के। वनमाला सुन्दर सुमाल मै तिलक रेख धनु शर विचित्र लीन्हें सखा सब साथ के॥ नयन अरुणारे घुंघुरारे केश कानन मै मुष सुखमा को सुख हेरत रतिनाथ के॥ देषि ये सबोरो मुख थोरो बात छाजत है राजत हरोरी पाग सीस रघुनाथ के॥ १॥ भद्र मृगमाते अंग ऐरावत जोरजंग महापद्म अंजन अनंत गजराज हौं। पौंकि पीकि धावै मानै अंकुशन जोर वारे मद मतवारे प्यारे पोलवान साजहौं॥ जलज

घमारी भारी झालरि झकोरनि मैं मनिमै विचित्र अंग अंग अति भ्रावहीं। हंट घहराने कहराने चले झूमि झूमि रघुवंशी लाल के मयंद गन गाजहीं ॥ २४। केसर की खौर भाले बीरन सी मुख लाले सोहैं सीस पाग लालें लालें जरतारी के। भृकुटी विशाल बांकी हेरन रसाले हाले कुंडल उदंड मार्तंड द्युतिकारी के ॥ कर करवालें बंधो पीठन पर ढालें सोहैं ललित दुसालें उरमालें मोल भारी के। लखि लखि बार बार लषन समेत राम मगन विलोक छैल भरत असवारी के ॥ ३॥

End—ललित लड़ायो हरि गुमरन जात कहो समर सकत जो मंद मंद चाल सों। हरित हमेल लसै जटित जवाहिर के रत्न मणि मंजरी मरोर मणिमाल सों ॥ चूमि चुचकारैं अकुलात वायु मंडल को चित उरझानो सो छबीलो छवि जाल सों। बांग के उठाये राग रंग अंग अंग मावै मन मै मरोर रावै लघुवंसी लाल सों। २१ ॥ कर्म कीच काले माले माग को न लेस कहूं कुमति कराले वाले कर तव पान है। केते घर घाले ते निराले साव सज्जन तें लोक वंद टाले जाले जानत जहांन है ॥ मन के मगाले ताले काम मग मौनन के करहित पाले वाले वल्लभ न मान है। छोड़ि रामलाल फिरैं करत कसाले साले सब मतवाले मतवाले की समान है ॥ २२ ॥ इति श्री रघुवर सरन जु कृत श्री रामजु के सिकारी कवित्त ॥ श्री सीताराम सीताराम ॥

Subject—आखेट समय श्री राम जी की शोभा का वर्णन, उनके हाथियों का वर्णन, राम भरत की सवारी, अस्त्र शस्त्र सुसज्जित आखेट समय की शोभा का वर्णन, अश्व का वर्णन, लक्ष्मणजी की सवारी का वर्णन, शत्रुघ्न की सवारी का वर्णन, निमिवंश किशोरों की सवारी का वर्णन, शिकारी जानवरों का वर्णन, तिरहुत राज के राजाओं का वर्णन, देश देश के अन्य घोड़ों का वर्णन, राम समाज देखने के लिये सखियों की भीड़ का सरयू तट पर खड़े रहना घोड़ों की किस्म और रंगों का वर्णन, घोड़ों की गति का वर्णन, और उनकी सजावट व गहनों का वर्णन, राम जी की शोभा का वर्णन।

No. 335(*a*). Chikitsāmṛitārṇava by Ṭhakura Raghuvara Siṁha of Alipura (Daraunā). Substance—Country-made paper. Leaves—402. Size—9 × 8 inches. Lines per page—40. Extent—17,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Saṁvat 1890 or A. D. 1833. Date of manuscript—Saṁvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Pratapa Siṁha, Umarava Siṁha, Village Alipur, Jaitapur Bāzār, Post Office and District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चिकित्सा मृतार्णव लिख्यते ॥ सोरठा ॥ गोरि सुवन गणपाल चरण कमल रज शीस धरि। कृजिय नाथ दयाल ज्ञान ग्रैन गुण राशि शुभ ॥ हरिगीतिका ॥ एक रदन करिवर बदन शुभ के शदन दुःख विनाशनं। पुनि ईश सुत गणईश शीशनि शीशधर्म प्रकाशनं। रिद्धि सिद्धि कारक दुर्मति हारक जोपि भजमन लाइ कै ॥ हरि विघ्न कारक ग्रंथ के करुं ग्रंथ पूरण धाइके। अथ दुर्मिला छंद ॥ गणपति श्री गिरजा सुवन सकल गुणन के निद्धि। अमित तेज तुव अंग में सब विधि ज्ञान प्रसिद्ध ॥ सिद्धिद तानहि कथत्थ कविजन मत्थत्थ नमितहि हत्थत्थ जुरिकरि मग्गबाजस जेहि दिग्गगतस तेहि पत्थत्थ भ्रल ॥

End—ग्रंथ अंजन सबल वायु तिमिर धुंध आदि ॥ हरिगीतिका छंद। सिरम बीज सुधारि सुरमा स्वेत तोला दोइ सो। अंधारो सुरमा सोमु प्रथ के लेइ तोला दोइ सो ॥ चषनादि तंदुल शुद्ध तुर्थहि मैन शीपो की गहै। प्रतेक मासे एक सो पुनि पत्र शीशा कराइये। पुनि काटि सूक्ष्म सुखरिल धरि सो अम्ल तिपतौं लाइवे। गहि स्वरम सो महि विधि जब शीशा सब गलि जावई ॥ दोहा ॥ पुनि सब भेषज एक करि मर्दन करि दिन दोय। वटी बांधि सुखवाइ सो बासी जल घिस लेइ। अंजन कीजे दुगण सों धुंध तिमिर सब लाइ। विथा दूरि दुति दृगण की सीसा समसो प्रगटाहि ॥ इति श्री मन्महाराज कलह वंशावतावस जयसिंहात्मज रघुवर सिंह भाषा विरचिते चिकित्सामृतार्णव नामा आयुर्वेद सम्पूर्ण शुभम् ॥ संवत १९१० राम राम राम राम राम ॥

Subject—औषधियों का वर्णन तथा यह रोगों की उत्पत्ति के कारण और उनकी औषधियां बनाने की विधि और अनुपान चीर फाड़ का कार्य भी भली भांति समझाया गया है।

No. 335(*b*). Tulasicharitra by Raghuvara Siṁha of Alipur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—2,016 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1910 or A. D. 1853. Date of manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898 Place of deposit—Ṭhakura Haraśaraṇa Siṁha, Village Sarāya Ali, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री तुलसी चरित्र प्रारंभ ॥ श्लोक ॥ महेशं रमेशं गणेशं दिनेशं निशेशं दिगेशं गुरुं मारुतं च ॥ सुभक्त्या प्रणम्याथ भाषा सुरम्या स्नेहं यथा धीं तथा मोद दातास्मा ॥ १ ॥ अथ प्रदुःख पहरों सरस्वती बुद्धि प्रदां कल्मष नाशिनोश माय्य आप सुमित्य सुखदां विद्यार्थीतान्तो मिमूर्धा शुभबुद्धि हेतवे। तुलसी चरित्रं बहुवृत्ति युक्तं भक्तिप्रदं कल्मषदोष नाशकं बाबुरहंसवैर संनिभिष्टं सिध्यान्ते सवास्ति गुरु प्रसादात ॥ तुलसीदास नमस्कृत्य रामायणं कारितं पुरः द्विज वंशावतंशेन भक्तानां भूषणं सदा ॥ सोरठा ॥ वारन मुख गणपाल सुमिर सिद्ध प्रगटावते गौरी सुवन कृपाल कृपा दृष्टि को कोर करि ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ नमो एक तुंडे कहंतं गणेशं नमो मोह मज्जना नाशं दिनेशं नमो सुद्धि बुद्धि पतो ईश जातं नमो कृष्ण पिंगाक्ष बुद्धि प्रदातं ॥ ६ ॥

End—इति श्री कलहंस वंसावतंस जयसिंहात्मज रघुवर सिंह विरचिते भाषायां तुलसी चरितामृते नाम षोष्ट षष्टमो चरित्र समाप्तम ॥ रोला छंद ॥ अधिक अवश्वनिपक्ष कृष्णदि तिथि षष्टीजान वार बुद्ध उदार भाषत नक्षरोहिणी भान ॥ व्यतिपात सुयोग जानो कलौते तिल होय। लग्न वृश्चिक उदय तेहि दिन दिन पहर गत सोइ। कहौ वत्सर समुभिये अब वात वात विचार ॥ बहुरि गो विधु एक करिके मानि १९५५ बुद्धि उदार ॥ बसत बौंडी पास गुजवलि विदित है सब ठौर ॥ बसत ब्राह्मण और क्षत्री सकल सो मति धौर ॥ बौंडी रजधानी पूरब बसत गुजौली पास ॥ बिजै बहादुर सिंह नृप रजधानी प्रकाश कलहंस वंस अवतंस मैं रघुवर सिंह उदार तिनको सीताराम मम पहुंचै वारहिवार ॥ सोरठा ॥ जगवंत सिंह यह नाम जिनकी आज्ञा पाइ कै तुलसी चरित ललाम पाठावें तिनकै लिया पढ़ें गुणे मन लाइ भक्ति करै सियराम की मुद मंगल सरसाइ सीताराम प्रतापते ॥ दोहा ॥ लिखि रघुवर पूरन किया तुलसी चरित उदार। कृपा करत तिन पर सबै कवि पंडित सरदार ॥

Subject—मंगलाचरण गणेशादि वंदना। मारुत सुत मिलन, शिवदर्शन, विंध्याचल राज्यक राजा की सुता सुलभा। मुरारीदास से विदा। हरियानंदन संत, रामघाट मचान, द्विज दरिद्री को महानता प्रगट करना, सरयू स्नान, नाभा आगमन, दकन देश (दक्षिण,) चतुर्दश चरित्र नन्दलाल आदि का। श्री गुसाईं जी का कुल जीवन चरित्र छंद, सोरठा, सवैया, कवित्त आदि में वर्णन किया गया है।

No. 336. Indrajāla by Rājārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—13 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—210 Anushṭup Ślokas. Incomplete.

Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Baksha, Village Dalarā, Post Office Musāfirkhānā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—पृ० १—दोहा—कुमतो मोसो श्रबोद को नैअन को थो श्रासाराम। सुमतो साला मुलो के गुरु के पनाम ॥ एक देवस श्रर्जोय करो राजाराम ने वस इंदेजाल भाषा करो वैावद रोगनो दवा।

पृष्ट ४—हावल बाझ केः—एक दोना हाजारातो सालेमान पैगंमरा नामत के ऊपर तव एक श्रवोरातो वाझने श्राऐ वै श्ररा‌ज को श्रको पैगंमरा श्रोऐ सावाहेव हमरे लड़िका नाहो होता है सो इसका केय सावव है सो हमको वातावा तव पैगम्मर सेहेव वोले को हमको मलुमा पेह नाही है तुम वैठो तो हम परीयो को बुलाए के पुछेएगे जैपसा होएगा तैसा मालु मालुम होएगा।

End—कुसुम के फुल सुखा लेवे तोला एक १ वाहेरा लेके तोला एक, श्रानार कलो लेवे तोला एक १, सभा दवा के पोसो के पानी के साथ नास्या लेइ दोना ७ तो नाक सो लेहु बंद होय जाए श्रट मोठा पिलावेये राद ॥

Subject—नं० १—३ तक—नाड़ो परोक्षा (२) पृ० ४—१६ तक—बांझ होने के कारण, निरूत, श्रोषधि तथा जंत्र। (३) पृ० १७—२६ तक—दवा श्रसुंद फल को। (४) पृ० २७—२८ तक—दवाई ज्वर को। (५) पृ० २८—४२ तक—भूख को दवा तथा श्रन्य कई प्रकार को श्रोषधियां ॥

Note—इस पुस्तक के श्रन्त के पृष्ट नष्ट भ्रष्ट हो जाने के कारण सन सम्वत् का कुछ भी पता नहीं चलता, किन्तु पुस्तक के काग़ज़ श्रक्षरों की बनावट इत्यादि से यह पुस्तक श्रठारहवीं शताब्दी से पीछे की लिखी हुई प्रतीत नहीं होती। बांझ के लक्षण तथा श्रोषधियां प्रायः सुलतानपुर में पं० रामप्रपन्न मालवीय जी के यहां से प्राप्त हुई "काकशास्त्र" नामक पुस्तक से ही मिलती जुलती हैं। ज्ञात होता है कि पुस्तक का बहुत सा भाग नष्ट हो गया है—पुस्तक का वृहदंश गद्य में है, कहीं कहीं दो एक दोहे भी लिखे गये हैं।

No. 337(a). Ramavinoda Bhāshā by Rāmachandra Jainī. Substance—Country-made paper. Leaves—73. Size—10 × 4 inches. Lines per page—10. Extent—1,460 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1809 or A. D. 1752. Place of deposit—Ṭhākura Pratāpa Siṁha, Alīpur Daraunā, Post Office Jaitpura Bāzār, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामविनोद पुरुष लक्षण कथ्यते ॥ श्री धन्वन्तरि चरन जुग प्रथमहि धरि आनंद। रोगनसन सुभकरन सव जन सो सव सुषकंद ॥ विविध सस्त्र के देषि कै सुगम करहु अधिकार रामविनोद जो ग्रंथ यह सकल जीव अधिकार ॥ अथ पुरुष लक्षन कथ्यते ॥ दोहा ॥ चतुरवदन सुभ लक्षन सुन्दर रूप सुजान वैद वोलवे जो आवे मिष्ट वचन प्रमान ॥ दोइ पुर्षे संग वैद के सगुन आग परभाइ। एक पुरुष संगै चलै वैद वोलावे जाइ लक्षन इस विधि ल करहु चिकित्सा जाइ ॥ अथ सुभ गुन कथ्यते ॥ चो० ॥ कन्या अष्ट वर्ष परमान। वृषभा जोरि हस्ती परधान, मीन ऊराम दधिया के धोना। विप्र तिलक सुषवोले वेना।

End—अवय को डकेलि कै पर्त चक्रवण के दूध मैा भेवे तेहि पीछे घटा को थूको डारि देइ। पाछे एक माटी को दुइ धरिये के बोच धरि देइ धरिया बंद क कै फूंकि देइ ॥ अवय जव वेजनो रंग आवे तव जानिये कि सुधा है ॥ नाहिन ता दूसरि दफा फेरि बेस करै। द्वितीय प्रकारै तृतीय प्रकारै सिद्धि होइ ॥ इति श्रीराम विनोद वैद्यक शास्त्र सम्पूर्ण जेठ मासे सुकुल पक्षे तिथैा हरि वासरे संवत १८०९ सन १२५९ जस पत्रा देषा तस लिषा ममदोष न दियेते ॥ सुध आसुधि वुधिजन लेहि विचारि। जगंनाथ हरिचरन चित धरि वैदक लिषा आचारि। सीताराम हनैामान स्वामी सहाइ सदै रहो राम राम।

Subject No. 337 (*b*) में देखो।

No. 337(*b*). Rāmavinōda by Rāmachandra (Padmarāga Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—212. Size—$10 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—3,014 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1859 or A. D. 1802. Place of deposit—Lala Ramādhīna Vaidya, Nawabgañja, District Bārā Bañki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामविनोद भाषा लिष्यते ॥ दो० ॥ सिद्धि वुद्धि लाइक सकल गैारी पुत्र गनेश। विघ्न विनासन सुषकरन हर्षधारि प्रणमेस ॥ श्री धन्वंतर चरन जुग प्रणमोधरि आनन्द ॥ रोग नसै जा नाम सों सव जन को सुषकंद ॥ विविध शास्त्र को देषि कर सुगम करैा अधिकार ॥ रामविनोदहिं ग्रंथ इह सकल जीव सुषकार ॥ चतुर विचछन देषि नर सुंदर रूप सुजान ॥ वैद वोलायेन आवही मिष्ट वचन कहि आनि ॥ फल वस्त्रादिक लइ कर धरै जो वैद्य हजूर। रिक्त पानि नहिं जाइये दल गैारी तजि दूरि ॥

End—अथ मान प्रमान लिष्यते ॥ जुगुत मान जाने विना कबहू द्रव्य प्रमान । ता कारन यहु जो जान कहु मते अनुमान ॥ चौपाई ॥ जालंतरि गति दीस भान ॥ तिसमे सुक्ष्म रासु पिछान ॥ तिसका बषराती समाजान । म्यानो साख्र कहो प्रमान ॥ तिनु परिमानु का वंसी नाम ॥ षटवंसी इक मरी का नाम ॥ षट्ट मरीची कराइ कराइ । त्रिहु राइ इक रुपं प्रथाय ॥ दोहा ॥ कुडव मंजल इक नाम ॥ दोनु कुडवे ससरावक है ॥ सरावक मानि कसाम ॥ दोइ सराव के कहो प्रस्थ हे ॥ मंजलो टंक चोसठी कहाइ ॥ सरावक भाव वास सोधाइ ॥ दोसति षट पन प्रस्थ जगोस ॥ आढ़क सहस एक चोवास ॥ त्रिहु आवक द्रोन प्रमान । दो सुप की दोनो इह भाषो ॥ त्रिहु द्रोणो इक पारी टाषि ॥ छरा सहस्र पल छोनो-नुपरि ॥ इतनो भार मान पुनि चित धरि ॥ शत पंथ संधा तुल प्रान ॥ रामविनोद कियो बषान ॥ सोरठा ॥ दोषि मनक को चार द्रोमन कहिये सुप को ॥ पारो सोल मन भार ॥ सेर एकतालिस द्रोण भान ॥ मापहु तारा जेहु ॥ पारा परजंत लगिनतु चतुर्गुण गिनलहु ॥ जथातर्क तथा विधि ॥ रामानतनो परमान ॥ सारंगधर सारियो कहो जोश अनुमान ॥ रामविनोद विनोद सो ॥ इति श्री रामविनोद समाप्त ॥ संवत १८५९ कातिक मास कृष्ण पक्ष दसमी तिथी वार गुरुवार लिष्यतं रूपचंद पांडे ॥ कासिव गोत्रे कलवार पाथम लाला पुनीमल तस्य पुत्र नंदलाल ने लिषवाई × × × ×

Subject—(१) प्रथम उद्देश्य—पृ० १—५ तक । पृष्ट संख्या—विवरण ।

गणेश वन्दना, धन्वंतरि वंदना, वैद्य को बुलाने की विधि । नाड़ी चेष्टा लक्षण, असाध्य लक्षण । मूत्र परीक्षा, पित्त कफ वायु के उत्पत्ति का कारण और निदान, ज्वरों के नाम और लक्षण, पित्तज्वर, पेदज्वर । वायुज्वर, कालज्वर, सीतज्वर, रक्ताप लक्षण, कामज्वर, ज्वर प्रमाण ।

(२) द्वितीय उद्देश्य—पृ० ६ पृ० २३ तक—

सर्वज्वर, पाचन, अजीर्ण, आहार-जपित्त, पेद, वायु, इष्टिक, कफ, रक्त, शकाहिक, द्रुतिय, तृतिय, नित्य, ज्वर, चतुर्थ ज्वर, सीतज्वर, जीर्णज्वर, विषम-ज्वर, द्वारिद्रक ज्वर, प्रमुखादि उपाय, चूर्ण उपाय, गुटिका, पूरा अंजन अवलेह, काथ प्रमुख ।

(३) तृतीय उद्देश्य—पृ० २४—५३ तक ।

द्वितीय अधिकार, वात पित्त, कफ प्रमुखादि निदान, उपाय, वायु, कफ, लक्षण, वायु कफ उपाय, तरह सन्निपात, उत्पत्ति, उनके नाम, तरह सनपात को परम आयु, लक्षण, औषधि, उपाय, काथ, गोली अंजन, चूर्ण औषध उपाय लेप

प्रमुषादि सर्वात्रदोष, कोषांध, धनुष वात, मुगीबात, चौरासो वात को काथ मुधीरा लक्षण, औषध, उपाय, मंत्र, सर्वविधि, बुधि, सुदर्शन चूर्ण।

(४) चतुर्थ उद्देश्य—पृ० ५४—९२ तक।

अतिसार निदान, लक्षण, वात पित वायु कफ श्लेषमा, आम, अतिसार निबाहो, सर्व अतोसार चिकित्सा, ग्रहणी रोग निदान, लक्षण, चिकित्सा, अजीर्ण लक्षण, उपाय, कृमि का लक्षण, औषधि, रक्त, छर्द, चिकित्सा, रक्त मुख नासा, रुधिर पड़ता हो, रक्त श्रवे उसका उपाय, राज यक्ष्मा का लक्षण औषधि, कास लक्षण, उपाय, स्वांस निदान, लक्षण, उपाय हिक्का उपाय, स्वर भेद लक्षण, उपाय, परोचि उपाय, छर्दि लक्षण, औषध उपाय, वात पित्त कफ छर्दि तृष्णा लक्षण उपाय, छर्यो के उपाय, मूर्च्छा निदान, उपाय, मद, विभ्रम उपाय, दाहन, उपाय, उन्माद निदान, अपस्मार उपाय, बंध कोष्ट।

(५) पंचम उद्देश्य—पृ० ९३—१३९ तक।

वायु उत्पत्ति, लक्षण, उपाय, औषधि, अंगहीन, कटि शूल, वायु उपाय, मस्तक, भ्रम, पीड़ा, प्रकड़ी, वायु की कांट शूल संधान, उदर पीड़ा, उर्द्धवातु, कंधन वायु, वायु गति, पुनः वात रक्त निदान, पुनः सुपतः मंडल कुष्ट उपाय, गलित कुष्ट उपाय, स्वेत मंडल उपाय, कुष्ट उपाय, नर स्थंभनु उपाय, आमवात निदान लक्षण, उपाय, पुनः, शूल निदान, वायु शूल उपाय, पित्त शूल, वायु गुल्म निदान लक्षण, उपाय मूत्रकृच्छ निदान, लक्षण, पुनः रिंदे रोग निदान लक्षण, उपाय, पथरी, सुजाक, सर्व प्रमेह, निदान लक्षण उपाय, मेदा, लक्षण, उपाय, वातोदर, पित्तोदर, कफोदर निदान, उपाय, पुनः सोफोदर, लक्षण, उपाय, प्लोहा को उपाय, वातु सोज, पित्त सोज का उपाय, कफसोज निदान उपाय, त्रिदोष सोज उपाय, जलोदर, कठोदर, सोफोदर उपाय, उदर विनमास चिहट का उपाय, उदग्रह आडा का उपाय, कोडीः नाभर विसकंट उपाय पुनः कंडु को उपाय, विस्फोटक बहड़ो विसर्प श्रीपद उपाय पुनः छिद्र का उपाय, गंडमाला का उपाय, भूतदंभ का उपाय, अगरो उपाय, पिनास उपाय, कर्ण रोग, कर्ण पीड़ा का इलाज, सूर्य वात का उपाय—

(६) षष्ठ उद्देश्य—पृ० १४०—१७५ तक—

मृगी का उपाय, जानु या डमरू का उपाय, इह की स्वान प्रतिकार, सर्प विष उपाय, वृश्चिक विष उपाय, शास्त्र घातोपाय, मेहन उपाय, बालक अतोसार चिकित्सा, नाल पीड़ा का उपाय, अंडवृद्धि का उपाय, घाव फोड़ा, पाका, उसका उपाय पुनः बंध का गुटिका, निद्रा आने का प्रतिकार, मुख दुरगंध का उपाय, दंतारो मसो औषधि, केश कल्प उपाय, केश वर्द्धन उपाय, केश होने का उपाय,

चक्षिद्रव का लप का उपाय, नारायण तैल, विषगर्भ तैल, वृद्धि विषगर्भ तैल, प्राह्मादि तैल, मिरचादि तैल, क्षार तैलादिकार रोमनास उपाय, कल्यान घृता-धिकार, त्रिफलादि घृत, अमलादि घृत, सुंठी पाक, सुपारी पाक, नालेर पाक, गुवक पाक, मूसली पाक, असगंध पाक, लहसन पाक, चन्द्रहास रस, सर्वरोग निवारण ।

(७) सप्तम उद्देश्य—पृ० १७६—२०७ तक—

मदनमोद कामेश्वर गुटका, काम कौतूहल गुटिका, अमरोघ थंभ गुटिका पुनबल वंधेज की बलवीर नाम गुटका, सिंह वाहिनी गुटका, धातु क्षीण का उपाय, नामर्दी का उपाय, मतवीर्य सवीर्य गुटका, हस्तकर्म का उपाय, वीर्य वंधेज का लेप, स्तंभन का लेप; लिंग दृढ़ करण लेप, लिंग पीड़ा का उपाय, भग संकोचन उपाय, कुछ विलास्य मेला स्त्री पुष्प आने का उपाय, ऋतुगम माडन उपाय, संतान उपाय, गर्भ रहने का उपाय।

ग्रंथ समाप्त ।

(८) अष्टम उद्देश्य पृ० २०८—२१२ तक ।

नाड़ी परीक्षा ।

No. 338. Puṇyāśrava Kathā by Rāmachandra (Keshavānanda Deva Muni ke Śishya). Substance—Country-made paper. Leaves—470. Size—$14\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Extent—11,780 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1792 or A. D. 1735. Date of manuscript—Samvat 1914 or A. D. 1857. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Baḍā), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागायनमः ॥ अथ पुन्याश्रव कथा कोश भाषा लिख्यते ॥ श्री वीरंजिनमानम्य वस्तु तत्त्व प्रकासकं । वक्ष्ये कथा मयं ग्रंथं पुन्याश्रव विधानकं ॥ १ ॥ दोहा-वर्धमान जिन वंद्य कै तत्त्व प्रकासन सार । पुन्याश्रव भाषा कहं भव्य जीवन हितकार ॥ २ ॥ सुमजीवन को हित चहत करत आतमा काज । सो गुरु मम हिरदै बसौ तारन तरन जिहाज ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ प्रनमोसादर माय स्यादवाद लक्षन सहित । जिहि सेवत अघ जाहि धर्म ध्यान बाढ़ै अधिक ॥ ४ ॥ प्रथमहि पुजा की कथा कहो अष्ट विधि जोय । ताके सुनत सुजान कुं जिन पूजा रुचि होय । एक दर्व जिन पूजिया मालिन सुता अयान । प्रथम स्वर्ग हरि की प्रिया भई पुन्य परवान ॥ ६ ॥ सकल बात ताको कहीं पूरव उक्त प्रमान । हिये हरष उपजै अधिक सुनौ भव्य धरि कान ॥ ७ ॥

End—ध्यान अनल पर ज्वाल घातिया कर्म काठ सब बाला। केवल ज्ञान उपाय भविक परमोध गये सिव साला। निराकार निरंजन पद धर अष्ट महागुन लाधा॥ वाधा रहित कहत नहिं आवे आतमीक सुष साधा॥ ६५॥ कवित्त छंद—इम उन अमिनि त्याव भनेटो पराधीन उर धरउ कंत। एक अकुलता तिह चित्त सेती दान दियो पनिवर इह अंत॥ गिरसे गिर जिन धर्म अधिष्टा देवी है विमल हो अनंत॥ जो स्वाधीन दान दै नित प्रति नहि अंचभ सुरराज लहंत॥ ६६॥ सोरठा छंद॥ पाचन देवो दान अरु दुषद क्षयत जियत॥ दया बुध हिय आन॥ दोनै जोग निगम मना॥ ६७॥ चैापाई॥ ऐसा जानि आनि जिनवान॥ दया दान ज्ञान उर आन॥ दोजे दान कृपनता भान॥ उत्तम मध्यम जघन्य निदान॥ ६८॥ दोहरा छंद॥ दान तना अधिकार यह॥ पुरन भया सुजान॥ चहु विधि कोजै सक मम॥ श्रावक करै कल्यान॥ ६९॥ इति श्री पुन्याश्रव विधाने ग्रंथकर्ता केशवनंद दिव्य मुनि सिक्ष्या रामचंद्र विरचिते दान अधिकार समाप्तम्।

Subject—(१) पृ० १—८४ तक—प्रथम अधिकार। देव पूजन की आवश्यकता और उसका महत्त्व। आठ व्यक्तियों को पूजा करके उत्तम फल पाने के उदाहरण स्वरूप आठ कथाओं का संग्रह।

(१) माली की पुत्रियों का स्वर्ग प्राप्ति करने की कथा। (२) पौतांकर का एक राजा को देव पूजन करते हुए हर्ष मान कर उसका अनुमोदन करने के फल स्वरूप यक्ष होना। (३) नागदत्त का मेंडक हो जाना और एक मुनि के आदेश से उसकी रानी वरदत्ता का उसे ले आना और समन शरण आगमन समय उसको पूजा करने पर उसका वैकुंठ धाम पाना। (४) भरत नृप चरित्र कथन अर्थात् भूषण वैश्य के पुत्र के प्रभाव से भरत नृप होना। (५) रत्नशेखर चक्रवर्ती को कथा, पूजा के प्रभाव। (६) धनदत्त ग्वाल को कथा, जिन पद पर कमल चढ़ाने के प्रभाव से मर कर भूपाल होने का कथन। (७) वज्रदंत चक्रवर्ती को कथा। (८) श्रेणिक को कथा।

(२) ८५—पृ० १२८ तक—दूसरा अधिकार।

नमस्कार मंत्री को महिमा संबंधी ७ कथायें।

(१) सुग्रोराव को कथा। (२) बंदर अमान मयचरि निर्वाण प्राप्ति कथा। (३) चारुदत्त सेठ को कथा। (४) धर्निंद तथा पद्मावती को कथा। एक नाग नागिनि के कान में नमोकार मंत्र पढ़ने के प्रभाव से उनका धर्निंद तथा पद्मावत होने का कथन। (५) हथिनी को कथा, ॐकार के प्रभाव से उसका सीता होना। (६) नमोकार के उच्चारण करने से एक चोर का सुर पदवी पाना। (७) एक अज ग्वाला का नमोकार उच्चारण द्वारा कामदेव को पदवी पाना।

(३) पृ० १८९—पृ० २०६ तक—तीसरा अधिकार। श्रुति श्रव फल संबंधी ७ कथायें।

(१) आगम कथन मन से सुनने के कारण सुर सुख पाये हुए बाल राजा की कथा। (२) मा मंडल का आगम श्रवण करने के कारण चक्री समान हो जाना। (३) आगम के श्रवण से जमराजा का मुनि पद ग्रहण, (४) एक चंडाली का श्रुति श्रवण करने के उपलक्ष्य में चौथे जन्म में सुखमाल होकर स्वर्गपद पाना। (५) भीमकवली की कथा। (६) चंडाल कूकरी की कथा (७) सुकोशल की कथा।

(४) पृ० २०६—२४४ तक—चौथा अधिकार। शीलाधिकार गुण वर्णन संबंधी कथायें।

(१) मेघेश्वर के शील की कथा। (२) कुमेर प्रिय शील की कथा। (३) सीता के शील की कथा। (४) प्रभावती के शील की कथा। (५) वज्रदत्त की कथा। (६) नीली बाई सेठि पुत्री के शील की कथा। (७) चंडाल के शील की कथा।

(५) पृ० २४५—३४५ तक—पांचवां अधिकार। उपवास संबंधी ७ कथाओं का वर्णन।

(१) नागकुमार, (२) भविष्यदत्त, (३) अशोक रोहिनी, (४) नंदमित्र (५) जाम्बवती कृष्ण पटरानी। (६) ललित घटा (७) और पर्जुन चंडाल की कथाओं द्वारा व्रत महात्म्य समझाना।

(६) पृ० ३४६ से ४६७ तक—छठा अधिकार। दान कथा संबंधी कथायें।

(१) शान्तिनाथ की कथा—एक जन्म में दान करने के प्रभाव से बारह जन्म तक सुख पाने और अन्त में तीर्थंकर पद पर पहुंचने की कथा। (२) जयकुमार तथा सुलोचना की कथा—दान के प्रभाव से ऋषभ के कैवल्य ज्ञान होने के समय जयकुमार का गणधर पद पाना और सुलोचना की स्त्री लिङ्ग छेदन कर सुर पद पाना। (३) वज्र जंघ नृप की कथा। (४) सुकेत राय की कथा (५) धारम्भक द्विज की कथा—दान के प्रभाव से मंडलीक पदवी पाना। (६) नल नील की कथा। (७) लौ अंकुश की कथा। (८) दशरथ राजा की कथा। (९) भा मंडल की दूसरी कथा। (१०) सुसीमा—कृष्ण पटरानी की कथा। (११) कृष्ण की पटरानी गंधारी भव की कथा। (१२) गौरी रानी-श्रीकृष्ण की पटरानी की कथा। (१३) श्रीकृष्ण की पद्मावती नाम धारिणी, पटरानी की कथा। (१४) धन्यकुमार का चरित्र वर्णन। (१५) सोमशर्मा की स्त्री धमिला की कथा।

Note—ग्रंथ निर्माणाद्दिशादि।

याचारज त्रिय धरि अभिलाष। कोन्हो तास संस्कृत भाष ॥ तासु वचनिका रुप सुधारि। दौलतिराम कथा बुध सारि ॥ तासें भाव सिंह निज छन्द। आरंभ कियो चैापाई बंद ॥ छोल अधिकार ताई उन जोर। भेजि दियो लिखना हम ओर। भलो कथा लखि के हम लिखैा। तेते काल सिंह यह भय्यो ॥ भैरोंदास पुन्य परकास। देखा ग्रंथ अधूरा पास ॥ मोसों भना संपुरन करैा। आरत कछु न मन में धरैा ॥ मैं भाषा भाखूं सुख मान। जो कर लगे पुराण पुरान। तब उन कछुक सर्ग में खोज। मोपै भेज दिया लहि चोज ॥ दोहरा—हूं धैा कर्म संयोग से, पर सेवा मे लीन। जा छिन थिरता चित गहो, बित छुत रचना कीन ॥ ग्रंथ बड़ो मोमति तनुक ऐसा बना नियोग। हंस निवार सुधारियो, विनऊं पंडित लोग ॥ ग्रंथ निर्माण काल :—एक हजार सात सैा बानवे मानिये। चैत सुदी द्वितीया दिन नीका मानिये ॥ तादिन पूरन कीन ग्रंथ जियराजने। मंगल करैा सकल समाज ने ॥

No. 339(*a*). Charaṇa Chinha by Rāmacharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—12 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Adita Siṁha, Village Saraiyā Ali (Mevāsiṁha), Post Office Kaisargañj, District Bahrāich (Oudh.)

Beginning—श्रीरामानुजायनमः ॥ चंचरी छंद ॥ रामचन्द्र चिन्ह चिन्हु सब बिध सब सुष साजै। रघुवर के चरन कमल अंकन जुत निरषु अमल धारे पद चिन्ह राम संतन हित काजै ॥ रामचरण दाहिन स्वै सीतापद वाम चिन्ह बिश चारि स्वास्ति कान्ह कोणश्री बिराजै ॥ हल मूशल सर्पबान अम्बराम्ह पंचजान वज्र जव उर्द्ध रेष कल्प विर्छ छाजै। अंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन दंड चमर छत्र पुष्प माल अब दक्षिण पद भ्राजै ॥ गोपद छिति घट पताक जंबुफल अर्ध इन्दु शेष षटकोण लगदाजि बिन्दुराजै ॥ सज्जू शक्ति सुधा कुंड त्रिबली मीन पूरचन्द बीन बेनु धनुष तून हंस चन्द्रिकाजै ॥ सीयराम चरनैा शुभ चिन्ह अष्ट चालीस नित चिन्तत शिवनारद सनकादिक अहिराजै रामचरण ध्यान करत गोपद इव जक निरत बिरति ज्ञान भक्ति भरत सजत संत समाजै ॥ १ ॥

End—चंचरीक छंद ॥ सीयराम चरण चिन्ह जिन्ह जिन्ह संतन मन भाई। जेते सब चिन्ह लसत जानकी के नयन बसत जासकी कटाक्ष बिनु न मिलत प्रभु

गोसाईं ॥ निगमागम विधि महेश नारद शुक सनक शेष रामचरण चिन्ह सदा नेति नेति गाईं ॥ छोड़ि सोच रामचरण जीवत जो धीर सरन गुंजा की गहत मुड़ पारस बिहाई ॥ दंपति पद पद्मरूप होइ रहु चित चलि अनूप चक पापंड रहु विवेक कह धनाई ॥ श्रुति उदार कहत तोहि दासो निज जानि मोहि जानको विहारु नेक चरण शरण लाई ॥ रामचरण मनवरोर मानत नहि कहा मोर मारत मोहि विनु गुनाह जानको देहाई ॥ ५७ ॥ रामचरण सब पंक गुन एक साथे फल होइ । चित्रकूट चित में कसे आनि रहे कि सोय ॥ चित्रकूट चित पंक प्रभु लषत प्रेम को वाढ़ि । रामचरण तेहि संत को भक्ति गोद लिय ठाढ़ि ॥ इति श्री चरण चिन्ह सम्पूर्ण शुभ मस्तु लिख्यते रघुवर शरण पाठार्थ महावली के शुन ॥

Subject—राम के चरणों की महिमा ।

No. 339(*b*). Drishṭānta Bodhikā by Rāmacharaṇa Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—21. Size—12 ×6 inches. Lines per page—16. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1895 or A. D. 1838. Place of deposit—Santāna Murau, Village Airiyā, Post Office Pipari, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण द्रष्टांत विनु मन न लहै श्रुतबोध । सहज बात को बात एक कहों पंथ सत सोध ॥ रामचरण श्रीराम को वंदत सब सुख पाय ॥ जैसे सींचे मूलको डारपात हरियाय ॥ रामचरण प्रभुरूप बहु राम भजे सब तुष्ट । यथ असन मुखमें लिए । हाथ पाव सब पुष्ट ॥ रामनाम सुमिरत सकल राम मंत्र फल सोध । रामचरण जिन रतनते सकल दृष्टि को बोध ॥ रामरूप थिर ह्वै लषत ब्रह्मजीव लषिपाय । रामचरण रवि लषत हो मंडल धाम सुभाय ॥ रामचरण रवि प्रभा ते रवि मूरति लषि जाय । तिमि निजरूप प्रकास से रामरूप दर्साय ॥ रामचरण सतसंग बिनु नहि जवाहिरी होय ॥ तन मन वचन विलाय नहि रहत सदा सतसंग ॥ रामचरण फल पक में जथ छूट जल गंग ॥ रामचरण सतसंग मे परा रहे नहि जाय । कबहुंक जो सुरसरि बढ़े जो जल लेय मिलाय ॥ रामचरण संतन परसि तीनिताप मिटि जाय । जिमि मलया तनु परसते विष भुजंग सितलाइ ॥

End—रामचरण जिय सकुचि बड़ि चहत मिलो रघुराय । जिमि विभिचारिन पति निकट पग पग चलत डेराय ॥ रामचरण जग पांच दैप चलु आगे हरि भानु । रामचंद्र की चंद्रिका निज स्वरूप पहिचान ॥ निज स्वरूप पर रूप लषि पग पग

चलत अनंद ॥ रामचन्द्र तब द्रवहि प्रभु देषिचंद मनिचंद ॥ जगत तजे प्रभु भजे बिनु मिटहि न जिय को पीर । रामचरण बिनु धनुष के तजे लगे किमि तीर ॥ रामचरण जगवासना तब लगि सुद्धि न होय ज्यों मद के घट भरे कछु पावन किहि विधि होय ॥ लोकलाज अभिमान सुख तब लगि हृदय न राम । रामचरण नृप क्यों बसे जहां मलीन लघुग्राम ॥ लोक मान को अगिनि मैं धर्म कर्म जरि जाय । रामचंद रघुनंद को करुना नारि बुझाइ ॥ अस करुना करिहो कबहुं रामचरण पर राम । तब स्वरूप जल मीनमय मरो बिछोहत नाम । यह दृष्टांत सत बोधिक सतक बिरह को अंग । रामचरण तेहि समझि रहु राम न छोड़िहि संग ॥ इति श्री दृष्टांत बोधिक बिरह अंग वरननोनाम पंचमो सतक । माघकृष्ण पक्ष तिथो चतुर्दस्याम मंगल वासरे संवत १८९५ दसखत रामप्रसाद मुराऊ ग्राम वासी दहाव का पुरवा ॥

Subject—रामकृष्ण आदि को महिमा पर दृष्टान्त । पृ० १ से ५ तक विवेक लक्षण पृ० ६—९ तक वैराग्य लक्षण, मर्यादा लक्षण, पृ० १०—१२ तक—शरण लक्षण, निश्चल, दया, सत्य, उदार, ऐश्वर्य, यश, १३—१७ तक रामनाम लक्षण, १८—२१ तक, विरह के लक्षण ।

No. 339(*c*). Drishṭānta Bodhikā by Rāmacharaṇa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—6½ × 5 inches. Lines per page—34. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Śrī Mahanta Bābā Rāmacharaṇadāsa, Chandra Bhawana, Payāgapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 339 (*b*).

No. 339(*d*). Padāvalī by Rāmacharaṇa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—27. Size—12¾ × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,485 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī.

Beginning—श्री अवध सरजू सीतारामाभ्यांनमः । श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बाल विभूषन नील तन जग अधार कछु होय । रामचरन मोइ उर बसे बालरूप रघुनाथ ॥ १ ॥ महिसुर आरत देषि प्रभु कहो विधिहि दै बोय । अब मरि हैा अवतार है कोन्हेसि संत विरोध ॥ २ ॥ सत स्वरूप दसरथ अवध तहं पैहैा निज-रूप । रामचरन जय जय कहत गय निज भवन अनूप ॥ ३ ॥ राम राम ॥ हरिप्रिया

छंद ॥ राग रामकली ताल चक्रताला ॥ दसरथ चितत नित सदोनं । छिप्र गवन गुर भवन विलंबित नमित यसोर्व बोल्यो गुर परचोन जै जै राम लला ॥ १ ॥ विधि हरि वंदन चंदन सिव सुष कंद ॥ निगमदक्ष मुनि गछि रक्ष मदि दुष्ट निकंद ॥ सोइ सुत तव कुल चंद जै जै राम लला ॥ २ ॥ गुर नृप गक्षति सुखिति रंग बनाइ—छिप्र जनन सद स्वजनसु शृंगो रिषिहि बोलाइ ॥ सुत हित जग कराइ जै जै राम लला ॥ ३ ॥

End—रघुनंदन को यह बानि परो ॥ गलिय चलत मुसुकात छबीलो नयन के बान ते प्रानहरो । जहं देषो तहं पड़ोइ रहतु है मैं सषो लोक को लाज हरो । रामचरण सषि निरषु नयन भरि काज लाज सब भार परो ॥ राग श्री ताल चौताला ध्रुपद ॥ परम पुरुष परमेस्वर परब्रह्म परेस सुंदर अति श्री सीता रवन देषो नयन को फल सिव के हृदय वासनानि सब विधि सुजान सुष छबि भवन सुकसन कहतु मत ध्याइ जेहि ध्वै नित पाय पद्म जोति इंद्रो होइ मवन ऐसे रघुवर के चरण परे रहय ते सकल गुन निधि रामचरण दुष्दवन पुलक पदवली समात पोथि लिषी श्री सीताराम राम पुलक पदावली शृंगार श्री गोसांई रामचरण क्रिते ॥

Subject—श्री रामचन्द्रजी के भक्ति विषयक स्फुट छंद ॥

No. 339(e). Bālakāṇḍa Rāmāyaṇa para Ṭikā by Rāmacharaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—1,562. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—19,525 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1877 or A. D. 1820. Date of manuscript—Samvat 1917 or A. D. 1860. Place of deposit—Tālukedāra Balabhadra Siṁha Seṅgara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ विवेशा सगह पूर्ण नियत रसमयं सच्चिदानंदं सत्यं । कल्यानांऽनंत दिव्यात्मक गुण विलसत्सवंतो भिन्न रूपं ॥ जीवानांमा नियंता रमति गुण मयाऽचित्य शक्ति परेशं । रामं कैशोर मूर्तिं विपुर गुणनिधि ज्ञानकोशं भजेम ॥ १ कृत्वा वै गुरु वंदनां विमत मथ्या लक्ष्यवेद स्मृति वोराणां स्वप्रिया यथार्थ भणितं चा वैक्ष्य वै संहितां ॥ जीव ब्रह्ममयं त्रिकांड रचितं जिज्ञासु बोधोपनं ॥ सारं प्राप्य तपोऽभिराम चरणो वेदांत चुडामणिम् ॥ दोहा—वंदौ श्रीकर जानकी रघुनंदन सुखदानि । रामचरण ससमाज युग सर्व सुमंगल खानि ॥ ३ ॥

End—सर संतन की मनहंस जहां मुकुता गुनराम चुनै सुखसो। कवि कोविद को विसरामथलो सब शास्त्र सुमंगल मय सुखमो ॥ रघुवीर स्वरूप सदा दरसो सुख को सुखमो दुख को दुखसो ॥ जगजाल को राम चरंनन ग्रसो रघुवीर कथा तुलसो उरवसो ॥ ४ ॥ सब को मत एक करो तुलसो सिया-राम स्वरूप में मानि धरो ॥ तेहि ग्रंथ को अर्थ किये मति जो यह सिंधु सुधा रस भूरि भरो ॥ सर मानस राम चरित्र तहां गुण कोरति दिव्य उठै लहरी। सिय-राम समोपहि वास करै जोइ रामचरंनन स्नान करो ॥ ५ ॥ दोहा—अवधपुरी पूरण भयो सुभग जानकी घाट। रामचरण शुभ तिलक कृत सत समाज को ठाठ ॥ ६ संवत अष्टादस सुभग सत्तरि अर्द्ध सपाव। १८७७। रामचरण रितुराज तिथि पंच शुक्ल वैसाख ॥ ७ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि विध्वंसने बालकांडे श्री सोताराम विवाह श्री अयोध्या विश्राम परम उत्साहो परमानंद त्रैलोक्य मंगल वर्णनं नाम सप्तपंचासत सारंगः ॥ बालकांड समाप्त रामचरण तिलक कृत मूल तिलक को संख्या १९२० ॥ श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्ये गताका १९१७ मार्ग शुक्ल पंचम्यां लिखित मिदं पुस्तकं चिंतामणि ॥

Subject—रामचन्द्र की बाल्य अवस्था, सीता जी के साथ विवाह होने तक।

No. 339(*f*) Rāmāyaṇa Ayodhyā Kāṇḍa para Ṭikā by Rāmacharaṇadāsa of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—696. Size—14 × 7 inches. Lines per page—12. Extent—10,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1881 or A. D. 1824. Date of manuscript—Samvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—Tālukedāra Ṭhākura Balbhadra Siṁha Saṅgara, Village Kānthā, Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥ घनाक्षरी कवित्त ॥ तुलसीकृत मेघ स्वाति जोग धर्म ज्ञान सालि प्रेमनोर चातक मयूर चित्त मन है। कामधेनु दिव्य सोपि दुग्ध भाव प्रीति स्वाद तोष पुष्ट जीव वत्स देव रामजन है। धर्मिन्ह कों धर्म सिद्धि जोगिन्ह को जोग सिद्धि ज्ञानिन्ह कों ज्ञान सिद्धि भक्त भक्तिधन है। रामचरण श्री मद्रामायण श्री राम ऐन रामनाम सोना श्री रामसीय तन हैं ॥ १ ॥ क्षीर सिंधु अवध कांड पूरण पै भरत भाव सेस विज्ञान विष्णु रमा रामनाम है। विरह अथाह स्वरूप इंदु प्रेम सुधा राम रूप चिन्तामणि भक्ति धेनु काम है। भरत को जोग वैराग्य ज्ञान ध्यान तप आदि गुन

दिव्य भूरि जलचर को धाम है। रामचरन सरनागत सोय मेरो कृपा राम भारत तरंगी सोच उभयै सुदाम है। २ ॥

End—भरत भजन रवि उदै लोक त्रय भुवन चारि दस। मोह चविद्या निसा नास जागि जीव एक रस। काम क्रोध मद लोभ चार निश्चर गति नासो। ज्ञान जोग वैराग्य धर्म सर कमल प्रकासो। श्रीराम कराकै राजते पूरन नाति घनोति गई। श्रीरामचरन यद्यपि लघु राम चरन जेहि प्रीति भई ॥ २ ॥

इति श्रीरामचरित मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने श्री अयोध्या कांडे भरत के अवधि वैराग्य विवेक पट संपति पट सरनागत भाव भक्ति अखण्ड एक रस वर्नन नाम एकोनत्रिंशति स्तरंग ॥ २९ ॥

दोहा—ससी एक सन आठ दस संवत सावन पूर्व। अवधकांड को तिलक भो रामचरन रति रूर ॥ ३० ॥ संवत १९२३ सिसिर रितौ माहोत्तम फागुन कृष्ण षष्टम्यां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं मातादीन पांडे अस्थान जोगा। पठनार्थं गुरुप्रसाद राम त्रिवेदी ॥ स्वार्थ वा प्रमार्थ वा ॥ श्रीराम ॥

Subject—रामविवाह पश्चात् युवराज पद देने के समारोह से लेकर चित्रकूट में निवास और भरत का मनाने जाना और निष्फल लौट आने तक।

No. 339(*g*) Birahaśataka by Rāmacharaṇa. Substance—Leaves—12. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—16. Extent—144 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Srīvastāva, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ रामचरण पचय सतक राम चरण रस देइ। लोह नान्द हूँ रज मिले ज्यौं चुंवक गहि लेइ ॥ १ ॥ रामचरण दृष्टांत यह जो समुझै मन लाइ। वर्सहि राम हिय मग्न होइ मूक स्वाद जिमि पाइ ॥ २ ॥ रामचरण विनु विरह प्रभु मिलु न कहु चलि जाइ। मलत सोहागा प्रथम जिमि तव कंचन मिलि पाइ ॥ ३ ॥ विरह अगिनि निसि दिन जरै सहै वान असिधार। रामचरण रघुवीर जन सतो सूर एक वार ॥ ४ ॥ राम विरह हिमि मन जरै मूल बीज सब जाइ ॥ रामचरण जो ज्ञान जग दावागिनि हरि थाइ ॥ ५ ॥ चिता विरह की अग्नि हुइ रामचरण सो विचार। चिता जरावै मृतक को विरह जियत नितजार ॥ ६ ॥ रामचरण दुष मिटत है जो सर लगै शरीर। राम विरह सर हिय लगै तन भर कसकत पीर ॥ ७ ॥

End—निजस्वरुप पर रुप लषि पल पल चलत अनन्द।
रामचरण तव द्रवहि प्रभु देषि चन्द्र मनिचंद ॥ २६ ॥

जक्त तजे प्रभु भजे बिनु मिटै न जिय की पीर।
रामचरण बिनु धनुष के तजे लगै किमि तीर ॥ ९७ ॥
रामचरण जग वासना तब लगि सुद्ध न होइ।
ज्यों मद के घट भरे कछु पावन केहि विधि होइ ॥ ९८ ॥
लोक लाज अभिमान सुष तब लगि हृदय न राम।
रामचरण नृप क्यों बसै जह मलीन लघुधाम ॥ ९९ ॥
लोक मान की अग्नि में धर्म कर्म जरि जाइ।
रामचरण रघुनंद की करुणा बोरि बुझाइ ॥ १०० ॥
अस करुणा करि हौ कबहुं रामचरण पर राम।
तव स्वरूप जल मीन मैं मरौ बिछोहत नाम ॥ १०१ ॥
यह दृष्टांत प्रबोधिका सतक विरह को अंग।
रामचरण तेहि समुझि रहु राम न छोड़हि संग ॥१०२ ॥

इति श्री दृष्टांत बोधिका का विरह अंग वर्णन नाम पंचमः सतकं ॥ राम राम राम राम राम राम राम राम ८

Subject—१—विरह शतक की महिमा, विरह शतक के दृष्टांतों की महिमा, राम विमुख रहने की हानि वर्णन। राम के भक्तों को उनके विरह में जो दशा होती है उसका वर्णन। राम भक्ति से दुखों की निवृत्ति, मद का वर्णन, सुरति वर्णन। विरह अंग का वर्णन। बधिर का वर्णन। धर्म सूर का वर्णन। धर्म की महिमा वर्णन। विरह की तीन दशाओं का वर्णन। राम के बिना रामचरण की दशा राम के प्रति कवि की बिनती राम विरह में मन का वर्णन। कुसंगति का फल वर्णन। राम के ध्यान का वर्णन। अहंकार का वर्णन। बुद्धि सुधरने के लिये कवि की राम से बिनती। मन शुद्धि के लिये राम से बिनती। सुरति की दृढ़ता का वर्णन। काम क्रोध और लोभ का भक्ति से रोकने का वर्णन। राम की शरण के लिए बिनती। कानों को राम गुण गान सुनने में लगाने के लिये बिनती। राम स्पर्श के लिए बिनती, राम स्वरूप देखने में आंखों के लगने के लिए बिनती, राम कार्य में हाथों के लगने के लिए बिनती, राम रूपी तीर्थ में पगों के चलने के लिए बिनती, राम के चरणों में सिर लगने के लिए बिनती; मन क्रम वचन से राम के प्रति भक्ति का वर्णन। विषय के त्यागने और राम भक्ति का उपदेश, राम का वचन सिधुतट पर शरणागत को तारने में भ्रम की निंदा। अपराधों की क्षमा के लिए प्रार्थना, राम विरह में कवि दशा का वर्णन, राम की लीला की महिमा वर्णन। राम की प्रतिमा का वर्णन। राम के मिलने की इच्छा का वर्णन। राम भक्ति बिना संसार में जीना व्यर्थ है। राम के बिना कवि की व्याकुलता का वर्णन। बसंत ऋतु में राम विरह में कवि

दशा का वर्णन। पति के बिना जो दशा पत्नी की होती है वही दशा राम विरह में रामचरण की है। राम शरण में आने में भय संचार का वर्णन। बिना राम भक्ति के शांति नहीं मिलती इसका वर्णन। राम के बिना अगवासनाओं की निवृत्ति नहीं होती। लोक लाज अभिमान और सुख की वासनाओं का तब तक ही हृदय में वास है जब तक राम विमुख हैं। रामचरण की राम के प्रति प्रार्थना, ग्रन्थ नाम वर्णन।

No. 340(*a*). Vāṇī Rāmacharaṇajī kī by Rāmacharaṇa. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—4½ × 3¼ inches. Lines per page—18. Extent—1,260 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Harbansa Rāi, Post Office Ṭikārī, District Rāe Barelī.

Beginning—अथ स्वामी जी श्री रामचरण जी की वाणी लिख्यं। नमोराम रमतो तत मो गुरुदेव सुयामो ॥ नमो नमो सबसंत न'व रटि भये सुनामी। जिन के चरण हेठि रहो नित सास हमारा ॥ तन मन धन सर प्राण करि नवछावरि सारा ॥ राम संत गुरुदेव बिनि नही और आधारा ॥ रामचरण कर जोडि करूँ वंदूं वारंवार ॥ १ नमो राम रमतो सकल व्यापक घण नामी ॥ सब पोषे प्रतपाल सबन का सेवग स्वामी ॥ करुणा मई करतार करम सब दूरि निवारै भगति बिछलता बिडद भगति ततकाल उधारै ॥ रामचरण वंदन करै सब ईसन के ईस तमपालक तुम जगत गुर जग जीवन जगदीस ॥ २ ॥

End—राम आरती ॥ आरति रमता राम तुमारी ॥ तुम सूं लागी सुरति हम री। टेक ॥ रमता राम सकल घट पूरा। सुषिम थूल तुमारा नूरा ॥ १ ॥ आरति सुमरण सेवा कीजे। सब निरदोष ध्यान गह लीजे ॥ २ ॥ देही आरति देवा पूजा। राम बिनो दरसन नहीं दूजा ॥ ३ ॥ सिव सनकादिक सेस पुकारै। वही आरति भौ सागर त्यारै ४ रामचरण दे आरति ताके। अठ सिधि नौ निधि चेरी जाके ॥ ५ ॥ आरती ॥ आरति अलष पुरस अविनासी। पूरण ब्रह्म सकल प्रकासी ॥ टेक ॥ रमता राम सुरति के स्वामी। अनह अमूरति अंतर जामी ॥ १ ॥ सुरति मूरति आदि न अंता। सर सूंषिम रति सब बरतंता ॥ २ ॥ चौदा तीनि लोक पतिसाही। सबत दोग नव षंड दुहाई ॥ ३ ॥ वार पार कहू थाह न पावै। सुमरि सुमरि जन मद्धि समावै ॥ ४ ऐसा साहिब परंद मेरा। रामचरण चरणां का चेरा ॥ ५ ॥ पद ॥ ४५ इती पद संपूरणं ॥ राम राम राम राम राम राम रामराम राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—२ ॥ राम स्तुति, गुरु और अन्य संतों की बंदना। पृ० ३—६—राम की महिमा वर्णन। सूर वही जो इंद्रियों का दमन करे और काम, क्रोध, लोभ, मोह पर विजय प्राप्त करे तथा राम के चरणों में सदा भक्ति रक्खे ॥ ७-९। धर्म में दृढ़ता का उपदेश हंस, चकोर, चात्रक के गुणों का उदाहरण। और प्रह्लाद, नामा कबीरदास की दृढ़ता अर्थात् दुःख रूपी कसौटी पर कसने से जिसकी दृढ़ता पूरी उतरे वही सच्चा भक्त है। १०—१२ ॥ जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री विभचारियों के बीच में पड़ी हुई भी सदा पति प्रेम में ही रत रहती हैं और अन्य पुरुष की तरफ़ निगाह उठा कर भी नहीं देखती उसी प्रकार सच्चा भक्त अनेक मत मतांतर से घिरा हुआ भी केवल अपने इष्ट ही का स्मरण करता है। १३—१५। जो लोग अनेक देवी देवताओं को पूजते हैं उनकी दशा व्यभिचारिणी स्त्री के समान है जिसको कभी शांति नहीं मिलती और जिस प्रकार व्यभिचारिणी की बुरी हालत होती है उसी प्रकार वह मनुष्य सदा भटकता रहता है। इस लिये अपने एक इष्ट ही में सदा लवलीन रहे ॥।१६। उसी मनुष्य की बुद्धि सदबुद्धि है जो राम में सदा लवलीन रहता १७—१८ दुर्बुद्ध मनुष्य वही है जो काम क्रोध लोभ मोह आदि संसार के झगड़ों में पड़ा रहता है और राम से विमुख रहता है। १९-२१। राम की सत्यता और उनसे सब वस्तुओं और परमपद की प्राप्ति तथा राम महिमा वर्णन ॥ २२—२४ प्रकृति और ब्रह्म का उपदेश इन गुण मायाजाल से अलग होकर केवल ब्रह्म में ही लवलीन रहना चाहिए। २५—२६। जिज्ञासु के गुण लक्षण २७—२८। साधु के लिए दया धर्म का उपदेश। २९—३५। माया का विस्तार से वर्णन। ३६—सुमिरण विधि ३७। साधु लक्षण। रामभक्ति करने से लाभ ३८—और विमुख रहने से हानि का वर्णन। ३९—४३। राम जपने का उपदेश। ४४—४५। दरिद्री, दुखी, निर्धन, निर्बल के केवल राम ही बल हैं—४६—५०। साधु संग का फल। राम की उपासना से ही जीवन लाभ है—५१—५३ गुरु महिमा वर्णन। ५४—६४। राम नाम का प्रताप वर्णन। ६५—८०। चेतावनी के छंद—८१—८४। दश इंद्रियों और मन का सम्बन्ध वर्णन और उनका कर्त्तव्य—८५—११४ भक्ति रस के गाने योग्य फुटकर पद।

No. 340(*b*). Kālajñāna by Rāmacharaṇadāsa of Ḍiḍavānā, Jodhapura Rājya. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—68 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Gopāladāsa, Ḍiḍavānā, Jodhapura Rājya, Post Office Ḍiḍavānā, Rājputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काल ज्ञान लिष्यते ॥ दत्तात्रेयउवाच ॥ सावधान हरिदास रहाई । जो रैन दिना हरिसों मित्राई । मृत्युकाल को सदा विचारै । देषि उपद्रव वेगि संमारै ॥ जानि मृत्यु को पहिले ही राई । जोगेश्वर न्यारा होइ रहई ॥ देह गेह ममतादिक त्यागे । निरालंब होइ कहीं न लागे । लागे तहां जहां ते पायो । हो अलख वेद भागवत गायो । पारब्रह्म सरिले चलि जाई । जे अरिष्ट देखि सावधान रहाई । सो अरिष्ट तोहि कहि समझावत । जिनते मृत्यु को समै लषावत । जो ध्रुक, अरुंधती ध्रुव नहि देषै । तथा देव मारग नहि पेषै ॥ अथवा ससि छाया ससि मांहीं सो वरसते ऊपर जोवै नाहीं ॥ जाहि किरण हीन सूरज दरसावे ॥ अग्नि सर्व समान लषावे ॥ सोते जोवे एकादस मासा । विचारि पहले ही होइ उदासा ॥ जो छादै मूतै विष्टा· कराई, सो वन ह्वै पै मन जाई । प्रतक्ष अथवा सपने माहीं । सो मास दस जोवे आगें नाहीं ।

End—इतौ उपद्रव सदा विचारै । रात दिवस छिन छिन हिं समारै । ये घोर उपद्रव टरत जुनाहीं ॥ मत कोइ एक पुन्य करि टरि जाहीं ॥ किसही एक टरि जाई ॥ परि हरि रति झूठो मत करि पुन्य केवल राई । कोई एक अरिष्ट जिस उपद्रव को जितनो परमाना । मास धावै । कालको गति लषो नाह जावै । रहै एक शुभ स्थाना ॥ निरालंब होइ सावै दिवस एव तोनौ निदाना ॥ जब लग आवै । तब सावधान होइ वपु छिटकावै । ध्याना ॥ जब मृत्युकाल को अवसर सब से ले उलटाय । प्रेम प्रीति मरयावंत दोहा । वपु छिटकावै सावधान होइ । ज्ञान भाषा ग्रंथ संवत १७९४ कातिक मासे जोगी हरिसन हेत लगाय ॥ इति काल लिषतं जैपुर शुभ स्थानं लिपिकतायां गंगाराम शुक्ल पक्षे तिथि षष्टमी गुरु वासरे निरंजनी वैष्णव । पठनार्थं रूपदास श्री महंत जोधपुर राज्य ग्राम गद्दी डोडवाना शुभ भवतु ॥

Subject—मृत्यु का समय श्रार उसकी परीक्षा । देखो No. 340 (c).

No. 340(c). Kālajñāna by Rāmacharaṇadāsa of Ḍiḍavānā. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—$8\frac{1}{2}\times6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—26. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1794 or A. D. 1737. Place of deposit—Paṇḍita Nāgesarji, Post Office Fakharpur, Village Bunakapur, District Bahrāich (Oudh).

Note—Details as in No. 340 (b).

Subject—पृ० १—३ तक—काल का ज्ञान कराया गया है कि मनुष्य अपनी मृत्यु को किस प्रकार जान सकता है। जो शुक्र अरुंधती—ध्रुव, देव मारग चन्द्रमा के काले चिन्ह न देखे वह १ वर्ष से अधिक नहीं जी सकता। जिसको सूर्य्य में किरण न देख पड़े, अग्नि में गर्मी न जान पड़े वह ११ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो स्वप्न में मल मूत्र या कै करै सोने रूपे पर मन आवै वह दस महीने से अधिक नहीं जी सकता। जो भूत पिशाच आदि देखै वह ९ मास से अधिक नहीं जी सकता। जो साधु असाधु न जाने जिसकी प्रकृति पलट जावे वह ८ मास जीता है। कपोत, काक, उल्लू, गृद्ध जिसके सिर पर बैठें या काक पर मारैं वह ६ मास जीता है। अगर अपनी छाया उल्टी देखै तो ४ मास जिन्दा रहता है। जो बिना कारण दक्षिण दिशा बिजली देखता है, इन्द्र धनुष जल में देखै वह दो मास जिन्दा रहता है. जो घृत, तेल आरसी में अपना सिर कंधे पर न देखै वह १ मास जीता है। जिसका स्नान समय पर हिरदा पहिले सूखै वह दस दिन जीता है। जिसको हवा अथवा गर्मी अच्छी न लगै उसकी मृत्यु ततकाल होती है। लाल वस्त्र पहिरे स्त्री गाती बजाती दक्षिण दिशि ले जावे उसकी मृत्युनिकट है। जो नग्न, श्वेताम्बर देखै अथवा हंसता देखै उसकी मृत्यु तत्काल जानिये। दांत में दांत घिसै अथवा खाते खाते न तृप्त हो जल बिना नदी देखे दिन में तारे देखे उसका अल्प जीवन है जिसके नाक कान टेढ़े पड़ जावे अथवा बाया नेत्र बहे ऊंट गदहे पर सवार हो कान न सुने उसकी मृत्यु ततकाल है। जिसको आंख की जोति घट जावे या अग्नि में गिरै या तलवार से मारे तो सात रात जीता है। गुरु ब्राह्मण की निन्दा करे या माता पिता की निन्दा करे या अपने पूज्यों की निन्दा करे उसकी मृत्यु आई समझना। जब मृत्यु निकट जाने तो दान पुण्य ईश्वराधन में लगै तो अरिष्ट दूर हो सकते हैं।

No. 341. Dāna Līlā by Rāma Datta Brāhmaṇa of Guñjaulī. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—10. Extent—70 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1855 or A.D. 1798. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Siṁha, Village Guñjaulī, Post Office Bauṇḍī, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः

दोहा ॥ गणपति जो शुभ करन हो सुमिरत सब संसार। लीला गोपी कृष्ण की करौंताय विस्तार। १। जेहि सुमिरे संसै मिटै होत सदा आनंद। देवन हित अवतार धरि नंद कहवाते नंद। २। भुजंग प्रयात छंद। जबै प्रात भो कान्ह

जसुधा जगावे। सबै गोप गोपी मनो द्रव्य पाये। मंजन किये ध्यान पूजा मुरारी। वागेश जे संग सैा चाह भारी। धरे मोर को मुकुट आनंद कंदा। भली भांति राजे मनो कोटि चंदा। भली भांति केशरि तिलक माल राजे। कहूं लाल पेरी से लोके विराजे। श्रवण लोल कुंडल विराजे शो करे। मनो जुग द्विवाकर सबै भांति पूरे। अधर बिंब दाड़िम दशन बीच सोहै। हंसनि लेत मोहै कते काम मोहै।

End—कोई चीर त्यागे चली नग्न बाला। बजै प्रेम बंसी भली चित्र माला। कोउ मौन छाड़े न बालक निहारे। ठगी सी तकै वे कदंबन की डारें। कोई लोटे भू पर गिरे हैं अघोरा। फिरैं कुंज कानन न जानै सरोरा। भई मान हीनी सबै ब्रज की नारी। धरे ध्यान बंसी लगी तान भारी। जहां जाय मोहन ने बंसी बजाई। तहां ग्वालनी वे फिरैं पक्ष धाई। किये मंद सर्वासुरी वृज चंदा। थकी सी निहारैं परो काम फंदा। जोइ चित्त भावे। सोई कान्ह कीजे। हरित बांसुरी को हमैं शब्द दीजै। उतारो दही दान दीन्हो चुकाई। हंसी गुजरी कान्ह बंशी बजाई। दोहा॥ रामदत्त सुमिरत सदा गिरधारी ब्रजराज। चरन कमल हदे बसै दीजै विदुष समाज। सोरठा। पूरण पूर्ण इन्दु अब्द गते नृप विक्रमा। बान नक ख नग इन्दु। शाके मनित प्रवीन मति। सम्पूर्ण शुभं

Subject—श्री कृष्ण का गोपियों से दान मांगना।

No. 342(a). Daya Vilāsa (Sabhājita) by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size—$8\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—24. Extent—1,725 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Good. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Bakasha Siṁha, Tālukedār, Village Korethara Kalā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ दोहा। एकदन्त सुत कंत हरहरा हरन दुष सोग। मेरी बुधि अज्ञात शिशु वृद्ध करन तिहि योग। १॥ रामदया जांचत तिन्हैं चरन कमल करि नेहु। कोविद के मन स्रवन को वाक अर्थ प्रिय देहु। २॥ सकल ग्रंथ को अर्थ ले महा बुद्धि को धाम। रामदया संग्रह कियो समाजीत धरि नाम। ३। समाजीत जातें कियो रामदया चित लाइ। मुख्य पंडित होइ हैं कि कोन्हें कंठ सुभाइ। ४॥ समाजीत यह ग्रंथ को नाम धरयो इहि रीति। समय समय के अर्थ कहि लेइ सभा सब जीति। ५। मथि के नाना ग्रंथ को लहो जहां जो उक्ति। सो सब भाषा मैं धरी कहो अनुका युक्ति। ६। बुद्धि ज्ञान चेतावनी धीरज धर्म सुदेश। नैति अनैति सबै कही भूपति को उपदेश। ७॥

पुच्छ प्रतार प्रसिद्ध बन दंड अनुग्रह जाहि। धरि सासन नासन प्रजा प्रिय भूपति सो श्राहि। ८॥

End—(४) राग माला खंडः—अथ सत सुरनाम। षडे ऋषभ गंधार औ मध्यम पंचम जानि। धैवत बहुरि निषाद पुनि ये सुर सात बषानि। सात सुरन को समुझि चित सुरति होत बाईस। रामदया भाषा धरी जानि लेहु इकईस। अथ बाईस सुरति के नाम—कवित्त—निवा कुछैतो मुद्रा कंदोवनो रंजनो विचारि बुधि रति का विशेषिये। जानिये रउद्रा कोधो वज्र औ प्रसारिनो है प्रीतिमज्ञा चृति रिक्ता श्रुति चित लेषिये। संदोपनी भालापनो कहो रोहनो औ रम्या मंदनी सुउग्रा उभै रामदया पेषिये। सहित छोभ निकाये श्रुति कहो बाईस में सात सुरबा हंस-बहो को गति देषिये।

(५) वैदिक खंड—अथ नाटिका भेद चौबोला छंदः—दछिन कर अंगुठा को जर धर अंगुरी तोन धरि जै। प्रथम पित्त फिर कफ पुनि बाई कम हो तै लोष लोजै आदि आंगुरी लगी पित्त कफ दुजो अंगुरी कहिये। तीजी अंगुरी बाइ जानियै नारि लछन लहिये। मेडुक काग कुरेम चाल जो चलै पित्त को नारी। पंडुक मोर मराल नाटिका कफ को चलै विचारी। बाइ नाटिका चित दै देखो सांप जोंक गति जैसो तीतर लवा बटेर नाटिका सन्निपात को ऐसो होइ नाटिका अति हो चंचल ताप जानि ये ही मैं उपजै पित कफ बाइ जौन विधि सो सब भांति कहो मैं। १०

(६) शालहोत्र खंड—श्लेष्मज्वर लछनं। दोहा—तन ताते व्याकुल श्रवन नाक सिथलता नैन। अघर अचर से लो जल श्लेष्मज्वर को चैन। चैापाई॥ उपचार। मिरचै जोरो सेंधो नोन चोचा चाभ सोंठि लै तीन वच अतीस पोपरामूल मधु सो सानि समै सम तूल पाव तोन बाज कहु देहुं अश्लेष्मज्वर छुटै तेहु॥

Subject—(१) पृष्ठ १ से २१ तक—सर्वनीति प्रथम खंड।
(२) पृष्ठ २२ से ४१ तक—ज्योतिष भाषा।
(३) पृष्ठ ४२ से ५८ तक—सामुद्रिक खंड।
(४) पृष्ठ ५९ से ६६ तक—रागमाला खंड।
(५) पृष्ठ ६७ से ९९ तक—वैद्यक खंड।
(६) १०० से १२६ तक—शालिहोत्र खंड।

No. 342(*b*). Sabhājita Sarvanīti by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—140 Anushṭup Ślokas.

Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lala Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा । एकदंत सुत कंत हरहरा हरन दुष सोग । मेरा बुधि अज्ञान सिसु बुद्धि करन तेहि जाग । १ ॥ रामदया जानत तिन्है चरण कमल करि नेहु । कोविद के मन श्रवन को एक अर्थ प्रिय देहु । सकल ग्रंथ को अर्थ है महा बुधि को धाम । रामदया संग्रह सभाजोत धरि नाम । सभाजोति जाते कियो रामदया चित लाइ । मूरष पंडित होत जेहि काने कंठ सुभाइ । सभाजोति या ग्रंथ को नाम धरो यहि रीति । समय समय के भेद कहि लेइ सभा सब जीति । मथि के नाना ग्रंथ सब लहि जहां जो उकि । सो सब भ षा मे ब रो कहि षञुका तुक । बुधि ज्ञान चेतावनी धोरज धरि सुदेष । नोति अनोति सबै कहा भूप । को उपदेस । उठत प्रात रति को प्रबल पति पालक परिवार । मुरत नहि जुरि समर मे कुरकुट समर बिचार ।

End—कबहु न निकरै जतन सो तेल परहु धूलि । मूरष को मन चोकनो होय न कबहु भूलि । एक बोज पर आय रहु सहस पवन श्रुति चाक । भुजा देषि पछिताइये सुवा सेव मत आक । मैं पहिले हो हो लषो निकरत मैं चक फूल । यातप ताप तुसार को त्रास न बहुत समीर । नृप सुषमा स्वारथ कहा बसे करील हो कोर । मूरष सोपै सोप सो कुसल भावही जानि । तिहि सिषाय सकै घनो मूक महा तनु ज्ञान । बटत पथिक सो पुरुष है घटत घटै ना देषु । उडगन इक सो रह ससी नसै बढ़ै परवेष । बिपे परै पर पुरुष को बिभा हो । सुष जाल । अर्जुन सो पापन हु फूले फले रसाल । भूषन भाजन भामिनी बिभा न भूलाल । संचि संचि मरै अनेक जनु भुगवै है भूपाल । संतत एक हरिचन्द्र नृप राष्ये। क्षितिज सनेत । सुर पुर गे नर नारि पसु सुकुर स्वान समेत । इति श्री सभा जोति समय सारे सर्व नोति बरनन समाप्त लिपा शिवचरण बाजपेई संबत् १९२१ पूस मासे शुक्लपक्षे तिथौ पंचम्यां मंगल वासरे लिषतं सोतलप्रसाद सधुवापुर के पठनार्थ ।

Subject—राजनीति और सभानीति ।

No. 342(c). Sabhājita Jyotisha by Dayarāma. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of

manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sasaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भाषा ज्योतिष लिष्यते। परम पुरुष परमात्मा घट घट जाको बास। पूरि रह्यो तिहुं लोक मे जल थल भू आकास। ताको करत प्रनाम मैं लेत नाम मन काम। पूरन होत उदोत नित बाढ़त आठो जाम। रामदया जाचत तिन्है चरन कमल सिर नाय। जोतिष भाषा मैं रचो दोजै जुगुति बताइ। ग्रंथ संस्कृत देषि कै भाषा कीन्हो सोय। तिथि औ वार नक्षत्र सब योग करन गति जोय। अथ तिथि नाम। परिवा दुतिया तृतीया कहौ। चौथो पंचमो षष्टो लहौ। सातै आठै नौमी बषानु। दशमी एका द्वादशी बषानु। तेरसो चौदसो मावस गनो। कृष्न पक्ष ऐसो विधि भनो। पक्ष उजेर पूरनमासी। सोरह तिथि यहि भांति प्रकासी। अथ वार नाम। आदित सोम भौम बुधवार। जीव शुक्र शनि सातौ वार।

End—अथ ग्रह भोग। एक मास रवि भोगवै नषत सवा दुइ चंद। डेढ़ मास कुज बुध करै एक मास आनंद। बर्के तेरह मास लौं शुक्र महोना एक तीस मास सो शनि रहै कहियो किये विवेक। रहै अठारह मास लौं राहु केतु जिय जानि। रामदया नव ग्रहन को भोग रासि सुषमानि। अथ नषत जानिबो। कुंडलिया कातिक सो दूनो करै मास जिते गुनि लेइ। तिथि सब लोजै मास की एक घोस घट देइ। एक घोस घट देइ सबै मिश्रित करि गनिए। जेते गनित होइ नष। तेतो इमि भनिए। कहि रामदया यहि भांति होइ बुध बुद्धि अवतादिक। जानि लीजिये नषत मास दूनै कै कातिक। अथ रवि ग्रहन विचार। दोहा॥ महा नषत के सूर्य जेहि मावस लघु सुनु छत्र। परिवा कछु कछु संचरै सूर्य गहन गनि तंत्र। अथ चंद्रग्रहन विचार। पून्यो कछु परिवा कलित होहि भानु जिहि रासु। ससि सतये तिहि रासि मो चन्द्रग्रहन सो प्रकासु। इति श्री सभाजीत रामदया कृत ज्योतिष सम्पूरन लिषितं शिवचरन बाजपेई संवत १९२१ लिपा सीतला प्रसाद सधवापुर के पठनार्थ।

Subject—ज्योतिष।

No. 342(*d*). Sabhājita Rāgamālā by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat

Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ राग रागिनी लिख्यते। गुरु गणपति को सुमिरि पद लाय प्रीति दृढ़ चित्र। राग रागिनी सुर श्रुति भाषा कहौं कवित्त। अथ सप्त स्वरनाम। षड्ज ऋषभगंधार औ मधम पंचम जानि। धैवत बहुरि निषाद पुनि ये स्वर सात बषानि। सत स्वरन को समुझि चित सुरति होति बाइस। राम दया भाषा धरो जानि लेहु इकईस। अथ बाइस श्रुति के नाम। कवित—त्रिवाकु द्वैतो मुद्रा कुंभेयतो रञ्जनो विचारि बुधि रति को त्रिनेपिये। जानिये २ उद्रा कोधो बज्र और प्रसारनो है प्रीतिमता धृति रिक्ता श्रुति चित लेषिये। संदीपनी अलापनी कही रोहनी औ स्याम दतो सु उम्रा उभै रामदया पेषिये सहित छोभ निकाम श्रुति कहो बाइस में सात् सुर माह सब ही को गति देषिये। दोहा। जो न सुरन को लेइ श्रुति मिले और जोग राग। राम दया काम सो कहै जानहु कुसल सभाग।

End—अथ पासावरी। अगर बरन मधु स्याम चंदन सो रचित सदौं सो पासावरी बाम नाह नेह रातो रहै। मेघ राग लछन। स्याम रंग पट पात वैस तरुन सुंदर सुघर। मेघ राग को रोति चित प्रसन्न ज्यावत जगत। मेघ राग को रागिनी टेक लछन। बिछुरी संग सो नाह लेति सांस मय्या परो। अति कलेस मन माहि विरहत चेत नट कट के। अथ मल्लार। अति प्रवीन गहि बीन गान करत पिय गुन दुषित। यह मलार तन छिन विरह भरी सुकुमार बहु। अथ गुजरी। शोभित श्याम शरीर बड़े बार सों गुजरी पहिरे भूषन चीर गान करत सेज्या परो। अथ भूपालो। गोरच सो सुभ अंग नष सिष सो कुमकुम रचित। हा[illegible]त देह अनंग भूपालो पिय सुधि करत। अथ देशकार। नैन कमल मुष चंद कुच कठोर कंचन बरन। हग्त नाह दुषदंद देश कार सुकुमार रत। अथ सर्व को कवित। प्रथमहि बाइन जो विचारि जो धरी श्रुति मिलो तीन सुर सोऊ कही मैं प्रमान है। षट राग पंच रागिनी समेत धरे षोड़व षाड़ न पादि जाको जो बषान है। सब ही के यह सुर लछन रहे निरूप बर्न [illegible] सुनायेउ बुध जानत न आन है। सात सुर ही में सब ही की गति रामदया ऐसो रोति कोऊ कवि जानत सुजान है। इति श्री प्रभाजीत राग रागिनी सम्पूर्णम् लिषितं शिवचरण बाजपेई संवत् १९२१ पठनार्थं दीवान सीतलप्रसाद सधवापुर के।

Subject—राग रागिनी स्वर आदि का वर्णन।

No. 242(*e*). Sabhājita Sāmudrika by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—16 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—260 Anushṭūp Ślokas.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lālā Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ समाजीत सामुद्रिक लिष्यते। करौ कृपा श्री सारदा हरौ कुमति मति देहु। सामुद्रिक लक्षण कहौं चरण कमल करि नेहु। लछन जेते सुभ असुभ सामुद्रिक के गूढ़। रामदया कीन्हे प्रगट पहिचाने अलि मूढ़। रामदया भाषा किये सामुद्रिक यह जानि। बुरे भले नर नारि के लिए अंग पहिचानि। अथ पुरुष लछन॥ आयु प्रमाने। वामन अंगुली मनुष वपु नृपति पुत्र जो होय। आदर जग दिन दिन बढ़ै भिच्छा तजै न सोय। आठ दहाई आंगुरी नाप लेहु नर देह। क्रूर कुटिल कपटि महि भूलि न कीजै नेह। नब्बे अंगुर पुरुष की तीस वरष की आयु। पांच वरष प्रति अंगुरहिन नब्बे सो अधिकाय। असी वरष की आयु बल सैा अंगुर जो अंग। सात वरष सो ते अधिक प्रति अंगुर के संग। सो अरु दस आंगुर पुरुष वरष डेढ़ सो आयु। आंगु पाछे वरष दस बीस से ले पाय। होय एक सैा बीस सो ऊपर मनुष पतंग। चिरंजीव सो जानिए होय न कबहु भंग।

End—कपोल लछन। दोहा। होहि मसोढे मंजु शुभ गोल गाल रंग लाल। सदा कृपो धन तासु के आपत कुसल रसाल। सिंघ बाघ गज सम विगो होहि जासु के गाल। भोगी सो सब रसनि को सेनापति ततकाल। गाड़ कपोलन मैं पड़ै हंसत कहत जो बैन। हैत चैत विन दिन पेससैन कछु पैन। अथ कान लक्षण। छोटे मोट कान ना दीरघ पतरे नाहि नाहि। सुमिलि कान कहिए धनी सुजस लाभ जग माहि। सोरठा। दीरघ पतरे कान के राजा के सिद्धि सुभ। लछन होय न आन। छोटे मोटे कान दुष। अथ नास लछन। कोर करी सो नासिका ऊंचो सुमिल सुढार। सो नर भूपति को धनी कुंजर झूमहि द्वार। मोटी चपटो पोल लघु कोंचित नासा होय। लटकि परै जो वदन पर दूषित जानिए सोय। दीरघ छेद कपाल का निचे परै जो जासु। नीचे वासो पाप वहु करै जीव को नासु। मुष लघु दीरघ नासिका कंठ बांवरे वैन। पापी कपटी दुष्ट बहु जानि लेहु निज नैन। इति श्री समाजीत सामुद्रिक सम्पुरन लिषा शिव-चरन बाजपेई दीवान सीतलप्रसाद के पठनार्थ संवत १९२१।

Subject—सामुद्रिक के लक्षण और स्त्री पुरुष के हर एक अंग के पृथक् पृथक् शुभ अशुभ गुणों का वर्णन।

No. 342(*f*). Sabhājita Vaidyaka by Rāmadayā.—Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—16×6

inches. Lines per page—18. Extent—96 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Lala Bhagavat Prasāda, Village Sadhuwāpura, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ वैद्यक भाषा लिष्यते। दोहा॥ कै परनाम परमातमा सुमिरौं हिङ चितलाय। सोक मोह भ्रम कलुष दुष दुर्मति दूरि ह्वै जाइ। गणपति के पद सुमिरि के मांगों यह वरदान। वैद्यक भाषा मैं रचैा करो सुमति को ज्ञान। रामदया चितलाइ कै सोधो वैदक ग्रंथ। सो विचारि भाषा कह्यो समुझि नाटिका पंथ। रामदया ने कहे भाषा नारी भेद। पढ़ै मूढ़ चित लाइकै होइ दक्ष बुध वैद। नारी लक्षण तीनि है क्रम सो दियो बताइ। प्रथम पित्त कफ दूसरो तीजो कहियत वाइ। जहां जासु को वास है कहो तहां सो ठौर। प्रथम वोध बुध आपनी जानि लेहु तब श्रौर। लक्षण साध्य असाध्य के पहिले लीजै जानि। तब ताको उपचार कछ सोच लीजिये मानि। रोग समुझिये सुभ असुभ जैसे करलै वीन। दक्षिण कर गहि नाटिका जानहु व्यथा प्रवीन।

End—अथ इन्द्री ढीलो परी होय ताको इलाज। प्रथम चमेली के दल आनि। ताको कूट लेहु रस छानि। कूटि सोहागा तामें देहु। मानशिला सब सम करि लेहु। चारो डारो तिल को तेल। पांचो आटि कराहो मेल। छानि तेल इन्द्री पर लाइ। सात दिवस मे नस जुरि जाइ। अथ गठिया वाइ का इलाज। मदार का दूध ऽ। छकरा का दूध ऽ॥ तेल तिल का ऽ१ सेर ताको चुरै के मेडकी का रस।ऽ भरि धमिलो वा रस ऽ। ले गुण चैारासो वायु नासै अथ वाई को दवा सिंगरफ तोला १८ लीलाथोथा घरा तोला ६ गाइ का घिउ ऽ॥ माम ऽ॥ कपड़ा मिहो गिरह १२ पहिले कराहो मां घिउ डारै तब मोम डारै तब इंगुर बूंकि तुतिया डारै बूंकि जस सब मिलै तब कपड़ा बोरै उतार लेइ मोम जमा होइ तौ वाती बनावै ६ः एकांत कोठरी मे एक वाती तपावै सकारे वा सांझ रहुते लार गिरै गह़ो हाथ पाव जो पसीना चलै लासा अस जब जानब नीक मनावै रोज तीनि ऊपर ते पिछौरा ओढ़ि कै आंच वाहेर ना जाय वाउ नीक होइ। इति वैदक समाप्तम सुभ मस्तु संवत् १९२१ पैास मासे सुक्लपक्षे तिथैा पंचमयाम मंगलवासरे लिषतं पुस्तकं सीतलप्रसादं कायस्थ ग्राम सधवापूर के।

Subject—नाड़ी लक्षण, पित्त का उत्पत्ति, कफ, वायु की उत्पत्ति, पित्त लक्षण परीक्षा, कफ लक्षण परीक्षा वात पित्त कफ का उपचार, साध्य असाध्य

लक्षण और नारी परीक्षा। आठ प्रकार के ज्वरों के नाम, उनके लक्षण और उपचार व उनकी औषधि, धातु मारण विधि, गुप्त रोगों की औषधियां और कुछ मंत्र आदि॥

No. 342(*g*). Śālihōtra by Rāmadayā. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—525 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Viśvanātha Siṁha Raisa, Taluqédār, Village Aganesa, Post Office Tirasuṇḍī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। दोहा॥ प्रभु गुरु गणपति सारदा चतुर चतुर के पांइ॥ बंदन करि हंदन रच्यो सालहोत्र के भाइ। १ गिरावान बाना सुभग प्रथम करो रिषिराज। वहे न कुल न लोक में प्रगट करयो नर काज। २ नर भाषा सोई कह्यो रामदया यहि जान। लछन हय के असुभ सुभ लेहि अज्ञ पहिचान। ३। गगन गौन सम पौन बल जल थल भु आकास। तुरंग सुपक्ष सुदक्ष सो फिरत अभीत हुलास। ४। परम पराक्रम देषि के सुनासीर निज काज। आयो बिन बाहन जहां सालहोत्र रिषिराज ५

End—अथ हडा को इलाज। मूलो एक बड़ो लम्बो सो बीता डेढ़ को, भेड़ी को लीद आधा मन तेहि के आगि करै तेहि में मूरी को भर्त्ता करै जब नरम होय तब वैस हडा के उपर बांधि देइ घरी दुइ लो अधिक रहै तो हाड़ गलि जाइ तेहि ते घरी दुइ राखै फिरि छोरि डारै। इलाज कम खुराको सन को भरि गा होइ अंग बेठा होय छाती बंद होइ बूझि गा होइ तेहि के औषधकारो और आध सेर लहसुन आध सेर लाल मिरच आध सेर सब कूटै गोली बांधि पैसा दुइ भरे की देइ रोग ७ फिर तीनि रोज न देइ ऐसे तीन सात करै।

Subject—१—३२ बकसराय दसौधी कृत सालिहोत्र।

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक ग्रन्थ निर्माण कारण।
(२) ,, ४ ,, ५ ,, चतुर्दश के हय वर्णन
(३) ,, ५ ,, ९ ,, ,, उत्पत्ति, वर्णभेद लक्षण स्वभाव
(४) पृ० १० से पृ० १२ तक सात रंग के शुभ अश्व, मिश्रित रंग, षट् अशुभ अश्व वर्णन, एकादश लक्षण।
(५) ,, १२ ,, १४ ,, शुभाशुभ लक्षण
(६) ,, १४ ,, १८ ,, उत्तम अश्व वर्णन। भौंरो शुभाशुभ लक्षण।

(७) पृ० १९ पृ० २० तक दंत परिज्ञान
(८) „ २० „ २१ „ उत्तम हय, देह प्रमाण वर्णन, वाह वर्णन वाह को भूमि।
(९) „ २१ „ २३ „ चाबुक विधान, सवारी विधान, धातु परीक्षा।
(१०) „ २३ „ ३२ „ रोग लक्षण, अग्नि परीक्षा, पित्तरक्त लक्षण औषधि, अन्य रोगों के लक्षण तथा उनकी औषधियां।

[गद्य] ३३—३६ पृ०—घोड़े के ३५ दोष, नकुल कृत प्रथम अध्याय।
३६—३८—द्विका लक्षण, अश्व के चार वर्ण।
३९—५०—अश्व के ७२ दोष १२ पेट में ६० देह में, पित्तदोष, उपचार षट् ऋतु।
५१—५८—नास-कुत्रिया चिकित्सा विधान।
५८—६२—वात की औषधि, असलेषमज्वर, कालज्वर, सन्निपात इत्यादि।
६३—७५—अन्यरोग तथा उनकी चिकित्सा।

No. 343. Svarodaya by Rāmadhana Dūsara of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—12 × 6 inches. Lines per page—22. Extent 250 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1924 or A. D. 1877. Place of deposit—Thākura Rāma Siṁha, Village Ragunāthapur, Post Office Bisawā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः। अथ सरोधा सार लिख्यते। मुंशी रामधन दूसर अकबराबादी ने बनाया स्थान मथुरा। वार्ता॥ प्रगट होय कि सरोधा ऐसी विद्या है जिसके द्वारा गुप्त मनोरथ प्रगट हो सके हैं और इस विद्या के जानने लोगों को बड़े लाभ होते हैं इस लिये अगले ग्रंथों से जिन बातों का आज्ञा और जिन साधन का साधन आवश्यक है उनको चुनि चुनि के यह छोटा सा ग्रंथ लोगों के हित बिचार हमने बनाया जो लोग इस विद्या में निपुन हैं॥ उनसे मेरी यह प्रार्थना है कि इस ग्रंथ में जहां कहीं भूल हो देवे उसको अपनी दयालुता सों शुद्धदेवें आज्ञा चाहिये।

तत्व नाम	तत्व का रंग	तत्व की चाल का प्रमाण	तत्व की वाहना	तत्व की प्रकृति	तत्व का स्थान	तत्व का स्वाजा	तत्व का भोजन	एक एक तत्व में पांचो तत्व में भुगत है ओर उनके पक्रति के न्यारे न्यारे भेद है
१	२	३	४	५	६	७	८	९

End—श्री पहिला मानसी सेवा जो मन करिके निम दिन अपने इष्ट देव के ध्यान में मगन रहे। ओर समय समय को सेवा में चित्त लगावे। जितनो सांची प्रीति से मन सुद्ध करके अर्थात ईश्वर को सब जीवों में व्यापक जाने यह मानसी सेवा में मन लगावेगा उतनोही जल्दी दिव्य दृष्टि हो जावेगी। दूसरा प्रतिमा सेवा इसमें मूर्ति का भाव न जाने साक्षात नंदकुमार जानके जैसे पांच वर्ष के बालक को माता पिता लाड़ लड़ावे तैसेही श्री ठाकुर जी को लड़ावे। यह मन वच कर्म करिके सेवा करे सेवा में चित्त लगाय राखे। काल ज्ञान को रीति प्रथम दाहिने हाथ को मुट्ठी बांधिके मस्तक पै लगा के पहुंचा पै दृष्टि कर लिया करे छः महीना पहिले मुट्ठी अरु हाथ न्यारे न्यारे दीखेंगे दूसरे दाहिने हाथ की मध्यमा को मोड़े के अंगुरी को जड़ में लगा के बाकी रही अंगुलियों को धरती पै जमा के एक एक उठा के फिर जहां को तहां स्थित करें दोपहर पहिले मृतकाल से अनामिका उठेगी तीसरे दाहिने स्वर मृतकाल से पहिले दो राति दिन १ वर्ष पहिले ५ दिन ६ महीना पहिले १५ दिन ३ महीना पहिले २० दिन २ दिन पहिले ३० दिन राति बराबर चलना रहै और एक वर्ष पहिले आकाश तत्व ३ राति दिन चलता है॥ दो० स्वासन स्वासन कृष्ण कहु वृथा स्वांस मति खोय। ना जानूं या स्वांस को आवन होइ न होइ इति श्री सरोदा समाप्त संवत १९२४

Subject—स्वरोदय का वर्णन अर्थात् उसके द्वारा हानि लाभ, गर्भ में पुत्र है अथवा बेटी, लड़ाई पर जाने से जय होगी या विजय, आदि का जानना।

No. 344. Sahaja Rāmachandrikā (Kavi Priyā kī ṭikā) by Rāmakavi of Vikramangara. Substance—Country-made paper. Leaves—392 Size—12 × 6 inches. Lines per page—6. Extent—3,675 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Cmposition—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Deva Bhaṭṭa, Village Nunarā, Mauzā Lamahā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—अथ नृप बंश बर्णनम् ।

विष्णुराम विख्यात विष्णुपुर नग्र बसायो । ठैान कर्ण सुरजकरन अनूप नृप सिंह सुजान सुजानिये । तेहि कुल जोरावर सिंह नृप पर दुख हरन बखानिये । दोहा । सोजो राव पाठ अब राजन भूप गजेश । दिन दिन दान उदारमति विलसत विभव विसेश । कवित्त ॥ गजै ना सकतु निरबल को सबल कोऊ भंजि न सकत बली मानहु सुतन को । देव द्विज भाव माहा सरल सुभाव कहियै पूरन प्रभा वर है लक्ष्मी रमन कैा । कहै कवि राम जाको नाव नव खंडनि मैं सुजस अखंड महिमंडन बरन को । विक्रम नगर गजसिंह जु करत राज शत्रुन को साल प्रतिपाल है सरन को । दोहा । महाराज गज सिंह को नागर नजरि उदार । सहज राम जिहि नाम है सब बातनि रिझवार । कवित्त—दिन दिन दुनो महराज गज सिंह जू की सब तें सरस जिनि ऊपर महा है । नाजर सहजराम बुद्धि को उजागर है अति हित सागर है चित्त को सुघर है । कविन दाता गुन ज्ञाता बड़े ग्रंथनि को जिनको विधाता दीनो धन नृप बर है । कहै कवि राम भुव मंडल मैं ठाम सुजस को धाम कैान जाकी सरवर है । ७ ॥ दोहा । नाजर निरमल गंग सैा बसत हिये उपकार । कथा कृष्ण कीरति सुनत प्रीति रीति निरधार । सहज राम चित सहज ही यह उपज्यो उपजोग । कवि प्रिया अति कठिन है नहि समझत सब लोग । चतुर नरन के बचन तें बड़ो चढ़ो चित चाह । चित्र श्लेषनि के अरथ नीकें करो निवाह । १० । कवि सगति टीका करी रही संत कवि पास । सहज राम नाजर सुघर कीन्हैं जगत प्रकास । ११ ॥ संवत अठ दस सत बरष चैातीसे चित धार । रची ग्रंथ रचना रुचिर ग्रिजैदशमि शनिवार । १२ सहज राम कृत चंन्द्रिका धरो ग्रंथ को नाम । पढ़त सुनत पंडित नरनि उर उपजत विश्राम ॥

End—दोहा—इहि विधि केशव जानहु, चित्त कवित्त अपार ।
बर्णत पंथ बताइ मैं, दीनो बुद्धि प्रसार । १९७

सुवरन जटित पदारथनि भूषन भूषित मानि । कविप्रिया है कवि प्रिया कवि संजीवनि जानि । १९८ । पल पल प्रति अवलोकि कै सुनिबो गिनिबो चित्त । कवि प्रिया मैं रक्षियो कवि प्रिया ज्यैां मित्त । १९९ ॥ अनिल अनल जल मलिन ते विकट खलन ते मित्त । कवि प्रिया यैां रक्षियो कवि प्रिया ज्यैां मित्त । २०० ॥ केशव सोरह हाव शुभ सुवरनमय सुकुमार । कवि प्रिया के जानियो सोरहो श्रंगार । २०१ ॥ सुगम । सहजराम कृत चन्द्रिका शशि चन्द्रिका समान । देखत ही संसय तिमिर प्रति दिन करत पयान । २०२ इति श्री नाजर सहजराम विरचितायां कवि प्रिया सटीका षोडसह प्रकाश । १६ ।

Subject—(१) पृ० १ से पृ० २९ तक—प्रथम प्रकाश—राजवंश वर्णन ।
(२) पृ० २९ से पृ० ३३ तक—द्वितीय प्रकाश कवि वंश वर्णन ।
(३) ,, ३४ ,, ,, ६६ ,, तृतीय ,, कवित्त दोष वर्णन ।
(४) ,, ६७ ,, ,, ७८ ,, चतुर्थ ,, कवि व्यवस्था ।
(५) ,, ७९ ,, ,, ९६ ,, पंचम ,, अलंकार वर्णन ।
(६) ,, ९७ ,, ,, १३८ ,, षष्ठम ,, वर्णालंकार ।
(७) ,, १३९ ,, ,, १६९ ,, सप्तम ,, सामान्यालंकार वर्णन ।
(८) ,, १७० ,, ,, १९५ ,, अष्टम ,, भूषण वर्णन ।
(९) ,, १९६ ,, ,, २१० ,, नवम ,, विशेषालंकार वर्णन ।
(१०) ,, २११ ,, ,, २२५ ,, दशम ,, विशेषक्षेपालंकार ,,
(११) ,, २२६ ,, ,, २७६ ,, एकादश ,, क्रमालंकार ,,
(१२) ,, २७७ ,, ,, २९४ ,, द्वादश ,, उक्तालंकार ,,
(१३) ,, २९५ ,, ,, ३०९ ,, त्रयोदश ,, समाहित दीपक परवृत्ता-
लंकार वर्णन ।
(१४) ,, ३१० ,, ,, ३२५ ,, चतुर्दश ,, उपमालंकार ,,
(१५) ,, ३२६ ,, ,, ३६२ ,, पंचदश ,, विशिष्टालंकार ,,
(१६) ,, ३६३ ,, ,, ३९२ ,, षोड़श ,, एकाक्षरादिकाब्द वर्णन ।

No. 345. Guṇasāgara by Rāma Kavīra of Nandagrāma. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—6 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṁha, Kānthā, District Unao.

Beginning—श्री इष्टा देवता सुप्रसन्नमस्तु । अथ गुणसागर को छप्पय लिख्यते ।

जय जय जगदा नंद कंद नंदालय मंडन । जय जय‥‥‥‥ध्वनि कादिश कर चकानिल ॥ कर चकानिल । जय जय मृदुकर जानु चाह‥‥‥‥कम हास लालस । जय पाणि संजीव मंजु मिजित विगताश्रम ॥ वि‥‥ले अलालित चरण जय निज‥‥भ विभिन्न भय । जय जय जनन्य दल सुष करण नवनीत प्रियानाथ प्रिय । १ ॥ जयसि वक्रो वक दमन जयसि पट सकट निवतंक । तृणावर्त हर जयसि जयसि मल वत्स निवर्तक ॥ अघ विध्वंसन जयसि जय सिचर पुर घर दारण । शंख चुर जिन्नयसि जयसि वृषभासुर मारण । हय रूप दनुज

गंजन जयसि जयसि मन्मथ सुत हरण। गिरि धरण जयसि गिरिधर जयसि जयसि जयसि गिरिवर धरण। २

End—जय युधि निर्जित दंतवक्र शिशुपाल जरासुत। जय रिपु रुक्मि विरूप करण जय नष्य वधू तुल। जय श्रादितु ""सहस्र युवति जन वल्लभ। जय शफो कृत रंक विप्र जय सर्व सुदुर्लभ। जय विप्र नष्ट तनया नयन निज मति विस्मापित विजय। जय मधु महोश जगदोश जगदेव द्वारा पतोश जय। २० वामदृशा मट मिस्त वामहा वाम श्रुति कुंडल। वामन स्पृह काम पाल कामक ""मंडल। श्री दाम विप्र दाम वि"""""दुहाम यशस्कर। सौरिग्राम कृत धाम मावपल धाम तिरस्कर। सद्‌ग्राम सुखद संग्राम मट नंदग्राम सुखानुभव। रमतेऽभिराम चरितेऽभिरुचि जिञा रामोऽपि तव २१। श्री

Subject—२१ छप्पयों में श्रीकृष्ण की स्तुति।

No. 346(*a*). Rāja Nīti Kavitta. by Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—12×4 inches. Lines per page—36. Extent—158 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmaśaṅkara Vājapeyī, Village Bahorī kā Vājapeyī kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bahraich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ राजनीति के कवित्त लिष्यते॥ भूप लक्षन॥ देव द्विज तीर्थ प्रजा प्रान सम पोषै चुक कीन्हे पर रोषै ना सभोषे मान प्यार है। काहू को न लषै न्याव गैल में परेषै काम काजो पै विसेषै काम देषै बार बार है॥ भाषत प्रधान मान चाकर को राषै विना बिगरेना माषै कोऊ भाषै जो हजार है॥ साजिके समाजै करै ऐसो राज काजै ताही जानो नर राजै यह राम अवतार है। १॥ ब्राह्मण पै भावे प्रोति मोहन सो राषै हेत विरचन को लाषै नेत माषै यही सार है॥ प्रजा द्वार रोवै बाप दोऊ जुन सोवै जिनै कोनै गुना होवै टेढ़ जोवै बार बार है। जाको नीक नारो जानै ताही को संकोच मानै भषत प्रधान धानै एकौ न विचार है। नीति नहि पाले चले याही रीति चाले ताहो जानो जम घाले जात क्षार महिपाल है। अथ देवान लक्षन॥ राजनीति जानै बड़ो छोट पहिचानै लाभ हानि अनुमानै काज ठानै सावधान है॥ तजिके गु-नी बिनती सुनै सब लोगन को दीन्हे बिन दीन्हे भूरि राषै सनमान है। भाषै है प्रधान सेवा सहै नहि सेवक को रीझि मोझि दोऊ करिबे में बड़ा ज्ञान है॥ साचे स्वामो काजो राषै रैयत रो राजो सदा ऐसे काम काजी नर राजी जहान है।

End—फूले फिरैं ऐंडे गात सूधी बात में रिसात मारे जात लात पै बतात ऐंड़ दारी को ॥ डोमते निकाम काम कै कै विढे लावैं दाम ताहू में गुनाम सो मानै पानिहारी को ॥ भाषत प्रधान ऐसो पाजिने को बाढ़ो मान कहां लौं करौ बखानि तिन को गवारी को । कुटना कलंको धूत चोरहा कुकर्मी धूत कायर कुमत तेऊ मेरे बढवारो को ॥ करनी चमारन को संगति गंवारन को चाल मतवारन की ताहो में भुनान है । मापै मजबूती बात रोजै चारि जुती सबै नीच करतूतो पै सपूती को गुमान है ॥ भाषत प्रधान ऐसे गोदर गुलाम जेऊ भाग्य बस पाय जात राज दर मान है । लालच के मारे चारि जुतिया साहैं तिन्है सज्जन सुजान लेखै स्वान के समान है ॥ आदमी न चीन्है यह को है कौन लायक को सबरो सो बांधे फिरै गर्वही को बाना है ॥ जानै न सबार जानिवे की चारि बातैं झारि नाहक बनाये फिरै मूंछे महताना है ॥ भाषत प्रधान राखै कपटै को हेल मेल ऊपर ते आपने और भीतर बिराना है ॥ जेवैं जग जापै नर ऐसेहो सुभाय कहिवे ही को मरद तिन्है जानिए जनाना है ॥ कौड़ी चारि पावैं तौ चमारहू छांड़ै जाति नाहि जाति को चोपाई चारो ओर निज गावहीं ॥ भंगो मतवारे पासैं नंगा सरदार आगे पीछे न कमार द्वार द्वार नित धावहीं ॥ भाषत प्रधान ऐसे नकटा निलज्जन को सज्जन सुजान सबै भांतिन बचावहीं ॥ चलनी को चाम औ घोरे को लगाम ऐसे सदा के गुलाम काम काहू के आवहीं ।

Subject—राजा, दीवान, सरदार, मुसद्दी, ब्यौहार, पंच, बैद, नारी, पाषंडी, दंभी, पढ़ैया, गुलाम, सांच, लबार, मीत और दरबारी के लक्षण ।

No. 346(*b*). Kavitta Rāja Nita by Pradhāna Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—9 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—128 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Lālā Narsimha Nārāyaṇa Shiwagarha, Rae Bareli.

Note—Details as in No. 346 (*a*).

No. 346(*c*). Rāma Kalēwā by Rāma Nātha Pradhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—420 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—

Biṭṭhaladāsa Mahanta, Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ अथ राम कलेवा लिख्यते ॥ छंद ॥ चौपैया ॥ जय गनपति गिरजा गिरजा पति जयति सरस्वति माता । जय गुरुदेव केसरीनंदन चरण कमल सुषदाता ॥ उनइस से दुइ के संवत मे जेठ दसहरा काहीं । ग्रिंथ कियो प्रारंभ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं ॥ अहै प्रीति की रीति अटपटी मैं के भांति बताऊं । तातै सानुज रामकुंवर को रहस कलेवा गाऊं ॥ जेहि विधि जनक सदन रघुनंदन कीन्हेउ रुचिर कलेऊ ॥ सुष दीन्हे सारिन सरहज कों सो सब कहि हौं भेऊ ॥ ब्याह उछाह सिया रघुवर को मैं बरनौं केहि भांती ॥ छन महु बीति गई सब रजनी रागे रंग बराती ॥ भोर भयो अपने कुमार के जनक बेगि बुलवायो । सुनि के पितु निदेस लक्ष्मीनिधि सचिन सहित तहं आयो ॥

End—राय रजाय पाय रघुनंदन अति आनंद उर छाये । सब कहि गये महल की बातें रघुवर सहज सुभाए ॥ सुनि विहसे महाराज समाजुत बरनि न जाय हुलासू । पुनि नृप दिये रजाय सुतन कहं गे सब निज निज बासू ॥ इमि आनंद जनक पुरवासी नित प्रति पालत लोगू । कोटिन इन्द्र नजारे नहिं पावत निरषत बहु सुष भोगू ॥ राम कलेवा रहस चरित यह लघु मति कवि किन गावै । सेस गनेश महेस सारदा तेऊ पार न पावैं ॥ जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो ग्रंथहि यह बांचै, पूरन पावै प्रेम राम को पुनि जग नाच नचावै । राम कलेवा रहस ग्रंथ यह रसिक जवन अधिकारी । जाके श्रवन परत रस बातैं हिय न उठत विकारी ॥ जेष्ट दशहरा ते अरंभ करि क्वांर दशहरा काहीं । राम कलेवा रहस ग्रंथ यह पूरन भो मुद माहीं ॥ दोहा निज पैतालिस बरस की उमर ज्ञान परमान कियो कलेवा ग्रंथ यह रामनाथ प्रधान ॥ इति श्री रामनाथ प्रधान विरचित राम कलेवा समाप्तं लिः रघुवरदास वैसाष कृष्ण ५ संवत १९२४ सीताराम मङ्गु ॥

Subject—रामजी का अपने भाइयों सहित कलेवा के लिये ससुराल में जाना और सालों सरहजों से हास्य विलास करना ।

No. 346(*d*). Rāma Kalēwā by Rāma Natha Pradhāna of Ayodhyā. Substance—New paper. Leaves—16. Size—12×7 inches. Lines per page—4. Extent—480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Bhagawāndīna, Inonā, Rāe Barelī.

Note—Details as in No. 344 (*c*).

No. 346(*e*). Rāma Kalēwā by Pradhāna Rāma Nātha of Ayodhyā. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—9 × 6 inches. Lines per page—13. Extent—406 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1902 or A. D. 1845. Place of deposit—Rājā Bhagawān Baksha Siṁha, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Note—Details as in No. 346 (*c*).

No. 347(*a*). Arjuna Gītā by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—100. Size—8 × 6 inches. Lines per page 18. Extent—731 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1837 or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasāda Tiwārī, Dostapur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री पोथी लिषी अर्जुन गीता ॥

मातु भवानी सुमिरौं तोही। सुमिरत ग्यान बुद्धि देहु मोही ॥ सुमिरौं चंद सुरज दुइ भाइ। जेहि को जोति रहो जग छाइ ॥ सुमिरौं पवन पुत्र हनिवंत। जेहि सुमिरे बल होइ बहुत ॥ सुमिरौं गनेस जेन्ह विघिन संहार। जेहि कारज सों गावै संसार। सुमिरौं सकल लोक माही मंद। सुमिरौ नदी अठारह गंद। सुमिरौ प्रबला पवन पहार। सुमिरौ सकल लोक संसार ॥ सुमिरौं गुरु बामन के पावां। जेहि सुमिरे मोरो निरमल काया ॥ सुमिरौ गुरु यंत्र जो दीन्हा। जेहि प्रसाद में गोविन्दहि चीन्हा ॥ अनो गुरु विद्या जो दीन्हा। जेहि प्रसाद में अधार चीन्हा ॥ सुमिरौ सरस्वती अमृत पानी। जेहि अहि कान कीन्हा मनजानी ॥

End—जेतो का धरम तीहु लोक मो आही। गीता समान दुसरा कोइ नाहीं ॥ रामरतन गीता प्रभु भाषा। अमातंतु के अरजुन राषा ॥ श्री मुष गीता संपूरन भएऊ। अरजुन कै संसै छुटि गएऊ ॥

दोहा—श्री कृष्ण अर्जुन मिलि गुरु कीन्ह एका नाम।
सो ग्रन्द के तारन को भाखेव केवल नाम ॥

× × × ×

× × × ×

मदमातो जो पेहो मारि कै मान भजै एक नाम।
इतौ सब लोक को माया भाजहुना केवल नाम ॥

पतो श्री पोथो अरजुन गोत संपूराना समापाता जो देष सो लोष ममदोष दोजोये पंडोत जन सो बोनतो मोरो टुटा अछरा लेवै साव जोरो ॥ संमाता १८३७ को साल मह पोथा उतारा अरजुन गोता। प्रतपश्वरा साती मात समै नाम मस आसोम सुदो ९ वार सुकवार का काय उतरो जैसे पुरान दसपत सुमव सोध वयेसा भुमोवड़ा सव रामवरामपुरा पोथो उतार गुजरात महा श्री वारन सहये।

Subject—(१) पृ० १—४ तक—वन्दनाएं, ।

(२) पृ० ५—९५—तक—श्रीमद्भागवत का पद्यानुवाद ।

(३) पृ० ९६—१०० तक—गीता पठन का फल ।

No. 347(*b*). Rāma Ratna Gītā by Rāma Ratna. Substance-Country-made paper. Leaves—100. Size-10¾ × 7½ inches. Lines per page—20. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Muḍiyā. Date of manuscript—Samvat 1822 or A.D. 1765. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha Seṅgara, Village and Post Office Kānthā, District Unao.

Beginning—श्रीराम जी सहाई। श्री महादेव जी सहाई। श्री दुर्गा जो सहाई। श्री गनेश जो सहाई। श्री हनुमान जो सहाई। श्री सव देवता जो सहाई। श्री पोथी रामरतन गोता लोखते। श्री गुरवोसन के चरन मनावो। जेही परशाद गोविंद गुन गावो। श्री कोसन आरजुन रसवानो। गुर परशाद कहा केछु जानो। येक समो थो आदोराई। आरजुन संग भेर इक ठाईं। धुप दोप लै आरतो कोन्हा। चरनोदक लै माथे दोन्हा। शंशे प्रभु आहे चित मोरे। कहत अ:ा दुनो कर जोरे। तब हो कोसन बोले वोहसाइ। अरजुन सो कहो जदुराइ ॥ दोहा। तोनो लोक के ठाकुर दोनवंधु नंदलाल। वोनती करो अधोन होई प्रभु भाखो वचन रसाल ॥ रामरतन गोता कर: आरजुन कोन्हे अनुसार। संत सुनो सुचोत होईः मुकती होत शंसार।

End—येहो वोचो गुरु देयाल जब को पउ। शंशे छुटो वोमल बुधि भेयउ। दोहा। गुरु देयाल मो मोहोकः छुटेउ जोव के भ्रम। रामनाम चोत लायउः योर जानो भ्रम ॥ इति श्री रामरतन गोता श्री कोशन आरजुन शमादनो नाम उनइशमो अध्या ॥ १९ ॥ ईतो श्री रामरतन गोता समपुरन जो परतो देखा सो लोखा मम दोष नाहीं अने पंडोत जन सो मोनतो मोरो कटल अछर लेय सव जोरो मीतो पुस वदो ईकादसो रोज मगर पोथो लखा वाले

सुखलाल राम सरदार का मोकाम आचानक में लोखवे। संवत १८२२ शाल मोकाम है रामपुर का इंगलीस में।

Subject—अध्याय १—२पृ० १—१०। गुरुवंदना, अर्जुन का भगवान की आरती और पूजन कर मुक्ति के हेतु प्रश्न करना। भगवान का चारोवर्ण और चारो आश्रम की श्रेष्टता का वर्णन करना और सब के परे भक्ति का महत्व और श्रेष्टता का वर्णन करना तथा सब योनियों में मनुष्य की श्रेष्टता का वर्णन किया गया है। अ० ३ पृ० १०—१४ अर्जुन का भक्त और भगवान में अन्तर का पूछना, भगवान का भक्त की बड़ाई और महिमा कहना तथा नाम जपने की महिमा का वर्णन। अ० ४—पृ० १४—२२—अर्जुन का गुरु की महिमा और गुरुमंत्र का पूछना, भगवान का गुरु की श्रेष्टता और गुरु मंत्र की गुरुता का वर्णन करना। अ० ५—पृ० २२—३०। अर्जुन का पाप के संबंध में पूछना भगवान का नाना प्रकार के पापों के नाम और उससे होने वाले कुफलों का वर्णन। अर्जुन का उनसे उद्धार का प्रश्न करना और भगवान का उनके उद्धार का यत्न कथन करना। अ० ६ पृ० ३०—३८। अर्जुन का धर्मों के बारे में पुछना और कृष्ण का धर्मों के संबंध में कथन करना, अर्जुन का अनेक प्रकार की हत्या जनित पाप का प्रश्न करना और कृष्ण का उत्तर देना। ऋण मारने का दोष और उसका समाधान करना-अ० ७—पृ० ३८—४४। भगवान का सब में अपना व्यापकत्व वर्णन करना। अर्जुन का धर्म और पाप की पैदाइश का प्रश्न करना तथा लोभ और काम का प्रश्न करना, अ० ८ पृ० ४४—५०। अर्जुन का चांडाल होने का पाप पूछना, भगवान का वर्णन करना तथा दान की विधि पूछना और उसका विस्तृत वर्णन करना, नाम जपने के लिये आसन का प्रश्न और उसका उत्तर। अ० ९, पृ० ५०—५६। माल की विधि और उसका फल तथा किसके छूने से किस प्रकार का दोष पूछना तथा भगवान का सब का उत्तर विस्तृत रूप से देना। अ० १० पृ० ५६—५८ पाप पुन्य का भेद पूछना और उसका उत्तर देना। अ० ११—१२ पृ० ५८—६३। ठाकुर और स्त्री का धर्म पूछना और उसका वर्णन अ० १३—पृ० ६३—६७। अर्जुन का ज्ञाना माति का प्रश्न करना और उसका उत्तर कहना। अर्जुन का नासिका द्वारा स्वांस आने का प्रश्न पुछना और उसका उत्तर कहना। अ० १४-पृ० ६७—७८ अर्जुन का व्यास के जन्म का वृतांत पूछना और भगवान का पूर्वजन्म से उसका वृतान्त कहना। अ० १६ पृ० ८३—८७। भगवान का अपनी भक्तवत्सलता और उन भक्तों का नाम वर्णन करना। अ० १७ पृ० ८७—९० अर्जुन का विराट रूप का पूछना और भगवान का उसका वर्णन करना। अ० १८—पृ० ९०—९४। भगवान की अनन्त महिमा का वर्णन और भक्ति की श्रेष्टता का वर्णन। अ० १९, पृ० ९४—१००।

अर्जुन को अपना श्रेष्ठ भक्त स्वीकार करना और भजन तथा नाम जप का उपदेश देना ।

No. 348. Krishṇa-śhataka by Rāma Ratna. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6¾ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—117 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda, Deputy Inspector, Bikāner.

Beginning—भुज त्रिवली रुचिर बनो सुबदन की । कटि किंकिनी पीति पट छाजत चमकत तड़ित तथा जलदन को । जुगलजंघरा भावत राजत अति सोभा मतिजाल कदन को । राम रतन तजिलाज मटू मे होन चहो रज कुंजन पदन को ॥ ३ ॥ दोहा । श्री चंद्रवलि श्री प्रिया श्री ललितादिक जुट । श्री विलोकि श्री स्याम कैा श्री रत सरव समुह ॥ देषि सषी छवि नागर नट को । अदुल मनोर स्याम सुभगतन याहि विलोकि रहे को हटको । मोर मुकट मकराकृत कुंडिल चंद्रवदन अलकावलि छटको । भाल विसाल तिलक भ्रकुटी वरबंक विलोकनि मोमन अटको ।

End—हांस मुसिक्याय हगंचल फेरत श्रीवन कुंज दुरे चित टोहन कुम्हिलात वामलता सषि सींचत दरसन बारि हिया हित जोहन हिलिमिलि करत बिहार सायनि महि मृतक सरार प्रान पुनि पोहन रामरतन लघुदास सरनि निज राधे भक्ति गाउ रस दोहन ॥ दोहा ॥ २० ॥ श्री निवास अस्टक पढ़ें श्री अनुराग समेत श्री वानी कीरति लहै श्री घनस्याम निकेत ॥ २१ ॥ जुगल उपासिक नारि नर जे न लहे रस पान जिनको जन सर्व ध्यान पुर विमुष सुनै नहि कान ॥ २२ ॥ श्री स्वामी सरवग्य श्री मयाराम महराज, श्री गुरु करुना ते कहो श्रीपति सभा समाज ॥ २३ ॥ इते श्री क्रस्न ध्याना अस्टक संपूरनं सुभ मस्तु श्री ।

Subject—श्रीकृष्ण और राधा के सुंदर स्वरूप का ध्यान ललित पदों में वर्णन किया गया है । शृंगार में नखशिख भी वर्णन किया गया है । तथा राधा कृष्ण के विहार का भी वर्णन किया गया है ।

No. 349 (a). Vṛitta Taraṅgiṇī by Rāma Sahāyadāsa of Bhavānīpura (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—2 × 4 inches. Lines per page—48. Extent—2,250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1873 or A. D. 1816. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—

Paṇḍita Nawala Bihārī Miśra, Braja Rāja Pustakālaya, Village Gandhauli, Post Office Sidhauli, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ ॥ वृत तरंगिनो लिषते । मनहरन ॥ सिंदुर वदन एक रदन सदन बुद्धि सुंदर भुसुंड मध्य सिंदुर प्रभा लसै ॥ सुंडा दंड उन्नत के कुंडलो के परसत प्रनवस रुप लषि बिधुन महा नसे ॥ जातनु के ध्यान कीने छूटै जमजातन ते भाल बालचंद दोष पाप ताप त्रै त्रसे ॥ सिव जगदंब बारो उदर प्रलंब वारो तेरे हिय धाम राम ससिद्धि सदा वसै ॥ अपरंच ॥ कनक कमल मध्य कनक अमल लसै तीनि चष चंचलासो सुपमा प्रकासिनो । संष चक्र वर घर अभय करनि बीच चंदकला कलित ललित छवि रासिनी ॥ राम भुज आभरन अंगद उर हिहार कुंडल श्रवन पग पायल बिलासिनो ॥ अस्तुति सुरेन्द्र आदि करहि मयंक मुषो दुहुवां मृगेंद्र सुषो ध्यावौ बिंध्यवासिनी ॥ दोहा ॥ सिद्धि करहि सो देव वर नित निज जन मन काम । असन अंग सिर गंग अरु चंदकला छबिधाम ॥ सोरठा ॥ श्री गुरु ब्रह्म सरुप चितामन चिता हरन । तिनके चरन अनूप नमो जोरि निज कर जुगल कविता को रचनानि को नेकु न जानौ भेद । श्री गुरुपद अरविंद को केवल मोहि उमेद । दायक नित्यानंद के श्री चितामनि चित सो मोपै अनुकूल अति याते रच्यो कवित्त ॥ सोरठा ॥ श्री चितामनि पाय चितामनि पायहिं जौल्यों । चितत चिता जाय जिहि सो नित मोचित वसै । संध्या सुधि सिधि बिधु वरष १८ ३ गौरी तिथि सुदिउ जो सुराचार्य वासर सुपद अरु धरमँ मत सुजे ॥

End—कायस्थ रामसहाय सुत भवानोदास के नाती हुकुमचंद के वासी भवानीपुर कासो विषै वृत तरंगिनी की रचना करो सोरठा ॥ वृत तरंगिनो पूरचहु हरिता दुति गति सरल कामद परसु अहुर कालिंदो लौं को कहै ॥ दो० ॥ जब लगि रवि ससि सेस विधि सिव रमेस अमरेस तब लगि वृत तरंगिनो उमगत रहै गनेस ॥ बानो सरवानी रमा विधि हर हरि मन राय अरु गुरु कृपा कटाक्ष सों निति वृत्त धुनि उमगाय ॥ कोस छंद रस आभरन नारकादि साहित्य । या मैं दोजो सोधि कवि करि मोपै हित नित्य ॥ सोरठा ॥ रामसहाय बनाय जस हित वृत तरंगिनिहिं हृदय परम सुष पाय अरपन किय विश्वेश्वरहिं ॥ सवैया ॥ राम सहाय करै उनको नति जो गुन को तजि दोष निहारिहैं ॥ जो सपनेहु जिन्हैं नहि ज्ञान अयान बने बरनानि बिगारि हैं । पावहिं गे सुष सोई विसेषि भलि बिधि जो इहि विचारिहैं । है इतनो परतोति बनो अवनो कविता कवि साधु सुधारिहैं । सोरठा । दोष रहित कविता न जो ये निता को है कता । याते कबि विद्वान मो उपहास न कोजियो ॥ दो० ॥ सुमति रसिक कवि काव्य निधि संवर बौर सुगांक । भामिलि वामे वामगति जानेहु संख्या आंक ॥

इति श्री भवानी दासात्मज रामसहाय दास कायस्थ प्रणीता वृत तरंगिनी समाप्तम् श्री संवत १९०० श्रावण कृष्णपक्षे द्वितियां गुरुवासरे लिषतं होरीलाल पाठक पमस्तिकुंड पर।

Subject—कविता के लक्षण और छंद निरूपण।

No. 349(*b*). Vṛitta Taraṅgiṇī by Rāma Sahāya. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size—10 × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,075 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṁvat 1873 or A. D. 1816. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānandajī Miśra, Village Hiṅganā Gourā, Post Office Kadīpur, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ वृत तरंगिनी लिख्यते ॥ मनहरण ॥ सिंधुर बदन इक रदन सदन बुद्धि सुंदर भुसुंड मध्य सिन्दुर प्रभा लसैं सुंडा दंड उन्नत के कुंडली के परसत प्रनव सरुप लखि चित्र महा नसै ॥ जातन के ध्यान कीन्हे झूठे भ्रम जातन ते भाल बालचन्द देषि पाप ताप त्रय त्रसै ॥ शिव जगदंब बारो उदर प्रलम्ब वारो मेरे हिय धाम राम सखिचि सदा बसै ॥ १ ॥ × × × × × × ×

कविता की रचनानि को नेकु न जानो भेद। श्री गुरु पद अरविंद को केवल मोहि उमेद। दायक निव्यानंद के श्री चिंतामनि चित्त। सो मोपै अनुकूल अति याते रचौं कवित्त ॥ सोरठा ॥ श्री चिन्तामनि पाय चिंतामनि पावहि जिते, चितत चिंता जाय। जिहि सो नित मो चित बसै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ संध्या मुधि सिधि विधु बरष (१८७३) गौरी तिथि सुदि पूज ॥ सुराचार्ज बासर सुषद यह षट गत सूझे ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ मन गौरी सिव ध्याय पद गुरु के पद पदुम परि ॥ ता दिन राम सहाय वृत्त तरंगिनी रची ॥ तामें बरन तरंग इक मत इक लक छंद को। एक बरन वृत धंम इक तुक भेद विचार है ॥ १० ॥ रोला ॥ लघु गुरु नव प्रस्तार बहुरि सूचीहि बषानो ॥ तब पताल मिरि केतु नष्ट उद्दिष्टहि मानो। पुनि मकरी कल बरन छन्द पुनि राज सु भाषे ॥ बहुरि मनो तुक भेद सेस पद भान न राखे ॥ ११ ॥

End—कलस को लक्षण ॥ सुगंध कुसुम द्वियत्रहु द्विज बर वियन नन नन नन प्रिय षहिय कलस किय ॥ ५३१ ॥ I.I. II. II II. IIII. III. III. III. III. III. II. यथा। उत्र कुत्र ललित कनक सरसिज जित सुबसन वलित कलित अमरन वर।

चितवनि कुटिल चयन सुनयन लखि सखि जदुवर हिय लगत मयन सर ॥ अध-रनि विहसति चलि रस वरसति मन मनहर मति दरपन दरसति ॥ लखि छवि सकुचति छन दुति अरु रति अजिर अमति लहि कलम सरस गति ॥ ५३२ ॥ दो० ॥ काम तथा मनहरन अरु रूप घनाक्षरि संत ॥ अनत वरन मुक्तक इन्हैं दंडक मैं मति वंत ॥ ५३३ ॥ इति दंडक ॥ अथ समद्धि वृत्त तत्रादौ उदक छंद को लक्षन ॥ विप मन नल दस नानो ॥ जन्यौ सम उदक जानो ॥ ५३५ ॥. ॥. ॥. ।.।ऽ.।ऽ.॥. ॥ऽ. जथा ॥ पलन कलन तव ते हैं ॥ जये ललन जवते हैं ॥ तिय अजहुं न पिय आये ॥ पयोदुदक भरिलाये ॥ ५३५ ॥ वार्ता ॥ दक नीर उदक जल को नाम है द को दक मुइति मेदिनी ॥ × × × ×

Subject—प्रथम तरंग—(१) पृ० १—३२ तक—मंगलाचरण देव गुरु वंदना, पुस्तक रचना कालः पुस्तक विषय को संक्षिप्त सूची, प्रस्तारादि प्रत्ययों के लक्षण, लघु गुरु कथन। (२) पृ० ३३—५५ तक—विश्राम संज्ञा कथन, संख्या को संज्ञा, मात्रा प्रस्तार का लक्षण, षट् कलादि को संज्ञा, प्रति स्वरूप संज्ञा, वर्ण प्रस्तार लक्षण, गण भेद, शुभाशुभ गण, द्विगन का विचार, मात्रा तथा वर्ण सूची, छन्दोभंग, मात्रिक तथा वर्णिक पाताल तथा मेरु, खंड मेरु दोनों प्रकार, पताका दोनों प्रकार को। वर्ण मात्रिक नष्ट तथा मर्कटी। द्वितीय तरंग—(३) पृ० ५६—८२ तक—छंद का लक्षण, मात्रा को भेद को संख्या का प्रमाण—सम विषय, समद्धि लक्षण, अनेक छन्द लक्षण—मात्रिक वृत्त समाप्त ॥ (४) पृ० ८३—१७२ तक—वर्णिक वृत्तों के लक्षण।

No. 350. Ārati Jagajīvana by Rāma Sahāya. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—6 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—18 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1948 or A.D. 1791. Place of deposit—Iswarī Gaṅgādīna Murāwa, Village Udawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ आरतो लिख्यते ॥ आरतो प्रभु जगजीवन प्यारे। आदि साह जिन पंथ पसारे ॥ चारि वजीर को आरति गाई ॥ नाम ग्राम कहि भेद बताई ॥ दास गोसांई बालक माली। खेम दास हरि सकरो चेलो। सोमवंस प्रभु दूलन दासा। धरम धाम जग विदित प्रकासा। देवीदास प्रभु गौर कहाये ॥ तजि लछिमनगढ़ पुरवा आये ॥ अब चौदह गद्दोधर गाइन। चरनबंदि कर विनय सुनाइन ॥ आवरा तीर सरदहा ग्रामा। प्रभु प्रहलाद करे

निज धामा ॥ उदैराम हरिचंद पुरवासी । ऊमापुर प्रभु नेवल निवासी ॥ बहुरे लाम भवानो दासा । भटवा मेहनदास प्रकासा ॥ ग्राम हथौधा माधौ दासा ॥ वै द्विज गुरुचरन को पासा ॥ पुनि सिवदास मंत्र दिढ़ पाये । चलि पंजाब म बड़ी लाये ॥

End—साहब कायमदास पठाना । बसि रसूलपुर सब जग जाना ॥ प्रभु अनुप सत ग्रामहि पाए । इन्द्रजीत अस नाम कहाए ॥ तिन्ह चौदह बड़ोचर गाइन्ह ॥ भक्ति भजन सतसंग दिढ़ाइन ॥ रामसहाय जन्म फल पावा । मगन दरस रस आरति गावा ॥ इति श्री आरतो सम्पुर्णम् शुभ मस्तु संवत १९४८ विक्रमी ।

Subject—बाबा जगजीवनदास को आरती और उनके चेलों के नाम निवास स्थान सहित ।

No. 351. Nritya Rāghava milana by Rāma Sakhō. Substance—Country-made paper. Leaves—76. Size—6 × 4 inches. Lines per page—17. Extent—700 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1804 or A.D. 1747. Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Lālā Sūraja Prasāda, Village Tulasīpur, Post Office Millīpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सोतावल्लभो जयति । अथ नृत्य राघव मिलन प्रारम्भः ॥ दोहा ॥ करि उर ध्यान वसिष्ट गुर राम सखे मृदु शील । मनौ नृत्य राघव मिलन अद्भुत रंग रंगोल ॥ विविध केलियुत प्रेमपर रूप द्रव्य भंडार । विमल नृत्य राघव मिलन रसिकन को अधिकार ॥ श्रुति संवत अरु युक्ति करि और अगन उनमान सुनि जिय ईश अखंड तन तामे निज विज्ञान । चौपाई ॥ प्रथम कहौ यह तत्व विचारा । ताकरि होय इष्ट प्रण भारा ॥ तत्व असी श्रुति वाक्य प्रधाना । तत्व अध्यै अष्टो अखाना । कहत झूठ जे जिय परिनामा । तिनके संग न करि विश्रामा जिय बिन ईश नाम नहि लहिये तो अनीशवादी वै कहिये वै जगदप सेवा मानो उनको कहि न कदाचित मानौ ॥

End—ग्रंथ नृत्य राघव मिलन बिना सुने जिय अंध जिय ईश्वर निजरूप को जाने करा निबंध । पठन नित्य राघव मिलन करै कोउ नर नारि । पावत तहां सब नियम युत राम रटन तन धारि ॥ संवत अष्टादश चतुर शुक्र मधुर सबु तोज भन्यो नृत्य राघव मिलन दोहा इकशत तीस और २० पुनि चौपई हैस दश कयालीस इति श्री रामसखे विरचितं नृत्य राघव मिलन ग्रंथ रसिक

ऐश्वर्य वर्नो नाम अष्टादशमो प्रसंग छाप्पै छंद ॥ राघव संग एक सेज रमन नृप सखा युग भांत तहां देषत सुदृश्य बहुत रघुनाथ मिलन रति ॥ वन प्रमोद रसरास छके रस छंदन—सिर्देस। जिय ईश्वर निज रूप पाइ नित बदत द्वैत मत प्रभु ह्वै यहष्ट जल कूप मधि तिनके हित प्रगटे निकट। सब रसिक मुकुट हरितन प्रघट रामसखे रघुकुल प्रगट वि० १९.४९।

Subject—पृ० १—१८ तक-जीव और ईश्वर के अखंड स्वरूप का वर्णन। पृ० १९—२३—ब्रह्म राम एकत्व वर्णन। पृ० २४—२४ तक—ज्ञान वैराग्य भक्ति का वर्णन। पृ० २५—रसिक अनन्य रीति वर्णन। पृ० २६—२७—शरणागत धर्म का वर्णन। पृ० २८—३१—राम नाम की महिमा। पृ० ३२—३३ राम रूप गुण प्रताप धाम परत्व का वर्णन। पृ० ३४—३९ आश्चर्य लीला का वर्णन। ३९—४४ लोक अवध प्रमोद वन नित्य रास ध्यान का वर्णन। पृ० ४५—४७ राज माधुर्य ध्यान का वर्णन। पृ० ४८—राम आवर्ष ध्यान। पृ० ४९—अवध आवर्ष। पृ० ५०—६७ अवध जीव ईश्वर तथा विविध केलि का वर्णन। पृ० ६९—७० नव्र सखा रहस्य का वर्णन। पृ० ७१ रसिक गुरु जिज्ञासु शिष्य मिलन पृ० ७२—७४ रसिक लक्षण। पृ० ७५—८६ रसिक ऐश्वर्य वर्णन व लेखक का नाम संवत् आदि वर्णन।

No. 352(*a*). Bhūshaṇa Kaumudī by Raṇadhīra Siṁha of Siṅgarā Maū. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—12 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—1,320 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Siṁha, Tāluqedār, Village Ḍikauliyā, Post Office Biswā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भूषण कौमुदी लिष्यते ॥ दोहा ॥ विघन हरन गनपति वरन भरन सुमंगल आनि जैसे गजमुष को भजे सकल मनोरथ दानि ॥ कवित्त ॥ कृष्ण जु ॥ अति अरुनारे छबि भारे भाल चंद नित मधि है जवारे तारे अविप सुधारे हैं ॥ बहुत पनारे मदवारे गंड धानन ते गंध मतवारे भुंग गुंजत किनारे हैं ॥ करन इसारे मतवारे फल देन वारे वेद भुज धारे लंबोदर सुढ़ारे हैं ॥ अम्ब प्रियकारे हगतारे भव रनधोर एक रदवारे भारे विघन विदारे हैं ॥ अथा ॥ मंजुल सुरंगवर सोभित अचित रेष फल मकरंद जन मोदित करन है। अमित विराग ग्यान केसर अम्यक देस विरद असेस जस यो सु प्रसरन है ॥ सेवित

नृदेव मुनि मधुप समाधि हो कै रनधोर ध्यात द्रत ईकिर भरन है ॥ ईस हृदि मानस प्रकासत सदाई लसै अमल सरोज वर स्यामा के चरन है ॥ दो० ॥ जन प्रन प्रतिपालो विसद भव धालो अवगाह ऐसो कालो को सुजस घालो वरनै काह ॥

End—सब्द अलंकृत बहुत है अक्षर के संजोग अनुप्रास षट विधि कहे जो है भाषा जोग ॥ टीका ॥ अक्षर के संयोग करिकै शब्दालंकार बहुत है परंतु जो भाषा के जोग है षट विधि के अनुप्रास कोई कह्यो है ॥ मूल ॥ याही नरके हेत यह कोन्हो ग्रंथ नवीन। जो पंडित भाषा निपुन है अरु कविता विषे प्रवीन ॥ टीका ॥ जो पंडित भाषा में निपुन है अरु कविता विषे प्रवीन है ताही नर के हेत यह नवीन ग्रंथ जो है भाषा भाषाभूषन सो कीन्यो है ॥ मूल ॥ लक्षन तिय अरु पुरुष के हाव भाव रसधाम अलंकार संजोग ते भाषाभूषण नाम ॥ टीका ॥ तिय अरु पुरुष के लक्षन हाव भाव जो है रस को धाम कहे गृह अरु अलंकार इनके संजोग करिकै भाषा भूषण नाम धरयो है ॥ मूल ॥ भाषा भूषन ग्रंथ को जो देषै मनलाइ। विविधि साहित्य रस को अर्थ ताहि सकल दरसाय ॥ टीका ॥ भाषा भूषण जो है यह ग्रंथ ताको मनलाय कै जो देषैगा ताको विधि साहित्य रस को अर्थ सकल दरसाय कहे देषि परि है ॥ इति श्रीमन महाराज श्री सिरमौर बंसावतंस श्रीमन नृपति रनधोर सिंह विरचिते भूषण कौमुदी शब्दालंकार बरननम् षष्टमो प्रकाशः समाप्तः लिषतं गनेस सिंह जनवार मुकाम महिमापुर संवत ॥ १९३१ ॥

Subject–राजा यशवंत के भाषा भूषण नामक अलङ्कार काव्य की टीका।

No. 352(*b*). Kāvya Ratnākara by Raṇadhīra Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—9¾ × 7 inches. Lines per page—22. Extent—2,575 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Siṁha, Village and Post Office Kānthā, District Unāo.

Beginning—जो कहियै को चारिहो रस मूल ना एक कह्यो पांच क्यों नहीं कह्यो सो वीर, रौद्र, श्रृंगार, सान्त ये चारि सरीर को प्रकृति कहे स्वभाव है याते सरीर ते नित्य संबंध है वै पांचो विषे संजोग करि स्फुरित होतो है। ताते चारिहो रस मुख्य करि बन्यो ॥ दोहा–कह्यो सात विधि प्रकृति ए और त्रितो ठहराय। प्रकृति विपर्यय दोष सों और और में न्याय ॥ ज्यों बरनत पितु मातु को नहिं सिंगार रस लोग। त्यो सुरतादिक दिव्य मैं बरनन लगै अजोग ॥ देहि

विधि ग्रौरौ आनवौ ग्रनुचित वरनन रीति। प्रकृति विपर्यय जानिये है रसदोष विगोत ॥ (इति रसदोष कथन)। ग्रथ दोषोद्धार वर्णनम्—

कहुँ सब्दालंकार कहुँ छंद कहूं तुक हेतु।

कहूं प्रकर्ष वस दोष हु गनै ग्रदोष सचेत॥

End—ग्रथ दोषोद्धार वर्णनम ॥

दोहा—कहुं शब्दालंकार कहुं छंद कहूं तुक हेत।
कहूं प्रकर्ष वस दोष हू गनै ग्रदोष सचेत ॥
यहूं ग्रदोषै होत कहुं दोष होत गुन खानि।
उदाहरन कछु कछु कहौं सरल रीति उर ग्रानि ॥
यथा ॥ हरि श्रुति को कुंडल मुकुत हार हिय को स्वच्छ।
नैननि देखो स्यो रहो हिय मो छाइ प्रत्यक्ष ॥

टीका—स्वच्छ शब्द श्रुति कटु हैं प्रत्यक्ष शब्द भाषा हीन हैं। मुकुतहार ग्रर्थांतर पदापेक्षो के ठौर हैं ॥ सो वाक्य दोष है ॥ ग्रो श्रुति को कुंडल हिय को हार ग्रांखिन को देखिवो ग्रर्थ दोष मैं ग्रपुष्टार्थ है ॥ कुंडलहार देखिवो पतनोद्दो कहिवो ग्राथार्थ को हो जातो है ॥ जद्यपि तुक वसते श्रुति कटु भाषा हीन ग्रौर छंद वसतें ग्रर्थांतर पदापेक्षो ग्रौ छेकोक्ति वसते ग्रपुष्टार्थ ग्रदोष है ॥ पुनः यथा—कवित्त ॥ सिंह कटि मेखला सो कुंभ कुच मिथुन त्यौं मुखवास ग्रलि गुंजै मो है धनुलोक है ॥ वृषभानु कन्या मोन नैनो सुवरन ग्रंगी उर करक कटाक्षन सो चाहिय ॥.......

Subject—पृ० ३—१० तक—प्रयोजन कवित्त, सामग्री रस रहस्य वर्णन। व्यंग प्रधान उत्तम काव्य, मध्यम व्यंग, शब्दचित्र काव्य वर्णन, प्रस्तुत प्रशंसा वर्णन। शब्द ग्रर्थ भेद कथन, वाचक लक्षण, काव्य प्रकाश का उल्लेख। रुढ़ि लक्षता का लक्षण, शुद्धा का भेद वर्णन, लक्ष-लक्षण कथन, शुद्ध सारोपा वर्णन, गौणी सारोपा कथन, गौणी साध्यवसाना वर्णन, व्यंजक कथन। पृ० ११—१४ तक—ग्रभिधा मूलक व्यंग। लक्षणा व गूढ़ व्यंग वर्णन, ग्रर्थ व्यञ्जक (काव्य निर्णय से) व्यक्ति विशेष वर्णन। प्रस्ताव, मिश्रित विशेषण, ग्रभिधा—लक्षण—व्यंजना वर्णन। पृ० १५—२४ तक—ग्रथ ध्वनि लक्षण, क्रम लक्षण, ग्रनुमान वर्णन। सात्विक भाव कथन, संचारी भाव वर्णन, नव रस वर्णन, श्रृंगार कथन, संयोग ग्रौर वियोग श्रृंगार वर्णन, सामान्य श्रृंगार कथन, संयोग में वियोग वर्णन, मिश्रित श्रृंगार वर्णन, हास्य, रौद्र, करुणा, भयानक, वीर भेद, वीभत्स, ग्रद्भुत शांत रस वर्णन।

पृ० २५—३२ तक—नायिका भेद वर्णन। अवस्था भेद-मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा वर्णन। ज्ञात यौवना, अज्ञात यौवना, विश्रब्ध नवोढ़ा, मध्या, प्रगल्भा वर्णन। धीरादि भेद वर्णन। मध्या धीरा, अधीरा वर्णन। प्रौढ़ाधीरा, अधीरा, धीरा-अधीरा वर्णन। ज्येष्ठा-कनिष्ठा वर्णन। दृष्टि चेष्टा परकीया वर्णन। साध्या, वृद्ध बालवधू, ग्राम्यवधू, दुःसाध्या वर्णन, भूत-भविष्य-वर्तमान गुप्ता वाकविदग्धा, कुलटा मुदिता, लक्षिता वर्णन। पृ० ४१—५० तक—सुरति लक्षिता, अनुसयना, तीन भेद वर्णन, कामवती, अनुरागिनी, प्रेम आसक्ता अन्य संभोग दुःखिता, रूप गर्विता, प्रेम गर्विता, मानवती परनारका भेद, स्वाधीन पतिका वर्णन। खंडिता-धीरा भेद कथन, खंडिता, विप्रलब्धा, वासक सज्जा वर्णन। परकीया वासकसज्जा, उत्कंठिता, कलहंतरिता, अभिसारिका, कृष्णा अभिसारिका, शुक्लाभिसारिका, दिवाभिसारिका, प्रोषितपतिका, अपर नायिका वर्णन। आगतपतिका-परकीया आगच्छत पतिका, समकरि वर्णन। उत्तमा; मध्यमा, अधमा वर्णन, गणिका कथन। पृ० ३३-४० नायक-पति, उपपति, वैशिक वर्णन। अनुकूल दक्षिण, सठ, धृष्ट वर्णन, मानी, वाक चतुर, किया चतुर, उत्तम, मध्यम, अधम वर्णन (नायक वर्णन) त्रिगुण, माधुर्य, ओज, प्रसाद वर्णन। उपमासभेद, लुप्ता वर्णन। अनन्वय, उपमेयोउपमान, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, सभेद वर्णन। तुल्ययोग्यता, निदर्शना, उत्प्रेक्षा।

पृ० ५१—५८ तक उत्प्रेक्षा भेद, अपन्हुति सभेद, स्मरण, भ्रमा, अन्योन्या, संदेह, व्यतिरेक, तद्रूप, अधिकोक्ति, समाक्ति तद्रूपक, अभेद रूपक, रूपक सामाक्ति, उल्लेख। पृ० ५९—६५ तक-अतिशयोक्ति, भेदक, संबंध, योगायोग। जयलता वर्णन। उपमा, वस्तुक्ति, सापन्हुति, रूपक वर्णन। बाधक, अन्य, अप्रस्तुत प्रशंस, प्रस्तुतांकुर, समासोक्ति, निन्दाव्याज स्तुति, स्तुति व्याज, आक्षप, निषेध पर्य्यायोक्ति, पर्य्यायोक्ति, अन्योक्ति वर्णन। विरोध—विरोधाभास, विभावना, व्याघात, असंगत, विषम वर्णन। पृ० ६६—७२ तक उल्लास, अनुज्ञा, विचित्र, तद्गुण, अतद्गुण अनुगुण, मीलित, सामान्य, मालित, उन्मीलित, साम, समाधि, भाविका, प्रहर्षण, विषाद, संभव, समुच्चय, अन्योन्य, विकल्प, सहोक्ति, विनोक्ति।

पृ० ७३—८६ तक—विनशोभित, प्रतिषेध, विधि, काव्यार्थापत्ति, विदित, युक्ता, गूढ़ोत्तरा, गूढ़ोक्ति, मिथ्याध्यवसित, ललित, विवृतोक्ति, स्वभावोक्ति, हेतु व्याजोक्ति, परिकर, परिकरांकुर, प्रमाण अनुमान, उपमान, आत्मतुष्टि, अर्थापत्ति पद्धति दर्पण वर्णन। लोकोक्ति छेकोक्ति, प्रश्नोत्तर, यथा संख्या एकावली, कारण माला, उत्तरोत्तर, रसनोपमा, रत्नावली, दीपक वर्णन।

पृ० ८७—९८ तक—धावृत्ति देहरो दासक, शंकरालंकार, संग्रह, श्लेष अनुप्रास वर्णन। लाटानुप्रास, यमक, वोप्सा, चित्रालंकार वर्णन। निरोष्ठ, मात्रा रहित, अद्भुत, वर्णचित्र, अन्तर्लापिका, बहिर्लापिका, नागपास, शृंखला, मल्लबंध। पृ० ९९—१३४ तक—गजबन्ध, चमरबंध, चौरिबन्ध, हारबंध, डमरुबन्ध, सर्वतो मुख वर्णन। दोष वर्णन। श्रुति कटु, संस्कारहत, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहतार्थ, अवाचक, अश्लील, अमंगल, घृणा, ग्राम्य, अप्रतीत, नेयार्थ, क्लिष्ट अवमृष्ट, शब्ददोष दुतिकृत, विसंधि, न्यूनपद, अधिक, कथित शब्द, पतन प्रकर्षण, समाप्त पुनरात्त, असंभव, अस्थान स्रज, संकीर्ण, रसविरोध, भाव परक्रम, अपुष्टार्थ, कष्टार्थ, वाक्यदोष, दुक्रम, ग्राम्यार्थ, संदिग्ध, निरहंत, अनविकृत, अनेव, विशेष, साम्य प्रवृत्ति, साकांक्षा, अपक्ष, विद्या-विरुद्ध प्रकाशित, विरुद्ध, सहचर भिन्न, अश्लील, व्यभिचारी, भाव व थायी भाव को सहाय्यता, वर्णन। रसदोष, प्रकृति विपर्यय वर्णन।

अपूर्ण।

No. 352(*c*). Piṅgala Nāmārṇava by Raṇadhīra Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—864 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1824 or A.D. 1767. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Viśwanātha Pustakālaya of Ṭhākura Maheśwara Siṁha, Village Ḍikauliyā, Post Office Biswā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ पिंगल नामार्णव लिष्यते॥ छप्पै छंद॥ समुष एक रद कपिल चारु गज कर्ण प्रकाशित। लम्बोदर अरु विकट विघ्ननासन सुविकासित॥ लसित विनायक धूम केतु तिमि गणाध्यक्ष गति॥ भालचंद्र गजबदन द्विरस इमि नाम सुमद मति॥ कृत प्रथम अस्मरन श्रवन जो पारंभ विचारने॥ जु विवाद प्रवेशो निर्गमे संकट विघ्न ब्रक घने॥ कवित्त॥ स्यामाजु तिहारे पद पंकज प्रभाव मुनि मत्यनि को काम दस दोइ वेद गायो है॥ ताहो ते ढिठाई करि विनय सुनाऊं मात भाषा नाम अर्णव सु चाहत बनायो है॥ जानि निज सेवक निवाहै जु अविघ्न ग्रंथ दीनबंधु जानि निज दीनता सुनायो है। तेरा जस मंडित अपंड भव मंडल में ब्रह्म विष्णु ईस अंते तेरा जस गायो है॥

End—अनुषनाम पद्दरी छंद॥ धनुकामै करि संतापरेषि उपावास चाय भाषति विसेषि॥ कोदंड जबे लेती पकुद्ध पल अस्त मान त्यागे विरुद्ध॥ जुगल

नाम मालिनी छंद ॥ नगन नगन करनो नोय गानोय नातो। विरति रचिय घाटै घोर घातै वरानो ॥ सुमन गुनन लैके ह्वै रहो डालिनी है। सरस सुरस हेलो पालिनो मालिनो है ॥ जथा ॥ मिथुन जमल जुग मै द्वंद को साध्य रोतै। जुग जम विव धारै द्वै उभे चारु गोतै ॥ जुगुल चरन स्यामा श्यम तो विस्नु ईसै ॥ विधि पतितल से है ज्यों त्रिवेनी सुदोसै। पुष्प रस नाम हरि लोला छंद ॥ सारंग ज्यो मधु गवै रस चाय मासै त्यो पुष्प सार बनि पुष्प रसै प्रकासै। स्यामा पदाज मकरंद सुवंद देवै। ध्यानस्थ चित अलि ज्यों रलिनित्त सेवै ॥ मालानाम ॥ रूपमाला छंद ॥ राजी तो स्नु क गुनवती इमि कोस रति प्रकास। दाम स्रज तिमि घोमतान पिपेषि करत प्रकास ॥ त्यागि जग आसार सार प्रकार माला ध्याइ। चिदानंद निरोह निल्या रूप माला ठाइ ॥ इति श्री श्री मन्महाराजा श्री सिरमौर वंसवतंस श्री मन रनधीर सिंह विरचिते नामार्णव समाप्तं सुभमस्तु संवत १९२१ लिषतं जवाहिर लाल पंडित पैदापुरो स्थाने चेत्र शुक्ले चतुर्थ्यां ॥

Subject—अनेक छंदों के नाम तथा उन्हीं नाम के छंदों में सब ४५० नामों का वर्णन।

No. 353. Sapta Vyasana by Raṅgalāla. Substance—County-made paper. Leaves—277. Size—11 × 6½ inches. Lines per page—12. Extent—4,075 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1937 or A.D. 1880. Place of deposit—Jaina Mandira, Daryābāda, District Bāra Bankī.

Beginning—श्रों नमोसिद्धेभ्यः ॥ अथ भद्रबाहु चरित्र तथा सप्त विसन भाषा लिष्यते ॥ सवैया—श्री जिनदेव सिद्दारथ नंदन के जुगपाद सरोज निहारे। पोत भवोदधि के सुथरे जगजीव अनेकन पार उतारे ॥ अंतम तीरथ के करता मद मान महान विदारन वारे ॥ सो प्रभु सन्मति दायक (लायक ?) दूरि करो दुख दोष हमारे ॥ १ ॥ राजत नाभि नरेश्वर के घर में रंजनी कर श्रीकर नीके। निर्तत नष्ट निहार तिलोतम जानि विषै सुख लागत फोके ॥ फोरि मिथ्यात कुलाचल निश्चल नाथ भयो त्रैलोक महो के। आय तरे अरु औरन तारत पाद सरोज नमों जिनहो के ॥ २ ॥ श्री विजयादिक पूरब मे गज चिन्ह धरे प्रगटे तिमिरारी। जिन मिथ्यात महातक कैासिक छिप्त भयो निज पैारुष हारी। देखि पर्‍यो शिव मारग सुंदर होत भये भवि जीव सुघारी। भूं पत हौं भव-सिंधु परो अब बांह गहो अजितेस हमारी ॥ ३ ॥ ....

नंदन जाय अनंदित कै पुनि नंदन श्रोर जन्यो न सुनंदा ॥ कोटि कलंकन सात लखे छवि सों प्रभु सीतल नाथ जिनंदा। तोरि महा भव पिंजर मो अब

मेटि गरीब नेवाज कुफंदा ॥ जा सम चन्द दिवाकर को दुति होति न पूरन आनंद कंदा ॥ १० ॥ तिनि सुग्यान लहे जगमे सिर आंस जिनेश्वर आनंद धारी । जंगम थावर जोव सबै जगमें तिनके प्रभु रक्षक भारी । तीरथनाथ कहे सगरे जहं पाद परे तहं तीरथ जारी । हे करुनानिधि आनंद की विधि हे भगवंत नमो दुख हारो ॥ ११ ॥

End—अडिल्ल छन्द ॥ यह वृतांत सुनि सकल त्रिया दस मुख तनो । भई विकल ता रूप मोह मद को सनो । ठगमंगाय गिरि परत चलन इत आइके । रावन मृतक सरीर देषि दुष दायके ॥ आवत नारी दस मुख ऊपर गिरि परी । हा हा करत पुकार नयन जलसौं भरी ॥ कै एक नारी मुरछा आय पछार सौं । गिरी धरनि मे जाय भई विलल सौं ॥ ११ ॥ कै एक नारी पति को गोद उठाय के । मुख चूंब करि बोलो बैन उचारि के ॥ अहो नाथ क्या पौढ़े रन मैं घाय के । सूनी सेज हमारी गे छुटकाय के ॥ १३ ॥ कै एक नारी पति के पाय पलोटतो । कंकन माल उतारि बदन कौ कुटतो ॥ कै एक नारी कूर सिरन को धाइया । तिन्ह सखी जन पकरि गोद बैठाव के ॥ × × ×

× × × × × ×

इन्द्रजीत की वारे सिया पति देषियें । मधु मधुर बच भाषत करुना पेषियो ॥ अहो दसानन—पुत्र राज्य करिये मिया ॥ हमे सिय। सो काम जाय बन वासिया ॥ १७ ॥ × × × × × ×

इति सप्त व्यसन शास्त्र सम्पूर्ण ॥ भादौं बदी ११ संवत १९३७ शाके

Subject—(१) पृ० १—११ तक—मंगलाचरणादि । चतुर्थ विंशति तीर्थंकर स्तुति, महाराज स्तुति, उपध्याय स्तुति । जैन वचन स्तुति, गुरु महाराज स्तुति ।

(२) पृ० १२—२१ तक—दश लक्षण रूप मुनि धर्म वर्णन । प्रथम क्षमा धर्म वर्णन, उत्तम क्षमा वर्णन, उत्तम मार्दव धर्म कथन, उत्तम आर्जव धर्म कथन, उत्तम शौच धर्म, उत्तम सत्यधर्म, नाम सत्य कथन, रूप सत्य कथन, स्थापन रूप सत्य, प्रतीत सत्य, संवत सत्य, संयोजना सत्य, जिन पद सत्य, भाव सत्य, समय सत्य, उत्तम सत्य, उत्तम संयम धर्म कथन, ईर्या सुमति, भाषा सुमति, एषना सुमति ।

(३) पृ० २२— ३० तक—छियालीस दोष वर्णन । षोडष उद्गम दोष दाता के आधीन, षोडष दोष पात्र के दोष वर्णन, बत्तीस अंतराय वर्णन, चौदह मलों का वर्णन, अदान निक्षेपन समिति प्रतिष्ठापन समिति, पंच सुमतिपूर्ण भाव शुद्धि, काय शुद्धि, ईर्या पथ शुद्ध कथन, भिक्षा शुद्धि, भिक्षा के पांच भेद, गोचरी भेद,

पक्ष भूक्षन भेद, उदराग्नि रूमन भेद, समाहार भेद, गति पूर्ण भेद, प्रतिष्ठापन शुद्धि, सेन शुद्धि कथन, वाक्य शुद्धि, उत्तम संयम धर्म कथन पूर्ण। (४) पृ० ३९—३५ तक—उत्तम तप धर्म कथन, ताप नाम, प्रथम अनशन तप भेद, अमोदर्श तप, व्रत परि संख्यान तप, रस परित्याग तप, विविक्त शैयोपासन, विविक्त शय्यासन तप, काय क्लेश तप। (५) पृ० ३६—५४ तक—प्रायश्चित तप, अकम्पित दोष, अनुमान दोष, दृष्ट दोष, बादर दोष, सूक्ष्म दोष, प्रक्षन दोष, शब्दाकुलित दोष, बहुजन दोष, तत्सवी दोष, विनय तप वर्णन, वैयावृत तप कथन, स्वाध्याय तप, व्युत्सर्ग तप, ध्यान तप, शुभाशुभ ध्यान वर्णन, धर्म स्वरूप वर्णन, आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विजय, संस्थान विचय, शुक्ल ध्यान, पृथक्त्ववितर्क विचार, एकत्व वितर्क, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपत्ति, उत्तम त्याग धर्म पूर्ण।

(६) पृ० ५५—५९—तक—उत्तम आकिंचन धर्म कथन, उत्तम ब्रह्मचर्य, यहाँ तक उत्तम दशलक्षणी रूपमुनि धर्म पूरा हुआ।

(७) पृ० ६०—८३ तक—एकादश प्रति मारुय। श्रावक धर्म कथन, पाक्षिक श्रावक धर्म, नैष्ठिक श्रावक धर्म, एकादश प्रतिमा नाम। सप्त व्यसन वर्णन, व्यसनों के नाम। प्रथम द्यूत व्यसन का वर्णन, उदाहरण स्वरूप कौरव पाण्डवों के उदाहरण को उपस्थित कर द्यूत-व्यसन संबंधी बुराइयों का वर्णन। (८) पृ० ८४—९३ तक—मांस व्यसन (२) का वर्णन। कौशाम्बी के भूप नाम राजा के पुत्र बकु के मांस भक्षी होने का वर्णन। उसके जैनी पिता का संताप कर दीक्षा लेना बकु का राजा होकर सूपकार द्वारा बारा मांस भक्षी होकर दुर्दशा को प्राप्त होना, अर्थात् बकु के पिता की आज्ञा कि हिंसा न हो—जिससे डर कर उसका रसोईदार एक बालक का मांस लाया और उसी को पका कर खाया, उसको जीभ को वह पसन्द आया। राज बालकों को चुरा कर खाने लगा। प्रजा को यह ज्ञात हुआ और उस नगर को ही छोड़ दिया पुनः—राजा का श्मशान में भ्रमण और वहाँ वसुदेव का प्राप्त होना और उनका पाटकि भू देना और बकु का नरक में पड़ कर दुःख भोगना। इस उदाहरण को उपस्थित कर मांस भक्षण करने से क्या क्या बुराइयां होती हैं यह निष्कर्ष निकालना।

(९) पृ० ९४—१०७ तक—तीसरे व्यसन मद्य का वर्णन। श्री जिनेन्द्र मुनि का उर्जयंत गिरि पर पहुंचना और वहां उनके दर्शनों के हितार्थ यादवों सहित बलभद्र का पहुंचना, प्रश्नोत्तर द्वारा मदिरापान द्वारा यादव तथा द्वारावती नगरी के विनाश के समाचार श्रवण कर, अपने राज्य को लौटना और नगर में मद्यपान के निषेध का ढुंडेरा फेर कर सम्पूर्ण मद्यपात्रों को बाहर फिकवा देना, एक दिन वन क्रीड़ा के समय गये हुए यादवों का तृषाकुल होकर

उन पात्रों में भरे हुए बरसाती जल को पीकर उन्मत्त होकर पत्थरों को एकत्रित कर दीपायन नामक मुनि के पास रखना, उनके क्रोध से ज्वाला का निकल द्वारावती को भस्म करना, कृष्ण का जर्द कुंवर द्वारा विनाश वर्णन कर मद्यपान के दुर्गुणों का वर्णन किया है।

(१०) पृ० १०८—१२५ तक—चतुर्थ व्यसन, वेश्यागमन। चारुदत्त का चरित्र, उसका अपने मातुल की पुत्री से विवाह होना। काव्यादि ग्रंथों में विरत रहते हुए स्त्री का ध्यान न करना। उसकी सास का आकर पुत्री को देख कर और उसकी आंतरिक वेदना समझ कर दुःखित हो अपनी समधिन को यह व्यथा सुनाना। उसका अपने देवर से अपने पुत्र को कामकला में निपुण करने के लिये आदेश, उसका पुत्र को वसंतमाला की पुत्री वसंतसेना नाम्नी वेश्या के पास भेजना, उसका उसी में अनुरक्त होकर सम्पूर्ण धन धान्य उसी को दे देना, अंत में उस वेश्या की माता द्वारा तिरस्कार पाकर श्वसुर गृह को गमन कर वहां पहुंची हुई अपनी माता से मिलना, उसकी सहायता से अपने श्वसुर के साथ, देशाटन को जाना और वहां पर अनेक व्याधियों को भुगतना और अंत में अनेक विद्या और धन धान्य से सम्पन्न होकर अपनी नव-विवाहिता वधुओं सहित निज नगरी में आना, वहां व्रतधारिणी वसंतसेना को भी अपने घर में रखना, इस प्रकार वेश्यागमन से धन धान्यादि नष्ट होकर दुःख प्राप्तानुभव कथन। (११) पृ० १२६-१३२ तक—वेश्यागमन का दूसरा उदाहरण। उज्जैनी नगरी के सुदत्त सेठ के संयोग से वसंतसेना को गर्भ का रहना, उससे एक पुत्र और पुत्री का उत्पन्न होना, दोनों का बाहर विरुद्ध दिशाओं में त्यागा जाकर बनजारे तथा समुद्रदत्त द्वारा ले जाया जाना और इन भगनी तथा भ्राता का विवाह संबंध होना, किसी समय इसी वेश्या के पुत्र (धनदेव) का आकर उज्जैनी में अपनी माता वसंतसेना पर आसक्त होकर उसी के साथ से गर्भ रख पुत्र उत्पन्न करना, उसकी प्रथम पत्नी (कमला) के पूर्वभव समाचार जानने के पश्चात् उज्जयनी में आकर पालने में झूलते हुए बालक (वरुन) से अपने छे नाते निकालना, धनदेव संबंधी षट नातों का वर्णन। वेश्या सम्बन्धी घटनाओं का वर्णन। इस प्रकार अष्ट दस संबंध समन्वित वेश्या व्यसन का वर्णन कर उससे घृणा कराना।

(१२) पृ० १३३—१५० तक—पांचवां व्यसन चोरी वर्णन। शिव भूतनाम ब्राह्मण का जय सिंह नृपति के सिंहपुर नाम के नगर में अपने को सत्यवादी प्रसिद्धि करना, एक सेठ का उसके यहां चार लाल थाती रखना और प्रवास से लौटने पर उसे न देना। राजा इत्यादि का सेठ के प्रार्थना करने पर भी कुछ ध्यान न जाना, रानी द्वारा नीति से ब्राह्मण से उन रत्नों का निकलवा कर ब्राह्मण का दंडित होना और सेठ को अपने रत्नों का मिलना, ब्राह्मण का मर

कर सर्प हो राजा के कोष भंडार में वास करना और एक दिन राजा को डसना, माण्डों द्वारा सर्प का विनाश तथा नारकी हो कर भोग भोगना और तिर्यंक योनि पाना।

(१३) पृ० १५१—१६२ तक—अहेरी व्यसन वर्णन। उज्जैनी के राजा ब्रह्मदत्त का बड़ा भारी अहेरी होना, एक मुनि के तपोभूमि में आकर आखेट खेलने की इच्छा से आना और ४ दिन तक क्रमशः किसी प्रकार के शिकार का प्राप्त न होना, एक दिन मुनि का भोजन के निमित्त जाना। राजा का अपनी असफलता में मुनि को कारणभूत समझ कर उनके आसनवर्ती प्रस्तर खंड को तपा देना, मुनि का आकर और यह समाचार पाकर साहस पूर्वक उस पर बैठ कर नियमानुसार तप निरत होना। राजा का कुष्टी होकर मरना, और अनेक नरकों में पड़ कर यातनाएं सहन करना पुनः संसार में स्वानादि नीच प्रवृत्ति के पशुओं में जन्म लेकर, मर कर, एक धोबी के यहां पुत्री होना और सर्वांग रोग के कारण दुखी होकर बन जाना और वहां एक आर्यिका के समीप रह कर व्रत करना और सिंह द्वारा उसका खाया जाना पुनः सेठ की कन्या होना और सुदत्त सागरमती द्वारा अपने पूर्वभव का समाचार सुन कर दुखी होकर उनके बताये व्रत को धारण कर मर कर राजा के यहां जन्म पा, स्त्री शरीर से पुरुष शरीर में आ पुण्यकार्य कर स्वर्ग को जाना इस प्रकार इस व्यसन की दुर्व्यवस्था का दर्शन करा उससे बचने का आदेश।

(१४) पृ० १६३—२७७—तक स्त्री व्यसन। सातवें व्यसन स्त्रीगमन परस्त्री गमन का वर्णन। राम जनक सुतादि उत्पत्ति का वर्णन, राजा दशरथ द्वारा राजा जनक की राक्षसों से रक्षा करना, राम द्वारा इस कार्य में योग दिया जाना। राजा जनक को विजय पाने का वर्णन, और उसकी सीता को राम से विवाहने का कथन। इस पर एक राजा की आपत्ति जो सीता का भाई था। राजा जनक की धनुषभंग प्रतिज्ञा। राम की विजय, सीता का विवाह, राम का लक्ष्मण सीता सहित बन गमन, बन संबंधी सुख दुःखों का सविस्तर वर्णन। लक्ष्मण के कई विवाहों का वर्णन। रावण द्वारा सीता का हरण किया जाना। राम का सुग्रीव, हनुमानादि की सहायता से विजय प्राप्त करना, रावण का वध, सीता को लेकर राम का प्रसन्न होना, रावण का तीसरे नरक में पहुंचने का वर्णन। शील की महिमा, ग्रंथ सम्पूर्णः।

इति श्री सप्त व्यसन शास्त्र संपूर्ण। भादोवदी ११ संवत १९३७ शाके।

No. 354(*a*). Vrata Mushṭī by Raṅganātha. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—15 × 5 inches.

Lines per page—16. Extent—105 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhya Prasāda Miśra, Village Kaṭhailaḍi, District Bahrāich.

Beginning—श्री मतेरामानुजायः नमः ॥ चौपाई ॥ प्रथम युगुल मूरति उर धारौं मुनि मत भाषित व्रतहिं विचारौं ॥ अमावस्य परिवा नहि लीजे । अमावस्य षट दंड कहीजे ॥ साठि दंड तिथि के व्रत होई । एकादसिय रहित सुभ सोई ॥ सुकुल पाष उदया परिमाना संत समाज सकल सुभ ठाना ॥ इति परिवा निर्णय ॥ परवेधो सुभ दुइज बषानै स्रावन स्याम पुर्व सुभ जानै ॥ इति द्वितीया निर्णय ॥ दोहा । रंभा जेठ उजेरको पूर्वजता सुभ होइ चैार तीजि सब जानिये पर युत सुपदा सोइ ॥ इति त्रितीया निर्णय ॥ चौथि सकल परवेधो पासो श्रावण भाद्र स्याम विधु भासो ॥ भाद्र उजेर दुपहरे मानै विधु दर्शन प्रति वेद बषानै ॥ माघ अंधेर विधु उदय लेपो सुकुल चौथि सांझि की पेषो ॥ इति चतुर्थी निर्णय ॥ चौथि समेत पंचमी लेहु श्रावन सुदि परवेध कहेहु भादौं सुदि दुपहर को जानै मुनि पूजा महं वेद बषानै । इति पंचमी निर्णय ।

End—दान विधान संक्रमी होई । षोडस दंड पूर्व पर सोई ॥ आधी राति पूर्व जौ लागै पुन्य दिवस पूरव पर भागै ॥ आधी राति परे जो होई । पर दिन पुन्य कहै सब कोई ॥ आधी राति बीच संक्रमणो पुन्य दिवस दुनौ तब रमणो ॥ राति भरे यह संक्रम लागै कर्क पुन्य पुरब दिन जागै ॥ राति भरे मह मकरौ लागै पर दिन पुन्य वेद मत पागै ॥ संध्या तीनि दंड परमाना होइ रात्रि दिनहो कर ठाना ॥ संध्या माह संक्रमी होई तेहि समीप दिनही में सोई ॥ सिंह कुंभ वृष वृश्चिक कर्क । आदि दंड षोडस यति फर्क ॥ बीच माह अमेषा गावा । शेष गासि पर पुन्य बतावा ॥ इति संक्रांति निर्णय ॥ कोइ मुनि एकह बार व्रत धारै ॥ दिन अलोन भोजन इकवारै । इति एकै वार निर्णय ॥ दोहा ॥ व्रत मुष्टी शुभ ग्रंथ है रंगनाथ को जानि । मुठो में व्रत करत है जो करि है पहचान ॥ जो निरक्षय करि ग्रंथ यह पढ़ै सुनै नर कोउ । मनवांछित फल देहि तेहि सिय रघुनंदन दोउ ॥ इति श्रीमद् गर्ग वंसावतंस कवि कुलालंकार चुड़ामनि श्री रघुवर तनुज रंगनाथ रचिता व्रत मुष्टी समाप्ता । लिः रघुवरदास वैष्णव मिरजापुर हरि मंदिरे पौष कृष्ण ७ संवत १९०२ ॥

Subject—प्रतिपदा से अमावास्या, पुर्णिमा, ग्रहण, संक्रांति मकर वारुणी आदि व्रतों के फलों का वर्णन ॥

No. 354(*b*). **Vrata Mushṭi** by **Paṇḍita Faṅga Nātha** of Akaraurā, Payagpur, District Bahrāich. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—105 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Paṇḍita Ayodhyā Prasāda Misra, Village Kaṭhailaḍī, Trilwaliā, District Bahrāich.

Note—Details as in No. 354 (*a*).

No. 355. Savaiyā by Rasakhāni. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—8¾ × 4¾ inches. Lines per page—16. Extent—280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1909 or A. D. 1852. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhawā (Bahrāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सवैया लिख्यते ॥ या लकुटी अरु कामरिया हित राज तिहू पुर को तजि डारौं । आठव सिद्ध नवो निधि को सुख नंद कि गाय चराइ बिसारौं ॥ रसखानि कबै इन नैनन तें ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ॥ कोटिन्ह ए कलधौति के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥ १ ॥

End—ब्रज को बनिता सब घेरो करैं तेरो टारचो बिगारयो जहां गमु री ॥ तूं हमकों रिपु काहे भई जोपै कान्ह लई तौ कहा रसु री ॥ रसखानि भनै बिधि मान भां बसने नहिं देत दिना दस री ॥ हम या ब्रज को बसवोइ तज्यौ बसुरी ब्रज वैरिनि तूं बंसुरी ॥ ७४ ॥ बजो है तू आज कलंक भरो सुनिकै वृषभानु कुमारि न औ हैं । न जो है कदाचित कामिनी कौडु पै कान मैं जाइ अचानक पो है ॥ पी है विदेस से देस न आवत मेरो ही देह कों मैन सजो है । सजो सु है मैन कहा बसु है ब्रज वैरिनि बांसुरी फेरि बजो है ॥ ७५ ॥

इति सुभमस्तु संमत् १९०९ पौष वदी ५ श्रीराम श्रीराम राम राम १

Subject—श्रीकृष्ण राधिका के प्रेम संबंधी फुटकर ७५ सवैया ।

No. 356. Vaidya Prakāśa by Rasālagiri. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—9½ × 6 inches. Lines per page—20. Extent—1,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Jaṅga Bahādura, Kundana Jaṅga, Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यानमः ॥ अथ वैद्यप्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ शिवसुत पद वंदन करौं बहुविधि सीस नवाइ । वैद्यक ग्रंथ विचित्र अति रचो महासुष पाय । वैस वंस अवतंस अति गोवर्धन सुषधाम । ताके सुत अति ही सुभग तीनि महा सुष ग्राम ॥ गिरि रसाल यक भीव को प्रीति प्रतीति रसाल । अति गति जति मति दे सरस अद्भुत परम विसाल ॥ श्री मथुरापुर का गये मेह भीम के संग । तेहि लघु अनुज सुजान सो तब तहं भयो प्रसंग ॥ लेखराज तब मोहि कहि गिरि रसाल सुनि लेहु । अेाषधि सुभग समूह कैा ग्रन्थ मोहि रचि देहु ॥

End—उबटन ॥ मसूर को दाल चिरैाजी हलदी दारु हलदी लाल चन्दन इन सब अेाषधि का बराबर गाय के दूध में पत्थर पर चन्दन की समान घिस शरोर में लेप कर स्नान करने से झाई मुहासा अेार चमड़े के सब रोग दूर होंय ॥

अथ तालोसादि चूर्ण ॥ तालोस मासे २ नागकेसर मासे २ सोंठ मासे २ पीपरि मासे २ मिस्रो मासे २ वंसलोचन तोले २ दाष तोले २ छुहारे तोले २ अनारदाने तोले २ जायफल मासे २ कचूर मासे २ अकरकरा मासे २ हर्रे बड़ी को बकलो मासे २ जीरो सफेद मासे २ कंकोल मासे २ मिस्रो सम मात्रा लेय ॥ नागेस्व ॥) सु एक धेला भर पाय जीर्णज्वर जाय ॥ इति शार्द चूर्ण सम्पूर्ण शुभं ॥

Subject—गणेश स्तुति, कवि परिचय, आश्रय दाता का परिचय, नाड़ी विचार, ज्वर के भेद अेार लक्षण तथा अेाषधि, पेट पीड़ा को अेाषधि, कान पोड़ा की अेाषधि, खांसी को अेाषधि, गले की पोड़ा की अेाषधि, सिर पीड़ा की अेाषधि, सब प्रकार के ज्वरों को अेाषधि, अतोसार, मन्दाग्नि, सर्व रोग अेाषधि, धातु करन अेाषधि, प्रमेह की अेाषधि, क्षय रोग की अेाषधि, श्वास रोग की अेाषधि, नेत्र रोग की अेाषधि कमल रोग की अेाषधि, संग्रहणी रोग की अेाषधि, जलोदर रोग की अेाषधि, दांत मंजन, उबटन, तालोसादि चूर्ण ।

No. 357(*a*). Rasasāra by Rasikadāsa of Brindābana. Substance—New paper. Leaves—8. Size—6×4 inches. Lines per page—12. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Hansa Bahādura Vaishya, Bodhipur, Rāe Barelī.

Beginning-श्री राधा रसिक बिहारी जी अथ रससार लिख्यते ॥ चैा० ।
श्री हरिदासी नर हरि दासि । स्यामा स्याम रहे मन भासि ॥
तिनकी कृपा रस सार बखानो तहं छवि अमित अपार अति जानो ॥१॥
कुंज केलि सहज प करैं महा केलि न्यारे विस्तरैं ॥

भौर भार तहं जात न कोई मुहां चुहो ज्यों स्यावत होई ॥ २ ॥
जहं पंछी को नहीं प्रवेस मधुकर धुनि को तहां न लेस ।
निभ्रत कुंज की सुनों अब कथा तहं सोभा को नाहो तथा ॥ ३ ॥
जहं सब रितु रहैं फूले फूल एकांत कुंज सब रस को मूल ॥
प्रथम चोक में घोस प्रकासै दूजो चोक सरद निसि मासै ॥ ४ ॥
तीजी चोक रेनि तम लगी स्यामा स्याम रूप जगमगी
पत्र मूल फल फूल हैं जिते राधा रुचि करि सो है तिते ॥ ५ ॥
ठोर ठोर जहं प्रिया जनावे धाइ धाइ स्याम कंठ उरलावैं
भुजा पकरि प्यारी गहिरावै प्रेम मग्न अति मोहन दावैं ॥ ६
अनुराग मूर्ति दोऊ तन बने गौर स्याम सोभा रस सने
प्यारो हग स्याम हैं तारे और खेल पल नैन उघारे ॥ ७ ॥
ज्यों दर्पन में देखो भाई गोरो स्याम स्याम है काहो
और खेल में चित्त न जाई मन की दसा रहे ठहराई ८
स्याम नैन गोरो को देह रूप दृष्टि चित सनै सनेह
जो कहिये तो कहत न आवे नेहो बिना भेद को पावे ॥ ९

End—नित्य सिधा जेतो हैं सखो साधन सिधा न्यारी लखो
मुनि कन्या ऋषि कन्या जितो श्रुति कन्या साधन सिधा तितो ३७
नित्य सिधा गोप कन्या जानों श्री कृष्ण अनादि तैसें ये मानो
राधा कृष्ण सर्व को मूल तिन को और कौन समतूल ॥ ३८
चाह मूरति नित्य सिधा भई तिनतें और सखो सब लई
तत सुख सखो एक रस पागे तिनके भेद कहौं अब आगे ३९
तत सुख सखी की यहो रीति तन में रहै अपन यो जोत
प्रिया प्रीतम को निज सुख चाहे अपनो सुख नहीं मन बोगाहै ४०
पूछे सुखे सखोय लेहि चाह में चाह मिले मन देहि
तिनको पन्दा करै न कोई एकांत सेज जहां पोढ़े दोई ४१
भूषन वसन ए निकरि संवारे श्रमजल पोंछि पवन कर ढारैं ।
सो सुख सखो कहावै तोन स्याम के सुख को चाहै जोन ॥ ४२
अपने सुखे रहैं जे राती कृष्ण सरूप सों रहैं जो माती
एकांत केलि जहां दोऊ करैं ये सखी न तहां अनुसरैं ४३
और कुंज क्रीड़ा जो करें तहां तहां सखो संग सब फिरैं
सहज केलि करि सब सुख देहि तत सुख सखो सबै सुख लेहि ॥ ४४
महाकेलि में जातन कोई निभृति कुंज सुख लूटैं दोई
महाकेलि को सकै बताई नहि कहिबे को परमति आई ॥ ४५

या रस को जो जानै मर्म तातो कहियो यह निज धर्म ।
श्री नरिहरिदास को हेत निज जानों, श्री रसिकदास रससार बखानों ।
इति श्री रससार संपूर्ण ।
Subject—श्री राधा कृष्ण का प्रेम वर्णन ।

No. 357(*b*). Rasikadāsaji ke Pada by Rasikadāsa. Substance Country-made paper. Leaves—28. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—1,176 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babu Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री कुंज विहारी जी ॥ अथ श्री स्वामी रसिकदास जी के पद रस के लिषते ॥ राग विहागड़ो ॥ दुल्हो दुलहनि अधिक बनो ॥ पूजन चली कल्पतरु सुंदरि चोरै ठान ठनो ॥ किये सषनि मंह जोर सवनि मिलि आगे धन पाछे जो धनो ॥ गावत चली गीत मंगल के सबै सुघर सजनो ॥ तनुक झुनक पग धरत धरनि पर छवि पावत अवनी ॥ छिरक सुगंध मूल तरु पूज्यो फूलनि मान घनो ॥ अंचल जोर यहै वर मांगत रहो यह प्रेम सनो ॥ श्री रसिक विहार न होइ मान कक केलिकला कथनो ॥ १ ॥ प्यारी जू तें मोहि मोलि लियो ॥ तेरी कृपा मदन दल जोरेयो तेरो जिवायो जियो ॥ उमड़ो सेन महा मनमथ को ते अभयामृत दियो ॥ श्री रसिक विहारी कहत दीन ह्वै धनि स्यामा को हियो ॥ २ ॥ स्यामा स्याम रूप रस चाषैं ॥ कुंज महल अकेले दोऊ तहां न कोई झांकै ॥ बैठो आप ठाढ़े लाल पकरि पकरि कर राषै ॥ ठाड़े रहो किंकिनी संवारो मंद मधुर माषैं ॥ अंग अंग ललचाइ रहे मन उमगी उर अभिलाषैं ॥ श्री रसिक विहारी यह सुष विलसत निकट भये सुषदायैं ॥ ३ ॥

End—बहु विधि वेद पुरान प्रेमतत्व निज गावै । ध्यान धरें । षोजै नित्य वृंदावन कौ अंत न पावै ॥ तरुनी रूप मनसासक्त चेतन्य जाग्रत जानौ । वेद मुनि जो जपे सो अनंत कियो बषानौ । सीत उष्ण सुष दुष नहीं निसवासर नहीं तास । इंद्री मन कौ सुष नहीं नष रवि जोति प्रकास । महा गोपितें गोप्य रहसि तें रहसि एकांत रस । बिनु जानें रस रीति तिनसौं ना कहिये जस । अचलासन वौ ध्यान सो नीके चित धरई । माया बंधन छोड़ि बास विपिन मैं करई । श्री वृन्दावन बास सुरनर मुनि नित चाहै । श्रुति धरैं जो ध्यान विधि संकर अवगाहै । श्री हरिदास कृपा विना क्यों पाइये ब्रज धूरि । श्री नरहरिदास बताई अपनी जीवनि मूरि । श्री नरहरिदास प्रताप तें भाषा कृत सो कीनौ । श्री रसिकदास कौ करि कृपा बास विपिन मैं दीनौ ॥ इति श्री रसार्णव पटल श्रुति अनंत संवादे ध्यान लीला भाषा संपूर्ण ॥

Subject—पृ० १—३—शृंगार रस के पद—पृ० ४—सिद्धांत की साखी। पृ० ५—सिद्धांत के पद। पृ० ६—७—रसिकदास जी का वृन्दावन निवास वर्णन। पृ० ८—भक्ति सिद्धान्त वर्णन। पृ० ९—पुण्य कर्म वर्णन। पृ० १०—पाप कर्म वर्णन, भक्ति कर्म वर्णन, अपराधों का वर्णन, साधु लक्षण वर्णन। पृ० ११—पूजा विलास वर्णन, सतगुरु लक्षण वर्णन, अछूत दोष वर्णन, पांच भाव वर्णन, उपासना भेद वर्णन, नित्यनेम वर्णन। पृ० १२—आसन की महिमा, बिना आसन दोष वर्णन। तिलक की महिमा वर्णन। पूजा विधि वर्णन। पृ० १३—सोलह सखियों का वर्णन, भोजन विधि वर्णन, शुद्धता का वर्णन, विश्वास का वर्णन, प्रगट पूजा वर्णन। पृ० १४—अन्य देवताओं का वर्णन, परिक्रमा फल, संध्या वर्णन, अपराध वर्णन, बिना अर्पण दोष वर्णन, पृ० १५—श्री कृष्ण कृपा का वर्णन, पृ० १६—कुंज कौतिक वर्णन। कुंज वर्णन। पृ० १७—विरह और उसके भेद वर्णन, कुंज केलि वर्णन। पृ० १८—२० गुरु मंगल यश वर्णन। पृ० २१—हरि कृपा वर्णन। पृ० २२—बाललीला वर्णन। पृ० २३—कल्पवृक्ष वर्णन। पृ० २४—मंडप वर्णन। पृ० २५—श्री कृष्ण ध्यान वर्णन। पृ० २६—श्री कृष्ण चरण चिन्ह वर्णन। पृ० २७—श्री राधा ध्यान वर्णन। पृ० २८—श्री राधाचरण चिन्ह और ध्यान वर्णन। समाप्ति॥

No. 357(*c*). Vārāha Saṁhitā by Rasikadāsa of Bṛindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—8 × 7 inches. Lines per page—38. Extent—466 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śyāma Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—अथ श्री बाराह संहिता लिख्यते॥ चौपाई॥

श्री नरहरि दास चरन सिरनाऊं श्रीराधा कृष्ण सुमरि गुन गाऊं
मैं भाषा कौ कियौ विचार मति बुधि देहु करौं उचार॥ १॥
बन उपबन की कथा जु बरनौं सत आवर्ण कौं कोनौ निरनौं
निर्गुन सगुन कौ जुदौ विस्तार सबतें परें सुनित्य विहार॥ २॥
पछियात कोउ भेद लगावै श्रीबाराह पृथ्वी सौं गावै
श्री प्रथ्व्योवाच॥ श्लोक॥ अनंत कोटि ब्रह्मांडे तद्वाह्यांतर संस्थिते॥
विष्णु स्थान मपरंतेषां प्रधानं प्रिय मुत्तमं॥ १॥ चौपाई॥
अनंत कोटि ब्रह्मंड हैं जिते बाहिर भीतर हरिपुर तिते॥ ३॥
विष्णु कौ प्रिय कौन स्थान सबके परें कौन प्रधान॥
कृष्णस्थान अद्भुत प्रिय होइ ताकें परें और नहीं कोइ
महाप्रभु कृपा करि मोसौ कहौ यौं सुष सुनि अनंद अति लहौ॥

श्री वाराहउवाच ॥ श्लोक ॥ गुह्याद्गुह्यतमं गुह्यं परमानंद कारकं ॥ अत्यद्भुतं रहस्यांतं रहस्य परमं शिवं ॥ २ ॥ चौपाई ॥

End—कृष्ण वर्ण चारि हैं भुजा संख चक्रादि भूषि भुजा
दक्षिण द्वारपाल ए रहै श्री विष्णु स्यामवर्ण जे कहै

तत्र श्लोक ॥ कृष्णवर्ण चतुर्बाहं शंख चक्रादि भूषितं ॥ दक्षिणे द्वारपालं च विष्णु कृष्ण वर्णकं ॥ २ ॥

जुग औतार चारि ये कहे द्वारपाल ते वृज के लहे ॥ १५ ॥ इति सप्तम आवरण ॥

सप्तम आवरण उलंघ जो आवै महल कुंज विहारी कौ पावै
श्री हरिदास करुना निधि रहि हैं । निज दासी महल को करिहैं ॥ १६ ॥
श्री नरहरिदास चरन उर आनें तब भाषा के पद करि जानें ॥
निज महल जो जान्यौ चाहौ तौ यह ग्रंथ नीकैं अवगाहौ ॥ १७ ॥
बुद्धि अनुमान यह जसु जु बखान्यौ सुद्ध अशुद्ध अपराध न मानौ
श्रीवाराह धरनी सौं भाष्यौ श्री रसिकदास भाषा करि राख्यौ ॥२१८॥

इति श्रीवाराह संहितायां धरनी वाराह संवादे श्रीवृंदावन रहस्य पटल समाप्तं ॥

Subject—पृ० १—गुरु २—वंदना, मथुरा की प्रशंसा । ३—द्वादश वन और उनके भेद अष्टदल वर्णन । ४—षोडश दल वर्णन । श्री वृंदावन ध्यान वर्णन । ५—प्रभु ऐश्वर्य वर्णन । बसंत वर्णन । प्रभु रज महिमा वर्णन । ६—यमुना जी का वर्णन । निज मंदिर वर्णन । ७—नवकिशोर ध्यान वर्णन । प्रभु महिमा वर्णन । ८—सौरभ वर्णन । श्री राधा प्रताप वर्णन । ९—राधा कृष्ण कैशोर आवेश वर्णन । अष्ट सखी वर्णन । १०—सखी ध्यान वर्णन । गोपकन्या का वर्णन और भक्ति श्रुति कन्या का वर्णन । ११—देव कन्या वर्णन । मुनि कन्या वर्णन । महल के चार दरवाजे के अधिकारियों का वर्णन । १२—प्रथम आवर्ण, द्वितीय आवर्ण, तृतीय आवर्ण, दक्षिण द्वार का वर्णन, पूर्व द्वार का वर्णन, चतुर्थ आवर्ण । १३—पंचम आवर्ण, चूड़ामणि मंत्र प्रताप वर्णन, षष्ठ आवर्ण । १४—अवतार वर्णन । सप्त आवर्ण । समाप्ति ।

No. 358. Jugala-rasa-mādhurī by Rasikagovinda of Brindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1972 or A. D. 1915. Place of

deposit—Nimbārka Pustakālaya, Bābā Mādhava Dāsajī Māhanta ka Mandira, Nānpārā, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री हरिशरणम् ॥ श्री भगवन्निम्बार्क महा मुनिन्द्रायनमः ॥ अथ युगुल रस माधुरी लिख्यते ॥ जय जय श्री हरि व्यास देव दिन विदित विभाकर । भ्रम तम श्रम अघ वोघ हरन सुख करन सुघर वर ॥ १ ॥ कृपासिंधु आनंद कंद दंपति रस भीने । मोसे मूढ़ अनेक पतित जिन पावन कीने ॥ २ ॥ जासु कृपा परसाद युगुल रस जस कछु गाऊं । सब रसिकन को हाथ जोरि पुनि सीस नवाऊं ॥ ३ ॥ श्रीवृंदावन सघन सरस सुख नित छवि छाजत । नन्दन वन से कोटि कोटि जिहि देखत लाजत ॥ ४ ॥ जहं खग मृग द्रुमलता बसत जे सब अविरुद्धि । काल कर्म गुन काम क्रोध मद रहित हित ॥ ५ ॥

End—निज सुख हित रस जुगुल माधुरी चरित बनायो । रसिकन हित सों दियो विमुख सो महा दुरायो । जे जन रसिक चकोर मोन चातक व्रत धारो । ते भले इहि मग चलै कोऊ नहिं अधिकारी ॥ जिनके यह रससार आनरस सुनो न भावै । ते नित ये सुख लहैं आन सपने नहिं पावै ॥ यह अगम अपार सुगम साधन किन होई । श्री गुरु श्री हरि व्यास कृपा बिनु लहै न कोई ॥ रसिक गुविन्द सखि चरन सरन दिन दरसन पावै ॥ जय जय श्री गुरुदेव यहै सुख हमन दिखावै ॥ जैसे पारस परस लोह तन कंचन धरई । ज्यों चंदन की पवन नींब पुनि चन्दन करई ॥ श्री गुरु की महिमा अनंत कछु कही न जाई । जिन धर सिर धरि वासुदेव लकरी पहुंचाई ॥ दोहा ॥ यह अगाध निधि मधुर रस छवि कछु कही न जाय । चटका चहै सब ही पियो पै इक बुन्द समाय ॥ यहै युगुल रस माधुरी सादर लय जु कोइ । प्रेम भक्ति सब सुख सदा श्री गोविन्द तिहि होई ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

Subject—राधा माधव की स्तुति ।

No. 359. Premaratna by Ratanadāsa of Kāsī. Substance—Country-made paper. Leaves—51. Lines per page—17. Extent—850 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1844 or A.D. 1787. Date of manuscript—Samvat 1857 or A.D. 1800. Place of deposit—Bābū Padmabaksha Simha, Lavedapur, Bhinagā Raj, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रेमरत्न लिख्यते ॥

सोरठा अंस गति आनन्द कन्द परम पुरुष परमात्मा ।

सुमिरि सुपरमानन्द गावत कछु हरिजस विमल ॥

पुनि गुरुपद सिरनाय उर धरि तिनके वचन वर।
कृपा तिनहि की पाइ प्रेम रतन भाषत रतन॥
अगम उदधि मधि आहि पंगु चढ़हि जिमि बिनु तरनि।
तैसिय रुचि मन मांहि अमित कान्ह जस गान की॥
पै मो मन विस्वास पुरवत पूरन काम प्रभु।
उर पुर सकल नेवास निज जन को अभिलाष लखि॥
लीला अगम अपार बरन न पावै शेश शिव।
जासु स्वास श्रुति चारि तेहि गुण गण को कहि सकै॥
अमित चरित्र विचित्र यथा शक्ति गावत सकल।
निज मुख करन पवित्र भाषत हरि गुण गण विमल॥

End—सोरठा॥ निर्माणकाल ठारह सै चालीस चतुर वर्ष जब विगत भो। विक्रम नृप अवनीस भयो भयो यह ग्रंथ तब॥ ३॥ महा माह के मांह मति शुभ दिन शित पंचमी। गायो परम उछाह मंगल मंगलवार वह। ४। कह्यो ग्रंथ अनुमान द्वैशत अरसठ चैापई। तेहि अक्षर घट जानि दोहा सोरठ सोरठा॥ ५॥ कासी नाम सुठाम धाम सदा सिव को सुपद। तीरथ परम ललाम सुभद मुक्ति वरदाय क्षम॥ ६॥ ता पावन पुर मांहि भयो जन्म यहि ग्रंथ को। महिमा वरनि न जाय सगुण रूप जस रस भयो॥ ७॥ कृष्ण नाम सुख मूल कलिमल दुख भंजन भजत। पावहि भवनिधि कूल जाके मन यह रस रमहि॥ ८॥ कुरुक्षेत्र सुभ थान बृजवासी हरि को मिलन। लीला रसकी खानि प्रेम रतन गायो रतन॥९॥ इति श्री व्रजवासी हरि मिलन कथा प्रेम रतन कवि रतनदास कृत सम्पूर्ण सुभ मस्तु कातृक मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दस्यां रविवारे सम्पूर्ण॥ ५७॥ श्रीराम राधाकृष्ण गौरीशंकर॥

Subject—पृ० १—४ तक। प्रार्थना, कृष्ण जन्म वर्णन तथा कृष्ण का व्रज प्रेम वर्णन। पृ० ५—१७ तक। सूर्यग्रहण पर सब द्वारकावासी व कृष्ण का कुरुक्षेत्र नहाने जाना और व्रज से नंदादि का गमन वर्णन—पृ० ८—१० तक। एक ग्वाल को द्वारिकावासी से भेंट होना तथा कृष्ण की खबर पाना तथा गोपियों का संकल्प स्मरणादि विरह वर्णन—पृ० ११—१५ तक। व्रजवासियों का कृष्ण से मिलने जाना, वसुदेव देवकी कृष्णादि सब का प्रसन्न होना॥ व्रजवासियों के भाग्य की प्रशंसा करना, सत्यभामा का कृष्ण से हंसी और व्यंग करना। पृ० १६—२१ तक। कृष्ण का नन्द यशोदा व्रजवासी राधा ललितादि से मिलन। पृ० २२—२५ तक नंद यशोदा व वसुदेव देवकी से मिलन॥ पृ० २६—३० तक राधा आदि का रुक्मिणी सत्यभामा से मिलन और सत्यभामा की आलोचना। पृ० ३१—३३ तक। कृष्ण का रुक्मिणी से राधा का प्रेम वर्णन तथा राधा

को विरह व्यथा का वर्णन। पृ० ३३—३४ तक। गोपियों में कृष्ण का रहना तथा नन्द यशोदा व गोपियों का पूर्ववत् व्यवहार करना। पृ० ३५ से ३७ तक। कृष्ण से मिलने को ऋषियों का आगमन और वसुदेव देवकी का सत्कार करना। पृ० ३८। कृष्ण का ऋषियों का यज्ञ कराना और सब को वसुदेव देवकी का भोजन कराना। पृ० ३९—४९ तक। देवकी का कृष्ण को चलने को कहना, राधा और सत्यभामा का विवाद, कृष्ण का दो रूप धर व्रज व द्वारिका जाना। पृ० ५०—५२। ग्रंथ निर्माण वर्णन।

Note—यह प्रेमरत्न रत्नदास का रचा हुआ संवत् १८४४ का है। इसमें भूल से लेखक ने १२४४ कर दिया है। लिखने का संवत ५७ दिया है स्यात् १८५७ होगा क्योंकि ग्रंथ पुराना लिखा हुआ है। राजा शिवप्रसाद ने इस में से कुछ भाग गुटका में उद्धृत किया है और उसे अपनी दादी रतनकुंवरि का रचा हुआ बतलाया है, यह राजा साहब की भूल प्रतीत होती है। इस प्रति में पृ० ३, ६, २२ व २७ नहीं हैं।

No. 360(a). Fatah Prakāsa by Ratana Kavi of Śrīnagara (Kamāun). Substance—Country-made paper. Leaves—134. Size—$10\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—9. Extent—1,300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1910 or A.D. 1853. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Seṅgara, Village Kānthā, District Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः।

थोंदि थरकोली भरकोली विधु कलपभाल हरकोली भौंहनि समाधि सरसति है। प्रानायाम साधन कलित कमलासन मैं विपति विनासन को वासना वसति है। सेंदुर भरयो भुसुंड मंडल समीप गजवदन के रदन की दुति यों लसति है। संध्या श्रोन सरद के नीरद निकट मानों द्वेज के कलाधर की कला विगसति है। १। गंग उतमंग आधे तरल तरंग भरो आधे भरी मांग मुकताहल सुढंग को। आधे कंठ कालकूट कालिमा कलित आधे नीलमनि को ललित लपक उमंग को। आधे उर केहरि को आधे निरवेद आधे हाव भेद प्रते राजत अभेद लीला शिवा शिव अंग को। २ अथ काव्य को प्रयोजन।

End—अतद्गुनालंकार दोहा—अप्रकृत गहै न प्रकृत जो गुन गहिरे अवगाहि। अलंकार कोविद सबै कहत अतद्गुन ताहि। २१९। यथा सवैया। नेह भरी अंखियान में राखें तऊ तुम रूखे रूखे बिलखे से। ताप तये हिय मांह दये

परि सौरे उसीर के नीर रखे से। काहे को ग्रौर को ग्रौर मिलावत ग्रौर को ग्रौर हो चाप चखे से। जो कुल चालि नये तुम्हैं चाहि के चाहिये तासैां रहौ धनखे से। २२० ॥ व्याघातालंकार। लक्षण दोहा। ज्यों ज्यों ही काहू कह्यो त्योंही ताहि जुयान। करै ग्रन्यथा कहत हैं सो व्याघात सुजान ॥ २२१। यथा कवित्त लाल बलि गई दई ऐसो क्यो करत गई हौ हो बलि गई सो तौ विकल विलोकी बाल। तनु तपी तवा सो दवा सो देहगी छौ भयो ऊंवा सो ग्रवासो भयो बिरह को ज्वाल जाल। रावरी रसाल उर धरे उठि बैठो हाल झूमत इवाल विहूल भई तेही काल। कहा करौ प्यारे जू तिहारे वाही हार हो सों मैं करो निहाल हो पै मदन करो विहाल। २२२। इति श्रीनगर वासी फतेसाह नृपस्याज्ञया कविरतन विरचिते फते साहि प्रकाशे साहित्य ग्रर्थालङ्कार निरुपन नाम षष्टो द्योतक ग्रंथ संपूरन। संवत् १९१० वैसाख कृष्ण पंचम्यां गुरौ लिखितं ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी स्वपठनार्थं ब्रह्मार्पणमस्तु।

Subject—पृ० १ से ७ तक। गणेश वन्दना, शिवस्तुति, काव्य प्रयोजन, काव्य के कारण शक्ति, निपुणता ग्रौर ग्रभ्यास वर्णन, काव्य लक्षण, ग्रभिधा लक्षण, व्यंजना भेद कथन, तीनो का लक्षण ग्रौर उदाहरण वर्णन, ग्रभिधा मूलक व्यंग वर्णन, योग, वियोग, विरोध मे नाक तथा वेसरि तथा कौशिक काक उदाहरण। काल ध्वनि वर्णन, चक्रवी का उदाहरण, देश सामर्थ्य संयोग्यता का लक्षण व उदाहरण।

पृ० ८ से १३ तक। लिंग का उदाहरण लक्षण, ग्रभिनय कथन, ग्रगुढ़ व्यंग्य लक्षणामूलक व्यंजना व्यंजक। व्यंग वर्णन शब्द व्यंजक है। ग्रर्थ व्यंजक वर्णन, देश काकु से भेद वर्णन। काक कथन करके उदाहरण। परसन्निधि विशेषण वर्णन, स्व विशेष कथन देश विशेष का कथन, प्रस्ताव विशेप, वाच्य विशेप कथन मे जयद्रथ का उदाहरण वर्णन, संदेह विशेष वर्णन, ग्रादि ग्रहथोत्सव चेष्टारथः ग्रर्थ व्यंजक चेष्टा वर्णन।

पृ० २१ से २९ तक काव्य भेद, उत्तम, मध्यम ग्रधम वर्णन उदाहरण वर्णन। चित्र काव्य वर्णन, दो वीर रस के उदाहरण हैं। इस उद्योत के ग्रंत मे श्रीनगर वासी राजा फतह साहि मेदिनी साहि के पुत्र का उल्लेख है। उत्तम काव्य के भेद वर्णन, विवक्षितान्य पर वाच्य ध्वनि ग्रौर ग्रविवक्षित वाच्य, ग्रर्सलक्षण क्रम विवक्षित ग्रन्य परवाच्य ध्वनि वर्णन, रस निरुपण-भाव, विभाव, ग्रनुभाव, व्यभिचारी भाव वर्णन, स्थायी भाव वर्णन, विभाव, ग्रालंबन उद्दीपन वर्णन, ग्रनुभाव, स्वेद, थंभ वैवर्ण्य, स्वरभंग, कंप, रोमांच, प्रलाप, ग्रश्रु, कटाक्ष वर्णन, निर्वेदादि ३३ व्यभिचारी भावों का वर्णन, रस भेद वर्णन, श्रृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, ग्रद्भुत रस वर्णन, श्रृंगार लक्षण व संभोग वर्णन, वियोग

सिंगार, भूत प्रवास को हेतु वियोग वर्णन, भविष्य प्रवास हेतु को वियोग वर्णन, भवतु प्रवास हेतु का वियोग, अभिलाष हेतु का वियोग वर्णन, विरह हेतु का वियोग वर्णन असूया हेतु वियोग कथन, शाप हेतु का वियोग, इति शृंगार रस वर्णन, हास्य रस लक्षण—शिव विवाह का उदाहरण, करुणा रस का वर्णन, रौद्र रस का वर्णन राम—रावण युद्ध वर्णन, वीर रस में रावण का वर्णन, भयानक रस वर्णन और फतहसाहि की प्रशंसा का छन्द बीभत्स रस, फतह-साहि के युद्ध का वर्णन, अद्भुत रस वर्णन में फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन, शांति रस में शिव का ध्यान वर्णन।

पृ० ३० से ३७ तक। भावादि ध्वनिकथन—देव विषयक भक्ति वर्णन, मुनि विषयक रति, राघव विनोद वर्णन, गुरु विषयक रति वर्णन, नृप विषयकरति वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा का वर्णन, पुत्र विषयक रति कौशिल्या का विश्वामित्र के प्रति राम ले जाने पर वर्णन, व्यंग व्यभिचारी वर्णन, रसाभास कथन, नीलकंठ का विकृत कवित्त—भावाभास वर्णन, भावोदय वर्णन, भाव सबलता वर्णन, भाव शांति कथन, फतह सिंह की नायिका का मान मोचन वर्णन, भाव संधि असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, संलक्ष्यक्रम व्यंग ध्वनि वर्णन, शब्द, अर्थ और शक्ति से ३ भेद कथन, शक्ति भू प्रतिध्वनि, रूपकालंकार ध्वनि वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि विरोधालंकार ध्वनि वर्णन, पदभेद विरोधालंकार ध्वनि में फतहसाहि की प्रशंसा।

पृ०—३८-४४ शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप व्यतिरेकालंकार वर्णन—शिव भक्ति वर्णन, उपमालंकार वर्णन, शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनिरूप वस्तुध्वनि वर्णन, इति शब्द शक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, अर्थशक्ति भू प्रतिध्वनि वर्णन, सभेद स्वतः संभवी, प्रौढ़ोक्ति कविकृत, वस्तु अलंकृत, व्यंग के १२ भेद वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवी वस्तु से वस्तुध्वनि, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवी वस्तूत्प्रेक्षा वर्णन, अर्थ शक्ति भू स्वतः संभवी वस्तु से व्यतिरेकालंकार ध्वनि वर्णन, अथ कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धि वर्णन :—शक्ति भू वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनालंकार ध्वनि वर्णन; उत्प्रेक्षा में कथन, कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्तिना अलंकारेणालंकार ध्वनि वर्णन। काव्य लिंग से विभावना की उत्पत्ति वर्णन, कवि कृत वक्तृ प्रौढ़ोक्ति सिद्धार्थ शक्ति भू वस्तुनावस्तु ध्वनि वर्णन। वस्तुना विभावनालंकार वर्णन, उत्तरालंकार ध्वनि, कवि काव्यलिंग विशेषोक्ति वर्णन, शब्द अर्थ शक्ति भू ध्वनि वर्णन, संलक्ष्यक्रम विवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन; अविवक्षित वाच्य ध्वनि वर्णन; अविवक्षित वाच्य ध्वनि भेद मत वर्णन, अर्थान्तरगत वाच्य पुनरुक्ति, विशेष नायकत्व वर्णन; अत्यन्तारिका वाच्य वर्णन।

पृ० २४ से ५४ तक पद व्यंग से चलक्ष क्रम व्यंग वर्णन, उत्तम काव्य के ३५ भेदों का वर्णन। लक्ष क्रम व्यंग पद ध्वनि भेद मे शब्द शक्ति मूल से वस्तु ध्वनि वर्णन; लक्ष-वस्तु के वस्तु ध्वनि का वर्णन और अतिशयोक्ति कथन तथा विरोधा-लंकार वर्णन, फतहसाहि की प्रशंसा वर्णन। अलंकार ध्वनि वर्णन। स्वतः संभाव्य व्यंग के भेद चतुष्टय कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्ध व्यंग काव्य लिमालंकारेण वस्तुना वस्तुध्वनि वर्णन, विरोधालंकार, कवि व्यंग, व्यतिरेकालंकार वर्णन, काव्य लिमध्वनि वर्णन। अपन्हुति अलंकार ध्वनि वर्णन। अतिशयोक्ति चार संवाद वर्णन, पद विभाग रस के ५१ भेद वर्णन। मेदन मिश्र का सवैया, श्रृंगार रस वर्णन, व्यंग के भेद नाटक, भाव आदि वर्णन, संघटित वाक्यतर वाक्य समुदाय वर्णन श्रृंगार और फतहसाहि प्रशंसा। काव्य भेद शंकरादि वर्णन। संशय ध्वनि शंकर वर्णन, संसृष्टि अंगांगी भाव एक व्यंजक प्रवेश त्रितय वर्णन गुणी भूत व्यंग के ८ भेद—अगूढ़, निगूढ़, संदिग्ध, प्राधान्य, वाच्य, सिद्धांत तुल्य-प्राधान्य, काकादि असुंदर वर्णन।

पृ० ५५—६४ तक—अगूढ़ वर्णन, निगूढ़, व्यंग कथन, संदिग्ध प्राधान्य, राघव विनोद से मिश्र वक्तृक पद वाच्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, तुल्य प्राधान्य गुणीभूत व्यंग वर्णन, काकादि गुणीभूत व्यंग वर्णन, अपसंग गुणीभूत व्यंग वर्णन। अपरांग व्यंग रसास्यत्सी अंग और व्यंग के भाव वर्णन फतहसाहि की प्रशंसा चित्र भेद वर्णन।

पृ० ६५—७३ तक। दोष सामान्य विशेष लक्षण। सामान्य दोष - वचन दोष वर्णन, कर्णकटु, अवाचक, हितारथ, अयनीत, अनुचितार्थ, नेयार्थ, अयुक्त, अश्लील निरर्थक, क्लिष्ट, ग्राम्य भय; विरुद्ध, संदिग्ध, अविमृष्ट, असमर्थ ये १५ दोष हैं. अवाचक दोष के तीन भेद वर्णन, वाचक पद शक्ति योग सापेक्ष्य वर्णन, वाचक पदशक्ति योग अनपेक्ष अवाचक दोष वर्णन, द्वितीय धर्म में वाचक पद शक्ति योग अवाचक दोष वर्णन, तृतीय धर्मदोष वर्णन, अप्रतीत दोष वर्णन, गंग सवैया वर्णन, अनुचितार्थ दोष व नेयार्थ दोष वर्णन; अयुक्त दोष कथन, अश्लील वर्णन, व ३ भेद वर्णन, लज्जा व्यंजक अश्लील, अमंगल व्यंजक व जुगुप्सा व्यंजक अश्लील वर्णन, क्लिष्ट दोष वर्णन, ग्राम्य दोष वर्णन, विरुद्ध मति वर्णन।

पृ० ७४—८४ तक। अलंकार वर्णन, उपमा—पूर्णोपमा, लुप्तोपमा वर्णन, समादि पदलोपो वाचक लुप्तोपमा वर्णन, उपमान लुप्ता; धर्मवाचक लुप्ता, धर्म उपमान लुप्ता, फतहसाहि प्रशंसा कथन; धर्मवाचक उपमान लुप्ता, मालोपमा धर्म अभेद मालोपमा, रसनोपमा, धर्म अभेद रसनोपमा, अनन्वय लक्षण व, उदाहरण। उपमेयोपमा वर्णन, उत्प्रेक्षा, भेद, फल; हेतु, रूप वर्णन। संदेह

निश्चय पृ० ८५—९०, । दर्शन । रूपकालंकार वर्णन, समस्त वस्तु विषय, एक देशीय विवर्ति के दो भेद लक्षण उदाहरण वर्णन, फतह साहि को मजलिस वर्णन, मंगल रूपक वर्णन, परंपरित रूपक कथन, श्लेष वर्णन, फतह साहि की प्रशंसा वर्णन, राम प्रशंसा वर्णन, अपन्हुति वर्णन । दो भेद शाब्दो अर्थी वर्णन, सुंदर कवि का फतह साह को प्रशंसा में समासोक्ति वर्णन, निदर्शना व माला निदर्शना वर्णन, भूषण कृत फतह साहि की प्रशंसा वर्णन, अप्रस्तुत प्रशंसा वर्णन, ४ भेद सामान्य, विशेष, कार्य्य, कारण भेद से कथन, अप्रस्तुत प्रशंसा वर्णन, अतिशयोक्ति कथन, केवल उपमान वर्णन, श्रीनगर शोभा वर्णन, उपमान उपमेय वर्णन, अलौकिक अर्थ वर्णन, कार्य्य कारण से वर्णन, प्रतिवस्तूपमा, माला प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त में फतहसाहि का यश वर्णन । दीपकालंकार वर्णन । एक कारक बहु क्रिया का दीपक, माला दीपक, तुल्य योग्यता, अप्रस्तुत तुल्य योग्यता, व्यतिरेकालंकार सभेद वर्णन । उत्कर्षापकर्ष व्यतिरेक के उदाहरण में फतह साहि की प्रशंसा वर्णन आक्षिप्तोपमा आक्षेपा- पृ० १०६—१३४ तक । लंकार वर्णन—विभावनालंकार, विशेषोक्ति, यथा संख्या, अर्थान्तरन्यास, में गढ़वार का वर्णन । विरोधालंकार, फतहसाहि वर्णन । सभेद वर्णन, स्वभावोक्ति, व्याज स्तुति वर्णन, फतहसाहि की विजय का वर्णन, सहोक्ति, विनोक्ति, परिवृत्त अलंकार वर्णन, काव्यलिंग में शत्रु स्त्रियों पर प्रभाव वर्णन । पर्यायोक्ति, उदात्त, सभा शोभा वर्णन, समुच्चय सभेद तृतीय में फतहसाहि के वैरियों का भयभीत होना वर्णन, पर्यायालंकार वर्णन विपरीत पर्याय वर्णन, उदारता कथन अनुमान अलंकार, फतहसाहि यश वर्णन, परिकरालंकार साभिप्राय विशेषण, काकोक्ति, परिसंख्या में शिवा की प्रशंसा, गढ़वार के राजा का वर्णन, ब्राह्मण भक्ति कथन, कारण मालालंकार वर्णन । अन्योन्या- लंकार, सूक्ष्म, सार के उदाहरण में फतहसाहि के सुजस का कथन, असंगति, समाधि, सम, विषम, उसके ४ भेद वर्णन, अधिक प्रत्यनीक मीलित, फतहसाह यश कथन, एकावली वर्णन स्मरण, भ्रांति मान, इसमें फतहसाह का आतंक वर्णन । प्रतीप सभेद वर्णन । सामान्यालंकार । विशेष, बलि, विक्रम, हरिचंद से फतहसाहि को विशेष मानना, अन्यत कर्म ध्येन कथन, तद्गुनालंकार, अतद्गुन, व्याघातालंकार वर्णन । इति ।

N . 360(b). Fatah Prakāsa by Ratana Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—8 × 6 inches. Lines per page—14. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahāvira Baksha Siṁha, Tāluqedār,

Village and Post Office Kotharā Kalā, District Sultānpur (Oudh).

Note—Other details as in No. 360 (*a*).

No. 361(*a*). Bandī Mochana by Raghuvara Simha of Alipura. Leaves—23. Size—8 × 7 inches. Lines per page—22. Extent—230 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1904 or A. D. 1847. Date of manuscript—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Ṭhākura Rāmadaurā, Village Miṭhaurā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री देवी जी सहाइ । श्री पोथी बंदी मोचन लिष्यते । अस्तुति । आदि भवानी सुर कल्यानी असुर संघारनी नाम जो । तीनि भुवन जेहि मस्तक नावे, सो वरदायनी वाम जो आदि कुमारी सिंध दसवारी जाहि भजे श्री राम जो । सो वरदायनी त्रिभुवन दाता सिध करी सब काम जो । महिमा बंदी अगम अपार मुष से बरनो नहिं जाई जो ॥ गाढ़ परै बंदी कह सुमिरै निश्चै करै सहाइ जी ॥ बंदी माई सुमिरौं मैं तोही सुमिरत गाढ़ छुटावहु मोही । नाम तुम्हार है बंदी माई । अपने जन पर होहु सहाई । तीन लोक सिरजा तुम जबहीं । नाम धराए बंदी तबहीं ॥ सुर गंधर्व नाग मुनि देवा सकल करै बंदी की सेवा । महिमा बंदी अगम अपारा । तीनो भुवन जासो उजिआरा ॥ जो बंदी कर धरै ध्याना । पाइ कपूर सो बिलसै पाना ॥

End—तब प्रभु बहु विधि अस्तुति कीन्हा ॥ आसीरवाद बंदी तब दीन्हा ॥ बहुत सेवा तुम कीन्ह हमारी । लेउ अभै वर देउं विचारी । सुनहु नाथ एक वचन पुनीता । लेहु असीस जग होहु अजीता ॥ मोरो वचन सुनि लेहु हमारी । सो मैं कथा कहैां अनुसारी ॥ जहां परै प्रभु तुम कहं गाढ़ा । अस जानो तहइं हम ठाढ़ा ॥ इतनो अस्तुति कर रघुनाथा । जिनै देव सब भये सनाथा ॥ धन्य बंदी है गाढ़ उधारा ॥ अधम उधारं पतितन तारा ॥ जो यह कथा पढ़ै मनलाई ॥ ताकहं गाढ़ सकल मिटि जाई ॥ दोहा ॥ निश्चै गाढ़ उधार होई । धन्य तुम बंदी माई । जो यह कथा निसदिन पढ़ै सो बैकुंठहो जाई ॥ इति श्री पोथी बंदी मोचन कथा संम्पूरन समाप्तो पुस्तक लिषतं गंग नरायन पठनार्थ गिरधारी राम के जो कोई बांचै सुनै तिसको हमारी सीता राम । पंडित जन सो विनती मोरी । टूटा अछर बांचब जोरी । सुभ महीना सावन मासे किस्न पछे तिथ त्रिवोदसी संबत १९२० लिषा बांसबरेली की छावनी सदर बाजार में ।

Subject—पृ० १—देवो की महिमा, पृ० २—वंदी माई का ध्यान। पृ० ३—वंदी देवी की संसार में महिमा भजन से इच्छा फल प्राप्ति। पृ० ४—९ तक—कमलावती राजा का उदाहरण जिसने स्थिर होकर वंदी जी का ध्यान कर सब प्रकार के सुख संपति आदि प्राप्त किये राजा पुत्र न होने के कारण दुखी था सो पुत्र पाकर पूर्ण रूप से सुखी हुआ। राजा ने दान पुण्य अधिक किया वंदी के दरबार में जाना नाना प्रकार से पूजन करना पृ० १०—१८ तक। राम जी को अहिरावन का ले जाना, स्नान करा देवी पर बलिदान करने की तैयारी करना, राम जी का देवी का स्मरण करना, हनुमान का आना, अहिरावण को मारना आदि का वर्णन। पृ० १९—२३ तक—भगवान रघुनाथ जी का देवी सेवा में लगना, देवी का प्रसन्न होकर वरदान देना।

No. 361(*b*). Bandi Mochana by Raghuvara. Substance—New paper. Leaves—32. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—18. Extent—252 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Muḍiyā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 189?. Place of deposit—Paṇḍita Yaśodā Nanda Tiwārī, Village Kanthā, District Unāo.

Note—Other details as in No. 361(*a*).

No. 362. Sītācharitra by Rāyachandra (Kavi Chandra.) Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—10½ × 5½ inches. Lines per page—12. Extent—4,050 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1713 or A. D. 1656. Date of manuscript—Samvat 1862 or A. D. 1805. Place of deposit—Jaina Mandira (Baḍā) Bārābankī.

Beginning—श्री जिनायनमः ॥ दोहरा ॥ प्रनमौ परम पुनीत नर ॥ वरध मान जिनदेव। लोकालोक प्रकास तस करै सम किती सेव ॥ १ ॥ तस गनधर गौतम प्रमुष। धर्मवन्त धन पात जिन सेवत भवि जन सदा। पिठै मोह तम राति ॥ २ ॥ चैापाई ॥ कवि बालक यह कीन्हैा ख्याल। हसैा मातो बुधिवंत विसाल ॥ राम जानकी गुन विस्तार। कहै कैान कवि वचन विचार ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरु कुं सिर नाइ। कहै चंद उत्तम जग मांइ ॥ पर उपकारी परम पवित्त। सज्जन भाव भगत के चित्त ॥ ४ ॥ समकरि आदि पंत अक्षरा। अक्षांत आदि अक्षर करि परा। ए सुमिरैा परम्या दातार। सीता चरित्र चित करैा उदार ॥ ५ ॥ कर जुग जोरि नमैं जगदीस ॥ संतन के मन प्रतिहो अग्गोस ॥ पर उपकारी परम

दयाल ॥ परम पूज्य अति परम कृपाल ॥ ६ ॥ पंच परम गुरु परम प्रधान ॥ उर सुमिरो उर लक्षन आन ॥ जिन के भव अति हो तुच्छ रहे गुरु के बैन हिये जिन ग्रहे ॥ ७ ॥ दोहा ॥ पंच परम गुरु कैा नमो। मंगलीक सिव लोक। आपु समान भगत कौं करैं तुरत तहकीक ॥ ८

End—दोहाः—जो जागौं निज आंखतौं वहे आत पर वांग। जाम पलास्वौं जानिये जाम पयौ परवान ॥ × × × ×

चैापाई—किरिया करत करम सुष चितवै। सो बहु मन मैं निकसै कित ह्वै। करणी करै अवस्थौं पूठो। तापर मोह भया कर तूठो ॥ करणी करै एकता जानै। जोग किया माहैं चित ठानै ॥ रत मूढ़ ममता रस भीनैा। कबहूं आपन आपो चीन्हो ॥ अडिल्ल—सुनता है संतान परम बुधा आरको। करै सुगत परवेस न पहुंचै नानको ॥ यामैं भाषो नाहिं जिनेसुर यौं कहे। तजै सकल परमाव निराश्रव सील है ॥ पुनः ॥ कवित्त कयो जानकी यौं यह ध्यान है। हसो मतो बुध कोउ जु बुधि विस्तार है ॥ यह अपनो अरदास्व मनोषा पास है। जेहे परम सुजान जिनैां को दास है ॥ चैापाई ॥ संवत् सतरै तेरो तरै। मृग सिर ग्रंथ समापत करै। सुकल पष तिथि है पंचमी ॥ तादिन सरस कथा यह भणी ॥ ४३ इति श्री सीता चरित्र भाषा संपूर्ण ॥ संवत १८६२ ॥ मिती पैाष कृष्ण १३ बुद्धे ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—सीता का वनवास। मंगलाचरण गणधरादि वंदना। प्रस्तावना—राम सीता के शील गुणादि कथन द्वारा पाठकों का ध्यान कथा को ओर आकर्षित करना। सीता का स्वप्न देखना। रामद्वारा उसका फल कहा जाना। कुछ निकृष्ट फल से सीता का विह्वल होना। राम का आश्वासन। नगर में सीता रावण संबंधी मिथ्या अपवाद राम को इस विषय की सूचना। लक्ष्मण का इस सूचना द्वारा क्रोधित होना और सीता के सती होने का बार बार कथन करना। राम का उन्हें समझा देना। सेना पति द्वारा सीता का वन निर्वासन करना। (२) पृ० १५—२२ तक—सीता की वन बीती कथा—वन में सीता का विलाप। वज्रजंघ से उसका मिलाप, उसका सीता को अपने साथ ले आना और भगिनीवत् उसकी रक्षा करना। उसके वहां कुछ काल पश्चात् दो पुत्रों का उत्पन्न होना। एक क्षुल्लक द्वारा उनको युद्धादि विद्याओं में निपुण किया जाना। राजा वज्रजंघ ने यथा समय उनकी अवस्था ब्याह योग्य समझ कर 'पृथ्वीधर' को उसकी कन्या के साथ इनके विवाह होने के लिये एक सम्मति पत्र भेजना, उसका क्रोधित होकर निषेध करना। दोनों दलों का युद्ध के लिये सुसज्जित होना। सीता पुत्र लवणांकुश का यह समाचार पाकर प्रथम से ही युद्ध कर शत्रु की सेना को पराजित करना। इस पर वज्रजंघ व सीता का संतोष।

(३) पृ० २३—८० तक—राम से सीता के युग पुत्रों से युद्ध। नारद का वन में सीता के पुत्रों से मिलना, उनका प्रणाम करना, नारद द्वारा राम लक्ष्मण का वैभव की साधारण चरचा करना, बालकों का उनसे उपर्युक्त सज्जनों का संपूर्ण चरित्र जानने की अभिलाषा प्रगट करना, उनका वर्णन करना, जनक भय निवारण तथा दक्खिन के महात्म्य सेन की कथा—जनकी स्त्री विदेहा से एक पुत्र और एक पुत्री का जुड़वा होना, पूर्वजन्म के वैर से एक देव का पुत्र को उठा ले जाना, फिर दया करके एक स्थान पर छोड़ देना, रथनूपुर के चन्द्रगति विद्याधर द्वारा उसका पोषण। एक दिन नारद का जनक के यहां आगमन, सीता का भय से घर में घुस जाना। इस पर नारद ने अपना अपमान समझ कर उससे बदला लेने के लिये सीता का चित्र खींच कर उसी बालक को-जो इसका भाई था और विद्याधर के यहां पाला गया था-दिखा कर मोहित करना, उसका सीता सीता रटना, विद्याधर का जनक से सीता का संबंध स्थिर करने के लिये प्रस्ताव, जनक का राम के साथ उसका विवाह करने का प्रण कथन करना, इस पर विद्याधर की धनुष प्रतिज्ञा, राम द्वारा उसका पूर्ण किया जाना तथा विवाह होना, 'भामंडल' को भी सीता का अपनी भगनी होने का ज्ञान होना, अपने पूर्व भव का स्मरण आने पर, भामंडल, जानकी और राम से प्रेम संयुक्त मिलाप होना, चंद्रगति राजा का भामंडल को राज्य देकर मुनि होना, राजा दशरथ का अपने दिए हुए कैकई के वर को काम में लाते हुए 'राम' को वनवास देना, भरत को गद्दी देना, राजा का मुनि होना, लक्ष्मण सीता का राम के साथ जाना, भरत का वन में आकर राम से मिलना, और लौटने की प्रार्थना करना, राम का उन्हें समझा कर लौटा देना, वहां से आगे को लक्ष्मण-सीता सहित राम का चलना, मार्ग में वज्रकर्ण राजा को सिंहोदर से अभय करना, लक्ष्मण के कई विवाह होना, बालखिल की कन्या से लक्ष्मण का विवाह।

(४) पृ० ८१—२५६ तक—रामचन्द्र लक्ष्मण का एक कृपणी ब्राह्मण की स्त्री के पास ठहरना, उसका इनके साथ प्रेम से व्यवहार करना, ब्राह्मण का कुपित होना, लक्ष्मण का उसे टांग पकड़ कर घुमाना, उसका भयभीत होना, राम का उसे छुड़ा देना और आगे चलना, एक देव का वन में राम से भेंट और उसके द्वारा राम का कुछ असम्मान, देव का अपने स्वामी से उनका सब समाचार जान कर उनकी सेवा करना उनके बर्सात के निर्वाह के लिये एक उत्तम सा भवन निर्माण करना, वहीं पर उस कृपणी ब्राह्मण का आगमन, राम का उसके साथ प्रेम निर्वाह, ब्राह्मण का मुनि होना, बीजापुर की कुछ बातें, विजय सिंह राजा का निमित्त से अपनी कन्या के संबंध में पूछना, उनका उसका लक्ष्मण के साथ विवाह होने की भविष्यवाणी, गुण माला—विजय सिंह की

पुत्री—का मुनि सुन कर कि मेरे पति लक्ष्मण वन में आवेंगे प्रथम से ही वन में वास करना और यथा समय वहाँ राम लक्ष्मण का आना और लक्ष्मण के साथ वनमाला का विवाह होना। वनमाला के पिता विजय सिंह के यहां राजा अनन्तवीर्य का भरत पर चढ़ाई करने के लिये सहायता मांगने का पत्र आना, यह जान कर राम लक्ष्मण का स्वयं राजा से कह कर उसकी सेना लेकर वहां जाना, राजा को हरा के भरत को उसकी कन्या देने का प्रस्ताव करना, राजा का भरत को कन्या देना, रामचन्द्र का बीजापुर को लौटना, पद्मावती तथा लक्ष्मण विवाह, दंडक वन में रामचन्द्र का प्रवेश, एक मुनि द्वारा रामचन्द्र को ज्ञात होना कि ४०० जैन मुनि कोल्हू में पेर डाले गये थे यही कारण इसके ऊजड़ होने का है, खरदूषण की स्त्री चन्द्रनखा का लक्ष्मण पर मोहित होना, रामचन्द्र और लक्ष्मण द्वारा उसको लज्जित किया जाना, राम लक्ष्मण से खरदूषण का युद्ध करके परास्त होना. सीता हरण। रावण का सीता से मन्दोदरी द्वारा प्रस्ताव करना. सीता का उसे इसके लिये धिक्कारना, उसका लज्जित होना, उधर राम को सुग्रीव से भेंट और उनके द्वारा साहसगती विद्याधर से उसकी स्त्री की प्राप्ति। अपनी विषय वासना में राम के कार्य्य का सुग्रीव को विस्मृत हो जाना, लक्ष्मण द्वारा उसका पुनः स्मरण दिलाया जाना, सीता की खोज को जाना, रतनै जटी विद्याधर द्वारा उसका संपूर्ण समाचार पाना और ज्ञात होना कि वह रावण द्वारा हरी गई है। इस पर विद्याधरों का भयभीत हो कर राम से कहना कि सीता का ध्यान त्यागिये और जितनी चाहिये विद्याधर कन्याओं से विवाह कीजिये, राम का न मानना और कहना कि "अच्छा तुम कुछ सहायता न करो हमें केवल मार्ग बता दो हम अकेले उससे लड़ेंगे।" इस पर विद्याधरों का 'कोटि शिला' दिखा कर यह कहना कि जो इसे उठालेगा वही रावण को जीत सकेगा। लक्ष्मण का उसे उठा लेना। विद्याधरों का उनके बल का परिचय पाकर राम की सहायता करना, हनुमान द्वारा सीता की खबर पाना लंका पर चढ़ाई करना। लक्ष्मण रावण युद्ध, रावण का वध। सीता की प्राप्ति। उनका अयोध्या को गमन। उधर अयोध्या के लोगों का राम वियोग में दुखित होना। सीता को पाकर राम का जिन स्तुति करना। राम का विभीषण द्वारा अभिषेक किया जाना। वहां पर बहुत दिनों तक सानंद राम का राज्य करना।

(५) पृ० २५७—२८२ तक—एक दिन राम की सुधि करके कौशल्या का व्याकुल होना, नारद का वहां पर अकस्मात आना। दोनों का संवाद, नारद का राम का समाचार लेने लंका जाना, लंका में जाकर एक दिन 'रावण' का कुशल पूछने पर उनकी दुर्दशा होना और बंदी अवस्था में राम के निकट आना

पीछे नारद द्वारा माता के रोने पीटने का समाचार राम का सुनना और उन्हें का मोह उत्पन्न होना। विभीषण का राम मातु के पास उनके पुत्रों का समाचार भेजा जाना और अयोध्या आगमन की सूचना। माता की प्रसन्नता और दान। नगर में बधाईयं बजना। लक्ष्मण का राम से अपनी ब्याही हुई सभी स्त्रियों को बुलाने के लिये आज्ञा मांगना। राम का प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देना। दूतों द्वारा सभी स्त्रियों का बुलाया जाना। और इन सब के साथ अयोध्या आगमन। अयोध्या में भरतादि सहित सभी माताओं का आनन्द मनाना। अयोध्या की उस समय की शोभा का वर्णन। भरत का अपने को राजपाट से घृणा दिखाना, और भोग विलास से उन्मुक्त होने के लिये राम से प्रार्थना करना। राम तथा भरत संवाद। एक दिन राम के एक हाथी का बिगड़ना और भरत को देख कर उसका जाति स्मरण होना। दाना घास न खाना। कुल भूषण और देश भूषण मुनियों द्वारा राम को यह समाचार ज्ञात होना कि इनका और भरत का पूर्व संबंध है, इससे भरत को वैराग्य उत्पन्न होना। उनके वैराग्य की दशा, राम का विभीषण आदि को विदा कर सब को राज्य बांटना। शत्रुघ्न को मथुरा का राज्य दिया जाना। मधु की हार। नगर के कुछ अविचारी लोगों द्वारा सीता के अपवाद का समाचार राम पर पहुंचने और उनके वनवासादि की कथा सुनाना। सीता के दोनों बालकों का क्रोधित हो कर राम पर चढ़ाई करना।

(६) पृ० २८३—३०० तक—दोनों दलों में युद्ध होना। बालकों के विचित्र रण कौशल को देख कर राम लक्ष्मण का आश्चर्यान्वित होना। अन्त में पारस्परिक पहिचान होना। युद्ध की निवृत्ति सिद्धारथ द्वारा राम को सीता निर्वासन विषयक उपालंभ, राम का हंस कर उनके आदेश शिरोधार्य कर सीता को बुलाना। सीता का अयोध्या में आगमन। सीता के सतीत्व की अग्नि द्वारा परीक्षा। देव शक्ति से अग्निकुंड का तालाब हो जाना और उसका उमड़ कर बह चलना। दर्शकों के डूबने का भय होना। सीता से विनती करना, तब पानी का कम होना। सीता का जल से निकल कर विरक्त होना, राम का उन्हें इस कार्य से बहुत रोकना और उनका न मानना। अनेक ज्ञान-गर्भित वाक्यावली द्वारा लक्ष्मणादि सभी राम के सहयोगियों को उपदेश। सीता का आर्यिका हो जाना। कवि द्वारा सीता का कुछ गुणानुवाद। कवि का ग्रंथ का आधार वर्णन करते हुए कुछ थोड़ा सा अपना कथनः—

किया ग्रंथ रविसेन ने, रघुपुराण जिय जान।
वहै अरथ इस में कह्यो रायचंद उर आन॥

कथा के पाठकों को फल प्राप्ति। ग्रंथ समाप्ति तथा लेखन काल।

No. 363(*a*). Bhīṣma Parva by Sabala Siṁha Chauhāna Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—8 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—1,220 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Date of manuscript—Samvat 1919 or A. D. 1862. Place of deposit—Ṭhākura Umarāwa Siṁha, Village Mānikapur, Post Office Bisawā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ चौपाई ॥ ० गुरु गोविन्द के चरण मनावौं । जेहि प्रसाद उत्तम गति पावौं ॥ करि प्रनाम रघुपति के पायन ॥ चारि वेद जाके गुन गायन ॥ अवधनाथ सीतापति सुंदर । दीनबंधु रघुवंस पुरंदर ॥ शिव सनकादि अंत नहि पावे । नर मुष ते केहि विधि गुन गावे ॥ सुक सारद नारद से पाठक । हनूमान गावै गुन नाटक ॥ वालमीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पुराण श्री भारथ । भाष्यो व्यास ग्यान पुरषारथ ॥ दोहा ॥ पारासर ते जन्म है व्यास देव रिषिराज । जा मुष ते भाषा प्रगट भा कवि कुल सिरताज ॥ चौ० ॥ गुन गनेस सारद के पायन । करौं प्रनाम होहु सुभ दायन ॥ संवत सत्रह से अट्ठारहि । तिथि पूर्णा मंगल के वारहि ॥ माघ मास मा कथा विचारी ॥ अवरंग साहि दिल्लीपति धारी । सब पुरान पर नायक भारथ । जामे कुरु पांडव पुरषारथ ॥ व्यास देव भवभार निवारन । भारथ रचेउ जगत के तारन ॥ दो० ॥ जोगजुद्ध रस मंत्र सब भारथ माहे सर्व सबल सिंह चौहान कहि भाषा भीषमपर्व ॥

End—पांडव मन आनंद दल जीति चले रन ठान । अर्जुन के रथ सारथी सुन्दर श्री भगवान ॥ चौ० ॥ गोधन सहस देहि जो दानहि जो फल सब तीरथ असनानहि जो फल संभुनाथ पद परसे । जो फल होइ साधु के दरसे ॥ जो फल व्रत एकादसि कीन्हे । जो फल होइ धरनि के दीन्हे जो फल रन महं प्राण गवाये । जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये ॥ जो फल कोटि विप्र पद परसे । सो फल भारथ कहे सुने से ॥ व्यास देव भारथ के करता । बाढ़े पुन्य पाप के हरता ॥ दो० ॥ राम कृष्ण गोविंद हरि कीजिय सदा बषान । भाषा भीषम पर्व कह सबल सिंह चौहान ॥ इति श्री महाभारते भीषमपर्वे भाषा कृते अष्टादसोध्याय १८ समाप्त संवत १९।१९ शाके १७८४ माघ मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शनिवासरे लिष्यते इदं पुस्तकं गनेस पंडित श्रीराम चन्द्रायनमः ॥ श्री राधाकृष्ण जू सहाइ सदा ॥ श्रीराम ॥

Subject—भीष्म का युद्ध और उसकी महिमा आदि का वर्णन । अंत में महाभारत के गाने पढ़ने सुनने सुनाने का फल और लेखन काल ।

No. 363(*b*). Bhīshma Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,170 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṁvat 1923 or A. D. 1866. Place of deposit—Ṭhākura Jaibaksha Siṁha, Village Miṭhaurā, Post Office Keśargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ भीष्मपर्व लिष्यते ॥ चैापाई ॥ गुरु गोविन्द के चरण मनैये । जेहि प्रसाद उत्तम गति पैये ॥ कहैा नाम रघुपति के पावन । चारि वेद जाके गुन गायन अवधनाथ सीतापति सुन्दर । दीनबंधु रघुबंस पुरंदर ॥ सिव सनकादिक अंत न पावहिं । नर मुषते केहि विधि गुन गावहिं ॥ महिमा निगम कहत नहि आवे । सेस सहस मुषते गुन गावे ॥ सुक सारद नारद से पाठक ॥ हनोमान गावत गुन नाटक । वाल्मीक रामायन कर्ता । राम चरित्र पाप के हर्ता ॥ अष्टादश पुरान श्री भारथ । माषेउ व्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥

End—पारथ नहि जीते अपने बल । जो नहि कृष्ण करै रन में छल । जहं भीष्म सर सय्या लीन्हैा । तंबू एक बड़ो पड़ो कै दीन्हो । गंगासुत जब कीन्हो मैानहि धर्मराज आये तब भैानहि ॥ दो० ॥ पांडव दल आनंद भे जीति चले मैदान । अर्जुन के रथ सारथी आप भद्दे भगवान ॥ धन साहस्र देइ जो दानू । कासी बैठे सुने पुरानू । जो फल होई सिद्धि के दरसे । जो फल होइ संभु के दरसे । जो फल होइ एकादसि कीन्हे । जो फल होइ भूमि के दीन्हे । सो फल है रन प्रान गंवाये सो फल होई ब्रह्म के ध्याये ॥ सो फल कोटिन विप्र जिवाये । सो फल होइ अर्थ सुनि पाये । व्यास देव भारथ के करता । नासे पाप पुन्य के बढ़ता । दोहा कृष्ण विष्णु गोविंद प्रभु कीजै सदा बषान । भीष्मपर्व भाषा रचो सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री महाभारथे भीषम पर्व भाषा कृते । अष्टादसोध्याय श्री श्री महापुराणे भाषा पर्व सम्पूर्णम् । फागुन मासे शुक्लपक्षे तिथैा परिवा संवत १९२२ लिषं जंगबहादुर रैकवार जो देषा सो लिषा मम दोष नाहीं । साध संत के बंदगी ब्रह्म के प्रनाम जो कोई बाचे प्रेम ते ताको सीता राम ।

Subject—महाभारत के भीष्म पर्व की कथा ।

No. 363(*c*). Bhīshma Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—68. Size—10¼ × 6 inches. Lines per page—19. Extent—1,300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of

Composition—Samvat 1718 or A. D. 1661. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—आदि अंत के अवतरण No. 363 (b) के अनुसार। अंत में कातिक कृष्णपक्षे एकादश्यां तिथा चन्द्रवासरे पुस्तकं समाप्तम् ॥ शुभ संवत् ॥ माशी ॥ शाके ॥ श्रीकृष्ण को जै। इति

Subject—पृ० १—९ तक—कौरव पांडव की सेना की तैयारी और अर्जुन का वैराग्य, कृष्ण का समाधान करना, फिर भीष्म से आशीर्वाद पाना।

पृ० १०—१६ तक—दोनों सेना का युद्ध वर्णन, अर्जुन और भीष्म के युद्ध का वर्णन।

पृ० १७—२२ तक। शंख का युद्ध के लिये तैयार होना। भीष्म शिखंडी युद्ध वर्णन। अर्जुन का कौरव सेना से प्रबल युद्ध करना। शंख और द्रोण का युद्ध वर्णन। युद्ध विश्राम।

पृ० २३—३२ तक। धृष्टद्युम्न और उत्तरा का द्रोण से युद्ध वर्णन। अर्जुन व भगदत्त युद्ध वर्णन। भगदत्त का वध।

पृ० ३३—५० तक। भीमसुत और अलम्ब युद्ध वर्णन। लाक्षागृह वर्णन। अर्जुन व भीष्म का युद्ध। भीष्म का सब को निश्शस्त्र करना। हनुमान व भीष्म संवाद।

पृ० ५१—६८ तक। भीष्म का कृष्ण को शस्त्र गहवाने की प्रतिज्ञा करना और उसका पूरा होना। अर्जुन का प्रबल युद्ध। धर्मराज और कृष्ण का भीष्म के समीप जाना और मृत्यु ज्ञात करना। शिखंडी व भीष्म का युद्ध। अर्जुन का बाण मारना और भीष्म का हत होना तथा अर्जुन का शरशय्या बनाना। कथा का फल वर्णन।

No. 363(d). Śalya Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—10 × 5 inches. Lines per page—11. Extent—265 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1902 or A.D. 1845. Place of deposit—Mahārāja Bhagawān Baksha Siṁha, Rājā of Ameṭhī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सैलपर्व ॥ दोहा ॥ व्यासदेव पद बंदिये जा मुष वेद पुरान ॥ सैलपर्व भाषा रचे सबलसिंह चौहान ॥ जूझे करन

जक अस पाये ॥ दुरयोधन अस वचन सुनाये ॥ हा हा मित्र परम सुषदायक ॥ महा बुद्धि करवे के लायक ॥ क्षत्रीधर्म मित्र तुम पाला ॥ यह सब दोष हमारे माला । बल से सके न अर्जुन मारन ॥ छल से बधे जगत के तारन ॥ अब काको सेनापति करिये ॥ जाके बल भारथ में लरिये ॥ कृतवर्मा तब कहेउ विचारो ॥ राजा सुनिये बात हमारो ॥ जब पंडो निज देसै पाये । कै बसिष्ट जदुनाथ पठाये ॥ मांगे पांच गांउ नहिं दीन्हें ॥ सब विधि पांडु निरादर कीन्हे ॥ जदुपति कहेव न कीन्हेव राजा । तब श्रीपति यह भारथ साजा ॥ अब करुना कीजे केहि काजा ॥ सहसा सदा बूझिये राजा ॥ धीरमान नृप परम सयाने ॥ तिन कर गुन नहिं जात वषाने ॥ सदाधर्म अपने मन राषे ॥ सत्य छाड़ि असत्य न भाषे ॥

End—पृथीपति दुरयोधन लक्ष क्षत्रवर साथ ॥ लक्ष्मी जाके कांध पर तेहि विधि कीन्ह अनाथ ॥ तब नृप मन महं कीन्ह विचारा ॥ पैरी रुधिर जाउ अब पारा ॥ अस्त्र सनाह पोलि सब डारे ॥ लैकै गदा नृपति पगुधारे ॥ यहि विधि भारथ भयो महारन ॥ परी लोथि पर लोथि हजारन ॥ बार पार नहि सूझै काहू ॥ रुधिर नदी अति बहिय अथाहू ॥ पैरत नृप संका नहि मन मे ॥ बहुत लोथि अभिरत है तन में ॥ कबहुंक केश चरन अरुझावे ॥ पैरत थकै थाह नहि पावै ॥ जहां द्रोण गड़े वंड षंभा ॥ अभिरेव तहां धरे कर थंभा ॥ गहि के षंभा किये विश्रामा ॥ जिय में सोच जाउ किमि धामा ॥ पकरे लोथि बहुत मझियारा ॥ बृद्धि जब्त सहि सकत न भारा ॥ विधि वस एक लोथि तब गहेऊ ॥ बूड़ो नहीं भार तिन सहेउ ॥ चलो लोथि सो रुधिर हिलोरति ॥ अभिरत मृत्यु गदा सिर फोरत ॥ बहुत कष्ट ते उतरेउ पारा ॥ तब अपने मन कीन विचारा ॥ दोहा ॥ कैान वीर की लोथि यह दियैा निवहि निदान ॥ सैलपर्व यहि विधि कहेव सबल सिंह चैाहान ॥ इति श्री हरि चरित्रे महाभाथे सवलपर्वे भाषा कृत दुतियेमो अध्याय ॥ २ ॥ मिती बैशाष सुदी ॥ ६ ॥ संवत ॥ १९ ॥ २ ॥

Subject—महाभारत के शल्यपर्व की कथा ।

No. 363(*e*). Śalya Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—15. Size—$10\frac{3}{4} \times 6$ inches. Lines per page—18. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A.D. 1667. Place of deposit—Babū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur (Bhinaga), District Bahrāich.

Note—आदि अंत No. 363(*d*) के अनुसार ।

No. 363(*f*) Sabhā Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—35. Size—9½ × 8½ inches. Lines per page—20. Extent—1,750 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadu Nātha Baksha Siṁha, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सभापर्व कथा महाभारत लिख्यते ॥ दोहा ॥ सुमिरि व्यास गनपति चरन गिरिजा हरि भगवान ॥ सभापर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥ सत्रह सै सत्ताइस संवंत सुघ मनमास। नौमी गुरु पख पक्ष सित भय यह कथा प्रगास ॥ चौ० ॥ अब नृप कथा सुनहु मय जोई। तब हित हेतु कहत मैं सोई ॥ कुरु पांडव सोहहिं दोउ पाछे। जस समाज बरनत मैं पाछे ॥ इन्द्र प्रस्थ दोउ बसे सुखारो ॥ मति दिग नंद राज्य अधिकारो ॥

End—लखि कुंभो कच भूप रथ आतुर वाहन लाग। गजि गजि उचाट कर गयो नागपुर त्याग ॥ सबलसिंह सुनि कहि विदुर मुख को प नाथ हलवाल। होई उदास सकुचो करन बोलि लीन ततकाल।

इति श्री महाभारत सभापर्वे भाषा कृते पांडव बन गमनो नाम सप्तमोऽध्याय।

माघमासे शुक्ल पक्षे तिथैा प्रतिपदायां शुक्रवासरे लिख्य दुर्गाप्रसाद संवत् १९३२ राम राम।

Subject—पृ० १—१७ तक—निर्माण संवत्, प्रार्थना, शिशुपाल वध।
पृ० १८—सकुनि दुर्योधन संवाद।
पृ० १९—२०—कुरुओं को धृतराष्ट्र से भेंट।
पृ० २१—२४—जुआ होना और पांडव का हारना।
पृ० २५—२९—सभा में द्रोपदी आदि का संवाद।
पृ० ३०—३१—भीम प्रतिज्ञा।
पृ० ३२—३५—पांडव बन गमन।

No. 363(*g*). Sabhā Parva by Sabala Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—11 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—1,485 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A.D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1936

or A.D. 1879. Place of deposit—Ṭhākura Jai Baksha Siṁha, Miṭhaurā, Post Office Kesarāgañja, District Bahrāich (Oudh).

Note—उद्धरण व विषय No. 363 (*f*) के अनुसार ।

तिथि—संवत १९३६ शाके १८०१ चैत्र मासि कृष्णपक्षे तिथौ दुइज सोम-वासरे हस्त नक्षत्रे लिषतं दलजीत सिंह रैकवार के ।

No. 363(*h*). Drōṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—12½ × 5¾ inches. Lines per page—22. Extent—1,100 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ द्रोनपर्व लिष्यते ॥ चैापाई ॥ श्री गुरु चरन दंडवत करिये । जा प्रसाद भवसागर तरिय ॥ बन्दैा रामचन्द्र रघुनन्दन महाबीर दसकंध निकंदन ॥ दीरघ बाहु कमल दल लोचन ॥ गनिका ब्याध अहिल्या मोचन ॥ ब्यास देव कलि पातक हरता । चारिवेद श्री भारथ करता ॥ श्रोता जनमेजय गुन सागर । महाबीर कुरु बंस उजागर ॥ उत्तम नगर चंद्रगढ़ साजा । भूपति मित्रसेन तहं राजा ॥ दोहा ॥ रघुपति चरन मनाइ कै ब्यास देव धरि ध्यान । द्रोन पर्व भाषा रचत सबल सिंह चैाहान ॥ १ ॥ चै० ॥ तब भीषम सर सेज्या लीन्हेउ । दुर्जाेधन तब अति दुष कीन्हेउ ॥

End—दीनबंधु जाके रथ सारथ । मारि सकै के रन मैं पारथ ॥ कुरुपति लरत सैनबल कारन । मेरे बल तुमही जगतारन ॥ सो सुनि कृष्न बहुत सुष माने । नृप कैां परम साधु करि जान्यैं ॥ दुर्याेधन तब करन बुलायो । .... । तुम बल हम यह भारथ ठाना । मित्र सो सबै आइ नियराना ॥ मुकुट बांधि सैनप ह्वै लरिये । .... । सो सुनि करन कहत अस जागे । दुर्याेधन राजा के आगे ॥ नृप निरषहु मेरो पुरुषारथ । पंडैा सैन बधैां रन पारथ ॥ दुइ दिन रन मेरो सिर भारा ॥ निहचै अर्जुन करैां संहारा ॥ सो सुनि दुर्याेधन सुष पायो । सैनापति करि मुकुट बंधायो ॥ दोहा ॥ द्रोनपर्व भाषा रचैा सबल सिंह चैाहान । पंडव के रक्षक सदा भक्त बस्य भगवाना ॥ इति श्री महाभारते द्रोनपर्व भाषा कृते अष्टमो अध्याय ८ संपूर्ण मस्तु ॥ पुसमासे कृष्ण पछे द्वादस्यंम तिथौ सम्वत् १९०० श्री राम ॥

Subject—पृ० १—१२ तक । भीष्म के मारे जाने पर द्रोण को सेनापति बनाना और चक्रव्यूह युद्ध व अभिमन्यु बध वर्णन ।

पृ० १३—३७ तक—अर्जुन की जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा, दुर्योधन से सलाह, द्रोण का रक्षा करना, कृष्ण का छाया कर धोखा देना और अर्जुन का जयद्रथ को मारना। युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना।

No. 363(*i*). Drōṇa Parva by Sābala Siṁha. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—12 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—1,136 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jaya Baksha Siṁha, Village Miṭhaurā, Post Office Kesaragañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—अथ द्रोनपर्व लिख्यते ॥ चौ० । श्री गुरुचरन दंडवत करिये। जेहि प्रसाद भवसागर तरिये। बन्दौ रामचरन रघुनंदन महावीर दसकंध निकंदन। करि कर वाह कमल दल लोचन। गनिका व्याध अहिल्या मोचन ॥ व्यास देव कलिकल्मष हर्ता। चारि वेद औ भारत कर्त्ता। श्रोता जन्मैजे गुन सागर। महावीर कुरवंस उजागर ॥ नृप सोइ पाइ रिषेसुर ग्यानो। भाषत महा सुधा समधानो ॥ सत्रह सै सत्ताईस जानो। सो संवत यहि भांति बषानो। शुक्ल पक्ष अश्वनि के मासहि। तिथि षष्टौ कियो कथा प्रगासहि। उत्तम नगर चंद्रगढ़ छाजत। भूपति मित्रसेन तहं राजत। रघुपति चरन मनाइ कै व्यास देव धरि ध्यान। द्रोणपर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥

End—चौ० । सो सुनि द्रोन पुत्र कियो क्रोधहि। पांडौ सहित बंधु सब जोधहि ॥ धृष्टद्युम्न मारौ मैदानहि। तौ पित्रहि देहौं जलपानहि ॥ यह कहिकै कछु मासउ दैनहि ॥ काल्हि करन सेनापति सैनहि ॥ दुइ दिन करन सेन के रच्छक। महामारु करिहौं परतच्छक। सुरपति सकति लियो या कारन। करन योर अरजुन कर मारन। जो अर्जुन को देषन पैहै। ब्रह्म फांसते कौन बचैहै। दोहा ॥ धर्मराज यहि विधि कही कहिये आनंद स्याम। पांडौ संकट परै जब तुम रच्छक सुषधाम ॥ चौ० ॥ दीनबंधु जाके रथ सारथ। मारि सकै को रन मैं पारथ ॥ कुरुपति लरत सैनबल कारन। मेरे बल तुमहो जगतारन ॥ सो सुनि कृष्ण बहुत सुष मानो। नृप को परब साधु करि जानो। दुर्जोधन तब करन बोलाये। करि आदर आसन बैठाये। तब बल मैं मारथ रन ठानो। सिर सो समै आइ नियरानो। मुकुट बांधि सेनापति हुजै। प्रातहि जैत पत्र नृप लीजै ॥ सो सुनि करन कहन यह लागे। दुर्जोधन राजा के आगे ॥ नृप देषो मेरो पुरुषारथ। पांडौ सैन बधैं नृप

पारथ ॥ दुइ दिन रन मेरे सिर मारहिं । निहचे अर्जुन करैं संहारै ॥ सो सुनि दुर्जोधन सुप पायो सैनापति के मुकुट बंधायो ॥ दे।० ॥ द्रोनपर्व भाषा रचो सबल सिंह चोहान पांडव के रक्षक सदा भक्तवश्य भगवान । इति श्री महाभारते द्रोन पर्वं भाषा कृते सप्तमोध्याय सम्पूर्णम् लिषा दलजीत सिंह रैकवार संवत १९३२ सावन मासे कृष्णपक्षे तिथै द्वादस्यां गुरुवासरे शाके १७९५ राम राम ।

Subject—महाभारत के द्रोण पर्व की कथा ।

No. 363(j). Gadā Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—9½ × 8½ inches. Lines per page—15. Extent—250 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1727 or A. D. 1670. Date of manuscript—Samvat 193 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Baksha Simha, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—चैा० ॥ गदापर्व अब करत बषाना । दुर्योधन मन में अनुमाना ॥ अंधकार में गयो न चीन्हा । मुकुट चोप मुख निरखै लीना ॥ लछन कुंवर चीन्हि जब पायो । करुना करत नृपति मनलायो ॥ जूझे पुत्र हमारे कामहि । कहो कहा जाये कहि धामहि ॥ ऐसे तुम सपूत संसारा । मुष परे मोहि पार उतारा ॥

End—भारत सुने अंत फल सको कहो नहि जाय । अंत वास बैकुंठ लहि दरश देहु जदुराइ ॥ इति श्री महाभारते गदापर्वं भाषा कृते सवल सिंह कृतो समाप्तम् शुभ मस्तु बैशाष मास शुक्लपक्षे तिथा चतुर्दश्यां गुरुवासरे लिषितं दुर्गा पाठक डुंगेपुरवा के याद्दशं पुस्तकं दृष्ट्वा ताद्दशं लिषितं मया । यदि शुभम् मशुभम वा मम दोषो न दीयते ॥

Subject—भीम का जरासंध की जंघा तोड़ना श्रैार धृतराष्ट्र का भीम से मिलने के लिये कहना श्रैार कृष्ण का बचाना ।

363(k). Gadā Parva by Sabala Simha Chauhāna. Substance—New paper. Leaves—7. Size—10¾ × 6 inches. Lines per page—18. Extent—100 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nagarī. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Simha, Lavedapura, Bhinagā Rāja, (Baharāich).

Note—आदि अंत No. 363(j) के अनुसार ।

No. 363(*l*). Udyōga Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—2,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Jadunātha Bakhsha Siṁha Tāluqēdār, Hariharapura, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ विधि हरिहर गणपति गिरा सुर गुरु पाइ नियोग । सबल सिंह कहि भनत पर्व उद्योग ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह रिषि राइ सुनहु कुरुकेतु । कथा सुमग मुद मंगल हेतु ॥ २ ॥ जब हरि धर्मराज पहं पाये । मिलत हृदय प्रति आनंद छाये । गहे चरन भीमादिक भाई । बैठे प्रति प्रसन्न अतुराई ॥

End—करौ अकौरौ भूमि सब छत्र परो तब शोश ।
बचै न संकर सत मोहि जो राखै अज ईश ॥
भये मुदित मन धर्म सुत सुनि हरि गिरा प्रमान ।
भनित पर्व उद्योग यह सबल सिंह चौहान ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वे भाषा कृते तुं सप्तमोऽध्याय ॥ ३० ॥ वैसाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ अष्टम्यां शुक्रवासरे श्री संवत् १९३१ शाके १७ ॥ राम राम ।

Subject—महाभारत के उद्योगपर्व का अनुवाद ।

No. 363(*m*). Karṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—13×5 inches. Lines per page—22. Extent—440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1724 or A. D. 1667. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Dalajita Siṁha, Village Jālimasiṁha kā Purwā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कर्णपर्व लिष्यते ॥ प्रथमहि कीजै गुरुहि प्रनामा जेहिते होइ सिद्धि सब कामा । बंदो रामचन्द्र के पाया । सीता पति रघुबर कै दाया । महिमा अगम कोऊ नहि जानहो । परम भक्ति बंदो हनुमानहो ॥ सुर गुरु वार क्वार को मासा । तिथी एकादसी कथा प्रकासा ॥ रघुपति चरन मनाइ के व्यासदेव धरि ध्यान । कर्नपर्व भाषा रचो सबल सिंह चौहान ॥

गुरु द्रोन जूझे मैदानही। दुर्जोधन तब आप बखानही॥ द्रोनो करन आलोच्छे कूओ। और अनेक चढ़े ढिग अओ। अब केहि के ढिग मुकुट बंधैये। जेहर जीते पत्र बांधो पैये॥ दीन पत्र कहो नृप सुन लीजे। आप सोच केहि कारन कीजै॥ को मेरे सिर दीजे भारा। नाहिं तो करौ करन सिरदारा॥ रवि सुत करन महाबल भारो। अर्जुन के समान धनुधारो॥ गुरु सुत दोनो करो प्रनामा। तब राजा यहि भांति बखाना॥ कहो करन कुरुनाथ भुवरहो। जो मोकहरन सौंपतो भारहो॥

End—करन का बाण उड़ाना जबहीं। कौरव निज दल पाये तब ही॥ पांडव पाये रवि सुत पासा। आतो ठोंकत ऊभो स्वांसा। राय युधिष्ठिर अंक मैं लाये। सहदेव नकुल अब बंधव पाये। अर्जुन कहो संग मैं जरिहो। भीम कहो जीके का करिहो। अन दाहो भुंइ खोजो भाई। करन के चिता समारहु जाई॥ वासुदेव सुत हेरन तब आये। बिन दग्धो छित कतहूं न पाये। देखा हेरि सकल भुहारी कहो वसुधा न रही बिनु जारी॥ सब पांडव कारन करहिं कौन कुमति विधि दीन करन बीर अरु बंधु यह मारि कौन गति कीन्ह॥ भीम हथेरी चिता बनायो। करन दाह लै तहां दिखायो। रोवहि धरनो औरु अकासा। रन बन रोयत रोवत तासा॥ रोवहि सब पशु पंखो ब्याला। कहिये काह दई के ब्याला॥ रन मैं करन नाउ कै लोना। अमर मतो पहिले पहिले जिउ जोना॥ रकहो संग असेर सुभ स्वर्गलोक तिन लोन। करन वीर अस बंधु वा जनम सुफल करि दीन। इति श्री महाभारते करनार्थ भाषा कृते चतुर्थेनो अध्याय समाप्त संवत १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे लिखो नैमियं चंद्रवासरे॥

Subject—कर्ण का अर्जुन के हाथ युद्ध में मारा जाना, पांडवों का रोना, अर्जुन का यह कहना कि हम कर्ण के साथ जल मरेंगे, भीम का यह कहना कि अब जीना व्यर्थ है। श्री कृष्ण भगवान का समझाना, भीम का बिना जली भूमि कर्ण की चिता के लिये खोजना और उसका न मिलना, अंत में अपनी हथेली पर चिता बनवा कर कर्ण को जलाना, उसकी स्त्री का सती होना आदि।

No. 363(*n*). Karṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Siṁha, Lavedapur, District Bahrāich.

Note—शेष No. 363 (*m*) के अनुसार।

No. 363(*o*). Svargārohaṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—36, Size—

$9\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—700 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1931 or A. D. 1874. Place of deposit—Bābū Jadunātha Siṁha, Hariharapura, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ स्वर्गारोहण पर्व लिख्यते ॥ पार्वती सुत सुमिरौं तोहो। ज्ञान बुद्धि बर दीजे मोहो। सुमिरि शारदहिं सुमति बिचारो। करहु कृपा जाहुं बलिहारी ॥ निसु दिन मैं तुव चरण मनावौं। आज्ञा करु पांडव गुन गावौं ॥ पर्व अठारह भारत भयऊ। तापर अंत कथा यह ठयऊ ॥

End—बोध रूप ह्वै यहां मुरारी। सुनु जनमेजय कथा विचारी ॥ जुधिष्ठिर राजा दुर्योधन राई। यहि विधि हरि पुर की ठकुराई ॥ वैशंपायन जनमेजय आगे। कथा स्मान ज्ञान के पागे ॥ जो यह कथा सुनै अरु गावै। हरि पुर बसै इहां नहि आवै ॥ इति श्री स्वर्गारोहण कथा समाप्त शुभ मस्तु आश्विन मासे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ट्म्यां रविवासरे श्री संवत १९३६ लिपि दरबारी लाल कायस्थ।

Subject—महाभारत के अंत मे स्वर्ग को जाना।

No. 363(p). Svargārohaṇa Parva by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—$8\frac{1}{2} \times 4$ inches. Lines per page—16. Extent—400 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1734 or A.D. 1676. Date of manuscript—Samvat 1932 or A. D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jayabaksha Siṁha, Miṭhaurā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणाधिपतयेनमः ॥ अथ कथा सर्गारोहिनि लिख्यते ॥ अति उदार मंथन मदन दलन प्रबल दुष द्वंद। सबल स्याम आनंद घन प्रभु वृन्दा बन चंद ॥ चौ० ॥ कलि कराल पावन बल देषा। रहिहि न कतहूं धर्म के रेषा ॥ सब विचारि सम मंत्र दिढ़ावा ॥ कलो प्रभाव सम प्रभुहि सुनावा ॥ बान तरंग कलि अस्तुति कीन्हा। अम्या पाइ प्रभु मंगल दीन्हा ॥ व्यास देव जाना सब भेऊ ॥ अलष निरंजन है समदेऊ ॥ दो० ॥ बलभद्रहि उपदेसि प्रभु चले द्वोरिका माहि। कंचन महल विचित्र अति लुप्त भये जग माहि ॥ कथा अरंभ कोन तब व्यासदेव उपचार। परिछित सुत उपदेस सुनि कहो देवार विचार ॥ सुन राजा पांडव कुर षेता। एक एक नृप अहहि सचेता। महाबली मारेउ कुर षेता। सत भ्रात

दुर्जोधन मारे । अष्टादस छोहनि संहारे ॥ बधे भीष्म । द्रोन भगदंता । जुझे कर्ण आदि सावंता ॥

End—कृष्ण बहोरि सारथी बोलाये । दिव्य विमान साजि तब लाये जाहु लर्क दुर्जोधन राजा । आनहु वेगि सुभ साजि समाजा ॥ मैान वेगि चलि जमपुर आये । चलहु भूप जदुनाथ बोलाये ॥ चल्यो हर्षि तब संन्धन पाये । आये उत जहं मुनि समुदाये ॥ दे॰ ॥ हरि पग रेनु चढ़ाइ सिर । मुनिन्ह दंडवत कीन्ह । सत भ्राता जहंवा रहे तहां नृप आसन दीन्ह ॥ धर्मराय बोले बिलखाता कर गहि बांह उठे जन बाता ॥ देखहु बंधु द्रोपदी नारी । अपर चरित्र देखु बिस्तारी ॥ करन द्रोन अरु देखु गंगेऊ । जुत जुझे देखो सब केऊ ॥ दे॰ ॥ देखा सबहि जुधिष्ठिर पुजो मन के आस । अधिक सनेह कीन्ह सभा उर महं भये हुलास ॥ सबहि भेटि मिलि राजा बंधु सहित मुनि पास सत । भ्राता दुर्जोधन बैठि करहिं कविलास ॥ सर्गारोहनि कथा यह पांडव गै हरि पास । यह चरित्र जो भाषै बसै कृष्ण के पास ॥ सर्गारोहनि कथा जो गावै । सो बैकुंठ परम पद पावै । ईश्वरदास महा कवि भारी । यह चरित्र बर्नन बिस्तारी ॥ जेठ मास कवि बार दिन मृग नछत्र तिथि त्रै जानि । कथा समाप्त कीन्ह लिषि । धर्मसील को पानि ॥ सं॰ १९३२ कुवार मासे किस्न पछे ४ जैसो प्रति पाई तैसो लिषो ॥

Note—संवत १७३४ में इस लेख में दिये हुए जेठ मास कविवार दिन मृग नक्षत्र तिथि तृतिया शुक्रवार हो को तारीख़ ४ मई सन १६७५ को पड़ा था । उस दिन मृग नक्षत्र चालू था ।

No. 363(*q*). Mahābhārata by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—130. Size—8½ × 5½ inches. Lines per page—16. Extent—780 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1833 or A. D. 1876. Place of deposit—Rāmanātha Lālā, Kāśī.

Beginning—माता सरशती कंठ जो फुरइ । जोग जुगुती अक्षर जुरइ । प्रनवो आदि पुरुष को साथा । शैवो मातु पीता गुरु पाथा ॥ प्रनवो देव तैतीशो कोरी । छीज पाप न लागै खोरी ॥ कोठो की रानी प्रनवो दुइ कर जोरी । ज्ञान पंथ कर बिपद भावो शुरुवारो तोही ॥ नवे शकार देव कर देसु । परीकत पाय करार नरेसु । गंगा जमुना गावो शरोरा । बरी अर्थ गावहु मति धीरा । पर्व पछीम उतर के बारी । पाय मेठी बसे पुरवारी । पूरव काशी पछिम पयाग । तहवां पार गंग जल लाग । दखिन बिंद सो राज पहारा । उत्तर सबालाख

गोड़वारा । महुठ कोटो मनठोका माउ । तहा के ठाकुर ठकुरे माउ । सारद मातु जे सपने देखावा । गौरो पुत परतछोहो पावा ॥

End—छूटो नाहि मार मम लोहो । चलो लोथो महो कथोरहि हेरत । समोरत श्रोतु कागद गौ फेरत । बहुतक सौ हतरोर पारहो । बहुतक बूड़ो धार मझ धारहो । यहि विधि धर्मराज घर आये । जुग्जोधन तब मग्न मोधारे । कुनो दल नोजो नोश्रो मन धारे लागे करन लोग बोसरामा हो ॥ दोहा ॥ येहो भांथो जुधो भया करः को वो सत्य बलवान । एक देवस पुरमारथ सफल सिंह चैाहान । इसतो श्रो महाभारथे सत्य पर्व संपुर्न ॥ एक देवस जुधो—जे देखा सो लोख मम दोष न दीयते ॥ मिती कुआर सुदो २ के पत्र लोखा वार सोमवार । दुसखत सौंभु कायथ संवत १९३३ सन ११८४ ।

Subject—पृ० १ से ९६ तक-कर्णपर्व—कथा महात्म, अर्जुन कर्ण पुरुषार्थ, भीष्म, द्रोण कर्ण आदि के युद्ध को दिन मारिणो, दुर्योधन का स्वप्न, कर्ण से उसका उद्धार पूछना, कर्ण का महा कठिन संग्राम को प्रतिज्ञा करना । शल्य का कर्ण से अर्जुन को अजेय कहना, कर्ण का अपना उत्कर्ष वर्णन, श्रीकृष्ण का कर्ण के पण से चिंतित होना, छल से कर्ण के प्रचण्ड शस्त्रों के ले लेने का विचार करना । कृष्ण का कुंती के पास जाना, कुंती से पुत्रों के प्रति प्रश्न करना, कुंती का पांच पुत्रों का उत्कर्ष कहना, कृष्ण का उसके पुत्रों का भेद बतलाना, शल्य और कर्ण के जन्म की कथा कहना, कर्ण का परशुराम के पास पहुंचने को कथा का वर्णन । कालकूट धनुष का वर्णन । कर्ण का परशुराम से आशोर्वाद और श्राप पाना । कर्ण और दुर्योधन की भेंट, युद्ध, दुर्योधन का कर्ण को मित्र बनाना, कर्ण का विवाह, राज्य और मान तथा सेना आदि का पाना । कृष्ण द्वारा सब समाचार जान कुंती का प्रसन्न होना । कर्ण से मिलने के लिये उत्कंठित होना, कृष्ण का कुंती से कर्ण की प्रतिज्ञा और उसके पुत्रों की मृत्यु कहना और चुपके से कुंती को रहस्य समझा कर कर्ण के पास भेजना, पांच बाण मांगने को कहना, कुंती का कर्ण के दरवाजे जाना, प्रतिहारी से कर्ण के पास संदेशा भेजना, कर्ण का कुंती के यहां आने का विश्वास न करना, कर्ण का द्वार पर आना, कुंती को शिरनवा अभिवादन करना, भाव भक्ति से स्वागत करना, कुंती के आने का कारण पूछना, कुंती का कर्ण का जन्म वृतान्त कहना, कर्ण का दान देने की प्रतिज्ञा करना, पुत्र होने में अविश्वास करना, कुंती का क्रोधित होना, स्वप्न में मरने का शाप देना, कर्ण का चिंतित होना, कर्ण का कुंती से अपनी मया याचा का वर्णन करना, ग्लानि युक्त होना, मरने को ठानना, सूर्य का पिंडा मांगना, कर्ण को अपना पुत्र बतलाना । कर्ण का सूर्य से माता को पूछना, सूर्य का अग्निपट देना, उस पट को धारण करने

वालों को कर्ण को माता कहना, अनेक स्त्रियों का उसके धारण के लिये आकर जल मरना, कुंती का वस्त्र मांगना, कर्ण का अपयश से डरना, कुंती का निश्चय दिलाना, वस्त्र का मंगाया जाना, कुंती का धारण करना, स्तन से दूध को धार बहना, कर्ण को पोकर अमर होने को कहना, कर्ण का पुत्र रूप से पीने को दौड़ना, कृष्ण का ब्राह्मण वेष में छिपे रह कर पीने से मना करना, कुंती का सिंहासन पर बैठना, सब का हर्षित होना आनन्द के बाजे बजना, कर्ण की स्त्री का हर्षित होना, अनेक प्रकार का दान करना, कुंती का कर्ण को पांचो भाइयों से मेल कर राजसिंहासन पर बैठने का उपदेश करना और पांचों बाण मांगना, कर्ण की स्त्री का विकल होना, कुंती का उदास हो कर्ण से बोलना, कर्ण का कुंती को सान्त्वना देना, अपने को बड़भागी जानना, अंगार मती का आंसू डारने का हेतु कहना, कुंती से प्रार्थना करना, कुंती का कोधित होना, कुंती को बात सुन कर कृष्ण का प्रसन्न होना, कर्ण का बाण पर हाथ जाना, बाणों का कर्ण से पराये हाथ देने से मना करना, कर्ण को बाणों का उपदेश देना, कर्ण का बाणों को उत्तर देना, पांचों बाणों को कुंती को देना, कुंती का प्रसन्न हो बाणों को लेना, कर्ण का छल कर कुंती को उसके पास भेजने का भेद पूछना, अपनी कौरव पांडव प्रति प्रतिज्ञा का कहना, कुंती का आंसू डार कर रथ पर चढ़ कर चलना, कुंती का कृष्ण से अर्जुन को समझा कर कर्ण से मेल करने को कहना, मेल न होने पर वध का पापभागी कृष्ण को कहना, कृष्ण का अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करना, कुंती और कृष्ण का वार्तालाप। कुंती का कंपायमान होना, कृष्ण से अग्नि लगाने को कहना, बाण का जलाया जाना, कुंती का कृष्ण से पांचो बाण जलाने के लिये मांगना, कृष्ण का दूसरे पांच बाण लाकर देना, कर्ण के बाण को छिपा कर रखना, कुंती का सुभद्रा के पास रखना, कृष्ण का अर्जुन को जगाना, सोने के लिये फटकारना, निश्चिन्त सोने और न सोने वाले का वर्णन करना, अर्जुन का लड़ाई के लिये नाद घोष कराना, कर्ण के मारने की प्रतिज्ञा करना, कृष्ण का अर्जुन से कर्ण के बलका वर्णन करना, अर्जुन का कृष्ण के भरोसे अपना बल वर्णन करना, वर्णन की निन्दा करना, अर्जुन का उत्कर्ष वर्णन, रथ का रणक्षेत्र में आने के लिये घोष के साथ बाहर आना, शल्य का कर्ण के पास आना, लड़ाई के लिये उद्यत होने के लिये कहना, कर्ण को प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाना, कर्ण का रणविजय के लिये पुनः प्रतिज्ञा करना, कर्ण का स्नान करना, डुबकी लेते समय कृष्ण का अर्जुन कर्ण का सगा भाई कहना, कुंती की आज्ञा का पालन करना, अर्जुन का कृष्ण से कारण पूछना, कृष्ण का वर्णन करना, अर्जुन का विरक्त होना, कृष्ण का अर्जुन का उत्कर्ष बढ़ाना, अर्जुन विश्वसेनी

का युद्ध, अर्जुन का बाण प्रहार करना, विश्वसेनी का पांडव दल पर बाण वर्षा कर सब को विकल करना, कृष्ण का गरुड़ का आवाहन करना, गरुड़ का अमृत लाकर सब को जिलाना, पांडवों का क्रोधित हो लड़ाई करना, अर्जुन और विश्वसेनी का घोर युद्ध वर्णन। अर्जुन का विश्वसेनी का सिर काटना, शिर का धड़ में पुनः जाकर लगना, कृष्ण से कारण पूछना, कारण बताना, विश्वसेनी के मरने की युक्ति बतलाना, अर्जुन का मारना, विश्वसेनी का शिर भार द्वारा कर्ण के पास भेजना, कर्ण का देख कर दुःखित होना, श्रंगारमती का विलखना।

शल्यपर्व-पृ० ९७ से-१३० कर्ण के मारे जाने पर दुर्योधन का विलाप करना, कृतवर्मा का धर्मोपदेश देना, शकुनी का दुर्योधन को समझाना, शल्य को सेनापति बनाना, शल्य का प्रतिज्ञा करना, लड़ाई के लिये मैदान में आना, पांडवों का मैदान में आना, दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन, शल्य का बाण वर्षा वर्णन, अर्जुन का बाण वर्षा वर्णन, अन्य योद्धाओं का परस्पर युद्ध वर्णन। अर्जुन शल्य का परस्पर युद्ध वर्णन, अर्जुन द्वारा सारथ और रथ का विनष्ट किया जाना, शल्य का क्रोधित हो अन्य रथ पर जाना, बाण वर्षा कर पांडव दल को विकल करना, भीम और द्रोणी का घोर युद्ध वर्णन, कृतवर्मा और नकुल का युद्ध वर्णन, घोर युद्ध वर्णन; भीम का गदा लेकर आना, पांडव दल की अधिक सेना का मारा जाना, घोर युद्ध वर्णन, दोनों दल का पैदल युद्ध वर्णन, पुनः रथ की लड़ाई अनेक प्रकार का असगुन होना, धर्मराज (युधिष्ठिर) का शल्य पर शक्ति का प्रहार करना, शल्य का मारा जाना, पांडवों का घर आना, दुर्योधन आदि का घर जाना, लेखक का नाम, लिखने का संवत।

No. 363(r). Mahābhārata Bhāshā by Sabala Siṁha Chauhāna. Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size—9¼ × 8¼ inches. Lines per page—40. Extent—5,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of manuscript—Saṁvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Paṇḍitā Rāmasundara Miśra, Village Kaṭāgharī, Post Office Akaunā (Bahrāich).

Beginning—पोथी महाभारत के।

दोहा—व्रत फलंग अस भेद करी जत फलं गउदान। तत फलंग भारथ कथा सबल सिंह चौहान॥ १॥ यादउ वादे होइ यम आगम निगम पुरान। भारथ कथा सुनंमे यत कासी स्नान॥ २॥ श्री दुरजोधन वाच॥

साजहु तुरित जाइ सब कटक असंख समूह। सजि ह्वै उल्टो आवहु मत हस्ती गज जूह ॥ ३ ॥ चौ० ॥ सुनि कै द्रोन कही चिहसाई। यहसैं मंत्रन्ह भय अनुआई ॥ सकुनी क मंत्र सदा तुम लेहु। हम पाचन्ह कहं दोष न देहु ॥ पांडव पांचउ आनिजे आउ। लाहा गृह तुम आग लगाउ ॥

End—भारथ कथा सुनहि अरु गावै। ताके निकट पाप नहि आवै ॥ जे फल सबै तीरथ स्नाना। जे फल कोटिन्ह कन्या दाना ॥ जे फल जग्य धरम के कीन्हे। जो फल लक्ष गाय के दीन्हे ॥ जो फल होइ सरन के राखे ॥ जो फल सदा सत के भाखे ॥ जो फल पिंड गया महं दीन्हे। सो फल यहि भारथ सुनि लीन्हे ॥ दोहा—भारथ सुनै अनंत फल सो तऊ कहा न जाइ। अंत बसहिं बैकुंठ महं दरस देहि जदुराइ ॥ ४८४ ॥ महाभार्थ पूरन कियो सुद्ध बनाइ विचारि। पंडित जन सो विनय करि आखर पढ़ब सुधारि ॥ ४८५ ॥ इति श्री महाभारथ संपूर्न किया जो प्रति मैं देखा सो लिखा मम दोषो न दीयते संवत १८४४ मिति कुआर सुदी नवमी ९ बार सुक्रवार के संपूरन ॥ लिखा सीताराम उमर के सो जानबे सुभमस्तु श्री रस्तु ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—अभिमन्यु युद्ध वर्नन।

„ १३—१६ „ उद्योगपर्व वर्नन

„ १७—६१ „ भीष्मपर्व वर्नन

„ ६१—१०५ „ द्रोन पर्व वर्नन

„ १०५—१४२ „ कर्न „ „

„ १४२—१५० „ शल्य „ „

„ १५१—१६० „ गदा „ „

No. 363A(*a*). Bhāgawata Bhāshā, Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—239. Size—8½ × 7 inches. Lines per page—36. Extent—6,480 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī and Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1810 or A. D. 1753. Place of deposit—Paṇḍita Rāmasundara Miśra, Village Kaṭāghari, Post Office Akaunā, District Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भाषा भागवत लिख्यते ॥ श्री राधा कृष्णायनमः ॥

श्लोक—यालं नील तनुं सरोज नयनं लावण्य कोटि स्मरं दीप्ति चारु मुखे विलास कुशलं वंसादि वदित्सवं ॥ गोपाल धूत भूधरं जन हितं च विश्वंभरं माधवं। गोपीनां नयनं चकोर शशिना वंदे जसोदा सुतम् ॥ १ सरल पद्म वक्रं, लसत भृंगकेशं, तड़ित पीत वस्त्रं घनश्याम वेशं ॥ वलित भूषणं चारु गुंजा वतंसं जनेसं सुरेशं रमेशं हि वन्दे ॥ २ ॥

दोहा—अति उदार मंगल सदन दलन प्रबल दुखदंद। सबल स्याम सेवक सुखद प्रभु वृन्दावन चन्द्र ॥ १ ॥

End—छंद—हरिचरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए। तजि मान पति निर्वान नाम प्रमान करि हित मानिए ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पद रज सेवहीं। को कहे जड़ मति मूढ़ मानव आन मानत देव हीं ॥ दोहा—सबल स्याम भव भय हरन पावन परम उदार। कृपासिंधु सरनद सुखद व्यापक जगदाधार ॥ ८६५ श्लोक—कथनं करोति करयानं केस कुंडल केसरी। कालिन्दी कूल कल्लोस्थे कोलाहलं कुतूहलं ॥ इति श्री हरिचरित्रे दशम स्कंधे महापुराने भगवते परम रहस्यां वेलासि भाषा सबल स्याम कर्ता चौरानवे खंड कथा लिखितं रामबकस रैकवार मौ० नन उपरा के जस देखी वैसी लिखी मम दोस न दियते कथा समाप्तं सुभ मस्तु ॥

संवतु १८८० समै नाम असाढ़ सुदी दुइज रोज सुकवार ॥

Subject—पृ० १—२३९ तक—भागवत संस्कृत दशम स्कंध का भाषानुवाद ॥

Note—निर्माण काल तथा कारण:—

संवत सत्रह से सोरह दस। कवि दिन तिथि रजनीस वेद रस ॥
माघ पुनीत मकर गत भानू। असित पक्ष ऋतु सिसिर प्रमानू।
प्रथमहि वरनौं नृप नृप देशा। तब हरि कथा करौं परवेसा ॥
रचेउ विरंचि नगर एक पोढ़ा। तासु नाम जग विदित अमोढ़ा।
अवध नगर तें पूर व सोहै। निरखि रूप सुर मुनि मन मोहै ॥
तहं रह वीर सिंह धरणी धर। तरनि वंस अव तंस नृपति वर।
वरनौ बहुरि भूप कर साजू। नगर समाज सहित जुवराजू ॥
मति अति विमल भक्ति रस पागो। वीर सिंह हरि पद अनुरागो।
सहित सनेह कृपा अधिकाई। पुनि हरि भक्त जानि लघु भाई ॥
कहेउ दसम हरि कथा बनावहु। सगुन रूप कर भेद सुनावहु।

No. 363A(b). Bhāgawata Bhāshā Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—

265. Size—12 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—4,372 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1818 or A. D. 1761. Place of deposit—Ṭhākura Dalajita Siṁha, Village Jalima Siṁha ká Purawā, Post Office Kesargañja, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः मातु दीन्ह मैं तुमहि जनाये । मानुष देह यानि नहिं पाये ॥ दोहा । पुत्र भाव करि दम्पती ब्रह्म भाव जिय जानि । परम प्रेम बस समुझि मोहि मम गति सुलभ सयानि ॥ यह कहि निज माया हरि टेरी । सोइ प्राकृति शिशु भयऊ बहोरी ॥ रोवन लगे बाल भव हारी । जगमोहनी प्रकृति बिस्तारी । कह देवकी सुनहु प्रिय प्राणा । चहत होन यह प्रगट बिहाना । यहां तुम्हारण सहज सहाई । अहं राखिय यह तनय छिपाई ॥ देषहि जबहि कंस यह बारा । बधहि बेगि नहिं करहि बिचारा । गोकुल नंद गोप हितकारी । तहं रहि है यह तनय सुकारी ॥ लै तहं जाहु बार जैानि लावहु । सुतहिं सैापि तुरत तुम आवहु ॥ सुनि प्रिय बचन गोपाल उठाये । पुनि बसुदेव अंक लै धाये ॥ लै तब त्वरित चले बनवारी । घन तम में घनो अंधियारो उघरे बज्र कपाट निहारे । प्रभु प्रभाव मोहे रषवारे ॥

End—यहि कहि प्रेम बिवस भइ भोरी । दीन बचन फुनि कहेउ बहोरी । कृष्ण कृष्ण भव भंजन भारा । सरणद अखिल लोक करतारा ॥ पाहि पाहि प्रभु त्रिभुवन पालक । कठिन कलेस सहित सह बालक ॥ तव पद तजि नहिं सरण कृपा कर । जन मन कंज प्रकास प्रभाकर ॥ परम उदार चरित फल दायक । बिधि श्रुति शक सेइबे लायक ॥ दोहा ॥ कृपासिंधु भव भयहरण सुषदाय भगवान ॥ मायापति निर्माण पति सरणद सील निधान ॥ यहि बिधि समुझि स्वजन घन स्यामहि । जपत अखिल जग जन येहि नामहि ॥ देत कर्म फल करत बिभागा ॥ करत प्रवेस सहित अनुरागा ॥ बन्दौ तासु चरण रज पावन । जग निवास अघ अखिल नसावन ॥ नृप मति समुझि महामति माना । बिदा भयउ सिर नाइ सुजाना ॥ सुहृद वर्ग पहं मांगि रजाई । पवन गवन रथ त्वरित चलाई ॥ मथुरा भयऊ महां बन माली । कही सकल कुरुराज कुचाली ॥ छंद ॥ कुरुराज कुमति कुचालि प्रभु पहं दान पति सब बिधि कही । सोइ सुन्यौं सम्यक बचन कृपानिधान हरि मान्यो सही ॥ प्रभु हृदय धरि हित पांडवन प्रमुदित जिन गृहको गये । चढ़ि ब्योम यानि बिमान कीरति बिबुध बुध गावत भये ॥ सबल स्याम आरति हरण दीनबंधु भगवान । सुनहु राम कुरुबंस मनि हरि तजि सरण न आन ॥ इति श्री हरि चरित्रे दसमस्कंध महापुराणे भागवते परम रहस्ये संहितायां वयासिक्या

भाषायां सवल स्याम कृते पूर्वार्द्धं समाप्तं संवत् १७३३ समय फाल्गुन सुदि एकादस्यां रविवासरे तरुण तारके ताले। लिषा संवत १८१८ ठाकुर प्रताप सिंह ॥

No. 363A(*c*). Bhāgawata Daśam Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—81. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—28. Extent—3,360 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhawārā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरवेनमः ॥ सर्व देवायनमः ॥ मुंजा पीत पवीत चारु युगलं पाणी च पंकेरुहं। मुक्ताहार किरीट कुंडल युतं स्यामं प्रफुल्लाननम् ॥ गोविंदे परितः परीत मखिशं गोपोजनै सेवितं। नोत्वा वत्स प्रवत्स कान्त जगतं वंदे यशोदा सुतं ॥ दोहा—सवलस्याम प्रभु कमल पग भव भयहरन विधान। बंदौं चरण सरोज द्वै करत यथिल कल्याण ॥ १ ॥ चौ० ॥ कह मुनि सुनिय भुप मति माना। कथा पुनीत करौं सो गाना ॥ अस्ति प्राप्ति द्वौ सब गुन षानो। कंस महीपति के पटरानी ॥ निज पति निधन देखि दुष भारी। गई पिता गृह परम दुखारी ॥

End—जन्म देवकी गर्भ तुम्हारा। है यह वादमात्र संसारा ॥
थिर चरवृजिन हरन प्रभु कैसे। तिमिर तोष कहं रविकर जैसे ॥
व्रजपुर रमनि परम सुखदायक। पद श्रुति सक सेइवे लाइक ॥
भवनिधि जान चरनसुभ पावन। हरन पाप त्रै ताप नसावन ॥

छंद हरिगीतिका—हरि चरन पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिए। तजि मान पति निर्वान नाम प्रमान करि नित मानिए ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेविहीं। को कहीं जड़मति मूढ़मानव यान मानत देवहीं ॥ १ ॥ दोहा—सवल स्याम भव भयहरन पावन जन्म उदार। कृपासिंधु सरजद सुषद व्यापक जगदाधार ॥ ४२७ ॥

इति श्री हरिचरित्रे महापुराने भागवते दसमस्कंधे समाप्त सुभमस्तु ॥ जेठ सुदि १० को पुस्तक प्रारंभ किया आषाढ़ सुदि १३ को संपूर्ण भई ॥ पुस्तक लिषित शिवप्रसाद कायस्थ बलरामपुर के वासी पाठार्थ श्री महाराज कुमार भैया उमराव सिंह जीव के संवत १८७५ सन् १२२५ मोकाम मिनगा कोट ॥ ॥

Subject—पृ० १—७ तक—प्रार्थना, जरासंध युद्ध। मुचुकन्द द्वारा यवन वध वर्णन। पृ० ७—१६ बलभद्र विवाह, रुक्मिणी विवाह पृ० १६—२० सम्बरासुर

वध, स्यमंतक हरण, जामवती विवाह वर्णन और सत्यभामा विवाह वर्णन। पृ० २०—३५ तक—सतधन्वा, सत्राजित वध, रानियों का उद्धार, नरकासुर वध, कृष्ण रुक्मिणी, अनिरुद्ध ऊषा सम्वाद। पृ० ३५—४४ तक—नृगोप वर्णन। बलदेव विजय जमुना कर्षण। पौड्रक वध, द्विविद वध, साम्ब विवाह, जोगमाया दर्शन वर्णन। पृ० ४४—५४ तक—इन्द्रप्रस्थ में कृष्ण गमन, जरासंध वध, पांडव राजसूय यज्ञ वर्णन। भगवान नारद संवाद, दुर्योधन मानभंग। पृ० ५४—६४ तक—साल्व युद्ध वर्णन। सौभराज वध, बलदेव तीर्थ यात्रा वर्णन, बदखल वध, कृष्ण सुदामा सम्वाद वर्णन। पृथु उपाख्यान वर्णन। पृ०—६५—८१ तक। रुक्मनी पटरानी संवाद। वसुदेव नंद सम्वाद, मोक्ष वर्णन। भृगु मुनि दर्शन व द्विज कुमार वर्णन।

No. 363A(*d*). Bhāgawata, (Daśama Skandha) by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—194. Size—14×8 inches. Lines per page—60. Extent—6,500 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Date of manuscript—Samvat 1888 or A. D. 1831. Place of Deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Simha, Bhinagā Rāj, Bahraich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ बालं नीलतनुं सरोजनयनं लावन्य कोटिसरं। दीर्घ चारु मुखं विलास कुसलं वस्या दिर्वा पेतरम्॥ गोपालं धृत भुधरं जन हितं विस्वंभरं माधवं॥ गोपीनां नयने चकोर शशिनं वंदे यसोदा सुतम्॥ १॥ सरद पद्म वक्रं लसद भृंगकेसं। तड़ित पीतवस्त्रं घनस्याम वेसम्॥ चलत दृष्मं चारु गुंजा वतंसं। जनेसं सुरेसं रमेसं हि वंदे॥ दोहा॥ अति उदार मंगल सदन दलन प्रबल दुख द्वंद। सवलस्याम सेवक सदा प्रभु वृन्दावन चंद॥ १

सोरठा—गुरु पद पंकज धूरि प्रथम सीस निज राखि कर।
प्रभुजस बरणौं भूरि सुखदायक सब दुःख हरन॥ २॥
वंदौ वंदनीय अविनासी। बंदौ शिव कैलाश निवासी।
बंदौ गिरा गणेश षड़ानन। बंदौ सुर सुरेस सहसानन॥
बंदौ नारद श्रुति चतुरानन। बंदौं भूमि गगन गिरि कानन॥
बंदौ देवन दीन दयारी। बंदौ चंद तिमिर तम हारी॥

End.—छंद हरगीतका।

हरि चरण पंकज पतित पावन जगत जीवन जानिये।
तजि मान पति निर्वान नाम प्रनाम करि नित मानिय॥

ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद जासु पग रज सेवहीं ।
को कहै जड़ मति मूढ़ मानव मान भानत देवहीं ॥

दोहा—सबल स्याम भव भयहरण पावन जन्म उदार ।
कृपासिंधु सरनद सुपद व्यापक जगदाधार ॥

इति हरि चरित्रे महापुराणे भागवते दशमस्कंधे पारमहंस संहितायां वैयासिक्यां भाषायां श्री सबल सिंह कृतौ चतुर्नवतितमोऽध्यायः दसमस्कंध समाप्त सुभ मस्तु अषाढ़ मासे शुक्लपक्षे नौम्यां चंदवासरे संस्कृत भाषा सम्पूरणम् संवत् १८८८ सन् १२३८ साल ॥ पुस्तकं लिषितं ॥ गंगाप्रसाद कायथ ॥ टिकुरया ग्राम के बसैा वासं पाठार्थं ॥ लाला दाऊलाल देवान भिनगा के श्रोता पढ़ैकों सत्यनाम ॥ जो प्रति पावा सो लिखा मम दोसो न दीयते ॥ इति ।

No. 363A(*e*). Bhāgawata Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—570. Size—$8\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines per page—15. Extent—6,680 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669, Date of manuscript—Samvat 1871 or A. D. 1814. Place of deposit—Śitala Prasāda Nigama, Village Saidpur, Muhallā Potidārān, District Bārābankī (Oudh).

No. 363A(*f*). Bhāgawata Daśama Skandha by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—170. Size—$13 \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—3,825 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṁha, Guṭhwā, District Bahrāich.

No. 363A(*g*). Bhāgawata Bhāshā by Sabala Śyāma. Substance—Country-made paper. Leaves—138. Size—14×6 inches. Lines per page—20. Extent—3,795 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1726 or A. D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Murlīdhara Tripāṭhī, Mailā Sarāya, Post Office Bauṇḍi, District Bahrāich.

No. 364(*a*). Bhagwantā Rāya Rāsā by Sadānanda Kavi of Asothara. Substance—Country-made paper. Leaves—11. Size—7½ × 6¼ inches. Lines per page—24. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1798 or A. D. 1741. Place of deposit—Śri Mān Mahārāja Rājendra Bahādura Simha Sāhaba, Bhingā Rāja, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रासा भगिवंत सिंह जीवक ॥ दोहा ॥ एक दिवस भगिवंत जू अति अनंद सो लोन । कोड़ा जहानाबाद को हुकुम कूंच को दीन । छंद पद्धरी ॥ सज्जे सुवीर बज्जे निसान । लज्जे सुरेस भज्जे गुमान ॥ फुट्टे सुमेरु टुट्टे अराति । कुट्टे कितेक लिहे नसाति ॥ दोहा ॥ आइ जहानाबाद मे करत मुलुक को गैार । सोधत बाम अबाम सब लखि कै ठौर अठौर ॥ साह महम्मद छत्रपति दान कृपान जहान । सुबा कोन्हो अवध को विदित सहादति खान ॥ करे जे रक्षित बाहुबल दीन्हे नृपति निकारि । राखे जे धर्मेश अति सकल विचारि विचारि ॥

End—कंध्यै छोक अवलोकि सोक भय जहं तहं बड्यो । लखि चरित्र विधि हरिहर हिय अनुराग उपज्यो ॥ प्रेरित मन चलि वेगि समर अवनी महं आयो । कहि प्रसंग कर जोरि अमिय मय वचन सुनायो ॥ अप्सरि सुचारु चहुं दिसि चमर चापु हरत आनंद भयो । राजाधिराज भगवंत जू चढि विमान सुर पुर गयो ॥ १०३

दोहा ॥ संवत सत्रह सतानवे कातिक मंगलवार ।
सित नैामी संग्राम भैा विदित सकल संसार ॥ १०४ ॥

इति श्री कवि सदानन्द विरचिते भगिवंत सिंह अेाचरि सो नवाब सहादति खान जुद्ध बरननो नाम सुभ मस्तु सुभं भूयात् ॥ लिखी मिती सावन बदि अष्टमी ८ सन १२५७ हि० बारह सै सत्तावन मा लिखा ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—२ तक । राजा भगवन्त सिंह का कोड़ा जहानाबाद पर चढ़ाई करना और यवनों को भगाना सआदत खां का नूर मोहम्मद को तहसील के लिये भेजना और भगवंत राय का लूट करना, नवाब का चढ़ाई करना और दुर्जन चैाधरी से मिलना ।

पृ० ३—४ नवाब का खजुहे पहुंचना और सेना का वर्णन ।

पृ० ५—६ मंत्री से राजा भगवन्त सिंह का सलाह करना, रानी का युद्ध के लिये निषेध करना और युद्ध को तय्यारी का वर्णन।

पृ० ७—८ सयादत खां व बुरान खां से खीची का युद्ध वर्णन—

पृ० ९—११ तक। भवानी प्रसाद व दोस्तमोहम्मद का युद्ध वर्णन। शेरअली और जयसिंह का युद्ध वर्णन। भगवन्त सिंह खीची का युद्ध वर्णन और वीरत्व को प्राप्त होना। निर्माणकाल व युद्धकाल वर्णन।

No. 364(*b*). Bhāgawantā Rāya Rāsā by Sadānandā. Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—10 × 8½ inches. Lines per page—32. Extent—225 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1797 or A. D. 1740. Date of Manuscript—Samvat 1936 or A. D. 1879. Place of deposit—Ṭhakura Chitra Ketusiṁha, Nārāyaṇapur Taparā (Hariharpur) Post Office Chilwaliā (Bahrāich).

No. 365. Nandaji kī Vaṅśāvalī by Sadānanda Dāsa. Substance—New paper. Leaves—4. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—30. Extent—60 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Śyama Kumāra Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—अथ वंसावली नंद जी की सदानंद दास कृत॥
श्री गुरुचरण प्रतापहि लहौं कृष्णवंश उद्भव कछु कहौं॥ १॥
तीन प्रकार गोप की जाति वैस अहीर गुज्जर वर जाति॥ २॥
उत्तम बल्लव गोप कहाये जदुवंशी वेदन में गाये॥ ३॥
हित सो गोधन ठाट चराये छत्री ते ते वैस कहाये॥ ४॥
वैस सुद्रिका ते जो होई शुद्ध अहीर कहावै सोई॥ ५॥
गुज्जर कछु इनते लघु वरने पीन धंग ऊंचे सुख करने॥ ६॥
ब्रज के निकट सो विधि सों वसै अजा आदि पशुधन सों लसै॥ ७॥

दोहा—भागुर पुरोहित विमलकुल गर्ग गुरु इनके निकट अवास।
वेद पुरानन में निपुन हिये विष्णु परगास॥ ८॥

सवे कैाम व्रज मैं रहैं हरि सेवा सुष हेत। पांच कहे परिवार ए हरि जु कों सुष देत॥ ९॥ अब वरनो गोपन के नाम जिहि सुमिरे सब पूरण काम॥ १०॥

प्रथम गोपर्जन्य बखानौ। ताको त्रिया वरेयसी जानौं ॥ ११॥ प्रथम सुतै उपनंद बखानो। ताको प्रिया सुनंदा जानो ॥ १२

सुत सुभद्र तनया तुंगोनव । उत्तम गुण ताके मन उद्भव ॥ १३ ॥
सरसगौर अभिनंद बखानो । ताको त्रिया पीवरी जानौं ॥ १४ ॥
सतु कुंडल पद नंद सुता । कुल पुनीत गावैं पतिव्रता ॥ १५ ॥
धरानंद ताको प्रिय परमा । किंकिनि सत तनया शुभ करमा ॥ १६ ॥
कंचन तन ध्रुवनन्द बखानो । ताको त्रिया सुदेसी जानौ ॥ १७ ॥
सुत विलास तनया मन सीला । गावत रहत कृष्ण गुण लीला ॥ १८ ॥
महानंद को तिय हितकारी । सुता सुसीला सुत मन धारी ॥ १९ ॥
सुनौ सुनंद त्रिया मन लेखा । सुत उत्तम तनया रुचि भेषा ॥ २० ॥

End—सोमवंश हरि जीव को वरनै लै है नाम। ससि के बुध बुध के पुर जो परम संत निहकाम ॥ ७५ ॥ तिनके आयु नहुष नृप तिनके नृपति जजाति। तिनके जदु इनके हरि सेवो वरनात ॥ ७६ ॥ क्रोष्टवान वज नृपति जु स्वाहि तिनके पुत। तिनके दस आहुत भये ज्यौम नृपति जस जुत ॥ ७७ ॥ इनके शशबिंद पथजु किये परम सुख कर्म। ताके ऊसना ताके रुचि किए परम सुधर्म ॥ जाम-घताके के तास विदर्भ विलछन गुनमान। ताके पुत्र प्रगट भए कथ जु किये पंच बहु दान ॥ ताके कुंत विष्ट सुत सुंदर ताके नरिवत पुत। ताके दश आहित सुत ज्योम नृपति जस जुत ॥ जीव सुत ताके विकत्र भोम सुरथ गुनमान। नरथ ताके दशरथ के सुत सकश सुर जजात ॥ नृपति करंभिक भये ताके सुत भये देव रतिराज। भए देवरति देवक्षत्र सुत मधु नृप सतत सिरताज ॥ कुरु वंस ताके अंतु नृप के सुत गोहित जुजान। ताके सुचित ताके अंधक ताके नृप भज मान ॥ ताके नृपति विदरथ ता सुत सुर नृपति बरजान ॥ ताके सुनि भजि मान नृपति जु ज्ञानवंत धनवान ॥ ताके सुचित सु भोज नृप ताके नृपति हृदीक। देवमीढ़ तिनके कुल प्रगटे तिन प्रगटकरी जसलोक ॥ अस्मानी वैश्यानी इनके पत्नी दोय। अस्मानी के सुरसेन जिन राख्यो जग भोय ॥ वैश्यानी के पर्जन्य प्रगट भये तिनके प्रगटे नंद। तिनके प्रगट भए मनमोहन व्रज के पूरनचंद ॥ इह वंशावली बखानी दांढ़ी हर्षे वल्लव राज। श्री सदानंद प्रानन बारत रंग भीनौं सकल समाज ॥ इति संपूर्ण शुभ ॥

Subject—नंद जी की वंशावली

No. 366. Chhattis Akshari by Sahabadinadāsa of Tiparī, Rāmapur. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—8 × 5 inches. Lines per page—46. Extent—138

Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1921 or A. D. 1864. Date of Manuscript—Samvat 1950 or A. D. 1893. Place of deposit—Bābā Bhāratamahanta, Village Datauli, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ छत्तीस अक्षरी लिख्यते ॥ ॐ ओंकार अपार आगे घर आदिव अंत पसारा है। ब्रह्मा विष्णु महेश गणेशहु सुझे किरन उजियारा है ॥ पंच उपासन तत्व प्रकीरति याते सब विस्तारा है ॥ गति साहब दीन कहैं कहलौं सब रोम रोम ओंकारा है ॥ ना ॥ नाम निरंजन सब दुख भंजन सुमिरन किये कलेश मिटै। मन मस्त उमंगै उठै तरंगै सुनि दुष्टै हिय हरी पटै ॥ जो नाम पुकारै कबहू न हारै कलिकराल जंजाल कटै ॥ जन साहब दीन सोइ पूरा जो हरदम हरिका नाम रटै ॥ मा ॥ मन को बूझै तब गति सूझै त्यागि कपट दलालो है। वृन्दावन तन रच्यो विन्द सों मगन मूल प्रतिपालो है ॥ बाग लगाय रच्यो नहि बनौवा तिन बागन आलो है ॥ साहब दीन सदा अनुभव गति बाग माझ बनमालो है ॥ सा ॥ सहित सनेह गुरुपद पूजै ल्यावे ध्यान समाधु है। सुमिरै ररंकार निअक्षर तका मता अगाधु है ॥ राम नाम दम दम पर खींचे मिटै व्याधि अपराधु है ॥ साहब दीन सफल मत बूझै तिसको कहिए साधु है ॥

End—॥३॥ इसक सिंधु में मगन सदा दुख भरम शर्म सब खोई है। जो कुछ काहि आवै नास मान यह आसत मान सुख सोई है ॥ सता स्माज साजै सदै बस एक विषम नहि कोई है। आस साहब दीन विचार लीन्ह ईश्वर जन जगमें सोई है ॥ उ ॥ ऊजर बोझ नहक मत बोवो रहे यके इङ्तासो है। मन में भरम भूल न लावै आनंद हृदय हुलासो है येके सर पूर जग देखे दिल को दिल को दुविधा नासो है साहबदीन रहन अस जाको तिस्को कहा उदासो है ॥ पे ॥ पे संसार बजार ठगों को चिन भेदी तुम आवोगे। मोन आनंद अमोल अजूबा अदो भाव भंजावोगे ॥ खोल कपट को गांठ सवेरे जौहर न परखावोगे। साहबदीन मुरशद के जुग जुग भटका खावोगे ॥ श ॥ शपत स्वर्ग को सीस तिलक दे त्रिगुना बूंदा मेलो है। बीज मंत्र अजपा को सुमिरत पीत बसन रंग रेलो है ॥ पांच कली पांचै रंग टोपी अजब रीति अलबेलो है। सोहत साहब दीन गढे बिच पांच दत्त को महेलो है। इति छत्तीस अक्षरी समाप्तः लिखी संवत १९५० कार्त्तिक शुदी चतुर्दशी ॥

Subject—पृ० १—४ तक ३६ अक्षरों पर ज्ञान उपदेश ईश्वर भजन पर कविता की है।

No. 367(*a*). Kavitāvalī by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—9×6 inches. Lines per page—11. Extent—348 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rāmajiāwana Lāla, Village Daulatipur, Post Office Bilhara, District Bārā Banki.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सहज राम जी की कवितावली लिख्यते ॥ कवित्त ॥ गौरि गिरा गननायक के पदपंकज को रज सोस चढ़ावौ। पवन को पूत सपूत बड़ो तिनके पद पंकज को शिर नावौ ॥ श्री गुरु दीनदयाल पड़े पद पंकज को अनुशासन पावौ। राम चरित्त कवित्त की माल बनाय गिरा के गरे पहिरावौं ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक ध्यान धरैं जिनको सनकादिक जोग समाधि को साधे। संकर नाम जपैं जिनको पदुमा पद पंकज को अवराधे ॥ नैामी सुकुला मधु मास पवित्र नक्षत्र पुनर्बसु बासर आधे ॥ राम को जन्म भयो सहजू हरषे सब देव दशानन बाधे ॥ २ ॥ संख औ चक्र गदा सरसोरुह चारि भुजा लखि मातु त्रसो है। कुंडल लोल कपोल विमंडित आनन देखि लजात ससो है। सुंदर कोट जड़े मुक्ता सुषमा लपि कै (× ×) उमान बसो है ॥ भाल विशाल विलोचन लोहित कौस्तुभ कंठ ललाम लसो है ॥ ३ ॥

End—आपनी बुड़ाई लरिकाई रामचन्द्र जी को निरखि परस पानि जानि के सकात है। क्षत्रीन को छोना जो छपावै औ बचावै कोऊ ताहू को मारै न विचारै और बात है ॥ पाई न मेराई न बधाई बाजो अंगन में सखिन समेत सीता व्याकुल बरात है। सहजू महीप महिदेव की लराई कौन केतेऊ कुजोग आजु या जियाये तात है ॥ ९८ ॥ पिता समीत जानो लीन्हे हैं धनुषबान आवन समेत राम स्याम गौर गात हैं। मुनि को प्रनाम कीन्हे बालक विचित्र चीन्हे थके मुनि नयन बैन आवत न बात है ॥ रामचन्द्र चन्द्रमा चकोर कीन्हे नैन दोऊ मैन की समान रूप देखे न अघात है। सहजराम देखि के विदेह विदेह भये परसराम राम को स्वरूप देखि कामहू लजात है ॥ ९९ ॥ आशिष दै इम दीना किये छवि पुंज पियूष पियो जनु है। करिसायक चाप निषंग कसे सरनागत पालक को प्रनु है ॥ चारि कुमार मनो मधुमार औ प्रेम सिंगार धरो तनु है। भृगुनन्दन को मन भूल्यो फिरै सहजू हरि सुन्दरता बनु है ॥ १०० ॥

Subject—पृ० १—७ तक—मंगलाचरण, राम जन्म, उनके जन्म पर उल्लास, उनकी शोभा का वर्णन। राम-माता का युक्ति सहित चतुर्भुज रूप छिपाने का प्रस्ताव। नगर में आह्लाद, मंगल बधाई इत्यादि। दशरथ का दान, बाल विनोद।

(२) पृ० ८—१२ तक—राम का मृगया के निमित्त अपने सहयोगियों सहित वन में जाना। चारों भाइयों के घोड़ों के विभेद का वर्णन। मृगया में सफलता प्राप्ति। उनका लौटना।

(३) पृ० १३—२४ तक—दशस्यंदन के समीप आकर कुश नन्दन का राम को मख-रक्षा के लिये मांगना, राम नाम महत्ता पर मुनि का छोटा सा व्याख्यान। राजा का इस प्रस्ताव पर खेद। वशिष्ट का समर्थन वशिष्ट द्वारा राजा को संतोष होना। संदेह भंग पश्चात् राम लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना।

(४) पृ० २५—४० तक—मार्ग में गौतम पत्नी उद्धार इत्यादि कार्य करते हुए राम का जनकपुर गमन। राम के स्वरूपादि पर नगर निवासियों का आश्चर्य तथा प्रेम। धनुष यज्ञ वर्णन। जनक की दुर्योक्ति पर लक्ष्मण का क्रोध। राम का धनुष भंग करना। रामादि विवाह वर्णन। (५) पृ० ४०—४६ तक—बारात इत्यादि की शोभा के वर्णन के साथ ही साथ जनक के द्वारा उसके सम्मानित होने का वर्णन। बारात का विदा होना। परशुराम आगमन। परशुराम की आकृति तथा वेष भूषा का वर्णन। परशुराम तथा राम में समझौता॥

No. 367(*b*). Prahalādacharitra by Sahaja Rāma. Substance—New paper. Leaves—22. Size—8×6 inches. Lines per page—32. Extent—352 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1955 or A. D. 1898. Place of deposit—Lāla Tulasi Rāma Srivāstava, Rāe Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ ॐ श्री गुरुभ्योनमः॥ अथ प्रहलाद चरित्र लिषते॥ दोहा॥ गनपति सुमिरौं सारदा बंद कमल कर जोरि बरनत सीताराम गुण विमल करौ मति मोरि॥ एक समै कैलास में बैठे शिव भगवान पारवती तहं प्रश्न कर सुनिये कृपा निधान॥ बोली गिरिजा बचन वर संकर सिला निधान। चरित सुभग प्रहलाद को मोसन कहो भगवान॥ ३॥ चौपाई॥ प्रश्न उमा को सहज सोहाई सुन महेस बोले हरषाई॥ सुनहु उमा यह कथा रसाला। सुंदर सुषद विचित्र विसाला॥ येक बार मन अति सद्भुमाये सनकादिक बैकुंठ सिधाये। देषा जाइ हरि लोक अनूपा। बसत जहां श्रीपति सुर भूपा। पांच पदुम जोजन बिस्तारा जोजन सहस्र उतंग अगारा। हरिदासन के मंदिर जेते। सुर सुरभि सुर स्यामद जेते॥ जहांन राज जन्म दुष भोग। जहांन व्याधि नहि मानस रोग। पुन्य छीन जह कबहु न होइ। जहां गये फिरि पावै न कोइ॥

End—जब नर हरि तन धारन कीन्हा। जन प्रहलाद विपति हर लीन्हा ॥ भय कृपाल अस आयुस होई। सादर करिये मान सिव सोई ॥ बोले बचन बिहसि असुरारी। कहा कहिये विधि बात तुम्हारी ॥ वर विचार नहि सुरै दीन्हा। अखिल लोक सब व्याकुल कीन्हा। असमासुरै संभु वर दयऊ। पलटि महा दुख भाजन भयऊ। सहित धरा धन सैन समाजू देउ देव पहलादै राजू ॥ सुनि सुरेस सिंगासन दीन्हा। तिलक लिलाट कमल भव कीन्हा ॥ दोहा ॥ चौर लिये दिगेस कौ लिये हाथ हथियार आरति करत इन्द्रावती भर घट दीपक बारि ॥ सहज राम पहलाद कौ सिर परसि पंकरुह पान। अंतर हित नर हरि भय निज सेवक सुषदान ॥५३॥ इति श्रीरामायण बालकांडे तुलसीकृत इतिहासे महादेव पारवती संवादे प्रहलाद चरित्रे नरसिंह अवतारे कथा समाप्तं शुभं कलम गंगाराम ब्राह्मण गौड ॥ शुभ संवत १९५५ वैसाष कृष्णपक्षे तिथि ४ रविवार पुस्तक तुलसीराम को ॥

Subject—१—गणेश और शारदा स्तुति, पारवती का शंभु से प्रहलाद चरित्र सुनने के लिए आग्रह करना, शंभु द्वारा वैकुंठ का विस्तार और शोभा वर्णन, हरि स्वरूप वर्णन, सब देवताओं का हरि की स्तुति करने का वर्णन। दक्ष मुनि का बिना द्वारपाल की आज्ञा के हरि के निकट जाने का वर्णन, द्वारपाल का हरि के प्रति मुनि की शिकायत का वर्णन, मुनि की क्रोध दशा का वर्णन, मुनि का श्राप देना, कमलापति की शोभा वर्णन और शिख नख, पीठ की शोभा वर्णन, भाल की शोभा वर्णन, कुंडल की शोभा वर्णन, कपोलों की शोभा वर्णन, कटि की शोभा वर्णन, भृकुटीकी शोभा वर्णन, नासिका की शोभा वर्णन, दशन की शोभा वर्णन, भुजाओं की शोभा वर्णन, कंठ की शोभा वर्णन, संख, चक्र, गदादि का वर्णन, मुनि का भगवान से भेंट होने का वर्णन। विप्र के अपमान का फल वर्णन, भगवान की लीलाओं का वर्णन, द्वारपाल के श्राप को क्षमा करने के लिए भगवान का मुनि से कहना, हरि सेवक होने के लिए मुनि का अनुग्रह, राम का अपने अवतारों का वर्णन, दनुजराज का भगवान से वर पाने का वर्णन, दनुजराज के पुत्र प्रहलाद का जन्म, पिता का पुत्र वध किस दोष से हुआ, प्रहलाद को अपने कुल गुरु को सौंपना, प्रहलाद का गुरु से राम भजन फल पूछना, गुरु द्वारा विद्या की महिमा का वर्णन, गुरु का राजविद्या के लिये प्रहलाद से कहना, प्रहलाद का हठ राम भजन के लिए, गुरु का राजा से प्रहलाद की शिकायत करना, पिता का अपने प्रहलाद को समझाना। प्रहलाद का राम भक्ति के लिए फिर हठ करना, प्रहलाद का अन्य बालकों को राम भक्ति का उपदेश अध्यात्म विषयक उपदेश जिसमें मनुष्य की गर्भावस्था से लेकर पालन पोषण बालकाल युवावस्था वृद्धि अवस्था और मरणावस्था का वर्णन, कर्म की

प्रधानता का वर्णन, संसार के नाते और सम्बन्धों पर आलोचना, राम भक्ति से रहित इंद्रियों का सुख निरर्थक है, राम भक्ति बिना आहार निद्रा, भय मैथुन आदि में पशु और मनुष्य की समानता का वर्णन, अन्य बालकों का प्रहलाद से यह पूछना कि तुमने भक्ति कहां से सीखी, प्रहलाद द्वारा अपने पिता को पूर्व तप कथा का वर्णन, नारद का प्रहलाद की माता को उपदेश और वहां से भक्ति का अंकुर पैदा होना, राजा का प्रहलाद को परीक्षा लेना, प्रहलाद द्वारा राम की महिमा का वर्णन, राजा का प्रहलाद को राम विमुख होने के लिये समझाना, प्रहलाद का हठ करना और राजा हिरन्यकश्यप का तलवार लेकर मारने के लिए उद्यत होना तथा मंत्रियों द्वारा राजा को समझाना, प्रहलाद को हाथी तले कुचिलवाना, माता का प्रहलाद को समझाना, अन्य पुरवासियों की शिकायत उनके बालकों को बिगाड़ने का कारण प्रहलाद को बता कर अपराध लगाना, राजा का पुनः क्रोध कर प्रहलाद को पहाड़ से गिराना इसके पश्चात समुद्र में फिकवाना और वहां से भी राम राम जपते हुए प्रहलाद का निकल आना। फिर प्रहलाद का अग्नि में डाला जाना इसके बाद में सर्प बिच्छू आदि से कटवाना और अंत में खंभ से बंधवाना और राजा का तलवार लेकर मारने के लिये उद्यत होना और हरि का प्रगट होना। राजा और भगवान का युद्ध होना और राजा का उदर चीरा जाना, प्रहलाद का भगवान को प्रणाम करना और उनका आशीर्वाद देना और वरदान देना और भगवान द्वारा प्रहलाद का राजतिलक होना और भगवान का अंतर्धान होना।

No. 367(c). Prahalāda Charitra by Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—8¼ × 3¼ inches. Lines per page—14. Extent—320 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bhaiyā Saṅtabaksha Siṁha, Guthawā, District Bahrāich.

Beginning—........................कन कैसे तरनि आदि अम्बुज अह जैसे। गदा एक कर रिपु मदहारो। देखि महामुनि भये सुखारो॥ लीला कमल एक कर लीन्हे। भ्रमन करत मुनि मन बस कीन्हें॥ भाल तिलक श्रुति कुंडल लोला। भलकत पुनि पुनि मंजु कपोला॥ रतन किरीट विमंडित शीसा। कहि न सकहिं छवि अज अरु ईसा॥ कमल बिलोचन लोल सुनासा। भृकुटी कुटिल मनोहर हासा॥ श्री सुरभी मुनिपद जनु चक्खा। उर श्रीवत्स कहे कवि दक्खा॥ दो०—कंबु कंठ कौस्तुभ लसै उर तुलसी की माल। चरन चलावति श्री मंजु सुमिरि सवतिया साल॥ ५॥

End—दनुज राज लखि रूप अपारो। चला सकोप गदा कर धारो॥ है हरि कुहुक तोहि मैं जाना। छल करि वधेउ बंधु बलवाना॥ अब नरहरि तन धरि मम नेरे। आवहु कठिन काल के प्रेरे॥ अस कहि कीन्हेसि गदा प्रहारा। हरि धरि भूपर पटकि पछारा॥ मरै न भूपर विधि वर दीन्हा। ऊरु उदर विदारन कीन्हा॥ उदर विदारि रुधिर करि पाना। खोजत जन प्रहलाद समाना॥ रूप भयंकर दशन कराला। पहिरे उर अंतावरि माला॥ शोणित सद्य भरी मुख मोंछै। रसना अधर कपोलन पोछैं॥ दो०—नारदादि सनकादि शिव ब्रह्मादिक सुर भूरि। निकट न जाहि सभीत अति। विनय करहि सब दूरि॥ ४३॥ कमला सन कमलासन भाखे। निकट जाहु कर कानन्द राखे॥ हम यह रूप कबहुं नहि देखा। रहत रहित हरि संग विशेषा॥ तब प्रहलाद निकट सुर आये। करि विनती विधि हृदय लगाये॥ धन्य तात तुम साधु सुजाना। प्रेम ते प्रगट किये भगवाना॥ शिव विरंचि सुर मुनि दिगपाला सनमुख होइ न सकहिं यह काला॥ तुम प्रहलाद जाहु प्रभु पाही (हम सब देव विलोकि है············

No. 367(d) Sundara Kānda Sahaja Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—54. Size—8 × 6 inches. Lines per page—38. Extent—1,028 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1926 or A. D. 1868. Place of deposit—Viswanātha Pustakālaya Ṭhakura Maheśwara Siṁha, Village Dikaulia, Post Office Bisawañ, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेसायनमः॥ अथ सुंदर कांड लिष्यते॥ श्री गुरु श्री रघुवंश मणि पद सरोज सिर नाइ। सुंदर सुंदर की कथा कहौं जथा मति गाइ॥ चौ०॥ तिहि औसर मारुत सुत वीरा। देखा लवन पयोध गंभीरा॥ सीताराम रूप उर लायो बोले पवन तनय बल मायो॥ मैं अब करौं गगन पथ गवनू। निदरौं वैन तेज मन पवनू॥ देषहु सकल भालु कपि वैसे। नाधौं जलदि धेनु पद जैसे॥ सोधौं जनक सुता सब ठाऊं। यहि विधि आज पुरटपुर जाऊं॥ जो न लहौं पुनि सिय सुधि लंका। सपदि जांउ सुरलोक असंका॥ जो सुरलोक न सिय सुधि पावौं। रावन अधम बांधि लै आवौं॥ ताते सत्य कहौं तुम पाहीं। प्रभु प्रताप बल निज बल नाहीं॥ दो०॥ अस कहि भुजा पसारि दोउ चला गगन पथ कोस। पंच पंच फन सहित जनु सोहत जुगल फनीस॥ चले साथ कपिनाथ के कुसुमित सुतरु सुरंग॥ चले पठावन लोग जिमि गुरु हरिजन के संग॥

End—उछरि उछरि जल चहेउ अकासा। नभ सरि जलद अनावन भाषा॥ सरित प्रवाहु चहेउ जल उलटा। विपति परे गति त्यागहि कुलटा॥ मगि मरि जीव रहे उतराई। कुल मूल कछु चले पराई॥ छिटक छीट को परो गढ़ लंका। सुनि रव घोर सुरारि ससंका॥ सबल सुबेल नाधि जल गयऊ। लंका नगर कोलाहल भयऊ॥ पांच दिवस महं बांधेउ सेतू। हरषे निरखि भानुकुल केतू॥ जोजन चारि सेत चकलाई। अति अनूप कछु बरनि न जाई॥ भालु कपिन को अद्भुत करनो। सेस सहस मुख सकै न बरनी॥ दो०॥ श्री रघुबीर प्रताप ते उपल भए जल जान। सुजस भयो नलनील को जानहि संत सुजान॥ पवन तनय की पीठि पर भए चरूढ़ रघुराव। मुये जिये जल जंतु सब हरषे दरसन पाउ॥ बालि तनय की पीठि पर लषन भए असवार। सुमिर सिवा सिव पुत्र को गवने राजकुमार॥ चली भालु कपि सयन सब को कवि बरनै पार। सहज राम सुरपुर मचो जय जय जयति पुकार॥ उतरि पार डेरा किए सबल सुबेल समीप। उतरे वानर भालु कपि जय दिनकर कुलदीप॥ इति श्री रघुबंस दीपक सहजराम कृत सुंदर कांड समाप्तः दस्तषत मोहनलाल के संवत १९२५ पूसबदी अमावस्यां।

Subject—इस ग्रंथ में श्रीरामजी का हनूमानजी को सीता खोज के लिये भेजना रामजी के समीप हनूमानजी का समाचार लाना, नलनील का पुल बांधना और राम लक्ष्मण सहित बानर रीछ आदि का पार होकर लंका जाना वर्णन है।

No. 368. Rasaratnāgara by Siyad Pahāra of Kasi Substance—Country-made paper. Leaves—96. Size—$11\frac{1}{4} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11. Extent—2640 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1940 or A. D. 1883. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ हजरत गोस श्री पयतुल हु॥ अथ स्तुति॥ दोहा॥ अलष निरंजन एकु है चरु दुजो नहि कोइ। यह काहु कीन्हों नहीं रहि कीन्हों स अकोर॥ १॥ चौ०॥ मुहम्मद नाम जगत उजियारा। ताके हेत रचौ संसारा॥ पुनिता मत चारि विधि दये। पंथ दिखावन को निर्मये॥ पुनि विधि रचे मोहम्मद गोस। जाके सुमिरन रहै न होस॥ इतनो तासु बड़े विधि किया। जासम को महि और न हुआ॥ विद्या गुण के सरे सुजान। सुंदरता के मदन समान॥ सब ही विधि के जेतो गुणो। सेवा करै रिषी सुर मुनो॥ एक सम

बिधिना आपुन लहौं । तिन के गुन प्रगट के कहौं ॥ सेवा करो नरायण साइ । मह पाइ रे सेवा पाइ ॥ एकहि नाम नमैं यह भई । जानि वेगि के आज्ञा दई ॥

End—अष्ट शेष के देइ सिराइ । काथ देत त्रिदोष नसाः ॥ पीपरि के पुसेप सों कहौ । रोगु जाइ जो सुपक्व रहौ ॥ अथ पुनर्वार ॥ अथ ईगुरादि वटी ॥ ईगुर तेल चुपरी क्षेना के अंगरा पर धरै जब धुआ निकसि जाय तब उठाइ लेइ आवरासार गंधक टंक १ अकरकरा टंक १ मिरच टंक १ पीपरि टंक १ अभ्रक टंक १ फुलवो सुहागा टंक १ मिठो टंक १ जीरा टंक २ कुंजि लीजै तब बाट जे काज हसो मह सो वटी बांध जो मिरच प्रमान तब खाइ सन्निपात कों दीजै आदे के रस सों सन्निकोला कैाया तोला दीजै ॥ इति श्री सय्यद पहार संपूरनं ॥ शमस्त १९४० मिति माघवदी १ एक मंगलवार समाप्तम् ॥ लिपितं काशी विश्वरंजी काशो मध्ये गंगाजी राम जो नमोनमः कालभैरव काशी के कोटवाल

Subject—पृ० १—२ प्रार्थना कवि वर्णन । पृ०—३—८ तोल वर्णन । अभ्रक वर्णन । गंधक, सज्जी, रसविधि, पारा, हड़ताल, सोनामाखी, ईगुर, नैानिया शाेधन, मुर्दाशंख, शिलाजीत सोधन । पृ० ९—१५ अभ्राभ्रारो, बंग विडंगादि, यंत्र विधि । पृ० १६—२६ धातु गुण प्रैागुण, मारन विधि, नाम विधि, धोने की विधि, हीरा कुंद, ताँबा, बंग विधि । पृ० २७—३२ अभ्रक, हरताल, मकरध्वज रस, गंधक पाट, शीशा रांगा, पारा, सिंदुर, कपुर । पृ०—३३—४२ गंधक तेल, कनक सुंदरी, मुनि वल्लभ, बंग रस, कुसुम भुवंग, चन्द्रकान्ति, संखिया, ब्रह्मप्रपरेश्वर, भस्मसूत, कुष्ट हरताल, धातु हलाहल, तिरोदा, कंठोरस । हेम रस, हसी अंगाल, ज्वराज, रसाराजस, मदनसुंदरी । पृ० ४३—५७ नागेश्वर, मृगांक, गैारी, गनेस रस, कल्यान गुटका, मदनपाल गुटका, चंद्रद्वयारस, रामबाण, मुक्ता विधि, हरताल, धूनी, मरहम, उबटन, महातैल, दिनाई उपचार, संकोचन, थंमन, पृ० ५८—६९ । वायुका उपचार, गंधक तैलादि, सैाभाग्य सोंठि, ज्वरांकुस, प्रमेह, कर्णरोग, त्रिकुटा, अवलेह, मूंगा बनाना, मेघनाद रस, नारायण वटी, बवासीर का इलाज । मृगी का नास, तिजारी, कायाकल्प, बांझ विधि, भुंगराज रस । पृ० ७०-८१ क्वाथ, गुटिका, ईगुर विधि विषादि चूर्ण, चिरायता, पाताद्राव, थंमन विधि, क्वाथ, जोगराज, मंजीष्टादि, उद्दे भास्कर, कोट विधि, अरस भुवंगम रस, गर्भ पातन पृ० ८२—९६ काकवंध्या, कुरंड विधि, जीरकादि वटी, खांसी, सैाभाग्य सोंठि, काढ़ा, तांबे आदि का अनुपान । मंहारी रस, प्रताप लंकेश्वर, सूरज रस, कालाग्नि, ब्रह्मभैरों, सुनादि रस, मदनमोदक, पर भैषज, काढ़ा, इंगुरादि वटी ।

No. 369. Vinaya Bihāra by Sukhapunja (Nandagopāla) of Gaṅgāpura (Kashī). Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—12×5 inches. Lines per page—10. Extent—220 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1819 or A. D. 1762. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhingā, Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विनय विहार लिख्यते ॥ दोहा—गौरि तनै सुमिरे बनै सनै सनै सब काज। करनधार बल उदधि ते जेहि विधि तरत जहाज ॥ १ ॥ कवित ॥ वारन बदन हैं विदारन विघन घन मोह मन मारन है तनय गनेस के। कारन हैं सुख के कलुष ते उधारन हैं दीन जन तारन हैं बारन कलेस के ॥ सभै पद दायक हैं सभै विधि लायक हैं देव गननायक सहायक सुरेस के। चंदन हैं सुर के असुर के निकंदन हैं सुख पुंज वंदत हैं नंदन महेश के ॥ २ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु दीनदयाल गिरि पद बंदो सुखदानि। जासु कृपा कवि रीति मो भई प्रीति पहिचानि ॥ ३ ॥

End—दो०—गंगापुर काशी निकट रजिधानी कसिवार। लक्षिमी नारायण तहां वसत सहित परिवार ॥ ५५ ॥ कायथ कुल श्री वास्तव नंदन नंद गोपाल। वन्दन कीन्यो गौरि पद कंदन दुख मो जाल ॥ ५६ ॥ कविताई मे नाम निज गुरु प्रसाद वर पाय। भाषत हैं सुख पुंज कहि जगदंबहि शिरनाय ॥ ५७ ॥ भगति सुमन सुधि नति सुनन मोमन मालाकार। ईस प्रिया पद सीस धरि विरच्यो विनय विहार ॥ ५८ ॥ प्रेम प्रानते सूंघिहै जे नर यरथ सुगंध। तेहि ढिग कबहुं न व्यापि है दुरगति को दुरगंध ॥ ५९ ॥ नि० का०—अंक मही ग्रह सिद्धि ससि संवत मै यह ग्रंथ। १०१९ आस्विन सुदि रस कवि दिवस भयो सुमति को पंथ ॥ ६० ॥ इति श्री विनै विहार गिरिंद तनया चरनारविंद स्तव सुषपुंज कृत संपूर्णम ॥ शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु मि० कातिक सुदि ७ ॥

Subject—छन्द—१—२ गणेश वन्दन।
छं० ३—४ गुरु वन्दना। छं० ५, ६, ७, ८, ९। गौरी शिव वंदना।
छं०—१०—५४ गौरी प्रार्थना। छं० ५५—५९। कवि वंश वर्णन।
छं०—६० निर्माण काल।

No. 370. Rāmāyana by Samaradāsa of Magaraurā, District Sitāpur near Kalyāni. Substance—Country-made paper. Leaves—265. Size—10×6 inches. Lines per page—36.

Extent—4,790 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of Manuscript—Samvat 1927 or A. D. 1870. Place of deposit—Ṭhakura Durgā Siṁha Rais, Dikauliā, Post Office Biswāñ. District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाल कांड लिष्यते ॥ भजन ॥ गनपति सुमिरौं सिद्धि निद्धि दायक । लंबोदर गज वदन सदन सुष कृपासिंधु सब विद्धि से लायक ॥ विघन हरन सुष करन उमा सुत आदि देव समर्थ गननायक । मंगल करन दहन दुष दारुन संकर सुनु जगत गुन गायक ॥ सुनहु अर्ज यह गर्ज समर की कहौ राम अस होहु सहायक ॥ रागनो भैरवो ॥ ध्यावौं आदि सक्ति महरानी । ब्रह्मा विस्नु रुद्र जेहि ध्यावैं तुह्मरी गति अद्भुत जगरानी । जगत तेज चौदहौं भुवन मे वेद सेस नहि सकत वषानी ॥ रक्तवोज सम कोटिन दानौ निषि छिन दुष्ट वध्यो है भवानी ॥ समर चहत राम जस वरनन करौ सहाय देवो वरदानी ॥ सो० ॥ तुम गुर ग्यान निधान मैं अग्यानी अधम हों । ज्ञानौ मोहि अजान करहु समर निस्तार प्रभु ॥

End—राजा रघुवर के बंस महं राम अवतरे आय उनको सुजस अपार है समर कह्यो नहिं जाय । ध्यान करत ध्यानी थके ग्यानी करते ग्यान । पार न पायो जग कोई का कहै समर बषान । बहि रघुकुल में जन्म है समर राम को दास । तीस कोस पश्चिम दिसा अवधपुरी ते वास । सरजू जहं कलि विष हरन और अनंदहिं देत । राम अवतरे हैं जहां ताहि न भजसि अचेत ॥ जे पढ़िहैं सुनिहैं समर राम चरित मन लाय । भवसागर तरिहैं सही दिन दिन सुष सरसाइ ॥ मगरौड़ा थान है कल्यानी के तीर । समर इत्ति रास तजि सुमिरो श्री रघुवीर ॥ कोविद कवि सुर साधु ते अर्ज समर सिर नाय । बनो न होवे सोइ छम्यो जान्यो सेवक आय ॥ संवत सत उनीस से औ पावस के माहिं । सुक्र पक्ष तिथि सत्तमी नषत मैत्र गुर ताहि ॥ इति श्री रामचरित्रे मानस सकल कलिकलुष विध्वंसने विमल वैराग्य तुलसीदास दासस्ये समरदास कृत उत्तर कांड समाप्तः ॥ लिषतं विश्वनाथ पांडे संवत १९२७ पठनार्थ दुर्गा सिंह के ॥

Subject—इस पुस्तक में बाल, अयोध्या, किष्किंधा, सुन्दर, लंका उत्तर—सातकांड हैं और सातों में तुलसीदास जी की भांति भजन दोहा चौपाई, सोरठा आदि में राम जी की लीला वर्णन की गई है ।

No. 371(*a*). Kavitta by Śambhunātha of Terā, Unao. Substance—New paper. Leaves—3. Size—$7 \times 4\frac{3}{4}$ inches.

Leaves per page—32. Extent—48 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Banibhushana Ji, Rāe Bareli.

Beginning—श्री शम्भुनाथ के कवित्त ॥ सांप सबै सरके हर देह ते अंगन मैं सुनि मोर को बानो ॥ बैल भजो लखि सिंहन को गन गोदत हो गिरि की रजधानो ॥ द्वार मैं काहि ले आवै लिवाइ बरात ते पीछे फिरो अरगानो। बाहर ठाढ़ो हंसै लखि शम्भु गई पुर ते जुरि जो अगवानो ॥ १ ॥ सैल की गैल वो बैल को सिंह दरोन मो देखि परो निज नेरे । पुछ गहे गन जात चले डरि भाजि चलो न फिरे फिरि फेरे ॥ आगे ह्वै लेन चले वर को ते हंसे सिगरे यह कैातुक हेरे। द्वारे को चारु रह्यो कहि शम्भु बरात चली फिरि दूलह घेरे ॥ २ ॥ माल कराल कपाल की माल कसे कटि व्याघ्र को खाल डरारो। देह मैं खेह धरे वह शम्भु गरे विष रेख भयंकर कारो ॥ रोचना देन लिलार लख्यो तब तोछन आंच लगी डगवारो। पेंचि कै हाथ अचेत गिरो दुज देखि हंसै सब कैातुक भारो ॥ ३ ॥

End—खेलत फाग सुहाग भरी जिन पै सुर अंगना वारतौं वारि है। जैये चले अंटिलैप उतै इतै कान्ह खड़ो वृषभान कुमारि है ॥ शंभु समूह गुलाब के मीसन को रंग केसरि डारि बेगारि है। पामड़ो पामड़े होत जहां तहं को लला कामरी पै रंग डारि है ॥ १३ ॥ बालम के बिछुरे बढ़ो बाल को व्याकुल विरहा दुख दानिते। चैापरि आनि रची कवि शम्भु सहेलिन साहिबिनी सुखदानते ॥ वे जुग फूटै न परी भट्ट यह काहु कहो सखिया सखियान ते। कंज से पानि ते पांसे गिरे ये तुवा गिरे खंजन सो अखियान ते ॥ १४ ॥ सोय लोग घर के डगर के केवारे खोलि जिय जानि बोति जुग जाम गई जामिनी । चापे पद चुप चाप चोरी चोरा चितवत चली हितू पास चित चाह भरी भामिनी। पैठत सकेत के निकेत के निकट शम्भु कैसी बन बीथिन बिराज रही कामिनी। चामो कर चोर जानो चंपलता मोर जानो चांदनो चकोर जानो मोर जानो दामिनी ॥ १५ ॥

Subject—हास्य रस के ८ छंद, करुणा रस के—२ छंद, वीर रस के १ छं० होलो—२ छंद, विरहिनी का वर्णन—२ छंद

No. 371(*b*). Muhurta Chintāmaṇi Bhūshā (Muhurta) Manjari). Name of author—Śambhunāth Tripāthi. Substance—Country-made paper. Leaves 72. Size—10 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—1,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat

1903 or A. D. 1846. Place of deposit—Pustakālāya Rājā Lālta Bhaksha Simha Ji Talukedara Nilgama, Post Office Nilaganva, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुहूर्त चिन्तामनि भाषा लिष्यते ॥ सघन अनघ के दलन को तुव समान को होहि । हरज विनायक को हरै विघन विनायक तेहि । छबि कदंब लखि अंब के उमड़त मोद प्रचंड ॥ कलरव करि करि वदन फेरत सुंडा दंड ॥ अति सुदेश मम आचरन देसन को सिरताज । सब सुष करि बसि सिर जहां वेश भूप को राज ॥ अमल चरित्र तेहि देश को ज्यों सुरसरि को सोतु । जहां धरम अ चरम सुष दिन दिन दूनो होत ॥ प्रगट भये तेहि देश में जाके वेश प्रभाव । अरि कुल मरदन सुख सदन मरदन नर या राव । तेहि मरदाने राय के प्रगट भये अचलेस । जाके गुण गण की कथा बरनि सकै नहिं सेस ॥ जयति पत्र जग जिन लयो सत्रु समूह नसाइ । निज वश करि तुरकान दल कस्यो मही में आव ॥ सभा मध्य बैठे हते एक समय अचलेस । तिन कवि शम्भूनाथ को कीन्हो यहै निदेस । जैसे जातक चंद्रिका करि दीन्ही करि नेह । त्यों मुहूर्त चिंता मन्यो भाषा में करि देहु ॥

End—घनाक्षरी ॥ अथ ग्रहप्रवेश ॥ तानिय वितान मुकतान सो समेत गान मंगल के कानन सु सासो पोजियतु है ॥ वेद धुनि सुनत न गई सुर पूज गुरजन पुरजन सो आसीस लीजियतु है ॥ गनिका चितेरे औ लोग जे अनेरे मेरे जो हित पुरोहित न दान दीजियतु है ॥ विहसत वदन सुमन दुरजन चढ़ि नूतन सदन को गमन कीजयतु है ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री अचल सिंह आज्ञा त्रिपाठी शंभूनाथ कृत निर्मितायां मुहूर्त मंजर्य्या ग्रहप्रवेश प्रकर्ण इति मुहूर्त मंजर्य्या समाप्त शुभ मस्तु ॥ घनाक्षरी ॥ जौ लौं कोल नायक कलानिधि कलपतरु कमठ की पीठि में निवास जौलौं सेस को । देव मुनि मनुज दनुज गंधर्व जौलौं मन में अग्र माल पूजत गमन साको ॥ तौलौं हिमगिरि परा गिरिजा संभुता संभु जौलौं अमरावती अमरेश को । मान सरवर जल प्रफुलित के जौलौं तौलौ राज राजै राजवंशी अचलेश को ॥ इति श्री मुहूर्त चितामणि भाषा समाप्तम् । लिषतं गंगा गणेश संवत् १९०३ श्रावण मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्दस्यां ॥

Subject—मुहूर्त चिंतामणि ज्योतिष विद्या की पुस्तक का भाषा किया गया है, इसमें मुहूर्त आने जाने व्याह यज्ञोपवीत यज्ञ आदि के वर्णन किये गये हैं उनके लाभ हानि भी लिखे हैं ।

No. 371(c). Muhurta Chintāmaṇi by Śambhūnātha. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15 × 5

inches. Lines per page—30. Extent—2250 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Date of Manuscript—Samvat 1911 or A. D. 1854. Place of deposit—Chhatra Siṁha Ṭhakura, Katailā, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

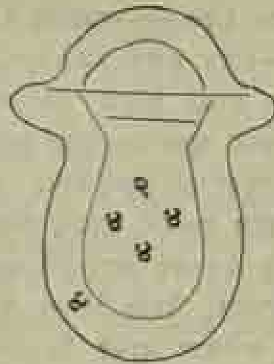
No. 371(*d*). Muhurata Manjarī by Śambhūnātha Tripāthī of Baksara (Rāe Barelī). Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size—$11\frac{1}{2} \times 5$ inches. Lines per page—20. Extent—1550 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1803 or A. D. 1746. Place of deposit—Paṇḍit Achyutakumār Uttarpārā, Rāe Barelī.

Note—आदि No. 371(*c*) पर लिखा गया है ।

End—घनाक्षरी—सूरज नषत ते कलस मुष दोजै एक ताते कह पानिन की ज्वाला ते जरतु है । चारि चारि नषत विचारि बहु दिसन्हि में दीजै फल ताको तैान टारे न टरतु है ॥ उदवस लाभ लछिमी कलह बहुरि मध्य वेद में परै तौ भानु प्रानंनि हरतु है ॥२०॥ (एक चरण नहीं है) तानिय वितान मुकतान सो समेत ज्ञान मंगल के कानन सुधा सी पीजियतु है । वेद धुनि सुनत नगर सुर पूजि गुरजन सो असीस लीजियतु है । विहसत वदन सुमन छिरदन्हि चढ़ि नूतन सदन को गमन कीजयतु है ॥ २१ ॥

उत्तर	[illegible]	[illegible]	मुष लग्ने रविः	[illegible]
पश्चिम	[illegible]	[illegible]	मुष लग्ने रविः	[illegible]
दक्षिण	[illegible]	[illegible]	मुष लग्ने रविः	[illegible]
पूर्व	[illegible]	[illegible]	मुष लग्ने रविः	[illegible]

॥ कलह ॥



१ लक्ष्मी

वंदुसन

विनास

॥ लाभ ॥

श्रों ॥

Subject—पृ० १ गणेश स्तुति, आश्रयदाता का परिचय, ग्रन्थ रचना का कारण। पृ० २—निर्माण सम्वत, तिथि वर्णन तिथि ह्रास, कर्कच योग वर्णन, पृ० ३—दन्तधावन विचार, तिथि मिलन, नक्षत्र शून्य और नक्षत्र तिथि मिलन शून्य वर्णन। ४—तिथि, वार, नक्षत्र मिश्रित दोष, आनंद योग वर्णन—५—सिद्धि योग, और कुयोग परिहार वर्णन। पृ० ६—कुलिक योग वर्णन और रव्यादिक वार दुष्ट मुहूर्त वर्णन। पृ० ७—रव्यादीनां मुहूर्त दोष वर्णन, भद्रा विचार और लोक वास वर्णन। पृ० ८—सिंहस्थे गुरौ परिहार त्रय, वक्र अतिचारे परिहारः, वार प्रवृत्ति और काल होरा वर्णन। पृ० ९—मन्वादयः और युगादयः वर्णन, शुभाशुभ प्रकर्ण समाप्त, नक्षत्र नाम ध्रुवादि संज्ञा वर्णन। पृ० १०—अधोमुखादि नक्षत्र, नारी भूषण परिधान, वस्त्रचक्र, मद्यारंभः, गवांक्रय विक्रय, पशुस्थापन वर्णन। पृ० ११—हाट मुहूर्त, विक्रय मुहूर्त, गजवाजि कर्म, आभूषण बनाने का मुहूर्त, सूची कर्म वर्णन। पृ० १२—शस्त्र धारण मुहूर्त, अंध्यादि नक्षत्र ज्ञान, धातो घरने का मुहूर्त, राज सेवा मुहूर्त और सेवा चक्र वर्णन। पृ० १३—हलकर्म, बीज बोने का मुहूर्त, खेत काटने और अन्न लेने का मुहूर्त। पृ० १४—रुधिर निकलवाने का मुहूर्त, शांति कर्म, अग्नि निवास, आहुति विचारनाम, नौका, रोगी स्नान, और शिल्प कर्म मुहूर्त वर्णन। पृ० १५—संधि मुहूर्त, सुवर्णादिक के मुहूर्त, रोगो त्पत्ति विचार, विषरोगोत्पत्ति, विषधर नक्षत्र, पंचक विचार, ईंधन धरने का मुहूर्त वर्णन। पृ० १६—त्रिपुष्कर योग, नारायण बलि, मूलविचार, मूलवास, मूल वृक्ष, मूल घड़ी बीतने का विचार वर्णन। पृ० १७—अग्न्यादि स्वरूप, देव जला-शय प्रतिष्ठा वर्णन २ प्रकरण। पृ० १८—संक्रांति चक्र, उत्तरायन दक्षिणायन विचार। पृ० १९—कर्ण ज्ञान, सुतादि ज्ञान, बाहरिणादि विचार वर्णन। पृ० २०—मलमास विचार, ३ संक्रांति प्रकरण समाप्त। पृ० २१—गोचर वर्णन।

पृ० २२—तारा विचार, विरुद्ध तारादान वर्णन। चंद्रमा की १२ अवस्था; गुरु विरोध औषधि स्नान विचार वर्णन। पृ० २३—रव्यादि दान, अन्य सर्वसा दान, चतुर्थ प्रकरण गोचर। पृ० २४—स्नान मुहूर्त, गर्भाधान, स्तनपान, सुती स्नान मुहूर्त प्रथम मास दंतोत्पत्ति फल, दोला रोहन, पुंसवन सीमंतकर्म जातकर्म वर्णन। पृ० २५—निष्क्रमन, अन्नप्राशन, स्नान जल पूजा मुहूर्त, भूमि प्रवेश, तांबूल भक्षण मुहूर्त। पृ० २६—कर्णवेध, चूड़ा कर्म मुहूर्त वर्णन। पृ० २७—२८—अक्षरारंभ, गुरु शुक्र बाल वृद्धित्व, विद्यारंभ, पृ० २९-व्रतबंध वर्णन, ५-प्रकरण संस्कार समाप्त। पृ० ३०-विवाह प्रकरण। पृ० ३१-वर रक्षा मुहूर्त, चूड़ा व्रत विवाह के अंत। पृ० ३२—वर्ण विचार, तारा विचार, जोनि विचार ग्रहाणां मित्र विचार। पृ० ३३—गण विचार, रासिकूट, परिहार, नाड़ी विचार, नक्षत्र कूट विचार। पृ० ३४—अष्टवर्ग, परिहार, अन्य विचार, रासि ईश, षटवर्ग द्वंकाल; सप्त मासा विचार। पृ० ३५—नवांशा विचार, द्वादशांश, त्रिशांस विचार। पृ० ३६—दिन के १५ मुहूर्त, रात्रि के मुहूर्त, विवाह नक्षत्र, पंच शलाका। पृ० ३७—सप्त शलाका, पंचक विचार वर्णन। पृ० ३८—रोग, एकार्गल, पाजुरक, क्रांति साम्यं, दग्ध तिथि, दशयोग विचार। पृ० ३९—ग्रहण दृष्टि विचार तत्काल विचार, अंधादि पंगुलग्न विचार। पृ० ४०—विश्वावल विचार वर्णन। पृ० ४१—चक्र वर्णन। पृ० ४२—विवाह प्रकरण समाप्त ६, वधू प्रवेश। पृ० ४३—द्विरागमन, अग्नि स्थापन मुहूर्त वर्णन। पृ० ४४ राज्याभिषेक, यात्रा प्रकाश। पृ० ४५—जीवपक्ष मृतपक्ष, कुलाकुल विचार। पृ० ४६—पथिराहु, तिथि चक्र वर्णन। पृ० ४७—घात चन्द्र वर्णन। पृ० ४८—योगिनी विचार, काल वास परिधि विचार, अयन सून, सुक विचार वर्णन। पृ० ४९—अंधशुक्र विचार, द्विगोला, ललाटी योग विचार। पृ० ५०—५१—प्रस्थान विधि। पृ० ५२—भाग्य योग, कल्यान योग, विजय योग, चिंतामणि योग, सिद्ध योग, मृत्यु योग, केन्द्र योग, पारावर्त योग, पिनाक योग, मृत योग, संजीवन योग, भयंकर योग, अमय योग, कुहयर योग, पाप कंचुकी योग, आनंदार्णव योग वर्णन। पृ० ५३—जात्रा समय अंगादि स्फुरण सकुन वर्णन। पृ० ५४—उत्पात दोष, प्रवेश निर्गम विचार, यात्रा विधि, अश्वन्यादि नक्षत्र दोह दानि, दिन दोह, वार दोह, चलने की विधि वर्णन। पृ० ५५—प्रस्थान स्थान विचार। पृ० ५६—शकुन विचार, असगुन विचार वर्णन। पृ० ५७—प्रवेश निर्गम, यात्रा समय दोष वर्णन, यात्रा प्रकरण समाप्त। पृ० ५८—गृह प्रकरणः—द्वार विधि वर्णन। पृ० ५९—ध्वजादि मुख विचार, ध्रुवादि शाला, मास भेद, गृहद्वार विचार वर्णन। पृ० ६०—गृहारंभ मास विचार, तिथिपक्ष से गृह मुख विचार। वृष चक्र, दिशा नक्षत्र विचार वर्णन। पृ० ६१—राहु मुख जानने की विधि, शाला विधि,

वदानि, चैास्ट विचार, वास्तु प्रकरण समाप्त। पृ० ६२—सूर्य विचार, कलस चक्र विचार, प्रवेश विधि वर्णन।

No. 371(c) Vaitalapachisi by Śambhū Kavi (Śambhūnātha Tripāthi) of Bakasar. Substance—Country-made paper. Leaves—292. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—2,956 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1885 or A. D. 1828. Place of deposit—Lālā Mohana Lālaji Haluāī, Nawabganj, Bārā Baṇkī

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैताल पचीसी कथा लिख्यते॥ दोहा॥ तव सन्मुष ज्वाला मुषो उरज्वाला मिटि जात॥ कलि कलुष आखिल जथा सुरसरि वारि नहात॥ गनमुष सन्मुष होतहो विघन विमुष ह्वै जात॥ जिमि पशु परत पराग मग पाप पहार बिलात॥ दोहा॥ छवि कदंब लखि अंब के उपजत मोद अषंड॥ कलरव करि करिवर बदन फेरत सुंडा दंड॥ कवित्त॥ एक समै गिरिजा को नंदनि आइ अन्हाइ कछु सरसोते॥ भासुर भाल दिये दल आनन तो छवि को छवि ओते॥ सो हठि लोवे को सडि पसारि तहा गन नायक आइ अमोते॥ चाहि के चोप सो दौरि मनोहरे लत सुधा अहिराज ससोते॥

End—कहि देवी यह बचन प्रधान॥ तुरित ह्वै गई अंतर ध्यान॥ बचन प्रमान देखिके भये॥ दुवो पुरुष नृप वर है गये। आयो तब बेताल के पास॥ महाराज हिय सहित हुलास। प्रेम सहित बरस्यो नृप पाई॥ करी विनै बहु सीस नवाइ॥ जोतू सिष मोहि नहि देतो। तो मम प्रान आजु वह लेतो॥ जो तुम मेरे भये सहाई॥ राज से बचो सिद्धि मैं पाई॥ जीवत रहो जक्त मे जौलो॥ क्रिपादास पर कीजै तौलो॥ यह सुनि बचन देव हिय हरषो॥ सुमन समूह भूप पर बरषो॥ कह्यो अचल ह्वै कीजै राज॥ बिजइ होहु सदा महाराज। जो तेरे अनहित को करै॥ बिना मीचु वह प्रानी मरै॥ दिन दिन राज तिहारो बढ़ै। सुजस दिवस बिदिसन मैं मढै॥ लछिमी तजै न तेरो धाम॥ पूरन सदा रहै मन काम॥ जीवत रहो भूप बहुकाल॥ यह कहि बचन गयो बैताल॥ कथा संपूर्न सुभ मस्तु पौष मासे किस्न पछे नौमी तिथिऊ भौमवासर सवत॥ १८८५ को साल॥

Subject—पृ० १—५ तक ज्वालामुखी तथा गणेश की वंदना, वैश्य वंश वर्णन। ग्रंथ निर्माण काल। हरिगीतिका छन्द॥ द्विजराज कुल बन कुमुद को मुद दानि पूरन इन्दुभो॥ निज वंस वारिज को दिनेस तिलोकचंद नरिंद्र भो॥ पुनिभो आनंद कंद प्रिथवी चंद त्रिप ताके तनै॥ भुज जोर सो जुरि अंग मैं जमराज हू को नहि गनै॥ पुनि भयौ ताके धर्मचंद धरित्र कुल दल जेन्ह हन्यो॥ तिनके भये पुनि देव राय प्रचंड रैया राउ है॥ इनरंग निरषत चढ़त जाके चौगुनो चित चाउ है॥ पुनि भयो भैरो सो उदंड प्रचंड भैरोदास है। हरि साहिबो धरि बरन्ह को भिरि दरिन्द्र दीन्हों बास है तिनके धराधर धरन को त्रिप भयो ताराचंद है॥ निज कर धकंटक भू करो हरि प्रजन को दुषदंड है॥ संग्राम राउ भये बली संग्राम दुलह ताहिके॥ अति धवल कवल समान जस अगि मनि रची जस जाहि के॥ पुनि कनिक सोंह नरिंद्र प्रिथम भानु सो जेन्ह के भयौ॥ तिन को समर भट भीर न पगु पछ्यो गयो॥ पुनि भयो प्रिथिराज प्रिथु कैसो कियो॥ जस जुह जेहि जगमें लयो वनवास वैरिन्ह को दयो॥ तिनके पुरंदर सो प्रबल प्रगटो पुरंदर राउ है॥ जिनको महा मै मानिकै त्रिप के इन परस्यो पाउ है॥ करवाल जब कर लइ तौ रिपुकाल कहि कहि सब भनै॥ रन होइ सनमुष सुभट को जमराज हू जो नहि गनै॥ पुनि भयौ अरि मद कदन मर-दन सिंह रैया राउ है॥ जेहि पाइ पति वसु मति हिये दिन दिन बढ़त चित चाउ है॥ कल कुंगन कोउ पति हो सक्यो तेहि देव सते डेरि डेरन्ह सों। तजि त्रास डरे मन मुदित ह्वो फुलो फिरै चहुं चरन्ह सो॥ जगचंद अनंद कंद चंद कुटुंब कैरव को भयो॥ रनधीर वीर गंभीर निरमल सुजस जेहु जगमें लयो॥ जरिजात जासु प्रताप पावक तेज तें अरिवर घनो॥ तिन्ह के भयो सुरनाथ सो रघुनाथ जू अवनिसर धनी॥ दोहा॥ सभा मध्य बैठ्यो हुतो येक समै रघुनाथ। वीर धीर बद भट सुभट सुतन बंधु जन साथ॥ कह्यो किपा करि संभु सन जिया मैं मानि सनेह। यह बैताल कथा हमहि भाषा मैं करि देहु॥ नंद व्योमग्रिह जानि के संवतसर कवि संभु॥ माघ अष्याये द्वेज को कीन्हों तब प्रारम्भ॥

(२) पृ० ६—२३ तक—प्रस्तावना—राजा विक्रम का जन्म, पंडितों द्वारा उनके उच्च ग्रहों का वर्णनन, उसी घड़ी एक तेली तथा एक कुम्भकार के पुत्रों का उत्पन्न होना, योगी बन कर कुम्भकार का जप, तेली को धोखे से मारना, विक्रम को भी धोखा देना, अपने साथ में अंधेरी रात्रि में ले आना, मार्ग में भूत पिशाचादि दर्शन, मुर्दे को ले कर चलना, अपने मित्र बेताल द्वारा मार्ग में राजा का कहानियां श्रवण करना।

(३) पृ० २४—४९ तक—प्रथम कहानी—मंत्री की कथा, काशी के राजा प्रताप मुकुट के पुत्र मुकुट शेखर और मंत्री के पुत्र मतिसागर की मित्रता होना,

दोनों मित्रों का शिकार को जाना, रात्रि हो जाने पर एक शिव मंदिर में निवास, वहाँ पर नारियों का आगमन, एक स्त्री पर राजकुमार का मोहित होना, छल बल से उसे ले आना, इस पर विक्रम का हेद्रक नगर के विप्र चंद्रसेन की कथा सुनाना, उस ब्राह्मण के बालकों का सर्प द्वारा खाया जाना। पाले हुए नकुल द्वारा उस सर्प का विनाश तथा ब्राह्मणी द्वारा उस नकुल का हनन पुनः ब्राह्मणी के पश्चात्ताप का वर्णन, मुर्दे का उसी डाल से लग जाना जिसे राजा लाया था।

(४) पृ० ५०—६३ तक—द्वितीय कथा—तीन वरों की कथा—एक ब्राह्मण की रूपवती कन्या को वर न मिला, अनायास ही तीन वरों का घर पर आजाना, ब्राह्मण का संकोच कि किस को कन्या दें? दैवात् उस कन्या को सर्प का काटना, उसका मरना, एक वर का उसके साथ जल कर मर जाना, दूसरे का उसकी भस्म की रक्षा करना तीसरे का तीर्थ यात्रा को निकल जाना अंत में एक पोथी पाना जिससे जला हुआ मनुष्य जीवित हो जावे। कन्या का जीवित होना, वेताल का प्रश्न कि कन्या किसे मिले, विक्रम का सकारण उत्तर, मृतक का उसी डाल पर चला जाना।

(५) पृ० ६४—८९ तक—तृतीय कथा, शुकसारिका की कथा, (रूपसेन) भागवति रानी के कंत का अपने मित्र शुक द्वारा 'सुर सुन्दरी' का समाचार पा उससे विवाह करना, राजा रानी के अनेक भोग विलास के पश्चात् शुक—सारिका को भी—एक पिंजड़े में पहुंचा देना, सारिका का तोते से विमुख रहना तथा एक साहूकार के पुत्र को—जिसने अपनी स्त्री को मारने की चेष्टा की थी—कह कर पुरुषों से घृणा प्रगट की तथा तोते ने एक सेठ की पुत्री की कथा—जिसके मित्र द्वारा उसकी नाक काटी गई थी—अपने पति का नाम लगाने का अपराधी बता कर घृणा प्रगट करने का वर्णन।

(६) पृ० ९०—९९ तक—चतुर्थ कथा। जंबूद्वीप के अंतर्गत धारानगर के राजा के मित्र हरिदास की कन्या महादेवी के लिये वर की तलाश विप्र का राजा की आज्ञा से विदेश गमन और वहाँ से एक गगन में उड़ने वाले विप्र बालक के साथ आना और उसे अपनी कन्या देने का निश्चय करना, घर आकर ज्ञात करना कि एक त्रिकालदर्शी विप्र बालक स्त्री द्वारा और दूसरा उसके पुत्र द्वारा और लाया जा चुका है। शंका उठना कि किसको कन्या दी जाय। नगर निवासियों का निश्चय कि प्रातःकाल देखा जायगा। रात्रि को विप्र कन्या का हरण, ब्राह्मण का पश्चात्ताप, त्रिकाल दर्शी बालक द्वारा समाचार पाकर रथ पर आरूढ़ हो तीसरे शक्तिशाली का जाकर राक्षस को मार के कन्या को ले

माना, परस्पर विवाद होना. बैताल का प्रश्न राजा से कि किसको कन्या ब्याही जावे ? राजा का सकारण उत्तर देना कि वह कन्या लाने वाले को दी जाय, उत्तर सुन कर मृतक का फिर उसी डाल पर लटक जाना और राजा का पुनः उसके लेने के लिये जाना।

(७) पृ० ९९—१०८ तक—पंचम कथा नर्वदा नदी के तट पर एक राजा का देवी का मन्दिर बनवाना, एक रजक पुत्र का देवी के कुंडों में स्नान कर उनकी पूजा करके निकलना और एक रजक कन्या को देख कर उस पर मोहित होना और देवी से वर मांगना कि यदि यह पत्नी मिले तो तुझ पर अपना शीष चढ़ा दूंगा। पिता के उद्योग से उसे पत्नी के पिता का अपनी पुत्री को देने का वचन, रजक पुत्र का अपने मित्र सहित जाकर उस कन्या का लाना, मार्ग में देवी का मन्दिर मिलना देवी पर रजक पुत्र का शीष चढ़ा देना। पीछे उसके मित्र का जाना और उसका भी शीष का चढ़ा देना। पुनः उस रजक कन्या का मंदिर में जाकर वैसा ही करने का इरादा देख देवी का दया करना और कहना कि उनके शिरों को उनके धड़ों पर रख कर तू बाहर निकल जा वह जीवित हो जावेंगे। शीघ्रता में एक का शीश दूसरे के धड़ पर रख जाना, दोनों का परस्पर घर आकर पत्नी के लिये झगड़ा, बैताल का प्रश्न कि वह स्त्री किसको मिले, राजा का उत्तर कि जिस पर उसके पति का शीष है उसी को मिले यह सुन कर मृतक का वहीं पर पुनः पहुंच जाना। राजा का पुनः जाना।

(८) पृ० १०९—११५ तक—षष्ट कथा—चंपापुर के नृपति की रूपवती कन्या के लिये वरों का खोज करना और प्रत्येक के गुणादि अंत में उसी को उसे सुनाना न रुचने पर पुनः लोगों को भेज कर उसके योग्य चार नृपालों का आना, एक पंच वस्त्र उपराजने वाला (नित नये), दूसरा शास्त्र धारी, तीसरा शस्त्रपाणि चौथा पक्षियों की बोली पहिचानने वाला, बैताल का प्रश्न कि किसको कन्या मिले, राजा का सकारण उत्तर कि शस्त्रपाणि वाले को सुनते ही मृतक का पुनः चला जाना।

(९) पृ० ११६—१२६ तक—सातवीं कहानी। एक राजकुमार का दल बल सहित एक नृपति की राजधानी में आकर नौकरी की इच्छा प्रगट करना, राजा का उनको रहने की आज्ञा दे देना, उसका नित्य प्रति ढाल तरवार लेकर राज दरबार में कुछ द्रव्य पाने के लिये हो आना किन्तु राजा का न मिलना, यहां तक कि उसके सब साथी भी भाग गए और वह सब कुछ बेच कर खा गया। अन्त में राजा से साक्षात्कार होना, उसे राजा का एक स्थान के प्रबन्ध

के लिये भेजना, मार्ग में उसे एक मंदिर में पूजन करते एक रूप यौवन सम्पन्न युवती के दर्शन होना, उस पर मोहित होना, राजकुमार का कुंड में स्नान करते ही अपनी इच्छानुसार राजा के पास पहुंच जाना, राजा का उसी स्थान पर आना, उस सुन्दरी का राजा पर मोहित होकर आज्ञा मांगना, उनका कथन कि मेरे सेवक के साथ विवाह करो, स्त्री का आज्ञा पालन, बैताल का प्रश्न कि उक्त राजकुमार और राजा में कौन अधिक सत्यवान गिना जाय और क्यों ?— राजा का उत्तर कि राजकुमार अधिक सत्यवान है, इस पर मृतक शरीर का फिर उसी डाल पर लटक जाना और विक्रम का पुनः सक्रोध उसे लेने को जाना।

(१०) पृ० १२७—१४५ तक—आठवीं कथा—एक साहुकार का मरते समय अपने तकिये में सम मूल्य के चार रत्न बता कर अपने चारों पुत्रों को एक एक ले लेने के लिये कहना, छोटे का उसमें से एक रत्न चुरा लेना। उन चारों का एक काज़ी के पास न्याय के लिये जाना, उसकी न्याय में असमर्थता दिखलाने पर एक राजा के पास जाना और उसके बतलाने पर एक राजकुमारी के पास जाना। राजकुमारी का एक एक को बुला कर एक कहानी (जिसमें शपथ के अनुसार वणिक पुत्र ने अपनी पत्नी को अपने मित्र राजकुमार के पास भेज दिया था, राजकुमार ने उसे माता के सदृश बुला कर विदा कर दिया था, यह देख कर मार्ग में मिलने वाले चोरों ने उसके आभूषण न लिये थे (सुना कर पूछना कि उन तीनों में कौन अधिक सत्यवान है, तीन राजकुमारों का उन सभी को सत्यवान बताना, किन्तु छोटे का उन सभी को बेइमान बताना। अंत में उसी को चोर ठहरा कर वह रत्न निकलवाया जाना। विक्रम से बैताल का प्रश्न राजा का चोरों को सकारण अधिक धर्मात्मा बतलाना, मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुंच जाना और राजा का पुनः उसे लाने का उद्योग।

(११) पृ० १४६—१५१ तक—नवीं कथा—बैताल का राजा से प्रश्न कि एक रानी के पैर पर कमल गिरने से उसका पैर टूट गया, दूसरी के शरीर पर सूर्य्य की किरण पड़ने से छाला पड़ गया और तीसरी को पड़ोसिन के धान कूटने का शब्द सुन कर हाथों में पीड़ा हो गई, बताइये इनमें कौन अधिक सुकुमारि है, उत्तर में तीसरी का सुकुमारि सुन कर मृतक फिर उसी डाल पर पहुंच गया। राजा पुनः लेने गया।

(१२) पृ० १५२—१६० तक—दसवीं कथा—एक राजा का अपने मंत्री को राज काज सौंप कर विषय भोग करना। मंत्री का तीर्थ को जाना, वहां एक विद्याधर कन्या को जल में देखना और रत्न जटित वृक्ष समेत डूब जाना, यह कथा उसका लौट कर राजा को सुनाना। राजा का वहां पहुंच कर उसके

साथ डूब कर पाताल पहुँचना, उससे विवाह की अपनी इच्छा करना, उसका कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को विवाह करने का वचन देना, उस दिन कन्या का एक राक्षस द्वारा निगला जाना, राजा का उसे मार कर उसको निकालना और उसको अपने साथ लाना। कन्या को अपने पिता से मिलने की आज्ञा लेकर जाना किन्तु मनुष्य स्पर्श के कारण वहां न पहुंच सकना और फिर राजा के पास ही लौट आना। राजा का आनन्द मनाना यह देख कर मंत्री की मृत्यु, इस पर वैताल का प्रश्न कि मंत्री की मृत्यु क्यों हुई। विक्रम का उत्तर कि "उसकी मृत्यु इस लिये हुई कि राजा विषय वासना में फंस कर राज्य कार्य को विस्मरण कर देगा" सुन कर मृतक का फिर उसी डाल से जा लगना और विक्रम का उसे पुनः लेने आना।

(१३) पृ० १६०—१६६ तक—ग्यारहवीं कथा—एक ब्राह्मण का अपनी हरण की हुई स्त्री की खोज में निकलना, क्षुधातुर हो कर एक ब्राह्मणी से भोजन पाना, एक तड़ाग में स्नान करने जाना अपना भोजन एक वृक्ष के नीचे रख आना, वृक्ष पर रहने वाले सर्प के श्वासोच्छ्वास से भोजन में विष मिलना, ब्राह्मण का खाकर नष्ट हो कर ब्राह्मणी का यह दोष बतला कर उसी के द्वार पर पड़ रहना, ब्राह्मण का ब्राह्मणी को दोषी समझ घर से निकाल देना, इस पर वैताल का पूछना कि कौन पापी है, राजा का उत्तर 'बिना विचारे पाप लगाने वाला' सुनकर मृतक का उसी डाल पर लग जाना और विक्रम का पुनः उसे लेने आना।

(१४) १६६—१७२ तक—बारहवीं कथा किसी राजा का एक चोर को सूली का दंड देना, एक सेठ कन्या का उसे देख कर मोहित होना और अपने पिता को उसके बचाने की प्रार्थना करके राजा के पास भेजना, यह सुन चोर का हंसना, रोना, नृप के न मानने और चोर के सूली पर चढ़ने के पीछे सेठ कन्या का जलने का साहस देख कर उसके पति को जीवित कर देना, राजा विक्रम से वैताल का प्रश्न कि वह चोर क्यों हंसा और क्यों रोया? राजा का उत्तर कि हंसा इस लिये कि पिता पुत्री का इतना साहस है और रोया इस लिये कि इसका बदला कैसे चुकाऊंगा। मृतक का पुनः चला जाना।

(१५) पृ० १७३—१८७ तक—तेरहवीं कथा—एक विप्र का एक नृप कन्या पर मोहित होना एक ब्राह्मण के गुटका देने पर उसका षोडशी बन कर कपट से राज कन्या के पास रह कर गुटका प्रयोग से रात्रि में पुरुष और दिवस में स्त्री बन कर विषय भोग में फंस कर छै मास रह कर, राज कन्या के गर्भ रखा कर, राज महिषियों के साथ वजीर के घर गया वहां वजीर पुत्र का उस पर

मोहित होना राजा द्वारा उस ब्राह्मण के न माने और वज्रीर की प्रार्थना पर यह कन्या मंत्री सुत को भाँसा देकर उसका तीर्थों को भेजना और उसकी स्त्री के साथ वही आचरण करना जो राजपुत्री के साथ किया था। मंत्री के पुत्र के आ जाने पर गुटका प्रयोग से पुरुष बन कर उसका निकल आना। ब्राह्मण से आकर सब सुनाना। ब्राह्मण का राजा से आकर और अपने पुत्र को साथ लाकर उस कन्या को मांगना, राजा का सब समाचार बताने पर उसकी पुत्री का मांगना, राजकन्या के लिये दोनों विप्र कुमारों का झगड़ा बता कर राजा से पूछना कि वह किसे मिले? राजा का उत्तर कि "वह मूलदेव के पुत्र को मिले" पुनः मृतक का भाग कर वृक्ष पर लटकना।

(१६) पृ० १८७—१९९ तक—चौदहवीं कथा—कल्पवृक्ष के वरदान से एक राजा का उत्तम पुत्र पाना, उसका बड़ा होकर विद्रोही भ्राताओं का वशीभूत करना, राजा (अपने पिता) के कथन से उनका अपराध क्षमा कर पिता सहित विरक्त वनवासी होना, वहां आकर भी एक राजा की सुंदरी कन्या से उसका विवाह होना, घूमते हुए उन सर्पों की हड्डियाँ देखना जो गरुड़ द्वारा भक्षण किये जा चुके थे, उस दिन शंखचूड़ की बारी आने पर स्वयं गरुड़ का भक्ष बन जाना, इस पर शंखचूड़ का गरुड़ की भूल से सूचित कर स्वयं उसका भक्ष बतलाना, गरुड़ का प्रसन्न हो कर दोनों को छोड़ देना, और वर देना, राजकुमार का सर्पों को जीवित कराना, इस पर बेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवादी है, राजा का साधारण उत्तर कि 'शंखचूड़' सुन कर मृतक का उसी डाल पर लग जाना।

(१७) पृ० २००—२०८ तक—पन्द्रहवीं कथा, विजयपुर नगर के धर्मशील नामक राजा के राज्य में रत्नदत्त नामक एक वैश्य की अपनी लावण्यवती पुत्री 'उन्मादिनी' को राजा के लिये देने की प्रार्थना, राजा का उसके स्वरूप शीलादि की परीक्षा के लिये ब्राह्मणों को भेजना, राजा के विषय वासना में फंसने तथा प्रजा के दुःख के भय से ब्राह्मणों को उसके लक्षण ठीक न बताना, राजा का वैश्य की प्रार्थना का अस्वीकार करना, वैश्य का उस कन्या को सेनापति को देना, दैवात एक दिन उस कन्या को देख कर राजा का मोहित होना, और ब्राह्मणों का छल प्रगट होना, सेनापति का अपनी स्त्री राजा को देने का प्रस्ताव, राजा का धर्म भय से उसे अस्वीकार करना, और वियोग में मर जाना, सेनापति का यह देख कर जल जाना, और उसकी स्त्री का सती हो जाना, इस पर बेताल का प्रश्न कि कौन अधिक सत्यवान है? "राजा" यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः उसी डाल पर पहुँच जाना।

(१८) पृ० २०९—२१२ तक—सोलहवीं कथा—ब्राह्मण के एक क्वारी बालक का घर से निकल कर एक योगी को पाना, उसकी कृपा से एक यक्षिणी का पाकर उसे भोजन देकर भोग विलास कर प्रातःकाल चला जाना विप्र बालक का मोह विवश हो जाना, योगी के मंत्र को जल तथा क्रिया से उसे जपना, यक्षिणी का न आना योगी के मंत्र जपने पर भी न आना। बैताल का राजा से पूछना कि वह स्त्री क्यों न आई। उत्तर पाते ही मृतक पुनः उसी डाल पर चला गया।

(१९) पृ० २१३—२२२—तक—सत्रहवीं कथा—एक सेठ के मर जाने पर उसका संपूर्ण द्रव्य राजा द्वारा हरा जाना, सेठानी का अपनी पुत्री सहित जंगल को निकल जाना, वहाँ सूली लगे एक चोर का मरते समय अपना संपूर्ण द्रव्य देकर सेठ कन्या से विवाह करके मर जाना, संपूर्ण द्रव्य का उन दोनों द्वारा लाया जाना, ऋतुकाल में एक ब्राह्मण द्वारा सेठ कन्या का गर्भधारण करना, स्वप्न में एक दैवी पुरुष के कथानुसार द्रव्य सहित उस पुत्र का राजा के द्वार पर रख आना, बालक का गद्दी पर बैठ कर गया में पिंड दान करना, तीन करों का निकलना, बैताल का विक्रम से प्रश्न कि वह बालक किस के हाथ में पिंड दे राजा का उत्तर कि "चोर के हाथ में" यह सुनते ही मृतक का फिर उसी डाल पर पहुंचना।

(२०) पृ० २२२—२२८ तक—अठारहवीं कथा—एक राजा का शिकार के लिये जाना, एक ऋषि कन्या से उसका विवाह होना, मार्ग में एक राक्षस का उस कन्या को भक्षण करने का विचार, सातवर्ष के एक बालक को बलि देने के लिये राजा को उद्यत करके रानी को न खाना, मंत्री की सम्मति से एक स्वर्ण का पुतला देकर एक ब्राह्मण का बालक खरीदा जाना, सातवें दिन बलि की तैयारी नृप के मारते समय बालक का हंसना, राजा का नीची निगाह डालना और राक्षस का दयावान होना, इसका कारण बैताल ने राजा से पूछा, उत्तर पाते ही मृतक शरीर पूर्वस्थान पर जा लटका।

(२१) पृ० २२९—२३३ तक—उन्नीसवीं कथा—एक ब्राह्मण के चार कुमार्गी पुत्रों का शिक्षा द्वारा सुधार होकर उनका बाहर जाकर विद्या सीखना, उस विद्या की परीक्षा के लिये एक का सब हड्डियाँ इकट्ठी करना, दूसरे का चमड़ा लगा देना, तीसरे का पूरा रूप बना देना, चौथे का उसमें जान डाल देना, क्षुधातुर सिंह का चारों को खा जाना, बैताल का पूछना कि कौन सब से मूर्ख था। विक्रम का उत्तर "जान डालने वाला" सुन कर मृतक का पुनः अपने स्थान पर चला जाना।

(२२) पृ० २३४—२४० तक—बीसवीं कथा—एक सेठ कन्या का विप्र पर मोहित होना, जब तक सखी विप्र के यहाँ गई तब तक वियोग में उसका शरीर त्यागना। विप्र का वहाँ पहुंच कर यह देखने पर अपना शरीर त्याग देना, इतने में श्मशान में इनको जलता देख उसके पति का चिता में कूद कर जल मरना, बैताल का राजा से प्रश्न कि कौन अधिक कामांध था "जल मरने वाला उसका पति" सुनकर मृतक का फिर उसी वृक्ष पर चला जाना।

(२३) पृ० २४१—२४२ तक—इकोसवीं कथा—एक ब्राह्मण के तीन चतुर बालकों का बैताल द्वारा विक्रम से न्याय करना कि कौन अधिक चतुर है, एक ने भोजन में रक्त को बदबू बतला दी, दूसरे ने स्त्री के मुख से बकरी के दूध का संबंध बतला दिया और तीसरे ने तूल की उत्तम परीक्षा की, राजा ने तीसरे को अधिक चतुर बताया, उत्तर सुनते ही मृतक का चला जाना।

(२४) पृ० २४२—२६१ तक—बाईसवीं कथा—बीरबल नामक व्यक्ति का नौकरी के लिये एक नृप के पास पहुंचना, राजा का उसे रख लेना, एक दिन किसी रोती हुई स्त्री का शब्द सुन कर राजा का उसे भेजना, परीक्षा के लिये स्वयं उसके पीछे जाना, वहाँ जा कर राजकुमार का उस स्त्री से वार्तालाप कर यह जानना कि वह राजलक्ष्मी है और राजा के मरने का दिवस जान कर रुदन कर रही है, प्रयत्न पूछना और अपने बालक को बलि देना, उसकी स्त्री तथा स्वयं उसका बलि वेदी पर चढ़ जाना राजा का यह आचरण देख राजलक्ष्मी का सब को जीवित कर वर देना। बैताल का प्रश्न कि किसका कार्य्य अधिक सराहनीय है। 'राजा का' यह उत्तर सुन कर मृतक का पुनः भाग जाना।

(२५) पृ० २६२—२६४—तक तेईसवीं कथा—एक विप्र के पुत्र को अकाल मृत्यु हो जाना, उसके श्मशान में ले जाने पर एक योगी का उसे सुन्दर पा उसके शरीर में प्राण डालना, अपना शरीर छोड़ते समय रोना—बैताल का प्रश्न कि योगी क्यों रोया? राजा का उत्तर कि शरीर के सम्बन्ध को स्मरण करके; यह सुन कर मृतक का फिर भाग जाना।

(२६) पृ० २६४—२८० तक चौबीसवीं कथा—एक राजा का तेरह विद्या सीख कर चौदहवीं चोरी को सीखने की इच्छा प्रगट करना खपरा को बुला कर उसके साथ जाना, दो और चोरों का मिलना, अपने अपने गुण प्रगट करना, खपरा का रत्न चुराना, दो चोरों का पकड़ा जाना, खपरा द्वारा उनका छुड़ाया जाना, उन चोरों में सब से अधिक गुणवान का हाल राजा से बैताल द्वारा पूछा जाना, उत्तर में सगुन वाले चोर को बड़ा सुन कर मृतक का पूर्वोक्त स्थान पर पहुंच जाना।

(२७) पृ० २८०—२८७ तक पचीसवीं कथा—एक राजा का शत्रुओं द्वारा विनाश, उसकी रानी तथा पुत्री का वन में गमन, वहां पर एक राजा और राजकुमार को प्रार्थना पर उनके साथ जाने उद्यत होना, पिता पुत्र में यह निश्चय हो जाना कि छोटी पैरवाली पुत्र को और बड़ी पैरवाली पिता को मिले, बड़े पैरवाली राजकन्या थी. कुछ दिन पश्चात दोनों के पुत्र हुए, सब साथ साथ खेलते हैं। बैताल का पूछना कि राजा और उनका कौन रिश्ता है। इस पर राजा का उत्तर न दे कर यह कहना कि अनेक रिश्ते हैं।

(२८) पृ० २८८—२९२ तक—उपसंहार-में वैताल द्वारा उस कुम्हार के बालक का सब समाचार जान कर उसी की सम्मति से उसका देवी को बलि दिया जाना, देवी का राजा को वर देना। कथा समाप्तिः—लिखने का काल सम्वत् १८८५

No. 371(*f*). Vaitāla Pachchisi by Śambhūnātha Tripāṭhi. Substance—Country-made paper. Leaves—154. Size—8½ × 7 inches. Lines per page—36. Extent—2772 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1809 or A. D. 1752. Date of Manuscript—Samvat 1869 or A. D. 1832. Place of deposit—Ṭhakura Basanta Simha, Village Uḍawa, Post Office Śāhamau, District Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ छवि कदंब लषि अंब के उमड़त मोद अपंड। कलरव करि करि वर बदन फेरत सुंडा दंड ॥ १ ॥ कवित्त। एक समै गिरि राज की नंदिनी आइ कन्हाइ कहूं सरसोतें। भासुर भाल दिये दल कोल की आनन सों छवि की छवि जोतें ॥ सो हठि लेवे को सूंडि पसारो तहां गननायक आइ अमोतें। चाहि कै चोप सों दौरि मनो हरे लेत सुधा अहिराज अमोतें ॥ २ ॥ राजवंस वर्णन ॥ हरिगीता छंद ॥ शुभ धरन पल दल मलन छिन आचरन कृतयुग के किए। सनमान दान कृपान जग विधान के जग जस लिए। द्विजराज कुल बन कुमु""कामुद दान पूरन इंदु भो। निजवंश बारिज को गनै पुनि लोकचंद नरेश भो। पुनि भयो आनंद कंद पृथ्वीचंद नृपता को तनै भुज जोर सो धुरि जंग में जमराज हू जो नहि गनै। पुनि भयो ताके अजय चंद अरिंद कुल दल जिन हने जग मगत जाके जस पढ़ौं सुर असुर मुनि गवत अनु मने ॥ ४ ॥

End—बचन प्रमान देखिकै करे, दुबौ पुरुष नृप भीतर धरे।
आयो बहुरि मित्र के पास, महाराज हिय सहित हुलास ॥ १०१

नमे पेम सहित परसे नृप पाइ , करी विनै बहु सोस नवाइ ॥
जो यह सोच मोहि नहिं देता , तो मोहि मारि राज यह लेता ॥ १०२
जो तुम मेरे भयो सहाई , जिव सो बच्यो सिद्धि मै पाई
जीवन रहो जगत में जो लो , कृपा दास पर कीजे तो लो १०३
सुनिए वचन देवहि यह रच्यो , सुमन अनूप भूप पर बरष्यो ।
कह्यो प्रबल है कीजै राजु , विजई होउ सदा महराजु ॥ १०४
जो तेरे अनहित को करै , बिना मीचु वह प्रानी मरै ।
दिन दिन राजु तिहारो बढ़ै , सुजसु दिसनि विदसनि तव बढ़ै १०५
लक्षिमी तजै न तेरो धाम , पूरन रहै सदा मन काम ॥
जीवत रहो भूप बहु काल , ए कहि बचन गयो बेताल ॥ १०६

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री मद्राय रघुनाथ सिंघाज्ञाय त्रिपाठी शंभुनाथ कृते पंच विंशति कथायां बेताल पंच विंशति कथा समाप्त शुभमस्तु ॥२५॥ मिति आषाढ़ सुदि ॥ १५ वार बृहस्पति । संवत ॥ १८८९ ॥

No. 371(*g*). Vaishya Vanśavali by Śambhu Kavi of Kānthā, District Unāo. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—$13\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—16. Extent—160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of Manuscript—Samvat 1916 or A. D. 1859. Place of deposit—Ṭhakura Raghu Nātha Simha Seṅgarā, Kānthā, District Unāo.

Beginning—इति वंसावली वैस लिख्यते ॥ एक है रदन गज बदन विराजे जाके माथे जाके चन्द्र चान्दनी समाने को। पूजे लोकपाल दिगपाल सुरपाल सबै पढ़े वारिद रिद्धा सुभवानो को। गुननको बखाने को सारदा महेस सेस पावै नहि अंत संभु अकथ कहानी कैा। गुनन को नायक है बुद्धि सरसायक है चारिउ फलदायक सुत गिरिजा महारानी का ॥ १ ॥

गननायक कौ सुमिरि कै निजमति के अनुसार। चारिउ जुग के नृपन को करौ वंस बिस्तार ॥

छप्पय—महाप्रलय के अन्त रह्यौ अवसिष्ट एक हरि। क्षीरोदधि में सोइ रह्यो अति सुखरूप धरि ॥ हरि नाभी में कमल एक जनम्यो अति अद्भुत । तहां चतुरानन प्रगट भए सुभ वेदन सो जुत ॥

सिष्टि करन कौ हुकुम तेहि दीन्हो दीन दयाल हरि।
सत बरष तासु जीवन परम होत भले जब लो सुहरि ॥

End—बहुरि सालिवाहन भये रतो भानु के पुत्र।
जाके समदानी नृपति देखै जान न कुत्र॥
ताके परगट जानिये अंगद राय देवान।
महाबली दुसमनन कों जिन जीतौ मैदान॥
तासु बंधु लाल साहि। सूरबंद में सराहि॥
जासुदान के विधान। कौन कै सके बखान॥
अंगद राम देवान के हैं त्रय सो सुत चारि।
जेठे तेज हमीर हैं लघु हिम्मति सिंह विचारि॥

कवित्त—बरजोर मितानि सिंह हिन्दु सिंह उदोत सिंह बली बखतावर सिंह जु सुतचार भये बैस बरजोर खानि है। कहै कवि शंभु महाबली परताप बली भानु के समान भयो दूसरो मितान॥ हिंदुन को हद कौ रखैया हिन्दु सिंह बड़ो देवे को दान जाके पड़ी एक बानि है। जाको जस काहे को उदोत कवि गोत करें नाम है उदोत सब गुननि की खानि है॥ दोहा॥ हिन्दु सिंह के परगट पुनि विमल भये सुत चारि। तिनके गुन बरनन करौं मिश्र कवित्त बिचारि १ चन्द्रिका बकस २ गंगा सिंह ३ इन्द्रजीत ४ श्रादि बकस॥ ताके भये बज्रकुमार नाम। जो है महाविक्रम तेज धाम॥ लीन्हे सबै सत्रु समूह जीतो। गावें सबै जाको कवि लोग कीतो॥ ताके श्रेयकुमार पूरनमल, जगतपति राना परमल देव, मानिकचंद मलदेव, जसवर देव, राने होरिल देव॥ कृपाल साहि सातन चन्द्र हिन्दूपति राजसाहि, परमलसाहि रुद्रसाहि, विक्रमसाहि, नृप संतोष छत्रपती जगतराय केसो राय॥

Subject—पृ० १—गणेश वंदना, सृष्टि उत्पत्ति, ब्रह्मा श्रोर कल्प संख्या, स्वायंभुव—सतरूपा जन्म, प्रियव्रत, ध्रुव पृथु जन्म वर्णन। पृ० २—सूर्य्य वंश वर्णन, सुद्युम्न का कन्या होना गैारी के श्राप से। राम वंश वर्णन। पृ० ३—क्षत्रियों की ३६ कुरियों की उत्पत्ति तथा वर्णन। अभयचंद को अर्गल राजा का कन्या देना, चिल्ली का राना बनाना। पृ० ४—अभयचंद को दायज में बैसवार मिलना। अभयपुर राजधानी बनाना। अभयचंद्र के पुत्र विक्रमचंद, उनके रनजीत, उनके रायतास श्रोर उनके पुत्र सावन, उनकी वीरता वर्णन, बादशाह के पुत्र से युद्ध करना कालिंजर को राजधानी बनाना। पृ० ५—चैाहान पुत्र को मारना, श्रोर बादशाह पुत्र को घायल करना, अभयचन्द्र श्रोर निर्भयचंद्र भाई भाई थे, अर्गल की रानी को छुड़ाना राजपुर में चैाहानों से। पृ० ६—चैाहान व रामतास का युद्ध वर्णन। सातना नरेश बैसवारे में तिलोकचंद हुए। उनके राना हरिहर देव हुए। उनके भाई पृथ्वीचंद थे। पृ०.७—हरिहरदेव के छोटे भाई ने राज लिया तब दिल्लीपति ने उन्हें बड़ा

इलाका दिया, उनके खेमकरन जिन के सकतसिंह, बरियान, समान, जोगाजीत हुए, सकत सिंह के तीन पुत्र डोमन देव, रुद्रसाहि भैार भालमसाहि हुए। इन सब के ८ पुत्र हुए। रतिमान जेठे थे, इन्हों में शालिवाहन रतीमान के पुत्र हुए। पृ० ८—उनके भंगदराय भैार लालसाहि हुए, भंगदराय के ४ पुत्र हुए, हमीर सिंह, हिम्मत सिंह, हिन्दु सिंह व उद्योत सिंह थे। शंभू कवि के येही स्यात् भाश्रय दाता थे।

No. 372. Kavitta by Sangama Lala of Terha. Substance—Foolscap paper. Leaves—3. Size—7×4¾ inches. Lines per page—32. Extent—48 Anushtup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Baṇi Bhushanaji, Rāe Bareli.

Beginning—समै के जानै सोच काहू को न मानै मान नाहक ही ठानै तू भजानो भई जात है। संगम मनावें सखो हित को सिखावें सोच जा बिन न भावै भैान ताहो सों रिसात है। पोछे पछितैये टेक तेरी छूट जैहै बात ऐसी तू न पैहै भबै टेढ़ी तनी जात है। मोसों सतरात बिनकाज सोंह खात प्यारी तू तो इतरात उतै रात बोतो जात है। १ कालनख स्याम तारु कंजा कन जिह्वा जैान पेचापांउ काढी पांउ जनम गनोजिये। बाड़ी दुम बालखड़ो भारु कस भोंक-दार यश मटि खोरे पर नजर न कोजिये। संगम कहत टेढ़े दांत का दुरद दान देवे को पताल देतो दिल में न कोजिये॥ राज सिरताज राजसिंह महराज सुनै ऐसे गजराज कविराज को न दोजिये॥ २ दोजे दान दुरद दतोले दुमदार देखि द्रोहिन के दिलको उठावै हूक हारि है। मरदि यहो को सोस गरद चढ़ावै सुंड नीर भरि लावै भैा हरावै हेरि वारि है। संगम कहत पावें ऐसे जो मतंग तो करज को गरज गुदारि डारें गारि है। गारि डारी दिकवलो विपति बिदारि डारें फारि डारें फिकिर दबाइ डारें दार है॥ ३

End—कहत भुलानी मुख बैरिन का पानो जब अंग थहरानो है मुभानो भरि साज को। सोमित सो सानी भई भकह कहानो रन मानो पगलानो ठकु-रानो जमराज को। सब जब जानो भाइ भरिन भवानी विष पानो सो बुभानो है जिठानो मनोगाज को। संगम बखानो धंमुरानो है रिसानी कैधैां कैधों है कृपानो राजसिंह महराज को॥ १२ बेही ग्वालवाल हैं बिसाल तरु जाल वेही वेही हैं तमाल ख्याल भैार कछू ह्वै गयो। भायगो उदासी ब्रजवासी मनहांसी भई जब ते बिषासी बीस गांसी मारि कै गयो॥ संगम भकूर क्रूर बैरी जन्म पोकले का कोन्हों ना कसूर कछू हाय हरिले गयो। सालो रहे खल सो कुचालो भकूरवलो बिना बनमाली यहां खालो ब्रज ह्वै गयो॥ १४

Subject—रति विरह नायिका वर्णन १ कवित्त, राजा राजसिंह और व्रजनाथ के गजराजों का वर्णन ५ कवित्त

वर्षा वर्णन	२ कवित्त
वसंत वर्णन	२ कवित्त
सिंहावलोकन	१ कवित्त
कुब्जा वर्णन	१ कवित्त
राजसिंह की तलवार का वर्णन	१ कवित्त
करुणारस	१ कवित्त

No. 373(*a*). Satyā Prakāsa by Santa Baksha of Narahī, District Lucknow. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—10×6 inches. Lines per page—22. Extent—860 Anushṭup Ṣlokas. Complete. Appearance—New. Written in Prose and Verse. Date of Manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Paragi Dāsa Murāu, Village Jādavapur, Post Office Varnāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री सत गुरु साहब सहाय। अथ सत्य प्रकाश लिख्यते। प्रथम बंदना॥ प्रथम आदि देव श्री गणेश जी स्वामी को जिनके सुमिरन से सब काज लोक व परलोक के सिद्धि होते हैं। बहुत भांति विनय के साथ बारबार दंडवत करि के उस पारब्रह्म परमेश्वर निरगुण व सगुण सब्य सर्वत्र व्यापक भक्तवत्सल कृपासागर दयासिंधु दीनबंधु जन सहायक के चरण कमल को बंदना करत हूं तुम्हारी महिमा अगम अथाह है श्री ब्रह्मा जी चारो मुख से व शेष जी और सारदा निरंतर वर्णन करते हैं और पार नहीं पाते सो मैं पतित कामी औगुनन को खान बुद्धिहीन किस प्रकार कहि सकौं॥ आपने गनिका व अजामिल आदिक अनेकों पापियों को इस भवसागर से पार उतारा और निजधाम दिया सो आनि परत है कि पतित तारन आप का स्वभाव है। सो हे पतित तारन दीनदयाल इस पापी को भवसिंधु से पार उतार कृपा करके हृदय में वास दीजिये॥

End—दोहा—जगजीवन के पंथ का जो कोइ आनै दोन। राजा होय कि छत्रपती दिन दिन होय मलीन॥ जगजीवनदास की निंदा जो कोउ करै चोराय। सोवत सुख पावै नहीं मरे नरक मां जाय॥ जो सत्तनामी सतगुरु साहब के पाना की निंदा करते हैं वह महा रोगी व दरिद्री हो जाते हैं अंतकाल उनको महा-

घोर नरक होता है सत्तनामी जनों के नशा गांजा व भंग अफीम का ग्रहण अनुचित है औ मुख वाचि है। दोहा—गांजा भंग व पोस्ता संत लोग नहिं खांहि जगजीवन दास सांचो कहैं खांहि तो नरकहिं जांहि ॥ समर्थ गिरिवर दास की बानी ॥ संतनाम के पंथ मां भांग खाइ जो कोइ जगजीवन गिरिवर कहैं ताको मुक्ति न होय ॥ सत्तनाम के पंथ में खाय जो गांजा भंग जगजीवन गिरिवर कहैं ताको मत ह्वै भंग ॥ सत्तनामी को बैंगन व कुंदरू अवश्य वर्जित है श्रीसत गिरिवर दास साहब ने कैथा भी वर्जित किया है सो सत्तनामी को गुरु वचन परमान उचित है। गुरु का वचन न मानै जोई। अवश नरक तेहि प्रापत होई ॥ इति श्री सत्य प्रकाश समाप्तम् लिखा सतगुरु प्रसाद संवत १९२९ जेठ मासे कृष्ण पक्षे द्वितीयायां श्री राम।

Subject—इस ग्रंथ में गणेश जी, भगवान, हनूमान जी, शंकर, ब्रह्मा बाबा जगजीवन दास आदि की वंदना की गई है, पश्चात बाबा जगजीवन दास जी का जीवन चरित्र दिया है। आप पहुंचे हुए महात्मा थे, भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनों काल को जानते हैं, अपने मृत्युकाल में जलाली दास को बुलाकर शरीर का दाह कर्म मना किया इस पर कुछ लोग अप्रसन्न हुए और मरने के पश्चात् दाह का कार्य ठहरा, परंतु जलाली दास ने न माना तब सबने कहा कि अगर तू सच्चा है तो बाबा जी फिर कहैं लोगों का विचार था कि बाबा जी के मरे देर हो गई किस प्रकार कहेंगे। परंतु जिस समय जलाली दासने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की बाबा जी उठ बैठे और कहा मेरा शरीर न जलाया जाय समाधि दी जावे तब सब को बाबा जी का महत्व प्रगट हुआ और उनके कथनानुसार समाधि दी गई।

No. 373(*b*). Kotawabandan by Santa Baksha Mahañta of Narahī (Lucknow). Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—14 × 5 inches. Lines per page—44. Extent—1,144. Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1929 or A.D. 1872. Place of deposit—Paragīdāsa Murāu, Village Jadavapura, Post Office Baranapur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—अथ कोटवा बंदन लिख्यते ॥ दोहा ॥ कोटवा बंदन ग्रंथ यह। श्री सतगुरु ध्यान। इन्द्र दवन जे भक्त हैं तिनके उर परमान ॥ प्रभु जग जीवन शुभ करौ भाषों सतमत ग्यान ॥ अति कोटवा की बंदना परगट करौं बखान ॥ कथा

भई आरंभ तब जब प्रभु दाया कीन्ह । बैठे घट मो आय के सत्त शब्द कहि दीन्ह ॥ तुम हो तो बानी कहत मैं कछु जानत नाहिं । गुन ते। एकौ है नहीं सब औगुन मोहि माहिं ॥ जब तुम्हारि कृपा भई कथा प्रगट भई सोइ । आपहि तो सब कहत हैं और न दूजो कोइ ॥ जन्म लियो सरदहा में संतन के आधार । नाम कहायो जगजीवन जगन्नाथ अवतार ॥ चौ० ॥ प्रभु जगजीवन जगत अधारा । लियो सरदहा मा अवतारा ॥ गति तुम्हारि कोइ जान न पावै । जेहि जस कृपा सो तस कहि गावै ॥ आइ सरदहा कीन्ह निवासा । जगजीवन जग विदित प्रकासा ॥ प्रभु जगजीवन नाम कहाए । मारग सो सतनाम चलाये ३

End—छंद ॥ सरन मे समरथ तुम्हारी और नाम न आनऊं ॥ कहत हैां करजोरि साईं दूसरो नहि जानऊं ॥ चरन परि मैं करत विनती नाथ मोहिं अपनाइए । फिरत हू मैं भरम भूला कृपा कर के छुड़ाइए ॥ छोड़ि तुम तजि जाऊं कहंवां दृष्टि मैं आवै नहीं । चरन तुम्हरों तक्यों जब से और कछु भावै नहीं ॥ सर्वे मैं तुम अहो व्यापक और दूजा कोई नहीं । जानि मोहिं का परत यहि विधि नाथ तुमही सब कहीं ॥ थिर रहौ नहि भटकैा भरम को परदा फटै । करैा अंतर नाम सुमिरिन तिमिरि आंखिन को घटै । दीनबंधु दयाल तुम सम नहिं दूसर देषहूं ॥ समरत्थ प्रभु जग जीवन साहब सत्त मन मह लेषहूं ॥ दोहा ॥ बलिहारी गुरुचरन की जिन मोहिं दीन्हो नाम । तेहि सुमरैां चितलाइ कै ये मन आठौंयाम ॥ चौ० ॥ संतैां कथा सुनैां चितलाई । गुरु जग जीवन दियो लषाइ ॥ बैठि गयो आपहिं घट माहीं कहत कीर्ति मैं जानत नाहीं ॥ मोरि बुद्धि यामें कछु नाहीं । आपुहिं बैठि कहो घट माहीं ॥ गाऊं सदा चरनन बलिहारी । जिन यह कथा कही अनुसारी ॥ इति श्री कोटवा बंदन सम्पूरन संवत १९२९ बैसाख पुर्नमा ब्रहस्पति लिषतं संतबक्स महंत ।

Subject—इसमें बाबा जगजीवन दास और स्थान कोटवा की बंदना की गई है । कोटवा और बाबा जगजीवनदास की महिमा का साथ ही साथ वर्णन किया गया है ।

No. 374. Nakhaśikhā by Santa Baksha Bandijana of Holapur. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—8 × 5 inches. Lines per page—15. Extent—101 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bajaranga Balī Brahmabhaṭṭa, Village Holapur, Post Office Haidargarha, District Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—मुकुट वर्णन ॥ मणि माणिक मंडित मौलि रह्यो अनुराग विराजि रह्यो थलपै। तेहि ऊपर मोतिन की कलंगी बिचबीच कुसुम्भ कली दलपै ॥ कवि 'संत' कहै दिये दीपन लौं उपमा तिहुं लोकन की कलपै। रघुवीर के ऐसे किरीट लसैं मानौं भानु उदै उदयाचल पै ॥ बार वर्णन ॥ मखतूल के तार सिवार से हैं उपमा लखि कै सरि कौन गनै। अति कारी बलाहक से दरसै भरे सौरमताई सनेह सनै ॥ कवि संत कहै सटकारे छबीले लजीले मनोभव देखि बनै। किलकैं दुति मेचकताई धरे रघुवीर के केस सुवेस बनै ॥ भाल वर्णन ॥ जोत को पत्र लिख्यो है विरंचि किधौं लिखो देवल को प्रतिपाल है। जंत्र औ तंत्र वसीकर मंत्र सु मोहै त्रिलोक हृदय सदा अरिसाल है। संत कहै जन पालिवे हेत को देर न लाय दया करि हाल है। भागो भरो निसि द्योस रहै शुभ श्री रघुवीर को भाल विसाल है ॥ भृकुटी वर्णन ॥ भौंहैं सरासन कैधौं धरे जुग सुंदरता अति है अनियारी। बैठि दुरे फणि को अवली किधौं मर्कत रेख लसै जुग न्यारी ॥ कैधौं अनंद के कंद को देन को संतन सो करिये हितकारी। काम को शोभा जुटी है किधौं भृकुटी है बनी रघुवीर तिहारी ॥ नेत्र वर्णन ॥ गोल अमोल सुडौल कपल लौं चंचल कोर चुभे चित चैन हैं। लखि तुरंग कुरंग दुरै वन मीन सो दीन भये दिन रैन हैं ॥ सो उपमा उपमेय बखानत संत कहै सुखमा वर ऐन हैं। कंजन खंजन गंजन हैं सदा शोभित श्री रघुवीर के नैन हैं। नाक वर्णन ॥ निन्दित है शुक तुंड विलोकि के फूल तिली को दिलो मैं उदासिका। चारु सुधारि विचारि पितामह मोद भरे मन कीन्हे हुलासिका ॥ सो छवि देखि कहैं कवि संतजु तेस सदा धरे ध्यान प्रकाशिका। राजत आनन अंबुज पै शुभ सुंदर श्री रघुवीर की नासिका ॥ कपोल वर्णन ॥ पाणियपाल के बाल भरे किधौं पत्र पुरैन के सुन्दर नौल हैं। सिद्धि मनोरथ ही को करैं तुला तौलिवे हेत के नेत अतोल हैं ॥ संत समान विचार करैं केहि संपुट सेनि के अमोल हैं। आरसी हैं को सुधांशु को हैं किधौ श्री रघुवीर के गोल कपोल हैं ॥

End—नख वर्णन—प्रात सरोज पै कैधौं परी मकरंद के बुंद के भांति भला के। सोने की लेखनी पै मुकताकनी सोहत चोगुनो छोर कला के ॥ संत कहै जगी जोति अखंड दिये जग मैं जैसे छंद कला के। पातौं नक्षत्रन की दरसै नख शोभित श्री रघुवीर लला के ॥ छाती वर्णन ॥ कंचन नील के पत्र किधौं बनमाल विराजि रही बहु भांती। केसरि खौरि पिताम्बर राजित वज्र किधौं है अरिंद को घाती ॥ संत कहै फलदायक चारि को रिद्धि औ सिद्धि की वृद्धि बढ़ाती। चोकनी चौरी चरचित चंदन वीर भरी रघुवीर की छाती ॥ जंघ वर्णन ॥ अति पीन भरे कलधौत के दंड उदंडता चारि समाय रहे। करकै सरकै कर ज्यों उपमा सुखदाय रहे ॥ वर विक्रम उन्नत ओप लहै जुग जानु विसालता छाजि

रहे। मणि खंभ भजे दुतिरंभ लजे रघुवीर को जंघे विराजि रहे॥ चरण वर्णन॥ तरनि तरन घर बरन वर घर ग्ररन घरन भरे सुखमा ग्रसोर के। करन हरन करुणा कृपाल कोर चितै भरन मरन भौ हरन भव भीर के॥ जाहिर तरनसम मंगल करन चारु ग्ररन फले के ये उधारन ग्रघोर के। दारिद दरन ग्रव ग्रोघ के हरन परिजात के करन सो चरन रघुवीर के॥ शिख नख वर्णन॥ भृकुटी ग्रौर लिलाट कपोलन कुं सुख कोयन लोयन देखि भरे। चिबुका घरि ग्रीव ग्ररोजन पै पुनि नाभी सरोवर में लहरे॥ कवि संत कहे तुम अंचन में ग्रोरवानि हिये विच ध्यान धरे॥ रघुवीर पदांबुज से सुनिये मन मेरो मधुव्रत गुंज करे॥ २०॥ सर्व ग्रंगतोरथ वर्णन॥ पदस्याम सरोज कलिंदो लसे सुखमा ग्रलिहो सुख साजत है। हिय मोतिन माल बिसाल लरें लखि निम्नजा बेनिहि भाजत हैं॥ कवि संत कहे ग्रधरान को लाली गिरा ग्रनुराग समाजत है। नखते सिख लौं रघुवीरहि के तन तीरथ राज विराजत हैं॥ २१॥ कोरति वर्णन॥ नारद पारद सो दरसे ग्रौ सुधाकर सो लसे चन्दर चूरसो। विष्णु सो कंबु कमोदनि का शशि चावर से जल गंग को धूरि सो॥ संत कहे सित भौंडर सो नखतावलि सो गजदंत के तूरसो कोरति ग्रौ रघुवीर को राजति कुंदकलो करका कपूरसो॥ २२॥ वेनी लखे तिरवेनी लजे मुख देखि छपा कर छोम छलो के। गोल कपोल बिलोकि के ग्रारसो लोचन लोल सरोज दलोके॥ संत कहे सारे दंतन को सखो निंदित दाड़िम कुंदकलो के। मोह मई तम क्यों न मिटे मन ध्यान धरे मिथिलेश लली के॥ २३॥ कैधों कोल पाखुरी पै रवि को किरनि प्रात कैधें इन्द्र वधू काम करत निहोरो के। कैधों गुंज बिम्बा फल बन्धु जीव लालो कैधों दाड़िम कुसुम्ब रंग मई मति भोरी के। कहे कवि संत कुरु वृंदन को कोन बनें दूखक पतंग ग्रो गुलाल दुति थोरो के॥ जावक मनोज पै ईंगुर बरस ऐसे चरन बिशाल राजे जनक किशोरी के॥ २४॥ कास ते ग्रधिक वक दास ते ग्रधिक घन सार ते ग्रधिक लसे मुक्तहार हीर को। सोय ते ग्रधिक चून फेन ते ग्रधिक गजदंत ते ग्रधिक लखु लागे गंग नोर को॥ दुग्ध ते ग्रधिक वर बुद्धि ते ग्रधिक सत्त्व गुण ते ग्रधिक शांत रस धरि धीर को। छत्र ते ग्रधिक ग्रौ नक्षत्र ते ग्रधिक इन सब सो ग्रनिच जस राजे रघुवीर को॥ २५॥ इति—लेखक परमेश।

Subject—(१) पृ० १—९ तक—रामचन्द्रजी का नखशिख वर्णन। मुकुट, केश, भाल, भृकुटी, नेत्र, नाक, कपोल, श्रवण, ग्रधर, दशन, मुख, भुज, ग्रंगुरी, नख, छाती, जंघा, चरण वर्णन।

(२) पृ० ९-१० तक—सिखनख वर्णन, सर्व ग्रंग तीरथ वर्णन, कीर्ति वर्णन।

(३) पृ० ११-१२ तक—सीता जी का नख शिख, वेनी, पैर ग्रौर रघुवीर का यश वर्णन।

No. 375(*a*). Bāni or Sākhi by Saṅta Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—56. Size—4½ × 3¾ inches. Lines per page—18. Extent—630 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Manuscript—Samvat 1852 or A.D. 1795. Place of deposit—Harvaṅsa Rāi, Village Tekāri, District Rāe Bareli.

Beginning—राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम । अथ स्वामी जी श्री संतदास जी की वाणी ग्रंथ मे लिष्यते ॥ अथ गुर देव को अंग । स्तुति ॥ ग्रंथ मै पद् परकास के ॥ दाइक सत गुर राम ॥ अनत कोटि जन साहिका ॥ ताहि करुं परनाम ॥ १ ॥

अंग ॥ सत गुरु का येको सबद मनि कोई लेवै मानि ।
तो सहज होत है संतदास मुसकलि सूं आसानि ॥ १ ॥
सतगुर कीन्हो संतदास मुसकलि सं आसानि ।
रामनाम को दे रहो रंम रंम निज ध्यान ॥ २ ॥
संतदास तिहलोक मैं येह सिरोमणि संत ।
पुरबजनम का बीछड़या सोहो मिलाया कंत ॥ ४ ॥
सतगुर मेल मिलाइया ॥ सरित सबद् का अंग ।
अब छूटत नाहीं संतदास लगा करारो रंग ॥ ५ ॥
सत गुर बर परमारथो असो देह बणाइ ।
घरोया मुलक छुड़ाइ कें अघर मुलक ले जाइ ॥ ६ ॥

End—निरगुण नांव हिरदै धरै निरगुण पहरै भेष ।
संतदास वा संत सूं कहीये आप अलेष ॥ २२ ॥
फकर तारै जगत कूं निरगुण नांइ मिलांहि ।
मकर ले बूड़ै संतदास भो लिधि का दह माहिं ॥ २३ ॥
चली जात है सुरसुरी अपणै सहज सुभाइ ।
प्यासा होइगा संतदास सो पीवेगा आइ ॥ २४ ॥
संत सुरसरी राम जल कोई पीवे प्रीति लगाइ ।
तो भरम करम को संतदास प्यास न उपजै ताहि ॥ २५ ॥
संत निवासी संतदास सब कूं देत निवास ।
सांच झूंठ निरणूं कीयां झूठा होत उदास ॥ २६ ॥

इति स्वामी जी श्री संतदास जी की साषी संपूरण ॥

Subject—पृ० १ गुरु स्तुति- पृ० २-१४ गुरु महिमा पृ० १५। गुरु सामर्थ्य पृ० १६-३०, ईश्वर सुमिरन विधि और भेद पृ० ३१—३३ईश्वर नामों का भेद, उनका निर्णय, और सर्वोपरिनाम वर्णन, पृ० ३४। जीव निर्णय, पृ० ३५-३६। ईश्वरनाम सुमिरन की सामर्थ्य—पृ० ३७, ईश्वरनाम की महिमा, पृ० ३८-५४। संतदास को चेतावनी भक्ति के लिये। पृ० ५५-५७ साधु की महिमा, लक्षण और साधु असाधु निर्णय, समाप्ति।

No. 375(b). Sañtadāsa kī Bānī by Sañtadāsa of Sahipurai. Substance—Country-made paper. Leaves—2262. Size—$5\frac{1}{2}$ × 4 inches. Lines per page—13. Extent—29,406. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1830 or A.D. 1773. Date of Manuscript—Samvat 1870 or A.D. 1813. Place of deposit—Paṇḍita Devīduttaji Śarmā, Village Fatahapur, District Bārā Baṇkī (Oudh).

Beginning—अथ स्वामी जी श्री संतदास जी की वाणी अणभै लिख्यते ॥ प्रथम गुरु देव का अंग लिख्यते ॥ स्तुति ॥ अणभै पद परकास के ॥ दाइक सत गुरु राम ॥ अनंत कोटि जन साहि को ॥ ताहि करुं परनाम ॥ १ ॥ अंग ॥ सत गुरु कारो का सबद मनि कोइ लेवै मानि ॥ तो सहज होत है संतदास ॥ मुसकिल सूं आसानि ॥ १ ॥ सत गुरु किन्हो संतदास ॥ मुसकिल सूं आसानि ॥ राम राम को होइ रहो ॥ रोम रोम रज ध्यान ॥ २ ॥ संतदास हम कूं कीया ॥ सत गुरु कर्भाई सानि ॥ देह छूटां छूटै नहीं ॥ परब्रह्म लू ध्यांन ॥ ३ ॥ संतदास तिहुंलोक मैं ॥ रोह सदेोमं निसंत ॥ पूरब जनम का बिछड़या ॥ सोही मिलाया कंत ॥ ४ ॥ सत गुरु मैं ला मिलाइया ॥ सुरति सबद का संग ॥ अब छूटत नांही संतदास ॥ लगा करारो रंग ॥ ५ ॥ सत गुरु बड परमारथी ॥ असो देह बणाइ ॥ धरी या मुल कछु भाइ करि ॥ अघर मुलुक लेजाइ ॥ ६ ॥ चौरासी घरोया मुलक ॥ तामैं सुर नर रहे समाइ ॥ अघर मुलक है रांम नांम ॥ जहां जन पहुंच्या जाइ ॥ ७ ॥ तीनलोक सूं अलध सुप ॥ लाधन नांही कोइ ॥ सत गुरु लाया संतदास ॥ ८ ॥ सत गुरु मिलीया संतदास कटी भरम की पासि ॥ बा सत गुर बांण ॥ चौरासी का संतदास ॥ मिटि गया आवंण जांण ॥ १० ॥ सत गुर वाह्या बध मारि ॥ सुषम प्रेम का सेल ॥ निज मन तो घाइल भया ॥ अवरहै मकता पेल ॥ ११ ॥

End—कांम दुष कोध दुष पावै ॥ लोभ दुष कछु कहत न आवै ॥ माया मोह दुषी संसारा ॥ तातैं जाणैं राम पियारा ॥ ८६ ॥ माता नास पिता सुनि

भयौ ॥ वंस सादर पापन गयौ । पुत्र कलित्र दुष सकल पसारा ॥ तातें आगे राम पियारा ॥ ८७ ॥ परव परव हाथी घढ घोरा ॥ भैाम्मि मंम्कारन विमैा घोरा ॥ घांषि मूंदि देषत ही वारा ॥ तातें आगे राम पियारा ॥ ८८ ॥ करि उपदेस गयौ रिघराई ॥ राजा को मन प्रीति बढ़ाई । डेरा छाड़ि गए वन वासा ॥ गुरु गोविंद से बाड़ो घासा ॥ ८९ ॥ मन ही मन राजा यूं जानो ॥ क्रिपा करी है सारंग प्रांनो ॥ वनपासै गुरु मिलीया घाई ॥ प्रेम प्रीति हरि सूं ल्यौ लाइ ॥ ९० ॥ दुहा ॥ भाग बड़ेही पाइयौ साधन को सतसंग ॥ जन गोपाल जगदीस कौ तन मन लागै रंग ॥ ९१ ॥ इति श्री ग्रंथ जड़भरत संपूरन ॥ महाराजाधिराज पूरन ब्रह्म जी दया का सागर जी रामनिवास साहिपुरे विराजमान तोस मरो पुस्तक लपी कृते संवत १८७० वर्षे मितो भाद्रपद शुक्लपक्षे पुनि तिथौ ३ शनि वासरायां ॥ लिपि कृतं ब्राह्मन गुजर गौड़ दासानुदास चरणाविंद को रज हव राम वाचे विचारै त्यां सूं रांम रांम ॥ संत गुलम तासकौ नाम ब्राह्मन तुलछो राम बांच वीचारै ॥

Subject—पृ० १—१३ तक—स्तुति सत गुरु राम जी को, सत गुरु की महिमा का वर्णन, सत गुरु के दिये हुए ज्ञान के लाभ ॥

(२) पृ० १४—३१ तक—सुमिरण का अंग, माला जाप, राम नाम का महत्त्व, राम नाम निर्णय, जीव निर्णय, नाम की सामर्थ्य, साषी ।

(३) पृ० ३२—५६ तक—विनती का अंग—स्तुति । साषी नाम में लगन का वर्णन । प्रेम प्रकाश, परिचय ।

(४) पृ० ५७—९९ तक—पतिव्रता वर्णन, व्यभिचारिणी वर्णन । टेक, विश्वास, साधु, साधु महिमा, साधु पारख, साधु परमार्थ, साधु संगति, विरक्तता, निवृत्ति, प्रवृत्ति, विचार, कुविचार, सार असार, रस, पंथ वेहद, सजीवन, जीवित मृतक, हठयोग, अवगुणग्राही, भक्त द्रोही, मन मुषी, मन, उपदेश, अभ्यासी, कादर, सूरातन, सती, गुरु शिष्य पारख, खोजना ।

(५) पृ० १००—१४१ तक—गुरु वे मुख, सन्मुख, विमुख, राम विमुख, काल, चेतावनी, वोहो पारंभो, माया, कामी नर, वाचिक ज्ञानी, सांच, भ्रम विध्वंस, भेष, चाणक्य ।

रेखता

(६) पृ० १४२—१४४ तक-रेखता । (७) पृ० १४४-१५० तक—ब्रह्म ध्यान, (८) पृ० १५१—१६७ तक—भ्रम तोड़ । (९) १६८—१७२ तक—पद, आरती, संतदास जी का निर्माणकाल सं० १८०६-अठारे से षट नव में संक भये निरकारी ॥

राम चरण जी की बाणी ।

(१०) पृ० १७३—२१५ तक—निरंकार स्तुति, गुरुदेव का अंग—गुरुदेव स्तुति, साखी, गुरु सामर्थ्य, सरण, विरह, ज्ञान विरह, हैरा, प्रेम—प्रकाश, पीव पहिचान, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, समर्थ ता, विनती, विश्वास, वरकत, निवृत्ति, साधु, असाधु, साधसंगत, कुसंगत, भेषकिल, विचार, बे विचार, निहिचै, जीवन, मृत संजीवन, सारग्राही, अवगुण ग्राही, अज्ञानी, राम विमुख, काल चेतावनी, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु पारख, सिष पारख, गुरु सिष पारख, सन्मुख, बेमुख, गुरु विमुख, चितकपटी, देखा देखी, कांदर, सूरातन, टेक, देव पीति, कस्तूरिया मृग, मन, सती, बेहद, भक्ति, निरपष, पंथ, रस, सुधी मारग, सुमरन, दया, माया, कामीनर, जरणा, रहनी, सहज, बैहद पांरखी लोभीनर, चासावेली, निद्रा, मुरको, निन्दा, साच ।

चंद्रायण अंग—(११) पृ० ३२६—३४० तक—चन्द्रायण सरण, नाम सामर्थ्य, चन्द्रायण बीनती, विरह, परिचय, साधन, साधु संगत—वरकति, गुरु पारख, सिषपारख, गुरु, गुरु बेमुख, सन्मुख, विमुख, मन मुषी, अज्ञानी, काल, चेतावनी, सूरातन, विचार, साच, तृष्णा ।

सवैया—(१२)—पृ० ३४१—३५९ तक—गुरुदेव अंग, सरण, नाम महिमा, परिचय, विचार साधु, साधुसंगति, वरकत, विश्वास, तृष्णा, लोभीनर, अज्ञानी, काल चेतावनी, सन्मुख, विमुख, गुरु बेमुख, अवगुणग्राही, व्यभिचारी, व्यभिचारिणी, कायर सूरातन, कामीनर, सांच ।

झूलना—(१३) पृ० ३६०—३६८ तक—गुरुदेव अंग, सरण, विचार, साध, साधसंगति, उपदेश, वरकत ।

(१४) (कवित्त) पृ० ३६९—४५१ तक—गुरुदेव अंग, सरण, नाम सामर्थ्य, परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, विनती, अविश्वास, तृष्णा, निरपक्ष, निर्गुण उपासना, साधु असाधु, साधुसंगति, कुसंगति, साधु पारख, साधु महिमा, वाचक ज्ञानी, लक्षक ज्ञानी, अज्ञानी, ब्रह्म व भेष, काल, चेतावनी, मन, मनमुखी मनमुख, कायर, सूरातन, उपदेश, जिज्ञासु, शिवनिर्णय, सिष पारख, टेक, निर्णय, विचार हठयोग, भक्ति महिमा, माया, कामीनर, रहनी, जरणा, सांचा, माला, सांच ।

(१५) कुंडलिया—पृ० ४५२—४२७ तक—गुरुदेव अंग, गुरु परमारथी, लोभी गुरु, स्मरण, विनती परिचय, पतिव्रता, व्यभिचारिणी, कायर, सूरातन, विश्वास, बे विश्वास, विश्वास निरपेक्ष, वरकत, निर्गुण उपासना, साध, साध पारख, साध गति, साधसंगति, कुसंगति, अदया, उपदेश, जिज्ञासु, गुरु शिष्य,

शिष्यपारख, गुरु विमुख, राम विमुख, सन्मुख विमुख, अज्ञानी, विचार, निर्णय, विचार, कामीनर, काल, चेतावनी, मन, हठयोग, माया, कामीनर, निंदा, सांच।

रेखता (१६) पृ० ४९८—६१० तक—गुरुदेव को अंग, भेषधारी, सरण, प्रेमप्रकाश, परिचय, विचार, सूरातण, सारग्राही, चेतावनी, असाधु, कामीनर, सांच, भेष, चाणक।

(१७) गुरु महिमा, नामप्रताप, शब्द प्रकाश, चेतावनी, मनखंडन।

(१८) शब्द समास पृ० ६११—६६६ तक—गुरु शिष्य गोष्ठी, ठग की परीक्षा, जिंद परीक्षा, पंडित, समाधि, लक्ष्य—अलक्ष्य, साचलक्ष्य, बेहुगति, काफरबोध।

गाने के पद

राग भैरव इत्यादि, गाने के भक्ति संबंधी पद, (१९) पृ० २६७—७३६ तक राग भैरव, रागललित, रागविभास, बिलावल, जैजैवंती, रागआसा, गौड़—ध्वनि इत्यादि सहित, बसंत, काफी, आसावरी, कल्याण, कनड़ी, कनड़ा, राग बहाग, मंगल, पंजाब, राग गिरनारी, राग सुवा, सोरठ, मारु, जैतश्री, धनाश्री, राग केदारी, जोग धनाश्री, आरती।

(२०) भ्रमभे विलास। पृ० ७३७—७५९ तक—भ्रमभे विलास ग्रंथ, गुरु शिष्य संवाद, संग महातम, संग पारस, सतपुरुष, असत पुरुष, मुक्त जन परीक्षा, जिज्ञासा साधु लक्षण।

(२१) सुखनिवास—पृ० ७६०—७८७ तक—ग्रंथ सुखनिवास, दाताख्या, रचना, अभिमान, माया, मोह, सर्वज्ञ, उत्तम इत्यादि शब्दों की परिभाषाएं राम विमुख का निर्णय, राम विमुख का लक्षण, अपारख, कपटी और कुबुद्धि।

(२२) पृ० ७८८—८१३ तक—दादसमी प्रकरण, डरें क्यों, जतन क्या, जाल क्या, दुखदाई, विह्वल काल कब आवेगा ?। वैराग्य बरकत ठीक क्या, अशुद्ध व्यवहार।

(२३) पृ० ८१४—८३४ तक—सूरापण, जिज्ञासु, संबोध, आत्म प्रबोध, सुर कायर।

(२४) पृ० ८३५—८५९ तक—ग्रंथ विश्वास बोध, आत्मशोध भवितव्य और विश्वास निरूपण।

(२५) पृ ८६०—८८६ तक—ग्रंथ जिज्ञासुबोध, आत्म प्रबोध, गुरु स्तुति और ग्रंथ संख्या निरूपण।

(२६) पृ० ८८७—९१६ तक—विश्रामबोध, सुध संबोध, ग्रंथ संख्या निरूपण।

(२७) पृ० ९१७—१०७४ तक—राम रसायन ग्रंथ, गुरु शिष्य पारख निरूपण आनन्द प्रबोध सरूप, स्मरण, ज्ञान पारख निरूपण, अकिल, धारक, लक्षित सकार स्पर्श प्रेम, अध्यात्म ज्ञान, भोगत सकार, अकिल विचार, चंचल तात सकार, विनति, सोनिकाज साख्या, ऐसा साख्या वाचिक तक सकार, असलाकी पाशा मुर्गो, कुदिशा, दोइ पासे मिळे, सो भेष दरसन मति, रोम, तृष्णा, संताप, मुतलब सकार, हंस्यात सकार, दवा, उपदेश, चेतावनी हारबोल, अर्थात् माया मतलब हंस्या लोभ खंडन और उपदेश चेतावनी, काम खंडन तिमिसंग, सुरापत्र, गुरु महिमा और संख्या निरूपण। रामचरण को वाणी संपूर्ण।

राम जनजी की वाणी।

(२८) पृ० १०७४—११८४ तक—स्तुति, ज्ञान प्रबोध, प्रकाशबोध निरूपण, साधु लक्षण, साधु संग, गुरुशिष्य पारख भक्ति योग अंत निरूपण, नाम महात्म्य वर्णन, वैराग्य विधि निरूपण, उत्तम भक्ति योग, अद्वैत ज्ञान, प्रलय निरूपण, युग, वर्तमान युग, धर्म, नाम और दृढ़ता, कुसंग त्याग, निज वैराग्य, गुरु महिमा निरूपण, ज्ञान प्रबोध ग्रंथ संपूर्ण।

(२९) पृ० ११८५—११९६ तक—ग्रंथ ध्यान वगोचो।

(३०) पृ० ११९७—१२६४ तक-सुमिरण सिद्धान्त, गुरु ध्यान को परिभाषा, स्मरण भेद, समता, मनजोर, मन उपदेश, राम गुरु से बिनती, तीन गुणों से पार होने का साधन भक्ति, प्रीति, प्रणिभाव, उत्तम विचार, जगत प्रभाव चेतावनी, साधु लक्ष्य, उपदेश, जिज्ञासु मति, कुसंग, कुवचित सकार, फोकटक (करनी बिन कथन), गुरुकृपा, शिष्य दीनता, सुमिरण सिद्धान्त पूर्ण।

(३१) पृ० १२६५—१८८८ तक—ग्रंथ श्रवण सार—स्तुति, गुरुदेव स्तुति, विचार माला, संत स्तुति (पहला विधान), गुरु मिलाप महिमा, गुरुदेव की विशेषता, एकादश का प्रसंग (दूसरा विधान) गुरु लक्षण निरूपण (तीसरा विधान) गुरु कसैाटी, शिष्य शुद्धात्मा, गुरु सामर्थ्य, शिष्य अशुद्धता, कृतघ्नी, मनाधीन, शिष्य प्रतापीक, (चैाथा विधान-शिष्य परीक्षा), सहकाम भक्ति निरूपण (पांचवा विधान) किसको किस रूप की भक्ति करना चाहिए (छठा विधान)। निर्गुण निजमूल भक्ति निरूपण (सातवां विधान)। नवधा भक्ति वर्णन श्रवण, कीर्ति स्मरण पादसेवन, अर्चन, वंदन, दासभाव, साख्य भाव, नैवेद्य, पापा अर्पण किया उसका भेद (आठवां विधान)। विकार, सुमिरण नाम निरूपण, रामनाम की सर्वोच्चता, स्मरण टेक, पतिव्रत निरूपण (दशवां विधान) नाम महिमा निरूपण, (ग्यारहवां विधान)। सुमिरण नाम माहात्म्य निरूपण (बारहवां विधान) उत्तम भक्ति ज्ञान निरूपण (तेरहवां विधान)। बंध, मोक्ष, अशुम वासना

निरूपण, (चौदहवाँ विधान) । जग दूषण, वैराग्य निरूपण, (पंद्रहवाँ अध्याय) । अजाचोक वैराग्य, अजगरी भवरवृत्ति निरूपण, (सोलहवाँ विधान) । संन्यास योग, शुद्ध वैराग्य निरूपण (सतरहवाँ विधान), लक्ष्य अलक्ष्य वैराग्य वेष निरूपण (अट्ठारहवाँ विधान) । भेष की आड़ में भिक्षा माँगने वालों की गति, कंदरज स्वरूप, निंदित धन से उत्पन्न अन्नह अनर्थों का वर्णन (बीसवाँ विधान) सतसंग महिमा निरूपण, साधु लक्षण निरूपण (इक्कीस व बाइसवाँ विधान) । संत प्रसाद—महिमा निरूपण, जीव दया निरूपण, (तेईसवाँ विधान) । अधर्म कार्य, दास लक्षण (चौबीसवाँ विधान) राम विचार कुसंग त्याग निरूपण (पच्चीसवाँ विधान), कुसंग लक्षण निरूपण (छब्बीसवाँ विधान) परधन परत्याग, जोग, कर्म-धर्म निरूपण (सत्ताइसवाँ विधान) । काम खंडन निरूपण (अट्ठाइसवाँ विधान) शील, सुधर्म निरूपण (उनतीसवाँ विधान) । माया खंडन आशा लोभ निरूपण (तीसवाँ विधान) । माया खंड तत पतत निरूपण (इकत्तीसवाँ विधान), चेतावनी काल की गति, गृद कूप का वर्णन, (बत्तीसवाँ विधान) । मन प्रसंग (तेंतीसवाँ विधान) । बाहरी भ्रम, भूमि भेद निरूपण (चौतीसवाँ विधान), भ्रमभेद खंडन, मनसा तीर्थ निरूपण (पैंतीसवाँ विधान) । साधु महिमा निरूपण (छत्तीसवाँ विधान) । साधु पारख निरूपण (सैंतीसवाँ विधान) । लक्ष्य अलक्ष्य पंडित परीक्षा निरूपण (अड़तीसवाँ विधान) । योगी लक्ष्य, अष्टांग योग, विचार परीक्षा, वर्णक परीक्षा, शील परीक्षा, संतोष परीक्षा, निरवैर परीक्षा, सहज परीक्षा, शून्य परीक्षा, समाधि, सिद्ध, अणिमादि के लक्षण, जोगी के गुण (उनतीसवाँ विधान—दर्शन लक्ष्य निरूपण) । रोजा व्रत निषेध, भूत खंडन, महंत का लक्षण, राम नाम महिमा (चालीसवाँ विधान) । निज वृत्त भेद (इकतालीसवाँ विधान) । अर्चंग सार ग्रंथ संपूर्ण ।

(३२) साधुवर दूल्हा राम जी के फुटकर शब्द ।

पृ० १८८९—१८७१ तक स्तुति (निरंजन स्तुति) गुरुदेव स्तुति, साखी गुरु देव का अंग, स्मरण का अंग, नाम महात्म्य, नाम सामर्थ, विनती जीवन का अंग, साखग्राही का अंग, विश्वास का अंग, जन देह जीत का अंग, साधु संगति का अंग, कुसंगति का अंग, ज्ञानी अंग, अज्ञानी का अंग, निर्वासन का अंग, पतिव्रता का अंग, व्यभिचारिणी का अंग, सूरातन का अंग निश्चय का अंग, सती का अंग, बेहद का अंग, अदली का अंग, मृतक का अंग, निर्पक्ष का अंग, टेक का अंग, रस अनरस का अंग, अकल का अंग, चंद्रायण गुरु देव का अंग, (गुरु देव का अंग संपूर्ण) । स्मरण, चन्द्रायण विनती का अंग जम कुजस का अंग, विरह का अंग, प्रेम प्रकाश, विचार, साच, बरकत, पतिव्रता

व्यभिचारणी, विश्वास, अविश्वास, संतोष, साध संगति, कुसंगति, असाध का अंग, दया का अंग, ज्ञानी, टेक, उपदेश अहंता, काल, चेतावनी, सांच, भरम विध्वंस, (सवैया गुरु देव का अंग) । सरन विनती, सरवंग, बरकत, विश्वास का अंग, चेतावनी का अंग, काल का अंग, (झूलना) गुरु देव का अंग गुरु महिमा, सरण, नाम महिमा, प्रेम प्रकाश, बरकत, निवृत्ति-प्रवृत्ति, साधु महिमा, साधु सापी भूत का अंग, सत संगति का अंग, उपदेश का अंग, मन का अंग, चेतावनी का अंग, काल का अंग, अकलि का अंग, वे अकलि का अंग, दया अदया, फुटकर, मन हरण और कुंडलिया इत्यादि ।

(३३) पृ० १९७२—१९८६ तक—ग्रंथ राम पद्धति, गुरुवन्दना, गुरु की सेवा से समता, गुरु द्वारा ब्रह्मोपदेश वर्णन, रामनामोच्चार महिमा, शरीर की सजावट का खंडन ।

(३४) पृ० १९८७—२०१९ तक—ब्रह्म समाधिलीन योग ।

(३५) पृ० २०२०—२०५३ तक—नवल सागर—स्तुति, उपदेश, गुरुदेव का उपयोग, कलयुग निरूपण, नाम का निश्चय, नाम का प्रताप, रामनाम में प्रीति, भक्ति, सार असार विचार, भजन का प्रभाव ।

(३६) पृ० २०५४—२१३६ तक—यथार्थ बोधः—वंदना—जगन्नाथ को, रामचरण की महिमा, तोको ब्यौरा, विप्रलक्षण राजा लक्षण, आत्म कथा—अठारह से सत्रह की साल, ऐक ऐको विकत हाल ॥ देव करण ताहां दरसण पायौ ॥ सुनिजन वचन मोद मन पायो ॥ पाखंड निषेध, जगत मन गति, नारि लक्षण, काम गति, सन्मुख विमुख, अस्ताइक, विश्वास, पद्धति, भक्ति, आखिरै लोभ करै सो गति, व्यभिचारिणी, हित पदार्थ, नव संध्या का लक्ष्य, चेतावनी, निंदक की चाल ।

(३७) पृ० २१३७—२१६७ तक—गोपाल कृत प्रहलाद चरित्र—हिरण्यकश्यप को सनकादि का श्राप, उसके पापों से पृथ्वी का कंपित होना, सुर असुरों में वैर होना, हिरण्यकश्यप का तपस्या को जाना, इन्द्र का उसकी स्त्री का हर लेना, नारद का आदेश, इन्द्र का कथन कि इसके गर्भ के बालक का वध किया जायगा, इसका नहीं । इस पर नारद का कथन की इसके गर्भ में भक्त है, ऐसा मत करो, इस पर इन्द्र का अविश्वास, नारद का उपदेश, साधु लक्षण, इन्द्र का उसकी स्त्री को नारद के थान में रखना, नारद का उसे उपदेश सुनाना । बच्चे को प्रबोध, हिरण्यकश्यप का वरदान लेकर घर लौटना, उसकी स्त्री का भी आगमन, प्रहलाद जन्म, पिता द्वारा उसका पढ़ने को भेजना, उसका भक्ति की ओर मन होना, पिता का कोप, भक्त को नाना प्रकार के कष्ट, नरसिंह अवतार, प्रहलाद का भक्ति वर मांगना, नरसिंह का तथास्तु कथन ।

(३८) पृ० २१६८—२१९९ तक—जगन्नाथ कृत, मोहामरद राजा की कथा—नारद का भ्रम, परमात्मा द्वारा उसका निवारण, मोहामरद नृप की कथा सुनना, साधुओं की बड़ाई, ईश्वर द्वारा स्वयं साधुओं का ध्यान करने का कथन, नारद का मोहामरद नृप के दर्शन के लिये गमन, नारद के वहां पहुंचने पर मुनि का योगमाया उत्पन्न करना, और उनके मोहजित होने की परीक्षा, नारद का परिचय लेना और नृप के पुत्र का मृतक होना, दासी का उपस्थित होकर राजा के पास चलने की प्रार्थना, इस पर मुनि का उनके घर में शोक बताना, दासी द्वारा उसका खंडन, पुनः रानी का मुनि के पास आना और चलने की प्रार्थना और मोह खंडन के विषय में कुछ उदाहरण उपस्थित करना, मुनि का नृप के पास जाना और पुत्र शोक के कथन में उदाहरण उपस्थित करना, राजा का मोह खंडन करना, सत्यादिक नृप की कथा सुनाना, चार भाइयों की कथा सुनाना, दो कुत्तों की कथा, एक कुम्भकार के पुत्र की कथाओं द्वारा पुत्र कलत्रादि का मोह खंडन, नारद की तृप्ति, नारद का उस लड़के की स्त्री के पास जाना, उनका शिष्टाचार, नारद का उसके पति के मृतक होने का प्रसंग छेड़ना, उसका ज्ञान कथन और सीतादि के उदाहरण देकर कर्म की प्रधानता बतलाना, नारद का नृप की वंदना करना और ईश्वर के पास जाकर उनकी स्तुति करना।

(३९) पृ० २२००—२२०८ तक—राम सागर ग्रंथ, नैमषारण्यक तीर्थ में सौनिक का सब मुनियों से प्रश्न करना कि कहा हरि कैसे मिलते हैं? सब का चुप रहना, नारद आगमन, सौनिक का नारद से भी वही प्रश्न करना, मुनि का शिव जी द्वारा सुना हुआ राम नाम का महत्व बताना, जो शिव जी ने कभी पारवती को सुनाया था।

(४०) पृ० २२०९—२२२० तक—कृष्ण उद्धव संवाद—कृष्ण का कथन कि श्राप के अनुसार यदुकुल का विनाश होना है, मैं भूमि के भार को उतारदो चुका अतः मैं भी अंतर्धान होऊंगा, तुम मोह मदादिक को त्याग ईश्वर भजन में संलग्न रहना, उद्धव का कथन कि महाराज यह मोहजाल क्योंकर दूर होगा? इस पर कृष्ण का दत्तात्रेय और यदु का संवाद सुनाना, यदु का प्रश्न कि महाराज आप में इतना ज्ञान कैसे उत्पन्न हो गया, अवधूत का उत्तर कि मेरे बहुत से गुरु हैं—क्रमशः गुरुओं के २४ नामों को लेकर प्रथम आठ की कथा सुनाकर उनसे गुण ग्रहण करने का कथन (धरनी, पवन, गगन, पानी, अनल, चंद, रवि, कपोत)।

(४१) पृ० २२२०—२२२७ तक—सूकर, कुकर, अजगर, सागर, मधुकर, हस्ती, मधुमाखी, मधुहरा, पिंगला (वेश्या) सम्ह गुरुओं की कथा।

(४२) पृ० २२२८—२२३२ तक—कहर पंछी, बालक, सांप, सती, मकड़ी भृंगी कीट, चौबीस गुरुओं की कथा सुना कर शरीर का नश्वर सिद्ध कर परमात्मा में स्नेह लगाने का वर्णन।

(४३) पृ० २२३३—पृ० २२४६ तक—भिक्षुक गीता कथन—भागवत के आधार पर—एक ब्राह्मण का विरक्त होकर के भिक्षुक होना, लोगों का उसे तंग करना और उसका ज्ञानोपदेश।

(४४) पृ० २२४७—२२५३ तक—ऐलव गीतव व्याख्यान। इन्द्र का उर्वसी के विरह में दुखित होना, फिर अपने अज्ञान पर मोहित होकर ज्ञान उत्पन्न होना।

(४५) पृ० २२५४—२२६२ तक—जड़भरत की गाथा—राजा भरत का विरक्त होकर वन में चला जाना। वहाँ पर एक हिरन-शावक के साथ दया के संसर्ग से शरीर छोड़ कर मृग हो जाना, पश्चात मृग शरीर के त्यागने पर एक ब्राह्मण के यहाँ जन्म लेना, पिता के पढ़ाने लिखाने पर न पढ़ना, उनका नाम जड़ भरत पड़ना, भरत का देवी को बलि दिया जाना, देवी द्वारा भरत की स्तुति और बलि को न ग्रहण करना, एक राजा का मोह दूर कर भरत का उसे ज्ञान देना ग्रंथ की समाप्ति।

No. 376. Sarasadāsaji ki Bani by Sarasadāsa of Vṛindāvana. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—336 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Babū Śyāma Kumara Nigama, Rāe Bareli.

Beginning—श्री कुंज विहारी जी। अथ सरस दास जी की बानी लिख्यते॥ कवित्त॥ रसिक सिरमौर श्री हरिदास स्वामी॥ विविधि वर माधुरी सिंधु में मगन मन बसत बृंदा विपुन वर सुधामी॥ महल निजु टहल में महल पावै न कोऊ छत्र पतिरंक जिते करमकामी॥ रसिक रस रीति की रीति सों प्रीति निति नैन रसना रसत नामनामी॥ हृदै कमल मधि सुख सेज राजत दोऊ॥ रसिक सिर मौर श्री हरिदास स्वामी॥ १॥

अनन्य मति धनि श्री हरिदास स्वामी॥

जमुन कलकूल कलकेलि कलकलप तरु तीर छवि भोर बसें वर विश्रामी॥ मंजु नव कुंज सुष पुंज गुंजे सुनत सरस अनुराग गुंनराग धामी॥ पछि लछि लछिनै अलछि लछन सुलछ निरपि निरपेछ लता ललित नामी॥ नैन पुतरीनि ऊपर सुष सेज कोइत दोऊ॥ अनन्य मति श्री हरिदास स्वामी॥

End—मदन दवंज सुष पुंज गुंज पनि झुंजन बेत्र बज्यो सुषदाई। भूषन वसन व्यसन प्यारे प्यारे मिलि करत केलि मन भाई॥ अंग अंग सौ अंग रंग छवि उपजति मानौं सुरंग घोड़नो दुरंग उठाई॥ करत विहार विहारी विहारनि सरसदासि नेवन सुख प्याई ॥ ३७॥ विमल पुलिनि मंडल मधि राजत नागरी किशोर मोर मुकुट भूषन दुति काछनो बनाई॥ नृतत रास रंग भरे उरपति रव सुलप लेन ताल सचित लाग डाट प्रति गति मन भाई॥ अपने अपने रंग गावति मिलिवत तान तरंग बहु सुबज्यो मनमुष सुष भृकुटी नैंन नचाई॥ करन सों कर जोरत हंसि हंसि रीझि उर लागे लटकत तन मन मगन सरस दासिनि सुषदाई॥ ३८

झूलें फूल डोल दोऊ फूल भरे।
फूल वसन फूल आभूषन हंसनि दसन ये फूल झरे।
फुलयो फूल मनोज मोज रति कसि कसि अंगन चोज करे॥
अलिगुन गावै फूल बहावै रीझि भोज सरस रीति दरे॥ ३९॥
इति श्री सरसदास जी की बानी रस की संपूरन॥

Subject.—१—हरिदास जी के प्रति वंदना।
२—नागरीदास प्रति भक्ति वर्णन।
३—श्रीकृष्ण के भक्ति विषय के स्फुट पद।
४—सिद्धांत के कवित्त।
५—७—श्रीकृष्ण के कोमल भाव परम उज्वल शृंगार का वर्णन।
८—श्रीराधाकृष्ण का विलास वर्णन।

No. 377. Virahasāgara by Bābā Sarajudāsa of Kotawā (Bārā Bañkī). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—125 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1938 or A. D. 1881. Place of deposit—Paragidāsa, Village Jadawāpur, Post Office Baranāpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—वैसे घन नामी सुनो सतनामी अंतरजामी सत साई॥ सब गुननायक रुचि फलदायक प्रगट जन ताई॥ बहु बालक साथे महिरज हाथे लावत माथे बंदि छोरा॥ पायन पैजनियां पहिरे चौतनियां सोहत करधनियां कुत लोरा॥ सतगुरु अंगनाई बैठे सकठाई पेलत साई रंग नीला॥ मचल पसारी तकि महतारी सुनौ मरुनारी करि लीला॥ बालक अविगति रूप किरति अनूपा भव हरना॥ प्रभु कीरति पावन सत मन भावन अघ कलुष नसावन है तारन

तरना ॥ हरिजन कारन असुर संघारन पतित उधारन सत सामो ॥ संतन अभि-लाषत कीरति भाषत जन मन राषत निहकामो ॥ सव वालक संगा चढ़े तुरंगा फिरत उमंगा कर कीड़ा ॥ जेहि दुषिया जानत सरनै आनत तेहि सनमानत दै घोड़ा ॥ करैं प्रतिपाला बकसि दुसाला दीनदयाला छिन माहीं ॥ भजि नाम रसाला भै मतवाला नैन कराला कछु भै नाहीं ॥

End—दोहा ॥ रोवैं जिव जंतु पंछी पसु संवरि संवरि गुनगाथ । प्रभु समान्यो सुन्य मा मोहि करि गयो सनाथ ॥ सोरठा ॥ सो मंडफ बनवाइ दीन्ह छोटानी दास तव । चरन कमल मन लाइ हिरदे मा विस्वास करि ॥ त्रोटक छंद ॥ संतन को दाया तव कहि गाया यह अरजी । सुनो नर नारी कहउं पुकारी ले मरजी ॥ भक्तन पर दाया किहे रहैं छाया अस परतापी रहे साईं । मै कृपा निधाना अंतर ध्याना अवहुं हरै तन अघ भाई ॥ वह देषि समाधी तरै अपराधी तजि मोहमदा ॥ वद्म द्रोपी धाये दरसन पाये तरे तुरत रहे पाप लदा ॥ जे करि कामन धावै ते तुरतै फल पावै अस परतछ समाधी ॥ जे जगत भुलाने ते आइ तुलाने कटिगे तेहि भव व्याधी ॥ दोहा ॥ अवहुं तवहुं किरपा किहिनि ऐसे कृपा निधान । सरजू का यह दीजिये गुन भजै धरि ध्यान ॥ दोहा ॥ इन्द्रदवन गुर साहेब भये प्रगट जगत धरि देहं । प्रभु सनमानि लघु तात तेहि दीजे नाम सनेह ॥ चौ० कोटवा धाम सत गुर मन भावन । अवर न टट वट छांह सुहावन ॥ कूप कुटी वन विटप सोहाये । मेला हाट देषि मन भाए । मंडप दरस पूरि अभिलाषा । पश्चिम द्वार बैठि तहं भाषा ॥ इति श्री विरह सागर वानी सरजू दास को संपूरन सुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ११ श्री संवत १९३८ जो प्रति देषा सो लिषा लेषक परमानंद कवि वसत सरैयां ग्राम । जो प्रति देषा सो लिषा सिद्ध करै श्री राम ॥ राम राम राम—

Subject—इस पुस्तक में बाबा जसकरन दास का मृत्यु काल वर्णन है। इसमें उनके गुणों का स्मरण करके विरह प्रगट किया गया है।

No. 378. Mahābhārata Aswamedha Parva (Jaimini-purāṇa) by Saraju Rāma of Awadha. Substance—Country-made paper. Leaves—308. Size—12½ × 5½ inches. Lines per page—14. Extent—8,085 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1805 or A. D. 1748. Date of Manuscript—Samvat 1885 or A.D. 1828. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihāriji Misra, Golāgañja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ यंतर्ज्जलो लसति वारिद रम्य गात्रं, विद्युत प्रभावर विभूषितमम्बुजाक्षं। कंदर्प कोटि सुभगं व्रज सुंदरीणां, नेत्रोत्सवं भजतु नंदकिशोरमीशां ॥ १ ॥ भज्जे मुनो प्रमतिभिर्मुनिभिर्विचित्रं, माख्यान मद्भुत तरंग दितंजपूर्व तद्भाषया सत्सुराम प्रसिद्धिनामा, धर्मोस्वमेध मिहरम्यतमं तनोति ॥ २ ॥ सोरठा—गुण गन ज्ञान निधान मंगल मय सुखमा सदन। कलि विष तूल कृसानु एक रदन करिवर बदन ॥ ३ ॥ जाहि अमंगल मूल सुमिरत गणपति गौरि सुत। जरहि व्याल जिमि तूल विघ्न व्याधि संकट सकल ॥ ४ ॥ छंद—नमो गौरिजा ज्ञान रूपं गनेसं। नमो मोह अज्ञान नासं दिनेसं ॥ नमो धूम्रकेतु गनेसैक दंतं। नमो विघ्न छेदं धरं परसु हस्तं ॥ नमो बुध्यकांतं नमो गौरि पुत्रं। नमो निर्विकारं नमो चारु वक्र ॥ नमो बुध्य बुध्यं नमो संत रूपं। नमो ज्ञान गोपार सिध्यं सरूपं ॥ भजेहं गनेशं गुणं ज्ञान गेहं। नवोनार्य वर्ण सुभं सुभ्र देहं ॥ करि-न्द्राननं सोभितं इन्दु भालं। चतुर्बाहु कंठं चलं चारु मालं ॥

End—छंद—सुख पाइहै सुनि सुनत श्रोता जिन्है प्रिय हरि जस अहो। परसिद्ध जैमुनि की कथा अति कूर कविता की कहो ॥ बल बुद्धि विद्या हीन हनि मति अज्ञ औगुन मय महा। श्री गुरु कृपा यह चरित कछु निर्मित सो नियमित कर कहा ॥ दोहा—विशिष व्योम वसु बुध्य सुकुल षष्ठमो फाग। पूरन भइ श्री गुरु कृपा कथा युधिष्ठिर राज ॥ (निर्माणकाल सं० १८०५ वि०)। इति श्री महाभारथ पुराणे अश्वमेधि पुर्वे सूत सौनिक संवादे जैमुनि पुराणे जज्ञ कृतो राजा युधिष्ठिर समाप्तं षट त्रिंशतमोऽध्यायः ॥ दोहा—बन रिपु ता रिपु तासु रिपु तारिपु रिपु असवार। सो तोरी रक्षा करै घरी घरी सब बार ॥ मिदं पुस्तकं लिख्यतं ललितादीन पाण्डे स्वयं संवत १८८५ वि० भाद्रमासे कृष्ण पक्षे पार्वणि त्रियोदश्यां चंद्रवासरे शुभम् ॥ तैलं रक्षं जलं रक्षं रक्षं शिथिल बंधनम्। मूर्ख हस्ते न दातव्यं मेते वदति पुस्तकम् ॥ राम राम राम ॥ इति ॥

Subject—पृ० १—५ तक प्रार्थना, मंगलाचरण, विष्णु, गणेश, देवी, शिववन्दना, वाणी, गुरु स्तुति वर्णन। पृ० ६—११ तक भीष्म, युधिष्ठिर और व्यास संवाद; युधिष्ठिर का वैराग्य होना, और व्यास का समाधान करना तथा उसके लिये विधि बतलाना। पृ० १२-१९ तक यज्ञ मंत्रणा करना कृष्ण आदि मिल कर पृ० २०-३१ तक। भीम और अर्जुन का धन और घोड़े के लिये यात्रा करना, जीवनास से मैत्री होना और घोड़ा लाना। पृ० ३२—३८ तक। यज्ञ की तय्यारी होना, जीवनास सम्मिलन और हस्तिनापुर आना। पृ० ३९-४७ तक। भीमसेन का द्वारका जाना और श्रीकृष्ण जी के साथ देवकी यशोदादि को लाना। पृ० ४८—५७ तक अनुसाल का षड्यंत्र रच कर युद्ध करने का प्रयत्न करना, और घोड़ा

छुड़ाना, और युद्ध होना, वृषकेतु का अनुसाल्व को पकड़ना। पृ० ५८—६३ तक घोड़ा छोड़ना, अर्जुन, अनुसाल्व, जीवनाथ, वृषकेतु आदि का साथ होना पृ० ६३-७० तक महूरा के राजा नीलध्वज के यहाँ जाना और उसका घोड़ा पकड़ना नील-ध्वज का युद्ध वर्णन, अर्जुन का अग्निदेव की स्तुति करना, अग्नि का नीलध्वज की कन्या से विवाह वर्णन पृ० ७१-७३ तक। नीलध्वज का युद्ध वर्णन वभ्रुवाहन की कथा। पृ० ७४—७८ तक। एक स्त्री को मुनियों का भोजन शूकर को देने से शापवश पत्थर हो जाना और प्रार्थना पर अर्जुन के पद छू कर तरने का वरदान देना, शिला से घोड़े का चिपकना, अर्जुन का छुड़ाना—पृ० ७९—८७ तक—घोड़ा का हंसध्वज के यहाँ पहुँचना, सुधन्वा के सत्य की परीक्षा तप्त कड़ाही में कूदना, द्विजों का समाधान होना पृ० ८७—१०० तक—सुधन्वा पांडव संग्राम वर्णन, वध होना। पृ० १००—१०७ तक सुरथ पांडव युद्ध वर्णनम् व वध होना, पृ० १०७—११० तक। एक सरोवर पर जा कर घोड़े का सिंह होना, अर्जुन की प्रार्थना पर फिर घोड़ा बन जाना वर्णन पृ० ११०—११५ तक। प्रमिला का घोड़ा पकड़ना, उसका युद्ध को प्रस्तुत होना, अर्जुन के हार की प्रतिज्ञा पर घोड़ा छोड़ना, पृ० ११५—१२० तक भेषन राक्षस से युद्ध व वध वर्णन और माया का नाश करना—पृ० १२०—१३६ तक—घोड़े का मनिपुर में आना अर्जुन का पुत्र वभ्रुवाहन राजा था, चित्रांगदा मा थी, वभ्रुवाहन का युद्ध वृषकेतु प्रद्युम्न आदि को युद्ध में हराना, अंत में अर्जुन का पुत्र मानना और वभ्रुवाहन का अपमान जो अर्जुन ने किया भूल जाना, पृ० १३७—१४० तक। लवकुश कथा वर्णन। पृ० १४१—१४८ तक जानकी वन गमन वर्णन। पृ० १४९—१५९ तक। लवकुश जन्म कथा वर्णन व विद्याध्ययन शिक्षा वर्णन। पृ० १६०—१७३ तक लवकुश का अश्व पकड़ना और शत्रुघ्न से युद्ध होना पृ० १७४—१८६ तक। लवकुश का लक्ष्मण, सुग्रीव अंगद विभीषण सब से युद्ध वर्णन। पृ० १८७—२०० तक लवकुश का भरत से युद्ध वर्णन। पृ० २०१—२१४ तक। लवकुश सीता का राम से मिलना, सब का जी उठना और सीता जी का अयोध्या में कुमारोंसहित आना, पृ० २१४—२२४ तक। अर्जुन और वभ्रुवाहन का युद्ध होना तथा अर्जुन का वध वर्णन। पृ० २२४-२३३ तक—चित्रांगदा का दुःखित होना और पाताल से अमृत लाने को कहना, वभ्रुवाहन का जाना और नागों से युद्ध होना—पृ० २३४—२४० तक। सिर का खो जाना, वभ्रुवाहन का संजीवन रत्न लेकर आना कृष्ण का कुंती, भीम आदि समेत आना, अंत में दुःखित हो वभ्रुवाहन ने अपना सिर दे दिया तब श्रीकृष्ण ने सब को जीवित कर दिया। पृ० २४०—२४७ तक। ताम्रध्वज का घोड़ा पकड़ना, मयूरध्वज का सेना सहायतार्थ भेजना व अर्जुन का मूर्छित होना। पृ० २४८—२६० तक कृष्ण जी का विप्र भेष से मोरध्वज की

परीक्षा करना और वरदान देना और सत्कार पाना—पृ० २६१—२६७ तक। चंदेरी के चन्द्रहास राजा के यहां माना, घोड़े का तैर जाना, सेना का पीछे रह जाना, अर्जुन को नारद का मिलना, नारद का चन्द्रहास की कथा कहना और कुलिंद के यहां कुमार का आना—पृ० २६७—२७६ तक। चन्द्रहास की वीरता व उदारता का वर्णन। पृ० २७७—२८९ तक। चन्द्रहास की कथा व इतिहास तथा तप वर्णन पृ० २९०—२९४ तक घोड़ा का जयद्रथ के पुत्र के देश में जाना, अर्जुन का नाम सुनकर मर जाना, और कृष्ण का जिलाना बकदालभ्य का सम्मिलन वर्णन—पृ० २९५—३०३ तक—अश्वमेध यज्ञ में राजाओं का आना और आनन्द पूर्ण होना। पृ० ३०४—३०८ तक। बकदालभ्य को दान देना, सब को बिदा करना, युधिष्ठिर का कृष्ण की स्तुति करना—विप्रों को दान देना—

No. 379 (a). Kavitta Ratnākara by Senāpāti. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—10 × 7 inches. Lines per page—72. Extent—1,674 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character - Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1706 or A. D. 1649. Date of Manuscript—Samvat 1884 or A. D. 1827. Place of deposit— .

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ कवित्त रत्नाकर लिख्यते॥ परम जोति जाको अनंत रहि रही निरंतर। आदि अंत अरु मध्य गगन दश दिशि वहि अंतर॥ गुण पुराण इत साह वेद वंदीजन गावत। धरत ध्यान अनुवरन पार ब्रह्मादि न पावत। सेनापति आनंद घन रिद्धि सिद्धि मंगल करन। नायक अनेक ब्रह्मांड को एक राम संतन सरन॥ कवित्त॥ पाई जो कविन जल थल जप तप करि विद्या उर धरि परहरि रस रोसा है॥ ताकि कविताई को सुजस सुपशु चाहतु हैं सेनापति जानत जो अक्षर न घोसा है॥ पाय कं परस जाके शिलाहू सचेत भई पायो बोध सार सारदाऊ को भरोसा है॥ और न भरोसा जिय परत परोसा ताही राम पद पंकज को पूरण भरोसा है॥ भूप सभा भूषन छिपायो पर दूषन को बोल एक दूषन कहेन देह पार के॥ राज महराजनि पूरे सकल कलानि सेनापति गुणखानि औरहू को गुणदार के॥ तुमही बताई कछु कीन्हीं कविताई तामे होइ जोगताई दुचिताई के सुभाइ कै॥ बुद्धि कै बिनायकै गुसाई कवि नायकै सो लीजिये बनाय कै कहत शिरनाइ कै॥

End—अथ गुड़ार्थ—ज्योतिस ताते पाइये संतति नीकी होइ। सेनापति जो तप करै संतति पावै सोइ॥ सेनापति जो कामिनी अंधी कछू लखैन॥ कवि नव पाने कौल से ताही तो के नैन॥ सेनापति बल्यो तुरंग उरंगमन को माइ। तौन

पाइ को भांति ज्यों चलत चारइ पाइ । पाइ एकसौ साठि है तिनमें एक चलैन। ताको समवाजो चले सेनापति हारैन ॥ चे० ॥ यादि अंत जाके है यादि न अंत न जाके सोचे वादि देह बिनाह होतह जात निशि दिन सोचि कहौं सो बात॥ दोहा—जिन पाटी सिर धोर है कीन्हो पधो अनूप॥ सेनापति पारद धरी प्रिय पालका स्वरूप ॥ संवत सत्रह से छमें १७०६ सेइ सियापति पाँय सेनापति कविता सजी सज्जन सजौ सहाइ ॥ कवित्त ॥ पूरी पंडिताई कविताई परबीनताई पाई शुभ साधुताई कीजो सब मानिहै ॥ अति गुणवान शीलवान सब संतन को पति पर निंदा को सुहाति है सुहानिहै ॥ कहां कहां जैये काहि काहि समुझैये ॥ आप गुनी है गुनीन सनमानि है सो मानिहै ॥ यथै कवि चित्र सेनापति के कवित्त जानि जानिहै सो जानिहै न जानि है न जानिहै इति श्री कवित्त रत्नाकर सेनापति कृते चित्र काव्य वर्णन नाम षष्ट स्तरंगः ॥ संवत १८८४ चैत्र शुक्ल सप्तम्यां भौमे लेखि बकसीराम कान्यकुब्ज पुरे ॥

No. 370 (b). Kavitta Ratnākara by Senāpati. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Size—9×6 inches Lines per page—30. Extent—1,418 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Prose or verse—Verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Ganesha Siṁha, Village Karailā, Post Office Phakharpur, District Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ लिषितं कवित्त रत्नाकर सेनापति कृत ॥ सुरतरु सार को सवारो है विरंचि पंचि कांचन षचित चिंतामनि के जराइ को ॥ रानो कमला को पिय आगम कहन हार सुरसरि सपो सुष दैनो प्रभु पाइ को॥ वेद में बषानो तिहुं लोकन को ठकुरानो सब जगजानो सेनापति के सहाइ को। दुष दुख दंडन भरत सिर मंडन वे वंदौ अघ षंडन पराऊं रघुराइ को ॥ १ ॥ पाइ जो कवितु जल थल अपु तपु करि विद्या उरधरि परिहरि रस रोसा है ॥ ताहो कविताई को सुजस् यसु चाहतु है सेनापति जानतु जु अक्कल न पैसा है। पाइके परसु जाको सिलाउ सचेत भई पायो बोध सार सारदाह को धरोसो है और न भरोसो जिय आवत परोसो ताहो राम पद पंकज को पूरन भरोसो है॥ मुड़न को अगम सुगम एकताको जाको तोछन विमल विधि बुधि है अथाह को। कोई है अभंग कोई पदु है सभंग सोधि देषे सब अंग सम सुधा के प्रवाह को यादि ॥

End—बारन लगाहो पुकार एक बार ताको बारना लगाई रछि पार मगनन को। सिव सिरताज तुम आपु महाराज बैठि रहे तजि लाज काज सो गरीब जन के॥ सेनापति राम भुपाल आपु जानि जिय हूजिये सरन असरन के।

धाइ हरि राइ ह्वै सहाइ धाइ दूरि करो त्रास लछिमन सु भैया लछिमन के।
आदर विहीन ताहि परद्दार दीन जाइ होतु है मलीन बात सुनि पनवात की।
सदा सुख दीत राम नाम सुनि लीन रहै कोइ चित चिंतन करत प्रान गात को॥
आसर मोर का करत काहु ठौर का जु सेनापति एकु हरिराइ कृपा तको।
जाके सिरपर घाजु गजबु है महाराज ताहि कहैा कहो परवाहि कौन बात को॥
तुम करतार जन रछा के करन हार पछवन हार मनोरथ चित चाहे के।
यह जिय जानि सेनापति हो सरन आयो हूजिये सरन महापाप ताप दाहे के॥
जो कहूं कहो कैसे क्रूर मन तैसे हम गाहक हैं सुकृति भगति रस लाहे के॥
आपने करम करिहैा हो निरवहैगो यहो हो करतार करतार तुम काहे के॥

No. 380. Jaimini Purāṇa by Sewādāsa of Nawaranga Nagar. Substance—Country-made paper. Leaves—540. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—8. Extent—3,240 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1700 or A. D. 1643. Date of Manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Paṇḍita Bhawānī Bhiruji, Village Uttaragāma, Post Office Aliganja Bāzāra, District Sultānpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री गुरु चरणकमलेभ्योनमः ॥ गोविंदाय-नमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ अथ जैमुनि पुराण लिख्यते ॥ दोहा ॥ बंदो ॥ गणपति सरस्वती पुजैा गुर के पाय ॥ संतन पद रज शीशधरि भाषैा कथा सुभाय ॥ १ ॥ चोपाई ॥ जन्मेजै पूछै कर जोरी ॥ जैमुनि रिषि सुनु विनती मोरी ॥ पूर्व कथा कछु मोहि सुनाया तिन्ह कर रिषि कछु करहु बखाना ॥ बंधुन सहित राज जस कीन्हा ॥ बिप्रन कंचन दान बहु दीन्हा ॥ जग मा अस्वमेध जस कीन्हा। सो राजा कहो कैसे सो दीन्हा ॥ दोहा ॥ राजनीति जगधर्म की सकल कहो समुझाय ॥ मम मन धर्म सनेह बहु कृपा करो रिषिराय। जैमुनि उवाच ॥ चो० ॥ धन्य धन्य जन्मेजै राई ॥ जो तुम्ह जैसी बुधि उपाई ॥ धर्म पुनीत कथा हितकारी ॥ सो नृप तुम्ह मोहि कहो विचारी ॥ × × ×

End—जैमुनि कहै जन्मेजै काजा। परम पुनीत कथा यह राजा ॥ पूरन हम तुम्है सुनाई ॥ अधिक प्रेमते तुम सुनि पाई ॥ कलयुग अश्वमेध नहि काजा ॥ यहि प्रकार फल कीजिय राजा ॥ दोहा ॥ अश्वमेध जग्य की कथा भदेर पूरन सोय ॥ अंतर राखि विचित्र पढ़ुणै अश्वमेद फल होय ॥ चो० ॥ जो कोई साधु संत जग माहीं ॥ तिनकी पद रज सेवा दास ॥ कवि जन सो बोले कर जोरी ॥

चूक अचूक बकसिये मोरो ॥ अश्वमेद सह सक्त तियाहो ॥ सो हम श्रवण सुनि कछु नाही । वातण कछु कछु सुनि पावा ॥ तुम मिलाय के ग्रंथ बनावा । मेरता कछु शंसे आवै ॥ ताते कवि जन ठैार बतावै ॥ भद्रावति नग्र के पासा ॥ जो जग हैड़ कवि का बासा ॥ नवंरगाबगर जब सिधपुर तहां का सुव मते नेवासा ॥ कान्ह राम के सामले बसत है सेवादास ॥ संवत सत्रह सै भयऊ कातिक मास सोते पछे द्वादस्यां चन्द्रवासरे गुरु आणवदनधाया पुस्तकं लौपितं मया ॥ लिषितं ब्राह्मण रुद्र त्रिपाठि त्रिवस सम्वत् कुच्या के सतत् मया ॥ वसतं ग्राम पेडोर जस्य विदितां क्रति जगत्र षितां इति श्री महाभारते अश्वमेधे पर्वाणि जैमुनि कृत—संवत १८५२ ॥

Subject—कुल अध्याय । (१) पृ० १—१४—यज्ञ उपदेश । (२) १५-२६—हस्तनापुरी आगमन । (३) २७—३६—भीमसेन गमनागमन । (४) ३७—४२—श्यामकरण हरण । (५) ४३—५० जोवनाश विषकेतु युद्ध । (६) ५१—५३—भीम युद्ध । (७) ५७—६२-जोवनाशादि युधिष्ठिर मिलन (८) ६३—६६-धर्म निरूपण । (९) ६७—७१ भीम द्वारिका गमन । (१०) ७२—७६ कृष्ण हस्तनापुरी गमन । (११) ७७—८० कृष्ण हस्तनापुर आये । (१२) ८१—८७-शल्य घोड़ा हरण । (१३) ८८—९६ भामा संबोध । (१४) ९७—१०८-नीलध्वज तुरँग हरण । (१५) १०९—११६ नोलध्वज बर्णन । (१६) ११७—११९-उद्यालक स्त्री शाप विमोचन । (१७) १२०—१२६-सुधन्वा प्रतिज्ञा बर्णन । (१८) १२७—१३०-सुधन्वा युद्ध । (१९) १३१—१३५-सुधन्वा बध (२०) १३६—१४३-सुरथ बध । (२१) १४४-१५२ कृष्ण ग्रोर हंसध्वज मिलन । (२२) १५३—१५८-प्रमाला रानी युद्ध । (२३) १५९-१६९ घोड़ा मानिकपुर आगमन ।(२४) १७०—१८३—बभ्रुवाहन युद्ध । (२५) १८४—१८८-बभ्रुवाहन युद्ध (२६) १८९—१९७-रामाभिषेक, (२७) १९८-२०६ सोता लक्ष्मण बर्णन । (२८) २०७—२१४-सीता वाल्मीकि आश्रम प्रवेश (२९) २१५—२२१-लव घोड़ा बंधन । (३०) २२२—२३० लव मूर्छा (३१) २३१-२३७ शत्रुहन मूर्छा (३२) २३८-२३९ लक्ष्मण सेना बध (३३) २४०—२४१ लक्ष्मण मूर्छा (३४) २४२—२४७-भरत आगमन (३५) २४८—२६०-रामचन्द्र लवकुश, सीता वाल्मीक मिलाप बर्णन (३६) २६१-२६७ वृषकेतु बध (३७) २६८—२८४-अर्जुन बध । (३८) २८५—२९५—श्रीकृष्ण मानिकपुरी आगमन । (३९) २९६—३०२—बभ्रुवाहन विजै बर्णन । (४०) ३०३—३०७ मोरध्वज अर्जुन समागम । (४१) ३०८-३१३-मोरध्वज कृष्ण बभ्रुवाहन मूर्छा । (४२) ३१४—३२१-सुचेत युद्ध (४३) ३२२—३२८-कृष्णार्जुन नग्र प्रवेश । (४४) ३२९—३३४—मोरध्वज ब्राह्मण समागम । ४५, ३३५—३४९ मोरध्वज कृष्ण मिलाप । (४६) ३५०—३५५—मालिन कन्या राजा वीरवर्मा संवाद । (४७) ३५६—३६२ धर्मराज रोग बर्णन । (४८)

३६३—३७० वीरवर्मा उपाख्यान। (४९), ३७१—३८० चन्द्रहंस उत्पत्ति (५०) ३८१-३८६-चंद्रहंस विद्याध्ययन (५१) ३८७-३९६ मदनवती गमन।(५२) ३९७—४०१ चन्द्र कौतुलपुर आगमन। (५३) ४०२—४०८ चंद्रहंस विवाह (५४) ४०८—४०८ चन्द्रहंस विवाह। (५५) ४०९—४१६ चन्द्रहंस विषय वर्णन (५६) ४१७—४२७—चंद्रहंस राज प्राप्त (५७) ४२८—४४०-चन्द्रहंस राज वर्णन। (५८) ४४१—४४९—चंद्रहंस मिलाप (५९) ४५०—४६६—कृष्णावक तालमुनि मिलाप, (६०) ४६७—४७३—जयद्रथपुर गमन, (६१) ४७४—४८०—अर्जुन हस्तनापुर आगमन (६२) ४८१—४९३ यज्ञारंभ श्यामकरण स्नान वर्णन (६३) ४९४—५०८—यज्ञ वर्णन। (६४) ५०९—५१९ ब्राह्मण भोजन वर्णन। (६५) ५२०—५३०—वाक्पति ब्राह्मण कथा। (६६) ५३१—५३५—मेवणा मोक्ष (६७) ५३६—५४० जैमुनि पुराण पढ़ने के फल, कवि का अपना परिचयः—भद्रावती नगर के पास—वहां से डेढ़ योजन नवरंग नगर। सेवादास नाम। रचना काल सं० १७०० लिखो १८५८

No. 881(a). Dayābodha by Devidāsa of Ḍiḍwānā Jodhapura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—10 × 5 inches. Lines per page—16. Extent—28 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Ḍiḍwānā, Rājā Jodhapurā, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दयाबोध लिख्यते ॥ गोरषनाथ गुरु आवो सिद्धो खोज बताऊं। आदिनाथ का पुत कहाऊं। जोगारंभ को याही वाणी।सब घट नाथ एक ही करिजाणो। जोगारंभ हृदय मैं माड़ो। दया उपावो जूतो छोड़ो। नागा पाचा जो नर मुवा। ताका कारज पहिले हुवा। आप स्वारथ घालै घई। तामैं चोटो केती मुई॥ तजो कहरि नजरि अपूत। वटवा फाउड़ो जिन लेउ हाथ। ऐता आरंभ परि हरौ सिद्धो। यों कथंत जती गोरषनाथ॥ माथ चलंता धरणि दिष्ट जो लागी। ताकै कांटा कढ़ेन लागे। पहिले आरंभ हम भी करते। जीव जंतु बहुतेरे हतते। आरंभ तजो गुदड़ी चलायो। निरति सुरति अविनासी सों लायो। अविनासी पुरुष का लागा रंग। रिद्धि सिद्धि ताही के संग॥ रिद्धि छांड्या सिद्धि पाइये। सिद्धि शंकर के हाथ॥ छांड़ो सकल अकल को ध्यावो। यों कथंत जती गोरखनाथ॥ आसन तजि अनंत जिन जावो। अलप भिक्षा बैठा पावो॥ तक्ना पांच घर चितायवा।

End—चढ़ा देवगा चैगढ़ देव । तहां जोगेश्वर लाग्या सेव ॥ पंच चेला मिलि पुरानाद । धरनि गगन बिच भई घावाज ॥ दीपक एक अपंडित बिन बातो । तहां जोगेश्वर थापना थापी ॥ ता दीपक के चरण न पिंड । सिपा न नैन सोस नहिं हाथ । सो दीपक देष्या जतो गोरखनाथ ॥ ता दीपक के डाल न मूल । ता दीपक के कली न फुल ॥ ता दीपक के रंग न रूप । ता दीपक के छांह न धूप ॥ ता दीपक के सबद न स्वाद । ता दीपक के विद्या न नाद ॥ ता दीपक के मोह न माया । सो दीपक सुनै सुन समाया ॥ इति दयाबोध सम्पूर्ण लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मध्ये संवत १७९४ ॥ पठनार्थं रूपदास महंत डीडवाना गद्दो वाले के । कातिक मासे शुक्लपक्षे तिथि नवम्यां शुक्र वासरे ॥

Subject—इस में साधुयों के लिये दया का ज्ञान वर्णन है ।

No. 381(*b*). Gorakha Gaṇeshā Goshṭhī by Sevādāsa Mahanta of Ḍiḍwānā (Jodhpura). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—8 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—80 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahanta Ḍiḍwānā Rāja Jodhapur, Post Office Ḍiḍwānā, Rājputānā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गोरष गणेश गोष्टी लिष्यते ॥ गणेश पूछे गोरष कहिए । तुम स्वामी कहां ते आये । कहा तुमारा नाम ॥ हम निरंतर आये जोगी हमारा नाम ॥ स्वामी जोगी तोते बोलिये । जिन एता मेर मेषला रचा । तुम कैान जोगी । अह्दे निरंजन जोगी । अतिथि गुरु चेला स्वामी । अतिथि ते कैान जाणिये । रहति जाणिये शब्द प्रमाणिये स्वामी रहतिते क्या बोलिये ॥ शब्द ते क्या बोलिये । शब्द बोलिये अवधू सबते विवर्जित । रहति बोलिये त्रिगुण तैा स्वामी सब ते विवर्जित ते क्या बोलिये । त्रिगुणते क्या बोलिये । सब ते विवर्जित ते बोलिये ते बोलिये अवधू सूच्छिम त्रिगुण बोलिये सत रज तम । तैा स्वामी सूच्छिम ते क्या बोलिये । सत, रज, तमसे क्या बोलिये । सूच्छिम ते बोलिये अवधू दृष्टि देषै न मुष्ट आवे ॥ सतगुण बोलिये पवन । रजगुण ते बोलिये पाणी । तमगुण ते बोलिये अग्युतामसी अग्नी पंचतत्व पचोस प्रकृति का आदम । एता एक त्रिगुण बोलिये । तैा स्वामी पंचतत्व से क्या बोलिये पचीस प्रकृति ते क्या बोलिये । पंचतत्त्व बोलिये अवधू । पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश । एक एक तत्व संयुक पांच पांच प्रकृति बोलिये ॥

End—वायु का कौण घर कौन द्वार कौण पाहार, कौण व्यवहार। तेज का कौण द्वार कौण पाहार कौण व्यवहार। पाप का कौण घर कौण द्वार कौण पाहार कौण व्यवहार। पृथ्वी का कौण घर कौण द्वार कौण पाहार कौण व्यवहार। तौ अवधू पाकाश का घर ब्रह्मांड, भ्रवणद्वार सुणै सो पाहार उभया बंह व्योहार। वायु का घर नाभी नासिका द्वार वासना पाहार पहं कोध लोभ व्योहार। तेज का घर पोत्ता चक्षुद्वार दृष्टि पाहार प्रीति मोह व्योहार। आप का घर ललाट, इन्द्री द्वार स्त्री पाहार, मैथुन व्योहार। पृथ्वी का घर कलेजा गुदाद्वार खाय सो पाहार लोभ लालच व्योहार। तौ स्वामी पृथ्वी का कौण गुरु, जल का कौण गुरु, तेज का कौण गुरु वायु का कौण गुरु। पाकाश का कौण गुरु। तौ स्वामी पृथ्वी का गुमन देवता। वाचा स्वरूपी॥ पापका चन्द्रमा देवता बुद्धि स्वरूपी, तेज का गुरु सूर्य देवता अग्नि स्वरूपी, वायु का गुरु ईश्वर देवता पनादि स्वरूपी, पाकाश का गुरु गोरष देवता अविगत स्वरूपी। तौ स्वामी पंचतत्व की कथै उत्पत्ति कथै अपंति। तौ अवधू अविगत उत्पना पाकाश, आकाश उत्पना वायु, वायु उत्पना तेज, तेज उत्पना तोयं। तोयं उत्पना मही॥ मही प्रासंति तोयं॥ तोयं प्रासंति तेज, तेज प्रासंति वायु, वायु प्रासंति पाकाश॥ पाकाश प्रासंति अविगत। ये पंचतत्व पचीस प्रकृति भेद बोलिये। निरंजन देवता पाणी का जामण अग्नि की पुट, पवन का धंधा सुरति निरति साधि सुन्य मैं समाया अविगत स्वरूपी॥ इति गोरष गणेश संवादे पठंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्षदायकं योगारंभ सर्वसिद्धा पावागवण निवर्तते उचारं विचारं पापक्षयं जायंति ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मछिन्द्रनाथ की पादुका नमोस्तुते इति गोरष गणेश संवादे योगशास्त्र सम्पूर्ण समाप्तं॥ लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मध्ये पठनार्थ बाबा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष तिथि दस्म्य शनिवासरे संवत् १७९४॥

Subject—इसमें सिद्धान्त संबंधी प्रश्नोत्तर हैं।

No. 331 (o). Mahādeva Gorakha Goshṭī by Sevādāsa of Ḍiḍwānā, Jodhapura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—8 × 5 inches. Lines per page—25. Extent—70 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Śrī Mahantā Ḍiḍwānā Mandira Haridāsaji Rāja Jodhapurā, Post Office Ḍiḍwānā, Rājputāna.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ महादेव गोरषगोष्टी लिख्यते॥ ईश्वरोवाच॥ ॐ अविगत उत्पन्न इच्छा। इच्छा उत्पने पाकाश। पाकाश उत्पते वायु,

वायु उत्पते तेज. तेज उत्पते तोयं, तोयं उत्पते महो, पविगत इच्छा इच्छाते भाकाश, भाकाश नाम स्याम वरण दसवें द्वार वास, दाहिने पैसार, वामे श्रवण निकास, नाद सुनै सो भाहार, दंभ बड़ाई व्योहार राग द्वेष हर्ष शोक मोहादिक ये पांच प्रकृति भाकाश का बोलिए ॥ इन भाकाश मारग जोव भनुसरै तो स्वेत रज खानि भोगवे ॥ भाकास ते वायु नाम नोलवरण नाभिवासा इला पैसार पिंगुला निकास, गंध वासना, भाहार क्रोध व्योहार, गावण धावण चलगण संकोचण, पसारन ये पंच प्रकृति वायु को बोलिए, इन वायु मारग जोव पनुसरै तो भंडरज खानि भोगवे । वायु ते तेज नाम रक्त वरण त्रिकुटी वासा दाहिने नेत्र पैसार बामें निकास दृष्टि देखै सो भाहार मोह व्योहार, क्षुधा तृषा निद्रा भालस कांति ये पंच प्रकृति तेज की बोलिये, इन तेज मारग जोव भनुसरै तो रज खानि भोगवे ।

End—घर भजपा द्वार निःकाम पैसार संतोष निहसार मकरंद भाहार भगम व्योहार इन चित मारग जोव भनुसरै तो स्वरूप मुक्ति भोगवे ॥ परम ध्याने न भहंकार नाम भवरण वरण त्रिपत्री वासा लयवर नृवामोक्ष द्वार भगम पैसार भगोचर निसार भजराहार, भगाध व्योहार इन भहंकार मारग जोव भनुसरै तो सालोक मुक्ति भोगवे।प्राण भंतःकरण नाम भवरण भस्थिति वासा धोरज घर भक्ष द्वारा ज्ञान पैसार विज्ञान निसार भमरा भाहार भबंध व्योहार इन भंतःकरण मारग जोव भनुसरै तो महा मुक्ति भात्मा परमात्मा भवंति जोगेश्वर जीव सीव एक भवंति परम सुन्य भवे स्थिति पारब्रह्म भवे लींनं सत्यं सत्यं च वदाम्यहं तत्व ज्ञान श्री शंभूनाथ भकथ कथितं ॥ सुनो हो गोरख भवधूतं परम जोग संजानि जोगी ईश्वरो कथितं महाज्ञान इति ज्ञान इति ज्ञान इन्द्रादि बोलिए इतिज्ञान पटल द्वितीयोध्याय इति गोरष महादेव संवादं पढंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्ष लाभते जोगारंभ भवे सिद्धा भावागमन निवर्तते पठंते करंते गुणंते कथंते पापे न लिप्यते पुन्येन न हारते ॐ नमो शिवाय ॐ नमो शिवाय गुरु मछिंदनाथ जी का पादुका नमोस्तुते इति श्रीमहादेव गोरष संवादे योगशास्त्रे ग्रंथ संपूर्ण समाप्त । लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जयपुर मध्ये कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे एकादस्याम रविवासरे संवत १७९४ श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 381(*d*). Niranjanapurāṇa by Sewādāsa of Ḍiḍwānā Jodhapur Raj. Substance—Country-made. Leaves—4. Size—9 × 6 inches. Lines per page—44. Extent—176 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Ḍiḍwānā, Raja Jodhapura, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputānā.

Beginning—ॐ ॥ अथ निरंजन पुराण लिख्यते ॥ ॐ गोरष शिष्य विचार सिंगार। वंदितं वंदि ऊंकार शिवशक्ति न सृष्टि विचार। अथंड धुन होता धुंधकार। नाती कुल माई न बाप। स्वयंभू निरंजन आपही आप ॥ वरण न चिन्ह न रुप न रेष। मूरति विहुना अगम अलेष। अर्धे न उर्ध न मद्दे न ग्राम। सर्वत्र विवर्जित अतीत अनुपाम ॥ धरती न गगनं चन्दं न सूरं। बाहिर न भीतर नेरे न दूरं ॥ उत्पति अठै वानी न बाणी। असंष जुगे जुग जोग ध्यानी ॥ ब्रह्मा न विष्णु देवो न महादेव। संभू निरंजन अलष अभेव ॥ भेदा न भेदो दर्शन न भेष अगम अगोचर मूरति एक ॥ अलष क्रिया सुचि नावों न भ्रांति। उत्तम न मध्यम जाते न जाती ॥ वेद न शास्त्र न पुस्तक पुराणं ॥ हिन्दू न कोई मुसलमानं ॥ अनिछे न नोल निरंजन राया। ते सर्व सूक्ष्म सून्य को काया ॥ सुते सुन्य निरंजन राया। सुनि निरालंब होतो निरंजन को काया ॥ काया माया निरालंब होतो। पाप न पुन्य नहीं तहां छोतो ॥ सुन्य से हुआ सर्व स्थूलं। अनाहद धुम रचिले सृष्टि का मूलं ॥

End—बाबा आदम रसूल का भया। एक मसोन दस दरवाजा ॥ तहां चिन्ह तहां अलष पुरुष का वासा ॥ एतो एक दसैाध बाबा को कबूल थो दस औरत एक औरत। दस पुंगड़िये एक पुंगड़ो। दसे पुंगड़ो पुंगड़ा। दसे ग्रामे ग्राम। दसे हस्तो एक हस्तो। दसे घोड़े घोड़ा ॥ दसे बैठे बैल। दसे थैलिये थैली ॥ दसे छेलिये छेली। दसे धुधड़े धुधड़ा ॥ दसे पुदड़े पुदड़ा। दसे रुपइये तै रुपइया। दसे टुकड़े टुकड़ा ॥ दसे मयुरे मयुर। दसे पथड़े पथड़ा ॥ दसे निवाले निवाला ॥ जोगो जतो का नाथ सन्यासो का पंथ। वैश्नव का दर्शन। मुनो की वांनि। दरवेस सोफो को वांनि एते दरसण सुणि मुसलमान षाना षावे तै सुवर षाय ये सुनि हिन्दू षाय तै गऊ का मास षाय ॥ पहिले पूरे पत्र पोछे पूरे कांसा ॥ कांसा का गुरु तिषारण। पत्र का गुरु अलेष रहिमाणा ॥ निरंजन पुराण रहा भरपूर। धर्म न आवे नेड़ा पाप न जावे दूर ॥ सुन्या के दरते पापं वका मोक्ष लाभ ते इति श्री निरंजन पुराण पठंते हरंते पापं श्रुत्वा मोक्षदायकं जोग-रंभ भवे सिद्धा आवागमन निवर्तने ॐ नमःशिवाय ॐ नमोशिवाय श्री शंभूनाथ का पादुका नमोस्तुते इति श्री निरंजन पुराण ग्रंथ सपूर्ण ॥ लिषतं गंगाराम निरंजनो पठनार्थं बाबा रूपदास महंत कार्तिक शुक्लपक्ष एकादस्याम संवत १७२४ वि० श्री श्री श्री श्री श्री ॥

Subject—इस में पृथ्वी और मनुष्यों का बनना और हिन्दू तथा मुसलमानों का अलग अलग बनना बतलाया गया है ॥

No. 381(*e*). Shrishtipurāṇa by Sewadāsa of Ḍiḍwānā Jodhapur Rāja. Substance - Country-made paper. Leaves - 2. Size—10×6 inches. Lines per page—14. Extent—24 Anushṭup

Ślokas. Appearance Old. Character—Nāgarī. Date of Manuscript—Samvat 1794 or A.D. 1737. Place of deposit—Sri Mahanta Ḍiḍwānā Rāja Jodhapura, Post Office Ḍiḍwānā, Rajputana.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सृष्टि पुराण लिष्यते ॥ ॐ एक उपरांति लेषा नाहीं । दोय पाये सृष्टि नाहीं । गुरु पाये ज्ञान नाहीं । काया उपरांति क्षेत्र नाहीं । आत्मा उपरांति देवता नाहीं ॥ सिद्धि उपरांत ब्रह्म नाहीं । माया पाये परचा नाहीं ॥ शील उपरांति व्रत नाही । चक्षु उपरांति दृष्टि नाहीं । निर्भय उपरांति अभय नाहीं । संयम उपरांति सुचि नाहीं । संतोष उपरांति सुष नाहीं । अमर उपरांति सिद्धि नाहीं अभय उपरांति करामात नाहीं । माता उपरांति जन्म नाहीं ॥ गर्भ उपरांति नरक नाहीं । बलंत उपरांति हानि नाहीं । चित्त चंचल उपरांति रोग नाहीं । तृष्णा उपरांति मृत्यु नाहीं ॥ काल उपरांति वैरी नाहीं ॥ नासिका उपरांति रूप नाहीं । दया उपरांति धर्म नाहीं ॥ ध्यान उपरांति ग्रंथ नाही ॥ चंदन उपरांति काष्ट नाहीं ॥

End—वैकुंठ उपरांति धर्म नाहीं । चन्द्रमा उपरांति शीतल नाहीं । सूरज उपरांति तप्त नाहीं । काया उपरांति रतन नाहीं ॥ सांच उपरांति शास्त्र नाहीं । बुद्धि उपरांत व्याकरण नाहीं ॥ स्वासा उपरांति वेद नाहीं ॥ पराधीन उपरांति बंधि नाहीं ॥ स्वाधीन उपरांति मुक्ति नाहीं ॥ चाह उपरांति पाप नाहीं । अचाह उपरांत पुन्य नाहीं । कर्म उपरांति मैल नाहीं दोष उपरांति कुबुद्धि नाहीं ॥ निर्दोष उपरांति सुबुद्धि नाहीं । सृष्टि उपरांति पोष नाहीं । अजपा उपरांति जाप नाहीं । अघोर उपरांति मंत्र नाहीं नारायण उपरांति इष्ट नाहीं ॥ निरंजन उपरांति ध्यान नाही ॥ इति सृष्टि पुराण ग्रंथ समाप्तम लिषतं गंगाराम निरंजनी वैष्णव जैपुर मद्धे श्री बावा रूपदास के पठनार्थे माघ वदी त्रयोदशी संवत १७९४ भैामवासरे इति श्री श्री श्री श्री श्री ॥

No. 382. Karuṇa Viraha by Sevādāsa Pāṇḍay of Ajodhya. Substance—Country-made paper. Leaves—75. Size—8 × 4 inches. Lines per page—28. Extent—1,075 Anuṣṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1822 or A.D. 1765. Date of Manuscript—Samvat 1889 or A.D. 1832. Place of deposit—Paṇḍita Baldeo Prasāda Awasthi, Village Bannuwāpara, Post Office Jaitapur Bāzār, District Bahraich (Oudh).

No. 383. Bāgavilāsa by Sewaka Rāma of Aswani. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size 8×6 inches. Lines per page—36. Extent—1,890 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1921 or 1864 A. D. Place of deposit—Ṭhākura Anirudha Siṃha, Assistant Manager, Nilgāma, Post Office Nilagāma, District Sitāpura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बाग विलास लिष्यते ॥ दो० ॥ गजमुष सुरसुति गुरु चरन प्रफुल्लित कमल मनाय । रस स्वरूप रंग देवता भेद कहत सुष पाय ॥ अथ रस स्वरूप कथनम् ॥ सवैया ॥ थाई के कारन कारज श्रौ सहकारी जिते कवि सेवक गावैं । ते हिय भावै बिभावित श्रौ अनुभावित श्रौ वभिचार करावै ॥ नाट्य श्रौ काव्य मैं ताते बिभाव अनुभाव संचारिहू नाम को पावै ॥ व्यक्त है सो इनसो सुष रूप भये परिपूरन सो रस गावै ॥ अस्थायी वार्ता ॥ मम पितुः काव्य प्रभाकरे लोक में रत्यादि के कारन जो श्री चंद्रोद्यादि है श्रौ कार्य (यह सवैया) काव्य प्रकाश के चतुर्थोल्लास के इन श्लोकों के भावार्थ प्रबंध जान पड़ता है कारणान्यथा कार्याणि सहकारिणी यानि च इत्यादिः स्थायिनो लोके तानियन्नाट्य काव्ययो ।

End—प्रलाप यथा ॥ करिन सो पूछै कबौ हरिन सो पूछैं राम केहरिन पूछिवे को प्रीति परसी गई । भ्रमन सो पूछैं कबौ मृगन सो पूंछै आय तटनी तरंगिनि तिहारी तरसी गई ॥ कंजन की मालन मरालन सो पूछै दई व्यालन कें सेवक बिलोकि हरि सी गई ॥ बैरभाव तजि कै दबाय दुष पाय घाय दोजिये बताय सिव हाय हरि सी गई ॥ पुनर्यथा ॥ पीतम को जैबो याके तायन तैबो हतै भेवन को पैबो बन कूकै कंठ मोलैरो । भई तन पीन परैं सेज पै लपीन दीन जल सो बिहीन जैसे मीन परसोलैरो ॥ वेदन को सेवक निवेदन करैं को दई होत हिय भेदन बिलोकि अंग डोलैरो ॥ मूदे नैन मोहनी कहत राधे राधे आधे बोलै मृदु बोलै स्याम सांवरे छबीलैरो ॥ अथ व्याधि लक्षन ॥ जहं पिय के मन मिलन ते करैं काम अति छीन । तासो व्याधि बषानही विरह बिकल अति दीन ॥ यथा ॥ भरती रहै है पुनि ढरती निसाहू ओस परती न भेदु छुटि सिंधु मैं परी मनो । उर धरियार मैं सुरति मोगरो की मारि काम वरियार दार करनि धरी मनो ॥ आह की अवाज निकरैरो न परैरी बाज सेवक जु राधे लागं डरनि डरी मनो । हेरे सब तंत्र कोऊ लागत न मंत्र भई आंदे परतंत्र जलजंत्र को घरी मनो ॥ इति श्री बाग विलासे सेवक राम असनी निवासी विरचिते नायका

भेदादि वर्णन समाप्तम् ॥ संवत १९२१ आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाम भृगुवासरे ॥

Subject—इस ग्रंथ में नायिका नायक भेद एवं श्रृंगार रस का वर्णन है।

No. 384. Śantipurana by Sevārāma of Dewagarah. Substance—Country-made paper. Leaves—568. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—7,952 Anushṭup Ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1834 or A. D. 1777. Date of manuscript—Saṃvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Jaina Mandira (Bāra), Bārā Bankī (Oudh).

Beginning—श्री वीतरागदेवानमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः ॥ श्री गुरुभ्यो-नमः ॥ अथ शान्तिपुराण भाषा, सेवाराम कृत लिख्यते ॥ प्रणम्य परमानंदान ॥ देव सिद्धान्त सद्गुरुन ॥ शान्तिनाथ पुराणस्य ॥ भाषा सहित नौम्यहं ॥ १ ॥ दोहा ॥ नमोभ्रांति जग शांति कृत ॥ परम शान्ति दातार ॥ कर्म समूह विनाश हर ॥ भरन संपदा भार ॥ २ ॥ जो षोडस मो तीर्थपति ॥ अमर निकर परनाय ॥ त्रिभुवन भयहर प्रथित पद ॥ भये जलधि जललाय ॥ ३ ॥ फुनि पंचम निधिपति भयो ॥ प्रगत वचन रतिवान ॥ हय षष्टम रति पति भयो ॥ लसो सुधोदधि थान ॥ ४ ॥ तास शान्ति जग भ्रान्तिहर ॥ नमो शान्ति पद दोय सकल ललित नच्छिन कलित ॥ मंगल कारक होय ॥ ५ ॥ नमो वृषभ पद वृषभ के ॥ वृषभा ग्रक्षन वान ॥ वृषपति वृष द ता जगत ॥ वृषभ तीर्थ वृषभान ॥ ६ ॥ वृषभेश्वर वृष विस्तरो ॥ शिवसुख करन महंत ॥ वचन किरन तम छेदि तसु ॥ वंदों दिव तिय कंत ॥ ७ ॥

End—नमोदेव अरिहंत सर्व तत्वारथ भासी। नमो सिद्धि अविकार ज्ञान मूरति अविनासी ॥ नमो सूर उवझाय साधुनि ग्रंथनि मो सिर। येई पद वर पंच नमत भागी अघ को गिरि ॥ वंदौं जिनेस भाषत वचन धर्म दड़ावन सर्वदा। ये परम सार तिहुंलोक में करो क्षेम मंगल सदा ॥ ९१ ॥ दोहरा ॥ पंच मास कछु सरस से, लगे रचत अधिकार। मतिथोरी थिरता अलप, ताते लघो अवार ॥ ९२ ॥ काव्य—लोकालोक विलोक स्वच्छ नयने सादर्श निर्मलं ॥ जस्य ध्यान अनंत ता प्रविद्यात्सर्वात्मनां बोधकां ॥ वच्छकिंविधिवक्षयेन विमला विश्वस्य श्रोहारनो ॥ यत्र सैाख्यं विमता मयॅसि जिनयो सांति प्रशांतिः क्रयात् ॥ ९३ ॥ (दोहरा पढ़ें सुनै या ग्रंथ को ते पावें सुखठाम। सुख सों कियत भव वन विषें। फेरि गये शिवधाम ॥ ९४ ॥ जिनवर धर्म प्रभाव सों परम विस्तरो ग्रंथ। ता सेवन

पैये सदा नाक मोष को पंथ ॥ ९५ ॥ इति श्री शांति पुराणाचार्य्य श्री सकल कीर्ति विरचितां भाषा विचिंतात् लघु कवि सेवारामेनें तस्यां जिन ग्यानोत्पत्ति धर्मोपदेश विहार समय निर्वान गमन निरुपन नाम पंचदशमोधिकारः ॥ १५ ॥ इति श्री शांतिनाथ पुराण भाषा संपूर्ण ॥ समाप्तं ॥

Subject—(१) पृ० १—४४ तक—मंगलाचरण तथा वंदनादि सहित ग्रंथ निर्माण हेतु इत्यादि का वर्णन। ग्रंथ निर्माण में सहायता करने वाले का कथनः—मित्र खुस्याल सहित मनलाय। शांति पुरान रच्यो सुखदाय॥ वक्ता तथा श्रोताओं के गुण वर्णन। कथा लक्षण, सुकथा और कुकथा निर्णय। स्वयं-प्रभा विवाह वर्णनोभिधान ॥ (२) पृ० ४५—७० तक—अलनजटी प्रजापति अर्ककीर्ति निर्वाण। अमित तेज राज विजै विघ्न विनाश वर्णन। (३) पृ० ७१-९० तक—अमित तेज सम्यक्त ग्रहण करण वर्णन। (४) ९१—११२ तक—श्री सेन इत्यादि भवों का वर्णन। (५) पृ० ११३—१३७—अचिचल देव, बलभद्र नारायण तथा नारद का वर्णन। (६) पृ० १३८—१६८ तक—अनन्तवीर्य का स्वम्र (नरक) गमन तथा उसको बल से इन्द्र-पद प्राप्त होना। (७) १६८—१९८ तक अनन्तवीर्य सम्यक्त लाभ तथा वज्रायुधचक्र-पद भव प्राप्ति वर्णन। (८) पृ० १९९—२३१ तक—वज्रायुध, सहस्रायुध तथा अहमिन्द्र पद-प्राप्ति वर्णन। (९) पृ० २३२—२६७ तक—मेघरथ का वर्णन। घनरथ के विरक्त होने तथा मेघरथ के राज्य-भोग का वर्णन। (१०) पृ० २६८—३०२ तक—मेघरथ वैराग्योत्पत्ति तथा दीक्षा ग्रहण वर्णन, मेघनाथ सुत राज्य ग्रहण वर्णन। दृढ़रथ तथा अन्य सात सौ नृपतियों के साथ मेघरथ का जिन मत साधन करना। (११) पृ० ३०३—३६८ तक—अपने भ्राता दृढ़रथ सहित मेघरथ का घोर तप साधन करना, जप, तप, तथा अनशनादि व्रत धारण करना। जिन शांति-गर्भावतारा-भिधान वर्णन। (१२) पृ० ३६९—४२६ तक—रानी का सोलह स्वप्नों का देखना और राजा से उन स्वप्नों के फलों के संबंध में प्रार्थना करना। राजा का फल कथन करना, और उन सोरहों स्वप्नों के फल स्वरुप उनके गर्भ से तीर्थंकरोत्पत्ति तथा उनके महत्वों का कथन। तीर्थंकर शांतिनाथ का गर्भ से जन्म लेना और देवादि द्वारा उत्सव मनाया जाना। (१३) ४२७—४६० तक—श्री शांतिनाथ जन्माभिषेक तथा राज्य लक्ष्मी और उनको कीर्ति का वर्णन, उनके सात चैतन्य और सात अचैतन्य रत्नों का वर्णन, उनके सम्मुख नाटकादि द्वारा मनोरंजक कार्यों का होना। (१४) पृ० ४६१—५१२ तक—जिन दीक्षा निष्क्रमेण कल्याण वर्णन। हस्ती घोड़ा इत्यादि सांसारिक वस्तुओं के मिथ्यात्व का विस्तृत वर्णन। सोलह वर्ष तक शांति जिननाथ का छद्म मस्तक रहना। पुनः सविकार घातक कर्मों का घात करना। शांतिनाथ को कैवल्य—ज्ञान होना।

(२५) पृ० ५२३—५६८ तक—जिन ज्ञानोत्पत्ति, धर्मोपदेश विहार समय निर्वाण गमन निरुपण, जिनके पिछले भवों का अति सूक्ष्म वर्णन। ग्रंथ समाप्ति, कवि दैन्य वर्णन। ग्रंथ निर्माण हेतु :—

पूरव चरित विलोकिकैं, हम कवि बुद्ध सयान।
भाषा ग्रंथ प्रबंध यह, रच्यो अनंदित वान॥

× × × ×

मो आनंद अपार धरि, तजि कलमल अधिकाहि।
भाषा रच्यो प्रमोद धन, रसहरंग मन नाहि॥

ग्रंथकार का परिचय—देश महा मालव सुभग, काठल सहित सुढार। तामै नगर नरेश जुत, 'देव—दुर्ग'-अधिकार॥ मल्लनाथ मंदिर विषै, रच्यौ पुरान महान। अति प्रमोद रस रीति सों, धर्म बुद्धि उर आन॥ वासी जयपुर तनो, तो हर मल्ल कृपाल, ता प्रसंग को पाय के नह्यो सुपंथ विशाल॥ गोमट सारादिकन मै, सिद्धांत नमै सार। अक्षरबोध जिनके उदै, महाकवो निरधार॥

× × × × × ×

देश दुराहर आदि दै, संबोधे बहु देश। रचि रचि ग्रंथ कठिन किये, तो हर मल्ल महेश॥ तिनहो के उपदेश लहि, सेवाराम सयान, रच्यो ग्रंथ सुख पाय के, हर्ष हर्ष अधिकान।

ग्रंथ निर्माणकाल:—संवत अष्टादक शतक, पुनि चैावीस महान। सावन कृष्ण वराष्टमी, पूरो कियो पुरान॥

स्थान—अति अपार सुख सों बसै, नगर 'देवगढ़' सार। श्रावक बसै महा-धनी, दान पूज्य मतिधार॥

नृपति वर्णन :—ता नगरी में भूपती, सूरवीर धीमेष।
करी राज्यपुर पुन्य सो, सावंत सिंह नरेस॥

ता सावंत नर राव के, द्वै श्रावक मुखत्यार। इक राघव रघुनाथ पुनि धर्म धुरंधर सार॥

No. 385(a). Sewāsakhī kī Bānī by Sevāsakhī of Vrindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—6½ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—349 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1825 or A. D. 1768 Place of deposit—Paṇḍita Rāma Bali Dubay. Village Bhiṭaurā Lakhan, Post Office Jaidpur, district Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री राधावल्लभो जयति ॥ श्रो अथ वैराग्युद्दीपन लिख्यते ॥ (चौ) करि सत संगति चाह मन सकल कपट तजि मोह ॥ श्री राधावल्लभ नाम रटि सखी भाव पति छोह ॥ १ ॥ अचह चाह हरि भक्ति बिनु जानो दुख को रूप॥ सेवा सखि हरि आसरे होउ सुख परम अनूप ॥ २ ॥ मन को सब मन मैं परे बुधि के बहुत बिचार। चित्त वासना पिय मिले सेवा सखि निरधार ॥ मनपरीक्षा ॥ अति दुर्लभ सुलभ भयो मानुस देही पाय ॥ भजले राधावल्लभहिं जन्म जो बीतो जाइ ॥ १ ॥ बाल कुमार पत्र गंडा किसोर जुवा जवा को देह ॥ सेवा सखि दुख सुख भोग है अंत खेह को खेह ॥ कर्मज्ञान इन्द्री दसौ मिले देह को नाम ॥ इन्हैं भिन्न के देखिये नहिं नामो को नाम ॥ २ ॥ मन बुधि चित अहंकार जो जीव को इन्द्री होइ ॥ इन्हैं भिन्न कै जानिये जीव नाम नहिं कोय ॥ ३ ॥ गुरु दीपिका—सर्व परे गुरु जानिये गुरु पर और न कोइ ॥ सब मिलि गुरु को नमत हैं गुरु नाम अस होइ ॥ गुरु गोविंद नारायन गुरु हरि मम कृष्ण गुरु कीन्ह ॥ गुरु के सद आधीन मन गुरु चरणन्ह चित लीन्ह ॥ २ ॥ नाम अनंत नामी अनंत दह भवसिंधु अपार ॥ बिनु गुरु बूड़े भव धार मैं गुरु गति उतरे पार ॥ ३ ॥

End—अरील सोरठा रुन्द दोहरा मंगल छन्द विश्राम । महामंगल परिचय लिख्यते ॥ सेवा सखि सहजानंद के लखि सहज अंग विहान ॥ सहजानंद मम अनुरूपन यह अरिल है ॥ होय जाग्रत सखियाइ सुनि के जो ग्रहे ॥ सत गुरु के उपदेस तारतम मानिये ॥ अलो हाँ हाँ सेवा सखि सहजानंद के सहजा ही जानिये ॥ राग गौरी ॥ अरीरी मुरली बजाइ हरो मन मोहन गृह आगमन सुहाइ ॥ बन सुनत सुधि भई हे कंत की छूटी जग चतुराई ॥ छूटी लोकलाज कानिकुल तन पट तजि उठि धाई ॥ प्रेम मगन सेवा सखि बिरहनि जिन पिय को सुधि पाई ॥ १ ॥ राधाकृष्ण राधाकृष्ण कुंज बिहारी गोपीनाथ गोपाल मोहन बनमाली ॥ मुरलीधर पीतांबर धारी ॥ त्रिभंगी मूरति आनंदकारी मोरमुकुट कुंडल छवि भारी ॥ चितवन में मोही बृजनारी ॥ नंदनंदन वृषभान दुलारी ॥ जुगल किशोरी पर सेवा सखी वारी ॥ २ ॥

Subject—(१) पृ० १—१४ तक—वैराग्योद्दीपन ॥ सतसंग और सखिभाव की भक्ति का आदेश । नाम प्रताप । शरीर के पंच तत्त्वादि से बनने का वर्णन । इन्द्रियों का वर्णन । ईश्वर द्वारा गर्भ में रक्षा होने का वर्णन । सेवा तथा भक्ति की महिमा । प्रीतम के अनुराग वर्णन । अभिमान त्याग कर ईश्वर भक्ति करने का आदेश । माया का वर्णन । जीव ईश्वर संबंध वर्णन । अहंकारादि रागों का वर्णन । नाम रटने का आदेश ।

(२) पृ० १५—२२ तक—मनकी परीक्षा । सुखादि अवस्थाएं । मन, बुद्धि चित अहंकारादि को वृथा बता कर भगवत भजन का उपदेश । मन की प्रबलता

का वर्णन। मन को स्थिर करने के नियम। सेवा में मन को देने का लाभ। मन देने के कारण हरिण की दशा। प्रिय की आज्ञा मानने का आदेश।

(३) पृ० २२—३२ तक—गुरु दीपिका—गुरु करने का लाभ; गुरुज्ञान की प्रधानता। नित्य, अनित्य, निमित्त और गुरु की एकता। गुरु के लक्षण, गुरु के सात स्वाभाव, शिष्य के लक्षण, गली गली फिरने वाले गुरुओं की बुराई॥

(४) पृ० ३४—४२ तक—प्रकरण—एक ब्रह्म का वर्णन। सहजानंद का ही ब्रह्म-कथन; ठकुरानी के आनंद रूप होने का वर्णन। सहजानंद की परिभाषा, माया तथा ब्रह्म का रूप, प्रिय प्यारी द्वारा ही उद्धार होने के कारण सखी भाव की महत्ता का वर्णन। अंग अंगी संनाप्रिय की भक्ति।

(५) पृ० ४३—४५ तक—दूसरा प्रकरण—जाग्रत चौन्हने का वर्णन, कार्य्य कारण तथा कर्त्ता का वर्णन। वाम दाहिने अंग का वर्णन। सखी सेवा का महत्त्व।

(६) पृ० ४६—५८ तक—महामंगल परिचय—सहजानंद के अंगों का वर्णन। सहजानंद की शक्ति, दाहिने तथा वामे अंग का (प्रिय, प्यारी) का वर्णन। राधा के अंगों की सेवा करने वाली सखियों की महत्ता। ईश्वर के सब में होने का वर्णन। रास इत्यादि का वर्णन। बायें तथा दाहिने अंग की सखियों का प्रभाव। कृष्ण के रूप में सखी का मिल जाना; सेवा की बड़ाई॥

(७) पृ० ५९—७१ तक—दाहिने बायें अंगों से सृष्टि का उत्पन्न होना। साढ़े तीन कोटि सखियों तथा उनकी ही उनको सहचरियों सहित हास-विलास तथा लीलादि का वर्णन। हित हरवंस जी को उसका परिचय होना। (गद्य में)।

(८) पृ० ७१—८४ तक—मंगल आरती—सब मंगल पदार्थों के साथ ही साथ कृष्ण की आरती कृष्ण की मूर्ति इत्यादि का वर्णन करके उनपर अपनी भक्ति प्रदर्शित करना। ग्रंथ समाप्ति।

No. 385(*b*). Vivekasāra Surata by Sewāsakhī of Vrindābana. Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8¾ × 4¾ inches. Lines per page—10. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—अथ विवेक सार सुरत लिख्यते॥ दोहा॥ श्री गुरु ब्रजन सुंदर वर वंदौं इनके पांइ। जिह मोहि दीन्हौं धर्म वैष्णव की भक्ति दृढ़ाइ॥ १॥ सर्व सिरोमनि भक्ति धर्म है इन समान नहिं आन। इनको महिमा को कहैं जाके

वसि भगवान ॥ २ ॥ सर्व परे भगवान ते इन पर और न कोइ। कार एक अनेक विधि लीला ताको होय ॥ ३ ॥ कथा कथान्तर कल्पान्तर मैं चित्त ते वस्तु विचार। सर्वान्ते ते जानिये आसो सर्व विस्तार ॥ ४ ॥

End—सेवासखी अगायऊ आगे नयना होय। पछे मूल स्वरूप को जानु आगनो होय ॥ बिनु जाने चैारासी माही। भूलो सखी खेलते ताहीं ॥ चैारासी माया खेल मैं खेलत सखि जिय संग। लीला शक्ति पेलावही सो सुरति मन के रंग ॥ सो मन सब सखि आपन होई। माया खेल खेलारो जोई ॥ जब लगि हम नहि सुरति आना। दुख मैं खेलत सुख के माना ॥ दुख सुख को यह खेल है देखा खेल बनाय। आगो नयना नींद गइ मिलि सुरति सेवा सखि पाय ॥ इति विवेक सार सुरति संपुरनम् ॥

Subject—गुरु बंदना, धर्म महिमा, सृष्टि उत्पत्ति—पृ० १—३
राधा महिमा पृ० ३—४।
ब्याह बर्नन राधा कृष्ण का पृ० ५—९।
लीला माहात्म्य—पृ० १०। इति।

No. 386. Sidhadāsa jī kī Śabdāvali by Sidhadāsa of Haragāma. Substance—Country-made paper. Leaves—114. Size—9 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Saṃvat 1800 or A. D. 1743. Place of deposit—Mahanta Gurūprasādajī, Haragāma, Post Office Parabatapur (Sultanpur).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ साषो ॥ श्री जगजीवन जक्त गुर दूलन दानि उदार सगुन सरब हित जानि सुभ सिद्धा नाम अधार ॥१॥ नयन के भीतर बैन है मयन कोटि छवि जासु ॥ तासु चरन तर मन बस्यो सिद्धा निरषि हुलास ॥ २ ॥ नाम बैन है राम को दीप संत करि जाना। ताहि नयन बिच रैनि दिन करि सिद्धाम निधाना ॥ ३ ॥ बजै रैन दिन बासुरी धरै कदम तर ध्यान ॥ सिद्धा ताको का करै करम कोट परमान ॥ ४ ॥ सिद्धा भव जल अक सर तामैं माया जार ॥ मीन जीव सब जानि कै पेलत काल सिकार ॥ ५ ॥ नाम भजन ते जीव वह जल सरुप होइ जाइ। जाल बीच आवै नहीं काल देषि पछिताहि ॥ ६ ॥

End—सिद्धा यहि संसार मैं कंत निरषि पहचानि ॥ रहै निरंतर पास ही अपने मन दृढ़ जान ॥ सिद्धानाम जिकिर ते चौंसठि घड़ो बिताउ। कंत दरस की लालसा छिन छिन बाउब ठांउ ॥ बिरह सत्य यह पोथी पहर अयनपुर कौन।

सिक्षा विवहि पहिचानि मित्र चरनन तर सिर दीन ॥ अष्टादस सै समै दस बारह मास पुनीत ॥ सिक्षा देरत आयु मै परे पठ पावत मीत ॥ इति विरह सत सम्पूर्णम् ॥

Subject—पृ० १—२५ तक—साखी—दोहों द्वारा शिक्षाएं ।
(२) पृ० २६—९४ तक—शब्दावली—नाम की महिमा का ज्ञान ।
(३) पृ० ९५—११४ तक—शब्द साखी—कवित्त सवैयों द्वारा हरिनाम का उपदेश । विरह, सत-गुरु ज्ञानादि कई विषयों का रूपकों द्वारा मनोहर वर्णन ।

No. 387. Ānanda Rasa by Śīlamaṇi. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—6 × 3½ inches. Lines per page—14. Extent—256 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1949 or A. D. 1892. Place of deposit—Bhaiyā Jadunātha Simha ji Ṭhākura, Raisa, Rehuā, Post Office Baurī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सरसत बरसत रंगवर रामनाम सुख कंद शीलमनी जन जान है युगुल वरन युग चंद ॥ १ ॥ रामनाम रस रूप हैं रस बरनत बरवेद भावभेद रसभेद बहु नामी नाम अभेद । २ वत्सल सख्य शिंगार रस दास्य शांतमय नाम शीलमनी हिंद मैं बसौं राजिव लोचन राम ॥ ३ ॥ रामनाम वर वरन पर परमतत्व नर रूप रधा मूरति माधुर्यमय ईश ईश के भूप ॥ ४ ॥ रामनाम ही होत हैं सब अवतार सुरेश शीलमनी परतत्व छवि मनत मुनीश महेश ॥ सरल सुखद वर वरन युग विशद्र शील विशाल महिमा व्यापक सकल जग जन जीवन रघुलाल ॥ मधुर मनोहर सुधा से गौहर गहु उदार । अशल सुतारक ताल भव अद्भुत अगम अपार ॥

End—रसमय मूरति रामसीय की हिय मैं राजत मोरे हैं । जीवन प्राण किशोर अनूठे मीठे श्याम सुगोरे हैं ॥ प्रतिसै रूप अनूप मोहनी अंग अंग रस बोरे हैं । शीलमनी मन हरन विलोकनि अरुनारे हग कोरे हैं ॥ हरित अरुण रंग सुख सुधा कर राग सरूप सदाई हैं । परनै प्रीति प्रतीति प्रेम रति अति विश्वास सनाई हैं ॥ निश्चय ज्ञान सनेह लगा वपु चतुराई मधुराई हैं । शीलमनी रस सख्य रसीलो राम रंगीलो पाई हैं । हास्य भयानक करुना अद्भुत वीर विभत्स रुद्रा हैं रस सिंगार सख्य रस वत्सल सांत दास कर मुद्रा हैं । श्याह अरुन रंग सोन सेत रंग चित्र शील मति फुंद्रा है ॥ इति श्री शीलमनी कृत आनंद रस सम्पूर्ण ॥ दोहा ॥ मार्गसीर्ष तिथि तीनि दश शुक्र पक्ष भृगुवार वत्सर तान पुनि गोक्ष कहि आठ गुणवली अपार ॥ लेषक जानकी शरण संवत १९४९ ॥

Subject—रामनाम की महिमा ग्रैार भक्त का प्रेम।

No. 388. Vivekasāra by Śitaladāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—8½ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—200 Anushṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1903 or A. D. 1946. Date of manuscript—Samvat 1908 or A. D. 1851. Place of deposit—Paṇḍita Rāmānanda ji Miśra, village Hinangaurā, Post Office Kādipur District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरु गणपति शारदा कपति सिव हनुमान ॥ जन सीतल सुमिरन करै देहु सुमति सतज्ञान ॥ १ श्री गुरुचरण सरोज रज हिय धरि पर उपकार ॥ विवेक सार बर्नन करै सीतल तत्व विचार ॥ २ ॥ तत्व विचार विवेक जुत वेद सास्त्र मतसार ॥ ग्रंथन नाना भांति ते जथा सुमति अनुसार ॥ ३ ॥ गुरु शिष्य संवाद बरनत विविध प्रकार ॥ अर्जुन ऊधौं सों कह्यो कृष्ण यही निरधार ॥ ॥ ४ ॥ गुरु सों पूछत शिष्य यह कह्यो विवेक जो सार। सो विवेक काको कहो कहो नाथ विस्तार ॥ ५ ॥ गुरुवाच हंस विवेको एक मति छीर नोर करैं न्यार ॥ नै वेकार पानो तजे छीर ढढउ सोइ सार ॥ ६ ॥ काम क्रोध मद लोभ रज तम तृष्णा अहंकार ॥ मत्सर नै तजि संत सो पानी आनि विकार ॥ × × × × ×

End—दयासिंधु दाया प्रभु दीनबंधु सुपरास तासु दास सीतल मनै सदा चरन कि आस ॥ ९७ ॥ सीतल अपरंपार गति वेद न पावत पार। निज मति सम बरनन कहो नाम विवेक है सार ॥ ९८ ॥ यहि नहिं दीजै धूर्त को अरु निंदक अभिमानि। राम अभिलाषो संत जाति नहि देव हित जानि ॥ ९९ ॥ संवत वोनइस से अधिक तीनि पोष बुधवार। असित सतमो कीन तव विवेकसार बिसतार ॥ १०० ॥ इति श्री सीतलस्य विरचितायां विवेकसार संपूर्ण संवत १९०८ वोलि को वाकजने भेद असव मह होई मरइ पोली कै बोले क बोली जनोह वल मीलि उइ वोले ते सुजन जन मोले तोनो बोले तब काइ धरक अदमी मोले मटइ दवाइ कै चारि बोली वोले तब जानी की कोइ क मरन भ अपन धरार कहंद देषो लेई ॥

Subject—(१) १—४ तक—विवेकसार कथन।

(२) पृ० ५—५ तक—नवधा भक्ति।

(३) पृ० ६—१४ तक—ब्रह्म, माया तथा जीव के भेद। रामनाम महिमा का कथन, जीव अवस्था विचार। वेदांक चार फल ग्रैार उनको क्रिया।

(४) पृ० १५—२० तक—वेद का रूपक, द्वादश यम वर्णन । नेम वर्णन । तितिक्षा, यज्ञ तथा जप तपादि लक्षण ।

(५) पृ० २१—२२ तक-इन्द्रिय वर्णन ।

(६) पृ० २३—३० तक—पंचतत्व, पंच प्रकृति, पंच वायु इत्यादि वर्णन के पश्चात् रामनाम महिमा ।

No. 389. Dillagana Chikitsā by Sītārāma. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—40. Extent—1080. Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1846 or A. D. 1789. Place of deposit—Paṇḍita Martaṇḍa Datta, Vaidya, Rāe Bareli.

Beginning—पृ० ३ से प्रारम्भ । अथ नाड़ी-परीक्षा । सुंदर हाथ कवल दल नैनी मुलंगुष्ठ सुहाई । नाड़ो का घर तुहैं बताऊं जानत पंडित राई ॥ पहिलें पित्त समुझिये बाला काक गती अलबेली । टीका मोर की छोन लई है मृग गति पाय नबेली ॥ दूजे कफ की चाल कबूतर ठुमुक ठुमुक पग धरने ॥ है सिंगार निपुण सुनि प्यारी कविता ज्यांकर बरने ॥ बाय तीसरी पलकवान औार बांकी भवें कमानें गति नागिन की प्रीति भामिनी बैद्य शिरोमणि जाने ॥ कबहुं मंद चले क्रम नाड़ी कबहुं बेग जुहाई ॥ द्वंद्ज दोष कंवल दल नैनी ताकी बिथा बताई ॥ चाल चलै तीतर की अथवा लवा बटेर सयानी । सन्निपात त्रिदोष है ताको आई काल निसानी ॥

End—ये नाजुक तन प्यारी तुमने कहो कहां ते पाई । देख मधुरता अधरन को सों अमृत गयो छिपाई ॥ रत्नज्योति को छानि नीर में डारे अग्नि धोटावे । चार सेर जल छानि भामिनी षट पल तेल मिलावे । तेल बराबर सुघर कायफल पीस लाव सुभ नैनी । धरें अगनि में तेल रह आवै छाने सुन सुख दैनी ॥ करके फाहा × × सो तेल का कुच ऊपर जो परसे । नीबूवत दिल्लगन पियारी कुच कठोर सी दरसे ॥ ३८ ॥ इति श्री दिल्लगन चिकित्सायां हटी सिंह सुत सीताराम विरचितायां त्रयोदशो शृंगारः १३ पुस्तक लिखी छेमराज पठनार्थं संमत १८४६ आगरे मध्ये सुभं भूयात इति ॥

Subject—नाड़ी परीक्षा, पित्त, कफ, वायु जुराज, पित्त निदान, उपचार, कफ वायु उपचार, साध्य असाध्य लक्षण, मूत्र परीक्षा, प्रथम शृंगार समाप्त । पित्तज्वर प्रतीकार, वातज्वर, वातपित्त, पित्तश्लेष्मज्वर चिकित्सा, मूलज्वर, स्वेदज्वर, विषमज्वर चि०, ज्वरांकुश रस, त्रिदोष भंजन, द्वितीय

शृंगार समाप्त। कर्णशूल चि०, सन्निपात उसके भेद, संध्यक, पंतक, रुग्दाहक, चित्तभ्रम, शीतांग, तंद्रिक, कर्णक, भग्ननेत्र, रक्तष्टी, प्रलाप, जिह्वक, अभिन्यास, सन्निपात की चिकित्सा, तृतीयो शृंगार स०, अतीसार चिकित्सा, वातअतीसार, पित्त अतीसार, श्लेष्म अतीसार चिकित्सा, वृद्ध गंगाधर चूर्ण, लेप अतीसार, दाड़िमाष्टक चूर्ण, गुड़न्यावलेह, अरसरोग। चतुर्थ शृंगार समाप्त, अजीर्ण विशूचिका चि०, विलंबिकायां चि०, कृमि चि०, हलीमक पांडु कमालिया पांड रोग चि०, रक्तपित्त चि०, पेठा पाक विधि राज छई चि०—पंचमा शृंगार। कास स्वास चि०, हिक्का प्रतीकार, स्वरभेद चि०, अरुचि चिकित्सा, छई चि०, तृषा चि०—षष्टो शृंगार। मदम उपचार, चरण बिवाई, दाह चि०, उन्माद चि०, वात-व्याधि चि०, वातारी तेल, पक्षाघात चि०, सतमो शृंगार। वातरक्त चि०, अग्निवायु चिकित्सा, आमवात चि०, सूच चि०, अष्टमो शृंगार। वमन करन, जुलाब विधि, पेट अफारा चि०, गुल्म चि०, हृद्रोग चि०, मूत्र कृच्छ चि०, मूत्रघात चि०, मूत्ररोध प्रतीकार, पथरी चि०, प्रमेह चि०, पांडु रोग चि०, कंठमाला चि०, स्लोपद कंडु, अणैला सोथ चि०, भगंदर चि०, मंद बुद्धि चि०, शीत प्रसूत चि०, दशमो शृंगार। जलोदर चि०, कुष्ट चि०, श्वेत कुष्ट चि०, क्षय रोग चि०, अम्लपित्त चि०, दाद चि०, खाज चि०, एकादश शृंगार। क्षुद्ररोग चि०, कंठ रोग चि०, मुख दुर्गंध चि०, दंत रोग चि०, स्याह मिस्सी, अरुण मिस्सी को विधि, दाद चिकित्सा, अधर चि०, कर्ण प्रतीकार, परवाल चि०, अंजन हारी चि०, बांझ वह्नो को चि०, शिरोवर्त्त चि०, द्वादशो शृंगार। स्त्री चि०, प्रदर रोग चि०, भगशूल चि०, भग संकोचन विधि, गर्भ निवारण, गर्भ धारण चि०, स्त्री प्रसव कष्ट चि०, कुच कठोर करण।

No. 390. Krishna Datta Rāsā by Śwadina of Bilgrāma. Substance—New paper. Leaves—17. Size—8¾ × 6¼ inches. Lines per page—20. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Saṃvat 1901 or A. D. 1844. Place of deposit—Śrimān Mahārājā Rājendra Bahādura Sinha Sāhaba, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कृष्णदत्त रासा लिष्यते ॥ दोहा ॥ शिव सुत के पद वंदि क गौरी गिरा मनाय। करत विनय शिवदीन कवि दोजै ग्रंथ बनाय ॥ १ जे गुरु चरण सरोज रज अंजन लोचन धारि। ते दर्शी त्रयकाल के कहत पुराण विचारि ॥ २ ॥ छप्पय ॥ ब्रह्म सहित नभ खंड चंद्र संवत परिमानो। बहुरि राम रस दीप आतमा धाके जानो ॥ किया समर नरनाह विदित

बिसेन वंशवर। उदित देश परदेश सुजस रस छायो घर घर॥ लखि कवि शिवदीन विचारि चित करत ताहि वर्णन सुखद। करजोरि विनय कवि कुल करैं बिगरो वर्ण संभारि सब॥ ३॥ दोहा॥ नाजिम महमूदलो खां वलो सुजान विचार। दियो इजारे यवयपति सुभग देश शरवार॥ ४॥

End—पायो नवाब जब हुक्म साह। दै खिलत खास बीरा सुवाह॥ दीनो वसाय भिनगा नरेश। भरि रह्यो भूरि आनंद देश॥ नरनाह बांह की छांह पाय। जन सघन अभय पुनि बसे आय॥ घरउमाह मंगल सु होत। दै रहे आशिषा द्विजन गोत॥ दोहा॥ देत आशिषा भूपतिहि कवि कोविद के जाल। जोलौं मंदर मेरु महि तौलौं अचल भुवाल॥ इति श्री मनमहाराजाधिराज विश्वेन वंशावतंश भूप शिवसिंहात्मज सर्वजीत सिंह तनुज कृष्णदत्त सिंह हेत विरचिते कृष्णदत्त रासो कवि शिवदीन बंदीजन विलुल ग्रामो विरचित नाजिम महमूद अली खां को युद्ध समाप्तम् शुभमस्तु। इति।

Subject—प्रार्थना, महमूद अली खां को नवाब ने शरवार देश इजारे मे दिया, प्रथम कुकरावल मे, जो कि लखनऊ के उत्तर एक नदी है, वास किया फिर वहराइच घाट पर बसे, कलहंसों को वहराइच मे जीता और खिलयत ली—पृ० १—२—पांडे गोंड़ा के महमूद अली से मिल गये और रामदत्त पांडे भिनगा पर उनको चढ़ा लाये। फिर करैंदा (गोंड़ा) मे आये फिर राप्ती के किनारे चौकाघाट पर आये, और हनोफ से नौका (भिनगा) पर आये, राजवंश वर्णन तथा शासन विधि वर्णन। कृष्णदत्तसिंह के चचा उमरावसिंह का वर्णन तथा उनके दूसरे चचा कालीप्रसाद सिंह का वर्णन, तथा पृथ्वी सिंह के पुत्र क्षेत्रपाल सिंह और हरिभक्तसिंह का वर्णन तथा उमरावसिंह के पुत्र युवराजसिंह का वर्णन। क्षत्रपाल सिंह के अर्जुन सिंह हुए। त्रयोदशी सोमवार को म्लेच्छों ने हमला किया। पृ० ३—६ तक राज की सेना की तय्यारी, दूत का भेजना, युद्ध वर्णन, महमूद अली खां के साले का मारा जाना और सेना का भागना, राज यश वर्णन तथा दीवान का वर्णन—पृ० ७। पुनः युद्ध की तय्यारी, नाज़िम की तोपों का वर्णन तथा राजकोष तोपों का वर्णन, ७ दिन तक युद्ध का होना, फिर रमना (बाग) में युद्ध होना—पृ० ८—१०। नवाब का पुनः सेना भेजना और नाज़िम के भाई का युद्ध करना। गर्गवंशियों की सहायता से युद्ध करना और भिनगा नरेश का भागना। पृ० ११—१४ तक। तुलसीपुर के पहाड़ी राजा ने बादशाह को सहायता दी और नंदप्रसाद के साथ सेना भेजी परन्तु फिर उनको भी हराया। गोंड़ा-नरेश ने भिनगा-राज को मेल करने के लिये पत्र लिखा उस समय गोंडा मे अमान सिंह बिसेन राजा थे मेल होने पर फौजी सरदारों के साथ पहाड़ मे शिकार खेलने चले गये फिर बद

अमली होने से नवाब ने नाज़िम को कैद कर दिया और कृष्णदत्त सिंह को राजा बनाया। इति।

No. 391. Pingala Chhandobodha by Śiva Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—8 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—900 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1921 or A. D. 1864. Place of deposit—Thākura Jairāma Siṃha, Village Mirjāpur, Post Office Mahamudābād, District Sitapura (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ शिव कवि कृत पिंगल छंदो बोध लिष्यते ॥ दोहा ॥ श्री गजमुष मुष कहत हो ध्यान हत बिघन अमंद । ज्यों गिरीस गिरिजा भजत भजत सकल दुष द्वंद ॥ चारगे चारगे देन फल सुमिरन हो के साथ। सीता सीतानाथ अरु राधा राधानाथ ॥ संकर भूषन भूमिधर धवल रूप मति धाम। श्रीपति सैनद सहसमुष शिव कवि करत प्रनाम ॥ सकल सिद्धि आवै निकट ध्यावत श्री गुरु संभु। नयो नयो नयो परै हिये जुक्ति आरंभ ॥ सुमिरि गिरा सेसादि मत करि के बहु बिधि सोध। सुगम रीति भाषा रचत शिव कवि छंदो बोध। जो बानी छंदो मई पद्यांसा पहिचानि। होइ जो तासों रहित सो गंद्या लीजे जानि। ॥ जामें मात्रा बरन की संख्या कीन्ही होइ। शिव कवि पिंगल के मते छंद कहावै सोइ ॥ पद्यावानी द्विविधि कर जाति व्रति पुनि जानि। संख्या जामें कलनि की जाति सो कहै वषानि ॥ संख्या जामे वर्न की वृत्त ताहि पहिचानि। केदारादिक के मते वृत छंद सब जानि ॥

End—मोमदीन अजमेर पीर गढ़ संभारै ॥ उपम कहि कै कौन मकनपुर साह मदारै ॥ बहिराइच सलार या रधो बडो पेदाई। दिल्ली तोपे कुतुप तास की करी बड़ाई ॥ सुमिरै हसन हुसैन जिन कुपुर मारि कीन्हो ध्वजा। मन वचस कर्म स्याहि कहै पंपे पोर मंद्गति सदा ॥ थकित पौन रहै जात सिंधु नहिं लहर संभारत फनिपति फन नहिं कठत कूर्म नहिं वक निकारत ॥ षट पद भ्रमा भ्रम्यो विमल नरपति नहिं सारद ॥ सवितारथ रहिजात वेग भूमि रतन मारथ ॥ दल मलित धरनि धतंक मय जस उदित टोपयुत जब जुलफ केर करि कै समार है सर कराद दुदुल चढ़त कनतवन परनग जाड़े सब जवाहिर झलक मोतियो वरिछत लता है बिराजै मुकुट पर नूर का तज्ञ लालोपा भाल ऊपर ॥ इति श्री शिव कवि कृते पिंगल छंदो बोध समाप्तः ॥ श्री संवत १९२१ वैसाष मासे अधिक मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पूर्णमायाम चंद्वासरे इदं पुस्तकं लिषतं विश्वनाथ पांडे मोचके।

Subject—छंदों का वर्णन है।

No. 392. Singāsanabatisī (Vikramabatisī) by Śivanātha of Asani (Fatahpur). Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size—$10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—775 Anushṭupa Ślokas. Appearance—New paper. Character—Nāgarī. Date of Composition—Saṃvat 1861 or A. D. 1804. Date of manuscript—Hijarī 1256 or A. D. 1878. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विक्रमबतीसी लिख्यते शिवनाथ कवि कृत ॥ दोहा ॥ गौरीनंदन गजवदन आशिवंत गुन माल। कृपा करो मो दीन पर बरनो ग्रंथ विशाल ॥ १ ॥ बानीजु दानी सदा मानी सकल जहान। बोनो पुर रानी कहो मोहि देत वरदान ॥ २ ॥ है ऐसो बलरामपुर दाता ज्ञाता लोग। पूरबदिशि विजुलेश्वरी दूरि करैं तन शोग ॥ ३ ॥ नदी रापती कोस भर उत्तर दिशा सुहात। देखैं ते पातक कटैं पुन्य अधिक सरसात ॥ ४ ॥ सात कोश पटनेश्वरी राजैं दिशा इशान। अवध पचीसै कोस है दक्षिण को परमान ॥ ५ ॥ तवन सहर में भूप हैं नवल सिंह जनवार। तिनके हैं सुत दानिया कवि लोगन पर प्यार ॥ ६

End—इति,श्री सिंहासन बतीसी मुकनल पुतरी कथा द्वात्रिंसमः समाप्तः ३२ श्री महाराजकुमार श्री भैया अर्जुन सिंह हेत कवि शिवनाथ विरचिते अर्जुन प्रकास ग्रंथ समाप्तम् ॥ दोहा ॥ भाषा कीन्ही जानिकै अर्जुन सिंह के हेत। बानी संस्कृत में रही मूल कथा सिरनेत ॥ महापात्र शिवनाथ कवि असनी बसै हमेस। सभा सिंह को सुत सही सेवक चरन महेश ॥ जोरैं मैं कर कविन्ह सों चूक परी जो होइ। ताको देखि सुधारियो अर्जो आनो सोइ ॥ इति श्री सिंहासन बतीसी समाप्तम् शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली देव्यैनमः श्री सरस्वत्यैनमः ॥ सर्व देवायनमः। सन् १२६५ साल श्री।

Subject—प्रार्थना व राजवंश वर्णन—पृ० १—२। विक्रमादित्य-उत्पत्ति कथा, गंधर्व का इन्द्र के श्राप से लोक में आना, भर्तृहरि और विक्रम २ पुत्रों का जन्म भर्तृहरि व विक्रम दोनों का क्रम से राज पाना—पृ० ३—११ तक। राजा भोज का सिंहासन पाना—१२—१४। प्रथम पुतली पंज मंजरी की कथा—१५—१६। चन्द्रावती पुतली और जयवंती की कथा, पृ० १७। चंपा, मंजुघोषादि की कथा—१८—२३ तक। रोषा, कपिलावती, चिचित्रा की कथा—२४—२९ तक। मदन सेना, मदपिंडरी, गंगा की कथा—३०—३१ तक। रतन मंजरी,

मानवती, चन्द्रमुखी की कथा—३२—३५ तक। चन्द्रमोहनी, कमलावती, अनंग-ध्वजा की कथा—३६—३८। मंगलावती, सुभद्रा, सुमन पिंजरी की कथा। ३९—४० तक। चंद्रिका, कमलमुखि, पुतोही की कथा—४१—४२ तक। रूप सागरी, नवमेषा, चंद्रकला, विचित्रा की कथा—४३—४५। शोभा, सोम पिंजरी, मुकनल की कथा—४८—५१ तक, कविवंश वर्नन—५२ पृ०। इति।

No. 393(a). Rasa Brishṭi by Śiva Nātha of Puwaya. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—1,535 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Avadhesa Panday, Village Khamahariha, Post Office Baranāpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ रस वृष्टि ग्रंथ लिष्यते॥दोहा॥ श्री गणपति पद बंदि कै उर धरि शिव सुष धाम॥ शारदादि महिदेव कवि करि करजोरि प्रणाम॥ सब मिलि मोहि कृपा करौ देहु विमल हिय दृष्टि॥ राधा हरि शृंगार सुष कियो चहौं रस वृष्टि॥ बारिज नैन सोहै एकई रदन आके सुषमा सदन सो सहाय करि रति के॥ सब सुषसागर उजागर गुनाकर है बुद्धिवर नागर देवैया शुभ गति के। विमल करन ज्ञान ध्यान धरि शिवनाथ संकट हरन ये चरन गणपति के॥ दारिद दहन सुरतरु को ग्रहण सोहै मूषक वाहन विहगन पलमति के॥१॥ जै बाणी गुन षानि मातु अघ हानि करनि तुव॥ जै अंबिका भवानि दानि कल्याण करण ध्रुव॥ जयतनाम तव दास वास संतोष ज्ञान ध्रुव॥ बांछित फलदातार सकल संसार चरण ध्रुव॥ चारि पदारथ कर बसे देवि दरिद्रादि नाशनी॥ करिय कृपा शिवनाथ पर विदित वक्रपुर वासनी॥

End—अथ कृष्ण जु को शांत रस वर्नन॥दोहा॥ और कछू न सोहाय पद एकहि रस अनुराग॥ सो सम रस' बरनत सुकवि उर उपजत बैराग॥ सवैया॥ दाड़िम दापन ऊधन भूषन मापन चापन को बिसराई॥ कंदन संदन नंदन बंधन चंदनि चंपकि चंद निभाई॥ जो अधरा मधु माधव चापि लगो रद लाल अमोल मिठाई॥ तादिन ते शिवनाथ उठाइ उठाइ धरो बसुधा को सुधाई॥ राधे जू को शांत रस॥ कवित॥ जादिन ते पोरीसो पिछौरी षोड़े देष्यो तुम्हे तादिन ते बिना देषे पीरीतन परि गई। अंगनि अंगोठो सों अंगारन को तपै ताहि सषिन सों बोलि चालि षेलिबो बिसरि गई॥ लगी अकजकी बकबकी टकटकी लाल मूरति तिहारी प्यारी प्राणन मे भरि गई॥ आसन बसन वास चंदन ते चंपक ते चन्द्रमा ते चांदनी ते चौगुनक जरि गई॥ काम क्रोध लोभ मोह दंभ नित माषत है॥

बागुण कहानी कहै चाबैं घटे रस बो ॥ करैं ततवोर धोर नेक ना धरत उर बिषय को बढ़ाई करि गावैं नर जस को। साधनते चरचा न करैं री जातें हरै षब बोलत कुबाल बाक जाइ पाप बस को। रसना हठीलो हठ छोड़ि शिवनाथ कवि कबधो परैगो तोहि रामनाम चसको ॥

Subject—इसमें नवरस, हाव-भाव, नायक नायिका-भेद आदि का वर्णन है। उदाहरण में श्री कृष्ण श्रोर राधिका का प्रेम वर्णित है।

No. 393(b). Rasa Ranjana by Śiva Nātha. Substance—Country-made paper Size—24 × 7 inches. Lines per page—48. Extent—72 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Ṭhakura Naunihāla Siṃha, Kanṭhā, Unão.

Beginning—अथ रस रंजन सिंगार आदि नो रस को ग्रंथ शिवनाथ कवि कृत से संग्रह कुछ करत हैं। अथ तीनो नाइका को भेद ॥ दोहा—त्रिविध महामाया भई तीन भेद परकास। स्वीया परकीया कही पुरजोषिता विलास। तीनों के भेदनि रहे तीनि लोक परिपूरि। इनहीं ते उपजत जगत यही सजीवनि मूरि ॥ २ ॥ स्वर्ग मनुज पाताल फल तीनो.को जिय जानि। देव मनुष अरु नारकी जीव तीनि मन मानि ॥ ३ ॥ सत गुन रज गुन तम गुनी तीनो के तन जानि। सेत लाल अरु स्यामहु रंग क्रिया हु मानि ॥ ४ ॥

End—सवैया—जुवती मन मे हट कूप पै ठाढ़ो जबै नंदलाल पै दौठि करै। हुलास सो बोलि उठै हंसि हाथ सहेली के हाथ धरै ॥ सब लोगनि की तजि लाज तहाँ निज नाह तिहीं दिसि लै हगरै। भरिकै धरिकै अपनी गगरी खरी श्रोर सखीनि कीं पानि भरै ॥ २ ॥ आठो गांठि सठ नायक मैं यथा—विहंसनि मनसा कर्मना चितवनि वाचा चाल। चातुरता यै आतुरो आठ गांठि ऐ लाल ॥ १ ॥ हे लाल ये तिहारे अंग मैं आठ गाँठि जे बांठि गंठीलो नाइका होइ तिन सों तुमसो ठीक जोर बनि है ॥ हम गंठीलो नाहीं हैं तातें हम से तुम से नाहीं बनैगो जोरे ॥ अनभिज्ञ नायका को सवैया—

नारि कछू दिन की अरु आय बहिक्रम योग्हि होई।
काम को भेद न जानै कछू दुल ही तन हेरै प्रतिकूल गोई ॥
रैन दिना लरिकान की संगति खेलन को रहै खेलन कोई।
बारन जानि सुजान कहै अनभिज्ञ मनोहर नायक सोई ॥ ३ ॥

Subject—नायक के तीन भेद वर्णन। ३ लोक, ३ गुण, ३ देव, ३ कर्म वर्णन। स्वकीयादि वर्णन का दोहा बारन कृत रसिक विलास से वर्णित। उत्तमा, मध्यमा, अधमा नायका वर्णन। पृ० १

मुग्धा नायका वर्णन, हाव-भाव-लक्षण वर्णन, उद्दीपन व आलंबन वर्णन, आठ स्थायी भाव वर्णन, चेष्टा वर्णन, शठ नायक में चाटी गांठि वर्णन—पृ० २

No. 394(a). Amarakōsha Bhāshā by Śiva Prasāda Kāyastha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—137. Size—13¾ × 5¾ inches. Lines per page—22. Extent—3,740 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1874 Samvat or A. D. 1817. Date of manuscript—Samvat 1876 or A. D. 1819. Place of deposit—Bābū Padamabaksha Simha Lavedpur (Bhingā), Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ बंदो श्री गुरुचरन दुख हरन सकल भव त्रास। जा जाने सुर सिद्ध मुनि कियो ब्रह्म में वास ॥ १ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु सिव गुरु गणेश गुर राम। गुरते दूजा और नहि सहित शक्ति अभिराम ॥२॥ ताते गुरु पद बंदिये भव बारिधि को पोत। पोत सरित तरिवो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा कियो लीजे सुकवि बिचारि। सुरवानी बुध लोग को भाषा अबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक बहु ग्रंथ में है पढ़िवो अति क्लिष्ट। ताते है अति सरल लषि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चैापाई औ दोहरा ये द्वै छंद प्रसिद्ध। हैां याही में ग्रंथ किय है दोहन की वृद्धि ॥ ६ ॥

End—अमर तीसरे कांड में आठ वर्ग को देषि। चारि वर्ग भाषा विषे आवत काज विशेषि ॥ १ ॥ सो मैं भाषा करि कह्यो दोहा छंदहि माह। भाषा विषै प्रवीन सो पढ़िहै जे करि चाह ॥ २ ॥ चारिवर्ग जो लिंग के भाषा मो नहि होइ। स्त्री पुंस नपुंसकहि इखिन पुंमक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहि करो नाम-मात्र को काज ॥ संस्कृत शब्द जु होत हैं आवत जे ‹ व काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषै बिन कारज को पेषि। ताते छाड़ो चारि ये स्वार्थ रहित कों देखि ॥ ५ ॥

पैाष मासे शुक्ल पक्षे तिथि पुर्णमास्यां विवस्वद्वासरे शिवचरेण लिखित सम्वत १८७६।

Subject—प्रार्थना व निर्माणादि वर्णन। स्वरादि कांड, प्रथम सर्ग वर्णन-पृष्ट १—२९ तक। पर्वतादि औषधि नदी वृक्षादि नाम तथा सिंहादि जीव संज्ञा वर्णन—पृ० ३०—६० तक। स्त्री वर्ग और रोगादि नाम वर्णन, शरीर नाम, गहनों के नाम, सुगंधित वस्तुओं के नाम, वस्त्र वस्तुओं के नाम वर्णन। पृ० ६१—८३ तक। पालतू जानवर, राजा, व्यवहारिक वस्तुओं तथा कारबारियों के नाम वर्णन। पृ० ८४—१०० तक। गाय के अंगादि नाम, रंगों के नाम, सुवर्णादि के नाम,

शराब, जुवा आदि व्यसनों के नाम द्वितीय काण्ड—पृ० १०१—१०९ तक। विशेषणादि ४ वर्ग का अनुवाद वर्णन। पृ० ११०—१३७ तक। इति।

No. 394(*b*). Vaidya Jiwana Bhāshā by Śiva Prasāda. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—10¾ × 5 inches. Lines per page—11. Extend—600 Anushṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ दोहा—फागुन सुदि की पंचमी गुरु वासर सुभ पाइ। शिवप्रसाद भाषा रचत लोलिम राज बनाइ॥ श्लोक एक प्रति भाषा में छंद एक है॥ छंद मत्तगयंद सुंदर गात सुभावहिते यह प्रीति रमा हिय मात्र रुदाई। धाम अहै किमि स्यामल देत सुमंगल को सबही कह माई॥ रक्त सरोरुह सो पद लोलहि रापत है यह वेदन गाई॥ वंदत हैं हर मौलि जटा करि गंग तरंग सु निर्मल ताई॥ पुनर्यथा॥ धाम सवै मह रत्न सुदो सत दृष्टि सदा सुख कवि लिखोई। श्रृंग सुसत सुधाम यहै यस पाप यठारह वाहुते होई। सो शिव भक्ति भजे करि भक्ति धरो शत पाद्य धमो यक रोई॥ है घट यद्वनि तो परदक्ष दनीदत्त सर्व सुधाधर सोई॥ २

End—छप्पय छंद॥ वेद अथर्वन वाक्य रहा जो काल विचारो। कहे परम परमान धनंतरि केवल भारो॥ मरजादा जो मान दिवाकर पंडित जानो। शशि सो प्रगट्यो पुत्र सुधानिधि सम अनुमानो॥ अति बड़ी काव्य जिन प्रगट किय समा सुरति भूषन गनित। वह तिया उक्ति जीवन व पद लोलिमराज सुकवि भनित॥

इति श्री वैद्य जीवने लोलिमराज कृत वैद्य शिवप्रसाद कायस्थ भाषा विरचितायां सप्तमोल्लासः॥ समाप्तम्॥ इति॥

Subject—प्रार्थना छंद १—६ तक। वैद्य-लक्षण, ज्वर का काढ़ा, सन्निपात का काढ़ा, तिजारी और चौथिया का काढ़ा, शीतज्वर, विषमज्वर, ज्वरप्रतिकार छंद ७—७८। अतीसार ज्वर, महागंगाधर चूर्ण। संग्रहणी प्रतीकार। छंद ७९—१०५ कास स्वास सतिकादि प्रतिकार। छंद १०६—१४७। छर्दि रोगान्त कफादि प्रतिकार। छंद १४८—१९२। मदन उत्पात प्रतिकार, अतिकृशता, रति पुष्टि, विदवताप-हरन, अतीसार, पंचामृत पर्पटी रस, विस्वासिनी वल्लभ रस। छंद १९३—२१६—इति।

No. 395. Kakaharā by Śiva Prasāda of Saraiyā, Baharāich Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—8 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—90 Anushṭupa

Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Gangādina Iswari, Village Udawāpur, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ककहरा लिख्यते ॥ सहर सरैयो वास करो जगवाजगी वजारा । सिवप्रसाद गरीब के एक रामनाम अधारा ॥ अपनी अपनी कछु ना चलै सतगुरु होउ सहाय ॥ चौपाई ॥ कका कासी जानु सरोरा । गुरु उपदेस तें कक्मन थोरा ॥ कबहुक चोला वास करु भाई । गुरु उपदेस वसै तहं जाई ॥ खखा खरच करो दिन थोरा । आगे का कुछ होइ उजेरा ॥ वादि गया दिन आवहिं न चेता । बोज ऊसर लै बोयऊ खेता ॥ गगा गरवित भयऊ अचेता । तासे चिरियां चुनि गई खेता ॥ वहु प्रकार सब विधि समुझावा ॥ तबहुं न मूढ़ ज्ञान कछु पावा ॥ घघा घरहिं परो सब मूला । बिनु गुरु ज्ञान फिरै जग भूला ॥ जो तुम सार सब्द पहिचानौ काहेक इत उत भटका मानौ ॥ दो० ॥ चरन असे दस साहस बोरत गहिरे कुंड अरधनाम अब टेर करो परकरि निकारे सुंड ॥

End—अपनो जन जानिय प्रभु मोहि राखिय सरना गहो धातो मंगल चार जुग जुग देहु मैं वर मांगतो ॥ जेहि नाम मनसा बचन धरो कछु काहत बीर गुन पारसो ॥ ध्यान सकल अवधूत मारग दीन कर मोहि आरसो ॥ सिव प्रसाद गुर चरनन परे आधीन होई ईश्वर मग ते जेहि जन्म होइ साचित टिढ़ मत राम गुन सोइ त्रासते ॥ दो० ॥ सब संतन की दया ते लिया ककहरा गाइ । भूल भटक जो होइ कछु सतगुर सेठ बनाय ॥ लालन को यह हाट है भला कहै कोइ कुर । तापर चित ना दीजिए अपुरा है भरपूर ॥ सत गुर हंस काज कै दोना । अमी सजीवन हंसा लोना । सुष दस मारग को गति पावै । छिन मैं आवै छिन मैं जावै ॥ सिवप्रसाद चरनन के चेरे । राम रसाइन पिये सवेरे ॥ दोहा ॥ संत रंगीले राम हैं राम रंगीले संत ॥ सिवप्रसाद रंगीले संतन चरन परसत गुर कोन महंत ॥ इति श्री ककहरा सिवप्रसाद कृत संपुरन सुभ मस्तु दसखत । रघुवर दास संवत १९२४ अगहन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीयाम शुक्रवासरे ।

Subject—ककहरा में उपदेश के दोहे और सतगुरु की महिमा तथा उनकी सेवा का फल वर्णन है।

No. 396. Kriṣṇa vilāsa by Śivarāja Mahāpātra—Substance—Country-made paper—Leaves—140. Size—9 × 5¾ inches. Lines per page—12. Extent—1,417 Anushṭupa Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date

of Manuscript—Samvat 1800 or A. D. 1742. Place of deposit—Rājā Bhagwān Baksha Simha, Rāja Amethi, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—पृ० ९ से—तत्र मुग्धा लछन ॥ दोहा ॥ नूतन जोवन की झलक जा तिय के तनु होय ॥ ताको मुग्धा कहत हैं कविवर पंडित सोय ॥ यथा ॥ खंजन की सुघराई कछू विन अंजन नैननि आनि हई है ॥ पूरन चन्द सों चारु कछू मुख की छबि सोभित यान भई है ॥ ओप भई उर थोरे मट्ठ गति मंद गयंदनि की जो लई है ॥ मैन महीपति जोवन को बसिबो तिय के तन सोध दई है ॥ दोहा ॥ मुग्धा के दो भेद ये कवि गन करत विवेक । एक कहत अज्ञात है ज्ञात यौवना एक ॥ तत्र अज्ञात यौवना लक्षणम् ॥ दोहा ॥ निज तनु यौवन आगमन जो नहि जानै नारि । ताहि कहत अज्ञात है लक्षण सुकवि विचारि ॥ यथा ॥ सवैया ॥ जाय जनो सो कहो अरि कै यह कैसो कछूक उपाधि भई है ॥ रोजहि रोज बढ़ै उर में दिन द्वैक सों रो यह रीति नई है । बात कहे ते हसो तुम्हरो यह तोहि दई किन सोध दई है ॥ नाहि करै कछु याको इलाजहि आपने काजहि भूलि गई है ॥

End—लीजै सकल विचारि जो बुधिवल करि करि चेत ॥ कह्यो है मैं संक्षेप सो-बालबोध के हेत ॥ बनौ नहीं जहं बनैने लक्षण लक्ष्य विचारि । कहत जो कवि शिवराज हैं लीजो सुकवि सुधारि ॥ ऊंचे तरुवर फरन को बालक हाथ पसारि । ताही विधि या ग्रंथ में बरनौं मति अवधारि ॥ गनत औगुन को कबहुं बड़े जु नर जग कोइ । करत सदा उपकार को यह कैसो जो होय ॥ छमियो मो अपराध है विनय करत कर जोरि । ढिठई करि भाषो यहां ग्रन्थ बड़ो मति थोरि ॥ भानुदत्त मत बूझि कै, चन्द्रालोक बिचारि । बरनों कृष्ण विलास है यथा बुद्धि अनुसारि ॥ ७३७ ॥ इति श्री कृष्ण विलासे शिवराज महापात्र बिरचिते अभिधा उत्तिम मध्यम अधम काव्यध्वनि वर्णन नाम दशमोल्लासः समाप्त मासीत् ॥ सम्बत् अठारह सौ सुपद वा ॥

Subject—(१) पृ० १ से × पृष्ट तक—प्रथम उल्लास (लुप्त)

(२) पृ० × से १८ पृ० तक—द्वितीय उल्लास—धीरादि भेद—वर्णन ।

(३) पृ० १९—३१ तक—तृतीय उल्लास—परकीयादि भेद—वर्णन ।

(४) पृ० ३२—५० तक—चतुर्थ उल्लास—अष्ट नायिका भेद—वर्णन ।

(५) पृ० ५१—६४ तक—पंचम उल्लास—नवमो नायिकादि सखी इत्यादि लक्षण—वर्णन ।

(६) पृ० ६५—७६ तक—षष्ट उल्लास—नायक-भेद—वर्णन ।

(७) पृ० ७७—८० तक-सप्तम उल्लास-सात्विक भेद लक्षण लक्ष्य वर्णन ।

(८) पृ० ८१—१०० तक—अष्टम् उल्लास—स्थायी भाव, रस श्रृंगार लक्षण, लक्ष्य, दश दशा दर्शन, हाव वर्णन।

(९) पृ० १०१—१२७ तक—नवम् उल्लास—व्यभिचारी नवरस, रस विरोध, रस सबलता, भाव सबलता, भाव-शांति, भाव-उदय, रात्र विषयादि-रतिरसाभास और रीति चतुष्टय।

(१०) पृ० १२८—१४० तक—दशम् उल्लास—व्यंजना, लक्षण, अभिधा, उत्तम, मध्यम, अधम काव्य, ध्वनि वर्णन।

Note—यह 'कृष्ण विलास' नामक रीति-ग्रंथ महापात्र शिवराज जी ने, भानुदत्त के मतानुसार चन्द्रालोक को पढ़ कर लिखा है। इसमें नायक-नायिका-भेद, रस, रसों के अङ्ग और काव्य के भेदों की समुचित व्याख्या की गई है। उदाहरण भी उत्तम दिये गये हैं। लेखक की असावधानी से कहीं कहीं अशुद्धियां हो गई हैं। पुस्तक के प्रथम के ८ पृष्ठ लुप्त हो गये हैं, अंत के पृष्ठ का भी पता नहीं है। इस पुस्तक के प्रस्तुत अंतिम पृष्ठ के भाग से पुस्तक का सम्वत १८०० के लगभग लिखा जाना प्रतीत होता है। संवत् "१८ सौ सुखदत्त" से यही निष्कर्ष निकलता है कि वह १८१२ या १८२२ की लिखी हुई है। यदि वह 'बा' 'बार' का प्रथमाक्षर है, तब वह १८०० में लिखी गई होगी। पुस्तक में कवि ने अपना तथा पुस्तक कालादि का विशेष परिचय नहीं दिया है। संभव है पुस्तक के आदि के लुप्त पृष्ठों में कुछ इस विषय का उल्लेख हो।

No. 397(*a*). Amarakosha Bhāshāo by Rājā Śiva Simha of Bhinagā. Substance—Country-made paper. Leaves—291. Size—8½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—5,100 Anushṭupa Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—1874 Samvat or A. D. 1817. Place of deposit—Mahārāja Rajendra Bahādura Simha Mahōdaya, Bhingā.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ बंदौं श्री गुरु चरन युग हरन सकल भव त्रास। जा जाने सुर सिद्धि मुनि कियो ब्रह्म में वास ॥ १ ॥ गुरु ब्रह्म गुर विष्णु शिव गुरु गनेश गुरु राम। गुरु ते दूजो और नहि सहित सक्ति अभिराम ॥ २ ॥ ताते गुर पद बंदिए भव बारिधि को पोत। पोत स नित तरिबो करै यह भव तारन होत ॥ ३ ॥ अमरकोष भाषा कियो श्री सिवसिंह विचार। सुर-बानी बुध लोग को भाषा अबुध निहारि ॥ ४ ॥ छंद अधिक बहुग्रंथ में है पढ़िबो अति क्लिष्ट। ताते हूं अति सरल लखि पढ़त सबै करि इष्ट ॥ ५ ॥ चौपाई और

दोहरा ये दो छंद प्रसिद्ध । दोँ याहो मेँ ग्रंथ किय हे दोहन को वृद्धि ॥ ६ निर्माण काल ॥ (१७८४) वेद सप्त वसु अष्ट कहि पुनि ससि संवत जान कृष्णपक्ष नभ शुक्र लषि तिथि तेरस पहिचानि ॥ ७ ॥

End—अमर तीसरे कांड मेँ आठ वर्ग कोँ देखि । चारि वर्ग भाषा विषेँ आवत काज विशेष ॥ १ ॥ सो मैँ भाषा करि कह्यो दोहा छंदहि मांह । भाषा विषे प्रवीन सो पढ़िहैँ जो करि चाह ॥ २ ॥ चारि वर्ग जो लिंग के भाषा मेँ नहि होइ । स्त्री पुरुष नपुंसकहि इस्त्रि नपुंसक सोइ ॥ ३ ॥ ताते भाषा नहिँ करो नाममात्र को काज । संस्कृत शब्द जु होत जहं आवत तहवाँ काज ॥ ४ ॥ लिंग भेद भाषा विषेँ विन काज को पेषि । ताते छोड़्यो चाहिए स्वार्थ रहित कोँ देखि ॥ ५ ॥

वर्ग आठ हु का प्रमाण ॥

विशेष्य निघ्न वर्ग १	संकीर्ण वर्ग २	अनेकार्थ वर्ग ३	अव्यय वर्ग ४	स्त्री लिंग विशेष वर्ग ५	पुल्लिंग विशेष वर्ग ६	नपुं० लिं० वि० वर्ग ७	स्त्री० पुं० लिं० वर्ग ८	तृतीय कांड वर्ग ८
३०१	१२८	५१५	५५	+	+	+	+	१०१२

प्रथम कांड वर्ग ११	द्वितीय कांड वर्ग १०	तृतीय कांड वर्ग ८	अमरकोष कांड ३ वर्ग २९
५७८	१६६५	१०१२	३२६५

इति श्री महाराजकुमार विशेनवंशावतंस बरियंड सिंहात्मज रुद्रदत्त सिंह तनूज शिवसिंह कृते अमरकोष भाषायां तृतीय खंडः ॥ इति ॥

Subject—अमरकोश प्रथम खंड—पृ० १—५७ तक ।

द्वितीय खंड—पृ० ५८ —२१४ तक ।

तृतीय खंड—पृ० २१५—२९१ तक ।

No. 597(*b*). Amarakōsha Bhāshā by Rājā Śiva Simha, of Bhingā Rāja, Baharāich. Substance—Country-made paper Leaves—196. Size—13 × 5½ inches. Lines per page—21.

Extent—4,620. Anushṭup Ślokas, Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition Samvat 1874 or A. D. 1817. Date of manuscript Samvat 1875 or A. D. 1818. Place of deposit—Bhaiyā Santa Baksha Siṃha Guthawar, Baharāich.

No. 397(c). Bhakti Prakāmśa by Rājā Śiva Siṃha of Bhingā Rāja Baharāich. Substance—Country-made paper. Leaves—71. Size—6¼ × 4¾ inches. Lines per page—30. Extent—1,050. Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit.—Maharājā Rājendra Bahādur Siṃha Jī, Bhingā Rāja, Baharāich.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ कवित्त—वारन बदन बो रदन एक कवि छाजै राजै तिहुंलोक को निकारे दुखफंद को। आनंद सरूप भरो सेंदुर सुसुंड ऐसो सोभित परमचारु कांटे दुखवृंद को ॥ कामना को कल्पतरु चारशे फल देत जानि मानि जन आपनो जु मेटे भवफंद को ॥ जनन को पालक सकल अघ घालक भजु आनंद को कंद पारवती पति नंद को ॥ १ ॥ जपत रहत वे पावत परम पद सकल समूह सुख आनंद बिस्तारे हैं। विपति बिदारि तारि केते पाप पुंजनि ते दीन्हो है निवास बैकुंठनि बिहारे हैं ॥ केते दोष दुसह अजेय कोग आदि देखि कीन्हों तू अलेख पंद दंड महिडारे हैं। मैं तो मन बच क्रम ऐसो इक आनत हों चंडो के चरन भवसिंधु के नयारे हैं ॥ २ ॥

दोहा—जहं दोहा बिपरीति करि सोई सोरठा नाम।
ग्यारह तेरह मत्त पद बरनहु अति अभिराम ॥ ३ ॥

सोरठा—रघुवर कथा अपार गुन समुद्र बरनो कहा।
को नर पावै पार नाथ रावरे कृपा बिनु ॥ ४ ॥

End—अथ स्तुति कवित्त—जाको चतुरानन सहित पंच आनन सहस्र मुख गानन करत गुन नाम को। पावत न अंत संत देवता सुरेस मुनि ध्यावत रहत नित जाके रूप धाम को ॥ जन सिवसिंह सोई जगत को पालक है घालक है बोध अघ सोई नाम राम को। दीजै मोहि जानि जन भक्ति अम्बिका के पाइ बसे चित आइ कै अचल सुख धाम को ॥ ५३८ ॥

दोहा—जाके गुन गन को नहीं पावत अन्त अनन्त। सो अति लघुमति पाइकैं क्यों बरनौं भगवन्त ॥ ५३९ ॥ इति श्री भक्ति प्रकाश श्री रामचन्द्र चरित्र वर्ननं समाप्तम् शुभ मस्तु ॥ सिद्धिरस्तु श्रीराम ॥ श्रीमहाकाली जी की सरन हों श्री ॥

Subject—गणेश व देवी वंदना वर्णन—छंद—१—२। सोरठा तथा दोहा के लक्षण और उदाहरण वर्णन, निर्माणकाल वर्णन, छं० ३—१०। हरिगीतिका लक्षण उदाहरण, तोमर छंद लक्षणादि वर्णन छं० ११—१६ तक। प्रमानिका या नगस्वरूपिनी, त्रोटक, सोमराजी, रोला, ससिवदना, घनाक्षरी, संजुता, कुंडलिया, माधविका लक्षण वर्णन—छं०—१७—४८ तक। छप्पय, हीरा, पादाकुलिक, सुखलमा, नाराच, चामर, तिलका, सुंदरी, मौक्तिक माला, मत्त मातंग, लक्षण और उदाहरण छं० ४९—९१ तक। लक्ष्मीधर, भुजंगप्रयात, तारक, रामायण, दोधक, बंधु, माया, संख नारी, मालती, अक्षर पंक्ति, कमला, सवैया लक्षण उदाहरण वर्णन, छंद—९२—१३९ तक। मदन मनोहर, सुलक्षण, मोदक, मोहन, तारक छन्द, कंद, स्वागत, हंस, तनुमध्य और मल्लिका लक्षण और उदाहरण वर्णन—छं० १४०—२०७ तक। चंचला, चित्रांगदा, तामरस, दिक्षन, मालती सवैया, भ्रमरावली, सुंदर, नागस्वरूप, समानिका, हारी, उपस्थित लक्षण और उदाहरण वर्णन छं०—२०८—२९२ तक। तुंग, कंठिका, द्रुत विलंबित, स्रग्विणी, चौपैया, पद्मनील, प्रमिताक्षरा, हरिनी, वृत, पंच चामर, तोमर, क्रीड़ा द्रुमिला, मुक्ता और किरीट के लक्षण व उदाहरण—छं०—२९३—३४८ कमला, चौपाई, इन्द्रवज्रा, चंचरी, सुंदरी, सारवती, त्रिभंगी, लक्षण व उदाहरण। छं० ३४९—४६० तक। विजय, चंद्रकला, लक्ष्मीधर, मानवबंध, मोहन, और स्तुति वर्णन—छं० ४६१—५३८ तक। इति॥

No. 397(*d*). Bhashā Vritta Manjari by Maharāja Śivasimha of Bhingā Raja (Baharāich). Substance—Country-made papers. Leaves—29. Size—6¼ × 4¼ inches. Lines per page—28. Extent 392 Anusṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit.—Mahā Rāja Rājendra Bahādura Simha, Bhingā Rajā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ गौर·······य सुमिरि चितलाय गौरी नन्द अनन्द मयं।·······भाषा कहौं बनाइ मत पिंगल अवलोकि कै॥ १॥ दोहा॥ भाषे नाग अनेक विधि छंद बिबिधि बिधि नाम। सो मत लै कविजन कियो ग्रंथ वृत्त सुखधाम॥ २॥ तिनकौ मत लै कहत हौं कछु छंदन को रीति। नाम तासु वृतमंजरी कवि जनको जो प्रीति॥ ३॥ अथ गुरुविचार॥ संजोगी के प्रथम को बरन दुमत्त समेत। कहि दीरघ अनुसार जुत कहुं चरनान्त उपेत॥ ४॥ अथ लघु को विचार॥ सुद्ध एक फल लघु कहत कहुं दीरघ लघुमानि। भा·········क विधि सो संक्षेप बखानि॥ ५॥

End—बत्तीसाक्षरी कवित्त रूपक घनाक्षरी छंद यथा ॥ विपति विदारन है मुक्ति के""""रति है कोटि छवि वारन है तारन जगत नित । अघ को विदारन है कामना संवारन है विपति विदारनि है निखर निकर जित ॥ पतनि को पालक है दैत उर सालक है जनवर दालक है मेरे सो बनत चित ॥ अंबिका बिहारे पांय कोटि कोटि छवि छाय मेरे मन वच काय रावरे सरन हित ॥ १० ॥ इति श्री भाषा वृत्तमंजरी दंडक छंद वर्णनं नाम षष्टमः ६ ॥ समाप्तम ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली जीव को सरन हौं ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेशवंदना, नाग कवि के पिंगल का आधार वर्णन । गुरु लघु विचार, व्योममाला छंद, दीर्घ लघु उदाहरण वर्णन पृ० १—२ । गण, देवता, फल विचार, दग्धाक्षर, मित्र सत्रुगण, मात्रावृत्त छंद, वर्णवृत्तछन्द वर्णन पृ० ३-७ तक । गाथा छंद, गीति छंद, उपगीति, दोहा, दोहा—भेद, रोला छंद, छप्पय समेद, पृ० ८-१४ तक । कुंडलिया, चौपैया, त्रिभंगी, अभिराम छप्पय, अमृतध्वनि वर्णन, पृ० १५—१६ तक । दुमिल सवैया, लीलावती, सुभग, मरहठा छंद पृ० १७—१८ तक । श्रीछंद, उक्का श्रीछंद, नारी छंद, प्रिया, माया, प्रमदा, मधु छंद, मही छंद, सवास छंद, व्योममाला, पद, हंसिनी, बंधु, मोटनक, अनुकूल, सुंदरी, मोदन, तामरस, मनि, मालती छंद वर्णन पृ० १९—२१ । पंकज वटिका, हरिलीला, रामायन, सुप्रिया, विशेषिका, शिखरनी, क्रीड़ा, चंद्रु, गीतिका, स्रग्धरा, विजय, मत्तगयंद, चन्द्रकला, मनोहर, मदनमनोहर, भुजंग, विजृंभत छंद वर्णन पृ० २२—२७ तक । दंडक, सर्वतोभद्र छंद, सार्दूर, अनंगशेखर, घनाक्षरी, रूपक घनाक्षरी—पृ० २८—२९ । इति ।

No. 397(*c*). Bhāshā Britta Ratanawali by Mahārāj Śhiva Simha of Bhingā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—6¼ × 4¾ inches. Lines per page—30. Extent—210 Anuṣṭupa Ślokas. Complete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Mahārājā Rājendra Bahādur Simha Mahodaya Bhinga Raja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ शुभग वृत्त रत्नावली छन्द शास्त्र सुखानि । सो ताको भाषा कियो गिरिजा पद श्रुति ठानि ॥ १ ॥ अथ अष्ट गण नाम ॥ मय रस तज मन अष्टगन पिंगल नाम बखानि । बरन एक उच्चारतें लीजे क्रम सों जानि ॥ २ ॥ मनगल तीनौं होत हैं मय गल आदि कहंत । रजलग भवि सो जानिए सतलग भाषत सन्त ॥ ३ ॥ अथ गण देवता फल विचार ॥

मन महि सूर्य श्री सुषद भव शशि जलजस्स वृद्धि । रजपावक रवि मृत्युहन सतकव गमन न सिद्धि ॥ ४ ॥ अथ गुरु विचार ॥ संयुक्ता दिग बिंदु जुत पुनि विसर्ग फल होइ । स्वर दीरघ गविकल्प लग चरन अंत गल होइ ॥ ५ ॥ अथ लघु विचार ॥ जो विभिन्न गुरु गहत कवि एक मात्र लघु जानि ॥ ह्रस्व दीर्घ इन सब्द के आदि कहं लघु मानि ॥ ६ ॥

End—अथ एक त्रिसाक्षर कवित्त कामः ॥ कीजे एकतीस आनि वरन प्रमान ठानि षोडसे विराम पद लषि परमानिए । भाषते फनीस मत कबीस ऐसे पिंगल बखानि सो कवित्त काम ठानिये ॥ कहैं कविलोग गुरु चरन विराम लषि कीजे पद जमक विलोकि इमि आनिए । वेद पद भाए सो सकल सुख भाए रचि विमल सोहाए ऐसो छंद पहिचानिए ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ गुरु लघु लक्षन जो कहे यामैं विविध विचार । उदाहरन ताको कियो पद छंदनि सुष सार ॥ ९७ ॥ इति श्री भाषा वृत्त रत्नावली समासम् सुभमस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकालो देव्यैनमः ॥ श्री राम श्री ॥ इति ।

Subject—गणेश वंदना छं० १ । गणनाम वर्णन—छं० २—३ गणदेवता फल विचार और गुरु लघु विचार छं० ४—८ तक । वर्ण वृत्त छंद—हंस, गुरु लघु संज्ञा, छंद लक्षण वर्णन और चक्र वर्णन, छं० ९—१७ । तारी छंद तीनी, वारि, पंक्ति शशिवदना, सोमराजी, मदलेषा, मधुमती, विद्युन्माला, नागस्वरूपिनी, छन्दों के लक्षण और उदाहरण छं० १८—२८ । चित्रपदा, मानव छंद, अनुष्टुप छंद, कमला, मनिबंध, रुपमाली, पंचकला, सारवती, अमृतगति, हंसी, सुंदरी, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति—छंद लक्षण और उदाहरण वर्णन छं० २९—४३ । रथोद्धता, स्वागता, दोधक, मालिनी, हरिप्लुता, द्रुत विलंबित, तोटक, प्रमिताक्षरा, स्रग्विनी, भुजंग प्रयात, वंशस्थ, इंद्रवंशा, उपजाति, कुसुम विचित्रा, छंद लक्षण और उदाहरण पृ० ४६—५६ । पुष्पिताग्रा, प्रभावती, प्रहर्षिनी, वसंततिलका, मालिनी, भ्रमरावली, चामर, नाराच, पृथ्वी, हरिणी, शिखरणी, मंदाक्रान्ता, चित्रलेखा, शार्दूल विक्रीडत, शोभा स्रग्धरा, सवैया तरंगता, मदिरा, मालती, चित्रपदा, मल्लिका, माधविका सवैया के लक्षण और उदाहरण वर्णन—छं० ५७—७८ । दुमिल, तन्वी, कमला, भुजंग विजृंभित वर्णन—छं० ७९—८२ । अथ मात्रा वृत्त—गाथा, उपगीति, दोहा, रोला, छप्पय, कुंडलिका, चैापैया, त्रिभंगी छंदों का लक्षण उदाहरण वर्णन छं० ८२—९१ । अथ दंडक वर्णन । सर्वतोभद्र छंद, चन्द वृष्टि प्रपात, मत्तमातंग, अनंगशेषर, कवित्त कामः लक्षण उदाहरण वर्णन—छं० ९२—९७ तक । इति ।

No. 397(*f*). Kāvyadukhana Prakāśa by Mahārājā Śiva Simha of Bhinga (Baharāich). Substance—Country-made

paper. Leaves—26. Size $6\frac{1}{4} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page —28. Extent—275. Anusṭupa Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī.—Place of Deposit—Mahārājā Rājendra Bahādura Simha of Bhingā Rajā (Baharāich).

श्री गणेशायनमः ॥ छन्द बरवा ॥ गौरी सुवन शुभ वदनै रदन विचारु। विघ्न हरन विधि कोधौं यह संसार ॥ १ ॥ वारिज जात षडानन आनन अंक। सिद्धि सदन गज मुख लखि अवदन संक ॥ २ ॥ सुकवार षष्ठमि तिथि सिति वैसाख। प्रगट करयौ यह ग्रंथे करि अभिलाष ॥ ३ ॥ नाम धरयौ या ग्रंथे वरनि विचारि। काव्य दुषन परकासै सुकवि सुधारि ॥ ४ ॥ लषि दुषन उल्लासें कवि पियान। सो संचित करि वरनै अति हित मानि ॥ ५ ॥ नहिं समरथ करिवेको जुक्ति नवीन। याते सुकवि छंदै पदच्युत कीन ॥ ६ ॥ अर्थ पदारथ वेई वरनै सोइ। छंद भेद करि भाषे नाम मिलोई ॥ ७ ॥ नाम प्रगट करि वरनै कवि निज सर्व। हौं कैसे करि भाषों मति अति षर्व ॥ ८ ॥ ताते प्रगट न भाषत राषि छिपाइ। जुकवि सुमति लषि जानै और न कोई ॥ ९ ॥ कौन वरन मंगल अग करि रिपु कौन। सो वरनैं या ग्रंथे लषि कवि तौन ॥ १० ॥ अथ दुषन वर्नन तत्र प्रथम अप्रउक्ति दुषन वर्नन ॥

End—चैापाई ॥ यह पहेलिका जानो विमल। सुधे··········उलटे अमल ॥ ५० ॥ सान। यह प्रहेलिका कहो अनुठो। सुधे सीतल उलटे झूठो ॥ ५१ ॥ पाला। सुनो सर्व प्रहेलिका हाल। सुधे नभ वसि उलटे लाल ॥ ५२ ॥ तारा—छंद बरवा—करि प्रकास दीपक जहं लघु लखिलेन। त्यों दुषनन दुरन कछु यह कहि देत ॥ ५३ ॥ लखि विरोध कछु यामें छमि अपराध। हौं लघुमति कवि गुद मति परम अगाध ॥ ५४ ॥ इति श्री काव्य दुषन प्रकास विरचितायां प्रहेलिका वर्णन नाम त्रितीयोऽध्याय ॥ ३ ॥ समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु श्री महाकाली जीव की सरण हौं ॥ इति ॥

Subject—गणेश बंदना, निर्माण तिथि, ग्रंथ नाम, रचयिता का नाम वर्णन पृ० १—२। अप्रयुक्त दूषण वर्णन, पंच दुषण वर्णन। अमित, बधिर, अगतापंगु, नाम वाक्य, नाश, हीन रस, मृतक दूषण, असमर्थ, जतिभंग, ग्रामीण। व्यर्थ, वायस पांति, मरालिका, अपार्थ वर्णन। कायर स्थूल कृष्ण दूषण और क्रमहीन दूषण कथन पृ० ३—५ तक। क्लिष्ट, कर्णकटु, अनुचोक्षण, पुनरुक्ति, अतत्प्रकर्षन, देश विरोधी, पात्र दुष्ट, काल विरोध, नक्षानक्ष, लोक विरोधी, नेमानेम, न्याय आगम विरोधी, बालमति, अब पक्ष, रसहत वृत्ति, पिड वाक्य विरोधी, वरन वाक्य विरोधी, अवस्था वाक्य विरोधी, भेष वाक्य विरोधी,

दूषन; देश वाक्य विरोधी, परम अपक्षापक्ष, समय सिगार विरोधी दूषण वर्णन पृ० ६—१० तक। कवितालंकार वर्णन। कामधेनु लक्षण, कंकण बंध, कमल बंध, धनुष बंध, गोमूत्रिका, अश्वगति, कपट बंध लक्षण वर्णन, पृ० ११—१५ तक। निरोष्ठ लक्षण, मात्रा रहित, बहिर्लापिका, अन्तर्लापिका, प्रश्नोत्तर लक्षण वर्णन, पृ० १६—१९ तक। पहेलिका लक्षण, घर, सांड, जूता, चना, बंदूक, जाल, यशोदा, कुच, नौका, मराल, खटिया, बाट, राज, मोहर, जर, सर, वारन, कपि, नर, बाग घोड़े को, गज, मन, पगड़ी, बरगद, सुआ, सीतल, बाजू, दाल, सारस, बरद, बादर, छूरी, काम, चकरी, चोर, घाम, दादुर, धाम, मकरी, नींद, बेसर, चोरी, चोरकानेकी नारि नथन, सुधाकर, नगर, सान, पाला और तारा आदि पहेलिकाओं का वर्णन है, पृ० २०—३६ तक।

No. 397(*g*). Rāma Chandra Charita by Mahārājā Śiva Simha of Bhingā Rājā (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—6¼ × 4¾ inches. Lines per page—30. Extent—100 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of Composition—Samvat 1857 or A. D. 1800. Place of deposit—Mahāraja Rājendra Bahādura Simha, Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा। जो करता हरता सदा पालनता संसार। तापद बंदन कीजिये रहत सबनि तें पार ॥ १ ॥ ससि वेस्य मुनि मत निरषि बरने कथा विचारि। रामचन्द्र के गुन कछु अति अपूर्व सु निहारि ॥ २ ॥ छंद हरिगीतिका—पूरब हिरन्य कसिप भयो दिति तनय दैतनिराज है। नरसिंह रूप धरो हरी तिन हयो देवनि काज है ॥ विश्रवा सुत पुनि सो भयो नकता चरो सो आइ है। तिहि नाम रावन जानिए सब लोक को दुखदाइ है ॥ ३ ॥ कवित्त—ताहि बधिबे कौ दसरथ सुत भयो हरि लीन्हो अवतार नाम राम जग जानिए। तोरयो हर धनुष विदेह धाम राम जब पक्ष वर्ष रस सीय उमिरि प्रमानिए ॥ द्वादस वरस पुनि अवध बितायो धाम त्यागि बनवास बेष तापस बखानिए। रामतन नष सीय छूति वर्ष जानि मन देखिये बहि भाम बिपिन वास जानिए ॥

End—छंद गीतिका—पुत्र दै श्रीराम को पुनि सीय वास धरा किए। ताहि सों गनि लीजिए पपदि गुन इंदुहि ले दिए ॥ अंक लषि परिमान वर्ष सुराज पुनि रघुवर कहे। फिर दै पुत्रन्ह अनुज पुरजन सहित सुरपुर को लहे ॥ ४१ ॥ दोहा—मासवार तिथि सम प्रभू जो कछु कीन्हे कर्म। त्यागि और सोई कहे यामे कछु न भर्म ॥ ४२ ॥ रघुवर चरित प्रकास कर बरने ग्रंथ

विचारि। रामचन्द्र आनन्द जग बंद फंद अवतारि ॥ ४३ ॥ निर्माणकाल :—
वेद ससी जग कुसल तिथि सप्तमि सित गुरुवार। मास आदि है पौष लखि संपूरन सु विचार ॥ ४४ ॥ मुकि बरन कल्यान पद पर्द द्विदल रिपु साल। ये पूरन निनि-नाम त्रिहि कियो ग्रंथ हित चाल ॥ ४५ ॥ इति श्री रामचन्द्र चरित संपूर्नम् सुभः ॥

Subject—प्रार्थना, निर्माणकाल कथन, अवतार के कारण वर्णन। छं० १—४ तक—

राम विवाह वर्णन, वन गमन, सूर्पनखा का नाक कान छेदन, सीता-हरण, सुग्रीवमिलन, सेतु-बंधन का तिथियों सहित वर्णन। छं० ५—१९ तक।

अंगद रावण संवाद, मेघनाद का नागफांस में बांधना, धूम्राक्ष-वध, अकम्पन प्रहस्त, कुंभकर्ण वध, अतिकाय वध, नारान्तक वध, अकंपन वध, लक्ष्मण-शक्ति मेघनाद-वध-वर्णन तिथियों सहित। छं० २०—२७ तक—

महापार्श्वादि वध, रावण-युद्ध, रावण वध, विभीषण को राज तिलक, राम का अयोध्या गमन, भारद्वाज के आश्रम में आना, राम-भरत भेंट, राम का सीता को परित्याग, लवकुश उत्पत्ति, सीता जी का अवसान, राम का राज्य को बांटना, राम का सपरिवार स्वर्ग जाना, निर्माणकाल और कवि वर्णन तिथियों सहित। छं० २८—४५ तक।

इति।

No. 397(*h*). Śrutibōdha Bhāshā by Mahārājā Śiva Simha of Bhingā Rāja (Baharāich). Substance—Country-made paper. Leaves—7. Size—6½ × 4½ inches. Lines per page—32. Extent—200 Anusṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Mahārāja Rājendra Bahādura Simha Mahodaya, Bhingā Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सोरठा ॥ गुरु लघु मन आनि प्रणत गौरि हर विमल पद। कहे सुकवि पहिचानि छंद सबै श्रुति बोध के ॥ १ ॥ दोहा ॥ आदि मध्य पुनि अंत गो भगण लघु बिचारि। बरण लो पहिचानिय मन गज सुकवि निहारि। शास्त्र विदु विसर्ग गो संयुक्ता दिन अर्क। चरन अंत लघु बरन गो कहि फलि तादि विकल्प ॥ ३ ॥ अथ छंद लक्षणम् छंद आर्या यथा ॥ प्रथम तीसरे आनो रस दो मत्ता विचारि के ठानो। दुजे अंक दुभानु पद चौथा आर्या तिथि भानु ॥ ४ ॥ गीति छंद यथा ॥ विषमे मान करीजे ॥ सब पद मत्ता अंक है दीजे ॥ या विधि सों जहं कीजे। गीति छंद सोई नाम कहीजे ॥ ५ ॥

End—अथ ऊन विंसाक्षर शार्दूल विक्रीड़ित छंद ॥ यथा ॥ आदौ दो पुनि तीसरो रस वसू गो द्वादसो आनिता। आदित्यौ सम येक चौदह वसू द्वै दोर्घ सो मानिता ॥ त्योंही नवुह ऊनविंस गुरु विश्रामो तहां आनिता। मार्थे सेस सुभानु मेह सुभगो सार्दूल विक्रिड़िता ॥ ४२ ॥ एक विंसाक्षर स्रग्धरा छंद यथा ॥ चत्वारो जासु वर्ना प्रथम सु गुरु कै षष्टगो सप्त मो है। कीजै गो चौदहो सो तिथि रिषि दस द्वै धृतिः विंशो सुगो है ॥ एको विंसाग यानो विरति हरदसो छंद से सो कहो है। गाय माई कवी सो सकल गुन सुतो स्रग्धरा नाम सो है ॥ ४३ ॥ इति श्री श्रुत बोध समाप्तम् शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु ॥ श्री महाकाली जीव की सरण हैं ॥ श्रीराम ॥ इति ॥

Subject—गणेश गौरि हर वन्दना वर्णन—छं० १। गण व दीर्घ ह्रस्व वर्णन—छं० २—३। आर्या छंद, गीति, उपगीति, ह्रोति छंद लक्षण उदाहरण वर्णन-छं०—४—७। पंक्ति छंद, सस्विदना, मदलेषा, अनुष्टुप श्लोक, मानव क्रोड़ा, नाग स्वरूपिणो, विद्युनमाला, मणिबंध लक्षण व उदाहरण वर्णन छं०—८—१५। पंचकमाला, मंदाक्रांता, हंसी, सालिनो, दोधक इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा, उपजाति छंद लक्षण व उदाहरण—छं० १६—२३। विपरीति पूर्वा, रथोद्धता, स्वागता, तोटक, भुजंगप्रयात, प्रमिताक्षरा, द्रुत विलंबित, हरिनोसुता, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, प्रभावतो छंद के लक्षण व उदाहरण वर्णन, छं०२४—३५। प्रहिर्षिनी, वसंततिलका, मालिनी, हरिनी, शिषरनी, पृथ्वी, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा छंद के लक्षण व उदाहरण वर्णन। छंद—३६—४३ तक। इति ॥

No. 398. Śiva Simha Sarója by Śiva Simha of Kānthā, Unao. Substance—Country-made paper. Leaves—490. Size—8 × 6 inches. Lines per page—56. Extent—9,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1931 or A.D. 1874. Place of deposit—Ṭhākura Digvijaya Simha, Tālukedāra, Village Dikaulī, Post Office Bisawañ, District Sītāpur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सिवसिंह सरोज लिख्यते ॥ अकबर कवि श्री मोहम्मद जलालउद्दीन अकबर बादशाह। शाह अकब्बर बाल की बांह अचिंत गही चलि भीतर भौने। सुन्दरी द्वार दी दृष्टि लगाय के भागिबे को भ्रम पावत गौने ॥ चौकत सी सब ओर विलोकत शंक सकोच रही मुख

मैाने। यों छवि नैन छबोले के छाजत माना विछोह परे मृगछौने ॥ १ ॥ आह पकब्बर एक समै चले कान्ह विनाेद विलोक बालहिं। आहट ते अबला निरख्यो चकि चौंकि चली कर आतुर चालहिं। त्यों बलि बेनी सुधारि धरी सुभई छवि यों ललना अरु लालहिं। चंपक चारु कमान चढ़ावत काम ज्यों हाथ लिये अहि बालहिं ॥ २ ॥ केलि करै विपरीति रमै सो अकब्बर क्यों न रतो सुख पावै। कामिनि की कटि किंकिनी कान किधौं गन प्रीतम के गुण गावै ॥ बिदु छुटो मन में सो लिलाट ते यों लट में लटको लगि आवै। साहि मनोज मनोचित में छवि चंद लए चक डोरि खिलावै ॥

End—(१) हरीराम प्राचीन ॥ संवत १६८० । इनका नख सिख अति सुंदर है। (२) हिमाचल राम कवि ब्राह्मण भटैली जिला फैज़ाबाद सं० १२०४ सोधी सादी कविता है ॥ (३) हीरालाल कवि ॥ शृंगार में बहुत उत्तम कवित्त हैं। (४) हुलास कवि—ऐज़न ॥ (५) हरचरण दास कवि। इन्होंने एक ग्रंथ भाषा साहित्य में महा सुंदर अद्भुत अपूर्व बृहत कवि वल्लभ नाम बनाया है इस ग्रंथ में अपने ग्राम सन संवत आदि का पता नहीं दिया है। (६) हरिचंद्र कवि बरसाने वाले ग्रंथ बहुत सुंदर बनाया लेकिन सन संवत नहीं। (७) हजारी लाल त्रिवेदी विद्यमान हैं। नीति शांति संबंधी इनकी काव्य सुंदर है। (८) हरिनाथ ब्राह्मण काशी निवासी १८२६ संवत इन्होंने अलंकार दर्पण नामक ग्रंथ बनाया। (९) हिम्मत बहादुर नवाब ॥ बलदेव कवि ने सत-गिरा विलास में इनके कवित्त लिखे हैं ॥ संवत १७६५ वि०। (१०) हिम्मतराम कवि मदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है। (११) हरिजन कवि ललितपुर निवासी संवत १९११ राजा ईश्वरी नारायन सिंह काशिराज के यहां रसिक प्रिया की टीका की ॥ (१२) हरिचंद कवि बंदीजन चरखारी वाले। राजा छत्रसाल चरखारी के यहां थे ॥ (१३) हुलास राम कवि सालिहोत्र भाषा में बनाया। इति श्री शिव सिंह सेंगर कृत शिव सिंह सरोज समाप्तं संवत १९३१ लिषतं गौरीशंकर ॥

Subject—इस शिव सिंह सरोज में लगभग १००० कवियों के नाम पुस्तक नाम उनकी कविता का कुछ नमूना निर्माणकाल निवास स्थान का पूरा पता आदि भली भांति वर्णन किया है। पुस्तक उत्तम है।

No. 399(*a*). Rasapiyūsha Nidhi by Soma Nātha of Muttra. Substance—Country-made paper—Leaves—148. Size—12 × 7½ inches. Lines per page—30. Extent—2,775 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1794 or A.D. 1837. Date of

manuscript—Samvat 1941 or A.D. 1844. Place of deposit—Pandita Syāma Vihāri Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रसपीयूष लिख्यते । छप्पय—सिंधुर बदन अमंद चंद सिंदुर भाल धर। एकदंत दुतिवंत बुद्धि निधि अष्ट सिद्धि वर ॥ मद जल श्रवत कपोल गुंजरत चंचरीक गन ॥ चंचल श्रवन अनूप थोंदि थिरकति मोहति मन ॥ सुर नर मुनि बरनत जोरि कर गुन अनंत इमि ध्याइ चित । ससिनाथ नंद आनंद कर जय जय श्री गननाथ नित ॥ १ ॥ कवित्त—अमल अनंत नव नीरद बरनवंत प्रगटे अवनि पै अनादि निरधारे हो । असुर बिदारे दुख पुंज निरवारे कोरि सकल सुधारे काज गूढ़ गुन भारे हो ॥ जहां जेहि ध्यावे तुम तहां ठहराये आइ रूप उजियारे सोमनाथ उच्चारे हो । जै श्री रघुराइ कह्यो चारो फल दाइक दुलारे दशरथ के हमारे प्रान प्यारे हो ॥ २ ॥ कंचन के रंग अंग आनन अदन राजै उद्धत फंदैया नीर सागर दुरंत के । श्री को महामंगल संदेसो पहुंचैया और लंक विनसैया औ फिरैया सब संत के ॥ सोमनाथ बरनै समीर के सपूत सांचे सेवक समीपी रघुबीर बलवंत के ॥ कंत अवनी के हैं अनंत सुख पावै गुन गावैं नर ऐसो जो हठीले हनुमंत के ॥ ३ ॥

End—सवैया—सागर सील उजागर कीरति आनन्द के उपजावन हारे । आदि अनादि सरूप निरंजन इन्द्र कीं आछे बिभ्कावन वारे ॥ मोहन श्री ससिनाथ महाजन कीं घने खेल खिलावन हारे । लाज हमारो है रावरे हाथ ऐ नंद को गाय चरावन वारे ॥३०४॥ निर्माणकाल—सत्रह से चौरानवे संवत जेठ सुमास । कृष्णपक्ष दसमी भृगी भयो ग्रंथ परकास ॥ ३०५ ॥ छंद—श्री रघुनंद आनंद कंद हिय में ध्याइ सुख सरसाइये । ३०६ ॥ इति श्री मन्य महाराज कुंवर प्रताप सिंह हेत कवि सोमनाथ विरचिते रस पीयूष निधौ अर्थालंकार संसृष्टि शंकर अलंकार वर्नन नाम एक विंसति मस्तरंगः २१ ॥ श्री रस्तु शुभ मस्तु श्री संवत् १९४१ श्रावण शुक्ल प्रतिपदायां बुधवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्री कृष्णाय नमोनमः ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण पृ० १—२। राजकुल वर्णन—पृ० २—४। सभा वर्णन—पृ० ५। कविकुल वर्णन—पृ० ५—६। पिंगल, पत्तार, मर्कटी, पताकादि वर्णन—पृ० ७—१२ तक। मात्रावृत्त छंद वर्णन—पृ० १३—२०। वर्णवृत्त छंद वर्णन—पृ० २१—२४। काव्य सामिग्री लक्षण—अभिधा, व्यंजना आदि का वर्णन—२५—३२ तक। ध्वनि भेद वर्णन—पृ० ३३—३६। शृंगार रस भेद तथा स्वकीया नायका सभेद वर्णन—पृ० ३७—४६ तक। परकीया तथा गणिका नायिका सभेद वर्णन—पृ० ४७—५०। अन्य संभोग दुःखिता तथा

मानिनी नायिका समेद वर्णन—५१—५२। स्वाधीनपतिका, खंडिता, कलहंतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता, वासकसज्या, अभिसारिका, प्रोषितपतिका, प्रवास्यत्पतिका, आगमच्छति पतिका, नायका भेद वर्णन—पृ॰ ५३—६८ तक। उत्तमादि नायका तथा सखी भेद, उपालंभ, परिहास, दूती कर्म वर्णन- पृ॰ ६९—७२। नायक निरूपण, सखा, दर्शनादि भेद वर्णन पृ॰ ७३—८२। हाव भेद वर्णन—पृ॰ ८२—८६। वियोग श्रृंगार तथा दश दशाओं का वर्णन—पृ॰ ८७—९०। हास्य रस, करुण रस, रौद्र, वीर भेद, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शांत रस का वर्णन—पृ॰ ९१—९६। भाव ध्वनि वर्णन—९७—१०२। मध्यम काव्य गुणीभूत व्यंग के आठ भेद सहित वर्णन—१०३—१०६। काव्य के दोष वर्णन, वाक्य दोष, पद असमर्थ दोष, अश्लील, क्रमहीन, व्याहत, पुनरुक्ति आदि का वर्णन—पृ॰ १०७—११२। काव्य गुण वर्णन। माधुर्य, प्रसाद, ओज वर्णन—पृ॰ ११३—११४। चित्र काव्य और अनुप्रास वर्णन—पृ॰ ११५—१२०। अर्थालंकार निरूपण, पृ॰ १२०—१४७ तक। संसृष्टि और संकर अलंकार वर्णन तथा निर्माण संवत कथन—पृ॰ १४७—१४८। इति।

No. 399(*b*). Rasapiyusha Nidhi by Soma Nātha. Substance—Country-made paper. Leaves—76. Size—12 × 5 inches. Lines per page—28. Extent—4,332 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition Samvat 1794 or A. D. 1737. Date of manuscript—Samvat 1948 or A. D. 1891. Place of deposit—Ṭhakura Digviyai Simha Tālukedāra, Village. Dikauliyā, Post Office Bisawān, District Sitāpur.

No. 400(*a*) Śrī Jugalaśat kī Ādi Bāṇī by Śrī Bhatta. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—12 × 6 inches. Lines per page—48. Extent—800 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Paṇḍita Ganeśji, Village Rakabā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich, Tahsil Kesarganj (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री लाड़िली लाल की जय। श्री निंबादित्यायनमः श्री आदिवाणी जुगुल शत श्री भट्ट जी महाराज कृत लिष्यते संवत १८९८ माघ मासे कृष्ण पक्षे शुभ दिन॥ छप्पै॥ कल्प विटप श्री भट्ट प्रगट

कलि कल्मष । दुष दूरि कर जे नर पावै सागर ता । अब तिनको हरद्दो तत दरसो ते होहि हस्त जा मस्तक धरहों गुन निधि रसिक प्रवीन भक्ति दसधा के आगर । राधाकृष्ण स्वरूप ललित लीला रस सागर कृपा दृष्टि संतन सुषद भक्ति भूप द्विज वंशवर कल्प विटप श्री भट्ट कलि कल्मष दुष दूरि करि ॥ अथ आदि बाणी श्री जुगुल शत तत्र प्रथम सिद्धांत सुष लिष्यते ॥ पद आभास दोहा ॥ राग केदारो ॥ चरण कमल की दीजिए सेवा सहज रसाल घर जायो मुहि जानि के चेरो मदन गोपाल ॥ पद इकताला ॥ मदन गोपाल सरन तेरी आयो । चरन कमल की सेवा दीजे चेरो करि राषो घर जायो ॥ धनि धनि मात पिता सुत बंधु धन जननी जिन गोद खिलायो । धनि धनि चरन चलत तीरथ को धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायो । जे नर विमुष भये गोविंद सो जन्म अनेक महादुष पायो । श्री भट्ट के प्रभु दियो है अभय पद जम डरयो जब दास कहायो ।

End—तुम हमरे घर के जो पुरोहित लगों तिहारे पाईं । यह बालक चपला सों न चोके तैसे करो उपाई ॥ श्रावण शुक्ल पक्ष एकादसी गोप मित्र सब आई । बोले गर्ग विचारि मंत्र को सुत बनो भलो नंदराई । पच रंग पाटको दाम रचबो नाना रतन लगाई ॥ आगम निगम मंत्र सो नीके रक्षा करो बनाई ॥ श्री ब्रजराज आचरज सो मुनि तैसेई करवाई ॥ मंत्र पवित्राख्यान कंठ मैं गर्ग दई पहिराई ॥ मानो घन थिर कीन्हो दामिनि सोभा लषन सुहाई । बाट रोम गल सब ब्रजपुर में श्री भट भई मन भाई ॥ श्री लाल जी की बधाई लिष्यते ॥ आभास दोहा ॥ भागवती जसुमति अति भां । प्रफुल्लित लषि लाल गोकुल मंगल आजु लषि बाढ़री बिसद बिसाल । पद तिताला । गोकुल मंगल आजु बधाई । रानी जसुमति के प्रगट है सुन्दर कुंवर कन्हाई । गोपी गोपी थार लिये कर रवि छवि देषि लजाई ॥ गावत आवत पावपावत मूरति लगति सोहाई । देषि देषि मुष स्याम सुन्दर को अंग अंग सचुपाई ॥ भागवती जसुमति रानी अति सुतजायो सुषदाई । नृत्यत कीरति मुषिया जिन मुंह कमला करत बड़ाई । कर सनिमान सबन को तैसे जो जैसे मन भाई ॥ नंद सदन में दूध दही की गोपिन कीच मचाई ॥ आगन गोप ग्वाल गन नाचत आनंद मगन महाही । भाग सराहत श्री जसुमति को भाषत भूप भलाई ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण राधिका की छवि ब्रजलीला वर्षा बहार, लालजी की बधाई, पवित्रा आदि का वर्णन है ।

No. 400(*b*) Śri Jugulaśataka by Śri Bhaṭṭadeva. Substance—New made paper. Leaves—20. Size—10 × 6 inches. Lines per page—40. Extent—650 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—

Samvat 1652 or A. D. 1595. Place of deposit—Śrī Nimbārka Pustakālaya Maṇḍira Bābā Mādhavadāsaji Mahanta, Nānpārā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गाथा सर्वेश्वरो विजयनेतराम्। श्री निम्बार्क दीनबंधु सुनि पुकार मेरो। पतितन में पतित नाथ शरण आयो तेरो। तात मात भगिनी भ्रात परिजन समुदाई। सब ही संबंध त्यागि आयो शरणाई। काम क्रोध लोभ मोह दावानल भारो। निशि दिन में जरौं नाथ लीजिए उबारो। अंबरीष भक्त जानि रक्षा करि धाई। तैसेई निजदास जानि राखौ शरणाई। भक्त वत्सल नाम नाथ वेदन में गायो। श्री भट्ट तव शरण आय अभयदान पायो॥१॥ रेमन वृन्दा विपिन निहार। यद्यपि मिलें कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार। विपिन राजसो याके बाहर हरिहू को न निहार॥ जय श्री भट्ट धरि धूसर तनु यह आशा उर धार॥२॥ दोहा॥ सेव्य हमारे हैं सदा वृन्दा विपिन विलास। नंद नंदन वृषभानु जा चरण अनन्य उपास॥

End—अथ फल अस्तुति लिख्यते। श्री भट्ट प्रगट युगुल शत पढ़ै कंठ तिहुं काल। युगुल केलि अवलोकतें मिटै विषय जंजाल। नयन बाण पुनि राम शशि गनौ अंक गति वाम प्रगट भयो श्री युगल शत यह संवत अभिराम॥१६५२ संवत। एक छप्पय १ दोहा आदि अंत मधिमान। शत पद आभासन सहित युगुल शत हद परमान॥ छप्पय रूप रसिक सब संत जन अनुमोदन याको करौ। दस पद हैं सिद्धांत बीस अरु वृजलीला पद सेवा सुख सोलह सहज सुख एक बीस हद। पाठ सुरत इक उनबीस उत्सव लहिए अद्भुत श्री भट देव रच्यो शत युगुल जु कहिए निज भजन भाव रुचितें किये हते भेद यह उर धरौ रूप रसिक सब संत जन अनुमोदन याको करौ हस्ताक्षर किशोरीदास।

No. 401(*a*). Salihotra Prakaśikā by Rājā Śrīdhara of Kheri Substance—Country-made paper. Leaves—160. Size 10/6 inches. Lines per page—44. Extent—5,280 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and Verse. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1896 or A. D. 1839. Date of manuscript.—Samvat 1920, or A. D. 1863. Place of deposit.—Thākura Durgā Simhaji, Dikauliyā, Post Office Biswān, District Sītāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ सालहोत्र प्रकासिका लिख्यते॥ श्री गणपति गौरी गिरा हरि हर के पद ध्याय। श्रीधर विरचित ग्रंथ को हय कुल को सुखदाय॥ छप्पै छंद॥ सिर पर लसत किरीट भाल पर तिलक विराजत।

कुंडल कानन माझ गरे बनमाला छाजत ॥ पीताम्बर कटि कसे हाथ दक्षिनता जनवर। स्यंदन में चारूढ़ पस्त्र रसो वाएं कर ॥ हिम पारथ सो मुसकात लषि मोषन कहो सैना दरै। यहि भेष गुविंद घनंद मय मंगल श्रीधर को करै ॥ छप्पै छंद ॥ ब्रह्मा के सुत पत्रि पत्रि के चन्द्र बषानैा। जल स्वरूप सो तासु तनय गुन ग्यान निधानैा ॥ तासु बंस में भय मुनिंद महीपति जानो प्रगट सालभल होय तासु राजा उर चानैा ॥ तिन परसुराम सो युद्ध करि देह छोड़ि सुरपुर गये। सुत भूप भय वाहि देस मां सकल उपद्रव बहु भये। दोहा ॥ तब रिषि चल्त विचार गे परसराम के पास। भाष्यो बंस मुनींद्र को किहि बिधि होइ प्रकास ॥

End—कफ को होइ मिजाज जेहि चना देहु तेहि चानि ॥ एक मिजाजहि मारद्यो मैा परदावा को पानि ॥ टका तीन परमान सो कम दाना नहिं देइ ॥ टका तीन से के ऊपर दाना पधिक न लेइ ॥ या विधि दाना दीजिए कहद पह भूप निहारि। जासा बाजी लघु रहै लीजै लखो विचारि ॥ सारंगधर पह नकुल मत सालहोत्र को पंथ। सो बिचारि अनुसार मति भाषा कीन्हो ग्रंथ ॥ देषि सरल हरषत सुकवि षल निंदत हैं ताहि। देषि दर्प उर पाचरे कहु करात हैं ताहि ॥ सुकवि चतुर तिहुं लोक के तिन सब को सिर नाइ। विनती करत विनोत हैं सो सुनि ये चितुलाइ ॥ प्रगट प्रताप सुरावरे मेरो चूक विचारि। चाव दूक तुम पापु हैा दीजै ताहि सवारि ॥ सोरठा ॥ पट चानन पद ध्याइ गैारि मंद गिरिजा गिरिस। हरि कुल को सुषदाइ श्रीधर कीन्हो ग्रंथ यह ॥ दोहा ॥ सालहोत्र प्रकासिका पढ़ै सुनै चितुलाइ ॥ बाजो ताके बहुत बढ़ै गिरिजा होइ सहाइ ॥ इति श्री सालहोत्र प्रकासिकायां श्रीधर सुकवि विरचितायां ग्रंथ संपूर्णम् सुभ मस्तु मंगलं ॥ दिनषत मोहन केर गोचनो गाडे सो जानिये ॥ संवत १९२० मारग मासे कसन पछे तिथो तोसवों ॥

Subject—इस ग्रंथ में घोड़े की जाति, उत्पत्ति के देश रंग, शुभ अशुभ लक्षण, दाष, रोग, औषधियाँ सवारी की रीति बैठक, घोड़े के भोजन की रीति, घोड़ा रखने के स्थान, आदि का भली भाँति वर्णन किया गया है।

No. 401(*b*). Vidwan Moda Tarangini by Rajā Śridhara of Kheri. Substance—Country-made paper. Leaves—136. Size—8 × 6 inches. Lines per page—34. Extent—2,313 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1900 or A. D. 1843. Date of manuscript—Samvat 1910 or A. D. 1853. Place of deposit—Thakura Mahaswara Simha, village Dikauliyā, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विद्वान्मोद तरंगिनी लिख्यते। कवित्त ॥ इतै सोन मुकुट विराजै सीस फूल उतै इतै भाल बेंदी उतै बेंदी है पषान को। इतै श्रुति कुंडल चौका उतै राजत है इतै बनमाला उतै माला मुकतान को॥ इतै पीतपट उतै सारी जरतारी सोहै दोऊ नेह भरे जागे मानौ एक प्रान को॥ श्रीधर को बानी बन्दै वर वरदान सदा नंद को किसोर औ किसोरी वृषभान को॥ सोरठा ॥ सुधा जानियो नाम वपत पिता को लघु तनय। द्विज मत है अभिराम श्रीधर कविता यो कह्यो ॥ दोहा ॥ लै कवित सब कविन के निज मति के अनुसार। विद्वन्मोद तरंगिनी सुभ संवत अवतार॥ प्रथम मंगलाचरन करि कहौ ग्रंथ को हेत। नवरस यामें कहत हौं समुझौ बुद्धि निकेत ॥ कवित्त ॥ कारन भाव औ भाव को रूप नवौ रस पूरन कै दरसायो। नायका दूती रसौ मिलि भाव इन्है करि न्यारोई भेद बतायो ॥ जन्म पिता अवरोध विरोध औ दृष्टि सबै रस भांति जनायो॥ विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर आनद आनि बखानि बनायो ॥

End—दोहा ॥ एक बिनती मैं करत हौं कविजन सों कर जोर। बिगरो बरन संभारियो मोहि न दीजो खोरि॥ राधिका कृष्ण को यामें चरित्र विचित्र महा मुनि रीझि है ग्यानो ॥ अंग उमंग सहेत न छो रस राजत है अति हो सुखदानो॥ विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर आनंदरूप अनूप बखानो॥ याहि पढ़े गुन आनंद औरहि बुद्धि औ सिद्धि मिलै मनमानो ॥ कुंडलिया छंद ॥ कविता या में लसत है सत कवि को अति चारु। विद्वनमोद तरंगिनी करो कंठ को हार॥ करो कंठ को हार चारु श्रीधर कवि बरनो। सब अंगन ते सदा विराजत है मन हरनो॥ हरनो दुष अरु दोष तिमिरि कोर जैसे सविता। याको पढ़ि विश्राम लोग करि हैं वर कविता ॥ दोहा ॥ नव रस जल मैं उंम लहरि भाव भंवर से जानि। विद्वनमोद तरंगिनी श्रीधर कहो बखानि॥ भाव वहै सात्विक कह्यो अविमुष सात्विक जानि। बासो रस्तो तरंग मैं श्रीधर कह्यो बखानि ॥ इति श्री श्रीधर कवि विरचितायां विद्वनमोद तरंगिनी ग्रंथ सम्पूरन ॥ मासे अगहन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ नवमीयां बुधवासरे संवत १९०० लिषतं मोहनलाल शुक्ल संवत १९१० ॥

Subject—इस ग्रंथ में नवरस भाव विभाव नायका नायक भेद और लक्षण बर्णन कहे गये हैं।

No. 402. Sūrśataka Purvardha 'Ṭikā' by Śrīdhara of Benares. Substance—Country made paper. Leaves 34. Size—12 × 6 inches. Lines per page—11. Extent—748 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in Prose and

Verse. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1882 or A. D. 1825. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D. 1864. Place of deposit—Pandita Rāma Shankara Vājpai Village Bahori ka Vajpai ka Purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीवल्लभायनमः ॥ सूरदास जी का कूट लिख्यते ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ सूरदास जी के कीर्तननि को संग्रह करिबे को प्रथम मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ श्रीवल्लभ विट्ठल पद्न बंदत विसद विचार। बहुत सुविधा बुद्धिवल विनसत विकट विकार ॥ १ ॥ यह संसार असार में हरि कीर्तन सुषसार। कहत करत सब सज्जहू तौ यहड़े पवर विसार ॥ उपकारक हैं सबन के हेतु अर्थ समुझाय। ताते गाये भक्त जन भाषा सरल सुभाय ॥ सूरदास तिन मैं भए जगत जात ज्यों सूर। गायो सब विधि कर सुजस हरि लीला रस पूर ॥ जिनके पद में गूढ़ बहु अर्थ भाव रस व्यंग। सुभ परैं जेते तिते संग्रह कियो सुसंग ॥ श्रीमत श्रीगोपाल सुत श्री श्रीधर सुष दाय। जिनकी आज्ञा ते कियो माव नगर में चाय। बाल कृष्ण की बीनती सुनिये रसिक सुपंथ। लीजै सुमति सुधारि कै सूर शतक यह ग्रंथ ॥

End—राग नट ॥ मूल ॥ सुनरी हरिपति आजु विराजैं ॥ हरि गति चलत मंद भयो हरिचन वलकरि हरिदल साजे। हरि को चाल चलो चंचल गति हरि को हरि दुष छाजे ॥ सूरदास हरि को मन इक छिन विरह ताप तन भ्राजे ॥ अर्थ ॥ माननी नायका सों दूती को उक्ति मनाय के पधराय ले जात हैं ता समय को बरनत है ॥ सुनिरी हरि तेरे पति आज विराजे हैं संकेत में अथवा हरि जो मृग तेरे नेत्र तिनके पति चन्द्रमा सो प्रियतम को श्रीमुष आज विराजे हैं ॥ प्रसन्नता सों ताते नेत्र को मिलावो। हरि गज को मंद गति चलत विलंब होत है हरि जो सूर्य को बल मंद भयो अस्त भयो बल करि के हरि जो इन्द्र ताको दल मेघन को घटा होय आयो ताते उतावल सो चलिबे को समय है अथवा सूर्य अस्त भयो अब हरि जो काम देवता को दल चन्द्रोदय पुष्पन को विकास त्रिविधि पवनादिक सब सज्ज भये ताते वेग चलो ॥ अथवा तिहारे मनावत तो विलंब भयो अब चलिबे मेंहू विलंब होत हरि जो चन्द्रमा सो मंद भयो और हरि जो सूर्य ताको बल अरुनोदय की बिरियां भई ताते वेगि चलो ताते अब हरि हस्ता की गति चंचलताई से चलो ॥ अथवा हरि जो सर्प सो सर्प को परियाय दूसरो नाम उतावन को है सो उतावल सो चलो अथवा हरि जो पवन सो तोको जो पवन की नाई चलनो चाहिए ॥ काहेते जो हरि प्रियतम को हरि जो काम

ताको दुष है ताते अथवा हरि को दुष है सो तुम चलिके हरौ ॥ हरि जो पिय-तम तिनको तिहारे भजतें सुरति किया तें विरह ताप तन के सब भाजेंगे ॥ ताते वेगि चलैा अथवा सूरदास जो कहने हैं यह जो हरि जू को मान प्रसंग को लीला को भजन इक छिनु किए ते विरह ताप तन को भाजै ॥ इति शूर शतक की पूर्वार्ध संपूरन ॥ यह इतिहास सब पद को अर्थ भयो सुषदाय श्री गिरिधर महराज को अमित कृपा बलपाय संवत अष्टादस शतक अस्सो पर द्वै लेष मार्ग शिर वदि सतमी कवि कविता पथ देषि ॥ संवत १८८२ ॥

Subject—इस सूर शतक पूर्वार्ध में श्री श्रीधर महाराज ने सूरदास कृत कूट राग की टीका की है जिससे भली प्रकार पदों के अर्थ समझ में आ जाते हैं।

No. 403. Brahamavaivarta Purāna by Śri Govinda. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—9 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—280 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1867 or A.D.1810. Date of manuscript—Samvat 1952 or 1895 A.D. Place of deposit—Paṇdita Bhagwān Dīnaji Miśra Vaidya, Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनम: ॥ अथ ब्रह्मवैवर्त्त लिख्यते ॥ षट पद ॥ गौरोनद्र यश अलंकार कविता युवती को राज अर्थ असि उक्ति वश्य कीन्हो जिन नीका ॥ यक्त ग्रंथ विच बोच फिरत जेहि दोहि नाम की ॥ तारि कोश कारक सो रहत कर सिद्धि धाम को ॥ जन जब गोविन्द मन कर्म वचन पंकज पद निज हिय धरत ॥ तब सगुन पानि निदान जगती कलिन्द तिनकर परत ॥१॥ कृपा अम्ब अवलंब आसकनि रलि विकशित कर। करन घ्राण लहि सुरभि ताहि तन विकृत करसि वर ॥ यथा ॥ तथ्य सब निरषि पाइ हरि रूप जानि करि ॥ मेघा वरकर भान पदारथ पर्म पाइ धरि ॥ मृगमद विशाल राधारमण दुर्ज हदे मम तव धरिय ॥ तेहि सुरभि उदै अस्ताचल पिदिविभुनल वासित करिय ॥ २ ॥ छंद भुजंगप्रयात ॥ सुधो देवो पद्मालया चारु सोहैं ॥ पदाब्जै नसं भृंग नेत्राभि मोहे ॥ महामोह विध्वंश कै ध्यान मानैा ॥ किधौं ईश है के अमदोश जानैा ॥ ३ ॥

End—नंद अनंदहि पाइ पाइ सुत गोविंद श्री आधारा। विप्र वृंद सब पूजि पूजि कै दीन्है दान अपारा ॥ ४२ ॥ मन हरन ॥ सुनत जगत ईश कनक प्रदान करि काम धुक काम तरु अग पद्यु जानियो ॥ सुरतपि विधि द्विज रूप धरिउ चितामनि माजिपरो भौव हरि सब सुष दानियो ॥ विष्णु लखि हिय

श्ररि सागर निवाश करि सागर उदर ताप श्रति दुख दानिये ॥ दानि बराह लाज याह करि यह गतिदान प्रमान का विधि बखानिये ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ मह श्रकाश-वानी बहुरि कंशकाल वृजराखि ॥ कन्या नंदहि श्रानि बसु दई श्रापनी माखि ॥ ४४ ॥ छंद ॥ नंद नंद सुन्यो । नृप सीस धुन्यो ॥ जोवको पठई । छगा माह हई ॥ ४५ ॥ इति श्री गोविंद विरचिते राधाकृष्ण विनोदे राधाकृष्ण जन्म वर्ननो नाम तृतीयो सर्गः ॥ ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त पुर्वार्द्धान्तरस्य गोलोक कथा प्रसंग सम्पूर्णम माद्रकृष्ण तिथौ २ सेवा ॥ संवत १९५२ लिखित्वा शिवरत्न द्विज न वासस्थान थहेल्या पाठनार्थ रामबिलास मिश्र वासथान ब्रह्मा:च चौक बाजार के द्वारा ॥ राम राम ॥

पृ० १—१२ तक—पुस्तक का नाम, कविका श्री कृष्ण राधिका से प्रार्थना करना, निर्माण संवत व ईश्वर की महिमा का वर्णन, पुनः श्री कृष्ण की महिमा श्रादि का वर्णन किया है। पृ० १३—२३ तक—पृथ्वी पर श्रधिक पाप होने के कारण पृथ्वी का गाय रूप में भगवान के निकट आकर प्रार्थना करना, प्रार्थना पर भगवान का पृथ्वी को धोरज बंधाना, जन्म लेकर पृथ्वी का भार उतारने का वचन देना श्रादि वर्णन किया है। पृ० २४—३३ तक—श्री कृष्ण राधिका का जन्म श्रौर उनके विहार तथा श्रानंद का वर्णन किया गया है। इसमें कृष्ण का जन्म श्रौर कृष्ण का राक्षसों को मारना, कंस को मारना, भक्तों को रक्षा करना, लिखने का संवत श्रौर लेखक का नाम श्रादि वर्णन है।

No. 404(*a*). Kavya Saroja by Sripati of Kālpi. Substance—New paper. Leaves—66. Size—13 × 8 inches. Lines per page—28. Extent—790 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance.Old—Character— Nāgari. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Date of manuscript—Samvat 1943 or A.D. 1886. Place of deposit—Paṇdita Krishnabihari Misra, Editor, Sāmālochaka, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्रथ काव्य सरोज लिख्यते सोरठा ॥ लसत बाल विधु भाल यसन यसन मनिमाल उर। शंकर सुवन दयाल बंदत पद सुर असुर नित ॥ १ ॥ सेवक जन प्रतिपाल, एक रदन बारन बदन। विघन हरन ततकाल, विपति कदन मंगल सदन ॥ २ दोहा ॥ चलिसम स्वाद महान को जासों सुख सरसाइ। रचत काव्य सरोज सो श्रीपति पंडित राय ॥ ३ ॥ निर्माण काल संवत मुनि मुनि मनि ससी, सावन सुभ बुधवार। श्रसित पंचमी को लियो रुचित ग्रंथ श्रवतार ॥ ४ ॥ सु कवि कान्पी नगर को द्विज मति श्रीपति राइ। जस सम स्वाद महान को बरनत सुख समुदाइ ॥ ५ ॥

End—अथ वीर रस विभाव—युद्ध दान अरु लघु दया अड़े उबै उत्साह। है विभाव रस वीर को प्रगट करै कवि नाह ॥ २० ॥ वीर युद्ध रसालंबन युद्ध कौं रावन आवत है जो सदा मुनि देवन कौं दुखदायक। अंग अराति कौ दंभ दलौ सुर वानर नाहि सकौ सहि सायक ॥ पूछि मरोरि विलोकि भुजा निज माधुरी हाम हंसा रघुनायक ॥ २१ ॥ मघवा रिपु को रन आवत हो वर बंध प्रलय बहरान लगो। जिनतो तित भागि चले कपि कायर गातन मे थहरान लगो। कवि श्री पतिजू उत्साह नटो हिय लच्छन के थहरान लगो। डगरे उन केहरि के अनुहारि सुमूच्छ वहां फहरान लगो ॥ २२

Subject—वंदना, कवि वर्णन, काव्य लक्षण, उत्तम काव्य, मध्यम काव्य, अधम काव्य, वाच्य चित्र वर्णन। पृ० १—४ तक शब्द निरूपण, वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ लक्षण सभेद, व्यंग सभेद, वाच्य सभेद, काकु, व्यंग के अन्य भेद, दोष वर्णन। अनर्थ, श्रुति कटु, गतागत विचार, यति भंग व्याहतार्थ, अप्रयुक्त, असमर्थ, उपहत, ग्राम्य, असंमत, भाषाच्युत, प्रतिकूल वर्ण। पृ० ५—२० तक। अर्थ दोष वर्णन तथा दोष निवारण। पृ० २१—३२ तक काव्य गुण कथन, अर्थगुन वर्णन, श्लेष, प्रसाद, ओज वर्णन, अलंकार वर्णन। पृ० ३३—५९ तक। रस—निरूपण। पृ० ६०—६५ तक।

No. 404(*b*). Kavya Saroja by Srīpati of Kālapi. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—12 × 6 inches. Lines per page—56. Extent—1,666 Anushṭup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Thākura Bīra Simha, Village Bhudarā, Post Office Biswān, District Sītāpur (Oudh).

No. 404(*c*). Kāvyasudhākara by Srīpati of Kālapī. Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—9 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—200 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1777 or A.D. 1720. Place of deposit—Rājapustakālaya Bhinagā (Bahraich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ स्याम स्याम अमर विटप श्री गुरु पद जलजात। जाँचत द्विज श्रीपति सुकवि देहु सुमति अवदात ॥ १ ॥ सवैया ॥ नेम विना निति आनन्द में परतंत्र नहीं कछु पार न पावे। नै रस

यामें सवै मधुरे द्विज श्रीपति चाहि कहा जस गावै ॥ नेमुक नाहि डरै जम सों इन भांतिन के गुन केते गनावै। यानो मर्य तिहुंलोक रच्यो कविराज विरंचि कौ सीस नवावै ॥ २ ॥ कवित किए तें पाइयतु परम सुजस धनमान। रोगन सें घरु दुखन सों कहै सबै मति मान। ३। केसव अरु गंगादि को सुजस रह्यो जग छाय। यों वै म सुततें लह्यो धन मुकुंद कवि राय ॥ ४ ॥ अकबर वह दिल्लीस तें पायो मान अनूप। ग्वालहि में तब ह्वै भयो सुकवि वीर वर भूप ॥ ५ ॥ जगन्नाथ तें ज्यैां नस्यैा कवि द्विनेस को रोग। मनीराम ध्यायो तनय जानत सिगरे लोग ॥ ६ ॥

End—दोहा—रसिक चकोरन कहं बढ़ै याते परम हुलास। काव्य सुधाकर रचित सो श्रीपति सुमति निवास ॥

भरत विवुध नर हनत दरिद्र दर, मिटत कलुष जर हरत असम शर। लसत गरल गर भरत कनक भर, सुजस धरनि तर रटत कुलिस कर ॥ दहत बिरह धर रहत निगम कर लहत सुमति घर सतत कहत हर ॥

दोहा ॥ जमक लेष अरु चित्र महं कहुं धुनि के कन होत। सवै बहर महं अधम है कवि कोविद उद्योत ॥ मेरे मत श्लेष में कहुं अपर धुनि होय। ताकों दरसै हैां सवै साहित ग्रंथ कवि लोय ॥ तामें मध्यम भेद है कहुं श्लेष देखाय। उत्तम भेदन ह्वै सकै कहैं महा कविराय ॥ कवित निरूपन पद कह्यो श्रीपति सुमति निवास। काव्य सुधाकर महं भई पहिली कला प्रकास ॥ इति श्री काव्य सुधाकरे निरूपनं समाप्तम् ॥ इति ॥

Subject—प्रार्थना, कविता की महत्ता व कवियों का उत्कर्ष वर्णन। पृ० १। काव्य गुण तथा कवि वंशादि वर्णन—पृ० २—३ तक। काव्य लक्षण, काव्य शक्ति—पृ० ४ उत्तम काव्य लक्षण, उदाहरण, मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण तथा अति काव्य मध्यम लक्षण व उदाहरण पृ० ५-६। मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण अधम काव्य लक्षण व उदाहरण—पृ० ७। अन्य मध्यम काव्य लक्षण व उदाहरण व उत्तम काव्य कथन—पृ० ८। अनुप्रास लक्षण व उदाहरण व उपपतिकादि उदाहरण—पृ० ९—१०। यमक लक्षण व उदाहरण, श्लेष लक्षण व उदाहरण। पृ० ११—चित्र काव्य समेद। उदाहरण सहित—पृ० १२—१३ अतत्पर लक्षण, षोड्स दल चित्र काव्य तथा अधम काव्य वर्णन। पृ० १४—१५ तक।

No. 405. Śringāra Saurabha by Śri Rāma Bhatta. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—11½ × 7½ inches. Lines per page—32. Extent—432 Anushṭup Slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—

Samvat 1942 or A.D. 1885. Place of deposit—Pandita Syamabihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शृंगार सौरभ ग्रंथ लिख्यते ॥ मंगलाचरण कवित्त ॥ वृन्दा राजरानी आदि शक्ति जग जानी जहाँ अष्ट सों दवो सिद्धि संवनि हृदीश को। दासी हेरे आसो थै उमा सो है खवासो बासो पावत न जान जहाँ मनहु सचोस को ॥ बायें कर बीर ग्रीर दाहिने नवीन वर कोटि मारतंड को प्रकास नव बोस को। बात वारि जात नव पात पारिजात पदजात नित ईश को कि सीस जगदीस को ॥ १ ॥

दोहा—कही नायका नारिसों सुन्दर सुखद उदार। पिय हित रचति प्रवीनता रिझवावति रिझवार ॥ २ ॥ उदाहरण—लागत समीर लंक लचकि लचकि जात ललकि ललकि जात नजर निपातो है। विपुल नितंबन की उरज उतंगन को सिरज कदंबन को छबि छहरातो है। रामजी सुकवि अरविंद में कलिंद सम लोयन को बंदि बंदि मीन मुरझातो है। बनो बनितान में मसाल सी विशाल बाल थोर सकुचातो परी बातासी दिखातो है ॥

End—अथ परकीया आगतपतिका को उदाहरण। बेलि मनोहर चंपक को यह काम के कंचुक के तुलही है ॥ स्वांस समीर लगी लचके करि अंग सगान कबीन कही है ॥ बाल पटा पै चढ़ी मग देखत त्यों उचको कुचको सुलही है। बायस बोलि परोस गयो मन ही मन आनद सो उमही है ॥ ६३ अथ सामान्य आगतपतिका को उदाहरण—अंगिया दरको हरषो मन में लरको लर मोतिन आलन को। .... हको सदको कुचहू बदको गति जासु मरालन को ॥ .... मोतिन के जालन गुंफित मालनदी है लालन को ॥ .... उमगो उमगै भरि है मनको गति .... ६४ ॥ इति श्री रामजी भट्ट विरचिते शृंगार सैारभे दस अवस्था भेद वर्नन नाम पंचमस्तरंगः समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री संवत् १९४२ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथैा चतुर्दश्यां शनिवासरे लिखित मिदं पुस्तकं बलदेव मिश्रेण श्रीमान् मिश्र युगल किशोरस्यार्थे ग्रंथावली स्थानेषु ॥ श्री कृष्णायनमः ॥

Subject—मंगलाचरण, नायिका वर्नन, स्वकीया भेद, मुग्धा अज्ञात यैावना, ज्ञात यैावना, नवोढ़ा थोर विश्रब्ध नवोढ़ा वर्नन। छ० १–१३ तक।

वयःसंधि वर्नन, मध्या वर्नन, प्रौढ़ा वर्नन, प्रौढ़ा विपरीत रति व सुरत वर्नन। धीराधीरादि भेद वर्नन। छन्द—१४—३९ तक। परकीया वर्नन। ऊढ़ा, अनूढ़ा, गुप्ता कुलटा, लक्षिता, अनुशयना, मुदिता, विदग्धा सभेद, स्वयं दुतिका वर्नन छन्द ४०—७० तक।

गर्विता सभेद। मानवती सभेद, अन्य संभोग दुःखिता, स्वकीया, परकीया और सामान्या वर्णन। छन्द ७१—८४। अथ नायका भेद वर्णन—छन्द ८५—१४८ तक।

इति।

No. 406. Biharisatsai with Tikā Anawar Chandrika by Subha Karana of Delhi. Substance—Country-made paper. Leaves—98. Size—9 × 5 inches. Lines per page—25. Extent—1,980 Anushtup Slokas. Appearance—New. Character—Nāgarī Date of Composition—Samvat 1771 or A.D. 1714. Date of manuscript—Samvat 1855 or A. D. 1798. Place of deposit—Pandita Śripāla, Village Khajuri, Post Office Gouriganja, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ अनवर चंद्रिका लिख्यते॥ प्रभु वंश वर्णन॥ मनि सय फुलन्द साहि साहि सर पुहो जानो। सालह साहि सुजान साह असगर पहचानो॥ अनवर साहि समत्थ मुनवर साहि परधसम॥ हासम साहि प्रचंड साह कासम जु अनुपम। कहि किसवर साह बिलंद दल कैसर साहि सुजान चित॥ पुनि मालिक अजदर साह हुव कुल मंडन जस किय अमित॥२॥ अमित तपोवर चलन हुव जाहिर सब जगजानि। मरद्देजी यह ख्याति जुत यूसफ साहि बखानि। ईसफ साहि बखानि सकल गुन गन जो जानै॥ विदित विलाइत सोल समुद्रयों पहिचानै॥ पहिचानै बहु दिनन कवरते करन करो नित लसत थान मुलतान भान सम सोहै जो अमित। अमित सोल मे अकबर सुअर साह हुव पुनि अबदुल्ला साह। साहि अबदुला हाउ गनि साहि फरीद सुजान। सैद खां सुभट सिरोमनि, पुनि सैद मुबारिक खां प्रबल, तनय सैद साजा अखनि पुनि सैद मुसताक जस जलधि सुत ससि अनवर खान भनि॥ + + + + +

दोहा—सांस रिखि रिखि ससि लिखि लिख्यैा। सम्वत् सवस विलास। जामें अनवर चंद्रिका कीन्यो बिमल बिकास॥

End—चले जाइ ह्यां का करत, हाथिन को ब्यैापार। नहिं जानत इहि पुर बसत, धोवी ओड़ कुम्हार॥ विषय विषादिक की तृषा जिये मतोरन सोधि। अमित अपार अगाध जल, मास मूड़ पयोधि॥ यदि देखो मोती सुगथ तुमनथ नरव बिसाक, जिहि पहिरे जग दृग कसत लसति हंसति सो नाक॥ इति अस्युक्ति॥ इति बिहारी सतसैयायां टीका समाप्तम्॥ सम्वत् १८५५ बैसाख सुदी २ शुभम् भूयात्॥

Subject—(१) पृ० ४ तक—प्र० प्रकाश, प्रभुवंस वर्णन।
(२) १०वें तक—द्वि० प्रकाश—साधारण नायिका वर्णन।
(३) २४वें तक—तृ० „ नख शिख वर्णन।
(४) २६वें तक—च० „ मुग्धादि त्रिविध नायिका।
(५) ४२वें तक—पं० „ दश विधि नायिका वर्णन।
(६) ४३वें तक—ष० „ प्रेम प्रशंसा।
(७) ५०वें तक—स० „ मानिनी वर्णन।
(८) ५२वें तक—अ० „ सुरत सुरतांत वर्णन।
(९) ९८वें तक—अंतिम प्रकाश गणना रहित—विविध विषय, रस हाव-
भाव तथा ऋतु इत्यादि वर्णन।

Subject—यह पुस्तक बिहारी सतसई नामक अद्वितीय शृंगार ग्रंथ की टीका है। जो धनवर खां के नाम निर्माण की गई है। प्रारंभ मे ही प्रभुवंश वर्णन किया गया है जो प्रगट करता है कि यह कवि सं० १७७१ में दिल्ली दर्बार के आश्रित थे।

No. 407. Sudāmā kī Bāraha Kharī by Sudāmā. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—6 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—55 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Kaithī. Date of manuscript—Samvat 1880 or A.D. 1823. Place of deposit—Ṭhakura Ayodhyā Simha, Village Sadarapur, Post Office Gārāpur, paraganā Chāndā, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—कका कलजुग नाम पधारा। प्रभु सुमिरन भव उतरे पारा॥ साधु संग करि हरि रस पाजै॥ जीवन जन्म सुफल कर लीजै॥ गंगा जो सकल नहाना॥ जाको गावै वेद पुराना॥ निरभय नाम हरि को लीजै॥ चरन कमल को ध्यान धराजै॥ गंगा गुन गोविंद के गावै। माया जास भूलि अनि जावै॥ धन जोबन तन रंग पतंगा॥ छिन में छार होय यह अंगा॥ ३॥

End—हहा हरि गुन गावे पाप मोछन पाप॥ श्री गुरुचरन कमल परताप॥ जैसा फंद चहुंदिसि घेरा॥ प्रगट भान तब भयो उजेरा॥ ३॥ लेने को हरि को नामा॥ देने को नहि थान समाना॥ ३४॥ छाड़ो जो विष वंधन चहोवे॥ सत गुरु चरन सरन होय रहोय॥ नाम मधुर रस पीवो सुजाना॥ गर्भ वास नहि होय पयाना॥ बारा खड़ी ग्यान गुन गाउ॥ दास सुदामा दीन प्रति गावे॥ गुरु देव चरन चीत लावे॥ ३६॥ इति श्री सुदामा कृत बाराखड़ी संपुरन समापत॥

Subject—पृ० १–९ तक—ककार से लेकर हकार तक क्रमानुसार छन्दों के आदि में अक्षरों का आना और प्रत्येक छन्द में ईश्वर भक्ति का हो कुछ न कुछ वर्णन।

No. 408. Ekādaśī Mahātmya by Sudarśana of Ambu. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—12 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—2,494 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1770 or A.D. 1713 Date of manuscript—Samvat 1922 or A.D. 1865. Place of deposit—Munsī Rāmajiāwana Lāla, Teacher, Town School, Fatehpur, Bārā-bankī (Oudh).

Beginning—श्री गनेशायनमः ॥ अथ लीषते येकादसी महत्तम ॥ दोहा ॥ कृपा करी रघुवीर जब तब कवि किया विचार ॥ किया महातम एकादसी रचि भाषा संसार ॥ × × × × आरम यह परलोक की कथा सुनै नर जोइ ॥ गंगतीर को भजत है दरसन को चित होइ ॥ चै० ॥ प्रथमहि भजो मातु मैं गंगा ॥ जेहि सुमिरे उपजै मति चंगा ॥ जे नर बसहि गंग के तीरा ॥ ते बैकुंठ बसहि बलबीरा ॥ येक चित होइ गंग अन्हावै ॥ ते नर सबै पदारथ पावै। धरै ध्यान गंगा को जोई ॥ सो नर दुखित कबहु न होई ॥ जो मानुष जग मैं चतुरंगा ॥ ते असनान करहि नित गंगा ॥ तिन के कलिमष होइ बिनासा ॥ ते नर सुरपुर पावहि बासा ॥ जे नर पीवहि गंग को नीरा ॥ तिन के रोग न रहै सरीरा ॥ ते नर बहु विधि रहै अनंदा ॥ तिनके बढ़ियहि जस चंदा ॥ जे नर दूरि देस ते आवहि ॥ मनो कामना ते नर पावहि ॥ दोहा ॥ अंग बोरहि जे गंग मह ते नर चतुर सुजान ॥ आगे कथा प्रसंग मे सुनहु लोग दै कान ॥ जे नर निंदा गंग की करहीं ॥ सात जन्म कुष्टी अवतरहीं ॥ जे नर हंसहि गंग के जल को ॥ ते नर सदा दुखित रहि तन को ॥ × × × × ×

End—दान पुन्य तब नृप करो विधि समेत नृप सोइ ॥ जै जै जै जै सब करैं रंग रंग नित होइ ॥ चै० ॥ कहेउ उमा तब बात बिचारी ॥ बात हमारि सुनहु त्रिपुरारी ॥ जैसेव अस प्रभावति नारी ॥ केहि विधि मुक्ति हमर सिधारी ॥ भये परम पद के अधिकारी ॥ काल पाइ ते हमर संभारी ॥ मुक्ति भय सो होइगे कैसे ॥ बिस्नु सरूप बरनन जैसे ॥ येकादसी है मुक्ति को दाता ॥ पारवती सुनु ऐसी बाता ॥ बोरमद्र नृप सो करई ॥ रघुपति भक्ति हृदय मैं धरई ॥ बन मैं नृपति सिधारन कीन्हा ॥ राजा पुत्र एक सुन्दर दीन्हा ॥ नारद कल्प की कथा पुनीता ॥ पारवती सुनि भई सुचीता ॥ दोहा ॥ एकादसी ब्रत ऐसा जो कोइ करै सुजान ॥

मुक्ति पदारथ पावै सो बैकुंठ समान ॥ सुनै। लोग दै कान वृत्त यह करी येका-दसि। पावै पद निर्वान सुष संपति श्रो जस मिलै ॥ इति श्री नारद पुरान कथा एकादशी महात्म्य समाप्तम ॥ (लिखिते दीन भगत)। दोहा ॥ श्रीगुरु संभु प्रताप पोथी भई तयार। जो जस देषा तस लिषा दोष न देव हमार ॥ मिति कुवार सुदी ४ वार इतवार ॥ सन १२७३ ॥ संवत् १९२२ ॥

Subject—पृ० १—३ तक—ग्रंथ निर्माण कालः—"सत्रह सै सत्तरि संवत मे संसार। भादैा सुकुल सोवार को कथा लीन अवतार"—गंगा महात्म्य तथा उत्पत्ति। (२) पृ० ४—५ तक—कवि के नगर आदि का वर्णन। "संबू नगर ग्राम को नाऊ ॥ सुदरस कवि बसै तेहि ठाऊं ॥ इत गंगा उत जमुन बहाई ॥ अंतरवेद सुदरसन रहई ॥

"ग्रैसा तेज नरेस को बसै सब सब देस ॥ नाम तैा रामगुलाम है तेज स्वासि नरेस" ॥

(३) पृ० ५—२८ तक—अगहन शुक्ल एकादशी की उत्पत्ति, अर्जुन कृष्ण संवाद, मुर राक्षसी द्वारा देवताओं को कष्ट, देवताओं का भाग कर विष्णु के पास जाना, देवासुर संग्राम, सुरों की पराजय, विष्णु का गुफा में छिपना, स्त्री का गुफा से निकलना, राक्षस को मारना। विष्णु का अचंभा, उसका नामादि पूछना, एकादशी का सब वृतान्त कथन। विष्णु का वर देना। (४) पृ० २९—३६ तक—एकादशी अगहन कृष्ण पक्ष की उत्पत्ति वर्णन। हैहय देश के राजा का स्वप्न में अपने पिता को नरक में देखना, मुनि द्वारा इसका कारण जानकर एकादशी (अगहन कृष्ण) का व्रत करके उन्हें सुरपुर भेजवाना। (५) पृ० ३७—४४ तक—माघ की एकादशी व्रत का फल उसकी उत्पत्ति का इतिहास, चंपावती के महाजोत नामक राजा के पुत्र लम्भु का ज्वारी होना, पिता द्वारा उसका निकाला जाना। दशमी तथा एकादशी के दिन भूषा पड़े रहने पर एकादशी व्रत का फल प्राप्त होना। पिता के पास जाकर राज्याधिकार प्राप्त करना। (६) पृ० ४५ से ५३ तक—पैाष शुक्ल एकादशी का फल, व्रत की रीति, चंद्रावतीपुर के सुकेतु नामक राजा का पुत्र न होने पर वन को जाना। वहाँ भूख प्यास से व्याकुल होकर एक तालाब पर निकलना। वहाँ पर एक बैठे ऋषि के आदेश से व्रत करना और पुत्र पाना।

(७) पृ०—५४—६४ तक—माघ कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम, उसका इतिहास—एक ब्राह्मणी को नारायण द्वारा परीक्षा, भिक्षा मांगने पर मिट्टी डालना, उसका स्वर्ग होना, केवल मिट्टी का घर मिलना, पूछने पर नारायण का खाली मकान देने का कारण बताना। किवाड़ देकर नारायण को

घाता मे रहना, मुनि नारियों का उसे व्रतदान का फल प्रदान करना, उसके घर में सब कुछ हो जाना।

(८) पृ० ६५—७२ तक—माघ शुक्लपक्ष एकादशी के व्रत का नियम इतिहास—एक गांधर्व का इन्द्र के अखाड़े की पुष्पवती नामवाली अप्सरा पर मोहित होना, इन्द्र के अभिशाप से दोनों का पिशाच पिशाची होना। एकादशी के प्रभाव व्रत से उनका उद्धार।

(९) पृ० ७३—८२ तक—फागुन कृष्ण एकादशी के व्रत का नियम-इतिहास—बक्दाल्भ्य द्वारा एकादशी महात्म्य सुनकर और वैसा ही करने पर राम की विजय का वर्णन।

(१०) पृ० ८३—९४ तक—फागुन शुक्ल एकादशी का नियम इतिहास-मानधाता-वशिष्ठ संवाद—चैतरथ राज के एकादशी व्रत द्वारा एक दुष्ट का तरना, मुरथ नामक एक राजा का एकादशी व्रत के कारण शत्रुओं से बचना।

(११) पृ० ९५—१०५ तक-चैत्र कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल, मानधाता-लोमस संवाद, इतिहास-चैतरथ नृप का वन विहार, उसी वन में मेधावी ऋषि को तपस्या देख कर और इन्द्रासन जाने की आशंका से सुरराज का मंजुघोषा नामक अप्सरा का उनका तप भंग करने को भेजना, कामदेव की सहायता से अप्सरा की सफलता, मुनि के साथ ५७ वर्ष निवास, ज्ञात होने पर स्त्री को मुनि का अभिशाप। एकादशी व्रत से दोनों के कल्मष दूर होकर उद्धार।

(१२) पृ० १०६—११२ तक-चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी, नागपुर के ललित नामक पुरुष का अपनी पत्नी ललिता के एकादशी व्रत कर के उसका फल देने से ललित का शापमोचन और पिशाच से अपना वास्तविक रूप ग्रहण करना, एकादशी व्रत का फल कथन।

(१३) पृ० ११३—१२१ तक-वैसाख कृष्ण एकादशी का फल-इतिहास-नन्दनपुर के राजा हरिसेन के एक चमार द्वारा एकादशी का फल प्राप्त करने पर एक गदहा बने हुए ब्राह्मण का उद्धार।

(१४) पृ० १२२—१३१ तक—वैसाख शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत का फल, एक सेठ के पापी पुत्र का जुआ इत्यादि कुकर्म द्वारा घर से निकाला जाना, चोरी करने पर दंड देकर नगर से निकाला जाना। पशु पक्षियों का विनाश करना। कौडिन्य ऋषी द्वारा उसका एकादशी व्रत करके उद्धार होना।

(१५) पृ० १३२—१३८ तक—ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी व्रत का फल-इतिहास-बैगन को खुशी से एक अप्सरा का विमान नीचे गिरना, दासी जो एकादशी के दिन भूखी रही थी उसके फल से उसका आकाश पर चढ़ना, राजा का एकादशी व्रत नगर के स्त्रियों पुरुषों सहित करना।

(१६) पृ० १३९—१६० तक-जेष्ट शुक्ल पक्ष एकादशी महात्म्य, इन्द्र के शाप से एक गंधर्व का जिन्द होना, एकादशी व्रत का महात्म्य सुनकर उसका आचरण करने पर एक राजा का पुत्र होना। उस पुत्र का बड़ा होकर नन्दन वन को जाना, वहाँ जिन्द का उससे चिपट जाना, वर पाने पर एकादशी व्रत का फल पाने पर उसका उद्धार।

(१७) पृ० १६१—१६७ तक-आषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी। एक ब्राह्मण का कुबेर के अभिशाप से कुष्टी होना और मारकंडेय ऋषि द्वारा आषाढ़ एकादशी व्रत द्वारा उसका उद्धार, व्रत फल।

(१८) पृ० १६८—१७४ तक-आषाढ़ शुक्ल प० एकादशी—इस व्रत द्वारा राजा बलि को जो पाताल लोक के राजा बन गये थे—का नित्य ही भगवान के दर्शन पाना। व्रत का फल।

(१९) पृ० १७५—१७८-श्रावण कृष्ण एकादशी व्रत का फल। ब्रह्मा द्वारा नारद को बोध।

(२०) पृ० १७९—१८६ तक-श्रावण शुक्लपक्ष की एकादशी व्रत का महात्म्य, द्वापर में महिष्मती नगर के महीजीत नामक राजा का इस व्रत को करके पुत्र प्राप्त करना।

(२१) पृ० १८७—१९२ तक-भाद्र कृष्णपक्ष की एकादशी के व्रत का फल—इस व्रत के फल से राजा हरिश्चन्द्र का मृतक पुत्र जीवित होना।

(२२) पृ० १९३—२०० तक-भाद्र शुक्लपक्ष की एकादशी का फल—एक राजा के नगर में वर्षा न होना, उसका दुःखित होकर नगर परित्याग, वन में ऋषियों का आदेश पाकर एकादशी व्रत द्वारा जल बरसाना।

(२३) पृ० २०१—२०६ तक-आश्विन कृष्ण एकादशी व्रत महात्म्य—महिष्मती के राजा इन्द्रसेन के एकादशी व्रत से उनके नरक में पड़े हुए पिता का उद्धार होना। व्रत का नियम।

(२४) पृ० २०७—२१८ तक—आश्विन शुक्लपक्ष एकादशी व्रत महात्म्य कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर से चार प्रकार की मुक्ति का कथन, व्रत के नियम तथा फल।

(२५) पृ० २१९—२३३-कातिक कृष्ण एकादशी व्रत का फल, मुचुकुंद की पुत्री चन्द्रभागा का विवाह शोभन के संग होना; शोभन का ससुराल आगमन, एकादशी व्रत का आना, मुचुकुंद की आज्ञानुसार सब नगर के साथ इनका भी व्रत होना, जामात्र का मरण होना, राजा का उसकी क्रिया करना, एक ब्राह्मण का तीर्थ को जाना, मार्ग में पड़ने वाले परवत पर शोभन का देखना, व्रत के महात्म्य से उसका राजा होने किन्तु अरुचि के साथ किये व्रत के फल से उस नगर के थोड़े दिन रहने की चरचा कर अपनी पत्नी को सूचित करना

पत्नी के एकादशी व्रत के प्रताप से नगर का स्थिर रहना। (२६) पृ० २३४—२३९ तक—कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी का महात्म्य—व्रत के नियम और फल।

(२७) पृ० २४०—२५८ तक—रुक्मांगद चरित्र—सरूपदास विरचित—राजा का व्रत करना, इन्द्र का घबराना, एक मोहनी स्त्री द्वारा राजा को धोखा देकर वन से घर लौटाना, राजा का एक ऊंटनी—जो शापवश इस रूप में परिणत हुई थी—द्वारा सचेत होने पर भी लौटना, मोहिनी द्वारा राजा से एकादशी व्रत फल मांगना अथवा पुत्र का शिर मांगना। राजा का असमंजस, रानी की सम्मति तथा पुत्र की अनुमति से सिर देने को उद्यत होना। ईश्वर का प्रसन्न होकर प्रगट होना, सब नगर सहित राजा का स्वर्गवास। (२८) पृ० २५९–३००–तक—जैदेव की कथा—एक ब्राह्मण की तपस्या द्वारा यह वरदान मांगना कि यदि मेरे प्रथम पुत्र अथवा कन्या होगी तो वह आप के अर्पण करूंगा और दूसरे को मैं ग्रहण करूंगा, उसकी मनोकामना पूर्ण होना, पुत्री को लेकर जाना, स्वप्न में ईश्वर का कथन कि यह कन्या जैदेव को दो, जैदेव के न ग्रहण करने पर बरबस कन्या को छोड़ कर ब्राह्मण का चल देना, जयदेव का उसे ग्रहण करना और धन धान्य की इच्छा से किदविद के नृपति के पास जाना, चोरों द्वारा उनका अंग भंग, राजा का आकर उन्हें ले जाना, अच्छा होने पर उन्हें दान का कार्य सौंपना, एक दिन चोरों का आ जाना उनका भयभीत होना जयदेव का अभयदान, उन्हें बहुत सा द्रव्य देकर विदा करना, उनकी स्त्री प्रभावती की ईश्वर द्वारा भेजी हुई सिद्धियों से रक्षा। चोरों को राजा द्वारा जयदेव का बहुत सा द्रव्य देकर दूतों के साथ विदा करना, घर के पास पहुंच कर चोरों का दूतों द्वारा राजा को संवाद, कि 'यह साधू नहीं है' हमारा साथी चोर है इसी कार्य्य में उसके हाथ पैर कटे है, इतना कहते ही चोरों का पृथ्वी में समा जाना, दूतों का जयदेव के पास आकर सब हाल सुनाना, जयदेव के हाथ पैर उगना, संपूर्ण समाचार राजा को ज्ञात होना, राजा का सेवा में उपस्थित होकर विनय पूर्वक सब समाचार जानना, प्रभावती आगमन, राजा का रणक्षेत्र में जाना और जय लाभ करना, सात मंत्रों का युद्ध में मारा जाना और उनकी स्त्रियों का सती होना, रानियों का यह हाल प्रभावती को सुनाना, उसका कहना कि इससे क्या लाभ, रानियों द्वारा प्रभावती की जांच। जयदेव का सर्प से डसे जाने का मिथ्या समाचार, उसका सब समाचार जानकर मिथ्या बताना। रानी द्वारा दूसरा धोखा कि जयदेव की मृत्यु हो गई, यह सुनकर प्रभावती का शरीर त्याग। रानी का खेद, राजा को सब समाचार सुनाना। राजा का जयदेव से सब समाचार सुनाना, राजा का जयदेव से सब वृतान्त कहना; जयदेव का कथन कि अच्छा हुआ रघुवीर के पास गई, इसपर राजा का आग्रह, प्रभावती का

जीवित होना, एक मेले में राजा के साथ जयदेव का जाना, मेले में उनका खोजाना, द्रव्य लोलुपों द्वारा उनका पकड़ा जाना, उनके मारने का इरादा जान कर जयदेव का प्रश्न कि तुम लोग मुझे क्यों मारना चाहते हो। चोरों का कथन कि द्रव्य लाभ हेतु, जयदेव का शीस झुका देना, ईश्वर द्वारा लोगों का मत पलट जाना, जयदेव को छोड़ देना, राजा से उनका मिलना, राजा का सब समाचार जानकर खेद करना, घर लौटना, जयदेव से पद्मावती को पुत्र—इच्छा प्रकट करना, जयदेव का उसे एकादशी व्रत का उपदेश "गंगा उत्पत्ति का कारण" ब्रह्मा द्वारा नारद को बतलाया जाना, और एकादशी महात्म्य वर्णन—मनसुखदास कृत भक्त माल (कुछ अजामिलादि के तरण का बहुत ही सूक्ष्म वर्णन, अथवा नाम गिनाना) वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

No. 409. Bhishaja Priyā by Sudarasana Vaidya of Hamirpur. Substance—Country-made paper. Leaves—166. Size—7½×5½ inches. Lines per page—13. Extent—2,160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1729 or A.D. 1672. Date of manuscript—Samvat 1865 or A.D. 1808. Place of deposit—Paṇḍita Rāmādhīna Vaidya, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्रों श्री गणेशायनमः ॥ नमः सरस्वते ॥ अथ भैषज्ञ प्रिया लिख्यते ॥ दोहरा। लंबोदर गजमुख सुमन एक रदन जग बंद। विधु-बाल भाल बंदन सुमिरि हे गिरजानंद ॥ १ ॥ दोहरा ॥ धूम्रनयन सुभमति करन हरन दरिद्र समाज। असन बसन धन सुख करन महादान गजराज ॥ २ ॥ दोहरा। रिपुमर्दन संकट हरन करन सदा आनन्द। मूषक वाहन दरसते मिटत सकल दुखदंद ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ एक रदन फरसा कर लीन्हे। गज आनन सिंदुर सिर दीन्हे ॥ कुमति हरन शुभ मति उजावत। तुरत प्रवीन बुद्धिवर आवत। ४ ॥ धूप दीप मोदक कर पूजा। विधि वार अस देव न दूजा ॥ प्रथम गणेश पढ़तई जावे ॥ शुभ कारज मंगल त्रिय गावे ॥ ५ ॥ मदन कदन सुत गुरु गननायक ॥ अष्ट सिद्धि दाता सुख दायक ॥ जा सेवत निर्धन धन पावत। महादीन को दरिद्र नसावत ॥ ६ भय संकट मह सदा सहायक। अतिबल विक्रम कौतुक लायक ॥ ७ ॥ दोहरा ॥ बानी जु को बदन विधु सुधा अमृत सुखकंद। सिव चकोर जिमि चितु बसत निह कलंक सुष चंद ॥ ८ ॥ दोहरा ॥ रवि प्रताप आनन ससि छवि दामिनि तन हेम। जग जननी दुख दरन को लियो सदा सिव नेम ॥ ९ ॥

End—चित्रिकादि चूर्न कफ हरन ॥ सैंधव लीजिए एक पल दो पल पीपरा मूर ॥ पीपर लीजिये तीन पल चारि तौ चाकौ मूल ॥ २१ ॥ चित्रक लीजे पंच

पल सुंठी षट पल लेउ ॥ हरें लीजिये सात पल सब चूरन करि देउ ॥ २२ ॥ टंक तीनि प्रमान वह जौ रोगी को देइ । भुष अधिक पुनि मल टरै सुनि भिषज यह भेउ ॥ २३ ॥ वड़वानल चूरनं ॥ अकरकरा केसरि कना लौंग इलाची मानि ॥ पत्री चंदन जाइफल सोंठि कंकोल बषानि ॥ २४ ॥ सुमित भाग वोषद सबै अफीम बराबरि जानि ॥ एकत सबै मिलाइ कै चूरन करौ बनाइ ॥ मासौ येक प्रमान यह मधु मिलाइ कै षाइ ॥ बाढ़ै काम त्रा पुरुष के बाढ़ै रुचि अधिकाइ ॥ करभादि चूरन बोज वस्थंभन ॥ जवाषार साजी को मानि ॥ पाढ़ा चोता कह्यौ बषानि ॥ बाइविडंग तासु यह नाउ ॥ पंच लवन पुनि घ नि मिलाइ ॥ एला तमुह लेह देवदारु ॥ मैथा बीज कचूर को डारु ॥ इन्द्रजवा घ वरे मानि ॥ २६ ॥ इति श्रीवास्तव्य कायस्थ कुल सुदर्शन वैद्य कृते भिषज प्रिया समाप्तम् ॥ संपूर्णम् ॥ × × × × ×
संवत् १८६५ मिती चैत्र तीज बुधवार के दिन लिखतं ॥

Subject—पृ० १—२१ तक—प्रथम उद्देश्य, वैद्य लक्षण, मंगलाचरण, गणेश तथा सरस्वती वंदना । ग्रंथ निर्माण परिचय, 'नाना मुनि के वचन सुनि ग्रंथ उक्त परमान । भिषज सुत भेषज प्रिया, भाषा करी विलास ॥ सार सार संग्रह कियौ सकल ग्रंथ मति मान । भिषजन कौ भेषज प्रिया, चित्त सुदर्शन ज्ञान ॥
× × × × × ×
ग्रंथ चतुष्टय । कवि कुल वर्णन :—उत्तर दिशि मिश्रीनगर, कियो वास कवि-लाल । कायस्थ उष्ट प्रसिद्धि घर तिन मैनाम रिसाल ॥ वैद्य वृत्ति तिनकौं दई मक्त भवानी जान । मानहि राजा राइ सब सुख काटैं सुभ थान ॥ तब ते उद्यम करत यह बीति गये बहुकाल । एक दिवस पूछन लहे नैन पीड़ नृप थाल ॥ विह्वल मदिरा पान ते सुधि न रही मति थोर । अर्क छोर पछन दियो राज रयन गई पीर ॥ बहु कालो मिर्जासपुर घट रवि को मूल । ताके पय अंजन किये गये हगन को सूल ॥ बहु काली निर्जासपुर तब ते मदिरा पान की सतकरी पुरपान ॥ पब याको संग्रह कियो बुद्धिमंत जस हान ॥ २३ ॥ रामदमन परसुत दमन धनुष धन्वंतर रूप । एकते एक हैं गुन अधिक जिन्हैं सराहैं भूप ॥ २४ ॥ पंडित प्रगट प्रसिद्ध सब, हमीरपुर थान । पंच मात तिहि बंस मैं वैद्य सुदर्शन जान ॥ जन्म भूमि है तासु को पुर पवित्र शुचि थोर ॥ अति प्रवीन नर जासु कै बसत बैतवे तीर ॥

राज वंशादि वर्णन :—गहिरवार कुल जगत जसु काशी सुर महिपाल कीन्हों राज कुढ़ारगढ़ पंचबल साह नृपाल ॥ कवि जन ताके वंश को कहाँ लगी करै बखान । प्रतापरुद्र सुत साधु मति उपजौ धर्म निधान ॥ सुख समूह सम्पति सहित निस दिन रहत अनंद । सुभग नगर निधि ओड़छौ मधुकर साहि नरिंद ॥

तब तै उद्यम करत यह बीति गये बहु काल । एक दिवस पूछत नहे मैन पौर नृप पाल ॥ ताको पुत्र प्रसिद्धि नृप महि मधिवीर सिंह देव ॥ जेते देस विदेस नृप करत भूप सब सेव ॥ दान करन पावध समर श्रुति पुरान पखान । महाराज वीर सिंह को दियो साह भुज रान ॥ बुंदेलखंड भरतखंड मों मध्य देस में देस । पहार सिंह मही को संकित सकल नरेस ॥ तिहि कुल सुजान सिंह भुव करो धर्म सुत रीति । द्वापर जैसा कृष्ण सो कलि विश्वंभरि प्रीति ॥ ताको परजा सब सुखी धन बसन धन धान्य । निर्भय राज सदा रहे पतिनिस पाठोजाम ॥ × ×

ग्रंथ निर्माण काल :—संवत सत्रह सै भये लगी वास उनतीस । १७२९ । रितु वसंत फागुन सुभग कृष्ण पक्ष व्रत ईस ॥ सनि दिन सुभग चतुर्दसी सिद्धि जोग तिथि वार । प्रथम पहर आरंभ यह तादिन भयो विचार ॥

वैद्य लक्षण, रोगी लक्षण, अवैद्य कथन, रोगी संग पत्नमान । परिणनु-कामन । दूत परीक्षा, शुभ शगुन लक्षण, अशुभ सगुन परीक्षा, वाम दक्षिण सगुन, स्वर परीक्षा, नाड़ी परीक्षा, मुख परीक्षा, नेत्र परीक्षा, दंत परीक्षा, जिह्वा परीक्षा, नख परीक्ष', श्लेष्मा परीक्षा, स्वप्न परीक्षा, मूत्र परीक्षा, मल परीक्षा, छाया परीक्षा, छाया विचार ।

(२) पृ० २६—६५ तक—काल वेधादि, द्वितीय उद्देश्य । चतुर्दश परीक्षा लक्षण, सूर्य कालानल चक्र दूत आगम जानना, काना चक्रम, चन्द्र कालानल चक्रम्, पताका चक्र, सनाका चक्र, द्वादश रासिका दान । नक्षत्र वार तिथि रोग निषेध, नक्षत्रादि दोष, वार वर्ग, नक्षत्र भेद, चन्द्र बल, नक्षत्र रोगावली चारों चरणों की, लग्न विधान, कालज्ञान लघु जातक, राशि फल । वात फल ।

(३) पृ० ६६—९४ तक । तृतीय उद्देश । चिकित्सा दर्पण । साध्य लक्षण समीप भाव लक्षण, अष्ट ज्वर लक्षण—ज्वर की उत्पत्ति, स्वरूप, कोप, असाध्य उपद्रव, ज्वर प्रमाण, दोष प्रमाण, शुभ ज्वर लक्षण, दोष ज्वर लक्षण, चार प्रकार का लक्षण, सन्निपात त्रयोदश लक्षण, षंतिक लक्षण, उन्माद लक्षण, चित्त भ्रम लक्षण, अन्य सन्निपात भेद लक्षण वंध्या गर्भ विधान, नष्ट पुष्प विधि, ब्रह्मदंडी प्रयोग, वंध्या लक्षण तथा उसका उपचार, अन्य कफ वंध्यादि लक्षण और प्रयोग गर्भ चिकित्सा, गर्भ रक्षा, गर्भ कष्टी स्त्री का उपचार, द्वादश मास रक्षा करण विधि, गर्भ वर्जित गर्भ पतन उपचार !

(४) पृ० ९५—१११ तक—बाल चिकित्सादि । बाल चिकित्सा विधान, धाय परीक्षा, धाय लक्षण, फुलो लक्षण, जोगिनी लक्षण तथा उपचार, उनकी शांति के मंत्र । मातादि जोगिनी वर्णन, बालक के बोलने की बात, दंत वर्णन—

अनूप देश तथा जांगल्य देश वर्णन, श्रोतन देश वर्णन, अष्ट दिशा रोग वर्णन, षट् ऋतु वर्णन, ऋतु विधान, ऋतु रोग लक्षण, दिन रात पहर रोग राज वर्णन, तोन काल, वायु हेतु लक्षण, पित्त हेतु लक्षण, कफ कोप निदान, कफ हेतु निदान।

(५) पृ० ११२—११६ तक—वायु लक्षण निदान, पित्त लक्षण, कफ लक्षण, प्रशमन, वायु, पित्त कफ कोप। पञ्चमोद्देश।

(६) पृ० ११७—१३० तक—षष्टमोद्देशः—स्वरस क्रिया, अनुपान, स्वर, त्रिफलादि सुरस, निंव तथा गुरुच स्वरस, तुलसी तथा गुमा स्वरस, जंबू स्वरस, धात्रीफल सुरस, चतुर्विधि स्वरस, सतावर तथा श्वादि स्वरस, सुंठी स्वरस, ससा स्वरस मुंडो स्वरस, अद्यादि चतुर्विधि चूर्ण, गंगेरुवा स्वरस ज्व घातक, पुट पाक विधि, अवादि घृत, मंड विधि, जुसव विधि, कल्क करन।

(७) पृ० १३१—१५४ तक—सप्तमोद्देश—

क्वाथ कल्पना, अनुपान, काढ़ों के नाम, गुरुच्यादि काढ़ा, पंचभद्र पित्तज्वर, अमृताष्टक, सन्निपातज्वर दशमूल क्वाथ, अभयादि क्वाथ, कटफलादि क्वाथ, गुरुवादि क्वाथ, अतीसार, संग्रहणी ज्वर वर्णन, अन्य त्रिफलादि क्वाथ, अतीसार संग्रहणी संबंधी मांड विधि, पानादि कल्पना, क्षीरपाक विधि, चतुर्विधि बल।

(८) पृ० १५५—१६६ तक—अष्टमोद्देशः—

चूर्ण विधि—अनेक प्रकार के चूर्ण—ग्रंथ समाप्ति।

No. 410. Bhakta Nāmāvalī by Sudhāmukhī. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—6¾ × 4¾ inches. Lines per page—20. Extent—120 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Gaṇeśa Prasāda, Village Danoj, District Rāe Bareli.

Beginning—श्री सीतारामाभ्यांनमः॥ अब मैं इन हरिजन कौ चेरो। हैं अनुकूल मुनवर दोजै हरि छूटै भव घेरो १। विधि नारद, संकर सनकादिक, कपिलदेव, मनु, भूपा नरहरि दास, जनक, भीषम, बलि, सुक मुनि, धर्म सरूप॥ २॥ विस्वकसैन, जय, विजय, प्रबल, नंद, सुनंद, सुभद्रा। चंड, प्रचंड विनीत, पुनीता, कुमुद, कुमुद दग, भद्रा॥ ३॥ सील, सुसील, सुषेन, गरुड़, कमला जानो हरि प्यारो। जामवंत हनुमान विभीषन, सबरी खगपति चारो॥४॥ बिदुर सुकंठ, ध्रुव, उद्धव, अकूर, सुदामा, जानो। चित्रकेतु, अंबरीष ग्राह गज, चंद्रहास मन मानो ५॥ कौषारव, कुंती, बिधु, पांडव, जोगेश्वर, श्रुति देवा। प्रथु अंग, मुचकंद परीछत, पियव्रत, सेस, सुसेवा॥ ६॥

End—रामनद्, पूरन, परवोधा, जगदानंद मलारे। दास द्वारिका भट्ट लछमन, नाम गदाधर भाई—९४। श्री नरायनदास, दास भगवान, सुभग कल्याना, संतदास पुनि माधोदासा, सोभु, राम प्रमाना ॥ ९५ ॥ कान्हर, गोविंद, वासव सुत, श्री जगत सिंह जगजागे। दीप कुवँरि, जयसिंह ग्वाल गिरधर, हरिजन अनुरागे ॥ ९६ ॥ रामदास गोपाई बाई, रामराइ भगवंता, माधो रसिक, स्वरूप उपासिन, लालमती मनिसंता ॥ ९७ ॥ श्री नामा स्वामी माला सों गुरु संतन मुष आन्यौ। मति अनुरूप रची नामावलि सज्जन सुनिसुष मानौ ॥ ९८ ॥ भूल चूक सब छमा करो मम गम नहि जो सब भाषे। प्रातकाल नामावलि लोजै तौ हरिजन रस चाषै ॥ ९९॥ दसरथ सुत श्री जनकनंदनी रोझि तापर देगो। भार थार मधुरे स्वर भाषै नाम सकल हूँ लेगो १०० ज्यों हरि आप सकल अघ पावन नाम पुनीत पुनीता। त्यों हरिजन सच्चिदानंद है नाम लेत जग भीता ॥ १०१ ॥ नाम भक्त नामावलि याको जाको जाप करीजै। अनायास भव त्रास विगत सो होय जुगल पद लीजै ॥ १०२ ॥ हरि को अति प्यारे हरिजन जस सो जन मन मैं भावै। मोल मती गुरु कृपा करी तब सुथा मुषो कछु गावै ॥ १०३ ॥

Subject—सुथा मुषो कृत भक्त नामावली अर्थात् नाभा जी कृत भक्तमाल में जिन भक्तों के नाम आये हैं उनको संक्षेप रूप में काव्य में रचा है।

No. 411. Stuti Bhawanī kī by Sukhadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—8. Size—8 × 4 inches. Lines per page—22. Extent—125 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1917 or A.D. 1860. Place of deposit—Thakura Jagadewa Singh, Village Gujauli, Post Office Bauri, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अस्तुति भवानी की भाषा ॥ चैापाई ॥ गुरु गनेस के चरन मनावों। जेहि प्रसाद देवी गुन गावें ॥ प्रथमहि सुमिरों वंदी माया। जेहि सुमिरे ते निर्मल काया ॥ सोरी देवी आदि कुमारी। जेहि सुमिरे सिधि होइ हमारी ॥ सुमिरों देवी मन चितलाई। दुष दारिद्रु पाप छै जाई। अस्तुति करों भवानी केरो। सुनौ संत कहों मैं टेरा ॥ जा सुमिरे दुष भंजन होई। रोग भयानक रहै न कोई ॥ जा सुमिरे ते दुर्जन डुरई। काल कराल महा दुष हरई ॥ जल थल रन महं रछ्या करणी। सुमिरों ताहि माह भय हरणी ॥ ताको अग्नि कभी नहिं जारै ॥ जब देवी को नाम पुकारै। संकट विपति दूरि होहि भाजै। जहं देवी को सेवक गाजै। विषम उजारि दुर्ग मह जाई। तहां

भवानी पाप सहाई ॥ कहं लगि प्रभुता कहौं बखानो। बार बार नर सुमिरु भवानी ॥ आदि स्वरूप ज्योति तव लयऊ। ब्रह्मा विष्णु सब तुमते भयऊ ॥

End—शस्त्र शस्त्र कोउ घाव न आवै। नित देवी की अस्तुति ध्यावै ॥ डंकनि संकनि औ महामारी। तिन्ह से नाहीं होइ दुखारी। नवग्रह आदि न सकैं सताई। पढ़ि अस्तुति सब दोष नसाई। धन अरु धान्य होइ अधिकारी। महा धनाढ्य होइ सो भारी। तीनि लोक माता कोऊ नाऊं। अस्तुति पढ़ै सदा तेहि ठाऊं। अल्प मृत्यु नहिं ताको होइ। औ सौ वर्ष जिये नित सोई ॥ उरिन होइ कछु रिन न रहाई। जब देवी की अस्तुति कहई। पुत्र पौत्र बाढ़ै परिवारा ॥ पढ़ु अस्तुति नित दुनौ बारा ॥ चंद सूर्ज औ जबलौं धरती। संत जनन की तब लगि बढ़ती। कलयुग कल्मष जाय नसाई। अस्तुति पढ़ै सदा चितलाई। कोढ़ी पढ़ै कुष्ट छय जाई। दादु खाजु ना तन मैं रहई। जातो सुमिरु होइ सो प्रानी अपै नाम होइ बड़ ज्ञानी। विद्यार्थी सो विद्या पावै। पुत्र आधिक को पुत्र मिलावै। जो जो मन मैं इच्छा लावै। सो इच्छा सम्पूरन पावै। दिन प्रति अस्तुति जो कोइ ध्यावै। कहि सुखदास परम पद पावै ॥ देवी की अस्तुति सम्पूर्ण शुभ मस्तु जेठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ परिवा ग्राम, गुजलो देवीदीन मुसद्दी लिष्यते संवत १९१७ राम राम राम राम राम राम राम।

Subject—पृ० १—८ तक-भवानी की महिमा का वर्णन किया गया है कि इस प्रकार शुंभ निशुंभ आदि को मारा। भवानी का स्मरण करने से पुत्र पौत्र धन बल आदि प्राप्त होता है, मनुष्य आनन्द से अपना जीवन व्यतीत करता है उसको किसी प्रकार का भय तीनो तापों का नहीं रहता है।

No. 412(*a*). Adhyātma Prakāśa by Sukhadeva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—9 × 7 inches. Lines per page—32. Extent—456 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1775 or A.D. 1718. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Narayaṇaji Vājpai, Village Vajpai kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Baharā ch (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सच्चिदानन्दाय नमः ॥ कवित्त ॥ थावर जंगम जीव जेते जग भांतिन भांतिन भेष धरे हैं ॥ नामहि सत्य चिदानंद रूप सो आतम एक प्रकास करे है। १ बिन जानत सिंधु सो लागत जानेते गोपद तुल्य तरै है ॥ बंदत ताहि सदा सुषदेव जू ब्रह्म सदा सब तो ते परे है ॥ १ ॥ दोहा ॥ व्यास मथन करि बेद सब सूत्र निकारे सार। श्री गुरु शंकर देव जो कीन्हो बहु

विस्तार । तिन ग्रंथन को सम्मंभि मत हिय धरि पर उपकार । भाषा कर सुषदेव यह रच्यो ग्रंथ प्रति चारु ॥ जैसे रवि के तेज ते अंधकार मिट जाय । अध्यातम परकाश तें त्यों अज्ञान नसाइ ॥ गुरु शिष्य को बाद अरु वेद वचन उपदेश । अध्यातम परकाश यह भाषा सरल सुबेष ॥ अधिकारी जिज्ञासु अरु शिष्य कहावे सोइ । तप साबुन करि देह के पापनि डारो धोइ ॥

End—सांख्य ॥ प्रकृति पुरुष अरु तनु को जाके होय विवेक । यहै मुक्ति सांख्यो कहै ज्ञान भये सब एक । आगम तंत्र पुरान पुनि पंच रात्र मत जानि । खेंचि आपने पंथ को जग में डारत आनि ॥ और साखन के मते पर जगत में आनि । कल्पन हो छूटै नहीं जन्म मृत्यु लपटानि ॥ अपने मत यह वेद सिर सब त उत्तम जानि । ताही को विस्वास करि भूल और मत मान ॥ सठ अरु धूरत नास्तिक वेद विरोधी और । तिन्हें न भूलि सुनाइये यह मत मत सिर मौर ॥ जिनके उर हरि भक्त हैं औ गुरु भक्ति निदान । तिनके आगे बोलिबो यह उपदेस निदान ॥ वेद स्मृति श्रुति वचन को कह सुषदेव विलास । अध्यातम परकास ते अध्यातम परकास ॥ सत्रह से पत्रहत्रे कातिक मास बषानि । हरि बासर बुधबार को सुकुल पक्ष जिय जानि ॥ इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेव मिश्र कृत पूर्ण ॥

Subject—इस अध्यात्म प्रकास में शिष्य गुरु संवाद है शिष्य ने मनुष्य शरीर पर व ईश्वर रूप पर व आत्मा आदि पर प्रश्न किये और गुरु ने उनके पृथक पृथक उत्तर दिये । इसमें सांख्य वैशेषिक पातंजलि आदि के उदाहरण दिये हैं और प्रकृत के रहस्य को उत्तम रीति से समझाया है ।

No. 412(*b*). Adhyātma Prakāsa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—8. Extent—360 Anushṭup Slokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1772 or A.D. 1715. Date of manuscript—Samvat 1845 or A.D. 1788. Place of deposit—Paṇḍita Chandrabhālaji, Village Parvatpur, Post Office Suratganj, District Bārābaṇkī (Oudh).

Note—(I) आदि अंत No. 412. (a) पर लिखा गया है ।

End—(II) इति श्री अध्यात्म प्रकाश सुषदेवेन कृतं वहि मुषांतं ॥ दोहा ॥ सकल धर्म कामादि तजि भजु निहचै करि मोहि ॥ सब पापनि ते

मुक कर मोक्ष ढूंढ़ेगा तोहि ॥ गोपाल वचनोक्तं अर्जुने प्रति ॥ संवत १८५५ मिती भाद्रपद सुदी द्वादशी भृगुवासरे लिखितं भोलानाथ द्विवेदी स्वात्म पाठार्थम् ।

No. 412(c). Adhyatma Prakasa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—9 × 6 inches. Lines per page—24. Extent—540 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1867 or A.D. 1810. Place of deposit—Thākura Rāmadaura, Village Mithaurā, District Baharāich, Keśaraganja (Oudh).

No. 412 (d). Adhyatma Prakāśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—8 × 5 inches. Lines per page—44. Extent—468 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1921 or A.D 1864. Place of deposit—Mahanta Jawāhiradāsa, Village Narottamapur, Post Office Khairighāt, District Baharāich (Oudh).

No. 412(e). Adhyatma Prakāsa by Sukhadeva. Substance—New paper. Leaves—24. Size—9 × 6 inches. Lines per page—18. Extent—432 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1946 or A.D. 1889. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī.

No. 412 (f). Piṅgala Chhanda Vichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—10 × 5 inches. Lines per page—11. Extent—750 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1907 or A.D. 1850. Place of deposit—Rāja Pustakālaya Bhiṅgā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ गनपति गौरि गिरीस के पाइ नाइ निज सीस। मिश्र सुकवि महाराज की देत बनाइ असीस ॥ १ रजत खंभ पर मनहु कनक जंजीर विराजति। बिसद सरद घन मध्य मनहुं छन दुति छबि छाजति ॥ मानहुं कुमुद कदम्ब मिलित चंपक प्रसून तति। मनहुं मध्य घनसार लसत कुम-कुम लकीर अति ॥ हिमगिरि पर मानहुं रबि किरनि इमि धन धरि अरचंग मह। सुखदेव सदासिव मुदित मन यों हिम्मत सिंह नरिंद कहं ॥ रतन जटित भू भाल को मनो विभूषन वेष। जाहिर जम्बूदीप में सिरे अमेठी देस ॥ सपनेहु सुनिये नाहि जहां काहू को डर नाहि। सदा एक परलोक हो सिगरे देस डेराहि ॥ ४ ॥ रातौ दिन सुनियत जहां दुशमन ही को नास। सात्विक भाव हो में जहां पंसु घटोह उसास ५

End—अथै काक्षरात्पदारभ्य षड्वि शतिवर्ण पर्यंत पृथक पृथक नामाख्यु-च्यते ॥ उक्ता अत्युक्ता बहुरि मध्या कहिये जानि। कहो प्रतिष्ठा बहुरि सुप्रतिष्ठा मन मे आनि ॥ ४२ ॥ गायत्री उष्निक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि। वृहती पंगति कहि बहुरि त्रिष्टुप जिय मे जानि ॥ जगती अति जगती कही बहुरि सक्करी जानि। अति सक्करी गनाइ पुनि अष्टनि अष्ट बखानि ॥ पुनि कहि धृति अति धृति बहुरि कृति पुनि विकृति बखानि ॥ बहुरि संस्कृत जानि पुनि अति कृति उतकृति मानि ॥ ये क बरन प्रस्तार ते छबिस लौ ये नाम ॥ क्रमते कहत फनिन्द मुनि होत श्रवन विश्राम ॥ वृत्तानि समाप्तम् ॥ शुभं भूयात् सावन मास कृष्ण पक्ष ७ बुधवासरं सम्वत् १९०७ साके १७७२ इति श्री मन्महाराजाधिराज बाघल गोत मनिराजा हिम्मत सिंह कारिते मिश्र सुखदेव कृते पिंगल छन्दो विचारे वर्ण वृत्तानि ॥

Subject—प्रार्थना, राजवंश वर्णन—पृ० १—३। गुरु, लघु संज्ञा, प्रस्तार षटकल, अक्षर गण, गण विचार, उद्दिष्टादि। ३—५। गाहा छन्द, विषमस्थान, विगाहा, उगाहा, गाहिनी, सिंहनी, खंधा, वर्णभेद, दोहा भेद, व्याघ्र अविडाल, सुनक, उंदर। ६—९ तक। रसिका, रोला, उल्लाला, साम्लो संज्ञा भेद, काव्य दोष, छप्पय, दुटिका, अरिल्ला, पादाकुलक, चौबोला, दंडा, पद्मावती, कुंड-लिया, अमृतध्वनि, गगनांगन, दोवइ, उल्लना, पंजा, सिखा, माला, चुलिआला, सोरठा, हाकलि, मधुभार, आभीर, देवकाला। ९—१३। दीपक, सिंहावलोकन, प्लवंग, लीलावती, हरिगीत, त्रिभंगी, दुर्मिला, हीरका, जनहरन, मदनहरा, १४—१५ उथ्थल, मोहनी, हरिपद, बरवै, सवैया, सुगति, काम, ताली, शशि, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदरतीर्था, कमल, तीर्णो, नगानिका, संमोहा, हारी, सेषा, तिलका, विमोहा, चतुवंसा, मंथान, संखनारी, मालती, समानका, सुवासक, करहंसी, सरप रूपक, वसुमती, मदलेखा, विद्युन्माला, प्रमाणिका, मल्लिका, तुंगा—१६—१८। कमल, मानवकीड़ा, मादंत, कमला, चित्र, तोमर, हलमुखी,

रूपमाली, मांडवंध, संयुता, चंपकमाला, सुमुखा, अमृतागति, बंधु, तुकाहि, दोधक, सालिनी, दमनक, सेनिका, मालती, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, स्वागता, रथोद्धता, भुजंग प्रयाग, लक्ष्मीधर, त्रोटक, मौक्तिक दाम, सारंग, मोदक, तरल नयन, सुंदरी, प्रमिताक्षरा, वंशस्थ, इन्द्रवंशा, माया, तारक—१९—२३। कंदु, पंकावली, वसंततिलका, चक्रपद, भ्रमरावली, सारंगिका, चामर, मनहंस, मालिनी, सरभ, नाराच, नील, चंचला, ब्रह्मरूपका, शिखरिनी, मंदाक्रांता, हरिणी, मंजरी, चंचरी, चन्द्रमाला, धवला, गीतिका, गंडका, स्रग्धरा, नरेन्द्र, हंसी, मोहिनी, सुंदरी, चकोर, मत्तगयंद, दुर्मिल, किरीट, त्रिभंगी, सालूर—२४—२८। सौदाम, सुंदरी, पुष्पतारा, सैरभ, घनाक्षरी, रूपघना, शशी, वैदिक छंद—२९।

No. 412(*g*). Pingala Bhāshā (Vritti vichāra) by Sukhadeva Miśra of Kampilānagara. Substance—Country-made paper. Leaves—91. Size—8 × 4 inches. Lines per page—18. Extent—1,435 Anushtup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1858. Place of deposit—Ṭhākura Jagadeva Simha, Village Gujauli, Post Office Baurī, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीरामानुजायनमः ॥ अथ पिंगल भाषा लिख्यते ॥ चौ० छंद ॥ जय जय मोहन मदन मुरारी। कमल नयन केशव कंशारी ॥ करुना कर केसो रिपु कृष्ण जय वसुधा धर बावन बिस्न ॥ मनहरन छंद ॥ बिघन बिनासन है जाके आयु आसन है से ये पाक सासन है सुमति करन को। आपदा के हरन हैं संपदा के करन हैं सदा के धरन हैं सरन असरन को। कुंज कुल को है नव पल्लव जो है सरि सुखदेव सोहै धरे अरुन चरन को ॥ बुद्धि के विधायक सकल सुषदायक सुसेवो कविनायक विनायक चरन को ॥ दोहा ॥ मदन पाल कृपाल के कमल चरन चितलाइ। कियो सुकवि सुषदेव यह वृत्त विचार बनाइ ॥ पिंगल नाम धर्माल्त कृत छंदो ग्रंथ अगाध। सार लियो तिन को कछू छमियो कवि अपराध ॥

End—समुझि बिचारि सु चारु मति दोहा अर्थ बिसेषि भो। रघुवर दास अनंद जुत कवि पंडित जन लेषि भो ॥ होत मात करतव्य बात बश पिता मरन भो। विछि राम वन गमन वारुणी राज धरन भो सुवन केकई योग चतुर ब्रह्मा मोहि कीन्हा। नृपति तनय प्रभु बड़ापन नाहकै दीन्हा। वादि बड़ाई लेहि बंश तुम सब मिलि अब राज लय रघुवर दास ये कथित कहि राम चरन जुग हृदय धरि।

सवैया । आनंद कंद सुकोशल चंद यहै बलिहारी सुबाहु तुम्हारी । अगदे जेहि को जश दै अरुवेदन हु कहि नीति सुगाई । पार न पाया शारदे शेष गणेशहु थाहि रहे सिर नाई । रघुवर दास सु आश यही कृपा करि के हमहु अपनाई ॥ इति श्रीरस्तु ॥

No. 412(*h*). Pingala Himmata Simha by Sukhadeva Misra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—44. Size—8 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—792 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript.—Samvat 1920 or A. D. 1863. Place of deposit—Thākura Lāyaka Simha, Village Bhagawānpura, Post Office Biswān, District Sītāpura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पिंगल हिम्मत सिंह को लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणपति गौरि गिरीस के पाय नाय निज सीस ॥ मिश्र सुकवि महाराज कह देत बनाय असीस ॥ छप्पै ॥ रजत खंभ पर मनहुं कनक जंजीर बिराजति बिसद सरद घन मध्य मनहु छन दुति छवि छाजति ॥ मानहु कुमुद कदंब मिलत चंपक प्रसून अति मनहु मध्य घनसार लसति कुंकुम लकीर अति ॥ हिम गिरि पर मानहुं मानहु रवि किरिनि इमि घन धरिय अरबंग महं सुकदेव सदासिव मुदित मन हिम्मत सिंह नरेस कहं ॥ दोहा ॥ रतन जटित भूपाल को मनो विभूषन बेस जाहिर जंबू द्वीप में भिरे अमेठी देस ॥ सपनेहू सुनियत जहां काहू को डर नाहिं । सदा एक परलोक हो सिगरे लोग डेराहिं ॥ राती दिन सुनियत जहां दुसमन ही को नास । सात्विक भावहि में जहां अंसुवा दोह उसास ॥

End—अथ गद्यस्योदाहरण ॥ जबर अरि जेर कर सेर समसेर समसेर बहादुर ॥ वैरि वर वानर विदारन सिंह सत्य ॥ हत्य अकृत्य बल पत्थ समान महा ॥ बीराधि बीर समर धीर धरनि धुरंधर ॥ धराधीस धवल धाम धवल सुजस पुंज । विजित सुर धुनी धार धवलिम श्री महाराजाधिराज हिम्मत सिंह चिरंजीव ॥ अथै काक्षरात्यादारंभ्य षड्विंसति वर्ण पर्यंत पृथक पृथक नामन्युच्यते ॥ उक्ता अत्युक्ता बहुरि मध्या कहिये जानि । कही प्रतिष्टा बहुरि सुप्रतिष्टा मन में आनि ॥ गायत्री उष्णिक बहुरि कहत अनुष्टुप जानि । बृहती पगती कहि बहुरि त्रिष्टप जिय में आनि ॥ जगती अति जगती कही बहुरि सक्करी जानि । अति सक्करी गनाइ पुनि अष्टति अष्टि बखानि ॥ धृत अति धृत कृत प्रकृत पुनि आकृति विकृति बखानि ॥ बहुरि संस्कृति जानि पुनि अभि कृति उतकृति मानि ॥ एक बरन प्रस्तार से छबिस लौ ये नाम । क्रमते कहत फनिंद सुनि होत श्रवन विश्राम ॥

इति श्री मनमहाराजाधिराज हिम्मत सिंह कारते मिश्र सुखदेव कृते छंद विचारो वर्ण वृतानि निवृत्तानि संपूर्णम् सुभमस्तु ॥ श्री संवत १९२० शाके १७२४ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तिथैा द्वतीयायां मिदं पुस्तकं समाप्तम् लिष्यते गनेस पंडित पैंदापुर स्थाने ॥

Subject—इस पुस्तक में पिंगल काव्य वर्णन है।

No. 412 (*i*). Pingala Bhāsha (Vritta vichāra) by Sukhadeva Miśra of Bigahāpura Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—12 × 6 inches. Lines per page—32. Extent—1275 Anushtup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1939 or A. D. 1882. Place of deposit—Lālā Bhāgawatā Prasāda, Village Sadābāpur, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (*j*). Chhanda Vichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—New paper. Leaves—50. Size—13 × 8 inches. Lines per page—22. Extent—620 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1943 or A. D. 1886. Place of deposit—Paṇdita Krishṇabihāri Miśra, Editor, *Mādhuri*, Lucknow.

Note—प्रथम पृष्ट खंडित है। शेष खंडित प्रति सहित पूर्ण विवरण सहित No. 412 F पर लिखा गया है।

No. 412 (*k*). Piṅgala (Himmaṭa Simha) by Sukhadeva Mishra. Substance—Country-made paper. Leaves—33. Size—10 × 6 inches. L[illegible] per page—64. Extent—1,805 Anushtu Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A. D. 1818 Place of deposit—Siva Nārāyaṇa Vājpai, Village Vajpai kā purwā, Post Office Sisaiyā, District Bāharāich (Oudh).

No. 412 (*l*). Chhaṇdoniwāsa Sāra by Sukhadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—13 × 6 inches,

Lines per page 10 Extent—600 Anushtup Ślokas. Appearance New. Character—Nāgarī Place of deposit.—Daughter of Paṇḍita Dwarikā Prasāda Trivédī, care of Devi Dina Kuram, Numberdāra Village Lakshmaṇpura, Post Office Satarikha, District Bārābankī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ मगन तीनि गुरु भूमि सुर सिद्धि करै ततकाल ॥ यगण आदि लघु नीर प्रभु सुख संपदा सुकाल ॥ १ ॥ भगन आदि गुरचन्द्र सुख पूजै मन को आस ॥ गीत सोरठा का विसव पूरन पूरय विलास ॥ २ ॥ भगन तीलहु शेशयन सुख संपति आनन्द ॥ कवित छंद दोहा करो फलो होइ सुख कंद ॥ ३ ॥ जगन मध्य गुरु होत है ताकर देव प्रकास होत सूल फल देत नहि निःफल मन को आस ॥ ४ ॥ तगन अंत लघु जानिय पवन देवता मानि ॥ दूरि बहावै सर्वदा करै सबै हित हानि ॥ ५ ॥ रगन मध्य लघु देखि सो पावक इष्ट विचारु ॥ मृत्यु करै कवि ते कहत मति करु कवित सिगारु ॥ ६ ॥ सगन अन्त गुरु कहत है रवि ताको बलवान ॥ रोग बढ़ै आनंद घटै पंडित सुनहु सुजान ॥ ७ ॥

End—दोहा ॥ होइ हानि हाते निपटि छाहे सुख को मूल ॥ बरनि शुद्ध कविराज यह कहो जगत अनुकूल ॥ ८ ॥ रस बर्नन—प्रथम सिंगार सुहास रस करुना बहुरि सुजान ॥ रौद्र वीर मुसयान कहि औ त्रिभत्स सुपयान ॥ ९ ॥ अद्भुत रस कविराज कहि नवरस कहियत और ॥ नवरस नाम प्रसिद्ध ये बरनत कवि सिरमौर ॥ १० ॥ प्रतनाय अनुभाव के अरु विभाव के चित्त ॥ जो सुख उपजत आनि कै सो कहियत रस मित्त ॥ ११ ॥ कवित्त—कोटि उपाय के छिपाइ करै कोउ किन भोतर को उपरहि आनि उफनात है ॥ बोलत चलत चितन मे लखन पै ये नयन को नजीर बनाइ करामात है ॥ सुघरै न कूर औ कूरै न सुघर भावै जाको जैसो समुझि तैसो संगति सुहात है ॥ तीन तीन गुन के मया के मनुषन के साहब को सगरो समुझि जाती जात है ॥ १२ ॥ इति श्री कवि कुलालंकार चुड़ामनि श्री सुपदेव विरचितायां छंदो निवास सार समाप्तम् शुभम्भूयात सम्वत् १९२७ शाके १७८५ अषाढ़ शुक्ल १ बुध वासरे अलिष द्वारिका प्रसाद त्रिवेदोन ॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—गण भेद तथा गणों के फल। दग्धाक्षर पाठ (ह झ ध म ख र प भ)। दग्धाक्षर फल। गुरु लघु विचार, लघु के नाम। पादाकुल छन्द। रसिक छन्द, पादाकुलक, गाथा छन्द, दोहा लक्षण, मकर छन्द, रोला छन्द, रसिक छन्द, चौपैया छन्द, संधान छन्द, सुलक्षण, न्यक्तर

छन्द, घनानन्द, पादाकुलक, पल्लिलह, काव्य लक्षण, कुंडलिया, दुरती लक्षण, कोर छन्द के लक्षण ।

(२) पृ० ७—२८ तक—उल्लाला, मोहन छन्द, राइ से विगत नंगा । चैाबोला, भूलना, शिष्यमा, घुलि माल, पद्मावती । दोवाइ छन्दा पंजा छन्द । प्रज्वलिय, हाकलि छन्द, भार छन्द, आभोर छन्द, कुकुभ छन्द, सरसी छन्द, दंडक छन्द, दीपक छन्द, सिंहावलोकन छन्द, दिग्पटा, प्लवंगम, लीलावती, हरिगोतिका, त्रिभंगी, दुर्मिला, महीर, अलहरन, मदनहर मरहटा, दंडक, अमृतध्वनि, श्रीछंद, न्यकुला, मही छंद, मधु छंद, सार, पतिष्ठा, हत छन्द, हारित छन्द, हंसी छन्द, जमक छन्द, गायत्री, शिवराज, डिल्ला, मालती, तनमध्या, चैारासी, शशिवदना, समुमति, विज्जुहा, सामानिक, सुवस छन्द, करहंची छन्द, सिश्रुरूप, मदनलेषा, मधुमति, विद्युन्माला, प्रमानिका, मालिका छन्द, तुंगा छन्द, पंकमाला, कुमार ललित, चित्रपद, महालक्ष्मी, सारंगिका, पाइता छन्द, कमल छन्द, बिब छन्द, तोटक छन्द, रूपमाला, संयुता छन्द, चंपकमाला, सारस्वती, सुश्याम छन्द, अमृतगति, नीलस्वरूप, सुमुपी छन्द, दोधक छन्द, मदनक छन्द, सेनिका छन्द, मालती छन्द, इन्द्रवज्रा छन्द, उपेन्द्र वज्रा, भुजंगप्रयात छंद, लक्ष्मीधर, तोमर छन्द, मारण छंद मुक्तिदाम, मोटक छंद तरलन मान, सुंदरी छन्द, द्रुतविलंबित छन्दों के लक्षण ।

(३) पृ० २९—४२ तक—माया छन्द, तारक छन्द, कदंक छन्द, पंकावली बसंततिलका, चक्र छन्द, भ्रमरावलि, रंगिका, ,चामर छन्द, त्रिभिपाल छन्द, मनहरन छन्द, मलिन छन्द, सार छन्द, नाराच छन्द, नील छन्द, चंचला छन्द, पृथ्वी छन्द, मालाधर, मंजीर छन्द, कीड़ा छन्द, चंचरीक छन्द, शार्दूल विक्रीड़ित, चन्द्रमाला, धवल छन्द, गीतका, दंडिका, स्रग्धरा, मंदिरा, छरी, पवित्राक्ष, गजेन्द्र गति, दुमिला छंद किरीटी, सवैया, त्रिभंगी, शालूर, सुंदर छन्द, सुख छन्द, छप्पय, दोहा, भेदना, गनांगन देवता फल, गणमाव दग्धाक्षर फला, विचार, रस वर्णन, ग्रंथ समाप्त ।

No. 412 (m). Fāzila Alī Prakāśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—62. Size—10 × 5 inches. Lines per page—32. Extent—1,116 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Date of manuscript—Samvat 1919 or A.E. 1862. Place of deposit—Paṇḍita Śhivadāyalaji Village Jaunāpura, Post Office Biswān, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—अथ फाज़िल अली प्रकास ग्रंथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ कमल नयन करुना करना कमला पति करतार। करो कृपा कविराज को कामद कान्ह कुमार ॥ अथ छेकानुप्रास ताको लछन ॥ तुकसों तुक जोई मिलै चरन चरन सुर वृत्ति। अक्षर के स्वर होंहि सम छेका कहति सुकति ॥ यथा ॥ जय जय गननायक सिद्धि सहायक बुद्धि विधायक भै। हरनं जय अत्र दाहन विघन विगारन मूषक वाहन जन सरनं ॥ जय जय गुन आगर सब सुष सागर सवनि उजागर दुवन दमों। जै जै जगबंदन कलिमल कंदन गिरिजा नंदन नमः नमो ॥ अथ छंद त्रिभंगी ताको लक्षन ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पर बहुरि सुरस्तु पर विरति जहां। फनि भाषिन मानौ बुधिबल आनौ गुर यक आनौ अंत तहां ॥ कहुं जगनन आवै कवि मन भावै श्रवन सुहावै गुनहिं गहै। तिरभंगी नामा छंद सुदामा पति अभिरामा किरति लहै ॥

End—अथ तपतबद्ध कविता ॥ दरव चति आतंक बाढ़ो चढो चढ़ो फाज़िल दुरद दरदु भारो पोठि कूरम भयो मुष अति जरद ॥ दरज पाई भार धरती भयो भूधर गरद गहे गड़ सिर गिरे छै मिरे हरवै वरद ॥ अथ प्रेम हेलिका ॥ नाम एक सब के मन भावै आंक तीनि जामें बनि आवै ॥ उलटि पढ़ैते पसु ह्वै जावै। जो जानै सो पंडित राइ। अथ दव सरस्रो छंद ॥ तोको चलो तुदो चलि आयो तोहि देषि रह्यो लुकाइ ॥ तू चलि जाहि तोहिलै आवै मोवर सासु रिसाइ ॥ अथ वारि ॥ सब काहु के प्रगट है घर घर कारज सिद्धि। है अक्षर है सरथ है एक नाम परसिद्धि ॥ आसीर्वाद ॥ जब लगिवेद पुरान पुरुष पूरन नारायन। जब लगि भूधर भूमि भानु ससि घन तारायन ॥ जब लगि गौरि गनेस सेष सुरपति गुर मुनिये। जब लगि गंग समुद्र रुद्र व्यासादिक गुनिये ॥ कवि-राज राज फाज़िल अली महाबली कीरति लहै। संपति समाज दंपति सहित चिरंजीव जब लगि रहै ॥ दोहा ॥ दसमो रवि पूरन भयो फाज़िल अली प्रकास। संवत सत्रह सै अहा तेंतिस कातिक मास ॥ इति नवाब इनाइत खांन आत्मज महाबली मिरजा फाजिल अली विरचिते फाजिल अली प्रकासे संवत १९१९ साके १७८४ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ षष्टमायाम सोमवासरे समाप्तं लिषतं गनेस पंडित ॥

No. 412(n). Fāzila Ali prakāsa by Sukhadeva Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size —8½ × 4½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1733 or A.D. 1676. Place of deposit —Rāja Pustakālaya Bhingā Rāja Baharāich).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ फाजिल अली लिख्यते । प्रथम वृत्यानुप्रास ताके लछन ॥ दोहा ॥ पुरबे तुक एकै वरन चरन चरन जह पाइ । कहै वृत्य अनुप्रास सो पंडित कवि समुदाय ॥ १ ॥ संस्कृतोपि आवृत्ति वर्णनं संपूर्ण वृत्यानुप्रास लोकाद्वयः ॥ दोहा ॥ कमल नयन करुणा करन कमलापति करतार । करहु कृपा कविराज कहं कामद कान्ह कुमार ॥ २ ॥ छंद त्रिभंगी छेकानुप्रास इन दुहू को लछन ॥ पहिले कल दस पर पुनि वसु वसु पन बहुरि सुरस पर विरति जहां फनि भाषत मानो बुधजन जाने गुरयक आने अंत तहां ॥ कहं जगनन आवै कवि मनभावै श्रवन सुहावै दुनहि नहे । तिरभंगी नामा छंद सुधामा अति अभिरामा कीर्ति लहै ॥ ३ ॥

End—अवद एक सबकै मन भावै । आंकतोनि तामें गनिआवे ॥ उलटि पढ़ै तो पसु है जाइ । जो जाने सो पंडित राइ ॥ दरबयति आतंक बाढ़ी चढ़ो फाजिल वृन्द । दरदु मोरो पीठी कूरम न ऐ मुख अति जरद ॥ दरज आई भारथत्तो भये भूधर नरद । दर गहे गढ़ सिर गिरे अरि छै भरे हर वदर ॥ तो को चलो तुहो चलि आयो रोहि कि रहो लजाइ । अवतु जाहि तोहि लै आवो मो घर सामु रिसाई ॥ दोहा ॥ पानो सव का प्रगट है घर घर कारज सिद्ध । है अक्षर है अर्थ है एकै नाम प्रसिद्ध ॥ इति श्री फाजिल अली ग्रंथ समाप्तम् संपूर्ण मस्तु ॥

Subject—अनुप्रास समेद, राजकुल वर्णन, कवि कुल वर्णन । पृ० १—३ तक, जयशब्द, पज्झटिका छन्द, छप्पय, मनहरण व्यतिरेकालंकार, रूपक, उल्लेख, यश व प्रताप वर्णन, यमक गण विचार गणदेवता, फल, दुर्गण विचार, गोपाल छंद, वृत्ति विचार, दग्धाक्षर, वर्णविचार, गुरु लघु विचार । पृ० ४—८ रसनिरूपण भाव, संस्कृतेपि, रसतरंगको नवरस कथन, शृंगार रस, संयोग सिंगार, माधव छंद, उत्प्रेक्षा, वियोग, अत्युक्ति, आक्षेप । पृ० ९—११ तक, नायका वर्णन, स्वकोया, जाति, नीलकालंकार, गोपाल छंद, दोहा, सरसो छंद, उत्प्रेक्षा, लुप्तोपमा, अमशैशव मुग्धा, नव यैावन मुग्धा, सरसी छंद, अज्ञात यैावना, धर्मलुप्तोपमा, स्वभावोक्ति, नवोढ़ा मुग्धा, विश्रब्ध नवोढ़ा, यमक, दृष्टान्तालंकार विश्रुब्धनवोढ़ा, मध्यमा, संदेहानुगत दृष्टान्तालंकार, प्रगल्भा, उत्प्रेक्षा, मध्याधीरा, वक्रोक्ति, संस्कृत्येपि, मध्याधीरा, प्रौढ़ाधीरा, अपन्हुति, प्रौढ़ाधीरा, यमक, प्रौढ़ाधीरा धीरा, ज्येष्ठा कनिष्ठा, संस्कृतेपि, परकोया, अनूढ़ा, पादाकुलक, गुप्ता, व्याजोक्ति विदग्धा, ध्वनि, लक्षिता, अनुशयना, संकेत संदेहा, व्याजोक्ति सामान्या, अन्यसंभोग दुःखिता, वक्रोक्ति, व्यतिरेक, रूपगर्विता, मान । पृ० १२—२८ तक । अष्टनायका—खंडिता अपन्हुति, प्रोषितपतिका, उत्प्रेक्षा, अत्युक्ति, शब्द रूपालंकार, अभिसारिका, भ्रान्तिमान, धर्म लुप्तोपमा, विप्रलब्धा, उक्ता, कलहंतरिता, स्वाधोनपतिका, वासकशय्या, प्रोषितपतिका, उत्तमनायिका, मध्यमा,

चर्द्धसमवृत्ति, चधमा, नायिका की जातियां, पद्मिनी, चित्रनी, संखनी, हस्तनी, सखी, शिक्षा, उलहना, परिहास, शृंगार व आभूषन, श्लेष, दूती, नायिका की दूती, विरहवेदन, विहार। पृ० २९—३७ तक, नायक लक्षण, पति, अनुकूल, दक्षिण, दृष्टान्त, शठ, धृष्ट, उपपति, वैशिक, उत्तम, मध्यम नायक, अनुमान चवन, प्रोषित पति, हस्कान्तंकार, प्रोषित वैशिक, मानी, चतुर, अनभिज्ञ, पीठ मर्द, वचन व क्रिया चतुर, विट, चेटक, विदूषक, भाव, स्थायी भाव, व्यभिचारी, अंतक, अनुभाव, हाव, लीला, ललित, विलास, विच्छित हाव, विसम, व्यतिरेक, गर्वित उत्प्रेक्षा, विहित, किलकिंचित, विब्बोक कुट्टमित, प्रत्यक्षदर्शन, स्वप्न, चित्र, श्रमला छंद। पृ० ३८—४२ विप्रलंभ, समीप, अभिलाषा, गुनकथन, सुमति, उद्वेग, प्रलाप, चिन्ता, जड़ता, व्याधि, उन्माद, पृ० ५०—५२ तक। रसनिरूपण, करुणा, रौद्र, वीर, दया, दान, युद्ध, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, सम, मध्याक्षरी छप्पय—पृ० ५३—५६ तक इति।

No. 412 (*o*). Fāzila Prakaśa by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—63. Lines per page- -32. Extent—1,008 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1753 or A D. 1676. Place of deposit—Ṭhākura Śiva Prasāda Simha, Katelā, Post Office Fakharpur, District Baharāich (Oudh).

No. 412 (*p*). Jnāna Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper-Leaves—11. Size—7½ × 5½ inches. Lines per page—8. Extent--52 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit--Rāmādhina Murāw, Village Badausarāya, District Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—अथ ज्ञान प्रकाश लिख्यते ॥ दोहा ॥ दीन वचन ह्वै शिष्यने नमस्कार कियो आइ। बांध्यो मन संसार मैं छूटै कौन उपाइ ॥ १ ॥ द्वितीय प्रश्न पुनि कहत हौं नीके कहिये मोहि ॥ पंच कोश अपुतोंनि की उत्पति कैसे होइ ॥ २ ॥ गुरु वचन ॥ सिष उत्तर सुनि गुरु कह्यो निश्चय करु उर माहिं ॥ छूटै एक विचार ते दूजो साधन नाहिं ॥ ३ ॥ ऐके ते दृष्टा भयो दृष्टा सत्ता पाइ। पंच कोश करि रचित है कहौं तोहि समुझाइ ॥ ४ ॥ शिष्य ॥ ईश्वर तुम दृष्टा कह्यो चेतन सत्ता पाइ ॥ भिन्न भिन्न करि मोहि इन कौ कहौ बुझाइ ॥ ५ ॥

End—हलन चलन भोजन किया ज्ञानिहु के घर होइ ॥ अहंकार करि रहित है ताते बंधै न कोय ॥ ४६ ॥ अरिल्ल ॥ आतम उद्यत रूप सर्वगत जानु रे ॥ वेकल्प रहित साक्ष्य सुद्ध परमानु रे ॥ प्रारब्ध के योग दुख सुख भासहो ॥ आतम सुद्ध सरूप सुता परगासहों ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कहत सुनत सबही थके उभयो एक निरधार। ब्रह्म अग्नि परगट भई जक भयो जरि छार ॥ ४८ ॥ कीन्हों ग्रंथ विचार यह निश्चै ज्ञान प्रगास ॥ श्रवण सुनत आनंद युत मिटै द्वैत जग त्रास ॥ ४९ ॥ गुरु शिष को संवाद यह जोई सुनै चित लाइ समुझै अपने रूप को जक सर्म मिटि जाइ ॥

Subject—(१) पृ० १—४ तक—संसार में बंधे हुए मनके छुटकारे का प्रश्न पूछना (शिष्य द्वारा)—गुरु का ज्ञान द्वारा संसार से छुटकारा पाने का वर्णन, आनन्द कोश तथा कारण और सूक्ष्म शरीर का वर्णन। स्थूल शरीर का वर्णन, जीव का वर्णन, जीव के ब्रह्म का आभास कथन और ब्रह्म का निर्विकल्प।

(२) पृ० ५—१० तक—तत् तथा त्वं पदों के वाच्य तथा लक्ष्य अर्थ। देह और प्राण का पृथकत्व। माया का मिथ्या होने का वर्णन। ईश्वर की परिभाषा। अविद्यांधकार विनाश होने का समय।

(३) पृ० ११—११ तक—ज्ञानी की सभी क्रियाओं का निरभिमानता से होने का वर्णन। निरभिमानी का क्रियाओं में न बंधने का वर्णन, दुख सुख भासने का कारण, अपने रूप के पहचानने से संसार के भ्रमों का विनाश।

No. 412 (*q*). Jnāna Prakaśa by Sukhadeva. Substance—Country-made paper Leaves—27. Size—$6\frac{1}{2}$ × 5 inches. Lines per page—34. Extent—459 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1755 or A.D. 1698. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Śrī Bābā Rāmacharanadāsajī, Chandrabhawana Payāgapura, Post Office Payagapur, District Baharāich (Oudh).

Note—शेष सब No. 412 (*p*) पर लिखा गया है।

End—नीति अनीति विवेक विचारो। राखो नीति अनीति विसारो ॥ उलटि वायु में सहज समावै। निज स्वरूप आपन तब पावै ॥ सांख्य ज्ञान मत दूजे सुखो। बरनो करे ज्ञान गुरमुखो। पुनि वेदांतसार मत कहै जामे कहन सुनन नहिं रहै। पूरनब्रह्म निरंतर अहै कैसा नीति अनीति कहै ॥ ज्ञान प्रकाश कवन

सो कहे । सब में सोहं प्रकासो लहै ॥ वेदांतो पुनि प्रगट बपाने बल्ली साधुन ह्र सो जानै ॥ षटशास्त्र को मिश्र विचारा । तत्व विचार पुनि सब मत सारा ॥ जैसे एके गावन हारा । राग रागिनी बहु विस्तारा ॥ जोई जोई जाको भावै ॥ रोभि रोभि पुनि सोई गावै ॥ विधि निषेध कवने सो कहैं । जैये कै गावन हारा लहै ॥ बल्ली सर्व मत पूरन एका । अपने भावने भये अनेका । सबु बल्ली सुरसरी है । निर्मल अति उजियारो रहै ॥ तन में तन सो नियरे रहै । ज्यों जल में शशि तारे रहैं ॥ षट दरसन ब्राह्मण जोगो जंगम सेवरा संन्यासी दरवेस । बिना प्रेम पहुंचे नहीं दुर्लभ हरि को देस । चारि मनुज नौ ग्रजन्ज हैं ग्यारह पसु दस पक्ष । बोस महेह तीस अहि एह चैारासी लक्ष ॥ लिषितं गंगासिंह क्षत्रिय सं० १९०२ चैत्रमासे असित पक्षे पष्टोयां सनिवासरे ।

No. 412 (*r*). Maradāna Rasārṇava by Sukhadeva Miśra of Kampila. Substance—Country-made paper. Leaves—42. Size—10 × 6 inches. Lines per page—16. Extent—1,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1736 or A.D. 1679. Date of manuscript—Samvat 1834 or A. D. 1777. Place of deposit—Thākura Śiva Prasāda Simha, Village Katailā, Post Office Fakharapura, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ कानन टूटे विघन के जानन के यह ग्यान । कज आनन को जाति मिटि गज आनन के घ्यान ॥ वैस वंस अवतंस सम निर्गुन गन को दरियाव । कनक सिंह जाहिर भयो । जग में रैया राउ । दिलीपति के काज जिन कोटिक करी फतूह । जस संगात जग पर अजो जाके जस के जूह ॥ जाहिर हिम्मत हद भयो सबहीं हुन को मेड । सुमृति जानि जग में करी प्रगट पुन्य को पेंड़ । पृथ्वी पालन के भयो ताके पृथ्वीराज मोज देन को भोज सो बड़ो गरीब नेवाज ॥ महा बाहुता के भयो ज्यों क्षीरधि ते चंद । भूमि पुरंदर सो लगी लपत पुरंदर नंद ॥ सेत करो पुहमो सकल । जाके जस को छोह । माने क्षीर के सिंधु ते काढ़ो बहुरि बराह ॥ मरदानो ताके भयो मुदन रैया राउ जग जा को अविचल बचन अंगद कैसो पाउ ॥ मुदन कवि सुखदेव सो भाष्यो निपट सनेहु । कह्यो नाइका नाइकन बरनि ग्रंथ करि देउ । मुदाने के हुकुम ते मिश्र सुकवि सुखदेव कहत लक्ष लक्षन सहित न्यारे न्यारे भेव ॥

End—ऐसे नवहू रसन के भेद कहे हम जानि । रस ग्रंथन को रीति यहि सबै जानि है जानि ॥ यह मर्दान रसार्नो पूरो कोन्हों ग्रंथ । याके माने मानि है रस ग्रंथन को पंथ ॥ इति श्री मिश्र सुखदेव कृतो रसार्णव संपूर्ण समाप्त मस्तु

मिश्र शिवदास दासेन श्री श्री श्री चौधरी देव सिंहस्य पठनार्थं मिती मादियां कृष्ण पक्षे तिथौ पंचम्यां शनौ संवत १८३४ प्रसना गोलालपुर तिनके मध्य मुठाम। मिश्र सुकवि शिवदास तहं बसै जयोपुर ग्राम ॥ तिनपै करि कै बहु कृपा देवसिंह कह्यो हमैं लिपिदेव यह लवै रसनि को भेव ॥ जौलों देस नरेश हैं ईस दिनेस छपेस देवसिंह दलसिंह सुत करै राज्य सब देस ॥ श्री दुर्गा देवैनमः श्री रामानुजायनमः चिरंजीव तब लौ रहै जबलों रवि रजनीस जाको यह पोथी लिखी ताको यहै असीस ॥ श्रीपूरब खैराबाद को परगना बिसवां नाम तामे बसै सु चौधरी देवसिंह सरनाम ॥ यह पुस्तक संवत १७३६ मैं मदानसिंह की आज्ञा से रची गई।

Subject—पृ॰ नं॰ १—४२ तक—नायिका नायक भेद आदि कवित्त सवैया आदि छन्दों में वर्णन किये गए हैं।

No. 412(s). Vrittivichāra by Sukhadeva Miśra of Kampilā. Substance—Country-made paper. Leaves—176. Size—9 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—1,056 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1626 or A. D. 1569. Date of manuscript—Samvat 1851 or A. D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Rāmadulārē, Post Office Deva, Village Deva, District Bārābaṇki (Oudh).

Note—(1) आदि अंत No. 412 (g) पर लिखा गया है।

Subject—(१) पृ॰ १—४ तक—वंदनाएं—कृष्ण, गणेश को, ग्रंथ का आधार, छन्द को परिभाषा।

(२) पृ॰ ४—१४ तक—कविवंश वर्णन। आश्रयदाता का परिचय तथा ग्रंथ निर्माणकाल।

(३) पृ॰ १५—२८ तक—दग्धाक्षर विचार, प्रतिवर्ण फल, पिंगल मतानुसार गुरु विचार, उदाहरण, टीका ३ ॥ गुरु का उदाहरण गुरु के नाम, लघुविचार, लघु के नाम, लघु के उदाहरण, सूत्रनिका प्रत्यय लक्षण, प्रस्तार लक्षण, पिंगल मत वर्ण प्रस्तार, अगस्त्य मत, प्रस्तार के तीन भेद, स्थान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, प्रस्तार भेद ज्ञान, टीका, वर्ण सूची लक्षण, वर्णसूची कर्त्तव्यता, पाताल लक्षण, स्थान विपरीत, उदाहरण, संख्या विपरीत, उदाहरण, उभय विपरीत, मात्रा और सिद्ध का प्रयोजन।

(४) पृ॰ २९—३२ तक—मर्कटी, वर्ण मर्कटी, पिंगल मत वर्ण मर्कटी, वर्ण मर्कटी का चक्र।

(५) पृ० ३२—४० तक—उद्दिष्ट लक्षण, मनस्य मत उद्दीष्ट, स्थान विपरीत का उद्दिष्ट, उदाहरण, वर्ण नष्ट, संख्या विपरीत उभय विपरीत, वर्ण मेरु।

(६) पृ० ४१—५० तक—लुप्त।

(७) पृ० ५१—५८ तक—समलक्षण, उदाहरण, अर्द्ध समलक्षण, उदाहरण, विषमवृत्त, उदाहरण, दंडक का लक्षण, उक्तादिको सूचिका, वर्ण प्रस्तारको सूचनिका।

(८) पृ० ५९—८० तक—समवृत्त श्री छंद, उक्ती श्री छन्द, मही छन्द, मधु छन्द, ससी, रमन, पंचाल, मृगेन्द्र, मंदर, प्रतिष्ठा, धारी, नगानिका, पंचाक्षर प्रस्तार, संमोहा छन्द, कौर छन्द, हस्ति, हंसी, जमक छन्द, गायत्री षडाक्षर प्रस्तार, सेषारौना छन्द, डिल्ल, ससिवदना छंद, वसुमति, विज्जोहा, मंथाना, सप्ताक्षर प्रस्तार, उष्णिक छंद, सुवास, करहंच, मोरस, रूपका, मदलेखा, मधुमती, चतुष्टय, अष्टाक्षर, प्रस्तार प्रमाणिका, कमल, कुमार ललिता, चित्रपदा महोरी, बृहती, सारंगिका, पाइता, कमला, विंत्रा, तोमर, रूपमाली, दशाक्षर प्रस्तार संजुता, चंपकमाला, सारवती, सुषमा, मत्तगत, एकादशाक्षर प्रस्तार, जगती नील सरूपा, सुमुखी दोधक, मदनक, सेनिका, मालिनी, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वामछन्द के, चतुर्दश जाति का उद्दिष्ट ॥ नष्ट

(९) पृ० ८१—९२ तक—द्वादशाक्षर प्रस्तार, भुजंगप्रयात, लक्ष्मीधर छन्द, सारंग, मौक्तिक, गंगाधर, मोदक, तरल नयन, सुमुखी सुन्दरी, प्रमिताक्षरा, तारक, सुखदायक, कंदुक छंद, चारु छन्द, पंचचामर।

(१०) पृ० ९३—९७ तक लुप्त।

(११) पृ० ९८—११६ तक—मालिनी, सरभ छन्द, सारंगी छंद, भ्रमरावली, नराच, नील, चंचला, पृथ्वी छन्द, मालाधर, धृत, क्रीड़ा, चर्चरी, चन्द्रमाला, गीति का, कृतिवृत्ति, दंडिका छन्द, स्रग्धरा, आकृत्ति, मदिरा, सवैया भेद, मोदक, विकृत, सुमुखी, वाम छन्द सवैया भेद, माधवी, गंगाधर, किरीटी, सुंदर छन्द, कृतवृत्त।

(१२) पृ० ११७—१२१ तक—दंडक छंद, सुधाधर, महीधर, वसुधाधर, नीलचक्र, मनहरण, जलदहन।

(१३) पृ० १२२—१३६—मात्रा विचार वर्णन मात्रा, प्रस्तार, भेद, स्थान विपरीत, संख्या विपरीत, उभय विपरीत, पंचकल टगन के नाम, ठ, ड, ढ, गण के नाम, मध्य गुरु के नाम, सर्व लघु चतुःकला के नाम, आदि लघु पंचकला के, आदि लघु त्रिकल के नाम, आदि गुरु त्रिकल, मात्रा सूची, कलापताल, कला

पताल का चक्र, अथ चारों प्रकार के उद्दिष्ट, प्रथमक्रम प्रस्तार, संख्या विपरीत प्रस्तार, उभय से विपरीत चारों कला प्रस्तार, स्थान विपरीत, मात्रा मेरु, खंड मेरु, मेरुचक्र, मर्कटी, मर्कटी चक्र, मात्रा पताका, मात्रा छंदों की अनुक्रमणिका।

(१४) पृ० १३७—१७६ तक। गाथा, दोहा, नंद, रोला, रसिका, चौपैया, आंधना, सुमना, सुलक्षी, पादाकुलक, अरिल्ल, काव्य कुंडली, उल्लाला, छप्पय, छप्पय दूषण, चौबोला, मनमोहन, सुगती, मृदु गति, शोभन, वसुमती, गोपाल, लीला, हरिप्रिया, अनुकूल, सुमाला, चुलियाला, पदवोन, साल, सोरठा, हाकिल, मधु भार, आहीर, कुंभ, सरसी, दंडकला, दीपक, जोतिधरा, निर्मला, सिंहावलोकन, पुलंगम, लीलावती, हरिगीता, त्रिभंगी, दुमिला, हरिसुजन, हरनाम, दोहरा, मरहट्टा, दंडिका, मागधी, ग्रंथ समाप्ति।

No. 412(t). Vritti Vichār by Sukhadeva Miśra of Kampilā (Farrukhābād). Substance—Country-made paper. Leaves—84. Size—8 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—945 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1728 or A. D. 1671. Date of manuscript—Samvat 1933 or A. D. 1879. Place of deposit—Paṇḍita Kṛishṇa Bihārījī Miśra, Editor, Mādhurī, Lucknow.

No. 413. Vaidyaka Sāra by Sukhalāla of Gauṇḍāpur (Goṇḍā). Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—9 × 7 inches. Lines per page—16. Extent—2,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1892 or A. D. 1835. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Rājā Pustakālaya, Bhingā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ दोहा॥ गनपति गिरा सु गुन गवरि गिरिपति गोविंद संग। गाइ गाइ गुन गन गनत गति मति होत अभंग॥ १॥ अवधपुरी सरजू नदी तीन भुवन विख्यात। गुरु वसिष्ट दसरथ नृपति सुमिरत सुख सरसात॥ २॥ अवधोत्तर दिसि में बसै गउडापुर अभिराम। बरन चारि चतुराश्रमी बसत जहां सुभ ठाम॥ ३॥ तापुर बंस बिसेन में भूपति भये उदार। सुर सुपूत सुसाहसी भक्त दीन दातार॥ ४॥ तिहि कुल प्रगट प्रसिद्ध भव श्री गुमान नरनाह। प्रजा अनंदित बसति है जाके जसकी छांह॥ ५॥

End—सगुन सुभप गुमान के बानी बुद्धि विवेक। लघुमति कवि सुखलाल की कहा कहीं मुख एक॥ संवत लोचन रंध्र वसु ससि मधुमास विचार। कृष्ण चतुर्दसि सौम्य दिन पूरन वैदक सार॥ श्लोक—तैलं रक्ष जलं रक्षे रक्षेत् शिथिल बंधनात्। मूर्ख हस्ते न दातव्यं येवं वदति पुस्तकम्॥

इति श्रीमन् महाराजाधिराज श्री महाराज गुमान सिंह जी बहादुर इच्छा वैदक सार ज्योतिविद सुखलाल विरचिते गद्य गंजन ग्रंथनाम सुभमस्तु॥

Subject—मंगलाचरण—पृ० १। नाड़ी परीक्षा—पृ० २ मुख परीक्षा—पृ० ३। नेत्र परीक्षा—पृ० ४। मूत्र परीक्षा पृ० ५। वात् पित्त-कफ परीक्षा—पृ० ६। पित्त कफ लक्षणादि, आयु समांग, वैद्य लक्षण, साध्यासाध्य—पृ० ७। ज्वर भेद चिकित्सादि पृ० ८, सन्निपात पृ० ९—२२। जल भेद चिकित्सा, अतिसार पृ० २२। संग्रहणी—पृ० २३—२५। बवासीर—२६, भगंदर, २७। विशूचिका—२९—३०। अजीर्ण, विशूचिका ३१, कृमि, ३२। पाण्डुरोग ३३, रक्तपित्त लक्षण कास पृ० ३३—३५। श्वास पृ० ३६, हिक्का पृ० ३७, यक्ष्मा पृ० ३८ अरोचक पृ० ३९, तृषा, छर्दि पृ० ४०, मूत्र परिक्षा पृ० ४१, उन्माद, पृ० ४२। मेद, पृ० ४३, वात व्याधि पृ० ४४—४७ वातरक्त पृ० ४८, आमवात पृ० ४९ शूल पृ० ५०, गुल्म पृ० ५२, उदर रोग पृ० ५३, गुल्म जलोदर, हृदि रोग, मूत्र कृच्छ्र पृ० ५४। प्रमरी पृ० ५५, मूत्र रोग प्रमेह पृ० ५६। मेदा रोग पृ० ५८, शोथ पृ० ५८। अंडवृद्धि, श्लीपद पृ० ५९, व्रण पृ० ६०। गंडमाला पृ० ६०, अन्नपान उपदेश पृ० ६१। विसर्प पृ० ६३। कुष्ट रोग पृ० ६४, दद्रु पृ० ६६, उन्माद अम्लपित्त पृ० ६६। दूसरा रोग पृ० ६७। अर्द्धशीशी, केशवर्द्धन, केश स्याह पृ० ६८। नेत्ररोग पृ० ६९, जोवन पोड़ा पृ० ७१। मुख झाई संमोह, नासिका रोग पृ० ७१। कर्ण रोग, स्त्री रोग पृ० ७२। गर्भ रक्षा पृ० ७३। कुष्ट रोग सूतिका रोग पृ० ७४, योनि दुर्गंधि रक्त। गर्भ निवारण, क्षीर वृद्धि, कुच काठिन्य, बाल रोग पृ० ७५। मुख रोग लिंग शिथिलता पृ० ७७। वृश्चिक विषोपचार, खुजली, विष पृ० ८१। मुख दुर्गंधि हरण कल्पकर्म पृ० ८२। रेचन, वमन पृ० ८३ हरीतिकादि पृ० ८३। आशीर्वाद—८८।

No. 414. Hanumāna Charitra (Chaupāyi) by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—80. Size—12½ × 6½ inches. Lines per page—12. Extent—1,440 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1616 or A. D. 1559. Date of manuscript—Samvat 1915 or A. D. 1558. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā) Bārābanki (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमंत चौपाई कवित्त लिख्यते ॥ स्वामी सुव्रत नाथ जिणंद । सुमिरत होइ सिद्धि आनंद ॥ नासै पाप भलो मति होइ । नमो सीस जोड़ि कर दोइ ॥ १ ॥ आदिनाथ जिण सेवा करौ । बाचा वनि काया चित धरौ ॥ अजित नाथ वन्दौं जीन सार । जहां ज्ञान पावौं शिव द्वार ॥ २ ॥ संभव नाथ जपौ मन लाय । बाढ़ै धरम असुभ छै जाय । नमो सीस अभिनंदन देव । सुर नर फणि मिलि आचै सेव ॥ ३ ॥ स्वामी सुमिति देहु तुम मोहि । राति दिवस मति राखौ तोहि ॥ पद्म प्रभू की सेवा करौ । जिमि संसारा बहु दिन परौ ॥ ४ ॥ हरित वरण जिन देव सुपास । नाम लेत सहु पूजै आस ॥ चन्द्र प्रभू जिण गुण होन धान । सुमिरत होइ पाप कछु मान ॥ ५ ॥

End—जो या कथा सुणै दै कान । काललबधि पावै निरवाण ॥ ६८ ॥ गांइ गांइ इहदु दुष्ट न होइ । तेल सिंदुर जु पूजा कोइ । पवन पूत बैकुंठहि गयौ । सिधु सुख्य दई पाइयौ ॥ ६९ ॥ जे पेखे पूजै हनुवंत । तासु पावन बिलासै अंत ॥ जीव बहुत तसु आगे मरे । पूजि कुदेव नरकि संचरै ॥ ७० ॥ जाणौं भव्य बहुए आचार । मिथ्या देव तजै व्यौहार ॥ दुष्ट देव शंका मति करौ । जैसे कर्म तोड़ि निस्तरै ॥ ७१ ॥ × × × × ×
स्वामी मुनि सुव्रत नरनाथ जिणंद । सुमिरत होइ सिद्धि आनन्द ॥ नासै पाप भलो मति होइ । नमो सीस जोड़ि कर होइ ॥ ७२ ॥ इति श्री हनुवंत कथा चौपाई संपूर्ण । लिख्यतं गजाधर के पुत्र दौवरोका संवत १९१५ मिति आषाढ़ शुक्ला १—नवाबगंज में लिखी ।

Subject—(१) पृ० १—१६ तक—मंगलाचरण—जैन तीर्थंकरादि वंदना, राजा प्रह्लाद के वैभव का वर्णन और उसकी रानी से पवनंजय कुमार की उत्पत्ति । महेन्द्र (विद्याधर) के अंजना कुमारी का उत्पन्न होना और समयानुसार उसके विवाह की चिन्ता, मंत्रियों से सम्मति, अंजना के पिता का राजा प्रह्लाद के पास जाकर उनके साथ अपनी पुत्री का विवाह ठीक करना और उसका लौट आना ।

(२) पृ० १७—२४ तक—राजकुमार पवनंजय अंजना के रूप लावण्य की प्रशंसा सुन कर विवाह के तीन दिन रह जाने पर ही उत्कंठित हो कर अपने मित्र प्रहस्त को लेकर अपनी ससुराल पहुंचना और अलक्ष्य होकर महलों में जाना और अंजना की सखियों का राजकुमार पवनंजय तथा इन्द्रजीतादि की प्रशंसा करना और अंजना का मौन होकर सुनना और इसपर राजकुमार का लौटना और फिर बहुत आग्रह पर विवाह कर लेना । अंजना का पति के अश्रद्धा के कारण अपमानित होकर एकांत वास ।

(३) पृ० २५—२८ तक—रावण की सहायता की कुबेर के साथ युद्ध करने का पवनंजय का जाना। अंजना के द्वार पर होकर ही उनका निकलना, और पति का पल्ला पकड़ कर उसका बहुत गिड़गिड़ाना किन्तु उस पाषाण हृदय का न पसीजना, पवनंजय का मान सरोवर पर पहुंचना और वहां से चकवाक मिथुन की वियोगावस्था से विवश होकर विमान द्वारा अंजना के महलों में आकर उससे संयोग करना और पारस्परिक मनोमालिन्य दूर करना। अपना चिन्ह देकर विदा होना।

(४) पृ० २९—४२ तक—गर्भ प्रकाशित होना। अंजना के प्रमाण उपस्थित करने पर भी सास ससुर का उसे निकाल देना, उसका पिता के यहां गमन और पिता का भी उसको सहायता न करना। एक महात्मा योगी के दर्शन और उनका भविष्य वाणी, पति सम्मेलनादि विषयों के संबंध में कह के अन्तर्धान होना, पुत्र जन्म, राजा प्रतिसूर्य (अंजना के मामा) का अंजना से सम्मेलन और उसे अपने यहां ले जाना। बच्चे का विमान से गिरना, और बच जाना, राजा प्रतिसूर्य द्वारा उसका नाम शिलाचूर पड़ना और घर आकर राजा का उत्सव करना और द्वीप के नाम पर उसका नाम हनुमान रखना।

(५) पृ० ४३—७१ तक—पवनंजय का युद्ध से लौटना और स्त्री को न पाकर बिना माता पिता की सम्मति के उसको तलाश करने को ससुराल जाना और उसका वहां भी न पाना और अंत में निज प्रियतमा का कुमार से मिलाप। पवनंजय का कुछ दिनों तक वहां रहना और हनुमान का वहीं कोष, व्याकरण, न्याय छंदादि का पठन कर के पारंगत होना, हनुमान जी का कई युद्धों में रावण की सहायता करना। हनुमान का रावण की भगिनी शूर्पणखा की पुत्री अनंग पुष्पा और सुग्रीव सुता पद्मरागो से विवाह होना। रामचन्द्र के बनवास के समय महारानी सीता के अन्वेषण में और रावण के साथ संग्राम में बहुत कुछ सहायता दी और जीवन के अंत में इस संसार को असार समझ कर इससे विरक्त होना और इन्द्रिय दमन पूर्वक योग की चरम सोपान पर आरूढ़ हो आत्मा की शुद्धि कर परमात्मपद प्राप्ति।

(६) पृ० ७२—८० तक—हनुमान की पूजा का फल। कथा निर्माण कारण व समयः—ब्रह्मराय मल्ल मत करि हिये, इण कथा कीयो परगास॥ क्रियावंत मुनि सुंदर दास। भवो कथा मन में धरि हर्ष॥ सोलह से सोलह शुभ वर्ष। रित बसंत मास बैसाख॥ नवमी शनि अंधियारो पाख॥

No. 415(*a*). Jnāna Samudra by Sundaradāsa of Jaipura Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—

8½ × 5 inches. Lines per page—25. Extent—600 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Paṇḍita Badari Nathaji Bhaṭṭa, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ ज्ञान समुद्र लिष्यते॥ मंगलाचरण॥ छप्पय॥ प्रथम वंदि परब्रह्म परम आनंद स्वरूपं। द्वुतिय वंदि गुरदेव दियो जिन ज्ञान अनूपं॥ त्रितिय वंदि सब संत जोरि करि तिनके आगय। मन वच काय प्रणाम करत भय भ्रम सब भागय॥ इहि भांति मंगलाचरण करि सुंदर ग्रंथ बखानिये। तहं विघ्न न कोऊ ऊपजय यह निश्चय करि मानिये॥ १॥

दोहा॥ ब्रह्म प्रणम्य प्रणम्य गुरु पुनि प्रणम्य सब संत। करत मंगलाचरण इमि नाशत विघ्न अनंत॥ २॥ उहं ब्रह्म गुरु संत वह वस्तु विचारति एक। बचन विलास विभाग येह वदन भाव विवेक॥ ३॥

End—सुन्दरज्ञान समुद्र को वारापार न अंत। विषई मागे झिझकि कं पैठे कोई सन्त॥ सुन्दर ज्ञान समुद्र की जो चल आवै नीर। देखत ही सुख ऊपजै निर्मल जल गंभीर॥ यहई ज्ञान समुद्र है यह गुरु शिष्य संवाद। सुन्दर याहि कहै सुनै ताके मिटहि विषाद॥

इति श्री ज्ञान समुद्रे अद्वैतादि हुं निरूपणं नाम पंचमोऽध्याय॥ गुरु शिष्य संवाद संपुर्ण॥

मिति कार्तिक वदी १४ शनिवार संवत् १९०० वि०   इति।

No. 415(*b*). Jnāna Samudra by Sundaradāsa.—Leaves—34. Size—11 × 4½ inches. Lines per page—16 Extent—544 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Gurucharana Vājpai, Bhaṇḍa, Rāe Bareli.

Note—I आदि अंत No. 415(*a*) पर लिखा गया है।

Subject—पृ० १—परब्रह्म तथा गुरु संतो को वंदना और मंगलाचरण, ग्रंथारंभ वर्णन। पृ० २—ग्रंथ गुण वर्णन, जिज्ञासु के लक्षण, गुरु देव की दुर्लभता का वर्णन, गुरु-महिमा वर्णन। पृ० ३—गुरु लक्षण और गुरु की प्रीति वर्णन, शिष्य की प्रार्थना गुरु के प्रति। पृ० ४—गुरु की प्रार्थना। शिष्य का जीव प्रकृति और आवागमन विषय पर गुरु से प्रश्न और गुरु का उत्तर। पृ० ५—भक्ति

विषय, भक्ति के ९ भेद वर्णन। दसवाँ प्रेम लक्षण और उसके आगे पराभक्ति वर्णन। उत्तम, मध्यम और कनिष्ट भक्ति का वर्ण। पृ० ६—श्रवण, कीर्तन, स्मरण दास्यत्व और अर्पण भक्ति का लक्षण और उदाहरण। पृ० ११—प्रेम लक्षण के उदाहरण, पराभक्ति के लक्षण और उदाहरण इनमें पराभक्ति उत्तम, प्रेम भक्ति मध्यम और नवधा भक्ति कनिष्ट है। पृ० १२—योग विषय-यम वर्णन अहिंसा का लक्षण, सत्य का लक्षण, अस्तेय लक्षण, ब्रह्मचर्य का लक्षण, अष्ट प्रकार मैथुन के लक्षण, क्षमा लक्षण, धृति लक्षण। पृ० १३—दया लक्षण, आर्जव लक्षण, मिताहार लक्षण, शौच लक्षण। पृ० १४—नियम—वर्णन, तप लक्षण, संतोष लक्षण, बुद्धि आस्तिक लक्षण, दान लक्षण, पूजा लक्षण, सिद्धान्त श्रवण लक्षण, पृ० १५—ह्री लक्षण, मन लक्षण, जप लक्षण, होम लक्षण, पृ० १६-सिद्धासन का वर्णन, पद्मासन का वर्णन, प्राणायाम विषय—इड़ा, पिंगला और सुषमना नाड़ियों का वर्णन। पृ० १७—दस प्रकार के पवन का वर्णन—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, नाग, कुर्म, कर्क, देवदत्त और धनंजय का वर्णन। इन दस वायुओं के स्थानों का वर्णन। षट् चक्र वर्णन। प्राणायाम की क्रिया का वर्णन। पृ० १८—गोरष उक्त कुंभक नाम वर्णन। धुनि—दस प्रकार की धुनि का वर्णन। भंवर गुंजर, संख धुनि, मृदंग, ताल, घंटा, वीणा, भेरि, दुंदभि, समुद्र गरज, मेघ घोष। पृ० १९—मुद्रानाम वर्णन, प्रत्याहार वर्णन, पंचतत्व की धारणा का वर्णन। पृ० २०-ध्यान विषय—पदस्थ ध्यान वर्णन, रूपस्थ ध्यान, रूपातीत ध्यान वर्णन। पृ० २१—समाधि वर्णन। पृ० २२-सांख्य मतानुसार योग वर्णन। जीव प्रकृति विषय वर्णन। पृ० २३-पंचतत्व गुण वर्णन। पंचतत्व स्वभाव वर्णन। तामसाहंकार वर्णन और राजसाहंकार वर्णन। राजसाहंकार से दस इंद्रियों की उत्पत्ति वर्णन। पृ० २४-सात्विकाहंकार से उत्पन्न देवताओं का वर्णन त्रिविधि शक्ति सत्व रज, तम का वर्णन। स्थूल देह का वर्णन। पृ० २५-पंचतत्व पंच बृतादिक अंश वर्णन और अन्यभेद वर्णन, कर्म इंद्रिय त्रिपुरी भेद वर्णन। पृ० २६-अंतःकरण त्रिपुरी वर्णन, पृ० २७-जाग्रत अवस्था, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं का निर्णय, तुर्या अवस्था का वर्णन। पृ० २८-तुरीयातीत वर्णन। पृ० २९-चतुरभाव वर्णन, प्रागभाव अन्योन्य। पृ० ३०-भाव वर्णन, पंचतत्व विकार वर्णन, प्रध्वंसा भाव। पृ० ३१—३३—अत्यंताभाव वर्णन, द्वैत अद्वैत का निर्णय। पृ० ३४—ज्ञान समुद्र ग्रंथ की प्रशंसा वर्णन।

No. 415(c). Jnāna Samudra by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—16. Extent—612 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābū Chandrabhanaji, B.A., Aminābad, Lucknow.

No. 415-(*d*). Sabdasāgara by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—3. Size—16 × 6 inches. Lines per page—26. Extent—90 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhakura Jagadeo Simha, Village Gujauli, Post Office Baundi, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ भूत्यै फिरै भ्रमतै करत कछु पैार थोर करत ना ताप हुरि करत संताप के। । दक्ष भयो रहे सुनि दक्ष प्रजापति जैसे देत परदक्षणा न दक्षणा दे पाप को । सुन्दर कहत वैसे जाने न जुगति कछु पैार जाप जपै न जपत निज जाप को । बाल भयो जुवा भयो वय सीत वृद्ध भयो वय रुप होय के बिसरि गयो बाप को ॥ १ ॥ इन्दव छन्द ॥ पान उहे जो पीयूष पीवै नित दान उहै जो दरिद्रहि भाने ॥ कान उहै सुनिये जस केशव मान उहै कर पैसन माने । तान उहै सुरतान रिझावत् ज्ञान उहै जगदीसहि जाने ॥ बान उहै मन बेधत सुंदर ज्ञान उहे उपजै न अज्ञाने ॥ सूर उहै मन को वस राय० कूर उहै रन माहिं लजे है ॥ त्याग उहै अनुराग नहीं कहुँ भाग उहै मन मोहत जै है ॥ तत्व उही निज तत्वहि जानहि वंघ उहै जगदीसज जै है । रक्त उहै हरि सा रत सुन्दर भक्त उहै भगवंत भजे है । २

End—सोवत सोवत सोइ गयो सट रोवत रोवत कै वर रोयो । गोवत गोवत गोइ धरयो धन बोवत बोवत लै विष बोयो । सुन्दर सुन्दर नाम भज्यो नहि टोवत टोवत बोझहि टोयो । देषत देषत सागर मैं पुनि बूझत बूझत बूझत पायो । सूझत सूझत सूझि परी सब गावत गावत गोविंद गायो । सोधत सोधत सुद्ध भयो पुनि तावत तावत कंचन तायो । जागत जागत जागि परयो जब सुन्दर सुन्दर सुन्दर पायो ॥१०२॥ बैठत रामहि ऊठत रामहि बोलत रामहि राम रह्यौ है । जेवत रामहि पीवत रामहि धीमत रामहि राम गह्यो है । जागत रामहि सोवत रामहि जोवत रामहि राम लह्यो है । देतहु रामहि लेतहु रामहि सुन्दर रामहि राम कह्यो है ॥ श्रोत्रहु रामहि नैनहु रामहि वक्तहु रामहि रामहि गाजे ॥ सीसहु रामहि हाथहु रामहि पांवहु रामहि रामहि साजे ॥ पेटहु रामहि पीठिहु रामहि रोमहु रामहि रामहि बाजे ॥ अंतर राम निरंतर रामहि सुन्दर रामहि राम विराजे ॥ भूमिहु रामहि आपुहि रामहि तेजहु रामहि रामहि वायु ? । रामहि व्योमहु रामहि चंदहि रामै सूरज रामहि सीत न घामै ॥ आदिहु रामै अंतहु रामहि मध्यहु रामहि पुंस न वामै ॥ आजहु रामहि कालिहु रामहि सुन्दर रामहि म्हामहि धामै ॥ द्वेषहु राम अद्वेषहु रामहि लेषहु राम अलेषहु रामै ॥ एकहु राम अनेकहु रामहि सेषहु राम

बढ़ोपहु रामै ॥ मौनहु राम अमौनहु रामहि गौनहु रामहि भौनहु ठामै ॥ बाहिर रामहि भीतर रामहि सुन्दर रामहि है जग जामै ॥ दूरहु राम नजीकहु रामहि देशहु राम प्रदेशहु रामै ॥ पूरब रामहि पच्छिम रामहि दक्खिन रामहि उत्तर धामै । आगेहु रामहि पीछेहु रामहि व्यापक रामहि है वन ग्रामै ॥ सुन्दर राम दशौ दिशि पूरन स्वर्गहु राम पतालहु तामै ॥ आपहु राम उपावत रामहि भंजन राम संवरत रामै इष्टिहु राम अदृष्टिहु रामहि इष्टहु राम करै सब कामै ॥ बर्णहु राम अवर्णहु रामहि रक्त न पीत न स्वेत न स्यामहि । शून्यहु राम अशून्यहु रामहि सुन्दर रामहि नाम अनामै ॥ इति ।

Subject—ईश्वर को भक्ति सम्बन्धी शब्द ।

No. 415(e). Sundaradāsajī ke Ashṭaka by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—46. Size—$7\frac{1}{2} \times 9$ inches. Extent—285 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1893 or A.D. 1836. Place of deposit—Rāmādhīna Murāo, Village Badausarāya, District Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर दास जी के अष्टक ॥ दोहा ॥ अलख निरंजन बंदि कै गुरु दादू के पाइ ॥ दोऊ कर तब जोरि कै संतन को सिर नाइ ॥ १ ॥ सुन्दर तोहि दया करी सतगुरु गहिया हाथ ॥ माता तो अति मोह मै राता विषया साथ ॥२॥ छन्द ॥ त्रभंगी ॥ तामें मत मातर विषया राता बहियर जाता इतराता ॥ तब गोते खाता बूड़त माता ता होतो घाता पछिताता ॥ उन सब सुख दाता काढ्या नाता आप विधाता नहि छेला ॥ दादू का चेला चेतन मेला सुंदर मारग बूझेला ॥ ३ ॥ तैं सतगुरु आया पंथ बताया ज्ञान गहाया मनभाया । सब कीर्तन माया यो समुझाया अलख लषाया सचुपाया ॥ ह्वैं फिरता धाया उन मन लाया त्रभुवन राया दत देला ॥ दादू का चेला चेतन मेला सुंदर मारग बूझेला ॥ ४ ॥

End—कहु कौन कहे कहु कौन सुनै वह कहन सुनन ते भिन्न हेरे । तहं स्रोत नहीं तहं घाम नहीं तहं धाम नराति न दिन्न हेरे ॥ तहं रूप नहीं तहं रेप नहीं तहं सुन्दर कछु न चिन्ह हेरे ॥ ६ ॥ नहि गोराश हेरे नहि नैन हेरे नहि मुख्य हेरे नहि बैन हेरे ॥ नहि नैन हेरे नहि सैन हेरे नहि गैन हेरे न पसैन हेरे ॥ नहि पेट हेरे नहि पीठि हेरे नहि काया हेरे नहि मोठ हेरे ॥ नहि दुष्टत्व हेरे नहि इष्ट हेरे नहि सुंदर दीठ अदीठ हेरे ॥ ७ ॥ नहिं शीश हेरे नहिं पांव हेरे नहिं रंक हेरे नहिं राउ हेरे ॥ नहिं यावन योवन चाउ हेरे । नहिं हारन जीवन दाव हेरे । नहिं नार हेरे

नहिं नाव हैरे नहिं पाक हैरे नहिं भाव हैरे ॥ नहिं भैाति हैरे नहिं भायु हैरे नहिं सुंदर भाव अभाव हैरे ॥ ८ ॥ इति ज्ञान झूलना अष्टक संपूर्ण ॥ संवत १८९३ का

Subject—पृ० १—३ तक—गुरुदया अष्टक—गुरु के उपदेश से चैतन्य होने का वर्णन। अपने के दादू का चेला बताना। (२) पृ० ४—८ तक—भ्रम विध्वंस—माला तथा तिलकधारी इत्यादि पाखंडियों के भ्रम का वर्णन। (३) पृ० ९—१४ तक-गुरु कृपा अष्टक—गुरु के चरणों की महानता, गुरु की शिक्षा का फल। (४) पृ० १५-१९ तक—गुरु उपदेश सतगुरु वंदना, गुरु के शब्द बाण का प्रभाव, गुरु के गुण वर्णन, संसार के स्वप्न तुल्य मानकर उससे बचे रहने का कथन। अष्टक के पढ़ने का फल। (५) पृ० २०—२३ तक—गुरु की महिमा कथन के साथ ही साथ दादू के ब्रह्म स्वरूप मान कर वंदना करना। गुरु देव महिमा स्तोत्र। (६) पृ० २४—२७ तक—रामजी अष्टक—राम के एक रस होने का वर्णन। ब्रह्मादि उसी के गुणानुसार नाम होने का वर्णन। सृष्टि उत्पत्ति होने का वर्णन। विश्राम पाने की वन्दना। (७) पृ० २७-३२ तक—नामाष्टक—ईश्वर के कई नाम हरि ईश्वर, माधव, केशव, अज और मोहन का वर्णन कर के 'तू' शब्द मेंही सब का प्रवेश और उसी से उत्पत्ति और विनाश होने का वर्णन। (८) पृ० ३२—३५ तक—आत्मा अचल अष्टक—कुंभा के चलने, दीपक तथा अग्नि के जलने इत्यादि के अशुद्ध प्रयोग या लोकोक्ति के अनुसार अर्थ न हो कर भिन्न अर्थ होने का वर्णन करके आत्मा का अचल सिद्ध करना। (९) पृ० ३५—३७ तक—पंजाबी भाषा अष्टक—योगी, जपी, तपसी इत्यादि के उसके भेद न पाने का वर्णन। उदासी इत्यादि का संसार में बाहुल्य होना किन्तु उसके भेद पाने वाले विरले ही होने का वर्णन। ईश्वर के अगम अगोचर होने का वर्णन। (१०) पृ० ३८—४० तक—ब्रह्म स्तोत्र अष्टक—ब्रह्म के कुछ गुणों का वर्णन करके उस की कुछ स्तुति करना। (११) पृ० ४१—४४ तक—पीर मुरीद अष्टक—पीर की कृपा से ईश्वर (ब्रह्म) प्राप्त होने का वर्णन। नफ़स के मारने का वर्णन, पीर से राहे रास्त बतलाने का निवेदन। पीर का उसी के हृदय में ब्रह्म का होना बताना। (१२) पृ० ४४—४५ तक अजब ख्याल अष्टक - बंदे के हाज़िर होने में खुदा का हाज़िर होना, बंदगी के नियम और उपदेश (१३) पृ० ४५—४६ तक-ज्ञान झूलना अष्टक—ईश्वर का सब स्थानों पर समभाव से स्थित होने का वर्णन। बिना अनुभव के उसके ज्ञान न होने का वर्णन। उसी के सर्वस्व होने का वर्णन।

No. 415(*f*). Sundara Vilāsa by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—12×6 inches. Lines per page—48. Extent—1.939 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Date of manuscr —Samvat 1940 or 1883 A. D. Place of

deposit—Ṭhakura Śivabaksha Simha, Village Basantapur, Post Office Payāgapura, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुन्दर विलास लिष्यते ॥ प्रथम गुरु देव जी को अंग लिष्यते ॥ इंदव छंद ॥ मौजकरी गुरुदेव दयाकरि शब्द सुनाय कह्यो हरि मेरो । ज्यों रवि के प्रगटे निशि जात सु दूर कियो भ्रमभान अन्धेरो । कायक वायक मानस हू करि है गुरु देवहि वन्दन मेरो । सुन्दरदास कहै करजोर जु दादू दयाल को हू नित चेरो ॥ पूरण ब्रह्म विचार निरंतर काम न क्रोध न लोभ न मोहै ॥ ज्ञान स्वरूप अनूप निरूपम जासु गिरा सुनि मोह न मोहै । सुन्दरदास कहै कर जोरि जु दादू दयालहि मारि न मोहै ॥ धीरजवंत अडिग जितेन्द्रिय निर्मल ज्ञान गह्यो दृढ आदू । भेषन पक्ष निरंतर लक्ष जु और नहीं कछु वाद विवादू ॥ शील संतोष क्षमा जिनके घट लागि रह्यो सु अनाहद नादू ॥ ये सब लक्षण हैं जिन माहि जु सुन्दर के उर है गुरु दादू ॥ भव जल में बहि जातहु ते जिन काढ़ि लिये अपने कर आदू । बहुरि संदेह मिटाय दिये सब कानन टेरि सुनाय के नादू । पूरण ब्रह्म प्रकाश किये पुनि छूटि गयो यह बाद विवादू । ऐसी कृपा जु करी हम ऊपर सुन्दर के उर है गुरु दादू ॥

End—जोगी थके कहि जैन थके ऋषि तापस थाकि रहे फल खाते ॥ न्यासी थके बनवासी थके औ उदासी थके बहु फेर फिराते । शेष मसायक और उलायक थाकि रहे मन में मुसुकाते ॥ सुन्दर मौन गही सिधि साधक कौन कहै उसकी मुष बातै ॥ इति आश्चर्य को अंग समाप्त ॥ सवैया । सुष धाम मनोहर अर्गल पुर निज कालिन्दी के कूल कहावै । सुर नर मुनि आदिक ध्यान धरें तहां जग को प्रतिपाल करावै ॥ जिन किंचित ही जलपान कियो तिनके अघ पोघ को खोज बहावै अब केतिक बात कहौं अति गंग के जाहि लखे जमराज डरावै ॥ तहं ही बसि के निर्वाह करै द्विज राधा कृष्ण कहावत है । जेहि नाम शिरोमणि लेत सबै पुनि भक्तन के मन भावत है कर लेषक को उद्यम करि के यों आय उदर को दीयत है । परमारथ हेत बनै न कछु तातै अति ही जिय कांपत है । इति श्री सुन्दर दास कृत सवैया सुन्दर विलास ग्रंथ समाप्तः लेषक राधा कृष्ण ब्राह्मण ॥ संवत १९४१ वि०

Subject—इस ग्रंथ में ज्ञानोपदेश सवैया सब ज्ञानियों के लिये वर्णन किये हैं (१) गुरु की महिमा, उपदेश चिन्तामणि काल चिन्तामणि, देह आत्मा बिछोह, तृष्णा, धैर्य उराहनः विश्वास, देह मलीनता, गर्भ प्रहार, नारी निन्दा, दुष्ट जन, मनका अंग, चाणक्य को अंग, विपरीत ज्ञान को अंग, वचन, विवेक को अंग, निर्गुण उपासना, पतिव्रता को अंग, विरह, शब्दसार, भक्तिज्ञान, विप्र के शब्द, सरातन कर अंग, साधु का अंग, ज्ञानी का अंग, सांख्य ज्ञान, अपने

भाव का अंग, स्वरूप विस्मरण, विचार का अंग, निष्कलंक ब्रह्म, आत्मा अनुभव, निसंशय के अंग, प्रेम ज्ञानी का अंग, द्वैत ज्ञान का अंग, जगत मिथ्या का अंग, आश्चर्य का अंग, लेखक को सवैया आदि वर्णन।

No. 415(*g*). Sundaradāsa kṛit Savaiyā by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—15×5 inches. Lines per page—16. Extent—880 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Biseśwara Simha Indrabaksha Simha, Village Hari-harpur, Post Office Chilwariyā, District Baharāich (Oudh).

Note (I) 'सुन्दरदास कृत सवैया' नामक ग्रंथ वास्तव में 'सुन्दर विलास' है।

(II) शेष सब विवरण No. 415 (*f*) पर लिखा गया है।

No. 415(*h*). Savaiyā Sundaradāsa kī by Sundaradāsa. Substance—Country-made paper Leaves—174. Size—10×4 inches. Lines per page—14. Extent—1,696 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Avadhesa Pāṇdey, Village Khambharihā Pāṇday kī, District Baharāich, Post Office Baranāpur (Oudh).

No. 416(*a*). Bhramaragītā by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—12×5 inches. Lines per page—28. Extent—4,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript Samvat 1899 or A.D. 1842. Place of deposit—Swāmidayāla Vājpaī, Swamidayāla kā purwā, Post Office Sissiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीजन वल्लभायनमः॥ अथ भ्रमरगीत लिख्यते॥ मंगलाचरण॥ राग कल्याण॥ ताल जलद तिताला॥ चरण कमल बंदौ हरि राई॥ जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधेरे को सब कुछ दिखराई। बहरो सुने गूंग पुनि बोले रंक चले सिर छत्र धराई। सूरदास स्वामी करुणा मय बार बार बंदौ तेहि पाई॥ अथ भ्रमरगीत को प्रस्ताव॥ श्री प्रभुजीके वचन उद्धव प्रति॥ राग सारंग॥ पहिले करि प्रणाम नंदराय सो समाचार सब दीजो और वहां वृषभान गोप सों

जाइ सकल सुचलांजा ॥ श्रीदाम आदि आदि सब ग्वाल बालनि मरा इते भेटिबो। सुष संदेस सुनाइ हमारो गोपिन को दुष मेटिबो ॥ मैत्री एक बन बसत हमारो ताहि मिले सचुपाइबो। सावधान ह्वै मेरे हतो ताही माथे नाइबो ॥ सुंदर परम किसोर वय क्रम चंचल नैन विशाल। कर मुरली सिर मोर पंष पितांबर उर बनमाल। जिन डारियो तुम सघन बन मैं व्रज देवो रखवार। वृंदावन सो बसत निरंतर कबहुं न होत निचार। ऊधो प्रति सब कही श्याम जू अपने मन को प्रीति। सूरदास प्रभु कृपा करि पठये यह सकल ब्रज रीति ॥

End—राग सारंग ॥ देन आये ऊधो मत नीको। हित उपदेश करन ब्रज आये लिए हरि जीको। जोग जुगति निज मन उपदेसनि ग्यान सुनाइ जतीको। आवहुरी मिलि सुनहु सयानी लियो सुजस कैा टीको। तजन कहत अवर आभूषन देह गेह सतहीको। अंग भसम करि सीस जटा धरो सिववत निरगुन फीको। मेरे जान इहे युवतिन को देत फिरत दुख पीको। ता सराप ते भए स्याम तन तउन गहन उर जीको। जाको कृपा परी री जीव तैं सो सोचन भलो बुरी को। जो लगि सुर व्याल डसि भाजै मुष नहि होत अमी को। राग विहाग ॥ ताल इकवारा ॥ कृष्ण कृष्ण करत डोलु कृष्ण कहां मैं पाऊं। द्वारे ते दैाड़ आऊं तो उन लाज लजाऊं ॥ तोहे छांड़ि औार को मैं कैान को कहाऊं ॥ ऊधो जो तुम बेग जाग्रो प्रेम पाती पठाऊं ॥ ढूंढ़ि फिरी बन कुंजन माहि स्याम स्यामा गाऊं। या विधना नहि पंष दीनो उड़ि के द्वारका जाऊं। ऊधो जो तुम बेग जाग्रो स्यामहीं बेग ले आऊं। सूर के प्रभु दरस दीज्यो हरि हंस कंठ लगाऊं। इति भ्रमर गीत संपूरन ॥ शुभ मिती वैसाख शुक्ल १३ रविवार संवत १८९९।

Subject—इस पुस्तक में श्री कृष्ण जी ने ऊधो को मथुरा ते ब्रज में ब्रज युवतियों को समझाने जोग आदि की शिक्षा देने के लिये पठाया था उसी की कथा पूर्ण रूप से वर्णन की गई है इसी में ब्रज युवतियों ने भी ऊधो जी से अपना संदेस कहा है और श्री कृष्ण जी को उलाहना दे भेजा आदि।

No. 416(*b*). Bhaṇwaragita by Suradāsa of Gaughāta (Runukta, Āgra). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—10 × 7 inches. Lines per page—20. Extent—1,200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarī Nāthaji Bhaṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—श्रीराधाकृष्णायनमः ॥ अथ भैार गीत लिख्यते ॥ पेन ऊधो वेगि तुम ब्रज जाहु। श्रुति संदेस सुनाइ मेटैा बल्लभनि कैा दाह ॥ काम पावक

तुल्य तन में विरह स्वांस समीर। भसम नाहीं होन पावत लोचनन के नीर॥ भाहुलौं पहि भांति हैं वे कछुक स्वांस सरीर। इते पर बिनु समाधानहि क्यों धरै तन धीर॥ बारबार कहा कहौं तुम सखा साधु प्रवीन। सूर सुमति बिचारिये जिय मनौं जल बिनु मीन॥

End—राग सारंग॥ हरि बिनु मुरली कौन बजावै। कमल नैन स्याम सुन्दर बिनु को मधुरे सुरगावै॥ ए दोउ श्रवन सुधाकौं पोवे को ब्रज फेरि बसावै। ऐसो कियो निठुर मन मोहन जो एहि पंथ न आवै। छांड़ो सुरति नंद जसुदा को हमरो कौन चलावै। सुरस्याम कीं प्रीति पाछिलो को अब सुरति करावै॥ ३॥ सुनियत मोहन ब्याह सम्बोरो हम देखन नहि पायो। आसा लगी रही मेरे मन क्यों नहिं बोलि पठायो॥ जद्यपि हो परतीती कान्ह को कौने गुरु पढ़ायो। जननी जनम भूमि यह गोकुल नेकौ बहुरि न आयो॥ बचनहु की माता नहिं भेटत जो नहि जसुदा जायो। पछिलो प्रीति बिसारि सूर प्रभु जो लै गोद बढ़ायो॥ ४॥ इति सुरदास जी कृत भंवर गीत संपूर्णम्॥

No. 416(c). Suradāsakṛit Kabira by Suradāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—9 × 4 inches. Extent—27 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Rādhā Krishṇajīpuri Bhoja Tiwāri, Post Office Alipur Bāzār (Sultānpur).

Beginning—पृ० १—श्री गणेशायनमः॥ कबीर॥ सारी नील मोल मंहं छेको गोर गात छवि होति। मनहु नीलमनि मंडप मध्ये बरत निरंतर जोति॥१॥ निरखि छवि राधा नागरि प्यारी॥ कबीर॥ चोटी चारु तीनि सर राजित कुहु केतु अरु राहु॥ मनु हिलि मिलि एक संग हेमगिरि ससि मुख कीन्ह गराहु॥२॥ कबीर॥ मंजुल मांग मोति लर लटकत भटकत उपमा देत॥ मनु उडगन सब सिमिट एक होइ बीच करत ससि हेत॥ ३॥ निरखि छवि॥ भाल बिसाल तिलक अति राजत दिहे लाल रंग बिंद॥ मनु बंधुप के सुमन आनि कै मनसिज पूजि मइंद॥ ४॥ निरखि॥ जुग श्रवण ताटंक चक्र जुग भौं शृंगी मृग नयन मनु दोउ तिलक बाग नहि बैठे ससि रथ स्वारथ मैन॥ ५॥ निरखि॥ भौंहैं बिकट निकट श्रवनन्ह लग दृग पंजन अनुहारि॥ मनहु परसपर करत लराई कीर बचावत रारि॥ ६॥ निरखि॥ कबीर॥ नासा शुभग मोति बेसरि को बरनत होत सकोच॥ मानहु कीर फोरि दाड़िम फल बीज रहे गहि चोच॥ ७॥ निरखि॥ क०॥ पुष्ट कपोल चारु चिक्कन अति बरनत मन सकुचात॥ मनु दोउ संख करत ससि तें मत मानि अनुज को नात॥ ८॥ निरखि॥ क०॥ अधर बिंब रंग लानि

सुधारस यह उपमन्ह को ग्रंत ॥ मानहु उगिलित सीप रूप निधि मोति द्रष्कि दुति दंत ॥ ९ ॥ निरषि ॥ क० ॥ ठोड़ी ठकुराइन की नोको मोलेचुंद मम्कार ॥ सालिग्राम मनु कनक संपुट मारहिगे तनक उद्धार ॥ १० ॥ निरषि ॥ क० ॥ केकी कंठ सुभग कंठ सरो या सरि को यवर न क्रांति । मानहुं कनक मुरति गंगातट निकट निपटि दिपि पांति ॥ ११ ॥ निरषि ॥ क० ॥ पहुचो पानि बाहु बाजु बंद

End—प्यारो ॥ कबोर ॥ पम्बुज चरण पावटो बुन्दो यह उपमा कहु ग्रवर ॥ मधुर नाद गुंजार करत मनु उड़ि उड़ि बैठत भंवर ॥ २१ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ कबोर ॥ कह सहचरो वेगि ले धाई प्रभु तेरे हित लागि ॥ यव रस विलस विमल वृंदावन दंभ कपट छल त्यागि ॥ २२ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ कबोर ॥ जोरी जुरी दोन सुरा प्रभु बड़े रोतिरस रंग ॥ ठकुराइन श्री राधा मेरी ठाकुर नवल त्रिभंग ॥ २३ ॥ निरषि छवि राधा नागरि प्यारो ॥ इति सूरदास कृत कबोर समाप्त

Subject—पृ० १—४ तक—श्रीमती राधा रानी जी के नखशिख के वर्णन सहित कबीर कथन । राधा जी की साड़ी, चोटो, मांग, माल तिलक, बाड़, ताटंक, युग भोंह, नयन, दो तिलक, दृग, नासा, कपोल, अधर, ठोड़ी का नोला बुंद, कंठसरी, पहुंचो, बाजू बंद का फुंदना, सोप, सियज का हार, चौकी, लालगुलाल हारावलि, चोलो में कुच, रोमावलो, नाभि, नोवो, नितम्ब, जंघा, और चरणों के पांवरे पर मनोहर उत्प्रेक्षायें ।

No. 416(*d*). Sūradásake Vishunapada by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—15×5 inches. Lines per page—18. Extent—1,080 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1904 or A.D. 1847. Place of deposit—Biṭṭhaladāsa Mahanta—Village Mirzāpura, Post Office Baharāich, District Baharāich (Oudh.)

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ श्री सूरदास के विष्णु पद लिष्यते ॥ प्रथम राग धनाश्री ॥ जैगोविंद माधौ मुकुंद हरि । कृपासिंधु कल्यान कंस यरि । कवन पाल दामोदर देव प्रति । कृष्ण कमल लोचन पगोत्त मति । रामचन्द्र राजीव नयन वर । सरन साद्र श्रीपति सारंगधर । वनमाली बोटल पावन नवल वासुदेव वंसी बृजभूषन तन परदुमन त्रिसिरा सिर मंडन चरन चिन्ह दंडक भू मंडन काली दवन वेसि कुल पावन मधा दुष्ट धेनुक तन घातन । रिष

मष दुवन ताड़िका ताड़न । वन वसितात वचन प्रतिपारन वको बदन वक्र बदन बदारन । वहन विषाद नंद निस्तारन । रघुपति प्रवल पिनाक विभंजन । जन हित जनक सुता मनरंजन । गोकुल पति गिरधर गुन सागर, गरुड़ध्वज स्वामी नटनागर करुनामय कपि कुल हितकारी वान विनोद संकट मृगहारी । गोपी गोप गुपत व्रतकारन । मन वच क्रम सेवक पथतारन सूरदास जाचत प्रभु रघुवर । कीजै कृपा अनंत हरि जन पर ॥ १ ॥

End—माधौ जोंकौ अपरायो हीं । जन्म पाइ कछु जोगन साध्यो धरगी न मन में भीं सब सो कहत रीति जमपुर को मज पर्योलिका ठौं पाप पुन्य के फल न बतायो दुर्गा नर्क को पौं । कौनपात पर कहैा क्रिपानिधि कछु भक्ति मों भीं ॥ करुना सिंधु कृपाल कृपानिधि भजौ स्वर्ग के ज्यौं हंसि बोले जगदीस जगत गुरु बात तुम्हारी यौं बात करैा तौ बहुत भूसैागे चरन कमल को सौं ॥ मेरी देह छुटत जम पठय जिने दूत घर मौं । वे लै चले सु साज आपने सान धराये स्यौं जिनके दासन दरसन होतें पतित करत ज्यौं ज्यौं । छुड़ि फिरे कोउ घर न बतावै सुपच कोरिया ठौं ॥ रिसि भरि गये परम राकस तब पकरे छिपे न कैसां । तब ठै फिरे नगर ते बाहर जहां मृतक हौं हैं ॥ तारिस करि हौं बहुत मारगो कहं लगि बरनि सकौं ॥ हाइ हाइ हौं करौं कृपन हौं रामनाम न जायौं ॥ ताल पखावज चले बजावत समचो सोम कौं ॥ सूरदास को भलो बनो है ॥ गजो गई दो पौं ॥ हों पतित सिरोमनि माधौ ॥ अजामेल तुम काटजु तारो जुतो जु मेरो आधो जुगजुग बहै बिरदि चलि आयो कहियत है यव ताते ॥ मोहि छांड़ि तुम सबै उधारो हों घटि हैा अब काते ॥ कै अब हारि मानि प्रभु बैठा कै करि बिरद सहो । सूरस्याम जो घोयो उपजै तौ सोधियो वहो ॥ इति सूरस्याम के विष्णु पद ॥

Subject—इस ग्रंथ में सूरदास जीने श्री कृष्णजी की लीला यशोदा नंद का श्री कृष्ण पर प्रेम व राधिका कृष्ण का प्रेम व ऊधो का योग शिक्षा के लिये श्री राधिका के निकट आना व सूरदास के पद जो अंतिम में कहे हैं वर्णन है ।

No. 416(e). Rukminīvivāha and Sudāmā Charitra by Sūradāsa of Runukuta (Āgrā). Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—10 × 7 inches. Lines per page—20. Extent—50' Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—अथ रुकमिनी विवाह कथा ॥ राग बिलावल ॥ द्विज कहियो जदुपति सों बात । वेद विरोध होत कुंदनपुर हंस के अंस काग

नियरात ॥ जिन हमरे गुन दोष विचारे कन्या लिखी नीति करितात ॥ ताते यह द्विज वेगि पठायौ नेम धर्म मरजादा जात ॥ तन आत्मा समर्पौ तुमकौं पाछे अनुज परे कछु नात । करि सनेह पग धरौ तुम्हारे ऐसे कौं अति चित अकुलात ॥ कृपा करो रथ वेगि चढ़ोगे लगन समोप रची परभात ॥ सूरदास ससिपाल पानि गहि पावक परौं करौं तन घात ॥ १ ॥

End—राग सारंग ॥ ऐसें और कौन पहिचानै। सुनि सुंदरि हरि दीनबंधु बिनु कौनु मित्रई मानै ॥ हौं अति कुटिन कुटिल कुदरस भये जदुनाथ गुसाई। लियौ उठाइ अंक भरि माधौ उठि अर्जुन की नाई ॥ लै प्रजंक बैठारि परम रुचि निज कर चरन पखारे ॥ पूरब कथा सुनाय कृपा करि सब संकोच निवारे ॥ ३ ॥ लवे छिनाय चोर ते तंदुल केते लै मुख मेले ॥ आवह कृपा करो सूरज प्रभु गुरु गृह वसे अकेले ॥ इति सूरदास कृत सुदामा चरित्र संपूर्णम् ॥

Subject—रुक्मिणी विवाह कथा कुं० नं० १—३ तक। सुदामा चरित्र वर्णन कुं० नं० ४—९ तक। इति।

No. 416(*f*). Sūrasāgara by Sūradāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—275. Size—12×10 inches. Lines per page—56. Extent—19,250 Anushṭup Ślokas—Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1899 or A.D. 1892. Place of deposit—Paṇḍit Śiva Nārayana Vājpai, Vājpai ka purwā. Post Office Sisaiyā, District Baharaich (Oudh).

Beginning—श्री गोपीजन वल्लभायनमः ॥ श्री वल्लभ चरणकमलेभ्यो-नमः ॥ श्री विठलेशोजयतितराम ॥ श्री गिरधरो जयतिराम ॥ श्री कृष्णायनमः अथ श्री सूरदास जी कृत सूरसागर सारावली तथा सवालाख पद के सूचीपत्र श्रीकृष्ण नंद व्यासदेव राग सागर संग्रह कृत लिख्यते ॥ बंदौ श्री हरि पद सुखदाई। बहिरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई ॥ सूरदास प्रभु की शरणागत बारंबार नमो तेहि पाई ॥ रागनी काफी ताल जत ॥ खेलत यहि विधि हरि होरी हो होरी हो वेद विदित यह बात ॥ टेक ॥ अविगत आदि अनंत अनूपम अलष पुरुष अविनासी। पूरण ब्रह्म प्रगट पुरुषोत्तम नित निज लोक विलासी ॥ जहां बंदावन आदि अजर जहं कुंजलता विस्तार। तहं बिहरत प्रिय प्रीतम दोऊ निगम भृंग गुंजार ॥ २ ॥ रतन जटित कालिंदी को तट अति पुनीत जहं नोर सारस हंस चकोर मोर खग कूजत कोकिल कोर ॥ ३ ॥ जहं गोवर्धन पर्वत मनिमय सघन कंदरा सार। गोपिन के मंडल मध्य राजत निसवासर करत विहार ॥

End—राग मलार ॥ कोउ ब्रज बाँचत नाहिन पाती ॥ कति लिखि लिखि पठवत नंद नंदन कठिन विरह की कांती ॥ नैन सजल कागद अति कोमल कर अंगुरी अति नाती ॥ परसे जरे बिलोके भींजहु दुहु भाँति दुख छाती ॥ क्यों ए बचन सु पंक सुर मुनि विरह मदन सर घाती ॥ मुख मृदु बचन बिना सोचत जो बड़ो प्रेम रस भांती ॥ राग सारंग ॥ देन आयो ऊधव मत नोको । हित उपदेश करन ब्रज आये लोये मनोहरि जोको । जोग जुगति निर्गुन उपदेसहि ग्यान सुनाइ जतो को । आवहु री मिलि सुनहु सयानो लिये सुजस कौ टोको ॥ तजन कहत वर आभूषन देह गेह सत होको ॥ अंग भस्म करि सोस जटा धरो सिखवत निर्गुन फोको ॥ मेरे जान इहै जुवतिन को देत फिरत दुख फोको ॥ ता सरोप ते भये स्याम तन तरुन गहत उर जोको । ज्यों लगि सुर बायल डसि भाजे सुख नहि होत अमी को ॥ राग विहाग ॥ ताल एकतारा । कृष्ण कृष्ण करत होलु कृष्ण कहां मैं पाऊं ॥ द्वारते दौड़ आऊं तैाऊ न लाज लगाऊं ॥ तोहैं छाड़ि औार को मैं कैान को कहाऊं ॥ ऊधैा जो तुम वेग जाधो प्रेम पाती पठाऊं ॥ ढूंढ़ि फिरैा बन कुंजन मारि स्याम स्यामा ध्याऊं ॥ या बिधना नहि पंख दोनो उड़के द्वारका जाऊं ॥ ऊधैा जो तुम वेगि जाधो स्यामहि वेगि ले आऊं ॥ सूर के प्रभु दास जो हरि हंस कंठ लगाऊं ॥

Subject—इसमें श्री कृष्ण की लोला जन्म से लेकर अंत तक वर्णन को गई है प्रथम बधाई, बाल लोला आदि पूर्ण रूप से वर्णित है ।

No. 416(g). Sūrasāgara by Sūradāsa of Runkuta (Gaughat) Āgrā. Leaves—168. Size—10 × 7 inches. Lines per—page—20. Extent—4,000 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Badarī Nāthjī Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—सुनो ध्यान सो सुमिरन रहो ॥ जैसे सुक कौ व्यास पढ़ायो । सूरदास तैसें कहि गायो ॥ ३ ॥ श्री भागवत वक्ता श्रोता वर्णन ॥ राग बिलावल ॥ व्यास देव जब सुकहि पढ़ायो ॥ सुनि के सुत सो हृदय बयो ॥ सुक सोनिक सों पुनि कह्यो । बिदुर मैत्रेय सों पुनि लहो ॥ सुनि भागवत सबनि सुखपायो । सूरदास सो बरनि सुनायो ॥ ४ ॥ अथ सूत सैानिक संवाद ॥ राग बिलावल ॥ सूत व्यास सों हरि गुन सुन्यो । बहुरो तन तजि मन में गुन्यो ॥ सो पुनि नौमषार में आयो । तहां रिषिन कैा दरसन पायो ॥

End—फिर ब्रज बसो गोकुलनाथ ॥ अब न तुम्हें जगाइ पठिवैं गोधनन के साथ ॥ बरजै न माखन खात कबहूं दह्यो देत लुटाय । अब न देहिं उराहनो नंद

चरनि आगे आइ ॥ नहि देंहि दावर जोरि कै औगुन न कहिहैं आनि ॥ कहि हैं न चरनन देन जावकु गुहन वेना फूल। कहिहैं न करन सिंगार बइतर बसन जमुना कूल ॥ करिहैं न कबहं मान हम हठिहैं न मांगत दान। कहि हैं न मृदु मुरली बजावन करन तुम सौं गान ॥ देहु दरसन नंद नंदन मिलन की जिय आस। सूर प्रभु के दरस कारन मरत लोचन प्यास ॥ ४८८ ॥

इति।

No. 416(*h*). Sūrsāgara by Sūradāsa of Gaughāta (Āgrā). Substance—Country-made paper. Leaves—334. Size—10 × 6 inches. Lines per page—10. Extent—2,925 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Paṇḍita Badri Nathaji Bhaṭṭa, Professor, University, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनमः इति बालतोक काण्ड सार ॥ अथ दसमस्कंध लिखितं सूरदास कृत श्री भागवत वर्णनं ॥ राग सोरठ—व्यास कह्यो शुकदेव सों श्री भागवत बखान। द्वादश अस्कंध परम सुभग प्रेम भक्ति को खान ॥ नव अस्कंध नृप सों कह्यो श्री सुकदेव सुजान। सूर कहत अब दसम कौं उर मैं धरि हरि ध्यान ॥ ८६

राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि स्मरन करौ। हरि चरनारविंद उर धरौ ॥
जय अरु विजय पारषद दोई। विप्र श्राप असुर भये सोई ॥
दुई जनम ज्यों हरि उद्धारो। सो तो मैं तुमसों कहि उचारो ॥
वक्रदंत ससिपाल जो भयो। बासुदेव होइ सो पुनि हयो ॥
पौरी लीला बहु विस्तारं। कीन्हे जीवन को ज्यों निस्तारं ॥
सो अब तुमसों सकल बखानौ। प्रेम सहित सुनि हृदये आनौ ॥
जो यह कथा सुनै चित लाय। सो भव तरि बैकुंठे जाय ॥

End—राग कल्यान ॥ कीयो प्रतिमान वृषभान बारो। देखि प्रतिबिंब पिय हृदे नारो। कहा यौं करत है जाहु प्यारो ॥ मनहि मन देत अति ताहि गारो। सुनत यह बचन पिय बिरह बाढ़ो। कियो अति नागरी मानु गाढ़ो ॥ काम तन दहत नहि धीर धारै। कबहु उठत बैठत बार बारै ॥ फेरि अति भये व्याकुल मुरारो। नैन भरि लेत जल देत ढारो। ३२।

राग बिहाग ॥ जान कह्यो तिय बिन अपराधहि। तन दाहति बिन काज आपनो कहतउ रतहि न बादहि ॥ कहा रह्यो मुख मूंदि भामिनी मोहि चूक कछु नाहि। झझकि झझकि ज्यों चतुर नागरी देखि आपनो छांहि ॥ अजहु दूरि करो

रिस डरते हृदये ज्ञान विचारो। सूर स्याम कहि कहि पचि हारे हठि कीन्हो जिय भारो ॥ ३३। राग कल्यान ॥ काम स्याम तनः—

Subject—मंगलाचरण, भगवान जन्म लीला वर्णन।

No. 416(i). Sūrasāgar by Sūradāsa of Gaughāta, Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—368. Size—13 × 7 inches. Lines per page—14. Extent—14,168 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhiṇagā, Bahar̃āich.

Beginning—श्री गणेशायमः अथ सूर सागर लिख्यते ॥ तत्र प्रथम परमारथ को कथा। हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो। हरि चरनारविंद उर धरो। हरि की कथा होइ जब जहां। गंगा हू चलि आवै तहां। जमुना सिंधु सरस्वति आवै। गोदावरी विलंब न लावै। सब तीरथ को बासा तहां। सूर कथा हरि को जहां। चरन कमल बंदौं हरि राया। जाको कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे कौं सब कछु दरसाया। बहिरौ सुनै गुंग पुनि बोलै रंक फिरै सिर छत्र धराया॥ सूरदास स्वामी करुना मै बार बार बंदौं तेहि पाया॥ कीजे प्रभु अपने बिरद की लाज। महापतित कबहु नहिं आयो नेक तिहारे काज। माया प्रबल धाम अरु वनिता आयो हो या साज॥ देषत सुनत सबै जानत हौ नेक न आयत बाज। कहै श्रुति पतित बहुत तुम तारे श्रवन सुनी आवाज। दै नहिं जात घाट उतराई चाहत चढ़न जहाज। लीजे पार उतारि सूर कहं महाराज ब्रजराज॥

End—राग नट॥ देखु सखी हरि बदन इंदुवर। चिक्कन कुटिल अलक अवली छवि कहि न जाय सोभा अनूप वर॥ बाल भुजंगिनि निकसि मनो मिलि रही घेरि रस मनों सुधाकर। तजि नहि सकहि नहिं करहि पान को कारन कौन विचारि डरि डर॥ अरुन बनज लोचन कपोल सुभ श्रुति कुंडल मंडित अति सुंदर। मनहुं सिंधु निज सुतहिं मनावन पठयो जुगल बसीठि बारिचर। नंद नंदन मुख सुंदरता छवि कहि न सकत श्रुति सेस उमावर। सूरदास त्रैलोक विमोहन कपट रूप नर त्रिविधि सूल हर॥ काहू फिर न कहों वे बातें। जो नर यहां सुकृत कछु करिगे धातन की कुसलातें। जैसे सती जरै पिय के संग बिरह प्रेम रस मातें॥ ताको स्वाद पूछिये कातें सियरे आर कि तातें। जैसे सूर धसे रन भीतर अरु सनमुख करि घातें॥ ताको स्वाद पुछिये कातें सहत सेल उर घात। सूरदास देही को या गति समुझि परी अब बातें॥ या संसार बोल को अरिबो आयो गयो कहांते॥

Subject—प्रार्थना .... २ पद

परमारथ वर्णन			३—१७६	पद तक
भागवत प्रथम स्कंध की कथा			१७७—२५८	,,
द्वितीय स्कंध की कथा			२५९—२८८	,,
तृतीय	,,	,, ,,	२८९—३१८	,,
चतुर्थ	,,	,, ,,	३१९—३३०	,,
पंचम	,,	,, ,,	३३१—३३७	,,
षष्टम	,,	,, ,,	३३८—३४४	,,
सप्तम अष्टम स्कंध		,,	३४५—३५८	,,
नवम	,,	,,	३५९—४१७	,,
दशम स्कंध			४१८२—१०४	,,
एकादश स्कंध			२१०४-२११०	,,
द्वादश स्कंध			२११०-२१२४	,,

इति

No. 416(*j*). Sūrasāgara (Dashama Skandha) by Sūradāsa of Runakutā (Āgrā) Substance—Country-made paper. Leaves—103. Size—15 × 8 inches. Lines per page—32. Extent—5,300 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Place of deposit—Bābū Padma Bakhsha Simhajī, Lavedapore, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनमः । भजुमन नन्द नन्दन चरन ॥ पमल पंकज पति मनोहर सकल सुख के करन ॥ सनक संकर ध्यान ध्यावत निगम निवरन वरन । सेस सारद रिषे नारद संत चेतत चरन ॥ पन प्रयाग प्रताप दुर्लभ रमा वांहित करन । परसि गंगा भई पावनि तिहूं पुर धर धरन । चित्त चेतत करत कीरति अब टरति नारिन नरन । गये तरि ले जाय केते पतित हरि पुर त्ररन ॥ जासु पद रज परसि गौतम नारि गति उद्धरन । सोइ कृष्ण पद मकरंद पावन पैार नहिं सिर धरन । सूर भजु चरनारविंदहिं मिटै जन्मैा मरन ॥ १

चैापाई । श्री कृष्ण चरित्र सदा सुखदाई । जेहि गावत सुर नर मुनिराई ॥ श्री वसुदेव देवकी धामा । मथुरा प्रगटे पूरन कामा ॥ २

End—रावे उडुगन सुत पति दीन । तेरे भैान गैान हरि कीन्हो राहु गहन कस कीन्ह ॥ नै। अद सात साजि के बैठी सारंग सुत कस दीन ॥ सारंग देषि बिदा भे सारंग ग्राह रिपु त्यागन कीन ॥ उडगन सुत धरहु भापनो सैल सुता

सत कोन। कदलो खंभ बने जन दोऊ नागारिपु कटि छोन॥ सूरदास प्रभु मिलै गोपालहि अंग अंग परवोन॥ निसि दिन पंथ जोवत आइ। जल सुमन सुत तासु वाहन विकल ह्वै अकुलाइ॥ मंथ वाहन तासु सुत को बंधु बरनो भाइ॥ हगनि ते कब देंषि है। अलि सकल दुष बिसराइ॥ गै। सुमन पति पति रिपु न मानत कानि मोहन राइ॥ करि ततछन वेगि आवहु हदै बालत धाइ॥ अजै भष की हानि हय कै दा के का सब काइ॥ सूर के प्रभु कब मिलहिंगे परसिवे का पाइ। राम

No. 417(a). Rukmāngada kī Kathā Ekādaśī Māhātmya by Suryadāsa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—8 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—300 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Saṃvat 1886 or A. D. 1829. Place of deposit—Paṇḍita Śatrughnajī Miśra, Village Sikandarpore, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ रुकमांगद की कथा लिष्यते॥ चौपाई। प्रनवौं गुन गनपति के चरना। सिद्धि बुद्धि दायक के करना। चरन मनावौं द्वौ कर जोरी। गनपति बुद्धि बढ़ावहु मोरी। मातु पिता गुरु बन्दौं पावों। जिन यह निर्मल ज्ञान लषावा॥ सदाहि देवै बन्दौं स्वामो। गनपति है। सब अंतरजामो। सूर्जदास कवि बिनती करई। मोरे हृदय कपट नहिं परई। अवध नगर के बरनौं पारा। जहं नारायन भये अवतारा। कनक कोटि फिरि चारहु पासा। उठे कंगूरा जनु कैलासा। पूरब पावरो बिरजे अरिया। दछिन पवरो सोन सब मढ़िया। पछिम देषे होहु अहि नास। उत्तर दोसै देव को वास। चारिउ बरन बसैं सब जाती। परजा लोग बसैं बहु भांती। सब को सुष सबै सकुमारा। सब के कंचन पवन पगारा। सब के घरों बाधे हाथी, सब के तुरी रथन सारथी॥

End—मनुष रूप तब देवन लीन्हा। तबहि मोहनी काहु न चीन्हा। रुकमावति तब दीन्हसि सरापा। डोमिनि हुइ कै भुगतहु पापा। पुहुप के बस छियेहु तुम जाई। कूकर के प्रसि तोरहु पाई। अम्म निरास हो गये परनाई। अपने लोक बैठे सो जाई। सिव कैलास बैठे घराघाई। निज निज डगर देवतन पाई। मोहनी भई श्राप को भंडिये। धूपै लागि धाम के छेड़िये। विप्र साथ हरि मंगर लीन्हा। ब्रत को महिमा कहं लगि कहियो॥ एकादसी कीन्हे श्राप सों कहं लगि ब्रत करों बषान। तिन्हहि लै। लगि अब ठाना। सूर्यदास कवि भाषा रुकमंगद कैलास निहचै मन कैसे बहु कैसा चरन निवास। इति श्री एकादसी महातम सूर्यदास विरचिते भाषा रुकमांगद वादे बारहे इतिहास संपूरन लिष्यते

सेवा मिश्र सिकदरपुर के सं० १८८६ साके १७५१ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे तिथौ तिरोदस्याम शुक्र वासे जैसा देषा तैसा लिषा ममदोष नाहीं। समाप्त॥

Subject—१—रुक्मांगद की कथा इस प्रकार है कि अयोध्यापुरी के राजा त्रेतायुग में हरिश्चन्द्र हुए उनके पुत्र रोहितास्व और रोहितास्व के रुक्मांगद हुए। रुक्मांगद न्यायी धर्मात्मा ईश्वर भक्त था। वह एकादशी का व्रत विधि पूर्वक करता था। उसके राज्य में कोई भी ऐसा न था जो एकादशी का व्रत न करता हो यहां तक कि हाथी घोड़े आदि को भी एकादशी के दिन दाना चारा न मिलता था। यमराज यहां से घबड़ा के भगे और इन्द्र के निकट सब समाचार सुनाया इन्द्र विष्णु के पास गए विष्णु मय इन्द्र के शंकर के पास गये वहां से मोहनी राजा को छलने के लिए भेजी गई। वह मोहनी राजा को बन में शिकार खेलते मिली राजा देखकर मोहित हो गया मोहनी और राजा का सूर्य चन्द्र की साक्षी में मेल हो गया और उसने एकादशी व्रत से सब प्रजा को राजाज्ञा से छुटाना चाहा जब राजा की रानी संध्यावती को यह वृतांत ज्ञात हुआ तो उसने मोहनी को श्राप दिया क्योंकि एकादशी व्रत वहां कोई भी न करने लगा। और मोहनी का रथ रुक गया कि एकादशी व्रत वाला अगर रथ छू देवे तो रथ चले राजा रुक्मांगद के राज्य में कोई भी न निकला केवल एक बुढ़िया जो अपनी पतोहू से लड़ कर दुख से एकादशी के दिन भोजन नहीं किया था निकली। उसने रथ छुआ और रथ चला तब राजा को अपने राज्य की दशा ज्ञात हुई कि मोहनी ने हमको छल कर एकादशी का व्रत राज्य भर में छुड़वाया। रानी के श्राप से मोहनी डोमनी हुई और प्रायश्चित्त रानी ने यह बताया कि जब तू एकादशी व्रत करैगी तब फिर अप्सरा होगी। इस प्रकार राजा रुक्मांगद की कथा एकादशी माहात्म्य के सहित वर्णन की गई है।

No. 417(*b*). Ekādaśi Māhātmya by Suryadāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—24. Size—7½ × 4½ inches. Lines per page—35. Extent—475 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Date of manuscript—Samvat 1901 or A.D. 1844. Place of deposit—Paṇḍita Ayōdhyā Prasāda Miśra, Village Katailv, Post Office Chilawaliyara (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ एकादशी व्रत नारातम प्रारंभ्यते॥

दोहा॥ शंकर शरन प्रथमही पंकज सीस नवाइ। चरन कमल मैं मांगऊं श्री गुरुदेव लखाय॥ १ चौ० राम लषण सुमिरौं दोउ भाई। नाम लेत पातक

बसि जाई। सुमिरौं पवन पूत हनुमंता। येहि सुमिरौ बल होइ बहुता॥ सुमिरौं चांद सूर्य दोऊ भाई। जिनके ज्योति रही जग छाई॥

End—सूर्यदास विनतो करै सुनहु हो संत सुजान। करहु ध्यान श्री कृष्ण कर होइ इन्द्र मान॥ ८० चौ० एकादशी जो सुनहिं संपूरन। ते जानहु गंगा स्नान तन। सुनिके कथा जो देइहि दाना। तेहि कहं होइ इन्द्र पयाना। एकादशी अमृत कै बानी। संत सुजान पियहिं मन जानी। जमकै निशानी पंतमन जाति के धोरो। रसना अक्षर अक्षर के जोरो। दोहा—कहै सुनै जो प्राणी अश्वमेध जग होइ। सूर्यदास कवि भार्यं हरि सम अवर न कोइ॥ ८१ इति श्री एकादशी कथा संपूरणम् समाप्त शुभमस्तु। मि० भादौं मास कृष्णपक्ष १२ संवत् १९०१ लिषा देवो शिवदास सागर मध्य रविवार।

Subject—स्तुति, नारद का पुष्प के लिये इन्द्र से कहना और इन्द्र का रंभा को पुष्प लेने रुक्मांगद के यहां अयोध्या भेजना पृ० १—२ रंभा का लिखा जाना, रानी का आश्चर्य करना, रंभा का राजा को एकादशीव्रत का फल कहना, नगर में एकादशी रहनेवाले को ढूड़ना और एक स्त्री मिलने पर उसके छूने से रथ इन्द्रलोक को जाना। पृ० ३ से ६ तक।

राजा का व्रत के लिये नियम करना और सब का स्वर्ग जाना। देवताओं का व्रत भंग करने का विचार करना और मोहनी स्त्री बनाना और रुक्मांगद के पास भेजना राजा का मोहित होना रानी का राजा को समझाना पृ० ७-१२ तक।

मोहनी का राजा के साथ अयोध्या आना बड़ी रानी का विप्र भेज व्रत की याद कराना मोहनी का निषेध करना राजा रानी संवाद पृ० १३—१७ तक।

पुत्र की बुला कर उसका सीस देने को तय्यार होना पुत्र के आने पर राजा का दुखित होना कुंवर का समझाना और दान देकर सिर काटने को तय्यार होना विष्णु का आना और रक्षा करना मोहिनी का नरक में जाना पृ० १८—२४ तक।

इति

No. 417(*c*). Rāmajanma by Sūraja Dāsa Kavi. Substance—Foolscap paper. Leaves—78. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—16. Extent—468 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Kaithi Mudiā. Date of manuscript—Samvat 1953 or A. D. 1896. Place of deposit—Paṇḍita Yaśyodā Nanda Tiwāri of Village Kānth, District Unāo.

Beginning—श्री गणेश जी सहाय नमः । श्री सुरसती जी सहाय नमः । श्री गंगा जी सहाय नमः । श्री महादेव जी सहाय नमः । श्री पोथी राम जनम लिख्यते श्री गुरु चरन सरोज रज नीज मन मुकुर सुधार । बरनौ रघुपति बीमल ज (जौ दायक फल चार । बरनौ रघुपती बोधोना बतिस । रामरूप तुम पुरवहु आस । बरनौ सुरसती अमोरीत बानी । रामरूप तुम भली गति जानो । बरनौ चंद सुरुज की जोती । रामरूप जन निरमल मोती । बरनौ बसुध धरी जौनर । राम रूप भये जगत पिआर । बरनौ मात पिता गुर पऊ । दीन मौही नीरमल गोआन सोआऊ ॥ सुरजदास कवी बरनौ परम नाथ जोव मौर । राम कथा कीछु अलहु कहत न लगै भौर ॥ बालमीक रामायन भाखा । तीनो भुवन जौ भरो पुर राखा । राम के जनम सुनौ मन लाइ । बड़े धरम पाप छै जाइ । आनंद मंगल सब कोइ करइ । सहसर होम सौदान दीन करइ । होम्ह मह बोजेनो कीन । कीटीन गये बीपर कहि दीन ।

End—राम जनम सुनै मन लाइ । दुख दलिदर सम जाइ पराइ । राम के जनम सुनै जौ कान । तेहो कर पुत्र होत कलोआन । राम के जनम मनोतो जो गावे । सौ नर भव सागर तरी जावे । दोहा—राम जनम कथा जनम कथा बिमल पढ़े सौ नर मन लाय । सौ नर राम परताप ते भौ सागर तरी जाय । इती सीरी राम जनम पुरन जौ पत्र देखा सौ लीखा मम दोस न दीजिए पंडित जन सौ बीनती मौर टुटल अछर लेब सजोरी महीना फागुन दीन बुध सन १८९६ दस्तखत देबीराम के ।

Subject—राम जनम की कथा पढ़ने की महिमा वर्णन पृ० १—४

राजा दशरथ का ३०० रानियों से विवाह करना तीन पट रानियां । राजा का शिकार खेलने जाना बन में भूल जाना संध्या समय सरोवर पर आना, धनुष बाण लेकर बैठे विचार करना—पृ० ४—५

श्रवण का जन्म होना, उसका विद्या पढ़ना, स्त्री का आना, वादाविवाद होना, स्त्री का निकाला जाना पुनः आना खट्टा मीठा भोजन बनाना, अंधो, अंधे की दुर्बल देख श्रवण का पूछना, समाचार जानकर फुलमती को उसके मायके भेजना । कांवरी बना कर माता पिता को लेकर घूमना, माता पिता का पिपासाकुल हो पानी मांगना, श्रवण का पानी के लिये जाना । पृ० ५—१४

सरोवर में कमंडलु को डुबोते समय शब्द होना, दशरथ का शब्द सुनकर शिकार का अनुमान कर बाण मारना, श्रवण को लगना राम राम शब्द सुन कर दशरथ का वहां आना, श्रवण का राजा से पूछना और राजा का अपना परिचय देना, श्रवण का राजा से माता पिता को पानी पिलाने के लिये कहना; राजा का उनके पास जाना, पानी देना, सब समाचार कहना, अंधो अंधे का

राजा को शाप देना और देह त्याग करना, राजा का अयोध्या आना, वशिष्ठ से पुत्र हेतु उपाय पूछना, यज्ञ करना और पुत्रों का होना। पृ० १४—२८

पुत्रों का यज्ञोपवीत होना, विश्वामित्र का अयोध्या आना, यज्ञ रक्षा के हेतु पुत्रों को मांगना, राजा का दुखित होना, विश्वामित्र का कोपित होना, देवताओं का दशरथ को समझाना, राजा का राम और लक्ष्मण को मुनि के साथ भेजना, दोनों भाइयों का विश्वामित्र के आश्रम में आना, राम का मुनि से गंगा का उत्पत्ति पूछना, मुनि का वर्णन करना पृ० २८—४७

मुनि से वार्तालाप कर के शयन करना, आधीरात को उठ कर आना, अनेकों प्रकार के उत्पात होना, राम का उसे मारना, ब्राह्मणों का सुखी होना, यज्ञ के लिये भगवान का मुनियों को आज्ञा देना, मुनि का राम को लेकर तिरहुत जाना विश्वामित्र को आया हुआ जानकर जनक राजा का आना, दंड प्रणाम करना, राजकुमारों को पूछना, परिचय पाकर प्रसन्न होना, पुरवासियों का राम लक्ष्मण को देख कर प्रसन्न होना, राम का धनुष यज्ञ देखना और धनुष का तोड़ना, जनक का अयोध्या को दूत भेजना, दशरथ का जनकपुर आना, जनक राजा का दशरथ को जनवास देना, चारों भाइयों की शादी पृ० ४७—६०

दशरथ का विदा होकर अयोध्या के लिये चलना, रास्ते में परशुराम से भेंट, नारायण धनुष राम को देना, राम का उसे चढ़ाना, परशुराम का वन गमन, राजा का पुर प्रवेश, परिछन होना, सासुओं का बधुओं का मुख देखना, गृह प्रवेश आदि वर्णन, राम जन्म पढ़ने का फल वर्णन—६०—७८

No. 418. Suratarāmaki Bāṇi by Sāddū. Substance—Country-made paper. Leaves—108. Size—4½ × 3¼ inches. Lines per page—18. Extent—1,215 Anushṭup Slokas. Appearance Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1852 or A. D. 1795. Place of deposit—Haravaṁsā Rāi Tikāri, Rae Bareli.

Beginning—अथ साधो सुरत राम जी की बांनी ग्रंथ लिख्यते ॥

प्रथम सतुति का कियत लिख्यते ॥

नमो रमईया राम निसरि तेरे आधारा। नमो नमो गुर संत सदा मोहि लगो पियारा ॥
तुमरे पदकी सरनि रहो मितही मम सोसा। मैं हूं पांवर जीव आप स्वामी जगदीसा ॥
सुरत राम सरनें सदा कर प्रनाम अनंत। तुम अपरमपार अपार हो मैं हूं तुमरो जंत ॥

अथ साषी गुरदेव को अंग लिष्यते ॥

प्रथम राम रामतीत जू सत गुर सब ही संत। जन सुरत राम बंदन करैं बारंबार अनंत। अंग ॥ राम चरण गुर तपत है सुरत राम के सोस। ग्यान भगति बैराग दे नांवकरयो बकसोस। राम चरण हरि रूप है भगति भूप है सोइ। सुरत जीव उनसु मिलयो सब मिल नामै थोइ। सत गुर सब गुण मेट दे निरगुण करै निराट। जन सुरतराम सांची कहै देह मुकति तणी बै बाट। ४ सत गुर का प्रताप सूं नोव प्रगटै आइ। सुरत रात्रि पै लोक धन मेरे मन नहि आइ ॥ ५ मेरे मन भावै नहीं तीन लोक को धन। सुरत राम गुरदेव का चरणां लागे मन ॥ ६

End—पदराग आरतो ॥ आरति तेरी राम अभंगो। घटि घटि चेतन आप असंगो ॥ टेक नहीं निराकार नहीं आकारा। राम जपै जपि राम संचारा ॥ १ सेस महेसुर पार न पावे। निति अनिति हो निगम बतावै ॥ २ आदि अंत मधि है इक सारा। सुरत राम सा राम पियारा ॥ ३ इती साषां सुरत राम जो की बांणीं अणभै संपूरणं ॥ गोट को संख्या को ब्योरा साषी ॥ ८०९ चन्द्रांइणं ॥ १०१ ॥ सवईया १३ कियतत्र सार ॥ १९ ॥ कुंडल्या १८ अररेषता १९ ॥ ग्रंथ ६ ॥ पद बेताल ८७ ॥ ग्रंथ पद बेताल। सबद संता का मानूं सरब सबद की जोड़ ११३२ ही जानूं ॥ अनत ग्यान भरपूर है ताको नाहीं पार। साषी अर चंद्राइणां सवैया कियतत्र सारदुल ॥ सरब संता की महरि सूं सबद लिष्या है सार ॥ ज्यो कोई बांचिति आरसो सो नर उतर पार तर ॥ जन सुरत राम परताप सूं लिष्यो जैतहो राम ॥ रोड़पूरो निज गांव है राम दुवारो धांम ॥ २ ॥ संवत अठारा से सहो वष बावनै ठाम ॥ भांदवां बुधि है। सतमी संत विराजत आठ ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ संत विराजत आठ, भगति मुकति दाता रहै। तत्र मन आयो अरधि, मोहो जम कैं पार है ॥ इती गोथी संपूरण ॥

समाप्ति

No. 419(*a*). Kavi Priyā Ṭīkā by Sūrata Miśra. Substance—Country-made paper. Leaves—57. Size—10 × 4 inches. Lines per page—42. Extent—1 197 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—

Nāgari. Place of deposit—Thākura Gyāna Simha, Village Mādhōpore, Post Office Bisawañ, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ सोरठा ॥ गरुड़ पाय गिरिपाल गोरि गिरा मन ग्रहप गुरु। ये जेहि रूप रसाल बंदौं पद जेहि जुगल के ॥ गन मुष संमुष होत सो या दोहा को तिलक सुरत मिश्र करत हैं तहाँ प्रश्न कोई वादी कहत भयो। गनेश जुके बरनन में चित्र को विमुष है सो कह्यो और प्रयाग के बरनन में पापन को बिलाइबो कह्यो। बिमुष भजिबो को बिनात नांसबो यह ममता नाहीं और प्रश्न जिन गनेश को बरनन तिन गनेश की प्रस्तुति में न्यूनता है बिघन भाजि जात है यामें प्रयाग को अधिकाई है औ पाप बिलात हैं यानो नसि जात हैं ये दोऊ प्रश्न ॥ तहां उत्तर विमुष को अर्थ विगत है मुष जिनको सोस कटि जात है यह प्रयोजन जब बिन सोस भयो तब बिलाइबो दोऊ ठौर सिद्धि भयो ॥

End—को कामी सदा है। ये कहिवे है सषी तब उन उत्तर दोन्हो। को कहै हिय विषे कामी सदा सर्प भयो है। जेहि राह ताको लोक बनो है ताको देषि करिकै सषी पूछत है यह लोक तुम हम पर कहउ ॥ कालो को है अर्थात केहि पंचाई है तब वह उत्तर देत है कालो है कोथी सर्प भयो है ताको लोक बनि रहो है। यह जानिए पुनः कंठ बसत को सात कोक कहावहु बिधि कहै का कहिए सुरतान को कामो हित सुरत रस अथ गतागत चित्र अलंकार को लक्षन। सुधो उलटो बांचिए कहिए अर्थ प्रमान। कहत गतागत ताहि कवि केशव दास सुजान ॥ गतागत को उदाहरन मासम सा हंस जे बनवीनत बोन बजे सद सोम समा मालत तात्रि बनावति सारो रिसाति बनावति ताल रमा। माल बनी बलि केशव दास सदा बसु केलि बनी बलमा। सुधो उलटो बांचिए और पद अर्थ एक सवैया में सुकवि प्रगटै होउ समर्थ ताको उदाहरन सैनन माधव ज्यो सर केसव रेप सुवेष सुदेस लसै मैनव को तम जो तमनो रुचि चोर सबै विन काल फंसै। तै न सुनो जस और सरो वर चोर बरोति सु कौन बसै। मैन मनो गुन चालु चलै सुम मामन मैं सरसो बिलसै ॥

Subject—केवल कवि प्रिया को टीका प्रश्न उत्तर सहित है।

No. 418(*b*). Nakha Śikha Rādhājūkō by Surata Miśra of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—9 × 5 inches. Lines per page—26. Extent—200 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1853 or A. D. 1796. Place of

deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha, Village Kāntha, Pargana Kāntha, District Unāo.

Beginning—सूरति मिश्र कृत नष शिष वर्णन॥ श्री गणेशायनमः॥

कवित्त—चरन चतुर्भुज के चिह्न ह्वै करत सेवा रमा के मुदम यहरूप सरसात है। आसन ह्वै बिधिहि रिझायो पै न बनो विधि सूरति सुकवि यातें जग मैं विख्यात है॥ सुनिये हो लाल डहि बाल पग समता कों कीनों बहुतेरो पै न भार धार जात है। ऐसो कौन जाके हिय धीरज धराइ थाके पाइ देखे काहू के न पाइ ठहरात है। १

जावक वर्णन-किधौं सब जगत को अरुनाई हारी ताकों थाइ के रजोगुन चरन अनुराग्यो है॥ किधैं पद कंजन कों सेवत हैं गिरा बड़े पूर हित जाके देखे अघपुंज भाग्यौ है। सूरति सुकवि जानि परो यह बात अब तोहि बूझिये न क्यों हू मान रिस पाग्यो है। जावक न होइ सुनि प्रानप्यारी तेरे यह प्रीतम को अनुराग पाइ पाइ लाग्यो है। २

पद नष वर्णन-चंदन अनुहारी छोनी रवि को अरुनताई ओते जोतिवंत स्वच्छ रूप विलसत है। जेती जग नारि ते निहारि नारि नीची करैं सबहो के प्रतिबिंब तिन में लसत हैं॥ सूरत श्री वृन्दावन रानी कौ चरन संग पाइबे कों बिब आभावंत दरसत हैं। सांची कहनावत इहो हो देखो लाल सबै जगत के रूप जाके नष में बसत हैं॥

End—केस वर्णन-किधैं तन पानिप को सोहत सिवार पुंज किधौं चंद्र पाछो आइ घेरो तमभार है। किधौं मन पक्षी गहिबे को मबतूल जाल मदन बनायो फांसि जाते को निकारि है॥ सूरति प ऐसे यह सांवरो रसिक बड़ो देषिबे को जक लागे धीरजु न धरि है॥ कारे सटकारे प तूं बार बार छोरति है तेरे बार देखि काहू मेरे बार परि है॥ ३९

मांग वर्णन-किधौं जमुना के पूर बीच गंग धार बही किधौं तम चीर्यो रवि करि धाइ डारे तें। किधौं रसराज के सरोवर में चलो बग छौननि को पांति उत इत के किनारे तें॥ सूरत छबीले छैल छके हैं छबीली देष यार बसीकर कहा करिहौ विचारे तें। व्यापि जाय विन पंग वारो पंग आगमन राग सो हरत तेरो मांग के निहारे तें॥ ४० बेनी वर्णन-त्रिभुवन पति के हरति दुख देखत ही सहज सुबास ऊंचो बास सोम रस है। नेह सुन सरसै पहाई सुख सरसैं वे तीनहू चरन कौ प्रगट सुदरस है। सब दिन एक सो महातम है सूरत यों नागर सकल सुख सागर परस है। परो मृगनैनो पिकबैनी सुख दैनी पति तेरो यह बेनी त्रिबेनी ते सरस है॥ ४१

इति श्री सूरति कवि विरचितं नख सिख बरननं समाप्तम् ॥ संवत १८५३ माघ बदी ९ नवमी मदं वासरे ॥ लिखित मिदं ।

Subject—राधा के चरन, जावक, पदनख एड़ी चरनांगुली, भूषन अनवट, नूपुर, पाइजेब बर्नन छंद १ से ८ तक।

गति, कटि, त्रिवली, रोमराजी, उरोज, हाथ, कर भूषन, चूरी, भुजमूल, पीठि बर्नन। छंद ९ से १९ तक।

ग्रीवा, तिल, मुख, अधर, दशन, रसना हँसी, वाणी और कपोल बर्नन छंद २० से २८ तक। नासिका, नथ, नेत्र, अंजन, नेत्रभाव, बरुनी, भृकुटी, श्रवण, भाल बर्नन छंद २९ से ३७ तक।

अलक, केस, मांग और बेणी बर्नन तथा लिखने के संवत् का उल्लेख छंद ३८ से ४१ तक। चाँदनी बर्नन, अंधकार व शीत बर्नन के ३ छंद इसमें सूरत कृत और भी दिये हैं। इति।

No. 419(c). Bihāri Satasaī kī Ṭīkā by Surata Miśra and Isavī Khān of Āgrā. Substance—Country-made paper. Leaves—625. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—7,812 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Date of manuscript—Samvat 1973 or A. D. 1916. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Bihari Miśra, Gōlāganja, Lucknow.

Beginning—बिहारी सतसयी टीका ॥

सतसैया की टीका श्री मिश्र कवि सूरति कृत अमर चन्द्रिका व ईसवी कृत टीका लिख्यते ॥ दोहा—मेरी भव बाधा हरौ राधा नागर सोइ। जा तन की झाईं परैं श्याम हरित दुति होई ॥ १ सूरति कृत टीका—प्रथम मंगलाचरन यह कवि की बिनती जानि ॥ प्रगटत अपनी अधमता अधिकाई सुनि आनि ॥ जिता अधम तितनो बड़ी भव बाधा यह अर्थ। उहि हरिबे को चाहिये कोऊ बड़ो समर्थ। नर बाधा कों सुर हरत सुर बाधा ब्रह्मादि। ब्रह्मादिक की व्याधि कों हरत जु श्याम अनादि। लखि राधा तिन श्याम को, बाधा हरत न कोइ। याते मो बाधा हरो राधा नागर सोइ ॥

End—अमर चन्द्रिका ग्रंथ कों पढ़ै गुनै चितलाय। बुद्धि सभा परवीनता तादि देई हरिराइ ॥ ई० टी० इस जगह वाद के अर्थ वृथा के हैं। हेतार्थ दोहा को यह है कि अपने मत का झगरा वृथा है, क्योंकि जिनने सेवा है तिनने जानो नंद किसोर ही की सेवा है क्योंकि ब्रह्मा, सिव, सनकादिक, सब विष्णु ही हैं तो

जिनने जिसको पूजा मानो विष्णु को ही पूजा। अलंकार उपमा तिसका लक्षण। जहां वेद स्मृति पुरानादिक करि अर्थ पाइये सब ही को एक नंद नंदन लेइबो पुरानोक्ति है। जो परिसंख्या अलंकार है तौ ताको लक्षण यह है कि एक थल को वरोज एक थल नंद नंदन को सेवन ठहरायो। यामें और देवन को अवज्ञा होइ। तातें परिसंख्यालंकार नहीं राख्यौ ॥ यद्यपि है शोभा अनी मुक्त मे देष। गुहे ठौर को ठौर में तार में होत विशेष ॥ ७१७ निषेधालंकार ॥ जो संपत्ति बहुतै बढ़ै आनंद उपजै चित्त। यो दोनों न विसारिये हरि पद अपनो मित्त ॥ संभावनालंकार ॥ इति श्री अमर चंद्रिकायाँ अमर सूरति पद्योत्तरे ईसवी कृत बिहारी सतसैया व्याख्यानो शत रस वर्णनो नाम पंचम विलासः ॥ मिती पोष सुदी २ संवत्, १९७३ विक्रमी ॥

Subject—बिहारी के ७१७ दोहों की टीका है। सूरति मिश्र ने प्रथम पद्य में और कहीं कहीं अर्थ स्पष्ट करने को गद्य में टीका की है। उस पर ईसवी खां ने गद्य में टीका की है।

No. 420. Ravi Vrata Katha by Surendra Kirti of Gopachala (Gwalior). Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—12½ × 8 inches. Lines per page—22, Extent—662 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1740 or A. D. 1683. Date of manuscript—Samvat 1925 or A. D. 1898. Place of deposit—Sri Jaina Mandira (Barā), Bārā Banki (Oudh).

Beginning—अथ रविव्रत कथा लिख्यते ॥ चौपाई

प्रथमहि सुमिर जिनवर चौबीस। चौदह से त्रेपन जु मुनीस। सुमिरौं सारद भक्ति अनंत। गुरु देवेंद्र जु कीर्ति महंत ॥ १ ॥ मेरे मन उपज्यो इक भाव। रवि व्रत कथा कहन को चाव। मैं तुक हीन जु अक्षर करौं। तुम गुण उर कवि मोके धरौं ॥ २ ॥ नगर बनारस उत्तिम थान। पारसनाथ जन्म कल्यान। सहस कोटि चैत्यालय बने। कंचन कलस जड़ित सो भने ॥ ३ ॥ वहै जु गंगा गहिर गँभीर। जिन कर गुन सम उज्जल नीर ॥ राजा के जो महल सोभंत। कंचन कलस दीपतजु महंत ॥ ४ ॥ हाट बजार भरे दीनार। देस देस के कोठी वार। पढ़ैं सु पंडित वेद सुजान। बड़े ग्रंथ जसु धवल पुरान ॥ ५ ॥ बने बगीचा कूप विसाल। उपजै मेवा बहुत रसाल। चंपा पाडर करना जुही। पर फुलति बहु बागन बनी ॥ ६ ॥ निकल वेलि अरु महया जाइ। लता लवंग रही बहु छाय। नगर बनारस महिमा घनी। अमरापुर ते अतिही बनी ॥ ७ ॥ राज राज करै महिपाल।

बड़ी नीति सब के रछपाल । मति सागर तहँ सेठ औहगो । जैन धर्म की टेक जु धरी ॥ ८ ॥

End—रवि-व्रत तेज प्रताप गई लक्ष्मी फिर पाई। कृपा करी धरनिन्द्र और पद्मावति माई। जहाँ गये तहँ रिद्धि सिद्धि सब दौरन पाई। मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई। पढ़ै सुनै जो प्रात उठि, नर नारी अमु बुद्धि। धरनिन्द्र अरु पद्मावती होइ सर्वदा सिद्धि ॥ बार बार अब कह कहौं, रवि व्रत फल जु अनंत। प्रभु धरनेन्द्र किरपा करी। दोनों लक्ष अनंत ॥ दान मान जु करैं धरैं रवि व्रत जु ध्यान उर। जोम रोग भोग रस हित जपत उर माहि परम गुरु। सत सौच व्रत नेम जोग तीरथ फल पावै। रवि व्रत कथा कहंत सुनंत जो चित लगावै ॥ सुरेन्द्र कीर्ति अब यों कहे रवि व्रत गुन रूप अनूप सत। पंडित सुत केशवदास कहि लीजो चूक सुधारि अब। १३५५ इति श्री रवि व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक-मंगलाचरण। जिनादि बन्दना, काशी के राज्यान्तर्गत एक सेठ मतिसागर तथा इसकी सेठानी गुन सुंदरी के सात पुत्रों का होना और उनके वैभव का वर्णन। गुन सुंदरी का चैत्यालय जाकर मुनि से रवि व्रत लेना और घर आकर कहना। सेठ का व्रत को निन्दा करना सब द्रव्यों का नष्ट हो जाना, लड़कों का अयोध्या जाना सेठ जिनदत्त से आश्रय पाना, बालकों को भी व्यापारादि में क्रमशः हानि का ही होना। अंत में एक मुनि के आदेश से गुण सुंदरी सहित सेठ का पुनः व्रत साधन करना।

(२) पृ० ७ से पृ० तक—गुनधर (सेठ मतिसागर के पुत्र) की नागेन्द्र सेवा से धन धान्य की प्राप्ति और जिन मंदिर का निर्माण कराया जाना, उनके ऐश्वर्य से द्वेष करके उन्हें चोर बता कर अयोध्या नरेश से उनकी शिकायत होना, राजा का भ्रम निवारण, राजा का अपनी प्यारी पुत्री प्रीतिमती का विवाह होना, अंत में राजा से आदर विदा लेकर काशी को लौटना और माता पिता से मिलना, व्रत के प्रताप से पुनः वैसे का वैसाही हो जाना बल्कि और भी अधिक धन तथा मान का होना, इस कथा के पढ़ने तथा सुननेवालों के फल का वर्णन,

कवि परिचय :—

अ—निवास स्थान, महोपाचल नगर भले शुभ थान बखानो ॥

ब—वंश परिचय, देवेन्द्र कीर्तिमुनि राज भले तप तेज प्रमाने। तिनके पट्ट सुरेन्द्र कीर्ति भट्टारक जाने।

स—ग्रंथ निर्माणकाल :—

संवत विक्रम जीत भलो सत्रह सै मानों। ता ऊपर चालीस जेठ सुदि द्वादश जानों। वार सु मंगल वार हस्त नक्षत्र जु पायिो। तम हर रवि व्रत कथा सुरेन्द्र कीरति शुभकारियो ॥

द—महंत होने का वर्णन—

गर्ग गोत्र अग्रवाल ते हु नगर के जे हैं वासो। साहु मह्न के पूत साह भाऊ बुध रासो ॥ इनकी बुद्धि में कोनिये ते पूरे गुनवंत। पंचम मिलि जो दया करी पायो पदऊ महंत ॥

No. 142(a). Jānakī Vijaiya by Sūrya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—26. Size—8 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—130 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1900 or A. D. 1843. Place of deposit—Rājā Bhagawāna Baksha Simhajī, Riyāsata Amethī, District Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनः अथ जानुकी विजय कथा ॥ छन्द ॥ जय जयति जय जगदम्बिका जननी अखिल जग जानकी ॥ अति अतुल जासु प्रभाव गम्य नहि गति जानुकी। गुण तीनि पावरै तत्त्व माया त्रिगुण सगुण सरूप जो। प्रसिद्ध त्रिभुवन विभव भूषित अमित शक्ति सरूप जो। सोरठ ॥ परत विषम भव कूप, सुर मुनि अहमित जोग में। चिदानंद मय रूप, जब लग जानि न जानकी ॥ दोहा ॥ जहं पवि नासन जानकी राम वाम दिसि सोह। सुर नर मुनि सुमिरत सदा, होत विगत मद मोह ॥ चरित नराकृत कीन्ह बहु सौम्य सुलग तनु धारि। जानकी जिय मन मोह कछु जानि सु राजकुमारि। सत रिम्नि यस मन भयऊ सिय महिमा नहि जानि ॥ विजय जानकी कथ करि कह्यो प्रसंग बखानि ॥

End—छन्द ॥ लोला अमित सिय राम यह अति गुप्त ग्रंथनि जो रही। पावन करन हित (निज) गिरा परसिद्ध तुलसी कर कही ॥ पदकंज जानुकि प्रीति युत जे सुनहिं सादर गावहीं। सौभाग्य श्री संपति सदा कल्याण कीरति पावही ॥ सोरठ ॥ श्री जानकि सुख धाम, तासु सदा मंगल भवन। कवि सुधाम श्रीराम तुलसी के प्रभु पल दवन ॥ ० ॥ इति श्री जानुकी विजय रामायण सहस्र सी दिव्य रावन वध समाप्तम् सम्वत् १९०० शाके १७६५ ॥

Subject—इस में कवि ने रौद्र, वीर, भयानक तथा अद्भुत रस का उत्तम वर्णन किया है। रामचंद्र जी लंका को विजय करके सीता लक्ष्मण सहित अयोध्या को गमन करने को हैं; देवता तथा मुनीश्वर उनको प्रार्थना कर कृतज्ञता प्रकाश करके चले गये हैं। इतने ही में सत ऋषियों ने आकर रामचंद्र से उनके लंका विजयोपलक्ष में प्रशंसात्मक वाक्य कहे और जानकी जी को राजकुमारी बतलाया, सीता जी मुसकराई राम ने कारण पूछा, इस पर सीता ने बतलाया

कि अभी एक रावण सहस्र मुख का सात समुद्र पार वध करने को बाकी है, फिर क्या था राम ससैन्य उसके वध को चले। समुद्र स्वयं शुष्क हो गया। राम वहां पहुंच गए। राम की सम्पूर्ण सेना उस राक्षस ने उड़ा दी। केवल जानकी (सीता) तथा राम रह गये, राम से भी कुछ न हो सका अंत में सीता से प्रार्थना की उन्होंने उग्र रूप धारण कर राक्षस को नष्ट कर दिया। वह रावण मरते समय सीता जी में ही प्रवेश कर गया। अनेक शक्तियां जो उनके शरीर से ही उत्पन्न हुई थीं उन्हीं में प्रवेश कर गईं। इसपर सम्पूर्ण ऋषि मुनियों को सीता जी का प्रभाव ज्ञात हो गया। राम ने तो एक सागर को पार कर दस मुखवाले रावण को ही विजय किया था और यह उन्होंने सात समुद्र पार कर सहस्र मुख वाले रावण को नष्ट किया। इस प्रकार बड़े अच्छे ढंग से जानकी जी की विजय दिखलाई है। सब ऋषियों ने उनकी वन्दना की तब कहीं उनका उग्र रूप छिपा। पुस्तक संवत १९०० वि० शाके १७६५ सन १२५१ को लिखी हुई है।

No. 421(*b*). Janaki Vijaiya by Surya Kumāra. Substance—Country-made paper. Leaves—9. Size—8 × 6 inches. Lines per page 24. Extent—200 Anushtup Slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1903 or A. D. 1896. Place of deposit—Pandita Mahādeoji, Village Aurāhī, Post Office Sisaiyā, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ जानकी विजय लिख्यते। दोहा। चरित राम सत कोटि किय बिबिधि मुनिन्ह विस्तार। अदभुत चरित विचित्र अति गुप्त प्रगट संसार॥ भरद्वाज मुनि सन कहत बालमीक इतिहास। नाम विचित्र रामायन विजय जानुकी जास। छंद॥ जय जयति जय जगदंबिका जननी अखिल जग जानकी। यति अमित जासु प्रभाव पावन गम्य नहि मति ज्ञान की॥ गुन तीन पांचौ तत्व में सब सगुन निरगुन रूप जो। परसिद्ध त्रिभुवन विजय भूषित अमित सक्ति सरूप जो। सोरठ॥ परतपरम भव कूप सुरमुनि चाहिमित जोग जे॥ चिदानंद में रूप जब लगि जान न जानकी॥ दोहा॥ जड़े विनासन जानकी राम वाम दिशि सोह। सुर मुनि सो सुमिरत सदा होत विगत मद मोह। चरित राम कृत कीन्ह बहु सौम्य सुभग तन धारि। जानकी जै मन मोह कछु जान सो राजकुमारी। सत रिपिन भ्रम भयो अति सिव महिमा नहिं जानि। विजय जानकी ग्रंथ यह कहौं प्रसंग बखानि॥

End—दोहा—यहि विधि अस्तुति प्रेम युत बुध जन सबहि बखान। अभै दान दै देवि तब परम भयाकुल जानि॥ उग्र रूप जो त्यागि तो सौम्य सुभग तन

धारि। राम बाम दिसि बास दिय बहु विदेह कुमारि ॥ सुरगन बर्षिहि सुमन गन बाजहिं व्योम निसान। चले अवध प्रभु यान चढ़ि जय जय होति बखानि ॥ सिया राम राजत अवध जग अभिराम अपार। चरित चारु लखि लखि ललित करत अनेक प्रकार ॥ छंद ॥ लीला ललित सिय राम की यह सुभ ग्रंथन जो रही। पावन कटक हित निज मिल परसिद्धि भाषा कवि कही। पद कंज जानु विशेषि जुत सो जे सुनहिं सादर गावहीं। यह लोक तजि बैकुंठ पैठे परम पदवी पावहीं। इति श्री हरि चरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसनेनाम विमल वैराग्य पावनोनाम जानकी विजै कथा समाप्त शुभ मस्तु माद्रमासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्थ्याम चन्द्रवासरे संवत १९०३ शाके १७६८ सन् १२५४ लिख्यते ईश्वर सहाय रघुकहा के ॥ श्रीराम ॥

Subject—जानकी विजय में श्रीराम जी जब अयोध्यापुरी में रावण को मार कर आये और सिंहासन पर बैठे उस समय सब देवता और ऋषियों मुनियों ने पृथ्वी के भार उतारने की प्रशंसा की उस समय जानकीजी मुसकरायीं श्रीराम जी ने मुसकराने का कारण पूछा तो कहा कि हजार सिर वाला रावण जब तक आपने नहीं मारा तो किस प्रकार पृथ्वी का बोझ उतारना कहा जा सकता है। श्रीराम जी ने उस रावण के निवास स्थान को सीता जी से पूछा। उन्होंने सात समुद्र पार बतलाया और उसकी बड़ी महिमा वर्णन की। श्रीराम जी तुरंत ही अपना कटक जो रीछों और बानरों व राजाओं का था लेकर पहुंचे परंतु महारावण श्रीराम जी से न मरा तब अपनी शक्ति की प्रार्थना की उस समय सीता जी ने सौम्य रूप को त्याग कर भगवती का रूप धारण कर और योगनी भूत प्रेत डाकिनी आदि लेकर महारावण को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। उस समय तीन लोक चौदह भुवन में बधाई बजने लगी देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की और सीता जी (भगवती रूप) को सबने प्रणाम किया। इस प्रकार सीता जी ने विजय प्राप्त की। इसी का वर्णन इसमें किया गया है। कवि के नाम का छन्द नीचे दिया जाता है। प्रभु चरित्र अद्भुत किय सगुन रूप विस्तार। जानकि जिय मन भोर कछु जानि सवं कुमार।

No. 422(a). Jhagarā Rādhā Krishṇa of Suwamśa Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—6×5 inches. Lines per page—12. Extent—180 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Ṭhākura Hanumāna Simha, Village Bardeha, Post Office Kherighāta, District Baharāich (Oudh).

Begiming—अथ टीका झगरा राधा कृष्ण का लिख्यते ॥ दोहा ॥ अमल कमल गनपति चरन सुमिरि सुवंस सुचित्त। करौं चकार हकार छौं दोहा सहित कवित्त ॥ सवैया ॥ कान्ह एक लसैं इत राधिका चंदन खौरि रहै उत रोरो ॥ मोर इतै सिर फूल उतै तन स्याम इतै उतै तन गोरो ॥ पट्टानि पीत पिछौरी इतै उत चौवरो चुनरि सो रंग बोरो। माई सुवंस सुनौ मन मोरे लखै निसि द्यौस मनोहर जोरो ॥ मसला ॥ भाई हतौ हरि भजन को बोटै लगो कपास। दोहा। इत धनोपो ग्वालना उतै रसिक नन्दलाल। बरनों रस झगरो सुनो चगरो परम विसाल ॥ सवैया ॥ इन्दु रसीलो रसै यह इन्दु मुखो तरिता घन मय जनु मेचक सारो। संभु समान उरोज दोऊ कटि केहरि दौठि मनो धनियारो। माघै सुवंस मरालन को गनै माते मतंगन को गति हारो ॥ जाति चलो दधि बेचन को लिय लेति जगाति जहां गिरधारो। म. दर्पा जानै पदोस्लिन को निवाह कहौ कैसे।

End—हरषि हरषि हरि को चरित, जे सुनि है चित लाइ। ते जग मों सुष को करें सकल संपदा पाय। हरि को हिय मैं धरि ध्यान कहौं यह है भव सागर को तरनै ॥ सो ससि मैं ससि चंद्रक वार। हतो सित पक्ष चतुर्दस को मरनो मदि नंदन वास सुवंस कहै दुष दीरघ दारिद को हरनो। नद नंदन पौ नव नागर को रस को घनेरो झगरो वरनो ॥ मसला। हरदा के साथ कपिला का विनास ॥ दोहा ॥ कियो चकार हकार छौं जानै सवै सुजान। छंद दोहरा कवित सो यों वसस्र उपमान ॥ सवैया। छूटन सारो समुद्र प्रसिद्ध सितारो तुम्हे बुधवंत न जानो। पौर उपाय न देपि परो तव वायु बुझायन को मत ठानो। ठेकि चलावै सबै मिलि कै यह जानि सुवंस पकास्नि बषानो ॥ याहि पढ़े सब पंडित मापत मारुत मंद चढ़े मन मानो। इति श्री ठेकि झगरो राधा कृष्ण सम्पूर्ण।

Subject—इस ग्रंथ में राधा कृष्ण का झगड़ा है दोनों रूपों की शोभा और श्रृंगार बताया गया है।

No. 422(*b*). Rāmacharitra by Suwansa Kavi of Terha (Unnao). Substance—Foolscap paper. Leaves—24. Size—9 × 5 inches. Lines per page—24. Extent—360—Anushṭup Ślokas. Complete or not—Complete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1879. Place of deposit—Baba Banamaladāsa Gundā (Rāe Bareli).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥
एको कुल के चरित को महिमा अपरंपार, का सुवंस कवि कहि सकै सेस न पावत पार ॥ बरन्यौ राम चरित्र बीस तरा के छंद ते। सुनौ चाउ करि मित्र

तिन को अब लच्छन कहौं। रस रिषि बसु औ चन्द्रमत। संवत बरष विचार। असित असाढ़ एकादशी रामचरित अवतार ॥ तपनि कै विश्वामित्र मुनि का कात्यायन सुत जप। त्यहि वंस में अवतंस कनउज माहि चिन्तामनि भये। तिनके तनय त्रय राम अरु अनिरुद्ध केसौराम ये। कहं लौं सुवंस बखानाई जिनके कलपतरु काम भे। सुत जुगुल केसौराम के भे हरी माधो अति लसे। ते मिश्र मोद बढ़ाइ दुनौ भाइ सुठि धाम बसे। प्रकट हरी के चार सुत जेठे गोवर्द्धन जानिए। अरु मारकंडे मनो भवन प्रसिद्ध सिद्धेश्वर मानिए। भे मारकंडे मिश्र के सुत पांच लीला धर जसो गुनखानि कासीराम विद्यापति विराजै ज्यों सबो। सुखमै सुदामा परम पुरुष प्रकट रामेश्वर भए ॥ सुत पांच लीलाधर मिसिर के जानु गुन मन छिति छए। अनरुद्ध राजा राव जाहिर महामुनि मन मानिए। गुनगाथ जागेश्वर सुखद अति प्रेमनाथ बखानिए ॥ जे तने राजाराम के भे छेदराम प्रथम कह्यो। मतिराम वे सीतल प्रसाद सुधर्म सुख पूरन लह्यो। सीतल प्रसाद सुबुद्धि के द्वै पुत्र भे जनु द्वै ससी। सुभ दानि बासी लाल औ रिषिनाथ साधु महाजसी ॥ सुमति मिश्र रिषिनाथ के सुत भे साधेराम। कलियुग में निस दिन करत सब सतजुग के काम। साधेराम सुवंस पै जितनो करी सराह। सोतो रसना एक सों कैसे बरनो जाइ। जासों बिन श्रम ही मिलै चारि पदारथ मित्र मंगलाचरण एक थोस मौला कहौ बरनौं राम चरित्र। मंगल करन उताल विघनहरन दारिद दरन। करिय दया दयाल लंबोदर करिवर बदन। जटाजूट सिर गंग भालचंद पर गरल अहि। आदि शक्ति अरधंग महादानि संकट द्रवौ ॥ चरन कमल गुरु के सुमिरि साधुन को सिर नाइ, राम कृपा ते राम को चरित कहौं सुखदाइ। अमित राम अवतार हैं अमित कथा विस्तार, मोहूं कहत हौं एक विधि निज मति के अनुसार।

End—अब ते रघुनायक राज्य करो। जुग आदि को कीरति भवे अगरो। उत्पन्न धरा सब सस्या करै। सब जीव सुखी न अकाल परै। जल देत बला तक त्रिस चह्यो। वर वारि सदा परि पूरि रह्यो। सुरगो सम धेनु भई सगरो। अमरावति शोल लसो नगरो। नर नारि उदार गुनाढ्य जसो। हद्द संपति गेह न गेह बसो। उतसौ दिनहू दिन होन लगो। नर नारि सुधर्म सुनीति पगे। दारिद्द के दारिद भयो रोगहि के भो रोक। दुख के दुख भ्रम के भ्रमै सोकहि सोक संशोक। मातु पिता गुरु को करै सेवा प्रेम बढ़ाइ। कहै सुनै हरि हर कथा नर नारी मनुलाइ। धर्मवंत नृप को प्रजा भ्राजति सब सुख साज। रीति तहां की क्या कहौं जहां राम महराज।

Subject—१—राम चरित्र वर्णन में कवि की असमर्थता का वर्णन। निर्माण संवत वर्णन।

२—साधो राय का कुल वर्णन ।
३—मंगलाचरण आसुरी समय का वर्णन ।
४—भूमि का गो रूप वर्णन ।
५—शिव स्तुति ।
६—माता का वात्सल्य वर्णन ।
७—बालक्रीड़ा वर्णन ।
८—बारात की शोभा वर्णन ।
९—भोजन सामग्रियों का वर्णन ।
१०—गारी गायन
११—लक्ष्मण परशुराम का वर्णन ।
१२—सेवक धर्म वर्णन ।
१३—जाति ब्रह्म धर्म वर्णन ।
१४—मातृ भक्ति वर्णन ।
१५—केवट प्रेम वर्णन, राम निवास स्थान वर्णन ।
१६—भरत कैकेई संवाद वर्णन ।
१७—लक्ष्मण का क्रोध, सैन सुरसरी का वर्णन ।
१८—वृद्धा अनुसूया के सिर कंप, राम प्रतिज्ञा, पंचवटी का वर्णन ।
१९—खरदूषण प्रलाप, मायामृग का वर्णन ।
२०—जटायु युद्ध, दुःख के कारणों का वर्णन ।
२१—राम बालि तत्त्वज्ञान महावीर का बल वर्णन ।
२२—राम रूप, लंका दहन, रामदूत, रामकी उदारता वर्णन ।
२३—रावण की सभा में अंगद का संवाद वर्णन महल्ला में हल्ला घन घोर युद्ध वर्णन ।
२४—जगत में दुःख के कारण, राज्यश्री मद और राम राज्य का वर्णन ।

No. 422 c). Sphuṭa Kāvya by Suwanśa of Terho (Unāo). Substance—Foolscap paper. Leaves—30. Size—9 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—330 Anushṭup Ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Bābā Banamāla Dāsa, Gunda, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः

राखे सदा जन को भव भीमते, पार करे अन पातक नाखे। नाखें कुरूप कुबुद्धि सुबुद्धि दै बोलत हैं हिय की वर चांखे ॥ चांखे निहारत देव अदेव जे वेद

पुरान सदा गुन गावैं । गावैं सुबंस हिये धरि ध्यान गनेस कलेस को लेस न राखैं ॥

जा हरि को चारि मुख चाउ सों विचारो करै धारा करै ध्यान ध्यानो ध्यान मे न पावहीं । जा हरि रिषि मुनि मनन करत रहैं जा हरि को वन बीच तपी तन तावहीं ॥ जा हरि को गाठो जाम सुकवि सुबंस कहै धाम छोड़ि बीना लीन्हें नारदादि गावहीं । ता हरि को गोप नारी हंसि हंसि हेरि हेरि चारि पग चलै चूमि कलिया लगावहीं । गुलुफ गुलुफ ते वे मन को कुलुक करो करतो बिहार तापै चाल्ता सो ऊवरू । गुंचो मखतूल सों न तुलि है तरनि तेज फूल कर फूलो सदा मूल हरख गुरु ॥ सुकवि सुबंस कहै जटी नग जालन सों हरतो जंजाल हाल मोहै मन घूंघरू । मंदस्व करतो मरालन के बालन को मंद मंद बाजतो गुविन्द पांय घूंघरू ॥

End—दसन दिखाइ चल उदर चलाइ बांधि मिथ्या के पबंध लघु लोगन को जांच्यो मैं । चरित लपै रस के गाइ के रिझाव मूढ़ रुठो मन जानि झूठो ठहरायो सांचो मैं । लोभ के बजाइ बाजा सुकवि सुबंस कहै यहि मता मैाज अपमान कहीं बाच्यो मैं । भरत के भैया मेरो बिनति हरैया राम तोहि बिन जांचे तो अनेक नाच नाच्यो मैं ।

महुरे हरि के पद पंकज तू परि पूरो सिवावन है महुरे । महुरे जग झूठो है देखु चितो हरिनाम है सांचो सोइ कहुरे ॥ कहुरे न कहूं परद्रोह की बात सुबंस कहै कोऊ सो महुरे । महुरे मन तोसों करौं बिनती रघुनाथ निरंतर को महुरे ॥ छोडि अनीति को नीति गहो इह साधु को संग करो सब जामे होतु जसो हरि लीला सुनो पल रामो सदा करुना हिय थामे ॥ माने (पैहौ सदा शिव लोक मैं ध्यायो सुबंस कहै सिय रामै । रेमन चंचल चोकनो चाहि चुमै मनि चंद मुखीन के चामै ॥

Subject—

पृष्ठ

१—५ गणेश स्तुति, बालकृष्ण का वर्णन ।

६—१० वसंत और वर्षा ऋतु का वर्णन ।

११—भंग (विजया) प्रशंसा वर्णन

१२—१५ राजा रघुनाथ सिंह के शिष्यों का वर्णन ।

१६—१९ राजा रघुनाथ सिंह और सुदर्शन के घोड़ों का वर्णन ।

२०—राजा सुदर्शन की तलवार का वर्णन ।

२१—वीर रस वर्णन ।

पृष्ट
२२—दानवीर दयावीर के उदाहरण।
२३—रौद्ररस के उदाहरण।
२४—करुणा रस के उदाहरण
२५—हास्य रस और भयानक रस के उदाहरण।
२६—२७ वीभत्स के उदाहरण।
२८—भक्ति भाव वर्णन।
२९—गंगा महिमा वर्णन।
३०—भक्ति उपदेश वर्णन।

No. 422(*d*). Umarāo Kośa by Suwamśa Śukla of Bisawañ. Substance—Country-made paper. Leaves—92. Size—12×6 inches. Lines per page—44. Extent—2,530 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1862 or A. D. 1805. Date of manuscript—Samvat 1942 or A. D. 1885. Place of deposit—Paṇḍita Vipina Behārī Miśra, Brijarāja Pustakālya, Village Gandauli Post Office Sidhaulī, District Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ उमराव कोष लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्ध करन घसरन सरन दारिद दरन दयाल। मन सायक दायक सदा गो गायक गणपाल॥ छप्पय॥ करत दान कल्लोल केलि कलरव को करि करि। फेरत सुंडा दंड प्रतिछाया को घरि घरि। मुका से श्रम कुंद परत आनन ते झरि झरि। सब शक्ति महिलोन सुते आनंद उर भरि भरि। उर लाय ललकि चूमति बदन यह सुवंस मांग्यो परषि। सुपदेव नृपति उमराव को उमा उमा नंदनि हरषि। अथ राज थान वर्नन॥ घनाछरी॥ जामे चारौ वरन करन के समान देषे वे भरम चारो पाप धरन हंसत हैं। देवी देवता ले नर नारि नीति रीति गहै प्रीति देवता को दिन दिन सरसति है। सुकवि सुवंस कहै रतन अमोल जड़े मानो भूमि भाग को विभूषन लसत है। देश देश जाहिर नरेश यों बखानि करैं वेस मैाध्र मंडल में बिसवां बसत है।

End—मोचा नाम। केरा समर ये दुवौ मोचा नाम प्रधान। भानु मेघ पर्वत भयो ए कवि कहत सुजान। इड़ा नाम। सनि वसुधा पुनि वाक गनि मदिरा वेरो नीर। इड़ा कहत पांचौ विषे जे कवि गुनी गंभीर। स्याम नाम, निज घन घन पुनि श्रात गनि सुत निज वस्तु सिहारि। ये चारौ को स्या कहौ सुकवि सुवंस विचारि। ककुद नाम। कोच पुष्य नृपचिन्ह अथ इन्है ककुद है

नाम। कुंदकली तारा मघा मघा जुगल बुध धाम ॥ सत नाम ॥ साधु सत्य पुनि श्रेष्ठ गनि श्रौर प्रसस्त मन मानि। ये चारों को सब कहैं सुकवि सुवंस वषानि॥ चौ० वर्ग विशेष विप्र हैं मित्र। सहित अनेक अर्थ विचित्र। ऐसे छंद सत्तरि। दार कांड तीसरे में है बुधिवर। युग रस वसु पुनि निशा पति संवत वर्ष विचारि। माघ कृष्ण प्रतिपदा को भयो ग्रंथ बैतार। ग्रंथ संज्ञा॥ वर्ग बीस भय कांड त्रय छिति रस वसु ससि छंद। भाषा शुक्ल सुवंस कवि करि के महानंद॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधीस चौधरी शिवसिंह वंसावतंस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुवंस विरचिते उमराव कोषे समाप्तम्।

Subject—एक शब्द के अनेक नाम दिए हैं।

No. 422(e). Umarao Vrittakār by Sawamśa Śukla Kavi of Viśwanāthapura. Substance—Country-made paper. Leaves—55. Size—8 × 6 inches. Extent—770 Anushṭup Ślokas. Appearance—Ordinary. Character—Nāgarī. Date of manuscript—Samvat 1898 or A. D. 1841. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Baksha Simhaji, Raīsa Tālukedār, Village and Pargana Kothārā Kalān, District Sultanpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः दोहा॥ गणपति गौरि गिरीश गिरि गुरु गोपालहि ध्याइ। कवि सुवंश उमराव को देत असीस बनाइ॥ १॥ छप्पै॥ जब लगि गणपति गौरि गिरा गंगा गंगाधर। जब लगि गवूड़ जोन्हाइ गगन गुह्यक पति गिरिवर॥ जब लगि पन्नग राजपुरी अरु धाम पुरंदर। जब लगि सातों सिंधु सिंधु की सुता सुधाधर। कहि सुवंस जब लगि ध्रुव चिरंजीव मुनि शंभु सुत। तब लगि राजा उमराव नृप करौ सकल संपति सुत॥ दोहा। गुरु लघु वष्ट उदिष्ट अरु मेरु पताका जानि। सहित मर्कटी चक्र ए प्रथमहिं कहौं बखानि॥

End—अथ द्विंत्रिंश अक्षर प्रस्तार। दोहा॥ सोरह सोरह पै विरति गुरु लघु नेता मानि। बत्तिस अक्षर अंत लघु छंद जलहरन जानि॥ ७३॥

यथाः—जलधर सम स्याम तनु अभिराम राजै पारद जुगल पट बोजुरी सोहै विशाल। काछनी कलित कटि तट में सुवंस कहै कर परबेनु चारु गेर में पुहुप माल। कुंडल कनक जड़ित मणि कानन मे सीस में किरीट अरु केसरि को खौरि भाल। ऐरे मन मेरे ऐसो रूप हिये धारि कहौ आठो जाम कहौ गोपाल गोपाल गोपाल॥ इति जलहरन। अथ हरिगीत छन्द॥ जब लगि विधाता वेद है अरु शेष हरिजस को कहै। तब लगि विदित वसुधा विप उमराव वृत्ता कर रहै॥ आदि

के पढ़े ते श्रम विना वर वृत्त को रचना करै। कविराज है हिय मे सुवंस कहै सदा सुष को भरै ॥ २७५ ॥ इति श्री विश्वनाथ पुरा पंड मंडल धराधीश चौधरी शिवसिंह वंशावतंस उमराव सिंह कारिते शुक्ल सुवंस विरचिते उमराव वृत्ताकरे वर्न वृत्त वर्ननोनाम पंचमोल्लास समाप्त संवत् १८९८ मिती पौष कृष्ण पक्षे त्रयो-दश्यये रविवासरे पोथी लीषा ईसरी प्रसाद शुक्ल साकोन पोछोरा शुभ मस्तु ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक प्रथम उल्लास, गुरु लघु विचार मात्रा का प्रस्तार, मात्रिक गण, चतुष्कल नाम, त्रिकल नाम, गुरु नाम, लघुनाम, अक्षर गण, गण फलाफल। द्विगण विचार, द्विगण फलाफल, दग्धाक्षर, मात्रा मेरु, मात्रा मर्कटी।

(२) पृ० ५ से ६ तक—द्वितीय उल्लास, उदिष्ट, वर्ण मेरु, उदिष्ट नष्ट मर्कटी वर्ण तथा मात्रा दोनो के संबंध से।

(३) पृ० ७ से पृ० २४ तक—तृतीय उल्लास, छन्द लक्षण, समवृत, विषम वृत, उक्तादिक नाम, गाहा, उपगीति, गाहिनी, सिंहनी, अस्कंधक, हरिगीत वर्ण भेद, भ्रमर, सरभ, मंडूक कर्कट, करभ, मदकल, पयोधर, बलवानर, त्रिकल, कमठ, मच्छ, सिंह, अहि, बाघ, बिलाई, सुनक, सर्प, रोला, गंधानक, वृत्ता, उल्लाला, षट पद प्रकरण, पज्झटिका, अवल, पाथाकुलक, कुंडलिया, मधुर-ध्वनि, झूलना, सोरठा, अभीर, सिंहावलोकिता, त्रिभंगी, दुर्मिला, मनहरण इत्यादि छन्दों के लक्षण।

(४) पृ० २५ से पृ० ४० तक—चतुर्थ प्रकाश, वर्ण वृत्ति वर्णन, छन्दों के नाम, तालो, शशी, प्रिया, पंचाल इत्यादि के लक्षण,

(५) पृ० ४१ से पृ० ५० तक पंचम प्रकाश २३ अक्षर तक का प्रस्तार। अंत मे अपने आश्रय दाता का परिचय कवि ने दिया है।

No. 423. Pāṇḍava Yaśendu Chandrikā by Swarūpa Dāsa (Rasāla). Substance—Country-made paper. Leaves—197. Size—Lines per page—18. Extent—3,103 Anushṭup Ślokas. Incomplete. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Paṇḍita Ganeśa Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्रीगणेशायनमः अथ रसालकृत बोधनो पांडव येसेंदु चंद्रिका लिख्यते ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिणे वोरे ॥ धुनस्ते अविकारिणे। भूभारहारिणौ वंदे नर नारायण शुभौ ॥ १ ॥ दोहा ॥ ध्यान कीरत वंदना, त्रिविध मंगलाचंन।

प्रथम चतुसटय बोत्त सोई भये भिवा सुभ कर्न ॥ २ नमो अनंत ब्रह्मांड के सुर भूपनै भूप। पांडुव येसेंद चंद्रिका बरनत दास स्वरूप ॥ ३ ॥ स्वामी के पोछे रहे चादि होय उधार। नरनोरायन सब्द कुं दास स्वरुप विचार ॥ ४ ॥ घनाक्षरी ॥ गरल तै भोम के सुज्वाला हू ते पांचहू के ॥ द्रोपदी की सभा यो विराट वन तोन वार। किरोटो के अपकुर के श्राप तै युधिष्ठिर कृमा (इससे आगे पृष्ठ २ा और तीन नहीं हैं) पृष्ठ ४ ॥ कोसंवे पत्र है वरन्यो इवरूप किरोटो के स्वारथों सहायवे कर हिये। १२ ॥ कि प्रयोजनं सवैया ॥ पावैन करो गौन हरि दिस फेरिये पात्र चेले न चेले ॥ जोम ह्वैते करिवान हरि फिर दास स्वरूप हुले न हुले तैन ओते लषो रूप विराट को फिरये नैन पिछे न घोछे। श्रोन छेते हरि कोरति कुमुनि फिर यै श्रोन मिले न मिले ॥ १३ दोहा ॥ लाभ जिव का सुजस को पुनि परमारथ सांच विध्न सांति परलोक कि सिद्धि प्रयोजन पांच ॥ १४ ॥ मेरे पांचो हैं मेरि जीवका हरि हरिदास कि तोन ग्रंथ कियो जास भो है पढ़ें गोजिनो कौं बुद्धि सुकर्म प्राप्तो परमारथ ग्रंथ विषे विध्न सांतिः परलोक सिद्धि है हो श्री हरि को हरिदासन को मिश्रत यसः सांक लीन। करकंज निसा चंद्रन्यायेन ॥ १५ ॥ अष्टादस परब श्रुचि मंत्र प्रथम आदि पर्व श्रुचि ॥

End—श्लोक वैश्णवानां यथा शंभु देवानो गरुड़ध्वजः नदीनां च यथा गंगा साखाणां भारतो कथा ५० इदं भारत महाख्यानंमः पठे श्रणुयानरः अश्वमेधाअधिकं पुनयं लभते नात्र शंशयः ५१ इदं श्रुत्वा यथा शक्त्या ब्राह्मणान् भोजयेन्नरः हित्वासोय समूहं च हांते विष्णु पदं व्रजेत। ५२ जुहा मोहि जस सुनो किनो सुनौं अनजस सुनो जरूर अैसो श्रीनृप को वचन सुन्यो निकट पद दुरद ५३ ॥ फिर चाकर जस होन तै ठाकुर को अधिकार। दरसत यह विख्यात है पै का कहुं पुकार ५४ ॥ ताते कोनो चंद्रोका मेरो मति अनुमान। भक्त संग प्रह भक्ति को देहु क्यानिध दान ॥ पंगुल गुगो रोज जुत बनिक क्षुधातुर जोय। मय जुत बाल त्तोय अचप सुनत अनाथ सदोष। ५६ कवित—ज्ञान यो विराग दोउ पायन विना हुं पंगुः भक्ति सारे तेहों गुंग हो निहोरोगे। त्रियाता परोगो कर्म वानिज्ञ वनिक हं में भूपो दसधा को के ३ जन्म को विचारोगे। काल भोत बाल बुंच आतमा है अवला यो पंच तत्व यैजन विनाडु नैक धारोगे। येक अंग के अनायः ताके विकै सुनै हाथः या पंत में अनाथ नायः क्यों विसारोगे ५७ छप्पैः पंगु कुबज्या संमति गुंग जम जम लाछु न गावत रोगी माधवदास वनितर लोचन ध्यावतः क्षुधित सुदामा विप्रः भीत जुत व्रज को भा।

Subject—भगवान को वंदन को कथा। २ और ३ पृष्ठ नहीं हैं।

४—ग्रन्थ को महिमा वर्णन (अष्टादश रूपी मंत्र) प्रथम आदि पर्व सूची। जन्मेजय से लेकर भरत नल और पांडु आदि को जन्म कथा, लाक्षागृह,

हिडंब, बकासुर वध, द्रौपदी स्वयंवर अर्ध राज्य पाना, बनवास, अर्जुन सुभद्रा विवाह खांडवदाह, धनुष, सभा का वर्णन इसमें २२७ अध्याय और ८,८४७ श्लोक अनुष्टुप हैं।

५—सभा सूची—नारद द्वारा सभा का वर्णन राजसूय यज्ञ का वर्णन, चारों दिशाओं की दिग्विजय, भीम द्वारा शिशुपाल वध, सभा में दुर्योधन का अपमान होना, जुवा खेलना चीर हरण, ससुर से वर पाना, पुनः जुवा खेलना, और वनवास वर्णन, इसमें ७८ अध्याय हैं २५११ श्लोक हैं, इसी प्रकार वन पर्व की सूची उसके अध्याय और श्लोक संख्या का वर्णन।

६—विराट पर्व की सूची, अध्याय और श्लोक—संख्या वर्णन, उद्योग पर्व की सूची अध्याय और श्लोक-संख्या वर्णन, भीष्म पर्व की सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वर्णन, द्रोण पर्वत की सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन।

७—कर्ण पर्व की सूची । अध्याय और श्लोक—संख्या वर्णन । शल्य पर्व की सूची और अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन।

८—सौप्तिक पर्व अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, स्त्री पर्व सूची अध्याय और श्लोक—संख्या—वर्णन, शांति अनुशासन पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या का वर्णन, ९ अश्वमेध पर्व सूची अध्याय और श्लोकसंख्यावर्णन, व्यासाश्रम सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, १०—मूसल पर्व सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन महाप्रस्थान, पर्व सूची अध्याय, और श्लोक संख्या वर्णन, स्वर्गारोहण सूची अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन। ११—सम्पूर्ण महाभारत अर्थात् अष्टादश पर्वों के अध्याय और श्लोक संख्या वर्णन, अश्व सेना की संख्या सवार सहित वर्णन, १२—अष्टादश अक्षौहिणी सेना की संख्या और विवरण वर्णन। १३—१५—संस्कृत छंदों की नामावली, वर्णाष्टक छंद वर्णन, गुरु लघु का वर्णन, सम विषम छंद वर्णन, वृत्य छंद भेद वर्णन, वर्ण मात्रा और मात्रावर्ण का वर्णन। गणों का विचार और छंदों का वर्णन। १६—२२—साहित्य के छः अंग (छंदवृत्ति, २ नायिका, ३ अलंकार ४ रसशब्द, ५ पंचमारी तिमथा। ६ कन्यादि त्रिया) देवाणी, संस्कृत, भाषा, विभक्ति, समास, वचन, लिंग वर्णन, काल वर्णन, काव्यदोष वर्णन, रस वर्णन, भाव, विभाव, अनुभाव, आलंबन, उद्दीपन आदि वर्णन, शृंगार रस की प्रधानता वर्णन, संयोग वियोग वर्णन, हाव भाव वर्णन। २३—अनुप्रास वर्णन, नायिका भेद वर्णन, स्वकीया, परकीया, सामान्या इनके अन्य भेद वर्णन। दर्शन, स्वप्न, चित्र, साक्षात, दर्शन, वर्णन, प्रकृति, राजसी, तामसी, तालसुर और ऋतुओं का वर्णन। २४ आठ नगन से करैउ छंद, आठ जगन से जोवक, आठ रगन से बोधक, २५ दोहा, चौपाई,

वैताल, त्रिया छंद छंद वर्णन, नपुंसक छंद सोरठा, पद्धरी, पदाकुलक नरायनी, कवित्त, घनाक्षरी आदि का वर्णन, २६—अलंकार सूची उपमा सूची, अष्ट लुप्तोपमा वर्णन । वर्णधर्म उदाहरण, श्वेत उदाहरण, २७—कृष्ण उदाहरण, रक्त उदाहरण, पीत उदाहरण । २८—आकृति वर्णन, २९—गुण आकृति उदाहरण ३०—गुण उदाहरण, अनन्य अलंकार, अनुज्ञा अलंकार वर्णन, भाव सावल्य वर्णन । ३१—सूक्ष्म अलंकार, व्याज स्तुति अलंकार, व्याज निन्दा, अलंकार, एकावलि अलंकार, मुद्रिका अलंकार वर्णन, प्रहर्षण अलंकार, प्रश्नोत्तर अलंकार, विभावना ॥ अलंकार । ३३—अनुगुना अलंकार, एकान्हेकी अलंकार वर्णन, ३४—काकोक्ति अलंकार वर्णन, शापकालंकार, ३६—दोषादोष वर्णन । ३७—समास लक्षण, गौटिकी उदाहरण, वैदर्भी लक्षण उदाहरण ३८—लाट लक्षण उदाहरण लाटानुप्रास, छेकानुप्रास रस सूची—शत्रु मित्र स्थायी स्वामी वर्णन । ३९—४१—शांतिक अंग वर्णन । ४३ तक शब्द से शृंगार, रूप से शृंगार रस से शृंगार, गंध से शृंगार वर्णन, महाभारत आरंभ—४४ से ब्रह्म, अत्रि, चन्द्र, बुध, पुरुरवा, नहुष, ययाति, पुरु, रौद्राश्व, कन्वेयु, अनावृष्टि, मतिनार, तंसु, इलिन, दुष्यंत, भरत, भूमन्यु, सुहोत्र, हस्ति, अजमिढ, शक्ष, संवर्ण, कुरु, जन्मेजय, धृतराष्ट्र, देवापी, शांतनु, देवव्रत, विचित्रवीर्य, चित्रांगद पांडु, वाल्हिक, विदुर पांडव, कौरव आदि की उत्पत्ति क्रम से कथा सहित वर्णन । ४५ तक द्रोण की उत्पत्ति से लेकर भीष्म तक आने की कथा वर्णन ।

४६—से ४९ कौरव पांडव का विद्यार्थ्य कथा का वर्णन, कर्ण का वन में मुनि से वर और श्राप पाने का वर्णन और विद्या में निपुण होने पर परीक्षा के दिन तक की कथा का वर्णन, अर्जुन के यश से सुयोधन को ईर्षा द्वेष होना, और कर्ण का अर्जुन से लड़ने को तैयार होना परन्तु दासीपुत्र होने से अधिकारहीन बताना और सुयोधन द्वारा अंग देश का राजा बनाने का वर्णन ।

५०—धृष्ट द्युम्न और कृष्ण की उत्पत्ति कथा वर्णन । द्रुपद और कौरवों का युद्ध वर्णन, भीम को सुयोधन द्वारा विष दिए जाने का वर्णन ।

५१—सुयोधन का पिता से राज्य अधिकार पाने के लिये कहना और पांडवों का वारनावत उत्सव देखने के बहाने भेजने का षड्यंत्र रचना । लाक्षागृह का निर्माण होना और विदुर द्वारा युधिष्ठिर का सचेत होना वर्णन ।

५२—भीलनी और उसके पांचो पुत्रों का लाक्षागृह में जलने का वर्णन ।

५३—हिडिंब वध और हिडिंबा के साथ भीम का ब्याह होना वर्णन ।

५४—पांडवों का द्रुपद देश जाना, द्रौपदी स्वयंवर वर्णन, द्रौपदी का रूप वर्णन, अर्जुन द्वारा मीन बेधना वर्णन ।

५५—सहदेव का माता से वस्तु प्राप्ति वर्णन। और माता का पाँचों भाइयों के भोग की आज्ञा, युधिष्ठिर का यह जान धर्म संकट में पड़ना, व्यास द्वारा, पूर्व श्राप का वर्णन और द्रौपदी का विवाह वर्णन, सुयोधन का पांडवों को जीवित देख शोक बढ़ना वर्णन, और पांडवों के नाश करने का उपाय सोचना।

५६—विदुर का धृतराष्ट्र से पांडवों को आधा राज्य देने के लिये कहना, पांडवों को बुलाकर आधा राज्य देना, और कुछ दिन युधिष्ठिर का राज्य करना, नारद का आना और युधिष्ठिर को आशीर्वाद देना।

५७—द्रौपदी के भोगने का नियम वर्णन, एक ब्राह्मण का संकट में पड़ना, अर्जुन का शस्त्र लेने जाने के कारण नियम भंग होना।

५८—अर्जुन का वनगमन, उलोपी के साथ विवाह वर्णन, उससे पुत्र बभ्रु-वाहन का होना, गिरि पर यदुवंशियों का मिलना।

५९—और अर्जुन का सुभद्रा हरण—वर्णन बलभद्र का क्रोध करना, और कौरवों का नाश करने का विचार करना, तथा श्रीकृष्ण द्वारा समझाना और दहेज देने के लिये कहना।

६०—खांडव में जमुना तट विहार श्रीकृष्ण और अर्जुन का वर्णन, अग्नि का ब्राह्मण भेष में आना और खांडव भस्म करने के लिये अपना अन्न होने का वर्णन, खांडव वन दहन और मय दैत्य की रक्षा, मय द्वारा सभा भवन निर्माण करना भीम को गदा देना और देवदत्त को शंख देने का वर्णन युधिष्ठिर से सब समाचार कहना, द्रौपदी से पांच पुत्रों की उत्पत्ति वर्णन सुभद्रा से अभिमन्यु का होना।

६१—सभामंडप की शोभा और विचित्रता वर्णन, अर्जुन आदि का दिग्विजय करके आना, श्रीकृष्ण को निमंत्रित करना, और जरासिंध का विजय न कर सकने का वर्णन, श्रीकृष्ण और भीम का जरासिंध से युद्ध करने जाना और भीम द्वारा जरासिंध वध तथा

६२—उसके पुत्र सहदेव को श्रीकृष्ण द्वारा राज्य देने का वर्णन, यज्ञकार्य भार सौंपने का वर्णन सुयोधन को भंडार कार्य सौंपने का वर्णन। यज्ञ समाप्त होने पर श्रीकृष्ण की पूजा पर शिशुपाल का क्रोध और कृष्ण द्वारा वध होना।

६३—सुयोधन का मय दानव की सभा देखने आने और भ्रम होने का वर्णन, नकुल और द्रौपदी के हंसने से अपमान समझ क्रोधित होने का वर्णन, सुयोधन का माता पिता से पांडवों के वैभव का वर्णन।

६४—पांडवों के समान वैभव पाने को सुयोधन का इच्छा का वर्णन, धृतराष्ट्र द्वारा विरोध न करने के लिये समझाना और सुयोधन का अपने पिता से अपना अपमान वर्णन तथा मरने के लिये उद्यत होना।

६५—शकुनि का जुआ द्वारा संपतिहरण करने का विचार वर्णन, युधिष्ठिर को जुआ के लिए बुलाना और शकुनि द्वारा संपत्ति, चारों भाई और स्वयं युधिष्ठिर तथा द्रौपदी को जीतना वर्णन।

६६—सभा में द्रौपदी को सुयोधन का बुलाना, द्रौपदी के सभासदों से प्रश्न, दुःशासन का द्रौपदी को सभा में लाना और द्रौपदी का पुनः सभासदों से प्रश्न करना और उत्तर न पाना सुयोधन का जंघा दिखाना।

६७— दुःशासन का चीर खींचना द्रौपदी का ईश्वर स्तुति करना।

६८—गांधारी का धृतराष्ट्र को समझाना भीम को प्रतिज्ञा का वर्णन, धृतराष्ट्र का द्रौपदी को वर देना द्रौपदी का पांचों पतियों सहित दासता छूटने और सशस्त्र घर जाने का वरदान मांगना, धृतराष्ट्र का वरदान देना, सुयोधन का पिता से पुनः जुआ खेलने की आज्ञा मांगना उसमें जो हारे वह १२ वर्ष बनवास भोगे और एक मास अज्ञात वास।

६९—अज्ञातवास में यदि अवधि से पहले जान लिये गये तो फिर १२ वर्ष बनवास होने का वर्णन, जुआ खेलना और फिर युधिष्ठिर का हारना तथा द्रौपदी सहित बनवास वर्णन। कुंती का मिलाप वर्णन, विदुर का सांत्वना देना वर्णन।

७०—सूर्य द्वारा यान पाने का वर्णन, बनवास की दशा वर्णन, श्री कृष्ण का वन में पांडवों के पास जाना, सुयोधन का दुर्वासा को पांडवों के पास श्राप देने के लिये भेजना, ८८ हजार ऋषियों सहित दुर्वासा ने युधिष्ठिर से भोजन मांगा। तब बड़े संकट में श्री कृष्ण को स्मरण किया और उनके आने से सब ऋषि गण तृप्त हो आशीर्वाद देकर चले गये।

७२—युधिष्ठिर को शस्त्रों के लिये तप करना वर्णन। कठिन तपस्या से इन्द्रादि देव प्रसन्न हुए और अनेक प्रकार के अस्त्र देने का वर्णन शिव का पांडवों को परीक्षा लेने का वर्णन, अर्जुन का शिव से युद्ध और पशुपति अस्त्र लाभ करने का वर्णन, अर्जुन का इन्द्रलोक में अस्त्र और संगीत सीखने का वर्णन।

७३—इन्द्र की आज्ञा से सिंधु में बालेसुर रिपु से युद्ध कर अर्जुन का आना और मुकुट तथा अस्त्र शस्त्रादि का प्राप्त करना वर्णन।

७४—उर्वसी को अर्जुन के इन्द्र द्वारा भेजना वर्णन।

७५—सुयोधन का सेना सहित पांडवों के मारने के लिये आना। इन्द्र का चित्रकेतु के अर्जुन की सहायता के लिए भेजना चित्रकेतु का कर्ण से युद्ध और सुयोधन का बांधना।

७६—भीष्मादि द्वारा उसको छुड़ा देना सुयोधन का यज्ञ करना।

७७—पांचों पांडवों का यज्ञ में आना द्रौपदी-हरण वर्णन, जयद्रथ की तपस्या वर्णन शिव का अर्जुन छोड़ चारों भाइयों के जीतने का वर देना। वन में ब्राह्मण की पुकार सुनना और हिरन के पीछे पांडवों का दूर निकल जाना तथा प्यास से व्याकुल हो।

७८—एक एक का पानी लेने के लिये जाना अंत में युधिष्ठिर का जाना और चारों भाइयों के मृतक देख संताप। यक्ष का धर्मराज से प्रश्न करना, युधिष्ठिर का यक्ष के यथार्थ उत्तर देना, यक्ष का प्रसन्न होकर एक भाई के जिलाने के लिये कहना धर्मराज ने नकुल के जिलाने के लिये कहा अंत में सबों का जीवित होना वर्णन। यक्ष से अज्ञातवास निर्विघ्न समाप्त होने का वरदान वर्णन।

७९—शमी में अपने वस्त्र बांध कर राजा विराट के यहां पांडवों का द्रौपदी सहित अज्ञातवास करना भीम का जीमूत मल्ल से कुश्ती होना, और जीतना। कीचक का सैरंध्री (द्रौपदी) पर आसक्त होना।

८०—कीचक की रति याचना, और द्रौपदी द्वारा अपमानित होने पर भी कीचक का अपनी बहिन से सैरंध्री को उसके पास भेजने के कहना। रानी का द्रौपदी के भाई से मदिरा लाने के बहाने से भेजना

८१—द्रौपदी का उसकी नीच वृत्ति देखकर भागना तथा कीचक का लात मारना वर्णन, द्रौपदी का सब समाचार भीम से कहना। भीम ने द्रौपदी से उसे नृत्यगृह में भेजने का वर्णन वहीं भीम द्वारा कीचक का वध करना।

८४—सुयोधन के दूतों का आना, परन्तु पता न पाने पर निराश हो लौट जाना

८५-८७—सुयोधन का राजा विराट से युद्ध वर्णन।

८८—उत्तरा का अर्जुन के दसों नामों का पूछना और अर्जुन का उत्तर।

८९—अर्जुन का उत्तरा से अज्ञात की कथा का वर्णन करना।

९०—पांडवों का पराक्रम वर्णन, और विराट को उनके

९१—अज्ञात वास का पता लग जाना, राजा विराट द्वारा

९२—पांडवों का सत्कार वर्णन, राजा विराट का उत्तरा का विवाह करने का प्रस्ताव करना।

९३ से ९७-अभिमन्यु का उत्तरा के साथ विवाह। राजा विराट और कृष्ण की सम्मति से धृतराष्ट्र के पास अपना राज्य पाने के लिये पुरोहित का भेजना। भीष्म, द्रोण, विदुर, आदि का सुयोधन की समझाना, सुयोधन का हठ वर्णन।

९८-१०० अर्जुन और सुयोधन का भी कृष्ण को निमंत्रण देने के लिए जाना कृष्ण का प्रथम अर्जुन से मिलना वर्णन, अंत में श्री कृष्ण ने एक तरफ सेना और दूसरी तरफ स्वयं निःशस्त्र रह कहा जिसको जो इच्छा हो ले लीजिए। सुयोधन और अर्जुन ने श्रीकृष्ण को अपना सहायक बनाया।

१०१—१०२ पांडवों का पांच ग्राम मांगना, पर दुर्योधन का न देना, भीष्म द्रोण आदि का समझाना और विदुर का धृतराष्ट्र से राजनीति वर्णन।

१०३—धृतराष्ट्र और गांधारी का सुयोधन को समझाना,

१०४—श्रीकृष्ण का संधि के लिए जाना।

१०५—द्रौपदी का श्रीकृष्ण को सुयोधन के नीच कर्मों का स्मरण दिलाते हुए बदला लेने के लिए आग्रह करना।

१०६-१०९—श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र की सभा में जाकर सुयोधन और धृतराष्ट्र को बार बार समझाना; अंत में निराश होकर लौट आना। श्रीकृष्ण का कर्ण को पांडव पक्ष लेने के लिये कहना। कर्ण का क्षमा मांगना।

११०—कुंती का कर्ण से पांडव पक्ष लेने का प्रस्ताव वर्णन।

१११—कौरव पांडवों का विरोध वर्णन। कुरुक्षेत्र में दोनों ओर की ग्यारह अक्षोहिणी कौरव दल और सात अक्षोहिणी पांडव दल का इकट्ठा होना वर्णन।

११२—महारथी लक्षण, पांडवों के महारथियों के नाम वर्णन।

११३—सुयोधन के महारथियों के नाम वर्णन।

११४—अर्जुन का बीच में रथ खड़ा करना और सबों को अपना बंधु बांधव ही समझ कर धनुष बाण फेंक देना।

११५—श्रीकृष्ण का जीव शरीर का संबंध और आध्यात्मिक ज्ञानोपदेश वर्णन। पुनः भीम के विष, लाक्षागृह दाहन, द्रौपदी के अपमान, आदि का स्मरण करा के अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार करना। युधिष्ठिर का भीष्म और द्रोण के पास जाना और आशीर्वाद पाना, और भीष्म तथा द्रोण के वध का उपाय जानना।

११६—दो दिन घोर युद्ध होने पर तीसरे दिन का वर्णन

११७—श्रीकृष्ण का भीष्म द्वारा परिघ शस्त्र पकड़ा देना।

११९—इसके पश्चात ५ दिन तक घोर युद्ध होने का वर्णन जिसमें अर्जुन और विराट के तीन पुत्रों का मरना तथा एक एक दिवस में दस दस हजार

सवारों का भीष्म द्वारा मारा जाना वर्णन। दसवें दिन शिखंडी को आगे कर अर्जुन ने युद्ध किया जिसमें भीष्म ने धनुष बाण छोड़ दिया और अर्जुन के बाणों से विद्ध हो सरशय्या पर पड़ना।

१२०—भीष्म का पानी मांगना और अर्जुन द्वारा बाण के आघात से पृथ्वी से जल निकालना वर्णन।

१२१—द्रोण का सेनापति होना वर्णन।

१२२—दो दिन द्रोण का घोर युद्ध वर्णन।

१२३—तीसरे दिन चक्र व्यूह की रचना का वर्णन

१२४—अभिमन्यु की प्रशंसा वर्णन

१२५—दुःशासन का मूर्छित होना, लक्ष्मण को मारना

१२६—अभिमन्यु वध और युधिष्ठिर का विलाप।

१२७—अर्जुन का संसप्तकों को जीत कर आना।

१२८ और अभिमन्यु के मरने का वृत्तान्त वर्णन।

१२९—अर्जुन का जयद्रथ वध करने का प्रण वर्णन सुयोधन का द्रोण से जयद्रथ की रक्षा करने को कहना।

१३०-१३५—अर्जुन का युद्ध प्रारंभ, द्रोण की गुरु परिक्रमा और प्रणाम कर अर्जुन का आगे बढ़ना

१३६-१३८—अर्जुन के बाणों से सेना का संहार वर्णन,

१३९-१४०—कृतवर्मा, दुःशासन आदि से युद्ध वर्णन,

१४१-१४२—सात्यकी भीम युद्ध वर्णन, भूरिश्रवा,

१४३—दुर्योधन दुःशासन, कृपाचार्य आदि का भागना वर्णन।

१४४—सुयोधन का द्रोण से कटु वचन कहकर जयद्रथ की रक्षा करने के लिये कहना।

१४५-१५०—द्रोण का युद्ध पराक्रम वर्णन

१५१—कर्ण का युद्ध वर्णन।

१५२—द्रुपद और विराट का वध वर्णन,

१५३—धृष्टद्युम्न का द्रोण से युद्ध वर्णन।

१५४—धृष्टकेतु और सहदेव का द्रोण से युद्ध वर्णन।

१५६—श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से अश्वत्थामा के मरने का समाचार द्रोण से कहने के लिए आग्रह करना, युधिष्ठिर का झूठ बोलने पर राजी न होना। सबों के कहने पर युधिष्ठिर द्वारा अश्वत्थामा का मरण सुन द्रोण ने शस्त्र छोड़ दिए और द्रुपद ने उनका शिर छेद दिया। द्रोण मरण वर्णन।

१५७—अश्वत्थामा का युद्ध वर्णन, कर्ण का सेनापतित्व वर्णन।

१५८—१५९—भीम और कर्ण का युद्ध वर्णन।

१६०—भीम द्वारा दुःशासन का वध वर्णन।

१६१—१६८—कर्ण अर्जुन युद्ध वर्णन।

१६९—कर्ण का रथ पृथ्वी में धंस जाने का वर्णन।

१७०—१७१—कर्णवध वर्णन।

१७२—शल्य का सेनापतित्व वर्णन।

१७४—शल्य वध।

१७५—१८०—अश्वत्थामा युद्ध, सुयोधन युद्ध और वध।

१८१—अश्वत्थामा को पकड़ लेना।

१८२—धृतराष्ट्र और गांधारी का युद्ध स्थल में आना, धृतराष्ट्र, गांधारी का युधिष्ठिर अर्जुन आदि के संवाद तथा गांधारी का विलाप वर्णन।

१८३—धृतराष्ट्र का भीम से मिलने की इच्छा करना और श्रीकृष्ण का भीम से न मिला कर धातु मूर्ति से मिलाना जिसे धृतराष्ट्र का चूर चूर कर देना।

१८४—युधिष्ठिर का सब का अंत्येष्ट कर्म करना। युधिष्ठिर का विलाप वर्णन।

१८५—युधिष्ठिर को भीष्म के पास लाना। भीष्म का युधिष्ठिर को ज्ञानोपदेश वर्णन, भीष्म का मरण वर्णन।

१८६—भीष्म का दाह कर्म करने का वर्णन, युधिष्ठिर का राज्य छत्र धारण करना। परीक्षित का जन्म वर्णन।

१८७—युधिष्ठिर के सुराज्य की कथा वर्णन।

१८८—१९०—कुंती, द्रौपदी, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर का अपनी पूर्व इच्छा का वर्णन करना।

१९१—१९५—युधिष्ठिर का सुराज्य वर्णन, परीक्षित को राज्य देना, पांचों भाइयों और

१९६—द्रौपदी का हिमालय जाना वर्णन, चारों भाइयों सहित द्रौपदी का हिमालय में गलना और युधिष्ठिर का स्वर्ग जाना वर्णन।

१९७—ग्रन्थ की प्रशंसा वर्णन।

No. 424. Sākhī Dasa Pātaśāha kī by Swarūpa Dāsa of Punjāb? Substance—Country-made paper. Leaves—508. Size—13¼ × 10½ inches. Lines per page—36. Extent—15,000 Anushṭup Ślokas. Appearance—Good. Written in Prose and Verse. Character—Gurumukhī. Date of manuscript—Samvat 1897 or A. D. 1890. Place of deposit—Sardāra Budhela Siṁha, Mohalla Gudadī Bāzār (Baharāich).

Beginning—ॐ सत गुरुप्रसाद ॥

दोहरा ॥ श्री सत गुरु प्रकास ॥ साखी जनम जग पावत नित नीत । महिमा प्रकास तिह नाम पर लिख पोथी कीनो मीत । १ नमो नमो परमातमा सतगुरु कृपा निधान । भय दंडन मंडन भगत बंदन जगत महान । पथ राज जनक प्रसंग धनिक जीवन नरक सों मुकाय सुरग पठवत भये । पर वचन भगत कीजा प्रथम चरन कलुहरि भगत पायो पार होइ । सोरठा ॥ कोटि छिन वै जीव मुकवाये नर को जनक । यर वचन भगत तेहि कीन तिहि ते हरि गुरु वपुधरा ॥

End—दोहरा-हे गुरु कृपानिधान दास सरूप विनती करै । गुरु चरनन मन ठानि हृदय नाम हर हर हरै ॥ ७१ ॥ अब दाजै मोहि दान जेहि विधि बलि बामन कह्यो । हृदै बसो भगवान जेहि विधि बलि द्वारे रह्यो ॥ ७२ साखी सम्पूरन भई दसो पातसाह की पढ़न्ते सुनन्ते भाव मुकति लहन्त । श्री वाह गुरु मुख करो उचार । होइ दयाल कर लहु उधार । पोथी संपूरन संवत १८९७ बिकमी बसोख सुदी १ ॥ इति ॥

Subject—साखी पहले मुहल्ले की गुरु नानक का वर्नन पृ० १ से १७९ तक । साखी दूसरे महल्ले की गुरु अंगद का वर्नन पृ० १८० से २०४ तक । साखी तीसरे महल्ले का अमरदास गुरु का वर्नन पृ० २०५—२५६ । साखी चोथे मुहल्ले का गुरु राम का वर्नन पृ० २५७—२६५ तक । साखी पांचवें मोहल्ले की गुरु अर्जुन का वर्नन पृ० २६६-३०१ । साखी छटवें मुहल्ले की गुरु हर गोविन्द का वर्नन पृ० ३०२—३४४ तक । साखी सातवें महल्ले की गुरु हरराम का वर्नन ३४५—३७८ । साखी गुरु हरिकृष्ण जी की आठवें महल्ले की ३७९—३८८ तक । नवां मुहल्ला गुरु तेग बहादुर का वर्नन पृष्ठ ३८९—४२७ तक । दसवां मुहल्ला गुरु गोविन्द सिंह जी का वर्नन पृ० ४२८ से ५०८ तक । इति ।

No. 425. Sāmudrika by Tejanātha of Sapahan Ganwañ. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Lines per page—12. Extent—234 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old.

Character—Nagari. Date of manuscript—Samvat 1892 or A. D. 1835. Place of deposit—Ṭhakura Mahesa Simha Village Kohali Bechai Simha kā Purawā, Post Office Kesarganja, District Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ सामुद्रिक लिष्यते ॥ शेरसाह बहु दिलि सुलताना अनूप नाहि अनुमान्‌। शमड़ी देश विप्रजन ठाऊ। तेजनाथ अस लपहा गाऊं। मल नहि आपन अस्तु करई। लोग हंसे निज पुन्ये। हरई। गुन निर्गुन सब लोग कि भाषा। जस अवजस अपने हो राषा। दोहा भलमानुस पै जानिहि जस गुआह हमार। साधु सकल गोविंद कह दुर्गन गुन अपकार॥ तेजनाथ सामुद्रिक जानि। पाछा कथे ते कहा बषानो। जेहि जाने सबके सुष होई। सबे जानि माने सब कोई। लक्षण सब जहजस देष। नर नारी केरा करब विसेष। आनत कहि न ग्रंथ कर भेऊ। कहे तब जाने सब कोऊ। कहबे मंह भल बुझन हारा। अश मानुस बिरले संसारा। दो० केउ केउ बात विचक्षण केउ के ग्रंथ पहिचान। माल गोल रहत अन एक ग्रंथै रहै निदान॥

End—जेहि कामिनि नुष देत सुवेषा। विषम मोट पुनि बिरले लेषा। सतत दुःख अह सुख न ताके। लट्टु समान स्वेत दंत मुख वाके। लंब थोठ पुनि होह रोवारा। कामिनि निदचे याहि भतारा। पाकरि अहनि कोट सम लेषा। चिकन रोम रहित शुभ देषा। पातर अरुन शुभग मनिआरा। से कामनि स्वामो सुखसारा। नक थंगार लागि हो याके कैापिनि कामनि कहिहु हु ताके। नाक अगार जिस लघु होई। तेहि पर दासी कहि हो सोई। चिपटी नाक बिलवा तुष देषो। सुवा ठोंट सुभदायक दोषो। ना अति छोटी ना बड़ि नासा। सम सुंदरि साभ्रो सुषवासा। पीत नयन तृपकल विचारी। शील रहित विधवा हो नारी। करंजो आपि विचिचंचल नारी। निश्चय कुलटा कहेउ विचारी। जाके हंसत गंडा हो बाला। सो स्वामी घर बसै न वाला। वृद्ध चांद सम भोंहें जाके। सम नासा अंगुरी लघु ताके। कंत प्रीति तेहि ते अधिकाई। दिन दिन देह सपथ अधिकई। इति सामुद्रिक सम्पूर्णम्‌ लिषतं प्रताप सिंह संवत १८९२ ॥ शुभमस्तु ॥

Subject—सामुद्रिक में हस्त रेषा. पद रेषा नेत्र नाक सिर कान. बाल आदि के द्वारा शुभ अशुभ फल वर्णन किये गये हैं।

No. 426. Kōta Kavitta by Thākura. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—6 × 5 inches. Lines per page—13. Extent—40 Anushṭup Ślokas. Appear-

ance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—Samvat 1842 or A. D. 1785. Place of deposit—Ṭhākura Naunihāla Simha Kāntha, Post Office Kāṇtha, District Unāo.

Beginning—कूट कवित्त लिख्यते—तथा

हरि हित नामै ये वचन सुनि मोहन के द्रुम रस भूषन संवारि चलु गेहरो। सुर यरि गुरु वर वाहन के परि परि तापन पिता कों रिपु दाहत है डेहरो ॥ कैसे मन कैसे लगी घनहू या मानतु प्यारो वेगिहो पिचारो को करो नानाम्र नेहरो। दई संवारो होतो वाम को कुमारो पाजकूं सो छवि वान वैवर देहरो ॥ १ चलौ चलु प्यारो तोहि वातें बोलै खगपति पतिय कई वियोग मौन तेरे मैं जु पाई री। दादुर के रिपु रिपु ताको पति वाको तात वाको परि कारने निहारिहैं पराई री। रवि सुत रिपु ताके पतिय गोपाल लाल ताके सुत सुताको घरनि होति माई री ॥ कब कोहौं माई मोहि टोजिये विराट सुत तरो बुध इंदु रिपु जोहत कन्हाई री ॥ २ सवैया—पंचु तनै हित नेकु रह्यो तबतें तुम्हरे हिम बैठी कुमारो। वाहनो ओन पितु हन जाम गई निशि मौन फिरो घनिसारो। तो पंचु भूप दिसान दई पग पार्थिप को जननो करि हारो। जोहत पैन सरोगढ़ नैन चलौ मखवा रिपु आहु विहारो ॥ ३

End—पास पहार जो सिंह मरै कबहूं न मरै घर के वह खाये। कानन धूप दिखाये गरै कबहूं न गलै जल मांहि सडाये। निसि पाये से चन्द मनोज लगै कबहूं न मनोज लगै दिन पाये। मानुष सुधारस पीये मरै कबहूं न मरै विष के वह खाये ॥ मोन मरै जल के परसे कबहूं न मरै वह पावक लाये। फूल जु फूले सिना महं कंज कबो नहि फूले तड़ाग लगाये। बोलत सद में कोकिल है कबहूं नहि बोले वसंत के पाये। दीप पकास करै दिन में कबहूं न प्रकास करै निसि पाये। ८ दादुर ओपम बोलै कहूं नहि बोलत हैं वरषा रितु पाये। भानुहि राहु गहै कबहूं नहि घेरत है निज पवसर पाये। भोजन खायें ते जोव मरै कबहूं न मरै बिन पचहि खाये। ठाकुर चंद पताल उवै कबहूं न उवै जु पकासहि ठाये ॥ ९

इति

Subject—इस पुस्तक में दृष्टि कूटक ९ कवित्त और सवैये हैं। जिनमें उलटी बात कही हुई जान पड़ती है जैसे—मोन मरै जल के परसे कबहूं न मरै वह पावक लाये।

No. 427. Dalela Prakāśa by Kavithāna Rāma of Naisawāra Daundia Kheda. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—12 × 6 inches. Lines per page—60.

Extent—1050 Anushṭup Ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of Composition—Samvat 1848 or A. D. 1790. Paṇḍita Bipina Bihārī Miśra, Brajarāja Pustakālaya, Village Gandhaulī, Post Office Sidhaulī, District Sitapur.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ छप्पै ॥ जै लंबोदर शंभु सुवन अंभोरुह लोचन। चर्चित चंदन चन्द्र भाल वंदन रुचि रोचन ॥ मुष मंडाल मंडाल मंड मंडित श्रुति कुंडल। वृन्दारक वर वृन्द चरन वंदत आखंडल। वर अभय गदा अंकुश धरन विघन हरन मंगल करन। कवि थान नवावत सिद्धिवर एक दंत जै तुव सरन ॥ सरस्वती सुर मंडल मढ़त है आसन कवल अंग अंवर धवल मुष चंद से। धवल रंग नवल चढ़त है। ऐसी मातु भारती की भारती करत थान जाको जस विधि जैसे पंडित पढ़त है। ताको दया दीठि लाष पावर निरापर के मुष ते मधुर मंजु आपर कढ़त है। गुर देव छप्पै ॥ श्री गणेश गुरु देव ब्रह्म गुरु देव विधाता। रमा रमन गुरु देव देव गुरु शंकर दाता। भुक्ति मुक्ति गुण ज्ञान दान नर अंतरजामी। भव बंधन ते मुक्ति करन गुरु त्रिभुवन स्वामी। चरणारविंद रजशीश धरि नयन भरि जोरे करन ॥ कवि थान नमित धरि भूमि सिर जै जै जै गुरु तुव सरन ॥

End—कमन बद्ध दोहा—
धार भार धर सार कर हर
हर रर बर चार। पार तार जर
मार सर वर घर हर तर डार

अथ चौकी बद्ध।
न मान रावत दुधन को लै हाथ
कठिन कृपान न पाकतमके
पंथ चरत दुदलेल भूप सुजान।
न जासु गुन गन थाह पावत कहत
कवि यह थान न थार जाको
मिलत शोभा शील सुष सनमानि॥
इति श्री कवि थान राम विरचिते
दलेल प्रकासे चित्र काव्य वर्णनो
नाम ११ दसा उल्लासः

Subject—श्रृंगार रस नायक नायका भेद व चित्र काव्य वर्णन।

No. 428. Samara Sāra Bhāsha, by Tirtha Rāja. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—$8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—560 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of Composition—Samvat 1807 or A. D. 1750. Date of manuscript—Samvat 1880 or A. D. 1823. Place of deposit—Paṇḍita Durgā Prasādajū Jigania, Pargana Hajoorpore, Police Station Hajoorpur, District Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ समर सार विजयते लिख्यते॥ श्री गणपति पद कमल विनु तू छिन छिन पद छीन। रंगो स्याम रंग में फिरत मोमन चुंबक दीन।

छप्पय॥ जय जय जय गुग रूप भूप पद कुल दल मंडन। भक्त हेतु तन धरत दोह दानव बल खंडन। करि करि विनय अनन्त सन्त चिन्तित उर धरि धरि। ताको सब ब्रज नाम रूप पोवत दृग भरि भरि। कहि राज कैान ब्रजराज बिन भय बाधा संकट हरन। जय दीन बंधु गिरधर धरन राधा वर बन्दौं चरन॥ पैरत निशि दिन विषय नद मो मन मीनन होय। प्रेम डोर बंशी बिना ब्यों पावै ब्रजनाथ। मो करनी करि मौन मन तुम हर नीरद रूप। बरसत सब पर एक रस गिरधर सर वर कूप।

End—अथ आशीर्वाद॥ जैालैां काम तन को उदारता बखानै कवि जैा लैां मन मागर कीरति सुहाति है। जा लैां पंचवरत्र है विधाता के अखिल घन जैा लैां कमला को कला कलि में अघाति है॥ जा लैां वसुधा में धाम धाम दान राम रहे जा लैां बाम बाम धन मत्र के निभाति है। तैा लैां श्री अचल सिंह धरणी में राज करै धरम धुरंधर पुरंदर की भाति है। ५२

इति श्री महाराज कुमार सिंहासवा तीरथराज कृते समर विजये काव्य पुरुष दर्शन नाम सप्तम प्रकाशः समाप्तः शुभमस्तु॥

सोरठा॥ श्री अरजुन नृप हेतु समर विजय भाषा लिखा।
बैला ग्राम निकेत पढ़ै बीर सुख सो लहै॥

दोहा॥ सर युग नग विधु मित शके सावन बदि शनि रोज।
रामदीन भाषा लिख्यौ सो नीके नृप तोज॥

Subject—प्रार्थना—राजवंश वर्णन पृ० १—३ तक। नगाजय वर्णन पृ० ४—७ तक। पंच स्वर वर्णन पृष्ट ८ से १० तक। भूबल साधना वर्णन पृ० ११—

१६ । अष्टदल चक्र, प्रश्न विचार, जुवा विचार वर्णन पृ० १७—१९ । कोट चक्र वर्णन पृ० २० —२३ तक । सर्वतो भद्र चक्र, सूर्य चन्द्र कला, जल छाया पुरुष विचार, आशीर्वाद पृ० २४ से २८ तक । इति ।

No. 429(a). Gomata Sāra kī Samak Jnāna Chandrikā Nāma Tīkā, by Todara Mala of Sawāyī Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—1,904. Size—13½ × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—53,312 Anushṭup ślokas. Character—Nāgarī. Date of Composition—1818 Samvat or A.D. 1761. Date of manuscript—1826 Samvat or A.D. 1769. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Barā), Bārābankī (Oudh).

Beginning—श्री जिनायनमः । अथ श्री गोमठसार को समग्ज्ञान चंद्रिका नाम भाषा टीका लिष्यते ॥ दोहा ॥

वंदो ज्ञानानंद कर । नेमिचंद गुनकंद ॥ माधव वंदित विमल पद । पुण्य पयोनिधिनंद ॥ १ ॥ दोष-दहन गुनगहन घन । अरि करि हरि अरहंत । स्वात्मभूति रमनीर मन । जग नायक जयवंत ॥ २ ॥ सिद्ध शुद्ध साधित सहज । सुरस सुधारस धार ॥ समय सार शिव सर्वगत । नमत होउ सुषकार ॥ ३ ॥ जिन वानी विविध विध । वरनत विश्व प्रमान ॥ स्यात पद मुद्रित अहित हर । करहु सकल कल्यान ॥ ४ ॥ मैन मैान गन जैन जन । ग्यान ध्यान धन लीन ॥ मैन मान बिनि दान घन । दान हीन तन छीन ॥ ५ ॥ यह चित्रालंकार युक्त है । इंह विधि मंगल करन तें । सब विधि मंगल होत ॥ होत उदंगल दूरि सब । तम ज्यों भानु उद्योत ॥ ६ ॥ अथ मंगलाचरण कर श्री मद्गोमट्टसार द्वितीयनाम पंच संग्रह ग्रंथ ताकी देश भाषा मय टीका करने का उद्यम करो हौं । सो यह ग्रंथ समुद्र तें घना है । जो सातिशय बुद्धिबल संयुक्त जीवनी करि भी जाका अवगाहन होना दुर्लभ है । बोर मैं मन्द बुद्धि हैं ॥ × × × ×

End—सवैया—अरहंत सिद्ध सूरि उपाध्याय साधु सर्व अर्थ के प्रकासी मंगलीक उपकारी है । तिन को स्वरूप जानि राग तें भई है भक्ति तातें काम कीन मावस्तुत को उचारो है ॥ धन्य धन्य तुम तुम ही तें सब काज भयो कर जोर बारंबार वंदना हमारी है । मंगल कल्यान सुष ऐसो अब चाहत हौं होउ मेरो ऐसो दशा जैसो तुम धारी है ॥ ६२ ॥ इति श्री मद्द् लब्धिसार वा क्षपणासार सहित गोमठ सार शास्त्र को समग्ज्ञान चन्द्रिका नामा भाषा टीका संपूर्ण ॥ १ ॥ बसु संवत फुनि एक धर ग्रुन रस वरस प्रमान । तिथि पड़िवा मंद वार दिन लिख्यो ग्रंथ हित मान ॥ भग्न पृष्टोकटी ग्रीवा बधो दृष्टि रधो मुखं । कष्टे न

लिख्यते शास्त्रं यत्नेन परिचाल येत् ॥ २ ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिख्यतं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ लिपितं सीताराम जतो श्वेताम्बराम्नाय स्वर तरगच्छे लिपो मध्ये लपचेउ ॥ लिखायतं लाला मौजीराम जो अग्रवाल वंशे वास्तव्य नवाबगंजे श्री जिनालय मध्ये स्थापितं ॥ शुभं भवतु........ कल्याणमस्तु.................श्रीरस्तु.................................

Subject—

(१) पृ० १ से पृ० ७१ तक; पीठिका।

मंगलचरण। गोमटसार पुस्तक की टीका करने और हिंदी में ग्रंथ लिखने का कारण। शास्त्र अभ्यास का आदेश। सम्यक्ज्ञान की परिभाषा। शास्त्र अध्ययन के लाभ। तीन प्रकार के अनुयोगियों की सम्मतियां। शास्त्र के आदि में पंच परमेष्ठी की वंदना का विधान। संस्कृत टीकाकार का मुनीन्द्रादि की वंदना करना। जैनियों के अध्ययन योग्य ग्रंथों का कथन। शास्त्र अभ्यास के अंग। शास्त्र अध्ययन का समय मिलने की दुर्लभता का वर्णन। सूक्ष्म अनुक्रमणिका। संदृष्टि के अर्थ वा कहे हुए अर्थों की संदृष्टि जानने की इस भाषा टीका में जुदा ही संदृष्टि अधिकार वर्णन। मूल शास्त्र व टीका में जहाँ संदृष्टि वा अर्थ लिखा था वहाँ ही उन अर्थों का निरूपण कर के न लिखने का टीकाकार का संदृष्टि। अधिकार में वर्णन करने का कारण। टीका के परिचय के सम्बन्ध में कुछ उल्लेख। अधिकारों की सूची। लौकिक तथा अलौकिक गणित के सम्बन्ध में कुछ कथन। दोनों गणितों से सम्बन्धित परिभाषाओं का वर्णन तथा उनकी क्रियाएं और इसी के अंतर्गत शून्य परिकर्माष्टक का वर्णन।

(बीस प्ररूपण)

(२) जीव कांड (१) प्रथम अधिकार पृ० ७२ से पृ० १७७ तक— गुणस्थानाधिकार। गुणस्थान का नाम, और सामान्य लक्षण, सम्यक् चरित्र, अपेक्षा और दृष्टिकादि संभव से भावनिका निरूपण, मिथ्या दृष्टि आदि गुणस्थान निन्दा वर्णन, मिथ्या दृष्टि में पंच मिथ्यात्वादिका, सासादन में काल व स्वरूप का वर्णन, मिश्र में उसके स्वरूपादिक का, देश संयत विषय उसके स्वरूप का वर्णन, प्रमत्त का कथन में पन्द्रह व अस्सी वा साढ़े सैंतीस हज़ार प्रमाद भेदनिका और वहाँ प्रसंग पाइ संख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट, समुद्दिष्ट कर, गूढ़ यंत्रों से अक्ष संचार विधान का कथन। अक्ष संचार विधान, अप्रमत्त के कथन में स्वस्थान और सातिशय दो भेद कह सातिशय अप्रमत्त के अधःकरण का कथन, उसके स्वरूप काल, परिणाम, समय, समय सम्बन्धी परिणाम व एक एक समय में अनुकृष्टिविधान, वहाँ संभवतः—चार आवश्यक इत्यादि का विशेष वर्णन।

श्रेणी व्यवहार रूप गणित का कथन। उसमें सर्व धन, उत्तर धन, मुख भूमि, चय, गच्छ, इत्यादि संज्ञाओं का स्वरूप और प्रमाण लाने के लिये सूत्रों का वर्णन, अपूर्व करण का कथन में उसके स्वरूपादि का कथन, सूक्ष्म सांपराय का कथन में कर्म प्रकृतियों के अनुभाग अपेक्षा अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धका, गुण-हानि, नाना, गुणहानिनिका, पूर्व स्पर्द्धक, अपूर्वस्पर्द्धक, बादर कृष्टि, सूक्ष्म कृष्टिका वर्णन है। उपशांत कषाय, क्षीणकषाय कथन में उनके दृष्टान्त पूर्वक, स्वरूपका, संयोगी जिनको कथन में नव केवल लब्धि, घातिकका, अयोगी विषयक अलेश्यपना आदि का कथन। बारह गुण स्थाननिविषै गुण श्रेणी निर्जरा का कथन है। वहां द्रव्य का अपकर्षण करके उपरतनि स्थिति, गुण श्रेणी, आयाम और उदयावली विषय जैसे विवर्गित हुए है उनका व गुण श्रेणी आयाम के प्रमाण का निरूपण है। अंतर्मुहूर्त व भेदों का वर्णन। सिद्धिनिका वर्णन।

(२) दूसरा अधिकार पृ० १७८ से २१६ पृ० तक, जीव समास अधिकार।

जीव समास का अर्थ। होने का विधान, चौदह, गुण तीस वा सत्तावन वा चार सौ छः जीव समासों का वर्णन। चार प्रकार के जीव समास, उसीके जीव समास वर्णन करते वहां स्थान भेद में एक एक आदि उगणीस पर्यंत जीव स्थाननिका वा इनही के पर्याप्तादि भेद कर स्थाननिका वा अट्ठानवे वाच्यादिवै छः जीव समासनिका कथन, योनि भेद विषै शंखा वर्तादि तीन प्रकार योनिका, और सम्मूर्छनादि-जन्म भेद पूर्वक नव प्रकार योनि के स्वरूप वा स्वामित्व का, और चौरासी लाख योनियों का वर्णन। चार गतियों के अन्तर्गत सम्मूर्छनादि जन्म वा पुरुषादि वेद संभवै है उनका निरूपण। अवगाहना भेद में सूक्ष्म निगोद, अपर्याप्त आदि जीवों की जघन्य उत्कृष्ट शरीर की अवगाहना का विशेष वर्णन है। उसमें एकेन्द्रियादिक की उत्कृष्ट अवगाहना कहने का प्रसंग पाकर गोलक्षेत्र, शंख क्षेत्र, आयत चतुरस्र क्षेत्र का क्षेत्रफल करने का, और अवगाहनाविषय प्रदेशों की वृद्धि जानने के अर्थ अनंतभागादि चतुः स्थान पतित वृद्धि का अर इस प्रसंगमें दृष्टांत पूर्वक षट्स्थान पतित आदि वृद्धि हानिका, सर्व अवगाहना भेद जानने के अर्थ मत्स्य रचना का वर्णन है। फिर कुल भेद विषयक एक सौ साढ़े सत्तानवे लाख कोडिकुलानि का वर्णन है।

(३) तीसरा अधिकार, पृ० २१७ से पृ० २५८ तक—पर्याप्त नामा अधिकार।

मान का वर्णन, मान के दो भेद, लौकिक, अलौकिक, द्रव्य मान के दो भेदों में संख्या, संख्या मान में संख्यात असंख्यात अनंत के इकोस भेदों का वर्णन है, संख्या के विशेष रूप और चौदह धाराओं का कथन है, उनमें द्विरूप वर्गधारा, द्विरूप धन धारा, द्विरूप घनाघन धारा के स्थान में जेपा जाते है उनका विशेष

वर्णन है। पल्टोवादाल, इकदी का प्रमाण, वर्गशाला का अर्द्धच्छेदनिकास्व- रूप, अविभाग प्रतिच्छेद का स्वरूप वा उक्तं च गाथा योंकरि अर्द्धछेदादि के प्रमाण होने का नियम, अग्निकाय जीवों का प्रमाण निकालने का विधान। दूसरा उपमामान के पल्यआदि आठ भेसे वर्णन है। व्यवहार पल्य के रोमों की संख्या लाने को पर मारादुले लगाय अंगुलपर्यंत अनुक्रम का तीन, प्रकार के अंगुल का, जिस जिस अंगुलिका से जिसका प्रमाण वर्णन करते हैं उसका कथन, गोलगर्त के क्षेत्रफल लाने का विधान, उद्धार पल्य से द्वीप समुद्रों की संख्या लाना, अद्धा पल्य, से आयु आदि वर्णन करने का विधान। सागर की सार्थक संज्ञा जानने को लवण समुद्र का क्षेत्रफल इत्यादि का वर्णन है। सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगत श्रेणी, जगत प्रतर जगत घन का प्रमाण लाने का विरलन आदि विधान का वर्णन है। पल्यादिक की वर्गशलाका। अर्द्ध पीछे पर्याप्ति प्ररूपणा। पर्याप्त, अपर्याप्त के लक्षण और छः पर्याप्ति के नाम, स्वरूप का, आरंभ संपूर्ण होने के काल का, स्वामित्व का वर्णन है। बहुरि लब्धि अपर्याप्त का लक्षण, उसके निरंतर क्षुद्रभवनिके प्रमाणादिक का वर्णन, तहाँ प्रमाण फल इच्छा रूप त्रैराशिक गणित का कथन, सयोगी जिनके अपर्याप्त पना संभव नेका, लब्धि अपर्याप्त निर्वृत्ति अपर्याप्त पर्याप्त के संभव से गुण स्थानिका वर्णन है।

(४) चौथा अधिकार, पृ० २५९ से पृ० २६१ तक—प्राणाधिकार।

प्राणों का लक्षण, भेद, कारण स्वामित्व का वर्णन है।

(५) पांचवां अधिकार, पृ० २६२ से पृ० २६३ तक—संज्ञाधिकार।

चार संज्ञाओं का स्वरूप, भेद, कारण और स्वामित्व का वर्णन है।

(६) छठां अधिकार पृ० २६४ से पृ० २८६ तक—मार्गणाधिकार। मार्गणा का, निरुक्ति का, चौदह भेदों का, सांतर मार्ग लाके, अंतरालका, प्रसंग पा तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार नाना जीव, एकजीव अपेक्षा गुणस्थान विषयक, और गुण स्थान की अपेक्षा लिये मार्गणानि विषै कालका, अंतर का कथन करके छठा गति मार्गणाधिकार है। उसमें गति के लक्षण का, भेदों का और चार भेदों के निरुक्ति लिये लक्षणों का, पांच प्रकार तिर्यंच, चार प्रकार के मनुष्यों का, सिद्धों का वर्णन है। फिर सामान्य नारकी, अर्द्धमुरे सात पृथ्वियों के नारकी, पांच प्रकार के तिर्यंचा चार प्रकार के मनुष्य, व्यंतर ज्योतिषी भवनवासी सौधर्मादिक के देव, सामान्य देवराशि इन जीवों की संख्या का वर्णन है। कटपय पुरस्थ वर्णं इत्यादि सूत्रों द्वारा ककारादि अक्षर रूप अंक या बिंदी की संख्या का वर्णन है।

(७) सातवा इन्द्रिय मार्गणा अधिकार, पृ० २८७ से पृ० २९४ तक—

इन्द्रियों की निरुक्ति लिये लक्षण का, लब्धि उपयोग रूप भावेन्द्रियका बाह्य अभ्यंतर भेद लिये निर्वृत्ति उपकरण रूप द्रव्येन्द्रिय का, इन्द्रियों के स्वामी का उनके विषय भूतक्षेत्र का, सूर्य के चार क्षेत्रादि का, इन्द्रियों के आकार का अवगाहना का, और अतीन्द्रिय जीवानि का वर्णन है। एकेन्द्रियादि का उदाहरण रूप नाम नाम बाहु कर उनकी सामान्य संख्या का वर्णन। विशेषपनै सामान्य एकेन्द्री, सूक्ष्म बादर एकेको, सामान्यत्रस, बे इन्द्रिय, ते इन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचा इन्द्रिय इन जीवों का प्रमाण और इनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों का प्रमाण वर्णन है।

८—आठवां काय मार्गणा अधिकार—पृ० २९४ से ३१९ पृ० तक।

काय के लक्षण और भेदों का वर्णन, पंच स्थावरों के नाम, काय, कायिक जीवरूप भेद, और बादर सूक्ष्म पना का लक्षणादि, शरीर की अवगाहना, वनस्पति के साधारण प्रत्येक भेदों का प्रत्येक अप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित भेदों का, उनकी अवगाहना की, एक स्कंध में उनके शरीर का प्रमाण। योनीभूत, जीवों में जीव उपजने का वहां अप्रतिष्ठित प्रतिष्ठित जानने को उनके लक्षण, साधारण वनस्पति निगोदरूप, उसमें जीवों के उपजने, पर्याप्ति धरने, मरने के विधान का निगोद शरीर की उत्कृष्ट स्थिति का, स्कंध, अंडर पुलवी, आवास देह, जीव, इनके लक्षण और प्रमाण, नित्य निगोदादि के स्वरूप, त्रिस जीवन और उनके क्षेत्र का वर्णन। वनस्पतीवत् औरों के शरीर में अप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित पने का, स्थावर त्रस जीवों के आकार का, काय सहित काय रहित जीवों का वर्णन, अग्नि, पृथ्वी, अप, वात, प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित प्रत्येक साधारण वनस्पति जीवों को और उनमें सूक्ष्म बादर जीवों, उनमें भी पर्याप्त अपर्याप्त जीवों की संख्या का वर्णन। पृथ्वी इत्यादि जीवों की उत्कृष्ट आयु का वर्णन, त्रस जीवों का, उनमें पर्याप्त अपर्याप्त जीवों की संख्या का वर्णन है। बादर अग्नि कायिक आदि की संख्या का विशेष निर्णय करने के लिये उनके अर्द्ध छेदादि का वर्णन। और दिवण छेदे सव हिद" इत्यादिक करण सूत्र का वर्णन।

९—योग मार्गणा अधिकार—पृ० ३२० से पृ० ३६५ तक—

योग के सामान्य लक्षण, सत्यादि चार चार प्रकार मन, वचन और योग का वर्णन, सत्य वचन का विशेष ज्ञान को दस प्रकार के सत्य का वर्णन, अनुभय वचन काके विशेष जानने के लिये आमंत्रण आदि भाषनिका, सत्यादिक भेद होने के कारण, केवली मन वचन योग संभव द्रव्य मन का आकारादि, काय योग के सात भेदों का वर्णन, औदारिकादिकों के निरुक्ति पूर्वक लक्षण, मिश्र

योग होने का विधान; आहारक शरीर होने का विशेषत्व, कार्माण योग के काल का वर्णन। युगवत् योगों की प्रवृत्ति होने का विधान, योग रहित आत्मा का वर्णन। पंच शरीरों कर्मनो कर्म भेद, पंच शरीरों की वर्गणा वा समय प्रबद्ध विषै अवगाहनिका, प्रमाण वा क्रम से सूक्ष्मपना वा उनकी अवगाहना का वर्णन। विस्रसे पंचम स्वरूप, उनके परिमाणुओं के प्रमाण, कर्मनो कर्म का उत्कृष्ट संचय होने का काल और सामिग्री। औदारिक आदि पंच शरीरों का द्रव्य का वर्णन समय समय प्रबद्ध मात्र कह कर उनकी उत्कृष्ट स्थिति उसमें संभवती गुणहानि, नाना गुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि, दोगुण हानि का स्वरूप प्रमाण कह कर कारण सूत्रादिक से उसमें चयादिक का प्रमाण लाकर समय समय पर संबंधी निषेकों का प्रमाण कह एक समय में कितने परमाणु उदयरूप हो कर निर्जरैं केते सत्ताविषै अवशेष रहैं उनके जानने को अंक से दृष्टि की अपेक्षा, लिए त्रिकोण यंत्र का कथन। वैक्रियादिकों का उत्कृष्ट संचय किस के कैसे होय इसका वर्णन। योग मार्गणा में जीवों की संख्या वर्णन; वैक्रियकशक्ति का संयुक्त बादर पर्याप्त अग्नि कायिक, वात कायिक, पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यों के प्रमाण का, भोग भूमिया आदि जीवों को पृथक विक्रिया, औरों के अपृथ विक्रिया हो उसका कथन, त्रियोगी, द्वियोगी, एक योगी जीवों का प्रमाण कहि त्रियोगों में आठ प्रकार मन वचन योगी और काय योगी जीवों का। द्वियोगियों में वचन काय योगियों का प्रमाण वर्णन। सत्य मनोयोग। दिवा सामान्य मन वचन काय योगों के काल का वर्णन। काय योगियों में सात प्रकार काय योगिनो का जुदा जुदा प्रमाण, औदारिक और रिकमिश्र कार्माण के जीवों की संख्या उत्कृष्ट पनै युगवत् होने की अपेक्षा का वचन।

(१०) वेदमार्गणा अधिकार—पृ० ३६६ से पृ० ३७० तक।

भाव द्रव्य भेद होने का विधान, उनके लक्षण, भावद्रव्य भेद समान व असमान होवे उसका वर्णन, वेदानिका कारण, दिवा कर ब्रह्मचर्य अंगीकार करने का वर्णन। तीनों वेदों की निरुक्ति के लिये लक्षण का अवेदी जीवों का वर्णन। संख्या के वर्णन में देवराशि कह उसमें स्त्री पुरुष वेदोनिका; तिर्यंचनि में द्रव्य स्त्री आदि का प्रमाण कह समस्त पुरुष स्त्री नपुंसक वेदोनिका प्रमाण वर्णन। सैनी पंचेन्द्रिय गर्भजा नपुंसक वेदी इत्यादि ग्यारह स्थानों में जीवों का प्रमाण वर्णन।

(११) ग्यारहवां कषायमार्गणा अधिकार—पृ० ३७१ से पृ० ३८८ तक।

कषायनिका निरुक्ती लिये लक्षण का, सम्यक्त्वादिक घात के रूप दूसरे अर्थ में अनुतानु बंधी आदि का निरुक्ति लिये लक्षण का वर्णन। कषायनि के एक, चार, सोलह असंख्यात लोकमात्र भेद कह क्रोधादिक की उत्कृष्टादि

चार प्रकार की शक्तियों का दृष्टान्त और फल की मुख्यता का वर्णन। पर्याप्त धरने के पहले समय कषाय होने का नियम है या नहीं इसका वर्णन। अकषाय जीवों का वर्णन, क्रोधादिक की शक्ति की अपेक्षा चार, लेश्या अपेक्षा चौदह आयुबंध अपेक्षा बोस भेद हैं। उनका और सब कषाय स्थानों पर प्रमाण कह उन भेदों में जितने जितने संभवें उनका वर्णन। जीवों की संख्या के वर्णन में, तिर्यंच, मनुष्य गति में जुदा जुदा क्रोधी आदि जीवों का प्रमाण। उन गतों में क्रोधादिक का काल वर्णन है।

(१२) बारहवां, ज्ञानमार्गणा अधिकार। पृ० ३८९ से पृ० १४०९ तक।

ज्ञान का निरुक्ति पूर्वक लक्षण कह कर, उसके पांच भेद और क्षयोपशम के स्वरूप का वर्णन। तीन मिथ्या ज्ञानियों का, मिश्र ज्ञानियों का, तीन कुज्ञानियों के परिणामों के उदाहरण मतिज्ञान तथा उसके नामांतर। इन्द्रिय मन तें उपजने का और उसमें अवग्रहादि होने का वर्णन, व्यंजन अर्थ के स्वरूप का, व्यंजन में नेत्र मन या ईहादिक न पाये जांय उसका वर्णन, पहिले दर्शन होइ पीछे अवग्रहादि होने के क्रम का, अवग्रहादिकों का स्वरूप अर्थ व्यंजन के विषय भूतबहु बहुविधि आदि बारह भेदों का, तहां अनिसृत्त विषे चारि प्रकारत्वतेक्ष प्रमाणगर्भित घना आदि का वर्णन। मतिज्ञान के एक, चार, चौवीस अट्ठाइस और इनसे बारह गुने भेदों का वर्णन है। बहुरि श्रुति ज्ञान का वर्णन, उसमें श्रुत ज्ञान का लक्षण, निरुक्ति आदि का अक्षररूप श्रुति ज्ञान के उदाहरण वा भेद वा प्रमाण का वर्णन। बहुरि भाव श्रुत ज्ञान अपेक्षा बीस भेदों का वर्णन। पहिल जघन्य रूप पर्याय ज्ञान का वर्णन विषं उसके स्वरूप का उसका आवरण जैसे उदय होवे उसका, यह जिसके होवे उसका दूसरा नाम लब्धि अक्षर है उसका वर्णन। अर्थापि समास ज्ञान का वर्णन, षट स्थान पतित वृद्धि का वर्णन। उसमें जघन्य ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण लाने को प्रक्षेपक आदि का विधान, एक बार, दोयबार, आदि संकल धन लाने का विधान। साधिक जघन्य जहां दूना होवे उसका विधान, पर्याय समास में अनंत भाग आदि वृद्धि होने का प्रमाण इत्यादि का विशेष वर्णन। अक्षर आदि अठारह भेदों का क्रम से दो वर्णन है। अर्थाक्षर के स्वरूप का, तीन प्रकार अक्षरों का, शास्त्रों के विषय भूत भावों के प्रमाण का, तीन प्रकार पदनिका, चौदह पूर्वांन वस्तु प्राभृतनामा अधिकारानि के प्रमाण का इत्यादि का वर्णन। बीस भेदों में अक्षर अनक्षर, श्रुत ज्ञान के अठारह दो भेदों का और पर्याय ज्ञान आदि को निर्वाक्ष लिये स्वरूप का वर्णन, द्रव्य श्रुत का वर्णन में द्वादशांग के पदनिको, प्रकीर्णक के अक्षरों की संख्यानि का, चौसठ मूल अक्षरों का आंकया का। अथवा एक सर्व अक्षरों का प्रमाण वा अक्षरों में प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भंगों

करि तिस प्रमाण लाने का विधान, सर्व श्रुत के अक्षरों में अंगों के पद और प्रकीर्णकनि के अक्षरों के प्रमाण लाने का विधान इत्यादि का वर्णन है। आचार रांग आदि ग्यारह अंग, दृष्टि वाद अंग के पांच भेद, तिनमें परिकर्म के पांच भेद, तहां सूत्र और प्रथमानुयोग का एक भेद, पूर्व गत के चौदह भेद, चूलिका के पांच भेद, इन सबों के जुदा जुदा पदों का प्रमाण और इन में जो जो व्याख्यान है उनको सूचनिका का कथन। तीर्थंकर की दिव्यध्वनि होने का वर्णन। वर्द्धमान स्वामी के समय दस दस जीव अंतकृत केवली और अनुत्तर गामी हुए उनका नाम, तीन सौ त्रेसठ कुवादिन के धारकवि में कई कुवादियों के नाम, सप्त भंग का विधान, अक्षरों के स्थान प्रयत्नादिक, बारह भाषा, आत्मा के जीवादि विशेषण इत्यादि अनेक कथन। सामयिक आदि चौदह प्रकीर्णकों का स्वरूप श्रुत ज्ञान की महिमा, अवधि ज्ञान का वर्णन, निरुक्ति पूर्वक स्वरूप कह कर उसके भव प्रत्यय, गुण प्रत्यय भेदों का, और यह भेद किस किस के हो कौन आत्म प्रदेशों से उपजै उसका, उसमें गुण प्रत्यय के छः भेदों का उनमें अनुगामी अननुगामी के तीन तीन भेदों का वर्णन, सामान्य पनें अवधि के देशा-वधिपरमावधि, सर्वावधि भेदों का, उनमें भव प्रत्यय, गुण प्रत्यय के संभवपने का, यह किस किस के होवें, प्रतिपाती, अप्रतिपाती, विशेषका, इनके भेदों का प्रमाण का वर्णन। जघन्य देशावधि का विषय, भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन कर द्रव्य क्षेत्र काल भाव अपेक्षा, द्वितीयादि उत्कृष्ट पर्यंत क्रम से भेद होने का विधान द्रव्यादिक के प्रमाण का और सब भेदों के प्रमाण का वर्णन। ध्रुव, हार वर्ग वर्गणा गुण कार इत्यादि का वर्णन, क्षेत्र काल अपेक्षा उस देशावधि के उगणीस कांडकनि का वर्णन है। बहुरि परमावधि के विषय भूत द्रव्य क्षेत्र-काल भाव अपेक्षा जघन्य से उत्कृष्ट पर्यंत क्रम से भेद होने का विधान, वहां द्रव्यादि का प्रमाण वा सर्व भेदों का प्रमाण। संकलित धन लाने और 'इच्छि-दरासिच्छेदं'। इत्यादि दो कारण सूत्रों का आदि अनेक वर्णन। सर्वावधि अभेद है। उसके विषय भूत द्रव्य क्षेत्र काल भाव का वर्णन, जघन्य देशावधि से सर्वावधि पर्यंत द्रव्य और भाव अपेक्षा भेदों की समानता का वर्णन। नरक में अवधिका और उसके विषय भूत क्षेत्र का वर्णन, मनुष्य तिर्यंच विषै जघन्य उत्कृष्ट अवधि होने का और देवों में भवनवासी, व्यंतर ज्योतिषी लोगों के अवधि गोचर क्षेत्र काल का सौधर्मादि द्विकनि विषै क्षेत्रादिका का, द्रव्य का भी वर्णन है। मनः पर्याय ज्ञान का वर्णन उसके स्वरूप दो भेद, ऋजुमति के तीन प्रकार, विपुल मति के छः प्रकार, मनः पर्यय जिनसे उपजतो है और जिनके होतो है उनका वर्णन। दो भेदों में विशेष है उसका जीव से चिंतया हुआ द्रव्यादिक को जाने उसका और ऋजु मति का विषय भूत द्रव्य का और मनः पर्यय

संबंधी व्यवहार का और विपुलमति के जघन्य से उत्कृष्ट क्षेत्र पर्यंत द्रव्य अपेक्षा भेद होने का विधान, भेदों का प्रमाण, जघन्य उत्कृष्ट काल भाव का वर्णन, केवल ज्ञान सर्वज्ञ है उसका वर्णन। यहां जीवों की संख्या के वर्णन में मति श्रुति मनः पर्यय केवल अवधि ज्ञानी का और चारों गति संबंधी विभंग ज्ञानोनि का और कुमति कुश्रुति ज्ञानोनिका प्रमाण वर्णन।

१३—तेरहवां अधिकार—संयम मार्गणा—पृ० ५०० से पृ० ५०४ तक

संयम मार्गणा का स्वरूप। संयम के भेदों का निमित्त। संयम के भेदों का स्व-रूप। परिहार विशुद्धिका विशेष, ग्यारह प्रतिमा अट्ठाईस विषय इत्यादि का वर्णन। फिर यहां जीवों की संख्या के वर्णन में सामयिक छेदोपस्थापन, परि-हार, विशुद्धि, सूक्ष्म सांपराय, यथा ख्यात संयम धारी, संयतासंयत और असंयत जीवों के प्रमाण का वर्णन है।

(१४)—चौदहवां अधिकार—दर्शन मार्गणा—पृ० ५०५ से पृ० ५०६ तक।

दर्शन मार्गणा का स्वरूप, दर्शन भेदों के स्वरूप का वर्णन, जीवों की संख्या का वर्णन। शक्ति चक्षुर्दर्शनी, व्यक्त चक्षुर्दर्शनी निका और अवधि केवल अचक्षुर्दर्शनी का प्रमाण वर्णन।

(१५) पन्द्रहवां अधिकार—लेश्या मार्गणा अधिकार—पृ० ५०७ से पृ० ५५५ तक।

द्रव्यभाव से दो प्रकार लेश्या का निरुक्ति लिये लक्षण और उससे बंध होने का वर्णन है, फिर सोलह अधिकारों के नाम हैं। निर्देशाधिकार में छै लेश्यानि के नाम। वर्णाधिकार में द्रव्य लेश्यानि का कारण का और लक्षण का, छहो द्रव्यलेश्यानि के वर्ण के दृष्टांत का, जिनके जो जो द्रव्य लेश्या मिले उनका व्याख्यान है। प्रमाणाधिकार में कषायन के उदय स्थाननि विषै संक्लेश विशुद्धि स्थाननि के प्रमाण का उनके संक्लेश विशुद्धि की हानि वृद्धि से अशुभ शुभ लेश्या होने के अनुक्रम का वर्णन। संक्रमणाधिकार विषयक स्वस्थान परस्थान संक-मण संक्लेश विशुद्धि का, वृद्धि हानि से जैसे संक्रमण होवे उसका, और संक्लेश विशुद्धि विषै जैसे लेश्या के स्थान होवें और तहां जैसे षट् स्थान पतित वृद्धि हानि संभवे उसका वर्णन। कर्माधिकार विषै छहो लेश्या वाले कार्य विषै जैसे प्रवर्त्तें उसके उदाहरण का वर्णन। लक्षणाधिकार विषै छहो लेश्या वाले निका लक्षण वर्णन है। गति अधिकार विषै लेश्यानि के छब्बीस अंश तिन विषै आठ मध्य अंश आयु बंधका कारण, आठ अपकर्ष कालों में हों उन अपकर्षनिका उदाहरण पूर्वक स्वरूप, यदि उनमें आयु न बंधे तो जहां बंधे उसका, सोपक्रमायुष्क निरुपक्रमायुष्क जीवों के अपकर्षणरूप काल का, आयुर्बंधन विधान व

गति आदि विशेष का वर्णन। अपकर्षण में आयु बंधने वाले जीवों का प्रमाण, लेश्यानि के अठारह अंश विषै मरण हुए जिस जिस स्थान में उपजै उसका वर्णन। बहुरि स्वामी अधिकार विषै भाव लेश्या की अपेक्षा सात नरकनि के नारकियों में मनुष्य तिर्यंच विषै, वहां भी एकेन्द्रिय विकल त्रय विषै असैनी पंचेन्द्री विषै लब्धि अपर्याप्तक तिर्यंच मनुष्य भवनत्रिक देवसासादन वालों में, पर्याप्त, अपर्याप्त भोग भूमि या विषै मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों में, पर्याप्त भवनत्रिक सौ धर्म द्विक आदि देवों में जो जो लेश्या मिले उनका वर्णन। उसमें असैनी के लेश्या निमित्त से गति में उपजने आदि का विशेष कथन। साधन अधिकार में द्रव्य लेश्या और भाव लेश्यानि के कारण। संख्याधिकार में द्रव्य क्षेत्र कालभाव मान कर कृष्णादि लेश्या वाले जीवों का प्रमाण वर्णन है। क्षेत्राधिकार में सामान्यपने स्वस्थान समुद्घात उपपाद अपेक्षा विशेष पने दो प्रकार स्वस्थान सात प्रकार समुद्घात, एक उपपाद इन दस स्थानों में संभव संस्थानियों की अपेक्षा कृष्णादिलेश्यानि का स्थान वर्णन अर्थात् क्षेत्र का वर्णन है। वहां प्रसंग वश विवक्षित लेश्या विषै संभव संस्थान, उनर जीवों के प्रमाण का केवल समुद्घात विषै दंड कपाटादिक को, लोक के क्षेत्रफल का वर्णन, स्पर्शाधिकार में पूर्वोक्त सामान्य विशेष पने द्वारा लेश्यानि का वर्णन। तीन काल संबंधी क्षेत्र का वर्णन, मेरु से सहस्रार पर्यंत सर्वत्र पवन के सद्भाव का वर्णन। जंबूद्वीप समान लवण समुद्र के खंड, लवण के सदृश अन्य समुद्र के खंड करने का विधान। जलचर रहित समुद्रों का मिलाया हुआ क्षेत्रफल के प्रमाण का, देवादिक के उपजने गमन करने का वर्णन। काल अधिकार में कृष्णादि लेश्या जितने काल रहै उसका वर्णन। वहां प्रसंग या एकेन्द्री विकलेन्द्री विषै उत्कृष्ट रहने के काल का वर्णन। भावाधिकार में छहों लेश्याओं में औदयिक भाव के सद्भाव का वर्णन। अल्प बहुत्व अधिकार में संख्या के अनुसार लेश्याओं में परस्पर अल्प बहुत्व का व्याख्यान है। इस प्रकार सोलह अधिकार कह कर लेश्या रहित जीवों का व्याख्यान है।

(१६) भव्य मार्गणा अधिकार—पृ० ५५६ से पृ० ५६७ तक।

भव्य अभव्य और भव्य अभव्य पने से रहित जीवों का स्वरूप। संख्या के कथन में भव्य और अभव्य जीवों का प्रमाण वर्णन। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भवभाव-रूप पंच परिवर्तननि के स्वरूप का, अथवा जिस क्रम से परिवर्तन होवे उसका वर्णन, परिवर्तनों के काल, अनादि से जैसे जैसे परिवर्तन हुए उनके प्रमाण का वर्णन है। उसमें गृहीतादि पुद्गलों के स्वरूप संदृष्टि वाला वर्णन। योग स्थानादिक का वर्णन।

(१७) सत्रहवां सम्यक्त्व मार्गणाधिकार—पृ० ५६८ से ६१६ तक

सम्यक का स्वरूप, सराग वीतराग के भेदों का वर्णन, षट् द्रव्य, नौ पदार्थ श्रद्धान रूप लक्षण। षट् द्रव्य का वर्णन में सात अधिकारों का कथन। उसमें नाम अधिकार में द्रव्य एक या दो भेदों का वर्णन, जीव अजीव के दो भेद। पुद्गल का निरुक्ति लिये लक्षण। पुद्गल परमाणु के आकार का वर्णन पूर्वक रूपी अरूपी अजीव द्रव्य का कथन, उपलक्षणानुवादाधिकार छहों द्रव्यनि के लक्षणों का वर्णन, उसमें गति आदि क्रिया जीव पुद्गल हैं। उसका कारण धर्मादिक है उसका दृष्टांत पूर्वक वर्णन। वर्तनाहेतुत्व काल के लक्षण का दृष्टांत पूर्वक वर्णन मुख्य काल के निश्चय होने का, काल के धर्मादिक के कारण पाने का वर्णन। समय आवली और व्यवहार काल के भेदों का वर्णन, उसमें प्रसंगवश प्रदेश के प्रमाण का, अंतर्मुहूर्त के भेदों का, व्यवहार काल जानने को निमित्त का वर्णन व्यवहार काल के अतीत अनागत वर्तमान भेदों के प्रमाण व्यवहार निश्चय काल का स्वरूप स्थिति अधिकार में सर्व अपने पर्यायनिका समुदाय रूप अवस्थान का वर्णन; क्षेत्राधिकार में जीवादिक जितना क्षेत्र रोकें उनका वर्णन। प्रसंगवश तीन प्रकार आधार व जीव के समुद्घातादि क्षेत्र का या संकोच विस्तार शक्ति का पुद्गलादिकों की अवगाहन शक्ति का वा लोक के स्वरूप का वर्णन। संख्याधिकार में जीव द्रव्यादिक और उनके प्रकाशों का वर्णन, द्रव्य क्षेत्र काल भाव मान का वर्णन है। फिर स्थान स्वरूपाधिकार विषें द्रव्यों का वा द्रव्य के प्रदेशों के चल अचल पने का वर्णन। अनुवर्गणादि ते ईस पुद्गल वर्गणों का वर्णन। उन वर्गणों में जितने जितने परमाणु मिलें उनके आहारादिक वर्गणा से जो जो कार्य निपजें उनका जघन्य, उत्कृष्ट प्रत्येकादि वर्गणा जहाँ मिले उसका वर्णन। पुद्गल के स्थूल आदि छै भेद—स्कंध, प्रदेश देश इन तीन भेदों का वर्णन है। फल अधिकार में धर्मादिक, का गति आदि साधन रूप उपकार, जीवों के परस्पर उपकार, पुद्गलों का कर्मादिक वा सुखादिक उपकार, प्रश्नोत्तर सहित उनका वर्णन। कार्मादिक के पुद्गल ही हैं। कर्मादिक जिस जिस वर्ग, से उपजें उनका वर्णन; स्निग्ध रूप के गुणों के अंशों से पुद्गल का संबंध। षट् द्रव्य का वर्णन, काल बिना, पंचास्तिकाय, नव पदार्थ जीव अजीव का षट् द्रव्यों में वर्णन। उपशम क्षपक श्रेणी वाले निरंतर अष्टसमयों में जितने जितने हैं। युगपत बोधिक बुद्धि आदि जीव जितने हों उनका वर्णन, सकल संयमियों के प्रमाण का वर्णन। सात नरक के नारकी भवनत्रिक सौधर्मादिकादिक देव, तिर्यंच मनुष्य यह जितने जितने मिथ्यादृष्टि आदि गुण स्थानों विषे पाये जावें उनका वर्णन, गुण स्थानानि विषें पुण्य जीव पाप जीवों का भेद वर्णन। फिर पुद्गलीक द्रव्य पुण्य पाप का वर्णन, आस्रवबंध संवर निर्जरा मोक्ष रूप पुद्गल का प्रमाण वर्णन। षट् द्रव्यादिक का स्वरूप कह कर उनके श्रद्धान

रूप सम्यक्त्व के भेदों का वर्णन, क्षायिक सम्यक्त्व के भेदों का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व होने के कारण के स्वरूप का वर्णन, उसको पाने से जितने भवों में मुक्ति होइ उसका वर्णन; उपशम, अनन्तानु का स्वरूप, कारण पंच लब्धि आदि सामिग्री का जिनके उपशम सम्यक्त्व होने उसका वर्णन, प्रसंगवश आयु बंध हुए पीछे सम्यक्त्व ग्रह होने न होने का वर्णन। सासादन मिश्र मिथ्या रुचि का वर्णन है जीवों की संख्या के वर्णन में क्षायिक उपशम, वेदक सम्यग्दृष्टि, सासादन, मिश्र जीवों का प्रमाण, नव पदार्थों का प्रमाण। वहां जीव और अजीव में पुद्गल धर्म, अधर्म आकाश, काल और पुण्य पाप रूप जीव और आस्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष इनके प्रमाण का निरूपण।

(१८) अठारहवां संज्ञा मार्गणा अधिकार—पृ० ६१७ से पृ० ६१८ तक।

संज्ञा का स्वरूप, संज्ञी, असंज्ञी जीवों के लक्षण का वर्णन, और यहां संख्या के वर्णन में संज्ञी, असंज्ञी जीवों के प्रमाण का वर्णन।

(१९) उन्नीसवां अहार मार्गणा अधिकार—पृ० ६१९ से पृ० ६२१ तक

अहार का स्वरूप और निरुक्ति और आहारक जिनके होवें उनका जहां प्रसंग है यहां सात समुद्घातनि के नाम व समुद्घात के स्वरूप का और आहारक, अनाहारक के काल का वर्णन। आहारक जीवों का प्रमाण वर्णन है यहां प्रसंग-वश प्रक्षेप योगोद्धृति मिश्रपिंड इत्यादि सूत्र करि मिश्र के व्यवहार का कथन।

(२०) बीसवां, उपयोग अधिकार में—पृ० ६२१ से ६२२ तक

उपयोग के लक्षण, साकार, अनाकार भेद, उपयोग है सो व्याप्ति अव्याप्ति असंभवी दोष रहित जीव का लक्षण है उसका वर्णन, केवल ज्ञान केवल दर्शन बिना साकार अनाकार उपयोगों का काल अंतरमुहूर्त मात्र है उसका वर्णन, जीवों की संख्या साकारोपयोग विषै ज्ञान मार्गणावत् और अनाकारोपयोग विषै दर्शना मार्गणावत् का वर्णन।

(२१) इक्कीसवां आलापाधिकार योग निरूपण अधिकार—पृ० ६२३ से ६३७ तक।

गति आदि मार्गणाभेदों में यथा संभव गुण स्थान और जीव समासों का वर्णन, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व विषै पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा गुण स्थानों का विशेष वर्णन। गुण स्थानों में संभव तेजो जो व समास पर्याप्ति प्राण संज्ञा चौदह मार्गणा के भेद उपयोग तिनका वर्णन। मार्गणा व उपयोग के स्वरूप का भी कुछ वर्णन, योग भव्य मार्गणानि के भेदनिका व सम्यक्त्व मार्गणा विषै प्रथम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का इत्यादि का विशेष वर्णन, गति आदि कई मार्गणानि विषै पर्याप्त अपर्याप्त अपेक्षा कथन।

(२२) बाईसवां अधिकार आलाप—पृ० ६३८ से ७५२ तक।

आलाप अधिकार में मंगलाचरण कर सामान्य पर्याप्त, अपर्याप्त कर तीन अलाप, अनवृति करण में पांच मार्गों की अपेक्षा पांच अलाप उनका गुण स्थान चौदह मार्गणा के भेदों में यथा संभव कथन है। उसमें गति मार्गणा विषं विशेष कथन है। गुण स्थान मार्गणास्थान में गुणस्थानादि बीस प्ररूपणा यथा संभव आलापति की अपेक्षा निरुपण करनी। वहां पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रियादि जीवों के संभव से पर्याप्ति प्राण जीव सामामादिक का कुछ वर्णन कर यथा योग्य सर्व प्ररूपणा जानने का उपदेश है। बहुरि उनके जानने का मंत्रों द्वारा कथन। पहिले मंत्रों विषयक जैसे अनुक्रम हैं वह समस्या है वा विशेष है सो कथन। एक एक रचना विषं बीस बीस प्ररूपण का कथन स्वरूप छह से चउदह मंत्रों की रचना है उसमें कोई रचना समान जान बहुत रचनाओं की एक रचना है। फिर मन पर्यय ज्ञानादिक में एक होवे अन्य न होवे उसका वर्णन। उपशम श्रेणी से उतर, मरण हुए उपजने का सिद्धान्ति विषयक संभवसो प्ररूपणानिका निक्षेपादिक प्ररूपणा जानने के उपदेश का वर्णन है। फिर आशीर्वाद। टीकाकार के वचन

"जीव काण्ड नामा महाधिकार"

संपूर्ण

(२) अजीव कांड नामा महाअधिकार (पृ० से पृ० तक)

(१) प्रथम अधिकार—पृ० ७५३ से ७८५ तक।

समुत्कीर्तन अधिकार में-मंगलाचरण, प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा का स्वरूप, जीव कर्म का संबंध, उनका अस्तित्व, दृष्टांत पूर्वक कर्म परमाणु का ग्रहण, बंध उदय, सत्वरूप कर्म परमाणु, का प्रमाण, ज्ञान वर्णादिक आठ मूल प्रकृतियों के नाम। घाती अघाती भेद उनके कार्य। क्रम समझने का वर्णन, दृष्टांत निरुक्ति लिये इनके स्वरूप का वर्णन, इनकी उत्तर प्रकृति का कथन, पंच निद्रा तीन दर्शन मोह होने के विधान, पंचशरीरों पंद्र भंगनिका विवक्षित संहनन वाले देव नरक गति में जहां उपजे उनका वर्णन, कर्म भूमि स्त्रियों के तीन संहनन आतातप, प्रकृति के स्वरूप स्वामित्व। मतिज्ञान, वर्णादि उत्तर प्रकृति के निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन। प्रसंगवश भव्य के केवल ज्ञान के सद्भाव विषं प्रश्नोत्तर। सात घात, सात उपघातु। अभेद विवक्षा जो प्रकृति गर्भित हो उसका वर्णन, बंध उदय सत्ता रूप जितनी प्रकृतियां हैं उनका वर्णन। घातिया में सर्वघाती देश घाती प्रकृतियों का वर्णन, सब प्रकृतियों में प्रशस्त अप्रशस्त विषं का वर्णन, प्रसंगवश संशय विपर्यय अनध्यवसाय को वर्णन। तीन प्रकार के श्रोताओं का कथन, प्रकृति के चार निक्षेप नामादि निक्षेप का स्वरूप कह नाम निक्षेप का भेद

तदाकार अतदाकार रूप दो प्रकार स्थापना निक्षेप का और आगम नो आगम रूप दो प्रकार द्रव्य निक्षेप का जो आगम के ज्ञायक तद्व्यति रिक्तरूप तीन प्रकार भूत, भावी वर्तमान रूप ज्ञायक शरीर के तीन भेदों का कथन च्युत च्यावित त्यक्त रूप भूत शरीर के तीन भेदों का त्यक्त के भक्त प्रतिज्ञा इंगिनी प्रायोपगमन रूप भेद भक्त प्रतिज्ञा उत्कृष्ट मध्य, जघन्य रूप तीन प्रकार तद्व्यति रिक्त नोआगम द्रव्यकर्म नोकर्म भेदों का फिर भाव निक्षेप के आगम नोआगम भेदों का वर्णन। मूल प्रकृतिनि विषै इन कहि उत्तर प्रकृति विषै वर्णन है। और नो आगम-भाव कर समुच्चय रूप वर्णन है।

(२) दूसरा अधिकार—बंध उदय सत्त्वयुक्तस्तव नामा अधिकार—पृ० ७८१ से ९६८ तक

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्तवनादिक का लक्षण वर्णन बहुरि। बंध व्याख्यान विषै बंध के प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश रूप भेदों का और तिन विषै उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट जघन्य अजघन्य पने का, इन विषै सादि अनादि ध्रुव अध्रुव संभवने का वर्णन। प्रकृति बंध का कथन विषय गुण स्थाननि विषै प्रकृति बंध के नियम का, तहां भी तीर्थंकर प्रकृति बंधन के विशेष का, और गुण स्थानों विषै व्युच्छित्ति बंध अबंध प्रकृतियों का, जहां भी व्युच्छित्ति के स्वरूप दिखावने कौं द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा का गति आदि मार्गणा के भेदों के विषै सामान्य पनै संभव से गुणस्थान, अयोग्युच्छित्ति बंध अबंध प्रकृतियों के विशेष का। मूल उत्तर प्रकृतिनि विषै संभवते सादितैं, आदि देकर बंध का, वहां अध्रुव प्रकृतियों में सप्रतिपक्ष निःप्रतिपक्ष प्रकृतिनिका, निरंतर बंध होने के काल का वर्णन। स्थिति बंध के वर्णन में मूल उत्तर प्रकृतियों के उत्कृष्ट स्थिति बंधका और उत्कृष्ट स्थिति बंध संज्ञक पंचेंद्रियकैं ही होय उसका और जिस परिणाम में वा जिस जीव के जिस प्रकृति का उत्कृष्ट स्थिति बंध होय उसका, वहां प्रसंग पा उत्कृष्ट ईषत् मध्यम संक्लेश परिणामों के स्वरूप दिखाने कौ अनु-क्रम्य आदि विधान का और मूल उत्तर प्रकृतियों के जघन्य स्थिति बंध के प्रमाण का जघन्य स्थिति बंध जिसके होय उसका वर्णन। एकेन्द्री बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री असंज्ञी संज्ञी पंचेन्द्री जीवों के मोहादिक की उत्कृष्ट जघन्य स्थिति के प्रमाण, प्रसंग पाइनिन के अबाधा के काल भेद कंडकनि के प्रमाण, भेद प्रमाण, गुणित कांडक प्रमाण की उत्कृष्ट स्थिति विषै अपरी जघन्य स्थिति कर प्रमाण होने का वर्णन है। बहुरि एकेंद्रियादि जीवों के स्थिति भेदों को स्थापन करि तहां चौदह जीव समासनि विषै जघन्य उत्कृष्ट स्थिति बंध और अबाधा और भेदों के प्रमाण का और तिनके जानने का विधान वर्णन है। वहां प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध जिनके होइ उसका, और जघन्य आदि स्थिति बंध विषयक सादि नैं आदि देकर

संभवपन को और विशुद्ध संक्लेश परिणामों से जैसे जघन्य उत्कृष्ट स्थिति बंध होय
उसका, अबाधा के लक्षण, मोहादिक की अबाधा के काल का वर्णन, आयु की
अबाधा के विशेष का तहां प्रसंग पाकर देव नारकी भोग भूमियां कर्म भूमियों के
आयु बंध होने के समय का, उदीर्णा अपेक्षा, अबाधा काल के प्रमाण का प्रसंग
पाकर अचला वली, उदया वलि उपरितन स्थिति विषय कर्म 'परमाणु' खिरने का
उदीर्णा के स्वरूप का, आयु वा अन्य कर्मनि के निषेकनि के स्वरूप का अंक
संदृष्टि निषेकनि पूर्वक विषें द्रव्य प्रमाण का तहां गुण हानि आदि का वर्णन है।
बहुरि अनुभाग बंध का व्याख्यान विषें प्रकृतियों का अनुभाग जैसे संक्लेश विशुद्धि
परिणाम निकरि बंधै है उसका और जिस प्रकृति का जाके तीव्र वा जघन्य अनुभाग
बंधै है उसका वहां प्रसंग पाकर अपरिवर्तन मान, परिवर्त मानमध्य परिणामनि के
स्वरूपादि का और उत्कृष्टादि अनुभाग बंध विषें सादिनें आदि देकर भेदों के
संभवपने का वर्णन बहुरि घातियानि विषें लतादारु अस्थि शैल भाग रूप अनुभाग
का तहां देश घाति वा स्पर्द्धकनिका मिथ्यात्व विषें विशेष है उसका वर्णन, जिन
प्रकृतियों विषें जैसे प्रकार अनुभाग प्रवर्तै उसका वर्णन। अघातियानि विषें प्रशस्त
प्रकृतियों का गुड़ खंड शर्करा अमृत रूप अप्रशस्त प्रकृतियों का, निंब कांजीर विष
हलाहल रूप अनुभाग का और इन प्रकृतियों के तीन तीन प्रकार अनुभाग प्रवर्तै
उसका वर्णन। प्रदेश बंध का कथन विषें एक क्षेत्र अनेक क्षेत्र संबंधी वा जहां कर्म
रूप होने को योग्य अयोग्यरूप, तिन विषें भी जीव के ग्रहण की अपेक्षा सादि अनादि
रूप पुद्गलों का प्रमाणादिक कह तहां जिन पुद्गलों को समय प्रबद्ध में ग्रहै
उसका वर्णन। ग्रहे अनंत परमाणू के प्रमाण उनको आठ वा सात मूल प्रकृतियों
में जैसे विभाग है उनका हीनाधिक विभाग होने का कारण। उत्तर प्रकृतियों
में विभाग का अनुक्रम, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय में सर्वघाती, देशघाती
द्रव्य का विभाग, मति ज्ञानावरणादि प्रकृति में सर्वघाती, देशघाती स्पर्द्धकनिका,
उसमें अनुभाग संबंधी नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त द्रव्य स्थिति गुण हानि का
प्रमाण कह कर उसमें वर्गणा का प्रमाण ला उसमें जहां देशघाती, सर्वघातीपना
पाया जाय उसका वर्णन। चार घातिया कर्मों का उत्तर प्रकृतियों में कर्मपरमाणुओं
के विभाग का वर्णन, संज्वलन और नोकषाय में विशेषता। नोकषाय के युगपत्
बंध। उनके निरंतर बंधने का कारण। अंतराय की प्रकृतियों में सर्वघातीपना न
होने का वर्णन। युगपत नाम कर्म की तेइस आदि प्रकृति बंधे उनका विभाग।
वेदनीयादिक की एक एक ही प्रकृति बंध इससे इसमें जहां कहीं [illegible] बंध इससे
वहां विभाग न होने का वर्णन। मूल उत्तर प्रकृतियों का उत्कृष्टादि प्रदेश बंध
में सादि इत्यादि भेद संभवपने का वर्णन। जिस प्रकृति का उत्कृष्ट जघन्य प्रदेश
बंध जिसके हो उसका वर्णन। स्तोक सा एक जीव के युगपत् जितनी जितनी

प्रकृत बंधैं उनका वर्णन। योगनिका का कथन। उपपाद एकांत वृद्धि परिणाम रूप होगनि के स्वरूपादि का वर्णन। योगनि अविभाग प्रतिच्छेदन वर्ग वर्गणा स्पर्द्धक गुण हानि नाना गुण हानि स्थाननि के स्वरूप प्रमाण विधान का योग शक्ति व प्रदेश अपेक्षा विशेष वर्णन है। योगनिका जघन्य स्थान से लेकर स्थाननि में वृद्धि के अनुक्रम तक वर्णन। सूक्ष्म निगोदिया लब्धि अपर्याप्तक का जघन्य उपपाद योग स्थान से लेकर ८४ स्थाननिका, बीच बीच में जिनका स्वामी (स्वामी) न मिले उनका, उनमें गुणकार के अनुक्रम का, जघन्य स्थान से उत्कृष्ट स्थान के गुण कार का वर्णन। तीन प्रकार योग निरंतर जितने काल प्रवर्तें उनका पर्याप्त त्रस संबंधी परिणाम-योग स्थानों में जितने जितने योग स्थान, दो आदि आठ समय पर्यंत निरंतर प्रवर्तें उनके प्रमाण लाने को कालयव मध्य रचना। पर्याप्त त्रस संबंधी परिणाम योग स्थाननि में जितने जितने जीव मिलें तिनके प्रमाण जानने को गुण हानि आदि विशेषता युक्त जीव यव मध्य रचना का और योग स्थानों से जितना जितना प्रदेश बंध हो उसका, उसका जघन्य से उत्कृष्ट स्थान पर्यंत बंधने क्रम का बीचि बीचि जितने अविभाग प्रतिच्छेद हों उनका वर्णन है। चार प्रकार बंध के कारणों का कथन। योग स्थानादिक के अल्प बहुत्व का वर्णन। योग स्थान श्रेणी के असंख्यातवां भाग मात्र उनका वर्णन। असंख्यात लोक गुने कर्म प्रकृतियों के भेदों के वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद। क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन। उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन में मतिज्ञानादिक के भेद। क्षेत्र अपेक्षा अनुपूर्वी के भेदों का कथन। उनसे असंख्यात गुने कर्म स्थिति के भेदों का वर्णन, उनमें एक एक प्रकृति की जघन्य उत्कृष्ट पर्यंत स्थिति भेदों का कथन है। उनसे असंख्यात गुने स्थिति बंधाध्यवसायनिका वर्णन, द्रव्य स्थिति गुण हानि निषेक त्रयादिक की स्थिति बंध का कारण परिणामों का स्तोकपना। फिर उनसे असंख्यात लोक गुने अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थाननि का वर्णन। उसके अन्तर्गत द्रव्य स्थिति गुण हान्यादिक अनुभाग का कारण परिणामों का स्तोकपना कथन। उनसे अनंत गुने कर्म प्रदेशों का वर्णन। द्रव्य स्थिति गुण हानि नाना गुण हानि अय निषेकों का अंक संदृष्टि वा अर्थ करि कथन। एक समय में समय प्रबद्ध मात्र पुद्गल बंधैं, एक एक निषेक मिल कर समय प्रबद्ध मात्र हो निर्जरैं ऐसे होते स्पर्द्ध गुण हानि गुणित समय प्रबद्ध मात्र सत्व रहे उसका विधान जानने के लिये त्रिकोण यंत्र की रचना। उदय के वर्णन में उदय प्रकृतियों का नियम। गुण स्थानों व्युच्छित्ति उदय, अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। उदीरणा में विशेष कह गुण स्थानों में व्युच्छित्ति उदीरणा अनुदीरणा रूप प्रकृतियों का वर्णन। मार्गणा में उदय प्रकृतियों का कह गति आदि मार्गणा के भेदों में संभव संगुण स्थानों की अपेक्षा लिये व्युच्छित्ति

उदय अनुदय प्रकृतियों का वर्णन। सत्त्व के कथन में तीर्थंकर आहारक की सत्ता का, मिथ्या दृष्ट्यादि विषै विशेष और आयु बंध हुए पीछे सम्यक्त्व व्रत होने का विशेषत्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व होने का विशेष कह मिथ्या दृष्टि आदि सात गुण स्थानों में सत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। ऊपर क्षपक श्रेणी अपेक्षा व्युच्छित्ति सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। मिथ्या दृष्टि आदि गुण स्थानों सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन। उपशम श्रेणी विषै इकोस मोह प्रकृति उपशमा वने का क्रम। सत्त्व प्रकृतियों का कथन। मार्गणा में सत्ता असत्ता प्रकृतियों का नियम। गति आदि मार्गणा के भेदों में यथा संभव गुण स्थानों की अपेक्षा लिये व्युच्छित्ति सत्त्व असत्त्व प्रकृतियों का वर्णन है। इन्द्रिय काय मार्गणा में प्रकृतियों की उद्वेलना का इत्यादि अनेक वर्णन।

(३) तीसरा अधिकार—विशेष सत्ता—पृ० ९६९ से पृ० ९८९ तक।

एक जीव की एक काल प्रकृति मिलें उनके प्रमाण की अपेक्षा स्थान स्थान में प्रकृति बदलने की अपेक्षा भंग उनका वर्णन। नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा कर स्थान भंगों का स्वरूप कर गुण स्थानों में सामान्यवत प्रकृतियों का वर्णन करके विशेष वर्णनों में मिथ्या दृष्टयादि गुण स्थानों में जितने जितने स्थान अथवा भंग हों उन को कह कर जुदा जुदा कथन में उनका विधान वा प्राकृतिक घटने बंधने बदलने के विशेष का बद्धायु अबद्धायु अपेक्षा वर्णन है। मिथ्या दृष्टि में तीर्थंकर सत्ता वाले के नरकायु ही का सत्व हो उसका वर्णन। एकेन्द्रिय आदिक के उद्वेलन्य का और सासादन में आहार सत्ता के विशेष का मिश्र में अनंतानुबंधी रहित सत्त्व स्थान जैसे संभवे उसका असंयत में मनुष्यायु तीर्थंकर सहित एक सौ चढ़-तीस प्रकृति की सत्तावाले के एक वा दो वा तीन ही कल्याण कहीं उनका अपूर्व करणादि विषै उपशमक क्षपक श्रेणी अपेक्षा का इत्यादि अनेक वर्णन है। बहुरि आचार्यों के मत जो विशेषत्त्व हैं। उसके कथन पर उसकी अपेक्षा को कथन है।

(४) चौथा अधिकार—त्रिचूलिका पृ० ९९० से पृ० १००४ तक।

नौ प्रश्नों द्वारा चूलिका का व्याख्यान। पहिले तीन प्रश्न करना और उनके उत्तर में जिन प्रकृतियों को उदय व्युच्छित्ति से पहिले बंध व्युच्छित्ति युगपत हुई उसका वर्णन, फिर तीन प्रश्न कर के उनके उत्तर में जितना अपना उदय होते ही बंध हो उनका और जिनका अन्य प्रकृतियों का उदय होते ही बंध होने उनका वर्णन। फिर तीसरा तीन प्रश्न कर तिनके उत्तर में जिनका निरंतर बंध हो उनका और जिनका सांतर बंध हो उनका और जिनका सांतर निरंतर बंध हो उनका कथन। यहां तीर्थंकरादि प्रकृति निरंतर बंधी जैसे उसका और सप्रतिपक्ष निष्प्र-तिपक्ष अवस्था में सांतर निरंतर बंध जैसे संभव है उसका वर्णन है। दूसरी पंच

भाग हार चूलिका का व्याख्यान में मंगलाचरण कर उद्वेलन विध्यात अधः प्रवृत गुण संक्रम सर्व संक्रम इन पांच भाग हारन के नाम स्वरूप भाग हार जिन जिन प्रकृतियों में गुण स्थानों में संभवें ताकर वर्णन । सर्व संक्रम भाग हार गुण संक्रम भागहार उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार अधःप्रवृत्त भागहार योगों में गुणाकार स्थिति में नाना गुणहानि पल्य के अर्द्धच्छेद पल्य का वर्गमूल स्थिति विषै गुण हानि आयाम, स्थिति विषै अन्योन्यभ्यस्त राशि, प्रव्य कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, विध्यात संक्रम भागहार, उद्वेलन भागहार अनुमान विषै नाना गुणहानि, दो गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनका प्रमाण पूर्वक अल्प बहुत्व का कथन । तीसरी दश करण चूलिका के व्याख्यान में बंधन उत्कर्षण, २ संक्रम, ३ अपकर्षण ४ उदीर्ण, ५ सत्व ६ उदय ७ उपशम ८ निधत्ति ९ निःकांचना, १० इन दश करणानि के नाम स्वरूप जिन जिन प्रकृतियों वा गुण स्थानों में जैसे जैसे सम्भवें उनका वर्णन ।

(५) फिर पांचवां बंध उदय सत्व सहित स्थान समुत्कीर्तन नया अधिकार पृ० १००५ से पृ० ११५३ ।

मंगलाचरण, एक जीव के युगपत् संभवती बंधादिक प्रकृतियों का प्रमाण रूप स्थान या वहां प्रकृतियों के बदलने से हुए भंगनि का वर्णन । मूल प्रकृत के बंध स्थान । भुजा कारादि बंध विशेष का, भुजाकार अल्प तर अवस्थित अव क्तव्य रूप बंध विशेषों का स्वरूप का वर्णन । मूल पद्धति के उदय स्थान उदीर्णा स्थान, सत्व स्थानों का वर्णन । उत्तर प्रकृतियों के कथन में दर्शनावर्ण मोहनीय नाम की प्रकृति विशेष है तहां दर्शना वरण के बंध स्थानों का वर्णन । गुण स्थान अपेक्षा भुजा कारादि विशेष संभव का दर्शनावरण के गुण स्थान बंध स्थान उदय स्थान सत्व स्थान मोहनीय के बंध स्थान । प्रकृतियां नाम जानने को ध्रुवबंधी प्रकृत का, कूट रचना आदि का । प्रकृति बदलने से हुए भंगियों बंध स्थानों में संभव से भुजा करादि विशेषों का भुजा करादि के लक्षण सामान्य अवक्तव्य भंगियों की संख्या, भुजा कारादि संभवन का विधान, गुण स्थान में चढ़ना उतरना, इत्यादि का विशेषत्व । मोह के उदय स्थान । उनकी प्रकृति का विधान । संख्या । मिलाई हुई संख्या । गुण स्थान में संभव से उपयोग, योग, संयम, लेश्या, सम्यक्त्व उनकी अपेक्षा । मोह स्थान का प्रकृतियों का विधान संख्या आदि का अनंतानुबंधी रहित उदय स्थान । मिथ्यादृष्टि की अप-र्याप्त अवस्था में न पाइये इत्यादि विशेष वर्णन, मोह सत्व स्थाननिका वर्णन का वा तहां प्रकृति घटने का और वह स्थान गुण स्थानों में जैसे संभवें उनका, और अनिवृत्ति करण में उसका वर्णन । नाम कर्म का कथन में आधार भूत इकता-लीस जीव पद चैतीस कर्म पदों का व्याख्यान कर नाम के बंध स्थान का और वे गुण स्थानों में जैसे संभवे उनका और वे जिस जिस कर्म पद सहित बंध हैं उसका

और उनमें क्रम से नौ ध्रुव बंधी आदि प्रकृतियों के नाम का, तेईस केव आदि दे कर नाम के बंध स्थाननि विषै जो जो प्रकृति जैसे जैसे हैं उनका वर्णन। प्रकृति बदलने से हुए भंगियों का वर्ण है। यहां प्रसंग पा स्वयं भूरमण समुद्र परै कूणानि विषै कर्म भूमियां तिर्यंच बाहर सूक्ष्म परियास अपरियास अग्निकायिक आदि जीव जहां उपजै उसका सूक्ष्मनिगोदस आव मनुष्य सकल संयमन ग्रह इत्यादि विशेष का अपर्यास मनुष्य जहां उपजे उसका वर्णन। भोग भूमि कुभोग भूमि के तिर्यंच मनुष्य, कर्म भूमि के मनुष्य जहां उपजें उसका वर्णन सर्वार्थ सिद्धि से लगाय भवनत्रिक देव जहां उपजै उसका वर्णन। च्यवन उत्पादक कह चौदह मार्गणा में गुण स्थान की अपेक्षा लिए जैसे जो जो नाम कर्म के बंध स्थान संभवें उनका वर्णन है। गति इन्द्रिय काय काय भोग वेद मार्गणा तो लेश्या अपेक्षा बंध स्थानों का कथन है। कषाय मार्गणा में अनंतानु बंधी आदि जैसे उदय होवै उसका या इनके देश घाती सर्व घाती, स्पर्द्धकनिका, सम्यक्त्व संयम घातने का वा लेश्या अपेक्षा बंध का स्थान कथन। ज्ञान मार्गणा में गति आदिक को यो अपेक्ष कर बंध स्थाननिका कथन है। संयम मार्गणा में सामायिकादिक के स्वरूप का पर संयता संयत विषै दो गति अपेक्षा, असंयम विषैं चार गति अपेक्षा बंध स्थानों का कथन है। निवृत्य पर्याप्त देव के बंध स्थान कहने को देव गति विषै जे जे जीव जहां पर्यंत उपजें उनका वर्णन। सासादन में बंध स्थान कहने जो जो जीव जैसे उपशम सम्यकत्व को छोड़ सासादन हो उनका कथन। दर्शन मार्गणा में गति अपेक्षा बंध स्थान। लेश्या मारगणा प्रथमादि नरक। पृथ्वी में लेश्या संभवने का जिस जिस संहनन के धारी जो जो जीव जहां जहां पर्यंत नरक में उपजें उनका नरकों में पर्याप्त निवृत्य पर्याप्त अवस्था अपेक्षा बंध स्थान का और तिर्यंच में एकेन्द्रियादिक के वा भूग भूमियां त्रियंच जो जो लेश्या मिले उनका जो जो जीव जिस जिस लेश्या द्वारा तिर्य्यंच में उपजें उनका वर्णन। उनके निवृत्य पर्याप्त अवस्था में बंध स्थाननिका शुभाशुभ लेश्या का परिणाम, कषायनिके स्थान। चौदह लेश्या स्थान। बीस आयुबंध स्थान वे लेश्याओं छब्बीस अंश। लेश्याओं के पलटने का क्रम। भूमाभूमि आदि तिर्यंचादि का वर्णन। मनुष्य गति में लब्धि अपर्याप्त, निवृत्य पर्याप्त दशाएं देवगति भव्य मार्गणा में बंध स्थानों का वर्णन। सम्यक्त मार्गणा तीर्थंकर सत्ता वालों के तद्भव अन्य भव अन्य भव में मुक्त होने का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व विषै संभवतें बंध स्थानों का वर्णन। वेद सम्यक्त्व जिनके हो। प्रथमोपशम। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व से जैसे वेदक सम्यक्त्व हो और तिनके जे बंध स्थान हों उनका वर्णन। सासादन मिश्र मिथ्यात्व जहां जहां जिस जिस द्रव्य संभवें और तहां जे बंध स्थान मिलें उनका वर्णन है। नाम के उदय स्थानों का वरन। कर्माण, मिश्रा शरीर,

शरीर पर्याप्ति, उच्छ्वासपर्याप्ति भाषा पर्याप्ति इनपंच कालों के स्वरूप प्रमाणादिक। प्रकृतियों के बदल कर संभव ते भंगनिका वर्णन। नाम के सत्व स्थाननिका वर्णन। जिन प्रकृतियों को उद्वेलना तिनके स्वामी इत्यादि का कथन। सम्यक्त्व देश संयम अनंतानुबंधी विसंयोजन, उपश्रेणी चढ़ना सफल संयम धरना, ए उत्कृष्टपन जितनी बार हों इनका वर्णन। इकतालीस जीव पदों में सत्व स्थान संभवें उनका वर्णन। त्रिसंयोगी ते स्थान वा भंगियों का वर्णन। मूल प्रकृति उत्तर प्रकृति। दर्शना वर्णन, वेदनीय वर्णन। गोत्र, आयु। आठ अपकर्ष में बंधने का वर्णन। बध्यमान, भुज्यमान आयु के घटने रूप अपवर्तन घात कदली घात का वर्णन। वेदनीय गोत्र आयु के भंग। मोह की स्थानानि की अपेक्षा भंग मोह का त्रिसंयोग, मोह के बंध उदय सत्व। नाम कर्म के स्थानोक्त भंग। गुण स्थानों और चौदह जो समासों में बंध स्थान वा सत्व स्थानादि का वर्णन।

(६) छठवां प्रत्यय अधिकार—पृ० ११५४ से ११६७ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा, चार मूल आस्रव, सत्तावन उत्तर आस्रवों का और जैसे स्थानों विषै संभवे उसका उसमें व्युच्छित्ति वा आस्रवों के प्रमाण नामादिक का वर्णन। पंच प्रकारों का वर्णन प्रथम प्रकार में एक जीव के एकें काल संभवे ऐसे जघन्यादि का वर्णन। दूसरे प्रकार में एक एक स्थान में आस्रव भेद बदलने से जितने प्रकार हों उनका वर्णन। तीसरे प्रकार में उन्हीं कूटों के अनुसार अक्ष संचारि विधान से जैसे जैसे आस्रव स्थानों के कहने का विधान रूप कूटोच्चारण। पांचवें प्रकार में उन स्थानों में भंगलाने का विधान। गुणस्थानों में संभवतः भानिकादि का वर्णन।

(७) सातवां भाव चूलिका नाम अधिकार—पृ० ११६८ से पृ० १२०६ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके भावों के गुन स्थान संज्ञा होने इस प्रकार कथन कर पंचमूल भावनिका, उनके स्वरूप का तेयन उत्तर भावनिका मूल उत्तर भावों में अक्ष संचार के विधान से प्रत्येक पर संयोगीद्विसंयोगी आदि भंग। जघादि संभवे भावों का वर्णन। एक जीव के युगपत् संभव से भावों का वर्णन। गुण स्थानों में मूल भावों के प्रत्येक पर संयोगी द्विसंयोगी आदि भंगनिका वर्णन। प्रत्येक त्रिसंयोगी, द्विसंयोगी आदि भंगलोन का गणित शास्त्रानुसार विधान। गुन स्थानों में मूलभाव। उत्तर भावों के भंग स्थान गत पदगत भेद से दो प्रकार। स्थानों की परस्पर संयोगों की अपेक्षा गुण्य गुणाकार क्षेपादि विधान से जैसे जिसे जितने प्रत्येक भंग और पर संयोगों में द्विसंयोगी आदि का भेद। गुण्य गुणाकार क्षेपका प्रमाण। पदगत भंग के दो भेदों (१) जाति पदलनव पदों का वर्णन। इन दोनों भेदों के स्वरूपादि का कथन। सर्व

पद बंध के दो भेद। उनके स्वरूपादि का वर्णन। तीन सौ त्रेसठ कुवाद के भेदों का वर्णन।

(८) आठवां त्रिकरण चूलिका नामा अधिकार—पृ० ११०६ से पृ० १२१६ तक।

मंगलाचरण करके कारणनिका प्रयोजन। अधःकरण का वर्णन। उसके कालादि का वर्णन और वहां संभव से सब परिणाम, प्रथम समय संबंधी परिणाम। समय समय प्रतिवृद्ध रूप परिणाम वा द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम व संबंधी परिणामों से खंड रचना कारि अनुकृष्ट विधान। खंडनि का वर्णन। अंक संदृष्टि व अर्थ अपेक्षा परिणामों का वर्णन समय समय प्रतिवृद्धि रूप परिणाम द्वितीयादि समय संबंधी परिणाम अनिवृत्ति करण में भेद नहीं इस लिये कालादि का वर्णन।

(९) नवमों कर्म स्थिति अधिकार—पृ० १२१७ से पृ० १२५४ तक।

नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञा करके अबाधा के लक्षण का व स्थिति अनुसार उसके काल का, वा उदीरणा अपेक्षा आबाधा काल का वर्णन है। कर्म स्थिति में निषेकनि का वर्णन प्रथमादि गुण हानि के प्रथमादि निषेकों वर्णन है। स्थिति रचना में द्रव्य, स्थिति गुण हानि, नाना गुण हानि, अन्योन्याभ्यस्त इनके स्वरूपादि का वर्णन। मिथ्यात्व कर्म को नाना गुण हानि अन्योन्याभ्यस्त जानने का विधान। 'अंत धणं गुण गुणियं' इत्यादि करण सूत्रों द्वारा गुणाकार रूप पंक्ति के जोड़ देने का विधान। गुण हानि दो गुण हानि के प्रमाण का वर्णन। विशेष जो चय उसके प्रमाण का वर्णन। अंक दृष्टि व अर्थ अपेक्षा। मिथ्यात्ववत् अन्य कर्मों की रचना अंक संदृष्टि अपेक्षा त्रिकोण यंत्र, इस यंत्र का प्रयोजन। निरंतर सांत रूप स्थिति के भेद स्वरूपादि का वर्णन। स्थितिबंध का कारण। स्थिति के भेद। अनुकृष्टि रचना। आयु कर्म का विधान। खंडों की समानता असमानतादि के अनेक कथन। अनुभाग बंध का कारण। अनुभागाध्यवसाय स्थानों का वर्णन। उन सब का प्रमाण। मूलग्रंथकर्त्ता के किये हुए ग्रंथ की संपूर्णता होते हुए ग्रंथ के हेतु का चामुंड राय राजा के आशीर्वाद का उसके द्वारा बनाए हुए चैत्यालय वा जिन बिंब का वीर मार्तंड राजा को आशीर्वाद का वर्णन है। फिर संस्कृत टीकाकार अपने गुरु का वा ग्रंथ होने के समाचार कहता है, उसका वर्णन।

---

(३) संदृष्टि अधिकार (पृ० १२५५ से पृ० तक)

(१) संदृष्टि चूलिका—पृ० १२२५ से पृ० १४४४ तक।

सदृष्टि अधिकार में प्रथम मंगलाचरण, दश प्रकार का कारण, प्रकृति बंधाव पसरण, स्थिति बंधाव पसरण स्थिति कांडक, अनुभाग कांडक, गुणश्रेणी फालि इत्यादि। कई संज्ञाओं का स्वरूप वर्णन करके प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने का विधान। प्रथमोपशम सम्यक्त होने के योग्य जीविका, पंचलब्धियों के नामादिक कह कर उनके स्वरूप का वर्णन। प्रायोग्यता लब्धि में जिस प्रकार स्थिति घटती है और वहां चार गति अपेक्षा प्रकृति बंधापसरण होता है उसका, स्थिति अनुभाग प्रदेश बंध का वर्णन है। करणलब्धिका कथन विषय तीन करणानि का नाम कालादिक कह उनके स्वरूप का वर्णन। अधःकरण में स्थिति बंधा पसरनादिक आवश्यक होता है उनका वर्णन। अपूर्व करण में चार चार आवश्यक तिनमें गुण श्रेणी निर्जरा का कथन। आकर्षण किया हुआ द्रव्य को जैसे उपरितन स्थिति गुण श्रेणी आयाम उदयावली में दिया है उसका वर्णन है। उत्कर्षण और अपकर्षण किया हुआ द्रव्य का विक्षेप और अति स्थापना का विशेष वर्णन। गुण संक्रमण जहां संभवे उसका वर्णन। स्थिति कांडक अनुभाग कांडक के स्वरूप प्रमाणादिक। स्थिति अनुभाग कांड कोत्करण काल का वर्णन—स्थिति अनुभाग सत्व घटाने का वर्णन। अनिवृत्ति करण में स्थिति कांडकादि विधान। अंतर करण करने का और प्रथम स्थिति का वर्णन। अंतर करण का कालपूर्ण हुए पीछे प्रथम स्थिति काल का वर्णन। अंतरा याम काल प्राप्त हुए उपशम सम्यक्त्व होने का वर्णन। उपशम सम्यक्त्व का विधान। प्रथमोप सम्यक्त्व में मरण के अभाव का वर्णन। सासादन होने का कारण। उपशम सम्यक्त्व का प्रारंभ व निष्ठापन में जो जो उपयोग योग्य लेश्या उनका और उपशम सम्यक्त्व के काल स्वरूपादि का वर्णन है। क्षायिक सम्यक्त्व के विधानादि का वर्णन। स्थिति कांडादिक का वर्णन। मिथ्यात्व मिश्र मोहनी सम्यक्त्व मोहिनी विषै स्थिति घटाने का कारण। संक्रमण होने का विधान वर्णन करके सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष प्रमाणस्थिति रहे अनेक क्रिया विशेष होने का वर्णन। गुण श्रेणी स्थिति कांडकादिक में विशेष हो उसका वर्णन। कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने का व वहां मरण होते हुए लेश्या वा उपजने व कृतकृत्या वेदक हुए पीछे जो क्रिया हो उनका वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व के विधान विषै संभव सें तेतीस स्थानों में अल्प बहुत्व का वर्णन। क्षायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का वा मुक्त होने इत्यादि वर्णन है।

(२) लब्धिसार चूलिका—पृ० १४७५ से १६२४

चरित्र लब्धिका स्वरूप और भेदों का कथन। देश चरित्र का कथन। वेदक सम्यक्त्व सहित देश चरित्र जो भई उसे दो कारणों का वर्णन। एकांत वृद्धि देश संयत के स्वरूपादि। अधः प्रवृत्त देश संयत का वर्णन। स्वरूप काला-

दिक। देश संयम में काल के अल्पत्व और बहुत्व का विवरण। जघन्य उत्कृष्ट देश संयम जिसके हो उसका वर्णन। देश संयम में स्पर्द्धक व अविभाग प्रतिच्छेद स्थाननिका, उनके प्रतिपात, प्रतिपाद्य प्राप्त अनुभव रूप तीन प्रकारों का वर्णन। सकल चरित्र का वर्णन। उसके क्षायोपशमिक औपशमिक क्षायिक तीन भेदों का वर्णन। सकल संयत स्पर्द्धक का अविभाग प्रतिच्छेदों का कथन कर प्रतिपातादि का वर्णन। उपशम चरित्र का वर्णन। उपशम श्रेणी चढ़ने में द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी की अवस्था। चारित्र मोह कर्म के उपशम करने में आठ अधिकारों का वर्णन। तीन करण का विधान बंधा पसरणादिक का रूप। उपशांत कषाय से पड़ने की विधि। उपशम श्रेणी चढ़ने वाले बारह तरह के जीवों की विशेष क्रियाओं का वर्णन।

(२) क्षायिक चरित्र, पृ० १६२५ से १९०४ तक

चरित्र मोह की क्षपणा (नाश करने) का विधान। अधः प्रवृत्त करण का वर्णन। अपूर्व करण का स्वरूप। गुण श्रेणी का स्वरूप। गुण संक्रम का स्वरूप। स्थिति खंडन का स्वरूप। अनिवृत्ति करण का स्वरूप। स्थिति बंधाव सरण का क्रम। स्थिति सत्वा प्रसरण का क्रम। क्षपणा का स्वरूप। देशघाति करण का स्वरूप। अंतकरण का स्वरूप। अंतकरण का स्वरूप। संक्रमण का स्वरूप। अपगत वेदी की क्रिया का स्वरूप। अनुभाग कांड के घात होने पर जो अवस्था हो उसका कथन। कृष्टि क्रिया सहित अपूर्व कर्म क्रिया होने में यति वृषभाचार्य की सम्मति। बादर कृष्टि करण का काल। पार्श्व कृष्टि का कथन। कृष्टि वेदना का कथन। संक्रमण द्रव्य का विधान। अनु समय अपवर्तन की प्रवृत्ति का कथन। स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ रचना का विधान। दूसरा विधान। क्षीण कषाय नामा बारहवें गुण स्थान का स्वरूप। पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ़ने वाले का स्वरूप। स्त्रीवेद सहित चढ़े जीवों के भेदों का वर्णन। नपुंसक वेद सहित चढ़े जीवों का कथन। क्षीण कषाय गुण स्थान के अंत समय का कथन। सयोग केवली गुण स्थान का वर्णन। चार घातियों के क्षय से चार गुणों का प्रगट होना। दुःख का लक्षण। इन्द्रिय जनित सुख का लक्षण केवली के इन्द्रिय जनित सुख दुःख नहीं होने में हेतु। दूसरा हेतु केवली के आहार मार्गणा होने में कारण। समुद्घात में कार्य विधान। समुद्घात क्रिया के समेटने का क्रम। बादर योगों का सूक्ष्म रूप परिणमन होने की अवस्था। अयोग केवली का कथन। चौदहवें गुण स्थान के अंत समय से पहले में तथा अंत समय में पचासी प्रकृतियों का (कर्मों का) नाश करने का कथन। ऊर्ध्व लोक के ऊपर मोक्ष स्थान का स्वरूप। इष्ट प्रार्थना। ग्रंथकर्ता की प्रशस्ति। अंत मंगल।

No. 429(*b*). Moksha Mārga Prakāśa, by Todara Malajī of Jaipura. Substance—Country-made paper. Leaves—588. Size—$13\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—11 Extent—3,702 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira, (Bara) Bārābankī (Oudh).

Beginning—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ मोक्षमार्ग प्रकाश नामशास्त्र लिख्यते ॥

दोहा ॥ मंगल मय मंगल करन वीत राग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भये अरहे तादि महान ॥ १ ॥
करि मंगल करिहौं महा ग्रन्थ करन को काज ।
जाते मिलै समाज सब पावे निज पद राज ॥ २ ॥

अथ मोक्षमार्ग प्रकाशक नाम शास्त्र सो उदय होय है । तहां प्रथम मंगल करिये है ॥ णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व साहूणं ॥ ३ ॥ यह प्राकृत भाषामय नमस्कार मंत्र ॥ सो महामंगल स्वरूप है ॥ बहुरि या का संस्कृत ऐसा होई ॥ नमो र्हितेभ्यः नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमः आचार्येभ्यः ॥ नमः उपाध्यायेभ्यः नमो लोके सर्व साधुभ्यः ॥ बहुरि याका अर्थ ऐसा है ॥ नमस्कार अर्हतन के निमित्त ॥ नमस्कार आचार्यन के अर्थ ॥ नमस्कार उपाध्यायन के अर्थ ॥ नमस्कार साधुनि के अर्थ ॥ ऐसा या विषय नमस्कार किया ।

End—प्रश्न-जो कोई सम्यकि जीवन को भी अर्थ ग्लानि आदि पाइ कर है ॥ अर कोई मिथ्या दृष्टीन कै न पाइए है ॥ तातें निसंकता दिक अंग सम्यक कैसे कहा हो ॥ ताका उत्तर ॥ जैसे मनुष्य सरीर के हस्त पादादि अंग कहिए है तहां कोई मनुष्य ऐसा भी कोई ताके हस्त पादादि विषय कोई न होई ॥ तहां वाके मुष सरीर तो कहिए ॥ परन्तु तिन अंगनि बिना वह सोभायमान सकल कार्यकारी न होई ॥ तहां वाके मुष सरीर तो कहिये परंतु तिन अंगनि बिना वह सोभायमान सकल कार्य कारी न होय ॥ तैसे सम्यक के निस्संकि तादि अंग कहिये है तहां कोई सम्यकी ऐसा भी होय ॥ जाके निस्संकत्त्वादि विषै कोई अंक न होई ॥ तहां वाकै सम्यक तो कहिये परन्तु तिन अंकन बिना वह निर्मल सकल कार्य कारी न होय ॥ बहुरि जैसे बांदरे कै हस्त पादादि अंग हो है । परन्तु जैसे मनुष्य के होंय तैसे नहि होई है कैसे मिथ्या दृष्टीन के भी विवहार रूपनिस्संकतादि अंक हो है । परंतु जैसे निश्चय । की सापेक्षा लिये सम्यकी कै होई तैसे न होय है । बहुरि सम्यक विषै पचीस मत कहे है । आठ संकादिक मत । आठ मद । षट अनायतन । इति

Subject—प्रथम अधिकार (पीठिका)

(१) पृ० १ से पृ २० तक—मंगलाचरण

अर्हंतादि को नमस्कार, नमस्कार किये जाने वाले सज्जनों का स्वरूप वर्णन। आचार्यों द्विपदों की व्याख्या। पंचपरमेष्ठी पद की व्याख्या। २४ तीर्थंकरों को नमस्कार। अन्य विद्यादि को नमस्कार।

(२) पृ० २१ से पृ० ३८ तक विषय प्रवेश। सद् शास्त्रों की व्याख्या। श्रोता वक्तादि के गुण।

(३) पृ० ३९ से पृ० ४३ तक-उपस्थित ग्रंथ का सार्थकत्व। दूसरा अधिकार संसार की अवस्था का निरूपण

(४) पृ० ४४ से पृ० ९० तक—कर्म बन्धन का निदान, जीव तथा कर्म सम्बन्ध का समय कर्मभेद, अनादि से धारा प्रवाह रूप द्रव्य कर्म व भाव कर्म की प्रकृति का वर्णन। नाम कर्म के उदय से शरीर होने का वर्णन। जीव तथा आत्मा का संबन्ध, जीव के चैतन्यादि गुणों का वर्णन। जीव की भिन्न भिन्न संज्ञाएं। चार प्रकार के कषाय का वर्णन। अनादि संसार संबंधी अघाति कर्मों के उदय के अनुसार आत्मा की अवस्था।

तीसरा अधिकार (संसार दुःख तथा मोक्ष सुख का निवम)

(५) पृ० ९१ से पृ० १४० तक—संसार के दुःखमय होने का वर्णन, दुःख का स्वरूप, उसका मूल कारण, इन्द्रयादि के सुख के मिथ्यात्व का वर्णन, दुःख का मूल कारण—इच्छा का होना। इच्छाओं की पूर्ति के लिये किये गये उपायों का मिथ्यात्व, दुःख तथा उसके कारणों के विनिष्ट होने का उपाय। संसार को छोड़ सिद्धि पद पाने का उपदेश।

चौथे अधिकार सेवष्ट अधिकार तक

(६) पृ० १४१ से पृ० १७० तक—संसारी दुःखों के बीज रूप मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान तथा मिथ्या चरित्रों के स्वरूप का निरूपण। मिथ्या दर्शन के विशेषत्व का वर्णन। श्रद्धान को संसार के मोक्ष के बताये जाने का कारण अश्रद्धान का ही नाम मिथ्या दर्शन कथन। सब दुःखों का मुख्य कारण कर्म बन्धन का होना। मोक्ष की परिभाषा। संसारिक जीवन के मिथ्या दर्शन की प्रकृति के पाने का उपाय, मिथ्या दर्शन का स्वरूप, मिथ्या ज्ञान का स्वरूप। पदार्थों के इष्टानिष्ट न होने का कथन। जीव के राग-द्वेष का वर्णन।

सातवां अधिकार।

(७) पृ० १७१ से पृ० २५० तक—गृहीत मिथ्यात्वादिक का निरूपण। मिथ्या चरित्र की परिभाषा। इसी का विशेष वर्णन-ब्रह्म के अद्वैत को न मानते हुए

उस पर तर्क वितर्क। कर्त्ता का निषेध करते हुए वेदान्तियों के सृष्टिनिरूपण तथा अन्य कितने ही कार्यों पर आक्षेप करते हुए कृष्णादि के चरित्रों की आलोचना। मायादि की कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुसल्मान तथा हिन्दुओं के केवल एक ईश्वर पर वाले सिद्धान्त को समता दिखाते हुए उसका खंडन, वेदान्तियों द्वारा किए गये तत्त्वों के पंचीकरण को मिथ्या ठहराना। शाक्त तथा शैवों पर आक्षेप। वेद पूजकों के अनेक भेद पंथियों द्वारा अनेक मत समर्थन करने पर संपूर्ण को मिथ्या निश्चित कर केवल जैन धर्म ग्रंथों ही का वर्णन। वीतराग भाव की महिमा का वर्णन। अन्य मतों ग्रंथों तथा सिद्धान्तों के अनुसार ही जिन धर्म की प्राचीनता के सिद्ध होने का वर्णन। हिन्दुओं के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेदों से भी जैन मत प्राचीन तम होने का प्रमाण। वेदों के सूत्रों के कृत्रिम होने का कथन। जिन तीर्थंकरों की उत्पत्ति इत्यादि पर किये गये कुछ आक्षेपों का स्वयं ही उपस्थित कर उनका उत्तर देना।

(८) पृ० २५१ से पृ० २७८ तक—जैन धर्म की दूसरी शाखा के मानने वाले श्वेताम्बरियों द्वारा भगवान के स्वरूप आदि पर किये हुए कुछ आक्षेपों के उत्तर। आहार विहार संबंधी कुछ समस्याएं। भगवान द्वारा किये हुए उपदेशों तथा इन्द्र कृत समवसरण के विषय में कुछ न समझ सकी जाने की भली बातों का संबोधन कराना। श्रावक शब्द की व्याख्या। श्वेताम्बर धर्म की शास्त्र कल्पना को मिथ्या ठहराना। मुनियों की याचना के सम्बन्ध में कुछ सरणीय बातें। गुरु तथा धर्म का स्वरूप। सम्यक् दृष्टि आदि के कहे हुए रूपों में से कुछ का मिथ्यात्व। श्वेताम्बर संप्रदायवालों पर कई आक्षेप श्वेताम्बर मत के सकारण त्याज्य होने का वर्णन।

यहां पर अन्य मत निरूपण समाप्त हुआ।

(९) पृ० २७९ से पृ० ३११ तक—गंगा इत्यादि तीर्थों पर किये जाने वाले पिंडादि का निषेध। सूर्यादि की पूजा का भ्रम बताना। जिन धर्मानुकूल की जाने वाली पूजा का महत्त्व। मिथ्या भेष धारण करने का निषेध, मुख्य भेष निरूपण, गुरु सेवन निषेध कुयुक्ति द्वारा गुरुओं को स्थापित करने वालों के मत का निरूपण। गुरु का मुख्य स्वरूप। कुधर्म का निरूपण।

मोक्षमार्ग प्रकाश—शास्त्र विषयक कुदेवादि निषेध वर्णन।

(१०) पृ० ३१२ से पृ० ३५० तक—जो जैन होकर भी इस धर्म में श्रद्धा नहीं रखते उनके विषय में कुछ वक्तव्य। ज्ञान की सद्भावना सदैव मानना। वर्णादिक रागादिक से आत्मा के भिन्न होने का कथन। शास्त्राध्यन। तपश्चरण इत्यादि के विषय में की गई कुछ शंकाओं के उत्तर। सम्यग्दृष्टि की सिद्धि के लिये

आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता आत्माचरण विषयक व्रतादिक के साधनों का कथन। ज्ञान बिना तप की असिद्धि का कथन। हिंसादि के त्याग का कथन। प्रतिज्ञा रूप व्रत का कथन। वैराग्य व्याख्या। आत्मा के विषय में अनुभव करने का कथन। ध्यान की परिभाषा। पर द्रव्य-त्यागनोपदेश। पदार्थ सिद्धान्त कर मोक्ष में ध्यान लगाने का वर्णन। धर्मात्मा की परिभाषा, जिन आज्ञा मानना ही सच्चा श्रद्धान है। मिथ्या दृष्टि का वर्णन, उसकी पूर्ण व्याख्या।

(११) पृ० ३५१ से पृ० ३७७ तक—श्रद्धानी का लक्षण। किसी अभिप्राय विशेष को लेकर जो जैनी बन जावे उसके पापी होने के संबंध में शंका समाधान के साथ कुछ विचार धारा। बिना समझे बूझे पूजा पाठ करने वालों के सम्बन्ध में कुछ कथन। इच्छा पूर्ति के लिये की जाने वाली भक्ति को रागरूप मानकर मोक्ष के लिये बाधक मानना और राग के उदय में भक्ति के न करने का उपदेश। मुनि का सच्चा लक्षण। मुनिभक्ति द्वारा शास्त्रभक्ति का निरूपण। तप तथा व्रत को ही मोक्ष मानने वालों की भूल और इस संबंध में कहे हुए जैन सिद्धान्त के ग्रंथों में कथित व्रतादि पर जिज्ञासु की शंका और उसका समाधान। सिद्धपने इत्यादि की तुच्छता सिद्ध करते हुए वीतराग भाव ही की प्रशंसा करना।

(१२) पृ० ३७८ से पृ० ४८१ तक—केवल व्याकरणादि के ग्रंथों के अवलोकन में आयु को व्यतीत न करके तत्त्व ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने का उपदेश। प्रतिज्ञा के संबंध में कुछ उपदेश। प्राप्त पद के अनुसार ही क्रिया करने का उपदेश। चरित्र के (स. राग. वीतराग) दो भेदों का वर्णन॥ निश्चयन का निरूपण। व्यवहार के संबंध में कुछ कथन। निश्चय व्यवहार-मोक्ष मार्ग का निरूपण। तत्त्वज्ञ का अन्य क्रियाओं के अतिरिक्त भी सम्यक होने का कथन। सम्यक होने के प्रथम पंचलब्धि का कथन। क्षयोपशमादि पंच लब्धियों की व्याख्या। किसी के स्यात चरित्र को पाकर भी मिथ्या दृष्टि होने और किसी के अंतर्मुहूर्त में ही कैवल्य ज्ञान हो सकने का कथन करते हुए परिणाम बिगरने को ध्यान रखने का उपदेश। इस प्रकार यहां तक नाना प्रकार के मिथ्या दृष्टियों के कथन करने का उपदेश।

* जैन धर्मसहित अन्य धर्मावलंबी मिथ्या दृष्टि निरूपण पूर्ण *

(१३) पृ० ४८२ से पृ० ५१८ तक—मिथ्या दृष्टियों को मोक्ष का उपदेश। उपदेश का स्वरूप, उपदेश के चारों अनुयोगों का कथन। प्रथमानुयोग का प्रयोजन। इसी प्रकार अन्य तीनों अनुयोगों के प्रयोजनों का कथन। प्रथमानुयोग विषयक मूल कथा। अन्य तीनों प्रयोजनों के संबंध में कुछ कथा। इन अनुयोगों के

अनुसार उपदेश देने के प्रकारों का वर्णन। चारों अनुयोगों में दिये गये उपदेश, उपदेशों का जैन मतों से ही ग्रहण करने का विधान।

* मोक्षमार्ग विषय उपदेश स्वरूप प्रतिपादक नाम अधिकार पूर्ण *

(१४) पृ० ५१९ से पृ० ५८८ तक—मोक्ष मार्ग के स्वरूप का कथन, मोक्ष से आत्म हित होने का कारण। शरीरादि के साथ वृथा मोह सिद्ध कर संसार को दुःख का हेतु सिद्ध करना। मोक्ष अवस्था के हितकारी होने का कथन, मोक्ष के उपाय करने का कथन, मोक्ष का उपाय काल लब्धि आप भवितव्य अनुसार बना है अथवा मोहादि का उपसमादि से बना है अथवा अपने पुरुषार्थ और उद्यम से बनता है। इस शंका का निवारण। मोक्ष के निमित्त क्रम से मोह के वध करने का कथन। उपदेश देने योग्य पुरुषों तथा उपदेशकों के कर्त्तव्य का कथन। मोक्ष का स्वरूप कथन। सम्यक् ज्ञान तथा ज्ञान चरित्र को एको भाव हो को मोक्षमार्ग बतलाना। आत्मा का लक्षण। सम्यक् दर्शनादि का सच्चा लक्षण। 'तत्त्व' तथा 'अर्थ' की व्याख्या। सातों तत्त्वों के यथार्थ श्रद्धान के आधीन मोक्ष के न होने का वर्णन। अरहंतादि के श्रद्धान के सम्यक कथन। आत्म श्रद्धान का मुख्य लक्षण। सम्यक्त के भेद। दोनों भेदों का स्वरूप। पुनः सम्यक्त के दश भेदों का कथन। फिर सम्यक के तीन भेदों का कथन। उन के स्वरूप। संजोजन विसंजोजन का कथन। सम्यक्त के विरोध तथा अभाव में कहे गये वचनों के उत्तर देकर सात प्रकृतियों के उपसमादिक से सम्यक्ति के उत्पन्न होने का कथन। सम्यग्दर्शन के आठों अंगों का वर्णन। उनके नाम तथा स्वरूप का वर्णन। पुनः अंत में सम्यक्त विषयक पचास गढ़ों का केवल कथन।

इति ग्रंथ समाप्ति।

No. 429(*c*). Triloka Sāra, by Todara Mala of Jaipur. Substance—Country-made paper. Leaves—814. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—11. Extent—13,431 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1844. Place of deposit—Sri Jaina Mandira (Bara), Bārābankī (Oudh).

Beginning—॥ ६० ॥ ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ त्रिलोक सार नाम ग्रंथ की भाषा टीका लिखिये हैं ॥ दोहा—त्रिभुवन सार अपार गुन ज्ञायक नायक संत। त्रिभुवन हितकारी नमो श्री अरहंत महंत ॥ १ ॥ तीन भुवन के मुकुट मनि गुण अनन्त मय शुद्ध। नमो सिद्ध परमात्मा वीतराग अविरुद्ध ॥ २ ॥ तीन भुवन विधि जानि के आप आप मय होय। पर्ते भये विरक्त अति नमो महा मुनि

साय ॥ ३ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषं चैत्य चैत्य यह सार । ते सब बन्दौं भाव जुत सुभकारन सुखकार ॥ ४ ॥ तीन भुवन मन्दिर विषं अरथ प्रकासन हार । जैन बचन दीपक नमों ग्यान करन गुण चार ॥ ५ ॥ ऐसे मंगल रूप सब तिनके बन्दौं पांय । अब कछु रचना कहत हौं नाना विधि सुखदाय ॥ ६ ॥ मंगलाचरन करि श्री मत् त्रिलोक सार नामा शास्त्र की भाषा टीका करिये है । इस ग्रंथ की संस्कृत टीका पूर्व भई है सो वह संस्कृत गणितादिक के ज्ञान बिना तिस विषं प्रवेस होय सकता नहीं ॥ तातें स्तोक ज्ञान वालों कं त्रिलोक के स्वरूप का ज्ञान होने के अर्थ । तिसही अर्थ कुं भाषा करि लिखिये है । जो मेरा कर्त्तव्य कछु है नाहीं । जो किछु क्षयोपसम ज्ञान के अनुसार तिस साश्त्र का अर्थ ज्ञात ॥ धर्मानुराग करि व्याख्या करें ॥

End—

कोई ऐसा जानैगा कै भगवान के तो इच्छा नाहीं । इच्छा विन कैसे डग भरै और कैसे उठै बैठै ॥ ताका उत्तर ॥ भगवान के इच्छा नाहीं इहां तो सत्य ॥ परंतु भगवान के सरीरादि चारि अघातिया कर्म बैठा रहे ताका निमित्त करि मनुष जन काय योग पाइये है । तासूं भगवान कै मनुका पदेसा का चंचल पनो । वा वानी का खिरा ॥ वा सरीर का नेटना वर डग भरना संभवै है । यामें दोष नाहीं ॥ ठौर ठौर ग्रंथन में कहा है । बहुरि मुनि अर्थ का श्रावक श्राविका । और मनुष्य वा तिर्यंच भूमि में गमन करें है ॥ और चारि जातिन के देव व विद्याधर आकास में भगवान के निकाद बाहू राग मना करें है ॥ भावार्थ ॥ इन्द्रादिक कोई देव निज भक्ति है ॥ तेतो भगवान के समीप भगवान को सेवा करता जाइ है । पर देवों का वृंद कहिये समूह घनों ॥ तातै भगवान ताई पहुंचि सकै नाहीं ॥ और कोई देव तो भगवान के ऊपर छत्र किया जाइ है ॥ केई देव चोपदार कोसों ना हाथों मैं तन मई छड़ी वा आसा वा गुर्राज इत्यादि रिध्या निमित्त विनय संयुक्त दवांकूं घटा उठो करता चल्या जाय है केई देव स्तुति करता चला जाय है ॥ पर भगवान दिसा इच्छं दृष्टि करि हालता जाय है । इत्यादि अनेक प्रकार मंगलीक कीयं विहार समै विषै बनै है । ताका वर्णन करना समर्थ हम नाहीं ॥ और आगे इन्द्रादिक देव समौ सरन अगाऊं पूर्वोक्त रचे है । ताविषं भगवान जो स्थित करैं हैं ऐसा विहार वर्णन जानना । ऐसे विहार सहित समोसरण का वर्णन संपूर्ण । ॐ नमः सिद्धेभ्यः संवत १९०१ ।

Subject—टीकाकार लिखित विषय ।

(१) पृ० १ से पृ० १० तक—भूमिका ।

(२) पृ० ११ से पृ० २४ तक—सूक्ष्म सूचनाकार विवक्षित विषय विभाग के अनुसार ॥

(३) पृ० २५ से पृ० ८२ तक—त्रिलोक सार का परिशिष्ट भाग—गणित ज्ञान रहित जीवों के निमित्त प्रयोजन मात्र शास्त्रोक्त गणित विधानों का कुछ वर्णन। मूल ग्रंथ में कथन किये गये गणितों इत्यादि के समझने के लिये पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या। गणित के भेदोपभेद का सूक्ष्म वर्णन तथा पाठकों के व्याख्या के समझने में सहायक होने के अभिप्राय से अनेक उदाहरणों का समावेश।

(१) (मूल ग्रंथ प्रारंभ) लोक सामान्याधिकार।

(२) पृ० ८३ से पृ० २७५ तक—मूल शास्त्र का मंगलाचरण। पंच अधिकारों में वर्णनीय विषयों की सूक्ष्म सूचनिका। सर्व आकाशों के अन्तर्गत लोकाकाश का वर्णन, लोक का स्वरूप तथा आकार। प्रसंगवश 'राजू' इत्यादि का वर्णन। उसके लौकिक मान के अंतर्गत संख्या मान के जघन्य संख्यातादिक इकीस भेदों का वर्णन। जघन्य परीत असंख्यात का ल्याने को कुंडनिका क्षेत्र फल। सरसों प्रमाण बतलाने को घात क्षेत्रफल। सूची क्षेत्रफल सरसों का वेध इत्यादिकों का कारण करण सूत्र। श्रुत ज्ञानादिक के विषयों के प्रमाण का वर्णन। संख्या मान के विशेष ज्ञान के अर्थ सर्व धारादि चौदह धाराओं का वर्णन। उनके स्थान, अनुक्रम और जिस धारा के स्थान के वर्णन में जिसका प्रमाण आवे उसका और सब स्थानों के प्रमाणों का वर्णन। उनमें द्विरूप वर्ग आदि तीन धारा है तिनके स्थाननि का विशेष वर्णन। द्विरूप वर्ग धारा का कथन के अनंतर अर्द्ध छेद वर्ग शलाका जानने के कारण सूत्र और द्विरूप घनाघन धारा विषयक अग्नि कायक जीवों का विशेषतया प्रमाण कथन। उपमा मान के पल्यादिक आठ भेदों का वर्णन। पल्य के रोमों की संख्या जानने के लिये सूक्ष्म घात फल करने के कारण सूत्र का और रोम अंगुलादिक के प्रमाण की उत्पत्ति के अनुक्रम का वर्णन। अक्षर संज्ञा से अंक जानने का भाषा में उक्तं च सूत्र वर्णन। सागरोपम को सार्थक बतलाने के लिये लवण समुद्र के क्षेत्र फलादि का वर्णन। सूच्यं गुलादिक का वर्णन। उनके तथा अर्द्ध छेदादि के विधान के जानने को करण सूत्र कहते हैं। लोक के व्यासादिक का और जहां जितना व्यास पाया उसका वर्णन। अधोलोक का आठ प्रकार का और ऊर्द्धलोक का पांच प्रकार का क्षेत्रफल वर्णन। लोक की परिधि का वर्णन। उसमें करणादिक जानने के कारण सूत्र। वात वलयनि का वर्णन है। उसी के अंतर्गत उनके करणादिक का और उनकी जहां जैसी मोटाई है उसका इनसे जितना स्थान रुका हुआ है उसका वर्णन। तनु वात वलय में सिद्ध के विराजने और अवगाहन का वर्णन। त्रसनाली के स्वरूप स्थान प्रमाणादिक का वर्णन। उसके अधो भाग में स्थित सात पृथिवियों का नाम वर्णन। प्रथम पृथ्वी के तीन भागों के नाम, मुटाई का प्रमाण, पहिले भाग में सोलह पृथिवियों के स्थित

होने तथा उनके नाम का और तीनों भागों के निवासी तथा छः पृथिवियों की मुटाई का वर्णन। पहिली पृथ्वी का तृतीय भाग और छः नीचे वाली पृथिवियों के अंतर्गत नारकियों के बिल होने का वर्णन। उन पृथिवियों में पटल, बिल, वहां के शीतोष्ण बिलों और इन्द्रादिक बिलों की संख्या का वर्णन। इन्द्र के बिलों के और उनके समीपस्थ जो श्रेणी—बद्ध हैं उनके नामों का कथन। श्रेणीबद्धों की संख्या लगावने के कारण कुछ सूत्र। प्रकीर्णकों की संख्या। बिलों का विस्तार और बाहुल्य और अंतराल का वर्णन। पृथ्वी के अंत इत्यादि पटलों अंतराल और बिलों का तिर्यक अंतराल और आकारादि का वर्णन। वहां दुर्गन्धता का और उपजने के स्थान का और उन स्थानों के प्रमाण का वर्णन। उनके उपजने के स्वरूप का और वहां वदि उछलने के प्रमाण का और नवीन पुराण नारकियों का कर्तव्य कथन और उन बिलों में कूट पर्वत नदी इत्यादि जो पाये जाते हैं उनका और वहां के नारकियों की प्रवृत्ति का और बाह्य दुःख साधन का, उनके दुःख का आहारादि का और तीर्थंकर सत्त्ववालों का जब दुःख निवारण होता है उसका और नारकियों के दुःख भेद तथा मरण का वर्णन। नारकियों के अवधि क्षेत्र का वर्णन। नारकी निकल कर जहां उपजें और जो पद न पावें और जो जीव जिस पृथ्वी में उपजें उसका और उनके क्लेशाधिक्य का वर्णन। नरकों के वर्णन के पश्चात् लोक का वर्णन समाप्त हुआ।

(२) भावनाधिकार पृ० २७६ से पृ० २९६

मंगलाचरण। भवन वासियों के कुल भेदों के नाम। उनके इन्द्रों के नाम। उनकी पारस्परिक ईर्ष्या का वर्णन। असुरादि के चिह्न। चैत्य वृक्षों के भेद। प्रतिमा मान स्तम्भादि। उनके भवनों की संख्या, स्वरूप तथा स्थानों का वर्णन। देवों के इन्द्रादिक दश भेद। उनके संभव का वर्णन। भवन वासियों में इन्द्रादि क दश भेदों का वर्णन। सेना की संख्या लाने को गुण कार रूप जो, स्थान तिनके जोड़ देने के कारण का सूत्र कथन। इन्द्र तथा अन्य देवों के प्रमाणादिक का वर्णन। भवन वासी कैतरनि की आयु का वर्णन। भवन वासियों के कुल और उनकी देवी, उनके अंगरक्षकादि की आयु का विशेष वर्णन। उन कुलों में उश्वास तथा आहारादि का अनुक्रम और उनके शरीर की ऊंचाई का वर्णन।

(३) व्यंतर लोक का अधिकार। पृ० २९७ से पृ० ३१७ तक।

उनके प्रमाण का नमित मंगन कर अनके कुलों का, उन कुलों के भेदों का वर्ण का, चैत्य वृक्ष का और वहां की प्रतिमा तथा मान स्तम्भादि का वर्णन। उनके कुल भेदों में जो भेद हैं, उनका, कुलों के इन्द्रों की देवियों के प्रमाण का, और कुल भेदों में जो भेद हैं और उनमें जो इन्द्र और इन्द्रों की महादेवियां हैं उनके नामों का वर्णन। इन्द्रों के नाम कथनोपरान्त उनकी गणिका महत्तरियों के

नाम और सामानिकादि देवों की संख्या और अनीक के विशेष वर्णन। इन्द्रों के नगरनि का स्थान नाम आयाम का और तिनके कोटादि का वर्णन। गणकाओं के नगरनि का और कुल भेद अपेक्षा स्थानों का वर्णन। नीचोपपादादिवान व्यंतरनिका स्थान। नाम तथा आयु का वर्णन। व्यंतरनि के रहने के बिलयों के भेद का, व्यंतरनि के सर्व क्षेत्र का, निलय जिस प्रकार पाये जाते हैं उनका, निलियों के व्यासादि का वा स्वरूप का और व्यंतरनि के आहार उस्वास का वर्णन। तृतीयाधिकार पूर्ण हुआ।

(४) ज्योतिर्लोकाधिकार पृ० ३१८ से पृ० ४८० तक।

ज्योतिष्क बिंबों का प्रमाण गर्भित मंगल करके ज्योतिष्कों के पांच भेद कह कर प्रसंग पाकर उनके आधार भूत कितने ही द्वीप तथा समुद्रों के नाम कह कर सर्व द्वीप समुद्रों की वलय व्यास सूची व्यास लाने के विधान तथा प्रमाण का और उनको बादर सूक्ष्म और बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल लाने का, विधान प्रमाणादिक का जंबूद्वीप के समान औरों के खंड प्रमाण लाने का विधान; समुद्रों के रसादिक विशेष का और उनके विषै भोग भूमि, कर्म भूमि क्षेत्र के विधान का कर्म भूमि विषै उत्कृष्ट अवगाहना लिये एकेन्द्रियादिक जीवों के प्रमाणादिक का आयु वा वेदों का वर्णन। इन प्रासंगिक वर्णनों के पश्चात ज्योतिष्कनि का स्थान का, तारानि का अंतराल का, बिंबों के स्वरूप का, चौड़ाई मोटाई के प्रमाण का, किरणों के प्रमाण का, चन्द्रमा की वृद्धि हानि होने के विशेष बिंबों के चलाने वाले देवों के प्रमाण का, गमन करने के विशेष का, जंबू द्वीपादि में उनके प्रमाण का वर्णन। प्रसंग वश राम के अर्द्ध छेद पड़ने के स्थान कह कर सर्व ज्योतिष्कनियों के प्रमाण का वर्णन। एक चन्द्रमा के परिवार के प्रमाण का अट्ठासी ग्रहों के नाम का, जंबू द्वीप के तारों को विभाग का, चन्द्रमा सूर्य का अंतराल व चार क्षेत्र का और दिन रात्रि के परिमाण के हानि के विधान का, उसमें ताप तम फैलने का, और सूर्य देखने का इत्यादि अनेक वर्णन है। इसके पश्चात् चन्द्रमा सूर्य ग्रहों के नक्षत्र भुक्ति लाने का विधान। अयन तिथि मासादिक का विधान नक्षत्रों के तारा आकारादिक का वर्णन। चन्द्रमादिक के आयु का और देवियों का वर्णन है।

(५) वैमानिक लोक का वर्णन पृ० ४८१ से पृ० ५४० तक।

मंगल करने के पश्चात् स्वर्गादिक के नाम का स्थान और वहां स्थित विमानों की गणना, नाम स्थान और उनके विस्तारादि का प्रमाण; वर्ण आधार और इन्द्रियों का स्थान वा चिह्न इन्द्रियों का नगर प्राकारादिक और इन्द्रियों के स्वामान्यादिक दोनों कारण। और नगरों में विशेष रचना। इन्द्रादिक की देवी आदि का प्रमाणादिक और इंद्र वा देवांगनाओं के उत्पन्न होने का स्थान। वैमानिकों के

प्रवीचार किया अवधि-ज्ञान, अंतराल और तहां उत्पन्न होने वाले जीव और उनकी आयु का वर्णन। लौकान्तिक देवों का स्थान, कुलादिक और देवियों की आयु, देवों के शरीर उश्वास, आहारादिक का प्रमाण और स्वर्ग में आने जाने वाले जीव, एका भवतारी जीव, शलाका पुरुषों की आगति। देवों के उपजने रहने का विधान फिर सिद्धों के स्थान स्वरूपादि अनेक वर्णन हैं।

(६) मनुष्य तिर्यग्लोक का अधिकार। पृ० ५४१ से पृ० ८१४ तक।

मंगल पश्चात् पंच मेरुओं का स्थान कह कर भरतादि क्षेत्र और हिमवान आदि कुलाचल और कुलाचलों के ऊपर, द्रह, अहनि में कमल, कमलों के ऊपर भेद मंदिरों में परिवार सहित वसती देवी और द्रहों ते निकली गंगानदी और नदी के पड़ने के कुंड और नदियों का गमन और समुद्र में प्रवेश द्वारादिकों का स्वरूप स्थानादिक का वर्णन। क्षेत्र कुला शलानि का प्रमाण। लाने का विधान कह कर मेरु गिरि और उसके वन और वनों में मंदरादिक तिनके प्रमाण स्वरूपादिक का वर्णन। परिवार सहित जंबू आदि दश वृक्षों का स्थान स्वरूपादि वर्णन। भोग भूमि तथा कर्म भूमि के विभाग और यमक गिरि और सीता, सीतोदा में बीसद्रह, और उनके निकट कांचन गिरि और दिग्गज पर्वत तथा गजदंत पर्वतों का वर्णन। विदेह क्षेत्र के दशों विभाग का और वक्षार गिरि विभंगा नदी देवारण्य वन तिनका वर्णन। विदेह क्षेत्र के गंगादिक उपसमुद्र और मागधादि तीन देव और तहां वर्षादिक प्रवृत्ति और तीर्थंकरादि होने की संख्या का वर्णन। प्रसंगवश चक्रवर्त्ति राजादिक, और तीर्थंकर की विभूति का वर्णन। विदेह देशों के नाम उनके षट खंड, विजयार्द्ध नदी तथा मंदिरों के स्थानादिक का वर्णन। विजयार्द्ध की श्रेणी में नगरादिक तथा म्लेच्छ खंड, विर्षे वृषभाचल होने का वर्णन। आर्य खंड में राजधानी के नगरों का वर्णन। भोग भूमि विर्षे तिष्ठिते नाभि गिरिन का स्थान प्रमाणादिक और कुलाचलों के कूट और वनादिक का वर्णन। जंबूद्वीप के पर्वत, नदी की संख्या और उनकी वेदियों की संख्या का वर्णन। भरत ऐरावत विजयार्द्ध के कूट और गजदंतों के कूट और वक्षार गिरिन के कूटनिन का नाम, प्रमाण, स्थानादिक और उन कूटों के ऊपर वसने वालों के नामादि का वर्णन। पूर्व पश्चिम अपेक्षा मेरु आदि का व्यास वर्णन। धातुकी खंड पुष्करादि विर्षे मेरु भद्र शाल विदेह देश गजदंत हैं उनके व्यासादि का वर्णन। जंबूद्वीप विर्षे देव कुरु उत्तर कुरु और कुलाचल और क्षेत्र, भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तिनका धनुः एक बाण जीवा वृत्त निष्कंभ चूलिका पार्श्व भुजा का प्रमाण। अनेक प्रकार जीवादि लाने के कारण सूत्रों का वर्णन। भरत ऐरावत क्षेत्र में कालादिक पलटनि होने का वर्णन। और वहां जैसी प्रवृत्ति होती है उसका वर्णन, इस भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में

चौदह कुलकर, चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्त्ति, नव नारायण प्रति नारायण, बलभद्र और ११ रुद्र उनका नाम आयु आदिक का वर्णन। उन लोगों के होने का समय, तीर्थंकर का देश वर्ण का दुखमा काल में शक और कल्की होता है उसका और आदि अंत के कल्कियों के कर्त्तव्य। दुखमा काल के अंत में धर्मादि नाश होने का कथन। दुखम दुखमा काल की प्रवृत्ति का और उसके अंत में प्रलय होने का वर्णन। दुख समय किन्हीं युगल के बचने का और फिर दुखमा काल होवे उसके उसके अंत में चौदह कुलकरों और दुखम सुखमा काल विषैं तीर्थंकर चक्रवर्त्ति नारायण प्रति नारायण बलभद्र होते हैं उनके नामादिक का और जहां जैसा काल प्रवर्त्तित है और म्लेच्छ खंड में जैसे काल पलटता है उसका वर्णन। द्वीप तथा समुद्रों के अंत में चौगिर्दा जो वेदी है उसका वर्णन। इस प्रकार जंबुद्वीप के वर्णन के पश्चात् लवण समुद्र का वर्णन है। वहां उसके अभ्यंतर पाताल हैं तिनका और उसके जल की ऊंचाई के बढ़ने घटने का वर्णन, उनके व्यास का, उसके जल का, चन्द्रमा सूर्य के अंतरालादिक का और पातालों के अंतराल का, उस समुद्र में वेलंधर नाग कुमार रहते हैं उनका और पर्वतादिक हैं उनमें देव रहते हैं तिनका और द्वीप हैं तिनमें वेलंधरन रहते हैं उनका, कौन द्वीप रहते हैं उनका उनमें रहने वाले नागवादि देवों का। द्वीपों में बसने वाली कुभोग भूमियों का, उनके स्थान नाम तथा प्रमाणादि का वर्णन है। धातकी खंड पुष्करार्द्ध का वर्णन। वहां चार इक्ष्वाकार पर्वतों का और वहां स्थित कुलाचलादिकों के प्रमाण कुलाचल क्षेत्रों के आकार और उन द्वीपों की परिधि का प्रमाण वर्णन कर कुलाचल क्षेत्रों के व्यास का, और विदेह देशादिक के आयाम का और कुरु वृक्ष तथा नदियों के गमन विशेष का वर्णन। मानुषोत्तर पर्वत के प्रमाणादिक का और उसके ऊपर कूट है जहां देवादि निवास करते हैं तिनका वर्णन। कुंडलगिरि, रुचक गिरि का स्थान प्रमाणादिक का और तिनके ऊपर कूट हैं उनका और उनपर बसे हुए जीवों का वर्णन। द्वीप तथा समुद्रों के स्वामियों का वर्णन। नंदीश्वर द्वीप में बावन पर्वत उनके ऊपर चैत्यालय, सोल-हवा बड़ी तथा चौंसठ वनों का वर्णन। उनके स्थान तथा प्रमाणादिक का वर्णन। देवों द्वारा वहां होने वाले अष्टाह्निक पर्व का महोत्सव और चैत्यालयों के जघन्यादि प्रमाण का वर्णन। चैत्यालयों की अनेक रचनाओं का वर्णन। जिन बिंब के अन स्वरूप का वर्णन। अंत में मंगल कर के कर्त्ता का नाम सूचन करके पंच परम गुरु से अभीष्ट फल की प्रार्थना करके ग्रंथ समाप्त किया जाना। अंत में कई समाचार कह कर ग्रंथ को समाप्त करना। ग्रंथकर्ता का नामः —

इदि णेमिचंद मुणिणा अप्प सुदेणा भयणंदिवच्छेणा। रइयो तिलोय सारो खमंतु ते बहु सुदाइरिया॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुत ज्ञान का धारी वीर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तिकावत्स शिष्य ऐसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यह त्रिलोक सार नामा ग्रंथ रच्या है ताको बहु श्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करो।

No. 430. Śalihotra, by Tṛivikramaseta. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—11×6 inches. Lines per page—20. Extent—600 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of Composition—1694 Samvat or A.D. 1637. Place of deposit—Paṇḍitā Gangā Sahāya Bājapai, Alīpore, Rāe Barelī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ सालिहोत्र अश्व वर्नन लिख्यते। दोहा॥ जद्यपि पंडित मंडलो मंडित सभा अनूप। बोल बोध तिन मापहो कहे त्रिविक्रम भूप॥ भानु तनै आये हदे नंदन तुमरे वंत। करि प्रणाम विनती करी होहु प्रसन्न तुरत॥ तुरंग देव पशु सब कहै तामे जो गुन दोष। ताहि प्रगट करि कहत हौं सुनहु संत तजि रोष॥ चौपाई॥ पाँठ पच्छवंत सब बाजो। चलहि व्योम गंधर्व समाजो। तीनि लोक मंह जो कछु अहई सो तुव आसहु भिन्न न रहई। देषा सक्र वेग जुत वाहा। सालिहोत्र मुनि ते तब काहा। विनती मोर चित्त मह धरहु। वाहन होय तुरय सो करहु। जद्य माहि पति दैत्य जुमारा। वारन ते नहि होय सभारा। मुनि विनती वासव कै रायो दया छांडि काटो हय पांषा।

End—सम्वत्सरे निगम नन्दु रस न्दु सुके वैशाष शुक्ल दसमी सुतिथा च पूरि हम्मीर सेन। तनयेन गुणान्वतेन श्रीमद् त्रिविक्रमसेन हयेपरोक्षा।
दोहा॥ जुग नव रस ससि वर्ष भुग। दशमी माधव मास। शुक्लपक्ष विक्रम कियो तुरय चिह्न परकास। श्रयविक्रम हम्मीर सुन हर प्रिय सेवक भूप। तुरय बंश सुष हेतु लगि भाष्यौ ग्रन्थ अनूप॥

अश्व परीक्षाने माषा त्रिविक्रम सेन विरचित विरचिते द्वैसो तितिध्यय।
दोहा—महाराज अर्जुन नृपति। सालिहोत्र रुचिमान। पंडित रामदयाल सों सुधवायो हितजानि। तेहि गंगाप्रसाद पुनि अति हर्षाई। दोहा छन्दै चौमदो दीन्हो सुलभ बनाइ। सोम दशमि वदि कार रहन भवसु वसु सोस सवर्ष। नकल ताहि प्रति तें कियो बंसीधर जुत हर्ष। सोरठा॥ रच्यौ त्रिविक्रम राय सालिहोत्र वरनन तुरय। अष्टोदोय अध्याय दोहा सत्रह पंच सत। इति शालिहोत्र समाप्तः

Subject—

पृष्ठ १—राम स्तुति, अश्वों की पर विहीन होने की कथा।

पृष्ठ २—अश्वदेश उनकी प्रकृति और जाति परीक्षा।
पृष्ठ ३—अश्व शुभाशुभ लक्षण और अंग परीक्षा।
पृष्ठ ४—घोड़ों की भौंरो का वर्णन।
पृष्ठ ५—अश्व के रंगों का वर्णन।
पृष्ठ ६—अश्व के तिल, बूंदा, नाद, स्वभाव की परीक्षा विधि।
पृष्ठ ७—घोड़ों के उत्पात स्वेद गंध और अंगप्रमाण का वर्णन।
पृष्ठ ८—अश्व की आयु और दंत परीक्षा का वर्णन।
पृष्ठ ९-१०—अश्व को छः ऋतुओं में पोषण करने की विधि वर्णन।
पृ० ११—घोड़े के शिर दर्द की परीक्षा और उसकी औषधी—नस्य औषधि.
पृ० १३—गर्भवती घोड़ी की परीक्षा का वर्णन।
पृ० १४—वात पित्त कफादि उत्पत्ति और उनके प्रलेप का वर्णन।
पृ० १५—घोड़ों के मुख और नेत्रों की चिकित्सा।
पृ० १६— ,, तिमिर जल प्रवाह और रक्त आदि की चिकित्सा।
पृ० १७— ,, नेत्र पटल और मुंजा नेत्र चिकित्सा।
पृ० १८ ,, स्वांस, कास और सन्निपात रोग की चिकित्सा।
पृ० १९— ,, घोड़े के कृमिरोग और कर्ण रोग की चिकित्सा
पृ० २०— ,, पित्तकास और श्लेषकास की ,,
पृ० २१— ,, त्रिदोष और व्रण रोग की ,,
पृ० २२ ,, पित्त दोष की ,,
पृ० २३ ,, व्रण रोग और पद रोग की ,,
पृ० २४ ,, वात, पित्त और कफज्वर की ,,
पांव लंग की ,,
पृ० २५—अतीसार रोग ,, ,,
पृ० २६—शूल ,, ,, ,,
पृ० २७—कृमि और मूत्र ,, ,,
पृ० २८—पथरी, कृत् और सोथ रोग ,, ,,
पृ० २९-३०—वात पित्त कफ अंड रोग की ,, ,,
पृ० ३१—वात पित्त कफ उदर रोग की ,, ,,
पृ० ३२—वातोत्कर्ष रोग की ,, ,
पृ० ३३—ग्रीवा रोग की
पृ० ३४—घोड़ों के उन्माद रोग की चिकित्सा
पृ० ३५— ,, प्रलंग
पृ० ३६ सोथ त्रिदोस दखन सोपत्रिरोष रोग

पृ॰ ३७—विषसाधविषं साध्यालय को चिकित्सा

पृ॰ ३८—४० नाम पते वात पितकफ के अन्य रोगों को चिकित्सा।

No. 431. Hanumāna Tīkā, by Tulasī. Substance—Country-made paper. Leaves—5. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—60 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—M. Brajalāla, post Office Jagadīśpur, District Rāe Bareli.

Beginning—श्रो गणेशायनमः हनुमन टोका लोषतेः ॥ तुलसोकृत रामदूत को जैः ॥ दोहा ॥

वन्दो आदो भवानो अम मघा सुष धाम।
क्रोपा करो जन जानो कै होई सोध्य सब काम ॥ दोहा
बोर बषानो पवन सुत जनत सकल जहान।
धन्य धन्य अंजनो तनै संकट हरो हनुमान ॥
जै जै हनुमान अगंगो। जै जै महावोर बजरंगो ॥
जै जग वंदनो सोल अगारा। जै कपोस जै पवन कुमारा ॥
जै अदोवंत अमोल अवोकारो। अरो मरदा जै जै गोरधारो ॥
अंजनो वोद्र जब तुम्ह लोन्हा। जै जै सब देवन्ह कोन्हा ॥
बाजो दुंदभो गगन गंभोरा। सुर मुनो हर्ष अतुर मन पोरा ॥
कंपे सोंधु लंका संकाने। छुटो वंदो देवतन्ह आन्देः
रोषो समुह नोकर चलो धाये। पवन तनै को पद सोर नयेः ॥
वोर वर पनो स्तुतो करो नाना। नोरमल नाम धारा हनुमानाः ॥
सकल दोपे मोलो अगमत ठानाः। दोन्ह बताई लाल फल पाना ॥
सुनि वचन कपो अति हरषाने। रवोरथ प्रासो लाल फल जानेः ॥
रथ समेतो कपो कोन्ह आहाराः। सोर भय तहा अभै कारा

End—ये वंचन को केतो वाता ॥ नाम तुमार सकल सुष दाता ॥
करो क्रोपा जै जै अगा सामो ॥ वरन अनेग नमामो नमामो ॥
भैाम परे अदो करेई ध्याना ॥ सुष दोष नै वेरी सुजना ॥
मांगल दायेक को ले लाये ॥ सो नर तासु तुरात फल पाये ॥
बह्म वोस्न सोंभु सुरसारो ॥ ईतो सुदमा जै जैतो गोसाई ॥
अंजनो तनै नाथ हनुमाना ॥ सो तुलसो के कोरा नोधाना ॥

दोहा—जै कपोस सुग्रोव जै अंगद हनुमान
राम लषन सोधा जानको सदा करै कल्यान। ईति

हनुमान टीका संपूरणो सामतं राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

१६	२	१२	महा
६	१०	१४	वीर
८	१८	४	तोस

सुर्यंति पसु पक्षीणं पठंतो सुक सरोकांदुत सुपनोयतो नच सुरान चपंडोता अर्जुन ते कहा कोष्ठ जो सलोका कोष्ठ कोष्ठ कोष्ठ कोष्ठ

Subject—

भवानो स्तुति, पवन सुत वंदना, हनूमान का बल प्रताप वर्णन। लंका जाने, सोता जो को धैर्य बंधाने राक्षसों को मारने, लंका को जलाने, रामचन्द्र के पास सोता का संदेश लेकर आने का वर्णन। इसके पश्चात् पुल बांधने में सहायता करना—युद्ध करना। सुखेन को गृह सहित लाना? सजीवन पर्वत सहित लाना, रामचन्द्र के साथ सदा रहना और उनमें भक्ति रखना, हनूमान के अन्य नाम, बल पराक्रम वर्णन, हनुमान से विनय करना, अंत में सब को जय जय

No. 432(a). Barwai Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—14 × 5¾ inches. Lines per page—9. Extent—450 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rājāpustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बरवै रामायण लिख्यते ॥ छंद बरवै ॥

गन नायक बर दायक देव मनाय।
विघ्न विनासन करुक न होहु सहाय ॥ १
श्री गुरु पद रज अम्बुज हृदय संभारि।
बरनन करों राम जस कृपा सुधारि ॥ २
श्री रघुवर यंग सोभित अतुलित काम।
भगत चकोर पूर्ण विधु करों पनाम ॥ ३ ॥
भरत भारतो नायक छंद विधान।
वालमीक यह प्रद रहि करि गुनगान ॥ ४ ॥

End—यहि बिधि अवध नारि नर प्रभु गुनगान ।
करहि देव सनिसि तुलसी जात न जान ॥ ३९३
भजन प्रभाव भक्ति वहु बरनेउ बेद ।
तुलसी गायो हरि जस निमि भव पेद ॥ ३९४
करन पुनीत हेतु निज वचन विवेक ।
तुलसी अयसेहु सेवत रावत टेक । ३९५ ॥
सीता राम लषन संग मुनि के साज ।
तुलसी चित्रकूट बस रघु रघुराज ॥ ३९६

इति श्री वरवै रामायण तुलसीदास कृत उत्तर काण्ड संपुरणम् शुभ मस्तु सिद्धिमस्तु ॥

No. 432(*b*). Barvai Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājapura (Bandā). Substance—Country-made paper. Leaves—14. Size—$12\frac{1}{2} \times 5\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—21. Extent—440 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A.D. 1844. Place of deposit—Bābu Padma Baksha Simha, Lavedpur, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वरवै रामायण लीखते ॥ वरवै छंद लिषिते ॥

गन नायक वर दायक देव मनाय ।
विघ्न विनास प्रकासक होइ सहाय ॥ १
श्री गुरु पद रज पंकुज हीदय समारि ।
वरनन करौं राम जस कृपा सुधारि ॥ २
श्री रघुवर अंग सोभित अतुलित काम ।
भगत चकोर पूर्ण विधु करौं प्रणाम ॥ ३
भरत भारती नायक छंद विधान ।
वालमीक वह श्रटि रहि करि गुनगान ॥ ४

End—यहि विधि अवध नारि नर प्रभु गुन गानि ।
करहि दिवस निसि तुलसी जात न जानि ॥ ३९३
भजन प्रभाव भक्ति वहु बरनेउ बेद ।
तुलसी गायो हरि जस मिटि भव खेद ॥ ३९४
करन पुनीत हेतु निज वचन विवेक ।
तुलसी ऐसेउ सेवत रावत टेक ॥ ३९५

सीता राम लषन संग मुनि के साज ।
तुलसी चित्रकूट वसि रघुवर राज ॥ ३९६ ॥

इति श्री वरवै रामायन तुलसीदास कृत उत्तर कांड संपूर्ण शुभ मस्तु संवत् १९०१ शाके १७६७ फाल्गुणं मासे शुक्ल पक्षे पंचमं तिथौ गुरुवासरे पुस्तकं संपूर्ण सन १२५२ श्री राम श्री देवि ।

No. 432(c). Barwai Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rājapura (Bānda). Substance—Country-made paper. Leaves—10. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—9. Extent—80 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1909 Samvat or A. D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ वरवै रामायण तुलसिदास कृत लिख्यते ॥
केश मुकुत सखि मरकत मनि मय होत ।
हाथ लेत पुनि मुका करत उदोत ॥ १
सम सुवरन सुषमा कर सुषद न थोर ॥
सीय अंग सखि कोमल कनक कठोर ॥ २ ॥
सिय मुख सरद कमल जिमि किमि कहि जात ।
निसि मलीन वह निस दिन यह बिलात ॥ ३ ॥
बड़े नयन कट भृकुटी भाल विशाल ।
तुलसी मोहत मनहिं मनोहर बाल ॥ ४ ॥
चंपक हरवा अंग मिलि अधिक सुहाइ ।
जानि परै सिय हियरें जब कुम्हलाइ ॥ ५ ॥

End—पकहि एक सिखावहि जप तनु आप ।
तुलसी राम प्रेम कर बाधक पाप ॥ २२
मरत कहत सब सब कहं सुमिरहु राम ।
तुलसी अब नहि जपत समुझि परिनाम ॥ २३
तुलसी राम नाम जपु आलस छांडु ।
राम विमुख कलिकाल को भयो न भांडु ॥ २४ ॥
तुलसी राम नाम सम मंत्र न आन ।
जो पै चाहहु राम पुर तन अवसान ॥ २५
नाम भरोसो नाम बल नाम सनेहु ।
जन्म जन्म रघुनंदन तुलसिहि देहु ॥ २६

जन्म जन्म जहं जहं तनु तुलसिहि देहु ।
तहं तहं राम निवाहिव नाम सनेहु ॥ २७ ॥

इति श्री वरवै रामायण उत्तर काण्ड समाप्त ॥ तुलसीदास हृत लिषिते सिव शंकर मिसिर संवत् १९०९ ॥ राम

इति

No. 432(*d*). Bhanwaragitā, by Śrī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size—6×4 inches. Lines per page—22. Extent—400 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1916 Sambat or A. D. 1859. Place of deposit—Paṇḍita Gayā Prasad, village Naipālapura, post office Sītāpur, tahsil Sītāpur, district Sitapura.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री तुलसीदास कृत भंवर गीता लिख्यते ॥ राग जैत श्री ॥ नंद जू हौं ढाढ़ो दस स्यंदन जू को नगर अवध ते पायो अतनो.कहि पति हारन हरि सों करि मेरा मन भायो ॥ महाराज व्रजराज आजु जांकतुव येक दुवारे ॥ अवध राज रघुवंस नृपति गुन कीरति पढ़त पुकारे ॥ जो कहि कहि काकुत्स भूप गुन अरु इक्ष्वाकु बड़ाई । अज दलीप रघु दसरथ राजा शुभतल कीरति छाई अजहुं बहुत कहत गुन उन करुनासिंधु सदाई ॥ मैं अज्ञान अनुप भांति मेरी कछु कहत न आई । यह सुनि नंद अनंद मान दै ततछन मोहिं बोलायो । आयसु पाइ आइ अंतःपुर । दै असीस सिर नायो ॥

End—कहा भयो कपट जुवा जोहारो । समर धीर महावीर पंचपति क्यों देहैं मोहि हीन उघारो । राज समाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्म धुरधारी ॥ अबला अनघ अनीसर अनुचित होत हेरि करिहैं रखवारो ॥ यो मन गुनत दुसासन दुरजन तमकि गहो तकि दुहु कर सारो । सकुचि गात जोवत कमठी ज्यों हहरो हृदय विकल मइ भारो ॥ अपतिन को विलोकि बल सकल आस विस्वास विसारो । हाथ उठाइ अनाथ नाथ सो पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारो ॥ तुलसी परषि प्रतीति प्रीत अति आरत पाल कृपाल मुरारो ॥ वसन वेष राख्यो विसेषि लषि विरदावलि मूरति नर नारो ॥ ६१ ॥ गह गह गगन दुंदुभी बाजो बरषि सुमन सुरगन गावत जस हरष मगन मुनि सजन समाजो ॥ सानुज सेगन सचिव सो जे धन भय मुष मलिन पाइ पल पाजो ॥ लाज गाज अव वनि कुचाल कलि परो बजाइ कहं कहु बाजो ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया को भलो भूरि भैमभरिन भाजो । कहि पारथ सारथी सराहत गई बहोरि गरीब नेवाजो सिथिल सनेह मुदित मनहो मन वसन बोच बिच बधू बिराजो सभासिंधु जदुपति

जलमय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भाजो ॥ जुग जुग जग साकेन्ह सब ही के समन कलेस कुसाज कुसाजो ॥ तुलसी को न होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजो ॥ इति श्री तुलसीदास कृत भंवर गीत। समाप्तं ॥ संवत १९१६ भाद्रमासे कृष्णपक्षे तिथौ षष्टं भृगुवासरे लिषतं कृष्णकुमार त्रिपाठी महमदपुर।

No. 432(*e*). Chhandāwali Rāmāyana, by Tulasi Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Old, country-made paper. Leaves—20. Size—11 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—120 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1911 Samvat or A. D. 1854. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः

अथ छंदावली रामायण तुलसीदास कृत

दोहा—दशकंधर घट कर्म अघ भार धरा दुख होइ।
    गई धमन गो देह धरि कहि सुरपति सों रोइ ॥ १

छंद चौपय्या—सुरपति गुरु बूझा सुरमति सूझा गे विधि लोक तुरंता।
  विधि सुर समझाये संग सिधाये जहं सोवत श्री कंता ॥
  दशमुख की करणी बहु विधी वरणी धरणी जेहि विधि रोई।
  सुनि सारंग पानी भई नभ बानी विधि जाना नहिं कोई ॥
  विधि वचन सुनाये सुर समुझाए तजहु सोच मन देवा।
  जो जन हितकारी प्रभु असुरारी करहि पार सोइ खेवा ॥
  बानर गो पूछा तन धरि रोछा बसहु जाहु महि मांही।
  अवधेश निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत तुम पाहीं ॥ २

End—

  नित प्रति सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करैं।
  गज बाजि राज समाज लषि सब बन उपवन·········फिरैं ॥
  बैठे सभा मंह जाइ श्री रघुबीर दुख सब के हरैं।
  हरि न्याउ स्वान उलूक को लषि लोग सब विस्मय करैं ॥
  मांडवी श्रुतिकीर्ति उर्मिला सबनि सुत द्वै द्वै जने।
  जानकी के सुत जुगल जाये सबन मन आनन्द घने ॥
  सनकादिक नारद मुनिवर सकल अवधहिं आवहीं।
  लषि जाहि रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहीं ॥

एक बार कोउ महि देव को सुत सभा महं ल्यायो मरो ॥
गुरु बुभ्रि तप तें मारि सुदृढ़ि तबहि सो उठि जिय परो ॥
यहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करें।
कहि दास तुलसी सुनत सब के वचन मन पातक हरें ॥

दोहा—सुनि सीता के जुगल सुत राम कीन्ह अनुमान।
लोक सिखावन देन हित बोले श्री भगवान ॥

इति श्री उत्तर कान्ड संपूरनम् ॥ लिखिते शिवशंकर मिश्र संवत् १९११ वि० राम राम राम राम..........................

Subject—राक्षसों के बोझ से पृथ्वी का गौ रूप से देवलोक को जाना ब्रह्मा का विष्णु के पास ले जाना तथा अवतार के लिये आकाशवाणी होना और देवों को अवध में वानर व रीछ रूप में जन्म लेने को कहना छंद १—२

राम का अंशों सहित अवतार लेना और अवध में आनन्द होना छंद ३—४

राम का क्रीड़ा करना और यज्ञोपवीत व शिक्षा प्राप्त करना, विश्वामित्र के साथ ताड़का तथा सुबाहु बध करना, गौतम को पत्नी का उद्धार व जनकपुर आगमन और धनुष भंग तथा सीता का विवाह वर्णन और मार्ग में परशुराम मिलन वर्णन छंद ६—७

राम वन गमन, दशरथ का प्राण विसर्जन, राम का प्रयाग होकर चित्रकूट आना भरत से राम की भेंट वर्णन छंद ८—९

जयंत का सीता जी के चोंच मारना और राम का उसे ताड़न देना, विराध वध, सरभंग से भेंट, राम लखन सीता का पंचवटी जाना, सूर्पनखा को नाक काट लेना, त्रिशिरा, खर दूषण वध, मारीच वध, सीता हरण गीध—रावण युद्ध, सबरी राम भेंट पंपासर पहुँचना और नारद से भेंट होना वर्णन छंद १०—११

राम से हनुमान और सुग्रीव से भेंट, वालि वध, सुग्रीव को राज देना और सीता की खोज कराना। छंद १२—१३

हनुमान का लंका में जाना सीता से भेंट तथा लंका जलाना, विभीषण के रावण का लात मारना और राम से मिलना। छंद १४—१५

राम लक्ष्मण व रावण, मेघनाद, कुंभकर्ण से युद्ध वर्णन विभीषण को राज देना व सीता से भेंट छंद १६—१७

राम का अयोध्या आना भरत से भेंट व राजगद्दी होना देवताओं का स्तुति करना, स्वान, उलूक, व ब्राह्मण बालक के न्याय की कथा वर्णन चारों भाइयों के दो दो पुत्र होना वर्णन। छंद १८—२२

इति

No. 432(*f*). Chhandāvalī Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Old paper. Leaves—16. Size—$10\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—8. Extent—136 Anushṭup ślokas. Appearance—Loose and old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1909 Samvat or A.D. 1852. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः। अथ छंदावली रामायन तुलसी दास कृत लिख्यते। दोहा॥

दशकंधर घट कर्म अघभार धरा दुःख होइ। गई गंभंत गो देह धरि कहि सुरपति सो रोइ। छंद चौपया। सुरपति गुर बूझा सुरपति सूझा गे विधि लोक तुरंता॥ विधि सुर समुझाये संब सिधाये जंह सोवत श्रीकंता॥ दशमुष की करणी बहु विधि बरणी बरणो जेहि विधि रोई सुनि सारंगपानी भइ नभ बानी विधि जाना नहिं कोई॥ विधि बचन सुनाये सुर समुझाये तजहु सोच मम देवा॥ जो जन हितकारी प्रभु असुरारी करहि पार सोइ सेवा॥ वानर गो पूछा तन धारि रीछ बसहु जाइ महि माही। अवधेश निकेता व्यूह समेता प्रभु आवत सुम पाही। दोहा। यहि विधि विबुध विरोचि गे गे सुर निज निज धाम। कछु काल बीते अवध प्रगट भये श्रीराम॥ ३॥ शशि बदन छन्द॥ जन हित-कारी प्रगट मुरारी। नरतन धारी छवि सुष कारी॥ मृदु भुजकारो अरि दल हारी॥ सुमुष निहारी बलि महतारी॥ अवध बिहारी भव भय हारी॥ जपत पुरारी सब अघहारी॥ अवध उघारी बहु मग मारी॥ तुलसी हितकारी शरण सभारी॥ ४॥ हरि गीतका छंद॥ संभारि शरण विचारि तुलसी राम जस गावत लियो॥ त्रय ताप समन कलेश हरन को मोर नहिं जग मग वियो॥ जेहि गाइ जमन किरात पल हरि पुर गये करि सुधि हियो॥ रघुवीर जस सुनि हिमत हरष्यो पुरो तिन अपनो कियो॥

End—सिय सहित रघुकुलमनि विराजत सुभग सिंहासन परे॥ सुभ सुमन बरषहिं हिये हरषहि ब्रह्मादि सब जय जय करैं॥ गहि छत्र चामर चमर असि धनुवीर तरकस के लये॥ भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमित चरनन दये॥ मुनि सिया श्री रघुवीर को अविवेक पुनि उर मैं धरैं॥ कह दास तुलसी जन्म को सुष लहि जलधि बिन श्रम तरैं॥ दोहा। नित नव मंगल अवधपुर करहि सकल नर नारि॥ लहहि चार फल अछत तन रघुबर रूप निहारि॥ १९॥ छन्द। नित प्रत सरित अन्हात बंधुन सहित प्रभु भोजन करैं॥ गज वाजि राज

समाज लखि सब देखि वन उपवन फिरै ॥ बैठे सभा महं जाइ श्री रघुवीर दुःख सब के हरै । हरि न्याव स्वान उलूक को लखि लोग सब विस्मै करैं ॥ मांडवी श्रुतिकीरति उरमिला सबनि सुत द्वै द्वै जने ॥ जानकी सुत जुगुल जाये सबन मन आनंद घने ॥ सनकादि नारद आदि मुनिवर सकल अवधहिं आवहीं ॥ लखि जाहि रघुवर के चरित सब बिधिहि जाइ सुनावहीं । एक बार कोउ महि देव को सुत सभा महं आयो मरो ॥ गुरु बूझि तपते मारि सद्र हित वहि सो उठि जिय परो ॥ यहि भांति राम चरित्र परम पवित्र नित नूतन करै ॥ कहि दास तुलसी सुनत सब के बचन मन पातक टरै ॥ दोहा । सुनि सीता के जुगुल सुत राम कीन्ह अनुमान ॥ लोक सिखावन देन हित बोले श्री भगवान ॥ इति श्री उत्तर काण्ड श्री गोसाईं तुलसीदास कृत छन्दावलि रामायनि समाप्त । शुभ मस्तु० संवत १९०९ लिखित वै वैशम्बदास श्रीराम ।

Subject—दशशीस, घट कर्ण आदि के पाप भार से पृथ्वी का दुःखी हो गो रूप धर इन्द्र के पास जाना, इन्द्र का बृहस्पति से परामर्श कर ब्रह्मा के पास जाना, ब्रह्मा का सान्त्वना दे क्षीरसागर में भगवान के पास जाना, राक्षसों की करनी भगवान से कहना, आकाशवाणी का होना, ब्रह्मा का सबको समझाना, वानर भालु होकर पृथ्वी पर जन्म लेने के लिये देवताओं को आदेश देना, भगवान का अयोध्या में जन्म लेने का संवाद कहना, काल पाकर भगवान का अयोध्या में जन्म लेना, बाल लीला वर्णन, ग्यारह वर्ष में उपनयन, विश्वामित्र का राम को मांगना, ताड़का वध, विश्वामित्र द्वारा यज्ञ प्राप्ति, सुबाहु वध, मख-रक्षा, अहिल्या तारन, मिथिला-गमन, धनुष-भंग, सीता-विवाह, अयोध्या-गमन, मार्ग में परशुराम से भेंट, धनुष देकर वन-गमन पृ० ३—४ बालकांड

राजा दशरथ का मुकुर देखना और बुढ़ापे का आभास पाना, राम को युवराज पद देने का करना संकल्प, केकई का भरत के लिये राज-पद मांगना, रामचन्द्र को वनवास देना, सीताराम लक्ष्मण सहित वन-गमन, गंगा प्रयाग होकर चित्रकूट जाना, भरत का शोकाकुल होना, भरत का वन जाना, केवट से भेंट, भरत का राम से मिलना, पादुका पाना, पादुका लेकर वापस आना और नियम धर्म से रहना वर्णित है पृ० ४—५ अयोध्याकांड ।

जयन्त का जानकी-स्पर्श, उसकी आंखों का फोड़ा जाना, विराध-वध, सरभंग से भेंट, रामचन्द्र जी का पंचवटी जाना, सूर्पनखा का नाक कान विहीन होना, खरदूषन-त्रिसिरा-वध, रावण का मारीच के पास जाना, मारीच का स्वर्ण मृग बनना, मारीच वध, मारीच का शब्द सुन लक्ष्मण का राम के पास

जाना, रावण द्वारा सीता का हरा जाना, राम का दुखी होना, सीता को खोजना, गृद्ध से भेंट, उससे समाचार पाना, सेवरी से भेंट, पंपासर आना नारद से भेंट सुग्रीव का राम को देख कर विस्मय युक्त होना, हनुमान को भेद लेने के लिये उनके पास भेजना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है पृ० ५—६ आरण्यकांड।

हनुमान का राम को ले आकर सुग्रीव से मिलाना; सुग्रीव और राम की मित्रता का होना, सुग्रीव का कष्ट समाचार सुन कर राम का वालि के मारने का प्रण करना और सुग्रीव को राजा बनाना। सुग्रीव का सीता की खोज का प्रण करना, वालि का मारा जाना, सुग्रीव-तिलक, चौमासे का निवास, सुग्रीव का सीता को खोज के लिये बंदरों का भेजना, बंदरों का विवर प्रवेश एक स्त्री से भेंट, अदृश्य से समुद्र तीर आना सूत्र रूप से वर्णन किया गया है। पृ० ६—७ किष्किंधा कांड

हनुमान का सागर पार जाना, लंकिनी वध, हनुमान का छोटा रूप धर कर लंका में प्रवेश, सीता को खोजना, विभीषण से भेंट, हनुमान का सीता को देखना, रावण का आकर सीता को दुःख देना, हनुमान का मन में कोधित होना। मुद्रिका का सीता के आगे फेंकना उसे देख सीता का हर्ष विस्मय युक्त होना, हनुमान का प्रगट होना, फल खाने की आज्ञा मांगना, बगीचे में फल खाना, उत्पात मचाना, रखवालों को मारना, मेघनाद द्वारा हनुमान का मारा जाना, रावण की सभा में पूंछ का तेल पट से बांधा जाना, उसके द्वारा लंका-दहन, राम का ससैन्य लंका-गमन समुद्र का पैर पड़ना, नल द्वारा सेतु-बंध मंदोदरी का रावण को समझाना, रावण की मंत्रणा, विभीषण को लात मारना, विभीषण का राम के पास आना, अंगद का रावण के पास जाना, अंगद-पैज, लंका पर चढ़ाई, सूत्र रूप से वर्णन किया है। पृ० ७—१० सुन्दर कांड

राम और रावण की सेनाओं की लड़ाई, मेघनाद-वध, सुलोचना का सती होना, रावण का मारा जाना, जानकी का राम के पास आना, सैन्य समेत पुष्पक पर चढ़ अयोध्या प्रयाण, प्रयाग आना, हनुमान को भरत के पास भेजना संक्षेप में वर्णन किया गया है। पृ० १०—१३ लंकाकांड

भरत का हनुमान से राम आगमन की सूचना पाना, भरत का घर आकर समाचार देना, रामचन्द्र का भरत गुरु और प्रवासियों से भेंट, वशिष्ट और सुमंत्र द्वारा राज्याभिषेक का होना, भरतादिक भाइयों का अंगद हनुमान सहित सेवा का वर्णन, सब भाइयों के दो दो पुत्रों का होना, नारदादि का नित्य आना, अयोध्या का संवाद ब्रह्मा के पास जाकर कहना, रामचन्द्र का न्याय वर्णन, ब्राह्मण के मृतक पुत्र का सभा में आना, गुरु की आज्ञा से शुद्र तपसी को मारना ब्राह्मण के

मृतक पुत्र का जी उठना, सीता के दोनों पुत्रों का मिलना और लोक शिक्षा के लिये चरित्र करना। सूत्र रूप से वर्णन किया गया है। पृ० १३—१६ उत्तरकांड।

No. 432(*g*). Chhappaya Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—$9\frac{1}{2}$ × $4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—9. Extent—134 Anushṭup ślokas. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golāganja, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः। अथ छप्पै रामायन लिख्यते। छन्द छप्पै॥ श्री गुरुचरण सरोज बंदि गणनाथ मनावौ। जेहि प्रसाद शुभ होई राम सो विनय सुनावौ। भारत भंजन राम नाम मुनि साधुन गाई। सुमिरत गाढ़े नाथ होत सब ठौर सहाई। अवनि रघुपति अवध पति करौ नाम सोई जाप त। दौर दौर श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ १॥ रह्यो कपोतो स्वपति समेत बैठि तरु पासा। गगन उड़े सोचा भूमि तल दैवो प्रकासा। व्याध गहे करवान देखि लोचन जल मोचति पक्षी स्वमन महा सभीत दीष दंपति उर सोचित। दुष्ट दलन करुणायतन राषि लेहु सरनापना। दौर दौर श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ २॥ उठे तत्छन मेघ वृष्टि जल अनल बुतानो। निकसि भुवंगम डसो बुद्धि व्याधो बिकलानो॥ निकसो वाको तीर जाइ संचानहि मारो। अस्तुति करत कपोत नाथ अनतारत हारो। सो प्रभु वेगि दयाल हो त्रिमि कपोत परदापना। दौर दौर श्री रामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३॥

End—गुरु अनुसासन पा सचिव साजि आरती बनाई। राम सिंहासन दीन्ह राज गुरु मुनि समुदाई॥ भरत गहे कर छत्र चमर सियराम निहारो। मुदित जन्म फल पाइ मातु आरतो उतारो॥ बिदा होय सब जयति करि भक्ति देहु रामापना। दौर दौर श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ २९॥ इन्द्रेउ बंदि सब देव विबुध कोटि तेतीस हरषि कह। अस्तुति करत बनाय पुहुप जयमाल हरषि गह। शंभु आप अस्तुति करत विविधि भांति सियरामा। पाय रजाय सब चले देव सब निज निज धामा॥ बिदा किये सब कै प्रभु देव जयति कह आपना। दौर दौर श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३०॥ राम चरित अवगाह सिन्धु कोउ पार न पावै। शुक सारद निगमादि नेति कहि निज मुख गावै। शंभु उमा सुनि भरद्वाज सुनि जागवलिक मुनि। काग भसुंडि सुनि गरुड़ मांगि कह तुलसीदास गुनि॥ कहे सुने रति राम यह येक राज मति पापना। दौर दौर श्रीरामचन्द्र मम हरहु सोक संतापना॥ ३१॥ इति श्री

तुलसीदास कृत छप्पै रामायन उत्तर काण्ड समाप्त सतगो सुपानः ॥ रावन नासवान ॥ २१ ॥ सो यकतीस छप्पै हैं। सेठा। १। रंग (२) फोक (३) पंच। ४। वचन। ५। गीसो। ६। संकट मोचनो रामायन पाठ करै तो रावन मरै सो मन है। चेतौ तौ सब काम सिद्धि होइ। बौ तावरी करौ तौ पावौ भव-सागर ते नर तन नाव है ॥ संव १२९१० ॥ राम सीय।

Subject—गुरु चरन वंदना, कपोत के जोड़े को विपट, (वाज—व्याध और अग्नि से) उसका उद्धार, भगवान के अनेकों नामों की वंदना, ताड़का, सुबाहु का वध, मख को रखवालो, अहिल्या का शाप मोचन और वरदान, विदेह का प्रण रखना, धनुष भंग, परशुराम का सरासन देना, सीता विवाह और अयोध्या गमन का संक्षेप में वर्णन किया है। पद० १—५ बालकाण्ड।

वन गमन, केवट का पद धोना, चित्रकूट वास, कोल भीलों को तारना, भरत को चरणपादुका देकर तुष्ट करना, भरत का विनय करके पलटना वर्णन किया है। पद० ६—अयोध्याकाण्ड।

जयंत का शरण आना, एक आंख का फोड़ना, विराध खर दूषण, कपटी मृग (मारीच) कबंध आदि का वध, गिद्ध की सुगति, सबरी को भक्ति देना, वालि के भय से सुग्रीव का पर्वत पर वास करना संक्षेप में कहा है। पद० ७ आरण्यकाण्ड।

हनुमान का भगवान के पास जाना, सुग्रीव की मित्रता, वालि का वध, वर्षा ऋतु में निवास, सुग्रीव को राज देना, हनुमान को मुद्रिका देकर भेजना, हनुमान का प्रसन्न हो खोज करने जाना, वानरों के साथ वन, पर्वत, खोह, ताल आदि का खोज करते हुए समुद्र तीर आना, संपाती से भेंट, संपाती का साक्षात होना, सीता का निशान बतलाना समुद्र को देख कर सब का हहर कर विलाप करना, संक्षेप में कहा है। पद० ८—९ किष्किंधाकांड।

जामवंत की बात सुनकर हनुमान का प्रसन्न हो समुद्र नाघने के लिये जाना, सुरसा से भेंट, सिंघि का वध, मैनाक स्पर्श, समुद्र का पार होना। लंकिनी को मुष्टिका प्रहार, लंका में घर घर सीता का खोजना, निराश हो राम नाम जपना, विभीषण भेंट, विभीषण से युक्ति पूछ कर अशोक-वन में आना, पल्लव में छिपना, प्रगट होने की युक्ति विचारना, दशकंधर का स्त्रियों सहित आना, जानकी को डरवाना, जानकी द्वारा तिरस्कृत हो वापस जाना, सीता का व्याकुल हो आग मांगना, हनुमान का उसी समय मुद्रिका देना, सीता का उसे पाकर विस्मय हर्षयुत होना, हनुमान का प्रगट होना, जानकी से संदेसा कहना, सीता का व्याकुल होना, हनुमान द्वारा सान्त्वना पाना, हनुमान का बाग में जाना, फल खाना, वृक्ष तोड़ना, अक्षयकुमार आदि का मारा जाना, मेघनाद का आना,

उसके द्वारा हनुमान का बांधा जाना, पूंछ में तेल पट बांध अग्नि लगाना, लंका-दहन, विभीषण का घर जलने से बचना, हनुमान का समुद्र में कूद कर पूंछ बुझाना, सीता से चूड़ामणि ले विदा मांग कर रामचन्द्र के पास आना, मधुवन का फल खाना, बंदरों से भेंट, सीता का विरह राम से कहना, मारीच, सुबाहु, कबंध आदि की याद दिलाना, चूड़ामणि देना, रामचन्द्र का कटक समेत समुद्र के किनारे जाना, विभीषण-भेंट, उसे अभय करना, लंकेश बनाना, रामेश्वर-स्थापना का संक्षेप में वर्णन है—पद १०—१९—सुंदरकांड।

भालू और बंदरों की सेना सहित समुद्र पार जाना, अंगद का बसीठी होकर जाना, युद्ध, कंप अकंप, महोदर, अतिकाय, मेघनाद महिरावण, कुंभकरण, रावण आदि का वध सीता भेंट, देवताओं द्वारा रामचन्द्र जी की स्तुति, विभीषण का राज्य तिलक, पुष्पक पर चढ़ कर प्रयाग आना, हनुमान का भरत जी के पास भेजना, संक्षेप में वर्णन है—पद २०-२६ लंकाकांड।

हनुमान का भरत से संदेसा कहना, भरत का गुरु माता, मंत्री पुरवासी सब को खबर देना, रामचन्द्र का पुष्पक से उतरना, सब से भेंट करना, गुरु की आज्ञा से मंत्री का रामचन्द्र को सिंहासन पर बैठाना, भरत का चमर हाथ में लेना, माताओं की प्रसन्नता, देवताओं का स्तुति करना, कवि द्वारा रामचन्द्र की महिमा वर्णन कथा का उद्गम शंभु-उमा, भरद्वाज, याज्ञवल्क्य, काग, गरुड़ द्वारा वर्णन कर संक्षेप में कथा समाप्त किया है—२७-३१ उत्तरकांड।

No. 432(*h*). Dohāwali, by Tulasi Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—85. Size—8¾ × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—740 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1249 Hijri or A.D. 1871. Place of deposit—Rājpustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः

दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहली द्वार।

तुलसी बाहिर भीतरौं जो चाहत उंजियार ॥ १

र २ अमित परमातमा सह अकार सिय रूप।

दोउ मिलि विधि जीव इव तुलसी बदत अनूप ॥ २

राम नाम को अंक लिखि साधनता सब सून्य।

अंक रहित सब सून्य है अंक सहित दश गुन्य ॥ ३

जथा भूमि सब बीज मय नषत नेवास अकास।

राम नाम सब धर्म मय जानक तुलसीदास ॥ ४

End—बैठि सिंघासन राम जू सुर विमान बहु भोर।
हरषित सुर बरषहिं सुमन सो जय जय रघुबीर ॥ ९८
स्यामल गैार किशोर वर विहरत सरजू तीर।
अस्वमेध कोटिन कियो सो जय जय रघुबीर ॥ ९९
यह साखी सिय राम जस सुमिरि करहु मनधीर।
तुलसी बरनै कहां लगि सो जय जय रघुबीर ॥ १००
तुलसी चतुरे नरन ते बचै न उर को हेत।
ज्यों शीशी रंग से भरी उपर देखाई देत ॥ १०१

इति श्रीराम चरित्रे दोहावली श्रीराम भक्ति संपादिनोनाम शतमो स्वर्ग ॥ सम्पूर्णम् शुभमस्तु मि: फागुन शुदी ११ सन १२४९ साल

No. 432(*i*). Dohāwali, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—49. Size—6 × 5 inches. Lines per page—22. Extent—750 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856 Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Ṭhākura Hanumāna Simhaji, village Vardaha, post office Kherighāt, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहावली लिष्यते ॥ दोहा ॥ राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार। तुलसी बाहर भीतर जो चाहे उजियार ॥ राम नाम के अंक निधि साधनता सब सुन्य। अंक रहित सब सुन्य है अंक सहित दस गुन्य। दुगुने तिगुने चोगुने पांच षष्ट अठ सात। आठी ते पुनि नैा गुने नैा के नव रहि जात ॥ नव के नव रहि जात तुलसी किये बिचार। रामै रान जो जगत मैं नहीं द्वैत संसार ॥ जथा भूमि सब बीज मय नषत नेवास अकास। राम नाम सब धर्म मय जानत तुलसीदास ॥ तुलसी रघुबर परम निधि निसि दिन भजो निसंक आदि अंत प्रति पालिहैं जैसे नव को अंक ॥ हरि सो हिय यें राषिये कोटि किये उपचार। मिटै न तुलसी अंक नव नव को लिषित पहार ॥

End—ब्रह्मज्ञान जबही भयो तुलसी त्यागे व पाठ। कैान बतावे रास मै सूब लाग रे काठ ॥ तुलसी तुम ज्यों कहत हैा संगत ते सब होय। आम्र उपरी राम सर बाहिन कस रस होय ॥ संगति भई तो का भयो मंन स्वभाव न जाहि। फूल जंत्र यक डार मै पाता क्यों न बसाय ॥ ज्यों जल कंजी पत्र नें ता धारो उर द्वार। तुलसी दास गनि गुन मुई तिन्हो न पायो पार ॥ तुलसी राम प्रताप ते

मिटत करम को रेष। ज्यो हरदी जरदो तजे चूना रह्यो न सेस ॥ यक तै। जल के मध्य है एक नभ्म को छोर ये दोनों एक ठौर कह तुलसी करत निहार सप्त ताल सर बेधियो हत्य बालि महि बीर। दयो राज सुग्रीव को जै जै जै रघुबीर ॥ बांध्यो सेत सिल तरो तरो कपि दल भीर कुटुम सहित रावन हत्यो जै जै जै रघुबीर ॥ इति श्री दोहावली तुलसी दास कृत समाप्तम सुभमस्तु दस्कत नीलकंठ कायस्थ घुंधा के संबत १८०६ भादो कृष्ण पष्टमयाम सुक्रवासरे।

Subject—श्री रामचन्द्र जी की महिमा और उनका प्रेम वर्णन।

No. 432(*j*). Dohāwalī, by Tulasī Dāsa of Rajāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—120. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—840 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A.D. 1837. Place of deposit—Paṇḍita Śyāma Bihārī Miśra, Golaganj, Lucknow.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥

अथ दोहावली लिक्यते ॥ तुलसी दास कृत ॥

दोहा—राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरो जो चाहै उजियार ॥ १
राम नाम को अंक निधि साधनता सब सुन्न।
अंक रहित सब सुन्न है अंक सहित दस गुन्न ॥ २
दुगुने तिगुने चैागुने पांच षष्ट अरु सात।
आठव ते पुनि नव गुने नै। के नै। रहि जात ॥ ३
नै। के नै। रहि जात हैं तुलसी कियो विचार।
रम्यो राम जो जगत में नाहि हेत संसार ॥ ४

End—तुलसी राम प्रताप तें मिटत कर्म को रेष।
ज्यों हरदी जरदी तजी चूनै। रहै न सेत ॥ ६१
एक तै। जल के मध्य है एक है नभ के पोर।
ये दोनों एक ठवर कह तुलसी करत निहार ॥ ६२
सप्त ताल सर बेधियो हत्यै। बालि महि बीर।
राज दियो सुग्रीव कहं जै जै जै रघुबीर ॥ ६३
बांध्यै। सेत सिलातरी उतरै। कपि दल भीर।
कुटुंब सहित रावन हतै। जै जै जै रघुबीर ॥ ६४ ॥

इति श्री दोहावली ॥ तुलसीदास कृत संपूरनम् ॥ संवत १८९४ ॥ शाके १७५९ ॥ चैत्र शुक्ल १५ लिषतंलाला कंमोद सींग कौच के इति ॥

No. 432(*k*). Gitāwali Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—97. Size—6 × 12 inches. Lines per page—24. Extent—2,706 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit—Paṇḍita Bhagwānadīnajī Miśra Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाईं तुलसी दास कृत गीतावली सातो कांड रामायण लिख्यते ॥ श्लोक ॥ नीलाम्बुजं स्यामलं कोमलांगं सोता समारोपित वाम भागं ॥ पाणी महाशायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सोहाई । रूप शील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भए आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई । हरषवंत चर अचर भूमि तरु तन रुह पुलक जनाई ॥ २ बरषहि विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदभी बजाई । कौशिल्यादि मातु मन हरषित यह सुख बरनि न जाई । सुनि दशरथ सुत जन्म लियो सब गुरु जन विप्र बोलाई । वेद विहित करि क्रिया परम सुचि आनंद उर न समाई । शद्रन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बाज बधाई । पुरवासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ मनि तोरन बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर करि छाई ॥ मागध सुत द्वार बंदीजन जहं तहं करत बड़ाई ॥ सहज सिंगार किये बनिता चलि मंगल विपुल बनाई ॥ गावैं देहि असीस मुदित चिरंजीवो तनय सुखदाई ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ विहारी चरित मनोहर गावत । सकल अवधवासी । अति औदार अवतार मनुज बपु धरो ब्रह्म अज अविनासी ॥ १ ॥ प्रथम ताड़िका हति सुबाहु बधि राख्यो द्विज हितकारी ॥ देषि दुषित पति सिला श्राप बस रघुपति विप्रनारि तारी ॥ २ ॥ सब भूपनि गर्व हरो प्रभु भंज्यो शंभु चाप भारी । जनक सुता समेत आवत गृह परसराम अति मदहारी ॥ तात बचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि भेष धरयो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत बधि बिराध ऋषि शोक हरो ॥ पंचवटी पावन राघो करि सूपनषा कुरूप कीन्हीं ॥ षरदूषन संहार कपट मृग गीधराज कह गति दीन्हीं ॥ हति कबंध सुग्रीव सषा करि टारो ताल बालि मारो ॥ बानर रीछ सहाय अनुज संग सिंधु बांधि जस बिस्तारो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टारो ॥ पदम

साधु जिय जानि बिभीषण लंकापुरी तिलक सार्यो ॥ ७ ॥ सीता अरु लछिमन संग लीन्हे श्रौरौ जिते दास आये ॥ नगर निकट बिमान आवत सुनि नर नारी देषन धाये ॥ ८ ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे ॥ दुसह बियोग जनित संमुत दुख राम चरन देषत बिसरे ॥ ९ ब्रह्मादिक सुर नारदादि मुनि अस्तुति करत बिमल वर बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी ॥ १० ॥ देखि दिवस सुभ लगन सोधि गुरु महाराज अभिषेक कियो तुलसीदास तब जानि सुबौसर भक्ति दान वर मांगि लियो ॥ ११ ॥ इति श्री रामायण गीतावलि साते कांड समाप्तः शुभ संवत् १८९१ वैसाष मासे कृष्ण पक्षे दसम्यां सनिवासरे इदं पुस्तकं लिषित संपूर्नम शुभम् रामायनमः ।

Subject—इस पुस्तक में श्री राम जी की लीला साते कांडों में पृथक २ वर्णन की गई है। अर्थात्

श्री राम जी का जन्म, ब्याह, ताड़का सुबाहु आदि का मारना मुनि के मख की रक्षा करना, गैातम नारी का उद्धार करना, भूपों के गर्व के। दूर करना, परसराम का संवाद, अयोध्यापुरी जाना, फिर पिता वचन मान बन गवन करना, चित्रकूट में मुनि भेष धारण कर वास करना, जयंत की एक आंख फोड़ना, सुर्पणखा की नाक काटना, खरदूषन का संहारना, कपट मृग का वध करना, गृद्धराज को मुक्ति देना, कबंध को मारना, सुग्रीव से मित्रता करना, बालि को मारना, बानर श्रोर रीछों की सहायता से रावण का सवंश नाश करना, बिभीषण को लंकापुरी का राज देना श्रोर फिर लक्ष्मण सीता सहित अयोध्या में वापस आना, नगर निवासियों का आनन्द आदि का वर्णन है।

No. 432(*l*). Gītāwalī, by Tulasīdāsajī. Substance—Country-made paper. Size—13 × 6 inches. Lines per page—12. Extent—1 Anushṭup śloka. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Śiva Sahāi, village Ulara, post office Musāfirkhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—हौं हे लाल कबहिं बड़े बलिहारो मैया ॥ रामलषन भावते भारत रिपुदवन चारु चारि मैया ॥ १ ॥ बाल विभूषन बसन मनोहर अंगति बिरचि बनैहो । सोभा निरखि नेछावरि करि उरलाइ बारने जेहो ॥ २ ॥ छगन मगन अंगन खेलिहो, मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहो ॥ कल बल बचन तोतरे मंजुल कहि मा मोहि बुलैहो ॥ ३ ॥ पुरजन सचिव राउरानी सब सखा सहेली ॥

खेलो लोचन लाहु सुफल लषि ललित मनोहर वेलो ॥ ४ ॥ जो सुषको लालसा रहै सिव सुक सनिकादि उदासी ॥ तुलसी तेहि सुष सिंधु कौसिला मगन प्रेम पुरवासी ॥ ५ ॥ ८ ॥

End—पृ० १२०—राग वसंत ॥ षेलत वसंत राजाधिराज । नभ कौतुक देषत सुर समाज । सोहै मनुज सषा रघुनाथ साथ । चोलिन षवोर पिचकारि हाथ । वाजहि मृदंग डफताल वेनु । छिरकहि सुगंध परिमल परेनु । उत युवति यूथ जानकी संग । पहिरे पट भूषन सरस रंग । लिये छरी वेत सोंधे विभाग । चाचरि झूमक कहै सरसराग । नूपुर किंकिनि धुनि पति सोहाइ । ललनागन जब जेहि धरहि धाइ । लोचन आंजै फगुवा मनाइ । छाड़हि नचाइ हाहा कराइ । चढ़े षरन विदूषक स्वांग साजि । करै फुटि निपटि गई लाज भाजि । नरनारि परस्पर गारि देत । सुनहि सतराम भाइन्ह समेत । वरषहि प्रसून वर विवुध वृंद । जय जय दिनकर कुल कुमुदचंद । ब्रह्मादि प्रसंसत अवधवास । गावत कल कीरति तुलसिदास ॥

No. 432(*m*). Gitāwali Rāmāyaṇa by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—400. Size—9 × $4\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—7. Extent—2,275 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Viśwanātha Siṁhaji, Raisa and Talukedāra, Agaresar, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ नीलांवुजं स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वामभागं ॥ पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥ आजु सुदिन सुभघरी सुहाई ॥ रूपशील गुनधाम राम नृप भवन प्रगट भे आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई ॥ हरषवंत चर अचर भूमिसुर तनरुह पुलक जनाई ॥ वरषहि विवुध निकर कुसुमावली नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मनहरषिहिं यह सुष वरनि न जाई ॥ सुनि दसरथ सुत जनम लिये सब गुरजन विप्र बुलाई ॥ वेद विहित करि क्रिया परम सुचि आनंद उर न समाई ॥ सदन वेद धुनि करत मुदित मुनि बहुविधि बाज बधाई ॥ पुरवासिन प्रियनाथ हेतु निज संपदा लुटाई ॥ मनि तोरन बहु केतु पताकनि पुरी रुचिर छवि छाई मागध सुत द्वार बंदि जन जहां तहां करत बड़ाई ॥ सहज सिंगार किये वनिता चलि मंगल विपुल बनाई ॥ गावहि देहि असीस मुदित है चोरंजीवो तनै सुषदाई ॥ विथिन कुंकुम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ॥ नाचहिं वर नर नारि प्रेम भर देह दसा बिसराई ॥ अमित धेनु गजतुरंग वसन मनि जात रूप अधिकाई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल

सोचि ग्रह चाई ॥ सुषो भए सुर संत भूमि सुर षल मन मन मलिनाई ॥ सवहि सुमन विकसत रवि निकसत कुमुद विपिन विलषाई ॥ जो सुचि सुकीत सोकहते सोव विरंचि प्रभुताई ॥ सोइ सुप सवध उमगि रह्यो दशदिशि कौन जतन कहौं षाई ॥ जे रघुवर चल चितक तिन्हको गति प्रगट दिषाई । षवदिल चमल षनुप षड़ तुलसी दास कहाई ॥ १ ॥ जयति श्री० ॥

End—वालक सिय के विहरत मुदीत मन दोउ भाई ॥ नाम लवकुश राम सीय षनुहरत सुंदरताई ॥ वेत मुनि मुनिष सोक हरयो पंचवटी पावन राघौ करि सुपनेषा कुरुप कीन्हौ ॥ षरदूषन संवारि कपट मृग गीधराज कह गति दीन्हौ ॥ हति कवंष सुग्रीव सषा करि भेदे ताल वालि मारयौ। वानर रीछ सहाई षनुज संग सींधु विधि जसु विस्तारयो ॥ सकुल पुत्र दल सहीत दशानन मारो षखिल सुर दुष टारयो ॥ परम साधु जोयजानि विभीषन लंकापुरी तौलक सारयोः । सीता षरु लछीमन संगलीन्हे षौ मिले दासंग प्रारा ॥ नागर निकट विमान षाये सव नर नारि देषन धाये शिव विरंच सुक नारदादो मुनि ग्रस्तुती करत विमल वानो ॥ चौदह भुवन चराचर हरषीत षाए राम राजधानी मीले भरत जननी गुर परिजन चाहत परम षनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनीत दारुनदुष रामचरन देषत विसरे ॥ वेदपुरान विचारि लगन सुभ महाराज षविवेक को वो तुलसीदास जोय जानि सुषवसर भगती दान दरष मांगि लीवो ॥ इति पद गीतावली ॥

No. 432(*n*). Gitāwalī, by Tulāsi Dāsa. Substance-Country made paper. Leaves—230. Size—7 × 3½ inches. Lines per page—26. Extent—2,970 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1902 Samvat or A.D. 1845. Place of deposit—Ṭhākura Indrajīta Simha, village Atorar, post office Baondi, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः श्री जानकी वल्लभायनमः ॥ अथ गीतावली लिष्यत ॥ नीलांबुजं स्यामल कोमलांगं सीता समारोपित वाम भागं । पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंस नाथम ॥ राग षसावरी ॥ षाजु सुदिन सुभघरी सोहाई ॥ कहा कहौ षधिकाई ॥ रुप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये षाई ॥ षति पुनीत मधुमास लगन ग्रहवार जोग समुदाई ॥ हरष-वंत चर षचर भूमि सुर तन रुह पुलक जनाई ॥ वर्षहि विवुध निकर कुसमावलि नभ दुंदुभी वजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मन हरषित यह सुष वरनि न जाई । सुनि दसरथ सुत जन्म लिये सव गुर जन विप्र बोलाई । वेद विदित करि क्या परम

सुचि आनंद उर न समाई ॥ मदन बेद धुनि करत मधुर मुनि बहुबिधि बजत बधाई ॥ पुरबासिन प्रिय नाथ हेत निज निज संपदा लुटाई ॥ आदि ॥

End—राग रामकली ॥ रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवध बासी ॥ अति उदार अवतार मनुज बपु धरेउ ब्रह्म सोइ अबिनासी । प्रथम ताड़िका हति सुबाहु बधि मष राख्यो द्विज हितकारी । देषि दुषित अति सिला श्राप बस रघुपति बिप्र नारि तारी ॥ सब भुवन को गर्ब हन्यो हरि भंज्यो संभु चाप भारी ॥ जनक सुता समेत आवत गृह परसराम को मदहारी ॥ पिता बचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि बेष धरयो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत बधि बिराध रिषि सोक हरयो॥ पंचबटी पावन करि राखो सुपनेषा कुरुप कीन्हो॥ षरदूषन संघारि कपट मृग गीधराज कहं गति दीन्हो ॥ हति कबंध सुग्रीव सषा करि बधेउ ताल बालि मारयो ॥ बानर रीछ सहाइ अनुज संग सिंधु बांधि जु बिलारयो ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टारयो ॥ परा साधु तिय आनि बिबीषन लंकापुरी तिलक सारयो ॥ सीता लषन संग लीन्हे प्रभु सैरी जेते दास आये ॥ नगर निकट बिमान आयो सब नर नारी देषन धाये । सिव बिरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत बिमल बानी ॥ चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी । मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम अनंद भरे॥ दुसह बियोग रोग दारुन दुष रामचन्द्र देषत बिसरे ॥ बेद पुरान बिचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसीदास जिय जानि सुअवसर भक्ति दान बर मांगि लियो ॥ इति श्रीराम गीतावल्या उत्तर कांड समाप्तमो सोपान समस्त सुभं भुयात श्रीराम चंद्राय नमोनमः ॥ चैत्र मासे कृष्ण पक्षे भौमवासरे संवत् १२०२ ॥ लिषेत मोहनलाल ग्रामबासी बासुरे के जो देषा सो लिषा मम दोष न दीयते ॥

No. 432(o). Rāma Gītāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—43. Size—8 × 6 inches. Lines per page—36. Extent—900 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Sundara Miśra, village Katghari, post office Akaona (Baharāich).

Beginning—मागध सूत भाट नट जाचक जहं तहं करहिं बिचार ।
बिप्र बधू सनमानि सुआसिनि जन परिजन पहिराइ ।
सनमाने अवनीस असीसत इष्ट महेस मनाइ ॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि बिभूति सब भूपति भवन कमाहीं।
सभै समाज राज दसरथ को लोकप सकल सिहाहीं ॥
को कहि सकै अवध बासिन को प्रेम प्रमोद उछाह।
सारद सेस गनेस गिरीसहि अगम निगम अवगाह ॥
शिव विरंचि मुनि सिद्धि प्रसंसित बड़े भूप के भाग।
तुलसिदास प्रभु सोहिलो गावत उमगि उमगि अनुराग ॥

End—किंकिनी कनक कंज अवली मृदु मरकत सिखिन मत्र जनुजाइ।
मानहु परम सोभित नमित मुख बिकसित चहुंदिसि रहो लोभाइ ॥
भुज प्रलंब भूषन अनेक जुत बसन पीता सोभा अधिकाइ।
जझोपवीत विचित्र हेम मय मुक्तामाल उरसि मोहि भाइ ॥
अंबुद सहित बीच जनु सुरपति धनु निकट बलक पांति चलि आइ।
कंबु कंठ चिबुक पर सुन्दर क्यैा कहो दसनन की सुघोआइ ॥
कुंचित केस सुदेस बदन पर मधुपन की अवली चलि आइ ॥
पदुम कोस......................................

No. 432(*p*). Rama Giṭawali, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāndā). Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—13½ × 6 inches. Lines per page—12. Extent—2,640 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1840 Samvat or A.D. 1783. Place of deposit—Rājapustakālaya, Bhinagā (Baharāich).

Beginning—श्री सीता रामायनमः।
स्वामी स्वामिन के सहित वन्दैा तुलसीदास।
करहु कृपा चित चरन ते कबहु न होइ उदास ॥
आसावरी—आज सुदिन सुभघरी सुहाई कहा कहौं अधिकाई।
रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ १
अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह बार जोग समुदाई।
हरषवंत चर अचर भूमि तरु न नर पुलक जनाई ॥ २
बरषहि बिबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई।
कैासिल्यादि मातु सब हरषित यह सुख बरनि न जाई ॥ ३

End—शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि अस्तुति करत बिमल बानी।
चैादह भुवन चराचर हरषित आए राम राजधानी ॥ १ मिले भरत जननी गुरु पुर-

जन चाहत परमानन्द भरे। दुसह वियोग जनित दारुन दुष रामचरन देषत विसरे ॥ वेद पुरान विचारि लगन शुभ महाराज अभिषेक कियो। तुलसीदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान तव मांगो लियो ॥ इति श्रीराम गीतावल्यां श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत सम्पूरणम् शुभ मस्तु संवत १८४० माघ मासे कृष्ण पक्षे तिथि ४ बुधवार ॥

No. 432(*q*). Hanumāna Vahuka, by Tulasī Dāsa of Rājapura (Bānda). Substance—Old country-made paper. Leaves—20. Size—7 × 4¼ inches. Lines per page—22. Extent—400 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Behārī Panḍey, Nāgarī Prachārinī Sabha, Kāśī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः स्वर्ण सैल संकास कोटि रवि तरुन तेज तन उर विशाल। भुज दंड मंड नष वज्र तन पिंगल नयन भृकुटी कराल ॥ रसना दशनानन कपिश केश कर्कस लंगुर षल दल तम मान। कह तुलसीदास सो जासु उर वसहि मारुत मूरति विकट। संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहि आवत निकट ॥ सिंधु तरन सिय शोक हरन रवि बाल वरन तन उर विशाल। मूरति कराल कालहुक काल जनु गहन दहन × × ×
नहि संक वंक सुव × × × जातु धान वलवान मान मद दवन पवन सुव। कह तुलसिदास सेवत सुगम माकर सुत मूरति निकट ॥

End—पाइ हीन पेट हीन मुष हीन वाहु हीन सीस हीन जन जानि सकल समीप हीन भयो है। देव भूत पितर कर्म षल काल ग्रह मोहिय इन्द्री वर मानिक से दई है ॥ हों तो विन मोल हीन विकानो वल रावरे हो तेरे घोट नाम को ललाट सोम लई है। कुंभज के किंकर विकल वूड़े गो षुरन हाय हाय राम राइ ऐस कहि भई है ॥

बाहुक सुबाहु नीच लोचन मरीच मिलि पीडा है सुकेतु सो तो रोग जातुधान है। रामनाम जापि जागि कियो चाहैां सानुराग काल के दूत भूत कहा मेरे मान है ॥

सुमिरे सहाय राम लखन प्रखन दोऊ तिनके साके समूह जागत जहान है।

तुलसी समान ताड़िका संहारि मानो भर वधे वगद से कनाई बान बान है ॥

वाल पनै सुधे मत × × × ×

No. 432(r). Hanumāna Stuti (Hanumān Vahuk), by Goswāmī Tulasī Dāsji. Substance—Country-made paper. Leaves—12. Size—5 × 8 inches. Lines per page—16. Extent—168 Anushṭup slokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1932 Samvat or A.D. 1875. Place of deposit—Ṭhākura Jaivaksha Simha, village Mithnora, tahsil Kesarganj, post office Kesarganj, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ हनुमान स्तुति लिष्यते ॥ सिंधु तरन सिय सोच हरन रवि वाल वरन तनु भुजा विशाल मूरति कराल कालहु को काल जनु । गहन दहन निर्दहन लंक निःसंक वंक भुव ॥ जातुधान बलवान मान मद दवन पवन सुव ॥ कह तुलसीदास सेवत सुलभ सेवक हित संतत निकट गुन गन गनै मत सुमिरत जपत सनम सकल संकट विकट ॥ स्वरन सैल संक सकोटि रवि तरुन तेज घन । उर विसाल भुजदण्ड चंड नष वज्र वज्र तन ॥ पिंग नयन भृकुटी कराल रसना दसनान ॥ कपीस केस कर्कस लंगूर पलदल भानन ॥ कह तुलसीदास वस जासु उर मारुत सुत मूरति विकट । संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहिं आवत निकट ॥ कवित्त ॥ पंच मुष छः मुष भृगु मुष भट असुर सुर सर्व सरिस समरत्थ सूरो । वांकुरो वीर विरदैत विरदावली वेद वंदी वदत पैज पूरो ॥ जासु गुन गाथ रघुनाथ कह जासु वल विपुल जल भरित जग जलधि झूरो ॥ दुन दुप दवन कौन तुलसी सदै पवन को पूत रजपूत पूरो ॥

End—काल को करालता करम की कठिनाई कैधौं पाप के प्रभाव की सुभाय वाय वावरे । वेदन कुभांति सो सही न जाति राति दिन सोई बांह गही ज्यों गही समीर डावरे ॥ लायउ तुलसी विहारी सो निहारि वारि सींचिये मलीन भो कुपीर ताप तावरे ॥ भूतन की आपनी पराई है कृपा निधान जानियत सब ही की रीति राम रावरे ॥ पाइ पीर पेट पीर बांह पीर मुष पीर जरजर सकल सरीर पीर मई है ॥ देव भूत पितर कर्म षल काह ग्रह मोहि परद वरिद मान कसी दह है ॥ हौं तौ विन मोल हौं विकानो वलि बार हीते पोट राम नाम को ललाट लिष लई है ॥ कुंभज के किंकर विकल बूड़े गोपुरनि हाय राम दूत ऐसो नाहं कहं भई है ॥ ताड़ुक सुबाहु नीच लीच मरीच मिलि पीड़ा है सुकेत सुता रोग जातुधान है राम नाम जप जाग कियो चाहै सानुराग काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है । सुमिरे सहाइ राम लषन आषर दोऊ जिनके साके समूह जानत जहान है ॥ तुलसी संभारत ताड़का संभारि भारि भट वेधे वगद से वनाई वान मान है ॥ इति

No. 432(s). Hanumāna Vahuk, by Tulasi Dāsa of Rājapura. Substance—Country-made paper. Leaves—28. Size 6 × 3½ inches. Lines per page—14. Extent—245 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1929 Samvat or A.D. 1872. Place of deposit—Paṇḍita Baijnāthaji, post office Govindapura, district Rae Bareli.

Beginning—श्री गणेशायनमः

श्री रघुवरहि प्रणाम करि सहित लषन हनुमान।
राषि हृदय विस्वास दृढ़ पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥ १
भोमवार आदिक पढ़ै जो नर सहित सनेह।
रुज संकट व्यापै नही बाढ़ै सुष धन गेह ॥ २ ॥
सुचि सनेम पढ़ि है सुजन निकस गात बल धाम।
ह्वै है रत तुलसी सपद जस पैहै सब ठाम ॥ छप्पै ॥
स्वर्ण सैन संकट सकोटि रवि तरुन तेज घन।
उर विसाल भुज दण्ड चण्ड नष वज्र वज्र तन ॥
पिंग नयन भृकुटी करोल रसना दस आनन।
कपि सकेस कर कस लंगूर षल दल वल भानन ॥
कह तुलसिदास वसु जासु उर मारुत सुत मूरति विकट।
संताप पाप तेहि पुरुष के सपनेहु नहि आवत निकट ॥ १ ॥

End—असन वसन हीन विषे विषाद लीन हीन दीन दूबरी कहैया हाय हाय को। तुलसी अनाथ की सनाथ कीन्हों रघुनाथ दीन्हो फल चारि चाह आपने सुभाय को ॥ नीच यहि बीच सुष पाय पा(भ)ह हाय छांडि हारि भजन बिसारो मन काय को। ताते वर तोर तन निसि दिन देषियत मानो। फूटि फूटि निकसति है लोन राम राम को ॥ ५२। दोहा

बाहुक सीता राम की हनुमत सरनहि आइ।
तुलसी राम नेवाजेउ कर गहि कीन्ह सहाइ ॥
मन तरु पोढर रोग यहि परवस कीन्ह प्रवेस।
बिहंग राज वाहन तुरत काटै मिटै कलेस २ ॥
निज औगुन गुण राम को समुझि तुलसीदास।
होइ भलो कलि कालहु उभै लोक अनयास ॥ ३
बांहु पोर को नाम पुनि हरन पोर संसार ॥
प्रगट कियो मम इष्ट गुरु रहित समस्त विकार ॥ ४ ॥

वैाहुंक पोरा बाहुक हरन करन सकल कल्यान।
तुलसी पठ नित नेम सो बावन कवित प्रमान ॥ ५

इति श्री बाहुक स्तोत्र गोसाई तुलसीदास कृत समाप्तम् सम्वत १९२९

No. 432(*t*). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—Size—9½ × 4½ inches. Lines per page—7. Extent—125 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Prose or Verse—Verse. Character—Nāgari. Date of manuscript—1878 Samvat or A.D. 1821. Place of deposit—Paṇḍita Bhawāni Miśrāji, village Uttar Gāwan, post office Aliganj Bāzār, district Sultānpur.

Beginning—श्री गनेशायनमह ॥ श्री महावोर जी सहाय ॥ कवित्त दंडक ॥ कमट की पोष्टो जाको गाडि न को गाडे मांनो नाम कैसो माजन जल निधि को जल भो ॥ जातधान पावन परावन को दुर्ग भयो महा मोन भास तामें मोन को सुथल भो ॥ कुंभकरन रावन पयोधिनाद ध्यन भो तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो ॥ भोषम कहत मेरे अनुमान हनोमांन सारिषे जो कास को त्रिलोक महा बल भो ॥ १ ॥ दूत रामरावन के सपूत पवंन के तुं अंजनी के नंदन प्रताप भुरि भांन सो ॥ सीया सोक हरन दुरित दुखदरन सरन पाये अवंनि लषन प्रीया प्रान सो ॥ दसमुष दुसह दरिद्र दरबे को भयो प्रगट त्रीलोक योक तुलसी नीधांन सो ॥ ग्यान गुनवंत बलवांन सेवा सावधान साहेब सुजांन उर आंन हनोमांन सो ॥२॥

End—संकट हर मंगल करन महावीर गुनगांन ॥ अक्षर पद सब लीन रहु सुष संपति कल्यान ॥ है तुलसी के येक गुन श्रेगुनाधिक कह लो ॥ भलो भरोसो राम को रांम रोझवे जोग ॥ जह लघु तंह दीरघ कोहेउ दीरघ लघु को ठाउ ॥ अक्षर पद टूटे जहा छमिये सब कपि राउ ॥ महावीर की रंक ते लंकोनी को बल टूट ॥ तुलसीदास जो बहुर्वं प्रति बांह बिथा सब छूट ॥ इति श्री समस्त संपूरन कथा बाहुक तुलसीदास कृत जो प्रति देषा सो लीषा मम दोष न दीयते पंडित जंन सो बिनती मोरि टूट अक्षर बाचन जोरि दसषत रामदास कथिक के लीषे संबत १८७८ मीती जेठ सुदीय मंगरबार सन १२२८ सीतराम ॥

No. 432(*u*). Hanumāna Vāhuka, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size 7½ × 4 inches. Lines per page—7. Extent—170 Anushṭup ślokas. Appearance—Good. Character—Nāgari. Date of manuscript—1835 Samvat or A.D. 1778. Place of deposit—Paṇḍita

Bhāgirathi Paṇḍey, village Piparpur, post office Piparpur, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ पोथी हनुमान बाहुक ॥ तुलसीदास कृत ॥ छपै ॥ स्वर्न सयन संकास कोटि संकास कोटि रवि तरुन तेज घन ॥ उर बीसाल भुजदंड चंड नुष वज्र वज्र तन ॥ पींग नयन भ्रीकुटी कराल रसनारद पानन ॥ कपिस केस कर्कसनगुर पल दल बल भानन ॥ कह तुलसीदास व सू जम्फलव मारुति बोकट ॥ संता बाव बावरे ॥ बेदन कुमाति सो सहि न जात राति दीन सोइ ॥ बाह गहो जो गहो समीर डावरे ॥ लायवतरु तुलसी तेहारे सो नीहारि बारि सो बों० प मलान भवत पोहे तोडुत वरे ॥ भुतनो का श्रापने को साथ ते बडो हो ॥ बाह बेदन कही न सहि जाति है ॥ पवुपद ग्रनेक जंत्र मंत्र टोटकादि कोप बादि महा देवता मनाय श्रावोकाति है ॥ करतार हरतार भरतार कर्म काल को है जंत्र जाल जो न मानत इतराति है ॥ बेहो बेरा तुलसी तु मेरो कहो रामहु तठोल ते हो महावोर पोरते पोराव है ॥

End—सीता राम दयाल है सुमिरत नाम उदार ॥ तुलसी ताको सुलभ है सदा मुक्ति को द्वार ॥ २ ॥ राम नाम जपते रहो सदा संत लवलीन ॥ तुलसी ते जान छुट है कबहो न होत मलि ॥ जन को पोर ॥ तुलसी का सब रावीय शरन सुपद रघुवीर साहब सीताराम हैं जानत जन को पीर ॥ सो हरन संसै दलन सरन सुपदरन धरि ॥ तुलसी राय हरि पद गहो पाव न रहै सरोर × × × × × है तुलसी वह एक गुन पैागुन नीवो वह लोग ॥ भवो भरोसा रावरो राम रो भवे जोग ॥ ९ ॥ इति श्री हनुमान बाहुक श्री गोसाइ तुलसीदास कृत संपुन शुभमस्तु श्री सीक्षरस्क ॥ संमत ॥ १८३५ भादोँ मासे शुक्ल सप्तम्या सुकवासरे लेषीता चीतामनि दारा ॥ × × × ×

Subject—बाहु पीड़ा निवारणार्थ हनुमान जी की प्रार्थना सम्बन्धी ४४ छन्द श्रोर कुछ दोहे ।

No. 492(v). Hanumata Panchaka, by Tulasī Dāsa of Rajāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—2. Size—5½ × 3½ inches. Lines per page—11. Extent—62 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1918 Samvat or A.D. 1861. Place of deposit—Thākura Naunihāla Siṃha Seṇgara, Raisa, village Kānthā, post office Kānthā, district Unāo.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हनुमत पंचक तुलसी कृत लिष्यते। बालि को त्रास कुमंत्र कुसंगति व्याकुल देह दसा बिसराई। बैठि विचार करी गिरि ऊपर चित्त न भावत एक उपाई। मन मैं अनुमानि तुम्हे रघुनायक भेंट भये ते मिटी दुचिताई। या विधि मोर कलेस हरो हनुमान तुम्हे सियराम दोहाई ॥ १ ॥ नाथि पयोध प्रबोधि सिया अरु मेटि विभीषन की दुचिताई। फेरि हवा सुत आनि कहो सो समथ्थ विरंद सुता कुसलाई। रावन के मद मर्दन की पुनि कीन्हो है हर्ष सुधा समुदाई ॥ या विधि ॥ २ ॥

End—आनेहु मोन सुखेन समेत गहे गिर द्रोन दुरे दुतिताई। चित के पाथ चले अति आतुर पुष्प बिमान मनो हलकाई। भरापचि पाइ प्रमोदित है तब बैद सुखेन सुकोन उपाई। याविधि मोर कलेस० ॥ ४ ॥ रोग वियोग बिदारन को अरु मातु के अंक में अंक बड़ाई। पुत्र पैाउत्र सपा परिवार सुषो सब सागर सेत बंधाई। दारिद्र दंभ मिटै तुलसी हनुमान के पांच कवित्त पढ़ाई ॥ या विधि० ॥ ५ ॥ पांच कवित्त को पंच कहि पढ़ें सुनै नर कोइ। सुष संगति पावन्द सुचि दिन दिन दूनो होइ। इति तुलसीदास कृत हनुमंत पंचक संपूरन शुभमस्तु ॥ सं० १९१८ ॥

Subject—पांच कवित्तों में हनुमान जी की स्तुति की गई है।

No. 432(w). Jnanadipikā Bhāshā, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—8 × 5 inches. Lines per page—18. Extent—384 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—Samvat 1631 or A.D. 1574. Date of manuscript—1873 Samvat or A.D. 1816. Place of deposit—Ṭhākura Daljita Simha, village Jālima Simha Kā purwā, post office Kesaraganja, district Bahrāich (Oudh).

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ सुमिरत चरन गनेस के प्रथमहि सीस नवाय के। बुद्ध सिद्ध आते नहो भाषो ग्रंथ बनाइ। चो० ॥ नहि उपजै नहि होइ विनासा। तिहु लोक जाकर परकासा ॥ जाको लीना जगत भुलाना। नमो नमो ता प्रभु भगवाना ॥ दोहा ॥ सारद सुक नारद सुमिरि व्यास सनक के पाइ। ज्ञान दीपिका रचत हौं। राम चरन चितु लाइ। चो० ॥ सुनि मुनि विविधि संस्कृतवानो। भाषा कीन्ह चहौं रुचि मानी ॥ हरिहि मिलन के मारग पाये ॥ देहि बताय प्रगटकुल भाये। दो० ॥ ज्ञान दीपिका बरनि हैं भाषत जो विहि पांच। उकि युक्ति सो ग्रंथ करि कथा पुरातन सांच ॥ अथ दीपक प्रथा ॥ दो० ॥

बुद्धि पात्र बाती उकत तत्व तेल को धार। ब्रह्म अग्नि करि लेसिये ज्ञान दीप उजियार ॥ संवत सारद सौ भये इकतिस अधिक विचारि शुक्लपक्ष आषाढ़ को दुइज पुष्य गुरवार। तादिन उपजो दीपिका पाँच ज्योति परवान धर्म ज्ञान यह ब्रह्म पुनि प्रभु स्वरूप विज्ञान ॥

End—दो० ॥ मन में करियत छोभ कछु कैसे परै धंमार। यह विचार जन राषि निर देत हरन करतार। सुमति भूमि पद कुमति धनु सर करनो सब मौर ॥ भोग निसाना ताकि करि करत काम तन चोट। यह विचारि नहि पाय लिर षिय सकल प्रभार। करम चोट दुष सुष जगत सब भुगवत करतार। बुद्धि हीन जड़ता अधिक कहिय पायको मोट। राम साधु को विरद सम टिक्यो दुहुन को चोट ॥ यह विचारि नहि मानिये अवगुन ता मति हीन। विरद समुझि पद सरन लषि छिमा करेहु सु प्रवीन ॥ सोरठा। मतिबंधू कुल देस जप तप विद्यावेद विधि। रहै न इनकौ लेस नारि जो मुषहि लगाइये। कर्म सुभासुभ जानि, विधना ताके कर गहे। जितहिं टिकावति आनि, तितहिं बसै मन कामना ॥ इति श्री ज्ञान दीपिकायां श्री स्वामी तुलसीदास कृत श्रोति पुरानतु मते सिक्ष्यामार्ग बर्ननो नाम पंचमोध्याय ॥ ५ ॥ सोरठा। श्री गुरुचरन प्रसाद पोथी लिपि पूरन कियो राम सहाइ सदाय श्री रघुवीर प्रतापते संपूर्ण जेष्ट वदि ५ भृगुवासरे संवत १८७३ श्री दुर्गायेनमः ॥ राम राम राम ॥

Subject—पृ० १—४ तक—ईश्वर प्रार्थना। आदि दीपक की परिभाषा। धर्म मार्ग, अधर्म मार्ग, सुबुद्धि, कुबुद्धि, यमराज आदि का वर्णन। अर्थात् राम वशिष्ट, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर का संवाद वर्णन किया गया है। पृ०—५—१० तक—ज्ञान मार्ग जो प्रबोधचन्द्र के मतानुसार है। इसमें काम क्रोध लोभ मोह तप क्षमा हिंसा आदि का अलग अलग वर्णन किया गया है। पृ० ११—१४ तक—श्री शंकराचार्य मतानुसार ब्रह्म और माया का निर्णय वर्णन है। पृ० १५—२४ तक भागवत, रामायण मतानुसार श्री रामचन्द्र जी व श्री कृष्ण के स्वरूप वय सहित ध्यानपूर्वक वर्णन किया है। पृ० २५—३१ तक—श्रुति पुरान मतानुसार शिक्षा मार्ग का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि मनुष्य का क्या धर्म है और उसे क्या करना चाहिये ॥

No. 432(x). Maṅgala Rāmāyaṇa (Jānki Maṅgal), by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Size—6 × 12 inches. Lines per page—16. Extent—256 Anushṭup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1861 Samvat or A. D. 1804.

Place of deposit—Paṇḍita Bhagwān Dīnaji Miśra, Vaidya, Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंगल रामायण लिष्यते ॥ गुर गनपति गौरि गिरापति ॥ सारद सेष सुकवि श्रुति संत सरल मति ॥ हाथ जोरि करि बिनय सबहि सिर नावउ ॥ सो रघुबीर बिबाह जथा मति गावउ ॥ सुभ दिन रचेउ सुमंगल मंगलदायक ॥ सुनत श्रवन हिय बसहि सिया रघुनायक ॥ देस सुहावन पावन बेद बषानइ ॥ भूमि तिलकसम तिरहुति त्रिभुवन जानइ ॥ तहं बसै जनक नगर नृप परम उजागर ॥ सिया लली तहं प्रगटी सब सुष सागर ॥ जनक नाम तेहि नगर बसै नरनायक ॥ सबगुन रूप निधान न घटतर लायक ॥ भये न हैं हैं हैन जनक सम नल मे ॥ सोय सुता भइ जासु सकल मंगल मै ॥

End—जनि होइ छोहउ बिनय सुनि रघुबीर बहु बिनती करयो ॥ मिलि भेटि सहित सनेह बहुरि बिदेह उर धीरज धरयो ॥ सो समय कहत न बनै कछु सब भुवन भरि करुना रह्यो ॥ तब कीन्ह कौसलपति पयान निसान बाजे गहगह्यो ॥ मंगल ॥ बहहि मिले भृगुनाथ हाथ फरसा लिये । डाटत आंषि देषाइ कोप दारुन किये ॥ राम कीन्ह परितोष रोष रिसि परिहरे ॥ चले सौंपि सारंग सुफल लोचन करे ॥ रघुबर भुजबल देषि उछाह बरातिन ॥ मुदित राउ लषि सन्मुष विधि सब भांतिन ॥ यहि विधि ब्याहि सकल सुत जग जस छावउ ॥ मग लोगन सुष देत अवध पति आवउ होहि सुमंगल सगुन सुमन सुर बरषहि । नगर कुलाहल भयउ नारि नर हरषहि ॥ इति श्री मंगल रामायण स्वामी तुलसीदास कृत समाप्त शुभमस्तु ॥ संवत् १८८१ फागुनि मासे कृष्णपक्षे तिथै चतुर्थ्यां रविवासरे ॥ दसषत बेनी बकस के मंगल रामचरित्र फागुनि बदि तिथि चौथ कहं आदित वार पवित्र ॥ ससि रस बसु ससि अंकये सोई संवत जानु रामचरित्र अद्भुत रतन करसि सदा मन ध्यानु ॥ राम लषन अरु जानकी सहित भरत अरिहंत । सुमिरत मंगल सर्वदा जै पवनज हनुमंत ॥ श्री जानकी वल्लभो जयति ॥

Subject—श्री जानकी जी का जनक जी के यहां जन्म व ब्याह व महाराजा दशरथ की बरात व भृगुनाथ का आना व श्री राम जी का भृगुपति का संतोष करना आदि का वर्णन ।

No. 433(*y*). Kavitāvali, by Goswāmi Tulasi Dāsa of Rājapura, Bāndā. Substance—Old, country-made paper. Leaves—58. Size—11 × 6½ inches. Lines per page—10. Extent—1,160 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1889 Samvat or A. D. 1832. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhinga Rāja (Baharāich).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ कवितावली रामायण कथा तुलसी कृत लिख्यते। चन्द्रकला पर्य्याय दुमिला छंद॥ अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोद मैं भूपति लै निकसे। अवलोकिहुं सोच विमोचन को ठगि सी रहि जो न ठगे धृग से॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से। सजनी ससि मैं सम सील उयै नव नील सरोरुह से बिगसे॥ १

End—चाहै न अनंग अरिये का अंग मागिने को दिये ई पै जानिये स्वभाव सिद्धि बानि सो। बारि बुंद चारि त्रिपुरारि पर डारिये तो देत फल चारि लेत सेवा सांची मानिये॥ तुलसी भरोसो भवेस भोरानाथ को तो कोटिक कलेस करो मरो धारि मानिसो। दारिद दमन दुप दोषदाह समन सो ठोक तिहुं नाहीं इजे रमन भवानि सो॥ १५१ इति श्री रामायण कवितावली गोसाई तुलसीदास कृत उत्तर कांड समाप्त शुभमस्तु॥ मिति आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां चंद्रवासरे सम्वत १८८९ सन १२४० साल द॰ गंगाप्रसाद कायस्थ मु॰ टिकुइया ग्राम।

No. 432(z). Kavitta Rāmāyana, by Tulasī Dāsa of Rajapura (Bāṇdā). Substance—Old country-made paper. Leaves—57. Size—$8\frac{1}{4} \times 5$ inches. Lines per page—22. Extent—1,232 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1850 Saṃvat or A. D. 1793. Place of deposit—Bābū Padma Baksha Siṃha, Lavedpur, Baharaich.

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ श्री जानकी रवन चरन कमलेभ्यो नमः॥ अवधेस के द्वार सकार गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे। अवलोकिहौ सोच बिमोचन कौं ठगि सी रही जे न ठगे धिग से॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातक से। सजनी ससि मैं सम सील उयै नव नील सरोरुह से बिगसे॥ १॥ पगनूपुर औ पहुंची कर कंजन मंजु बनी बन माल हिए। नव नील कलेवर पीत झगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिए॥ अरविंद से आनन रूपमरंद अनंदित लोचन भृंग पिये। मन मैं न बसै अस बालक जो तुलसी जग मैं फल कौन जिए॥ २॥

End—चाहै न अनंग अरि कौ अंग मागने को दिबोई पै जानि सुभाव सिद्धि बानी सो। बारि बूंद चारि त्रिपुरारि पर डारिये तौ देत फल चारि लेत सेवा सांचो मानिसो॥ तुलसी भरोस नमवेस भोरानाथ को तौ कोटिक कलेस करौ मरौ छार मानि सो दारिद दमन दुप दोष दाह समन सो ढोक तिहुं नाहीं दूजो रमन भवानि सो॥ २९८

दोहा—राम वाम दिसि जानकी लषन दाहिने घोर।
ध्यान सकल कल्यान मय सुर तरु तुलसी तोर ॥ २२९
इति श्री कवित्त रामायन सम्पूर्णम् ॥
सुचिमासि शुक्ल पक्षे पंचम्या सनि वासरे पुस्तकं लिषित्वा गजराजस्य सम्वत् १८५० ॥

Subject—बालकांड वर्णन १ से २२ छंद तक
अयोध्या कांड वर्णन २३ से ४४ छंद तक
आरण्य कांड वर्णन छंद ४५ से ५० तक
किष्किन्धा कांड वर्णन छंद ५१ से ५२ तक
सुन्दर कांड वर्णन छंद ५३ से ९२ तक
लंका कांड वर्णन छंद ९३ से १४३ तक
उत्तर कांड वर्णन छंद १४४ से २२९ तक
इति

No. 432(a2). Kavitta Rāmāyana, by Tulasī Dāsajī. Substance—Old country-made paper. Leaves—228. Size—9 × 4½ inches. Lines per page—6. Extent—550 Anushṭup ślokas. Appearance—Ordinary and damaged. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1901 Samvat or A. D. 1844. Place of deposit—Thākura Viśwanātha Simha, Tāllukōdāra, village Agreser, post office Tirsundi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ अथ कवित्त रामयण लिष्यते ॥ सवैया ॥ कवित्त ॥ अवधेश के द्वार सकार गई सुत गोद के भूपति लै निकसे। अवलोकि हौं शोच विमोचन को थकि सी रही जो न थके धिक से ॥ तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नयन सुखंजन जातक से। सजनी शशि में शमशील उभै नव नील सरोरुह से विकसे ॥ १ ॥ पग नेपुर औ पहुंची कर कंजनि मंजु बनी मणि माल हिये ॥ नवनील कलेवर पीत भगा झलकै पुलकै नृप गोद लिये ॥ अरविंद से आनन रूप मरंद अनन्दित लोचन भृंग पिये ॥ मन मैं न बसै अस बालक जौं तुलसी जग में फल कौन जिये ॥ २ ॥

End—देव संपदा समेत श्री निकेत याचकन भवनि भवृति भंग वृष भव हतु है ॥ नाम वाम वामदेव दाहिनो सदा असंक संत अरधंगना अनंग को महतु है ॥ तुलसी महेश को प्रभाव भाव हू सुगम अगम निगम हू को जानिवो कहा कहै

कवि मुप शारदा लजानो जात गात श्वेत चंद जात रूप को लहतु है ॥ ३०० ॥ चाहे न अनंग अरि एको अंग मागने को दियोई पै जानिये सुभाव सिद्धि पानि सों । बारि बुंद चार त्रिपुरारि पर डारिये तो देत फल । चारिलेत सेवा सांचो मानि सो ॥ तुलसी भरे मन भवे शभोराना । थको तो कोटिकलेश करो मरो द्वार सानि सो ॥ दारिददवन दो दाहक शमन शोक लोक तिहुं नाहि दूजो रवन भवानि सो ॥ ३०१ ॥ इति श्री कवित्त रामायण ॥ सम्बत् १९०१ ॥

No. 432(b2). Kavitta Rāmāyaṇa, by Tulasī Dāsa of Rājāpura (Bāṇda). Substance—Country-made paper. Leaves—15. Size—11¼ × 4½ inches. Lines per page—9. Extent—304 Anushṭup ślokās. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachārinī Sabha, Benares.

Beginning—सिला सब सोहत सागर जों बल वारि बढ़े । करि कोप कहें रघुबीर त्रिया सों कैातुक हो गढ़ कूदि चढ़े ॥ चतुरंग चमू पल में दलिकै रन रावण राज के हाड़ गढ़े ॥ ८९

घनाक्षरी—विपुल विशाल कपि भाल मानों काल बहु वेष धरे धावें किरो करषा ।

लिए सिला सैल साल ताल ची तमाल तोरी तोय निधि विविध समाज हरषा ॥

दुगे दिग कुंजर कमठ कोल कलमलै डोलै धराधर धनु धरा धक धरषा ॥

तुलसी तमकि चले राघो की सपथ करें को करै अटक कपि कटक अमरषा ॥ ९० ॥

End—सवैया । जाके बिलोकत लोकप होत विसोक । लहें सुरलोक सुरलोक सुगैारहि । सो कमला तजि चंचलता बढ़ कोटि कला रिझवें सिर मैारहि ॥ ताको कहाइ कहा तुलसी तुल जाहि मांगत कूकर कैारहि । जानकी जीवन को जनु है जरि जाहु सो जीह जो जांचिय घैारहि ॥ १६६

जड़ पंच मिले जेहि देहकरी करनी लघु धोंधरनी धर की । जन कैा कहु क्यों करि है न संवार जो सार करै सचराचर की ॥ तुलसी कहु राम समान को आन जो सेवक जासु रमा घर की । जग में गति जाहि जगत्पति की परवाहि च ताहि कहा नर की ॥ १६७

जग जांचिय कोउ न जांचिय जो जिय जा × × × × अपूर्ण ।

No. 432(*c*2). Krishṇa Gītāwalī, by Tulasī Dāsa of Rājapura. Substance—Foolscap paper. Leaves—20. Size 7 × 4 inches. Lines per page—12. Extent—150 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Agrawāla, Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्ण गीतावली श्री कृष्णाय नमः

माता ले उछंग गोविंद मुख बार बार निरखै।
पुलकित तनु आनंद घन छन छन मन हरखै॥
पूछत तोतरात बात मातहि यदुराई
अतिसै सुख जाते तोहि मोहि कहु समुझाई
देव तुव बदन कमल मन आनंद होई
कहै कौन सुर नर मुनि जानै काइ कोई
सुन्दर मुख मोहि देखउ इच्छा अति मोरे
मम समान पुन्य पुंज बालक नहि तोरे
तुलसी प्रभु प्रेम विवश मनुज रूपधारी
बाल केलि लीला रस ब्रज जन हितकारी॥ १

End—गह गह गगन दुन्दभी बाजो

बरषि सुमन सुरगण गावत यश हरष मगन मुनि सुजन समाजो
सानुज सगन ससचिव सुयोधन भये मुख मलिन खाइ खल गाजो
लाज गाज उन बिन कुचालि कलि परी बजाइ कहुं कहुं गाजो
प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भलो भूरी भय भगो न भाजो
कहि पारथ सारथिहि सराहत गई बहोरि गरीब निवाजो
सिथिल सनेह मुदित मनहीं मन बसन बिच बीच बधू बिराजो
सभा सिंधु यदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भ्राजो
युग युग जग साके केशव के शमन कलेश कुसाज सुसाजो
तुलसी को न होइ सुनि कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजो। ६१
इति श्री राम गीतावल्यां कृष्ण चरितं समाप्तम्

Subject—१—श्री कृष्ण की बाल्यावस्था और यशोदा का प्रेम वर्णन।
२—गोपियों का यशोदा से श्री कृष्ण की शिकायत वर्णन।
३—श्री कृष्ण का गोपियों का उलहना झूठा बताना, जशोदा का श्री कृष्ण की तरफ़दारी करना।

४—दधि लीला का वर्णन
५—श्री कृष्ण की मुख शोभा वर्णन
६—श्री कृष्ण जन्म से ब्रज का आनन्द वर्णन
७—श्री कृष्ण का पर्वत उठाना वर्णन
८—श्री कृष्ण का गौ चरावन वर्णन
९—श्री कृष्ण का गाना वर्णन, श्री कृष्ण शोभा वर्णन
१०—श्री कृष्ण का मधुवन जाने में वियोग वर्णन
११—कुबरी का स्नेह वर्णन
१२—श्री कृष्ण विरह में ब्रज दशा वर्णन
१३—ब्रजवासियों का ऊधो से शिकायत वर्णन
१४—श्री कृष्ण पर विरह में दोषारोपण तथा गोप ग्वालों को प्रीति वर्णन
१५—मधुप दूत से गोपियों का श्री कृष्ण वियोग में निज दशा का वर्णन।
१६—ऊद्धव को शिक्षा गोपियों को।
१७—गोपियों का ऊद्धव को उलाहना देना
१८—श्री कृष्ण का ब्रज में लाने के विविध उपाय वर्णन।
१९—द्रौपदी के चीर हरन में उसको श्री कृष्ण से पुकार वर्णन।
२०—श्री कृष्ण की कृपा का वर्णन, अर्जुन और द्रौपदी का प्रेम वर्णन

समाप्त

No. 432(*d*2). Rāmājyā, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—34. Size—9 × 4 inches. Lines per page—7. Extent—406 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of manuscript—1871 Samvat or A.D. 1814. Place of deposit—Śri Mān Mahārāja Bhagawān Baksha Simhajī, Rāja Amethi, district Sultāṇapura (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ बानि, बिनायक, अम्ब, हर, रवि, गुरु, रमा, रमेश ॥ सुमिर करव सब काज सुभ मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सारद सिंधुर बदन ससि सुरसरि सुर गाइ ॥ सुमिरि करहु मंगल मुदित होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गनप हरि मंगल मगल मून ॥ सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईस अनुकूल ॥ भरत भारती रिपु दवन गुरु गनेस बुधवार ॥ सुमिरत सुलभ सुधर्मफल बिद्या बिनय बिचार ॥ ४ ॥ सुर गुरु हरि सिव राम गुर राऊ गिरा उर आनि। जो कछु करिय सो होइ सुभ खुलहि सुमंगल खानि ॥ ५ ॥ सुकृति सुमिरि गुर सारदा गनप लषन हनुमान ॥ करिय काज सुभसाज भल

निबहै नीक निदान ॥ ६ ॥ तुलसी तुलसी राम सिय सुमिरि लषन हनुमान ॥ काज विचारहु सो करहु दिन दिन पद कल्यान ॥ इति प्रथम सप्तक ॥

End—हनुमान सानुज भरत राम सिया उर पानि । लषन सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचारि बषानि ॥ जो जिहि काजहि अनुसरै सो दोहा जब होइ ॥ सगुन समै सब सत्य फल कहब राम मत सोइ ॥ गुन विश्वास विचित्र मति सगुन मनोहर हार । तुलसी रघुवर भक्ति उर बिलसति विमल विचार ॥ इति श्री तुलसीदास कृतं रामायण सामाज्ञा समाप्तं षष्ठोत्तर शत कमल फल मुष्टि तीनि परिमान । सप्त सप्त तजि शेष कौ राषहि सम बिलगान । प्रथम सर्ग जो शेष रहै दूजे सप्तक होइ । तीजे दोहा जानि के सगुन विचारब सोइ ॥ श्री रामाय नमः ॥ सम्बत् १८७१ ॥

Subject—(१) प्रथम सर्ग—(१) पृष्ठ १—२ तक—प्रथम सप्तक वन्दना तथा दशरथ का अंध मुनि के शाप देना, दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ करना ।

(२) पृ० २—३ तक—द्वितीय सप्तक । रामादि जन्म वर्णन ।

(३) पृ०३—४ तक—तृतीय सप्तक—चूड़ाकर्मादि के पश्चात राम का कौशिक मुनि के साथ गमन, शिलातारन ।

(४) पृ० ५—६ तक—चतुर्थ सप्तक—सीय स्वयंवर वर्णन ।

(५) पृ० ६—७ तक पंचम सप्तक—राम विवाह वर्णन ।

(६) पृ० ७—८ षष्टम सप्तक—दशरथ अवध गमन ।

(७) पृ० १० तक—सप्तम सप्तक—अवध में बधाई ।

(२)—द्वितीय सर्ग ।

(१) पृ० ११—२० तक—सप्तक—विषय

(१)—राम बनवास ।

(२)—से (७) तक—बन के कार्य ।

मुनियों से मिलाप इत्यादि ।

(३) तृतीय सर्ग—२१—२९ तक—दंडकारण्य वास वर्णन ।

(४) चतुर्थ सर्ग—पृ० २९—३७ तक—

(५) पंचम सर्ग पृ० ३८—४७ तक—

(६) पृ० ४८ से पृ० ५७ तक—षष्टम् सर्ग—

(७) पृ० ५७—पृ० ६८ तक—सप्तम सर्ग ।

No. 432(*d*2). Tulasīdāsa Krit Sagunāwali, by Tulāsīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—29. Size—8 × 4 inches. Lines per page—20. Extent—480 Anushṭup slokas.

Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition —1655 Samvat or A.D. 1598. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1889. Place of deposit—Paṇḍita Rishi Rāma Dubey, Brāhmaṇa Tolā, post office Fakharpur, district Baharāich (Oudh).

Beginning—

१	२	३	४
५	६	७	८

No. 432(*f*2). Rāmājnā, by Goswāmī Tulāsī Dāsa of Rājapura. Substance—Country-made paper. Leaves—16. Lines per page—24. Extent—384 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1896 Samvat or A.D. 1839. Place of deposit—Rāja Kiśore Ṭhikēdāra, Harachandapura, Rāe Barelī.

No. 432(*g*2). Tulāsīdāsa kē Saguna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—10 × 6½ inches. Lines per page—22. Extent—668 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript —1879 Samvat or A.D. 1822. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda (Bhondū), Bārābāṇkī.

No. 432(*h*2). Saguna Mālā, by Goswāmī Tulāsī Dāsa of Rājāpura (Bāṇda). Substance—Country-made paper. Leaves —49. Size—9½ × 5 inches. Lines per page—10. Extent—500 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1856 Samvat or A.D. 1799. Place of deposit—Paṇḍita Kailās Nāth Vājpaiyī, Asani, Fatehapura.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ बानि विनायक अंब रवि गुरु हर रमा रमेस । सुमिरि करहु सब काज सुभ मंगल देस बिदेस ॥ १ ॥ गुर सर सइ सिधुर बदन मांस सुरसरि सुरगाइ । सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुर गणप हरु मंगल मंगल

मूल। सुमिरत करतल सिद्ध सब होइ ईसु अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिपुदवनु गुरु गनेस बुध बार। सुमिरत सुलभ सुधरम फल विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥ सुर गुर गुर सिय रामगन राउ गिरा उर आनि। जो कछु करिय सो होइ सुभ खुलहि सुमंगल खानि ॥ ५ ॥ सुक सुमिरि गुरु सारदा गनपुलपन हनुमान। काज विचारेहु जो करहु दिन दिन बड़ कल्यान ॥ ६ ॥

End—हनुमान सानुज भरत राम सीय उर आनि। लषनु सुमिरि तुलसी कहत सगुन विचार बखानि ॥ ५ ॥ जो जेहि काजहि अनुहरइ सो दोहा जब होइ। सगुन समय सब सत्य फल कहब राम गति गोइ ॥ ६ ॥ गुन विश्वास विचित्र मनि सगुन मनोहर हार। तुलसी रघुबर भगत उर विलसत विमल विचार ॥ ७ ॥

इति श्री तुलसीदास कृतौ सगुन मालायां सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥ संवत १८५६ ॥ आश्विने शुक्ल पक्षे द्वादसी गुरु वासरे लोपीतं राम बकस कायथ सोनारपुरा मध्ये ॥

सर्ग							सप्तक							दोहा						
१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७

दोहा—कमल बीज सत अष्ट गनि तीन पुष्टि कर लेव।
पुनि गुनि दिन गुनि धातु गुनि सगुन सत्य कहि देव ॥

इति।

Subject—प्रथम सप्तक—देवों की स्तुति आदि वर्णन। पृ०—१

द्वितीय सप्तक—दशरथ राज सुख कथन, पुत्र जन्म वर्णन पृ० २—३

(३) राम आदि भाइयों की बाल क्रीडा, अहिल्या तारण पृ० ३—४

(४) सीय स्वयंवर वर्णन } पृ० ४—५,
(५) विवाह वर्णन }

(७) अवध आनंद वर्णन पृ० ६।

(१) राम वन गमन वर्णन, ग्रामवासियों से सम्मिलन, प्रेमभाव वर्णन। (२) सुमंत्र विलाप, दशरथ स्वर्गगमन वर्णन पृ० ७—१०। (३) भय चरित्र वर्णन। (४) भरत का पितृ कर्म करना। राम के पास जाना और लौटना, (५) चित्रकूट में साधु समाज वर्णन। (६) राम का पंचवटी वास। (७) मुनि यज्ञ, गृद्ध भेट कथन, पृ० १०—१३। (१) दंडक वर्णन। सूर्पणखा की नाक काटना, राक्षस वध वर्णन। (२) मारीच मृगरूप गमन। (३) सीता हरण, राम विलाप, गृद्ध युद्ध-दहन।

(४) चारोबंधु का स्मरण फल। पृ० १४—१६। (५) राम हनुमान भेंट और सुग्रीव मिलन। (६) बालि वध, सीय शोधार्थ सेना, (७) सायशोधन पृ० १७—१९। (१) रामअवतार वर्णन। (२) संस्कार वर्णन चारो बंधु के। (३) राम के कारण अवध आनंद कथन। सीता जन्म, राम महिमा कथन। पृ० २०—२२। (५) विश्वामित्र का राम लक्ष्मण को मांग करना। (६) मख रक्षा अहिल्या तारण। जनकपुर गमन। (७) धनुष भंग पृ० २३—२४ (१) राम नाम महिमा कथन। (२) हनुमान का लंका में जाना। (३) हनुमान सीता संवाद। (४) हनुमान भरत, शत्रुहन प्रशंसा वर्णन आदि। (५) अक्षवध, लंका-दहन, पृ० २५—२८, (६) विभीषण-राम भेंट। (७) रावण रावण युद्ध। इति पंचम सर्ग। (१) राक्षस-बध, सीताराम-भेंट, अवध गमन। (२) राम लक्ष्मण का माता गुरु आदि से भेंट। (३) भालु, कपि, राक्षसों की बिदाई—पृ० २९—३२। (४) अयोध्या में राजसुख वर्णन। (५) मृत बालक का जीवन वर्णन। (६) सीय त्याग, राम यज्ञ वर्णन। (७) लव कुश जन्म, सभा में यश-वर्णन, सीता का भूमि प्रवेश कथन—पृ० ३२-३६। (१) राम-राज्य सुख वर्णन (२) ग्रहों का फल। (३) रामपंचायतन-वर्णन (४) रामराज में कर्म-फल वर्णन। (५) बुरे भाग्य का फलना। (६) मंथरा और केकई का वर्णन, दुष्टता कथन। (७) सब देवों की प्रार्थना। चक्र व विधि सगनौती कथन। पृ० ३७—४२ तक।

इति।

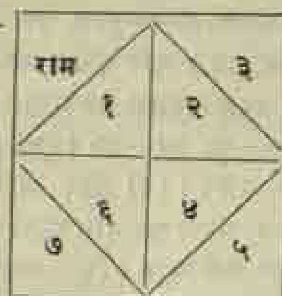
No. 432(*i*2). Rāma Śalākā, by Goswāmī Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—4½ × 4 inches. Lines per page—20. Extent—400 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1265 Fasli or A.D. 1848. Place of deposit—Paṇḍita Ajodhyā Prasāda Miśra, Kālail, post office Chilwaliyā, district Baharāich.

NOTE—(1) शेष सब विवरण No. 422 (j) (1) पर लिखा गया है।

No. 432(*j*2). Rāma Śalākā, by Goswāmī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—8½ × 6 inches. Lines per page—18. Extent—405 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāmanātha Lāla, Kāśī.

No. 432(*l2*). Rāma Śalākā, by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—8 × 4 inches. Lines per page—14. Extent—406 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1910 Samvat or A.D. 1853. Place of deposit—Paṇḍitā Lālatā Prasāda, village Paṇḍitapurwā, post office Sisaiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—



No. 432(*m2*). Rāma Mukātāwalī, by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—58. Size—7 × 5 inches. Lines per page—14. Extent—254 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1726 Samvat or A.D. 1669. Place of deposit—Paṇḍita Govinda Rāmājī, village Amahat Purawā Gajādhar Towārī, post office Sultāṇpur, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री मते रामानुजायनमः अथ राम मुक्तावली लिष्यते । सोरठा । बुझि देषि सब कोय ॥ राम नाम सम मंत्र नहिं ॥ बुधजन लेहु विलोय ॥ निर्गुण शगुन विचारि कै ॥ दोहा ॥ रूप कहौ निर्गुण कर सुनहु संत मन माह । निगम कहै तोंहि व्याह जो सोहहि सबंरा नाह ॥ २ ॥ चौपाई ॥ पावर मधुर मनोहर दोऊ ॥ वरन विलोचन जन जिय जोऊ ॥ प्रथमहि निर्गुण रूप अनुपा । केवल जो तन दूसर रूपा ॥ नहि तव पांच तत्त्व गुन तीनो ॥ नहि तव शिष्टि विधाता कीन्हों ॥ नहि तव इन्दु तरनि परगासा । नहि तव पावक नीर निवासा ॥ नहि तव नषत रवानि उजियारा ॥ नहि तव येकौ सकल पसारा ॥ नहि तव वारिज सुत परवेसा । नहि तव विस्नुन देव महेसा ॥ नहि तव गननायक न सुरेस । नहि तव गुरु सिष कर उपदेस ॥ देव तटनि नहि रवि सुत भयऊ इंदु सुता नहि संगम कियऊ ॥ नहि तव परसांठ तीरथ पूजा । नहि तव देव दनुज नहि

दूजा ॥ दोहा ॥ तुलसी कहा विसेषते तव कछु कित्तम नाहि। निर्गुन रूप अरूप हरि रहहि निरंतर माहि ॥ ३ ॥

End—अब देषा कलि सब कर नाचा। तब मै पवन तनै यह जाचा ॥ कासीपुरी संभु बखाना। तहं मोहि आइ मिले हनुमाना ॥ का मागहु तुम राम सेवक। जाको बिमो देव के देवक ॥ तब मैं कहा सुनहु सुरनायक। करहु किपा मोपर सुषदायक ॥ सो पथ कहहु जो रामहि पावो। बिनु प्रियास भवत्रास नसावो ॥ तब अस हुकुम पवन सुत दीन्हा। वेद पुरान सास्त्र मत चीन्हा ॥ करहु राम मुक्तावलिजाई। सो सुनि पढ़ि नर पाय पराई ॥ तबहि राम मुक्तावलि भयऊ ॥ अब मोहि पवन सुवन बल दयऊ ॥ जोई मंत्र बिरंचि हरि संभु रहे लवलाय। सोई राम मुक्तावली निगम कहो जेहि गाइ ॥ ४३ ॥ बैसो नाम बुध देषिहो बंधन कहु कहु होय ॥ पवन तनै की रावना पायो सकल बिलोय ॥ ४४ ॥ जो पढ़ै दिन औ राति। चित दै के बहु भांति ॥ बह सुनि नार जो कोय। सो राम पद कह होय ॥ सुनि है जो हिय धरि ध्यान। सो पावै पद निर्वान ॥ ताकह कलुष जो होय। तेहि संग रहै न सोय ॥ × × × × × दो० ॥ सब पुरान कर जीव यह कलि यो जो इतिहास। निगुन सगुन जो अजपा प्रगटेउ तुलसीदास ॥ ५५ ॥ इति श्री राम मुक्तावली श्री गोसाई तुलसीदास क्रित चरित्र सिव मानले संपूर्न सुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ मिति बैसाष सुदि जन्मराति मंगलवार। लिषित भवानी बकस पंडित जो प्रति देषा सो लिषा भ्रम दोषो न दीयते ॥ सुभस्थाने डोमर सुनार के पुरवा।

Subject—(१) पृ० १—७ तक सृष्टि निरूपण (२) पृ० ८—१० तक—भृगु द्वारा त्रिदेव परीक्षा। (३) पृ० ११—१३ तक—राम भेंट के साधन, सगुण, निर्गुण वर्णन। (४) पृ० १४—१५ तक—नवधा भक्ति वर्णन। (५) पृ० १६—२३ तक—कलयुग में रामनाम महिमा। (६) पृ० २४—३६ तक—तीन प्रकार के पुरुषों के लक्षण। (७) पृ० ३७—४६ तक—शास्त्र मत शरीर का रूपक नगर के साथ सादृश्य, अजपा जाप के भेद। (८) पृ० ४७—५४ तक नाम जपने का नियम, फल। (९) पृ० ५४—कलियुग में उत्पन्न हुए नृपों में निर्वाण पदाधिकारी। (१०) ग्रंथ—पाठ—महात्म्य. पृ० ५७ तक पृ० ५८ में रामनाम महिमा के दे। कवित्त ॥

No. 432(*u*2). Rāma Muktāwali, by Tulasi Dāsaji. Substance—Country-made paper. Leaves—20. Size—9 × 7 inches. Lines per page—24. Extent—300 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1884

Samvat or A. D. 1827. Place of deposit—Paṇḍita Maṅgaladeva, village Rewalī, post office Baharāich, district Baharāich (Oudh).

No. 432(o2). Rāmāyaṇa (Bālakāṇḍa), by Goswāmi Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—864. Size—8 × 6½ inches. Lines per page—17. Extent—7,344 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1903 Saṃvat or A.D. 1846. Place of deposit—Ṭhākura Bindhyābakhsha Siṃhajī, village Tikarā, post office Dhanauli, district Bārābaṅki (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः गुरुनारायणाय अतुलित बलधामं स्वर्ण शैलाभ देहं दनुजवन कृशानं ज्ञाननामाग्र गण्यं सकल गुणनिधानं वानरानांधीशं रघुपति वरदूतं वात जातं नमामि ॥ १ ॥ मनोजवं मारुततुल्य वेगं जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरेष्टं ॥ वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्यं ॥ २ ॥ उल्लिंघ सिंधो सलिलं सलीलवः शोकं वन्हि जनकात्मजाया ॥ प्रदायते नैव ददाह लंका नमामितं प्रांजलि राजनेयम् ॥ ३ ॥ गोः पदं कृतवारोशं मसको कृत राक्षसं ॥ रामायन महं माला रत्नं वन्दे निलात्मजं ॥ ४ ॥ वीर हनुमते नमः ॥ श्रीगणेशाय-नमः श्रीगुरुशरण ॥ वर्णान मर्थ संघानां रसानां छंदसामपि ॥ मंगलानांच क र्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकैा ॥ भवानी शंकरो वन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणो ॥ जिह्वा विना न पश्यंति सिद्धि स्वांतस्थमोश्वरं ॥ २ ॥ वंदे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रुपिणे ॥ जामाश्रितो हि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्दिते ॥ ३ ॥ सीताराम गुणग्राम पुन्यारन्य विहारिणो, वन्दे विशुद्ध विज्ञानो कवीश्वर कपीश्वरौ ॥४ ॥

End—सोरठा—भ?श्वरि सुखधाम पतिसुख प्रति निर्मल सुभ शिवपुरी तहां देव विश्राम सो महिमा वरनैा कहा ॥ दोहा ॥ कहे सुने समुझै सकल सो प्रभु गुनगन गान । सीता पति रघुकुल तिलक सदा करहि कल्यान ॥ सोरठा—सिय रघुवीर विवाह जो सप्रेम गावहिं सुनहि ॥ तेन कहु सदा उछाह मंगलयेतन रामजस ॥ दोहा ॥ कठिन काल कलिमल ग्रसित, साधन कछौ न होइ ॥ पेह विचार विश्वास करि सुमिरहि बुध जन सोइ ॥ सोरठा—मनहरि पद अनुराग करहि त्याग नाना कपट । महामोह निसु जागु, सोवत वीते काल बहु ॥ इति श्री रामचरित्रे कलिकलुषविध्वंसने विमल वैराग्य संपादिने तुलसीकृत बालकांड रामायण संपूर्ण शुभमस्तु कल्याण मस्तु मिति पोषमासे कृष्णपक्षे पंचम्यां सोम वासरे संवत १९०३ शाके १७६८ ॥ दसखत पजीत सिंह ॥ वास टिकरा ॥ पठनार्थं बलदेव वक्ष्या सिंह ॥

Subject—(१) पृ० १—१७७ तक—हनूमान जी की वंदना, वाणी तथा विनायक की वंदना, भवानी शंकर की वंदना, गुरु की वंदना, कवीश्वर तथा कपीश्वर की वंदना, सीता की वंदना, रामायण की प्रस्तावना। गणेशजी की वंदना, तथा महिमा नारायण, शिव, गुरु के कमल चरण की वंदना, चरणरज की बड़ाई पद नख की शक्ति का वर्णन। सज्जन विनय, साधु चरित विसदता तथा उसके फल। खल वंदना, संगति का प्रभाव, देव दनुजादि सभी की वंदना। विविध विरान वर्णन के साथ ग्रन्थ चतुष्टय भक्त तथा अभक्त जनों का ध्यान। कविको दीनता स्वमुखते, व्यास इत्यादि कवि जन की वंदना, कविता का वास्तविक रूप। चारों वेदों की वंदना, विप्र, सारद सरितादि वंदना, कथा का फल, अवधपुरी की वंदना, राम के माता पिता की वंदना, भरत हनुमानादि रामायण के अन्यपात्रों की वंदना। रामनाम महिमा, रामायण की कथा प्रथम किसने किससे कही, रामायण की कथा अपने गुरु से सुनने का वर्णन। राम गुणानुवाद विषदना, रामायण निर्माण काल। संवत सोरह सौ इकतीसा। करत कथा हरि पद धरि सीसा। भैाम नैामी वार मधु मासा॥ अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥ इस ग्रंथ के रामचरित मानस नाम रखने का कारण, कथा की विषदता का वर्णन, त्रिविधि श्रोता वर्णन, सक्षप में कथाओं की गणना, शंकर विप्र की कथा, कलयुग की दशा उसमें वर्णाश्रमादि की दुर्व्यवस्था का वर्णन, कलयुग के गुण वर्णन, हनूमान तथा तुलसीदास जी का मिलन, भारद्वाज, याज्ञवल्क संवाद, शिव तथा सती का संवाद, पारवती का जन्म, षट मुख जन्म, त्रिपुरा दनुज जन्म, गणेश का जन्म, रामसर शिव पारवती का संवाद, रामचंद्र के भजन की महिमा, राम के अवतारादि लेने का वर्णन।

(२) पृ० १७८—६५० तक—जालंधर की कथा, नारद मोह वर्णन, मनुसतरूपा की तपस्या, भानुप्रताप की कथा, मंदोदरी का जन्म, देवासुर संग्राम, रावण-जन्म, रावण लंका प्रवेश, मेघनाद तपस्या, अहिरावन का जन्म, इन्द्र-मेघनाद संवाद, मेघनाद का विवाह, गजादलोप की कथा, राजारघु की कथा, राजाअज की कथा, रावन-नारद संवाद, मनुसतरूपा का जन्म, सुमंत-मेघनाद (संग्राम) नेमाहित की कथा, दशरथ-कौशल्या का विवाह। सुमंत का विवाह, दशरथ-खरदूषण का संग्राम, केकई-सुमित्रा का विवाह, जानकी का जन्म, रावन चरित्र, वालि-सुग्रीव का जन्म, अंबरीष की कथा, लोमपाद राजा की कथा, श्रीरामचन्द्रजी की कथा जन्म, रघुवंशियों का वंश वर्णन, विश्वामित्र की कथा, ताड़का की कथा, सोनभद्र नदी की कथा, परशुराम का जन्म, गैतम-इन्द्र संवाद, राजानहुष की कथा, भस्मासुर की कथा,

चउनो तपस्या, अंजनो विवाह, महावोर जन्म, महावोर-कुंभज संवाद, बलि-वावन संवाद, राजसागर का विवाह।

(३) पृ० ६५१—६८४ तक—अमर को यश, षट्वमाम का राज्य, दलीप का राज्य, भागीरथ को कथा, नारद-ब्रह्मा का संवाद, रावन की कथा, गंगा जी की चारो धाराओं को कथा, जनक-विश्वामित्र संवाद। कुलकारी की कथा, परशुराम संवाद, जनक तपस्या, धनुहा की कथा, श्रीरामजानुकी विवाह।

No. 432(*p*2). Rāmāyaṇa (Kishkindhākāṇda), by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—60. Size—10 × 5 inches. Lines per page—10. Extent—600 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1880 Samvat or A.D. 1823. Place of deposit—Paṇḍita Bisambhara Nātha Pāthaka, village Tikariyā Pura Gangadhar, post office Gauriganj (Sultāṇpur).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री सरस्वत्यैनमः श्री गुरुभ्यांनमः ॥ अथ किष्किंधा कांड प्रारंभ ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि बरनौ रघुपती विमल जस जो दायक फल चारी ॥ चौपाई ॥ सुनहुं उमव विनियो गुणधामा। पंपासार ते चले श्री रामा। अनुज समेत तहां चलो धाये। जहां प्रकशिक मुनि ध्यान लगाये ॥ पूछा मुनहि नया पद माथा। जदपि सब जानत रघुनाथा ॥ सुनो प्रोय वचन मुनोस प्रवोना। माग्य सराहि हरोष अति कोना ॥ कर जोरो तब पोति दोहाई ॥ प्रेम मोद न हृदय समाई ॥ तदपि सुनौ तुम्ह कुल देवा ॥ राम चहहि निज सुजस गवावा ॥ मुनि सो कह प्रभु तुम को चहहुं ॥ कठिन तपस्या केहि नित करहुं ॥ सुनत वचन मुनि भये सुखारी ॥ नयन खोलि प्रभु निकट निहारी ॥

दोहा ॥

नोल जलज तन जटा शीर कटी तुनीर मुनी चिरा।
प्रफुल नयन शर चाप कर हरष मक्त भये मोरा ॥

End—दोहा:—भव भेषज रघुनाथ जस सुनत जे नर नारि ॥ तिन कर सकल मनोरथ सिद्धि करहि तृपुरारि ॥ नोल तम तन श्याम कोम कोटि सोभा अधिक ॥ सुनत तासु गुण ग्राम। जासु नाम अग अघ बधिक ॥ ५२ ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलिकलुष विध्वंसने ॥ × × × ॥ चतुर्थ कांड सोपान किष्किंधा कांड सोपान ॥ संवत १८८० शाके १७४५ फाल्गुनि शुक्ल पक्ष सप्तमी ॥ लिखितं रामचन्द्र रघुनाथ श्री पढेरपुरकर।

Subject—तुलसी कृत रामायण एक कांड। विषय उसी के अनुसार है।

No. 432(*q*2). Rāmāyaṇa, Uttar, Sundar and Kishkindhā Kandas, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—300. Size—9×6 inches. Lines per page—15. Extent—1,650 Anushṭup ślokās. Incomplete. Appearance—Old. Character—Kaithī. Date of manuscript—1855 Samvat or A.D. 1798. Place of deposit—Paṇḍitā Sambhunāthaji, village Bāboorī, post office Aliganja Bazar, Sultāṇpura (Oudh).

Beginning—आरण्य कांड पृ० ४३ अन्तिम:—

छन्द—कपि संगन सैन संघारी निशि नारी सीतहि आनी है: त्रैलोक पावन सु सुर मुनि नारद आदि बखानी है ? जास कहत गावत सुनत समुझत प्रभु पदन समाई है: रघुबीर पथ पंथोज मधुकर दास तुलसी गाई है: भो भेषज रघुनाथ जस कहहि सुनहि नर नारि ॥ तिन्ह कर सुफल मनोरथ सिद्धि करहि त्रिपुरारी ॥ दोहा: बुधो वोसाष राषो उर मानस कहा सभम्यान: तुलसी सो नार भक्त तनमा यहो पद नीर मान: इती श्री माह पोथी किष्किंधा कांड रामायेन कोत गोसाई तुलसीदास जी कथ संपुरनंम सुभमस्तु समाप्तः जो परतो देखा सो लीखा मम दोषो न दीयते पंडोत जन सन बोनतीः मोरो टुटल अक्षर बाचब समझोरो सन १२०६ संवत: १८५५

End—उत्तर कांड—प्रथम पृष्ट:—श्री गनेसायेनमह भवानी जीय सहाइ: पोथी उत्तर कांड लोषा: दोहा: श्री गुरुचरन सरोजः रजनीज मन मुकुर सुधारीः बरनो रघुपती बीमल जस, जो दायेक फलचारीः चौपाई:—सीता लखन सहित भगवाना ॥ चले सकल सुरसाजि बेवाना ॥ पहुप बेवान तहा चली आवा ॥ दंडक बन जहां परम सुहावा ॥ जहां करी मुनन्हि केर संतोषा। चला-बेवान तहाते चोषा ॥ अंतरीछ सो चला उड़ाइ ॥ अंजावलोपुर पहुंचे जाइ ॥ अंजावली देषा हनुमाना ॥ जनम भुमी माता असथाना ॥ जाइ द्वार ठाढ़ प्रभु भयेउ: ॥ हनुमान तब भीतर गयेउ: ॥

Subject—(१) आरण्यकांड—८६ पृष्ट।

(२) सुन्दरकांड—१३० पृष्ट

(३) उत्तरकांड—८४ पृष्ट

No. 432(*r*2). Rāmāyaṇa Uttara Kāṇḍa, by Tulasi Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—150. Size—9 ×

4½ inches. Lines per page—8. Extent—862 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1837 Samvat or A.D. 1780. Place of deposit—Paṇḍitā Bhawānī Bakhsa, village Ulara, post office Musāfirakhānā, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—आदि के पृष्ट नष्ट हो गये हैं।

× × × ×

× × × ×

पृ० १४—यह संशय प्रभु देइ चुकाई। आशु सौनक सरहेहु गोशाई ॥ दो० ॥ भरत अनुज के वचन सुनि लीन्ह शुचि कर आंसु ॥ विरह दया के धुम हिय उमगिनयन वह आंसु ॥ सोरठा ॥ तिमि पर पंवहि जोशु दुन कहेउ कछु वचन हठि सिय मनसा पिय सोऊ सो तुम्हो करनोय अब ॥ ६१ ॥

End—छन्द—पक्ष तानि समय चुकानि गगन ब्रह्म बानी भई ॥ द्वापर परितोखे मुनि मन पोखे तव तुम कुवि भाग पलई ॥ प्रभु मनु सेवा पूविसु देवा मति पावन तव तोहि दई ॥ शुलार महानम प्रभु जो आतम नियकर पोरि प्रसंसकई ॥ पूनिक मज्जन पाय निबंडन गगन जो बानी ब्रह्म भई ॥ फल चारि दाता पविष्ट अघाना मज्जन सरजू पुन्यलई ॥ कवि मुदित बधावा तुलसो गावा मन अति मोद अनन्द भरे ॥ यह चरित यो गावहि हरिपद पावहि युगल लोक परलोक करै ॥ दो० ॥ तुलसीदास सतसंग कह यो चाहसि सुख लोक ॥ रसना राम कहह निति यो यह चहसि विसोक ॥ १८५ ॥ इति लवकुसो संपूर्ण संवत् १८३७ ॥ बोधई कायस्थ लिखित ॥

Subject—लंका विजय के पश्चात् अवध आगमन होने पर श्री सीता जी का वनोवास होना, लवकुशजन्म, अश्वमेध यज्ञ। अश्व का लवकुश द्वारा बंधन, लवकुश और रामदल से युद्ध।

No. 432(s2). Uttara Kāṇḍa (Rāmāyaṇa), by Goswāmī Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—107. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—28. Extent—1,498 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1897 Samvat or A.D. 1840. Place of deposit—Śaṇkara Prasāda, post office Chāndapura, district Rāe Barelī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ उत्तर काण्ड लिख्यते ॥ श्लोक ॥ केकी कंठाभनीलं सुरवर विलसद्विप्रपादाब्ज चिन्हं ॥ शोभाढ्यं पीतवस्त्र

सरसिज नयनं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ पाणीनाराच चापं कपि निकर युतं बंधुता सेव्य मानं ॥ नैामीड्यं जानकीशं रघुवर मनिशं पुष्पकारूढ़ रामं ॥ १ ॥ कैाशलेंद्र पद कंज मंजुलोकोमलावजमहेस बंदितौ ॥ जानकी कर सरोज ललितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गौ ॥ कुंद इंदु वर गैार सुन्दरं ॥ अंबिका पतिममीष्ठ सिद्धिदं ॥ कारुणीक कलकंज लोचनं नैामिशंकर मनंग मोचनं । दोहा ॥ रहा एक दिन अवधिकर ॥ अति आरत पुर लोग ॥ जहं तहं सोचहि नारि नर ॥ कृशतन राम वियोग ॥ दोहा ॥ शकुन होहि सुन्दर सकल ॥ मन प्रसन्न सबकेर ॥ प्रभु आगमन जनावजनु ॥ नगर रम्य चहुंफेर ॥ दोहा ॥ कैाशिल्यादि मातु सब ॥ मन अनंद अस होई । आये प्रभु सिय अनुज युत ॥ कहन चहत असकोई ॥

End—सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ॥ सो एक राम अकाम हित निर्वाण पद सम आन को ॥ जाकी कृपा लवलेश तें मतिमंद तुलसी दास हू ॥ पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहुं ॥ दोहा ॥ मोसम दीन न दीन हित तुम समान रघुबीर ॥ अस बिचारि रघुबंश मनि हरहु विषम भव-भीर ॥ दोहा ॥ कामहि नारि पियारि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम ॥ ऐसे होह के लागहुं तुलसी के मन राम ॥ इति श्री रामचरित मानसे सकल कलिकलुष ॥ विध्वंसने विमल वैराग्य संम्पादिनो नाम सप्त सोपान शुभ मस्तु सिद्धिरस्तु अथ ॥ उत्तरकांड ससकृत अक्षर मोतोनपति मिलाय के सोधि के लोषा ॥ दसषत लोकनाथ गुरु शिवबकस दास कायस्थ के पुत्र ॥ माछिनगर ॥ श्री शुभ संमत १८९७ माद्र शुक्ल ३ ।

No. 432(*f*2). Sākhi Goswāmī Tulasī Dāsa kī, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—126. Size—9 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—630 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1868 Samvat or A. D. 1811. Place of deposit—Paṇḍitā Govinda Rāmajī, Purwa Gajādhara Tewarī, village Amahat, district Sultānpura.

Beginning—श्री गनेसायनमः ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ राम सीता अथ मन को परिकर्न लिख्यते साषी गोसाईं तुलसीदास जी की ॥ दोहा ॥ तुलसी मन पूरवहि सानि सिवासर ध्यावै ॥ पछिम दिसि पावै नहीं कैसे थिति पावै ॥ १ ॥ पछिम बसै जु मान पति हरन अनंत अघत्रास ॥ तुलसी ताहि बिसारि मन पूरब करै प्रकास ॥ २ ॥ बिन नैना बिन नासिका बिन स्रवनो चलि जाय ॥ बिन तुलसी रसना लुबुधि सकल स्वाद रस षाय ॥

End—यह देपै बांबु समझोइ ॥ बीचे बसै ज्यों भुयंगा जोइ ॥ तुलसी बिना भगति निहिकाम ॥ तहा न राचे येकौ जाम ॥ १७ ॥ सदां उदासी नाही नेह ॥ कहा ग्रेह कहा दिव्य देह ॥ तुलसी राम भजि रहै सो न्यारा ॥ त्यागै कोकट प्रपंच पसारा ॥ १८ ॥ तुलसी ऐसा सती जब होइ जनी जनन का संगी सोइ ॥ मनुवा चाहि ह्वै असवार पहुंचै बेगि मोक्षि दरवार ॥१९॥ इति श्री सती जनको परिकरण संपूरन ॥ मिति पुस सुदि ॥ ४ ॥ संवत् १८६८ ।

Subject—(१) पृ० १—२८ तक १३० छन्दों में—मनका प्रकरण ।
(२) पृ० २९—४४ तक—७३ छन्दों में—योगका प्रकरण ।
(३) पृ० ४५—५२ तक—३७ छंदों में—साखी प्रकरण ।
(४) पृ० ५३—७२ तक—१०३ छन्दों में—गुरु प्रकरण ।
(५) पृ० ७३—८८ तक—७६ छन्दों में—सुमिरण प्रकरण ।
(६) पृ० ७७—९० तक—१३ छन्दों में—ज्ञान प्रकरण ।
(७) पृ० ९१—१०३ तक—६१ छन्दों में—परचो प्रकरण ।
(८) पृ० १०४—११३ तक—५३ छन्दों में—चेतावनी प्रकरण ।
(९) पृ० ११४—१२१ तक—३७ छन्दों में—सत्संग प्रकरण ।
(१०) पृ० १२२—१२६ तक—१९ छन्दों में—सतीजन प्रकरण ।

No. 432(*u*2). Saptaka, by Tulsasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—48. Size—7 × 5½ inches. Lines per page—14. Extent—504 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍitā Raghunandana Prasādajī, village Tilawaya, post office Suratganja, district Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—अथ तृतीय सप्तक ॥ भूप भवन भाइन्ह सहित रघुबर बाल बिनोद ॥ सुमिरत सब कल्यान जग पग पग मंगल मोद ॥ १ ॥ करन वेध चूड़ा करन श्री रघुबीर उछाेत ॥ समय सुफल कल्यान मय मंजुल मंगल गोत ॥ २ ॥ भरत शत्रुसूदन लषन सहित सुमिरु रघुनाथ ॥ करहु सुमिरि सुजस बड़ मिलहि सु मंगल साथ ॥ ३ ॥ मुनि मषपाल कृपाल प्रभु चरन कमल उर आनि ॥ तजहु सोच संकट मिटहि सत्य सगुन जव जानि ॥४ ॥ राम लषन कैासिक सहित सुमिरु करहु पयान ॥ लच्छि लाभ जय जगत जसु मंगल सगुन प्रमान ॥ ५ ॥ हानि मीचु दारिद दुरित आदि अंत गत बीच ॥ राम बिमुष षल आपने गयो निसाचर नीच ॥ ६ ॥ सिला शाप मोचन चरन सुमिरहु तुलसी दास ॥ तजहु सोच संकट मिटहि पुजहि मन की आस ॥ ७ ॥ इति तृतीय सप्तक समाप्त ॥

End—सुधा सिन्धु सुर तरु सुमन सुफल सुहावन बात ॥ तुलसी सीतापति भक्ति सगुन सुमंगल तात ॥ १ ॥ सिद्ध समागम संपदा सदन सगेस सुवास ॥ सीतानाथ प्रसाद सुभ सगुन सुमंगल बास ॥ २ ॥ कौशिल्या कल्यान मय सुमिरि बारतप नाम ॥ सगुन सुमंगल काज कियाकरी धरिस राम ॥ ३ ॥ सुवन लषन रिपु सुदन पावहि पति पद प्रेम ॥ सुमिरि सुमित्रा नाम जग जोति भलेहि सुनाम

× × × × ×

राम वाम दित जानुको लषण दाहिनो वोर ॥ ध्यान सकल कल्यान मय तुलसी सुरतरु तोर ॥ ७ ॥

Subject—(१) पृ० १ नष्ट । पृ० २—८ तक—प्रथम सर्ग । प्रथम सप्तक और द्वितीय सप्तक नष्ट । तीसरा सप्तक—राजा दशरथ का शिकार को जाना तथा उनको शाप लगना, पुत्र यज्ञ तथा राम जन्म । चौथा सप्तक—कर्णवेध चूड़ा कर्मादि संस्कार, मुनि मख रक्षा, सिला शाप मोचन । पंचम सप्तक—सिया स्वयंवर तथा विवाह । षष्ट सप्तक—विवाह के पश्चात् अवध आगमन । सप्तम सप्तक—राजप्रासाद तथा नगर में प्रसन्नता ।

(२) पृ० ८—१५ तक—द्वितीय सर्ग । प्रथम सप्तक—राम वन गमन, द्वितीय सप्तक—अवध में शोक तथा मार्ग निवासियों का दर्शनों से मुग्ध होना । तृतीय सप्तक—भरत शत्रुहन आगमन, राजा का दाह संस्कार, षष्ट सप्तक—मंदाकिनी पर निवास, सीता को वस्त्र प्राप्त होना । काक-कुचाल, विराध-वध, सरभंग देह त्याग तथा मुनियों से मिलन । सप्तम-सप्तक—राम पंचवटी निवास ।

(३) पृ० १६—२२ तक—तृतीय सर्ग । प्रथम सप्तक—दंडक वन निवास, सूर्पणखा कुकृत्य, खरदूषण वध, द्वितीय सप्तक-सूर्पणखा को रावण से शिकायत । तृतीय सप्तक—सीताहरण । चतुर्थ सप्तक पंचम सप्तक—सुग्रीव मिलाप तथा बालि वध । षष्ट तथा सप्तम सप्तक—सीता को हनुमान का मुद्रिका देना और उनको सुधि लाना ।

(४) पृ० २३—३० तक—चतुर्थ सर्ग । राम जन्मादि तथा राम बाल केलि वर्णन—राजा का दान देना चारो भाइयों के नाम जपने के फल । मुनि मख रक्षा करने का वर्णन । धनुष भंग तथा विवाह ।

(५) पृ० ३१—३८ तक—पंचम सर्ग-राम नामादि के कुछ-पुत्रादि उत्पत्ति-फलों का वर्णन । सुरसा कपि संवाद, त्रिजटा स्वप्न, हनुमान का मुद्रा डालना, रावन का बाग विनाश । चारों भाइयों के सरन के पृथक पृथक फल । लंका दहन, हनुमान का राम के पास पहुंचना, युद्ध का वर्णन तथा कुछ कुफलों का वर्णन ।

(६) पृ० ३९—४५ तक—षष्ट सर्ग । राक्षसों का नष्ट होना, बन्दरों का जीवित करना, सीता को राम के पास लाना । सीता को अग्नि परीक्षा, राम का

जानकी को अनुराग दिखाना। राज्याभिषेक। सुरों का प्रसन्नता प्रकाश। विभीषण को राज्य देना। राम के दर्वाज़े पर मृतक बालक के ब्राह्मण पिता का आगमन, बालक का जीवित होना। रामराज्य का सुख। सीता को कलंक, सीता का परित्याग, राम का पछताना, वाल्मीकि आश्रम में लवकुश का जन्म।

(७) पृ० ४६—४८—सप्तम सर्ग। प्रथम तथा द्वि० स०-राम इत्यादि रामायण के पात्रों के स्मरण के फल। शेष पांच सतक लुप्त हो गये हैं।

No. 432(v2). Sata Pancha Chaupāī, by Tulasī Dāsa of Rājāpura. Substance—New paper. Leaves—10. Size—7 × 5 inches. Lines per page—12. Extent—105 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Place of deposit—Lālā Tulasī Rāma Nigama, Rāe Barelī.

Beginning—श्री जानकी वल्लभायनमः॥ अथ सतपंच चौपाई लिख्यते॥ संपू मनु सतिरूप दरस समे बालकांड दोहा। नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम। लाजे तन सोभा निरषि कोटि कोटि सत काम॥ चौपाई॥ सरद मयंक वदन छवि सीवा, चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा। अधर अरुन सुंदर रद नासा, बिधुकर निकर विनिंदित हासा। नौ अम्बुज अम्बक छवि नीके, चितवन ललित भावती जी के, भृकुटी मनोज चाप छवि हारी, तिलक ललाट पटल दुतिकारी, कुंडल मकर मकुट सिर भ्राजा, कुटिल केस जनु मधुप समाजा, उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला, पदिक हार भूषन मनि आला,

End—ललित कपोल मनोहर नासा सकल सुषद ससिकर सम हासा ९९
नीलकंज लोचन भौ मोचन भ्राजत भाल तिलक गोरोचन १००
बिकट भृकुटी सम श्रवन सोहाये कुंचित कच मेचक छवि छाये १०१
पीत झीन झंगुली तन सोही किलकनि चितवनि भावत मोही १०२
नृप रासि नृप अजिर बिहारी नाचत निज प्रतिबिम्ब निहारी १०३
मोसन करै विविधि विधि क्रीडा बरनत चरित होत मोहि वीडा १०४
किलकत मोहि धरन जब धावें चलौं भागि तब पूप देषावें १०५
दोहा॥ आवत निकट हंसै प्रभु भाजत रुदन कराहि
जाउं समीप गहन पद फिरि फिरि चितै पराहि
सतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै
दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुवर हरै इति
सतपंच चौपाई संपूरन सुभमस्तु श्री सीताराम श्रीराम श्रीराम।

Subject—श्री सीताराम की नख शिख वर्णन।

मुख शोभा वर्णन पृ० १—२ तक
कपोल ,,
चिबुक ,,
ग्रीवा ,,
अधर ,,
दंत ,,
नासा ,,
भृकुटी ,,
तिलक ,,
कुंडल ,,
केश ,,
उर ,,
कंधा ,,
बाहु ,,
कर भुज दंडा ,,
कटि ,,
पद ,,
नैन ,,
शोभा वर्णन ,,
शंभु मनु सतरूप समय
अथ जन्म समय—
राम लक्ष्मण को छवि वर्णन नख शिख—२—३ तक

जनकपुर देखने के समय राम लक्ष्मण को नख शिख को शोभा वर्णन पृ० ३-५। विवाह समय को शोभा वर्णन पृ० ५—६। तक कोहबर समय को शोभा पृ० ६—७। भरत मिलाप समय शोभा पृ० ७। शिव मिलाप समय को शोभा पृ० ७। विभीषण मिलाप समय पृ० ८। लंकाकांड कुंभकर्ण वचन उत्तरकांड भरत मिलाप समय पृ० ८—१० तक काकभुसंडि दरस समय। शत पंच चौपाई पढ़ने से अविद्या और पंच विकारों से रहित होना।

No. 432(*w*2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—17. Size—14 × 4 inches. Lines per page—16. Extent—170 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1875 Samvat or A.D. 1818. Place of deposit—Paṇḍita Rāma Autāra,

village Paṇḍitapurwā, post office Rasiyā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसूर्यायनमः अथ सूर्य कथा लिख्यते ॥ दोहा ॥ एक शमय गिरिजा सहित संभु रहे कैलास। उपजी अति अनुराग हद सूर्य कथा प्रगास ॥ दोहा ॥ आदि भवानी संकरहि पूछे प्रेम दिढ़ाइ। सूर्य प्रताप जो काज है सो मोहि कहो बुझाइ ॥ दोहा ॥ श्री सूर्य की महिमा संकरहि वर्णे लीन्ह। कोटिन विप्र जिवाइ कै दान सो वरन कै दीन्ह ॥ दे० ॥ प्रथमै सूर्य मनाइ कै सिवु कीन्ह प्रनाम। अरघ दीन्ह कर जोरि कै वर्णेव लाग्यो नाम ॥ चै० ॥ श्री सूर्य देवता सुमिरौं तुम्हही। सुमिरत ग्यान बुद्धि दे मोही ॥ जोति स्वरूप आदित बलवाना। तेज प्रताप तुम्ह अग्नि समाना। तुम्ह आदित परमेश्वर स्वामी। अलष निरंजन अंतरजामी ॥ वरनि न जाइ जोति कर लीला धरम धुरंधर परम सुलीला ॥ जोतिकला चहुँओर विराजे जगमग कानन कुंडल छाजे। स्वेत वरन छवि तुरंग सवारी ग्यान निधान धर्म व्रतधारी ॥ परम पुनीत आदित अविनासी। अछै अजीत सब घट घट वासी ॥

End—दक्षिण दिसि है कासी प्रयागा तहवां बहइ सरस्वती गंगा। दे० ॥ दक्षिण दिसि पुनीति है सुनहु उमा मनलाइ। आगिल अर्थ जस होइ है तस मैं कहो बुझाइ ॥ कलै के बीते बीत सब जाई। मानुष का तन मानुष पाई। तब अवतार प्रभु लेहैं अकलंकी। मानुस तन होइहि जिमि पंकी। दक्षिण दिसि तब उदइहहि जाई ॥ अति हित कथा कहैं समुझाई ॥ धर्म कथा होइहि दिनराती। नेम धर्म करि है बहु भांती ॥ विप्र अघाइ आप तब पइ हैं जिस दिन कथा सूर्य की गइ है ॥ दक्षिण दिसि रवि लेई निवासा। धर्म कथा तहं होइ प्रकासा। मिथ्या वचन कोउ नहि भषि हैं। जिस दिन टेक सूर्य पर रषि है। धर्म विचार सूर्य तब करि हैं। द्वादस कला जोति तहं उइ है ॥ दोहा ॥ द्वादस कला होइ उइहि रवि तहं जाइ ॥ जन्म जन्म के पातक हत्या कहत सुनत सब जाइ। सोरठा ॥ उमासंभु के संपदा यह भषावे। सूर्य को पढ़ै सुनै मन लावे। पावै पद निर्मांण इति श्री सूर्यपुराण लिषितं वस्तीराम मिश्रस्य शुभं भूयात संवत १८७५ समै पोष १५ दिन भृगुवासरे ॥ राम राम राम राम राम।

Subject—सूर्य की कथा और उसकी महिमा मय उदाहरण यथा-सूर्य भगवान का व्रत करने से अंधे को नेत्र, कोढ़ी को सुन्दर काया, निर्धन को धन और बिना पुत्र वाले को पुत्र प्राप्ति होती है।

No. 432(*x*2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves 22. Size—7 × 4½ inches. Lines per page—20. Extent—275 Anushṭup slokas. Appearance—

Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1906 Samvat or A.D. 1899. Place of deposit—Hazārī Lāla, post office Rahua, district Rāe Barelī.

Beginning—ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ श्री सूरज जी सहाये नमः श्री हनुमान जी सहाये नमः ॥ श्री सुरासती जी सहाये नमः श्री तेतीस कोटी देवता जी सहाये नमः ॥ श्री गुरु जी सहाये नमः ॥ श्री सूरज पुरान लीषते ॥ दोहा ॥ बंदौं चरननि उर धरी भक्ति प्रेम लवलीन । महिमा अगम अपार है साहेब ग्यान प्रवीन ॥ बंदौं चरन जोरी कर श्रीपती गौरी गनेस । तुलसीदास करो बरनो बरनौ कथा दिनेस ॥ चौपाई ॥ श्री सूरज देवता सुमिरौ तोही । सुमीरत ग्यान बुधी देह मोही ॥ जोती सरूप आदीत बनवाना ॥ तेज प्रताप न अंगोनो समाना ॥ तुम आदीत प्रमेस्वर स्वामी ॥ अलष नोरंजन अंतरजामी ॥ बरनोन आइ जोति कै लीला ॥ चरम धुरंधर प्रम सीसीला ॥ जोतिकला चहुंवोर बिराजै ॥ जगमग कानन कुंडल काजै ॥ नील बरन छबी तुरंग असवारी ॥ ग्यान नीधान धरम ब्रतधारी ॥ प्रेम पुनीत आदीत अबीनासी ॥ अजै अनादी सकल घटवासी ॥

End—अथवा पीपर बटतर जायो । ब्रत करै रविनाम कहायो । रोग सकल तन के सब जाही ॥ तेज मान रवि प्रवेश कराही ॥ पुत्र पउत्र संपदा ते पावही ॥ सो बिसेष करी स्तुती अस गावही ॥ दिन दिन भक्ती करै अधीकाई ॥ तेहि पर आदित रहहि सहाई ॥ सुर दुरलभ जग बिबिधी भोग करी ॥ अंत अवस्था सुर मुनी तन धरी ॥ रोगी प्रवास ताही कर होई ॥ रवि के भक्ती जानै जो कोई ॥ दोहा ॥ येह ईतिहास पुनित अती ऊमहि कहा समुझाई । ब्रत कीये नामहि लीये सो रोगी लोकहि जाई ॥ इति श्री पदुम पुराने ॥ श्री सूरज महातमे ॥ उमा महेस संवादे पुजा पाठ असथाने बरनौ नाम दवादसमा अध्याव ॥ १२ ॥ इति श्री सूरज महातमे मेहा पुराने ॥ सूजा ब्रत बिधान बरनौ नाम ॥ दवादस ॥ मो अध्याये ॥ इति श्री सूरज पुरान संपुरन समत ॥ सुभ मस्तु ॥ रामा राम राम मदनदइ लीषतं गंगादिन । तेवारि जो प्रति देष सो लिषा ॥ संवत १९०६ महीने कुआर सुकल पक्षा तीथी १ पंचोमी ॥ दिन सुकवर

No. 432(y2). Surajapurāṇa, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—52. Size 9 × 6 inches. Lines per page—8. Extent—25 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1907 Samvat or A.D. 1850. Place of deposit—Śrimati Mahantā Lakshaman Dāsī, Kuti Bābā Jhāmadāsajī, post office Kesaraganja, district Sultānpur.

No. 432(z2). Surajapurāna, by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—25. Size—9 × 8 inches. Lines per page—28. Extent—270 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1925 Samvat or A.D. 1868. Place of deposit—Ṭhākura Rāmdaura, village Mithaurā, post office Kesarganja, district Baharāich (Oudh).

No. 432(a3). Tulasi Satsai, by Tulasī Dāsaji Goswāmi. Substance—Country-made paper. Leaves—31. Size—14 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—902 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1830 Samvat or A. D. 1779. Place of deposit—Rāma Śhaṇkara Bājpai, village Bahori ka Bājpai kā Purawā, post office Sisaia, district Bahrāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ नमो नमो श्री राम प्रभु परमातम परधाम। जेहि सुमिरत सिध होत है तुलसी जनमन काम ॥ १ ॥ राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनो ओर। ध्यान सकल कल्यान कर तुलसी सुर तरु तोर ॥ २ ॥ परम पुरुष परधाम बर जापर अपर न आन। तुलसी सो समुझत सुनत राम सोई निर्बान ॥ ३ ॥ सकल सुखद गुन जासु सो राम कामना हीन। सकल काम प्रद सर्व हित तुलसी कहहिं प्रवीन ॥ ४ ॥ जाके रोम रोम प्रति अमित अमित ब्रह्मन्ड। सो देखत तुलसी प्रगट अमल सु अचल प्रचंड ॥ ५ ॥ जगत जननि श्री जानकी जनक राम सुभ रूप। जासु कृपा मारति अघ हरनि करनि विवेक अनूप ॥ ६ तात मातु पर जासु के तासु न लेस कलेस। ते तुलसी तजि जात किमि तजि घर बन परदेस ॥ ७ ॥ पिता विवेक निधान बर मातु दया जुत नेह। तासु सुवन किमि पाइ है अनत अटन तजि गेह ॥ ८ ॥ बुद्धि विमै गति होन सिसु सुपथ कुपथ मत जान। जननि जनक तेहि किमि तजें तुलसी सरिस अजान ॥ ९ ॥ मात तात सिय राम रुप बुधि विवेक परमान। हरत अखिल अघ तरुन तर तव तुलसी कछु जान ॥ १० ॥ जिन ते उदभव बर विभवब्रह्मादिक संसार। सुगति तासु तिनकी कृपा तुलसी वदहि विचार ॥

End—पीत सगाई सकल विधि वनिज उपाय अनेक। कल बल छल कलि मल मलिन डहकत एकहि एक ॥ दंभ सहित कलि धर्म सब छल समेत व्योहार। स्वारथ सहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ॥ थानु बंधो निरुपाधि बर सद गुरु लाभ सुमीत। दंभ दरस कलि काल मह पोथिन सुनय सुनीति ॥ फोरहि मूरख सिल सदन लागे अट्टक पहार। कायर कूर कपूत कलि घर घर सरिस डहार ॥

जो अमदोस तौ पति भलो ज्यों महीस तें भाग। जन्म जन्म तुलसी चाहत राम चरन अनुराग ॥ का भाषा का संस्कृत विभव चाहिये सांच। काम जो आवे कामरो काले करिय कमाच ॥ बरन बिसद मुक्ता सरिस अर्थ सूत्र सम तूल। सतसैया जगवर विसद गुन सोभा सुभ मूल ॥ वर माला वाला समति उर धारै जुन नेह। सुख सोभा सरसाय नित लहै राम पति गेह ॥ भूप कहहि लघु गुनिन कहं गुनी कहैं लघु भूप। महि गिरि गत दोऊ लखत जिमि तुलसी स्व स्वरूप ॥ दोहा ॥ चारु विचारु चलु परि हरि वाद विवाद। सुकृत सोम स्वारथ अवधि परमारथ मरजाद ॥ इति श्री मद्गोसाईं तुलसी दास विरचितायां सत शतिकायां राजनीति प्रस्ताव बरननो नाम सप्तमः सर्गः लिखतं कालिका प्रसाद कायस्थ संवत १८३६ गुंजौली मध्ये ॥ श्री राम श्री राम श्री राम

Subject—राम को महिमा संत लक्षण राज नीति आदि के ७०० दोहे।

No. 432(b 3). Dohāwalī "Tulsī Satsaī", by Tulasī Dāsa. Substance—Country-made old paper. Leaves—106. Size—10 × 5 inches. Lines per page—8. Extent—931 Anushṭup slokas. Appearance—Very nice. Character—Nāgari. Date of manuscript—1893 Samvat or A. D. 1836. Place of deposit—Ṭhākura Vishwanātha Simha Tālukedāra, village Agesar, post office Tirsundī, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गोसाईं तुलसी दास जी कृत दोहावली सतसई लिख्यते ॥ गुर गनपति गिरजा रोवै ॥ गौरा कयोध पहोस ॥ बंदि बरन दोहावली। कृपा करहु अज ईस ॥ १ ॥ भार सकल सद्गुन सुमतिः ॥ बैठहु उर आन ॥ करहु दया मति विमल हैः ॥ कहौ गुन गान ॥ २ ॥ तासु सुजस को कहि सकेः जेहि उर राम निवास ॥ तेहि हनुमंतहि नाई सीरः ॥ भाषा ललित प्रकास ॥ ३ ॥ संसकोर्त के अर्थ को तुलसी शक संजोग ॥ यम वारा भाषा बोना ॥ हरि हे न लाय भोग ॥ ४ ॥ का भाषा का संस्कृत ॥ प्रेम चाहिये सांचः ॥ काम जो आये कामरो ॥ काले करै कू मांच ॥ ५ ॥ मंगल मनि मर्याद मनिः ॥ सकल धर्म मनि धोर ॥ लाल हयमनि भूप आनद मनि रघुवीर ॥ ६ ॥ × ×

End—तुलसी बोरही बापुरो अपने भवन मझार पंथ नोहारै राम को पल पल वारंवार ॥ ६९६ ॥ कब मिलि हौ कब भेंटि हौ कब देखौं चोरं पार ॥ जिन पाइन्ह ते बीछुरे बहु दीन गए बीहाई ॥ ६९७ ॥ जीय मैं जीकर लगि रही मोस वासर नीत सोई ॥ राम मीलन के कारने रही पपीहा होई ॥ ६९८ ॥ ज्यौं मछली जल कों चहै चातक घन को प्यास ॥ त्यौं बीर होरि दरस कौं तलपि तरसाई

॥ ६९९ ॥ कहो नेह कागद होय हतो लषा यन टांक ॥ पांच घरी उघ सो सुवस से हुंड कैसा भांक ॥ ७०० ॥ इति श्री राम दोहावली सतसई ग्रन्थ समाप्त ॥ शंवत ॥ १८९३ ॥ माघा ॥

× × × × × ×

No. 432(*c* 3). Vinaya Patrikā, by Goswāmi Tulasidās of Rājāpura. Substance—Old paper. Leaves—280. Size—8×6 inches. Lines per page—11. Extent—1,950 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī.

Beginning—"""""म चरण रति ॥ तुलसीदास प्रभुहरो भेद मति ॥ ७ ॥ देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे । किये दूरि दुःख सबनि के जिन जिन कर जोरे । सेवा सुमिरण, पूजिबो पाता बता थोरे । गाई बसो बामदेव मैं कबहू न नहोरे ॥ यदि भैातिक बाधा भई ते किंकर हैं तेरे । वेगि विलोकन बरजिये करतूति कठोरे ॥ तुलसी दलि रूंध्यो चहै सठ शाक सहोरे ॥ ८ ॥

End—कह्यो विन रहिना परत कहे राम रसना रटत ॥ तुम से सुसाहिब की बोट जाइ खोटो खरी कालकी कर्म की दू सासति सहन ॥ विचार सार पैवत हू न कछू सकल बड़ाई सब कहा ते लहत ॥ नाथ की महिमा सुनि समुझि अपनो बोर हेरि हारि हृदय दहत । पथन सुलिवकन सुतायन प्रभु आप भा बापु वुहो साची तुलसी कहत ॥ मेरो तो थोरो है सुधरैगो बिगरेऊं बलि राम रावरे सो रही रावरो चहत ॥ २६६ ॥

दीनबंधु दूरि किये दीन कों दूसरो शरण । आपको भलो है सब आपनो कैा कोऊ—

Subject—इस ग्रंथ में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, हनुमान, शिव, पार्वती, शारद, आदि देवताओं की पाप मोचनार्थ और रक्षार्थ स्तुति प्रार्थना की गयी है । यह ग्रंथ छप चुका है ।

No. 432(*d*3). Vistāra Rāmāyaṇ(Bāla Kāṇḍa), by Tulasīdāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—197. Size—8×6 inches. Lines per page—48. Extent—7,056 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1925 Saṃvat or A. D. 1868. Place of deposit—Viśwanātha Library, Maheśwara Siṃhajī, Rais, village Dikawliyā, post office Biswāṇ, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेसायनमः पथ बालकांड लिप्यते। श्लोक॥ वरणानामर्थ संघानां छंदसामपि मंगलानांच कर्त्तारौ वंदे बाणी विनयकै॥ भवानी संकरौ वंदे श्रद्धा विश्वासरुपिणौ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्त्रीश्वरम्॥ वंद्रे बोधमयं नित्यं गुरुं संकर रुपिणैा यमा श्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंदिने सीता राम गुणग्रामं पुन्यारन्य विहारिणौ॥ उद्भव स्थिति संहार कारिणो क्लेस हारिणो॥ सर्वस्रेय करो सीता नताहं रामवल्लभां॥ नाना पुराण निगमागम संमतं यद्रा-मायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि॥ स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबंध मति मंजुल मातनोति॥ सोरठा॥ जेहि सुमिरत सिधिहोइ गननायक करि-बर बदन॥ करहु अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभगुन सदन। मूक होइ बाचालु पंगु चढ़े गिरिवर गहन॥ जासु कृपा सुदयाल द्रवैा सकल कलिमल दहन॥ नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन॥ करहु सो मम उर धाम सदा क्षीरसागर सयन॥

End—वामदेव रघुकुल गुरु ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा बषानी॥ सुनि मुनि सुजस मनहि अनुराऊ। बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ। बहुरे लोग रजायसु पाई। सुतन समेत नृपति गृह आई॥ जहं तहं राम सुजस सबगावा। सुजस पुनीत लोक तिहुछावा॥ आये राम ब्याहि घर जबते। बसै अनंद अवधपुर तबते॥ प्रभु बिवाह जसभयो उछाहू। सकहि न बरनि गिरा अहिराऊ॥ कविकुल जीवन पावन बानी। राम सिया जस मंगल खानी॥ तेहिते मैं कछु कहा बषानी। करन पुनीत हेत निजबानी॥ छंद॥ निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कहा। रघुबीर चरित अपार बारिधि पार कवि कैसे लहा॥ उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि सो सादर गावहीं॥ वैदेहि राम प्रसाद ते नर सर्वदा सुष पावहीं॥ सोरठा॥ सिय रघुबीर बिवाह जे सप्रेम गावहिं सुनहिं तिनकह सदा उछाह मंगलायतन राम जस॥ इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलुष बिध्वंसने बिमल बैराग संपादिनो नाम प्रथमो सोपान समाप्त सुभंभूयात इति श्री मोहन लाल शुक्र गोचनी अस्थान संवत १९२५ मार्ग मासे क्रश्न पक्षे तिथैा एकादस्याम भैामवासरे॥

No. 434. Swarodaya, by Udaya Chanda Chaube of Agrā. Substance—Country-made paper. Leaves—36. Size—7 × 5 inches. Lines per page—17. Extent—270 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old and damaged. Character—Nāgarī. Date of composition—1830 Samvat or A.D. 1773. Date of manuscript—1834 Samvat or A. D. 1777. Place of

deposit—Paṇḍit Badari Nāthaji Bhaṭṭa, Professor, Lucknow University, Lucknow.

Beginning—कहत हौं सुनि चित्त दै गिरिजा, सहो ॥ ८२ पहिले .... नके सात दिन सूझै न मोहिं जानि हैा। पांच दिन .... हि लै नदो से तारिका रामा .... दिन तीन तना सांझ सूझे एक दिन रसना रहो ॥ यह काल चक्र विचार के सु .... ये शिवा सो मैं कहो ॥ ८३ यह परम .... म गुन मारग दिवो तोहि बताइ कै। चारौ पदारथ कौं प्रगट जो कल्प वृक्ष .... गाइकै ॥ यह सुनत गिरिजा पति मुदित ह्वै जोरि कर पस्तुति करी। प्रसान वि .... कौ संभु के चरनन धरी ॥ ग्रंथ स्वरोदय कियो मैं कछु संक्षेप बनाइ। सकल सुकवि विनती करौं लोजै तोहि अपनाइ ॥ ८५ (घप) नोही यह जा (निके) ...... यहै विचारि। भूलो होउ जहां (तहां) लोजो सुकवि सुधारि ॥ ८६

End—जेठे पीतंबर दास। बहु गुनन कोन्ह प्रकास ॥
सुत जासु नंद किसोर। गुन लसत जिनमें कोरि ॥ २०२
तिनके सुहृजह राइ। हरि भक्त सुद्ध सुभाइ ॥
मध जासु दैालत राय। जग में लसत धमिराम ॥
लघु खेमचंद विलास। पुनि नाम व ा लाल ॥
गुन लसत जिनमें वृद्ध। यो जगत मांझ प्रसिद्ध ॥
जाके सुद्धे सुत जान। छोटा बरन मांन मान ॥
जेठो उदै है चंद। जिन कियो है यह छंद ॥

संवत् १८३४ ज्येष्ट क्रष्ना एकादसो ११ चन्द्र वासरे लिषो क्र राम ॥ मिश्र उदैचंद जी लिषावित ॥ परोपकारार्थम् ॥ श्री स्तुम श्री शुभम ॥ श्रो ॥ इति

Subject—ग्रंथ बहुत ही अपूर्ण ग्रैार दोमक का खाया हुग्रा है १८ पृष्ठ में केवल ३ पृष्ट शेष हैं।

No.435(*a*). Rasa Chandrodaya, by Udai Nātha (Kavīndra). Substance—Country-made paper. Leaves—19. Size—10 × 6 inches. Lines per page—50. Extent—832 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of maunscript—1913 Samvat or A. D. 1856. Place of deposit—Paṇḍita Awadheṣaji Pāṇde, village Khambhariha Pandenkī, post office Barhapurā, district Baharāich (Oudh).

Beginning—अथ धीरा ज्येष्टा को उदाहरण ॥ दोऊ एक ठौर जहां बैठो है ललमुखी प्यारो तहां आयो धीरताई तकि नेह को। नेह सरसाई गिरसाई

न छपाई छवै समतारे सुनह को। कहुक ज्यों मेह को भनत कवींद रंग भेद हो मैं चंग द्युति एक रंग देखि परी दुहुन की॥ देह की पोगे मारो है के लाल एक वहराई पहिराई लाल मारो लाल सारा जासो नेह को॥ अथ अथोरा जेष्ठा कनिष्टा॥ दोऊ सिर साजें राजै चित्रित महल मध्य बाग को बनक जहां जोहै जोहै जाल सों॥ भनत कवीन्द्र तहां कामहू ते आभिराम पाये सरसाये स्याम सुषमा विशाल सों॥ लाल वारी वेदी वाल वारो पलसेटे पट घूंघट के लागे ते उचटि परी भाल सों॥ आरसो संवारि के निहारि देन लागो एक नेह लागो तैा लगि लपटि लागो लाल सों॥ धीरा अधीरा॥ धीरज अधीरज को नीरज नयन दोऊ एक ठौर बैठी आयो तितहो रंगीनो है॥ पंचमी वसन्त की है सुमन गुलाबो यह ईश पै चढायवे कहो अबहीं नवीनो है॥ भनत कवीन्द्र कंत ऐसो मत कीनो है जोरि अंक अंक सों मरोरि कुच प्यारे लाल तैा लौं वाल दूजी को परि रस लीनो है॥

End—अथ साक्षाइर्शनं॥ यथा॥ केसरि को पोरि भाल गरे धरे गुंज माल लाल कर लकुट मुकुट सीस सोह्यो है॥ पीत पट फेंटा कटि पेंठा को कैा कसेरी जहां निकसे री तहां ऐसी भांति माह्यो है॥ भनत कवीन्द्र गेह आंगन सोहात है न देखे बिना आंगन में वैारै रंग टोह्यो है॥ काहू सो कहैा तैा हैा मैं लोक में न लहैा वाहि टोना डारि सांवरे डोटैाना मन मोह्यो है॥ पीतम के पट मैं लिख्यो चित्र निहारि छको तिय मोद मढ़ाये॥ ता पल मै पल लागत हो सपने सुष तै। अपने पिय पाये। वाल के आनंद बाढ़त हो परतीत भई कछु लाल के आये॥ यों एक वार सितासित मै बढ़ी जाति विहार बिचार के न्हाये॥ शरद मयंक यो कलंक भरो पिय बिन दरद करद समदेत हिय हूलकै॥ सौति को सहेली आय पाय के अकेली आय बिरह दवारी वारि देति फूंकि फूलि कै॥ सुष के समाज साज दुषदाई लेप राज तावे ताय ताय तन पतन अतूलि कै॥ ऐसो घोर भीर समय आयो नाह वीर तोर के है कैान वीर मैारे माव तेरो भूलि के॥

इती श्री कवि कुल कुमदानंद वर्धने श्री गोपीजन वल्लभ रहस्ये उदयनाथ (कवीन्द्र) विरचिते काव्य चन्द्रोदय समाप्तः

Subject—नायक नायका भेद और हाव भाव वर्णन।

No. 435(b). Rasa Chandrodaya, by Ravindra Udai Natha of Bānapura. Substance—Country-made paper. Lines—11. Size—9 x 6½ inches. Lines per page—18. Extent—225 Anushṭup ślokas. Incomplete. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Navanihāla Siṃha Seṅgāra, Kantha, Unāo.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दूलह कवि के पिता कविन्द कवि कालिदासात्मज कृतो रस चन्द्रोदय ॥ लिख्यते ॥ मंगलाचरन बानी को ॥ कवित्त ग्रंथ परिपूरन के तूरन विघनहार मुकता के चूरन जवाहिर जुबान के। परा अपरा के वैखरी मध्यमाके प्रतिमा के भेद संधो अनुबंधी कवितान के ॥ भनत कविंद दि प्रति नये नये कहै न्यारे न्यारे पुनि भोइ रस के विधान के। बानी के बरन जुग परेंते चतुर मुख होत हैं चतुर मुख बानी के समान के ॥ १

End-अथ भावो अस्थान भाव संका संकेता अनुसयना लक्षन ॥ दोहा ॥ जाके थान अभाव को संका उर सरसाइ। सो अनुसयना दूसरी कहत सकल कविराइ ॥ ६७ ॥ कवित्त ॥ बोच करि बल्लि को मालती औ मल्लिका को एला को लवंग को अनेक न्यारी न्यारो है। चंपक को चन्दन को मौलसिरी वृंदन को वलित लतानि सों मिलित साख सारो है ॥ भनत कविंदा मति पेद करै मृग नैनी तेरे हेत लोनो हम पवरि पगारो है। यह गहो गुलवारी सुन्दर सुमन वारी तेरे सासुरे में सुनो कैधो फुलवारो है ॥ ६८ ॥

No. 436. Sagun Vilāsa, by Udai Nātha of (Naimishāra) Sitāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—13. Size—6 × 4 inches. Lines per page—26. Extent—270 Anushṭup slokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1841 Saṁvat or A. D. 1884. Date of manuscript—Samvat 1924 or A. D. 1867. Place of deposit—Ṭhakura Rāma Simha, village Raghunāthapura, post office Biswāṇ, district Sitāpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सगुनावली लिख्यते ॥ चौ० ॥ गुरु पद सुमिरौं दोउ कर जोरी। देव बुद्धि मैं करौं निहोरी ॥ दो० ॥ जगत जननि गिरजहि सुमिरि बार बार सिर नाइ। रापहु प्रन जन जानिकै जेहिते संसय जाइ ॥ सिद्धि सदन गणपति चरण जो ध्यावै मन लाइ। फल चारिउ नर लहै सो अपदा कोटि नसाइ ॥ अमल सरोरुह गुरु चरन ध्याइय सब तजि काम। राम दाहिने होहि जेहि नित प्रति हित जेहि नाम ॥ नैामी हरहि करौ सिर नाई मंगल रूप सुमंगल दाई ॥ करहु सिद्धि शिव सगुन विलासा निज जन जानि पुरवहु ममआसा ॥ पुनि सुमिरौं मै हरि सिर नाई ॥ करु पावन संत सुखदाई। मति लव पलव बरनि नहि जाई। हर सारद नारद नहि पाई ॥ फन सहस्र गावहि नहि भेवा। पावन प्रभाव संत गुन देवा। द्रौपदी आरत बेत पुकारो। वसन बाढ़ि प्रभु दुख उबारो ॥

End—राहु बलो जाइ सरस स्वाइं प्रतिकूल । लोग करै पुनि नीक है बाम अंग मों सूल ॥ केतु कला चंचल बसै तुव मन अथिर नाहि पुरहि वेद मालिक सरस केहि बिधि संसै जाहि ॥ जोगिन बल षड़देव है भू बल बलहि समान । जतन करहु रचि सुभट सब सुनु प्रच्छक दै कान ॥ नगन काल के मुषहि मों प्रच्छक रचना साजु । वेद बिचारि होम करु तब तब पूरन काजु सिद्धि सयाने समुझि ले याता घायल वीर होइ पराजय रिपु सयन छूटि जाय एक धार ॥ बिस्नु ध्यान जेहि करहि नर जे कारज हित होइ । उदयनाथ हरि भक्ति बिन सुष नहि पावै कोइ ॥ इति श्री उदयनाथ विरचितायां सगुन बिलास समाप्त ॥ श्री संवत् १९२४ शाके १७८९ कातिक मासे कृष्ण पक्षे, तिथौ चतुर्थ्यां गुरु वासरे लिष्यते इदं पुस्तकं बल्देव पंडित पैदापुर ग्रामे निवासितः राम राम राम "सगुन बिलास पोथी लिषो सब सगुनन को सारु ताहि बिचारिय परषिये सगुन असुन बिस्तार ॥ सगुन असुन बिस्तार जानि पोथी मैं लिजै जैसा निकसै हाल जानि पुनि तै सा किजै । कह पंडित सुविचार जानि मन मे निज कीयो । सगुनन को सब सार नाम सगुनन को पोथो ॥

Subject—इस पुस्तक मे कार्य के सिद्धि होने न होने के प्रश्नोत्तर हैं ॥

No. 437. Alif Nama, by Bajhana Śāha, Bārābaṇki. Substance—English paper. Leaves—7. Size—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines per page—20. Extent—85 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Persian. Place of deposit—Chetana Śāha Sāhiba, Awaliyāpur, post office Safdarganj, Bārābanki (Oudh).

Beginning—अलिफ़ एक बहुरंगो साईं । हर घट मे वासो परछाईं ॥ जहं देखो तहे रुप है न्यारा । ऐसा है बहुरंगो प्यारा । बुझन कहैं तो क्या कहैं कुछ नहीं कहने को बात । समुद समायों बुंद मे अचिरज बड़ो दिखात ॥ वे बिनु गुरु कोइ भेद न पावे । वस्तो से प्रकास लौं धावे ॥ पहिले प्रीति गुरु से कीजै । प्रेम नगर में तब पद दीजै ॥ बिनु गुरु वजहन लेत है जो कोई बसन रंगाइ ॥ यो निज कर तुम जानियो दोउ पोट से जाइ ॥ ते तब ज्ञान तिरावनि यइहै । जब यह वैरिन दुबिधा जैहै ॥ यहो तो मन में कपट को हाटो । जिन सब खेल किया है माटो ॥ जामन के मन हो मे रहे । पीर तै तें का पंथं तार ॥ बुझहन माह अबहो मिलै तनिक न लागै बार । से साबित है ध्यान जो लागे ॥ आपुहि आप भरम सब भागै ॥ अजप जाप तू अपरे माह ॥ छूटि जाहि दर्पन की काई ॥ बुझहन कहैं तूं जाप कर बैठि रहु ध्यान लगाइ ॥ सुरति निरति दोऊ रखैा बिरथा सांस न जाहि ॥ जोम

जुगत मैं भोर बतैहें । जो ताहीं अकला करि पैहो ॥ अबहीं वह संगो नहि छूटै दिन दिन दुपहर पड़ा लूटै ॥ कहने को तो पांच है हैं यह पूरे तोस । इनहीं कारन ना मिले अबहो लैां जगदीस ॥ हे हदमर यह भूल है तेरी ॥ एको बात न माने मेरो ॥ अब तक तु ऐसा हो जाता ॥ जैसे कोइ मला मदमाता ॥ कहां गई वह बुधि तेरी कहां गया था चेत । ऐसो काया पाय के हरि सों किया न हेत ॥ खे आबिद का कहीं है न्यारा ॥ मूंदि देखि तें दसहु दुआरा ॥ सुनि परिहै अनहद का बाजा ॥ परजा से होइ जैहो राजा ॥ सभी तार तन मे बजें मन मैं मचे हैं राग। बुभ्हन जाको सुनि परैं वाके बड़े हैं भाग ॥ दाल दया जो मन मैं राखे । प्रेम का रस कैसे ना चाखे ॥ बिनु मधु पिये होइ मतवारा ॥ निस बासर तु करै नजारा ॥ बुभ्हन जगत मैं आइ के करिये ना तु मान ॥ दया धर्म नहि छांड़िये जब लग घट मां प्रान ॥ ज़ाल जो फल अब लो नहि पावै । कितनो चहे कोइ मन भटकावै ॥ हिरदे लगि न प्रेम की गांसो ॥ कैसे कै मिलहि कहो अविनासी ॥ जब लौं तन नाहीं जरै औ मन नाहीं मरि जाइ ॥ बुभ्हन मुरति स्याम की तब लैां कहा दिखाइ ॥ रे रियाज़ मैं ऐसा बोला ॥ जैसन कुछ मसूर था बोला ॥ सा सब सुने रहे तु पारा ॥ आनि परो मति लै गये चोरा ॥ लाज का काजर तैं अपने नैनन नहि डारे धोइ ॥ बुभ्हन कैहे कैसे भला दरस पिया का लेइ ॥ ज़े ज़र देख ज़ु भूला रहिये ॥ सबहो वेस अकारथ जैहे ॥ प्रेम बटो का मद पिउ चोखा ॥ मिटि जैहे मन का सब धोखा ॥ हैा से क्या काहि आये हियां कियो का आइ ॥ झूठो माया देखि के कै सा रहे भुलाइ ॥ सोन सहज का सोख ले लटका । काहे फिरत है इत उत भटका ॥ सोचन कर अबहो है सवेरा ॥ तिरकुटो कोट करि दे डेरा ।

End—क़े फरमान तलब का ऐहे । का मुख लैकर यहां को जैहे ॥ वादिन का कछु सोच न कोने ॥ हरि का नाम कबहु नहि लोने ॥ आगे तो कबहु ना सुने तो अबहु कहत हैं टेर ॥ इक दिन फिर पछितइहा जो चिरियां चुनि हैं खेत ॥ काफ़ कैान तेरा है झूठा ॥ धैार ढंग से कहै अनूठा ॥ सुनत रहे साधुन की बानो ॥ तिहु पै अबलैं भये न ग्यानो ॥ जो मति का होना भयो तो वाको कैान हवाल । आगे का सोचत नहीं धो पीछे का पछताल ॥ काफ़ करम उन बड़ा है कोना । मानुष जनम जो ऐसा दीना ॥ आपु छिपाना तोइ उधारा ॥ यो तो मन मे सोच गंवारा ॥ वाको बदला एक है जो मैं देहु बताइ ॥ हरि हेरा जो चाहिये पहिले आपु हिराइ ॥ लाम लोभ की छोड़ि दे बातें ॥ जो मैं कहैा सोख लै यातें ॥ ऐसा लागत पिया तु तेरा । जैसा चांद का चहत चकोरा ॥ जा तु प्रेम के रंग मैं तन मन लेत रंगाइ ॥ देखि तो पहिले ओार मे लाभ किधर को जाइ ॥ मोम मुहब्बत चाहिये मन मैं । घर मे रहे चहे रहै

वन में ॥ गले पड़े जो प्रेम की फांसो ॥ कहां का मथुरा कहां को कासी ॥ जाके हिरदे भजत है बुझहन प्रेम का बान ॥ छुट जाइ सब तन मों घाइ जाइ सब ध्यान ॥ सून नहीं दूजा कोइ जग में। आपुहि आप रहत है सब में ॥ हित चित से सुनि ले वह बैना ॥ खुलि जैहें तोरे हिया के नैना ॥ बुझहन कहैं तू बुझि ले अबहीं है यह बूझ ॥ एक दिन याही बूझ से होइ जइहै सब सूझ ॥ वाउ वही इक यार है तेरा ॥ तिहि को मलिन किया नहि फेरा ॥ दुरजन ये सो मीत बनाए ॥ समझा नहि मोरे समझाये ॥ मैं तो कहों चतुर है तू है बड़ा नदान ॥ कितनौ मैं समुझावत रहौं किहे न एको कान ॥ हे दादा ऐसा तू पाये। उनहू से न अपना नेह लगाये ॥ ऐही सोच है मोहे कारो। देखो कहां गति होइ तिहारो ॥ हियां के हारे हार है हियहि के जोते जीत। बुझहन कहैं तू मान ले करि साहब सों प्रीति ॥ ये यारो हरि से दव करना। ये अक्षर हिरदे बिच धरना। बनत बनत बनि जैहै ऐसा ॥ कोई दिन मंसूर था जैसा।

बुझहन अक्षर ऐसे कहे साधुन के हथियार।

बिरहा के मैदान में पांत के रावन हार ॥

(३) पृ० १ से पृ० ३ तक —ईश्वर के हर घट में रहने का वर्णन, गुरु महिमा, अजपा जाप का महत्व, ५ इन्द्रियां और उनके पंचीकरण हो कर पूरे ३० हो जाने के कारण ईश्वर भजन में विघ्न होने का वर्णन, उत्तम मानवी काया पाकर ईश्वर भजन न करने पर वृथा। ईश्वर का अपने ही में होने का वर्णन। दया की महत्ता। मान का खंडन। बिना मन मारे ईश्वर मिलने का कथन। पिव दर्शन का मार्ग। झूठी माया में भूलने का वर्णन। त्रिकुटी में ध्यान रखने का आदेश।

(४) पृ० ३ से पृ० ६ तक—संसार के माया में भूलने का वर्णन। साधु के लिये संतोष का उपदेश। किसी से न मांगने और आसन पर दृढ़ रहने का वर्णन। नबी का नाम लेने का उपदेश। अली का ध्यान रखने का वर्णन। घट के अन्दर अवस्थित नूर नगर ॥ जाने का मार्ग। गुप्त और प्रकाश में उसी के प्रकाश का वर्णन। प्रेम नगर की गहरी नदी का वर्णन। पूज्य और पूजक का एका कथन। प्रेम मार्ग की कठिनाइयां जुया में साहब के नाम जीतने का उपदेश।

(५) पृ० ६ से पृ० ७ तक। मृत्यु के दिन का ध्यान रखने का ध्यान। अप्रशोची होने का उपदेश। ईश्वर के साथ कृतज्ञता प्रगट करने का उपदेश। लोभ परित्याग का वर्णन। घर वन कहीं रहे उसमें प्रेम रखने का उपदेश। अयोध्या काशी इत्यादि का ईश्वर प्रेम के सन्मुख तुच्छ दिखाना। 'एक वही' का उपदेश देकर भजन में प्रवृत्त होने का वर्णन। ईश्वर भक्ति से 'मंसूर' के सदृश होने का उपदेश।—ग्रन्थ की बड़ाई

No. 438. Mānasa Śankāwali, by Bandana Pāṭhaka of Mirzāpura. Substance—Country-made paper. Leaves—30. Size—15×7 inches. Lines per page—28. Extent—1,339 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse both. Character—Nāgarī. Date of composition—1906 Samvat or A.D. 1849. Date of manuscript—1951 Samvat or A.D. 1894. Place of deposit—Santan, village Aria, post office Pipari, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ मानस संकावली लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री सीता श्री राम पद पदुम बंदि त्रय भ्रात ॥ धाम नाम लीला ललित श्री हनुमत प्रवदात ॥ श्री गिरजा पति पुत्र के बंदौ पद अभिराम । तुलसी तुलसी दास पद करि कै विविध प्रनाम ॥ श्री रामानुज मत प्रबल धारक तारक जीव । तुलाराम श्री गुरु चरण बंदौ बकता सीव ॥ श्री सीतावल्लभ रसिक हरीदास भय भाव ॥ जुक सदा माल भगत बसत महल नत पाव ॥ श्री मद्राम गुलाम के सिष्य सो चोपई दास । तासु सिष्य बंदन नमत श्री मिरजापुर बास । शिव प्रसाद पाठक विमल तासुत बेनीराम । तासु पुत्र लक्ष्मण लसत तासुत बंदन नाम । श्री काशी पति ईश्वरी नारायण नृप राज । तेहि के शुभग सनेह ते प्रगट ग्रंथ द्विज-राज ॥ श्रीमानस संका सकल रही विश्व मैं छाइ । ताके उत्तर बोध हित ग्रंथो-द्भव सुष पाइ ॥

End—पुनः संका तीनि इती सूक्ष्म तीन कांड मैं अरि एक बाल कांड मैं एक अरन्य मैं १ लंका मैं यामे का हेतु है ॥ उत्तर यह तीनि इती अनेक रामायन मैं अनेक रीति से हैं ॥ ताते सिद्धार्थ सूच्छम इति है देके इन्हने भी उनका मत दिढ़ राख्यो और आपनो कांड कर्म ता विलक्षण ही कियो सो तो स्पष्ट ही ग्रंथ मैं है तीते ग्रंथकार को सर्व मत रक्षक दृष्टि और श्री गोसाईं तुलसी दास जी को अगाध आशय है और ग्रंथ श्री मद्राम चरित्र मानस भी अगाध है ॥ मै स्वमति अनुकूल कह्यो है समुभि लेना सन्देह नहीं है । इति श्री मानस संकावली समाधान जुक्त श्री मानसी बंदन पाठक कृत समाप्त ॥ संवत् रस नभ अंक शशि ऋतु बसंत मधुमास । शुक्लपक्ष नैामी सुतिथि संकावली प्रकाश ॥ श्लोक ॥ संकावली सुभग मानस मान दात्री श्री रामचंद्र पद पंकज भक्ति गाम्या ॥ श्री विश्वनाथ परि तोष कृते सुरम्या व्यक्ती कृता विमल बंदन पाठकेन । वाराणसी संस्कृते कमुद्रा यन्त्रानिक जने मुद्रितोयं शिला शर्मणे मन्नालाल ने शर्मणाय श्री संवत् १९५१ आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यांम भैामवासरे लिषी समाप्ते संकावली । बाल कांड मैं ३० ॥ अयोध्या मैं ॥ १० ॥ आरन्य मैं ॥ ९ ॥ किष्किंधा मैं ११ ॥

सुन्दर में ६ ॥ लंका में १७ ॥ सर्व कांड को समिष्ठो १०४ ॥ नाम चतुर्गुन पंच-युत द्वगुनो यस करि लेषु । तुलसी या संसार में दुइ प्रक्षर करि लेषु ॥ सुत कलत्र धन धाम तन मानस प्रस उमयंध । रामचरण ये ज्ञान मैं नेह करत जे ग्रंथ ॥

Subject—इस ग्रंथ में रामायण के सब कांडों को मुख्य शंकाओं को समाधान है अंत में निर्माण और लिपि संवत है ॥

No. 439. Lilāwati, by Bilochana Rāma. Substance—Country-made paper. Leaves—77. Size—10½ × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—513 Anushṭup slokas. Appearance—Good. Character—Nāgari. Date of manuscript—1891 Samvat or A.D. 1834. Place of deposit.—Ṭhākura Viswa Nātha Simha Sāhiba, Talukédāra, village Agresar, post office Tirsandi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः अथ लीलावती लीख्यते ॥ दोहा ॥ विघ्न हरन सब सुष करन हरन सकल अघलेस ॥ सुष संपति दायक सदा सोई नाम गनेस ॥ १ ॥ जुकि उकि मन मे बढ़ै स्वर सति रसना बैठि । सुरनर मुनि सुमिरन करत कहति हिये मे पैठि ॥ २ ॥ देहु बुद्धि कीजे कृपा गुन प्रताप है भूर । ताते बरनि कहौं कछु करि नामा दस्तूर । ईहीं बरनौ गनपति कृपा सीष्य संबाद के अर्थ को लेषन को मरजाद ॥ ४ ॥ गुरु सों पूछो शिष्य ने धरि चरनन पर सीस । अब निहि साव अनेक बोधि मोहि कहौ जगदीस ॥ ५ ॥ है हिसाब दीरघ दुनो मोहि लगत है गूढ ॥ जो नर है संसार मे बीना गुरु सब मूढ ॥ ६ ॥ + × × ×

End—गुरु बाचा ॥ येक सर को येक कर दूजौ तिगुनौ लष तासु चौगुन करि तीसरौ चौगुनौ चौथ बासिठा ॥ १०३ ॥ बार बार मन के करै आगे पाछे देइ जेतिक नीवा होय तीतरौ तौल करेइ ॥ १०४ ॥ ग्रैसे लेषे बहुत है कहत बढ़त विस्तार, ताते संछेपहि कहे चारौ षंड बीचार ॥ १०५ ॥ इतने लेषे पाइ कै सुरजन चढ़ै सुजान । गुनवंतौ लौ कहाइ है मजोलिस बैठ नीदान ॥ १०७ ॥ इति श्री मति बिरचिते अथर्बन भेद बरननो नाम चतुर्थ षंड ॥ ४ ॥ संपुर्ण समाप्तं श्री संवत १८९१ मासानाम मासोत्तमे मे मासे कुआर मासे कौमुन पछे पंच षांग सनीवारे समाप्तं छ छं ०

Subject—

(१) पृ० १ से १२ तक, प्रथम षंड तौलषंडो-विधि वर्णन ।

(२) पृ० १३ से २७ तक, द्वितीय षंड-नाप विधी वर्णन ।

(३) पृ० २८ से ५६ तक, तृतीय षंड, गिन्ती वर्णन ।

(४) पृ० ५७ से पृ० ७७ तक, चतुर्थ षंड, अथर्बन षंड ।

No. 440(*a*). Bhaktāmar Charitra, by Vinodī Lāla of Śahjādapur. Substance—Country-made paper. Leaves—444. Size—10½ × 6½ inches. Lines per page—14. Extent—5,439 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1746 Samvat or A. D. 1689. Date of manuscript—1883 Samvat or A.D. 1826. Place of deposit—Jaina Mandira (Barā), Bārābaṇkī (Oudh).

Beginning—श्री वीतराग जी सहाय॥ अथ भक्तामर चरित्र भाषा लिख्यते॥

दोहरा—श्रोंकार पद सबिन्दु है बन्दों मन वच काय।
नमो नमो पुनरपि नमो वसु विधि सीस नवाय॥ १॥
जामैं गर्भित तीन पद महामंत्र नवकार।
ताको प्रनऊं प्रथम ही मुक्ति भुक्ति दातार॥ २॥
मुनि जन जाके ध्यान ते पावैं पद निर्वान।
चोर अंजना नै ज्यों लह्यो अमर पद थान॥ ३॥
शिव दायक लायक सकल नायक जिन मत माहि।
तीस पांच अक्षर विमल सुद्दि बिसरत है नांहि॥ ४॥
भव-भंजन तारन तरन सिद्धि बधू उर माल।
अब चैाबीस जिनंद पद बंदैां नमृत भाल॥ ५॥

चैापाई—श्री रिषदेम्बर जिन राज पाइ। वन्दैां मन वच क्रम सिर नाइ॥
वन्दैां अजित नाथ दूसरे। अजित जोति भवसागर तरे॥ ६॥
वन्दैां संभव नाथ जिनंद। भव दुख हरन करन सुखकंद॥
अभिनंदन वन्दैां जिन राय। आनन्द चन्द परम सुखदाय॥
सुमति नाथ सुमति दातार। वन्दैां कुमति कुगति हर मार॥ ७॥
वन्दैां पद्मा प्रभु जिन तोहि। पद्मासन बैठे शिव मोहि॥ ८॥

× × × × ×

End—कीनो कथा विचित्र बनाय। भक्तामर स्तवन गुन गाय॥
श्री आदिनाथ की स्तुति गुनभरी। मान तुंग मुनिबर की करी॥
ताकी कथा संपूरन भई। भाषा बंद चोपई ठई॥
दोहा छन्द अरिल्ल बनायो। कछु कुंडलिया सोरठा लायो॥
संवत् सहस्र से सैताल। सावन सुदी दुतिया रविवार॥

शुभ दिन कथा संपूरन करी । प्रथम जिनेन्द्र तनो गुन भरी ॥
जो यह पढ़ै सुनै चितलाय । सो नर सुख भुंजै सिव जाय ॥
जो मिथ्या तो निंदै कोय । अपने फल को पावै सोय ॥
जोरि कथा कवि दई असीस । षट दर्शन वृद्धै जगदीस ॥
श्री जिन वर तुम्हैं होहु सहाय । आदि नाथ मंगल सुखदाय ॥

दोहरा—सकल कथा पूरन भई, बानी विमल विसाल ।
विश्व भूषन प्रति देखिके, रचो विनोदी लाल ॥
पढ़त सुनत आनंद बढ़ै, ज्यों दुतिया को चंद ।
पुन्य बढ़ै पातिग घटै, उपजै परम अनंद ॥
कही विनोदी लाल, सारद गुरु परतापतें ।
पूरन भई रसाल, अदभुत कथा सुहावनी ॥

इति श्री प्रथम जिनेन्द्र भूषण श्री भक्तामर महाचरित्रे भाषा लाल विनोदी कृत चौपाई बंद संपूर्ण । संवत् १८८३ शुभ भूयात् ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक, वन्दनायें—जैन धर्मानुसार तीर्थंकरादि की स्तुतियां, कवि विनयोक्ति, कवि तथा उसके समय के नृप का सूक्ष्म परिचयः—

(१) कौशल देश मध्य शुभथान । शाहिज़ादपुर नगर प्रधान ॥
गंगा तीर बसै शुभ ठौर । पटतर नहीं तासु पर और ॥
बसै महाजन बहु विधि लोग । अपने धर्म लीन संजोग ॥
श्रावक लोग बसैं जहं घने । जैन धर्म रत सत आपने ॥
चैत्यालय जिन वर के तीन । चित्र विचित्र रचित प्रवीन ॥
धर्म ध्यान सब विधि सो करै । व्रती वृती को अति आदरै ॥

(२) नौरंग साहि बली को राज । पातसाह सब हित सिरताज ॥
सुख निधान सक बंस नरेस । दिल्ली पति तप तेज दिनेस
अपने मत में सम्यक वंत । शील शिरोमनि निज तिय कंत
दीप दीप है जाकी आन । रहै साह अरु संका मान ॥
साहिजहां के वर फरजिन्द । दिन दिन तेज बढ़ै ज्यों चंद ॥
भयो चकत्ता ऊस उदोत । सिंह बली वन जैसे होत ।

दो०—तप जप मंत्र तुरंग गन । ते त्यागो बुधिवान ॥
भुज बल साहस वेष बल । तखत लियौ सुलतान ॥
छत्र धरयो सिर आपने, फेरी चहुंदिश आन ॥
आलम गीर महाबली, नौरंग शाहि सुजान ॥

(अरिल) जाके राज सुचैन सकल हम पायो। ईति भोति नहीं होइ
सुजिन गुन गायो ॥

लाल विनोदी नाम सारदावर दियो। निस दिन देय असीस साहि जुग
जुग जियो ॥

(सोरठा) सुखो प्रजा सब कोय, नैारंग सह के राज में।
जो कोई दुःखित होय, सो सब अपने कर्म तें ॥

(३) ते पुर लाल विनोदी रहै। जैनधर्म की चर्चा कहै ॥
अगरवाल जैनी शुभवंस। गर्ग गोत्र प्रगट्यो सर हंस ॥

ग्रन्थ निर्माण हेतु इत्यादि चतुष्ठय वर्णन, कथा संबंध वर्णनः—प्रथमहि
मान तुंग मुनि भये। भक्तामर रचना करिगये ॥

× × × × ×

मूल संघ भट्टारक दक्ष। विश्व भुवन मुनिवर परतक्ष ॥
ताको अद्भुत टीका करी। विगत कथा सब को विस्तरी ॥
श्लोक बद्ध तिन संस्कृत करी। कसै करि समुझै नर नरी ॥
ताको अब मैं भाषा करै। पंडित लोग हंसन ते डरै ॥

(२) पृ० १० से पृ० ८६ तक—प्रथम कथा।

उज्जैनी के राजा सिंधु सुजान का निपुत्री होकर खेद प्रकाशित करना,
मंत्री का सान्त्वना देना, राजा तथा उसकी रानी रत्नावली का वन में सैर को
जाना, वहां पर एक हाल के बालक का प्राप्त होना, राजा का मंत्री की सम्मति
से उस अज्ञात गर्भोत्पन्न को निज बालक प्रसिद्धि कर देना और उसे अपने पुत्र ही
की भांति पालना; उसका विवाहादि करना, सिंधु की रानी का गर्भ-
स्थित होना, उससे सिंधुल का जन्म, सिंधुल का परिपोषण और विवाहादि वर्णन
सिंधुल के दो पुत्र शुभचन्द्र तथा भर्तृ का उत्पन्न होना, राजा सिंधु का
मुनिव्रत धारण करना और मुंज को राजनीति का उपदेश देकर गद्दी का
स्वामित्व प्रदान करना। एक दिन एक तेली के गाड़े हुए कुदाल को किसी
योधा का न उखाड़ सकना, सिंधुल द्वारा उसका उखाड़ा जाना, सिंधुल
का पुनः कुदाल गाड़ कर सिंहनाद करते हुए उसे उखाड़ने को ललकार
देना, किसी से न उखड़ सकना, राजकुमारों द्वारा उसका उखाड़ा जाना,
राजा मुंज का द्वेष करके उनके मारने की चेष्टा, मंत्री की सम्मति से राजकु-
मारों का राज्य से निकल कर विरक्त होना, शुभचन्द्र का मुनि होना। भर्तृहरि
की सिद्धियों में लिप्त होना, दोनों का सम्मेलन, बड़े भाई का छोटे को उपदेश

मंजु का सिंधुल से भी द्वेषकरा के भेषा कराना, मंजु का पश्चाताप, भोजोत्पत्ति, राज-काज वर्णन, मंजु का विरक्त होना, कालिदास की कथा, धनंजय वर्णन, ब्रह्मचर्य्यादि वर्णन, ब्रह्मचारियों के आचार विचार भोज राजा की सभा में मान तुंग जैन मुनि का आगमन, सभा में पंडितों द्वारा मुनि का मान-भंग, कालिदासादि पंडितों की हार, भोज का मुनि वृत लेकर जैन-धर्म साधन करना।

(३) पृ० ८७ से पृ० ११४ तक—भक्तामर स्तवन माहात्म्य, कथा संबंध का ब्यौरा, युगल काव्य का कथन फल वर्णन, एक सेठ होने की कथा।

(४) पृ० ११५ से पृ० १२४ तक—"ॐ नमो अनंतोदि जिणांणं" मंत्र संबंधी कथा।

(५) पृ० २५ से पृ० १३१ तक—"ॐ ह्रीं अर्हंनमो कुछ बुधिणं" मंत्र संबंधी चौथी कथा।

(६) पृ० १३१ से पृ० १४० तक—त्वंसंस्तवेन—इत्यादि काव्य संबंधी कथा।

(७) पृ० १४१ से पृ० १४७ तक "ॐनमोपदानु सारीन" मंत्र संबंधी मंत्र के फल का उदाहरण द्वारा समझाया जाना; उसकी सिद्धि से एक नृपति की मनोवांछा पूर्ण होना॥

(८) पृ० १४८ से पृ० १५३ तक—आस्तां स्तवन की कथा।

(९) पृ० १५४ से पृ० १६० तक—नात्यद्भुते काव्य की कथा।

(१०) पृ० १६१ से पृ० १७० तक—"ॐ ह्रांरायो स्वयं बुधाणं" संबंधी कथा।

(११) पृ० १७१ से पृ० १७८ तक—'ॐ ह्रां नमो पत्तेय बुधानं' संबंधी कथा गुणशेखर का उदाहरण।

(१२) पृ० १७९ से पृ० १८७ तक—'ॐ ह्रीं क्ष्यो नोहिय बुधाणं' मंत्र का महत्व प्रकाशन संबंधी कथा।

(१३) पृ० १८८ से पृ० १९४ तक—चित्रं किमि त्रज दिते का वृत्तान्त कल्याणी रानी की कथा।

(१४) पृ० १९५ से २०६ तक—ॐ ह्रीं नमो चौदास पवीने की कथा।

(१५) पृ० २०७ से पृ० २१४ तक—"ॐ ह्रीं नमो अष्टानि मित्त महामित्त महा निमित्त कुमलोणं" की कथा फल सहित।

(१६) पृ० २१५ से पृ० २२४ तक—रति भद्र की कथा। उसके मूर्ख से पंडित होने का वर्णन

(१७) पृ० २२५ से २३४ तक—ॐ ह्रीं अर्हन्नमो पत्थान ॥ ॐ ह्रीं नमो बोत्रा हरीणां संबंधो कथा।

(१८) पृ० २३५—२४६ तक "ॐ ह्रीं नमो चारंभा सा घरौ"—मंत्र संबंधो फल को संसिद्धि के हेत उदाहरण रूप विष्णु दास की कथा।

(१९) पृ० २४७ से पृ० २५४ तक। 'यों ह्रीं अरहन मेव' मंत्र सम्बन्धो व्रत कथा फल वर्णन। श्रीधर का उदाहरण।

(२०) पृ० २५५ से पृ० २६२ तक—"यों ह्रीं नमो जिनतवानं" इत्यादि मंत्र संबंधो महीचन्द्र को कथा।

(२१) पृ० २६३ से पृ० २७२ तक—"यों ह्रीं नमो जिनत वानं" इत्यादि मंत्र संबन्धो कथा।

(२२) पृ० २७३ से पृ० २७९ तक— धन मित्र को कथा।

(२३) पृ० २८० से पृ० २८७ तक—ॐ ह्रीं नमो तत्र तवाणं महा मंत्र संबंधो कथा।

(२४) पृ० २८८ से पृ० २९४ तक—ॐ ह्रीं अर्ह नमो महा तवानं ॥ मंत्र संबंधी कथा।

(२५) पृ० २९५ से पृ० ३०२ तक ॐ ह्रीं अर्ह नमो घोर तमानं ॥ मंत्र संबंधी कथा। इस मंत्र द्वारा जय सेना रानी के व्याधि—हरण की कथा।

(२६) पृ० ३०३ से पृ० ३१० तक—ॐ ह्रीं अर्ह नमो घोर गुणाणं इत्यादि मंत्र संबंधी कथा का वर्णन।

(२७) पृ० ३११ से पृ० ३१९ तक—ॐ ह्रीं अर्ह नमो घोर गुनबंभ पारीनं मंत्र संबंधो कथा।

(२८) पृ० ३२० से पृ० ३२८ तक—ॐ ह्रीं अर्ह नमो सोषादों इत्यादि मंत्रो को कथा।

(२९) पृ० ३२९ से ३३७ तक—ॐ ह्रीं नमो विधी साई पत्ताणं मंत्र के महत्त्व संबंधो कथा।

(३०) पृ० ३३८ से पृ० ३४६ तक— ॐ ह्रीं स्वोहि पत्ताणं संबंधो कथा।

(३१) पृ० ३४७ से पृ० ३५५ तक—ॐ ह्रीं नमो वचवल्लीने संबंधो कथा।

(३२) पृ० ३५६ से पृ० ३६४ तक—ॐ ह्रीं नमो वय वल्लोणं। महामंत्र संबंधो देवराज को कथा।

(३३) ॐ ह्रीं नमो वीर सयोणं मंत्र संबंधी, दावानल उपसम होने को कथा पृ० ३६५ से ३७२ तक।

(३४) पृ० ३७३ से पृ० ३८४ तक—एक सती की कहानी जिसने जैन धर्म संबंधी मंत्र बल के प्रभाव से संपूर्ण लोगों को अपने धर्म का परिचय दिला कर और पति को रोग मुक्त कर जैन धर्म की महत्ता दिखाई गई है।

(३५) पृ० ३८५ से पृ० ३९५ तक—ऊँ ह्रीं नमो सवि चीणं ऊँ ह्रीं मुभरस वीणं नामक मंत्र संबंधी कहानी, गुन वर्मा का सुर पद पाना।

(३६) पृ० ३९९ से पृ० ४०० तक—ऊँ ह्रीं नमो श्रमिस वोणं मंत्र संबंधी कथा।

(३७) पृ० ४०१ से पृ० ४२४ तक—ऊँ ह्रीं नमो भाइमो न महा नाणं॥ मंत्र संबंधी हंसराज की कथा। राजा हंसराज की कलावती के साथ भोग विलासादि का वर्णन।

(३८) पृ० ४२५ से पृ० ४३४ तक—ऊँ ह्रीं नमो वड़ मानं मंत्र संबंधी कथा।

(३९) पृ० ४३५ से पृ० ४४२ तक—ऊँ ह्रीं श नमो सर्व सिधा इत्यादि मंत्रों से संबंध रखने वाली गाथाओं के वर्णनों द्वारा जैन सिद्धान्तों को पटल बनाकर मान तुंग कालिदास को पराजित करना, राजा भोज का रनवास सहित जैन धर्म की दीक्षा लेना। इस ग्रंथ के पठन पाठन का फल।

निज सम्राट वंश परिचयः—

औरंग साहि बली के राज। पायौ कवि जन परम सनाज॥
× × × ×
बाढ़ो साहि चकत्ता वंश। तिमिर लंग सम प्रगटो हंस॥
× × × ×
तिनके तखत बखत परचंड। बबर शाहि भये परचंड
× × × ×
ता सुत साहि हमाऊं भयो। जिनके राज दुख सब गयो॥
तिनके साहि अकबर भये। नाम लेत दुख दारिद गये॥
× × × ×
तिनके जहांगीर जग जए। साहि सलेम नूरदी भये॥
हिन्दू पति प्रगटयो जगमांहि। ताकी उपमा दीजै काहि॥
तिनके साहि जहां सुलतान। भए तेज जिमि ऊगत भान॥
हठ कोघनी हठीलो साह। भयो किरान सानि जगमांहि॥
तिनके तखत बखत के जोर। बैठो औरंग सहि मरोरि॥
× × × ×

आलम गीर कहावे सोय । जाहि कारन आलम को होय ॥
अपने जोर छत्र सिरधरो । एक छत राज विधाता करो ॥
× × × ×
जाके राज परम सुख पाय । करी कथा हम जिन गुन गाय ॥

(४०) पृ० ४४२ से ४४४ तक । कथा निर्माणादि विषयक कथन शाहिजादपुर सहर मझार । रहो सदा जिनके आचार ॥
काष्टा संघ आदि जिन सनो । माथुर गच्छजागर घनो ॥
पुष्कर गुन गनमै सार । जैन धर्म को परम अधार
कुमार सेनो मुनि कोनो आय । प्रगटयो अब का धर्म सहाय ॥
वैश्य वंश मे उदित महा । जैन धर्म करुनालय लहा ॥
तापर ज्ञाति महा गंभीर । अगरवाल गुन सागरधीर ॥
गर्ग गोत्र उत्तम गुन सार । अष्टादस गोतनि सरदार ॥
× × × ×
मिथ्या मत को नासन हार । प्रगटयो कुल को परम श्रृंगार
मंडल को परपोता भलो । पारस पोता को अबु चलो ॥
दुर्गादी मल को सुत गुन धाम । लाल विनोदी मेरो नाम ॥

ग्रन्थ समाप्ति कालः—
संवत सत्रह से सैतांल । सावन सुदि द्वितीया रविवार ॥
शुभ दिन कथा संपूरन करी । प्रथम जिनेन्द्र तनो गुनभरी ॥
पठन पाठन का फल--ग्रन्थ समाप्ति ।

No. 440(*b*). Vishnu Kumāra ki Kathā, by Vinodī Lāla. Substance—Country-made paper. Leaves—22. Size—$12\frac{1}{2} \times 8$ inches. Lines per page—22. Extent—635 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1955 Samvat or A.D. 1898. Place of deposit—Srī Jaina Mandira (Barā), Barābaṇkī (Oudh).

Beginning—ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥ अथ विष्णु कुमार को कथा

वात्सल्य अंग धारक कथा लिख्यते ॥ (अरिल्ल छंद) ॥ प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरन । चित लाइये । पंच महावृत धरन सुताहि मनाइये ॥ प्रथम महामुनी भेष सुधर्म धुरंधरो प्रथम धरम परकासन प्रथम तीर्थंकरों ॥ १ ॥ (गीत छंद) गुरु चरन वंदा सुधर्म केरे कथा अनुपम विस्तरों ॥ २ ॥ प्रथम तीर्थंकर सुमिर मन सारदा हिरदै धरो ॥ उपसर्ग पायो सात से मुनि आनि

जिनहू नै वार को । तुम सुनौ भवि जन एक चित दै कथा विष्णु कुमार को ॥ २ ॥ दोहा ॥ वंदौं विष्णु कुमार मुनि मुनि उपसर्ग निवारि । वात्सल्य अंग की कथा सुनहु भाविक जन सार ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ अब यह जंबूद्वीप मझार । भरथ क्षेत्र सोभित सिंगार ॥ देस अवन्तो उत्तिम ठौर । तेहि समान देस नहिं और ॥ ४ ॥ वहां नगर उज्जैन समान । अवनी विषै न दीसै आन ॥ वन उपवन रंजित चहुं ओर का शोभा बरनौ तिहि ठौर ॥ ५ ॥

End—नाक कान मुख धूयां भरो । ताको सबन कियो उपचरो । पय कज्जल अरु सुरस अहार । बहु विधि पुन्य उपावन सार ॥ १८ ॥ तब देवन मिलि पूजौं पाई । विष्णु कुमार भूमि मैं आई ॥ विनतो कीय अनूपम दिये । करि प्रनाम सुर निज पुर गये ॥ १९ ॥ विष्णु कुमार गये निज धाम ॥ सबन सुरन को करि सनमान ॥ फेरि जाय दीक्षा आदरी । इहि सो मुनि अपनो तप करी ॥ २०० ॥ सावन सुदि पुन्यो तिथि तनौ । कथा विचित्र अनूपम बनौ ॥ वात्सल्य अंग कथा यह करी । कथा कोस सम जो कछु लही ॥ २०१॥

× × × × × ×

इति श्री विष्णु कुमार मुनि कथा संपूर्ण ॥ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ भृगुवासरे संवत् १९५५ ॥

Subject—(१) पृ० १ से पृ० ११ तक—उज्जयनी के राजा सिवाराम के चारों मंत्रियों की धूर्तता से एक जैन मुनि का अविनय होना—जिसने कितने ही ब्राह्मणों को अपने जैन मत के प्रभाव से हरा दिया था । मुनि के तप से उन चारों का कीला जाना, राजा को यह सब ज्ञात होना और उनको प्राण दंड की आज्ञा दिया जाना, मुनि का उनके प्राण बचाना और राजा से किसी अन्य दंड की प्रार्थना करना, राजा द्वारा उन को देश निकाला दिया जाना ।

(२) पृ० १२ से पृ० २२ तक—चारों ब्राह्मण मंत्रियों का निकल कर हस्तनागपुर के राजा पदुम के यहां पहुंचना और एक विशेष ढंग से उसके शत्रु को उसको शरण में लाने के उपलक्ष्य में सात दिन का राज्य पाना । वहां पर उन्हीं मुनिवर का (जिनसे इन लोगों का प्रथम विरोध था) पुनः यज्ञ द्वारा श्रद्धा न करना और विष्णु कुमार की सहायता से कष्ट से मुक्त होना । विष्णुकुमार का वामन रूप धारण कर के बलि मंत्री को (उन चारों ब्राह्मणों में मुख्य) को छलना । मुनिके प्रभाव से प्रभावान्वित होकर उन चारों का श्रावक व्रत धारण करना । विष्णु कुमार का प्रस्थान । कथा फल वर्णन । ग्रंथकार का परिचयः—
विष्णु कुमार मुनिंद की कीनो कथा रसाल । सुनौं भव्य मन भाव सों कहै विनोदी लाल ॥

No. 441. Sati Vilāsa Biranji (wife of Sāhabadinā) of Newādā (Benares). Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—10¼ × 6 inches. Lines per page—21. Extent—903 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgari. Date of composition—1905 Samvat or A.D. 1848. Place of deposit—Śrimān Bābū Bhagwān Bakhsha Simhaji, Rājā of Amethi, Rājā Amethi, district Sultānpur (Oudh).

Beginning——अथ सती विलास लिख्यते ॥

दोहा सब कर पालक जवन प्रभु अज अनीह निर्वान ॥ बन्दौं तिन के पद कमल जापर अपर न आन ॥ गनपति सेस महेस विधि चंद सूर द्विज ब्यास ॥ संत सती सारद सिवा पुजवहु मन की आस ॥ × × × ×
जीव विन जस देह मलीन वो नीर बिना सर सूषित वैसे ॥ ज्ञान विहीन जनो क्षिति मैं हरि भक्ति बिना नररूप अनैसे । चंद मलीन पियूष बिना ब्रह्मज्ञान बिना कुल ब्राह्मन कैसे ॥ नारि विरञ्चि विचारिक है पिय भक्ति बिना तिय सोहत कैसे ॥ ३ ॥ × × × ×
सूर्यवंस मैं रघुभये रघुवंसो श्री राम ॥ ता सुत द्वे लवकुस भये क्षिपित पूरन काम ॥ क्षित्रिवंस उदित भये पुरंवंस महाराज । तिलक जुक्त सुभ सोभिजे सत्य धर्म कर साज ॥ अमरसिंह तेहि वंस मैं रामचन्द्र कर दास ॥ जाम जतन जप तप किये पुत्र होइ की आस ॥ सेवत वंस गोपाल के तेहि सुत साहिब दीन । सो प्रभुतक विचारि के रहत ब्रह्म मो लीन ॥ अब भाषो माईक अवस कासी सुम अस्थान ॥ जाके दरसन हेत हित द्वेव करहिं प्रस्थान ॥ विमलवंस रघुवंस के बसे बगालिस होइ । ग्राम निवादा मैं विदित ममपितु सीतल सोह ॥ चै० ॥ जिले जवनपुर मैं गडवारा ॥ दुर्गवंस तहं बसहि बोदारा ॥ तहां ज्ञान अनुभव हम पाये ॥ सो कहि प्रगट ग्रन्थ मैं गाये ॥ बान सुन्य षट अंक मिलाई ॥ तापर चंद देहु पुनि ॥ अंक रीति संवत विख्याता ॥ जाति लेव इहि विधि बुध बाता ॥ × ×
सावन सिति पुन्यौं जब पाई ॥ तब मेरे मन हुलसत भाई ॥ जाये धर्म पतिव्रत केरा ॥ जेहते कहु सब धर्म बसेरा ॥ × × × × ×

End—दुर्ग वंस अवतंस मोहि पिय भक्ति यता येव ॥ यह छिन उपजेव ज्ञान कंत सेवा मन लायेव ॥ अनुभव आतम जगे सतोसत्त ध्रुव पेद भाषो ॥ दिन पति कर कल्यान सम गैारो पति साषो ॥ षोड़स वर्ष की उमरि मे किम्मि भाषो मैं भक्ति पिव । एहते अवनर जानिये येह कौनो कृत्त संभु त्रिय ॥ सवैया ॥ सो०

सती पद्र वंदि सोहावनि पावनि जे पिय संग सिधाय। पारवती जुत दंपति के पद वंदैां कृपा करि होहु सहाय ॥ कोटि करो विनती रिषि नारिको कीरति जासु सिया वर गाये ॥ नारि विरञ्चिय यज्ञे येही येह ग्रंथ पढ़े नर वांछित पाये ॥

× × × ×

भादैां तिथि भगवान की तादिन ते दुइ भवर ॥ सत विलास भाषा कियो सकल धर्म को टवर ॥ × × ×

इति।

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—प्रथम विलासः तिय भक्ति, देश धर्म शास्त्र मत वर्णन। (२) पृ० १९—२८ तक—द्वितीय विलास ज्ञान समुद्र नास केत वर्णन। (३) पृ० २९—३८ तक—तृतीय विलास, उपपुराण मतसे पति पूजन विधान वर्णन। (४) पृ० ३८—५०तक चतुर्थ विलासः शास्त्र मतसे शब्द ब्रह्मज्ञान देश आदि का वर्णन। (५) पृ० ५१—६२ तक—पंचम विलासः गोपी उपदेश वर्णन। (६) पृ० ६२—७३ तक—षष्ट विलास विष्णु दिव संवामें गृही धर्म वर्णन। (७) पृ० ७३—८६ तक—सप्तम विलासः गृही धर्म प्रताप वर्णन।

No. 442. Bāraha Kharī, y Viśṇudāsa. Substance—Country-made paper. Leaves—6. Size—9 × 6 inches. Lines per page—20. Extent—165 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1851 Samvat or A.D. 1794. Place of deposit—Paṇḍita Krishṇa Kumāra, post office Bahādurganja, Rāe Barelī.

Beginning—अथ विष्णुदास जी की बारह षरी लिष्यते ॥ दोहा ॥ पहले गणपति ध्याइये पीछे कीजे काज। विघन हरन मंगल करन राषत जनकी लाज ॥ गणपति को सिर नाइके करो कीरतन रंग। राम भजो मुष बावरे काटे जम के फंद ॥ संवत अट्ठारह सै इकावना सावन सुदि तिथि दूज। विष्णुदास बारह षरी कहो देवता बूझ ॥ कहो देवता बुझि विस्व भर भगवत नाम उचारो। अरतिस अच्छर बरनन कीन्हो हिर दे भयो उजारो ॥ गुरु को ध्यान धरो मन माहो माया मई अपारा। विष्णुदास द्विज दसम बषाने सुनिके भये निस्तारा

End—जितनी जनकी उक्ति थी उतनी कहो बनाइ। नाम कथा सागर बड़ा किस पर पैरो जाइ ॥ किस पर पैरो जाय समद दर कुकरो मकरो बनाई। गुरु कृपा लदा चरन सो बेड़ा पड़ा बनाई ॥ विष्णुदास उमर—को वासी जिन ये कीरति गाई। डंडो राम गुरु की किरपा सो जग विचि सोभा पाई ॥ इति विष्णुदास को बारह षरी मई समाप्त ॥

Subject—पृ॰ १—गणपति स्तुति, निर्माण काल और गुरु महिमा वर्णन, वसुदेव देवकी विवाह तथा आकाशवाणी का होना। पृष्ट २—कंस का डर आना और देवकी को दुख देना, वसुदेव का पुत्र देने की शपथ करना और देवकी को लेकर घर आना।

पृ॰ ३—संतान उत्पन्न होने पर कंस को दे देना, वसुदेव और देवकी का बंदी होना, कृष्ण जन्म, कृष्ण को नंद गृह ले जाना यमुना का बढ़ना, वसुदेव की उस समय की दशा का वर्णन पृ॰ ४—वसुदेव का लौट कर वापिस आना, कृष्ण का पालने में झूलना, पूतना वध, गौ चराने की लीला का वर्णन।

पृ॰ ५—काली दमन, गोपियों की उस समय की भयभीत दशा का वर्णन। कंस वध वर्णन।

पृ॰ ६—कृष्ण विनय के पद और ग्रन्थ समाप्ति।

No. 443. Durgā Śtaka, by Vishṇuduṭṭa Mahāpātra. Substance—Country-made paper. Leaves—50. Size—8 by 5 inches. Lines per page—10. Extent—360 Anushṭup ślokas. Appearance—New. Character—Nāgarī. Place of deposit—Ṭhākura Mahābīra Siṃhajī Talukédāra, village and post office Kothara Kalāṅ, district Sultāṇpur (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः॥ अथ दुर्गा शतकम्॥ कवित्त ध्यान॥ हीरन के खंभा जगमगि रहे मंदिर में धूपन के वास आस पास धमरे रहैं॥ मोतिन की झालरैं झपकि रहीं चहुंघोर बादलान तासु के वितान पसरे रहे॥ सेव देव मंडल मुनीस सीस पानि जोरे विद्रुम के पलिका जरायन जरे रहैं॥ बैठी तहां देवी विष्णुदत्त सिनो चरन आगे मुकुट दिगोसन के लटके परे रहे॥ १॥ पुनः॥ कनक को मन्दिर सिंहासन रुचिर तामैं बैठी जगदंबा गान किन्नर करे रहैं॥ नाचै देवतान की वधूटी भूरि भाव भरी बाजत मृदंग ताल नौबति झरे रहे॥ संकर रमेस हंस चवर डोलावै दोउ छत्र लीन्हे कर मैं निसाकर खरे रहैं॥ आसन को जोवै पाक सासन हमेसे जासु आसन के नीचे पंकजासन परे रहे॥

× × × ×

End—जश धूम तोम व्योम धावत जलद ऐसे चहुंघोर फैलत नगारे की घहर है॥ विपन के मंडल जपत सिद्ध मंत्र जामें घंटा की धनक जामे आठौ पहर है॥ रुचिर दुकानन मैं पावन विविध वस्तु उत्तर दिशा मैं पुन्य गंगा की लहर है। चहल पहल होत महल महल बीच राजत विचित्र जगदंबा को सहर है॥

तेहो सत सागर कमठ शेष नाग तेहों तहों मेक दिग्गज कुबेर मघवान हैं। तेहो नव कानन पवित्र सुप्तिवर तेहो तेहों पुरी ग्राम तोनो पावत प्रधान है॥ तेहो गुम तोरथ प्रयाग में त्रिवेनो तेहो तेहों जप तप जोग संजम विधान है। तेहो भूमि पावक सलिल व्योम मारुत है तेहो देवो सूरज मयंक अनुमान है॥ इति श्री दुर्गाशतके पुन्य स्तोत्रे महापात्र विष्णुदत्त कृतो वागादि वर्णनो नाम दशमं दशक॥ इति दुर्गा शतक सम्पूर्णम्॥

Subject—(१) पृ० १—६ तक—प्रथम दशक, ध्यानवर्णन, (२) पृ० ६—९ तक—द्वितीय दशक, प्रभाव वर्णन, (३) पृ० १०—१५ तक—तृतोय दशक—पद, मुख, ग्रीवा, कर, भृकुटो वर्णन। (४) पृ० १६—२० तक—चतुर्थ दशक—दया दृष्टि वर्णन (५) पृ० २०—२५ तक—पंचम दशक, महिमा वर्णन (६) पृ० २५–३० तक—षष्ट दशक—स्तुति वर्णन। (७) पृ० ३०—३४ तक—सप्तम दशक, घंटा त्रिशूल वर्णन। (८) पृ० ३४—३९ तक अष्टम दशक—खड्गादि वर्णन। (९) पृ० ३९—४५ तक—नवम दशक, मदिरादि वर्णन। (१०) पृ० ४५—५० तक—दशम दशक—वाटिकादि वर्णन।

Note—यह पुस्तक सन् १९०६ ई० में मिरज़ा पुर निवसी रामधनञ्जय द्विवेदी के नाम से प्रकाशित हो चुकी है।

No. 444. Bhakti Ratānāwalī (Ṭókā), by Parama Hans Vishnu Purījī. Substance—Countrymade paper. Leaves—100. Size—13×6 inches. Lines per page—22. Extent—2,300 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Paṇḍita Bhagawandīnajī Misra, Vaidya, Baharāich.

Beginning—दशमें श्री शुक वाक्य॥ श्री कृष्ण सर्वोत्किष्ट हैं॥ कैसे हैं विकस त विष्वक्सेन हैं॥ वालोक निवास जाकों। अंतरात्मा तें वा भक्तन को निवास हैं जाविषें॥ श्री कृष्ण भाव स्पष्ट कहिये हैं॥ श्री देवकी विषै है जन्म प्रसिद्धि जाको॥ व रक में जन्म नहीं हैं॥ श्रेष्ट यादव है सभा सेवक रूप जाके॥ चारि भुजतें वा भुज रूप अर्जुनादिक तें दुष्ट दैत्यादिक कों वध करिकें॥ अधर्म को दूर करत हैं॥ ऐसे समर्थ को मेरा विघ्न वारन के तो कहें॥ कछु नहि है विलास चातुरो॥ लावन्यादिक विनाई सम्बन्ध मात्र तें॥ थावर जंगम जे वृन्द्रावन के वृक्ष लता तृण॥ पक्षि के दुख हारो हैं॥ प्रेमाधोन कहिए हैं सुन्दर हास्य की शोभा हैं जाविषै॥ ऐसो जो मुष तातें गोपिन के कामदेव कों वृद्धि करत हैं॥ काम वृद्धि को हेतु श्री कृष्ण विषै काम हैं। सो परमानन्द दायक होइ॥

End—कर्त्ता ग्रंथन ग्रंथ जो अपनो कर्म ताको भगवान को समर्पत हैं। हे भगवान हे लक्ष्मीकांत ये चांचल्य विषै अथवा सकल को विषय अथवा परमार्थ के निरूपण विषे तुम मोको तत्पर करौ॥ तहां बुद्धि के विभव तुल्य जो मेरे यत्न तिन करि भगवान तुम भक्तन सहित प्रसन्न होहु॥ अपने ग्रंथ विषै सकल संपति को योग्यता कहैं हैं॥ भक्ति है प्रयोजन जिनको ऐसे जे साधू तिनको आदर पठन चिंतव की आग्रह या ग्रंथ विषै आयहि ते होइगो॥ अरु युक्ति के विचार विषै हैं स्वाभाव जिनको ऐसे भक्तिहीन अस शब्दिक तिनको तो आदर होइगो॥ मेरे श्रम को देषिकै कैसा है श्रम नाना प्रकारन के श्लोक को सम्बन्ध ते एकत्र लिखत ऐसो हैं। जो कोई ए अनन्य की कृति हैं ऐसा जानि के निंदा करत है तिनको मैं याचत हौं ए मैं स्किति को बारं बार देषि कै पोछे दुखन कीह्यौं जो भक्ति की महिमा ज्ञान पर निंदा की वासना रहेगो तौ दुखन देवै॥ ये ग्रंथ बारंबार देखत भगवान भक्ति उपजेगो। तब पर निन्दादि दुर्वासना कहां उपजै आदि।

Subject—पुस्तक प्राचीन है परन्तु इसमें आदि का एक और अंत का एक पृष्ट नहीं है जिससे संवत आदि का पता नहीं चलता शेष पुस्तक पूर्ण है। पृ० १—३१ तक श्री कृष्ण की भक्ति का वर्णन है इसमें नारद जी, सूत जी, विष्णुपुरी, शुकदेव जी, कपिल देव की माता व कपिल जी आदि व ध्रुव प्रह्लाद आदि की भक्ति का वर्णन किया है। पृ० ३२—५२ तक आकाशवाणी नारद प्रति। भगवान की भक्ति करना और विषय भोग का त्यागना आदि का वर्णन है॥ पृ० ५३—६२ तक क्षुधा, तृष्णा, क्रोध, लोभ, मोह, आदि से भक्त को दूर रहना उचित है इसी पर व्याख्या की गई है॥ पृ०—६३—७३ तक हरिकीर्तन में तत्पर रहना सब दुखों का छुड़ाना है क्योंकि श्री भगवान के पद से गंगाजी ने प्रगट होकर संसार के पापों को दूर किया आदि वर्णन है। पृ० ७४—८४ तक जरासंध वध आदि की कथा वर्णन है॥ पृ० ८५—९० तक श्री भगवान सांसारिक किसी वस्तु की इच्छा नहीं करते और सब से दूर रहकर संसार का पालन करते और दुःख हरते श्री राम वानर रीछ आदि के साथ रहे और उनको भक्ति देख उनको अपनाया आदि वर्णन किया है॥ पृ० ९१—१०० तक श्री कृष्ण भगवान की महिमा का वर्णन किया है भक्ति और शत्रुरूप से जो उनको ध्यावते हैं सो सब उनको प्राप्त करते हैं और स्मरण मात्र से कृतार्थ होते हैं इसी प्रकार नारद आदि के वाक्य वर्णन किये गये हैं। फिर ग्रंथकार ने अन्त में अपनी प्रार्थना श्री भगवान कृष्ण जी से की है।

No. 445(a). Ānanda Raghunandana Nātaka, by Viśva Nātha Siṃha of Rewā. Substance—Country-made paper.

Leaves—67. Size—13 × 6½ inches. Lines per page—13. Extent—1,750 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Rāja Pustakālaya, Bhingā, Baharāich.

No. 445(*b*). Ananda Raghunandan Nātakā, by Maharaja Viśwanātha Simhaji of Rewā. Substance—Country-made paper. Leaves—172. Size—14 × 7 inches. Lines per page—11. Extent—2,247 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Written in prose and verse. Character—Nāgarī. Place of deposit—Lālā Sukhi Lālā Rāma Prasāda Kaserā, Bāzāra, Nawābganj, Bārābankī.

Beginning—श्रीगणेशायनमः॥ अथ आनन्द रघुनन्दनं नाम नाटक॥ छंद शिखा॥ अशरण शरण शरण दश मुख मुख दलन दलि है॥ अकरन करन करन धनु शर प्रण उधरत रन चलि चलि है॥ सद मन सदय सद कर कर जनन जनन पर रति है॥ जस जग गनत गुण गण गण गणप अहिय पशुपति हैं॥१ मृद पदु पदम पदुम महियन मन अलि अलि रहि रमि रमि है॥ चख चल चलनि करति वरवस सुवय वयन भ्रमि भ्रमि है॥ अति मद मर्दन सर सर सत रस पति तन है॥ जय जय जपन विवुध वुध छन छन मम पति पति त्रिभुवन है॥

End—सूत्रधारः प्रबंधः॥ जय जय रघुनन्द करुणा कर है॥ ताड़का तनुभंजन खल दल गंजन है॥ पिनाक खंडन जन रंजन है॥ सीता विवाहन सुभाव गाहन है॥ सीताद्यैः दार्वादि कुन भाजन है॥१॥ रे ई सनि रेरे सनि सानिन्ति परवण्य मगरे सामग्य मम्यय्य थप मथनि थव पाथो दिग दिग थोपि गदि गदि गति कत कत कत कथं तक थं तक नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग नंग तगुण थेया॥१॥ श्री रघुनन्दनः॥ मागु मागु॥ सूत्र धारः॥ भजन॥ छूटे मन मलीनता सारी कामादिक मिटि जाहीं॥ होय विवेक नसै दुख सिगरे गहै आप ममवाहीं॥ अति निर्मल चित है प्रभुपद में लगी सहित द्रग भावे। परम प्रेमरघुनाथ आप को विश्वनाथ अप पावे॥१॥ जौलौ कीरति चलै तिहारी तौ लौ चलै नाथ यह नाटक॥ सुनि सब होहि सुखारी॥ जो यह करै लहै धन धामहु अंत सुगति तिहि होवे॥ विश्वनाथ को प्रगट रहियतन सुमन तिहारा जोवे॥१॥ श्री रघुनन्दन दनः तथा सूत्रधारः प्रणम्य सहर्ष निष्क्रान्तः॥ इति श्री मन्महाराजाधिराज वैषवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जूदेव कृत आनन्द रघुनन्द नाथ के सप्तमाङ्कः॥ समाप्तम्॥ गुरुदत्त लेषित संवत १९२६॥

Subject—(१) पृ० १—२ तक-नान्दी, सूत्रधार प्रवेश, मारिष से सूत्रधार के नाटक खेलने की आज्ञा और उसका निषेध, सूत्रधार का मारिष से गुन वालों का कथन करना, पारिपार्श्वक प्रवेश, उसको नट से नाटक खेलने की प्रार्थना, उसका निषेध पुनः पारिपार्श्वक का स्मरण दिलाना कि तुमको—तेरे ही कथन के अनुसार अभिवाणी का आशीर्वाद मिल चुका है कि तुझे एक अपूर्व नाटक मिलेगा—इति प्रस्तावना (२) पृ० २—३ तक—सूत्रधार को एक चीठी मिलना उसका उसे पढ़ना, उसी में कवि का परिचय इस प्रकारः—श्री जै सिंह भुवाल विधिपति सुत बिसुनाथ सिंह जेहि नाऊ सो नाटक आनन्द रघुनन्द भाषा रचि है चाउ उछाऊ ॥—इति निः कांतः ॥ शिष्य प्रवेश, नट का गुरु को देख कर उससे पूजन की तय्यारी के लिये कहना, गुरु शोभा वर्णन, गुरु प्रवेश, प्रणाम पश्चात् गुरु को चिट्ठी आने का उनसे कथन और अपना नाटक पढ़ने की इच्छा प्रगट करना, गुरु की स्वीकृति। नट का कथन कि आप के प्रसाद से मुझपर नाटक आगया।

(३) पृ० ४—७ तक—नेपथ्य में कोलाहल, गुरु का ईश्वरावतार होने का सन्देह, अपराजिता नाम नगरी को गुरु का जाना। विष्कम्भकः—महाराज का आगमन, सूत्र मागदादि का वन्दन पाठ, नट का नटी से पुरहुत तथा दैत्यों का युद्ध बता कर कच्चे सूत पर चढ़ के आकाश गमन, वहां से उसके अंगों का गिरना, नटी का सती होना, पुनः नटका आ जाना, लोगों का आश्चर्य चकित होना, नट का नटी को पुनः बुलाना और उसका महलों से निकलना। विदूषक का नटी से हास्य।

(४) पृ० २—१९ तक—नृत्य होना, महाराज का कौशिल्या के महलों में जाना, रानियों को उपदेश, कुमारों का महलों से दरबार में बुलाना, मंत्री से राजकुमारों के विवाह की बातचीत, गुरु आगमन, राजा का गुरु से कथन कि विश्वामित्र ऋषि आनेवाले हैं और वह भी सुना है कि वे दोनों राजकुमारों को मांगेंगे। गुरु का वहां कुमारों के भेजने का उपदेश ऋष्यागमन, कुमारों का मांगना, राजा का कुमारों को दे देना, मार्ग पूरा करके उस राक्षसी के वन में पहुंचना—जो ऋषि का मख भंग करती थी, धनुष बाण चढ़ाना, गुरु से शंका करना कि स्त्री को मारने से कुल को कलंक होगा ऋषि का कहना कि ऐसी पापिनियों (भृगु की स्त्री और मंथरा को) मुरारी और नमारि ने मार कर यश लिया है। बहुत से राक्षसों का वध।

(५) पृ० २०—३३ तक मुनि का सीलकेतु नृप की कन्या के स्वयंवर में राजकुमारों सहित जाना, सहस्रकर तथा दिशाकरका वादाविवाद दिक

शिर का आकाशवाणी श्रवण करके भाग आना, धनुष टूटना जयमाल पहनना, महराज अपराजित के चिट्ठी आना, उनका अद्भुत् होकर पढ़ना और महिआ से अपने पुत्र का विवाह होना सुनकर बरात सजा कर आना।

(६) पृ० ३४—४५ तक नियमानुसार विवाह का होना, मंत्री का राजा से पुत्र की विदा की प्रार्थना इस हेतु कि हर धनु भंग सुन रेणुकेय आ रहे हैं। गौतम के शिष्य का आगमन, राजा से बंग भाषा में मुनि का संवाद पहुँचना, रेणुकेय का आगमन, उनके भूषणादि का वर्णन, रेणुकेय का क्रोध, डोल धराधर से वादाबाद, रेणुकेय का उनको अवतार समझ तपस्या को चला जाना, राजकुमारों का अपने नगर को आ जाना, माताओं का हर्ष—

इति प्रथमोऽङ्कः।

(७) पृ० ४५—५१ तक आदि कवि के शिष्य का क्षीरवती तथा कलिंद जा द्वारा सुना हुआ संवाद सुनाना कि 'राजा' का देवलोक हो गया, इस पर मुनि का हर्ष शोक प्रगट करना, राजकुमारों का आदि कवि के आश्रम पर आना, उनके ठहरने को स्थान बनाना। अपराजिता की कथा पूछना, मुनि का उनकी प्रसन्नता का कथन करना।

(८) पृ० ५२—५९ तक दहदह जगकारी का घर आना, डोल धराधर का बन प्रवेश सुन कर शोक, दासी को ठोक पीट, कुशला मिलाप, अपने और सफ़ाई देना कि डोल धराधर के बन भेजे जाने में मेरा दोष नहीं है, दहदह जगकारी का डोल धराधर के पास चला आना। काग का महिजा को चोंच मारना, सींक के बाण द्वारा उसकी एक आँख फोड़ देना, सेना देखकर विस्मय करना, बड़े भाई से कहना कि यदि आज्ञा हो तो अभी इन दोनों भाइयों को पकड़ लाऊं। सब का आगमन, पिता मरण सुन कर रोदन। गुरु का समझाना, उनको पादुका देकर विदा करना।

इति द्वितीयाङ्कः।

(९) पृ० ६०—६९ तक मैत्र वरुण का गुरु को सूचित करना कि डोल धराधर (तुम्हारे इष्ट देव) आवत हैं। डोल धराधर का आगमन मुनि का अर्घ्य पाद द्वारा सत्कार करना, उनको मराठी भाषा में पंचवटी पर निवास करना कथन, हितकारी से वार्तालाप। दहदह जगकारी को कथा सुनाना, (दीर्घनखी) एक स्त्री का आगमन विवाह प्रस्ताव दीर्घनखी के नाक कान भंग करना, राक्षस प्रवेशः, हितकारी राक्षस युद्ध राक्षस तथा अन्य राक्षसों का मारा जाना, मैत्रा वरुण का प्रवेश तथा वन्दना।

(१०) पृ० ७०—८१ तक दिशशिर का मंत्री से सगर्व कैलाशादि उठा लाने का वार्तालाप, दीर्घनखी का रोते हुए पहुंचना, सब कथा कहना, दिशशिर का सोच करना, मंत्री का उनकी स्त्री के हरण को सम्मति देना, डोल धराधर को महिजा ने मृग देखकर उसके मार लाने का कथन, उनका गमन, डोल धराधर २ का शब्द सुनकर महिजा द्वारा हितकारी का भेजा जाना, महिजा हरण, जटायु युद्ध, जटायु परम गति, डोल धराधर का महिजा के वियोग में व्यथित होना। अनुरागिनी मिलाप, सुगलकंठ आश्रम को गमन।

इति तृतीयाङ्क।

(११) पृ० ८२—९३ तक सुगलकंठ और उसके मंत्री चेतामल्ल से मिलाप, महिजा संदेश कथन, वासिव (सुगलकंठ का अग्रज) वध, भुजभूषण को युवराज पद, वासिव का सुख भोग, हितकारी का वर्षा व्यतीत होने और शरद ऋतु आ जाने पर खेद प्रगट करना कि, सुगलकंठ ने अभी तक महिजा मिलाप का कोई यत्न नहीं किया; सुगलकंठ का देश विदेशों को बानरों को भेजना; द्राविड़ देश की एक पर्वत की गुहा निवासिनी स्वयं प्रकाशिनी तपस्वी तथा एक गृद्ध द्वारा बानरों का समाचार हितकारी को ज्ञात होना; गृद्ध द्वारा बनाई हुई राक्षस पुरी को चेतामल्ल का पहुंचना। गृद्ध का आज्ञा लेकर चलना।

इति चतुर्थाङ्कः।

(१२) पृ० ९४—१०६ तक चेतामल्ल का राक्षसपुरी में पहुंचना महिजा का समाचार लेना वाटिका विनाश; दिशशिर के पुत्र नयन का मारा जाना, चेतामल्ल का पकड़ा जाना, राक्षसपुरी दहन, चेतामल्ल का सम्पूर्ण समाचार हितकारी को आकर सुनाना उनका दिया चूड़ामणि हितकारी को देना। राक्षसपुरी को ससैन्य गमन। दिशशिर के लघुभ्राता (भयानक) का दिशशिर से आ मिलना। हितकारी का भयानक से समुद्र पार करने की सम्मति लेना, समुद्र का स्वरूप धारण करके आना, सेतु बांधना, शिवलिंग स्थापन।

इति पंचमाङ्कः।

(१३) पृ० १०७—१५१ तक राक्षसपुरी में बानर दल की चढ़ाई से हाहाकार, दिशसिर के यहां भुजभूषण का पहुंच कर उसे समझाना, उसका क्रोध करना, पद रोपण, संवाद, भयानक द्वारा राक्षसपुरी के प्रत्येक द्वार पर कौन कौन राक्षस स्थित हैं इसको सूचना हितकारी को देना। कौन योद्धा किससे लड़ा इसका वर्णन, डोल धराधर के शक्ति बाण लगना। चेतामल्ल का औषधि लाना और उद्धव जयकारी का समाचार सुनाना। डोल धराधर का सचेत होना, पुनः युद्ध, घट कर्ण तथा घननाद योद्धाओं का विनाश,

दिशसिर का मरण, महिजा-मिलाप, भयानक को राज-तिलक, पर्वाधि में दोहो दिन रह जाने का स्मरण कर अवध को चलने का विचार, भयानक का एक विमान देकर सुकंठ चेतामल्ल ग्रोर भुज भूषणादि सहित अवध को चलना। हितकारी का यह कह कर कि मुझे याज्ञवल्क्य के शिष्य के आश्रम में कुछ विलम्ब होगा सो तुम आकर डहडहकारी को सूचित करो।

इति षष्टमोङ्कः।

(१४) पृ० १५२—१७२ तक हितकारी के न आने पर डहडहकारी का शोक, चेतामल्ल का उनके आने का समाचार सुनाना। हितकारी का आगमन होते हुए विमानादि के शब्दों को सुनकर अवधवासियों का आश्चर्यान्वित होना ग्रौर मेघादि शब्द की उत्प्रेक्षा करना, चेतामल्ल का उन्हे समझाना, हितकारी तथा डहडह जयकारी का मिलाप, मैत्रावरुनि आगमन ग्रोर उनका आशिर्वाद देकर विदा होना, अप्सराग्रों का नृत्य गान ग्रौर उनका नाम नायक भेदानुसार करना, गौरांग नर्तकियों का अंगरेज़ी गान, फ़ारसी गान, अर्बी तथा तुर्कियों का गान, महदेशी वारवधुग्रों का गान, गानेवाली स्त्रियों को विदा कर हितकारी ने सब भाइयों को कार्य्य सुपुर्द किया, स्वर्धुनी ब्रह्म कुंडजा सम्वाद, भरत वाक्य-नाटक समाप्त। इति सप्तमोङ्कः।

No. 446(*a*). Bhāva Panchāśikā, by Vrinda Kavi. Substance—Country-made paper. Leaves—32. Size—6 × 4½ inches. Lines per page—8. Extent—260 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of composition—1343 Samvat or A.D. 1686. Place of deposit—Paṇḍita Ramadevajī, village Baburīgām, post office Dhanaulī, district Bārābankī.

Beginning—अथ भावप्रकाश पंचाशिका लिख्यते।

दोहा—अद्भुत अमित अनन्त अति अगम अपार अनूप। व्यापक हृदय महत्व मय जय जय ज्योति स्वरूप ॥१॥ कवि लोगन के भाव सुनि। कछुक भयो चितचाव। करो भाव पंचाशिका वृन्द सुकवि धरि भाव ॥२॥ भाव सहित शोभा लहै, पूजा जप तप मित्र। याते वृन्द विचारि कै, कोने भाव कवित्त ॥३॥ बाजत ताल मृदंग उपंग महाधुनि तोनहु लोक छई है। वृन्द कहै सुर किन्नर भूत पिशाच पड़े जस उक्ति नई है। नाचत गौरि को हेत लिये सित कंठ हिये अनुराग मई है। चारिहु ग्रोर चराचर ऊपर मेघ विना जल वृष्टि भई है ॥४॥

दोहा—हरि तोको पायन धरो, यह कछु और प्रसङ्ग।
हर हू मैं राखों सदा, सिर पर तोकों गङ्ग॥

End—चित उदास न कोमल हास उसास भरै मुख छीने रहै रत। कोन समीन के संगन बैठन देखिये दीन कहै न सुनैयत॥ वृन्द कहै यह भाव कहा प्रति निन्दित है विधि को अपने मत याको न रोग न पीको वियोग न योग कलेश को ऐसो दसकत १०८॥ दोहा—करिहैंगे दिन चारि मे पिय परदेस पयान। सुनत भई ऐसो दसा समुझहु भाव समान॥

प्रानपती के पयान सुनै प्रति काम डरी मदरी हिय में घन। क्यों जिय धीरज कों धरि है ह कहा करिहैं उपचार स गोजन॥ × × × ×। यों तकि शंक नईक भई उनि सौंपि दियो मन मोहन को मन॥ दोहा। तिय मन दोनों पीय कों जब ही कियो पयान। अब उर कहा जु मोहिकों समुझहु बुद्धि निधान॥१११॥ कोने कवित्त मंजुम बराबरि तामें ज्वाहर भाव भरे हैं। स्वच्छ सुदेश सुलछन पेखि महा निरदोष खरे सुधरे हैं॥ ताके दुराव को ताला दयो समुझे बुद्धिवान दुराव धरे हैं। वृन्द कहैं पुनि ताके प्रकाश कों कूंची समर्थ दोहा करे हैं॥११२॥

दोहा—विभाव पंचासिका वृन्द सुभाव विचारि।
भूल चूक कवि कुल सबै मोते समुझि सुधारि॥

Subject—(१) पृ० १—३ तक—ज्योतिःस्वरूप परमात्मा को वन्दना। भाव पंचासिका के निर्माण का कारण। ग्रंथ निर्माण कालः—सत्रह से तैतालीस सुदि, फागुन मंगल वार। चौथि भाव पंचाशिका, प्रगटी पवनि उदार॥ शिव जी के नृत्य से विना बादल जल बरसने का कारण। गंगाजी की बंदना।

(२) पृ० ४—७ तक—मानन्द सम्मोहिता नायका वर्णन। मानिनी नायकान्तर्गत शिवजी के शिर पर गंगा को देखकर पारवती का मान करना। रूप गर्विता का वर्णन। कुम्भज मुनि का विरहो जनों की वेदना न जानने का कारण। नर, सुर, असुर, पयोनिधि, शेष और समुद्र को कोसने वाली छत पर पड़ी विरहिणी नायिका का वर्णन और उसका इन लोगों को कोसने का कारण 'चंद्रमा' को जो विरहियों को अत्यन्त दुखदाई है—उत्पन्न करना। विरहिणी नायका का विरहावस्था में कोकिलों को कूजने, भ्रमरों को गुंजारने और चंद्रमा को, निरद्वन्दता के साथ आलोकित होने की आज्ञा देने का कारण।

(३) पृ० ८—११ तक—रोहिणी का अपने पति चन्द्रमा के पास से राजकुमार की मृगया के भय से भागने पर उसे न पहिचान कर परिरंभन में आपत्ति

करना। पिय के हिय को छोड़ कर पीठ से आलिंगन करने वाली नायिका का वर्णन सकारण। वियोगिनी नायिका का कोकिलों के साथ केवल इसलिये कूकना कि वह मेरे कलरव से लज्जित होकर चुप हो जांय और मुझे विरह वेदना न हो।

(४) पृ० १२—१६ तक—भूत सुरति संगोपना नायका का वर्णन। इस सवैया के उत्तर में दो दोहों द्वारा मत और प्रमत पक्षों का निरूपण। अन्य सुरति दुःखिता नायिका का वर्णन इसके अंतर्गत कवि के वचन तथा नायिका के विषाद का वर्णन। विरहिणी नायका का सकल शीतोपचार परित्याग पश्चात भी शीत करकारी चन्द्रमा का सेवन करना और उसका कारण किसी प्रोषितपतिका नायिका का बिना पति के मिले ही उन्हें जाने को कहना इसका कारण यह कि जिससे हिय से लगते ही कहीं प्राण पखेरू न उड़ जावं।

(५) पृ० १७—२० तक—वचन विदग्धा नायिका का वर्णन। संयोगावस्था के सम्पूर्ण सुखों के तिलांजलि देने पर भी वियोगिनी नायिका के मलयानिल पान का कारण (भुजंगों के विषयुक्त वायु के सेवन से वियोगावस्था में शरीर त्याग का प्रयत्न)। न्याय का पक्ष लेते हुए सत्य का निर्वाह करने वाले मनुष्य का हरि के हिय की सकल संपति पाने के अधिकारी होने का वर्णन। पति आगम सगुन प्रदर्शनकारी काग को भोजन देते समय करवलय के गिर जाने की आशंका अथवा इस भय से कि वलय के शब्द से कहीं काग उड़ न जाय, भीतर चुपचाप भोजन रख देने वाली आगतपतिका नायिका का वर्णन। मुग्धा नायिका तथा शठनायक का सम्मिलित वर्णन। प्रोषित-पतिका नायिका का टीका निकालने का वर्णन।

(६) पृ० २०—२२ तक—अपनी प्रेयसी का पत्र पढ़कर नायक को विषाद तथा हर्ष एक साथ होने का कारण। स्वभाव से ही विशालाक्षी नायिका के कजरारे नेत्र होने के कारण उसका प्रीतम से मिलने के लिये काजल के न लगाने और हृदय में अंतर पड़ जाने की आशंका अथवा उर में मदन गति होने के कारण हार न पहिनने का वर्णन। हरि-ललना के स्वरूप पर उत्प्रेक्षा। प्यासे विरही का पानी की खोज में जाने पर तालाब सूखने पर जल और जलज के अभाव में उसको मोद होने का कारण, ऊख के जलने पर नायिका को सफलता पाने का वर्णन। आगतपतिका नायिका का वर्णन—चेरी का बधाई मांगना और नायिका का उसे गाली देकर मारकर निकाल देने का कारण। प्रीतम के अपराध से कोपित होने वाली नायिका का वर्णन। क्रियाचतुर नायिका तथा नायका का वर्णन। वचन चतुरता—सखी के वचन नायिका से—सखी के वचन कुचों पर किये हुए नखक्षतों का गोपन करना।

(७) पृ० २३—२५ तक—सौत स्वरूप धारिणी नायिका का पति को अपने में अनुरक्त देखकर प्रेम प्रकाशित करने का वर्णन। सुरति संगोपना नायिका का वर्णन। चन्द्रमा के प्रकाशित होने पर चकवाक के पृथक पृथक न होने का वर्णन। केलि मंदिर में रति समय मुखचंद्र के छिपाने के चातुर्य का कारण। प्रौढ़ा नायका का वर्णन। रूपगर्विता नायका का वर्णन वचन चतुर नायिका का वर्णन। एक दिन राम के मृगया से लौटते समय सीता को अहिल्या के तरने का स्मरण होने पर चरण छूने का वर्णन।

(८) पृ० ३०—३२ तक—दूती द्वारा अपने मुख को चन्द्रमा की उपमा दिया जाना सुनकर रोष प्रगट करने का वर्णन। सीता द्वारा राम को महीपति कहे जाने के निषेद का कारण। प्रीतम के पत्र में अहि, शिवादि का चित्र लिखकर भेजने का कारण, चित्र द्वारा पत्री भेजकर अंबरादि मांगना। पिय गमन पर नायिका के शोक प्रकाशित न करने का कारण। भाव पंचाशिका का विषय।

No. 446(*b*). Vrinda Satāsai, by Vrinda Kavi of Jodhapur Raja. Substance—Country-made paper. Leaves—40. Size—$9\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Lines per page—36. Extent—720 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nagari. Date of composition—1761 Samvat or A. D. 1704. Date of manuscript—1905 Samvat or A. D. 1848. Place of deposit—Ṭhākura Guruprasāda Siṃha, village Guthawa, Baharāich.

Beginning—श्री गणेशाय नमः॥ अथ वृन्द सतसई लिख्यते॥ दोहा— श्री गुरुनाथ प्रभाव तें होत मनोरथ सिद्ध। घनतें ज्यों तरु बेलि दल फूल फलन की वृद्धि॥ १॥ किये वृन्द प्रस्तार के दोहा सुगम बनाय। उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि दृढ़ कै दिये बताय॥ २॥ भाव सरस समुझत सबै भले लगें इहि भाय। जैसे अवसर की कही बानी सुनत सुहाय॥ ३॥ नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात। जैसे बरनत युद्ध में रस शृंगार न सुहात॥ ४॥ फीकी पै नीकी लगै कहिए समय विचार। सब को मन हरषित करै ज्यों विवाह में गारि॥ ५॥

End—बड़ेन की सम्पति सकल लघु विलसंत दनन्त। दधिमल घन घन जल धरा धर जल जग विलसन्त ७०१ जेहि जेतौ लिखिचै तितौ देत दई पहुंचाय। सक्कर सोरे के मिले जैसे सक्कर भाय॥ २॥ जिय सन्तोष विचारिये। रे होय जु लिख्यो नसीब। बल गुर कांच कथीर सौं मानत रतो गरीब॥ ३॥ जथा जोग सब मिलत हैं जो विधि लिख्यो अंकूर। बल गुर मोम संवारनो रानी

पान कपूर ॥ ४ ॥ समैसार दोहानि को सुनत होय मन मोद । प्रगट भई यह सतसई भाषा वृन्द विनोद ॥ ७०५ ॥ इति श्री वृन्द सतसई संपूर्ण समाप्तम् ॥ संवत् १९०५ श्रावण कृष्ण षष्टम्यां ८ ॥ २ ॥

Subject.—नीति के फुटकर दोहे ७०५ हैं।

No. 447. Pancha Kalyankapūjā, by Vrindābana of Kāsī. Substance—Country-made paper. Leaves—250. Size—$9\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{4}$ inches. Lines per page—9. Extent—1,970 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Place of deposit—Śrī Jaina Mandira (Barā), Bārābanki (Oudh).

Beginning—ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ ओं नमो नेकांत वादिने जिनाय ॥ दोहा ॥ वन्दौं पांचों पदम गुरु सुर गुरु वंदत जास । विघ्नहरन मंगल करन पूरन परम प्रकाश ॥ चौबीसौ जिनपति नमो नमो शारदा माय । शिव मग साधक साधु नमि रच्यो पाठ सुखादय ॥ जै जिनंद सुखकंद नमस्ते ॥ जय जिनंद जित कंद नमस्ते ॥ जय जिनंदवर बोध नमस्ते ॥ जय जिनन्द जित कोध नमस्ते ॥ १ ॥ पाप ताप हर इन्दु नमस्ते । अर्हवरन जुत विंदु नमस्ते ॥ शिष्टाचार विशिष्ठ नमस्ते इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥ धर्म धरे वर शर्म नमस्ते । मर्म भर्म घन घर्म नमस्ते ॥ दृग विशाल वर भाल नमस्ते हृदि दयाल गुन माल नमस्ते ॥ शुद्ध बुद्धि वर वृद्ध नमस्ते । वीतराग विज्ञान नमस्ते ॥ चिद्विलास धृत ध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥ स्वच्छ गुणां बुधिरत्न नमस्ते । सत्व हितंकर यत्न नमस्ते ॥ कुनय करि मृगराज नमस्ते । मिथ्या खगवर बाज नमस्ते ॥ ५ ॥

End—श्री वीर जिनेसा नमित सुरेसा नाग नरेसा भगति भरा । वृन्दावन ध्यावें विघन नसावें छिन पावें शिव शर्म वरा ॥ ७ ॥ महार्घ्य आशीर्वाद ॥ दोहरा छंद ॥ श्री सनमति के जुगल पद जो पूजै धरि प्रीति । वृन्दावन सो चतुर नर लहै मुकत नवनीत ॥ सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी । तुम मे जितने गुन हैं तितनी ॥ कहि कौन सकै मुख सों सब ही । तिं पूजत हौ गह अधर्म यही ॥ १ ॥ रिषभदेव को आदि अंत श्री वरधमान जिनवर सुखकार तिनके चरण कमल कौं पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार ॥ ताके पुत्र मित्र धन जोवन सुख समाज गुण मिले अपार । सुर पद भोग भोग चक्री हैं अनुक्रम लहैं मोक्ष पद सार ॥ २ ॥

इति श्री वरधमान चौबीसो प्रथक २ पंच कल्यानक पूजा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ॥ २४ ॥

Subject—(१) पृ० १—१८ तक—मंगलाचरण। नमस्कार, समुच्चय चौबीसी जिन पूजा कथन। आदिनाथ पूजा वर्णन।

(२) पृ० १८—४९ तक—श्री अजितनाथ पूजा वर्णन। श्री संभवनाथ जी पूजा का वर्णन श्री अभिनंदननाथ पूजा वर्णन।

(३) पृ० ४९—८० तक—सुमतिनाथ पूजा वर्णन। श्री पद्म प्रभु को पूजा का वर्णन। श्री सुपार्श्वनाथ पूजा वर्णन।

(४) पृ० ८१—१११ तक—श्री चन्द्रप्रभु पूजा वर्णन। पुष्पदन्त जिनेश्वर की पूजा का वर्णन। श्री शीतलनाथ जी की पूजा का वर्णन।

(५) पृ० ११२—१४० तक—श्रेयांशनाथ पूजा वर्णन। श्री वास पूजा वीर जिन पूजा वर्णन। श्री विमलनाथ पूजा वर्णन।

(६) पृ० १४१—१८० तक—श्री अनंतनाथ जी की पूजा का वर्णन। श्री धर्मनाथ की पूजा का वर्णन। श्री शांतिनाथ पूजा का वर्णन। श्री कुंथनाथ जी की पुजा वर्णन।

(७) पृ० १८१—२१२ तक—श्री अरहनाथ जी की पूजा का वर्णन। श्री मल्लिनाथ जी की पूजा का वर्णन मुनि सुव्रतनाथ पूजा का वर्णन। श्री नेमीनाथ जी की पूजा का वर्णन।

(८) पृ० २१३—पृ० तक—श्री नेमनाथ जी की पूजा का वर्णन श्री पार्श्वनाथ पूजा कथन। श्री वर्द्धमान जी जिन पूजा वर्णन पूजा का फल, कवि का नाम, जनम तथा सहायका दिन नाम :— काशी जी के काशीनाथ नन्दूजी अनंतराम। मूलचंद पाढ़त सुगम आदि जासियो दो। सजन अनेक तहाँ धर्म चंद जी को नंद वृन्दावन अग्रवाल गोल गोति वान्धियो।

No. 448. Dhyāna Mañjari, by Vrindābana Śaraṇadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—4. Size—10×5 inches. Lines per page—30. Extent—83 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1972 Samvat or A. D. 1915. Place of deposit—Nimbārka Pustakālaya Bābā Mādhava Dāsaji Mahaṇta, Nāna Pārā, Baharāich.

Beginning—श्री सर्वेश्वरो जयति॥ श्रीमद्भगवते निम्बार्काचार्याय नमोनमः श्री वृन्दावन शरण देवजू कृत ध्यान मंजरी लिख्यते॥ रोला छन्द॥ श्री गुरुचरण सरोज हरन भव मंगलकारी। वन्दन करि धरि ध्यान ध्यान

बरनैा पिय प्यारी ॥१॥ रदि फल मारन फूल भूल तरु बेलि छहे रित। मंजु कुंज अलि पुंज गुंज सुनिये जितही तित ॥२॥ आवत धीर समीर तीर जमुना जल परसै ॥ अमल कमल मकरंद सकल दिसि सुमन न बरसै ॥ कीरू कारिका पढ़त रहत जित पिक सुक कारो ॥ दम्पति तेहि अनुसार करत क्रीड़ा सुख कारी ॥ कुसुम सैन पर परम चैन पावैं मिलि दोऊ ॥ बैठे करत विनाद मोद भरि अीरन कोऊ ॥

दोहा—प्रथमहि प्यारी को करत सिख नख बरनन चार।
जाहि सुनत मोहि देइगें पिय रिझि अपनो हार ॥

End—लाल बजाव बेनु बीन लै बाल बजावत। मिले करत दोउ गान तान सों तान मिलावत ॥ रीझ परस्पर पुनि निसंक ह्वै लेत अंक भरि ॥ प्रेम विवस ह्वै जात मधुर अति अधर पान करि ॥ देखि परस्पर रूप होत दृग-नित दोउ मोहन ॥ याही ते दिन रैन कबहुं छूटत नहिं गोहन ॥ करत विविध श्रृंगार अलैाकिक कहत न पावै। तदपि सुमति अनुसार भक्त कहि कै सचु पावै ॥ ताते सिख नख ध्यान कह्यो मैं रसिक जनन हित। कंठ पाठ करि राख यहि सुमिरन करिहैां नित ॥ दोहा ॥ हाव भाव लावन्य अति अगिनित गिने न जाहि। निरखत सचु पावै सखी दूरि दुरि कुंजन माहि ॥ ज्ञानहु को यह ज्ञान है ध्यान रसिक जन प्रान। ध्यान करैं जो पान यह सो न छुवै कछु आन ॥ श्री वृन्दावन धाम रुचि श्यामा श्याम सुअंग। जन्म जन्म वृन्दावनहिं दीजो निज जन संग ॥ इति श्री वृन्दावन शरण देव जु कृता ध्यान मंजरी समाप्ता ॥

Subject—श्री कृष्ण का ध्यान।

No. 449. Jyotisha Chakra of Vyāsadeva. Substance—Country-made paper. Leaves—18. Size—11 × 5½ inches. Lines per page—30. Extent—280 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgarī. Date of manuscript—1894 Samvat or A. D. 1837. Place of deposit—Bhaiyā Mahipāla Simhaji, village Payāgapura, post office Payāgapura, district Baharāich (Oudh).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिष चक्र लिख्यते ॥ नाम नक्षत्रग्रह तिथि जान। संगति वेद करब परिमान बसु।८। गुन।३। मन।७। हित करिये तंत्र। ताते जनिये गर्भ का अंत ॥ विषम पुत्र सम जानु कुमारी। सुन्न रहे तेहि मृतक बखानी ॥ रवि गुरु भैाम पुत्र उतपन्या सोमे सुक्रे बुध भै कन्या ॥ भोरे मारे सनि जो आवै। अधम जनाइ कै जीय नसावै ॥ इति कन्या पुत्र जन्म ॥

कट पति हस्त कोत्र परमान। ताकर चूकर त्रिगुन बयान, एक छांड़ि ओ बसु ते हरै। कहै व्यास ऐसे गृह करै॥ तादा नृपति नपुंसक तसकर। भोन विचक्षन धर्मे दलिद्र धनाढ्य॥ तिथि कर दून वार सम लेव सहित नक्षत्र एक करि लेव तीन के भागे रहै हुलास जल थल चंदा बसे पकास। थले बसै पड़ गे लोहा तीनि लोक मह जोगिन बसै कहै व्यास ऐसे वुझि करै।

End—चुल्हा चक्र—

ईसान ३	पूरब ३	अग्निन ३	सु ३ म ५	श २
उत्तर ३	मध्य ३	दक्षिन ३	सु ३	बृ० १
वाइव ३	पछु ३	नैरित्य ३	रा ४ बृ ७	च २ क १

जावत भात भुकतानी दिवसिधि सुने च संख्या नथा वदो ३ भूता ५। गुना ३। यधि ४। सेताव ७। नैन २। पृथ्वी १। इन्दु १। क्रमात करै हानि सुभे सुष्यंच कथितं चक्रं कर भूषनं पिंडे न वा ९। कं ९। नर्ड। नम्र।२। पत्रि ३। नद ८। नाम ८। नागै ८। गुन तके। विभाजिते नाग। २॥ नगांक। ७॥ ९॥ सूर्ज १२॥ नगाछे १७। तिथ्या १५। ड २७॥ यमानुमिः १२०॥ इति धुआदि ग्राम भुवेदा पंचकः १।४ ४।४।४।४।३।३। कलस्ते यकं मातः। इति ग्रह प्रवेस॥

१	४	४	४	४	४	३	३
प	प	शु	श्री	व	प्र	शु	शु

लिषा संवत १८९४ मुन्नू शुक्ल॥ आगे का पृष्ठ फट गया है।

Subject—इस पुस्तक में कन्या पुत्र जन्म। जोगिनी चक्र, विंशोत्तरी। सप्त दिवस का विचार भूमि चक्र दिकसूल चक्र महामारी भूमि चक्र, क्षित्र-पाली भूमि चक्र, निरामय भूमि चक्र, गोरी भूमि चक्र। जीव नरजीव खेल चक्र जय विजय भूमि चक्र। यार काल घटे दिसा प्रमान। शनिकाल चक्र हाक जीव निर्जीव विचार, सिकार विचार, सूर्य काल विचार, नाड़ी चक्र, संघत चक्र, सप्त सलाका चक्र, यकाल सुकाल चक्र, दिन घटी वार्ता, जीव पक्ष मृत्यु पक्ष। घोर काला चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, दुर्गफल। दसा राहु चक्र,

जाई स्थायी विचार चक्र प्रनुरूप। पंच स्वरा चक्र। सर्व दिशा वायु सुरभिक्ष दुर्भिक्ष भूमि कंप विचार। संक्रांति विचार। ग्रमावस रिक्ष वास का विचार, कुप चक्र। मेघर चक्र। चूल्हा चक्र, कर भूषन चक्र, ध्वजादि ग्राम चक्र ग्रह प्रवेस चक्र ग्रंत में केवल लेखक का नाम ग्रौर संवत है शेष पृष्ट फट गये हैं।

No. 450. Sevaka Bāni, by Vyasa Miśra of Gokula (Muttra). Substance—Country-made paper. Leaves—182. Size—5½ × 3½ inches. Lines per page—6. Extent—575 Anushṭup ślokas. Appearance—Old. Character—Nāgari. Date of manuscript—1843 Samvat or A. D. 1786. Place of deposit—Paṇḍita Śyama Bihāriji Miśra, Golāganj, Lucknow.

Beginning—ग्रथ श्री सेवक बानी लिख्यते॥

दुपदो छंद॥ राग धनाश्रिरी॥ श्री हरिवंश चन्द्र शुभनाम॥ सब सुख प्रेम रस धाम॥ जाम घटी विसरै नहीं। यह जुपरो मुहि सहज स्वभाव॥ श्री हरिवंश नाम रस चाव॥ नाम सुहड़ नव रतन कौं नाम रटत चाई सब लाहि॥ दुह सुबुद्धि कृपा करि मोहि॥ पाइ सुमन माला रचौ॥ नित्य सुकंठ सु पहिरौ तास॥ जस बरनौ हरिवंश बिलास॥

श्री हरिवंशहि गाइहौं॥ श्री वृन्दावन वैभव जितौ। बरनत बुद्धि प्रमान कितौ॥ तितौ सबै हरिवंश कौ। सबौ सबा क्यो कहौं विवेर॥ तो मेरे मन कौ ग्रवसेर॥ टेरि सकल प्रभुता कहौं॥

End—काहे कौं डरति भामिनो हौं सुकहति निज बात। नैकु बदन सनमुख करौं छिन छिन कलप सिरात॥ ५॥ वे चितवत बिधु बदन तन तू निज चरन निहारति॥ वे मृदु चिबुक प्रलोवहीं तू कर सो कर टारति॥ ६॥ बचन ग्रधीन सदा रहै रूप समुद्र ग्रगाध। प्रान रवन सौं कत करति बिनु ग्रागत ग्रपराध॥७॥ चितयौ कृपा करि भामिनी लीने कंठ लगाइ। सुखसागर पूरित भए देखत हियौ सिराइ॥८॥ सेवक सरन सदा रहै ग्रनत नहीं विश्राम। बानी श्री हरिवंश की कै हरिवंशहि नाम॥ ९॥ इति श्री सेवक बानी संपूरन॥ शुभ संवत १८४३ मिती माह सुदी २॥ इति॥

Subject—

हरिवंश नाम महिमा वर्णन। छं० १—१० तक।

भक्त का उपदेश वर्णन। छं० ११—१४ तक।

हित हरिवंश की केलि वर्णन। छं० १५—१७ तक।

हरिवंश का यश वर्णन। छं० १८—२५ तक।

हरिवंश नाम प्रताप वर्णन । छं० २६--३५ तक ।

हरिवंश की वाणी की महत्ता वर्णन । पृ० ३६--४३ तक ।

हित हरिवंश की प्रशंसा कथन । पृ० ४४--५४ तक ।

हरिवंश के शरण में सुख की प्राप्ति । छं० ५५—५८ तक ।

हरिवंश स्तुति । छं० ५९--७३ तक ।

हरिवंश का सौंदर्य वर्णन । छं० ७४--८२ तक ।

हरिवंश क्रीड़ा व महिमा वर्णन । छं० ८३—९५ तक ।

हरिवंश जी का प्रेम वर्णन । छं० ९६—१०५ तक ।

हरिवंश की कृपा वर्णन । छं० १०६—११५ तक ।

हरिवंश के भजन से ही सम्पूर्ण फल मिल सकते हैं । छं० ११६—१२४ तक ।

श्याम श्यामा मिलन वर्णन । छं० १२५—१४० तक ।

राधाकृष्ण विहार वर्णन व स्तुति कथन व सर्व फलदाता वर्णन । छं० १४१—१६४ तक ।

सेवक वाणी को प्रभाव व महिमा वर्णन । छं० १६५--१८० तक । इति ।

APPENDIX III

Extracts from the works of unknown Authors

APPENDIX III

No. 451. Ārjā of 20 leaves on Astrology. Deposited with Gaṅgāprasāda Pāṇḍe of Asókapura, Post Office Paṭṭi, District Pratapagaḍha (Oudh)

No. 452. Ashṭāvakr edānta kī Bhāshā of 15 leaves. Dated in Samvat 1920 or A. D. 1863. Deposited with Thākura Raṇadhīra Siṁhajī Jamīdār, Village Khñpura, Post Talab Baksi, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अष्टावक्र वेदान्त की भाषा लिख्यते ॥ दोहा ॥ ज्ञान प्रकासिहि कहौं प्रभु मुक्ति कौन विधि जानि । पुनि वैराग्यहि नो कहौ तत्व लहौं सब ज्ञानि ॥ १ ॥ चौपाई ॥ श्री गुरुवाच । जो तोहि तात मुक्ति की इच्छा । विषवत विषय जानकर इच्छा ॥ क्षमा आर्जव सत संतोष । इन पंचामृत पावै मोष ॥ २ ॥ दोहा ॥ पृथिवी वायुरु जल नहीं अगनि प्रकाशहि नाहि । इनको साक्षी रूप है तू चेतन घन माहि ॥ ३ ॥

End :—दोहा ॥ कहा प्रवृत्ति निवृत्ति पुनि बंध मुक्त कछु नाहि । निर्विकार कूटस्थ है अचल सदा अप माहि ॥ १२ ॥ कहां शास्त्र उपदेश है गुरु शिष्य कोउ नाहि । पुरुषारथ कासौं कहौं निर उपाधि शिव माहि ॥ १३ ॥ एक कहां अरु द्वैत है पुनि है नांहि कठोर । कहौ कहां लौ बात यह मो ते कछु न पोर ॥ १४ ॥ इति [illegible] प्रकरणं ॥ २० ॥ इति श्री अष्टावक्र संपूर्ण ॥ ४ ॥

No. 453. As'vamedha Chapeṭikā of 5 leaves Dated in Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Umāśankara Dube of Hardoi.

Beginning :—अश्वमेध का करै मनोरथ घर मैं परे सनाका हैं । बातन मैं हो पर करैया करवैया न ठका काहैं । अश्वमेध का घोड़ा पकड़ै या हम भा बड़े लड़ाका हैं । अश्वमेध को यज्ञ नहीं यह मेटति वेद की शाका है । अश्वमेध कहि सबहि व चावै वंशा चाहित क्या का हैं । रामानन्दी तिलकु लगावैं करते काम दगा का है । राम चन्द्रमा टीकु लगावैं देखे बड़े कजा कहै पाते यज्ञ अश्वमेध नहिं यह मेटत वेद कि शाका है । प्रथमै यज्ञ राम ने कीन्हों जिनको अब तक शाका है दूसरि यज्ञ पांडवन कीन्हो लोगै हुआ पिनाका है । तीसरि फिरि जनमेजय कीन्हो तबते मथा मनाका है । तातें यह अश्वमेध यज्ञ नहिं मेटत वेद का शाका है ।

No. 454. Atariyādeva ki Kathā or a prayer to the deity of intermittent fever. Dated in Samvat 1883 or A. D. 1826. Deposited with Paṇḍita Madhusūdanaji Vaidya, Village Old Sitāpur, post office Sitāpur (Oudh).

No. 455(*a*). Aushadhi-Saṅgraha of 135 leaves on medicines. Deposited with Paṇḍita Rādhorāma, of Āmamaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 455(*b*). Aushadhi-Saṅgraha of 318 leaves. Deposited with Bābū Rudranārāyaṇa, of Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 456. Aushadhiyā on medicines. Four leaves. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pānde of Ghurahā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

No. 457(*a*). Aushadhiyā-ki-Pustaka. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālaprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

Beginning :—अथ चांदी मारण विधि ।

एक चांदी को पत्र सोधि लेइ टूका टूका करिकै एक कुलिया मा रखि लेइ उस कुलिया में चित्ररा को रस भरि देइ वजन पैसा भरि चांदी तौ पैसा भरि पाउ भर चांदी तौ पाउ भरि रस देइ औ नौसादर दुइ मासे भरि देइ तब कुल्हिया माटी ते संपुट करे तब गोइठा में धरिकै दुइ प्रकार की आंच देइ सीतल परै तब निकारि लेइ भस्म होइहि ॥

End :—योगेश्वर चूर्णम् ॥ पारा पै० एक ताम्र को हरताल पै० १ हिंगुर पैसा १ सोना माषी पैसा भरि मुरदासंख पै० १ लोंग पै० १ जावित्री पै० १ मिरचि पै० १ सोंठि पैसा १ पीपरि के मूल सों खाइ सन्निपात जाइ ॥ अफीम सों खाइ कफ मिटै लहसुन सों खाइ तौ सर्व वायु जाइ ॥ इति योगेश्वर चूर्णम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—ज्वर ।

(२) पृ० ७ से पृ० २२ तक—चांदी, अभ्रक, सुवर्ण तथा रांगा मारने की विधि, गर्भ होने की विधि, योनि संकोचन विधि, अंजन विधि, अंड-वृद्धि चिकित्सा, पुष्टि की दवाई ।

(३) पृ० २३ से पृ० ४० तक—धातु पुष्टि की औषधि, प्रमेह स्तंभन की दवा, लवङ्गादि चूर्ण, गर्भ जाने की बत्ती, प्रसूत दवा, धन्वन्तरि सत, योगेश्वर चूर्ण ।

No. 457(*b*). Aushadhiyo-ki-Pustaka on medicines. Leaves-41. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munīma, Shop Murlidhara Mahādevaprasāda, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

No. 457(*c*). Aushadhiyō-ki-Pustaka. Leaves—13. Deposited with Paṇḍita Gorelāla Gopālaprasāda Upādhyāya, Village Sirasāganja, District Mainapuri.

Beginning :—अथ रस ॥ अग्नि दीपक कै विधि ॥ सैंधव टंक ४ हींग टंक ४ मायफर टंक ४ विष टंक २ सोहागा टंक ४ निबु कागदी के रस से घरल करै पहर ४ गोली बनावे चना प्रमान नित षाए छुधा लागै ॥ अथ साधारन तामरस कै विधि ॥ पारा टंक १ गंधक टंक १ सज्जी टंक १ निबुआ के रस से षरल करै पहर २ गोली बांधि रती १ नित षाय छुधा लागै ॥ सुनांग कै विधि ॥ सोने के पत्र बनावै फिर ताता कै कै तेलमा बुझावै बार ७ सेहुड़ के दूध मा बुझावै बार ७ फिर सीसा तोला एक मोम तोला १ स्वर्न तोला १ औटावै कच्नार तर ऊपर घरिया मैं घरै गंधक तोला ४ पारा तोला ४ तर ऊपर धरै पांच देइ पहर ४ चारि सोना मरै ॥

End :—संपिया सुमिल मारने की विधि।

सुमिल संपिया १ पो सुमिल थैलो मा डारिकै तौ आटा के भीतर भरै तौ ठंडो लगावै ॥ गाय कुआंटा ल्यावै बाड़ा तें तेहिमा सुमिल डारि कै फिरि आटा कै ठंडो देय फिरि गारि जाय तेहि के पसो पान के साथ षाइ चाउर ४ दाई जुड़ो जाइ परमेह जाइ गाई के दूध मा षाय रती १ परमेह के दाप जाय बंद होय औ गोला एक दिन राति कै फोरै ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १४ तक—छुधा लगने को औषधि। सोना और हरताल मारने की विधि। ज्वरांकुश बनाने की विधि, भैरव रस की विधि। रस साधारण की विधि, आनन्द भैरव की विधि, पारा मारने की विधि।

(२) पृ० १५ से पृ० २६ तक—तामा मारने की विधि, ब्रह्म गोली बनाने की विधि, ब्रह्म गोली लघु बनाने की विधि, भूत छोड़ने की विधि, रांगा मारने की विधि, पैसा मारने की विधि, सीसो मारने की विधि, संखिया सुमिल मारने की विधि।

No. 458. Ava-Pada. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A.D. 1817. Deposited with Paṇḍita Rāmakumāraji of Chilabilāraṇgitapura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशाय नमः॥ अथ अथ पद लिख्यते ॥

॥ अथ पद ॥

प्रों पेंह चारि पक्षर पासे के चह डोर लिख्यते ॥ पीछे पासा हाथ लेणा ॥ अपणे इष्ट देवता को चिंता करणा ॥ पीछे पास बार तीन मंत्र सेती मंत्रणा ॥ पासा डालणा ॥ तिसका फल जो कछु होइ सो सगनौती कहै ॥

॥ अथ मंत्र ॥

ॐ त्रिपुर लाहो चत्र लोहि मे संधा चौर कार्यं चिंति पिनि श्री निसि भागे गुरु मंदिरे स्वाहा ॥ इति पासा डालण मंत्रः ॥

अथ अ अ अ

अहो पूछण हार तु को वक भल है परमेस्वर का ॥ तुम्हारे शत्रु बहुत हैं पर तुम्हारा सुष होवइगा ॥ यह कार्य सिद्धि होवइगा ॥ निश्चय सेती ॥ १ ॥

End :— (द ब अ)

अहो पूछन हार तु जो कार्य चितवत कार्य है ॥ सो कार्य संतोषकर होइगा ॥ ६४ ॥

(द ब य)

अहो पूछन हार तेरे चितवे कार्य बहुत दिन भए है कष्ट आइगो सुष होवेगो लाभ भी है ॥ आरोग्यता होवेगो भलाई है सही श्रेष्ठ ॥ ६५ ॥

(द य अ)

अहो पूछन हार जो कार्य चितवत है तु कहीं जाहि नहीं ॥ स्थिर चित करु पहिले तो तो को बहुत कष्ट भयो है ॥ इछा मन वांछित होइ कछु पई देयगा ॥ इष्ट देवता को पूजाकर तह कार्य सिद्ध होइगा श्रेष्ठ सही जानना ॥ ६६ ॥ इति श्री प्रकरणं चतुर्थं समाप्ते ॥ इति श्री गर्ग ऋषि विरचितायां पासे के चलो संवत् १८७४ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४२ तक—पासे का मन्त्र तथा प्रयोग की विधि, पासे का तीन बार डालने का आदेश और पड़े पासों में निकले अक्षरों का फलादेश कथन।

No. 459. Bāraho Rāśi-ko Janma. Leaves—6. Dated in Samvat 1863 or A.D. 1809. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः। लिष्यते बारहो राशि को जन्म। आदित्यवार जे जन्महि ते शूर होहि। सोमवार जे जन्महि ते पंडित होहि॥ मंगल के जे जन्महि ते सुरपति होहि। बुधवार जे जन्म ते धनपाली होहि॥ गुरुवार जे जन्महि

ते स्वरपति होहिं। सुकवार जे जन्महिं ते सुखे न होहिं ॥ सनीश्चर जे जन्महिं ते क्षत्री वृत्ति होहिं ॥ इतिवार साँती जन्म नक्षत्र भरणी जे जन्महि दिन ८ मास ४ बायुर्वल वर्ष ९० सुखमोचु मिले कृत्तिका मा जन्महि दिन ९ मास १ वर्ष ३२ बायुर्वल वर्ष १०० रोहिणी में जे जन्महि मास ९ वर्ष १० बायुर्वल वर्ष १०० सर्प हाथ मोचु ॥ मृग सिरा जे जन्महि दिन ८ मास ६ वर्ष २७ बर्बल वर्ष ६७ नाग मीचु चरद्रा जे जन्महि दिन ११ बायुर्वल ० पांड रोग मोचु ॥

End :—पुनर्व सु मा जे जन्महि दिन ७ मास ४, वर्ष ५ उपरांत वर्ष ६० बायुर्वल वर्ष ९० सर्प हाथमोचु। पुष्य जे जन्महिं दिन ९ मास १ वर्ष २७ तथा वर्ष बायुर्वल ६० सुख मोच चश्लेषा मा जे जन्महि दिन १२ मास ४ वर्ष १९ तथा वर्ष २५ बायुर्वल वर्ष १०० घोरे हाथ मीचु। पूर्वा में जे जन्महि दिन ५ मास २० बायुर्वल वर्ष ९९ पानी मा मोचु ॥

उत्तामा जे जन्महि दिन ४ मास ४ वर्ष १६ ॥

(इसके पश्चात् पृष्ठ खंडित हो गए हैं)

Subject :—बारह राशियों में जन्म होने का फल ॥

No. 460. Baitālapachisi. Leaves—86. Dated in Samvat 1782 or A. D. 1725. Deposited with Śṛi Mannūlālaji Pustakālaya, Murārapura (Gayā).

Beginning:—फकीर सीव पाले परजा सब शत्रुन को अंत उये कुज है। अकबर: सुनो तम कहुँ सोम: फकीर सिंघ निज परिन को कीयो नगर जनु कोय: प्राथी पाल ताके भय: पोथु जहां लाज जहाज: मौज देन को भोजधी: बड़े गरीब नेवाज ॥

॥ कवित्त ॥

कंजदित मुदित कुमुद घनहित मुख सकुचित रुदित भयो मुख घनम है। हंस चंचरीक कवि पंडित मधुर बोल मंडित बिलोकत करत गुन गान है ॥ सुमन उलूक मुक मूक बंध गिरि कंद में रहत न डरत करत बे प्रमान है। तारे चोर कुटिल कलंकी च द भये भोगनपत फकीर सीव सूरज समान है ॥

End :—रानी लै निज कन्यका, गई भागि बन भोर।
चला चंदरो को नृपति, आइ गयो तिहि ठोर ॥
सिंह पैरव भूप के, सुत चँड़ विक्रम नाम।
दोउ मिलि सिकार को गए, कानन गनै शीतम घाम ॥
चंद्रावति कन्या सहित को रूप देखो जाए।
काम शर लागे दोउ के गिरो तब मन छाए ॥

चंद्रावती को चंद्र विक। यही तब निज पानि।
रुपवती को लहि तब यहां शोच देख्यु जानि॥
निज निज भवन मे सुरति केली सुचि मुदित दिन रैन।
राज भार समर्पि मंत्रिहि बैठ सुचित सुखैन॥
यह कहो कथा वैताल पछिपी निपट संसै भवन।
यह दुनो नाता के सुतन्ह ते भय नाता कवन॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—खंडित।

(२) पृ० २ से पृ० १२ तक—ग्रंथ निर्माण कारण व ग्रंथ रचना काल—

२ ८ ९ १
लोचन वसु मुनि भू बरख, माघ शुक्ल शशिवार।
तिथि वसंत की पंचमी, भयेउ ग्रंथ अवतार॥

प्रतिष्ठानपुर के राजा का वन में आकर साधू को तप करते देखना और भय खाकर तप भंग करने को वेश्यायें भेजना।

(३) पृ० १३ से पृ० १६ तक—खंडित।

(४) पृ० १७ से पृ० ४० तक—राजा विक्रम और तेली की कथा, प्रेत-तेली का बारम्बार कोई न कोई कथा राजा को सुनाना। इस प्रकार चंद्रावती की कथा वर्णन करना।

(५) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—खंडित।

(६) पृ० ४७ से „ ५७ तक—चौथी कथा।

(७) पृ० ५८ से „ ७० तक—पांचवीं कथा।

(८) पृ० ७१ से „ ७६ तक—छठवीं कथा।

(९) पृ० ७७ से „ १७२ तक—सातवीं कथा से चौबीसवीं कथा तक। शेष खंडित।

No. 461. Bhagavadgītā-ki-Bālabodhanī-Ṭikā. Leaves—176. Dated in Samvat 1837 or A. D. 1810. Deposited with Ṭhākura Vrajabhūshaṇasiṁha, Village Jhukavārā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः॥ श्री परात्पर गुरु स्वरूपायः निर्विकाराय नित्य शुद्ध बुद्धि चिदा नंद बोध स्वरूपायः॥ श्री वासुदेवाय नमः॥ श्लोक॥ श्री भगवद्गीते गोविंदो नानामिव कुर्वयं लोकानां चाहिताथि सु कृतं भाषा च टिप्पनं॥ १॥ एक समै दत्यन करिकै पृथ्वी भाराक्रांत अति व्याकुल होत भई तब ब्रह्मा इन्द्र आदि दैके समस्त देवता नारद मुनि सहित गमन करत भये जहां श्री भगवान क्षीर सागर निवासी वहां जाय के पास होत भये तब ब्रह्मा वेदरिचा वेद

मंत्र यंत्र सहित अन्य नाना प्रकार अत्यन्त उच्चेस्वर करिके अति आर्तवंत हो के मुनि देवता सहित ब्रह्मा स्तुति करत भये ॥ तब श्री परमात्मा देवतनि के निमित्त-अपने भक्त को रक्षा के हेत अति आर्त जानिके स्तुति सुनि के तहां य शब्द प्रगट भयो, भो ब्रह्मा किमार्थ आगतः तब ब्रह्मा पृथ्वी का सब वृतांत कहत भये तब श्री भगवान सर्वज्ञः सर्व जानते थे पुनः शब्द उपजत भया भो ब्रह्मा शृणु मृत्यु लोक के विषे जादव कुल मथुरा स्थान देवकी के ग्रह हम आनि के औतरेंगे। ×

× × × ×

× × × ×

End :—

यथाक्षार समुद्रेषु एकार्णे वेतु सर्वथा।

तथा धेनु मने केन क्षीर मेकंतु एकतः ॥ १ ॥

तथा देह मनेकेन आत्मामे कोपि कथ्यते एवं ज्ञान मनेकेन विवेको मेक उच्यते ॥ २ ॥ अंतः शुद्धि न श्रद्धांति वास मुरे शुद्धता तृष्णा मगखर्मंमन संकल्पो नैव शाम्यते ॥ ३ ॥ आदौ व्यास कृतं ग्रंथ मूलं सप्त शत तथा तुलसी आचार्य कंप्रोक्तं श्लोके पट महसकं ॥ ४ ॥ कृष्ण वृक्ष समुत्पन्न गीता नाम हरीतकीं नरा किमर्थ वदन्ति किलोमल विरचने ॥ ५ ॥ श्री भगवद् गीता मध्ये अष्टादश अध्याय विषै श्री भगवान अर्जुन प्रति ज्ञान सार जोग सार क्रिया कर्म सार भक्ति सार सर्व शास्त्र सार संदकी दोहन यथा प्रकार कहत भये हैं ते श्री परमात्मा अखंड परम ब्रह्म वक्ता श्रोता सबन प्रति मंगल ददातु शुभ कल्याण मस्तु संवत् १८६७ साके १७३२ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—प्रथम अध्याय। अर्जुन को उभय पक्ष को सेना देखकर विषाद उत्पन्न होने का वर्णन।

(२) पृ० २५ से ६४ तक— द्वितीय अध्याय।
ब्रह्मज्ञान तथा आत्म बोध।

(३) पृ० ६४ से पृ० ८८ तक—तृतीय अध्याय।
कर्मयोग वर्णन।

(४) पृ० ८८ से पृ० १०७ तक—चतुर्थ अध्याय।
सन्यास कर्म निर्णय, ज्ञान निर्णय, ब्रह्म निर्णय, यज्ञ निर्णय।

(५) पृ० १०७ से पृ० १२२ तक—पंचम अध्याय।
ध्यान योग व ज्ञान साधन विधि।

(६) पृ० १२२ से पृ० १४५ तक—षष्ट अध्याय।
कर्म व ज्ञान न्याय, साधन विधि, योग न्याय, पूर्वक संस्कार न्याय, योग की महीमाई तथा अंतरात्मा की धारणा।

(७) पृ० १४६ से पृ० १५९ तक— सप्तम अध्याय।

विभूति ज्ञान, विधिन्याय तथा देवता उपासना विधि।

(८) पृ० १६० पृ० १७२ तक—अष्टम अध्याय।

उत्तरायण व दक्षिणायनों सूर्य की गति, ब्रह्म अहोरात्रि, कल्प संख्या प्रमाण

(९) पृ० १७३ से पृ० १९३ तक—नवम अध्याय।

परमात्मा की योग शक्ति, बल स्वरूप, मुक्ति साधन लक्षण, प्रकृति-पुरुष संबंध।

(१०) पृ० १९४ से पृ० २१० तक—दसवाँ अध्याय।

विभूति ज्ञान, अध्यात्म विद्या और सर्व विषय, एक ब्रह्म।

(११) पृ० २११ से पृ० २२७ तक—ग्यारहवाँ अध्याय।

विराट रूप दर्शन।

(१२) पृ० २२८ से पृ० २४९ तक—बारहवाँ अध्याय।

विश्वरूपी परमात्मा, ब्रह्म अक्षर स्वरूपी भगवान की उपासना, सगुण निर्गुण उपासना।

(१३) पृ० २५० से पृ० २७० तक—तेरहवाँ अध्याय।

प्रकृति-पुरुष निरूपण, सृष्ट्युत्पत्ति तथा कारण बीजरूप सांख्य ज्ञानादि वर्णन।

(१४) पृ० २७१ से पृ० २८१ तक—चौदहवाँ अध्याय।

त्रिगुण निर्णय, गुणातीत से गुण साधने का विधान।

(१५) पृ० २८२ से पृ० २९३ तक—पन्द्रहवाँ अध्याय।

अक्षय वृक्ष व वैराट तरु निर्णय, निर्गुण स्वरूप कथन।

(१६) पृ० २९४ से पृ० ३०४ तक सोलहवाँ अध्याय।

दैव तथा आसुरी ज्ञान मार्ग। संत असंत के लक्षण। शास्त्र प्रमाण कार्याकार्य वर्णन।

(१७) पृ० ३०५ से पृ० ३१७ तक—सत्रहवाँ अध्याय।

त्रिगुण की श्रद्धा, दान, यज्ञ, जप-तप, साधन न्याय सत सुमार्ग और अज्ञान अविवेक दोनों का न्याय, त्रिविधि ब्राह्मण और ओंकार विधिन्याय का वर्णन।

(१८) पृ० ३१८ से पृ० ३५२ तक—अठारहवाँ अध्याय।

ज्ञानसार, योग सार, क्रिया सार, कर्म साधन तथा भक्ति सार वर्णन।

No. 462. Bhagavāna ke Daśau Avatāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—अब भगवान रामचन्द्र के दसौ औतार लिख्यते ।

दो०—श्री पति गौरि गनेश को सुमिरत बारम्बार । नारायन के चरित पुनि बरनौ दस औतार ॥ चौ० ॥ मच्छ रूपधरि वेद लै आयो । पाइ विरंचि मुदित मन भायो । बरनन करत जो जस सुष चारो जै राधावर कुंज विहारी ॥ १ ॥ दूसर तन धरि कूरम बनिकै । मथेउ सिंधु कर मंदिर धरि कै ॥ लीन्हेउ चौदह रतन निपारी । जै राधावर कुंज विहारी ॥ २ ॥ शूकर रूप धरेउ बनवारी । दैतन का तुम हतेउ मुरारी । लै धरनी पुनि आपुसवारी जै राधाकुंजविहारी ॥ ३ ॥ नरसिंघ होइ जन राषेउ ताही । परगट भयो हरि षंभा माही । निकसत डारेउ चोदर विदारी ॥ जैराधा वर कुंज विहारी ॥ ४ ॥ श्रीपति बावन रूप बनायो । बलि के द्वारे जांचन आयो । भेटे धन के इव भिषारी जैराधावर कुंज विहारी ॥ ५ ॥

End:—परसु राम होइ जगत जसु कीन्हा । पिर्थवी जीति दुजन का दीन्हा ॥ दूसर कोई न भयो धनुधारी ॥ जै राधावर कुंज विहारी ॥ ६ ॥ रामरूप होइ बहुत जस कीन्हा रावन कुलहि मारि जसु लीन्हा । दीनबन्धु प्रभु असुर संहारी ॥ जै राधावर कुंजविहारी ॥ ७ ॥ पर ब्रह्म औतरे गुसाईं । नन्द सुवनभे कुंवर कन्हाई । जाको ध्यावत ब्रज की नारी जैराधावर कुंज विहारी ॥ ८ ॥ जगन्नाथ जगदीस कहायो । बौध रूपधरि मौन मुजायो ॥ सुरमुनि अस्तुति करत तुम्हारी । जैराधावर कुंज विहारी ॥ ९ ॥

× × × × × × × × ×

प्रात समय जे पढ़ैं नरनारी । घटै पाप तन तेज प्रचारी ॥ जै राधावर कुंज विहारी । × × × × × × × ×

दो० । पढ़ै सुनै चित्त लायकै मन विच सौ करि ध्यान । ताके सकल मनोरथ सिद्ध करैं भगवान ।

Subject:—दस अवतारों का वर्णन ॥

No. 463. Bhajana-Sangraha. Leaves—12. Deposited with Paṇḍita Satyanārāyaṇa Tripaṭhī of Bānḍā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री राम जी ॥

राम को ध्वजा फहरानो अब देखो राम को ध्वजा फहरानो-टेक-
दरकत ढ़ाल फरकत नेजा गरद उड़ी असमाना ॥
लछमन बीर बालि सुत अगंद हनुमान बलवानो ॥ १ ॥
कहत मन्दोदरि सुन पिया रावन त्रिभुवन पति सो ठानो ।
जा सागर को मर्म करत है तापर शिला तिराना ॥ २ ॥

तिरिया जाति बुद्धि की थोछी उनहुं की करति बड़ाई।
ध्रुव मंडल से पकरि मंगाऊं वे तपसी दोऊ भाई ॥ ३ ॥
जरत अग्नि में कूदि परत हैं कोट गिनै नहिं खाई ॥ ४ ॥
मेघ नाद से पुत्र हमारे कुंभ कर्ण बल भाई।
एक बेर सन्मुख ह्वै लड़िहौं युग युग हेत बड़ाई ॥ ५ ॥
कहत मंदोदरि सुनु पिय रावण तू मेरो एक न मानी।
रैनि को स्वप्न ऐसा भयो है सा कि लंक जराई ॥ ६ ॥
अव के स्वामी गढ़ लंका घेरो अजहुं न चेता अभिमानी ॥ ७ ॥

End:—

राम जन्म सुनि अपने पति सों हंसि डाढ़िन यो बोली हो।
जाहु कंत राजा दशरथ को दान कोठरी खोली हो ॥ टेक ॥
तुमको देइं अंग को बागो और दक्षिणा भरि झोली हो।
हमको लीजो नख शिख को गहनो पटरसुआ को चोलो हो ॥ १ ॥
साज सहित इक घोड़ा लीजो गैया दूध अघोई हो।
सहज अमारी हाथी लीजो, हथिनी अधिक अमोली हो ॥ २ ॥
लीजो कन्त कहार समेत इक, हमन चढ़न को डोली हो।
सोलह वर्ष को सुन्दरि लीजो, टहल करन को गोरी हो ॥ ३ ॥
सेज सहित एक पलंगा लीजो, और पानन को डोलो हो।
बीरी करि करि हमहिं खवावै लीजो सुघर तमोली हो ॥ ४ ॥
अन्न जन्म काहू के आगे बहुरिन माड़ो बोलो हो।
जन गोविंद रघुवीर यांचि के भये हैं अयाचक डोलो हो ॥ ५ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक-रावण तुलसी संवाद (अग्र व तुलसी), रामचरण महिमा (तुलसी), जगदीश-विनय (माधोदास), राम का सौन्दर्य वर्णन (रामसेवक), धनुष-भंग (तुलसी), राम की शोभा (हरि आनंद), लंका विजय के पश्चात राम का अवध में आगमन (रामानन्द), विनय-राम (तुलसी), कृष्ण-विनय (चन्द्रसखी), दाऊ की शिकायत माता से (सूर), गीता की महिमा (हृषीकेश), नाम महिमा (नामदेव), राम की भक्तवत्सलता का वर्णन (सेवादास), चौकी हनुमान जी की (बालानन्द)।

(२) पृ० १७ से पृ० २४ तक—कृष्ण का भोजन करना (परमानन्द), युगल मूर्ति भोजन (सेवासखी), सीता राम भोजन (तुलसी) श्याम श्यामा पांशा खेलने का वर्णन (परमानन्द), शयन एवं विलास (नरहरि), विनय (सूर), कपि की चौकी (तुलसी), राम जन्मोत्सव (कमलानन्द), राम जन्मोत्सव में डाढिन का हक मांगना (गोविन्द)।

No. 464. Bharatamilāpa. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa. (The book was found with) Svāmī Pitāmvarādāsa, Village Sonāmaū, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ भरत मिलाप पारंभः ॥ दोहा ॥

सुरस चरन मनि यह , मन मैं बहुत उछाह ।
राम कथा कछु गावैं, जाको गुन ग्रोगाह ॥ १ ॥

चैापाई ॥ रामचंद्र बन को याना , राजा दशरथ बहु पछताना ॥
रामचंद्र छांड़ा स्थाना , दोरे नगर सकल परिवाना ॥
रोवैं सकल नगर नरनारी, राम लछमन विन अधिउजारी ॥
रचि रांच केकई पत्र लिषावा, दूत हाथ नैहार पठाया ॥
जाय दूत भरत के पासा, अवधपुरी कर भयो निरासा ॥
चोव दूत पिदा नव भयेउ, अंतर वास जोजन सत गयेउ ॥
जहां भरत सत्रहन यह गयेउ, जाय दूत दंडवत कयेउ ॥
कहिये दूत अवध कुसलाई, कैसे कैाशिल्या पुरराई ॥
घर घर राज नीति ठकुराई, कैसे राम लछमन दोउ भाई ॥
तिनके पुत्र भये,अनुरागी, विधि का लिये भये बैरागी ॥

End:—चवदह वरप राम नहिं आई, अलकहि लोगन बोध कराई ॥
कैाशिल्या पै गे दोउ भाई, भरथहि देषि कैाशिल्या धाई ॥
सुत निकट परे मूर्छाई । हाथ उठाइ अंक मह लाई ॥
नारि पकरि बहु विधि समझाई । नहि आये लछिमन रघुराई ॥
तब पादुक सिर लीन चढ़ाई । राम लषन सीता दुष पाई ॥
बाद बिचोता सेज बनाई । हमहु रहवपुर बाहर जाई ॥
बन कुस सिज्या परो पुराई । बैस आसन प्रभु मन लाई ॥
आगे पादुका धरि सिर नाई ।................................ ॥
निस दिन पूजन ताको करहीं, अवधि अधार अगोचर रहहीं ॥

दोहा :—भरथ मिलाप कथा, सरदा सों कवि गाई ।
जो नर सुनहि जो गावहि, जन्म जन्म अघ जाई ॥
इति श्री भरत मिलाप संपूर्णम् ।

Subject:—पृष्ठ १ से पृ० २० तक—भरत के पास दूत का जाना, भरत का संदेह, कुशल पूछना, अवध आगमन तथा अत्यन्त विषाद करना, केकई का उपालंभ, कैाशिल्या तथा गुरु इत्यादि का भरत को प्रबोध, भरत का वन में राम के पास जाना, लक्ष्मण का सन्देह, राम का निश्चय, भरत-मिलाप, भरतादि

द्वारा राम को लौटाने का प्रयास, उनका न लौटना और चरण पादुका देकर भरत को राज-काज के लिये अयोध्या लौटाना।

No. 465(a). Bhūgola. Leaves—29. Deposited with Rājā Avadheśasiṁha, Raïsa and Tallukedāra of Kālākānkara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ अथ भूगोल लिख्यते भाषा कथयामि। पहिले आकाश उपजा। आकाश से वायु उत्पन्न हुआ। वायु से तेज भा। तेज से जल भा। जलसे ब्रह्मांड भा। सो ब्रह्मांड ईश्वर की कृपा ते फूटि आधा भा। ब्रह्मांड के मध्य में जल विष व विष्णु उत्पन्न भा। ता परमेश्वर के नाभी कमल में ब्रह्मा उत्पन्न भे। ब्रह्मा ने पृथ्वी को घटन कोन ऊंचाइ ४९ कोटि जोजन को प्रमाण है। ताके मध्य में सुमेर पर्वत है। चौरासी लक्ष योजन ऊंचा ताक सारह हजार जोजन पृथ्वी में जाहिरा॥ बीस हजार जोजन मध्य में चकला। जव का दाना जैसा तैसा मध्य में मोटा। तल्ला भाग पतला सुमेरु पर्व है

× × × × × × × × ×

Middle :—आकाश प्रमाण

औ पद्म अड़तालिश निषर्व चौनहत्तरि अर्बुद सतावन कोठि पैंतालिश लाष पंचावन हजार पांच से जोजन आकाश प्रमाण है।

ग्रह नक्षत्र विचार।

भूमि लोक से त्रिस लक्ष जोजन सूर्य्य लोक। बहत्तरि हजार जोजन विस्तार। सूर्य्य लोक से ऊपर लक्ष जोजन चन्द्र लोक। अठासी हजार जोजन विस्तार। चन्द्र लोक से लक्ष जोजन विस्तार मंगल लोक है। मंगल लोक से एक लक्ष जोजन ऊपर तिरसठ हजार जोजन विस्तार शुक्र लोक है।

× × × × × + × × +

End :—कलजुग व्यवस्था

चार लाख बतिस हजार कलजुग प्रमाण। मानुष्य प्रमाण हस्त ॥ ३ ॥ सूर्य्य पर्व एक हजार। चन्द्र पर्व दु हजार। तीर्थ गंगाजी। देवी चामुंडा ॥ पाप। १८। पुन्य। २। स्त्री प्रर्ह्मचार ॥ २१ ॥ मानुष्यावॅल। १२०। बीज बोवनवार ॥ १ ॥ छिदन। २। धाम चम मह। राजा शालि वाहन। ताके पुत्र। कुमार। ताके पुत्र ईर्यु। ताके पुत्र ब्रह्मा × × × × × × × चारिउ बरन तुरक ठकुराई। छोटी वस्तु महंगी। बड़ी वस्तु सस्ती। धर्म करने वाले दुखी। पापी लोभी लंपट सुखुल इनसो सब सों प्रीति बैसा कलजुग में परमेश्वर की भक्ति युक्त मनुष्यन की बाधा थोर होवे। परिणाम में धर्म सदा सहाय है॥

इति कलजुग वरनन भूगोल संपूर्णम् ॥ मिती चैत्र नवम्यां। रविवासरे।

Subject :—(१) पृ० १ से ५ तक पृथ्वी इत्यादि की उत्पत्ति पृथ्वी के नव खंड सत द्वीप।

(२) पृ० ६ से ९ तक पाताले कूर्म विचार, पृथ्वी का कूर्म, पृथ्वी के आठ पर्वत, चौदह जमी के नाम।

(३) पृ० १० से १५ तक आकाश प्रमाण ग्रह नक्षत्र विचार ईश्वर के ध्यान का निरूपण।

(४) पृ० १६ से पृ० १९ तक वंशावली देश विचार।

(५) पृ० २० से २७ तक सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था।

No. 465(*b*). Bhūgol-Purāṇa. Leaves—7. Deposited with B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purāni-Basti, Katni Murwārā, District Jabbalpur (C. P).

Beginning :—भोगोल पुरान लिषा है॥

तंबदि यदि पेसा एक ब्रह्मांड गोल बरंने॥ ब्रह्मांड विस्न सियया तपो यथा॥ आकास ते वायु उतपंनि बाइ ते तेज उतपंति तेजते॥ ब्रह्मांड फुटि कुट को भये॥ ता जल मधे विष्णु रहे है॥ विष्णु के नाभि कमल के बिषे ब्रह्मा रहे है॥ सो ब्रह्मांड षांट कोष हैं॥ पंचास कोटी जो जन उंचा है॥ सारह सहस्र जो जन धरती मधें गड़ो हैं॥ बीस सहस्र जोजंन उपर बिस्तार हैं॥ सरवा के पलंकार सुमेरु। पर्वतु है॥ ता सुमेर पर्वत को अस्ट श्रृंग हेमा वतो श्रंग नील श्रंग मालि वंतो श्रंग जाम वंती श्रंग॥ नव निधि श्रंग॥ उच्च मान श्रंग॥ महो श्रंग॥ एवं अस्ट श्रंग है॥ पेक पेक श्रंग कितनो अंतर है पेक पेक लक्ष जो जंन आपस मधें कुस्यांमय अंतर है॥

× × × ×

End.—कौन कौन राजा भये॥ राजा सारि वाहन॥ १॥ राजा साक्तिकुमार राजा हरिब्रह्मा॥ ३॥ राजा भाईव॥ ४॥ राजा प्रहस्त॥ ५॥ राजा ईद्र॥ ६॥ राजा अजं जात॥ ७॥ राजा महीपालु॥ ८॥ राजा गंभ्रव सेनि॥ ९॥ राजा बिक्रमाजीत॥ १०॥ राजा महाफलु॥ ११॥ राजा विम्रक॥ १२॥ राजा हरिपु॥ १३॥ राजा बिक्रमा चक्र॥ १४॥ राजाभोज॥ १५॥ ता उपरांत नबर्वतो हती पतसाही कौन कौन॥ गैारीस्यबुदीन॥ १॥ षलाबुदीन॥ २॥ नसीर उदीन॥ ३॥ लोद ठाय मैदे मुद॥ ४॥ बड़ो महमूद॥ ५॥ सुर्स साही॥ ६॥ तिमिर लिंग पात साही॥ ७॥ बबर साही॥ ८॥ हिमाउ साहि॥ ९॥ अकबर साहि॥ १०॥ जहांगीर॥ ११॥ साहि जिहां॥ १२॥ औरंगजेब॥ १३॥ श्री वेद व्यास भाखितं भोगोल पुरान समाप्तं॥ ॥

Subject :—भूगोल का संक्षिप्त वर्णन।

No. 465 (c). Bhūgola Pramāṇa. Leaves—7. Deposited with Thākura Chandrikā Baksa Siṁhaji Jamīdār, Village Khānipura, Post Office Tālāba Baksi, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पृथवी भुगोल प्रमाण लिख्यते । यथा आकाशते वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्न पानी पृथवी अन्न उत्पन्न ब्रह्माण्ड कोटि द्वि खंसु भये तेहि जल मध्ये विष्नु रहत है विष्नु को नाभि कमल मध्य ब्रह्मा उत्पन्न भये सो ब्रह्मा उवाच किये है पचास कोटि योजन पृथ्वी प्रमाण है पृथ्वी मध्ये सुमेरु परवत है चैारासी योजन उच्च है सोरह योजन पृथ्वी मध्य गड़ो है विस सहस्र योजन विंव विस्तार है सेर वाको आकार सुमेरु है ता सुमेरुके अष्ट सृंग हैं कवन कवन शृंग है हेमवंत श्रंग १ नोल श्रंग २ श्वेत श्रंग ३ उच्च श्रंग ४ मालिवंत श्रंग ५ गंध मदन श्रंग ६ महा श्रंग ७ एवं अष्टा गंति पर्वत ऐक ऐक श्रंग कोनना अन्तर है अपना ते ऐक ऐक लक्ष योजन अंतर है ता सुमेर मध्ये पर्वत सुवर्ण मय है आकाश मंदिर है वैदुर्य मणि मुक्ता मय है महा गण गंधर्व पक्ष मुनि परि गत है मालि मान राजा बैठे हैं वैकुंठ महा पुरुष प्रधान पदायक है इति सुमेर विषे श्रंग है ।

End :—एक लक्ष योजन १००००० बृहस्पति लोक है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० बृहस्पति लोक को विंव विस्तार है बृहस्पति मंडल को परि एक लक्ष योजन १००००० बुध मंडल है तीस सहस्र योजन ३०००० बुध मंडल को विंव विस्तार है बुध मंडल परि एक लक्ष योजन १००००० शनि मंडल है अट्ठासी सहस्र योजन ८८००० शनि मंडल को विंव विस्तार है शनि मंडल ऊपर येक लक्ष योजन १००,००० राहु मंडल है अठासी सहस्र योजन ८८००० राहु मंडल को विंव विस्तार है राहु मंडल ऊपर ऐक लक्ष योजन १००००० केतु मंडल है येक सहस्र योजन १००० विंव विस्तार है केतु मंडल को शनि मंडल कृष्न वर्ण है ताते राहु नाहा रूपि परत है केतु मंडल ऊपर ऐक लक्ष योजन १००००० सप्त ऋषिन को मंडल हैं भिन्न भिन्न साते ऐक ऐक लक्ष योजन १,००,००० अपना अपना मां अंतर है तीस सहस्र योजन ३०,००० विंव विस्तार है सप्त ऋषि मंडल को । राम राम कृष्न राम राम कृष्न राम राम ।

Subject :—आकाश, वायु, तेज, पानी आदि की उत्पत्ति, ब्रह्मांड ब्रह्मा, पृथ्वी आदि की उत्पत्ति पृथ्वी में सुमेरु पर्वत और उसके शृंगों के नाम व जंबू वृक्ष आदि का वर्णन, पृथ्वी खंड, द्वीप, सप्त द्वीप प्रमाण, सात समुद्र पृथ्वी के रक्ष पालक, अमरावती का विस्तार, यमपुरी, यम नाम, कुबेर पुरी, कुबेर नाम, सूर्य लोक, चंद्र लोक, नक्षत्र लोक, उनका विस्तार बिम्ब विस्तार, दूरी आदि आदि वर्णित हैं ।

No. 466. Bihārīsatasai-kī-Tīkā. Leaves—150. Deposited with Babū Jayamaṅgalaraya, B.A., L.T., Gajipura City.

Beginning:—सारे जगत के नास करन वारे नगरवन। सो चित्र तो एक॥ अनेक जगे घर सने घोट सम जुरिके इकठे हे। के एक साथ ही वरसनने लगी॥ जब श्री गिरधने गिरको करपे धारन करिके सुरपत जो है इन्द्र ताको गर्व अत्यंत हर्प सैा हरयो ये गिरधरनाव भयो। इहां काकलिंग अलंकार है। काकलिंग सामर्थता। इहां सामर्थता दिखाई॥ १२॥

दोहा। डिगत पांव डिगनात गिर लषि सब व्रिज बेहाल।
कंप किसारी दरसिकै परे लजाने लाल॥ १३॥

इहां सात्युक भाव है श्री राधा जी के दरसतो भयो यह सषी सषो सो कह्यो। पिया दरस सात्विक भयो कर कंपित इह हेत गिरन गिरे ब्रज जन डरत। लषि हरि लाजत चेत। जब निरषी सातुक किया द्रिया अंग के मांहि। तब सुलजाने हरिपरे मति सुयोव लगि जाहि॥

End:—ओर ध्यान को पाय न लषै जो करै लोक सिंघार गीता में यह वचन है यहे अर्थ निर्धार। वारता। यह बात ठीक है राजा प्राक्रम हीन कों दबावे रोग देह वलहीन को दवावे। पाप ध्यान वल हीन कों दवावे ध्याना को नहीं यह दीपका अलंकार है। उपमा अरु उपमेयका इक पद लागे अनने। इत दीपक सो दबाव पद लग्या सवही थल मांनि॥ ६४२॥

दोहा—बड़े न हुजे गुनन विनु विरद बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सैा कनिक गहनो गह्यो न जाय॥ ६४३॥

यह प्रस्ताविक है नालायक को बड़ाई कोई करै सो वृथा इहा कहनो यह भाव को बड़ाई पायकै बड़े नहीं होत। काहू विरद नै बड़ाई करी झूठो तुम येसे येसे ओार गुन को रहे न।

Subject:—श्रृंगार रस वर्णन तथा अलंकार।

बिहारी के दोहों पर अलंकार सहित ब्रज भाषा मिश्रित टीका गद्य में की गई है। किसी किसी दोहे की टीका पद्य में भी है।

No. 467. Charachā-Sphuṭikā. Leaves—41. Deposited with Śrī Jaina Mandira, Kaṭara Medanipura, Post Office Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ महावीर पुरान से चरचा स्फटिक लिख्यते॥
प्रथम कृश्न धरि मर्क अहंत। दूजे नीलहि थावर अंत॥
तीजे कपोत जानि तिर जंच, चैाथे पीत मनुष्य पद संच॥ १॥

पंचम पद्म स्वर्ग गति लहै। षष्टम शुक्ल मय सिवगहै।
षष्ट लेस्या भेद विचार, सुनहु भव्य मिथ्या व निवार ॥ २ ॥
धारत रुद्र न त्यागै कदा, धर्म विवर्जित क्रोधो सदा।
दया रहित परपंचो होइ, लेस्या कृष्ण जासु मन गोय ॥ ३ ॥
मंद बुद्धि परमादी गुणै। निष्ठुर वचन भने बहु घणै।
है परपंचो कामी घोर। लेस्या नील तासु को घोर ॥ ४ ॥
सोक करै घन दुष्ट सुभाव। पर निंदा निज थुति चराव।
इच्छा लुब्ध कु गुरु को सेव। बहु कपोल घनो को भेव ॥ ५ ॥

End :—हस्तपिता उपजै फिर थाय।
वृक्ष रूप क्रम-क्रम चढ़ि जाय॥
जेहि प्रकार कालहि घट जान।
तेहि समान बढ़तो उनमान॥
॥ दोहा ॥
या विधि जिन मुष कमल रुचि,
ज्ञान पियूषहि पीय।
वस्यौ मोह मिथ्यात्व विष,
गौतम चिप सुधीय॥
काल लब्धि को निकट लहि,
भाव संवेग बढ़ाय।
विश्व भोग तन लक्ष्मी,
भयौ विरक्त सुभाव॥
संपूर्ण।

Subject :—जैन धर्म के आचरणों पर उपदेश :—

(१) पृ० १ से पृ० १२ तक— षट लेस्या वर्णन, प्रत्येक लेस्या का लक्षण तथा उदाहरण, भव्याभव्य वर्णन, गुण थान भेद कथन, स्त्री देह में निगोद वर्णन, अनादि मिथ्यात्व कथन, पचीस दूषण वर्णन। मिश्रित गुण थान, व्रत गुण स्थान, अव्रत गुण स्थान, सत्तावन प्रकृति विधि, बारह व्रत कथन, पंच अणोव्रत।

(२) पृ० १२ से पृ० ३७ तक—चार शिक्षा व्रत कथन। द्वादश तप, सामयिक प्रतिमा वर्णन, दश प्रकार सम्यक्त वर्णन। सम्यक्त महात्म्य, मूल गुण वर्णन, श्री महावीर जी के भवांतर वर्णन, त्रयपल्य वर्णन।

(३) पृ० ३८ से पृ० ८२ तक—ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन, प्रतिमाओं के अनुसार उनके धारण करने वालों के पद। पात्रों के अनुसार दान-विधान। सम्यक् दर्शन-कथन। अष्टाङ्ग सम्यक् ज्ञान कथन। त्रयोदश चरित्र कथन,

(श्रावकधर्म) —मुनिधर्म वर्णन, चार प्रकार के ध्यान का वर्णन, उनके भेदोपभेद, तत्त्व निरूपण, अनाहत मंत्र, प्रणव मंत्र, चंद्र रेखा मंत्र, अन्य मंत्र, इत्यादि ध्यान वर्णन। सर्पिणी तथा उत्सर्पिणी कथन। ग्रंथ समाप्ति ॥

No. 468. Chaudaha-Vidhāna. Leaves—9. Dated in Samvat 1892 or A. D. 1835. Deposited with Radhāvallabha, Village Khairābada, Post Office Rajepura, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः अथ चौदह विधान लिख्यते ॥ प्रेम को प्रकाश कैसा आनंद को कंद जैसा। आनंद को कंद कैसो जैसो श्री मदन है ॥ श्री जुको मदन कैसो अमल कमल जैसो कैसो है कमल उदित जैसो मदन है उदित मदन कैसो मोहन सरूप जैसो मोहन सरूप कैसो तुमको कदन है ताको कदन कैसो सोभै सुधाधरि जैसो सुधाधरि कैसो जैसे प्यारी को बदन है ॥ १ ॥ द्वै विधान ॥ सख्या सत्य मान जैसो पुन्य पाप जान तैसे संत को असंत जैसे धनी निधन सौं। उदो और अस्त देषि गुनी निरगुनी रूप ज्यौं विशेषहु सो भेष खोदौं नाना मन सौं ॥ सुभौ सुभ सुष दुष अमल ज्यों ज्यों कलुष सनमुष त्यौं विमुष सो है प्रद्युम्न सो ॥ सीतल तपत गाडी मिलन बिछोह छाडि देसदो दिखावै मिहीं साधा भूत मनसौं ॥ तृतीय विधान ॥ अति रस रसे प्रिया प्रीतम विलोकि थल जल चले न्यारे न्यारे करै देषि भगनी ॥ चकवाक जल तीर सुषद सरीर चौर निसाकर कांत छुटै कोने पोर नगनी मोन जल करै केल अमृत अधिक मेल पंछी विहार सब हारे दुष दगनी ॥ चंद्रमा चकोर दुहु पोर फोर डारै मोर मन मोर चातक की खोदो नाथ ठगनी ॥ ३ ॥

End :—द्वादस विधान। बांह, वन, सम, भौर, कुह, मषतूल, चोर, छांह, कांदि, पुंछ मोर, काजर, अमन जल, कारे, भारे, मद, मत्त, रैन, भौने, मैन, श्रांत, मूद, निरदोष, ससि, प्रसूति, कलित कल, विपी घटा, पुंज, गुंज, सर, वर, डर, कुआ, सुमिल, भुवन भुज, नौ रविके मंडल, फनी, वन, निस, पहु, नभ, तार, स्याम, अच्छ सर, दोह, सुच, स्वच्छ, लाई कांचियल। अंतिय दस विधान ॥ मृग, मोन, हय, नट, कंज, अलि, यान, भट, मांह, दोप, उडिचढ, पंजन, चकोर हैं ॥ सिंधु, बन, दच, मधु, मृद, मत्त, सिंह, चंद, चित, चोर हैं ॥ मोत, चीत, सिंधु, वन, पुंडे, स्याम, पंप रत, विषो, जोत, नभगंत, चाहै चहुंओर हैं ॥ थल, केल, रित, रस, रांव, मीन, मधु, अलि, कुल, नेह, तेज, फंसि, नेही, मीन जोर हैं ॥ चतुर दस विधान ॥ चक तूंबा, ठान, गिर, कुंभ, नारियल, लड्डू, मठ, गुच्छा, गेंद, भव, कंज, तपो है। सर, बोनो, हम, हर, सुधा, गज, पक बर, चित्र, चपा, काम, स्वभ, राव, ध्यान, अपो है ॥ निस रूप, सिंत, पक्ष,

भरे, मोती, लता, चक्र, रति, मधु, केल, विष, लक्ष, स्वता, पयी, हैं ॥ सिन्धु, प्रेम, पुष्प, सुंग, अग्य, मत्त, रस, रत्त मोह, मंध गोल, भाग, मूढ़े, सिद्धि, भयो हैं ॥

१४ विधान संज्ञा संपूर्ण समाप्तः सम्वत १८९२ वि० ॥

Subject :—रस यादि कवित्त पृथक पृथक वर्णन ॥

No. 469. Chitrakūta Mahātma. Leaves—10. Deposited with Mahanta Mohanadāsa, (the book was found with) Bābā Pītāmvaradāsa, Village Saunāmaū, Post Office Pariyāvā, District Prātāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशाय नमः ।

दोहा :—प्रथम गुरुन के चरन रज , वंदौं बारहि बार ।
जा सुमिरे प्रभु पाइये , उतरौ नर भव पार ॥ १ ॥
चरन सरन गुरु देव के , जब लगि पायो नाहि ।
मवनि विपिनि निज माधुरी , क्यों परसै मन माहि ॥ २ ॥
चित्र कूट गुन कहन को , कोनौ मन उछाह ।
जनक नंदनी कृपा बिनु , कैसे होइ निबाह ॥ ३ ॥
एक आशा बिश्वास नहि , करनि कथा मति मोरि ।
चित्र कूट निज धाम को , काहु न पायो छोर ॥ ४ ॥
महा अगम दुर्लभ कठिन , चित्र कूट निज भौन ।
जनक नंदनी कृपा बिनु , कहि धौं पावै कौन ॥ ५ ॥
सब प्रकार गुन हीन हौं , यहै सोच मन मोहि ।
जनक नंदनी कृपा बिनु , जो कछु होइ सो होइ ॥ ६ ॥

End :—प्रगट भई जिहि ठौर तें , गुप्त गोदावरि गंग ।
मानौं गिरि तनु धारिकै , बैठा धारि अनंग ॥ १०० ॥
गंगा मज्जन करत जे , ते बड़भागी लोग ।
बन के बासो संत जे , हैं सब दरसन जोग ॥ १ ॥
माथे तिलक बिराजही , गर तुलसी की माल ।
राम चरन में रति रहै , धरै न दूजे ख्याल ॥ २ ॥
पंगु चहत गिरि पर चढ्यो , कैसे पावहु पार ।
कृपा होइ रघुवीर की , सहजहि चढ़ै पहार ॥ ३ ॥
जो गावै सोवै सुनै , चित्र कूट सु विलास ।
राम कृपा ता संत को , रघुवर पुजवै आस ॥ ४ ॥

इति श्री चित्रकूट महात्म्य संपूर्ण शुभ मस्तु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मंगलाचरण, चित्रकूट की महत्ता तथा फल, उसकी प्राप्ति के उपाय, जनकनंदिनी के चरणों की महत्ता, कवि का दैन्य आदि। (२) पृ० ४ से पृ० १६ तक—चित्रकूट की विशदता का वर्णन उसके वन सरितादि की शोभा, चित्रकूट-स्थित राम के आवास का वर्णन। चित्रकूट के वन का तप के लिये उपयुक्त होने तथा भक्ति करने का फल। (३) पृ० १७ से पृ० १९ तक—संसार की निस्सारता तथा उसके परित्याग का कथन, भक्ति महात्म्य, चित्रकूट की भक्ति का कथन, चित्रकूट महात्म्य के पठन-पाठन का फल।

No. 470. Dānalīlā Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Sarmā, Paṇḍita-ka-Puravā, Mauja Bhadhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ दान लीला लिख्यते ॥ दोहा ॥

एक समय श्री राधिका, सब मिलि कीन्ह विचार।
हिल मिल चलिये जमुन तट, हरि संग करहिं विहार ॥
दही मटुकिया सीस पै, चली सकल ब्रज बाल ॥
जब देखिहैं यह वेष सो, तब छेरिहैं नंदलाल ॥
पंथ हमारो रोकि कै, हंसि के कहैं मुरारि।
हाथ लकुट द्वादश तिलक, महिमा अमित अपार ॥
जब कहि है मन हरष युत, दान देहु ब्रज नारि।
तब हम हरि सों भगरि हैं, बातन विविध प्रकार ॥

End :—

अहन नयन हुइ गये, सुनत उपजो रिस भारो।
तनक दही के काज हास, तुम करत हमारो ॥

सुनहु सखा देषत कहा, दधि लूटहु बरजोरि।
सीस मटुकिया फोरि कै जू लेहु हार उर तोरि॥
ऐसो को जग माहि हार छुइ सकै हमारो।
दही मटुकिया फेरि कितै फिरि बचै बिचारो ॥
सो मन अपने समुझि के, छोड़हु गैल हमारि।
मोहन सासु रिसाई है। जो घर मैं देव बताई ॥
इति श्री दान लीला समाप्त शुभम् ॥

Subject :—कृष्ण दानलीला वर्णन।

No. 471. Dasa-Avatāra. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kaudhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—प्रथमै लीन्ह मीन अवतारा।
उधर्यो पै इह संषा सुर मारा॥
सुक सारद नारद उठि धाय।
ब्रह्मा वेद चारि मुख गाय।
दुसरे कमल रूप अवतारा।
जागथ वान प्रभु कोटिक मारा॥
सहस मुष सय हरि गुन गाइ।
पुरंदर पुर में झरसा धाये॥ २॥
End :—नवरें बद्ध रूप अवतारा।
परसोत्तम पुर मैं जै जै कारा॥
असिला मा मगहा सुर मारा।
जैन पन्थ के कीन्ह उधारा॥ ९॥
दसयें अकलंक अवतारा।
गहा सँभारि जहं जै जै कारा॥
प्रजा विनासी सगहौ मारा॥
भरथ षंड के भार उतारा॥ १०॥
दस अवतार को आरतो गैये।
सुर भक्त प्रेम फल पैये॥
सात सुकुन परविंद बनाये।
इति श्री दसै अवतार संपूरन॥
Subject :—दश अवतार बर्णन।

No. 472. (*a*). Dharma-Saṁvāda. Leaves—32. Dated in Saṁvat 1901 or A. D. 1844. Deposited with Vaidya Rāmabhūshaṇa, Village Kāmatāpūra, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning :—ओं श्रीगणेशायनमः॥ अथ धर्म संवाद लिखते॥ ओं-द्वापर विषे कथा होत भई नगर हस्तिनापुर दिल्ली के निकट ता विषे गुरा कोल पूछत भई। घेर राजा जनमेजय राजा परीक्षितदा बेटा पांडव दा पोता॥ हे वैशम्पायन जी॥ राजा धर्म और पुत्र युधिष्ठिर इसका मिलाप क्यों कर होइ है॥ सो तुम कृपा करके कहौ॥ वैशम्पायनवाच॥ राजा का वचन सुनकर श्री व्यास देव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहता भया॥ हे राजा तू सुन एक समय जु है देवता अरु इन्द्र अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु जमना जी अरु गंधर्व अरु वन स्थली सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति

भई थाई । नारद जो तुडे विषो ताइ करके नमस्कार करते भांया ॥ यह बचन करबोलागो ॥ नारदेर वाच ॥ नारद जी कहते हैं जुदेवता के बोच शंकर जो का नाम है यह ब्रह्मा विस्नु महादेव है तैा मृत्यु लोक विपे राजा युधिष्ठिर है । धर्म धर्म का पुत्र है जिसके भलोक विपे कोरति गावती है ॥ सो ऐसा राजा न कोई हुवा है चैार न चागे होइगा ॥

End :—चतोतो वाच । हेराजा जो मै सति कहिया है मेरे ताई दोष नाहीं देना ॥ मेरे ताई दोष नाहीं देना ॥ असाढ़ मैं कातिक मैं सावन मे वैसाख मैं असनान दान करै हे राजा जो पंचो है ॥ जुधिष्ठिरोवाच ॥ हे चतोत तू जो है सो मेरा देह है मै जहां सों चावे जाण ॥ मेरा जो गुन था गइया पर मैं सुफला होइया ॥ तेरा दरसन करके ॥ यह तो चतिथ देव है तेरा चंडाल का रुप मेरे घर विपे चाइया है हे चतोत इकेता तू इंद्र है इकता ब्रह्मा है चथवा विस्नु है तू जो है चाडाल का रुप धार करे मेरा पिता चाया है ॥ धरमो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सबना शास्त्र व जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता हैं यह तू पुत्र है हे राजा तू सति जानु हे राजा तू साधु है तेरा जन्म धन है तेरा वंस धन है तेरा कुल धन है तेरा जस मैं सुणिया सो स्वर्ग विपे तैं तेरा दरसन करने तेरे घर विपे चाया हैं ॥ जिस चर्थ जोग पुन करदा है सो देवता तेरे घर विपे चाया हैं ॥ जुधिष्ठिरोवाच ॥ चाजु मेरा जन्म सुफल है चाजु मेरी तपस्या सुफल है चाज मेरा जन्म भो धन है तेरा दरसन कोता है मै पाप ते मुक्ति होइया हे चार जिन्ने लोभ कर्म है तिना ते मुक्ति होइया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे राजा जी तेरी चाग्यल बहुत होवै । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ हे संवाद करके यह राजा धर्म देव-लोक विपे प्रापति भया धर्म करके सत्रु भो दूर होता है ॥ धर्म करके ग्रह भो दूर हो जाता है जिथ्थे धर्म उथ्थे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपुर्ण शुभम मिती चैत्र सुदी तेरस संवत १९०१ विक्रमी जै राम राम राम राम राम राम राम राम ॥ वि०

Subject :—नारद वैशंपायन का संवाद, धर्मराज युधिष्ठिर की महिमा का वर्णन ॥ ॥

No. 472 (*b*). Dharmasambāda. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A. D. 1710. Deposited with Paṇḍitā Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ चथै धर्म संवाद लिख्यते ॥ द्वापर विपे कथा होती भई नगर जो है हस्तिनापुर दोनों के पास ते विपे शुभ काल

पूछता भई। ॐ राजा जन्मेजय राजा परीक्षित का बेटा पांडवा का पैाता है वैशंपायन जी । राजा धर्म अरु पुत्र युधिष्टिर इसका मिलाप क्यों कर होइ है सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच । राजा का वचन सुनि कर श्री व्यासदेव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कहत भया कथा । हे राजा तू सुन ॥ एक समै जु है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु शिव अरु विस्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु गंधर्व अरु बनस्पती ई सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति भई था ॥ नारदा जी जु है रिषी जाइ करिके नमस्कार करते भइया ॥ अरु बचन करने लागे ॥ नारदो वाच ॥ नारद जी कहते हैं जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है अरु ब्रह्मा विस्नु महादेव है तैा मृत्युलोक विषे राजा युधिष्टिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका त्रिलोक विषे कीरत गावती है सो ऐसा राजा ना कोइ होइहा श्रार न होइगा ॥

End :—युधिष्टिरा वाच ॥ हे अतीत तू जो है मेरा देह है मै जहां सो आवैगा नि ॥ मेरा जोम सुफल भइया ॥ दे मैं सुफला होइया ॥ तेरा दरसन करके अरु ताे अतिथ देव है तेरा चंडाल का रुप मेरे घर विषे आइया हो हे अतीत इकेता तू इंद्र है इकेता तू ब्रह्मा है अथवा विस्नु है जो तू है चंडाल का रुप धार कर मेरा पिता आया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है सब ना शास्त्र तू जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता हैं अरु तू पुत्र है हे राजा तू सति ज्ञान है राजा तू साध है तेरा जन्म धन्य है तेरा बंस धन्य है तेरा कुल धन्य है तेरा जस मैं सुणिया थी सो स्वर्ग विषे मैं तेरा दरसन करने तेरे घर विषे आया हो जिस अर्थ जोग पुन्य करदा है सो देवता तेरे घर विषे आया है। युधिष्टिरा वाच ॥ आज मेरा जन्म सुफल है आज मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरसन कीना है मै आप ते मुक्ति होइया श्रार जितने लोभ कर्म हैं तिना से मुक्ति होइया है ॥ धर्मोवाच ॥ हे राजा जो तेरी आरबल बहुत होवै । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव हुइ है । संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापति भया ॥ धर्म करके सत्रु भी दूर होता है जिथ्थे धर्म उथ्थे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णम् शुभ मस्तु लिषतं बनवारी लाल पाठक पैतेपुर निवासी संवत् १७६७ वि० ॥ राम राम राम राम राम राम राम ॥ श्री शंकर की जैय होय ॥

Subject :—महाराज युधिष्ठिर श्रार धर्म का संवाद ॥

No. 472(*c*). Dharmasamvāda. Leaves—30. Dated in Samvat 1772 or A. D. 1715. Deposited with Rāyalāla, Village Ramuāpura, Post Office Dhauraharā, District Kheri (Oudh)

Beginning :—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिख्यते श्री द्वारा-पुर विषै कथा होत भई ॥ नगर जो है हस्तिनापुर दिल्ली के पास ता विषै एक समय पूछता भई । ये राजा जनमेजय राजा परीक्षत का बेटा पांडवों दा पौत्रा हे वैशंपायन जी राजा धर्म अरु पुत्र जुधिष्टिर इनका मिलाप क्यों कर होइ है ॥ सो तुम कृपा करके कहो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्री व्यासदेव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन । एक समय जो है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा एक शिष्य अरु विष्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी अरु जमुना जी अरु गंधर्व अरु वनस्पती ई सब एकत्र बैठे थे तहां आय प्रापति भई श्री नारद जी जो है रिषी आइ करके नमस्कार करते भये अरु वचन करने लागो । नारदोवाच ॥ नारद जी कहते हैं जो देवता के बीच शंकर जी का नाम है अरु ब्रह्मा विष्नु महादेव है तो मृत्यु लोक विषै राजा जुधिष्टिर है धर्म धर्म का पुत्र है जिसका त्रैलोक विषै कीरत गावतो है सो ऐसा राजा न कोई हुआ है न कोई होवेगा ॥

End :—युधिष्टिरो वाच । हे अतीत तू जो है सो मेरा देह है मैं जु हौं सो आवे जाग्नि ॥ मेरा जो गर्व था गया । पर मैं सुफल होइया तेरा दरसन करके अरु तो अतिथ देव है तेरा चंडाल का रूप है मेरे घर विषै आया है हे अतीत इकेला तू इंद्र है इकेला ब्रह्मा है अथवा विष्नु है तू जो है चंडाल का रूप धार करे मेरा पिता आया है ॥ धर्मोवाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है सब ना शास्त्र जानने वाला है हे राजा मैं तेरा पिता अरु तू पुत्र है हे राजा तू सत जान हे राजा तू साध है तेरा जन्म धन है तेरा धंस धन्न है तेरा कुल धन्न है तेरा जस मैं सुनि था सो स्वर्ग विषै मैं तेरा दरशन करने तेरे घर विषै आया हौं ॥ जिन अर्थे आज यत्न कर रहा है सो देवता तेरे घर विषै आया है जुधिष्टरो-वाच ॥ आज मेरा जन्म सुफल है आज मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धन है तेरा दरशन कीता है मैं पाप ते मुक्त हुआ हूं और जितने लोक कम हैं तिनाते मुक्त हुआ है । धर्मोवाच ॥ हे राजा जो तेरी आरबल बहुत होवै है पांडव पुत्र तू चिरंजीव हुइ है ॥ संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषै जाइ प्रापति भया । धर्म करके सत्र भी दूर होता है धर्म करके अद भी दूर होता है जिथे धर्म उथे दया है ॥ इति श्री धर्म संवाद संपूर्णम् फाल्गुन मास शुक्ल पक्षे द्वादस्याम संवत १८७२ वि० ॥

Subject :—महाराज जुधिष्टिर और धर्म का संवाद ॥

No. 472(d). Dharmasaṁvāda. Leaves—30. Deposited with Mannilāla Gaṅgāputra Tivārī, Village Misarikhā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद लिख्यते ॥ जे द्वापुर विषे कथा होत भई । नगर जु है हस्तिना पुर दिल्ली के पास ति विषे गुरु कोल पूछत भई । जो राजा जनमेजय राजा परीछित दा बेटा ॥ पांडवा दा पोत्रा ॥ हे वैशंपायन जो राजा धर्म अरु पुत्र जुधिष्टिर इस को मिलाप क्यों कर होते है ॥ सो तुम कृपा करके कहु ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वचन सुनि करि श्री व्यास देव जी का शिष्य जु है वैशंपायन सो कथा कहत भया ॥ हे राजा तू सुन ॥ एक समै जु है देवता अरु इंद्र अरु मुनीश्वर अरु ब्रह्मा अरु रिष्य अरु विस्नु अरु सूरज अरु चंद्रमा अरु विनायक अरु सरस्वती अरु गंगा जी ॥ अरु जमुना जी ॥ अरु गंधर्व , अरु बनस्पती ॥ ए सब एकत्र बैठे थे तहां जाइ प्रापति भईआ ॥ नारद जी जु है रिषी । जाइ करके नमस्कार करते भइआ ॥ अरु वचन करने लागी । नारदो वाच ॥ नारद जी कहते है जु देवता के बीच शंकर जी का नाम है । अरु ब्रह्मा विस्नु महादेव है तो मर्त्य लोक विषे राजा जुधिष्टिर है । धर्म धर्म का पुत्र है । जिसका त्रिलोक विषे कीरति गावती है । सो ऐसा राजा न कोई आगे होइआ है । न कोई होवेगा । कैसा है राजा जुधिष्टर । सत्यवादी है ।

End :—जुधिष्टिर वाच ॥ हे अतीत तू जो है सो मेरा देह है मै जहां सो पावै आखि । मेरा जो सुख था गइआ ॥ पर मै सुफला होइआ तेरा दरसन करके ॥ अरु तो अतिथ देव है ॥ तेरा चंडाल का रूप मेरे घर विषे आइआ है । हे अतीत इकेला तूं इंद्र है ॥ इकेला ब्रह्मा है अथवा विस्नु है । तू जो है चंडाल का रूप धार कर मेरा पिता आया है ॥ धर्मो वाच ॥ हे पुत्र नाम धन है धन है ॥ सगला शास्त्र तू जानने वाला है । हे राजा मै तेरा पिता हूं अरु तू पुत्र है । हे राजा तू सत जान । हे राजा तू साध है तेरा जन्म धन है । तेरा बंस धन है । तेरा कुल धन है तेरा राज सभै सुखिया सो स्वरग विषे मै तेरा दरसन करने तेरे घर विषे आया हूं । जिस अर्थ जोग तप करता है सो देवता तेरे घर विषे आया है ॥ जुधिष्टिरोवाच । आज तेरा जन्म सुफल है । आज तेरी तपस्या सुफल है । आज तेरा जन्म भी धन है । तेरा दरसन कीता है । मै पाप ते मुक्त होइआ ॥ और जितने लोग कर्म है । तिना ते मुक्ति होइआ । धर्मो वाच ॥ हे राजा जो तेरी आरबल बहुत होवे । हे पांडव पुत्र तू चिरंजीव होइ है । संवाद करके अरु राजा धर्म देव लोक विषे जाइ प्रापित भया । धर्म करके सत्रु भी दूर होता है ॥ धर्म करके ग्रह भी दूर होता है । जिवे धर्म उच दया । इति

Subject :—धर्म उपदेश ।

No. 472(c). Dharmasaṁvāda. Leaves—21. Dated in Saṁvat 1897 or A. D. 1840. Deposited with Ṭhākura Vijayaba-

hādura Siṁha of Saitāpura, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धर्म संवाद कथा मध्यदेश भाषा टीका लिख्यते ॥ जन्मेजय उवाच ॥ जन्मे जय नामा राजा वैशम्पायन ऋषि के पास पूछते थे द्वापर युग विषे उत्पन्न हुवे हस्तिनापुर विषे महा बलवंत जन्मेजाय नामा गुरु वैशम्पायन ऋषि के पास पूछते थे ॥ १ ॥

जन्मेजय उवाच ॥ द्वापरे च समुत्पन्नै नगरे हस्तिनापुरे । गुरुं पृच्छौ राजा जन्मे जयो महाबलः ॥ १ ॥ कथं विना गुरुयेण धर्म राजा युधिष्ठिरः एव सर्वे प्रकारेण कथमस्व महामुने ॥ २ ॥

धर्म रूपेण दिनादेह रूप विना ॥ धर्मराजा जो है युधिष्ठिर ते किस तरह से पूछते थे सर्व प्रकार सें हे महामुने मेरे वैशंपायन ऋषि विस्तार पूर्वक मेरे पास कहो ॥

॥ २ ॥

End:—देवलोको गतोधर्मं पांडवाश्चिरजि विनः
धर्मेण हन्यते व्याधिदर्मेण हन्यते ग्रहः ॥ ११८ ॥
धर्मेण हन्यते शत्रु यतोधर्मस्ततो जयः
यः पठेद्धर्म संवादं श्रणुयाद्वा समाहितः ॥
सर्वे पाप विनि मुक्तः परमं समाप्नुयात ॥ ११९ ॥

धर्मराज देव लोके गयाः स्वर्ग लोक को जाते थे पांडव चिरजीव होइ धर्म से पद प्राप्त होवे धर्म सेः शत्रु नस होति है जहां धर्म होता है तहां जय होता है जो मनुष्य धर्म संवाद का पाठ करता है सो मनुष्य जो मनुष्य सुनता है सर्व पाप विनिर्मुक्तो सर्व पाप से मुक्त होइ के परम पद को प्राप्त होता है ॥ मनमें निश्चय करके कथा को श्रवण करैं संपूर्ण तद फल होता है ॥

इति धर्म संवाद सत्य तिलकं कथायाः भाषा टीका समाप्ताः संवत् १८९७ शाके १७६२ चैत्रमासे षष्ठायां तिथौ गुरुवासरे प्रथम प्रहरे द्वादमारे चतुर्थ प्रहरे लिषितं शुभम् समा समा समा समाप्त.म् समाप्तम् । * *

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक— प्रस्तावना, धर्म का चांडाल रूप धारण करना । हस्तिनापुर जाना व चांडाल और भीम संवाद, चांडाल शब्द की व्याख्या, भीम का पाशबद्धान्वित होकर युधिष्ठिर को संवाद देना ।

(२) पृ० १९ से पृ० २६ तक— युधिष्ठिर के सन्मुख चांडाल द्वारा पुनः चांडाल शब्द की व्याख्या और जीवन का मूल तत्व समझाना ।

(३) पृ० २६ से पृ० ४२ तक—धर्म की व्याख्या और महत्तादि का वर्णन।

No. 473. Dohāsāra. Leaves—21. Dated in Samvat 1913 or A.D. 1856. Deposited with Bābū Sudarsánasiṁha Raīsa and Tālukedāra of Sujākhara, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

श्री गणेशायनमः ॥ अथ दोहा सर ॥

Beginning:— ॥ दोहा ॥

नयन निकट कज्जल बसै, पै दरपन दरसाय।
त्यों साधुन सत संग बिनु, नाहिन और उपाय ॥ १ ॥
सबहीं घट में राम है, ज्यों गिरि सुत मे ज्योति।
ज्ञान गुरु चकमक बिना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥
है हिय में पैयत नहीं, करियत बहुत उपाइ।
जैसे अपनी देह को, छांह गही नहि जाइ ॥ ३ ॥
करि घूंघट जग मोहई, बहुतक लाय लोग।
दरसन जिन्हे देषाइयो, जेते दरसन जोग ॥ ४ ॥
अलप एक बहुवेष धरि, घट घट रह्यो समाइ।
सायनि प्रगट्यो अधिक अति, ताते लष्यो न जाइ ॥ ५ ॥
घट घट में राधारमन, यामे नहीं विवेक।
जैसो फूटी आरसी, षंड षंड मुष एक ॥ ६ ॥
जब सूझ्यो तब बंध ते, जब बंधे तब सूझ।
इतके भये न उत्त के, बाव सुम को बूझ ॥ ७ ॥
रामैं नाम को लेस नहि, रह्यो विषय लपटाइ।
घास चरै पसु आप मुष, गुर गुलियांये पाइ ॥ ८ ॥

End:—घरी बजै घरियार की, तू कछु समु भयो चित्त।
आयु घटै जोवन घसै, यह समुझावै मित्त ॥
बहुत घटो थोरी रही, ताही मांझ घटाइ।
याको इतनी पर कहा, को काहू के जाइ ॥
हम परदेसी पाहुने, दिन दिन थोरे गांव।
अर मुझु जानै आपुनो, हू है कोने ठांव ॥
कहि काहू कैसो बने, काल धरा सिर केस।
ना जानो कब मारि है, का घर का परदेस ॥

दाम संचि लौ लछिमी, इद्दौ चलितौ राज।
मूसन जौ जिय मरन है, तौ धकौ नहि काज॥
क्यों घूटें इहि लाज परि, कित कुरङ्ग अकुलाइ।
ज्यों ज्यों सुरभि मगौ चहै, यों त्यों उरझति जाइ॥
जुमला गुड़ी उड़ावतो, मनको करतो डोरि॥
धाई लहरि जु प्रेम को, चित जमला कित डोरि॥

इति दोहासार समाप्तम् शुभ मस्तु दशषत् गोपाल लाल कायस्थ संमत् १९१३ सन् १२६३॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—शान्ति सम्बन्धी दोहे। (तुलसीदास जी के बनाये हुए)। सान्धि-भाव, जेष्ठा। लगन। नेत्र। प्रेम लगन भाव। बिहारी रहीम, महमद कुतुब, रसलीन, कबीर, जानिल, तुलाराम, संमन आदि कवियों की कविताएं।

(२) पृ० ९ से पृ० ४० तक—अङ्ग भाव (कटि) रोमावली, कुच, अलक, तिलक, संग भाव, नख भाव, दूती के वचन नायिका से सखी वचन नायिका के प्रति, रसतर्क भाव, नायिका भाव, नैन विरह भाव, साधारण विरह भाव, मिलन भाव, मन प्रकृति भाव, सज्जन एवं दुर्जन भाव, शठ भाव, कपट भाव, शिक्षा भाव, ज्ञान भाव, प्रस्ताव भाव, स्फुट भाव, मन शिकार भाव, हास्य भाव, चातक, चकोर, भ्रमर, पतङ्ग, चन्द्रोदय, मन विश्वास एवं गूढ़ भाव।

(३) पृ० ४० से पृ० ४२ तक—चौबोला भाव, विरोध भाव, वैराग्य भाव।

No. 474. Drashṭāntasāra-ke-doha. Leaves—12. Dated in Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Paṇḍita Lakshmīkānta Kothīval of Basu āpura, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री गनेसायनमः॥ अथ दृष्टान्त सार के दोहा लिख्यते॥

जो जाको प्रति प्रिय लगै। सो तिहि करतु वषान।
जैसे विष कौ विषमयो। मानत अमृत समान॥ १॥
कहा होत उद्यम किये। जो प्रभु नहि अनुकूल।
जैसे निपजे खेत को। सलभ करत निर्मूल॥ २॥
जाहो ते कछु पाइयत। ताको करियत आस।
पाली सरवर पर भये। कैसे मिटत पियास॥ ३॥
जो जाको होइ के रहै। सो तिहि पुरवत आस।
स्वात बुंद बिनु सकल घन। चात्रक मरत पियास॥ ४॥

रस अनरस समुझै नहीं। पढ़ै प्रेम को गाथ।
बिच्छू मंत्र न जानहीं। सर्पहि डारत हाथ॥ ५ ॥

End:—जहां बसै गुनवंत नर। तासों सोभा होति।
जहां धरै दीपकु तहां। निश्चय करै उद्दोति ॥१०४॥
भले बुरे को एक सो। मूढ़न के परतीत।
गुंजा सम तोलत कनक। तुला पला को रीति ॥१०५॥
सेवक साहिब के बढ़ैं। बढ़ै बढ़ाई चोज।
जेता ऊंचे जल बढ़ै। तेता बढ़ै सरोज ॥१०६॥
धनी होत निरधन कहूं। निरधन तैं धनवान।
बड़ी होति निसि सिसिर रितु। ज्यौं ग्रोषम दिनमान ॥१०७॥
जहां सनेही सो रहत। भ्रमत भ्रमत मनु पाइ।
फिरत कटोरी मंत्र की। चोर हिये ठहराइ ॥१०८॥

इति श्री दृष्टान्त सार के दोहरा संपूर्न ॥ फागुन सुदी ५ संवत् १८९१ ॥
॥ मुकाम इन्दरगढ़ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २४ तक—दृष्टान्त संबंधी १०८ दोहों का संग्रह ॥

No. 475. Dvādaśa Rāśi Vichāra. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्रीमते रामानुजाय नमः अथ बृहस्पति कोंव द्वादश रासि को बिचार। मेषरासि गुरु आता ॥ पारवती पूछे महादेव कहै ॥ सनै को लछन मेष रासि गुरु ॥ वर्षा होइगी दिन ४९ ॥ असाढ़ दिन ११ ॥ श्रावन दिन १८ ॥ भाद्र दिन १२ ॥ अस्वन दिन ५५ कातिक ३ एन वर्षा उचिते माघ चिकि होइगी दिन ३५ अवन महंगे होइगे बैसाख जेष्ठ असाढ़ श्रावण भाद्रपद अस्वनी का कार्तिक चना दाम ५ पसेरो होम दाम—५ पैतालिस दाम ५ पसेरी जाड़ रही १६ दाम ५ पसेरो इति मेष रासि गुरु लक्षण समाप्तं। अथ वष रासि गुरु लक्षणमाह यदि पूछे पार्वती कहै महादेव कहै समै के लछन बरखा होइगी दिन ६३ आसाढ़ दिन ५ श्रावन दिन २५ भादों दिन १५ अस्वनदिन ८ कातिक दिन ३ पैाखदिन ४ एवं बरखा उच्यते ॥ समै मालव के देसा होइगे असोहनो होगा बाखनु महना होइगा अस्वन मो बिको होइगी मजीठ टंक ३ तोनि पसेरो होइगी कपास सेतिस धाम ३१ पसेरी मजमस टंक ३ मज होइगी हरदी टंक ३ अपसरे होंग घोर बस्तु सरवस्त होइगी।

End:—अथ कुंभ रासि गुरु उच्यते। यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै को लछनु बरखा होइगी दिन ५५ आसाढ़ दिन ९ श्रावन दिन २५ भादंदिन ५

आस्वन दिन ५ कार्तिक दिन ५ पुष दिन ३ यंनु सहतो होइगो गेहू दाम १५ पसेरी १५ टेलु टंक सेर। कांसा तांबो सस्ता होइगो सोना मासा १ गजो टंक एकइ होयगो इति कुंभराशि गुरुमाह। अथ मीन राशि गुरु उच्यते यदि पूछति पारवती कहै महादेव समै को लक्षनु बरखा होइगो दिन ४१ आसाढ़ दिन १० श्रावन दिन २५ भाद्र दिन २ आस्वन दिन ३ कार्तिक दिन ५ पुष दिन १५ इति बरखा। खंड खंड के लोग डोलेंगे उत्तर देस नरपति परेंगे मन सासतु छाड़ेंगे। बहुत लोग सन्तुष्ठ हैंगे। अनको दुकाल होइगो। उत्तर देस परजा गिरहिगे मीन मै हनुमन नाटक को मतो कहतु है। तेहि ते सुख देखतहो बनै कहूं देखन होइ न सुना होइ।

इति वृहस्पति कांड समाप्तं ॥ १२ ॥

श्रीमते रामानुजायनमः

No. 476. Ekādaśī Mahāphala. Leaves—12. Deposited with Lāla Gajādhara Prasāda, Village Kuraḍihā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री स्याम चरन दास जो सहाय ॥

श्री गुरु गनेश जो को सिर नाऊं। तो इकादशी चरित सुनाऊं ॥
सावधान ह्वै सुनियो भाई। कहै सुनै जो मुक्ति दिवाई ॥
रुकमांगद राज प्रघटाई। ऐसो ग्यास जगत मैं पाई ॥
सूरज बंशी राजा भयो। मनों धर्म फल ऊपर छायो ॥
पंचा नगरो तासु दुहाई। घटा घीर हर पर्म सुहाई ॥
सुषी लोग सब दीपे आमैं। दुष दालिद्र यावैं नहिं आमैं ॥
परजा सुषी धर्म सब करैं। आनंद मंगल सबदिन सरैं ॥
एक समय बसंत रितु आई। ला राजा को अति लगी सुहाई ॥
रानो सहित बाग मैं गये। फूले तरुवर देषे नये ॥

× × × ×
× × × ×

End:—चलि के अवधे सुर गये, जहं बैठे देव अलेष।
कपट बांहि गहि लई नारायन, करि ब्राह्मण को भेष ॥
एक पुत्र बिनु जग अंधियारो, डूबे राज तुम्हार।
गया पिंड को भरिहै राजा, को करै पित्र को काज ॥
छांड़ि विप्र मेरी बांहि, धर्म कित नार लगावै।
मांगि दच्छिना लेउ, और तेरे मन भावै ॥

देखो सत्य डिगाय कें, छांन दूजो भाव।
तब प्रभु धरो चतुर्भुज मूरति, दरसन दये बनाय ॥
जो या कथा सुनै घरु गावै, नरक लोक नहिं जाव।
धनि रानी धर्मावती, धनि रुक्मांग्द राव ॥
क्यों न प्रजा तरैई, जहं रुक्मांगद राज।
इकदशी प्रताप तें, पायो बैकुंठ को वास ॥
अथ इकादसी महाफल ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० २३ तक—एकादशी महाफल। मंगलाचरण। सूर्यवंशी राजा रुक्मांगद के राज्य का सुख वैभव वर्णन। राजा का सपत्नीक वसन्त ऋतु में अपनी वाटिका में जाकर सुखानुभव करना। रानी का माली को सब पुष्पों को राजप्रसाद में पहुंचाने की आज्ञा। माली का एक भी पुष्प न लेआकर, चोरी की कथा सुनाना। राजा का क्रोधित होकर उसे दंड देने की आज्ञा। दूसरे दिन माली का एक स्त्री द्वारा पुष्पों की चोरी की सूचना देना। दूसरे दिन राजा का रंभा को जा पकड़ना और उसका सब समाचार सुनना। एक रजक-स्त्री के एकादशी को अनशन व्रत (क्रोध से) करने के पुण्य से रंभा का विमान स्वर्ग पर चढ़ जाना देखकर उक्त व्रत पर राजा की श्रद्धा। सब प्रजा सहित राजा का व्रत करना। सुर, देव तथा यम का प्रलाप। मोहिनी का व्रत भंग करने का प्रण करके राजा के राज्य में आना और उसका छलना। एकादशी व्रत का मोहिनी द्वारा निषेध। राजा का परिताप, मोहिनी का उसके पुत्र का शीश मांगना। पुत्र का प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकृति देना। भगवान का विप्र वेश में प्रवेश। राजा का सत्य से न डिगना। भगवान का प्रसन्न होकर चतुर्भुज रूप दिखाना। राजा की प्रशंसा। एकादशी कथा श्रवण फल।

No. 477. Gaṇeśavrata-Kathā. Leaves—14. Dated in Samvat 1870 or A. D. 1813. Deposited with Seṭha Maganirāma Saudāgara, District Kherīlakhīmapura (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ दो० ॥ बंदि चरण अरविंद के हरिहर गिरजहि मनु लाइ। सैल सुता सुत की कथा कहौं सुनौ चितु लाई ॥ दो० ॥ राम कृष्ण भ्रातन सहित श्री पुर कामिनि निज धाम। बुद्धि बढ़ावत सकल मिलि पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥ कथा कहौं गणनाथ को पार उतारौ वोर। बुद्धि हीन निज जानि कै सुमिरौं तनय समीर ॥ युधिष्ठिरो वाच ॥ चौ० ॥ सुनहु कृष्ण देवन के देवा। निगम सेष विधि पाव न भेवा ॥ कैसे प्रभु तुम दीन

टयाला। सदा करहु दासन प्रतिपाला॥ विपत हमारि विलोकहु स्वामी। कृपा सिंधु तुम अंतर जामी॥ कल कीन्हो कुरु आधम राजा। जीति लियो मांह राज समाजा॥ अनुज समेत जुबति संग लाये। कानन फिरत दुसह दुष पाये। तेहित प्रभु विनवैा करजोरी। केहि विधि पाउब राज बहोरी॥ श्री कृष्णो-वाच॥ कृष्ण कहा सुनु वचन नरेशा। तुव हित लागि कहौं उपदेशा॥ पूजहु गणपति कहं चित लाई। जेहि पूजें सब दुष मिटि जाई॥ विघन हरन है जाकर नामा। तेहि पूजें पैहैा विश्रामा॥ दोहा॥ कृष्ण वचन सुनि धर्म सुत बोले पद सिर नाइ। गणपति को है नाथ मोहि कहिये कथा बुझाय।

End:—दोहा॥ यहि विधि द्वादस मास को कही भूप मनु लाइ। विधि सो पूजहु गणपतिहिं सर्व संकट मिटि जाइ। चो०॥ यह सुनि धर्म तनय सिर नावा। हरि पद की रज नेत्र लगावा॥ जेहि विधि कहेउ कृष्ण व्रत रोती तेहि विधि राजा कीन्ह सप्रीती॥ गणपति की भइ कृपा अपारा। मारि सत्रु कीन्हा संहारा॥ नृप सो राज्य मही पर कीन्हा। सब गणपति की दया लषि लीन्हा॥ जो गणेश का व्रत चित लावै। मन वांछित फल सो नर पावे॥ रिद्धि सिद्धि धन धेनु अपारा। धरनि धाम सुष संपति दारा॥ नारी पुरुष करै व्रत कोई। सकल सिद्धि फल पावै सोई। जो यह कथा सुनै जो गावै अंत काल सुर पुर सुष पावै। इति श्री भविष्योत्तर पुराणे खंड कृते भाषा विरचिते कृष्ण युधिष्ठर संवादे हर गौरी सुत गणेश व्रत समाप्त सुभ मस्तु आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथैा चैाथि लिषतं पोस्तक श्री पाल मिश्र संकल दो े संवत १८५७ वि० ॥ श्री राम राम राम सीताराम॥ श्री गणेशायनमः सदा गंगा जी की जैव हो॥ श्री कृष्णायनमः॥

Subject:—गणेश जी की उत्पत्ति, महिमा और व्रत फल वर्णन।

No. 478. (a) Garbhagitā. Leaves—32. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Paṇḍita Rāmanātha Misra, Village Imaliyā, Post Office Sadārapur, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ उं नमो भगवते वासुदेवाय॥ अथ गर्भ-गीता लिष्यते॥ अर्जुनोवाच॥ उं अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता है श्री कृष्ण जी की आज्ञा है जो कोई गर्भ गीता का पाठ सुनै प्रेम सहित तिसके निकट जम किंकर आवे नहीं वचन है श्री कृष्ण भगवान जी का श्री अर्जुन संवाद करते हैं पुन्य पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ सुनै कमावै घर रहते रहै तो मुक्ति होइगा॥ श्लोक॥ गर्भवासं जरा मृत्यु किमर्थं भ्रमते नरः किमर्थं रहिते जन्म कथं कस्य जनार्दन॥ टीका॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानी दोष ते आवता है तब उसको जरा

मृत्यु का दोष लागता है घरु यह कौन धर्म है जिस धर्म ते जन्म रहत होइ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन यह जो मानुष है सो अंध मूढ़ है संसार सों प्रीति करति नाना बहुत प्रीति है आठ पहर उसकी प्रीति माल लोभ रहत है ॥

End:—श्री भगवानुवाच ॥ हे अर्जुन गुरु के वचनो से विमुष है सो कुत्ते को बराबर है कोई गुरु के वचनो को मानता नाहीं सो वैसनो नाहीं ॥ जगत पर धोपी चंद है जो कोई गुरु के धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे अर्जुन जो कोई गुरु मुष होइ कर राम नाम सि-रेगा सत गोत्र घो एकअसी पितरों तारेगा ॥ घो जो मेरा भगत नित प्रति करेगा सो वैकुंठ जायगा ॥ हे अर्जुन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही खाती है ॥ घोर पितरों को पिंड भी श्राद्ध दिये ना पावै ॥ जो उन पुरुष को स्वर्ग लोक के कर्म किया होइ तौ भी स्वर्ग ना पावै ॥ हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु होर लोक भी गुरु देषिया विना सो बार बार जन्म पावेगो ॥ हे अर्जुन भगत बारंबार न ते ऊपर हैं प्रधान अरु केशव नारायण तेंतिस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है एक सबना व्रता के ऊपर हर दिन एकादशी प्रधान है मह ना में बहुत निष्काम है मेरा निवास इना में है ॥ अदोषत मानुष पुन्न पुन करैगा ता पशु की जूनि मैं पावता है जो कुछ दान पुन करै सो जोनि मे पावता है ॥ अर्जुनुवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जी गुरु जो दष्या कैसा होता है तिसका फल कृपा करके कहो ॥ घरु ताविषे उत्तम कौन है घोर गुरु कैसो वाक्य जगत को करो है घरु सेवा पूजा का फल कौन है घरु वैसनो भगति को क्रिया भगत रहत कैसी होती है ॥ उससे भिन्न भिन्न दुर्मति कौन है ॥ श्री भगवानुवाच ॥ धन्य तेरी ज्ञान रूप को है घो वैसनो धर्म तेरा तुमको मायना है ॥ घरु देषीया दो अक्षर है घरु जे हरि हरि सदा जपीये ॥ हे अर्जुन वैसनो अस नाम कारके ॐ नमोनारायणाय ॥ श्री मंत्र एक मन होइ कर जो सो मेरा भगत है ॥ सो वैकुंठ को प्राप्त होता है ॥ सो मेरा भगत जानना घरु साधु भगत छोड़ कर मनुष के गर्भ वास होता है हे अर्जुन मनुष की देह में साढ़े तीन करोड़ रोमावली हैं तब लग नरक में जाता है इह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भग-वत गीता सूत्र निरस्त ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् लिषतं बनवारी लाल पाठक पैंतेपुर निवासी असाढ़ वदो ३ सवत् १७८७ वि०

Subject.—गर्भ, जन्म, मरण, सुख दुख आदि वर्णन ॥

No. 478 (*b*). Garbhagita. Leaves—32. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhuṣaṇa, Village Kāmatāpura, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ गर्भ गीता लिख्यते ॥ अर्जुनुवाच ॥ ओं अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है ॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता भया कि श्री कृष्ण जी की आज्ञा है जो कोई इस गर्भ गीता का पाठ सुनै प्रीत लाइके तिनके निकट जम किंकर आवै नाहीं वचन है श्री कृष्ण जी का श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं पुन्य पाप विचारते हैं जो कोई इहु वचन पाठ सुनै कमावै अन रहते रहै सो मुक्ति होइगा ॥ अर्जुन वाच सलोक ॥ गर्भ वासं जरा मृत्यु किमर्थः भ्रमते नरः किमर्थे रहिते जन्म कथ स्वत्य जनार्दन ॥ टीका ॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषै जो प्रानी दोष ते आवता है। तब उसको जरा मृत्यु का दोष लागता है अरु यह कौन अर्थ है। तिस अर्थ ते जन्म रहत होइ ॥ श्री भगवानु वाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है हे अर्जुन इह जो मानुष सो अंध मूढ़ है संसार भी प्रीति करत नाल बहुत प्रीति है अठ पहर उस ही प्रती नाल लोभ रहत है ॥

End :—हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु होर लोक भी गुरु गुरु देषिया बिना सो वार वार जन्म पावेगी है अर्जुन भगत वारे वार न ते ऊपर है प्रधान अरु केशव नारायण तैतीस कोटि देवता के ऊपर प्रधान है अरु सब पूजा के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है मैं इनमें बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास इसमें है अदोषत मानुष कछु पुन करैगा तापहु की जूनि मैं आवता है ॥ जो कुछ दान पुन करे सो जोनि मैं आवता है अर्जुन वाचा ॥ हे श्री कृष्ण जी भगवान जो गुरु जी देख्या कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहो और जाप विषे उत्तम कौन है और गुरु कैसो वाक्य जगत को करो है अरु सेवा पूजा का फल कौन है अरु वैष्णव भगत की करिया जगत रहत कैसो होतो है उससे भिन्न भिन्न दुर्मत कौन है श्री भगवानु वाच ॥ हे अर्जुन धन्य तेरे ध्यान इस को अरु वैष्णव धर्म तेरा तुमको भावता है ॥ अरु देषिया दो अक्षर है अरु जे हरि हरि सदा जपियै है अर्जुन वैष्नों असनान करिके ऊं नमो नारायणाय श्री मंत्र एक मन होकर जपै ॥ सो मेरा भगत है ॥ सो वैकुंठ को प्राप्त होता है। सो मेरा भगत जानता है अरु साधु भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होता है हे अर्जुन मानुष की देह मैं साढ़े ३ करोड़ रोमावली है ॥ तत लग नरक में जाता है यह गीता गर्भ है ॥ इति श्री भगवत गीता सुपनिषं ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता सपूर्ण समाप्तम शुभ्म लिषतं पं० देवाराम श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् १८७२ वि० ॥

Subject :—श्री कृष्ण जी का अर्जुन को ज्ञान उपदेश वर्णन ॥

No. 478 (c). Garbhagita. Leaves—32. Deposited with Pandita Mannilālaji Gangāputra Tivārī, Village Misrikhā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ गर्भ गीता लिख्यते ॥ अर्जुनवाच ॥ ॐ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है ॥ श्री कृष्ण जी उत्तर देता है ॥ श्री कृष्ण जी के आज्ञा है ॥ जो कोई इस गर्भ गीता का पाठ सुनै प्रीत लाय के तिसके निकट जम किंकर आवे नाहीं ॥ वचन है श्री कृष्ण जी का ॥ श्री कृष्ण अर्जुन संवाद करते हैं ॥ पुन्य पाप विचारते है जो कोई यहु वचन पाठ सुनै कमावै अरु रहते रहै सो मुक्ति होयगा ॥ अर्जुन वाच ॥ स्लोक ॥ गर्भ वासे जरा मृत्यु किमर्थं भ्रमते नरः ॥ किमर्थं रहितं जन्म कथं कस्य जनार्दन ॥ १ ॥ टीका ॥ अर्जुन पूछता है श्री कृष्ण जी गर्भ के विषे जो प्रानी दोष ते आवता है तब उसको जरा मृत्यु का दोष लागता है ॥ और उह कौन अर्थ है ॥ तिस अर्थे ते जन्म रहत होई ॥ श्री भगवानोवाच ॥ श्री कृष्ण जी कहता है ॥ हे अर्जुन इह जो मनुष्य है सो अंध मूढ़ है ॥ संसार भी प्रीति करति नाल बहुत प्रीत है ॥ अठ पहर उसही प्रीत नाल लीन रहत है ॥ जैसे इहु कर्म किया है । अरु आसा भी करते है कि वांछि तब है ॥ जो इहु कर्म किया है अर इहु न होगे । अरु और मागते क्या मागते है । लछमीराज और जोबना बहुत मानते है अरु एना करमो करके गरभ विषे आवता है ॥

End :—भगवानोवाच ॥ हे अर्जुन जो गुरू के वचनो से विमुष है ॥ सो कुत्ते को बरावर है ॥ अरु जो कोई गुरु के वचन को मानता नाहीं सो वैसनो नाहीं ॥ जगत पर घोपोचंद है । जो कोई गुरु को धर्म ते विमुष है सो मेरा भगत नाहीं ॥ हे अर्जुन जो कोई गुरु मुष होइकर राम नाम सिमरेगा सत गोत्र और एकोतर सौ पितरो तारेगा ॥ और मेरी भक्ति नित प्रति करेगा । सो वैकुंठ जायगा । हे अर्जुन अधोगत मनुष्य को शरीर को कूकर भी नाही पातो है ॥ और पितरो को पिंड भी श्राद्ध विषे ना पावै । जो उस पुरुष को स्वर्ग लोक के कर्म किया होय तो भी स्वर्ग ना पावै । हे अर्जुन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अरु चार लोक भी गुरु दीषिया बिना सो बार बार जन्म पावेगा ॥ हे अर्जुन भगत बारंबार नते उपरे है प्रधान । अरु केसव नारायण तैंतीस कोटी देवता के ऊपर प्रधान है । अरु सबजा बता के ऊपर हरि दिन एकादशी प्रधान है ॥ मैहना मै बहुत निष्काम है ॥ मेरा निवास इना में है । अदीषत मानुष कछु पुन करेगा । तो यम को जोन में पावता है ॥ जो कुछ दान पुन करै सो जोनि में पाता है ॥ अर्जुनवाच ॥ हे श्री कृष्ण भगवान जो गुरु जो दीष्या कैसा होता है ॥ तिसका फल कृपा करके कहो अरु आ विषे उत्तम कौन है । अरु गुरु कैसी वाक्य जगत को करो है ॥ अरु सेवा पूजा का फल कौन है ॥ अरु वैसनोभगत को करिया जगत रहत कैसी होती है ॥ उससे भिन्न भिन्न दुमति कौन है ॥ श्री भगवानोवाच ॥ हे अर्जुन अन तेरो ज्ञान रूप को अरु वैसनो धर्म तेरा तुमको भावना है अरु

देषोया दो अक्षर है। यह जे हरि हरि सदा जपिये। हे अर्जुन वैश्नो अलना करिके ओं नमो नारायणाय श्री मंत्र एक मन होइ कर जपै सो मेरा भगत है॥ सो वैकुंठ को प्रापत होता है सो मेरा भगत जानना॥ यह साधु भगत छोड़ के मनुष के गर्भ वास होता है॥ हे अर्जुन मनुष को देह में। साढ़े तीन करोड़ रोमावली है तब लग नरक में जाता है॥ इह गीता गर्भ है॥ श्री इति भगवत गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे गर्भ गीता संपूर्णम् शुभम्।

Subject:—गर्भवास पाकर कौन दुख और कौन सुख भोगता है, कौन किस कर्म से नरक व मोक्ष प्राप्त करता है, आदि प्रश्न श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को समझाया है।

No. 479. Garuḍa-Purāṇa. Leaves—75. Deposited with Lālā Gangotrī Prasāda, Village Alhāpurā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः गरुड़ जी श्री भगवान जी सों पूछत भये श्रीभगवत के प्रसाद करिकै तीन्यौ लोक वैकुंठ आदि दे सचर अचर जीव संपूर्ण देखे उत्तम स्थान मध्यम स्थान अधम स्थान ए मैंने संपूर्ण देखे कछू देषन की अभिलाषा रही नहीं॥ १॥ पाताल ते लैकै सप्त लोक पर्यंत संपूर्ण देखे-जम लोक को दर्सन कीनौ नहीं॥ श्लोक॥

भगवत प्रशादात् वैकुंठ त्रैलोक्यां सचराचरं मयाविलोकितं।
मयाविलोकितं सर्वं उत्तम अधम मध्यिमा॥ पातालात् सप्तर्षैतः पुरमाख्यं
विना प्रभो भूर्लोक सर्व लोकानां प्रभुः सर्व जंतस्॥

पृष्ठ—१५०

End:—

एक तौ हरि कौ नाम भागीरथी कही मै गंगा जी कौ नाम तीसरे विप्र संसार में ये तीनि वस्त सार है ये तीन्यो वात तरण तारण हैं॥ १५॥ मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरुड़ध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरि॥ १६॥

× × × ×

जिनके लक्ष्मी नारायण दमोदर हृदै में विराजे हैं तिन पुरुषन को सदा जै है सदा लाभ्य है तिनको कबहु हारि आवै नहीं सदा जनारदन सहाय रहत हैं॥ १८॥ या कथा के सुनते पुस्तक की पुजा कीजै भेट अभागे गउदान दीजै मुद्रिका दीजै अथवा थोरी पुस्तक की पूजा कीजै॥ १९॥ जे प्राणी भगवद् भाव सौ सुनै गरुड़ पुराण की कथा सुनै तिनको आयु वृधै जम लोक मार्ग को देखै नहीं नर्क मै पैर नहीं सर्व पापन ते छूटै नित्यानंद होय॥ २०॥

सूत जी...

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ५ तक——प्रथम अध्याय–गरुड़ भगवान संवाद, वृषोत्सर्ग वर्णन।

(२) पृ० ८ से पृ० १४ तक——द्वितीय अध्याय जीवित क्रिया विधि अर्थात् जीवन काल में धर्म, दाता पूजनादि का विधान।

(३) पृ० १४ से पृ० १९ तक——तृतीय अध्याय। प्रेत वाक्य वर्णन, पिंड-दान। एकादशाह, त्रयोदशाह आदि कर्मों के दिन निश्चय करने की विधि।

(४) पृ० २० से २८ तक——चतुर्थ अध्याय। प्रेतों की यममार्ग पुरी का वर्णन। यमदूत तथा पापियों का वार्तालाप तथा प्राणियों के कृत कर्मों का दिग्दर्शन।

(५) पृ० २९ से पृ० ३४ तक—पंचम अध्याय। ग्यारहवें दिन के पिंडदान का फल तथा शैयादान का विधान। त्रयोदशाह की विधि, नरकों के नाम और पाप कर्मों के अनुसार उनकी प्राप्ति का कथन।

(६) पृ० ३५ से पृ० ३९ तक—षष्ठमोध्याय। पाप तथा कर्मानुसार फल की प्राप्ति (यमलोक वर्णन)।

(७) पृ० ४० से पृ० ४६ तक—सप्तमोध्यायः। प्रेत का निवास स्थान, प्रेत लोकान्तर प्रेत के जाने का स्थान तथा उनके कर्मभोगों का वर्णन। प्रेत योनि प्राप्ति का कारण तथा उनके भोजनादि का कथन।

(८) पृ० ४७ से पृ० ५१ तक—अष्टमोध्यायः। कलियुग में नियत सौ वर्ष पूरी भी आयु न होने का कारण। अवस्था भेद वर्णन। पांच वर्ष तक की अवस्था के पापों में फंसने-भोगने का विधान। गर्भ तथा गर्भ से बाहर आते ही मरने वाले जीव की अन्त्येष्टि का विधान।

(९) पृ० ५२ से पृ० ५७ तक—नवमोध्यायः। षट कर्म सपिंडी कर्म तथा वर्ष दिन तक पिंड दान करने का वर्णन। स्त्री के सती होने का फल।

(१०) पृ० ५८ से पृ० ६४ तक—दशमोध्याय। मनुष्य की क्रिया का कथन तथा उसके संबंध में परलोक सुख वर्णन। बभ्रुवाहु का आख्यान (राजा के प्रति प्रेत की स्तुति)।

(११) पृ० ६५ से पृ० ६९ तक—एकादशमोध्याय। उक्त आख्यानान्तर्गत प्रेत श्राद्ध वर्णन।

(१२) पृ० ७० से पृ० ७३ तक—द्वादशमोध्याय। दान महात्म्य वर्णन।

(१३) पृ० ७४ से पृ० ७८ तक—त्रयोदशमोध्यायः। शरीर भेद वर्णन।

(१४) पृ० ७९ से पृ० ८७ तक—चतुर्दशमोध्यायः। जीव उत्पत्ति वर्णन।

(१५) पृ० ८८ से पृ० ९४ तक—पंचदशमोध्यायः। यम लोक वर्णन।

(१६) पृ० ९५ से पृ० १०० तक—षष्टदशमाध्यायः। धर्म अधर्म के लक्षण तथा पिंड प्रदान वर्णन।

(१७) पृ० १०१ से पृ० १०४ तक—सप्त दशमोध्यायः। शैयादान की महिमा का वर्णन।

(१८) पृ० १०५ से पृ० १११ तक—अष्ट दशमोध्यायः। दाह संस्कार विधान तथा सूतक लगने का कथन। श्राद्ध-दानादि कथन तथा मिनति।

(१९) पृ० १११ से पृ० ११८ तक—नवदशमोध्याय वर्णन। अनशन व्रत वर्णन तथा घट दान का नियम और दान दिये जाने वालों की गणना। दान किसको दिया जाय, दानग्राही का लक्षण।

(२०) पृ० ११९ से १२३ तक—एको विंसतिमोध्यायः। कैसा फलदान करने तथा कैसा तीर्थ करने से मोक्ष होता है। किस प्रकार का दान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

(२१) पृ० १२३ से पृ० १२७ तक—द्वाविंसति अध्यायः। सुतक निर्णय, चारों वर्णों में किस प्रकार सुतक लगता है (शुद्धाशुद्ध वर्णन)।

(२२) पृ० १२८ से १३६ तक—त्रिंसेमोध्यायः। (मोक्ष वर्णन) अकाल मृत्यु तथा अन्य प्रकार की मृत्युओं का वर्णन।

(२३) पृ० १३६ से १३९ तक—चतुर्विंसतिमोध्याय। वस्त्र विधि वर्णन।

(२४) पृ० १४० से पृ० १४५ तक—पंच विंसतिमोध्यायः। सुकृत करने वाले के फलादि का वर्णन। पापियों की योनि प्राप्ति का विधान।

(२५) पृ० १४५ से पृ०.......तक—वैतरणी नदी के विस्तारादि का वर्णन। गोदान विधि, गरुड़ पुराण श्रवण विधि॥

No. 480. Garuḍapurāṇa-Bhāsā. Leaves—72. Dated in Samvat 1924 or A. D. 1867. Deposited with Paṇḍita Murlidhara Dube, Village Laharapura, District Sītāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः॥ अथ गरुड़ पुराण लिख्यते॥ श्री भगवान सोई संसार विषै वृक्ष रूपी सदा विराजते हैं कैसा वाकृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद पुराण शाखा है क्रतफुल है मोक्ष फल है ऐसा वृक्ष स्वरूपी भगवान है तिनके चरणारविन्द को सदा जय रहो॥ हे वैकुंठ नाथ तुम्हारे प्रसाद कहे ते कृपा ते

तोनो लोक देषे हैं। उत्तम स्थान भुर्लाक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जन-लोक, तपलोक, सत्य लोक, षष्ठमलोक अतल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल मध्यम मनुष्य लोक ते सब देषे हैं॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्व लोक ताई हे प्रभु मैं सर्व लोक देषे एक मग पुरी विना सो मनुष्य लोक के प्रचुर कह भांति यमलोक को जाते हैं॥ मनुष्य देह सर्व योनि में श्रेष्ट है मुक्ति युक्ति को दाता है पुन्य आत्मा जोव है जिन मनुष्य देह पाई है सो मनुष्य समान न भूत न प्राणी कोई न हुवो न कोई होनहार हो। गावंति देवता मनुष्य जन्म को महिमा गावत हैं अनेक जन्म के पुन्य के प्रभाव करिके मनुष्य देह पाई है ते धन्य हैं सो फल स्वर्ग लोक को दाता है और मोक्ष को देनहारा है ऐसा मनुष्य देह है॥

End :—हे गरुड़ जैसे धर्म को जोत है पाप जोते नहीं। सत्य की जीत है असत्य जीते नहीं। क्षमा को जोत है क्रोध की जीत नहीं जैसे विश्नु भगवान को सदा जीत रहे असुरन को सदा हार है उनको सदा लभ्य है निश्चे करिके। एक हो हरिगंगा भागीरथी ब्राह्मण ये तीन वस्तु संसार विषै सार हैं। जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान को नाम है सो मनुष्य सदा पवित्र है। मंगल रूपी भगवान को नाम है जिनके मन में पुंडरीकाक्ष श्री गरुड़ध्वज बसे हैं उनके सदा मंगल है सूत जी सैानकादिकान सूं कहत हैं ऐसा वचन श्री भगवान को वचन सुनि के गरुड़ जी के मन में बहुत हरष उपज्यो तब तीन प्रदक्षिणा कीनी। गरुड़ जी ने भगवान की बानी सुनि के गरुड़ जी को ज्ञान बहुत उपजो या कथा को सुनि के ऐसी यह प्रेम की कथा श्रवण करैं जिनको यम लोक को भय कबहु व्यापे नहीं श्री भगवान गरुड़ को संवाद है यें कथा सूत जी ने नैमिषारन विषै ८८००० हजार रिषीश्वरन को शैानिकादिकन को सुनावत हैं या कथा को चित्त लाय के हेत करिके सुनो जाके सर्व पाप जात रहैं। और दया उपजै धर्म करिके जय रहै सहस्र अश्वमेधयज्ञों को बराबर पुन्य है और सेवक रै वाजपेय यज्ञों को बराबर यज्ञों को फल है करवाने वालों को और कथा के सुनने मात्र करिके संपूर्ण धर्म करि दिया उन मनुष्यों ने निश्चय करिके सच जानियो इति श्री गरुड़ पुराणे प्रेत कल्पे अष्टादशके साहस्त्रं संहितायां उत्तर खंडे कृष्ण वैनतेय संवाद जन्म देष सूचनो नाम चतुर त्रिंशोध्याय संवत् १९४७ पोष सुदी चतुर्दश्याम शुभम् या दृष्टं पुस्तकं दृष्टवातादृशं लिष्यते मया यदि शुद्धम शुद्ध वा ममदोषो मदीयते॥ लिषा मरलीधर पंडित

Subject :—गरुड़पुराण भाषा (मनुष्य के मरने पर क्या होता है या उसकी गति किन कर्मों से क्या होनी चाहिये)

No. 481. Garuḍapurāṇa-Saṭīka. Leaves—84. Deposited with Paṇḍita Mahāvīra Pāṇḍe, Village Sagarāmapura, Post Office Madhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ गरुड़ पुराण सटीक लिष्यते ॥ श्री गरुड़ोवाच ॥ धर्म दृढ़ बद्ध मूला वेद स्कंध पुराण शाखाढ्य कृत कुसुमो मोक्ष फलो मधुसूदन पादपो जयति ॥ १ ॥ तार्क्ष्य उवाच ॥ भगवत् प्रसादा-द्वैकुंठ त्रैलोक्यं सचराचरम् मया विलोकितं सर्वं भूत मध्यमध्यम् ॥ २ ॥ भूर्लो-कात सत पर्यंत पुरं याम्य विना प्रभो भूर्लोकात्सर्वं लोकानां प्रचुर सर्व जंतुषु ॥ ३ ॥

टीका ॥ श्री भगवान सोई संसार विषै वृक्ष रूपो सदा विराजै हैं कैसो ता वृक्ष को धर्म मूल है वेद स्कंद है पुराण शाखा है कर्म फूल है मोक्ष फल है ऐसो वृक्ष स्वरूपो भगवान है तिनके चरणारविंद को सदा जय रहे ॥ १ ॥ हे वैकुंठनाथ तुम्हारे प्रसाद करिके कृपाते तीनों लोक के देषे हैं—उत्तम स्थान भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्ग लोक ३ महर्लोक ४ जन लोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ उत्तम । नीचे के लोक अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसा-तल ५ महातल ६ पाताल ७ मध्यम ८ मनुष्य लोक ते सर्व देषे हैं ॥ २ ॥ पृथ्वी ते ऊपर सत्यलोक ताई हे प्रभु मैं सर्व लोक देषे एक यमपुरी बिना सो मनुष्य लोक के प्रचुरः कइ भाँति यम लोक कूं जात हैं ॥ ३ ॥

End :—अपवित्रेपवित्रोवा सर्वावस्थांगतो पिवा यस्मरेत् पुंडरी काक्षं सर्वाह्याभ्यं तरशुचि ॥ ३७ ॥ मंगलं भगवान विष्णुं मंगलं गरुड़ध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलाय तनो हरी ॥ ३८ ॥ श्री सूत उवाच ॥ इति विष्णु वच श्रुत्वागरुड़ो हृष्ट मानसः तं विष्णु त्रिपरिक्रम्य ज्ञान वान सम जायनः ॥ ३९ ॥ यस्य मरण मात्रेण धर्म जयच दायानि भगवान गरुड पाख्याने कथा पापहरा परा ॥ ४० ॥ अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानिच कथा श्रवण मात्रेण सर्वधर्म कृता नितै ॥ ४१ ॥ इति

टीका.—मंगल भगवान को नाम है जिनके मन से पुंडरीकाक्ष श्री गरुड़ध्वज बसे हैं उनके सदा मंगल है ॥ ३८ ॥ जिनके मन में पुंडरीकाक्ष भगवान को नाम हैं सो मनुष्य सदा पवित्र है ॥ सूत जी सौनकादिकन सूं कहत हैं ऐसो वचन श्री भगवान को सुनि गरुड़ जी के मन में बहुत हरष उपज्यो। तब तीनि प्रदाक्षिणा कीन्हीं गरुड़ जी को भगवान को बाणी सुनिके गरुड़ जी के ज्ञान बहुत उपज्यो या कथा कूं सुनि कै ॥ ३९ ॥ ऐसो यह प्रेत की कथा श्रवण करै तिनको यमलोक को भय कबहू व्यापै नहीं । श्री भगवान गरुड़ को संवाद है । जो कथा सूत जी ने नैमषारण्य विषै अठासी सहस्र ऋषि स्वरन कूं शौनकादिकन कूं

सुनावत हैं या कथा कूं चित लायकें हेत करके सुने जाके सब पाप जात रहैं और दया उपजे धर्म करिके जय रहै अय होय ॥ ४० ॥ सहस्र अश्वमेध यज्ञों को बराबर पुन्य है और सैकरों वाजपेय यज्ञों की बराबर फल है—करवाने वाले कूं, और कथा के सुनने मात्र करिकें संपूर्ण धर्म कर दिया उन मनुष्यों ने निश्चै करिकै सच जानिये ॥ इति श्री गरुण पुराणे प्रेत कल्पे टीकायाँ अष्टादशोक सहस्रं संहितायां उत्तर खंड कृष्ण वैनतेय संवादे जन्म देव सूचना नाम्र चड खिंशोध्याय ॥ ३४ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—प्रथम अध्याय।
व्रतोत्सर्ग करने का आदेश, उसका फल और करने के अधिकारी।

(२) पृ० ७ से पृ० १६ तक—द्वितीय अध्याय।

दानादि किया जो अपने हाथ से अथवा दर्वीर्थियों के हाथ से कराई जाय; चेत में अथवा अचेत में कराई जाय उसका फल। उत्सर्ग विधि, पिंड दान विधान, यमलोक के मार्ग में पड़ने वाले पुर। मार्ग में पितृ का पश्चात्ताप।

(३) पृ० १६ से पृ० २१ तक—तृतीय अध्याय।

मासिक श्राद्ध का फल, सौरिपुरादि पितृ के विश्राम स्थान, उनको भयंकरता तथा उससे विमुक्त होने के लिये भिक्षादि कियाओं का विधान।

(४) पृ० २१ से पृ० २५ तक—चतुर्थ अध्याय।

वैतरणी इत्यादि के दुख तथा उनसे विमुक्त होने के उपाय।

(५) पृ० २६ से पृ० २९ तक—पंचमोध्याय।

दान के पदार्थों का वर्णन; बड़े-बड़े इकीस नरकों के नाम; पापी की परिभाषा, और उनके लिये पिंडादि विधान।

(६) पृ० ३० से पृ० ३२ तक—षष्टमोध्यायः।
प्रेत कथन, चित्रगुप्त के मंदिर का वर्णन, शुभाशुभ कर्म फल।

(७) पृ० ३३ से पृ० ४१ तक—सप्तमोध्याय संस्थापन)
प्रेत वास वर्णन अथवा उनके द्वारा अनेक प्रकार की पीड़ाएं तथा प्रेत योनि पाने का कारण।

(८) पृ० ४१ से पृ० ४६ तक—अष्टमोध्याय।

प्रेतों के लक्षण, उनको मुक्ति का विधान, नारायण बलि का फल व विधान।

(९) पृ० ४७ से पृ० ५० तक—नवमोध्यायः।

मनुष्य के मिन्न कर्मों के कारण अल्प अथवा अधिक होने का कारण।

(१०) पृ० ५१ से पृ० ५३—दशमोऽध्यायः।
सूतक के लिये पुराण विधान।

(११) पृ० ५४ से पृ० ५९ तक—एकादशमोऽध्यायः।
दीप दानादि विधान। पुत्र निषेध।

(१२) पृ० ५९ से पृ० ६७ तक—द्वादशमोऽध्यायः।
सपिंडि सति महिमा।

(१३) पृ० ६८ से पृ० ७१ तक—त्रयोदशोऽध्यायः।
ऊर्द्ध देह क्रिया, बभ्रुवाहन राजा का आख्यान।

(१४) पृ० ७१ से पृ० ७७ तक— चतुर्दशमोऽध्यायः।
ऊर्द्ध क्रिया का विधान, प्रेति योनि पाने का कारण।

(१५) पृ० ७८ से पृ० ८२ तक—पंचदशमोऽध्यायः।
कपिला दान तथा यज्ञोपवीत धारण फल; मृत्यु के समय के दान।

(१६) पृ० ८२ से पृ० ८६ तक— षष्टदशमोऽध्यायः।
विविध दानों के विविध फल, शरीर वर्णन।

(१७) पृ० ८७ से पृ० ८९ तक—सप्तदशमोऽध्यायः।
शुभपुराण वर्णन।

(१८) पृ० ९० से पृ० ९३ तक—अष्टदशमोऽध्यायः।
शरीर विपत्ति वर्णन।

(१९) पृ० ९४ से पृ० ९८ तक—एकोनविंशोऽध्यायः।
स्त्री के गर्भ का वर्णन, शरीर वर्णन।

(२०) पृ० ९९ से पृ० १०२ तक—विंशोऽध्यायः।
संतोत्पत्ति लक्षण।

(२१) पृ० १०२ से पृ० १०७ तक—एकविंशोऽध्यायः।
यमपुरी, पुराय वर्णन।

(२२) पृ० १०८ से १११ तक—द्वाविंशोऽध्यायः।
यम मार्ग कथन।

(२३) पृ० १११ से पृ० ११६ तक—त्रय विंशोऽध्यायः।
शय्यादान कथन।

(२४) पृ० ११७ से १२१ तक—चतुर्विंशोऽध्यायः।
सपिंडो कारण।

(२५) पृ० १२२ से पृ० १२१ तक—पंचविंशोध्यायः ।
श्राद्ध विधान, प्रेत पंचक दोष, सूतक वार्ता वर्णन ।
(२६) पृ० १३० से पृ० १३४ तक—षटविंशोध्यायः ।
पितृ निर्णय वर्णन ।
(२७) पृ० १३४ से पृ० १३८ तक—सप्तविंशोध्यायः ।
शालिग्राम महिमा वर्णन ।
(२८) पृ० १३८ से पृ० १४१ तक—अष्टविंशोध्यायः ।
कुंभदान महात्म्य, तथा कुंभदानादि पात्र वर्णन ।
(२९) पृ० १४१ से पृ० १४५ तक—एकोनत्रिंशोध्यायः ।
नारायण बलि विधि कथन ।
(३०) पृ० १४५ से पृ० १४९ तक—त्रिंशोध्यायः ।
नारायण बलि त्रयोदश पदादि का वर्णन ।
(३१) पृ० १४९ से पृ० १५१ तक—एकत्रिंशोध्यायः ।
वृषोत्सर्ग विधि ।
(३२) पृ० १५२ से पृ० १५७ तक—द्वात्रिंशोध्यायः ।
वृत्ति सूतक वर्णन ।
(३३) पृ० १५७ से पृ० १६१ तक—त्रयत्रिंशोध्यायः ।
वैतरणीदान विधि ।
(३४) पृ० १६१ से पृ० १६८ तक—चतुस्त्रिंशोध्यायः ।
कृष्ण वैनतेय संवाद, जन्मदेव सूतन ।

No. 482. Ghoḍoṅ kā Ilāja. Leaves—90. Deposited with Paṇḍita Rāghavarāma, Teacher, Primary School, Āmāmaū, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

पृष्ठ ५

चार बरस की उम्र तक घोड़े से काम न लेना चाहिये क्योंकि उस समय काम करने से जवानी में अच्छा काम नहीं कर सकते । सिर्फ लगाम का उनको अभ्यास कराना चाहिये ।

दूसरा अध्याय

जिन्स घोर कुम्मैत का बयान ॥ जिनके नाम नीचे लिखे जाते हैं वे घोड़े असली होते हैं—जैसे अमरबी, ताजी, अरबी, खुरासानी, इराकी, यमन, तुर्क,

तातार, खुतन, अदन, चोन, मा चोन, तूरान, काबली, काश्मीरी, ईरानी और मरायल और जो हिंद में हैं वे ये हैं—काठियावाड़, भोटिया, रंगपूर, घोड़ा घाट. जहां कि छोटी खूंटी का होता है और इसकी ये आदतें हैं कि जब तक तुम खबरदार न करले तब तक न कानों को दबावे न दांतों से काटे न दुलत्ती मारे ॥

End :—

॥ तेईसवां नुकता ॥

जो घोड़ा मुंह जोरी करे उसका इलाज ॥ चिरचिरे को जला फिर इसकी का पानी मिला दहाने को पांच छे बार बुझावे ॥ दूसरी ॥ लकड़ी का बाल जला कर बुठीके होवे उन्हें गुलाब में घोल कर फिर उसी गुलाब में दहाने को सात बार बुझावे फिर उसी लगाम को लगावें ॥

॥ चौतीसवां नुकता ॥

जो घोड़ा दो पैरों से खड़ा हो जावे उसका इलाज ॥ सवार को चाहिये कि तर कपड़ा अपने पास रक्खे जब घोड़ा खड़ा होवे तब पानी कान में निचोड़ देवे ॥ दो चार दफा ऐसा करने से आदत छूट जाती है ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—प्रथम अध्याय लुप्त।

(२) पृ० ५ से पृ० ३८ तक—किस्म तथा कुम्मैत की पहिचान, अन्य रंगों के घोड़ों की पहिचान, घोड़ों के सौन्दर्य की पहिचान, शकलों की पहिचान, दोषों की पहिचान आदि।

(३) पृ० ३९ से पृ० ८६ तक—बीमारी के भेदों का वर्णन, बीमारियों की पहिचान; वात, पित्त और वायु की पहिचान; मूत्र परीक्षा, आंख की बीमारी तथा उसका इलाज, मुख संबंधी रोगों का इलाज, कोलास वामनी का इलाज, सुर्खा और सोना बंद आदि का इलाज, बेल बद नाम और खिनाम का इलाज।

(४) पृ० ८७ से पृ० १२२ तक—किरम का इलाज, पट्ठे फड़कने, वाय करने, बीर हड्डी, इन्दमाल, बजरहड्डी, जानुप, हड्डे, मोतड़े, पुस्तक और चकवल का इलाज, वेजा और काने का इलाज, रसौली, सुम सम्बन्धी आपत्तियां—खुर्दगाह, कमर व पीठ के रोगों तथा सूजनों का इलाज, लिंग व दुम संबंधी रोगों की आपत्तियां, खुजली वगैरह अन्य प्रकार के इलाज नाक, दांत और जबान सम्बन्धी रोगों के इलाज, कुरकुरी का इलाज, तप का इलाज।

(५) पृ० १२३ से पृ० १७० तक—दुआ और तावीज घोड़ों के बांधने, छोड़ने और खिलाने पिलाने सम्बन्धी कुछ आदेश। हाजमे आदि के चूरन व मसाले, कुछ जुलाब और दस्त बंद करने के नुसखे। बच्चे लेने और हमल क़ायम करने की तरकीब, मालिश करने की तरकीब, मरहम बनाना।

(६) पृ० १७१ से पृ० १८० तक—दलालों की बोली और हिकमत।

(७) पृ० १८० से पृ०............तक—लुत।

No. 483. Gitā Gadyānuvāda. Leaves—96. Deposited with Paṇḍita Durgā Prasāda Tivāri, Bandha (Varipāl).

Beginning :—वैापुत्र ॥ कोई तनै महारथी पांडवनको तरफ़ के हैं अरु हमारो कोइ केई ते तुम सुनहु ॥ संजय उवाच ॥ तब संजय रोषो सुर राज धृत राष्ट्र सुसों कहत हैं ॥ के सुनो हो राजा कौरौवन का स्यान्या दिषैं सब दल न्यारा छोड़नो जुरत भये ॥ छत्र धारो मुकट बंद राजा जर जोधनको तरफ जुरेहैं कुरछेत्र दिषे ॥ तिनमें महारथो कहो जत है ॥ ते तुम सुनहु ॥ तब राजा जर जोधन अरु राजा दुस्सासन और भग दंत राजा और राजा करन और राजा कौरत अरु राजा वरम अरु राजा संल। अरु राजा भीषम पितामह अरु दोना चारज गुरु सो इतने महारथी जर जोधन की तरफ़ भये ॥

End:—रात बादो काहुलों हेत वैरु न करै वन तप॥ साँचैा बोले जाके बोले और कैा काज होइ अपुन पढ़ै और पै पढ़ावै सो वन रूप तप कहावै॥ अथ मान तप ॥ मन प्रसन्न इन्द्री वस्य॥ सत्य बादो मैाजसैा रहिजे तासैा मान तप कहावै ॥ राजसो कहियतु है ॥ श्रद्धा कोनै फल कीऊन बांछो ये सातु कमाव तप कहिये ॥ अपने तपकी बड़ाई करै दंभ लालचो सुताकैा राजसो तप कहिये ॥ अथ तामसी तपु ॥ हठ धर्म कोजै और कैा दुष होइ अपने सरोर कैा सुष होइ सो तामसो तप कहावै अथ तोंन भांति के दान क ··· ···· ···· इति ॥

No. 484. Grahaṇo-kī-Pothi. From Samvat 1927 to Samvat 2012. Leaves—32. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871, Samvat 1931 or A. D. 1874. Deposited with Paṇḍita Badriprasāda, Village Navinagara, Post Office Laharapura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ श्री पार ब्रह्मसच्चिदानंदायनमः ॥ सबै चन्द्र ग्रहण लिष्यत। संवत् १९२९ वि० से संवत् २०१२ वि० तक ॥

चंद्र ग्रहण

संवत् १९२२ शाके १७९४ वैशाष १५ बुधे ५८। ५३। १०८ चक्र ३२ वारचिः १। १०। ११। ४५ मः ५७। २८ चंद्र ७। १०। ११। ४५। ८। ३४। ३९। राहु १। २२। ११। २८ व्य. ११। १९। ००। १७ भुज १०। ५९। ४२ शर १७। १६६० चं।

चि० ११। १६। कु २९। ११ मा. ब. २०। १३ ग्रास २। ५७ स्पर्श। ५६।
१० मोक्ष १। ४ चउ ४। द. चाउ. २। ५७। ५। ५४

सूर्य ग्रहण

संवत् १९२९ वि० शाके १७९४ उदट ३० गुरौ ४। ४९. १२३ चक्र ३२ रविः
१। ३३। १५३। ५७। १३ चद्र। ११२३। ३। ५३।७४। ३। २१॥ राहु १। २०
२७। ४। व्यः २। ३६। ४९ लंबन ३। ३१। सू. स्पष्ट शरद। २४ द. म. वि. १०।
२४ चं वि. १०। ३ मा. ब १०। १३। ग्रास ३। ४९ स्पर्श ५८। ३९ मोक्ष. २।
४० व ४. ३। २४ उत्त चाशा. ४। ४४। ४। १६

End :—

सूर्य ग्रहण

संवत् २० १२ साके १८७७ आषाढ ३० सं० मो० ११। ३८४. २३। ३९
च रविः २। ४ ।४२। ५२ गतिः। ५७। २ चं. २। ४। ४२। ५२ गट। ५। २ रा.।
८। ३। ९। ६॥ व्य. गु.। ६। १। ३। २। ४६ वि भोग। ६९। ९ लं. २। ३५
सु. स्व. ८ शर ५। १३ वा न्य सू. वि० १०। २१ चं. वि. ११। ३१ मा. स्व. १।
५७ मा. ५। ४४ वि. २। १६ स्प.। ५। ५१ मोक्ष १२। ३९ व. ५ २। ५८ उत्त
षा. ५। ३६॥

चंद्र ग्रहण

संवत् २०१२ शाके १८७७ कार्तिक १५ भौमे. ३९। १८ ४ २५. १ चक्र ३९
रविः ७। ७ ३१। ४६। ५६.। ५५ चं. १। १३। १०। ५६ म. ८४९। ४७ राहु ७।
२४। ३२। २५ स्यः १७। १८। ३८। २० भुज ११। २१। ३९। शर १७। ५१ या.
चं. ११। २९ कु २९। २३ मा. २०। २६ या. २। ३५ वि २। १७ स्व. ३७।
२१। मोक्ष ४१। ५५ बल. १। ३७ उ. षा. शा २। ५॥

इति ग्रहणावली संपूर्णम् समाप्तः लिषतं हरदोई निवासी पंडित शासीराम
सं० १९३१ वि.।

Subject :—संवत् १९२९ वि० से सम्वत् २०१२ तक के सूर्य और चंद्र
ग्रहण वर्णन।

No. 485. Grahaṇo ki-Pustaka. From Samvat 1929 to Samvat 2012. Leaves—40. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871—Samvat 1934 or A. D. 1877. Deposited with Paṇḍita Gaṅgāvishṇu Jyotishī, Village Banthara, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः । श्री पार ब्रह्म सच्चिदा नंदायनमः । सूर्य चन्द्र ग्रहण लिष्यतेः ॥ चन्द्र ग्रहण संवत् १९२९ शाके १७९४ वैसाष १५ बुधे ५९ । ५८ । १०८ चक्र ३२ ता रवि १ । १० । ११ । ४५ ग. ५७ । २७ चन्द्र ७ । १० । ११ । २७ ॥ ८३४ । २९ राहु । १ । २१ । ११ । २८ ·ग· । ११ । १९ । ०० । २७ भु· १० । ५९ । ४३ षार १७ । १६ । द· चं· वि· ११ । १६ कु· २९ । ११ म· खं· २० । १३ ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । ३९ मोक्ष २ । ४७ मं ८ ३ । २४ उत्त याम्य २ । ५७ । ५ । ५४ ।

सूर्य ग्रहण संवत १९२९ शाके १७९४ ज्येष्ठ कृष्ण ३० गुरौ ४ । ४५ १२३ चक्र ३२ रविः १ । २३ । ३५३५७ । १३ च· १ । २३ । ३ । ५३ । ७४ । ३ । २१ रा· १ । २० । २७ । ४ व्यय २ । ३६ । ४९ । लंबन ३ । २१ क्र स्पष्टशर ६ । ३४ द· म वि १० । २४ चं· वि· १० । ३८ ग्रा· ब १०५ । २३ । ग्रास ३ । ४९ स्पर्श ५८ । ३९ मोक्ष २ । ४७ व· ८ ३ । २४ उत्त ४ । ४४ ४ । १६

End :—(चंद्र ग्रहण) संवत २०११ वि· शाके १८७६ षषाढ़ १५ बुधे । ३४ । ४२ चक्र ३९ रवि २ । २९ । २६ । १४ गतिः ५७ । चं· ८ । २९ । २६ । १४ गति ७७९ । ५३ रा । ८ । २१ । ७ । ४७ व्यगुः ६ । ८ । १८ । २७ शर १३ । २ याम्य चं० वा १० । ३२ । कुं २६८४४ मा खं १८ । ३८ ग्रा० ५ । ३६ स्थि· ३ । २० स्प० ५६ । ५८ मो० ३ । ३८ च०४१ । १ द· याम्य ४ । १८ ग्रस्तास्तम् ॥

(चंद्र सूर्य ग्रहण)

सं० २०१२ शाके १८७७ षषाढ़ ३० सोमे ११ । ३८४·२३ । ३९ चं० वि· २ । ४ । ४२ । ५२ । ग· ८५० । २ रा· ८ । ३ । ९ । ६ । व्यगु ॥ ६ । १ । ३ । २ । ४६ त्रि भोन ६९ लं· ९ । २ । ३५ सु· स्प· ८ शर ५ । १३ याम्य म वि· १० । ११ चं· वि· ११ । ३१ मा· खं· १० । ५७ ग्रा· ५ । ४४ स्थि· २ । २६ स्प ५ । ५१ मो· १२ । ३९ वं ८ २ । ५८ उत्त· या· ५ । ३६ ॥

(चंद्र ग्रहण)

सं० २०१२ शाके १८७७ कार्तिक १५ भौमे ३९ । १८ ४· २५ । १ चक्र ३९ रवि ७ । ७ । ३१० । ४६ । ५६० । ५५ चं· १ । १२ । १० । ५६ ग· व ४९ । ४७ राहु ७ । २४ । ३२ । २५ व्य· १७ । १८ । ३८ । २० भुज ११ । २१ । ३९ । शर १७ । ५१ या चं वि ११ । २९ । कुं· २३ मा· २० । २६ ग्रा २ । ३५ स्थिर २ । १७ स्प· ३७ । २१ मो० ४१ । ५५ सु· लं· १ । ३७ उ· याम्य २ । ५ ॥ इति श्री लोकोपकारार्थं कृत ग्रहणा वली सनातन मिती माघ सुदी १५ सं· १९३४ वि० ।

Subject :—संवत् १९२९ से संवत् २०१२ वि तक सूर्य ग्रहण वर्णन ॥

No. 486. Haratāla Śodhana. Leaves—8. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—हरतार लेइ ताकको पांच पन सूत एक पल वहि विधि घालु। बल डारि घसि कलो करै एक पहर ज्यों चति बरराइ ॥ ता पाछे गोबो के पान नीर काढ़ि कै छान॥ वास सो खरै यहि भांति बारह पहर आर जब बीति। बहुरि सुपे के सीसो भरै। मुद्रा कै पुनि सुघन धरै। यंत्र वालुका मे सो धरै। आगि पहर छे मदो करै पुनि चढ़तो चढ़तो देइ आगि। सोइ पहर रैन दिन जानि आठ पहर जो छो चैन को ऐसे सीसो सीतल होइ। तब सीसो देखिये उतारि सातु पासे डारि लागै नारि। लोजै फोरि कहरो फारि फिरि वाको रस बल बहोरि परछै फेरि पाछिलो मर जाद। संख्या तैसो कहो है आदि।

End :—याको है पन्द्रह को आगि पुनि औषधि उडि लागै नारि। बहुरि पलके ग्यारह जाय ग्यारह पह आगि दे काम। इहि विधि पहर व भाखी चौदह सोसो बैसाइ। यहि विधि तार तन सिंध जो होइ चौदह दिन तंदुल भरि खाइ नासै कुष्ट बुरो बताई। तोन्यो ज्वर तेह संन्यपात ॥ अपस्मार छिन लागै आत और बात चौरासो जाइ आप ते सब नासे हेते। जे सुभ कर्म होइ ते तने। स्वे स्वेत हार के विचनै जो तर्रार वैठैं हरतार तो नीचे हूटै करतार ॥१॥ लेहसार तार टंक चालीस। धात्रो गंधक मासे २० दोऊ बांटि जु रस के धरै। घृत सान के चदिया करै। चुपरि लुहेडा धरिये माहि दस पल घृत मैं लिये ताहि। आगो धरो द्वै मदो करै पुनि उताकै सीसो भरै। जायराती दीसै हरतार तब उतरि कै पानो घालु। ताल केरिया नाम याके खाये बाढ़ै काम तेइ सम्य चौरासी वा पीर बैगैर रक्त विकार ॥२॥ अथराग विधि मदा-रागु भरिये ऐसे सामानि को बरनौ तैस। रागु धरिया देइ चढ़ाइ ॥ तामे दे ऊनवाइनि आइ। ढाक लकरिव दारै सो पहर द्वै मै भस्म जो होइ। ऐसो भांति मंगल जानि ऐसेई धयिलो की काकाटि २ के खपरा घालि उजल मांहि होइ गे। बंगु या खाये वनिता सो रंगु। राग पत्र कोजै पातरै। सोय व चियरन मोठे धरै पुरत परन द्वै वेडै बैसे गेद धरैं राग पल ५ चियारा पल २० ।

Subject :—हडगल के शोधने की विधि।

No. 487. Hastarekhāvichāra. Leaves—3. Deposited with Rāmaprasāda Murau, Village Purāviśrāmadāsa, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्री मते रामानुजायनमः
अर्था तः से प्रवक्ष्यामि हस्त रेषा विचारणं ॥ दक्षिणे पुरुष स्यैव वामे वाम कर- स्त्रया ॥ १ ॥ शिवा कंतत्र सामुद्र कर रेषा शुभा शु शुभं स्त्री पुरुषो वापि

सामुद्रिक लक्षणं जथा ॥ २ ॥ जस्य मीन समा रेषा करम सिद्धि श्च जायते धनाढ्यस्तु सविज्ञेयो बहु पुत्रै न संशयः ॥ ३ ॥ तुला ग्राम तथा वज्रं कर मध्ये च दृश्यते तस्य वनिज्य सिद्धिस्या स्पुरुषस्य न संसयः ॥ ४ ॥ पद्म चांपादि ग्रङ्कंच घट्ट कोणादि स्त्रियो पुरुषो वापि धनाढ्यस्य सुखो नरः ॥ ५ ॥ शंख चक्र ध्वजा कारो गदा कारोच दृश्यते सर्वं विद्या प्रदानेन बुद्धिमान नरो भवेत् ॥ ६ ॥

सात आदि अरु अंत दस, इतन शंख लपाय।
राजा कहिये दास को, चढ़ै निशान बजाय ॥ १ ॥

एक सीप धन वंत नर, चारों ताही जानि।
चारहु ते जो अधिक है, महा तेज सो मानि ॥ २ ॥

पहुंचा रेखा एक राजा गति जानिए।
पहुंचा रेखा दोय बकता बषानिए।
पहुंचा रेखा तीन महा सुषधाम है।
पहुंचा रेखा चारि दरिद्री नाम है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

हरियर नष जा पुरुष को, सो पापी जिय जानि ॥
सदा दुखी वह नर रहै, सामुद्रिक मत मानि ॥ ४ ॥

जासु पुरुष को सुरुष नष, तेजवंत सो होइ।
महा दुखी सो जानिए, श्यामित रंग नष कोइ ॥ ५ ॥

× × × ×
× × × ×

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—संस्कृत में हस्तरेखा का फलाफल वर्णन।

(२) पृ० २ से ३ तक—हिन्दी भाषा में उक्त विषय का पद्यानुवाद।

(३) पृ० ३ से ४ तक—संस्कृत में कन्या तथा स्त्री की हस्तरेखाओं के फलाफल का वर्णन।

(४) पृ० ५ में—मणिबंध नामक हस्तचित्र।

No. 488. Hitopadesa. Leaves—54. Deposited with Rāmagopāla Vaidya Murāū of Alīkātāla, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

दोहा—भावी मिटै न भाव की, कारन कहेन पाय।
नील कंठ नागे फिरैं, यदि सोवत हरि आय ॥

विद्या वित यह आयुबल, मरन जन्मये पांच ।
गर्भनये विधि लिषत है, नर नारिन के सांच ।
अनहोनी होनी नहीं, होना होय रहै न ।
यह चिंता विष हर बड़ो........द्ये....न ।

॥ चौपाई ॥

जो कारज को आतम होई । यहि विधि वचन कहैगो सोई ॥
आरजन करत आयु बलसाई । ताको संपति रहै न जाई ॥
येक आकृगत रथनहि होई । पुरुषा रथ धन लहै न कोई ॥
पूर्व जन्म कियो सो धर्मा । सोई भाग्य कहावै कर्मा ॥
ताते भाग्य चहो अनुकूल । जतन करो पुरुषारथ मूल ॥
ज्यों माटी करता कर लेइ । कोन्हौ चहै सोइ करि देई ॥
यह उपषान लोग सब गावै । जैसा करै सोतैसा पावै ॥

॥ दोहा ॥

भाग्य भरोसे मंद कह , पुरुषारथ तजरोष ।
जतनकिहे जो ना मिलै , तो ये है निज दोष ॥

End:— पृष्ठ—१०८

राजा कहो कथा यह कैसो । वायस कहो सुनो है जैसो ॥
कहुं येक वन पन्नग रहै । मंद विसर्प नाम तेहि कहै ॥
सो असक्त मधु ठेठि न सकै । परयो ताल तीरहि सब तकै ॥
देषि दूरि दादुर कह्यो । क्यों परिहर प्रय सन तुम गह्यो ॥
कहो सांपु सुनि दादुर जैसे । मंद भाग मेरो यह है.... ॥
पुनि दादुर सादर ह्वै कहो । कहो कहा मनमें तुम चहो ॥
वृथा कहन पन्नग तब लई । जो अपने सुभाव ते भई ॥
बसे ब्रह्म पुर कौड़िय नाम । ब्राह्मन ब्रह्म तेज को धाम ॥
बीस वर्ष को वाको बालक । मद काटा सब गुन को पालक ॥
छह्मन मुये किये द्विज सोक । आये सुनि सब बंधन लोक ॥

रन में दुष में दुभिष में,
राज दुआर मसान ।
आड़े बेर विरोध में,
टिकै सो बंधु प्रमान ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २ तक—लुप्त ।

(२) पृ० ३ से पृ० ६ तक राजा का विष्णु शर्मा से अपने पुत्र के मूर्खत्व को समझाकर उसके विद्याध्ययन संबंधी प्रस्ताव को रखना। विष्णु शर्मा की स्वीकृति तथा बालक को विभिन्न कथाओं का सुनाना। राजनीति की कथा सुनाने की प्रतिज्ञा।

(३) पृ० ६ से पृ० ३८ तक मित्र लाभ की कथा। वायस, कपोत, मृग तथा चूहे की मित्रता के लाभ की कथा।

(४) पृ० ३८ से पृ० ६८ तक—सुहृद भेद। वृषभराज तथा मृगराज की कथा।

(५) पृ० ६८ से पृ० ९६ तक—विग्रह की कथा, तृतीय प्रबन्धः—चित्रवर्ण मोर तथा राजहंस की कथा।

(६) पृ० ९७ से पृ० १०८ तक—संधि कथा वर्णन (अपूर्ण)।

(७) पृ० १०९ से आगे—लुप्त।

No. 489. Hori. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Lakshmikānta Koṭhivāla of Basuāpura, Post Office Lakshmīkāntaganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— होरी ॥

साधि चलौ तुम स्यामरो जग होरी मचि रही है भारी ॥
किम पार्षद लये कर में डफ ढोल बजाई बड़की तारी ॥
त्रिगुन तार तमूरा बाजे आस तिगुना मतिधारी ॥
पाप पुन्य दोउन पिचकारी छोड़त है बारी बारी ॥
जे नल सन मुष होकर पेठे तिनको छींट लगी कारी ॥
लोभ मोह अभिमान भरे है गंगा ऊपर डारी ।
राजापरजा जोगी तपसी भीजि रही सबही सारी ॥
कुबुधि गुलाल डार मुष मोड़ी काम कला पुटरी मारी ॥
छुम छुम षेलन सौ चलि आई काहू सौं नाहीं हारी ॥
जड़ चेतन दो रूप सम्हारे एक कनक दूजे नारी ॥
पांच पचीस लये संग अबला हंसि हंसि गावत है गारी ॥
चुतुरा नर दै फगुवा छूटे मूरष को लागत प्यारी ॥
चरनदास सुषदेव कहत हैं निरगुन ग्यान गली न्यारी ॥

End :— ॥ होरी ॥

होरी षेलत कुंज बिहारी हेर हो बिहारी ॥
सघन कुंज वन सोवट फेंट छुरि आई ब्रजनारी ॥

हंसि मुसिक्यात कहत प्रीतम सौं खेलहु फाग खिलाड़ी ॥
खिलाड़ कहावत भारी ॥ चोवा चंदन अतर अरगजा ॥
कुम कुम केसर गारी अबीर गुलाल लिये भर झोरी ॥
कर कंचन पिच कारी चले सनमुष बनवारी ॥
तकि चीर चोट करत कुम कुम की भिजवत अंतरंग भारी ॥
मानहु जलद घटा भर भादौं बरसत अति सुष कारी ॥
संग सब गोप कुमारी ॥
भया नंद मगन मनमें हंसि राधा सुमति विचारी ॥
गहि किन लेहु वेगि मन मोहन भाजे नहिं आदि मुरारी ॥
करी बस मैं हितकारी ॥ छलकर कपट गहेनंद मगन ल्याई भुंड मभारी ॥
बेंदी सिर इन अंजन आंजो निरंजन मांग सम्हारी ॥ नचावत दै दै तारी ॥ फगुआ लेउ कहत हरि हंसि हंसि जो मन आस तुम्हारी ॥ दरस बरस चाहत हरि अंतर कोविद आस तुमारी करहु कबहुं मति न्यारी ॥

Subject :—

पृ० १ से ४० तक—विविध सन्तों द्वारा रची गई होलियों का संग्रह।

No. 403. Hridaya Prakāśa. Leaves—16. Dated in Samvat 1779 or A. D. 1722. Place of deposit B. Rāma Manohara Bichpuriyā, Purāni Bastī, Katni Murwārā, Jubbulpore (C. P.).

Beginning :—श्री जुगल कीशोरराय नमः श्री हिरे प्रकाश ग्रंथ लिषिते ॥

दोहा—छंदें साहि के सुतसय ॥ प्रेम चंद आनंद ॥
तिनके भुव भागोल हुव ॥ तिनको चंपति नंद ॥ १ ॥
चंपति संपति जक को ॥ लीन्हे दीन्हे दान ।
गाढ़े दाहैं मुलक सब ॥ माढ़नि सुकरि थान ॥ २ ॥
चंपत के छत्र शालउव ॥ तासुन अपर पार ॥
मारन कलि अयांन को ॥ भयो ज्युं बुध अवतार ॥ ३ ॥
प्रान नाथ सनाथ कोय ॥ छत्र शाल सुत जान ॥
हिर्दै हिर्दै साहै कौं ॥ दीन्हो भक्ति निदान ॥ ४ ॥
अथ सत गुरु श्री देव चंद बरनंन ॥ दोहा ॥
उमर कोट उह नगर है ॥ दिसा पछिम सुभ धाम ॥
दया धरम अति नरन कें ॥ संत लेत बिसराम ॥ ५ ॥
काय्थ कुल में प्रगट हुव मत्तू महता जानि ॥
श्री देव चंद तिनकें भय ॥ धाम वासना मानि ॥ ६ ॥

End :—वेद कहत बुध ग्यान कूं, देषत लगत भयान ।
अति गंभीर गहरो कह्यो, काहूवें नहीं जान ॥ २५२ ॥
यह समया सों कहत हैं, सब पर एकइ इष्ठ ।
विसद भाव तातें कहैं । सब के वोयक ईष्ट ॥ २५३ ॥
अद्वैता कहते दूसरे । दूसर सोहन और ।
ज्याकूं जैसा ग्यान है । ताकों वस तिहि ठौर ॥ २५४ ॥
× × × ×
संवत सत्रे से सहि । प्रगट उनासी साल ।
वसंत पंचमी माघ को, पूरन ग्रंथ कृपाल ॥ २५६ ॥
माया पुरी मुकाम है, सब विधि अधिक अनूप ॥
ताही में दस दिसन के, वसत धर्म को भूप ॥ २५७ ॥
संपूरन शुभ अस्तु रचो लिख्यो जो ग्रंथ बनाई ॥
प्रेम नेम श्री कृष्ण पन श्री हरेस गुन गाई ॥ २५८ ॥
ग्रंथ संपूरन ॥ श्री श्री श्री बावा वेनीदास के चेला ।
श्री श्री श्री बावा लालदास ॥ तिनके चरन रज श्री बावा
स्याम दास कृपा तिनको ॥ लीषतं ग्रंथ संपुरन समा पतम ॥ २५९ ॥

Subject:—सृष्टि निरूपण तथा आत्म ज्ञान का उपदेश ॥

No. 491. Indrajāla. Leaves—12. Deposited with Ṭhākura Badrisiṁha, Jamidāra, Village Khānīpura, Post Office Talābabakaī, District Lucknow.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ इन्द्र जाल लिख्यते: असुनी नक्षत्र पाइ सुनु वार वारहि वारवोगस जो अंगुल लाऊ कलार घर धरि आऊ । तुरत विनिसि मद जाय ७ अंगुल जो द्वादस जान । करि लेहु सुजान प्रमाण ॥ पटवा के घर धरि आवै तव पटवा रुधिर आई । कह इन्द्रजाल सुनु भाइ सुनि लेहु कविन को राइ । भरनी नक्षेत्र करौल अंगुल एक कोल धरु न ऊका बोच मध्य भलाई । तव नऊका पार न जाइ । यह गुप्त मंत्र विचित्र सुनु राघु अपने चित्त कृतिका नक्षत्र मद नाई । जम्बू को लकडो लायू, कैतिका करे उपाइ । नहिं नाव आवै सुद कछू न लागै हाथ ॥

End :—आषाढ़ नक्षत्र कह अम्बक बांदा लाइ । कटिवांधै नर अपने गुल्म बवासीर जाइ । अब सुनु श्रवन नक्षत्र कह बर बस बांदा मित्र बांझ पियन कह दोजिये गर्भ धरै सुनु नित ॥ २९ ॥ सुनहु धनिष्ठा कर अब भेदा । मुनि सन बिहंसि कहहि हरिदैया जब कर बांदा बहु सुभ आया । बुद्धी नित्य गृजासन मन माया बाढे हाथ धनो पुनि होई । जाने चतुर मनुष्य जो कोई । बोर रोहणी

कर भेद बतावो । सुनु मुनि तुम सन कछुन दुरावे ॥ महुवा कर वांदा छै आवै शिउ रात्री कह आनि जगावे ॥ कटि बांधा स्त्री कै जबही । भ्रम न होय सुनहु मुनि तबही ॥ दोहा ॥ उत्रा नक्षत्रहि आनिये । पीपर बांदा सोय ।

लै बांधै कह आनि नर रक्षा मोहन होय ॥ अनुरावा

No. 492. Indrajāla (Mantrāvalī). Leaves—43. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarī Prasāda Miśra, Teacher, Saṁskṛita Pāṭhaśāla, Village Goṇḍa, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेस जी सहाये श्री सरस्वती जी सहाये श्री काली जी सहाये । श्री पोथी इन्दर जाल मंत्रा वली लिख्यते ॥ मंत्र जपने की विधि ॥ इन्ह मन्त्रों का जप कोई मनुष्य किया चाहे ता उसको चाहिये कि पहिले अपना बन्दोबस्त इस तरह से करे कि जहां मंत्र जपे उस स्थान में दूसरे मनुष्य का न आने दे ग्रैार अपने चारों तरफ धूप दीपक ग्रैार अतर मींठा रक्खे फूल पान ग्रैार इस मंत्र का पढ़के अपने ऊपर फूंकले ग्रैार तीन लकीर खैंचले ग्रैार जब तक मंत्र का जपे आसन से न उठे ग्रैार न किससे बोले ग्रैार न उस कूंड लकीर से बाहर निकले फिर मंत्र का जब जप पूरा हो जाये उस वख्त जो वीर बोले तो उसका उत्तर देना चाहिये ।

मंत्र

हाथ बसे हनुमंत भैरों बसे लिलार जो हनुमत टीका करैं मोहैं जग संसार ॥ जो आवे मारमार करंता सो होवे पांयन सेवा हनुमंत वीर पंजाद रहे महम्मदा वीर खाली तोड़े अगनी घा वीर मारन्त समंत करे नारायन सींघ वीर प्रगट साजे भैरों वीर को आनकीरती रहे जो हमारे ऊपर घाव घाले उलट हनुमंत वीर उसी का मारे जल बांधु थल बांधु बांधु अंतर ताया मन बांधु तन बांधु बांधु कुटुम ग्रैार काया चेत चेतर आनी हनुमंत वीर आया चाह तरफ सवाई तपै लोहा कच पड़े धाह लाल चक चंकी असमान छाया । हांक ललकार हनुमंत की अगिनि पानी हो जाय महाराजाधिराज बाब साहिब सत्य के पुत धर्म के नाती तुम्हारा हो आसरा है

End :— ॥ राज वसी करनम् ॥

ग्रें नमो भास्कराय त्रैलोक्य तमने अट्के महीपते मम वस्यं कुरु कुरु स्वाहा

॥ विधि ॥

इस के पुष्प रविवार का लाये इस मंत्र का पढ़िके पुष्प का राजा का सुघावे तो बसी होवे ॥ इति ॥

श्री पाथी इन्द्रजाल संपूरन समाप्त जो पत्र में देखा सो लिखा मम दोष न दीजिये पंडित जन सो विनती मोर टूटल चच्छर लेव समझारीः दसपन है देपालदास का मोकाम कलकत्ता जान बजार केरी स्कूल स्ट्रीट ११ नंबर दोकान के मालिक पंचमराम कुरमी ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—मंत्र जपने की विधि। बला से बचने का मंत्र और उसकी तरकीब। वीर सिद्ध करने का मंत्र तथा उसकी विधि। चैाकी मोहमदा वीर को और उसकी तरकीब। इस चैाकी के उपयोग। चैाकी सैाका वीर, विधि तथा उपयोग सहित।

(२) पृ० ९ से पृ० १८ तक—चोरों का अंजीरा, विधि तथा उपयोग सहित। भैरों की चैाकी। जिन्नों तथा नबियों की हाजरात। नाहर चोर तथा बिच्छू आदि बांधने का मंत्र। मुठी पार की चैाकी। चैाकी हनुमन्त वीर, डाकिनी आदि बकराने (तजगने) का मंत्र। मंत्र सर्व सुख दाता। सर्वोपरि मंत्र-तंत्र। मंत्र देह रक्षा का। मंत्र इन्द्रजाल।

(३) पृ० १९ से पृ० ४० तक—रसायन का मंत्र। ऋद्धि-सिद्धि का मंत्र पृथ्वी में धरा धन दीखने का मंत्र, पृथ्वी खादने का मंत्र तथा तरकीब। मंत्र देह रक्षा का आप। मार्ग में सांप, चोर, नाहर से बचने का मंत्र। मार्ग बाघ के बांध देने का मंत्र, आफत टलने का मंत्र। हन बंधन का मंत्र। मेघ स्तंभन मंत्र। उद्यम प्राप्त होने का मंत्र। दरिद्रता नाश करने का मंत्र। रोजी प्राप्ति का मंत्र। किये कराये के उतारने का मंत्र। रक्षा मंत्र। समस्त पीड़ा का मंत्र। दांतों के कीड़ों का मंत्र। नेत्र की फूली कटने का मंत्र। नेत्र की रोशनी करने का मंत्र। नेत्र दुखने का मंत्र। नेत्र रोग का मंत्र। पेट की पीड़ा का मंत्र। डाढ़ की पीड़ा का मंत्र। प्लीहा का मंत्र, पसली पीड़ा का मंत्र। गर्भ स्तंभन मंत्र। बवासीर का मंत्र। अन्न पचने का मंत्र। आधा सीसी का मंत्र। जहर उतरने का मंत्र। नगरा का मंत्र। बिच्छू का, बावले कुत्ते काटने का मंत्र। गाय भैंस के कीड़ों का मंत्र। सांप काटने का मंत्र। मार्ग में आराम पाने का मंत्र।

(४) पृ० ४१ से पृ० ६४ तक—पशु का कीड़ा झाड़ने का मंत्र, पैर थकने का मंत्र। शत्रु मुख बंधन मंत्र। सर्व मोहनी मंत्र। सुई छेदने का मंत्र। बवासीर फुटने का मंत्र। बाजीगर के तमाशे का मंत्र। कड़ाही बांधने का मंत्र। हांडी में आग न लगने का मंत्र। तुपक बांधने का मंत्र। तलवार बांधने का मंत्र। घर बांधने का मंत्र। घाव पुरने का मंत्र। अनी बांधने का मंत्र। भानमती के अन्य खेल। अग्नि बुझाने का मंत्र। जंत्र मंत्र और तंत्र तीनों के दूर करने की तरकीब। रोजी मिलने तथा धन की वृद्धि होने का मंत्र। रोजी व धन बढ़ने का मंत्र। वृद्धि कारक मंत्र। लक्ष्मीजी का मंत्र। कामाख्या का मंत्र। कुबेर का मंत्र (ध्यान

सहित)। मनसा सिद्ध करने का मंत्र। व्यापार सिद्ध करने का मंत्र या व्यापार के द्वारा धन प्राप्ति का मंत्र। उपद्रव नाशक मंत्र। उपद्रव नाशक मंत्र घंट कारिणी। सहदेई कल्प मंत्र। विद्या का मंत्र। पढ़ी हुई विद्या न भूलने का मंत्र। मंत्र उच्छिष्ट गणपति। स्वप्न में कृष्ण का मंत्र। कुश्ती जीतने का मंत्र। कोर्तिवीर्य्य का मंत्र। रुद्र का मंत्र। गणपति का मंत्र। कर्ण पिशाचिनी का मंत्र।

(५) पृ० ६४ से पृ० ८६ तक—अष्ट गंध की विधि। दस मंत्र संस्कार। बटुक मंत्र। सरस्वती मंत्र। जुवा बदी का सर्वोपरि मंत्र। बगला मुखी मंत्र। (न्यास, ध्यान तथा मंत्र सहित)। ज्वालामुखी का मंत्र। महालक्ष्मी का मंत्र। नजर का मंत्र। मूठ थामने का मंत्र। भूतादिक दोष निवारण मंत्र। गंडा बनाने का मंत्र। परियों का खलल दूर करने का मंत्र। किये कराये की रक्षा का मंत्र। भूतादिक दोष निवारण का अन्य मंत्र। ज्वर मंत्र। नकसीर थामने का मंत्र। प्रांख दुखने का मंत्र। सर्प काटे का मंत्र। मृगी का मंत्र। दांत के कीड़े का मंत्र। प्राधा सीसी का मंत्र। बनवासी की रक्षा का मंत्र। जादू उतारने का मंत्र। राज वशीकरण।

No. 493. Indrajāla-Vidyā. Leaves 22. Deposited with Paṇḍita Bhālachandrajī Misra of Śitalanaṭolā, Post Office Malihābāda, District Lucknow.

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ इन्द्रजाल विद्या लिख्यते॥ दोहा॥ इन्द्रजाल विद्या कहीं सुनियों चतुर सुजान। मारन मोहन वसि करन और उचाटन जान॥ १॥

चतुर होइ सो करै नर करै सो चूके नाहि। चूकि जाइ तौफेरि नहि बचै न याहो ताहो॥ २॥ चौपाई॥ विद्या इन्द्रजाल को करै धीरज धरै नयन में हरै॥ मारन मोहन सबै करावै। अपुहि आप बचै औ बचावै॥ फेरि उकन विद्या छाड़ि चलै। कोइक फूल पत रितु में फलै॥ वसी करन उचाटन आनै॥ कोई पैठ पतालहि पावै। कोई आधे सर्ग उठावै॥ कोई करै दिवाना सोई। सब काने देवे कोई बाग बगीचा देवै॥ कोई आइ उर्वसी पेखै॥ कोई जल ऊपर जो धावै। कोई बनरिक फल जो पावै॥

End:—अथ स्त्री को मंगो करने की विधि॥ जो कोई इस्त्री मान करै अब तब ऐसो विधि कीजै॥ आदित बार शनिश्चर हो वे कच्चे डोरा लीजै। चिर चिरैटा लगा लगावै संगत करै जो अबही॥ तब डोरा मे गांठ लई दै जै बेर लड़ी जो तबही॥ वह डोरा को धूप देइ कर कामिन मढ़ि परचावे॥ यह डोरा ताला मे डारै जब यह कामिनि जावै॥ लहंग नयत छूटि परै जब कोटि जतन

कर वावै ॥ वह नहीं वधै वधाये कवहूं सवद गुरु का साधै लैाटि फेरि जार होरा को लहगा बांधि जा पावै ॥ ऐसा जतन दूजे से न कहिये आप जाइ कर घावै ॥ मंत्र मूत्त प्रेत क हनुमंता चलवंता गात कंथा माथे वज्रक कोटा चलो हाको लठो सुने को घानो हक फिरै हनुमंत वूत चो भीम मार भूत मार प्रेत मार डाकनी साकनी मार वड़ा वीर मसान मार पाताल मार जो न मारै तो माता अंजनी दूध पिवा हराम करै अथवा कलाहल अपनो कपाट पुजालो जै अपाना अलध्याय न बंन ध को ॥ इति इन्द्रजाल ॥

Subject :—मारन विधि, अन्य मारन विधि, मारनविधि मंत्र, मोहन मंत्र, उच्चाटन मंत्र, वशीकरन मंत्र, काल भैरव इन्द्रजाल, रिद्धि सिद्धि विधि, कोठी फरन विधि, अलोप अंजन, दीवाना करने की विधि, वैरी का दवा देना, स्त्री को जुवतहकंगो, दरियाव भीतर वैठने की विधि, पानी में नाव थमने की विधि, मर्द वशीकरन, स्त्री के नंगी करने की विधि ॥

No. 494. Jantramantra. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Ramākānta 'Prakāśa', Village Baṇḍā Gaḍavārā, District Pratāpagaḍh (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ ऊं ह्रों ह्रौं ह्रीं ह्रीं ह्रः ॥ वा वा दि नि ॥ सरस्वती मम बुद्धि प्रकास कुरु कुरु स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण सहस्र जाप्यं करोति ॥ तद सांस होम ॥ दसांस त पहा दलांस मार्जसा ॥ सर्वे सिद्धि भवति ॥ जताम्रं तु सनि भवति वग वाचस्य प्रतिमः भवतिमः भवति प्रति दिनः अष्टोत्तर १८ ॥ माप्यं कुरु इति सरस्वती मंत्रः ऊं भुर्भुवः ह्रीं क्लीं सो सो फट स्वाहा ॥ आसन उपदेश मंत्र ॥ कृष्णायनमः ऊं ह्रों ह्रीं मय इचंद्रमा मे सुत्र मन छो भ्यः पापायः रञ्जिताभ्यः स्वाह ॥ जप्य अपोत्तर सत ध्रों ध्रों ध्री ध्री ततः ममः नामः स्वाहा तीनि वेर पढ़े चारों दिसा ताकें धाऊ प्रवेस होइगा ॥

End :—सात सरिसो तेरह राइ नैा सव योगिनि देपि डेराय चंदा देपि मुप धोवै सर्व्व मस्त करौ मसान जो जो मोको चित्त-वैसो सो पावै त्रास सभा वइठि कै वोले दाय जिह्व मारो-नरसोह कै धाप जोगनी माता ईश्वर उवाच मेरी भक्ति गुरु को पाव सरना ॥ देवी सहाय ॥ अगर चंदन कस्तूरी गोरोचन चूर कपूर सो भोजपत्र पर लिप मनोरथ पूर्ण होय ॥

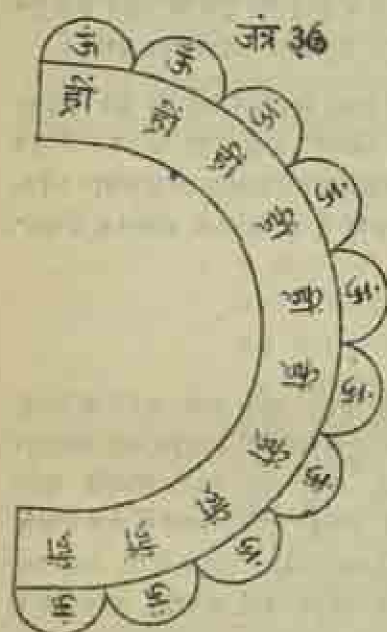
× × ×
× × ×

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—सरस्वती मंत्र, वगद्राक मंत्र, जंत्र (बालक के गले में बांधने के लिये) गर्भस्तंभन, स्त्री वशीकरण, पंन्द्रहा जंत्र ।

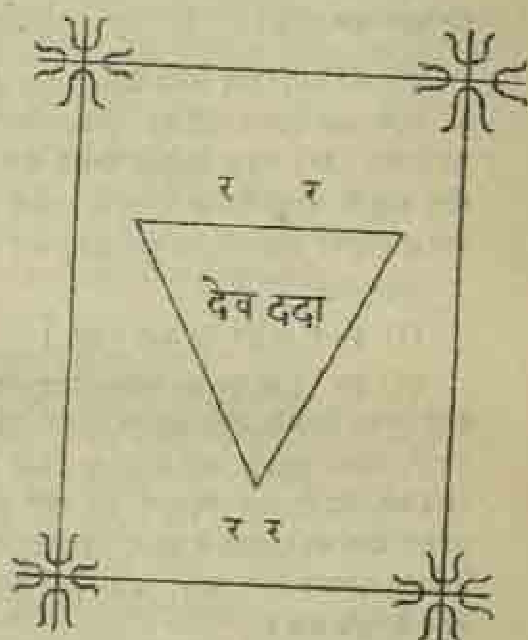
(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—यांव का मंत्र, पर्व कपारी का मंत्र, प्रर्जुन दस नाम, गौ को व्याधि का मंत्र, उच्चाटन विधि, पिशाच मंत्र, गर्भस्तंभन ।

No. 495. Jantrāvalī. Leaves—33. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarīprasāda, Teacher, Saṁskṛita Pāṭhaśālā, Village Gauḍā, Post Office Mādhoganja, District Prātapagaḍha (Oudh).

Beginning :—



मूल नक्षत्र रविवार को इस जंत्र को भोजपत्र में अष्टगंध सो लिख के स्त्री के बायें हाथ में बाँध दे तो गर्भ स्थित रहे गर्भ नहीं गिरे पुत्र होय ।



इस जंत्र को कागपंख से मेढ़े के रुधिर से मसान के कोयले से मुर्दे के कफ़न पर लिखे या मसान के बांस पर लिखे ।

विधि—पुरब को पृष्ठ करके चौराहे के राह में सात अंगुर नीचे गाड़दे तो दोनों मित्र में लड़ाई होगी । उच्चाटन होगा ।

End :—

जंत्र १२३

७६	७३	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	७८	८१

इस जंत्र को माली बाग़ में गाड़े तो बाग खुब आवे।

जंत्र १२४

५९	६६	२	८
७	३	६३	९१
६१	६०	९	१
४	६	६१	६४

जंत्र बकरी के दूध में लिखे जब पुष नक्षत्र होवे तो यह बकरा नाचे।

इति श्री पोथी इन्द्र जाल चैाथा भाग जंत्रा वली सम्पूरन भई जो पत्र में देषा सो लिषा मम दोष न दोजिये पंडित जन सो बिनती मोर टूटा चढ़र लेव सव जोरी सन १३०१ साल महीना बैसाष बदी मोकाम कलकत्ताः जौन बजार घोत-मार बाबू के कोठी का दरवाजा के सामने दोकान है दोकान के मालिक पंचम-रामजु दसषत दयाल दास का सम्पुरन।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० २० तक —लुप्त।

(२) पृ० २१ से पृ० ३२ तक—राज सभा में मान पाने, सर्व कार्य के सिद्ध होने, कुत्ता भैांकने, मट्टी फोड़ने, ढोल फोड़ने, भूत भगाने, दूकान का व्यवहार बढ़ाने, बिक्री बढ़ाने, सर्व मनोरथ सिद्ध होने, ताप बंद होने, सम्पूर्ण कार्य सिद्धर्थ, ऊंट हो ऊंट दिखाई देने, सर्व काम सिद्ध होने, स्वप्न में भूत देखने, धावरा रोग जाने, स्वप्न में बन्दर ही बन्दर देखने, सर्व काज सिद्ध होने, गया पशु लैाटाने, धावरा रोग जाने, कमान का रोदा न चढ़ने, सर्प न पाने, तथा भय न होने के लिये मंत्र॥

(३) पृ० ३३ से पृ० तक—मनोवांछा सिद्ध होने, भूत बाधा न होने, बोध होने, हनुमान देव को प्रसन्न करने, वचन सिद्ध होने, बुद्धि अधिक होने, मन चोता काज होने, शत्रु के यहां क्लेश कराने, काली देवी का प्रसन्न करने, सर्व कारज सिद्धि होने, विद्या बुद्धि होने, डर न लगने, अंबिका देवी के प्रसन्न होने, शत्रु का चित्त उच्चाटन होने, चक्रवर्त्ती वश में करने, नजर लगने, भूख बहुत होने, कामना जागने, पाई वस्तु पाने, ज्वर जाने, मनोकामना सिद्ध होने, प्रेत का भय

न होने, बड़क बायु जाने, मनचीता कारज होने, सर्व कामना सिद्ध होने, बुद्धि नष्ट करने, अति सुख प्राप्त होने तथा भूतादिक दोष दूर करने के लिये मंत्र ॥

(४) पृ० ५१ से पृ० ६६ तक—ऋद्धि-सिद्धि होने, वृक्ष में फल अधिक आने, बैरी को कष्ट न देने, शत्रु से विजय पाने, आपस में लड़ाई कराने, स्मशान जागने, मनुष्य को मस्त करने, बैरी को हानि पहुंचाने, आपस में क्रोध कराने, चुहों के कपड़े न फाड़ने, स्त्री के पुत्र होने, भूत-भय विनाश होने, सब देवताओं के प्रसन्न करने, कुए में जोतने, सभा में सम्मान पाने, शत्रु के शरीर में दुख करने, सर्प न खाने, सर्व कार्य की सिद्धि, अधिक भोजन करने, बाग में फूल बहुत आने, बिच्छू उतारने, भूत प्रेतादिक का भय न होने, किसी तरह की बाधा न होने, बाग सुखाने, तथा बकरा नचाने के लिये मंत्र ।

No. 496. Joganidisāvichāra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pānde of Ghuraha, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ जोगनी दसा को विचार ॥

जन्म नक्षत्र ते आदि दै । अस्वन ते गुन लेय ।
त्रै लोचन है सिस के । ते इकत्र करि लेय ॥
तामें अष्टन भाग हर । बांको लेइ विचार ।
सेष अंस बांको बचे । दसा लेइ ठहराइ ॥२॥
एक अंस को मंगला । दुसर पिंगला जान ।
तीनि अंस धन्या रहै । चारिहु भ्रमरी मान ॥
पंचम नीको भद्रका । षष्टम उलका जान ॥
सप्त अंस सिधा रहै । अष्टम संकट मान ॥
अष्ट दसा छत्तीस लों । अवध द्वार अनुमान ॥
अपने अपने फल करै । अंतर दसा प्रमान ॥

End:— ॥ चन्द्रमा को बासो ॥

पंचम जन्म तीसरो सीस ॥ षष्ठम नमीं गनि के पीठ ॥ अष्ट सातो दसो एकादस हृदै गनोजै ॥ दुजो चौथो हस्त निवास ॥ येहि विधि गनो चन्द्र को बास ॥ अथ फल ॥ माथे चंद्रमा दर्व बढ़ावै । हिरदै चद्रमा सदा सुख पावै ॥ पाइन कर कर पीठ निरास । हस्त चन्द्रमा पुजवै आस ॥

× × × ×

Subject :—(१) पृ० १ से पृ° ८ तक—जोगनी दशा विचार एवम् चन्द्रमा का वास ॥ चक्र ॥

No. 497. Jyotisha Leaves—46. Deposited with Paṇḍita Bāsudeva of Kamāsa, Post Office Mādhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— ॥ छंद गीतिका ॥

अज मीन घटिका तीनि के पल जानिये । इकतालिसा वृष कुंभ वेद बषानिये ।
पल होत तेरह शालिशा———मिथुन मकरहि बान बेदहि दंडु बल ये जानिये
कर्क धन सर बचा हि स सहो ये करि मानिये ॥
सिंह अलि मैं पांच घटि पैतालिसो पल होत हैं ।
कन्यका अरु तुला पांचै पैतिसो पल कहत हैं ।
यह भुक्ति वेद बषानि भाषत छंद है यह गीतिका ।
गनक लोग विचारहिं मन मानि ऐसो रीतिका ॥

× × × ×

चन्द्र मित्र रवि बुध कहे और सकल समभाव ।
शत्रु कोऊ इनके नहीं ऐसो कह्यो प्रभाव ॥२॥
मंगल के यह मित्र हैं, सूर्य्य चन्द्र गुरु पूर ॥
शुक्र सनिश्चर सम करै, बुधहि शत्रु कह क्रूर ॥३॥
बुध के मित्र बषानिये, सूर्य्य शुक्र दुइ जानि ।
मंगर गुरु शनि समहि, चन्द्रहि शत्रु बषानि ॥४॥

End :— ॥ भाषा कवित्त ॥

चन्द्र ते शोधित तीनि नक्षत्र दिवाकर रिक्षन एक न नीके ।
दुइ बंचे भ्रम पंथ करै धन शून्य बचे सब सिद्धि घनीको ॥
वैरी मुंड कर रुंड करै कर बालक थंभ जदा कदली को ।
यह चक्र विलोकि कै दयर करै मघवानहि रच्छत ताहि घरी को ॥
॥ इति डाक चक्रम् ॥

॥ दोहा ॥

रवि नक्षत्र को आदि दै शसि नक्षत्र लै भोग ।
भाग भागिये सात को कहिये आदर जोग ॥
बचे तीनि क्षा सम कष्ट तुम्मे शात कलेश ।
बान (५) बेद (४) ससि (१) जो बचे तव कोजो परवेश ॥
॥ इति दयर चक्रम् ॥

× × × ×

॥ इति मुल चक्र चक्रम् ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ९ तक—राशि मेलनम्, द्वादश राशयः। लग्न मुक्ति प्रमाण, लग्न प्रमाण, राशीश, राशीस चक्र, उच्च ग्रह जानना, चन्द्रबल, स्वांनि, सिद्धि-योग, चन्द्रवास फलम्, भद्रा, ककैच योग, जमघंट, वर्गांनि, वर्गप्रोक्तिः। नाड़ी दोषः। योनि दोष और शत्रु, बुध पंचक, रविबल, गुरुबल, (विवाह प्रकरण)।

(२) पृ० १० से पृ० २२ तक—वधू प्रवेश, द्विरागमन, गर्भाधान, सीमन्त पुंसनकर्म, प्रसूतास्नान, नाम करण, निष्कासन अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, वुपयन्च, विद्यारंभः, हल प्रवाह, बीजोप्तिः, भूमिशयन, पाटः सर्व क्षेत्र द्वार चक्रम्, कूपचक्र, सेवा या प्रवास विचार, राशि राशिके भीतर, द्वार विचार, नवान्नम्, शस्य रोपणाकर्ष मर्दन, चूलिका परिधानम्, पंचक रोगोस्नान, सर्वांक यात्रा, दिगशूलम्, तत्काल यात्रा, तत्काल चन्द्रविचार, नक्षत्र के उत्तम, मध्यम तथा नष्ट होने का विचार, एक मासे पंच वार फलम, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, धाम वास फल, मूल वृक्ष फल।

(३) पृ० २२ से पृ० ४० तक—वार पृविकि, योगन्यास मूल विचार, मूल वृत्ति विचार, शुक्रोदय फल, हुताशन फल, संक्रांति फल, रोहिणी चक्र नर चक्रम्, गोचर फल, नित्य क्षौरः राज्याभिषेकः, भैषज्य कर्म, नरवाहन, गृहदानम्, गुरु विचार, पंचमी फल, पूर्णमास्यांफलम्, राशिग्रह योगफल ग्रहोदय राशि फल, नक्षत्र गुरु फल, एकराशौ ग्रह भुक्तिः, होम विचार, वर्षा नक्षत्र के वाहन, स्त्री पुरुष नपुंसक जोग विचार, वर्षाज्ञान, गर्भज्ञान, छींक विचार, दिग-शूलेन वारणम्। कंडा रखने का विचार।

(४) पृ० ४० से पृ० ५८ तक—जातक भाषा, लग्न का रंग, लग्न प्रमाण जानना, राशि तत्व, लग्न उदय ज्ञान, राशिनाम, क्रूर ग्रह, उच्च ग्रह, नीच ग्रह, ग्रहबल, नैसग्रह बल, सूर्यादि ग्रह स्वरूप, चन्द्र फल, भौमफल, बुधफल, गुरुफल, शुक्रफल, शनिफल, शनिद्वार जानना, राहु फल, कौन ग्रह किस उमर में क्या फल देता है। गर्भ विचार, भवन द्वार जानना, दीपक भेद, यात्रा लग्न विचार।

(५) पृ० ५९ से पृ० ६४ तक—शकुन ग्रामादिशि, सम्वत् फल, काक फल, काक वाक्य परीक्षा, त्रिदंडी चक्र।

(६) पृ० ६४ से पृ० ९२ तक—शिवा मुहूर्त, कोटादि संबंधी ४३ चक्र, अन्य विचार, ग्राम सुप्त जाग्रत विचार, कोट जाति विचार, भोट बन्धा चक्र, ढाक चक्र, द्वार चक्र, सप्त चन्द्र चक्र।

No. 498. Kakaharā-me-Śrīmahādevaji-ka-Vyāha. Leaves—2. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājārāma, Village Narahā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ककहरा मों श्री महादेव जी का विवाह वरननं ॥ गनपति सुमिरि ककहरा कोजे चोतिस अक्षर पर कहि दीजे ॥ कहत ककेहरा एक सुदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेशा ॥ खाय लगायेजमकु लोने भांग धतूर पखाना कोने ॥ गले म्हस सपुंढ सिर गंगा ॥ भूषन भसम लगाये अंगा ॥ घटनाहि दूसर भूत बराती । चले बरात बिजया को पाती ॥ नाम एक ईसहि सुन राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥ चन्द्र लिलाट जटा छिटकारे ॥ लोचन तीन लोक उजियारे ॥ छांड़े गृह कैलास सोहाये । ब्याहन बेन महेश मंगाये ॥ जतन न कोन्ह बैल को बानो । साने सोंग मढ़ायो पानी ॥ झालरि नाग मोतिन की माला । धनी बैल जा शंकर पाला ॥ नाथ हाथ अपने पहिराये । कंचन से खुर नोन मढ़ाये ॥ टेरत भूत भिखावन बानो । बैल चढ़े आवें शिव दानो । ठाढ़े सुर मुनि देखि तमासा डोगंबर बाघंबर पासा ॥ डैकित बैल चलावै ढको का बरनी सामा हर जू को ॥ ढोल नफोर भेरि बहु डंका । बैल चढ़े आवैं शिव बंका ॥ नाहर ब्याल बैल विष भक्षन । चढ़े हिमंचल थान अलक्षन ॥

End :—मानै सोच सबा जनि कोई । करम लिषा तउ पावा सोई ॥ अब हि बरात द्वारहि आई । बिजुका बैल बाघ मरराई ॥ राजत गिरिजा देखि तमासा । सखिन सोच हिमवान हुलासा ॥ लगे पांव हिमवान पधारे । मोतिन चौक आनि बैठारे ॥ वारिकै मानिक कोन्ह निछावरि । शंकर गौरि दोन्ह सत भांवरि ॥ सो संपति शिव दीन्ह लुटाई । अचल कोन्ह हिमिवानहि जाई ॥ अवरि भई देवन सब जाना । गौरो ब्याह कोन्ह हिमवाना ॥ सो संपति शिव जग के दानो । चरन टेकि लै दोन्ह भवानी ॥ हरषे देव सुमन बर्षाये । ब्रह्मा बिष्नु तमासे आये ॥ दो० ॥ क्षेम कुशल रचना रची शिव गौरो को ब्याह । मुक्ति दान मोहि दाजिये प्रभु तुम्हारो मैं दास ॥ इति श्री ककहरा शिव गौरो ब्याह संपूर्ण संवत् १९२५ मितो ज्येष्ट बदो पंचमो शिवायनमः ॥

Subject :—शिवजो का विवाह वर्णन ॥

No. 499. Kālachakra. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Vāsudevasahāya of Kamāsa, Post Office Madhauganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥
मेष रासि जो जन्म होइ ॥ रवि क्षेत्र जसवंत होइ ॥ कोप वंत होइ ॥ विसे वांस मित्र होइ ॥ सुन्दर वंत होइ ॥ चपल होइ ॥ सिप्तान भोगी होइ ॥ कष्ट वर्ष ६ ॥ १५ ॥ ३१ ॥ ३५ ॥ ६७ ॥ ७५ ॥ जेष्ट मासे शुक्ल पक्षे मंगर वासरे तिथि पंचमी ५३ ई पहरे प्रान त्यज्येत् ॥ १ ॥ वृष राशिजे १ जन्म होइ ॥ मिसत भाग वंत होइ ॥ कष्टमास ॥ १२ ॥ १७ ॥ ३४ ॥ ५३ ॥ १०० ॥ असाढ़े मासे कृष्ण पक्षे चित्रा नक्षत्रे सतमी तिथि शुक्र वासरे प्रथम प्रहरे प्रान त्यज्येत् ॥ मिथुन राशि जो जन्म होइ ॥ कष्ट मासे वर्ष ॥ ४ ॥ १० ॥ १४ ॥ १८ ॥ जीवे वर्ष ८६ ॥ श्रावण मासे कृष्ण पक्षे अश्वनी नक्षत्रे एकादशी गुरु वासरे प्रथम प्रहरे प्राण त्यज्येत् ३ ॥

End :—उत्तर षाढ़ दिन ४ मास ८ वर्ष १४ वर्ष ८० ते जीवै १०० राजा हाथ मृत्यु ॥ श्रवण दिन ३ मास ३ वर्ष ४९ ते जीवै वर्ष ८० रोग हाथ मृत्यु ॥ धनिष्ठा दिन १२ मास १ वर्ष ३० ते जीवै वर्ष १०१ लोह हाथ मृत्यु ॥ शत भिषा दिन १४ मास ९ वर्ष ४० वर्ष ५० ते जीवै वर्ष ३ ते जीवै वर्ष ३५ विष हाथ मृत्यु ॥ उत्तर भाद्र पद दिन ४ मास २ वर्ष ९ वर्ष ११ वर्ष १५ ते जीवै वर्ष ६० सुख मृत्यु—

॥ इति काल चक्रं ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—जन्म राशि के हिसाब से कष्टादि पड़ने और मृत्यु दिवस का परिचय। (जन्म-राशिक आयुः बलं)

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—जन्म के नक्षत्र से अवस्था की सीमा निर्धारित करना।

No. 500. Kalikāla-Varṇana. Leaves—7. Deposited with Paṇḍita Vishṇubharose, Village Belāmaū, Post Office Ajagaina, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—देव मंदिर दिया न बाती गोर न पै उजियाला। भूम देव विप्रन को देख्यों कौड़ो देत कसाला। रांड़न के भोजन को सिनी ऊपर पान मसाला। साधुन को नहीं चून नून तुकों रोठे देव दिवाला। चतुर नरन को बद सूरत को कूरन के घर बाला। मूरख बैठे मौज उड़ावें पर वीनन पग छाला। भूपति क्षमा करत नीचन पै कर अनीत पत पाला। अवर जोर कल काल जाल को गुन को चले न चाला॥ मुसलमान सीता पति सुमिरें हिंदू मुष कद ताला। मुसलमान मीसो कर टेरें हिंदू भातक साला॥ रोम रोम कर जात मदारन दाव कांव में लाला॥ पूजत प्रेत गुरैया बावा छोड़े देव विसाला॥ परम प्रगट भयो

भूतल मैं धसि गो धरम पताला ।। ३ ।। निजपति मुच्छ तुच्छ करि आरत उपपति हित प्रति पाला । विधवा डगन कोर भर काजर अंग आभरन जाला । मुलकट कंचुक कसत सुजन पर उर पर वर वन माला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ ४ ॥

End :—पकै साहु पकरि रिनिया का लूट लेत घर साला । पकै रिनियाँ बांध पोटरो देत साहु का वाला ॥ जोर जोर पंचन को हयावत मानत बात न घाला । अधरम प्रगट भयो भूतल मैं धंसिगो धरम पताला ।। १ ॥ पर सुष देष सुनत सिर काटत पुत्र लोग सो साला । पोरन को दुष देष देष सुष मनो प्रगट भयो लाला ॥ वैसो कुमति भई लोगन की चलत कपट को चाला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ।। २ ॥ लपट झपट घर घर पट पट कर वरत कपट की ज्वाला । मारन उलट पलट घट पट कर विकट प्रगट कल काला ॥ दुर्जन चटक मटक अति चटकत सुरजन पटक उताला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसिगयो धरम पताला ।। ४ ॥ संन्यासी राचे दुज दासी नित प्रति बेद उचाला । एकहि ब्रह्म सकल घट पूरन यामें पाप न भाला । धर्म शास्त्र में थापी दासी भोगत सब घर वाला । अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ त्याग करब अंगुर दायन को गुलर पै हित पाला । पर निंदा पर पूरत पंडित मंडित करत कुचाला । पुत्र पाट की बात न बोलत दिये रहत मुष ताला अधरम धरम प्रगट भयो भूतल धंसि गयो धरम पताला ॥ ६ ॥

Subject :—कलिकाल को दशा का वर्णन ॥

No. 501. Kathā-Saṅgraha. Leaves—72. Deposited with Paṇḍita Rāmaratna Śukla, Village Dariyābāda, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ कथा संग्रह लिष्यते । पहिली कथा एक साहूकार पोतड़ों का रजा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो बैठा ओर लगा निपट दुख पाने ओैर उदास रहने निदान उसके जी में यह सोच आया कि जो मै किसी महा पुरुष या सिद्ध के पास जाऊं ते यह दुख मिटे क्यों कि सुना भी है कि साधू के दर्शन से व्याधा जाती है यह विचार कर एक जोगी के पास गया । यह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मनोर्थ जान कर के कहा ॥ दोहा ॥ सुख दुख पति दिन संग है मेटि सके नहि कोय । जैसे छाया देह को न्यारो नेकन होय ॥ यह उत्तम उत्तर पाय वह विचारा धीर धर अपने घर आया ॥

(२) कथा। एक अंधा बैरागी काशी के बीच मणिकर्णिका घाट पर बैठा ग्रहण में दही पेड़े खा रहा था कि देख कर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं कहा ग्रहण में उत्तर दिया बाबा मेरे गुरु दया से सदाही ग्रहण है यह सुन कर पंडित हंस कर चुप हो रहा॥

End:—एक बूढ़ा बटोही ग्रीषम की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था मार्ग में एक युवा अश्वारूढ़ आ निकला बूढ़े को देख कर उसे दया हुई बोला बाबा जी मैं युवा पुरुष हूं शीत घाम सब सह सका हूं तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके अब इस घोड़े पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला जाऊंगा उसकी इस करुणा बानी से मगन हो बूढ़ा इसके घोड़े पर चढ़ा और युवा पीछे पीछे चलने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा कि अरे बूढ़े निर्लज्ज घोड़े पर से उतर क्या तूने अपना घोड़ा पाया है और सारा दिन उस पर आरूढ़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा और धीरे धीरे चलने लगा थोड़ी दूर गया था कि इसको कष्ट देख कर फिर उसके जी में दया आई और बहुत सी बिनती कर उसे फिर घोड़े पर चढ़ाया थोड़ी दूर जाते उसे फिर उसी भांति उतारा निदान तीन चार बार उसे इस प्रकार उतारने चढ़ाने से उसने पूछा बाबा तुम्हारे पिता का नाम क्या बोला सैय्यद हुसेन उसने पूछा तुम्हारी महतारी का नाम क्या बोला बीबी जोरा पर वह कुल अंशा नहीं उसको ब्याह करने से हमारे कुल में कलंक लगा यह सुनते ही बूढ़े ने कहा हां बाबा अब मैं समझा कि चढ़ाव हुआ और उतारे जोरा अब आप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा॥

Subject:—एक सौ कथाओं का संग्रह जिसमें हंसी आदि का वर्णन है॥

No. 602. Kavitāvalī-Aragaja. Leaves—13. Deposited with Sudarsanasimha Raisa and Tallukedāra of Sujakhara, Post Office Lakshmikāntaganja, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ कवित्त॥
नभते सुर सुमन झरैं किंनरादि गान करैं मान तान मोद भरैं सर बस सिंगार भो। सरभो बिलोकन को लोकन को हर निहार सब सिंधु सब निराधार के अधार भो॥ दोष दुसह दुर निहार चार दान दीनन को दंपति जुग चरन सरन को न पतित पार भो। भायो मधुमास सुकुल पच्छ सुच्छ नैामी तिथि आली बलिराम स्याम स्यामा अवतार भो॥ १॥

बाजत बधाई सुखदाई दुदु राज द्वार,
अवध नगर जनको नगर जै जै जयकार भो ।
लोक लोक भो विलोक संतन मन परम तोष,
निकसि भजो राम रोष जन थल उजियार भो ॥
होन लागे राम रंग भक्ति ध्यान को प्रसंग,
देवन्ह अतिवार भयो हरन धरनि भार भो ।
माधौ मधु मास सुकुल पच्छ सुच्छ नौमी तिथि,
पालौ बलिराम श्याम श्यामा औतार भयो ॥२॥

End :—खेलत हैं फागु भरो लाल के सोहाग वाल,
फेंकै कारसों गुलाल संग लाज पोवतो ।
कान्ह है बचोर भोर टारि रंगो वाको चोर,
सुन्दर श्याम ढांपि अंचल सों गोवतो ॥
ताको कुच कारो मारो वासो पिचकारी लगी,
सिसकि समेटि (समेटि) सखी वाको छवि जोहतो ॥
मानो चक्र तुंड सुंड गंग तीर कूद पैठि,
धार झुंड झुंड पूजि शंभु शिया धावतो ॥

खेलत हैं फागु स्याम स्यामा अनुराग भरे,
डफ करतार बेंस मृदंग लो रह्यो है छाइ ।
गावत राग धूंधुरि मचावे ग्वाल झमके,
झमकि झूमि काम रति को लजाइ ॥
घूंघुटि उघारि कान्ह कर सो गुलाल मल्यो,
बाल मुख इन्दु लगी शोभा सखि दरसाइ ।
अधर को विहाइ मेघ कारे अलगाइ मानो,
मैाम विच देके कंज चंद सों मिल्यो है आइ ॥

ग्वाल के जाये कहाँ पावे इत मान ये तो,
गर्भ तो बहाये वो कहावत अहीर हठो है ॥
जाति के छपाये पोति नाहीं मिलति रावरो,
बावरो भये कहै लीन्हे हाथ लठ्ठी है ॥
जानो बूझो बात को का करत हो सयानो ।
करी यूसा पानी वो चलायो यार मठ्ठो है ।

Subject :—(१)पृ० १ से पृ० १२ तक-राम अवतार एवं कृष्णावतार, सीता राम की शोभा देखकर मोह, युगुल मूर्ति की महत्ता, ध्यान स्तुति, रामरूपवर्णन

(प्रेमसखी द्वारा) दीनता स्तुति (मधुरविहारी) । कृष्ण की शोभा (तोष) ॥ विरह वर्णन (तोष) । कोमलता (प्रेमसखी) । गंगा की प्रशंसा जड़ता, महावीर युद्ध वर्णन । मङ्गद पदारोपण । छन (तोष) । रावण मन्दोदरी संवाद । महारानी जी के दर्बार का वर्णन (भूषण) । रावण मङ्गद संवाद । शिवराज प्रशंसा (भूषण) । चंद्रिका महत्व (निधान कवि) । नैन प्रशंसा (सर्वेश कवि) । गाजीपुरी ब्यान की प्रशंसा । भगवानी की बुराई (गोकुल) । राम बिसराने का रूपक द्वारा फल बड़ाई । नायिका की शोभा । "महेवा" की ठकुराइन (गौरी की प्रशंसा) । (२) पृ० १३ से पृ०"""""तक विरह वर्णन (भूषण) । गुजरी का संयोग वर्णन, रघुवीर का बल वर्णन । मुद्रिका पात । लंका दाह । जैसिंह राजा का पावेट । चौकवी, चौदिसा, स्तुति, भरत हनुमान संवाद (संजीवनी लाते समय हनुमान कवि द्वारा) ।

No. 503. Kavitta. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Ramākānta Śukla of Puravāgarībadāsa, Post Office Gaḍa-vārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—कवित्त ॥

कासी मैं बास करौ जुग चारि लौं, द्वारिका जाइकै देह मढ़ावौं ।
बांहि चढ़ाय दिगंमर ह्वै सबरी सब भुवाकौ दाहिनी ल्यावौं ॥
यज्ञ भनै मुष एकै जपौ कर कंचन कोटि सुमेर लुटावौ ।
पाउ सौं धाँयिकै जूझि मरै हरिनाम भजे बिना पार न पावै ॥

सीताराम जानतु हौं सीताराम मानतु हौं ।
सीताराम पूजनि हौं जपत सीताराम हौं ।
सीताराम ही कौ प्रभु सीताराम कौ प्रनाम ।
सीताराम ही कै ध्यान धरै अभिराम हौं ॥
श्रीपति सुजान सीताराम मैं बसत प्रान
नाम सीताराम जू कौ लेत आठौ जाम हौं ।
मेरे जान सीताराम कामना कल पतरु
सीताराम जू की सौंह सीताराम कौ गुलाम हौं ॥

तिसना बिलासिन के बसना बसैहौ ।
रसना रिझ जिन स्वाद बदना भनै रहौ ।
कहत प्रजेस मद मोह मतवारिन के ।
मद कौ कहन करि अमिता हवै रहौ ॥
क्रोध लोभ मोह ज्यौं कुराम धनि धारत के ।
तजि कै प्रवास धनै सुधाँन धनै रहौ ।

मेरे तन मेरे मन मेरे धन मेरे धाम ।
मेरे राम मेरे हियो सदन बने रहो ॥३॥

End:—सहज में मोले अंग जुरै बरवो लेम ।
राजत कुवोले किनै छाउनसहत है ।
झूठ नाहीं बोले डौर-डौर नाहीं डोलै ।
भलो मुख सा है सदा जस को चहत है ॥
सुनै रागरंग रंग वाँचन सुरंग कवि ।
कवि पंडितन संग लैय चरचा चहत है ।
आनंद उछाह सदारहत चित चाह जामे
इतने सुभाव जाको ठाकुर कहत है ॥१॥

छप्पै

केहरि भन नहि चरति सुर रन छिन नहिं संकहि ।
सतोवन फिर महत कहि दानि करि होइ रंकहि ॥
गुर नहिं गोपहि म त्र अंत्र नहि चलहि मरन पर ।
इत्तत अमर नहिं तजहि अधम नहि पावहि सुरपुर ॥
वाह कर्म रेव विचलय चलय सतरतन अद मुनगनहिं ।
लछुराल जाल संकहि रमल नहिं मराल कंकर चुनहिं ॥

Subject:—

(१) पृ० १ से पृ० १० तक—ब्रह्म, पजेष्टा, तुलसी, आदि कवियों के शान्तिरस एवं नीति संबंधी कुछ कवित्त ।

No. 504 (a). Kavitta-Saṅgraha. Leaves—15. Deposited with Paṇḍita Satyanārayāṇa Tripāṭhi of Bandā, Post Office Gaḍavārā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :— ॥ कवित्त ॥

गोरे गोरे गाल पै गुलाव दार नाग सो है
बिजली झवाकदार दोनों कान झलकै ।
बेंदी भाल माथ हू पै करत सिगार गोरी,
मघवा के मोती जस चन्द्रमा से लरकैं ॥
नाक हू को नथिया बुलाक में झमाक करे ।
झुलनी को मानो गोरी चोठ दाप झलकैं ।
इतना बयान करि गर्दई के ऊपर को,
धार हू बयान कछु अंग अंग फरकैं ॥१॥

॥ सवैया ॥

नाम बड़ो धन धाम बड़ो जस कीरत हू जग में पसरो है ।
द्वार अनेक गयंद झुमैं उपमा कछु इन्द्र से नाहिं घटो है ॥
सुख साज अनेकन पाय मनोहर फूले रहैं मन ही मन में है ।
तुलसी जग जोवन भक्ति विना जस सुन्दरि नारि की नाक कटो है ॥

End :—

तात को सोच न मात को सोच, न सोच पिता सुरधाम गये को ।
सोय हरै को तो सोच नहीं, नहिं सोच हमैं बन माहिं रहे को ॥
बन्धु विछोह को सोच नहीं, नहि सोच जटायू के पंख जरे को ।
केवल सोच वही तुलसी, एक दास विभीषण बांह गहे को ॥
सुगन्ध लगाय के ऊबि मरौ, प्रिय जानत हौ तनको सुकुमारो ।
हार चमेली को नोक लगै, प्रिय लाज करौं पहिरौं तन सारो ॥
और अभूषण क्या बरनौ, प्रिय लागत पांय महावर भारी ॥
मेरे सुभाव को जानो नहीं, रसखान कपूर मुनायब ताही ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—नायिका की शोभा वर्णन, भक्ति विना मनुष्य की दशा, धनुष यज्ञ, राम एवं सीता के सुयोग का वर्णन, राम को देखकर सीता का प्रेम और सखियों का परिहास । माखन लीला । राम मल्लाह संवाद ।

(२) पृ० १० से पृ० १३ तक—लुप्त ॥

(३) पृ० १४ से पृ० ३० तक—उपदेश, धनुषयज्ञ, 'बात' का महत्व । समस्या पूर्ति "तरवा के तरे छौ" "दाह बुतात नहीं" । 'र' कार और 'म' कार का महत्व । "स्वप्नदर्शन" समस्या "बजरमार गऊर बजायो है" "नारि हँसै तो भंसैना" "छुननी केहि कारण काढ़ि धरो है" "छुननी यहि कारन काढ़ि धरो है" "लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम का मनस्ताप" सुकुमारता का वर्णन ।

No. 504(B). Kavittasangraha. Leaves—40. Deposited with Paṇḍita Ramākānta Tripāṭhi, Village Banda, Post Office Gaḍavara, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning:—धामन दे धुरवा त्रिविध पवन आवन दै कंजन में ललित लतान को । कूकन दै कोकिला पुकारन दै चातकन बोलन दे सजनी सुभाय सुवान को ॥ दामिनी जाति कातरी कामिनी में जागन दै बरसन दै इन्द्र झुमड़ि घटान को । पायो मन भावन सो रस बरसावन में सावन में गावन देहगो बनतान को ॥३॥

पावस पवन पीउ पीवै न रटत जीव, दसहू दिसान के संदेस सब पावरो। मोहन वताती मन कैसे कठिन करौ, यद्यपि वितीत भई मानो वरस पावरो॥ मोरन को सोर सुनि कोकिलान को रटन दिन, पपीहा को टेर सुनि मदन जगावरो॥ बूंदा धाई बरसात गगन महरात, कैरो धाये बादर विदेसो क्यों न आवरो॥४॥

End:—विधि ने बड़ाई दई नाहि लषि पावै कोऊ। ताको तू दया करि मया के रसडरियो। धन दौजो जस लिजो जीवन यहो है सुख, दैके सबै दुख दोनन के हरियो॥ चिन्ता मनि कहै जो ये गांठ को न दीजो जाइ, ...तोऊ एक उपकार करियो। आपने कहेते जो आनके को भलो होइ तो, जीभ के हलाइबे को काहिलो न करिये॥

कवित्त:—चोप कर विरंचि रूप रासि कैसो कोक कोक....... ....

....

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २५ तक—विप्रलम्भ शृङ्गार संबंधी कवित्त।

(२) पृ० २६ से पृ० ५० तक—संयोग शृङ्गार के कवित्त, तथा दोनों प्रकार के सम्मिलित छन्द, विविध नायिका भेद सम्बन्धी कुछ छंद।

(३) पृ० ५० से पृ० ८० तक—ऋतु संबन्धी छन्द। विविध छन्द (गंगाजी की प्रशंसा तथा वीर रस के कुछ छंद)।

No. 505. Kavittasāra by Manirāma. Leaves—25. Deposited with Umāshaṇkar Dube, Research Agent, District Hardoi.

Beginning:—श्री गणेशायनमः

गेहूर के गामी तुम स्वामी सत्यभामा जी के अन्तर के जामी तुम मिटैहो दुख धाइ कै। तुम तो रघुवीर धीर जानौ सबहो की पीर भीर परे चोरहू बहाइ दीन्हीं पानि कै। कहत मनीराम गज ग्राहिसों उबार लीन्हीं अलप निरंजन सब तेरो जस गाइकै। नंद के कुमार नेक हेरौ प्रभु मेरी बार ऐसे हो वितैहो की चितैहो चित्त लाइकै। जैसो करो तू करो के कलेस में जैसो करी गति गोतम नारि की। गीध पै व्याध को जैसो करो फिरि जैसो करो सधना वो चमार की मेरिय बार अबार कहां अवतार न हो अपने प्रतिपालको। वारि हो नाहि जो मोहि कहू बड़ि कीरति जैहै दसो अवतार को।

End:—मेघ नहिं मानत ए विरह के नगाड़े देत ठेहीं बुलवाइ यहां पवन विचारे को। प्यारे करि मोरिये न कोव मदन सान्के लिखतो संदेस मैं तो नन्द

के दुलारे को। कहै पदुमाकर कोकिला को केतो दकोकुत कोयल पंचवाद छेदो पंच उचारे को। प्यारे को कैल्यो समीप करि पावतो तो पीय २ करतो पपीहा दै मारे को। सवैया—ससुरे को तुम कोन पयान हमैं कल कैन परै नित प्यारो। चैन परै न घरी पल एक रहै निस बासर याद तुम्हारो। प्रान पियारो तुम्हारे लिये बदनामी भई पर यारी न छारो। माधव गंग प्रसाद कहै तुम प्रीत लगाइ के कीन्ह तयारी।

Subject:—(१) किसी आर्त्त मनुष्य का भगवान से अपनी दशा सुधारने के लिये प्रार्थना।

(२) जप, तप, व्रत आदि से रहित मनुष्य का ईश्वर की शरणा आना।

(३) जनक जी के धनुष भंग का प्रसंग।

(४) नैमिषारण्य महात्म्य पर कवित्त।

(५) अयोध्या महात्म्य वर्णन

(६) सीताहरण, राम विरह, लक्ष्मण शक्ति

(७) नायिका का विरह वर्णन। किसी पुरुष का स्त्री के प्रति प्रेम।

No. 505. Kerala—Praśnadivākara. Leaves—2. Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgalaprasāda Misra of Udayapura, Post Office Aṭhehā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पंचाङ्ग के लाभ खर्च एकत्र करे एक कम करके आठ का भाग दे, एक बचे तो लाभ, दो में सुख तीन में क्लेश चार में रोग, पांच में शोक तथापि बाद छै में आदर सात में जीत आठ में हानि॥

प्रश्न कर्त्ता मुकद्दमा में हार जीत का प्रश्न करे तो यदि आते समय दाहिनी ओर बैठ कर पूछे तो जीत बायें हार और सम्मुख सुला होनी चाहिये॥ अमुक वस्तु खरीदने से लाभ होगा या हानि (उत्तर) नाम अक्षर में ३ से गुणा करे वस्तु नाम अक्षर जोड़े एक और मिलावे दो पर भाग देवे एक में लाभ दो तथा शून्य में हानि होयगी॥

End:—अमुक बात में मंदी या सस्ती उत्तर—महीना की संक्रांति दिन तिथि के अंक जुक करि ३ पर भाग दे शेष एक मध्यम भाव दो सस्ती शून्य महंगी होना चाहिये॥

संक्रांत	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
अंक	३	२२	२३	२५	१९	१७	२२	१२	१६	१९	२३	२५
दिन	र	चं	मं	बु	गु	शु	श					
अंक	२१	१८	१३	२	१३	१४	०					
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तिथि	१३	१४	३०	१५								
अंक	१३	१४	३०	१५								

इति प्रश्न दिवाकर समाप्तम् ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—

बारहों राशि के वार्षिक लाभ हानि का विचार । मुकदमे, क्रय विक्रय में लाभ हानि । गर्भ विचार प्रश्न । मास को महंगी सस्ती का हाल ।

No. 507. Kerala—Praśnasaṅgraha. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Śivamaṅgala Miśra, Village Udayapura, Post Office Aṭhehā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—

ओ३म्

है	द	अ	ब	ध
वा	ज्ञ	ह	हो	ये
मो	दी	ओ	वो	ई
दो	ओ	ही	तो	क

ह—जिस बात की निस्वत विचार करने हो और हैरान हो, रोजगार को उधति के लिये परदा गैब से खोला होगा ।

ब—एक आदमी की बेवफाई का ख्याल करके दिल में परेशान हो, अब खराब दिन निकल गये दिल का विचार पूरा होगा।

ख—तरक्की रोज़गार आय व्यय का ख्याल लगा है वांदियों से भय है, नेकी का बदला बदी से मिलता है दो तीन महीने में फायदा होगा।

End :—

हो—दुनिया दारी के कामों में तुमको तकलीफ उठाना पड़ता है शत्रुओं व कर्ज़ख्वाहों ने नाक में दम कर दिया है सब काम १ साल के अन्दर अन्दर दुरुस्त पर आजायेंगे।

तो—जिस कार्य्य के लिये कोशिश करते हो तुरन्त मुराद पूरी होगी और कोई मनुष्य तुम्हारी मदद करेगा।

क—जिस तरफ यात्रा करने का इरादा रखते हो वहां पर रोज़ कार में लाभ और हर तरह से आराम पाओगे परन्तु नशीली वस्तुओं से परहेज़ रक्खो।

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—बीस अक्षरों का एक कोष्ठ तथा उसमें अंकित प्रत्येक अक्षर का फल।

No. 508. Khela. Leaves—2. Dated in Samvat 1933 or A. D. 1876. Deposited with Paṇḍita Vindheśvarī Prasāda Miśra, Teacher, Sanskrit Paṭhaśāla, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥

१—बनते बनि आवत सखी। मोहन मदन गुपाल।
मोर मुकुट लखि थकि रहीं। कमल लिये कर लाल॥

२—चित में चम्पा को विटप। फूल्यो अति इर आय।
मन भावन मैं पैठि कै। गुथी माल बनाय॥

३—ऋतु बंसत आय सखी। कोकिल कहत सुनाय।
फूल्यो टेसू सघन वन। देखत मन अद भाय॥

४—मोहन मूरति सांवरी। लाल लकुट लें हाथ।
फूल विराजत सेवती। कुंजमाल के साथ॥

५—फूलन लागी केतकी। सुंदर सुखद सुवास।
चहुं ओर गुंजत मधुप। नेकुं न छाजत वास॥

६—मोहन मूरति श्याम को। निरखि निरखि दृग मैन।
नरगस को निरखन लगो। सुमन स्रवन को नैन॥

End :—२८—लालन के माथे बनो। पंक सो समनो पाग।
मोहो सब ब्रज की बधू। गुल सोसन के राग॥
२९—गुल बंसत फूलन लग्यो। देखति सखिन समेत।
मानहुं शोभा ते भरो। सखि सोभा बढ़ि देत॥
३०—गुल सब्बो के हाथ मे। सुंघत नन्द किशोर।
तरुण बरुण वारिज नयन। चितवति र........॥
३१—गुलदावदी सघन बन। घेरि चाव चहुं वोर।
नन्द लाल को निरखि के। हरषि रहेव मन मोर॥

श्री दत्तात्रयायनमः श्री राधा कृष्णायनमः श्री शिव श्री संवत् १९३१ सन १२८३ मिती वैषाख बदी ९ वार मंगर॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ४ तक—इकत्तीस दोहों मे से प्रत्येक दोहे मे राधा तथा कृष्ण का संबंध स्थापित रखते हुवे एक एक पुष्प का वर्णन।

No. 509. Lekhā Pahāḍā. Leaves—44. Deposited with Gosvāmiji, C/o Paṇḍita Badri Nāth Bhatta, Husainganj, Lucknow.

Beginning :—

एक दंतं महावीजं नमो करत पानये।
सिद्धन्तु सर्व कार ग्राने तुं प्रसाद गनेश्वर॥

१	११	२१	३१	४१	५१
२	१२	२२	३२	४२	५२
३	१३	२३	३३	४३	५३
४	१४	२४	३४	४४	५४
५	१५	२५	३५	४५	५५
६	१६	२६	३६	४६	५६
७	१७	२७	३७	४७	५७
८	१८	२८	३८	४८	५८
९	१९	२९	३९	४९	५९
१०	२०	३०	४०	५०	६०
५५	१५५	२५५	३५५	४५५	५५५
१/५	३/५	५/५	७/५	९/५	११/५

Middle :—तुलसी टेरत कहत है सुनीयो संत सुजान ।
हेम दान गज दानते बड़ा दान सन मान ॥

११	११	१२१	२१	२१	४४१	३१	३१	९६१	४१	४१	१६८१
१२	१२	१४४	२२	२२	४८४	३२	३२	१०२४	४२	४२	१७८५
१३	१३	१६९	२३	२३	५२९	३३	३३	१०८९	४३	४३	१८४९
१४	१४	१९६	२४	२४	५७६	३४	३४	११५६	४४	४४	१९३६
१५	१५	२२५	२५	२५	६२५	३५	३५	१२२५	४५	४५	२०२५
१६	१६	२५६	२६	२६	६७६	३६	३६	१२९६	४६	४६	२११६
१७	१७	२८९	२७	२७	७२९	३७	३७	१३६९	४७	४७	२२०९
१८	१८	३२४	२८	२८	७८४	३८	३८	१४४४	४८	४८	२३०४
१९	१९	३६१	२९	२९	८४१	३९	३९	१५२१	४९	४९	२४०१
२०	२०	४००	३०	३०	९००	४०	४०	१६००	५०	५०	२५००
२४८५			६५८५			१२६८५			२०७८५		
४९/३५			१३१/३५			१५३/३५			४१५/३५		

End :—इतनेनि मिलि लंका घिम्रहो । सोरह लाख रामपे रहे १६००००० ॥ नो डबरा एक एक डबरा मैं ३२२८४२५०१४४ एक एक कंगुरापे इतने इतने बेठे ॥ नो डबरा एक एक डबरा में नो नो नो नो मैंसि एक एक मैंसि पे नो नो बगुला एक एक बगुला के मोहो में नो नो माछरी डबरा ९ मैंसि ८१ बगुला ७२९ मछरी ६५६१ सुवा एक फुरामेंते बोल्यो घरे इनके सुवा तुम कितक हो ॥ हम सु हमहो हमते दुने पागे हमते ब्योड़े पाछे तू पावे पुरे सो है जाहि ॥

इनके २२ दुने ४४ पागे ब्योड़े ३३ पाछे वह एकु मिल्यो पुरे सो भये १०० ॥

इति

Subject :—प्रारंभमें गिनती पका, ग्यारह, एक ईसा, एक तोला के दस दस पहाड़े का वर्णन पृ० १९ से ३० तक सवाया, ड्योढ़ा, ढय्या, हुंठा, ढ्यों चा का वर्णन पृ० ३१ से ४२ तक बड़ा ग्यारह श्रीर बड़ा पका के भिन्न भिन्न पहाड़े पृ० ४३ से ५४ तक पैाना, छटांक व सेर को लिखावट का वर्णन, पाना पाई का वर्णन पृ० ५५—५८ तक चार के १६ करे वर्णन, पानी की बूंदें, बाल, सुई, काजर, लंका युद्ध हावरमें मैंस बगुलादि श्रीर वृक्ष पर तोतों का गणित संबंधी मैाखिक वर्णन पृ० ५९—६२ तक ।

इति

No. 510. Mahâdeva Vivâha. Leaves—9. Dated in Samvat 1893 or A. D. 1836. Deposited with Umâsankara Dubey, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—अथ महादेव विवाह लिख्यते ।

चौ०—कहत ककहरा नगर सदेसा । गिरिजा व्याहन चले महेसा ॥
पाय लागइ डमरू सुर कोन्हा । भांग धतूर पजाना लीन्हा ॥
गरे नाग सिर पैं सुर गंगा । भूषन भस्म चढ़ाये अंगा ॥
घर नहि दूसर भूप बराती । चले चवाति विजै को पाती ॥
नाम लेतु ईसुर अस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥
चन्द लिलार जटा फटकारे । लोचन तोनि लोक उजियारे ॥
छाड़ा गिरि कैलाश सुहावा । वाहन बैल महेश मंगावा ॥
जात न कही बैल को बानी । सोने सींग मढ़े दो आनी ॥
झक झालरि गज मोतिन माला । धन्य बैल सेव संकर पाला ॥
नाथ हाथ अपने पहिराई । कंचनसे खुर देत मढ़ाई ॥
टेरें भूत मिहावन बानी । चला मस्त योगी शिवदानी ॥

End :—

थमी बरात द्वार पै आई । बिजुका बैल बाघु गररई ॥
खबरि भई सिवसंकर आये । सब सखियन मिलि मंगल गाये ॥
धांवति चली देखन सहेली । पारवती का छोंड़ अकेली ॥
नारि चढ़ीं बैरहटा ऊंचे । देषि सरुप नैन मे मीचे ॥
पाछेक काहु हेवंचल कीन्हा । गौरा रुप डिगंबर लीन्हा ॥
फांसी दै तुम तजहु भवानी । सखिनसोच गौरा मुसक्यानी ॥
मन मा सोच करौ जनि कोई । कर्म लिषा वह पावा सोई ॥
लेलकि पांउ हेमवान पुकारो ॥ मोतिन चौक तहां बैठारो ॥
बहु मोतिन को करें निछावरो ॥ संकर गौरा फिरें सत भांवरि ॥
हरषे देव फुल बरषाये ॥ ब्रह्मा विष्णु तमासे आये ॥

दो०—छकित करें सब आरती ॥ छकित भयो कैलास ॥
मुक्ति दान अबदीजिये । हरि चरनन को आस ॥

इति श्री महादेव विवाह सम्पूर्ण समापितं सुभमस्तु ॥

Subject :—

(१) विवाह के लिये गमन करते समय महादेव जी के वेश और साथ की सामग्रियों का वर्णन ।

(२) महादेव जी के वाहन की शोभा का वर्णन ।

(३) हिमांचल नगरी के वासियों का बारात देखने के लिये शीघ्रतापूर्वक आना । युवतियों का शंकरजी के स्वरूप को देखकर शोच करना ।

(४) पार्वती की प्रसन्नता । स्त्रियों का समझाना ॥

(५) शिव पार्वती का विवाह संस्कार । ब्रह्मा विष्णु आदि देवों का बारात देखने के लिये आगमन ।

(६) देवताओं द्वारा आकाश से पुष्प वृष्टि ।

No. 511. Mahūrtavichāra. Leaves—12. Deposited with Rāmaprasāda Murāū, Village Viśramadāsa-kā-Puravā, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः करण भगण दोषम् वार संक्रांति दोषं कुतिथि कुलिक दोषम् राहु केत्वादि दोषं हरति सकल दोषं चन्द्रमा सन्मुखस्थान् ॥ १ ॥ मघा विशाखा कृत्तिका । यहि शिव मरणो मूल । स्वान सर्प इनमा डसै । मानहुं जम हनो त्रिसुल ॥ २ ॥ रामनाम घर भोग विलासा । सीता शोक करै वनवासा ॥ पश्चिमन लक्ष जोति गृह आवे । हनूमान कछु खबरि जनावे ॥ नौमी प्रतिपदा शनि सोम प्रतिकाल श्रवण घट तुला लग्न परवत जाइये ॥ पंचक सोम पंचमी गुरु दिन मध्यान्ह काल ते रासि मीना तिककै दक्षिण वराइये । षष्टी भृगुवार भौम भूत पुष्य रोहिणी संध्या धन में पहरि पश्चिम न जाइये ॥ द्वैज दिन रवि शशिच भौम मकर निशार्द्ध मकर कुंभ कन्या नहिं उत्तर सिधारिये ॥

End :—जो कोई पौर्णिमा को भूमि कंपै वा दिन मैं तारा टूटै उल्का पात व वज्र घात होय वा चंद्र सूर्य ग्रसै वा केतु उदय होय इन्द्र धनुष कढ़ै तौ सब वस्तु महंगी होय ग्रहण में अवश्य । इत्युत्पाताः ॥ बुधः शुक्र समीपस्थः करोधि कार्बेवां महों ॥ नयो इंतगंतो भानुः समुद्र मार्ग शोष येत् ॥ बुधे तिजो बुध शुक्र समीप होइ तौ पृथ्वी भर मैं जल वर्षै ग्रह ज्योतिन के बीच मैं सूर्य आनि परैं तौ समुद्र के जल को भी सोष लेइ ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० ९ तक—सर्प काटने का विचार, मात्रा विचार लग्न प्रमानम्, नक्षत्र विचार, भद्रा वर्णन,

(२) १० से पृ० १८ तक—विवाह विचार, होम कर्मवयनि विचार,

(३ पृ० १९ से पृ० २४ तक—यात्रा तिथि विचार, उत्पात विचार ।

No. 512. Manihārina-Bhesha-kī-Pothī. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Mathurāprasāda Misra, Village and Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मनहारिन भेष को पोथो लिख्यते ॥

एक समै ब्रज चंद नंद सुत मन में यहे बिचारी ।
करिके भेष बिसाति नारि को छलिये राधा प्यारी ॥
कौनपाप को लहगा पहिरे अरुन जरकसी सारी ।
अंगिया लाल श्याम मंडन को अति छवि देत लो न्यारी ॥
मोतिन को पहिरे नक बे झालरदार बनाई ।
मानौं बिरचि बिरंचि आपको गहने को सुघराई ॥
कानन करन फूल अति सोहे माथे बोज जराऊ ।
ता ऊपर अति लसत चंद्रनी मोतिन माँग भराउ ॥
कंठ लसत दुलरो श्रो तिलरी गज मुकत को हारा ।
मानौं जुगल सुमेरु के ऊपर धसो गंग को धारा ॥
गरे हुवाल माल कंचन की यद पहिरे पग धारी ।
मानौं काम आपने ऊपर रुचि रुचि चित्रि चित्रि संवारी ॥

End :—

अरस परस घुंघरून लों करिके.............. ।
लखि के पदम कदम अस लागे ऐसो भेष बनायो ॥
बिरजा सखी सदन ते चंचल छिन भर रही न सातो ।
हाथ पकरि मनहारिन जू के आइथ खोलिन छातो ॥
हसिके परे तुरतहि दोऊ उलटे लगे मंजीरा ।
दाँत अंगुरिया दई राधिका धन्य धन्य बलवीरा ॥
मेरे काज लाज तजि मोहन एतो परिश्रम कीन्हों ।
नारि भेष धरि आये मोहन बड़ो बड़प्पन दीन्हें ॥
जाको जपत शेष अज शंकर सुर मुनि जिते बड़ेरे ।
ते मोहन तुम बने फिरत हो ब्रज बनितन के चेरे ॥
तुम तो तीन लोक के स्वामी श्री पति अंतर जामी ।
ताप तीनि छत होत हो श्री कृष्ण मथुरा के गामी ॥
आनंद कंदन के नंद नंदन जगवंदन गुन रासी ।
जाको ध्यान धरत सुर नर मुनि जोगी जन सन्यासी ॥

× × × ×
× × × ×

इति श्री मनिहारिन भेष की पोथी संपूर्ण ।

Subject :—श्री कृष्ण का मनिहारिन भेष में राधा को छलना । स्त्री वेष-धारी कृष्ण के नख-शिख का वर्णन । बिरजा सखी द्वारा वृषभान-भवन में

पहुंचना और राधिका से मिलना तथा राधा के प्रश्न पर अपना पूरा पता बताना। विविध अलंकारों से राधा को विभूषित कर प्रेमालाप करना। विरहा सखी द्वारा छातियों पर बांधे मंजीरों का खोला जाना। कृष्ण का कपट रूप प्रगट होना तथा राधा द्वारा कृष्ण की विनती और नवलकुंज में मिलने का वादा। कृष्ण का घर आकर भोजन कर शयन करना।

No. 513. A collection of Manohara-Kahāni. Leaves—72. Dated in Samvat 1939. Deposited with Ṭhākura Śivasiṁha, Village Vikramapura, Post Office Oyala, District Kheri (Oudh).

Beginning :—श्रीगणेशायनमः अथ मनोहर कहानी लिख्यते ॥ कहानी ॥ एक साहूकार पीवड़ों का रज्जा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो बैठा। और लगा निपट दुख पाने और उपासा रहने। निदान उसके जी में यह सोच आया कि जो मैं किसी महा पुरुष या सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुख मिटै क्योंकि सुना भी है कि एक साधु के दर्शन से व्याध जाती है यह विचार चला चला एक जोगी के पास गया वह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने जोग से इसका मनोर्थ जान कर कहा ॥ दो० ॥ सुख दुख प्रतिदिन संग है मेटि सकै नहिं कोय जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय। यह उत्तम उत्तर पा वह विचारा धीर्य धर अपने घर आया ॥ १ ॥ एक अंधा वैरागी काशी के बीच मणिकर्णिका घाट पर बैठा ग्रहन में दही पेड़े खा रहा था कि देखकर किसी पंडित ने पूछा सूरदास जी यह क्या करते हो बोला महाराज दही पेड़े खाता हूं कहा ग्रहण में—उत्तर दिया मेरे गुरु की दया से सदा ही ग्रहण है। यह सुन पंडित हंसकर चुप हो रहा ॥ २ ॥

End :—एक बूढ़ा बटोही ग्रीष्म की रितु में तपन की प्रचंड किरणों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था। मारग में एक युवा अश्वारूढ़ आ निकला बूढ़े को देखकर उसे दया हुई बोला अजी मैं युवा पुरुष हूं शीत घाम सब सह सका हूं तुम बूढ़ा पन के कारण बहुत थके अब इस घोड़े पर चढ़ो मैं पीछे पीछे चला आऊंगा उसकी इस करुणा वाणी से मगन बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा और युवा पीछे पीछे पैदल आने लगा वह बहुत दूर न गया था कि युवा ने पुकार कर कहा अरे बूढ़े निलज्ज घोड़े पर उतर क्या तू ने अपना घोड़ा पाया है जो सारा दिन उस पर आरूढ़ चला जाता है बूढ़ा लज्जित होकर उतर पड़ा और धीरे धीरे चलने लगा थोड़ी दूर गया था कि इसका कष्ट देख फिर उसके जी में दया आई और बहुतसी विनती कर इसे फिर घोड़े पर चढ़ाया थोड़ी दूर

जाते उसे फिर इसी भांति उतारा निदान दो तीन बार उसे इस प्रकार चढ़ाने उतारने से बुड्ढे ने पूछा बाबा तुम्हारे पिता का नाम क्या है बोला सैयद इसको पूछा तुम्हारी महतारी का नाम क्या उसने कहा बीबी जोरा पर वह कुलवती नहीं उसको ब्याह करने से हमारे कुलमें कलंक लगा यह सुनतेही बूढ़े ने कहा हां बाबा अब मैं समझा कि चढ़ावे इसको और उतारे जोरा अब आप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा ॥ इति मनोहर कहानियां संपूर्ण समाप्तः लिखतं गिरधारी लाल वैश्य बजाज गंज टेला ॥ संवत १९३९ भाद्र पद कृष्ण पक्षे षष्टम्याम् ।

Subject :—१०० मनोहर कहानियों का संग्रह ।

No. 614. Mantra. Leaves—4. Deposited with Pandita Rāmasvarūpa Miśra of Arjunapura, Post Office Antu, District Pratapagadha (Oudh).

Beginning :—॥ श्रीराम ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को डाकिनी सिहारी किन्नें मारी ।
यती हनुमान ने मारी कहाँ जाय दुबकी किनो ने देखी ।

यती हनुमान ने देखी सातवें पाताल गई सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया, यती हनुमन्त पकड़ लाया यती हनुमन्त वीर पकड़ लाय के एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो कोठे तोड़े तीन ताल दे तीन कोठे तोड़े चार ताल दे चार कोठे तोड़े पाँच ताल दे पाँच कोठे तोड़े छः ताल दे छः कोठे तोड़े सातवाँ कोठा खोल देखे तो कौन-कौन खड़े हैं । डाकिनी सिहारी भूत प्रेत ले यती हनुमंत तेरे झाड़े से चले । ॐ नमो आदेश गुरु को गुरु की शक्ति मेरी भुक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचः ॥

End :—उक्त मन्त्र को १००० सहस्र बार जप करै गुगल के औगुल बुरें के फुल की ३०० शत आहुती करै दो और मैनफल को राख को रुई में मिलाकर बाती बनालो यह बाती तेल भरे दीपक में जलाकर उस दीपक को पुजा करो तदनन्तर आठ या दस वर्ष को अवस्था उत्तम वर्ण देवगण वाले पवित्र बालक (लड़का तथा लड़की) को दीपक के सन्मुख बिठलाकर आप भी पवित्रता से मन्त्र के जप के संकल्प का जल मैनफल पर डालदो और दीपक के सन्मुख इस मन्त्र को लिख के निम्न लिखित यंत्र की पुजा करो तथा बालक की हथेली में यह दिखाकर मैनफल की राख तेल में मिलाके बालक की हथेली पर लगादो और पुजित यंत्र उसके गले में दक्षिण हस्त में बांधकर उससे कहो कि तू अपनी हथेली में देखताजा फिर उससे जो पुछो वह अपनी हथेली में देखकर जो कुछ कहै सो

सत्य जानो।

॥ यन्त्र ॥

१	८	३	८
५	६	३	५
७	२	१	२
७	४	५	४

यह विधि उड्डीश में लिखी है।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ७ तक—हनूमान का मंत्र, दो यन्त्र, यन्त्र से प्रथम सन्ध्या की भांति करन्यासादि। मंत्र-सिद्धि करने की विधि।

No. 515. Mantraprayoga-Saṅgraha. Leaves—14. Deposited with Paṇḍita Śiva Kanṭha Dube, Village Deudārapura, District Kheri (Lakhimapura) (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मंत्र प्रयोग संग्रह लिष्यते ॥ मंत्र आपनी देह रक्षा को। ॐ नमो लोह का लोहा जहाँ डाको कूड़ो हमारा पिंड पैठा ईश्वर कुंचो ब्रह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुवंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहीं रहो कुछ चिंता याको देह में नहीं उपजै। सत्त सदी है ॥ बवासीर को मंत्र ॥ उमती उमती चल चल स्वाहा ॥ लाल सूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांव के अंगुठा सों बांधे ॥ दस रोग का गंडा ॥ परवत ऊपर परवत और परवत ऊपर फटिक सिला फटिक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुवंत नेहला टेहला काख की काख लाई ॥ पीछे को अदीठ कान की कनफेड़ कान को अद कंठ की कंठ माला। घुटने का डहरू डाड़ की डढ़सूल पेट की तापतिल्ली फोया इतने को दूर करै ॥ आमंत नावर भे माता अंजनी का दूध पिया हुवा हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति पूरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ सत्य नामा आदेश गुरु का विधि ॥ सात शनीश्चर हनुमान का पूजन धूप दीप नैवेद्य आदि करै १०८ प्रति दिन जाय स्त्री पास नहीं जाय फिर होलो दिवालो ग्रहन में १०८ जापकर बला अदीठ कनफड़ अद कंठमाला डाड़ सब राख से झाड़ै डहरू के आक के ताप तिल्ली छुरी से मांड़े हनुमान का प्रसाद बटवा दिया करै ॥

End :—किये कराये उतारिवा को मंत्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को ऊँ अपर केश विकट भेष अंमति प्रह्लाद राषे पाताल राषे पाव देवी जंघा राषै कालका मस्तक राषे महादेव यह पिंड प्राण को छेदे तो देव दानाव भूत प्रेत डंकनी

खंकणो गंडलोय ते जती एक पहर वा दूै पहर सांभ के सवारा का किया को कराया को उलटि वाहो पिंड पर परे इस पिंड को रक्षा श्री नरसिंह जी करै ॥ सब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा ॥ कोड़नगरा को मंत्र ॥ ॐ नमो आदेश गुरु को आदि नगरा ते चलो रागो सहस कोटि लाप च्यारि कोटि कालो कावरी सब एक उन्हार मंदिर मांहि घर करै पशा ने बहुत सतावै ॥ दुहाई जती हनुमंत की हमारो गलो में आवै तो लंका से कोट समुद्र सो पार जै कोड़ा मगरे रहे तो जती हनुवंत वीर की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥ विधि ॥ तिल काले पर ७ मंत्र पढ़ि कोड़ नगरा पै नापि जै दिन ७ तथा १४ कोड़ नगरा जाय ॥ ताप तिल्ली को मंत्र ॥ ॐ नमो हुवास परवत जहां सुरह गाय सुरह गाय के पेट मे बच्छा बच्छा का पेट में तिल्ली तिल्ली दया दवा तिल्ली कटे सर कहा वहे फोया कटे हरो फुरो । आठ अंका करके छुरी के फलरा सों झाड़ दीजै सरक डा वडे छुरो को छोड़ कटै ॥

Subject :—हर प्रकार के रोगों के मंत्र और वशीकरण आदि मंत्र का वर्णन ।

No. 516 (a). Mantra-Saṅgraha. Leaves—16. Deposited with Bābā Jhabbūdāsa of Badasāhanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अपनी देह रक्षा को मंत्र ॥ ॐ नमो लोह का लोहा जहां हाको कूंड़ो हमारा पिंड पैठा ईश्वर कुंची ब्रह्मा ताला हमारा पिंड का श्री हनुमंत रखवाला ॥ या मंत्र को पढ़ि के कहीं रहो कुछ चिंता वाको देह न ऐं उपजै सत सही ॥ ववासीर को मंत्र । ॰उमती उमती चल चल स्वाहा लाल सूत में तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़ के पांव के अंगुठा से बांधे ॥ दस रोग का मंत्र ॥ पर वत ऊपर पर वत और परवत ऊपर फटक सिला फटक सिला पर अंजनी जिन जाया हनुमंत नेहु ला टेहला फारव को करव लाई । पीछे को अदीठ, कान को कनफेड़ रान को वद कंठ का कंठ माला घुटरने का दहक वाहा को दह मूल पेट को ताप तिल्ली फोया इतने को दूर करै अस्मंत मावन्द्रे माता अंजनी का दूध पिया दुखा हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचः सत्य नामा आदेश गुरु का । विधि । सात शनिश्चर हनुमान का पूजन धूप दो नई देवादि करे १०८ प्रति दिन जाप श्री पास नहो जाय फिर दीलो यादिवाली ग्रहण में १०८ जाप का बला अदीठ कनफेड़ वद गंड माला दाड़-मल राप मे भड़े दहरु को नाक ने ताप तिल्ली को छुरी से झाड़े हनुमान का परशाद बटवा दिया करै ॥

End :—सभा मोहिनी ॥ काल्हु मुष धो करूं सलाम। मेरो षांखों में सुरमा बसे जो देषे सो पांव पड़े। दोहारे औ सुल प्राजम दस्तगीर को छू विधि। सवालाष गेहु पै १२५००० मंत्र पढ़के वांको षाटा करावै औ षांड मिलाय हलवा बनावे फिर जो सुल षाजम दस्तगीर को वस्ते नियाज दिलाके षापही षाय जब किसी सभा मे जाय सुरमा पर सात बार मंत्र पढ़कर लगाय जाय सब सभा वस में होय ॥ सभा मोहनी सिन्दुर। हथेली तो हनुमान बसे भैरों बसे कपाल नारसिंह को मोहनी मोहै सब संसार ॥ मोहन रे मोहनता बोर सब बोलन मैं तेरे फिर सब को हष्टि बांधि दे मोहि तेल सिन्दुर चढ़ावो तोहि तेल सिन्दूर कहां ते षाया कै लाल परवत से षाया कौन लाया बजनी का हनुमंत भौरों का मसिद्ध काला गोरा तोतला तीनो बसे कपाल बुदा तेल सिन्दूर का दुसमन गया पताल दुहाई का मियां सिन्दुर को हमे देषि शीतल होइ जाइ हमारी भक्ति गुरु को शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः सत्यनाम षादेश गुरु को। विधि ॥ सात शनिश्चर वा रविवार दीपक ८ तेल करके लोबान देवे मिठाई भोग धरै १०८ जप फूल पात करके पूजा करै सिद्ध हो जाय तो पाछे जहां जाव सिन्दुर पै सात बार मंत्र पढ़ माथे पे लगाया जाय राजा गुस्सा हो जाय दंड देवे को बुलावै तो देषते ही शीतल हो जाय जिस सभा में जाय वहां के सब मनुष्य षादर भाव करैं प्ररु प्रीति से सन्मान करैं ॥

Subject :—हर प्रकार के ३०० मंत्र षावे रोग षादि के वर्णन ॥

No. 516 (*b*). Mantra-Saṅgraha. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—षासमोनो पास मोहनी मस्तक मोहनी जन्म सभा की जिह्वा बांधोमोहनो मन मोहनी हराहायो हनुमंत विराजे कपाले भैरा श्री श्री सिंदूर को हष्टि देषु पताले ॥ १ ॥ षानो ॥ तुमही से माता तुमही से पिता तुमही हस्त रहतो ये षगिन पा पानी परंतो कार शाय सोता सोता राम राहाय सर सुवर पागिनि सो बाला रक्षा करै गुरु गोरष षवधूत मेरी भगती गुरु को सकती फुरो मंत्र इश्वरोवाचा ॥ २ ॥ धून धूनी मैं देवायु चंद्र सुषद सूर्य ॐ ठकायत देह पानी पानी पड़ते प्रानी होत उचाट लागु ३॥ देषंत के चवला गुचलंत के पगला गुरु हत्ता के पाटल गुमारंता के हस्त लागु लागु नल गु कटक राजा श्री त्रिपुरारी कोटि षज्ञा वेगी लागु ॥ कंवरू देस कमच्छा दोनो अंह बसै षसमाइल जोगी षसमाइल जोगी जोगी वाडी बाड़ी न फूल हंसे न बिगसे न फूल सुषे न कुम्हिलाइ जो सुंघे फूल को बास सो षावे हमरे पास ॥

End :—मंत्र सांप मारक। उत्तर दिसि कारो बादरो त्यहि मध्य ठाठ काल पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा मारो सत खंड लाइ। गदा मारो सत पाल लाइ कै हर २ निर्विष शिवाश। अन्यच्च। थिर पवन निहि विस नासै तेहि देखि थरहर कांपै संसर्जो खाय विसमो अदिष्ट घटै नहीं विश॥ यहि मंत्र कुसलै बालु गाडै माथ तत्काल निर्विष होइ॥ अब बंधन मारै क मंत्र:॥ जटा ऊपर का नार है॥ ॐ नमः शिवाय शिव विचित्र सा पुनः कागा मोटे पनिया परै पोठे ॐ नमः शिवाय विचित्रो आम्यान हरि जमावे क मंत्र कुच मास को परो डंक कापा कौ करार गये न तो निम छोहि काम धात गिध उड़इ सर बाहर यठावहि ठावनो नाच मारो वहाक खंडा न कै पड़ो उठी ठीठी भइ लागु पर मदसर उड़रे बंद कहा हगरनिव पंजरन्द ला कठी काइरे हाकदे पा वैना मायो गिनि डेन उठै विहास दिरे सात समुद्र माझे पड़ो कविष खाइ ओवघरा आमंत्रो रहि हि जमावे जोगिनि पाथतो जागु २ परमेश्वर उड़रे डंक॥

No. 517 (*a*). Mantra-kī-Pustaka. Leaves—5. Deposited with Mahanta Santadāsa of Mauja Sagarāmapura, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॐ पश्चिम देसते चलो हनुमंत वीर पूत छोकहि सो संसार सिझा पहिरे है बजरंग बंदर छुटे भूरे धंगकि सैन पवन को पूत वे बांधे कलजुगकपूत श्री राम पर बीरा पावो देव सुत सब बांधि मंगाये चलु करै चलुबाधु छलुकरै छलु बांधु बलु करै सुदि दे पाउ देवो हनुमंत देव तेरे या मंत्र को या शकि गोइ के मरि मारे तो नारी वहत्तरि कोठाते बांधि मई कारि अपने है बालेन करै तो बहिन भांजी को सज्जा पांउ धरे राजा रामचन्द्र कहरि जान।

End :—मन्त्र पान का।

ॐ कामरु देस कामक्षा देवी तिनने भेजे चारि पान पहिलो पान रातो माता दुजो पान विरह को माता तीजो पान पीरो अउर चउथो पान मिलावेइ जोड़ा जो कोउ थार हमारो पान सो खावे हमारे पास न राति कल न दिन सुख फिर फिर देवै हमारो मुख कालो गुदरो कालो राति जाइ वैठि अमुक की खाट सोवत होइ जगाइ ल्याउ बैठ होइ चटपटी लाउ ठाढ़ होइ चलाइ ल्याउ न थवे मुख रुधिर को छार होहाइ ईश्वर महादेव को दोहाइ नरनुथ जोगी को दोहाई रस मैला जोगी को।

Subject :—हनुमान का मंत्र, ब्रह्मराक्षस छुड़ाने का मंत्र, चोर जानने का मंत्र, मोहन मंत्र, कार्य सिद्धि का मंत्र, फोड़े उतारने के दो मंत्र, बाघ मारने का मंत्र, गोला का मंत्र, विक्षिप्त का मंत्र, वशीकरण फूल का मंत्र।

No. 517 (*b*). Mantro-ki-Pustaka. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Vindheśvariprasāda Miśra, Teacher, Sanskṛita Pāṭhaśālā, Village Gaṇḍā, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ आपको देह रक्षा को मंत्र ॥ ओं० नमो लोह को कोठा जहांदा की कुड़ो हमरा पिंड पैठा ईश्वर कूंची ब्रह्मा ताहमा हमारा पिंड का श्री हनुमन्त रखवाना या मंत्र को पढ़िके कहीं रहे कुछ चित देह मे नहीं उपजे । सत्य सही ॥

॥ बवासीर को मंत्र ॥

उमती उमती चल चल स्वाहा ।

लालधागा मे तीन गांठ देकर २१ मंत्र पढ़िके पांव के अंगुठे बांधे ।

दुश रोग को भाड़ना

परवत उपर परवत और परवत ऊपर फटिक सिला फटिक सिलापें अंजनी जन जाया हनुमन्त नेहं लाट हला काख की कंखलाई पीठे को पठी ठकान की कन फिर रान की भद कंठ की कंठमाल घुटने का डमरू हाड़ को हाड़ शूलपेट की तापतिल्ली की या इतने को दुर करे असलनातर मुक्त माताअंजनी का दूध पिया हुआ हराम मेरो भक्ति गुरु को शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरु का ।

End :—॥ वैरी जेर करबे को मंत्र ॥

ओं नमो वली या वली उसका चसा कुलुफ उसका बाजु कुलुफ दुशमन को जेर हमको खेर ॥

॥ विधि ॥

२१ दिन पूजा हनुमान जी के करै मंगल से १०८ जप करै जप करै धूप दीप नैवेद्य करके मंगल को मंगल १०८ जप करै वृत राखै जहां वैरी बेठा होय रत को चुकटी पै ३ या ७ बार मंत्र पढ़के वैरी को तरफ फूंके ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५ तक—अपनी देह रक्षा का मंत्र और उसकी विधि । ताप-तिल्ली का मंत्र । उसकी सिद्धि की विधि, हाड़ के दर्द क मंत्र । गर्भ रक्षा का मंत्र ।

(२) पृ० ५ से पृ० ८ तक—नेत्र की पीड़ा का मंत्र । डमरू पसली व वायु का मंत्र । उसकी सिद्धि करने की विधि तथा प्रयोग । विष उतारने का मंत्र । सभा मोहनी मंत्र ।

No. 518. Motī-Binaule-kā-Jhagaḍā. Leaves—8. Dated in Samvat 1933 or A.D. 1876. Deposited with Paṇḍita Devatādīna Miśra, Village Sulatānapura, Post Office Thānā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ मोती विनौले का झगड़ा लिख्यते ॥ ख्याल ॥ बड़े बड़ाई कभी न करते छोटे मुख से कहै बचन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ रहूं सिंध के बीच समुन्दर सोप दीप हो रहो आला । पड़ी बूंद स्वाती की मोती नित प्रति हुआ निर आला ॥ चातुर ने करी चाह बड़ी हिकमत से मुझको निकाला ॥ दिया जौहरी हाथ दलहर अद विस का मैने टाला ॥ चातुर के मन बसा तुरत मंगवा मुझ को डाला ॥ सोने का किया साथ यार मुखड़े पर रहता रखवाला ॥ ऐसो धरन से रहूं तुझे क्या कहूं तू आजा मेरी सरन । अपने मनमें सभी बड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ ख्याल ॥ जवाब विनौला ॥ कहै विनौला सुन भाई मोती क्यों करता है बड़ाई । फूलों में सिरदार फूल मेरो दुनियां में है उजलाई ॥ दो दो बांधत शस्त्र पहनते अस्त्र कहलाते सिपाई । सब के कूं ढकूं अदब में रखूं लोग क्या लुगाई ॥ सब के सारे काम लाज में रखूं शरम मलमलसाई । क्या गरीब क्या तालेवर में ढक रही मेरी अधाई ॥ ऐसी धरन से रहूं तुझ से क्या कहूं तू आजा मेरी सरन अपन में सभी बड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥

End :—ख्याल जवाब मोती का ॥ कहै ओ मोती सुनरे विनौले मैं अनमोल बड़ा सिरदार । क्या वजीर क्या राजा बादशाहि बैठे गले में माला डार । जोड़ी ज्योति जगमगी कंच हरी भरा हुआ सारा दरबार । पैसे के दो सेर विनौले मंगा कुंडे रखवा दिये डार ॥ मै कहता हूं सुन बे विनौले अब भी तू होगा लाचार ॥ जिद तू अपनी छोड़ दे हमसे नहीं तो मारुंगा पैजार ॥ जिद अपनी को छोड़ विनौले आजा तू तो मेरी सरन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ जवाब विनौले का ॥ कहै विनौला सुन बे मोती चुपका रहो तू मुरगी के । नंगो बड़ो करदे औरत कपड़े छीन लेवे तन के ॥ मोती के बाले कानों में हाथों में गजरे सोने के । देख तो ये अच्छो लगे हैं बिना विनौले कपड़े के । जब तक तुम पर आब है मोती तब तक तुम हो रुपये के । जब पानी ढल जाय तुम्हारा फिर नहिं कोई मतलब के ॥ बड़ो नहीं तुम मे टकनाया चमकता था जिस दिन । अपने मनमें सभी बड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ ऐसो धरन से रहूं तुमसे क्या कहूं तू आजा मेरी शरन । अपने मन में सभी बड़े हैं मोती विनौले लगे लड़न ॥ इति श्री मोती विनौले का झगड़ा संपूर्ण समाप्तः संवत् १९३३ कार दसखत ॥ श्री शंकराय नमः ॥

Subject :—मोती ओर चिनौले को अपनी अपनी बड़ाई का वर्णन ।

No. 519. Mushṭikaprasna. Leaves—2. Dated in Samvat 1784 or A.D. 1827. Deposited with Paṇḍita Śivakanṭha Dube. Village Devadārapura, District Kherī (Lakhimapura) (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मुष्टिक प्रश्न लिष्यते ॥ लग्न को केन्द्री बृहस्पति तथा शुक्र होय तौ जीव चिंता कहिये ॥ मं. बृ. कुंभ, सिंह इन ऊपर केंद्री मूल थके होय तौ धातु चिंता कहिये ॥ मं. ३ कुं ११ कं. ६ म. १० इनमो कोई लग्न होय अरु बुध तथा शनि वको होय तौ मून चिंता कहिये ॥ ३ बु ॥ २ ध. ८ तु. ७ मि. १२ ॥ कु ४ ॥ चं. बृ. शु. सो जो इनकी दृष्टि होय अथवा स्थित होय तौ जीव चिंता कहिये ॥ ४ बुध लग्न थे ५ अरु ९ ॥ ५ । शुक्र की दृष्टि होय अरु ॥ ६ ॥ शुक्र होय तौ मूल चिंता कहिये ॥ चंद्रमा केंद्रि बुध होय कं सूर्य को दृष्टो होय तौ गुंज मूल बतैये ॥ चंद्रमा को केन्द्र शुक्र देषत होय तौ फल चनका कहिये कपासु पत्रादिक कहिये ॥ ७ ॥ बुध ॥७॥ तथा बृहस्पति होय तौ मिर्च फल तथा धातु स्वाद पीत होय ॥ ८ ॥ शुक्र चंद्रमा तथा शनि । ७ । वे होय लग्न ते तौ जायफल धातु शूल श्रुति कहिये ॥ शुक्र चंद्रमा शनिश्चर जो ७ थे होय तौनि वस्तु होय धातु मूल मृतिक ॥ १० बुध ॥ मं. ॥रा.॥ श. ११ तथा ९ होय तौ सुगंध को फून कहिय ११ ॥ बु. । बृ. शु. जो ये पांचौ होय तथा ॥ १० ॥ थान को देषतौ होय तौ केला को फल कहिये ॥

End :—१२ ॥ राहु के० बु० शु० जो ६ होय तथा स्थान को देषत होय तौ फल्वो फल कहिये । शु. बृ. मं. जो छठो होय तौ तीन वर्ण को वस्तु कहिये ॥ बृ ३ श. १० बु० होय तौ पाटंवर वस्त्र लग्न कुं. चै. श. देषति होय तौ फल मूल कृष्न सुपेद होय १६ चंद्रमा मे. बु. जो १० बारहे होय तौ एक स्वेत पीत वस्त्र होय ॥ १७ । मं. रा. केंद्र लग्न को देषत होय तौ धौढोय धूम्र धुवां रुरोपो वस्त्र होय ॥ चंद्रमा केंद्रो होय तौ स्वेत वस्त्र होय । चंद्रमा भवन शुक्र होय तौ रुपे को मुद्रा कहिये ॥ बुध केंद्रो होय तथा केंद्री को देषति होय तौ फल मूल तृन महा हरो वस्तु होय ॥ बृ. ७।९ तौ रक्त शुक्ल स्वर्ण युक्त वस्त्र जोधे होय सूर्य ४।१० होय तथा लग्न १।७ लग्न को देषत होय तौ मुक्ता फल शुक्ल वस्त्र होय ॥ जो केतु होय तौ विद्रुम होय मंगल केन्द्री को देषति होय तौ लाल विद्रुम होय ॥ केंद्री शनि होय तौ लोहा कार होय राहु केंद्री होय तौ संपाकार होय ॥ बुध ३।५ । होय राहु सूर्य को दृष्टि होय तौ सब गुण तथा देषति होय तौ स्वेत कृष्न जानिये ॥ मंगल शुक्र ९।५ होय तौ मृतिका कहिये सूर्य केंद्री होय बुध २

होय ५ मंगल होय तौ मूड़ो मों फल कहिये ॥ बुध ५।८ चंद्रमा शुक्र देषत होय तौ कालो को फल कहिये ॥ सूर्य ६ मंगल ९ होय तौ तिल मसुरी रक्त कारो करबुर कहिये ॥ शुक्र ११ होय तौ गेहूं जौ कहिये ॥ इति श्री मुष्टिक प्रश्न समाप्तम् शुभंभूयात ॥ लिषतं भोलानाथ त्रिपाठी स्वपठनार्थ नेरी के बोच संवत् १७८४ चैत शुक्ल नौमी ॥

Subject :—ज्योतिष द्वारा मुष्टिक वर्णन ॥

No. 520. Nāḍī Parikshā. Leaves—50. Deposited with Paṇḍita Jagannāth Bājapei, Village Mākhī, Post Office Nevaṭani, District Unnāva (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाड़ी परिक्षा लिष्यते ॥ दो० ॥ शुभमन सरस्वती सुमिरिये शुद्ध चित्त हित आनि । प्रगट परिक्षा जीव की लहियो चतुर सुजान ॥ चो० ॥ पित्त वाति पुनि इलेष्म जानि । देषो धमनी राह पिछानि कटुक तिक्त पुनि उष्ण कौ पानो । स्निग्धरिक्ष त द्रुत विधि जाणो ॥ काऊ मल सम चंचल नाड़ी । पित्त प्रकोपे चले उघाड़ी ॥ दुग्ध दही विस्वा गुड़ खाय । तिसमें ऐसा भाव जनाय ॥ प्रात समै पुनि पाणी पीवे । तिसको नाड़ी पित्त घर थीवे । पीर परवूना संपूर्ण शालौं । मिष्ट क्षार मल पित्त पघालो पीत संधिनो षाय सनि पालो । वात वस्तु षायी होय षातो ॥ चलती चलती फुलिग ज्यों कूदे । कारे मात्र पांणा जिमिलूंदे ॥ सोफ सभी धनियां भषियां ॥ मिश्री गर्दा सब लीजे भषियां ॥ पित नाड़ी इम कफ घर तासे । तो जानि ज्यों वैद उलासै ॥ हंस सरी षहि ज्यों जब धावे । फिर पीछे पित के घर जावे ॥ पाणी सरदो मरदो ऐसो । कफ नारीका लक्षण कैसो ॥ वटेट अति रो धमणी जाणो । वात प्रकोपे सीतल पाणी ॥ सीघ्र चले पुनि सीतल उपजावै । वात पित्त का भेद लषावै ॥ सूष प्रकोपै चंचल हुं चाले ॥ रक्त उष्म को आनो सभांले ॥

End :—चतुर्थ ज्वर को नसवार । वृंदात ॥ पत्र अगथिया के ग्रहो रसको दे नसवार । जुर चतुर्थ ना रहै भाष्यो वृन्द मंझार ॥ पुनः । अपुष कटाली मूल ले रवि नहि उगे सर । गुगल धूप दे बांधिये अतीय ज्वर जाय दूर ॥ पुनः ॥ दुधक मूल जो संग्रहो बुध रवि दिन के वार कंठ बांधो धूप दै अतीव ज्वर जाय निरधार ॥ पुनः एकान्तरादिक को गंगा या उतरे कूले अपुच नाम सो मृत तस्मैति श्लोक कंद धातु मुंचल्ये कादिक ज्वर यविधि ॥ काला तिल एक पाणी इमैं मंत्रसो मंत्र नित्य ज्वर के नामे बाहिर जाय तिलको ढेरी कीजे पाणी को धारा चोनिदं दह दीजे कहो जै मुषिद्र तीमैं नित्य ज्वर जाय । जाति इमि

फढि करि उठि मरि पावै फिर पोछा नै चोडें नहीं ॥ इति मित्य ज्वर आय ॥ मस्तक पोड़ा छिद छिक ये ज सीत ज्वर जोइ ॥ सीत ज्वर को चूर्ण सन्निपात कलिकात ॥ चौ० ॥ पीपल मूल औ पीपल पिता । सुनि चव्यक टांक करि मिता ॥ पांच टांक भांगो जाधा । सैाल टांक चिरायता धाधो ॥ गुड़ पुरानो साढ़ा पांच बोस सिर साद्दो लेनी । का पोस टांक तीन चूर्ण छे प्रातें ज्वर सीता नन रहै इस पांति ॥

Subject :—वैदक वर्णन ॥

No. 521. Nākshatra Prakāśa. Leaves—15. Dated in 1883 or A. D. 1826. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्रावणो श्रवण बादरो महो दुर्लंतो जोच । श्रावण पहलो पंचमा जो नहीं उठे ब्याल । सुगा जे पोल भाल वैठू जासो मोसाली । श्रावण पहिलो पंचमो कै बादल कै बोज । कांम काड़ो रचौ कथा राधो भातर बीज । चाथि नवमो चोदस्या जै संकरण पडाइ । परमणीं जे भा मलो छना भंग कराइ । जेठी घर्व अमावस्या रवि धाढे ता जोई । बोजै शशिहर उमसे स्यानो कहसो मोद । नुत्तर तो उत्तम समो माधै मध्यम काल जो शशि दक्षिण धाववै तैारे बहु काल । श्रावण वदी एकादसी तेतो रोहिणि होइ । ठेता समो परषि जे विरला जाण कोइ । कृतिका तोर फिटयरो रोहिणी तोर सुकाल तेते पाव खुगासिर ता पड़े दुकाहर काल । जेष्ठ सुदिवा निर्जला जेतो घटो का का होई साते मामज दोजियेड घरता फल होई । वेतु घरतो बरसे अपार ध्यारी वचतो पति वनसार । पंचे पंचल नृपिरिवाई । छयो मा मेहज धाई ।

End:—धादि भरणी असलेष मधा तिहुं उनाधों रस तिथि धा । सात नक्षत्रा का कहो । जै सिर वै सैभाला । शर सोषे घरधो करै । योन वृद्ध धसराल । पून्यो गन्यो परि धागलैा ॥ मलोज पंचक मूल । पूर्वाषाढ़ धेड कसो तो निपजै सातु त । चैत बीता वैशाष अड्डेसो । तिथि नषित्र जोरई रै मोसो तिथि तो पर्वत दाले । नक्षित्र धचै तो पाल बिगासै । तिथिवार होइस समतुला तो पृथ्वो फुलै सो वन फूला पथवेज सर सात दिवस बरसै छुधन जल पति होर ज्ञु पुर । मोग बुलातो सो हो गया तू क्यों चलो नाह । पार भरमे छे महली छवि ए चतु-राधा ॥

No. 522. Nāmarāsi Lakshaṇa. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Vāsudeva Pānde, Village Kamāsa, Post Office, Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—दया गुरु की ॥ अथ लिख्यते नाम रासी के लक्षण ॥ मेष रासी पुरुष की अच्छी सुरती होयगी ॥ महीना भादों का अच्छा शुभ होयगा ॥ वार आदित को शुभ होयगा ॥ कंमर में पीर होयगी ॥ ताको इलाज ॥ गुलाब और आसकंद ॥ व कालो मिरच ॥ व सोंठि ॥ सब को बराबर करिके पीसि के ॥ गोली बनावै गरम पानी से खाइ तो आराम होयेगा ॥ जो चन्द्रमा देखै तो वह महीना खुसी में बीतेगा ॥ देही पतरी होयगी ॥खरच बेकदर करेगा ॥ लोहू एकबार गिरेगा ॥

स्त्री वृष रासि होय तो पहिले स्त्री मर जायगी ॥ दूसरी स्त्री के लरिका होयगा ॥ लरिका सब होयगे ॥ लरकी पांच होयगी इतनी संतान होयगी ॥ तीस में लरिका दोय जीवेगा ॥ लरिकी दोय जीवेगी ॥ और सब आखिर हो जावेंगे । तीस में एक लरिका तालेश्वर बहुत होयगा ॥ और बड़े आदमी के पास जाय तो दाहिने बैठे तो बड़ी पदवी पावेगा ॥ अलप बरस ग्यारा ॥ ११ ॥ में होयगी ॥ अलफ बरष ॥ १५ ॥ में होयगी ॥ ऊंचा से गिरेगा ॥ बरस बीस ॥ २० ॥ में उपद्रो उतारन होयगा ॥ बरस चालीस में अलफ भारी होयगी ॥ आगे उमरि बरस नबे ॥ ९० ॥ जीवेगा ॥ अंग राखै तो सुखी होयगा ॥

End :—४४३ ये सकुन धर्म नहीं थांय पण धर्मन नीहानो थसे । बीच में विरोध उपजसे छे माटे तुसा बध रहे जो बीज का मामला मध से विचारि काम कर जो महनो पुजा करजो दुख टल से तोल (तिला) इन्द्री ऊपर छे: ऐसकुन तु काम धो पानी से गई वस्तु आवसे पाछी एक मास येक बरस माहडोछे व्यापार माल मध से राजा श्री केन मान थसे सुमन मा संतोष राखे जे ये निशानी ये निशानो तारो इन्द्री ऊपर तोलछे ॥ प्रश्नावली समाप्त ॥ गुरुदया ॥

Subject :—

(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—मेष राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण । कमर की पीड़ा की औषधि व उनके पास रखने के लिये एक यंत्र ।
(२) पृ० ३ „ „ ६ „—वृषराशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण व यंत्र ।
(३) पृ० ६ „ „ ९ „—मिथुन राशि के पुरुष „ „ „ „ ।
(४) पृ० ९ „ „ १० „—कर्क राशि के पुरुष का लक्षण, औषधि व यंत्र ।
(५) पृ० १० „ „ १२ „—सिंह राशि के पुरुष तथा स्त्रीके लक्षण तथा यंत्र ।
(६) पृ० १२ „ „ १३ „—कन्या „ „ „ „ औषधि ।
(७) पृ० १४ „ „ १६ „—तुला „ „ „ „ „ ।
(८) पृ० १६ „ „ १७ „—वृश्चिक „ „ „ „ „ ।
(९) पृ० १७ „ „ १९ „—धन „ „ „ „ „ ।

(१०) पृ० १९ से पृ० २० तक—मकर राशि के पुरुष तथा स्त्री के लक्षण तथा यंत्र।
(११) पृ० २१ „ „ २२ „ —कुंभ „ „ „ „ „ ।
(१२) पृ० २३ „ „ २४ „ —मीन „ „ „ „ „ ।
(१३) पृ० २५ „ „ ४० „—शकुनावली फल सहित ।

No. 523. Onāmāsi, Bārahakhaḍi, Pañchapāṭi, Dhāturūpa and Laghuchānakya Rājnīti. Leaves—18. Deposited with Gosvāmiji, C/o Paṇḍit Badri Nāthji Bhatta, Husainganj, Lucknow.

Beginning :—सिद्धि श्री गणेशायनमः ॥

ॐ नामा सीधं ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ
ओ औ अं अः ॥ क ख ग घ ङ ॥ च छ ज झ ञ ॥
ट ठ ड ढ ण ॥ त थ द ध न ॥ प फ ब भ म ॥
य र ल व श ष स ह ॥ क्ष त्र ज्ञ ॥
क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ।
ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः ।
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः ।
घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः ।

Middle:—

पठकः पाठकश्चैव ये चान्ये शास्त्र चिन्तकाः ।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रिया वान्सपंडितः ॥ ७ ॥
परोप देशे कुशला दृश्यन्ते बहुवो नरा ।
स्वभाव ननु वर्तते सहस्रे ष्वपि दुर्लभा : ॥ ८ ॥
हतं ज्ञानं क्रिया हीनं हता ञ्चज्ञानिनो नरा ।
हतं निर्नायकं सैन्यं भभर्तार स्त्रियो हता ॥ ९ ॥
केचिद् ज्ञानतो नष्टा केचिन्नष्टा प्रमादतः ।
केचिद् ज्ञानावलेपेन केचिन्नष्टै स्तु नाशिता ॥ १० ॥
अप्रिय वचन दारिद्रै प्रिय वचनाढ्यो स्वदार पति तुष्टे ।
परि परिवाद निवृत्ते क्वचित्क्वचिन्मंडिता वसुधा ॥ ११ ॥
इति लघु चाणक्ये राज नीति शास्त्रे द्वितीयो ध्यायः ॥ १२ ॥

End :—

पंचैतान्यपि सृज्यंते गर्भस्यस्यैव देहिन ।
आयु कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ॥ ७

लिखिता चित्र गुप्ते ललाटे ख्तर मालिका ।
तां देवोपि न शक्नोति अत्थिप्य लिखितं पुनः ॥ ८ ॥
भाविलव्य यथा येन नासा भवति चान्यथा ।
नीयते तेन मार्गेण सुखं वा तत्र गच्छति ॥ ९ ॥
स तत्र बद्धा रज्जेव बलाद्दैवेन नीयते ः ।
संसार विष वृक्षस्य द्वे फले ध्रमृतोपमे ॥ १० ॥
काव्यामृत रसास्वादः संगमः सज्जने सहः ।
वने रने शत्रु जल अग्नि मध्ये महार्णवे पर्वत मस्तकेवा ।
सुतं प्रमत्तं विषयस्थितं वा रक्षानि पुन्यानि पुराकृतानि ॥ ११ ॥
इति लघुचा णाक्‍के राज नीति शास्त्रे अष्टमी ध्याय समाप्ता ः ॥

इति

Subject :—पृ० १—२—धोनम तथा बारह खड़ी संपूर्ण

पृ० ३ से ५ तक—सिद्धो वरनाको प्रथम पाटी संध्ये सूत्र वर्णन द्वितीय से पंचम पाटी तक वर्णन ।

पृ० ५—६—धातु रूप वर्णन ।

पृ० ७—१८ तक—प्रार्थना राजनीति शास्त्र प्रथम अध्याय से अष्ट अध्याय तक भिन्न भिन्न विषयोंपर श्लोक वर्णन ।

इति

No. 524. Padamāvata. Leaves—144. Deposited with Paṇḍita Krishṇa Vihāri Misra, Model House, Aminābāda Park, Lucknow.

Beginning :—नहीं होता ये सब कहते हैं अकसर । नज़ारा जो चमन का सेहरां चुसकर ॥ तमासा कर वधर से बाग कूं जामें । गुलो गुंचे के साथ इस दिल कु वैलामें ॥ हमरी खातर अवके साल गुलसन । भरे हैं कैसे ये फूलों से दामन ॥ दिले आस्क से वो देखा मिला है । जहां लाला है वोर आवेर वा ॥ गुले चंपा मिलाया वन खिला है । तेरी चंपा कलो से खुसनुमा है ॥ गुलों के बीच मैंनू सेरा दाना । रखा हो मुसखिल चुं जामनोना ॥ है खपे सवज पर गुंचे नमूदार । तेरे तोते के जैसे सुरख मिनकार ॥ वहा चेहरे को कर गुल के मुकाबिल । कि जामें फूल इसके गुल भनादिल ॥ चिरागे गुल नहो क्यों कर मला गुल । तेरे आगे है गुल चुं समे काफुल अगर न रगसे तू आंखे लड़ावे ॥ उस नज़रों से बधो मिल के आवे ॥ नरज़ संव मांहक बाने फिद.बाज़ । चमन के वस कमेथो तुम्हें सदाज़ ॥ मखो मासा ज़ुबाने मसल हतकार । ना कहतो थो सखुन वज़ह

गुल जार ॥ लबे हर लाले थो बरसोय शंमेज । न रहता खुश हरफ़ गुल मानिंद ॥ गुल रेज़ पदम भी चाहती थी उनको प्यार । हुई तैयार हकसत पास पातर ॥

End:—पदम को रखा उसमें खास पोसाक । फिरे बेताब करके चुस्त चालाक । चले दिल्ली को जान पाद ले तंग । बजाहर सुले ले किन पर्दे में जंग ॥ ये सोहरत हो सबी सहरो नगर । पदम राजी है जाती है साह घर मे ॥ रतन से हाथ उठाकर बादले जान । हुआ चाहे सह के घर मुसलमान ॥ वई सुरत जा हिन्दुस्तान में आये । और उसका खास डोला साथ लाये ॥ रखी पोसाक उसमें थी मुयत्तर । अमर कुर बान होते जिसके ऊपर ॥ हजारों गिर्द डोले उसके बाहम ॥ कि है इसमें परस्ता राम हमदम ॥ वईं सुरत गरज वो फौज मक्कार ॥ फरोदाई लबदरया चूं इकबार ॥ खबर जल्दी से सुलता को सुनाई ॥ कि पदमावत हुजूरी में है आई ॥ हमे इसके मुह स बसही भरती । पसन्न आदाब है ये अर्ज करती ॥ मैं कुफरे काफरों से हूं गुरेजां । फकं तलकोन तरीके दोनों इमान ॥ रतन को कीजिये रुख़सत कदीदम । कुछ उससे हमको कहना है कहे हम ॥ मुझे कहना है जो कुछ कह सुनाऊं । फिर बंदगी में सह की आऊं ॥ गुलामाने वफा जो सब आये । उसे जो लामें वैसे ही जामें ॥ यकोन पेसाही सुन के साह कु आया । न पैराहन में फिर फुला समाया ॥ कहाले जाओ जल्दी से रतन कु । दिखाहो जाके उस रसके चमन कु । मेरी जान बसे यही कहियो बसद सौक । कयेहद तेरे मिलने का है बस जौक ॥ हिदायत को खुदाने तुमको जाना । कि तू होने को आई है मुसलमान ॥

Subject :—रानी पदमावती का हाल वर्णन ॥

No. 525. Panchānga Darpaṇa. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—दोहा (इस दोहे को रचयिता ने पुनः शुद्ध करके लिखा है)।

(विन सताब्द को यब्द में द्वादश भाग जो लेह। सेष माहिं भू हीन करि) बिन सताब्द को यब्द में ले द्वादस को भाग। येक हीन यदि माह्र तक जन्म बृहस्पति लाग ॥ १ ॥ सात ज्ञोरि संवत् विषे ले बारह के भाग। जन्म समय सब जनन के इहैं वृहस्पति लाग ॥ सन ७८ जोरि के सन ईस्वी बखानु। सन ५७ जोग ते सम्बत् विक्रम मानु। पुरसन हिजरी फसली जानु। हिजरी मोहर्रम से मानु। आदि कुवार बदी से साहु। प्रारंभित फसली को चाहु। इस्वी सन पंचयमाही ५८२ घटे हिजरी सन सुद्ध तावे पलटे तिनि संवत षट बंतालिस ६४९ हीं। हरिये हिजरी कहिये तबहीं। हिजरी सन में १० दूरि करै। फसली सन यों हिये मांझ धरै फसली सन को बहु चाहु चलो। चहिये अपनी समझे सुमलो।

End :—

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	शरीर पीड़ा १५ व०	चलि दुःख धन नाश	निरोगी २०	देह दुःख १४ धन	बहु कोप २ पुत्र पीड़ा	शत्रुनाश २६ में लाभ	दुष्ट स्त्री ४१ संतति पीड़ा	नेष्ट ५७ वर्षे श्रेष्ठ	दुर्बुद्धि ३६ से श्रेष्ठ	दुः कर्मी ४/२१ श्रेष्ठ ४२	राज मैत्री २२ पु० सु०	दुष्ट सुभाव २८
चन्द्र	कांति सुख २७ राजस	बहु संपत्ति ३७	कीर्ति-वान ५ लाभ	सुभोगी २२ पुत्र	बहु पुत्र ६ क्लेश	अल्प कोपी ७ उत्सव	स्त्री २ रूपवती सुपुत्र १५	नेष्ट ६ क्लेशित	धर्मबुद्धि २०	ख्याति कीर्ति ४२	धनवान २० श्रेष्ठ	काना व रोगी ३०
मंगल शनि राहु केतु	एक की प० पु० में	दुःख प्राप्त धनना १२	दुष्ट बुद्धि १३	बहु दुःख मातृ पीड़ा ८	संतति हीन मातृ पीड़ा ५	शत्रुनाश २४ सुख	दुष्ट स्त्री संतति पीड़ा २७	नेष्ट २२	पितृनाश १४ वर्ष	शत्रु भीति २७	धनदः ४५	हानिद ७५
बुध	कांतिदः १० वर्षे	धनदायी २६ सुख	धनदायी २२ भ्रातृ पीड़ा	पुत्र लाभ २२	मातृ हानि २६	शत्रु से मृत्यु २१	स्त्री दाता १९	द्रव्यदाता १४	मातृदः १९	द्रव्यम् १९	धन लाभ ७५	स्त्री हानि ७५
बृहस्पति	विशेष बुद्धि ८	धनदः ३२	मित्र समागम २०	बंधु तनय लाभ २२	मामा के अरिष्ट ७	शत्रु म० ४०	स्त्री लाभ १२	महाव्याधि ३१	पितृ-रिष्ट १५	द्रव्यार्जन १५	द्रव्यार्जन १५	व्यय कृत १५
शुक्र	परदा-रमा १७	धन लाभ दः ६०	तीर्थ दाता ४	बंधु सौख्यदा ५	लाभ कृत ६	शत्रु हानि प्रद ४१	स्त्री लाभ १४	पराक्रमः १५	लक्ष्मी प्रदः १५	बहु सौख्यं ४	बहु सौख्य ४	धन ५

Subject:—किसी का ग्रह बताने के हेतु उसका गत वर्ष और जन्म संवत् ज्ञात करना।

(२) उपर्युक्त संवत् और वर्ष ज्ञात होने पर पंचांग दर्पण चक्र द्वारा उसका फलादिक बतलाना

(३) नक्षत्रादि की घड़ी, वार तिथि आदि जानकर कुंडली के कौन २ ग्रह किस राशि में हैं उसको बतलाना।

(४) बृहस्पति १९ महीना शनि २॥ वर्ष, राहु-केतु १॥ वर्ष एक राशि पर रहते हैं। राहु केतु का सदा वक्री रहना।

(५) मस्तक रेखा तथा कर रेखाओं को देखकर जन्म कुंडली के ग्रह बताना।

(६) पंचांग दर्पण चक्र

No. 526. Panchayajñavidhi. Leaves—4. Deposited with Thākura Badrīnātha Siṁha, Village Kharauhi, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पंच यज्ञ विधि ॥ गोग्रास। सुरभिर्माता सुरभिः पिता सुरभिः पितृ तारिणी ॥ गोग्रास ममयादत्तं सुरभे प्रति गृह्यताम् ॥ १ ॥

× × × ×

प्रथम चक्र बनावै जिसका द्वारा पूर्व राखै ऐसा चार कूट वाला चक्र करे। इस चक्र के पूर्वादि दिशा ईशान्यादि विदिश कल्पना करे प्रथम ईशान दिशा में काष्ठ पात्र राखे तिसमें जल जल में ॥ ॐ ब्राह्मणे स्वाहा ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा × × × इन मंत्रों से तीन जगह जुदा जुदा पत्र धरे × आदि ॥

× × × ×

End:— × × ×

× × × ×

इन मंत्रों से अग्नि में पंच आहुति करै ॥ अग्निविसर्जन करे ॥ ॐ गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मा दयो देवा स्तत्र गच्छ हुताशन ॥ इति हुत यज्ञ पंचम ॥

इति पंच यज्ञ विधि समाप्त ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ८ तक—गोग्रास, हन्तकारं, अतिथि पूजन, अपस्थम्, श्वान बलि और वैश्वदेव कर्म विधि।

No. 527. Philanāmā. Leaves—144. Dated in Samvat 1939 or A. D. 1882. Deposited with Mahārājā Library, Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ अध्याय पहिलो। हाथी को होसियार करना वा दैाराना। दवाई॥ मदार के कोपल, पलास्र के जरि। कंद इल के जरि रुद के पातो इन सब चोजों को मिलाय के के तथा ठंडा के के पिलावै तो हाथी मस्त हो जावै थोरे दिन में॥ १॥

दुसरी दवा॥ २॥

कतोरा पैसा भर॥ २५॥ पहिले हाथी को नहवाइ कै कतोरा पीसि के पांच दफा चक्की दहिने हाथ से फेरै और एक नांद में चार सेर पानी डाले और तीन पाव मैदा के दुइ रोटी बनावै और दवा रोटी में डालि के पकावै और आधी राति का पिलावै और सोने न देवै और सवेरे फेरने का पूरब तरफ लेजाइ और पानी में न जाने पावै तो मस्त हो जावै॥ २॥

End:—एक से एक कुवां के पानी एक से एक पेड़ के पत्ती गोहु के आध सेर कच्चा भूसी एक बरतन में डालि कै पिलावै धार नागा न करै करनो बदफा हो जावै अगर कछु पिलाया होइ तो इग्यारह अंडे मुरगी के पीसि कै घो एक घुटको भर दिया करै तो करनो व कसरन करै धो जायज होवै तमाम शुद॥

इति *

मि० पूस बदी १२ सन १२८९ फ० मुताबिक पहिलो १ जनवरी सन १८८२ इसवी रोज रविवार मुकाम लखनोऊ मे लिषा गया॥

द० इन्द्रजीत सिंह समवन्स साकीन गोंड़ा पास के जैस प्रति पाया वैसा लिषा शायद कछु भूल चूक होय तो चतुरो सुधारि लिजिएगा॥ और माफ करिये॥

Subject:—हाथियों के अनेक रोगों को खिलाने तथा लगाने की औषधियां।

पृ० १—३० हाथी का मस्त करना, होसियार करना, दैाराना धारन या पाचन की दवा।

पृ० ३०—३६ अनेक तरह के जुलाब।

पृ० ३६—४० पेचिस व वाई आदि की दवाइयां।

पृ० ४०—४६ जहरबाद आदि की दवाइयां।

पृ० ४६—५२ रस का हन व आमासय आदि की दवा।

पृ० ५२—५८ बिलर, नस्त वा कादवत वगैरः की दवा।

पृ० ५८—६४ दांत, नाखून, हुदावा, लड़का आदि की दवाइयां।

पृ० ६४—७२ पलका, नाखूना, जाला, फूला, सफेदी, आदि आंख की बीमारियों की दवा।

पृ० ७२—८२ तक—मरहम घाव, खाजन, बमनो, नासुर आदि की दवा।

पृ० ८२—८४ पीठ, कपोल आदि की सूजन की दवा।

पृ० ८४—९२ कांडो याछोव या तल वांस और की दवा।

पृ० ९२—९४ रस गोली वा खुर वा मक्ती या चमड़े का सड़ होजाना।

पृ० ९४—१०२ अग्नि घाव वा बाई।

पृ० १०२—१०४ बाल बढ़ाना, बाल सफेद करना।

पृ० १०४—११२ ज्वर व ललारी आदि को दवा बासा बाव व खोरह की दवा।

पृ० ११२—१४४ घोरल घरना हाथ का और फुटकर दवाइयाँ।

No. 528. Piyūsha-Pravāha. Leaves—190. Deposited with Paṇḍita Bhagavatīprasāda Triguṇāyata of Taradahā, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ बुनक सूजन गदई के भीतर होति है तीने के पहिचान यह है—कि पानी पियत की पानी नकुरा की राह से बहत है और कबौ कबौ गदई गोड़मा रमरत है और गदई छुअइ नाहीं देत कबौ कबौ सूजन ऊपर ऊपर देखाई देत है बहुधा ई रोग कनार के पाछे होत है ॥ इलाज कपड़ा कै गद्दी बनाइ कै गरम पानी मा भेइ के बांधै ॥ अथवा बजरी मेरोठी बराबरि कूटि कै पोटरी बनाइ कै क ॥ अथवा नीम के पातौ मकोइ के पातौ पीसि कै आमिल तास का गूदा मिलाइ कै गरम गरम लगावै ॥ अथवा यह दवा लगावै कि पाका नरम होइ कै फूटि जाय पियाज पीसि के तुलिया मिलाइ के लगावै ॥ अथवाँ भैंसा का गोबर नमक साँभरि आदमी का पेसाब मा खुरे कै लगावै ॥ अथवाँ मैंन फल मैथी आमा हरदी घी कुआरी का गूदा बराबरि पीसि कै लगावै ॥

End :—बरगद कर नरम पात महुआ कर बोकला जामुनि कर बोकला लोघ हर्रा कै छाली हरदी सब बराबरि पीसि कै महीन लेप करै तो गरमी रोग जाय ॥ अथवाँ ॥ जंगी हर्रे ८ पैसा भरि खैर सपेद १ पैसा भरि नीला-थोथा १ पैसा भरि सब महीन पीस १०० नेबुआ के रस मा खरल करै और १ रत्ती भरि कै गोली बनाइ नित एक गोली दहिउ के साथ खाय तौ गरमी रोग जाय ॥ अथवाँ ॥ नीला थोथा १ भाग खैर २ भाग मुरदा संख २ भाग सुपारी

के राखी २ भाग सब महीन पीसि के गरमी मा बुरकावे तो गरमी रोग अच्छा होय ॥ अथवा ॥ पारा १ टंक और सार १ टंक अकर कड़ा २ टंक सहत ३ टंक सब महीन पीसि कै ७ गोली बनाइ कै १ गोली रोज जल के साथ खाइ तौ सब प्रकार की गरमी जाइ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ५२—वंदित ।

(२) पृ० ५३ से पृ० १२० तक—घोड़ों की चिकित्सा—गले की सूजन, तालू की सूजन जीभ के दाने, लगाम की रगड़ आदि, खांसी, हांसी, दम, शूल, अध कुरकुरी, २१ प्रकार की कुरकुरी का लक्षण, सदावर्त शूल, पतरावत शूल, रक्त प्रेत शूल, काम दुःख शूल, मदावरत शूल, पाता वरत शूल, भूमिवरक शूल, कासावरत शूल, मुत्रावर्त शूल, कलाकर लदग शूल, कसावत शूल, प्रसव-रत शूल, अजीर्ण शूल, सर्वकाम शूल, उदार्त शूल, पंजन शूल, मायावरत शूल, लीद बंद होने, पेट से कुरकुर आवाज आने, पेट में पड़ी जोंक, पेट की सूजन, कम पानी पीने, पेशाब में खून आने, बहुत पेशाब आने, गुमताम, पीठ, की सूजन। अंग की सूजन, घोड़े की तंग, बेगहड्डी ओगीरा, आनुआ, हामिनी, चकावरि, पुस्तक, कफगीरा, उदय करन बाउ, गज चरण, सुम की पुतरी से पानी बहने, रस उतारने, सुम भौर होने, झनक बाई, अहरवाद, अंडे की सूजन, अग्नि-बाई, देह की गुरथी, रक्त पित्ती, ज्वर, सन्निपात ज्वर, वात ज्वर पित्त ज्वर, कफ ज्वर, सीत ज्वर, छंघान ज्वर, घोड़े के ज्वर, जोड़े के बाद की औषधि, मस्ती से भरने की दवा, चांदनी मारने, बाल काले या लाल करने की तरकीब, सितारा मिटाने की तरकीब, झोला मारने तथा सांप काटने के इलाज।

(३) पृ० १२१ से पृ० १३७ तक——ऊंटों की बीमारियां। खारिश की दवा, ऊंट के लिये हाजमे का मसाला, दौड़ाने का मसाला, लद्दू ऊंट के निरोग रहने की औषधि, कपाली, मुंह के छाले तथा खांसी का इलाज, बंगली, सूजन, अफरा पेट का दर्द, पेट का महराना, पेशाब बन्द होने, जानुआ, झोला, पीछे वाले पैर की सूजन, सरदी से जकड़ने, ऊंट के मरने, ताव खाने, खाते-पीते भी दुबला होने, बाई, कांपने, रस्सी तुड़ाने, मिट्टी खाने, चोट लगने, नासूर, कोढ़ा, जख्म, खारिश, किटो तथा किलनी के लक्षण और औषधियां।

(४) पृ० १३८ से पृ० २१३ तक—हाथी की चिकित्सा। हाथी के सदा निरोग रहने, धारन सुखदेव, हाजमा, धारन मोहन, धारन पचौनी, मोटे होने, दौड़ने तथा तेज चलने, दल का रोग, फूलो, माड़ा, जाला, नाखूना, कोइली जबन, अजीर्ण, कै कराने, मरोड़, पेट के कीड़े और आंव गिरने का इलाज। जुलाब, दस्त बंद करने, पिछले अंग के दाहिने बायें खिंचने, आनुआ, पेट

की कड़ो सूजन, खाजन, नाखून गिरने, रव उतरने, मिट्टी खाने, जहरवाद, गले का जहरवाद, सन्निपात, बाई जकड़ने, नाच खाने, चमड़ा कड़ा होने, जख्म होने, नासूर, तालू, थूथन और पीठ को सूजन, पीठ का जख्म, मस्ती आदि की औषधियां। हाथी लड़ाने की विधि, दांत साफ करने, दांत फड़ने दांत टूटने, कोड़ा पड़ने, सड़ने आदि का इलाज।

(५) पृ० २१४ से पृ० २२० तक—बैल तथा भैंस की चिकित्सा रोगों का लक्षण तथा इलाज, जुआं पड़ने, कंधे की सूजन, पलान आदि से हुई सूजन, तरकीब, बाघी, डंकराने, गर्भस्थली होने, दूध बढ़ाने की औषधि तथा गऊ की साधारण बीमारियों में पूजा का विधान।

(६) पृ० २२१ पृष्ट २२३ तक—बकरी और भेड़ की दवा। पुड़े, मुंह सड़ जाने, पेट फूलने, जख्म होने आदि की दवायें।

(७) पृष्ठ २२४ से पृष्ठ २२७ तक—कुत्ते बिल्ली की दवा। सरदी की बीमारी, ऐसे जख्म को दवा जो चाटने की जगह पर न हो। किलनी लगने आदि के इलाज॥

(८) पृ० २२८ से पृ० २५० तक—चिड़ियों की दवा॥ आमिष और निरामिष भोजी चिड़ियों का इलाज। सरदी, सिरदर्द, आंख के रोग, फूली, जाला, पानी बहना, पलक की फुन्सी, पलक की खुजली, आंख का नाखून, नाखून तथा पंजा फटने, नाखून टेढ़ा होने, पंजे के मसे, मुंह तथा कंठ के रोग, मुंह की सूजन, सरदी से तालू खुजलाना, गर्मी की खांसी, सिर में गर्मी चढ़ने, दाना न पचने, वमन में कीड़े गिरने, कलेजे पर सूजन होने, अन्दर में कीड़े पड़ने बवासीर, पांव की गांठ की सूजन, करोच के जूं, देह पर बाल खड़े होने, आरिश तथा सूजन की दवा।

(९) पृष्ठ २५१ से पृ० २६७ तक—मुर्गे की दवा। कबूतर, बटेर आदि को दवायें।

सोप रोग, दीवाना होने, ताकत कम होने, पेचबाव, लड़ाई का घाव। कबूतर के रोग, सोप की दवा। बटेर का जुलाब। तोते की दवा, कम बोलने और सरदी की दवा। बुलबुल की दवा, ज्यादा लड़ने की शक्ति होने की दवा। जर्रा, बाज तथा शिकरा का इलाज। गुलाल चश्म की दवा, शिकरा की दवा, परिवाल कच्ची करने, मुंह से तामा गिरने का इलाज। स्याह चश्म की दवा जर्द या तितरमुती का इलाज। तीतर की दवा।

(१०) पृ० २६८ से पृ० ३८० तक—आदमी का इलाज। ज्वर लक्षण, औषधि, सर्व ज्वर चूर्ण, सर्व ज्वर रस, तिजारी की दवा, चौथिया ज्वर

की दवा, सर्व सन्निपात लक्षण; संधिक लक्षण, भग्नेत्र ज्वर का लक्षण, प्रान्तिक सन्निपात, चित्त-भ्रम सन्निपात, कंट कब्ज, प्रलाप, सन्निपात, शो गङ्ग सन्निपात, अभिन्यास सन्निपात, जिह्वक सन्निपात, हमादाह सन्निपात, तंद्रिक सन्निपात, करनक सन्निपात आदि की औषधियां और लक्षण। सर्वसन्निपात की दवा, सर्व सन्निपात पर रस तथा काढ़ा; सन्निपात की गोली, काम ज्वर, पजोबे ज्वर। ज्वर, के दस उपद्रव—तृषा, खांसी, स्वांस, हिचकी, वमन, अतिसार, अरुचि, बद्धकोष्ट, अफरा तथा मूर्छा की औषधियां। संतत आदि—सर्व विषम, ज्वर, ज्वर का यत्न, ज्वरारि रस, विषम ज्वर पर अंजन, विषम ज्वर पर लक्षादि तैल, अतिसार रोग की उत्पत्ति तथा लक्षण, वात के अतिसार का लक्षण तथा औषधि, रक्तातिसार, गुदा पाक, आमातिसार के लक्षण, सर्व संग्रहणी का यत्न, पांडु रोग की उत्पत्ति, लक्षण तथा यत्न, मृगी रोग की उत्पत्ति; लक्षण और यत्न, वात की औषधि, अमृत गुटका; पित्त तथा कफ, की उत्पत्ति और यत्न। पिलही रोग, सुजाक तथा उसके भेद, पथरी, प्रमेह, गर्मी, विसर्प आदि रोगों के यत्न

(११) पृ० ३८१ से पृ०.................लुप्त॥

No. 520. Pothī-Praśna. Leaves—27. Dated in Samvat 1848 or A. D. 1791. Deposited with Paṇḍita Śyāmasundara Pāṇde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री रामचन्द्राहि पूछहु।

१—विवाह होइगा प्रवसि कै घर बैठ॥

२—वस्तु गई पै घर के मानुष के भेद सैं॥

३—झगड़ा जिनि करहु निह फल है॥

४—परने जिनि जाहु निह फल है॥

५—गांउ गया आयत है धन सहित॥

६—मित्र करहु मिताई भल होइह॥

७—गई वस्तु पैबेहु भेद लगाये रहहु॥

८—राजा राज पावेगा किछु दिन मा॥

९—संतति एक होइह मागोविंत॥

१०—विद्या पावहु गे पढ़ै के बहुत दिन महनत करहु॥

End:—भंगैवहि पूछहु।

१—पारा कर्म जन करहु अशुभ है॥

२—औषध लिहे हानि है जिनि लेहु॥

३—रोगिया ब्राह्मन जिवाये नीक होइ है ॥
४—ग्रर्थ रोजिगार किहे प्राप्त होइ है ॥
५—व्यापार जिनि करहु मूर मा हानि है ॥
६—श्रात्रा सुफल होइह करहु ॥
७—चाकर राषहु सुदरैन रहि है ॥
८—वेष्या लावहु ग्रानंद होइ है ॥
९—चोरी ते बड़ा दुःष होइह जनि जाहु ॥
१०—पैठो करहु लहना होइहि ॥
इति पोथी प्रसन्य के सम्पूर्णम् सुभ समाप्ते ॥
जो प्रति देषा सो प्रति लिषा दोस मम न दीयते ॥
मिति सावन बदी १३ वार बुद्धवार संवत् १८४८ सन् ११९८

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० २० तक—प्रश्न कोष्ठ।
(२) पृष्ठ २१ से पृष्ठ ५४ तक—प्रश्नों के उत्तर। नई वस्तु पाने, संग्राम करने, ब्याहो करने, चिंता करने, गांव चलने, बंदी बांधने, रोगी अच्छा होने, बगीचा लगाने, रोजगार करने ऋण लेने, नौकर रखने, उधार देने, तीर्थ करने, राजा के राज पाने, ग्रर्थ प्राप्त होने, विद्या पढ़ने, यात्रा करने, संतति होने ग्रादि प्रश्नों के उत्तर ॥

No. 530. Pothī Ramalasaguna. Leaves—9. Deposited with Paṇḍita Syāmasundara Pānde of Brāhmaṇapura, Post Office Paṭṭi, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गनेस ग्राय नमः ॥ ग्रथ पोथी रमल सगुन ॥१११॥ येह सगुन ग्रच्छा है जो काम चाहोगे सो होयगा भगरा मा है ब्यवपार मा लाभ होयगा तेरे दिन ग्रच्छे हैं गे ॥ काम मनोरथ सो होयगा—तेरी दाहिनी भुजा पर तिल है ॥ सो देष लेना ॥ ११२ ॥ येह सगुन मध्यम है ॥ दूसरे काम विचार के करना ॥ कुल देव की पूजा करो ॥ तुम्हारी स्त्री झूठ बोलती है ॥ सो विचार लेना ॥

॥ ११३ ॥ येह सगुन का फल सुनो ॥ स्थान लाभ होइगा ॥ चित्त की चिंता मिटैगी ॥ तेरे दिन बुरे है सो गए ॥ ग्रब तेरे दिन ग्रच्छे हैं ॥ तुम विश्वास मानो ॥ तेरे दाहिने भुजा पर तिल है ॥ सो देष लेना ॥

End :—॥ ४४२ ॥ येह सगुन किछु धरम करना तब काम सिद्धि होगा ग्रासुते दिन नियत गए हैं विचारि कै करना ग्रव ग्रच्छा होगा तुम्हारे सरीर मैं पुसी नाहीं होत है ॥

४४१ ॥ ऐह सगुन भाव से बड़ा है यह है मध्यम है दिसा निवन हैं जल्दी नहीं छोड़ेगो काम विचारि कै करना गुरु देवता के पूजा करहु ताके बलते भल हेगा ॥ ४४३ ॥ ऐह सगुन से धापुम में विगार हैं काम नहीं करना जे काम विचारे है सो वह सिद्धि न होय गुरु नारायन का पूजा करना ॥ तेरो इन्द्री पर तिल है सो देष लेना ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १८ तक—रमल के पासें के अंकों के अनुसार प्रश्नों का उत्तर ॥

No. 531. Pothi-Sarvaguṇa. Leaves—21. Dated in Samvat 1874 or A. D. 1817. Deposited with Paṇḍita Panchamarāma Pāṭhaka of Rāmapura-gadhauli, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पोथी सर्व गुन को

श्रो पै जो भो ताको विधि—जा ठौर होइ ता ठौर अपने आप पाछि लगावै नोको होइ ॥

दूजी विधि—डोरे बसने में कचूर मेले तब मथै जब मिलि जाइ तब वहां लेप करै तत्काल नोको होइ ॥

छाया वे आइ ताकी विधि ॥ औ बैद को तेल कडवा सेर एक ले अवटी पाछे वाको फेरि उतारै दुरि होइ तब ऊपर ते हरताल मेले टांक दुई तब हांडो मुंदे भलि कै बाफ बाहेर न जाइ तब ऊपर ते सकु करै ता छेक के पेंडे पानो डारै सपरो कै उतारै तब बासन में करै तब तेल हाथ मो लगावै छाया जो जाइ जहां विवेक होइ तहां पोछे पानो काढ़ै तब लेपु करै—

End :—

धातु करत बहु बल धरत, मोहि पूछे जो कोइ।
पय समान तिहुं लोक में और न औषधि होइ ॥ १ ॥
रति के समै जो पय पिवै, घटै न बल तेहि अंग।
विरहिन को रति रुचि मिटै, चैागुन बढ़ै अनंग ॥

॥ धातु बंध ॥

मारो लोहा टाक दश लोठि सम लीजिय मिश्री उजे समान सो चूरन कोजिये दिवस पचीस प्रात दठि पाइ पैहै हि बीज न वेगि धातु नहि आइ है ॥ इति सर्वगुण ग्रंथः समाप्तः संवत् १८७४ भाद्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां, बुध वासरे समाप्ति मिदमागमम्।

Subject :—विविध रोगों की औषधियां।

(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—स्त्री पैजो ओला की विधि, छाया न जाइ ताको विधि, पसीना न आवै ताको विधि, अंग सुवास होइ ताको विधि, कोढ़ो की विधि, गुम जाने को विधि, अग्नि दीपिका, त्रिफलादि चूर्ण, शंख चूर्ण, स्तंभन विधि, विदारो कंद, गर्भ रहने की विधि, स्त्री के दूध न होइ ताको विधि, गर्भ न होय ताको विधि, प्रति मृत के दश मूल, स्त्री कष्ट लोह व कैता की विधि, देवदारु पुरिया, स्त्री की पुष्टि विधि, ऋतु होने की विधि, गर्भ होने की विधि, स्त्री के सादाग, बाल स्याह विधि।

(२) पृ० ९ व १० लुप्त। पृ० ११ से पृ० २२ तक—सेहुआ विधि, खाज, इन्द्री झुलाव, शिरोक्ति, आंख की बरौनी जमने की चिकित्सा, तिमिरेका, ज्वरांकुश तिजरारका, सम ज्वर अंतरिया के, माथे की पीड़ा, नासुर को औषधि, रतौंद विधि, फोनहि विधि, हर्षाविधि, विर्षाचिका, पेट पीड़ा, देह गंध, दांत जमने के समय की चिकित्सा, बालक को प्यास, मृगी, तिजरा महदया, ज्वादश्य, ज्वर साक को विधि, कलेजे की पीड़ा, मस्तक की पीड़ा, कुत्ता काटे की दवा बीछी मारे की दवा, सांप काटे की दवा, रक्त विकार, वशीकरण, केशनाशन, ज्वर-र्तक अतिसार, आमातिसार, मंगलाष्टक लेप, सन्निपात, दाह की औषधि, मूत्र-कृच्छ, पंच सम चूर्ण, पुष्टि की औषधि, शूल गज केशरि गुटका, छर्दि की औषधि, कुष्ट की औषधि।

(३) पृ० २३ से पृ० ३२ तक:—तांबा मारण विधि, गंधक शोधन, विडुंक साद की औषधि, कुचलि मारण औषधि, अर्द्धकपारी की औषधि, वायु व्यथा, तेज मंद के धोरी दिन की फुला; बहुमूत्र की औषधि, कुबर की औषधि, थंमन की विधि, बीछी उतरै ताको विधि, वाय बांधनो होइ ताको विधि, मद होइ ताको विधि, मुख सुवास होइ ताको विधि, पुरुष दोष विधि, गर्भ में मरा बालक होइ ताको विधि, धाकादि सर्व विद्या की विधि, दांत उगने में बालक को दुख होवै उसको विधि।

(४) पृ० ३३ से पृ० ४२ तक—दूध बहुत होने की विधि, काया कल्प की विधि, खड्ग न लगे ताको विधि, जुवा जीते ताको विधि, चोर के नाम निकालने की विधि, अनाज बहुत खाय ताको विधि, बवासीर जाने की विधि, मंदसेन की विधि, मोहन मंत्र, सुधासागर की विधि, मुख का चूर्ण, मदन मोद के बर विधि, प्रमेह का यत्न, मूत्रकृच्छ, रोम विधि, रोम सातन, अफीम विधि, धाम का इलाज, स्तंभन विधि, धातु वेध।

No. 532. Praśnachaura. Leaves—3. Dated in Samvat 1945 or A. D. 1888. Deposited with Panditā Rāmakaraṇa Pānde of Puresanātha, Post Office Paṭṭī, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रश्न चैारः ॥१॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १० दिन बली जानव ॥ दिन सूं लग्ने रात्रि चैार जानव ॥ दिवा चैार ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ११ दुतोसरो हंड चेतनो लग्न में दिवा चोर जानव ॥ लग्न चैाथि चौति होइ तो परै दिन चढ़े जानव ॥ मित्र ॥ सू० चं० ॥ वृ ॥ मं० ॥ मित्र ॥ चंद्र को शुक्र ॥ बु० ॥ शु० ॥ शत्रु शुक्र को ॥ चं० । सू० सत्रुनि के सुमं शत्रुपास मा जानव ॥

End :—अथ वस्तु मिलन को परीक्षा ॥ चंद्र नेत्र वनिष्ठा पुष्य ॥ रोहिनो ॥ पुर्व भाद्र पद ॥ विस्रुवा ॥ उत्रा फाल्गुणो ॥ रेवती इति ॥ पंथा क्षमा जाइतैा वस्तु जल्दी मिलै ॥ अथ मंदाक्षं ॥ आरद्रा ॥ मघा पूर्व भाद्र पद ॥ चित्रा ॥ ज्येष्टा ॥ अभजित् ॥ भरनो ॥ इन नक्षत्र मा जाइ तैा दूरि सुनि परै बड़ो मसक्कत सो मिलै ॥ अथ दिव्य लोचनं ॥ स्वांती पुनर्वसू ॥ श्रवण ॥ कृतिका ॥ उत्रमांषद मूल ॥ पुर्वाका इनमा आइ तैा ना मिलै ॥ इति मध्याक्षं नक्षत्रम् समाप्तमसंवत् १९४५ के मि० फा० व० १४ श्री रामदास मिश्र ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३ तक—चोरी के समय का विचार, दिशा का विचार, जिस स्थान में वस्तु रक्खी हो उसका विचार चोर की जाति तथा वर्ण का विचार, स्वामी से चोर का संबंध विचार (२) पृ० ४ से पृ० ६ तक—चोर के नाम का तथा उसके निवास का विचार, वस्तु मिलने की परीक्षा ।

No. 533. Praśna Phala. Leaves—64. Deposited with Nāgarī Prachāriṇī Sabhā, Kāśī and Paṇḍit Durgā Prasāda Baudha, Post Baripal, District Unnāva.

Beginning :—

चिंता मिटै को प्रश्न	उधार देबो को प्रश्न
१ बह राजहि पूछो	१ आत्म ऋषिहि पूछो
२ नर वाहेन पूछो	२ अगस्त ऋषिहि पूछो
३ भागीरथहि पूछो	३ प्रहलादहि पूछो
४ स्वामि कार्तिके पूछो	४ बल हनै पूछो
५ राजा सगरै पूछो	५ श्री भगवानहि पूछो
६ यशोदाहि पूछो	६ मारो चहि पूछो

७ चित्रांगदहि पूछो — ७ वशिष्ठहि पूछो
८ हरि चन्द्रहि पूछो — ८ पुलस्तहि पूछो
९ चन्द्रो दादिहि पूछो — ९ पुलद नादे पूछो
१० रोहितास्वहि पूछो — १० भाने वहे पूछो

Subject :—चिन्ता मिटने, उधार देने जुआ खेलने, मद्द चेरने, साथ चलने, पानी बरसने, चाकरी मिलने, नाउ चढ़ना का प्रश्न—पृ० १-४ तक। बन्दी छूटे, डेरा भय, ग्रह स्थापन, फायदा प्रश्न मित्र मिले, बोपार लेनेका, विवाह संतान, यात्रा, पढ़ना, रोज़गार, भेद करना, खेतो करना, बीज बोना, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी प्रश्न पृ० ८—१२ तक, घर धराई का प्रश्न, गांउ चलेका प्रश्न, बैापधि करना, परिचय करना, द्रोह करना, मद्द गढेका प्रश्न, तीर्थ करना घर रहना, घोड़ा लेना, आगम, चोरी, सगाई, यहेर, ब्योहार प्रश्न—पृ० १३ से १९ तक। गंगा, भीम सेन, हनुमान, युधिष्ठिर, राजा सगर, पुलामी, नर पाप, चित्रांगद सुग्रीव, चन्द्रोदय, अर्जुन कथन वर्णन—पृ० २० से ३१ तक। वासुदेव, लक्ष्मण, नल, श्रास्म ऋषि, हरिश्चन्द्र, ब्रलना, नरवान, भगवान, मारीच, अंगद, उपंत्र, रावन, सहस्रार्जुन, नल, रामचन्द्र, वलि, वशिष्ट अगस्त, पुलस्त, जामवन्त वर्णन पृ० ३२ से ५१ तक। भागीरथी, नकुल, स्वामि कार्तिक, रोहितास, प्रहलाद, पानैब सहदेव, वत्स, सुग्रीव, शत्रुघ्न और कुंभ करण का वर्णन पृ० ५५ से ६४ तक

End:—कुंभ करण उवाच०

१ चोरा मति लेहु लाभु ना होना।
२ यहि गांव बसी लाभ होई
३ बीज बय लाभु थोड़ा है कष्ट बड़ा है।
४ आगुम आई चिंता मति करी
५ मित्र करी लाभु होई
६ रोजि गारमी लाभ होई
७ नष्ट वस्तु पै हो चिन्ता मति करी
८ संतान को फल होई चिन्ता मति करी
९ विद्या पढ़ी अपढ़िहै
१० ब्योहरे ते फल थोड़ा है कष्ट है।

इति

No. 534. Praśna-Sabhākāraja. Leaves—20. Dated in Samvat 1872 or A. D. 1815. Deposited with Raja Avadhdeśa-siṁha, Raisa and Tālukedāra of Kālākākara, District Pratapagaḍha (Oudh).

श्री राम जी

Beginning:—सदाःपे श्री हनुमान जी सहाय

श्री अस्तुती

श्री रामचन्द्र किपाल भजुमन हरन भै भो दारुनं ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुनं ॥
अति दीन बंधु दिनेस दानौ भुषन दं्नु निकदुनं ।
रघुबीर आनंद कंद कोसल चंद दसरथ नेदनं ॥
भगतु हेतु दीन दयाल देखु कृपाल अदभुद सुंदरः-भुत कहावै के प्रश्न ।

१ मारीच	२ पलीमाह	३ भगवान	४ पुलस्ती	५ अरजुन
६ हनुमान	७ मारीच	८ अगस्त	९ सहसेरजन	१० अरजुन

॥ अगस्त उवाच ॥

End:—१—इस घर सो लाभ नहीं है ।
(२) ब्यार दीजे मिलैगा विग्रह से ।
(३) यह छुटेगा बड़ा अंार सो ।
(४) जुआ में हारोगे थोरा ।
(५) भुत बड़े दिक सो छुटेगा ।
(६) भै हर मो संका बड़ा है ।
(७) सगाई करो मरोगे जल्दी सो ।
(८) परसैं कीजै लाभ होइगा ।
(९) मैत्र सिखावो विरोध मानै ।
(१०) गाँव चलने को भला है ।

इति श्री पोथी प्रश्न सभ काराज कै सु पुरनः सुभ मस्तुः श्रीरस्तु । लिषतं रामसुष ब्राह्मण संवत् १८७२ वैसाष वदी ५ सनौ वासरं ।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—स्तुति, प्रश्न-चक्र, भूत छुड़ाने का चक्र और प्रश्न, मिताई करने का प्रश्न। पशु खरीदने का प्रश्न। परदेश से आने का प्रश्न। व्यौपार, सगाई, भेन्डर, साथ चलना, बंदनुक, नष्ट वस्तु प्राप्त, रोगी निरोग, खेती, बीज बपन, सुवास, आपदा, साथ करना, वासा, चाकरी, नाम मड़ जुआ खेलना, ग्रह लेना, ब्याह करना, संतान, यात्रा, बालकोत्पत्ति, रोजगार, चित्त चिंता, उधार देना, शिकार, घर रहने, ग्राम चलने का परिचय, दोहाई देना, ग्रहणी ग्रह, तीर्थ यात्रा, नवीगृह प्रवेश, चोरी करने तथा घोड़ा खरीदने के प्रश्न चक्र।

(२) पृ १६ से पृ० ४० तक—उपरोक्त चक्रों के फलाफल।

No. 535. Premabodha. Leaves—144. Dated in Samvat 1750 or A. D. 1693. Deposited with Paṇḍita Gopālaprasāda Upādhyāya of Sirasāganja, District Mainapuri, U. P.

Beginning :—

मन मनसा जब प्रेम को धारै। चंचल गति वहु सकल विसारै॥
चित में प्रेम बसै जब आइ। तन मन की सब सुधि बिसराइ॥
प्रेम अगिनि जा घट महिं जागै। कुमादक घन ता तन ते भागै॥
प्रवाह प्रेम को जेहि घट बहै। अज्ञान फूंस तहँ नाहीं रहै॥
जोग वैराग सन्यास को। चंचल गति रुधमाहि।
प्रेम अगनि के जरत हो। होय सबनि को दाह॥
प्रेम पवन जिहि घटहि बहाई। अग्यान पात ज्यौं सब उठि जाई॥
प्रेम भानु जेहि घटहि प्रकासै। अज्ञान तिमिर छिन माहि विनासै॥
प्रेम प्रतीत जाये मन भावै। × × × ॥
जिसु तन प्रेम बसे है आइ। दुष सुष मन के गए हिराइ॥
प्रेम पिपासा जिन मुष पाय। सहज तिया गति मो मन नहि भाय॥

End :—

पोथी पूरन सत गुरु करी। दास तुम्हारे पूरी परी॥
घरव सहस चौपई यामें। पोडस अधिक दोहरा तामें॥
सोरठा भूलना बाहर नाहीं। ज्यौं पात फूल फल तरवर माहि॥
प्रेमबोध पोथी को नाम। पढ़त सुनत रहै सुष विश्राम॥
प्रेम महोदधि वैठि कै, जो कोइ गोता लेइ।
हरि रतन अमोलक हाथ तिसु, सहजे सत गुरु देइ॥
पोथो पूरन भई। जो देखा सो लिपा॥
भूल चूक वकसि लेना। वाह गुरुजी॥ वाह गुरुजी॥

Subject :—(१) पृ० १..............नष्ट ॥

(२) पृ० २ से पृ० १२ तक—प्रेम का वर्णन, ग्रंथ प्रतिज्ञा।
(३) „ १२ से „ २० तक—कबीर जी को परचो।
(४) „ २० से „ ३० तक—धन्ने जी को परचो।
(५) „ ३० से „ ३७ तक—त्रिलोचन जी को परचो।
(६) „ ३७ से „ ५७ तक—परचो नामदेव जी को।
(७) „ ५७ से „ ६७ तक—जैदेव जी को परचो।
(८) „ ६८ से „ ८१ तक—रैदास जी को „
(९) „ ८२ से „ १०० तक—मीरा जी को „
(१०) „ १०० से „ ११५ तक—कर्माबाई की „
(११) „ ११५ से „ १५० तक—पीपे जी को „
(१२) „ १५० से „ १६२ तक—सेन जी को „
(१३) „ १६२ से „ १८३ तक—सधने जी को „
(१४) „ १८३ से „ १९७ तक—वाल्मीक जी को „
(१५) „ १९७ से „ २१७ तक—सुखदेव जी को „
(१६) „ २१७ से „ २३० तक—बधिक जी को „
(१७) „ २३० से „ २५० तक—ध्रुव जी को „
(१८) „ २५० से „ २८८ तक—प्रह्लाद जी को „

ग्रंथ निर्माण काल।

संवत सत्रह से पंचास। सुकुल एकादस मगसर मास
पोथी पूरन सत गुरु करी। दास दुखेर पूरी परी ॥
ग्रंथ के विर्णित छन्दों की संख्या

No. 536. Prem-Prabodha Prem-Parachayī. Leaves—104. Dated in Samvat 1780 or A. D. 1723. Deposited with Ananda-Bhavana Pustakālaya, Visavā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—दो० ॥ दो० नमो परमातमा पूरि रहो सब अंग। आदि मध्य पुनि अंत एकता को जगत तरंग ॥ सोरठा ॥ प्रतिम प्रेम प्रेमायो पुरी त्रिकुटी जेन्ह रचो बहु विधि रचना थापी। पेले प्रेमी होय करि। ॥ चै० ॥ प्रेम रुप धरि जग मंह पेठे ॥ चारि प्रेम प्रेमी को मेठे ॥ प्रेम बचन कछु कहन न आवे। उपजे प्रेम तव पीतम पावे ॥ प्रथम हिये को कह धकेला। किया प्रगास प्रेम को बेला ॥ पुरुष प्रकीर्ती रुप धरि आयो भीतर सुत्र प्रेम का पायो ॥ प्रतिम प्रेमी पुरुष प्रकीर्ती। प्रेम सदी सुखरामह बैठी ॥ दो० ॥ पार ब्रह्म अपरंपरा आतम

अज अको रिखान ॥ अतिम प्रेमी होइके वेहे परम निधानु ॥ मैं चाहौं लिखौं प्रेम को बाता । आतुभरी कागज गरिजाता ॥ प्रेम वचन कछु नगौं उचारौं । तरकौ करेजा आदि पुकारौं । प्रेम की मुरति जवै मन आवै । तन मन सकल विसरि तब जावै ॥ प्रेम की बान कान जब परै । मन पाथर घेला जिमि गरै ॥ प्रेम उचर रसना जब आवै । गद गद होइ कछु कहन न आवै ॥

End :—दियो उठाय मांतु यहुं आये । रोम कमन अथर फटिकाये । रोदन करत मुष बात न आवै । माता देपि बहुत दुष पावै ॥ कहै माता मुझ किने दुषाया । मुष सिर चूमि छाती लैआवा ॥ धुमले होइ कोरे कहहो अ पाना । मंत्रेह को कहौ सब बषाना ॥ सुनत वचन ते न वरिसा आयो । उउं की तेउं सब सुत सो भायो ॥ दो० ॥ रेसुत कोई वासना तुम्हले आई बहि ठौर । बिना भगती भगवान की आदर होत न तोर ॥ वासना राजवर आई उपजाना ॥ बिन भगती न पइहै ऊंच थाना ॥ तै भगती न करी हरि को चितलाई । नहीं तनमें होई हरि कीरत नाई । बिन हरि भगती अब हों जा कोई । तौहु दुइ लोकन आदर होई ॥ जो मान महत्व बड़ीआ चाहौं । तौं हरि चरना चित अपना लावौं ॥ माता उपदेश ध्रुव चित आया । होइ दिढ़ता वैराग जनावा ध्रुव कहत है मातु सो मैं हरि भगती करेऊं जो पदवी कोने न पाइया मैं याही को लेउं ॥ कही माता को ग्रह को त्यागा हरि को भगती को मनु अनुरागा । फिरत फिरत बाग महि आया । तहं सप्त रिषि को दरसन पावा । अपूर्ण (आगे पृष्ट नहीं हैं)

Subject :—भगवान की प्रेम भक्ति उदाहरण स्वरूप ध्रुव की कथा। कबीर, रैदास, नामदेव, आदि की परचई।

No. 537 (*a*). Putanâvidhâna. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Vasudeva Sahâya of Kamâsa, Post Office Mâdhauganja, District Pratapagaḍha (Oudh)

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ पुतना विधान लिख्यते ॥ प्रथम मास गर्भ रक्षा कमलं कुरइया तगर समभाग गृहीत्वा शीतल जलेन पिष्ठा पिवेत्

× × ×

जातानां प्रथम वर्षे लक्षण ॥ ग्रीवा पृष्ठि टेढ़ी होइ लार आवै गात्र में उद्वेग होइ आहार कै अनिष्ठा होइ ॥ धायनी ग्रहो नाम तस्य प्रतीकारः सद्यः बालकं गृहीत्वा मजीठ धवई का फुल लोध्र हरताल चन्दन जल सैां बांटि कै लेपन करव ततो मुंचित पूतना ॥ अथ द्वितीय रत्ति कै कास होइ । बहुत गात्र शीष होई भी अनो नाम ग्रहो ते कै ग्रहते एते लक्षण होइ ॥ अथोपचारः ॥ चिचिरा उर्द पिपरामूर

चिरायता चारि चोज़ छेरी के दूध में पोसि के लेप करब पाछे ते दूध देइ बकरा के सींग रोम उरिद समेत तो मुंचित पूतना ॥

End :—॥ अथ एकादश वर्षकम् ॥

दक्षिणा नाम राक्षसी तेके ग्रहे ते एते लक्षण होई नेत्र रोग होई अनेक प्रकार के गात्र में उद्वेग होई निष्ठुर वचन बोलै कयहूं के देखे तस्य प्रतीकारः ॥

कोदइ लावा चवरा पुरी मासु उलेइ कै मकुरी कमल के फूल केसरि त्रि रात्रि बलि देव स्नान पंच गव्य पंच पल्लव धूप सृग श्रंग रोम कै ततो मुंचति पूतना ॥

अथ द्वादश वर्षकम् ॥

वायसी नाम महाराक्षसी तेके ग्रेह ते एते लक्षण होइ ॥ मुष लाल होइ सर्वं गात्र शिथिल होई मुष सुषाई ॥ तस्य प्रतीकारः ॥ रक्त माल्य गंध फूल के बलि देई धनुक मली पूर्ववत न तो मुंचति पूतना ॥ इति श्री पूतना विधान बाल तंत्रे बाल चिकित्सा भाषा समाप्तः ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—प्रथम मास गर्भ रक्षा, द्वितीय मास से दशवें मास तक गर्भ रक्षा का विधान। जातक के प्रथम वर्ष का लक्षण (प्रथम दश रात्रि तक, पुनः प्रथम मास से लेकर बारहवें मास तक)।

(२) पृ० ६ से पृ० ९ तक—प्रथम वर्ष से लेकर दशवें वर्ष तक पूतना से बालक की रक्षा का विधान ॥

No. 537 (*b*). Pūtanāvidhāna Sangraha. Leaves—8. Dated in Samvat 1942 or A. D. 1885. Deposited with Paṇḍita Rāmaprasāda Pānde of Ghurahā, Post Office Mādhoganj, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning :— × × × नाम सो बालकु को आनि ग्रसै ताके लछन ॥ बार बार भुंभवाइ दाहिना पांव कँपै बार बार दूध डारै रा तो मुष होइ ॥ ताको विधि ॥ षीर मुर्गी ते मदिरा दक्षिण दिशा में डारि आवै तो बालकु नीको होइ ॥ तीसरे मास की पोतना ॥ रुद्र नाम आन ग्रसै ताके लछन ॥ रोवै बहुत स्वांस चलै रकत नेत्र होइ चितै कै हंसै ताको विधि ॥ उरद ढसाये सेंदुर चंदन मिसुरी मदरी पासम में धरै दछिन दिशा डार आवै तो बालक नीको होय ॥

End :—नवई वर्ष भोग नाम पूतना आनि ग्रसै ताके लछन ॥ जुर छिरद होय रकत विकार हाथ पांव डारै थोर पटके माथो पिराय नींद न आवै रात पेसाब होय नींद रात के होय ताको उपचार चाउर खिचरी दही रोटी कथा

को पंचो मदरा बरा वरद के कोरा कारे वसन मे धरे सब वस्तें रात के पीपर तरे धर आवे तो बालक नीको होय ॥ इति पूतना विचार संपूरन ॥ मिती कुवार बदी ३ रविवार संवत १९४२ द० हरप्रसाद मोजे ग्रानी ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—१ मास लेकर ९ वर्ष तक के बालक पर बाधायें करनेवाली पूतनाओं के लक्षण और उनसे सुरक्षित रखने के उपाय।

No. 538. Rādhānāma-Mādhurī. Leaves—4. Dated in Samvat 1873. Deposited with Rāmasvarūpa Śukla, Post Office Bisavā, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—श्री राधा रमन जी सहाय ॥ श्राय राधा नाम माधुरी लिख्यते । वृन्दावन रानी श्री राधा । मोहन मन मानी श्री राधा ॥ जय नित्य विहारनि श्री राधा । वृज सुष विस्तारनि श्री राधा ॥ कीरति की कन्या श्री राधा । सबही विधि धन्या श्री राधा । अथ रास विलासिन श्री राधा । नित कुंज विहारनि श्री राधा ॥ हरि वन वनमाला श्री राधा । श्री दामा अनुजा श्री राधा । वृष दिन मनि तनुजा श्री राधा । रसिकन की स्वामिनि श्री राधा । करुनानिधे नामनि श्री राधा । बंसी वट वासिन श्री राधा । संगति प्रकासिन श्री राधा । गोपी सवों मधि श्री राधा । जय स्याम सजीवन श्री राधा । आनंद रस पोषनि श्रीराधा । आनंद रसायनि श्री राधा । पीतम सुष दायनि श्री राधा ॥ अनुराग सुबेली श्री राधा ॥ सौभाग्य नवेली श्री राधा । सरसीरुह लोचन श्री राधा । हरि विरह विमोचन श्री राधा । वृन्दावन वासनि श्री राधा । श्री कृष्ण उपासनि श्री राधा । श्रृंगार सुधानिधि श्री राधा । प्रेमावधि सब विधि श्री राधा । ललितादिक प्यारी श्री राधा ॥

End :—अग बंदन वंदित श्री राधा । निखि आग रसाजित श्री राधा ॥ सुष सेज विराजति श्री राधा । वृज चंद चकोरी श्री राधा । वृषभान किसोरी श्री राधा । वृज मोहन मोहनि श्री राधा । अभिलाषन दोहनि श्री राधा । वृन्दावन सोभा श्री राधा ॥ कोका तरु गोभा श्री राधा । अति सुघर स्वरूपनि श्री राधा । माधुरी अनूपनि श्री राधा । श्री कृष्ण कर्षन श्री राधा । आनंद घन वर्षनि श्री राधा । दिव्यांशु केशी श्री राधा । अति मंजुल केशी श्री राधा । अभिसार प्रवधा श्री राधा । अत्यंत प्रसंशा श्री राधा । कल केलि परावधि श्री राधा । रस रीति रही सुधि श्री राधा । इति श्री राधा नाम माधुरी संपूर्णम् संवत १८७३ वि० लिषतं मनलाल ब्राह्मण पाठनार्थ महारानी श्री लक्ष्मी जी ॥

Subject:—यह छोटी पुस्तक आदि, अंत, मध्य में सम्पूर्ण हो गई इसलिये इसकी व्याख्या नहीं की गई।

No. 539. Radha Svāmi. Leaves—41. Deposited with Umāśaṅkar Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—शब्द दूसरा—घट कपट दूर कर भाई ॥ टेक ॥ सच्चा भाव चरन में राखो प्रीत प्रतीत बढ़ाई ॥ १ ॥ मुंह के कहे काज नहिं होगा—जब लग मन में प्रेम न आई । वाचक सूर कहे अपने को बिन रन देखे न रत बढ़ाई ॥ ३ ॥ वैरी सनमुख होत कदाचित ऐसे भागें खोज न पाई । छाया तिमिर बुंद पर ऐसो अपनी गति को बूझ न लाई ॥ ५ ॥ जैसे मूसा बिल का सूरा बिल्ली का भय चिन्तन समाई बिल में बैठे बातें मारें बिल्ली को हम मार गिराई । बिल्ली बिल पर आन पुकारो । आओ सूरमां बड़े सिपाही ॥ ८ ॥ सुनकर म्याउं म्याउं घबराये इक इक भागे खबर न पाई । ऐसे ज्ञानी वाचक जगमें निज वैराग को करत बड़ाई ॥ १० ॥ मान हो न माया बूझे मन जानें हम त्याग कराई । धन वालों को ढूंढत डोलें काहु के उपदेश सुनाई ॥ जो संयोग बने कहीं ऐसा विषय पदारथ होता जाई । ते भोगें पूरे बन कहवें मन का धर्म सुनाई अथवा प्रारब्ध सिर डालें तरह २ की बात बनाई ।

End:—सुरत सम्वाद

प्रश्न १ ला—अब सुरत पूछे स्वामी से भेद कहो तुम अपना मोसे वास तुम्हारा कौन लोक में यहां आये तुम कौन मौज में ॥ २ ॥ देश तुम्हारा कितनी दूर खोजे सुरत न पावे मूर ॥ ३ ॥ मैं बिछड़ी तुमसे कहो कैसे । देश पराये आई जैसे ॥ ४ ॥ मेरा हाल मिल कर गाया । देश आपना मोहि लिखाया ॥ ५ ॥ मन तन संग पड़ी मैं फबसे । दुख पाये बहुतक मैं जब से ॥ ६ ॥ क्यों भूली मैं देश तुम्हारा आय पड़ी परदेश निहारा ॥ ७ ॥ पाताल बसोंकि मृत्यु लोक में स्वर्ग बसो कि ब्रह्म लोक में ॥ ८ ॥ विष्णु लोक बैकुंठ धाम में इन्द्र पुरी या शिव मुकाम में ॥ ९ ॥ कृष्ण लोक या राम लोक में । चार खान चर अचर शोक में ॥ १० ॥ क्यों मोहि डाला काल लोक में । अति भर मायाहर्ष सोगमें ॥ १२ ॥ अब क्यों आये मोहि चितावन रूप धरा तुम अति मन भावन । मैं दासी तुम चरन निहारे भेद देव तुम अपने सारे ।

उत्तर अंग पहिला—तब हंस शब्द स्वामी बोले ते। सुरत तुम मैं कहूं खोले जो तू पूछे भेद हमारा । कहूं सभी अब कर विस्तारा ।

Subject:—शब्द द्वितीय—शारीरिक कपट आदि दूर करके प्रेम करने का उपदेश । झूठी बातें बनानेवाले वैरागियों और सन्यासियों का अधः पतन । संसारिक लोग दुनिया के सभी कामों को तो आवश्यक समझते हैं परन्तु वे भक्ति मार्ग से विमुख रहते हैं ।

शब्द तृतीय—प्रेम के सन्मुख विद्या को गौणता। केवल पुस्तकों का ज्ञाता होने से ही अनुभव नहीं प्राप्त हो सकता। प्रेम ही से सब कुछ अनुभव होता है। विद्या के बलवानों का अभिमानी होना।

वचन पचीसवां। शब्द पहिला १—वेदान्त मत को असिद्ध करना और राधा के विश्वास पर दृढ़ता।

शब्द दूसरा—वेदान्त और ज्ञान आदि का भ्रम। सुरत शब्द में प्रेम।

शब्द तीसरा—जाग्रत सुषुप्ति और तुरीय अवस्था का दुख सुख।

वचन छब्बीसवां—प्रश्न १—सुरत और स्वामी का परस्पर वार्तालाप, एक दूसरे के अस्तित्व के सम्बंध में।

No. 540. Rājulapachīsī. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of Paṇḍitakā-Puravā, Village Baudhū, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—॥ अथ राजुल पचीसी लिषते ॥

प्रथमहि सुमिरौं जादौं राई। पुनि सारद मनाइ स्यौ जीवजे ॥ बंदौं अपने गुर के पाइ। राजमती जू के गुन गाइस्यौ जीव वे ॥ गाऊं मंगल राजुल पचीसी। नेमि जिन ब्याहन चले देषि पसुवनि दया उपजी छोड़ि सब बन कौ चले ॥ गिर-नारि गढ़ पर जाइ कै प्रभु जैन दच्छा अदरी ॥ राजुल तप कर जोरि विनवे बाप सौ विनती करी ॥ १ ॥ नावे वे मुझ गिर नारि पठाऊ। मैं मुष देषौ नाथ दा दीववे ॥ वा वे वे मुझ गिर नारि पठाऊ। मैं वा वे वे मझु हिऊं माहा चावा ॥ अपने पीय के साथ दा जीव वे। हुवाऊं माहा साथ दा संसार सकाल असार है ॥ पिय पुत्र भाई बहिन यह सब मोह का जाल है। यह जानि असरन सरन सकल वा वे अहे गनीहय कथदा। छिन कर्म छिन जाइगा हुयाई माहा साथ दा। ववे यह संसार असार तातें रहिए। मौन गहि जीववे ॥ वावे वेचहु गति दुःख अपार ॥ २ ॥

End :—माइरी वह घर मेरा नाहिं ॥ काया घर मेरा संग है जीव वे ॥ माइरी इन सब लोगन महि कोइन मेरा संग है जीव वे। कोइ न मेरा संग वा वे ॥ मेरा परिवार और है जीव वे ॥ छिमा माता पिता धीरज रत पिया सिर मौर है। भाई विवेक सुबहि कहन ना सुमति मेरि सहेलिरी ॥ संग मन मन कुटंबु रेता ॥ तुकेवा कहै जु अकेलीया ॥ माइरी लु चुकराऊ। अब मैली निह है सोह दो जीव वे ॥ वेठि नगर वन माहिं कै जिनहु पिय मोहिदी जीववे ॥ संगरि षोडस कलष करनी द्वादस अंग अंग भूषन। अष्ट कर्म निल बैठी माला............ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—नेमिनाथ का विवाह के समय पशुओं पर दया करके विवाह का विचार छोड़कर बीच ही से चला जाना। उनकी मनोनीता स्त्री का उनपर मोहित होकर उन्हीं के पास जाकर तप करने की इच्छा प्रगट करना, पिता से संसार की असारता और मोक्षादि के विषय में समझा कर गिरिनार पर भेजने की प्रार्थना करना, पिता का विरोध, पुत्री का समर्थन, पिता का माता से आज्ञा लेने के विषय में प्रस्ताव, पुत्री का माता से विदा मांगना, माता का विरोध, पुत्री का अपने प्रस्ताव का समर्थन। शेष लुप्त।

No. 541. Rāmachandra-kī-Bāramāsī. Leaves—9. Dated in Samvat 1928 or A. D. 1871. Deposited with Thākura Gayādīna Simha of Noharahasanapura, Post Office Rakhahā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेसायनमः ॥ श्री पोथी रामचन्द्र की वारह मासी लिष्यते ॥

चैत हिरना लषो हरी नै चांप ले ठाड़े भये ॥ तुम रहो लछन जानकी ढिग आपु मारन कैा चले ॥ वन बीच हिरना फिरत भाजत रूप छिपि छिपि जात है ॥ ताने सरासन बान रघुवर छलो छल करि जात है ॥

दे।० ॥ कहीं मातु श्री जानकी, सुनु लछिमन बलबीर।
हिरना ने कछु छल कियो, दश्यो प्रभु रन धीर ॥ १ ॥
वैसाष वन वन फिरत लछिमन राम का षोजन चले ॥

दसकंध मन मह य विचारि अब तो छल बल है भलो लैकै उदासि लछन श्री राम कैा कहं पाइ हैां ॥ वन बीच सुनो जानुको मन कौन विधि समुझाइ हैां ॥

दे।० ॥ उतते आवत हरि मिले, लछिमन वन मैं लीन।
सुनी छोड़ो जानुकी, भ्रहो तात कह कौन ॥

End:—फागुन मैं सब जग फागु षेलै लंक मैं घमर परो ॥ एक इन्द्रजीत वलवान आया राम सन मुष सो लरो ॥ भट भोर लच्छन तोर तानैं वरनो सो वरनो मिलै। मति मंद है दसकंध कैा सुत पंच सको हनि दई ॥ हनुमान अब सजीवन लाय तात कैा जीवन भयो ॥ वह सक्ति सुरपुर कैां सिधारी सोस ढूंढ़त भयो ॥ भुज वीस बोल्यैा गरजि कैं मैं सवहिं अब मैं मारि हैां ॥ हनुमान अरु नल नील अंगद छार मैं करि डारिहैां ॥ रघुवीर ने जब तीर तानैा छोड़ि रावन पै दयो ॥ श्री राम के परताप ते यह असुर सुरपुर कैा गयो ॥

दे।० ॥ असुर मारि सीता लई, भगतन कैा सुष दीन।
तुलसीदास य कहत है, राज विभीषन दीन ॥

इति श्री बारह मासो संपूरन समाप्तम् शुभ मस्तु संवत् १९२८ मास भादों सीता सुदी १२ ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—रामचन्द्र जी के वनवास का हरण से रावण वध तक का द्वादश मास के संबंध से वर्णन ।

No. 542. Rāmagītā-kī-Tīkā. Leaves—14. Deposited with Thākura Brajabhūshana Siṁha, Village Jhukavārā, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अध्यात्म रामायण । उत्तर कांड में शंकर जी के प्रश्न पर तिन्हों में उत्तर कांड में श्री लक्ष्मण जी के प्रश्न पर श्री राम जी ने आप दया करके रामगीता कही ॥ अथ श्री राम गीतायां टीका लिख्यते । अथ सीताजी के त्यागते उपरान्त श्री रघुत्तम मूल प्रथम श्लोक ।

ततो जगन्मंगलात्मना विधाय रामायन कीर्ति मुत्तमम् । चचार पूर्वा चरितं रघुत्तमो राजर्षि वर्यै रपि सेवितं यथा ॥ १ ॥ टीकार्थी । मुंज है जो श्री राम तिन, अपनी मंगल मूर्ति करके रामायण नाम की कीर्ति कही प्रबन्ध कैसा है उत्तम है काहते जो शंकर जी और बालमीकादिक को कहत हैं तिसि कीर्ति को जगत में फैलाय करके दास भनि कीर्ति को पढ़त हैं सुनते हो अनायास मुक्ति हो जावगी फिरि भी अपने वंश में बड़े जे सगर दलीप रघु तिन करिकैं चरित्र कहिये किये जो कर्म कैसे कर्म प्रजा पालन कथा श्रवण सन्ध्या वंदन आदि गुरु भक्ति पूर्वक तिन कर्म को आप भी सावधान होकर करत भये कैसे जैसे वेनिराज ऋषियों में श्रेष्ट हैं जिस भांति तिन्होंने जिस भांति किये आप भी करते भये ।

End :—यों अब श्री रामचन्द्र जी गीता के पाठ का फल कहते हैं । हे लक्ष्मण यह जो विज्ञान है इसको जो कोई श्रद्धा करिके पाठ करै और गुरु जो पढ़ावन हार है तिस विषै पहिले भक्ति करै कि मुझ पर गुरु ने बड़ा अनुग्रह किया जो मैं राम गीतार्थ तत्व को जाना । यासों भावना गुरु भक्ति कही है तिसकर युक्त होकर पढ़ै यह मैं नियम है या पर श्रुतिः यस्य देवे पराभक्ति यथा देवे तथा गुरौ तस्यैति कथिताह्य र्थाः प्रकाशं ते महात्मनः इति श्रुति । × × × × इति श्री अध्यात्म रामायणे उमा महेश्वर संवादे उत्तर कांड श्लोक टीकायों राम गी ता नामो पंचमोऽध्यायः ॥

दो०ः—भाषा टीका यह करि राम वाक्य अनुसार ।
ज्यों का त्यों ही वाक्य पढ़ि लिख्यों अर्थ सुविचार ॥
अति दुर्गम है संस्कृत कैसे जानो जाय ।
याते भाषा कर दई टीका सुगम से पाय ॥

सुभ संवत् १९२४। वसंत रितु माघ मासे कृष्ण पक्षे तृतीया मंगल वासरे लिषतं × × × लिषो (भा) स्याम दास विष्णु प्रीति अर्थ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १७ तक—प्रस्तावना, वर्णाश्रम धर्म का वर्णन, तत्त्वज्ञानोत्पत्ति रीति, आत्म ज्ञान, कर्म भेद, कर्म विधान, माया निरूपण, समुच्चयवादी कथन, तत्वदर्शी का रहन, वाक्यार्थ निरूपण, स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर का वर्णन और गुणात्मिका बुद्धि की अवस्थाओं का वर्णन।

(२) पृ० १७ से पृ० २८ तक—जगत त्याग का आदेश, अध्यास, ब्रह्म निरूपण, अविद्या-विनाश विधि, ब्रह्म की सर्व व्यापकता, उपराम विधि, समाधि से पूर्व की अवस्थाएं, विलायत का विधान, जीवन मुक्ति के लक्षण, राम गीता के पाठ का फल।

No. 543. Ramals. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Bhāgirathīprasāda of Usakā, Post Office Kanḍhaura, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—पृष्ठ २॥

११३॥ यह सगुन अच्छा है कुटुंब वृद्धि मंगल होइगा॥ प्रश्न॥ अर्थ लाभ होयगा कोई संग होइगा मित्र मिले पुत्र फल होइगा आज से महीना तीनि में बहुत अच्छा होइगा अपने इष्ट और गुरु की पूजा करना मन का मनोरथ होइगा निसानी तुम्हारी स्त्री के पेट पर तिल है देषि लेना॥

११४॥ यह सगुन अच्छा है कुछ बड़ा लाभ होइगा कुल देवता पूजा करी धन लाभ होइगा सत्रुन सो मिलाप होइगा जेहिते—तुम्हारो मिलाप सोच रहो सो मिलैगा धन लाभ होइगा चिंता मिटैगी निसानी तुम्हारे अंगपर तिलहै देषि लेना॥

End:—पृष्ठ १६॥

४४१॥ यह सगुन धर्म सो सिद्धि होइगा पर यतन करना काम निरफल उचटि गया है धन की हानि बहुत भई है दुसरा काम विचारना नाहीं में अच्छा है निसानी तुम्हारे सिर का सुष नाहीं है।

४४२॥ यह सगुन का फल सुनो कामना ही होयगी धन हानि होइगा॥ पुत्र सों विरोध होइगा॥ तुमको जीव का बड़ा जोषिम है याते सवाधान रहना दुसरा काम करोगे तिससे भला होइगा सो विचार के काला ग्रह की पूजा करना जिसते कलेस मिटेगा निसानी तेरी हड्डी परतिल है देषि लेना।

४४३॥ यह सगुन काफल × × ×

Subject:—१,२,३, तथा ४ के चक्रों से बनो (११३ से ४४२ तक) संख्याओं के पासे द्वारा प्राप्त फलाफल का वर्णन।

No. 544. Ramala Praśna. Leaves—9. Deposited with Umaśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—श्री मते रामानुजाय नमः।

अनंतर संसार के कारन जानिवे के कारन रमल प्रश्न करो सो नारायन सिद्ध करैं नोक व विकार जानन जोग सुद्ध चित्त सो कै कहै पासि ४ बुंदन को करैं द्वै को तरह देइ जो एकु रहै तेहि को कुंडलो करे जो द्वै रहै ते मंद करै पाइ करै येही तरह से चार पासि बुंदन को करै इन चारिउ से बनतो नीरै तीन एक ठउ करै और सकल देखै वह सकल देखै पहिलो सकल ०।।। दुसरी सकल ।०।० तीसरी सकल ०।०। चउथी सकल ।।। पचइ सकल ००।० सकल छठि ०।।० सकल सतइ ।।।० सकल अठइ ।०।। सकल नवइ ।।०। सकल दसइ ००।। सकल ग्यरहो ।।०० सकल बारहो ०००। सकल तैरहो ०।०० सकल १४ ।००० सकल १५ ।००। सकल १६, ०००० सकल १७, ०।।। श्री भगुवानुवाच ॥ अनतर तेरे दिन नीक आये जो कछु तुम चहव सो सब भल होइ अउ जहां कउनो काज के जाव सो सिद्धि होइ मन आनन्द होइ लुटि मिलै नाहो तो कछु परा पावै। पुत्र सुख देखै ॥ सबते सनेह अधिक होइ। अस्थान छुटै पहिले को जगह में दुख है अह छुटे सुख होइ ॥

End:—०।०० श्री भगवानुवाच जानुको नारान को कृपा है सर्व काज प्राप्ति होइ देव के धनके विदेस भला है मने कामनु सुफल होइ दुसमन जेर होइ सकल कामना सफल होइ। ००० श्री भगवानुवाच वह प्रश्न भलो है सर्व कारज तोर भलाइ मा मिलि उठे। विदेस सुफल नोक सायति है अनंद होइ।००। श्री भगवानुवाच यह प्रश्न सुभ है। नारायन मधिम ते उत्तम करै सकल कामना सुफल होइ सत्रु क्षय होइ ०००० श्री भगवानुवाच वह प्रश्न भलो है सब कारज सुफल होइ। जेहि विधि चाहसि सोइ होइ विदेस भला होइ ताप सहित घर आवै कन्या व पुत्र का सुफल होइ कुछ चहास सो होय।

सकल १५—रोगी मिलै सुखु धनाश्रित होय। परमेश्वर को कृपा।

Subject:—शुभ नाम फल वर्णन।

No. 545(a). Ramalasāra Praśnāvalī. Leaves—8. Deposited with Late Paṇḍita Baijanātha, Village Śirakhorē, Post Office Gaḍavārā, District Prātāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमलसार प्रश्नावली ॥ इसके देषने को यह रीति है कि एक पांसा काठ का बनाइले श्रोर उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक श्रंक लिखे ॥१॥२॥३॥४॥ श्रोर पहिले प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें बिचार ले जिस मनोर्थ के लिये डाले तब तीन वार पांसे को फेंके जब उस्में जो श्रंक तीनि वार मे पड़े उन श्रंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर श्रावे उसको समझ लेइ ॥

१११—यहां पूछनहार पुरुष सकुन उत्तम है ॥ तुम्हारा कारज सिद्ध होयगा ॥ सब कामना सिद्धि होयगी श्रोर इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा श्रोर तुमको व्योपार मे लाभ होयगो। यहां चित में चढ़ेगा परंतु श्री गुरुदेव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥

End :—३२३ ॥ उत्तम तुमको अर्थ लाभ सैाभाग्य मिलेगा श्रोर तुम्हारे वैरी का नाश होगा श्रोर धन धान्य की वृद्धि होयगी ॥ इष्ट मित्र से लाभ होगा श्रोर तुम्हारे दुष नाश होगा परन्तु तुम श्री सत्यनारायण की पूजन करना ॥ सकुन तुमको सामान्य है ॥ ३२४ ॥ उत्तम तुमको षेती में अर्थात् व्यापार में बहुत लाभ होगो श्रोर मनो कामना पूर्ण होगी श्रोर धन सुष मिलना श्रोर तुमको मार्ग में भय होगा श्रोर चिन्ता दूर होगी परंतु हनुमान जी का पूजन करना शुभ है ॥

Subject :—१११ से ३२४ के शकुनों का (पासों द्वारा) फल।

No. 645(*b*). Ramalasāraprasnavāli. Leaves—24. Dated in Samvat 1936. Deposited with Paṇḍita Śivaratana Pande, Village Rāmanagara, Post Office Misarikha, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—अथ रमल सार लिष्यते। इस रमल सार प्रश्नावली के देखने को यह रीति है कि एक पांसा काठ का बनावे उसमें संख्या के एक से लेकर चार तक श्रंक लिखै १-२-३-४ प्रथम प्रश्न पूछने वाला अपने मनमें विचार लेवे जिस मनोरथ के लिये डारै तब तीनि वार पांसे का फेंके तब उसमें जो श्रंक तीन वार में परै उन श्रंकों को क्रम से जोड़ ले जैसा प्रश्न का उत्तर श्रावै उसको समझ ले ॥ इति ॥

१११ यहां पूछन हार पुरुष सकुन उत्तम है सो तुम्हारो कारज सिद्धि होइगो श्रोर इस ग्राम में ही अर्थ पावेगा ॥ श्रोर तुमको व्यापार में लाभ होयगा यहां चित्त में चढ़ेगा परंतु श्री गुरु देव की पूजा करना अवश्य कार्य होगा ॥ ११२ ॥ मध्यम इस काम के करने में लाभ नहीं श्रोर चिंता बहुत होगी

मत करना श्रो सपने में असुभ देखै तो ब्योपार में लाभ नहीं होय इस काम को छोड़ और कुछ करना ॥ ११३ ॥ उत्तम तुम को ठिकाना अच्छा मिलेगा और चिन्ता दूर होगी विघ्न मिटेगा सुख होगा और कल्याण मंगल होयगा और बड़ाई सुनोगे जो गवन करौ तो सिद्ध होगा ये काम अवश्य करना चाहिये ।

End:—४३३ तुम्हारे मन में चिंता है सो काम मत करना तुमको दुख होगा श्रीरञ्ज घर और पूजा करे तो नारायण की कृपा होगी सगुन मध्यम है ॥ ४३४ ॥ तुम्हारे शरीर में क्लेश है अथवा भाई बंधु से मन मिल रहते हो और जो मन में काम विचारा है सो होगा और सब कामना पूर्ण होगी सगुन उत्तम है ॥ ४४१ ॥ तुमको फल प्राप्त होगा और कोई उपाय करे डरे मत बड़ा लाभ होगा जो तुमने विचारा है सो मनोरथ सिद्धि होगा सगुन उत्तम है ॥ ४४२ ॥ उस काम के करने में तुमको सुख न मिलेगा और चिंता बहुत है और राय का डर है परंतु इसमें लाभ है देर से होगी श्री शिव जी के मंदिर में एक दीपक का प्रकाश सगुन तुम को मध्यम है ॥ ४४३ यह काम असुभ है और इसमें चिंता होगी काम बिगाड़ होगा सो जो तुम नवग्रह पूजा अथवा धर्म करौ तो बड़ा कल्याण लाभ होगा ॥ यह सगुन मध्यम है ॥ ४४४ तुमको ब्योपार में लाभ होगा और मन में चिंता होगी अर्थात् बंद पाओगे कुछ दिन पीछे तुमको सुखदाई फल मिलेगा श्रीर सकल कामना सिद्धि होगी परन्तु श्री राम नाम की गोली बना कर जल में डाल अथवा कौवों को चुगावै तो महा सुखदाई फल मिलेगा यह सगुन तुमको महा श्रेष्ट है ॥ इति श्री रमलसार प्रश्नावली संपूर्ण समाप्तः संवत १९३६ लिषतं बेनीराम तिवारी जेठ मासे कृष्ण पक्षे ११ दशो ॥ श्री राम श्री राम श्री राम ॥

Subject :—शुभ अशुभ प्रश्न विचार ।

No. 546. Ramalasaguna. Leaves—8. Deposited with Paṇḍita Bhāgīrathīprasāda of Usakā, Post Office Kaṇḍhaur, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रमल सगुन लिख्यते ॥ १११ ॥ यह सगुन से जीत होगा ॥ मन चीता है सो पावेगा ॥ सगुन में जोता है नया बेपार होगा ॥ बेपार में लाभ होयगा तुम्हारे दिन अच्छा है मनको मनोरथ सुफल होयगा ॥ निसानी तेरी भुजा पर तिल है जान लेना ॥ ११२ ॥ यह सगुन मध्यम है दुसरा काम चेते हो यह काम सुगम नहीं है एक महीना तुमको योनस मन जाता है ॥

End :—पृष्ट १६ ॥

३१४ ॥ यह सगुन से तेरा कल्यान होगा मंगल होगा धन लाभ होगा ॥ तथा अवर काम सब सिद्ध होगा मन में चिन्ता करना मनते उपकार है तेरा भला होगा निसानी तेरे बाहा का धन गड़ा है घर में तेरे सा देषि लेना ॥

३२१ ॥ यह सगुन से मन में चिंता है दिन मध्यम है यह काम सिद्धि नहीं होइगा ऐसा तुम बुरो करना यह काम करोगे ता अजस होइगा घर में कलेस होइगा ॥ एक महीने तक चिंता होगा अवकास पोछे होगा ॥ कोई बात को उताइलो होगो ॥ परमान लाभ होगो निसानी कोई तेरे संतान नहीं है ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० १६ तक १,२,३,४ अंकों से बनी संख्याओं के अनुसार फल-कथन।

No. 547. Ramala-Sākunvanti. Leaves—32. Deposited with Paṇḍita Chandrikāprasāda Bhatta of Sakarauli. Post Office Mohanagañja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ रमल शकुनवन्ती लिख्यते ॥ १११—शकुन उत्तम है ॥ उछाह काम संतति लाभ होइ ॥ वांछित फल होइ ॥ चितव्य मनोरथ सिद्धि होइ ॥ चिंता मिटैगो ॥ धन सिद्धि होइ ॥ दान पुन्य करना ॥ शकुन अच्छा है ॥ फल उत्तम है ॥ महा लक्ष्मी को कृपा है ॥ पाठ करना ॥ तंदुल दान करना ॥ घर की पीड़ा जायगो ॥ सपना होत है ॥ पर मालुम परता नहीं ॥ हाथ मध्ये निशानी तिल की है ॥ इति श्री प्रथम ॥ शकुन संपूर्णः ॥ श्री रामायनमः ॥ ६ ६ ६ ६ ६ ६ ११२—शकुन मध्यम है ॥ सत्य चलना ॥ अनेक कारज करता कष्ट होत है ॥ ए काम करता विघ्न होइ ॥ जीव का दुष उपजै ॥ तुमार दुशमन तुम पर ईरखा करता है। उसे वा काम नहीं होता ॥ ये काम करता दुष उपजे ॥ हृदय मधे बड़ी चिंता है ॥ शरीर मधे कोई गुप्त पीड़ा है ॥ संतान विरोध है ॥ धन मद शान्ति करना ॥ शुभ होगा ॥ विश्वास रखनां ॥ देव वचन सत्य है ६ ६ ६ ६ ६ ६

End:—४४३ ॥ सगुन उत्तम है।

अर्जुनोवाच ॥ तेरे सरीर पीड़ मिटै ॥ घरमा मंगल काम होइ विरोध मिटै ॥ तेरी भाग्य उदय है ॥ सज्जन मीळे ॥ सुप होइ ॥ जी उदास होत है ॥ महावीर की पूजा करवाना ॥ उदासी मीटै ॥ कीर्ति मिष्टान्न मिळे ॥ तुमार सैर बढ़े ॥ शरीर का बायु का उपद्रव ॥ सा मिटै ॥ सुपेतो लहे ॥ ४४४ ॥ शगुन उत्तम है।

धर्मराज वाच ॥ परमेश्वर की कृपा सा कार्य सीधो ॥ धीरज रखना ॥ तुमार भाग्य उदय आगे बहुत है ॥ आप पराक्रम आसी होयगा ॥ तुमरे घरमा सब कुशल है ॥ गयो धन मीळे ॥ उदासी चिंता बहुत है ॥ गनपति पूजा करौ ॥ आनंद होई ॥ पुत्र लाभ ॥ सज्जन मीळे ॥ तुमारि इंद्री तिल है सो जानव ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १८ तक—१११, ११२, ११३, ११४, १२१, १२२, १२३, १२४, १३१, १३२, १३३, १३४, १४१, १४२, १४३, १४४, संख्याओं के फल।

(२) पृ० १८ से पृ० ३३ तक—२१२, २१३, २१४, २२१, २२२, २२३, २२४, २३१, २३२, २३३, २३४, २४१, २४२, २४३, २४४ संख्याओं के फल।

(३) पृ० ३३ से पृ० ४८ तक—३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४ संख्याओं के फल।

(४) पृ० ४९ से पृ० ६४ तक—४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४ संख्याओं के फल।

No. 548. Ramalasāraphalanāmā. Leaves—13. Deposited with Tārāchanda Munima, C/o Messrs. Mahādevaprasāda Murlīdhara, Sirasāganja, Mainapurī.

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ श्री रामचन्द्रायनमः॥ रमल सार फाल नामा शहनशाह फरांस ने नैपोलियन बोनापार्ट ने अ चनामवर मजोम बलसान बहादुर ने फिरंच जबान में निहायत मेहनत से तैयार किया इसके बगैर यह कोई काम न करता था॥ हमने इसका तर्जुमा हिन्दी जबान में किया इसमें आपने प्रश्न का सच्चा जवाब मिलता है॥ सवाल से जवाब निकालने का कायदा॥ इसमें कुल मतलब देने वाले सोलह सवाल हैं वह नीचे लिखे जायँगे इनमें से कोई सवाल करे तो ईश्वर की तरफ़ ध्यान करके मन में राम नाम कहता हुआ चार सतरों में बिन्दियां अनगिनती देता जाय मगर गिने नहीं × × × × × × ×

End:—क्या बात हो (८)

⁝ दोस्तों में खुशी के साथ दिन गुजरेंगे।

आज का दिन अच्छा नहीं है॥

बाज़ या फ़त व कोनो नहीं।

इस औरत के एक लड़का होगा॥

थोड़ी दार साहब दौलत मिलेगा।

इस शखस के साथ ब्याह करने से बेशक तुम्हारी आदमानो का जमाना आयेगा।

इस शखस को तुमसे मोहब्बत तो बहुत है मगर छुपाता है।

वे अंदेशा सफर करो।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—मूल ग्रंथ के निर्माण तथा उसके अनुवाद का संक्षिप्त परिचय। सवाल से जवाब निकालने का क़ायदा, मनहूस तारीख़ों की सूची, सोलह प्रश्न तथा उनके जवाबों का नक़्शा।

(२) पृ० ७ से पृ० २५ तक—अलिफ़ (ا) की तख़्ती से लेकर ता (ط) की तख़्ती तक जवाबात।

No. 549. Rambhasuka Samvada. Leaves—22. Deposited with Umaśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—तीर्थ तीर्थ विषे निर्मल चक्र वृन्द ब्राह्मण लोग रहते हैं तिनके समूह में वेदान्त की चर्चा होती है, तिस वाद विवाद में ब्रह्म बोध होता है और उस बोध में ईश्वर का साक्षात हो जाता है ॥ ३ ॥ रम्भा कहने लगी कि हे मुनिराज ! घर २ में चलने वाली हेमलता स्वर्ण के समान सुन्दरी स्त्री फिरती है तिसके मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं तहाँ मुखरूप चन्द्रमा पर दो नेत्र मछलियों की तरह जो दीखते हैं तिन पर कामदेव का प्रचार होता है ॥ ४ ॥ शुकदेव जी कहते भये कि हे रम्भा तूने तुच्छ स्त्रियों की क्या बड़ाई करी। देखो जगह २ मुनियों के बैठने की भूमि है तहाँ वेदी २ के ऊपर सिद्ध और गन्धर्व लोगों की सभा होती है वहाँ सभा २ में किन्नर किन्नरियों का गायन होता है और गीत २ में रामचन्द्र के गुण गण गाये जाते हैं ॥ ५ ॥ रम्भा कहती भयी कि हे ऋषिवर ! जिस स्त्री के स्तन बड़े कठोर हैं जिसके देह में चन्दन लगाया हुआ है। चलायमान आँखों वाली अथवा सुन्दर सुभाव वाली ऐसी नारी जिसने प्रेम से आलिंगन नहीं करी उस नर का जीना व्यर्थ हुआ।

End :—शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्भा अपवित्र देह वाली पतित स्वभाव वाली देह से प्रगल्भा वाली बनकर लोभ सहित सुभाव वाली झूठ बोलती हुई ऐसी नारी का भोग जिस मनुष्य ने किया उसका जीवन व्यर्थ है। रम्भा बोली हे मुने पतला और त्रिवली युक्त पेट वाली हंस सरीखे चाल वाली मद से भरी भई सुन्दरता व सौभाग्य से युक्त अधिक चञ्चल ऐसी मनोहर स्त्री जिसने इच्छापूर्वक रमणसमय में नहीं भोगी है उस मनुष्य का जीवना व्यर्थ है ॥ ३६ ॥ शुकदेव मुनि कहते भये हे रम्भे संसार में सद्भाव और ईश्वर की भक्ति से रहित चित्त को चुराने वाली हृदय में दया नहीं रखने वाली ऐसी पापिनी का भोग जिसके योगाभ्यास छोड़के आलिंगित करी उस नर का जीवन व्यर्थ गया। रम्भा कहने लगी कि जिस मनुष्य में पुरुषपना नहीं है तो बहुत अच्छी सेज बनाई तो क्या सुन्दर स्त्री है तो क्या बसन्त ऋतु है क्या भया पूर्णमासी रात्रि विषे चन्द्रमा खिल रहा है तो क्या भया अर्थात् जिसने स्त्री संग नहीं किया

उसका पुरुषार्थ व ऐश्वर्य वृथा है। शुक मुनि कहने लगे कि हे रम्भे जो विष्णु भगवान के चरणों में मन नहीं लगा तो सुरूप शरीर, यौवन, वाली स्त्री, सुमेरु समान धन होने से क्या भया।

Subject:—(१) शुक मुनि द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि में तीर्थों की महिमा, वेदान्त की चर्चा और ईश्वर के साक्षात्कार आदि का कथन।

(२) रम्भा का स्त्रियों की उपमा हेमलता और चन्द्रमा, मछली इत्यादि से देकर उनकी शोभा वर्णन करना।

(३) शुकमुनि द्वारा स्थान २ पर रामचन्द्र की भक्ति की महिमा दिखलाना।

(४) रम्भा का यह कथन कि जिसने सब प्रकार सुन्दर स्त्रियों का उपयोग नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ व्यतीत हुआ।

(५) शुक मुनि का पुनः ईश्वर के ध्यान को ही जीवन की सार्थकता सिद्ध करना।

(६) रम्भा का पुनः विषयोपभोग की महत्ता सिद्ध करना।

(७) शुकदेव जी द्वारा श्री कृष्ण भगवान का ध्यान ही सच्चा आनन्द बतलाया जाना।

(८) रम्भा का पुनः अपना पक्ष समर्थन।

(९) श्रीकृष्ण की भक्ति पर शुकदेव जी की अटल निष्ठा और यह दिखलाना कि विषय सुख क्षणिक और नाशवान हैं।

No. 550. Rasanirūpaṇa. Leaves—21. Deposited with Paṇḍita Sripati Lālaji Dube, Village Bamaraulikatāra, Post Office Khasa, District Agra.

Beginning:—श्री राम। प्रथम रस रूपी ईश्वर है तिनको प्रणाम करना। वेद रस रूपी भगवान को कहत हैं। भगवान सब रस के कारन हैं॥ भगवान सबे रस के कारण हैं। काहे तें कि सर्व भूत प्रानी के अंतः करन में बैठके सब जीवन के मन को तृगुण मय अष्ट दल कमल पर फेरत हैं। जब जैसे जैसे दलन पर मन जात है तब तैसो अभिलाष याहि उपजत है। पुन सो अभिलाष जब स्थिरो भूत होत है तब वाहि स्थायी भाव कहत हैं। पुनि सोई स्थायी भाव जब इन्द्रियन द्वार ह्वै के बाहर प्रगट होय के अपने कर्मन को करतु है तब वाहि रस कहतु है॥ अर्थात् सर्व रस के कारन ईश्वर है। इति वस्तु निर्देशो पुरुष निर्देशः॥

End:—नायिका नायक के निकट आवै तब उत्तम प्रकार से बैठै ताहि स्थिति कला कहिये। सो स्थिति कला दोय प्रकार की कहिये॥ छवि स्थिति

१ रस स्थिति २ छवि स्थिति ल० । नायक के सन्मुख विनय पूर्वक बैठे ताहि छवि स्थति कहिये । रस स्थिति ल० ॥ नायक के वाम भाग विषय अपने हाथ ते नायक को हाथ पकर कै अथवा अपनी भुजा को नायक के स्कंध विषय रख कै बैठि ताहि रस स्थिति कहिय ॥ २ ॥ अथ घूंघट कला ल० नायक के सन्मुष जब आवै तब प्रथम घूंघट युक्त अधो मुषी होयके बैठि ताहि घूघट कला कहिये ॥ ३ ॥ घूंघट उद्घाटन कला ल० ॥ जब अपने मुष के देषवे की रुचि नायक की जानै तब शनैः शनैः मुष को उघारै प्रथम नेत्र उघारै पुनः आधो वदन उघारै या प्रकार ताहि घूंघट उद्घाटन कला कहिय ॥ ४ ॥ लज्जाकला ल० जब मुष उघारै तब लज्जा युक्त नीची दृष्टि रषै ऊंची दृष्टि न करै ताहि लज्जा कला कहिय ॥ ५ ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—वस्तु निर्देष, पुरुष निर्देश, प्रकृति निर्देष, रस निर्देश, रस सामग्री, आलम्बन, अनुसंचारी या व्यभिचारी भाव, भावों का वर्णन, सात्विक भाव, भाव निर्देश, भावाभास, रस भेद वर्णन।

(२) पृ० ११ से २४ तक—श्रंगार रस वर्णन, श्रंगार रस की प्रशंसा—(प्रथम तथा द्वितीय प्रकरण) नायिका भेद वर्णन, विषयालम्बन, विषयालम्बन के अधिकारी तथा अधिकारियों के भेद, नायक तथा नायिका भेद, नायक के गुण तथा गुणादि के भेद, नायक के ४८ भेदों का वर्णन, पुनः उनके तीन तीन भेद, प्रत्येक के दस-दस भेद करके १४४० भेदों का वर्णन।

(३) पृ० २४ से ४२ तक नायिका के गुण, नायिका के भेद (२४०० भेद), उद्दीपन विभाव, उद्दीपन के भेदों के भेद, मनोविकार लक्षण, अंग गुणादि वर्णन। वयः संधिनी नायिका वर्णन, नायिका के अन्य भेद, नायिकाओं की कलाएं और उनके भेद आदि ॥

No. 551. Ravikathā. Leaves—39. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa of Paṇḍita-kā-Purava, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ रवि कथा लिष्यते।

रिसह नाह विनऊं जिनंद । जा प्रसाद चितु होइ अनंद ॥
विनऊं अजित विनासै पापु । दुष दालिद्र हरै संतापु ॥
संभव नाथ तनी थुति करौ । जा-प्रसाद बहु पुतरि तरौ ॥
आचि नंद तुम सेवहु वर वीर । जा प्रसाद आरोग्य सरीर ॥
सुमति देव जिन पदम सुपास । बहु विधि नवन करौ प्रविलास ॥
चंदा प्रभु जो विनऊं तोहि । हरै कलंक देहि जसु मोहि ॥
पुहुप दंत सीतल सेवा करौ । पुनि श्री आंस स्वामी मन धरौ ॥

End :—

इति रवि कथा को बहु छेव । नायो समा को जिन वर देव ॥
जिहि भवियन कैाकुरी योद भाऊं । करि सिधि लिव पुटो कैा राउ ॥
मोह इमाल जिहि वस कीयो । राग द्वेष तजि संजम लीयो ॥
अक्षर अमक निर्मल होइ रह्यो । सोनक देव गोठि कुं कह्यो ॥
वर दिन ढूंडो रच्यो पुरानु । थोड़ो बुधि मैं कियो बखानु ॥
अधिक हीन जो अक्षर होइ । बहुरि संवारें मुनिवर होय ॥

× × × ×

× × × ×

वामानंदनि पार्श्व जिनि, निस दिन सुमिरैा सोइ
इन्दु तनै सुख भोगि कै, पावै मोक्ष सु होइ ॥

इति रवि कथा समाप्ता शुभं भवतु मंगलं ददातु ॥

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, ग्रंथ निर्माण प्रतिज्ञा, कथा आरंभ, बनारस के राजा श्रीपाल का वर्णन, उसके राज्य में रहनेवाले कोटिध्वज का वर्णन, कोटिध्वज का ऐश्वर्य तथा दान इत्यादि का वर्णन, उनकी स्त्री को सात पुत्र होने का वर्णन तथा उनके पुत्र रवि की कथा। सबसे छोटे पुत्र गुनधर की महत्ता, कथा श्रवण फल।

(२) पृ० १० से पृ० ३५ तक—कथा की निंदा करने वालों को कुफल, मुनीश्वरों का आगमन तथा धर्म फल वर्णन। मतिसागर की गुनसुंदरी को मुनि का रवि व्रत का उपदेश, रवि व्रत का फल, अपने घर आकर परिवों को बुलाकर व्रत की महत्ता सुनाना और उनकी बुराई करना, गुनसुंदरी का दुःखित होना मतिसागर की लक्ष्मी का विनाश, गुणधर का पिता को समझाना, अपने पेट भरने के लिये बाहर जाने का कथन, ताग ग्रहण, सप्त व्यसन वर्णन, अन्य शिक्षायें गुणधर का अयोध्या पहुंचना, वहां के सेठ बलभद्र से भेंट, सेठ का गुणधर को भंडारी नियुक्त करना, वाणिज्यार्थ उसे धन देना।

(३) पृ० ३६ से पृ० ४० तक—मतिसागर का दुखित होकर पारियान्या मुनि के पास आना और अपने भविष्यके संबंध में पूछना, मुनि का दुख दूर होने और पुत्र का पुनः लाभ सहित लौटने का कथन। पारसनाथजिनेन्द्र के सेवन की आज्ञा, आज्ञा पालन पर उसको अतुल धन होना।

(४) पृ० ४० से पृ० ७८ तक—गुणधर का भूखा होना, अपार संपत्ति की प्राप्ति होना, मित्र २ प्रकार के दुखों में फंसना, राजा की प्रसन्नता और उसके

साथ राजकुमारी का पाणिग्रहण, बहुत दहेज मिलना, कुछ दिन बाद अपने कुटुम्ब से मिलने की इच्छा प्रगट करना, पार्श्वनाथ की पूजा का फल, कवि परिचय।

अगरवारे है कोयो वखानु। जननी नगर पैाहि नगर ठांव।
गगह गोत्तु मन्न् को पूतु। माउ भगति कर घत संजुक्त॥
अवहि यह करम सच्यौ करन मति भई। तब यह धर्म कथा निर्मई॥

No. 552. Saguna Navsundisa-ko. Leaves—11. Deposited with Paṇḍita Śāligrāma Dikshita of Jāmū, Post Office Saṇḍilā, District Hardoi.

Beginning:—रवि उत्तर दशा फलं ॥दे।०॥ रवि ग्रह में प्रश्न के कहो जो दुतो सुभाउ पंडित पंडित हो इनहि जो समुझि के पेतु वनाउ ॥ चै।० ॥ आइव सोमवार को वो है ॥ जो सुभ माषा पेतहिं औठे कोई गाति न काज्जु करै ॥ यो कोजै सो निर्मूल परै ॥ व्याहन गये जो दैजो पावे ॥ मूठो लावतु हाथहि आवे ॥ वो दुलहिनि वे सगरी कहिवो ॥ प्रेतु पाइकै चुप किन रहिवो। जो पै व्याहे आवत होई ॥ दुलहिन संझ वांझ कहि वोई ॥ येन सगुन गैान कह करै ॥ एक जनो लंघन कै परै ॥ कै पेंडो भूलेगो कोद ॥ आइमिलै के विछुरनु होई ॥ पैंडे पूछै सगुन अपार ॥ कहिवो कोऊ कहिकै उपकार गये ते पाली परै सिकार। जो पावै तो लोयरि सिवार ॥ चलु रगु विगरै साई ॥ तिय पशु परिखु वधू मरै कोइ ॥ आगो लगै एकै घन करैं बादल होइ बो बूंदो परै ॥ दे।० ॥ अपने ग्रह शशिवार को कहो पहै निवंधु ॥ सुगम समुझि जो नाचले सो जग में अंधु ॥ चै।० ॥ सोमवार घर पावै बुध ॥ सुभ माषा है कछु कवि बुद्ध ॥ क्षत्री ब्राह्मन को काजु न होई ॥ जो पै करै अलप कहि वोई ॥

चै।०—नान्हें तुरिक काज नहिं करही ॥ बहुतु न होइ न पाली परही ॥ रगु चाखु अबल कुगर रातो। मछरी मांस गाउ अवहो तो ॥ पावै गायहि नान्हें कोइ ॥ के सिकार नान्हे की होइ ॥ जो विगरै तो नान्हो मरै। पानी पवन आग फुनि वरै ॥

End:—दे।०—सैारे विगरै शनि ग्रह काजु प्रकासहि केतु। केतु काज्जु कैाना कहो क्षत्री द्विजु को होय ॥ चै।०—किस हूचे तजो होइ फेकार ॥ असुभ में सुभ सुभ वे वेकार ॥ हाकिम चढ़ें गाउ भाजो चढ़ै ॥ ऐसे सगुन फेरि कै रहै। चोरि लहै जो कहउ चलावै ॥ ऐसे सगुन किये फिरि आवै ॥ जूझसि कारको कोरन के रंग। कै स्याम कुम हतु शनि के रंग ॥ शनि घर रवि अवल कै वखाने ॥ शनि घर सोमु आगे ते जाने ॥ लोला हरो चाखु पो अवरसु। पो तह चहु

हावो रुक है पसु ॥ शनि के घर में मंगल आवे। कारो कुम इतु चोर बोलावें। शनि घर बुधुनो लोवै हारो। सुरषा अक्सर सुमठि हापरो ॥ पोशु चोर लो लो फुनि कहै सिकार गये सूकर को गहै। जो शनिवर बोहकै आवे। तो पै अवल गुरेगु बतावे। केतु अकास सुभाषा होई। सभो द्विजु करै काशु न होई ॥ सूद तुरिकु को कारज भलो। गाव मनि पाल आवै चलो ॥ नान्हो मूठ धरे कछु आवे ॥ सूद तुरुकि पहुनोइ मिलावे ॥ करतु परै ऊतर फक फकै। जूझहि रुद लराइ होइ–मेहा मास मास कहि बोई। कै राहु रुपिये के पैसा। कै कछु बात सगुन है पैसा। बिगरे और केत को धाम। क्षत्रिय ब्राह्मन करे न काम। उहह बदु करार मडराहो ॥ लखि करि आनि तहा ठहराहो। बिगरे सुधरे हुँ है कुछ आगे सब फकार कै सुचु। इति सगुन नवो दिशा को समाप्त–

Subject :–रवि-उत्तर दिशा के फल का वर्णन करते हुए सोमवार के दिवस का शकुन कहता है कि इस समय में कोई जाति शुभ कार्य न करे, ब्याहादि कार्य न करे क्योंकि ये उस समय निर्मूल हो जाते हैं। सोमवार को घर में बृहस्पति के आने पर भी कोई शुभ काम ब्राह्मण या क्षत्रिय को न करना चाहिये। सोमवार के घर बुध के जाने पर सब कार्य करना चाहिये। इसमें कार्य की सिद्धि होती है।

पूर्व राहु के घर बृहस्पति के जाने पर जिस कार्य का विचार किया जावे वह पूरा होता है। परन्तु राहु के घर शुक्र के जाने पर केवल क्षत्री और ब्राह्मण आदि के कार्य सिद्ध होते हैं। ईशान दिशा–राहु के घर शनि के जाने पर क्षत्रिय ब्राह्मण आदि का कार्य नहीं सिद्ध होता तुरकों आदि नीच जातिये का कार्य बनता है।

अब चन्द्रमा शनि के गृह में आवे उस समय सब जातियों को अपना २ कार्य करना चाहिये; पुत्रोत्पत्ति, कहीं से शुभदायक समाचार आना ये सब बातें इस काल में प्राप्त होती है।

आग्नेय–शुक्र के घर आग्नेय–विचार इस काल में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य ये कार्य न करें परन्तु शूद्र और तुर्क आदि जातियां अपने अपने धर्म का अनुसरण करें।

दक्षिण–बृहस्पति, भृगु और भोम की एकता में किसी को शुभ कार्य न करना चाहिये। इसमें घर की सम्पत्ति नष्ट होती है। गोत्र और समाज में झगड़ा होना, बुरे ग्राम में आगमन इत्यादि बातें संभव होती हैं॥

नैऋत्य–बुध के घर मंगल के जाने पर चोरों को अपने कार्य में सिद्धि प्राप्ति होती है।

पश्चिम—भौम के घर चन्द्रमा के आने पर शूद्र आदि निम्नजातियों को सफलता होती है।

वायव्य—सोमवार के घर सूर्य के आने पर कोई अच्छा शब्द सुनने में आता है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदिकों के घर पाहुने आते हैं।

No. 553. Sagunauti. Leaves—5. Deposited with Paṇḍita Vindheśvariprasāda Miśra, Teacher, Sanskṛita-Pāṭhaśālā, Village Gauḍā, Post Office Madhoganja, District Pratapagaḍha (Oudh).

Beginning:—अथ सगुनौटी लिख्यते॥

॥१११॥ यह सगुन अच्छा है जो काम चाहोगे सो पावोगे झगरा मिटैगा ब्योपार में लाभ होयगा॥ तेरा दिन अब अच्छा आवैगा मनोरथ सुफल होगा निस्सन्देह तेरे दाहिने भुजा पर तिल है सो देषि लेना॥

॥११२॥ यह सगुन मध्यम है दुस्मन तुमको लषै है चित्त में को काम नहीं होगा उचहो दिन तुमार समाचीन है फूल छै देवी का पुजा करो चिंता चित्त की मिटैगी तुम्हारी की झूठ बोलतो है सो विचारि लेना॥

॥११३॥ यह सगुन का फल सुनो स्थान लाभ होगा चिन्ता चित्त की मिटैगी पुत्र ए सुफल होगी दिन तुमारे बुरा रहा है सो गये अब तेरा अच्छा है तुम विश्वास मानो तेरे दाहिने अङ्ग पर तिल हैं सो देष लेना॥

End:—

॥४४१॥ यह सगुन से भाई को चिन्ता है मद्धिम है दिन अच्छा है धीरज रषना॥

॥४४२॥ यह सगुन बेकार है धन हानि होगी भय होगा काम विचारि के करना तुमे सुष नहीं है सोच है सो विचारि लेना॥

॥४४३॥ यह सगुन अच्छा है सोच मिटैगी धन प्राप्ति होगी पुत्र लाभ होगा। तेरी छाती पर तिल है देषि लेना॥

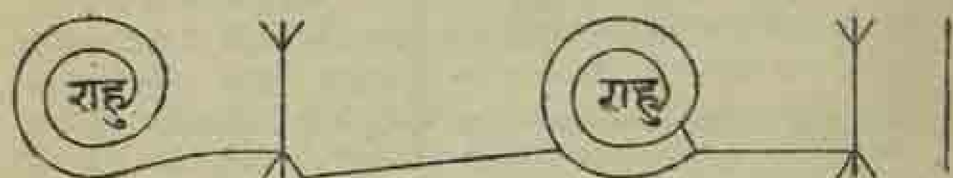
॥४४४॥ येह सगुन से काम नहीं होगा आपुस में विरोध होगा तेरे जी में चिन्ता है दुसरा काम करो तो बड़ो सुसो होगो तेरो इन्द्री पर तिल है सो विचारि लेना॥

॥ इति सगुनौटी संपूर्णम्॥

Subject:—(१) पृ० १ से लेकर १० तक—१११ आदि १, २, ३, ४, के अंकों से बनी हुई तीन अंकों वाली संख्याओं के अनुसार सगुनों के फलों का वर्णन।

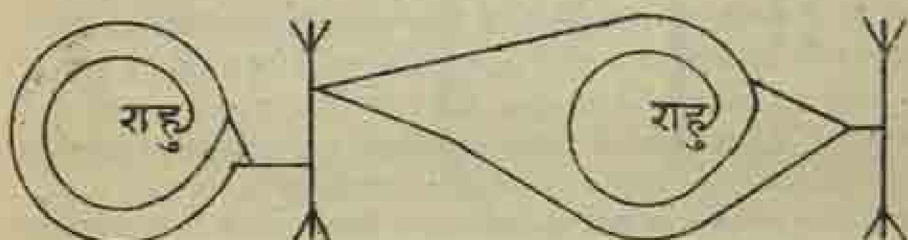
No. 554. Sagunavati. Leaves—26. Deposited with Paṇḍita Bhagavanādatta of Benipura, Post Office Maḍhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अथ भाथा सोसो कर यंत्र



भाथा सोसो कर जंत्र ॥ • ॥



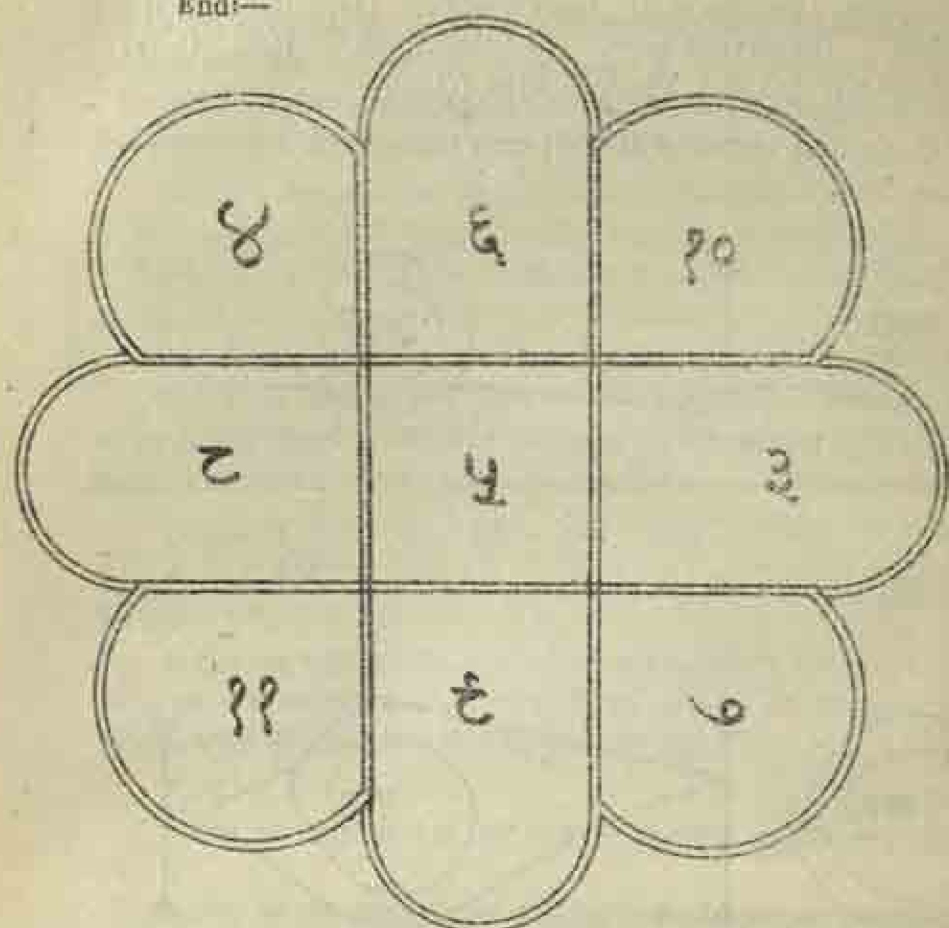


१	८	४	५
१	८	७	१२
८	१०	३	६
७	१२	१३	६

टाढ़ो को पेदो जंत्र लिखित
लिपि कै दिपावै गर्भै पंडित होइ

....

End:—



चारि ४ दस १० कोइ आगम पावै ॥ = ॥
आठ ८ पाँच ५ फल मांगे पावै ॥ = ॥
तीन ३ एगारह ११ भूजै राज ॥ = ॥
नौ ९ छा ६ सतरह १७ होइ अकाज ॥ = ॥
इति सगुन चक्र सिद्धिः ॥ = ॥ ॥ =

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक शुत ।

(२) पृ० ७ से पृ० २० तक—गर्भ मोक्ष, बीसा यंत्र, आधा बीसा का यंत्र, गर्भ स्तंभन, हथियाड़ करण, झगड़े में जीतने, गऊ रोग नाश, वशीकरण तथा संग्राम विजय करने के यंत्र ।

(३) पृ० २१ से पृ० ३० तक—लुप्त।

(४) पृ० ३१ से पृ० ४३ तक—आकर्षण, लक्ष्मी लाभ, सर्व कार्य सिद्धि, राजा वशीकरण, राज सम्मान, वशीकरण, चौसा मंत्र, पुत्र होने, बंध्या प्रसव करण, काक प्रश्न, सर्व सिद्धि ज्वर नाश, पाप मोचन। चतरा करण तथा इसी के अन्य दो मन्त्र।

(५) पृ० ४३ से पृ० ५२ तक—बंदी मोक्ष, तिजारी, प्रजा मोहन कामिनी वशीकरण, जुआ जीतने, शत्रु नाशन, भूत-प्रेत विनाशन, संग्राम में गऊ वेग प्राप्त करने, राजद्वारा सम्पूर्ण वशीकरण, सर्वकार्य सिद्ध करने, मृगी रोग नाशन, सर्वकार्य सिद्ध करने, तिजारी दूर करने, सगुनवती तथा सगुनवती सिद्धि यन्त्र।

No. 555. Śakuna-Kuśaguna Parikshā. Leaves—4. Deposited with Paṇḍita Gunnā Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ शकुन कुशकुन परीक्षा लिख्यते जो मनुष्य अपने घर से किसी कार्य को चले। उसको मार्ग में पानी से भरा हुआ बर्तन मिले अथवा निरधुंध अथवा धुंआ से रहित अग्नी मिले अथवा मछली की डलिया लिये आगे से लिये आता हो अथवा कोई रोटी लिये आगे से आता हो वा दूध आगे से लिये आता हो अथवा दही से मटकी भरी वा और किसी बर्तन से भरा दही लिये आता हो ये शगुन शुभ हैं। जिस काम को जाता होय वह अवश्य सिद्धि होय॥ और किंतु रोगी के निवृतार्थ दूत वैद्य को बुलाने आवै तो ये शगुन मध्य हैं और येही शगुन जो वैद्य को मिलें तो शुभ हैं रोगी अच्छा होय॥ जो मनुष्य किसी कार्य को घर से निकले मार्ग में कन्या अथवा सर्व श्रृंगार से भूषित पतिव्रता स्त्री मिले या ब्राह्मण स्नान किए हुए मिले वा किसी राजा का दर्शन मिले वा गुरू मिले वा पान आगे से भरा लाता होय वा अन्न भरा आता होय तो ये शगुन शुभ हैं सिद्धि के दाता हैं कार्य वेग सिद्धि होय॥

End :—जो चिड़िया हरे पेड़ से उड़ के घरती पर आय के अथवा किसी खेत में भायक दाना चुगे अथवा कृमि चुगने लगे अथवा घरती में अथवा पेड़ वा पत्थर में चोंच घिसने लगे अथवा अच्छे प्रकार बैठी होय आनंदित होय उत्तर पूर्व वा पश्चिम को मुंह किये बैठी होय और हरे वृक्ष पर अथवा फूले हुए वृक्ष पर बैठी होय और दाहिनी ओर मिले अथवा हरे पेड़ पर से उड़के दूसरे फूले हुए पेड़ पर जा बैठे। और पत्ती फूलादि खाने लगे तो यह शगुन अच्छे हैं मन के चीते कार्य सिद्धि होय हैं॥ और जो बटोही घर से चले और जंगल में पहुंचे और महारी का जोड़ा लड़ता मिले अथवा बेरी या बबूल के पेड़ पर बैठा होय अथवा अवाले के खेत में ज़मीन पर बैठा होय अथवा उड़ी जाता

देखे वा पांच चार इकठी होके लड़ती देखे अथवा सामने से उड़ जावे ग्रौर कोल्हू ग्रादि पर जा बैठे अथवा चिल्लाती हुई ग्राकाश को उड़ती चली जावे ग्रौर फिर दृष्टि न ग्रावे यह शकुन खोटे हैं जो कदाचो ऐसे शकुन पाय ग्रागे जायगो तो दंगा फ़िसाद होगो कार्य बिगड़ जायगो ग्रौर जो घर को लौटेगो तो शुभ है ॥ जो ऐसे कुशगुन होंय ग्रौर घर को ना लौट सके तो वहाँ ठहर कर देवता को पूजे अथवा सूर्य नारायण को जल चढ़ावे गुरु मंत्र का जप करें ग्रौर श्रद्धानुसार दान करे तो कुशगुन का प्रभाव जाता रहै तो कार्य भी सिद्धि होगा ॥

Subject:—देश परदेश यात्रा ग्रादि में जो शुभ शकुन तथा ग्रपशकुन ग्रादि होते हैं उनका वर्णन ॥

No. 556. Samantasāra-Vachanāvali. Leaves—73.—Dated in Samvat 1953 or A.D. 1896. Deposited with Paṇḍita Santaprasādaji Śarmā, Village Mirja-kā-Bāga, Post Office Pratāpagaḍha, District Pratapāgaḍha (Oudh).

Beginning.—श्री सीतारामाय नमः ग्रथ विचित्र वचन श्री राम भक्तन के ग्रसंख्य जीव मोह माया की निद्रा में सूते पड़े हैं कोई पुरुष इस निद्रा ते जाग है तो जागा है तिसके हृदै में परमेश्वर के भजन रूपी खेत जमा है तिस परम भजन रूपी खेत का फल श्री रामदरशन है पर भजन रूपी खेत पर रक्षा भली भांति चाहिये जैसे ग्रनाज के खेत के ऊपर राखो राखते हैं जिससे पशु न ग्राय जावे ऐसे ही भजन का खेत भी रक्षा लायक है भोग रूपी पशु ग्रहंकार रूप चोर संकल्प रूपी पक्षी दंभ रूपी शूकर प्रयोजन रूपी हरिन इन सब दुष्टन से रक्षा किया चाहिये ग्रौर जिन्होंने रक्षा नहीं किया तिनका खेत उजड़ जाता है ॥ १ ॥

End:—साई साथ प्यार इतना कर जितना सुष चाहता हो ग्रौर पाप इतना करो जितनी नरक की ग्रांच सहने की शक्ति होय विश्व में विस्तार इतना कर जितने दिन रहना होय ॥ ९४ ॥ जितना है तितना कछु जेता कछु तेता कर मन ग्रपने को बंधन में राख जो राखैगा तो मन तुझको बांध के चाहै जहां पटकेगा ॥ ९५ ॥ जो मन को जीता तो प्रभु के समीप रहेगा । जो मन न जीता तो सदा प्रभु से दूर रहेगा ॥ ९६ ॥ मन का कहा न मानना रोके रहना बड़ा ग्रेरो है एकांत वास सदा संत संग भोजन न्यूनमान जागृत करते रहना तव इन रहस्य वचन का स्वाद होयगा पंडित वाचक ज्ञानी विरागहीन न इहन देना मन में मनन करना सदा २ ॥ ९७ ॥

इति श्री सर्व श्रुति स्मृति संहिता संत समैतसार । श्री वचनावली श्री युगलानन्य शरण ने लिख दिया । शुभ मस्तु ॥ मिति ग्रासाढ़ वदी ९ सम्वत् १९५३

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ३० तक—भजन रूपी खेतों की रक्षा का आदेश। परमेश्वर के करन कारन होने का वर्णन। ईश्वर की रचना की महत्ता। हृदय के शुद्ध होने का उपाय, मनुष्य के उपकारी ४ पदार्थ, भक्तों की पहिचान, भगवान को क्या पसन्द है। सूरमा, गरीबी, उत्तम पुरुष, परी, निश्चयवान, विद्वान, संत, और प्रभुप्रिय के लक्षण। सत्संग की आवश्यकता, जीव और परमेश्वर के मध्य के पांच पर्दों का वर्णन। गुरुमत का रूप, मोह-बंध से हानि, स्थूल तथा सूक्ष्म कुटुम्ब का विवरण। सूक्ष्म कुटुम्ब का स्वरूप परम संतों के पांच चिन्ह। पांच प्रकार का मांस और चार प्रकार की निद्रा के त्याग का कथन। जिज्ञासुओं के तीन उत्तम लक्षण। जीवों की आयु का नाश होने के पांच कारण, साधु सुहृति का फल, सावधानी से रहने का उपदेश, मोक्षप्रद दस 'स' कार, पांच दुर्लभ पदार्थ। जीवन का मूल्य, कामादिक की प्रबलता, मन तथा इन्द्रियादिक की प्रचंडता, संत का रहस्य।

(२) पृ० ३१ से पृ० १०० तक—माया का मूल, धीरज, संतोष, विराग तथा सेवकाई का स्वरूप, सधन की कथा, बंधन से छूटने का उपाय। कर्म मिथ्या चेष्टा है। शुकदेव का आख्यान, गुरुमुख का स्वरूप। सत्संग की महिमा, मन-रोग के वैद्य संत हैं। संतोचित प्रभु की विनतियां, अभक्तों के दंड का विधान। संतत्तम का संबंध। माया के त्याग का वर्णन। ब्रह्म की प्राप्ति का विधान। परमेश्वर तथा जीव का स्वरूप। गुरुमुख और मनमुख का लक्षण, विषय त्याग। जिज्ञासु के दस लक्षण। रामरूपी अशरफी के ग्रहण का उपदेश, संतों के वचनों का माहात्म्य, चौरासी का कष्ट। भक्ति संबंधी कुछ उपदेश, जगत के मिथ्यात्व का वर्णन। भक्त अभक्तों की परीक्षा, माया का स्वरूप, ज्ञान तथा ध्यान का स्वरूप, भजन का स्वरूप, प्रारब्ध।

(३) पृ० १०१ से पृ० १४६ तक—संतों की प्रतीति, प्रीति, माई अर्जुन जी की साखी, इन्हीं की दूसरी साखी। तीसरी साखी। दर्शनभक्त की साखी। शूरमा का लक्षण, साखी, मन्त्री का आख्यान। विवेक तथा अविवेक, मनुष्य के षट्-लक्षण, विचार पदार्थ, शुद्ध बुद्धि का लक्षण। शरणागत के मुख्य चिन्ह। मन के भेदी, कुछ उपदेश। ब्रिलमान के मान के आगे पड़ने वाले तीन पर्दे। पापियों की प्रीति के छै पदार्थ। संसार की आठ उत्तम वस्तुएं। साखियां। धर्म का तत्व, फकीरी क्या है। संतों के ग्रहण करने योग्य बालकों के चार गुण, स्नानादि ग्रहणीय गुण। मन के जीतने का उपाय।

No. 557. Samarasāra. Leaves—18. Dated in Samvat 1793 or A.D. 1736. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Miśra of

Paṇḍita-kā-Puravā, Maujā Bhaddhū, Post Office Sagarāmagaḍha, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—परमात्मानम् प्रणम्य ॥
सकल सृष्टि अंकु पोषक रजन पालक सुष दाइ।
जै दायक पति षवल के हुजे सरन सहाइ ॥ १ ॥
दोन सहाई सुरपति सेनापति सिरताज।
चित को चिंता मेटि के कोजे सिद्धि सुकाज ॥ २ ॥

× × × × ×
× × × × ×

ताको राह बिचार को कटपय देत दिषाइ।
इन चौ वरननि सुमिरि जो निरषै ध्यानु लगाइ ॥ ६ ॥
कट दस दस हन प सदै य वरन वसु निरधाह।
प्रति अक्षर निज ठौर मत क्रम तें अंक विचारु ॥ ७ ॥

End:—पहुंचा छीन न देषई हाथु धरे सिर जोइ।
ताको डर नहि मोच को रस मासनि लौं होइ ॥ १३५ ॥
माथे पर अंजुलि अषै कदली सुमन समान।
षाभा लाल धराइ तौ मै नहि रंच प्रमान ॥ १३६ ॥
अंबु सलिल में जो तिरै तौ न मरै नर सोइ।
जो भाषत है नेमु करि देव मुनी सब कोइ ॥ १३७ ॥
चिन्ह षायु निज काय लषि निहचै करैन ठानु।
मुख्य देह के सगुन हैं इन सम आन न जानु ॥ १३८ ॥

इति श्री समर सार समाप्तं ॥ शुभ मस्तु ॥ सम्वत १८२६ कार्तिक बदी सप्तमी शनि वासरे ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक-मंगलाचरण, गुरु स्थान कथन:—
मिश्र अजोध्या नगर के, अमत गुरु घनस्याम।
विद्या के सागर महा, ज्यौं गनपति मतिधाम ॥
तिनही को परसादु लहि, ज्योतिष अगम अगाध।
"समरसार" भाषा करौं, क्षमियो बुध अपराध ॥

ग्रन्थ निर्माण काल—

गुन निधि परवत सीतकर, जव संवत सुष सार।
ज्येष्ठ असित तिथि तीज रवि, भयो ग्रन्थ सोवार ॥

संख्याज्ञान, जय पराजय, चिंता, वरुण स्वर, राशि स्वामी, ग्रह स्वर राशि स्वरभ स्वरज्ञानम् । द्वादश वार्षिक, स्वर वार्षिक, स्वर ग्रयन, स्वरपद स्वर मास, स्वर ग्रयन, स्वर कथनम्, ऋतु स्वर वर्णन ।

(२) पृ० ८ से पृ० १६ तक—मात्रा स्वर, जीव स्वर, पिंड स्वर, जोग स्वर, ग्रंतरोदय, भू-बल, रविहत दिशा, चन्द्रहत दिशा, केतुहत दिशा, राहु बल, जोगिनी बल, जोगिनी नाम । राहु युत जोगिनी बलम् ।

(३) पृ० १७ से पृ० ३६ तक—काल कथनम्, तत्कालज्ञानम्, दिन ग्रतीत ज्ञानम्, वार प्रवृत्ति, होरा, पहर लक्षण, लगन प्रमाण, वास्तु सूर्य, सकाल, राहु कलानल, तात्कालिक, जीव पक्ष कथनम्, नाम ज्ञानाय शकुनल मधु चक्र, हंसचार, दलपति फलं, स्वास फल वाह प्रमाण कथनम्, स्वाबलं, रतिविधि, द्यूतक्रीड़ा, समर वेधचानि, कोट चक्रम्, सर्वतोभद्र चक्रम्, साध्यासाधक, गर्भा ग्रोर पुत्र संबंधी प्रश्न ।

No. 558. Sāmudrika. Leaves—10. Deposited with Umā-śankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning:—नाभी लक्षण नाभी गंभीरी वाहु तो सदा होय धनवन्त । सुन्दर नाभी पुरुष को सुख देखावे ग्रंत ।

ग्रथ हस्त रेखा लक्षण

ग्रब सुनु कहौं हस्त की रेखा । जैसा भाउ जहां मैं देखा । ध्वज ध्याद रेखा होइ हाथा । बहुतै धनी जब है तेहि साथा । मंछरूप रेखा देखरावै । शोधि हाथ जह लावै । फुटम्हे रूप जो रेखा होई । ता कहं चोर कहै सब कोई । कै शशी के ग्रांकुस रेखा होइ सुर वो धनवन्त देखा । चौपटी रेखा जही होइ । महा सुरोवा कहिये सोई । दो०—तिलटी रेखा हाथ में हिन्दुहि तुरक कराइ । जोई तुरक के हाथ में निश्चै धाइ सो पाइ । ग्रथ पुरुष लक्षण वर्णन—कोमली मुरती ग्रंग सों । वं कट भौंह विशाल सो लोचन लाल चगही । ग्रोरे काम कला बहुल सुख पावइ । शील वंत गुन वंत सो चतुर कहावइ । रूपवन्त ग्रति चतुर बिनोद रागरस भीत ग्ररथ सों हेतु रहै चीत प्रेम बंधा । लघु भोजन लघु रोष दान दीन मावइ । कामीनी पहर सलाइ सो रूप रिझावई । ग्रति लघु ग्रति न विशाल श्याम धाम ग्रंग होइ । मधु बानी मधु भोजन सुन्दर रूपते हो ।

End:—ग्रथ ग्रंग प्रमाण लक्षण—बावन ग्रंगुल ग्रंग पुरुष जो जानिये सो बावन ग्रौतार देव करि मानिये । राजपुत्र जो होई ग्रौ बलो पावन फेरे ।

चारी वीस ग्रंगुल पुरुष जानु दुष्ट सो होइ । मन कपटी ग्रप रचार वो भेद न पावे कोइ । नवै ग्रंगुल पुरुष जो लहिये । तीस बर्ष ग्रायुदा कहिये । चौ

अंगुल का होइ प्रवाना। अधिक वय होइ अनुमाना। सो अंगुल ऊपर जो गनै। अंगुल साथ बरष दश मनै। होइ दहोतरो सैको काया। तौहु चाहि अधिक बढ़ि भाखा। सात बय ताको अधिकाई। अंगुल पाछे लेहु गनाई। बोला सौ तजो ऊपर बढ़ै। होइ चिरंजो आयम पढ़ै।

हिरदै लक्षण—दोष अद्यन नर भारो होइ। म्हा घनाटी पुर्व है सोइ वांइ दोष अद्यन है भारो। मिठै नारि तेहि प्रेम पियारो। हदै समान अहन जो होई। सेवा करै जगत सब कोई। दुर्बल हिया दारिद्र का भाइ। मोटा हो आवरष सौ आइ।

Subject :—(१) नाभि लक्षण।

२—हस्त रेखा लक्षण।

३—पुरुष को चार जातियों के लक्षण।

४—चित्रिनी स्त्री लक्षण।

५—हस्तिनी लक्षण।

६—नख लक्षण तथा चरण को उंगलियों के लक्षण।

७—जानु लक्षण, पंजर लक्षण।

८—इंद्रिय लक्षण।

९—अंग प्रमाण लक्षण।

१०—हृदय लक्षण।

No. 559. Saṅgraha. Leaves—6. Deposited with Thākura Bidriprasāda, Village Kharauhī, Post Office Mānadhātā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning :—अब तो मिलनौ कठिन है। पांयन पड़ी जंजीर।
परवस प्यारे हम भई। काउ करै तदबीर॥ १॥
मित्र तुम्हारे मिलन को। चाहत है चित नित।
तन नहिं मिल्यो तो का भयो। मन मिलि आवत नित॥ २॥
सोरठा:—प्यारे तुम जिन जानियो। हम सन प्रोति गई।
अमर बेल ज्यों वक्ष पर। बाड़त नित्त नई॥ ३॥
तुम बिछुरत छिन मो मरौं। कहा जियौं बिनु तोहि।
तव मूरति मन में बसे। वहो जियावत मोहि॥ ४॥
End :—सांचो कहौ हमसों मनमोहन, काके कहे तुम पीति तजी है।
आंखिन देखि बिना नहिं चैन सो, पीति की रीति कहां बिसरो है॥
का कहौ मोहो सों चुक भई, तुमरे चित को जो चाह घटो है।
मै कपटी कि भो तू कपटी कि तो, वह कपटी जहिं ऐसो ठटो है॥ १॥

फीको लगै यति नीको सु फूल यथा सुचि सुभ्र सुगंध विना।
तन मांहि पोसाक न सोहत है दीप बंदी यथा कटि बंध विना ॥
बीर सरीर न सोहत है भुज दंड उन्नत कंध विना।
कविता वनिता नहि सोहत यों वर भूषण छंद प्रबंध विना ॥ २ ॥

Subject:—पृ० १ से पृ० ४ तक—पत्र संबंधी दोहे।
पृ० ४ से पृ० १२ तक—पत्र तथा विवाह संबंधी दोहे।

No. 560 (*a*). Sāragitā. Leaves-20. Deposited with Paṇḍita Mannilāa Gaṅgāputra Tivāri, Village Misrikha, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः अथ सार गीता लिख्यते॥ अर्जुन उवाच, अर्जुन श्री कृष्ण भगवान जी सो प्रश्न करे है कि परमेश्वर जी उंकार का महात्म श्रोर अस्थान। तिसके सुनने को मेरे वांछा है॥ तुम कृपा करके निरुपण करहु॥ श्री भगवान वाच॥ हे अर्जुन तुके बहुत भला प्रश्न किया है॥ अब श्रोंकार का महातम विस्तार कर कहता हौं तूं श्रवण करो। यहि गीता सार हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर यहु इसके रष्या करने हारा है। श्रोर अगन वायु सूरज यहु इसके देवता है॥ गायत्री जगतौ त्रिष्ट यहु तीनों इसके छंद हैं॥ श्रोर अगन अस्थान है तहां चारों वेद हैं। रिग्वेद। युजर्वेद। सामवेद। अथर्वण वेद॥ चारों वेद कारन हैं। अब इनका उतपति कह हों। श्रोंकार ते इनके उत्तपत्ति है रिग्वेद का नील वरण। युजर्वेद का पीत वरण है। साम वेद का स्वेत वरण है। अथर्वण का रक्त वरण है। श्रोंकार नाम अषर सक्त है अरु मकार के लोक है। श्रोंकार अषर परम तत्व है अरु इसुर वेद कमल विषे बसे हैं। पृथ्वी अग्नि रिग्वेद है अरु ब्रह्मा भुवलोक यही चारो अकार अषर के साथ है॥

End:—सर्व सास्त्र मयी गीता। सर्व धर्म मयो दयः। सर्व तीर्थ मयो गंगा॥ सर्व देव मयो हरि जो कोई इसका एक सलोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति होई श्री कृष्ण भगवान जी के अम्रित वचन है। अचनों ते भला फल सार गीता कोनी है। रे मनुषो तिस फल को तुम क्यों नहीं खाते पापों के अग्यानो का बरेचन करन हारी है॥ वारंवार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजे। अथवा श्रवण कीजे॥ श्रोर शास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजे॥ कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपा निधान। श्री नारायण जी तिनको मुष कमल ते निकसी है। अरु श्री मुष वाक्य है। गंगा, गीता, गायत्री, गुरु, गोविंद। इन पंचो राग करे। सो पुनर्जन्म को न पावै॥ जो कोई इस सार गीता का यथा शक्ति अभ्यास करन न जाणे

अरु पाठ मात्र करै सो भी विश्नु के विःमान जाइ पास होइ। इसके आगे क्या कहो। इति श्री भगवद्गीता ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता सम्पूर्ण है।

Subject:—ओंकार का महत्व, रूप, ध्यान आदि जानने के प्रश्न श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को समझाया है॥

No. 560 (b). Saragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1767 or A.D. 1710. Deposited with Pandita Ramanātha Misra, Village Imaliya, Post Office Sadārapura, District Sitapur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ सार गीता लिप्यते॥ अर्जुन उवाच॥ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान जी से प्रश्न करे है कि हे परमेश्वर जी उंकार का महातम रूप ध्यान तिसके सुनने को मेरे बांछा है तुम कृपा करके निरूपण करहु॥ श्री भगवानुवाच हे अर्जुन तु के बहुत भला प्रश्न किया है अब ओंकार का महातम विस्तार कर कहता हूं॥ तु श्रवण करो यहि गीता सार है ब्रह्मा, विश्नु, महेश्वर यह इसके रछ्या करने हारा है॥ ओर अगन वायु सूरज यह इसके देवता हैं॥ गायत्री जगती त्रिष्टप् यह तीनों इसके छंद हैं ओर अगन प्रस्थान है तहां चारोवेद हैं॥ रिगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वण वेद॥ चारो वेद कारन॥ अब इनका उतपति कहता॥ ओंकार ते इनको उतपति है रिगवेद का नील बरण है यजुर्वेद का पति बरण है। सामवेद का स्वेत बरण है अथर्वण का रक्त बरण है ओंकार नाम अछर एक है अरु मकार के लोक हैं ओंकार अछर परम रूप है अरु एस हृद कमल विषे बसे है पृथ्वी अग्नि रिगवेद है अरु ब्रह्मा भुव लोक ये चारों अकार अछर के साथ है॥

End:—जो कोई एक बार सार गीता के अर्थ ज्ञान विषै वासना न करि के पाठ करै सो संसार के अंध कूपते मुक्ति होइ॥ समस्तलोत्रों ते उत्तम है ओर जिस को बेदाणी है अरु वासना को दाती है अरु श्री नारायण मई है सर्व सास्त्र मई गीता सर्व धर्म मयादया॥ सर्व तीर्थ मयो गंगा सर्व देव मयो हरि॥ सो जो कोई इसका एक श्लोक एक चरण आधा चरण पाठ करे है अरु श्री नारायण जी का ध्यान धरे है सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति हो॥ श्री कृष्ण भगवान जी के अमृत वचन हैं॥ वचनो ते भला फल सार गीता को तो है रे मनुषो तिस फल को तुम क्यों नहीं पाते॥ पापों के अज्ञान को बंचन करन हारी है बारम्बार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजे अथवा श्रवण कीजै ओर सास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण की निमित्त कीजे॥ कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपा निधान श्री नारायण जी तिन की मुष कमल ते निकसी है अरु

श्री मुष वाक्य है गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद इन्हु पंचो राग करै सो पुनर्जन्म का न पावै जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करन न जाणे अह पाठ मात्र करै जो भी विश्नु के विद्मान जाइ प्रापति होइ ॥ ६ ॥ इसके आगे क्या कहों ॥ इति श्री भगवत गीता (सार गीता सुप निषत्सु ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता संपूर्णम् लिषतं वन वारी पाठक फैतेपुर निवासी जेष्ट शुक्ल दशमी संवत १७६७ वि० राम राम राम राम राम ॥

Subject:—भगवद्गीता का सार ॥

No. 560(*c*). Srisāragita. Leaves—21. Dated in Samvat 1872 or A.D. 1815. Deposited with Vaidya Rāmabhūshana, Village Kāmatāpura, Post Office Etaujā, District Lucknow (Oudh).

Beginning:—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सार गीता लिष्येत ॥ अरजुन उवाच अरजुन श्री कृष्ण भगवान जी को प्रश्न करै है कि हे परमेश्वर जो ओंकार का महातम और रूप और अस्थान तिस के सुनबे की मेरे वांछा है तुम कृपा करके निरूपण करहु । श्री भगवानु वाच ॥ हे अरजुन तुमने बहुत भला प्रश्न किया है अब ओंकार का महातम विसतार कर कहता हूं ॥ तूं श्रवण करो ॥ यही गीता सार है ॥ ब्रह्मा विश्नु महेश्वर ये इसके रष्या करने हारा हैं और अगन वायु सूरज यह इसके देवता है ॥ गायत्री जगत्री त्रिष्टप यहु तीनों इसके छंद हैं और अगन अस्थान हैं तहां चारो वेद है ॥ रिग्वेद ॥ युजुर्वेद॥ अथर्वण वेद ॥ चारों वेदों कारन है ॥ इनका उतपत कहु हों रिग्वेद का नील वरण है युजुर वेद का पीत वरण है ॥ सामवेद का स्वेत वरण है अथर्वण का रक्त वरण है ऊंकार नाम अक्षर सक है अह मकार के लोक है ओंकार अक्षर परम रूप है और इस हृदे कमल विषे वसे हैं ॥

End:—सर्व शास्त्र मयो गीता सर्व धर्म मयो दयः सर्व तीर्थ मयो गंगा सर्व देव मयो हरिः ॥ जो कोई इसका एक श्लोक एक चरण आधा पाठ करै है अह श्री नारायण जी का ध्यान करै सो संसार के अंध कूप ते मुक्ति होई । श्री कृष्ण भगवान जी के अमृत वचन हैं ॥ वचनों ते भला सार गीता की ती है रे मत प्रीति सफल को तुम क्यों नहीं रवाते ॥ पापों के मस्थान को वरेचन कर नहारी है ॥ वार वार भली भांति सदा सर्वदा गीता का पाठ कीजै ॥ अथवा श्रवण कीजै ॥ और शास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजै कमल नाभ जो है श्री कृष्ण श्री कृष्ण नियान श्री नारायण जो तिनको मुष कमल ते निकसी है अह श्री मुष वाक्य है ॥ गंगा गीता गायत्री गुरु गोविंद इहु पांचो राग करै ॥ सो पुनर्जन्म को न पावै जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करन न जाये अह

पाठ मत्र करै सो भी विश्नु के विद्यमान जाई प्रापति होई है इसके आगे क्या कहों इति श्री भगवतीत्म स्पनिषत्सु ब्रह्म विद्या या याेग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे सार गीता संपूर्णम समाप्तम शुभम् लिषतं देवी राम शर्मा माव शुक्ल पंचमी संवत १८२७ वि० ॥

Subject: —अर्जुन का श्री कृष्ण भगवान से ओंकार का महात्म्य, रूप ओर स्थान पूछना ओर श्री कृष्ण भगवान का तीनो प्रश्नों के उत्तर अर्जुन को समझाना ॥

No. 661 Sārgaṅgadhara Saṃhitā. Leaves—137. Deposited with Rāmagopāla Murāī, Vaidya, of Alikātāla, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—

> होय कोल को करष जु अक्ष । जानि धान मानिक पर लक्ष ॥
> किंचित यानक कुरलर लेये । निदुक षोड्शा कापिच देवे ॥
> कवल अह सुंदर वर आना । हंस चरन सो बरन बषाना ॥
> ओर बिडालय इहि को माने । इतने नाम अषेला जाने ॥ १० ॥
> होय कर्ष को पैसा लेप । नाऊ सुक अष्टका येक ॥
> होय सुक को टका सो जानो । बेल षोड्सी मूढ़ वषानो ॥ ११ ॥
> पट प्रकुंच चातुर्थ क ले उ । अष्ठ टका को नाउ कहेऊ ॥
> टका दोय को प्रसरित नाउ । दुजो पसरित जानो लाउ ॥ १२ ॥
> चार टका को नाम कहि मान । जलय कुंडव सुताको जान ।
> अष्ट मान तासो कहत अर्ध सराव अमान ॥ १३ ॥
> कहत सुरायक अरु मानिका अहय कहिये येष ।
> आठ टका को नाउ कहि बुध जन जानि बिशेष ॥ १४ ॥

End:—

पृष्ठ २७३ व २७४

> अको पय त्रिफला रस ल्याय । सुरमा को ताता करवाय ॥
> सात-सात बेरहि बुझाय, आजे नेत्र रोग सब जाय ॥
> नेत्रन दोष मिटो जब होय, तब जल मैं भिजवे पुनिसोय ॥
> फेरि नेत्रन को डारे धोय । अब जो दोष कछु पुनि होय ॥
> धोके माव चाकर चार । बेहर लगै न होय विकार ॥
>
> =०=
>
> त्रफला मधु घृत अमरानीर । सोठ मूल गोधी दहि छीर ॥
> शलाका रामा को तपवाय । इन सब में लोजै तपवाय ॥

यहै सलाका आंजि जाय। नेत्र रोग सब नीको होय॥

× × × × ×

× × × × ×

Subject:—(१) पृ० १ से ४ तक—स्तुत।

(२) पृ० ५ से १७ तक—अध्याय ३। कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या तथा रोगी परीक्षा अथवा रोग परीक्षा। नाड़ी परीक्षा।

(३) पृ० १७ से पृ० २० तक—अध्याय चौथा, दीपन-पाचन।

(४) पृ० २१ से २९ तक—पांचवां अध्याय। शरीर भेद, सप्त धातु, सप्त त्वचा, कलादि कथन।

(५) पृ० ३० से पृ० ३४ तक—छठवां अध्याय। आहार पाक कथन।

(६) पृ० ३५ से पृ० ४४ तक—सातवां अध्याय। पित्त से चौबीस रोग। दांतों की जड़ के तेरह रोगों का वर्णन। कर्णमूल के पांच रोग। चौरानवे नेत्र रोग। संध्य के नौ रोग, सुषेज-पुत्तरी के तेरह रोग, कलि तिल के पचास रोग। नासनात रोग। आठ दुष्ट रोग। स्त्री नाम रोग। योनि रोग बीस, गर्भ के आठ रोग, बालक के बारह रोग। (रोग विष उपविषं वर्णन)

प्रथम खंड

(७) पृ० ४४ से पृ० ५० तक—पुट पाक कल्प अध्याय, ९। सुरस पुटपाक तुंदल अल। तोतुर पाक। दाड़िम पुटपाक, क सो पुट पाक।

(८) पृ० ५० से पृ० ७२ तक—बात ज्वर पर गुडचादि, नवादि, कासम जाता, कट फलादि, पर्पटादि, बीज पुरादि, मुनि आदि, लघु लक्ष्यादि, परवध, गुर चादि, दसमल सन्निपात आभियाद सन्निपात अष्टादश मूल कथन, कटु फलादि, गदाय का जीर्ण ज्वर, वृहती, कुटादि शीत ज्वर, सुस्तादि शीतज्वर गुवादि तृतीय ज्वर, चतु भद्रिका, त्रिफलादि, रक्तापंचक, महारक्तादि काथ, हरीत काथ, वीरतरुपाद, पलादि, दारावदा, नीचा दाघ, ब्रह्म दाव पंचक, वर नाह, समर गुजार, तैल लघु मजिष्टादि, पथ्य त्रिपंड, वासादि, पटोलादि, प्रमथ्या, जूष, पान कल्पना, जलपान विधि, क्षीरपान, खिचड़ी, पवन वायु, विलेपी, अलगुन माह—

(९) पृ० ७२ से पृ० ७४ तक—दसवां अध्याय॥

फाट कल्पना, मधुप फाट, पसतार, लघु मधुक पाठ, मथफाटक, खर्जुरादि माघ, मसुरादि माघ, (जब सत्य मथ)

(१०) पृ० ७४ से पृ० ७६ तक—ग्यारहवां अध्याय॥

हिम कल्पना, अमृतादि हिम, नीलाम्य लाद हिम, धनादि हिम,

(११) पृ० ७६ से पृ० ८० तक—बारहवां अध्याय।

पिप्पली वर्धमान, रसोनकल्क।

(१२) पृ० ८० से पृ० १०१ तक—तेरहवाँ अध्याय।

चुरन कल्क, मधु पिप्पली, उषकादि चूर्ण, त्रिफला चूर्ण, षड्रस चूर्ण, त्रिसुगंध चतुर्जात चुरन, जीवनी, पंचलवन, लघु सुदर्शन चूर्ण, सुंठ्यादि चूर्ण, हरत क्वाद चूर्ण, गंगाधर चूर्ण, कपित्थाष्टका चूर्ण, वृहदादि माष्टक, लवणाद्य चूर्ण, महाधने चूर्ण, नारायण चूर्ण, पंचसम चूर्ण, लघुनारायण लवणमशादि चूर्ण, पाठादि चूर्ण, अजमोदादि चूर्ण, हिंगादि चूर्ण, जवान खांड चूर्ण, तालो साद चूर्ण, शीत बलादि चूर्ण, लवण भास्कर, पंचागरिष्ठ, षड्वर्गधादि, करमद, वर्धमान पीपर,

(१३) पृ० १०२ से पृ० १४० तक—पाग कल्पन, चौदहवाँ अध्याय। गुटिका, बहुसंजोग गुन, गुनाद गुटिका, संजीवन, वोषध, अधारक, मगन पिंडी। मंडर वटिका, चंद्रोक गुटिका, जोगराज गुग्गुल, कैशोराद गुग्गुल, त्रिफला गुगर, गोक्षुरादि गुगर, त्रिफलादि मोदक, कचनार गुग्गुल (पकाधिकार)—गुलाब पाक, सेवती पाक, गोखरू पाक, करेला पाक, शुंठी पाग, जायफर पाग, गुगर पाक, कसरुवा पाक, जीरा पाग, अभिमादि पाक, कामदेव गुटिका, चोब चीनी पाग, पीपर पाग, सुपारी पाक, अद्रक पाक, असुन पाक, दाड़िमा पाक, हरदी पाक, नारियल पाक, कुचला पाक, भिलवा पाक, हरेंदी पाक गोखरू पाक, कुमड़ा पाग, करेला पाक, पिपली पाक।

(१४) पृ० १४१ से १४६ तक—पन्द्रहवाँ अध्याय, अवलेह कल्पना, कंटका अवलेह, च्यवन प्राश अवलेह, कुष्मांड अवलेह, अरत हरितकादि अवलेह, कट जाता अवलेह।

(१५) पृ० १४७ से पृ० १५८ तक—सोलहवाँ अध्याय, घिउ कल्पना, क्षीर षट्पलघृत, चांगेरी घृत, मसुरादि घृत, कामदेव घृत, पान कल्पना, अमृतादि घृत, महा लकघृत, कासी साद तेल, आतो फल घृत, पदघृत, त्रिफलादि घृत, मयूरघृत, त्रिफलादि घृत, पंचन घृत।

(१६) पृ० १५९ से पृ० १६६ तक सत्रहवाँ अध्याय। तैल कल्पना—लक्षादि तैल, नारायण तैल, बाला तेल, प्रसारिणी तैल, माषादि तैल, सतावर तैल, कासीसादि तैल, विडावल तैल (अर्क)। मिरचादि तैल, नीम बीज तैल, मधु आम्रा तैल। कुटजाद तैल, दारुनोल तैल, भृंगराज तैल, इरमेदादि तैल, करनमूल हिंगतैल, बिल्वादि तैल, क्षार तैल, बिंदादि तैल, ब्राह्मी तैल, कुष्टादि तैल, वज तेल, करवीरादि तैल,

(१७) पृ० १६७ से पृ० १७५ तक—अठारहवाँ अध्याय, संधान आसव अरिष्ट कल्पन—संधान, कल्प, वाती, आसव, उसीर आसव, पीपरा सव, लोह आसव कुटजारिष्ट, विडंग अरिष्ट, देवदारु अरिष्ट, खदिरादिरिष्ट, अमृताअरिष्ट अश्वारिष्ट, द्राक्षरिष्ट, रोहितकारिष्ट, । दशमूलारिष्ट,

(१८) पृ० १७६ से पृ० १८६ तक—उन्नीसवां अध्याय, धातु सोधन क्षर कल्पना, धात सोधन मारन विधि, सोना मारन विधि, रूपामारन विधि, ताम्र मारन विधि, जस्ता मारन, सीसा मारन, राग मारन, लोह मारन, उप धातु, (सोनामाखी रूपा माखी, अभ्रक सुरमादि) मारन विधि। सुरमा, मनसिल हरताल, पारासोधन विधि, धात निरजीव करण, हीरामास वैत ऋतु मारन, मणि मारन, सर्व रत्न मारन, शिलाजित सोधन, मंडूर करण,

(१९) पृ० १८७ से पृ० २१५ तक—बीसवां अध्याय। पारा मारन, ज्वरां कुश रस, शीत ज्वरारि रस, सुरंधी गुटिका, लोक नाथ रस, शृंगार पोटलो रस, हेम पोटलो रस, महा ज्वरांकुश रस, लोचकारनो रस, पंच वक्रो रस, उन्मत्ता रस, इच्छाभेदी रस, अभ्रका रस, मुज वत्रो रस, हंस पोटलो रस, त्रियक्र रस, महातालेश्वर रस, कुष्ट कुठारा नाम रस, उदयादित्योरसः। वन्हिरस, विद्याधर रस, शूल गज केसरी, अग्नि कुंडी रस, अजीर्ण कंटकारी रस, मंथान भैरवरस, वातनासन रस, कनक सुंदरी रस, सन्निपात भैरव रस, अहनो कपाट रस, वज्र अहनो कपाट रस, मदन (कामदेव) रस, कंदर्थ सुन्दरी रस, लोक रसायन।

मध्यम खन्ड समात

(२०) पृ० २१५ से पृ० २१९ तक—इक्कीसवां अध्याय, स्नेह कल्पना.

(२१) „ २२० „ „ २२४ „—बाइसवां अध्याय स्वेद विधि कल्कनाम अध्यायः—स्वेद विधि, द्रुवस्वेद।

(२२) „ २२४ „ „ २२८ „—तेइसवां अध्याय—वमन विधि

(२३) „ २२८ „ „ २३२ „—चौबिसवां अध्याय—विरेचन विधि।

(२४) „ २३३ „ „ २३९ „—पचीसवां अध्याय—नास विधि।

(२५) „ २४० „ „ २४२ „—छब्बीसवां अध्याय—धूम्रपान विधि।

(२६) „ २४२ „ „ २५६ „—सत्ताइसवां अध्याय—गंडूष करणं। अश्चोतन, पिठो, कल्क, चर्ण, अवलेह।

(२७) „ २४७ „ „ २५६ तक—अट्ठाइसवां अध्याय, लेपन विधि, विष हरण। लेप, हाथी दांत बार के लेप, कर्णव्रण।

(२८) „ २५७ „ „ २६१ „—उन्तीसवां अध्याय, रुधिर मोक्षन।

(२९) „ २६२ „ „ २७४ „—तीसवां अध्याय, नेत्र प्रसाद कर्म, तर्पन विधि, पुटपाक, अंजन, वत्तोसेचन, लेपनो वर्त्ती, रोपनो रस क्रिया, लेहनो रस क्रिया, मृदुचूर्ण अंजन, नेत्र काम प्रसाद चूर्ण, मूता प्रसाद चूर्ण,

(३०) „ २७५ „ „ „—लुप्त

No. 562. Sārasaṅgraha. Leaves-44. Deposited with Rājā Avadheśasiṁha Raīsa and Tallukedāra of Kālākākara, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गनेस जी सहाये ॥ श्री सरस्वती सहाय ॥ सीसा लाय तामों रागु । उत्तम हो इनपर ई भांग ॥ यह कैसे के जानै पंतु वैला ॥ थाली जैवै पंतु ॥ यपरा लेले इनो वागु इह जानै तष्टो का भागु चैाथे हिसा सोसा परै ॥ तो मोगे का तैारा करै ॥ अब कहिहैा तिन कि मरजादी जरइं हरइं जैसो थादी ॥ कुंदन कैसा पंच वचनि पुनि सोसे गठो जानि ॥ ३० ॥ कहुं तरके चोवन पैस । चारि मामरै चालिस कंस लोह । तान्यु पुना चालोस । श्रोर रंग जान अवतीस तष्टो छयालोस गानै कहो चैसाला सपान को मानो । अढतालोस ज़ुप पर सनो ॥ पारो सतरो मैक ज़ुगार ॥ नीयत तेन मरजाद कहो । रस रतनागर ते करो सही ॥ बापर एक निकुतम हई । एक स्वानि सुनि लोजै सोई ॥ ३२ ॥

End:—मूखो खेर पापरो श्रानि । चुनो जोरो हरद बखानि ॥ पांचो करथ करथ पर श्रानि । कर वो तेल चारि पल श्रानि पोष्द वोठि मेलि जै माहा । पर रतवार उठै जो जहां ॥ जिते वग्न चोनारो तनै । सात योस मे भागे घनै ॥

इति मल्हम मंजिष्टादि

पुर थी पुगी फल चारि । थो पार मामरे क्वालि जानियो । श्रोर वांटि लै षट के पान । पल पल सोरो शाष सुजान ॥ चूनो सोप पैरया ॥ ....

Subject:—(१) रंगों का वर्णन, बुटियों के नाम, शोधन विधि, पारा शोधन विधि, स्वर्ण मक्षिका शोधन विधि, नैनियां सुंमल शोधन विधि, फिटकरी शोधन, सुरमा शोधन, पपरा शोधन, श्रोषधि नाम । मनशोधे धातु से श्रोगुन, धातुश्रों के गुण गमन तथा इंगुरादि गुण मठारह कष्टों की श्रोषधि, शंख द्राव काढ़न विधि—पृ० १—२९ तक ।

(२) महाशंख द्राव, तांबे धोवनो, बंग विधि, सारमारन की विधि, शीशा मारण की विधि, हरताल विधि, कांति रस विधि कनक सुंदरी रस, मुनि वल्लभ रस, कुसुम भवगंम—पृ० २९—४८ तक ।

(३) संखिया हरताल विधि, कनक खपरिया विधि, कुटीरस विधि, चिटी विधि गंधक, हेम रस विधि रूप राज विधि, इंगुर मारन विधि, नागेश्वर रस विधि—पृ० ४८—६५ तक ।

(४) वागेश्वर रस विधि, महिमंडल रस विधि, क्षोष्द वर्द्धमान रस कंचन रस विधि, संपुट, मानरस, रघुपति कल्यान कामेश्वर गुटका, मदन पाग गुटका, कुष्ट केहरी, बसुधा निधि । शुद्ध घनो विधि मंजिष्टादि मरहम आदि वर्णन—पृ० ६५—८७ तक ।

No. 563. Śatasamvatsara-Phala. Leaves—30. Dated in Samvat 1769 or A.D. 1712. Date of manuscript—Samvat 1769 or A.D. 1712. Deposited with Umāśaṅkara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—सम्वत् १७६९ विक्रम नाम सम्वत्सरे चन्द्र स्वामी मेह घना। समौमळौ घृत तेल सुऊगा। लोक सुषी। समौ भलौ। चैत्र वैशाष मुहंगा जेष्ठ भूमि कंप अजमेरि राजय लक्ष्मी। उपद्रव। वलरी माटी उपरि हो इसी लोक छोजसी म्लेछउजेठ देसही दुराज गरज सो॥ असाढ़ दुकाल श्रावण सुकाल भादव मेघ घणा ऊअर मास सर्व भला इति ६९ फलं॥ संवत् १७७० वर्षे वृष नाम संवत्सरे मंगल स्वामी दुर्भिक्ष होसी। राजपीड़ा। धन धान्य मार वारि दुर-भक्ष। रौरव वरतो लोक असत होसी। पूर्व सुकाल। मध्य देसि भलो वरि मैं वाहिरै दुकाल। पाप मै पाप लागसी चैत्र वैसाष मंदु। ज्येष्ठ असाढ़ श्रावणि फरको भादवे वर्षा मंद। आसोज लोक २ छतसी भुषा धान मणये रोजी २१ लक्ष्मी प्रजा कष्ट। कार्ती मागशिर भलो पोस माह फागुन फरका इति ७० फलं संवत् १७७१ वर्षे चित्र भानु नाम संवत्सरे बुधस्वामी। लोक सुषी मेघ घणा सजल होसी। अनसत्ता। जे धन लेतो वहिने टोटो। मास ४ उ।रीति सुकाल। चैत्र वैशाष मंदो।

End:—सम्वत् १८८० वर्षे राक्षस नाम संवत्सरे। चन्द्र स्वामी। सर्व जनसी। अनघणा नदी फूसी मालवै दुकाल। चैत्रादि मास ज्योत्री। असाढ़ श्रावण फरका। भादयादि मास ४ मध्यम मार्ग शिर रस कस सुऊगा पोस माह महाजन पीड़ा। फागुन छूटसी राजविरोध घणा। माह देस भजसी। चित्र कोट राजपल्ट सो रुंडमुंड मेदिनी मृतुप्या मनुष्य लागसी। चैत्र वैशाष मंदा ज्येष्ठ विषम। असाढ़ मेघ अल्प। श्रावणी पुरकि। भादवारै पाछिले पाषि किंचित् वर्षा सर्वत्र होसी। मार्ग सिर पोस मंद। माह॥ फागुन महगाई। इति १०० फलं॥ श्रीः॥

इति सौ संवत्सरो फलं सम्पूर्ण समाप्तं श्रो रस्तु॥ शुभं भवतु॥ श्रीः॥ संवत् १९२९ मिती वैशाष सुदी ३॥

No. 564. Śavara Mantra Śāstra. Leaves—43. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः। साबरमंत्रः॥ गुरु सत्य बिस्मिल्लाह। काफ ज्यों मो पावनकार पादि गुरु इष्टि करतार वेद न हरता वहो एको आइ जुग चारि तोनि लोक चारि वेद पंच पांडव छव मारग सात समुद्र अठ वसु नवग्रह दश रावन ग्यारह रुद्र बारह रासि तेरह मोल चोदह भुवन पंद्रह तिथि चारि षाति चारि वर्धन पांचभूत चोरासी लाख जीव अनो नि

अष्ट कुली नागा तेंतीस कोटि देवता अकासु पतालु मृति मंडल राति दिन पहर घरी दंडु पलु जाम महा रखु साधा घरते हो जो कछु फलाने के पिंड देखन होइ दैत्यदानव भूत प्रेत राखा सुमुखो सुजानु की तारा बादिता देवा बाडोठो मुठी चपिनो भुपिनो मिलनो बिडनो फेरो दिठोरो गाहिनो नाई का पोलाई धीगो भूल वायु सूलनह सूरन हरवा उहरवा दद्रु गरहु कर कर्त्तापत्ती मूत्र कृच्छ्र अठारह प्रमेह गेला फोटो बहल्या बहो बार्या लासो कुठो छुओ कुंवोरो मिरिगो वमन बाद हरिया सुनवा धुरपैल गंडल कवाड चोट फेट फेदि ताकि ताला पालगा पाथ पोतो लांघ्या उलंघ्य बाट घाटक बाहर निसार पेसार साधु सकार कयनहु प्रकार दोहाइ गुदवार चाम नाहि बर्छ मंत्र अर्हा हंसो दोहाई सुलेमान पैगम्बर को तुंतु तुरंभविलाई पढी पोनि पाहिना लरिस बालाथ पैगम्बर को बज्र छाप नवनेघ चौरासी सिद्ध।

End :—मंत्र सांप को। भूलि मिलि कंत घेरा सन्नाउ ब्रह्मे विषभषा महादेव विधि बायर कत्ता विषा समपात फल पेहि के विष लई घलि धेगं बंग मुके तल घावे ओ मैं पाई सान सराई देउ वाघ माठ बैठाइ बारह चन्द्रमा सोरह जीव जागता महादेव के दोहाई गौरा पार्वती लोहा चमारिनि के दोहाई यहं मंत्र पढ़िके जहां काटे तहा गोड़ तरके धूरि संगे बुराके देव। मंत्र धंधना छुटावे क॥ छुरंत बेवनी पसरंत विषा पसरहु चारिहु दिशा॥ २॥

अग्नि बंधन मंत्रः अथ अग्नि ज्वर लंते पर जरे जरे महेस कथा भा ब्रह्मा विषनु महेस तीनो चले केदार तीनि चलते हो। चठो आगि लोहै परै तुषार में से हाथ का बार जरै हनुमान जतो कसेत वन जरै॥१॥ कालो नागिनि किल किलंति पाकति अनुयं कंत चढ़ो तेल मंतर से होउ पानी तीनि नरसि चले हराई हनुमंत था मैं स तेल कराही प तेल था प्रमानि सोता सती की लाप दोहाई मंत्र ठोहुस बनाइ कपार पर छूरै वारन धरै॥ मंत्र लगावै की युक्ति॥ पिसान रूवा लेर ते कर महादेव बनावै तेहि यादि आर्वाह लिपर जाय॥ अथ मारणम्॥ यो कुंता भेरव मम मे मस भादाय पक्ष पतरि पुंविष्टा व लक्ष्मलराय छव संपुट।

Subject:—प्रथम प्रकाश-आदि मंत्र, भात्मकूक मंत्र, प्रेतादि प्रयोग, धनुष बंधन मंत्र, अग्नि स्तंभन, श्रोर तैल स्तंभन आदि मंत्रों का बर्णन।

द्वितीय प्रकाश—ज्वर झाड़ने का प्रयोग, रतौधी निवारण प्रयोग, दांत झाड़ने की विधि।

तृतीया प्रकाश—गोमहिष्यादि दुग्ध वर्धनमंत्र, स्त्री गर्भधारण, गर्भरक्षा बाल रक्षा, श्रोर मक्षिका संजीवनी आदि प्रयोगों श्रोर मंत्रों का वर्णन है।

चतुर्थ प्रकाश—विशोपशमन, कुक्कुर काटने पर मंत्र प्रयोग, बिच्छू मंत्र सर्प प्रयोग, डा.पे, भूत, प्रेत, आदि झाड़ने के मंत्र।

पंचम प्रकाश—मोहिनी प्रयोग, स्त्री वशीकरण, मारण प्रयोग, कटोरा चलाने के मंत्र।

षष्टम प्रकाश—ज्वर, अजीर्ण, शिर पीड़ा, कर्ण व्यथा, शिषा बंधन, मारण, वंशोत्पत्ति करण आदि मंत्रों का वर्णन।

No. 565. Siddhānta. Leaves—16. Deposited with Paṇḍita Rāmasvarūpa Śarma, Paṇḍita-kā-puravā, Maujā Bhadhu, Post Office Pariyāvā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning :—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ सिद्धांत लिष्यते ॥

ॐ अत्र जागे श्री गुरु राम नंद अवधूता।

सेलो सिंगी जग अंगोटा पत्र पांवड़ी दंडक छोटा ॥

रोलो रंडा चवर अडानी। दीनो अलष काम सहदानी ॥

कुवजा कड़ा सुमानो माला। भेष की लाज भगवान रखने वाला ॥
साकरी संघ गुदरी तू भी बाजे मोचंग मुरली पंषी अचला टोपी मोर कलंगी ये रावे साधू बहु रंगी ॥ पांच सांकरी गोरष धंदा। साधू सुरति कर राषे बंधा ॥ कड़िया का दंड चाड़बंद चलरा ॥ बटुवा सुई सुई का धागा। चोला पलगा सीवन लागा ॥ घोला काला डोरा ये साधू का चोला। पट्ठ कुहाड़ो फरसो गुपती। देषो परघट नही छिपती ॥

End :— ॥ चूला चेति मंत्र ॥

ॐ सब्द का पात्र अंत्र का चूना। रसोई करै जानकी माई ॥

सात समुद्र जल अठारे भार नास, पत्तों लकड़ी आनी ॥

सिव प्रधान ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवता जिनसो हित सनेह ॥
रिषीजारे बैत पुर नाग्रोड दूरं गनेस जो उजंत आवे जर मरे सो वैकुंठ प्राप्त होय। मंथ पढ़ै चूला चेतावे। सो संत परमपद पावे ॥

॥ इति चूना चेताने का मंत्र ॥

ह्रीं लक्ष्मी माई सत्त की सवाई। चढ़ै भंडार करै सहाई।

रिद्धि सिद्धि अटैला राज रामचन्द्र की दुहाई ॥

अष पूरना महादेव की पूरे गनेस। सिद्दी आदि बैत की बानी ॥

आकास देयो पाताल कूवा लक्ष्मी आइ भंडार किया ॥

लक्ष्मी गई सुख्य के पास। हम रहे सबू के पास ॥
सात समुन्द जल ले आवे। अठारभार बनास पातो लकड़ी आनी ॥ ब्रह्मापती अग्नी ॥ पत्तो ले चेतानो ॥ लक्ष्मी गई ब्रह्मा के पास आठ पहर चैांसठि घीर भंडार किया तीन लोक का उदर भरा। पढ़ि मंत्र भंडार चेताने। सो संत परंपद पावे।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० ६ तक—गुरु रामदास की पंच मात्रा ।

(२) पृ० ७ से पृ० १५ तक —आभूषण मंत्र, धी मंत्र, पलकी मंत्र, सनकादिक मंत्र, कुंचो मंत्र ।

(३) पृ० १६ से २४ तक—निरंजन तारक मंत्र । सिन्दुर चढ़ावन मंत्र । वैराग्य बीज मंत्र । अमर बीज मंत्र । ब्रह्म तारक मंत्र, जटा मंत्र ।

(४) पृ० २४ से पृ० ३२ तक—मरघटी मंत्र, कामधेनु मंत्र, चुल्हा चेतने का मंत्र, लक्ष्मी मंत्र । भंडार चेतने का मंत्र ।

No. 566. Śikshāsatārdha. Leaves—7. Dated in Samvat 1925 or A.D. 1868. Deposited with Paṇḍita Rājarāma, Village Narahā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शिक्षा शतार्धं लिख्यते ॥ दोहा ॥ कहिये बात प्रमान की ज्यों की त्यों दरसाय । बन सोचे भाषै वचन फिरि पाछे पछिताय ॥ करत अनीती दुष्ट नर रहत अडर जग माहिं ॥ अवस दुर्दसा होति है यह वाको मति नाहिं ॥ सुधरो कारज आप के करत भंग जो कोई । जितने वो कारज करै वाको एक न होय ॥ जो छुट छुट बातें करै वाको सब सुनि लेई । अशुभ बात को छांड़ि के शुभ मन मैं धरि देइ । आगो पीछो सोचिये वासो चतुर कहाय । बिन सोचे जो कोउ करै निहचै धोखो खाय ॥ निबल सहायक हुजिये जो वह सांचो होय । सबल अेार सब होत है धर्म न देखै कोय ॥ प्रान जाय जाते रहै मिथ्या दीजे त्यागि । जो असत्य बोले मनुष्य लागै कुल को दाग ॥ विपता काहू पै परै तब कीजे उपकार । कबहुं न कबहुं आपनो कारज देय समांरि ॥ कबहुं न मांगै मित्र सो कछू वस्तु यह जान । जो जन मांगत है अवस छीन होत है मान ॥ दुर्जन अप सो आप के खोटी जाय सुनाय । तब हंसि के सुनि लीजिये क्रोध शोघ्र मिटि जाय ॥ नीच आयके जो संमुख पड़ि जाइ । तैा चुप के हु बैठिये बल तुरंत घटि जाय ॥ परनारी को देखिवो चतुरन को नहिं काम । तेज घटत सब अंग को पावत अपजस धाम ॥ नीच अेार आेछेन को कबहुं न कीजै संग । वा संगति से आपनी होत प्रतिष्ठा भंग ॥

End:—मीत प्रोत में कहत कछु राखैा मन के माहिं । जैसे पानी दूध में मिलि के निकसत नाहिं ॥ जो अप को शिक्षा कहै सुनिये कान लगाय । हेत हुं के बात को अपने चित ठहराय ॥ जो तुम जानैा मीत सों प्रोति किये दुख होय । तैा कबहु मति कीजिये वाको संगत कोय ॥ पोछे जन को प्रीति को बरनन करौं बखानि । परत बबूला नीर मे ताको प्रीतिहि जानि ॥ जो अप सो रिपुता करै ताको मन मति देव । अपनो भेद नहि दीजियो वाको मन हरि लेव ॥

जो पायो या जगत में जीव धारि के देह। पालन सब को ईश यह करिके पित सम नेह ॥ जो पायो या जगत में झूठ न बोले कोय। झूठ पाप को मूल है ताको फल दुख होय ॥ प्रातहि उठि के ईश को धरो चित्त में ध्यान। धन कीरति घर जस बढ़े हिय सो उपजै ज्ञान ॥ सकल सृष्टि में धाय के करै कोऊ उपकार। वाके मन प्रभु या बसै होय जाम उद्धार ॥ मिथ्या को सांचो किये मिथ्या तेहि पछितांहि। जैसे घाव पुरे हुए तासु पोज ना जाय ॥ जैसो हो वैसो कहो मत कहो कछु बढ़ाय। जाते जन सत पाय के ग्रन्त कहि नाहि बुलाय। प्रभु में चित लगाय के करै पुन्य घर दान। यही दान फल दान है जग में हो जस मान ॥ काहू सो लड़िबौ नहीं चाहिन राखै लाज ॥ बनै आप सो तो कछु करि दीजे पर काज ॥ परसु काज को जो करै यही वाक्य दृढ़ मान। दिन दिन प्रति संपति बढ़े हो सहाय भगवान। मित्र जानि के मित्र सों कहै मित्र कछु आप भली बुरी जो हो कछु राखै वाह छिपाय ॥ काहू सो वैर न करौ राखौ सब सों प्रीति। उत्तम जन जो जगत में उनको यह है रीति ॥ पंडित पद पाके करै जो अधरम की बात। ताको उपमा यो लखौ दीप आंधरे हाथ ॥ इति शिक्षा सताधं समाप्त शुभ मस्तु मिती माघ बदी १३ संवत् १९२५ ॥ श्री शिवायनमः ॥

Subject :—५० शिक्षापद दोहे।

No. 567. Śodhaka-Paṭala. Leaves—36. Deposited with Bābū Tribenīprasāda, Sub-Court Inspector, Devariyā, Gorakhapura.

Beginning:—अथ सोधक पटलभाषा बिधि शुभ उपार्जन अतः लक्षण जो हाड़ निकलवाना होय अथवा पानी निकलवाना होय अथवा देवता भूत जो चीज जमीन से निकलवाना होय ताकी विधि ॥ मंजू का बाबा केरा के काठ चोंती कोड़ी सादी कौड़ी दश गंडा ॥

॥ विधि ॥ कोल के पांच ईंटा पांच पोर के पांच खूंटा बबेरा के पांच पत्ता पीपर के सेमर के बर पीपरि गभारी पाकड़ी पांच खूंटा करके सेन्दुर गुग्गु लोहा हरदी तीन वस्तु जनेऊ अरूआ नरियर कपूर ॥

End :—प्रथम ॥ १ ॥ गर्भ के महीना जानने कोरी प्रश्न लग्ने से शुक्र जितनी राशि पर है उतना महीना गर्भ के स्थित जानो। भोर ग्यारहवें दसवें भाव में है तो पंचम भाव से रखना ॥ १ ॥ गर्भ का कुशल जानना। यदि पंचम भाव का स्वामी तथा शुभ ग्रह पंचम भाव को न देखता है अथवा ना युक्त है और पाप ग्रह देखता है वा युक्त है तो गर्भ का पतन कहना अन्यथा नहीं ॥ २ ॥

प्रश्नकर्ता को चाहिये कि प्रथम मकान गिन वावे फिर ४ उसमें जोड़ लेना ताके पंच गुना कर लेना फिर २५ बढ़ाकर लेना ताके ५ का भाग देना जो लब्धो पावे उसमें एक युक्त करना उतना ही प्रमाण जानना ॥

Subject:—पृ० १ से ६ तक—ज्योतिष ग्रंथ ग्रहण से फलित तथा तंत्र का ज्ञान हाड़ और द्रव्य इत्यादि भूगर्भ का हाल जानना। ६—११ तक—जन साधन दूत परीक्षा, मकान परीक्षा, मकान शकुन परीक्षा, भय का ज्ञान, अग्नि भय ज्ञान, भय की शांति के उपाय, यंत्र चालीसा, बहु यंत्र। पृ० ११—१४ तक—द्रव्य निकलवाने की विधि बादशाही अथवा अलिदानी द्रव्य की शांति का उपाय, यंत्र बीसा, यंत्र तीसा, यंत्र चालीसा, यंत्र पचासा, यंत्र ७० । २० । ९० । १०० । ११० यंत्र २९ । ४२ । ३८ । ३६ । ४६ । ३४ । ७२ । ५२ । (इन यंत्रों से अनेक प्रकार के भय की शांति होती है। यंत्र पटलका समूह १३,२०० यंत्र कपूर के राम नाम के अंका प्रश्न करने की विधि अथन आठ प्रकार के मंत्रों का समूह। दोष शांति के मंत्र नक्षत्र परीक्षा तिथि परीक्षा दिन परीक्षा, तथा शुभा शुभ फल देखना पाप ग्रह चक्र, पाप ग्रह से फल निकालने की विधि।

अंक जानने की विधि अनेक प्रकार की बीमारियों की शांति के यंत्र, यंत्र चक्र, गर्भ का महीना जानने की विधि—

No. 568. Subhākhita-Dohā. Leaves—28. Dated in Samvat 1917 or A.D. 1860. Deposited with Lālā Prabhūdayāla of Ālamanagara, Post Office Lucknow (Oudh).

Beginning:—अथ सुभाषित दोहा लिख्यते ॥ अलप थकी फल दे घना उत्तम पुरुष सुभाय। दूध भरे तृण को चरे ज्यों गोकुल को गाय ॥ जेता का तेता करे मध्यम नर सनमान। घटे बढ़ नहि रंचहू धरा कोयरे धान ॥ दीजे जेता ना मिले अजन पुरुष को वान। जैसे फूटे घट धर्‍यो मिले अल्प पयपान ॥ भला किये करि है बुरा दुरजन सहज सुभाय। पय पाये विष देत है फणी महा दुखदाय ॥ सहै निरादर दुर वचन दन्डमार अपमान। चोर चुगुल पर दार रत छीन वार अज्ञान ॥ अमर हरि सेवा मानुष की कहावात ॥ जो नर शील संतोष गुन करै न पर को घात ॥ अगनि चोर भूपति बिपति हरत रहे धनवान। निरधन नींद न शंकले माने काको हान ॥ एक चरण जो नित पढ़े तो काढ़े अज्ञान ॥ पनिहारी को नेज ज्यों सहज कटे पाषान ॥ पतिव्रता सत पुरुष की यही रीति नहि आव। भूष सहै दारिद सहै करै न हीन उपाव ॥

End:—विद्या दिये कुशिष्य को करे सुगुरु अपकार। लाप कहायो मामला पोसे ते अधिकार ॥ ना जाने कुल शील के ना कीजे विश्वास। ताव

मात जाते दुखी ताहि न रखिये पास ॥ मक्षिका जोगी भूमि पति बानर चहि मांजार । इनते राषे मित्रता परै प्राण उर भार ॥ पट पनहो बहु क्षीर जो औषधि बीज बहार । ज्यौं लाभै त्यौं लीजिये कीजे दुष परिहार ॥ नृपति निपुन क्यों न प्रजा की हान ॥ धन कमाय अन्याय का नृप दश थिरता पाय । रहै कदा षोड्स बरस तो समूल नस जाय ॥ गाड़ी जो तरु उदधि बन कद कूप गिरराज । दुर विष मैं ना जीवका जो वो करै इलाज ॥ जाते कुल शोभा लहै सो सपूत वर एक । भार वहै के टूं चरै गरधव भए अनेक ॥ दूध रहित घंटा सहित गाय मोल क्या पाय । त्यौं मूरष बाले पाकर नाहि सुघर हो जाय ॥ कोकिल प्यारी बैन ते पति अनुगामी नार । नर घर विद्या जुत सुघर तप वर क्षमा विचार ॥ दुर बसत नर हुत गुण भूपति देत मिलाय । हाक नृप राजि केतकी वास प्रगट हुइ जाय ॥ इति श्री सुभाषित दोहों का संग्रह संपूर्ण ॥ लिषा वैद्यनाथ त्रिपाठी संवत १९०५ वि० फाल्गुण कुन्दाई हुरज ॥

राम राम राम राम राम राम राम ॥

Subject :—शिक्षापद दोहे ॥

No. 569. Sukabahatri. Leaves—87. Dated in Samvat 1931. Deposited with Paṇḍit Rāmanārāyanadattaji Śastri, Village Jñānapuratera, Post Office Lakhimapura, District Kherī (Oudh).

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शुक बहत्तरी (शुक प्रभावती संवाद) लिप्यते ॥ प्रणम्य शारदां देवी दिव्य ज्ञान समन्विता ॥ मन चित्त विनोदार्थं क्रियते शुक बहत्तरीम ॥ १ ॥ एक पृथ्वी के विषै चन्द्र कला नाम नगर है । तहां राजा विक्रमसेन राज करता था तहां हरदत्त नाम सेठी बसता ताको सुर सुंदरी स्त्री ताको पुत्र मदन ताको रतनसेन की बेटी प्रभावती से ब्याह किया सो रूप लावण्य युक्ता से ब्याह किया मदनसेन आसक्त हुआ दमभर जुदा न होता पिता मन में चिंता करता पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहता है इससे क्षय रोग होगा यह समझकर चिंता करने लग्यो इस हेतु में जो बात प्रगट भई सो कहते हैं ॥ चित्त दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण विक्रम नाम का था सो वह गंधर्व पर्वत को गयो उस पर्वत पर एक सिद्ध महातपस्वी तप करते देखा जाके दंडवत कियो तब सिद्धि ने बहुत आगत स्वागत किया तब ब्राह्मण ने कहा एक वस्तु जो अपूर्व हो सो दीजिये किस वास्ते कि जो पृथ्वी अटन रहते है । कथा वार्तो बिन चित लगता नहीं और जो देसे रिषोश्वर के पास से भी नहीं पाऊं

तो कहां से पाऊंगा ओ रिषि को सेवा करै तो विहतर है सो निरफल नहीं । ॥ श्लोक ॥ अमोघा वासरे विद्युत् अमोघं निशि गर्जितं। अमोघा च सतां वाणी अमोघं सिद्ध दर्शनम् । आगे और ऐसा ब्राह्मन ने कहा तब सिद्धि ने ध्यान किया उस समय एक सुवा एक सारो सिद्धि के दृष्टि आई उन दोनो को जन्मान्तर की बातें जानबे में आई कि ये दोनों गंधर्व हैं कोई रिषीश्वर के साप से सुवा योनि पाई है और रिषीश्वर अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषै मनुष्य भाषा किया प्रभावती आगे रात्रि को उपदेश करै प्राय यह सुवा गंध मादन पर्वत पर जायगा तब शरीर का छोड़ेगा फिर गंधर्व हो जावेगा अब शुक अपना शरीर बेचै मुहर ५०० को तो या ब्राह्मन का दिवावै तो पाप ते छूटै ऐसे सुवा सुवती को देव-रिषि ने कहा कि अरे शुक तू इस ब्राह्मण के संग जा और मुहरों का दान कर तेरा भला होगा इतना शुक सुन हाथ पर जा बैठा तब रिषि ने उस ब्राह्मन से कहा अय ब्राह्मण तू इसे ले जा जो कोई तुझे ५०० मुहर दे उसे दीजो मेरी आज्ञा से तेरा भला होगा ऐसा कहा तो ब्राह्मण उस सुवा को ले आज्ञा मांग चला ॥

End :—प्रभावती अपने पति सो बोली कि हे स्वामी तुम्हारे गये पीछे एक घड़ी मोको विरह उपज्यो तब एक दूती आई और मोको प्रबोधो तब मेरे भी मन में यह आई कि और पुरुष से भोग कीजे यह विचार कर सिंगार कर मैं चलीता समय सारी ने रोका बुरा लगा सो मैंने मार दई ता पीछे सुक सों पूछी शुक ने ७२ दिन कथा कह दिन बिताये और धर्म राख लिया मैं शुक के प्रताप सों रही ये कहीं तब मदन सेन सुक से कही कि सुक तुम सों चतुर कोई नहीं और तुम्हारे ही प्रताप सों मोको पत्नी प्राप्त भई इस तरह कह तब वे शुक बोला मदन सेन तुम अपने पिता पास जाकर मोको आज्ञा मांगो सो मै घर जाऊं क्योंकि मैं गंधर्व हूं रिषीश्वर के श्राप से शुक भया हूं तब मदनसेन पिंजरा ले सेठ के पास गया और पिंजरा दे के सब हाल कहा तब सेठ ने सुक से कहा कि उदास क्यों हो शुक ने कहा कि तुम्हारे पास रह कर कोई उदास न होगा अब मुझे जाता हो आज्ञा पा विदा भया पर्वत को गया देह छोड़ गंधर्व भया और स्त्री पुरुष दोनों स्वर्ग में भोग करने लगे यहां मदनसेन और प्रभावती भोग करने लगे। इति श्री शुक बहत्तरी अर्थात शुक प्रभावती संवाद संपूर्ण समाप्तः लिषतं ग्यालो-राम गिरि संवत् १९३१ भादौ मासे कृष्ण पक्षे दशम्याम (श्री राम राम राम)

Subject :—(शुक और प्रभावती संवाद) चन्द्रकला नगरी का राजा विक्रमसेन था। वहां हरदत्त नाम का एक सेठ रहता था। जिसके कि सुरसुन्दरी नाम की स्त्री और मदनसेन एक पुत्र था। मदनसेन को रत्नसेन की बेटी प्रभावती व्याही थी। जब कि मदनसेन देशाटन के लिये गया था प्रभावती पर

पुरुष से सम्भोग करने के लिये रवाना हुई परन्तु सारो ने उसे मना किया। उसको प्रभावती ने मार दिया फिर शुक से आज्ञा मांगी शुक नहीं न कर अपनी बुद्धिमानी से उसे प्रति दिन एक एक किस्सा सुना कर सान्त्वना देता रहा इस प्रकार ७२ दिन व्यतीत हो गए। ७२ वें दिन प्रभावती का पति आ गया। प्रभावती ने शुक की बड़ाई करते हुए सब वृतान्त सुनाया। मदनसेन भी बहुत प्रसन्न हुआ। शुक ने मदनसेन से कहा कि आप मुझे अपने पिता से आज्ञा दिला दीजिये तो मैं अपने लोक चला जाऊं। मैं गन्धर्व हूं ब्रह्मेश्वर के श्राप से शुक हुआ था और अब समय खतम हो गया है। इस पर मदनसेन ने अपने पिता से सब हाल कह सुनाया और पिता ने शुक को छोड़ दिया। शुक पर्वत में जा देह छोड़ गंधर्व हुआ और स्वर्गलोक में अपनी स्त्री के साथ भोग विलास करने लगा। यहां प्रभावती और मदनसेन भी अपने दिन आनन्द से काटने लगे।

इसमें ७२ कथाएं अलग २ दी हुई हैं।

No. 570. Svargārohiṇi. Leaves—26. Deposited with Munshi Śivadhārī Lāla, Manjā Mamarejapura, Post Office Beniganja, District Hardoi.

Beginning:—श्री गणेशायनमः। श्री गुरु चरण कमलेभ्योनमः अथ स्वर्गारोहिणि लिख्यते। चौ० ॥ पारवती सुत सुमिरि तोहो। श्याम बुद्धिवर दीजै मोहीं। सुमिरि सारदहि सुमति विचारो। करहु कृपा जन तुव बलिहारो। निशदिन मैं तुव चरण मनावें। प्रभा कर पन्डव गुन गावैं। अठारह परे भारत के भयऊ। लायर अंत कथा यह ठयऊ। इसकर नाम सुनहु चित लाई। स्वर्गारोहिणि अति प्रिय भाई। सुनिये अद्भुत कथा प्रिय बानी। जिसमें मुक्ति मुक्ति की खानी। गुरु गोविंद के लागौं पाया। चितै सुदृष्टि करहु कछु दाया। द्वापर अंत आइ नियराना। तब अस पांडव कीन्ह पयाना सोइ कथा मैं बरनि सुनावैं। अब तो कछु गोमिंद जस गावैं। राम नाम कलि नर्क नसावन सब के ऊपर है जग तारन। संख चक्र धर सारंगपानी। सुमिरो देव रमापति जानि।

End:—जब लगि राज्य जोग्य होइ अभमै हो पुत्र तुम्हार।
तब लगि राज लेहु तुम मानहु कहा हमार ॥ १७ चौपाई ॥
सुनि के परीक्षित रोवन लागे। परे भ्रम्म मम करम अभागे ॥
मैं नहिं जानौं राज को भेवा। बिन महाहु अधबिच सेवा ॥
सुनु राजा मैं कछु नहिं जानौं ॥ कहं लगि अपनौ कर्म बखानौं ॥
तुम मोरे तात निरंजन देवा। ना जानौं जग और को भेवा ॥
कह मोहि छांड़ि के चले भुवारा। कहा पाप तुम करो चंडारा ॥

दो०—कहै परीक्षित तात यह सुनु सात दोष के राज। राज पाट धन धरती मोरे कौने काज। १८॥ चौ०—राजा कहै भीम सुनु भाई तुम ले पाट देउ बैठाई। भीम कुंवार को पाट प्रधाना ले कान्या सिंगासन थाना।

Subje t:—१—अयोध्या मथुरा काशी आदि की महिमा—गंगा महात्म्य। वैशंपायन का जनमेजय के यहाँ आगमन।

२—वैशम्पायन का पांडवों की कथा जनमेजय को सुनाना—महाभारत का युद्ध, युधिष्ठिर का राज सिंहासन पर बैठना।

३—युधिष्ठिर का भाइयों के मारे जाने पर पश्चात्ताप। कृष्ण के पास पांचों भाइयों का आगमन।

४—कृष्ण का पाण्डवों को उपदेश—कलि कथा।

५—केदार यात्रा के लिये कृष्ण का पाडवों को उपदेश, परीक्षित को राज्य कार्य सौंपकर पाँचों भाइयों की यात्रा।

No. 571. Svarodaya. Leaves—6. Dated in Samvat 1917 or A. D. 1860. Deposited with Thākura Brajabhūshaṇa Siṁha of Jhukavārā, Post Office Pariyavā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री रामायनमः॥ नाभी के ठिकाने कंद है तहां ते सकल नाड़ी उपजति है यहां रात्र के मध्ये २१,६०० तिनको नाडी॥ ७२,००० ॥ तिन विषे दश उर्ध्वं॥ दश अर्द्ध ॥ दो दो तिरीछे है॥ ऐसी नाड़ी चौविस श्रेष्ट है तिनके श्रेष्ट १०॥ ऊर्ध्व ॥ अर्द्ध ॥ १ ॥ तिन विषे तिनको मक्ष मार्ग की खबरि है। एक इडा नाड़ी वाम, नाड़ी चंद्र की है। दूसर पिंगला नाड़ी सूर्य की है तीसर सरस्वती सुष्मना हय॥ मध्य नाड़ी अग्नि की है॥ क्षण वाम क्षण दक्षिण है॥

End:—पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश॥ १५०॥ १२०॥ ९०॥ ६०॥ ३०॥ यह श्वास की मर्य्यादा है॥ एक स्वर को नाड़ी पंच घटी प्रमाण है॥ एक नाड़ी पंच तत्त्व वहत हैं॥ इति स्वरोदयमतम्॥ लिष्यतं लाला सीताराम माघ सुदी १॥ संवत् १९१७॥ श्री चित्रकूट सीतापुर ग्रामे॥ ....

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २ तक—नाड़ी का वर्णन। चन्द्र कर्म, सूर्य कर्म, पक्ष विचार, वार विचार, संक्रान्ति विचार।

(२) पृ० ३ से पृ० ५ तक—पुनः वार विचार, स्वविचार, युद्ध विचार, पंच तत्त्व भेद।

(३) पृ० ५ से पृ० ६ तक—मैथुन विचार, तत्त्व विचार, प्रश्न विचार।

(४) पृ० ६ से पृ० ९ तक—पुन: तत्त्व विचार, आयु विचार, रोग संबंधी प्रश्नों का विचार। काल-ज्ञान विचार।

(५) पृ० ९ से ११ तक—नाड़ी-प्रवाहनादि क्रिया का वर्णन। अष्ट दल प्रमाण। तत्त्व भेद।

No. 572. Tikārirajya-kā-Itihāsa. Leaves—39. Deposited with Mannūlāla Pustakālaya, Gaya.

Beginning:—श्री भक्तेरामानुजायनम् ॥

॥ दोहा ॥

सुमिर समीर कुमार पद। श्री गुरु पद युग कंज।
परम भागवत नृपति को। कहौं चरित अति मंजु ॥ १ ॥
मिथिला अवधि प्रवासते। प्रकटे निर्मल इन्दु।
कीकट अमल अवास में। वर्ष्यो अमिय रस स्यंद ॥ २ ॥
सिव हर राजधानी बड़ी। तिरहुत देस पुनीत।
मातृ पक्ष में प्रगट भये। जनु ध्रुव नई सुनीत ॥ ३ ॥
माता सुत हरषित भये। राधा मोहन साहि।
जैथर वंशी धन्य मैं। ध्रुव सम नाती जाहि ॥ ४ ॥
दिये दान द्विज पेलि कै। रतन खजाने खोलि।
किये निछावर गुनिन को। भूषन वसन अमोल ॥ ५ ॥

End:—परम पुनीत कार्तिक मास जिसमें श्री वैकुंठ का खुला दरवाजा रहता है श्री सीताराम जी के ध्यान मेरे मन को मग्न करके अपनी माता श्री मन्महारानी इन्द्रजीत कुंवरि साहिब से कहा माता जु मैं श्री सीताराम जी के नित्य पारषद हूं प्रभु आज्ञा ते श्री महाराज हित नारायण सिंह जी बहादुर का परलोक बनाने के लिये पृथ्वी तल में अवतार धारण किया था सिवाय उनके परलोक बनाने के हम अपने माता पिता के और हजूर के परलोक नहीं बना सकें अब मैं श्री सीताराम जी के धाम में जाता हूं।

+ × ×

Subject:—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, राजकुमार रामकृष्ण का जन्म, उनकी जन्मकुंडली तथा नामकरणादि संस्कारों का वर्णन, श्रीकान्तजी से विद्या पढ़ना और गुरु मंत्र लेना तथा तत्त्वज्ञान का श्रीगणेश।

(२) पृ० १० से पृ० २३ तक—कुमार का सीता कुंड को गमन, श्री राघवदासजी परमहंस से भेंट तथा प्रश्नोत्तर। कुमार का युक्तिपूर्वक प्रश्नोत्तर में अपनी योग्यता प्रकाशित करना, गुरु का संक्षेप में ज्ञान प्रदान कर घर को लौटा देना।

(३) पृ० २४ से पृ० ३६ तक—कुमार का टिकारी आना और महारानी की ओर से दीवानी करना, राजा हित नारायणसिंह का उन्हें दत्तक पुत्र मान लेना

और युवराज को प्रार्थना पर उन्हें धर्मोपदेश देना; माली के सदृश राजा के सात धर्म; मन्त्री और राजा के पारस्परिक व्यवहार तथा उक्त पदाधिकारियों के लक्षण।

(४) पृ० ३७ से पृ० ७८ तक—राजनीति सम्बन्धी प्रश्नोत्तर, राजा का मंत्रियों को बुद्धि की परीक्षा लेना, अठारह प्रकार के व्यवहार का वर्णन। पंच वर्ग का चिन्तन, सरकारी खिलअत प्राप्त होना, महाराज का प्रजा और अपने छोटे दामाद को उपदेश देना।

No. 573(*a*). Vaidyaka. Leaves—120. Deposited with Paṇḍita Dīnanātha Miśra of Fatehpura Chaurāsi, Post Office Saphipura, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ सप्त धातु सोधन मारणं माह॥ प्रथम धातु नां संख्या माह॥ स्वर्ण रौप्यं च ताम्रं च रंगं यशद मेव च शीसं लोहं च सप्त धते तवः कथिता बुधैः॥ सोना, रूपा, तांबा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा॥ अथ शोधनं च। एक तोला सोने का कंटक वेधी पत्र पाठ करै येही भांति रुपे का और सवकूं गरम करै पहिले तिल के तेल मा बुझावै बार ३ पुन। गाई के माठा मा बुझावे बार तीन। कुरथी के काढ़ा मा बुझावे बार तीन पुनः गोमूत्र मा बुझावे बार तीन तब सातौ धातु सुद्ध होय॥ अथ मारण माहा। पारा टंक १ गंधक शुद्ध टंक २ इन दोनों को कजरी करै पीछे भटो के रस ते घटै घरी व तब सोधा सेना का चूर्ण टंक तीन सूं कजरी मा मिलावे निबुआ के रस मा मिलाइ कै एक घरी घोटै जब गाढ़ा हो जाइ तब एक टिकरी वनाइ कै घामै मा सुषाय डारै तब सराव संपुट में राखि के सेधौ सो मुंदि कै कपरौटी करै गज पुट पांच तरे देह तौ भस्म होइ॥

End:—अथ बाजी करण। कामेश्वर चूर्ण॥ गोषरू केवाच २। ककही के बीज १। शतावरी १। विदारी कंद का चर्ण २। खीरा के बीज २ असगंध २ हंस के जरि का बकला १२ मुसरी गुरिच कै मेदा रक्त चंदन तज पत्रज इलाइची पीपरि आंवरा लवंग नाग केसरि यह सब अधेला भरि सब का चूर्ण करै। वरि पारा के जड़ के काढ़ा की सात भावना देइ। सेमर के काढ़ा की सात भावना देइ फेरि कुस कास सिरसा के जरि के काढ़ा कर सात भावना देइके छुरै डारे फेरि समान चीनी डारि कै अधेला भरि रोज खाय ऊपर से गाय का दूध एक पाव पीवै तौ रति की बड़ी शक्ति होय। मूत्रकृच्छ मूत्रा घात प्रमेह जाय। इय तुल्य बल काम होय॥ गत वीर्य की औषधि॥ चिकनी सुपारी दरिको दस टका भरि गाय का दूध ८० टका भरि गोघृत ४ टका भरि खांड

५० टका भरि गुजराती इलायची गुलसकरी को अरि का वकला वरी पारा के जड़ को वकलो पीपरी जावत्री सूंठि सुगंध वाला मोथा त्रिफला वंश लोचन शतावरी केंवाच के बीज छुहारा तोपुर मगरैला वेर को गुदो जटा मासी सौफ़ असगंध लवंग ये सब टका टका भरि कपूर रसा, सेंदुर वंग नागेश्वर अभ्रक यह सब एक एक पैसा भरि प्रथम सुपारी बारीक कतर कर के मंदाग्नि ते पाक करै जब बारीक खोहा होइ घी मह डारै कढ़ारै उतारि के शक्कर मिलावे फेरि काष्टादि मिलावे तब एक धोहा वासन मा मिलावे प्रातःकाल एक पैसा भरि षाय तो बहुत पुष्टि होय वीर पराक्रम होय ॥

Subject:—वैद्यक वर्णन ॥

No. 573(*b*). Vaidyaka, Leaves—30, Deposited with Paṇḍita Śitalāprasāda Dīkshita, Village Sikari, Post Office Tambaura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अरष इनाइ का गुन ॥ अरष इनाइ तोले १ अरष कठया तोरई का मासे ३ । अरष मिर्च का मासे ४ अरष पीपरि का मासे १ इनको मिलाइ पीवे उन्माद नासै ॥ भ्रमा ज्वर नासै उद्वेग नासै सुक-ज्वर जाइ । प्रमेह नासे, सन्निपात नासै छाती का सूल नासै विषमज्वर नासै । पेट का सूल नासै । भूष होइ अग्नि षुले, सोथा नासै, येते रोग नासै । अरष सौफ़ का गुन ॥ अरष सौफ़ का तोले १ दाष तोला १ ताके बीज निकारि डारै इनको मिलाइ पीवे तब मल को झारि जाइ । पेट का सूल जाइ अरष सौंफ का तोला १ सहत तोला १ पीवे अतिसार जाइ दर्द नासे भूष लागे अग्नि षुले सन्निपात नासै पेसाब षुले दालि चाउर पथ करै ॥ अरष जीरा का अरष जीरा तोला १ मिर्च मासे ६ । अरष मिर्च का मासे ३ । इनको मिलाय पीवे लय ज्वर नासै गर्मी नासै परमेह नासै ऐते रोग नासै पट वयाला मनै ।

End:—अथ तेल महातम । तिल का तेल सेर ४ । आमा हरदी पाव सेर सिंघिया जहर टंक २० सफेदा घुघुची टंक २० छीम को जर पाव भर गुमा को जर पाव से ठठोना मदार को जर पाव सेर सिंभोटा को जर पाव सेर इरानी को जर आध पाव कलेर को जर आध पाव सुरवारी को जड़ पाव सेर वाइ मुरको आध पाव अजमाइन आध पाव इन सब को तेल में औटे जब पाकि तब उतारि लेइ जितनो यह तेल होइ उतनो रेंडी का तेल लेइ तितनो महुआ को तेल लेइ । तीनौ को मिलावे जोपु देइ तब लगावे जो कमर वाइ से रहि गई हो सो नीक होइ जाकी पीठि कुवर निकरि आवा होई सो नीक होई जाको कमर टेढ़ी हो गई हो सो नीक होइ । पाज षाई जाय और पेमन षाई जाय रवनि

वाइ जाइ। नरो टेढो हो गई होइ सो नीक होइ चौरंन वाइ जाइ गठिया वाइ जाइ प्रसुत जाइ सधि सधि की वाई जाइ झोला वाइ जाइ सर्व अंग वाइ जाइ ऐसे रोग जाइ।

Subject :—प्रतिक रोग और उनकी औषधियां, अर्क तथा चटनी के गुण और उनके बनाने की विधि।

No. 574. Vaidyaka-Pharāsīsa. Leaves—20. Dated in Samvat 1840 or A. D. 1783. Deposited with Paṇḍita Śivadulāre, Village Varanāpura, Post Office Visvā, District Sītāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः॥ अथ वैद्यक फरासीस ग्रंथ लिख्यते॥ प्रथम नमस्कार के दोहा॥ प्रथम गवरि गनेस सरस्वति आग्या पाऊं हौं अयोन मति होन बरनि करि सके कहा लौ तुम गुन अपरंपार॥ व्याप रहे त्रिभुवन जहां लौं फरासीस ने विचार के भेद कहे ताके भेद सुनौ। गुरु आग्या बिन कछु न होइ चारि रितु प्रगट करि कहे अब सुनो जिमि के सब भेद॥ अथ रितु विचार बरन॥ शरीर में चार कोठा है। एक कोठा में अग्नि है तहां ते क्षुधा लगत है प्रथम जल को कोठा ताके में रग है सो ऊपर को चलो। दूसरे कोठा में अन्न रहत है। तिसरे में जाय के भस्म होत है। चौथे में मल संचत है। दो नीचे को चले एक दाहिनी तरफ एक बाईं तरफ नीचे की पवन को तरफ आई। बाईं तरफ के बाईं के रग में चार अंकुर फूटे। एक नीचे को एक बाईं तरफ एक दाहिनी तरफ एक ऊपर को चलो दाहिनी तरफ की बाईं रग में ते चारि अंकुर फूटे। एक नीचे को गई एक बाईं तरफ गई एक ऊपर को गई। दो रगें तिन में ते दो दो फूटी दो दाहिनी को दो बाईं को॥

End:—अथ सीत ते गरमी जुर। तरे पेसाब कांसे के सो रंग होय तामें सरबत के सो रंग मिल्यो होय तौ सीति ते गरमी विकार जानिये॥ ताके लछन॥ पेट में दर्द होय नीचे के आधे अंग पसीना आवे॥ छाती में दर्द होय सिर दुखे रुचक होय हाथ पांव जरे पांयो सुपन होय अतीसार होय स्वांस होय कफ डारे पेट में दरद होय छाती भरी रहे। उचक हाड़ फुटन होय॥ अथ मल ते वाय॥ पेसाब को तेल कैसो रंग होय तामें भूरो रंग मिलो होय तौ मल ते वाय विकार जानिये॥ ताके लछन॥ भ्रम होय सिर दुखे खांसी अफरा होय माथे पसीना आवे रुचक होय॥ अथ सित ते मल जुर जो पेसाब कांसे कैसो रंग होय तामें तेल कैसो रंग मिल्यो होय तौ सीत तै मल विकार जानियो॥ ताके लछन॥ मल बंद होय पेट में सूल होय हाथ पांव में जलन होय जुर होय हाड़ फुटन होय तौ

मल ते शुक्र जानिये ॥ अथ शुक्र ते मल जुर ॥ जो पेशाब को रूपे के सो रंग होय तौ मेलने केसो रंग मिलो होय तौ शुक्र ते मल विकार जानिये ॥ ताके लक्षन ॥ अब लोहू वेठे उचक होय मल चढ़ि आय चल हिन होय हाड़ जुर होइ चित्त भ्रम होय ॥ जितना पाया उतना लिषा पुस्तक विच पाया । लेखक रामनाथ शुक्ल संवत् १८४० वि० पुस्तक प्रति उत्तम वैठक जानिये के लिये है ॥

Subject :—रोगों के नाम, उत्पन्न होने के चिन्ह और लक्षण आदि ।

No. 575. Vaidyakasāra-Saṅgraha. Leaves—31. Dated in Samvat 1891 or A.D. 1834. Deposited with Paṇḍita Tārāchanda Munima, C/o Messrs. Murlidhara-Mahādevaprasāda, Sirasāganja, Mainapuri.

Beginning :—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्यक सार संग्रह लिष्यते ॥

दो०—गज मुख मोदक सुमग अति, एक रदन अग वन्द ।
भाल बाल विधु अतुल से, सुमिरौं गिरिजानंद ॥

किया पाठ पागनो ॥ सोंठि टंक १० पीपर टंक १० ओरा टंक २ तज पत्र टंक १५ धना टंक १५ नागर मोथा टंक १५ नागकेसर टंक १० इन्द्र जव टंक १० मोचरस टंक १० लाल मषाना टंक १० सेत मुसरी टंक १० स्याह मुसरी टंक १० दालचिनी मुहरैठी टंक १० लोध टंक १० लाइचो बड़ो टंक ५ लोंग टंक ५ कवावचीनी मस्तंगी टंक ५ वंस लोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५ छुहारे टंक ५ गिरी २० बादाम १० लोध टंक १० लाइचो बड़ो टंक ५ लोंग टंक ५ कवाव चीनी मस्तंगी टंक ५ वंसलोचन टंक ५ सालम मिश्री टंक ५ छुहारे टंक ५ गिरी २० बादाम १० दाने पोस्त टंक २० दाख टंक १० चिरौंजी टंक २० शकर करा टंक २ मिरच टंक ५ गोषरू टंक १० सहत टंक २० गिलोय टंक ५ करेप के बीक टंक ५ कैंच के बीज टंक ५ उसीर सत टंक २० सतावर टंक २० सेमर की मूसरा टंक २० मषाने टंक १५ षांड़ ८ सेर घी गाव का सेर १० ता पीछे पाठा को छोलि कतरा कर बीजा निकारि डारे तब पाग उतारि लेइ तब सिराये पाछे औषधि डारे मिलाय के तब कोरी हांडी मिलाय दे तब कोरी हांड़ी में कपूर लगाइ तामें राखै तब सकारे सांझ षाइ ज्वर सई धाम वात जाय महाबल करे ॥ इति पाठा पाग ॥

End:—औषधि स्वेत दाग ॥ कुटकी पल १ बड़ी पल हड १ तालीस पल १ बावची पल १ बांटि बासी जल में गोलो करे बासो पानी में लगावे स्वेतदाग जाइ ॥

पाने को ॥ कुटको पल ४ हर्रैपल २ वहेरापल २ आयफर २५ हरअ वा पल १ वासो पानी सों पीस गोलो वांधै चना प्रमान नित्य षाइ ॥ वासे पानी मे चना का रोटी पथ्य चलोमी दाग जाइ ॥ लेप पुननेवा को जड़ १ अफोम १ सोंठि १ देवदारु १ वाट गोलो मूल सों लेप करै ॥ ऊपर तमाषू के पात वांधे ॥ इति ॥ वैद्यक सार संग्रह ग्रंथ समाप्तं ॥ मि: पौष शुक्ल पक्ष तिथि सतमयां भौम वासरे संवत् १८९१ समाप्तं ॥

Subject :—पृ० १ से पृ० १० तक—मंगलाचरण, काढ़ा पित्तज्वर, गर्मी का इलाज,फूलों तथा धुंध का अंजन। धातु क्षीण को दवा, क्रिया सार की दवा खांसी को सदर कफ को। कसोसादि घृत, मूत्र स्तंभ, घाव का मरहम। रक्त कुष्ट को औषधि, नेत्र संबंधी रोगों की औषधियां, पुष्टि कर्त्ता गुटका, लवंगादि चूर्ण, समरो चिकित्सा। रक्तातीसार औषधि, चांग्न दुध चूर्ण।

(२) पृ० १० से पृ० ३६—नेत्रों का लेप, सतावार तैल, नारायण तैल, गर्भ को पुष्टि कर्त्ता औषधि। दन्त रसना तथा नेत्र संबंधी चिकित्सा। ज्वर। प्रसूत कार्य उपचार। कुछ रस तथा क्रियाएं व गुटका। ज्वर लक्षण। काल ज्ञान परीक्षाएं (३) पृ० ३७ से पृ० ६२ तक—हांवेश्वर, गर्भांस्थिति। कुष्मांड पाक, मुस्लापार गुण। वज्रक्षार विधि, कुकर काटने को दवा, भगंदर को दवा, प्रदर तथा स्तंभन उपचार, बद को औषधि, जवाषार विधि, धातु पुष्ट को औषधि, कुष्मांड घृत, कचनार गुग्गल, पथ्यादि गुग्गल, शुंठि पाक, नारि के लिये पाक, सौभाग्य सुंठि, धान्य काष्ट, सन्निपात उपचार, दाद आदि को औषधि, धातुओं का शोधना, औषधि कुष्ट.

No. 576. Vaidyaka-Saṅgraha. Leaves—112. Deposited with Paṇḍita Durgādīnaji Dikshita, Village Sikāri, Post Office Tambaura, District Sitāpur (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनम: ॥ अथ कान को दवा बकुरी के फुल को मैदा दुइ रत्तो कान मैं डारै। तौ आराम होइ कान का बहव बंद होइ ॥ बांसे को धुन मैदा कै कै दुइ रत्तो कान मैं डारै तौ कान को चिलकवो मिटै औ बहव बंद होइ। औ जो कान मैं फुरिया होइ तौ कौड़ी को भसम डेढ रत्तो गंगालिया के रस मैं मासा भरे मैं घोरि कै डारै ॥ तौ आराम होइ। ५ सफेदी धुघची पैसा भरि कडू तेल मैं डारि के बनाइ धोटि कै कान मां दुइ रत्तो डारै आई कै कै बहति होइ व चिलकति होइ या पिराति होइ तौ आराम होइ रोज ३, ४ मै। गगन धूरि दुइ रत्तो कान मैं डारै तौ कान बहब मिटै फुरिया होइ तौ अच्छो होइ आठ ३। ४ रोज मां ॥ लील को पत्तो कनेर के फूल सफेद पियाज सफेद इनके अर्क सम कै कै बकरो कै दुध के साथ कान मैं डारै तौ बहव व पीरा मिटै ॥

End:—ईगुर विधि इंगुर ले आवै जितना चहै पीसि कै मैदा करै लोहे की कटोरो मै मैदा धरै कागदी नीबू का रस एक बासन मा निचारै तै। कटोरो मे डारै जेहि मा मैदा बुड़ि रहै कटोरो मैते इतना डारै लोहे की तिपुढिया तेहि पर कटोरी धरै तरे कोइला को आंच देइ जैसे दिया की जोति तैसो अगिन करै जब नीबू को रसु जरि जाइ तौ और डारै इहि भांति चारि पहर आंच देइ। चिचरी की भांति पक होइ एक अंगुसो लोहे को तेहिते मैदा चलावै॥ जौनु उबराइ तौनु तीन बेर मा धरै जो पाकि जाइ तौ ऊपर ते डार कै पकावै उबारु और सब पकै एक करै जो चारि पहर मा न पकै तो भोर हुई फेरि यहि भांति स आंच देइ तिगोडिया के आस पास बंद करै पवन न लागै जब ईगुर तैयार होइ तब केसर मिलावै जावत्री लौंग इलायची जायफर ककरहा केवांच के बिया द ल चिनी ताल मखाने उटंगन के बीज सतावरी कबाच चोनो ये सब सम मैदा करै सहत मे सानै गोली झरबेरिया के बेर की भांति ईगुर तैयार कर दुइ रत्ती गोली प्रति डारै जब ईगुर अगिन पर ते उतारै तनिक मलोदर डारि देइ इलाज सांझ सवेरे खाइ बूढे जवान होई कामी बिना नारि न रहै १० नारि से भोग करै देही मोटा लिंग मोटा होइ। भूष बहुत लगै नामर्द से मर्द होइ।

Subject:—वैद्यक, रोग औषधि नाड़ी परीक्षा आदि।

No. 577. Vandimochana-Kathā. Leaves—14. Deposited with Paṇḍita Nakachhedarāma Misra, Village Dhanaurā, Post Office Gaḍavārābājāra, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्रीराम जी॥ स्वामी बैजनाथ जी सहाई। श्री पोथी बन्दी-मोचन कथा। स्तुति॥

श्री आदि भवानी कल्यानी श्री सुर संघारिनी नामा जी॥
तीनि भुवन जेहि अमता है कन्या सो वरदाई बखानी॥
सो वर दायिनो त्रिभुवन दाता सिद्धि करैं मम काम जी॥
आदि कुमारी सिंह असवारी जाहि भजे श्री रामजी॥
महिमा बन्दी अगम अपारा मुख से बरनो न जाय जी॥

॥ चौपाई॥

गाढ़ परे जहं मोहं का बन्दो। काज कैलाश थे छन्दो॥
निश्चय होउ सहाय जी। नारद मुनि से कहै बखानी॥
बन्दी माई सुमिरौं तोही। सुमिरत गाढ़ छुड़ावहु मोहीं॥
नाम तुम्हार है बन्दी माई। आपन जन पर होहु सहाई॥

तीनि लोक लेत जब नामा। धन लक्ष्मी देहीं सो धामा ॥
तीनि लोक ठनाइ सिर जबही। नाम धारई बन्दी तबही ॥
सुर गन्धर्ब नाग मुनि देवा। सकल करी बन्दी के सेवा ॥
महिमा बन्दी के अगम अपारा। गाढ़ परे तहं करे उबारा ॥
जो बन्दी पर पुर धरे जो ध्याना। गाढ़ के पुरबिल सेके पाना ॥
गायना जो ध्यान शील गुनखानी। बन्दी देवता आदि भवानी ॥

End:—

॥ चैापाई ॥

रक्त बीज असुरन के राजा। तुरितै आये तहं सहित समाजा ॥
चहुं दिशि घेरि सुन बोधा। वर्णं न जाइ देई दल बाधा ॥
लागे होन लहो रन भारी। भोरहि असुर पर चलो बयारी ॥
तब बन्दी त्रिशूल चलाई। लाख सेना मारि गिराई ॥
बूंद एक रुधीर महि परई। कोटिक बीर तहां ऊपजही ॥
इहि विधि लरत बहुत दिन बीता। तीन भुवन तब भये भीता ॥
युद्ध देखि बसुधा अकुलानी। सेना असुर कछु बरनि न जानी ॥

× × × ×
× × × ×

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० ८ तक—मंगलाचरण, बंदी देवी का महत्त्व। कथापाठ का फल। श्रवण का फल। कमलापति राजा का निपुत्री होना। शिवजी का काशी को बन्दी देवी के पूजन का आदेश और राजा का सपत्नी जाकर बन्दी की पूजना और वर पाना।

(२) पृ० ८ से पृ० १२ तक—बन्दी के समाज का वर्णन। बन्दी की महिमा। बन्दी का पूजन विधान। पूजा का फल। बन्दी के विविध रूप और अधिकार।

(३) पृ० १२ से पृ० १६ तक—स्तुति। ब्राह्मण भोजनादि। राजा के दे। पुत्रों का होना। राजा का उत्सव करना। राजा का पुत्र तथा रानी के साथ बन्दी के दर्शनों को आना। जोगनी, भूत, पिशाचादि का गाना बजाना। बन्दी का पूर्व इतिहास। अहिरावण का राम को ले जाकर बलिदान करने का विचार। राम का बन्दी का स्मरण और देवी का पाताल जाना।

(४) पृ० १७ से पृ० १८ तक—बन्दीका राम से अपनी स्तुति सुनकर प्रसन्न होना। बन्दी के प्रताप से हनुमान का आ जाना, युद्ध करना और राम का छूट जाना।

(५) पृ० १९ से पृ० २८ तक—चन्दो को शोभा वर्णन, उनको स्तुति। देवताओं का असुरों से तंग आकर चन्दो की वन्दना करना। देवों के समाज और असुरों का युद्ध। देवो की विजय। देवों की स्तुति।

No. 578. Vedānta-ke-Praśna. Leaves—6. Deposited with Babu Rām Manohar Bichpuriyā, Purāni Basti, Katni-Murwārā, District Jubbulpur (C.P).

Beginning :—श्री परमात्मने नमः॥ अथ वेदांत के प्रश्न लिष्यते॥ श्री वेदांत मधे ऐसे कहा है॥ जो कछु दृष्ट विषे॥ देषीयत है॥ अरु कानन विषे सुनियत हैं॥ अरु जो कछु चित विषे मन विषें॥ ध्यान कीजियत है॥ अरु सब्द मात्र वस्तु मात्र जो है॥ सो सब तीनों काल मिथ्या है॥ अरु स्वप्न है॥ याको साक्षि॥ दृश्य ते श्रूयते वथ तत्सर्पितैः यानरैः तद असत्प्रमे वतत्सर्व यथा स्वप्न मनोरथं॥१॥ वेदान्त विषें औसा ये कहा है को जो कछु मन चित्त विषे॥ सब्द मात्र वस्त मात्र सो सब चिदनंद ब्रह्म है॥ याकि साक्षि॥ अस्ति भाँति ते यानरैः शदाः तत्तत्त्ववस्त्रह्म सचिदानंद मथ्य वं॥२॥ अब या प्रश्न को अर्थ कौन प्रकार सो॥ विचार के लोजे॥ जो पहले तो सब मिथ्या कहा फेर याही सो सचिदानंद ब्रह्म कह्यो॥ अरु असत मिथा कबहु सत न होइ॥ और सत ब्रह्म कबहुं मिथ्या न होई॥ यह तो अगादि विरुद्ध है॥ ताते ए दोउ वचन वेदांत के सत करने॥ अरु विधि मुष करके विख्यान करनो॥

End :—श्री आत्म बोध मधे ऐसे कहा है॥ जो तीनि प्रकार की सृष्टि है॥ एक तो जीव की॥ एक ईश्वर की॥ एक ब्रह्म की॥ तामे औसा कहा है॥ जीव सिष्ट है सो स्वप्न है॥ अरु ईश्वरी सिष्ट है सो चौदा लोक ब्रह्मांड प्रकृति आदि लो॥ अरु जो ब्रह्म को सृष्टि है सो सचिदानंद रूप है॥ ब्रह्म समान है॥ उक्तंच आत्म बोधे॥ त्रिधा सृष्टि॥ पुरा प्रोक्ता जीव ईश्वरी ब्रह्मनिस्तथास्वप्न जीव सिष्टिः स्यात आयति ईश्वरी मताः ब्रह्म मितमता प्रोक्ताः सचिदानंद लक्षंन इति विचित्या वस्तुतः॥ ज्ञात्वा चेब्रि भिवो भवेत॥३२॥

अब या प्रश्न को अर्थ ऐसे प्रकार सों जो लोजे॥ जो जीव सिष्ट तो स्वप्न तें कही॥ अरु ईश्वरी सिष्ट प्रकृति के आदि लोलय करि सब संसार कहा॥ अरु ब्रह्म कि सिष्टि तद गत ब्रह्म समान है॥

लिषिते संपूर्ण परसन॥

Subject :—वेदान्त सम्बन्धी कुछ प्रश्न और उनके उत्तर॥

No. 579. Vidhavā-Vivāha Khaṇḍana. Leaves—10. Deposited with Umāśankara Dube, Research Agent, Hardoi.

Beginning :—श्री गणेशायनमः श्री हरिः ॐ । प्रिय पाठक वृन्द । आज जिस निन्दित कर्म के कोलाहल को सुनकर महात्मा सज्जन सनातन धर्मी भाइयों का चित्त व्याकुल हो जाता है और जिसकी असिद्धता दिखलाने के लिये लेखनी हाथ में लेनी पड़ी है यही विधवा विवाह शब्द और विधवा विवाह विषय खंडन मेरे सामने है और जिससे समस्त हिन्दू सन्तानों का प्रकटित संबन्ध है लेख लिखते हुये लेखनी कांपती है। शरीर में रोमांच हो रहा है। कारण यह है कि विधवा शब्द के साथ विवाह शब्द का योग कैसे और क्यों कर हो सका है यही एक बड़े आश्चर्य की तो बात है जिस पर विधवा-विवाह यह कैसा कलुषित और अनमेल सम्बन्ध है। हा !

जिस कुरीति को प्राचीन ऋषि मुनियों ने पाशविक धर्म कहकर महापाप बतलाया है और जिसे व्यभिचार तथा दुराचार से तुलना की है हाय ! उसी कुरीति को आज कुछ अज्ञानी काम पीड़ित व्यभिचारियों ने भारतवर्ष के पुनरुद्धार का एक मात्र शुद्ध उपाय तथा अव्यर्थ महौषधालय समझ रक्खा है।

End :—मंत्र—उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सम्बभूथ ॥ यजु० ॥

अब देखिये इस उपरोक्त मंत्र के द्वारा कैसा अर्थ का अनर्थ बतलाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके अनुयायी तथा विधवा विवाह के पक्षपाती लोगों ने भ्रमात्मक भावार्थ निकाला है कि हे नारी ! तू इस मरे हुए पति के साथ जा लेट रही है उठ। और जीते हुये मनुष्यों के भीड़ के सन्मुख आ ! और किसी विधवा का हाथ पकड़ने वाले तथा पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पति की पत्नी हो बस अब क्या अर्थ हो गया यजुर्वेद की एक श्रुति के द्वारा खुल्लम खुल्ला कपोल कल्पित अर्थ करके विधवा विवाह का प्रमाण सब के सामने वेदोक्त दिखला दो। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने भी इसी से मिलता जुलता भावार्थ कर दिखाया है परन्तु है यह बात बड़ी हंसी के योग्य देखिये जो शेङ् स्वप्ने धातु के मध्यम पुरुष का एक वचनान्त पद है उसे सप्तम्यान्त पद मानकर मन माना कपोल कल्पित अर्थ लिख मारा है यहां तो व्याकरण शास्त्र की टांग ही तोड़ दी गई है।

Subject :—

पृष्ठ १—'विधवा' शब्द के साथ 'विवाह' शब्द का योग अनुपयुक्त है।
पृष्ठ २—प्राचीन ऋषि मुनियों के मत के प्रतिकूल है।

पृष्ठ ३—विधवा विवाह अप्रामाणिक और अन्याय है।

„ ४—मंत्रों का उलटा अर्थ।

„ ५—विवाह, कामवासना के तृप्त्यर्थ नहीं वरञ्च सम्पूर्ण संस्कारों में एक संस्कार समझकर किया जाता है। और सभी संस्कार एक बार होते हैं इसलिये विवाह संस्कार भी एक ही बार होना चाहिये (यहाँ पद विधवा विवाह असिद्ध होता है)।

पृष्ठ ६—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अर्थ का अनर्थ।

पृष्ठ ७—विधवा विवाह के कारण सामाजिक कुरीतियाँ।

पृष्ठ ८—रोग रोकने से और बढ़ता है, उसके मूल को ही नाश करने के उपाय सच्चे हैं। अतएव कुरीतियों के ही निवारण से वास्तविक मन्तव्य सिद्ध हो सका है। अन्यथा विधवा विवाह आदि मिथ्योपचारों से व्यभिचारों की केवल वृद्धि होगी।

पृष्ठ ९—भारत की प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाओं का ही पालन करने से उन्नति हो सकती है।

पृष्ठ १०—मनु, पाराशर आदि स्मृतियों, शास्त्रों, काव्यों, ऐतिहासिक ग्रन्थों से कहीं भी विधवा विवाह प्रामाणिक नहीं सिद्ध किया गया है।

No. 580. Vṛindāvana-Bhāshya. Leaves—32. Dated in Samvat 1890. Deposited with Ṭhākura Rāmapāla Siṁha, Village Datagava, Post Office Baratāla, District Sitāpur (Oudh).

Beginning :—राग विहार ॥ रास में नृत्य करत नवारी। मुदित मनोहर रंग बढ़ावत संग वृषभान दुलारी। मोर मुकुट मकरंद विराजत नाक बुलाक सुतारो ॥ कर मुरली कर काछनी कटि काछे अलकें घूंघर वारो ॥ राधाजू के शीश चंद्रिका नीलाम्बर अर सारो ॥ ताथोना ताथोना थोन धाना वसत पखावज ताल बाल बीन गति न्यारो ॥ ठनन ठनन नन नूपुर की धुनि भनन भनन भनकारो ॥ थेई थेई थेई नाचत दोऊ मिलि विहंसि विहंसि मुसकारो ॥ चरन दास रस देव दया सों सो पावे दरश मुरारो ॥ (चरन दास कृत)

राग कल्यान ॥ आज संभारत नाहिन गोरो ॥ फूलो फिरत मत्त करणी ज्यों सुरति समुद्र के कोरे। आलस वलित अरुण धूसर मुष प्रगट करत मुष चोरो ॥ पिय पर करुण अमीरस वरषत अधर अरुणता थोरो ॥ बांधत भृंग उरज अंबुज पर अलकनि बुद्धि किशोरी। संगम किरचि किरचि कंचुकि बंद सिथिल भई कटि

थोरी ॥ देत असीस निरखि युवती जिनके प्रीत न थोरी ॥ जै श्री हित चारु हरिवंश विपिनि भूतल पर संतति भविचल जोरी ॥ २ ॥ (हित हरि वंश कृत)

End :—येह जो छद्म को छाये मो रचना वचन अनेक । बनै न श्याम शरीर बिन विधि भयो वपै लग एक ॥ प्रीति डोरि खैचे जबहि यो नहि आयो जाय । तबहि बुद्धि बल आपनो ग्रस छंदबनि रच्यो बनाइ ॥ भादो को कारी निशा जन्म भयो रस जोग चोपिहु सो मन रचे लाल रस गोरस की भोग ॥ सखिन खिलौना करि रच्यो पाग भावतो कंथ भोजन सुविधि करावहि रचै कौतुक रचित अनंत ॥ चौपर सुविध खिलावहि झगड़ावहिं रचि चोज भलक जो भावत लाल के देखो बदन जुमतक मनोज ॥ हग आलस आलस जुम न आलस फूलति चैन । धवल महल आइ के सखि तहां करावत सैन ॥ पनडब्बा सौरभ के भोजन धरि रस पान । चरण पलोटत रूप हित अति को उभावत वा श्याम ॥ श्री हरि वंस प्रसाद बल बरणीं विविध्र पलान वृन्दावन हित बरनि सुख माने जुगल सुहान ॥ (हित हरिवंश)

रेखता ॥ चल देखिये प्यारो पनघट पै भोर छाई ॥ टेक ॥ विछिया जड़ाऊ गहना सुन्दर सुनार लाई । पहुंची जड़ी रतन से दोखत है मन लुभाई । चल देख दुलरी है पास उसके सोभा कही न जाई । सुन्दर जड़ाऊ भारसी देखन को मुख बनाई । चल देखियो है भांति भांति नग भी कहां तक कहु मै गाई । ऐसी सुनारिन मैनन देखी कभी न भाई ॥ चल दे० ॥ विधना ने सोच कर के विधि से उसे बनाई ॥ कहता है अब हजारी राधा है नग की भाई ॥ इति श्री रहस वृन्दावन अर्थात् वृन्दावन भाष्य समाप्तः लिखा रामचरन संवत् १८९० वि० चैत्र शुक्र १ ॥ (हजारी कृत)

Subject :—नागलीला, ब्राह्मण लीला, जोगीलीला मनिहारिन लीला, चुरिहारिन लीला, पिसातिन लीला, मालिन लीला,

No. 581. Vyavahāra-Darśana. Leaves—110. Dated in Samvat 1904 or A. D. 1847. Deposited with Thākura Haribakshasiṁha Raisa, Village Kuthariyā, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री मते रामानुजायनमः ॥ जयतः ॥ श्री रामचन्द्रजी पति कमल भृत्तस्य पत्नी च शुभं ॥

जयति श्री भक्त रासी विमल मतिकर : ॥ श्री पिया दास ईश जयति श्री धूमकेतु मधुर नरवह चाउ ज्ञान तामि सुदारी ॥ जयति श्री याज्ञ वलक्यो

जयति मनुनृप: शुद्ध धर्म प्रचारो ॥ १ ॥ अथमनु याज्ञ बलक्या धनु सारेण व्यवहार पादो निरूप्यते ॥ व्यवहारान्नृप: पश्येद्विद्वद्भिः ब्राह्मणै सह ॥ धर्म शास्त्रानुसारेण क्रोध लोभ विवर्जित ॥ १ ॥

राज्याभिषेक जुक जो है राजा तोका प्रजा पालन धर्म बिना दुष्ट का दंड दीन्हे नहीं हु सकै औार दुष्ट सुष्ठ बिना व्यवहार देषे नहीं जानि परै तेहिते पंडितन का लैके राजा रोज रोज। व्यवहार देषे व्यवहार कान कहावै की दुई बादी वाद करत हैं तानेमा जो झूंठ कहत है ताने का निरने करके जैान साच कहत है तान का स्थापन करव सो व्यवहार धर्म शास्त्र के अनुसारते कोध लोते विवर्जित ह्वै के राजा देषै इहां कोध ते विवर्जित ह्वै के राजा देषै इहां क्रोध ते विवर्जित कहिनते हिते मत्सर मदई आइगे औालो भते विवर्जित कहिन तेहि ते काम मोह यहो आइगे ॥ १ ॥

End :—जो राजा की मरजी के अनुसार तें पंडित लोग अन्यथा निआउ करै तो पंडित राजा दोहुन का दंड चाही औ राजा आपन दंड वरूनाय देइ देया संकल्प कैके ब्राह्मन कादे दै औार जोने वादी का न्याय ज्ञान कैके सुद्ध ह्वै गाहै औ वाके रि न्याउ कै उजर करै है तो वाको फिरि न्याय कै के हराय कै इन दंड लेइ जो असुद्ध देषि परै तो फेरि शुद्ध कै देई औ जो कौनो राजा के नियाउ दूसरे राजा के यहां जाय तै वहो राजा निआउ देषै औ जो राजा अन्याय कै कै जो कछु दंड लेइ तो जेती द्रव्य होइ तेकर तीस गुना द्रव्यन का संकल्प कै ब्राह्मन का देइ औ जैसो दंड लीन्हेसि होइ तेकर बहोरि देइ।

मिती पूस बदी १३ भोमिकास. सं० १९०४ के साल।

Subject :—(१) पृ० १ से पृ० १६ तक—ब्यैाहार दरशन का प्रकरण—वादी के आगे प्रतिवादी से उत्तर लेने का वर्णन।

(२) पृ० १५ से २४ तक—प्रार्थना पर प्रार्थना सुनने का प्रकरण। दुष्ट साक्षी का लक्षण।

(३) पृ० २४ से पृ० ३६ तक—लेष साक्ष भोग्य दिव्य का प्रकरण बहुत दिनों भुकि जो न खुली हो उसका प्रकरण ॥

(४) पृ० ३६ से ६० तक—प्रहण पाती का हाल न खुला हो तो उसका वर्णन। एक स्थान का न्याय दूसरे स्थान पर सुनने का वर्णन। पिता, पुत्र, स्वामी, चाकर इत्यादि के अपराध का वर्णन। रुपा, सोना, गाय,। भैंस (कोई वस्तु)

के कोऊ पावे उसका वर्णन। शंवा पावे उसका वर्णन। ऋण दान का प्रकरण। आमनि का प्रकरण। दास बैठाने का वर्णन।

(५) पृ० ६१ से पृ० ११८ तक—गहन वर्णन बैपाना का प्रकरण साषी का प्रकरण। व्यभचार में साष का प्रकरण, कूट साषी का प्रकरण। लेष का प्रकरण। दिव्य का प्रकरण। हिस्सा का प्रकरण।

(६) पृ० ११९ से पृ० १४० तक—बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन। गुरु चेले के हिस्से का वर्णन। संसृष्टि विभाग का प्रकरण। जो हिस्से के अधिकारी नहीं हैं। उनका वर्णन। स्त्री धन का प्रकरण। तिलक चढ़ाके अन्य स्थान में काम करै उसका कथन। कन्या का धन भाई पावे उसका वर्णन। सीमा विभाग किसान और अहिर का प्रकरण। किसी की चीज कोई बेचे उसका वर्णन। दान दे के लैाटा ले उसका वर्णन।

(७) पृ० १४० से पृ० १८० तक—मोल लेके बहोरै उसका प्रकरण, सेवा चाकरी करके, अंगीकार करके न करै तो उसका प्रकरण। जो संमति करके न करै तो उसका प्रकरण। राजा के सब जातियों के धर्म्मों के पालन का वर्णन। बाजो लगाइ के जुवारी और चिड़िया इत्यादि की लड़ाई का वर्णन। मार पीट तथा दंगा फसाद और साहस का प्रकरण।

(८) पृ० १८० से २१० तक—साहस के तुल्य जो अपराध है उसका प्रकरण। वैद्य का प्रकरण। राजा की आज्ञा बिना कैदी को छोड़ दे उसका वर्णन। अच्छी वस्तु में बुरी वस्तु मिला कर बेचे उसका वर्णन। बाजार भाव का कथन। जङ्गम स्थावर बिकने का विवरण। साझे में उद्यम करै उसका वर्णन। चोरी का प्रकरण। गर्भपात कराने का वर्णन। स्त्री संग्रहण का प्रकरण।

(९) पृ० २१० से पृ० २२० तक—स्त्री पुरुष के विरोध का प्रकरण। राजा किसी को कुछ दे और लिखने वाला और कुछ लिख दे उसका वर्णन। छूत सामग्री खिलाने का वर्णन। सवारी में धक्का लगने का वर्णन। जो कोई राजा के शत्रु की बड़ाई करै उसका वर्णन। राजा की निंदा करै उसका वर्णन। राजा का भंडार काटे उसका वर्णन। ज्योतिषी राजा को बुरे ग्रह बतला कर उसकी शान्ति का यत्न करै उसका वर्णन। न्याय में अन्यथा करे उसका वर्णन।

No. 582 (a). Yantravālī. Leaves—20. Deposited with Paṇḍita Bhagavānadatta of Benipura, Post Office Mādhoganja, District Pratāpagaḍha (Oudh).

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥
जेनहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्र धन पुत्रकं ।
उच्चाटन वधः कुयात् दुष्ट दंडो विधीयते ॥

× × × × ×

१०	२	८
४	७	९
६	११	३

यह यंत्र लायवार कागद ऊपर लिखि कै एक ठौर नदी मा कि तलाव मा वहोरि कै डारि देइ लाय जब पूजे तब पूजे हुति करै जय से पत्र लिखै तब लहि चाउर गोहु घृत न पाइ ॥ २० ॥ मंत्र ताज १००००० ॥

॥ ॐ ह्रीं शिवायनमः ॥ इ यंत्र गोरोचन से लिखै ॥

End:—

ॐ क्लीं श्रीं श्रीं स्वाहा	६६६	४४६	११९७	२२२२	४४८
	१४६३	४०७४	५०६	४४४०	५५५४
	३११२	६६४०	२२३०	५५७१	५५४४
	४४४२	५७४	२७४	४२४	४४४

तीनि पुरुष का नाम लिखि कै पिछवारे नेई के तरे गाड़े तो उच्चाटन होइ ॥ मेहावर से लिखि के दुश्मन के पछवारे गाड़ि देइ तौ काम सिद्धि होइ ॥ मसि से लिखै पीपर पत्र पर जर जाइ कागद पर लिखे वाहे बांधै तिजारो जाइ एक हाथै पानी मरै पीपर पत्र पर यंत्र लिखै चारि बार धोवै वाही पानी से मुख छाटा मारै भूत भागै भोज पत्र मेहावर तेके राम लिखै पेट वधे गर्भ रहै पानी सों लिखै ई पिआई छह सिर दुख जाइ ॥

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० १४ तक—बीसा मंत्र, पन्द्रह का मंत्र, भूत लगने का यंत्र, सर्व दुःख निवारण यन्त्र, मोहन यंत्र, कार्य सिद्धि मंत्र, मूस निवारण यंत्र, टोना निवारण यंत्र, चरि विजय मंत्र, सकल सिद्धि यंत्र, बुद्धि होने का मंत्र, मोहन यंत्र, वशीकरण सर्व सिद्धि तथा मोह जाल यंत्र ।

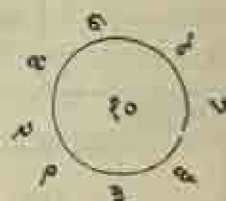
(२) पृ० १५ से पृ० ४० तक—माथा सीसी, शंका छूटने, प्रेत नाशक, बालक जिलाने, बहु भोग करने, स्त्री पुरुष वशीकरण, बांझ के बालक होने,

स्त्री वशीकरण, गर्भ रहने का, राजा वशीकरण, कर्ण व्याधि निवारण, मृगी नाशक, वशीकरण, बालक रोदन, उचाटन, वशीकरण, दुश्मन का मुख नेत्र बंद होइ। दुश्मन का उचाटन होइ। अलिम मंत्र और उसका फल।

No. 582(*b*). Yantrāvaligrantha. Leaves—8. Deposited with Paṇḍita Gunnā, Village Bahurājapura, Post Office Puravā, District Unnāva (Oudh).

Beginning:—अथ यंत्रा वली ग्रंथ लिख्यते॥

यह यंत्र बीसा का इतवार के दिन केसर से भोज पत्र पर लिखे और तांबे में मढ़ाय कर पगड़ी में राखे तो दुश्मन का जोर अपने उपर नहीं चले॥ (१)



यह यंत्र इतवार के दिन गोरोचन से भोजपत्र पर लिखे और बीमार घोड़े के गले में बांधे तो सात दिन में अच्छा होय॥ (२)

दः	ह्रीं:	कः	भः
छः	सः	गः	रः
थः	घः	चः	कः

यह यंत्र इतवार के दिन गोरोचन से लिखे भोजपत्र पर और दाहिने हाथ में बांधे स्त्री वस्य होय चार मास के भीतर परन्तु स्त्री को रोज दिखाया जाय॥ (३)

कः	प्रः	ज्ञः	रः
छः	टः	कः	ज्ञः
सः	घः	हः	बः

यह यंत्र जिसके लड़का मर मर जाते हों उसके गले में बांध दे तो लड़का जीते रहें परन्तु इतवार को मर जाते हों तो उसका मंत्र है॥ (४)

ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:
ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:
ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:
ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:	ह्रीं:

End:—चार प्रकार के १५ के यंत्र की विधि। जिस मनुष्य का जैसा मिजाज हो सो उसी प्रकार के यंत्र का सेवन करै और मेषादि १२ राशि चार प्रकार के मिजाज पर बांटी गई है सो अपनी राशि मिला कर मिजाज पहिचाने ॥

(१) खाकी

८	१	६	वृष
३	५	७	कन्या
४	९	२	मकर

(२) बादी

८	३	४	मिथुन
१	५	९	तुला
६	७	२	कुंभ

(३) आबी

२	७	६	कर्क
९	५	१	वृश्चिक
४	३	८	मीन

(४) आतशी

४	९	२	धन
३	५	७	मेष
८	१	६	सिंह

सम्पूर्ण ॥

Subject:—यंत्र वर्णन ॥

No. 583. Yntra-Vidhi. Leaves—2. Deposited with Bābu Rām Manohar Bichpuriyā Purānī, Basti. Katni Murwārā, District Jubbulpur (C.P.).

॥ श्रीगनेस जू ॥

॥ दोहा ॥ नेत्र ग्रहा श्रुतिचार सर, गुन रस ससि वसु जान।
नौ कोठा के जंत्र को यह विधि भर बुध बान ॥

८	१	६
३	५	७
४	९	२

॥ दोहा ॥ दिग सर नग द्रुग वसु सिव तेरा ग्रह तिथि श्रुति रस सिगार ।
दिग सर गुन नग ब्रह्म मनु रवि घर जंत्र सम्हार ॥ १ ॥

१४	१	१२	७
११	८	१३	२
५	१०	३	१६
४	१५	६	८

End:— जंत्र २५०

३	४	५४	५३	१४	१३	५९	६०
२	१	५५	५६	१६	१५	५८	५७
३१	३२	४२	४१	१८	१७	३९	४०
३०	२९	४३	४४	१९	२०	३८	३७
५१	५२	६	५	६२	६१	११	१२
५०	४९	७	८	६३	६४	१०	९
४७	४८	२६	२५	३४	३३	२३	२४
४६	४५	२७	२८	३५	३६	२२	२१

Subject:—कुछ जंत्र और उनकी विधि ।

No. 684. Yuddha-Dīpaka. Leaves—7. Deposited with Mannulāla Pustakālaya, Gaya.

Beginning:—श्री गणेशायनमः ॥ अथ युद्धे दीपक प्रयोतते ॥

दो०—मुरे विंदु युग सेन जिमि, छुरे तार फिर सेर।
फुरे शक्ति नाशक फुरे, तुरे घरे हो हेर ॥१॥

हते वृद्ध मते सेष युग फालक मते प्रदीप।
दहन दहन युगधा अनुज वाततु तजे न छेप ॥२॥

कद सोवे लषि सिन्धु ढिग मरे योग कर आनि।
हरये कोशप सार कर करे दौड़ छुग मानि ॥३॥

भ्र‍ सहाय हर करि युगल योग कंभु भू लाधु।
बद्दय अद्भुत लखि रुचिर पर युद रहे अगाधु ॥४॥

परतम वितक जह मे चिन्सक वृद समीप।
मे अन्धक लषि शुद्ध मति गे बंचक सम लीप ॥५॥

End:—

निमम मांस सारंग रट, स्वांती घट एक बुन्द।
हो चाहत विन कारन अब गृह चलि धमा हो सुद ॥ ११५ ॥

कपि ले मंदिर बस इहां नयन पुरदा बार०।
सखा इते वत पितु वचन भरत सनेह सम्हार ॥ ११६ ॥

लूट न वहुत शमा जमा चागेय पाछे पाप।
कपि इच्छा अति काल डर बड़ अपमान अनाप ॥ ११७ ॥

द्विज भुज तेज सु पुत्रव मुनि भेव द्व राम रजाप।
मत उत्तर बदा दश लषी दीपक युद्ध शहाप।

इति श्री युद्धे अभि प्राय पीपक समाप्तः ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

Subject:—सिन्धु तट से लङ्का के युद्ध तक रामायण का सूक्ष्म वर्णन।

No. 585. (Unknown.) Leaves—153. Place of Deposit Jairāmasimha, Village Haripura, Post Office Manadhāta, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—श्री रामजी ॥ श्री गणेशायनमः ॥ तप गरमी का इलाज ॥ कमल गटा के गुदा पांच मासे ॥ अधरा मासे ४ मुनक्का मासे ४ धनिया मासे २ सपेद जीरा मासे २ खस मासे २ कुलफे का बीज मासे २ दालचिनी मासे २ संदल मासे २ सब का आध सेर पानी मों अवटावे जब तब सीर गरम पीवै

॥ पुनः ॥ पीत पापरा तोला भरि मुनक्का तोला भरि दोनों मिलाइ राखै बिहनि छानि कै पीवै ॥ पुनः ॥ ककरो का बोधा मासे दुइ ॥ पीरा का बिया मासे दुइ ॥ कासनी मासे चारि ॥ सौंफ मासे तीनि ॥ सब को पीसि कै दोइ पैसा भरि पीवै ॥ चीनी मिलाइ कै पीवै ॥

End:— ॥ मूत्रातिसार को इलाज ॥

मुर्ई के बोकलाइ कै बुकनो ऽ१ चीनी सेर ऽ१। तीपुर ऽ- बड़ी इलायची के दाना ऽ- स्याह मुसरि ऽ- पसगंध नागौरी ऽ- पुराव दुइ पैसा भरि चूरन कै दुवौ जुन पाइ जल से वा गाइ के दूध के साथ वा पाइलेइ— × ×

× × × × ×

× × × × ×

गोहन में कवनौ बयारि पाइ बोगेन्ह (वगैरह ?) होयत हई अंत्र नगारा पर लिपिके पतवार मंगर के बजाइ देव



Subject:—पृ० १ से पृ० ५० तक—तापों की चिकित्सा, पठारह प्रकार के शूल व सन्निपात को औषधियां, बुखार के पन्य भेदों की चिकित्सा, दस्त तथा पांव पादि की औषधियां, कुपच पादि की औषधियां।

(२) पृ० ५१ से पृ० १४० तक—शीतला, वायु, पादि की औषधियां, सुपारी पाग, पुष्टि का माजून, बहुमूत्र, गर्मी, तथा सुजाक की औषधियां, मांडा फूली का इलाज, प्रमेह का इलाज, स्तंभन का इलाज, पीनस तथा मुंह के फफोलों की औषधियां, शरीर के दर्द की औषधि।

(३) पृ० १४१ से पृ० २०० तक—कुष्ट, कान से कम सुनने, पांडु, पेट संबंधी, जलन, खुजली, शीतला पेट में घाव, कुत्ता काटने पादि की औषधियां। बन्दोवटी के गुण पांव, सिर दर्द, दशमूल पादि की तरकीब।

(४) पृ० २०१ से पृ० २८० तक—रांगा मारने की विधि, गर्भ रहने, नमर्दी, पुष्टई, सर्व प्रकार के तापों की औषधि, शीत वायु, पित्त वायु, खांसी, बुखार पादि

की औषधियां, लाक्षादि तैल, सुदर्शन चूर्ण, कांच गिरने की औषधि। पेट सम्बन्धी रोगों का इलाज, सुरमा बनाने की विधि, वशीकरण मंत्र, बवासीर का मंत्र, मुत्राक व चिनंम की औषधियां,

(५) पृ० २८१ से पृ० ३०६ तक—रक्तविकार संबंधी औषधियां, जुलाब, घाव, खांस, को औषधियां, अंजन बनाना, पन्द्रह व बीस हजारा यंत्र। कुछ अन्य मंत्र।

No. 586. (Unknown.) Leaves—134. Deposited with Rāmaprasāda Murau, Village Puravāviśrāmadāsa, Post Office Pariyavā, District Pratāpagadha (Oudh).

Beginning:—अथ समुद्र फल के गुननौं अनुपान सो पाइ॥ ताको छेरी के मूत के पुट ७॥ गोमूत्र के ७७॥ घांवरे के रस के पुट ३॥ निर्गुंडी के रस के पुट ३॥ धतूरे के रस के १॥ पुट मोजी को पुट १॥ तब रोज सत्ताइस २७ सिद्धि होइ॥ ताको अनुपान थाने बने॥ मूठो सों ष इ तो असयंमनु होइ॥ छेरी के मूत सों अंजनु करै तौ फूली जाइ बात मिट जाइ॥ छेरी के मूत सो नासु दीजै तौ माथा सोसो जाइ औ षाइ तौ षई जाइ॥ ४॥ छेरी के मूत सों षाइ तो सूमी जाइ॥ ५॥ वा रतौंद जाइ वा कपाल शूल जाइ। छेरी के मूत सों अंजनु करे तो गेदन निकसे॥ छेरी को छाछ सो षाइ तो कहिलो जाइ॥ घामरे के रस सों षाइ तो पित असलेषम जाय॥ वा काननि बहिरौ सुनै और वाबु गोला जाइ॥ नीबू के रस सों षाइ तो हड़ फूटन जाइ॥

× × × ×
× × × ×

End:—औषधि धातु पुष्ट को॥ सेमर की छालि॥ २५॥ मिश्री दोनौं॥ २५॥ ताल मषाने॥ १२॥ सिघोर २५ कौंच के बीज तेज बल २५ उटंगन के बीज २५ अकरकरा २५ बहरै को बकुलो २५ लहसोर २५ गुलरि की छालि २५ गुषरू २५ ब्रह्मंडो २५ संषा हुलो २५ दुधी २५ मिर्चं १२ पीपरि १२ षांड १ घीउ ३॥। दूध ३ बजरूटी २५॥॥ अथ जुलाब॥ सोठि २५ निसोत २५ सनाइ २५ नोन सोचो २५ पानी सोटिकोया बांधे॥ घाम में सेकै टिकिया दुबे २५ इलाज सोज अमता बंद कौ॥ कसाइ का॥ छुहारे ५। मिश्री ५। पाषान भेद ५। दान इलायची गुजराती के १। १२॥ रूप रहु तेरे बहुव॥ इकठो॥ जुदी जुदी पीसै॥ आधुसेर गाइ के दूध सौं तोरा १ भरिषाइ॥ पुराक दूध चावर, मिश्री दारि षाइ॥ इलाज दूसरो॥ अमिलो चोयको घाटो)१। मोचरस २५ दार हरदो २५ मैदा लकरी २५ गोषरू २५ सुरवारे बो..............................

Subject:—(१) पृ० १ से पृ० २..............लुप्त।

(२) पृ० ३ से पृ० ५४ तक—समुद्र फल और मूढ़ी के गुण तथा अनुपान, नाड़ी विचार, ज्वर का लक्षण, कुछ काढ़ों के नुसखे, नाना प्रकार के चूर्ण, कई प्रकार के तेलों के बनाने की विधि, खाज, दद्रु आदि चर्म रोग विनाशक औषधियां, कुछ रस तथा धातु विकार एवं धातु नष्ट संबन्धी औषधियां।

(३) पृ० ५५ से १३५ तक—पुष्टि कारक औषधियां, नामर्दी दूर करने तथा ताकत बढ़ाने वाली औषधियां, मरहम, पाक, स्वरभेद औषधियां, मोतियाबिन्द आदि नेत्र विकार संबन्धी औषधियां, घोड़ों तथा बैलों का इलाज, बुलबुल आदि दो चार पक्षियों का इलाज।

(४) पृ० १३६ से पृ० २०० तक,—प्रमेह की औषधियां, सिंगि आदि के शोधने तथा तांबे आदि के मारने की विधि, कुछ रस, सुस्ती का लेप, बन्धेज का इलाज, गर्भ सम्बन्धी इलाज, कुष्ठ की औषधि, शीतला का इलाज, धातु विकार तथा बहुत वायु आदि की औषधियां, कुछ लाभकारी चूर्ण तथा पुष्टि की औषधियां, इन्द्री जुलाब,

(५) पृ० २०१ से पृ० २४४ तक—ज्वरादि की व्याधि दूर करने के मंत्र गर्मी आदि का इलाज, चौदह विद्याओं, बारह आभूषणों सोलह शृंगारों के नाम, सांप काटने का मंत्र, संग्रहणीकोत नामक रोगों तथा कुछ अन्य रोगों की औषधियां।

(६) पृ० २४५ से पृ० २६८ तक—श्वास का इलाज, अजवाइन का अर्क, पीनस आदि का इलाज, विविध रोगों की औषधियां।

(७) पृ० २६९ से पृ०..............तक लुप्त।

I—INDEX OF AUTHORS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I and II.

II—INDEX OF BOOKS

The figures refer to the serial numbers given in Appendices I, II and III.

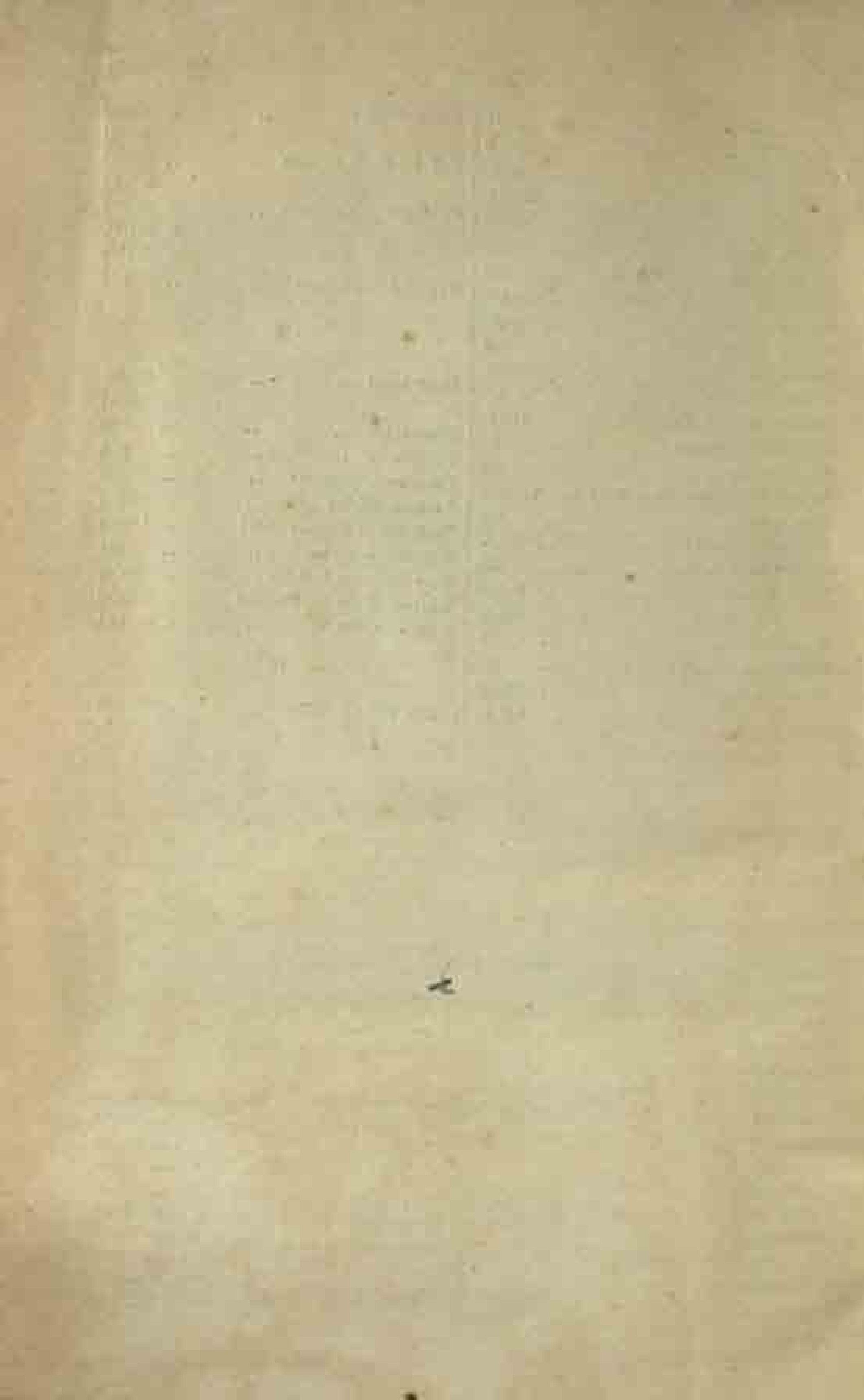
A

B

L

M

N





See Vol I

